CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि

स्वर्णमहोत्सव स्मारिका २०७८

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि. बिर्तामोड - २, चारपाने, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

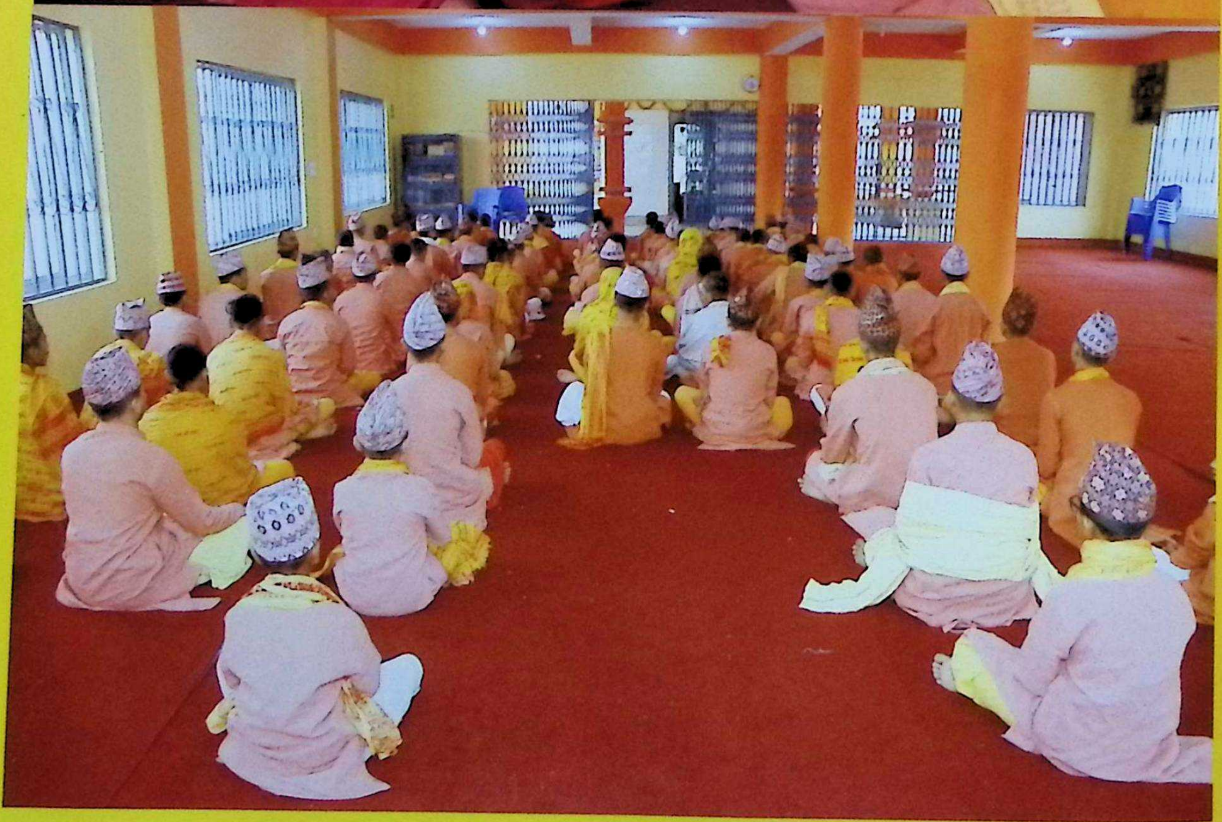

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय

स्वर्णमहोत्सव स्मारिका २०७८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृति	:	श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय स्वर्णमहोत्सव स्मारिका २०७८
प्रकाशक	:	श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा फोन नं.: ०२३-५४०५१९, Email: sangbedsans2028@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम २०७८
सर्वाधिकार	:	© प्रकाशकमा
पृष्ठसज्जा	:	घनश्याम ओली
कभरपृष्ठ	:	सम्पन्न बस्नेत
प्रकाशन प्रति	:	१००१
मुद्रक	:	सिद्धिगणेश प्रेस पुतलीसडक, काठमाडौं ।
मूल्य	:	११००/-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री गुरूचरणकमलेभ्यो नमः

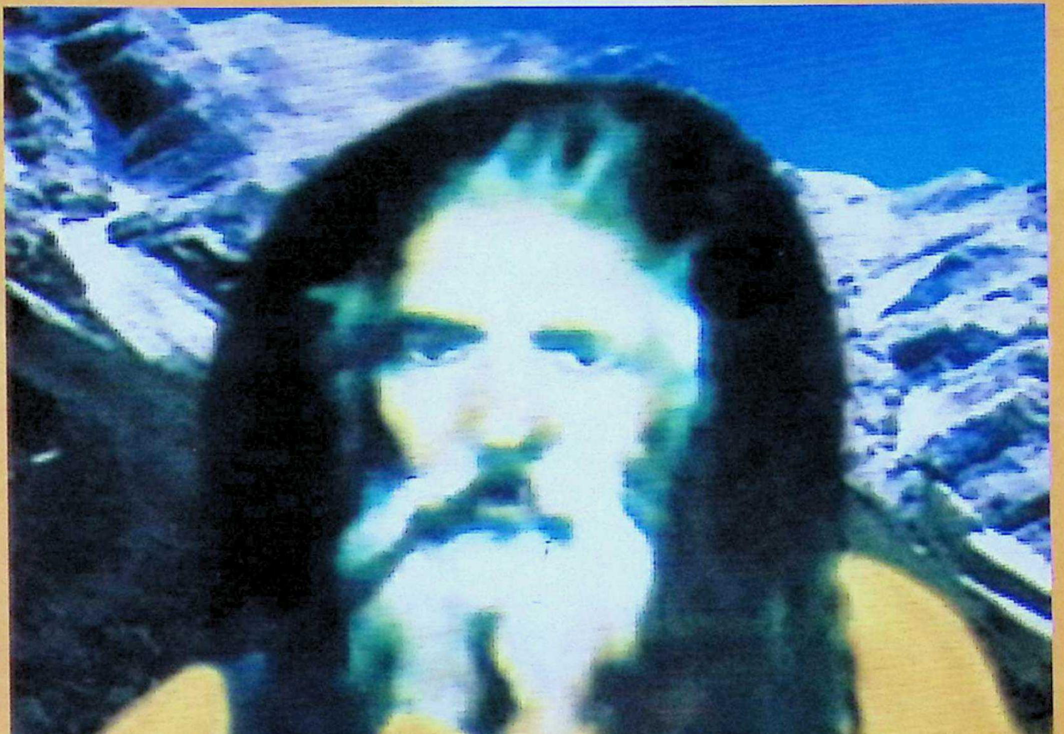

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

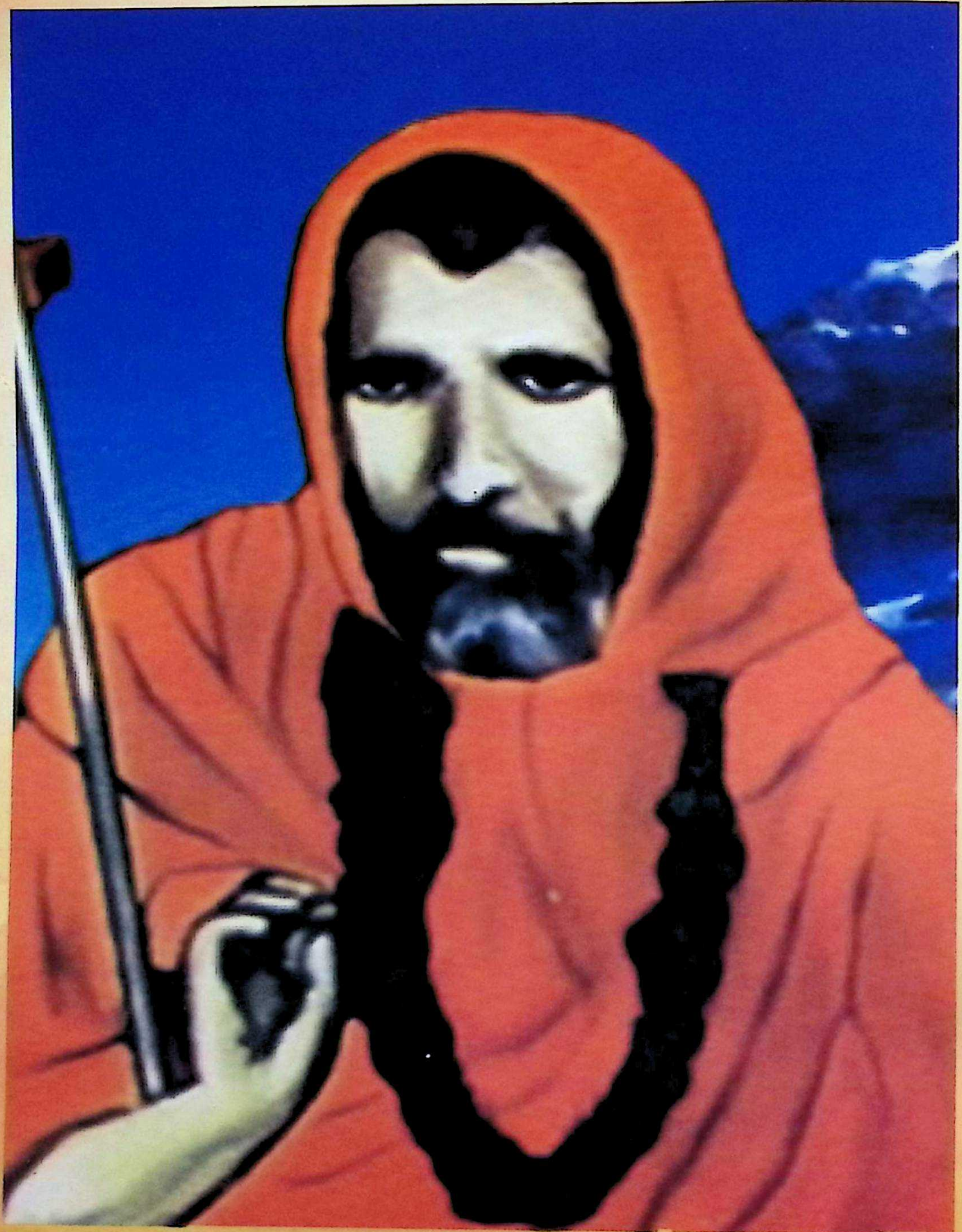

श्री १०८ स्वामी योगेश्वराश्रम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

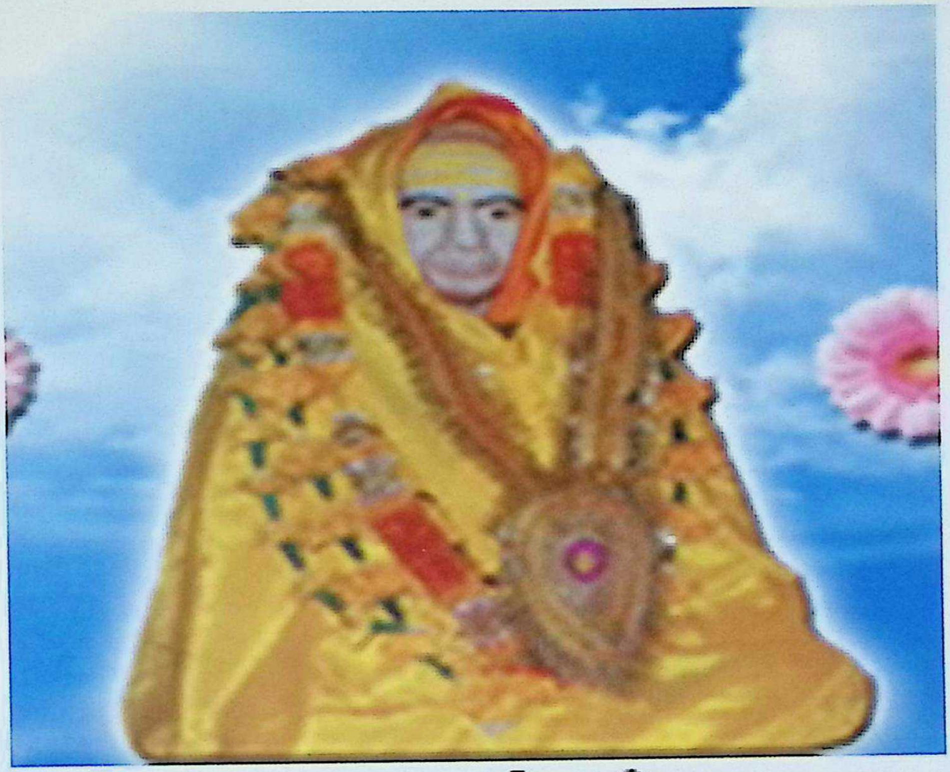

श्री १००८ स्वर्गद्वारी महाप्रभु

श्री १०८ ब्रह्मचारी षडानन्द अधिकारी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

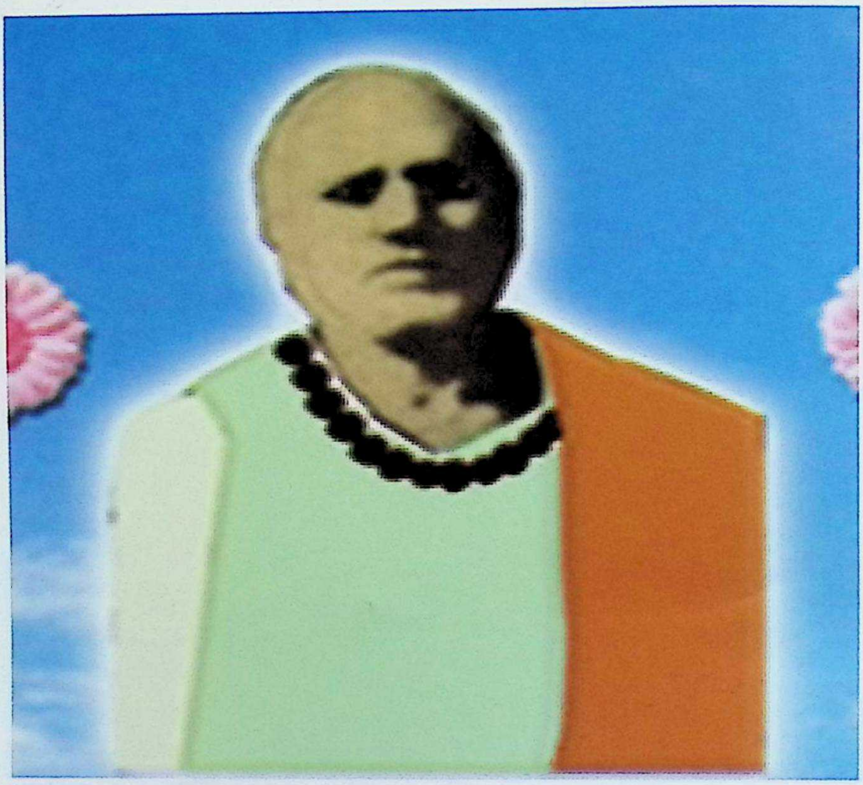

श्री यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ् गुरु)

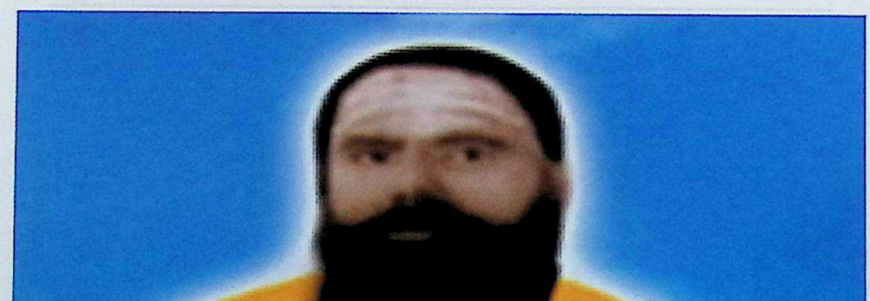

श्री १०८ ब्रह्माभ्याानन्द

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

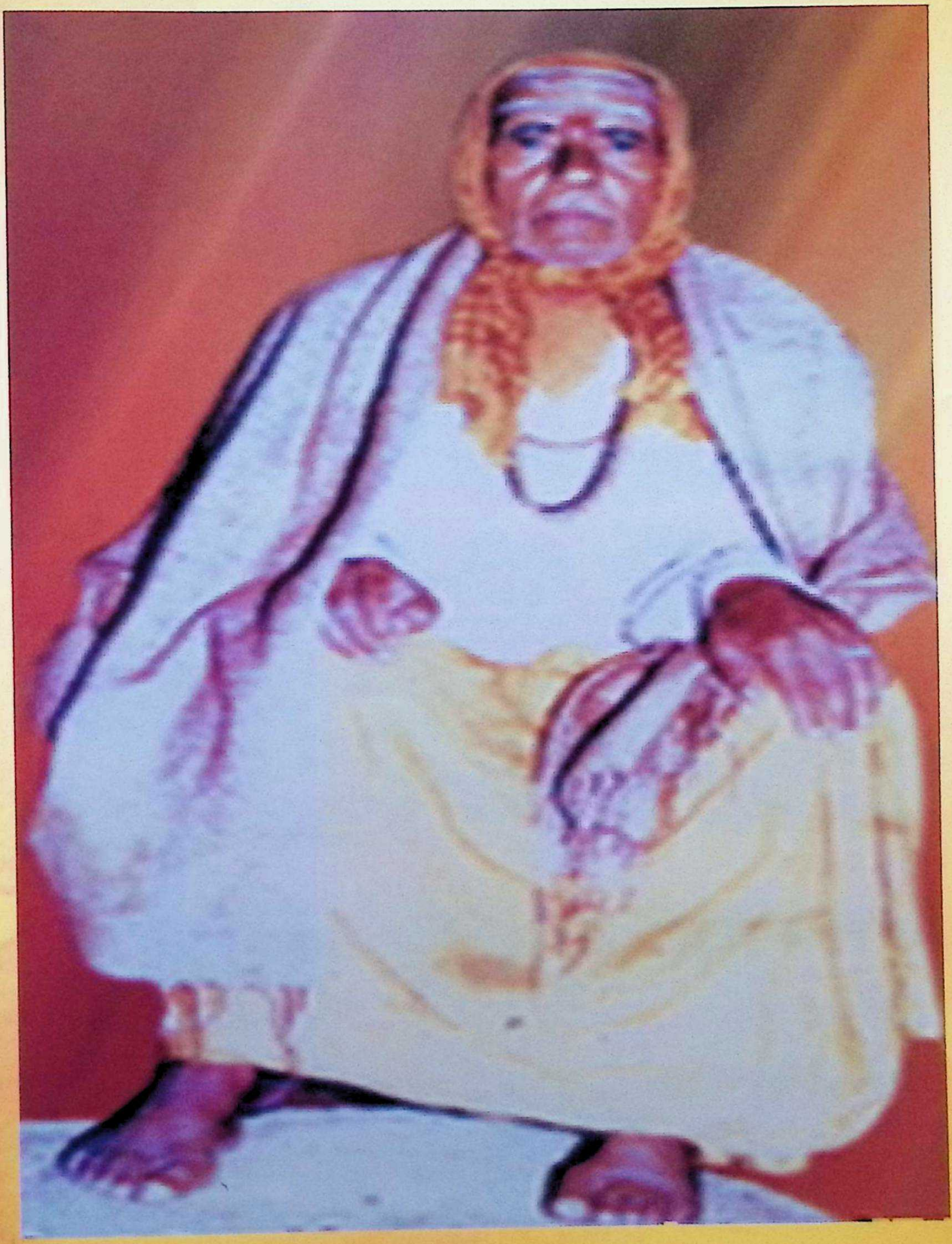

महर्षि पं. टेकनाथ उपाध्याय गौतम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

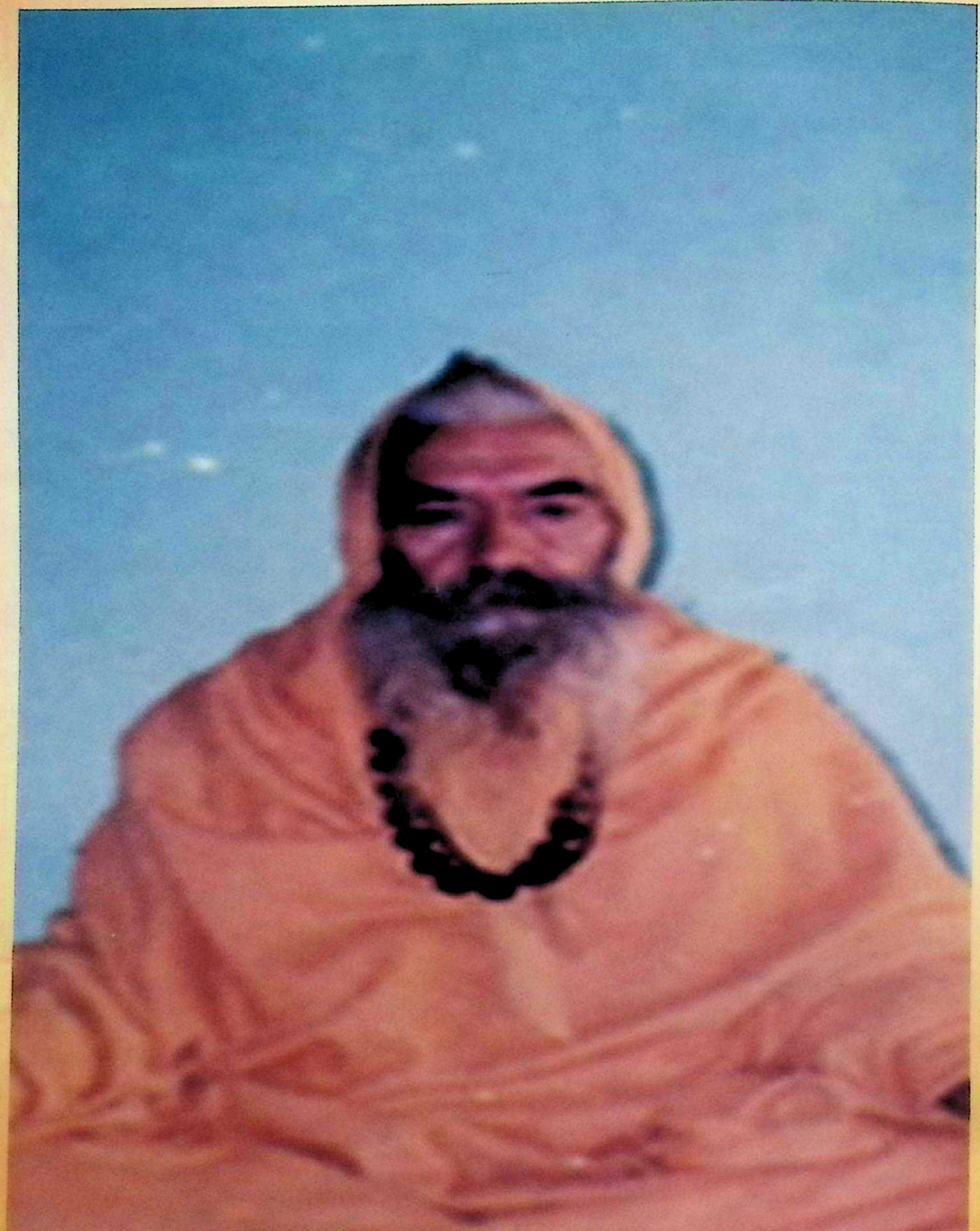

श्री १०८ गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय
स्वर्णमहोत्सव स्मारिका २०७८

आश्रम कार्यसमिति

अध्यक्ष	व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम
उपाध्यक्ष	पं. विष्णुभक्त भण्डारी
महासचिव	आचार्य छन्दुराम भण्डारी
सचिव	आचार्य दामोदर न्यौपाने
कोषाध्यक्ष	श्री जगन्नाथ भण्डारी
सदस्य	श्री जगन्नाथ खनाल
"	श्री पूर्णानन्द तिम्सिना
"	श्री भानुभक्त अधिकारी
"	श्री डिल्लीराम सिटौला
"	श्री दिननाथ सिग्देल
"	ज्यो. गंगाप्रसाद खरेल
"	श्री रमा घिमिरे
"	श्री उर्मिला ढकाल पोखेल
"	श्री नारद पौडेल
"	श्री रामप्रसाद ओझा

आन्तरिक लेखा परीक्षक

श्री रघुनाथ (राजु) अधिकारी

श्री टेकनाथ खनाल

श्री भूमिप्रसाद खतिवडा

सल्लाहकार एवम् परामर्शदाता

व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम

पं. विष्णुभक्त भण्डारी

पं. नन्दीकेश्वर तिम्सिना

पं. केदारनाथ खतिवडा

पं. पुष्पलाल तिम्सिना

पं. भानुभक्त अधिकारी

पूर्व प्रचार्य पूर्णानन्द तिम्सिना

पूर्व शिक्षक जगन्नाथ भण्डारी

विद्यालय व्यवस्थापन समिति

अध्यक्ष	आचार्य छन्दुराम भण्डारी
सदस्य	श्री नगेन्द्रप्रसाद संग्रौला (वडाध्यक्ष)
"	श्री भावना भट्टराई
"	श्री पार्वती सापकोटा
"	श्री सृजना भट्टराई
"	श्री मेनुका आचार्य
"	श्री सीता देउजा
"	आचार्य सोमनाथ गौतम (शिक्षक)
सदस्यसचिव	आचार्य दामोदर न्यौपाने (प्र.अ.)

स्मारिका सम्पादन समिति

संयोजक	प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा
सदस्य	श्री अम्बिकाप्रसाद रेग्मी
सदस्य	प्रा.डा. काशीनाथ न्यौपाने
"	डा. कर्णाखर खतिवडा
"	आचार्य डिल्लीराम गौतम
"	आचार्य छन्दुराम भण्डारी
"	आचार्य दामोदर न्यौपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

।।श्रीहरिः।।
।।श्रीगणेशाय नमः।।
पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर
श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती
श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठ-श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-महासंस्थानम्-पुरी ७५२००१, ओडिशा
सम्पर्क- ०६७५२-२३१७१६, फैक्स- ०६७५२-२३१०९४, मो.- ९४३७०३१७१६
निज सचिव - स्वामी श्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती
e mail: contact@govardhanpeeth.org, website: www.govardhanpeeth.org

पत्र क्रमाङ्क - ०५०

दिनाङ्क- ०४.११.२०२१

पृ.क्र. -०१

श्रीपाणिनिप्रोक्त शिक्षा और व्याकरण वर्णोच्चारण तथा पदसाधुत्वरूप प्रयोजनके पूरक हैं। वैदिकमन्त्रगत अर्थोंका ज्ञान कराकर वेदार्थनिर्णयमें श्रीयास्कमुनिविरचित निरुक्तका उपयोग है। पादबद्धछन्दोविशिष्ट ऋक्संज्ञक मन्त्र हैं। छन्दोंका अज्ञान दोषप्रद है। छन्दोविशेष निमित्तानुष्ठानविशेषका विधान भी है। अत एव छन्दोंका ज्ञान आवश्यक है। तदर्थ भगवान् पिङ्गलके द्वारा विरचित छन्दोविचितिका अध्ययन अपेक्षित है।

पूर्णमास–दर्शादि वैदिक कर्माङ्ग हैं। उनके अनुष्ठानके लिए कालज्ञान अपेक्षित है। कालज्ञानके लिए भगवान् आदित्य और गर्गाचार्यादिविरचित ज्योतिषका ज्ञान आवश्यक है।

शाखान्तरीय गुणोपसंहारसे वैदिकानुष्ठानक्रमविशेषके ज्ञानके लिए कल्पसूत्रोंका अध्ययन अपेक्षित है। हौत्रप्रयोगप्रतिपादक आश्वलायनसांख्यायनादिप्रणीत कल्पसूत्र हैं। आध्वर्यवप्रयोगप्रतिपादक बौद्धायन – आपस्तम्ब – कात्यायनादि प्रणीत कल्पसूत्र हैं। औद्गात्रप्रयोगप्रतिपादक लाट्यायनद्राह्ययायणादिप्रणीत कल्पसूत्र हैं।

ध्यान रहे; लौकिक फलकी समुपलब्धिके लिए लौकिक विधि–निषेधका पालन अपेक्षित है। तद्वत् वेदादि – शास्त्रसम्मत फलोपलब्धिके लिए वेदादि – शास्त्रसम्मत विधि–निषेधका अनुपालन अपेक्षित है। कालगर्भित और कालातीत वस्तुओंका अधिगम वेदादिशास्त्रोंके अनुशीलनसे ही सम्भव है। वेदादिशास्त्रसम्मत कर्म, उपासना और ज्ञानकी सिद्धिके लिए देहके नाशसे जीवात्माका नाश नहीं होता तथा देहके भेदसे जीवात्मामें भेदकी प्राप्ति नहीं होती – इस तथ्यमें आस्था अपेक्षित है। प्रत्येक वर्ण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और आश्रमके लिए विधि और निषेधका अनुपालन अभ्युदय और निःश्रेयसकी सिद्धिके लिए अपेक्षित है। सनातन धर्ममें फलचौर्य नहीं है। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।। गीता १८.४६।। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। गीता ९.३२ आदि वचनोंके अनुशीलनसे फलोपलब्धिमें स्त्री, शूद्रादि भी अधिकृत हैं। कर्मासक्ति –फलासक्ति और अहङ्कृतिको शिथिलकर धृत्युत्साहसमन्वित समत्वबुद्धिपूर्वक भगवदर्थ स्वकर्मानुष्ठानके प्रभावसे धर्मव्याधादि तथा सुलभादिको भी अभ्युदय तथा निःश्रेयसप्रद दिव्य ज्ञान–विज्ञानकी समुपलब्धि सिद्ध है। जिन स्त्री, शूद्र तथा द्विजबन्धुओंको वेदाध्ययन सुलभ नहीं है; उन्हें भी पुराणश्रवण और रामचरितमानस, ज्ञानेश्वरी तथा दासबोध आदिके अध्ययन और अनुशीलन एवम् सत्सङ्गके अमोघ प्रभावसे धर्म और ब्रह्मका परिज्ञान सम्भव है।

साङ्गवेदविद्यालय मन्वादि – शास्त्रसम्मतविधाके अनुरूप अङ्गोंके सहित वेदोंके अध्ययन और अध्यापनका मार्ग प्रशस्त करता रहे ; ऐसी भावना और श्रीपशुपतिनाथसे प्रार्थना है।

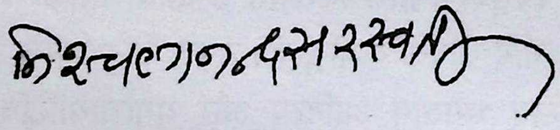

श्रीमज्जगद्गुरु – शङ्कराचार्य

पुरी–पीठ (भारत)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काशी विश्वनाथो विजयते

शिवः काशी शिवः काशी, काशी काशी शिवः शिवः

शिव ही काशी है, काशी ही शिव है।

सर्वतीर्थमयी एवं सर्वसन्तापहारिणी मोक्षदायिनी काशी की महिमा ऐसी है कि यहाँ प्राण त्याग करने से ही मुक्ति मिल जाती है। भगवान् विश्वेश्वर मरते हुए प्राणी के कान में तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं। जिससे वह आवागमन से छुट जाता है। चाहे मृत प्राणी कोई भी क्यों न हो।

मत्स्य पुराण का मत है, जप, ध्यान, ज्ञान से रहित दुखों से परिपीडित जनों के लिए काशीपुरी ही एक मात्र गति है। विश्वेश्वर के आनन्दकानन में पाँच मुख्य तीर्थ हैं- १. दशाश्वमेघ, २. लोलार्क कुण्ड ३. बिन्दुमाधव ४. केशव (गोपाल मन्दिर) ५. मणिकर्णिका। इन के कारण ही काशी को अभिमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। काशी ३ खण्डों में हैं- केदार खण्ड, ओंकार खण्ड, विश्वेश्वर खण्ड।

दुनियाँ का एक मात्र विश्वनाथ मन्दिर है जहाँ शक्ति के साथ विराजते हैं- शिव, द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख श्रीकाशी विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग दो भाग में है- दाहिने भाग में शक्ति के रूप में मा भगवती विराजमान हैं, वाम भाग में भगवान् शिव विराजमान हैं, जब शक्ति दक्षिणाङ्ग में होती है तो सृष्टि नहीं होता, अतः काशी को मुक्ति क्षेत्र कहा जाता है।

यहाँ मृत्यु के पश्चात् जीव को पुनः माता के गर्भ में नही जाना पडता है शिव स्वयं तारक मन्त्र के द्वारा प्रत्येक जीवका उद्धार करते हैं। अकाल मृत्युको प्राप्त मनुष्य भी बिना शिव आराधना के मुक्ति नहीं पा सकता है। शृङ्गार के समय विश्वेश्वर की मूर्ति पश्चिममुखी होती है, यहाँ शिव और शक्ति दोनों साथ ही विराजते हैं जो अद्भुत है। ऐसा दुनियाँ ने कहीं देखनेको नहीं मिलता। विश्वनाथजी का शिखर के अन्त भाग में श्रीयन्त्र मण्डित है। अतः तान्त्रिक सिद्धि एवं तन्त्र साधना के लिए प्रमुख स्थान माना जाता है।

बाबा विश्वनाथ जी में तन्त्र की दृष्टि से चार प्रमुख द्वार हैं- १. शान्ति द्वार २. कला द्वार ३. प्रतिष्ठा द्वार। ४. निवृत्ति द्वार। इन चारों द्वारोंका तन्त्रानुसार पृथक् ही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान है। दुनियाँ में कहीं भी जहाँ शिव शक्ति विराजमान हो और तन्त्र द्वार भी हो। यहाँ बाबाका ज्योतिर्लिंग ईशान कोण में स्थापित है। इस कोणका मललब है सम्पूर्ण विद्या और कला से परिपूर्ण दरबार (ईशानः सर्वविद्यानाम्) जहाँ भगवान् शङ्कर का नाम ही ईशान है।

दरबारका मुख्य द्वार दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवेश करता है। इसीलिए सब से पहले बाबा के अघोर रूपका दर्शन होता है। यहाँ प्रवेश करते ही पूर्वकृत पाप विनष्ट होते हैं। भौगोलिक दृष्टि से बाबा काशी विश्वनाथजी त्रिशूल के मध्ये ज्ञानवापी में विराजते है। कहा जाता है त्रिशूल पर विद्यमान काशी का कभी प्रलय नहीं होता। काशी में बाबा विश्वनाथजी प्रातःकाल से सायं पर्यन्त गुरु के रूप में विराजते है, सायं कालपश्चात् बाबा का शृङ्गार होता है तो बाबा राज वेश मे होते हैं। इसीलिए शिव को राजराजेश्वर भी कहते हैं।

'जीविते अन्नदातृत्वं मृते मोक्षं ददाम्यहम्'। बाबा एवं माता अन्नपूर्णा प्रतिज्ञाबद्ध हैं माता अन्नपूर्णा के रूप में प्रत्येक काशीवास करनेवालोंका पेट भरती है। वही बाबा मृत्यु के पश्चात् तारक मन्त्र देकर मुक्ति प्रदान करते हैं। इसीलिए विश्वेश्वर को तारकेश्वर भी कहा जाता हैं। अतः बाबा विश्वेश्वर के दर्शन मात्र से जन्मजन्मान्तर के समस्त पाप नष्ट होते हैं।

'यत् लिखितं तत् विश्वेश्वरार्पणमस्तु'

आचार्य टेकनारायण उपाध्याय (पौडेल)

श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर, काशी वाराणसी

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

H. Ganesh Bhatta

Chief Priest of Pashupati Temple

Kathmandu-8, Nepal
Ph.- 00977-1-4498137
Mob.- 00977-9841696336

H.Ganesh Bhatta
Chief Priest
Pashupatinath Temple

मिति: २०७९-१-३ पूर्णिमा

श्रीविवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको स्वर्ण महोत्सव स्मारिका २०७८ प्रकाशित हुन लागेकोमा खुसी लागेको छ । विगत ५० बर्षदेखि निरन्तर संस्कृत शिक्षा, सनातन धर्म र संस्कृति संरक्षणको क्षेत्रमा विद्यालयले योगदान अविस्मरणीय रहेको छ । परमहंस श्री स्वामी विवेकानन्द गुरुले स्थापना गर्नुभएको विद्यालय आगामी ५० बर्षको यात्रा सुखद हुने आशा गर्दछु ।

स्वर्ण महोत्सवको अवसरमा प्रकाशित हुन लागेको स्मारिकामा देशभरका विद्वतजनहरुका आलेखहरू समावेश गरी प्रकाशित हुन लागेको स्मारिका प्रकाशनको सफलताको शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

सनातन धर्म र संस्कृतिको जागरणका लागि गुरुकुल प्रवर्द्धन र संस्कृत शिक्षाको ज्योति फैलाउनु पर्नेछ ।

सनातन शास्त्र र हाम्रा पूर्वजहरुले अध्यात्म विद्या ज्ञान साधनाको बारेमा निकै महत्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ छोडेर जानु भएको छ । चार वेद, अठार पुराण, उपनिषद् र अन्य शास्त्रीय ज्ञानको संरक्षण गर्नु हामी सबैको कर्तव्य हो ।

त्यसैले, आजको आवश्यकता भनेको हाम्रा शास्त्रीय शिक्षाको जगेर्ना गर्नु प्रमुख कुरा हो ।

साङ्गवेद माध्यमिक विद्यालयले विगत ५० बर्षदेखि गरिरहेको शिक्षा सेवाको निरन्तताको लागि हार्दिक शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

स्मारिका प्रकाशनको सफलताको शुभकामनाका लागि श्री पशुपतिनाथसँग प्रार्थना गर्दछु ।

गणेश भट्ट
प्रधान अर्चक

रावल गणेश भट्ट
मूल भट्ट (प्रधान अर्चक)
पशुपति मन्दिर
काठमाडौं-८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभकामना

वेदोऽखिलो धर्ममूलम् सनातन धर्म र पूर्वीय वाङ्मयको मूल स्रोत भनेको वेद हो। वेद सनातन ज्ञान हो । यो मुहान नसुक्ने अविरल धार समयानुकूल गतिशील रूपमा प्रवाहित भइरहन्छ। यही लामो सनातन परम्परालाई बलियो बनाउन र संरक्षण गर्न ईश्वरको अवतार हुन्छ। मुख्य प्रयोजन विश्वका प्राणीहरूको कल्याण गर्नु हो। "श्रेयसे ये भवन्ति" श्रौतस्मार्तसम्मत शाश्वत अविनाशी सनातन सभ्यताको मूलधारलाई निरन्तरता प्रदान गर्न असङ्ख्य ऋषिमुनि, महर्षि, देवर्षि, राजर्षि, त्यागी, योगी, वैरागी, ध्यानी, ज्ञानी, तपस्वी, मनस्वी, मेधावी साधक, सुरवीर, कर्मवीर, दानवीरहरूले आफ्नो जीवन समर्पण गरेको इतिहास साक्षी छ। केही यस्ता घटनाक्रम संसारमा देखा परे त्यस्तो परिवेशमा पनि हाम्रो परम्परा जीवन्त रह्यो।

लामो इतिहास कालखण्डअन्तर्गत भगवत्पाद आद्य शङ्कराचार्योदय पूर्वको अवस्था धर्म दिग्वजयको थियो। प्रथम, द्वितीय विश्वयुद्ध, मुगल साम्राज्य, फिरङ्गीहरूको सञ्जालका परिवेशले गाँजेपछि निकै भयावह अवस्था हामीले पनि बेहोर्नुपर्‍यो। जटिल अवस्थामा पनि नेपाल एकीकरणको महाअभियानले नेपाल र नेपालीलाई विश्वसामु परिचित गराउने काम क्रमशः गर्दै गयो। नेपाली जातिले आफ्नो धर्म संस्कार र रीतिरिवाजलाई अक्षुण्ण राख्यो। "नेपाल भन्याको असली हिन्दुस्थान्या रह्या छ" हितोपदेशबाट थाहा हुन्छ। यस उक्तिले नेपाल त्यति बेला पनि हिन्दु राष्ट्र भएको प्रमाणित हुन्छ। यहाँको हिन्दुत्व वा वैदिक सनातन धर्म बलियो थियो।

नेपाल सौन्दर्ययुक्त मनमोहक प्राकृतिक सम्पदा र वैदिक ज्ञानका दृष्टिले समृद्ध छ। हाम्रो कला, संस्कृति, सभ्यता, आदर्श, नेपालीपना र राष्ट्रियताप्रतिको सम्मानको भाव बलियो छ। उपर्युक्त परिस्थितिमा पनि हाम्रो सनातन धर्मअन्तर्गत पर्ने सत्शास्त्र र विधि विधान, षोडश संस्कार, पुराण, ज्योतिष वार्षिक पूजाआजा नियमित थिए। विशेषतः समाजका लागि आवश्यक रहेको कर्मकाण्डलाई लोपावस्थाबाट बचाउन र जोगाउन मूलभूत उद्देश्यका साथ नेपाल राष्ट्रभरिका जो चेतनशील थिए उनीहरूले व्यक्तिगत रूपमा होस् वा सामूहिक रूपमा गाँउगाँउमा भाषापाठशाला खोल्ने काम गरे, गुरुकुल आदिका पाठ्यपुस्तक मुद्रणको अभाव थियो तथापि कर्मकाण्ड र पूजापाठका लागि आवश्यक रुद्री, चण्डी, वेद, पुराण, रामायण ज्योतिषका ग्रन्थहरूलाई मेहेनतपूर्वक पठनपाठन गर्दै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल्याए, धर्म, कर्म र परम्परा रक्षार्थ निकै परिश्रम गर्दै आए, लिखित पाठ्यसामग्री तयार गरेर नै भए पनि पठनपाठनको सत्कार्य गरिरहे।

नेपालमा लामो समय राणाशासन कालमा सामूहिक रूपमा विद्यालयहरू खुल्न सकेका थिएनन्। तथापि पण्डित, पुरोहित र विद्वान् गुरुजन एवं चेतनशील व्यक्तिहरूले ठाउँ ठाउँमा अनौपचरिक रूपमै भए पनि पठनपाठनलाई निरन्तरता दिइरहे। यही कारणले हाम्रो कर्मकाण्ड शास्त्रीय ज्ञान लोप भएन। राणा शासनकालमा पनि भोजपुरमा पूज्य षडानन्द गुरुले दिङ्ला पाठशालालाई सञ्चालन गर्नुभयो। जनकपुर मटिहानीमा संस्कृत पाठशाला, स्वर्गद्वारी संस्कृत पाठशाला, हरिहर पाठशाला अर्घाखाँची, कोयाखोला खेलपुरको संस्कृत पाठशाला, तत्कालीन विद्वान् गुरुजन र सन्त महात्माहरूले विद्यालय सञ्चालन गर्ने सन्दर्भमा इलामका काफ्ले गुरुहरू, भण्डारी गुरु, ताप्लेजुङका लम्साल गुरुहरू, सुभाङका वेदान्ताचार्य महान् साधक एवं विद्वान् पं. यज्ञनिधि रेग्मी, योगेश्वराश्रम महाराज, विवेकाश्रमका संस्थापक पूज्य स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराजहरूको योगदानलाई भावी पुस्ताले समेत स्मरण गरिरहनेछ। यस्तै पाँचथर अखौंलेमा पूज्य पिता श्रीटेकनाथ गौतमद्वारा स्थापित स्वयंसेवक साङ्गवेद पाठशाला, जोरपोखरी पाठशालाले हाम्रो संस्कृत शिक्षाको जग तयार गर्‍यो। म्याग्दीको गलेश्वर पाठशाला, गुल्मी दिबुङमा पूज्य स्वामी परमानन्द सरस्वतीको वैदिक संस्कृत पाठशाला, वाग्लुङ विहुँरामकोट पाठशालाले त्यस क्षेत्रमा धेरै विद्वान् जन्माउन सफल भयो। दाङ, रुरुक्षेत्र र यस्तै नेपालको विविध स्थानमा विद्यालय स्थापना हुँदै गए। कतैकतै आरम्भ भएका संस्थाहरू लोप हुँदै गएको पनि पाइन्छ।

वि.सं.२००७ सालपछि नेपालमा बसाइँसराइको क्रम अलि बढ्दै गयो। कतिपय नेपालका पहाडी जिल्लाबाट बसाइँ सर्ने क्रममा नेपालीहरू भारत, पश्चिम बङ्गाल, सिक्किम, आसाम, मणिपुर पुगे। भुटान र बर्मा (म्यानमार) सम्म पुगेका नेपालीहरूले आफ्नो कूलपरम्परा, स्वधर्म, सनातन सभ्यता र धार्मिक रीतिरिवाजलाई जोगाइराखे। कर्मकाण्ड बचाउन ससाना वैदिक पाठशाला स्थापना गरे भने कतै दरिला संस्कृतका विद्यालय सञ्चालन गरे।

विषेश रूपमा अतिटाढा म्यानमार (बर्मा) पुगेका नेपालीहरूले स्थापना गरी सञ्चालन गरेका संस्कृत पाठशालाले समेत हजारौं विद्वान्, कवि, साहित्यकार, पण्डित र स्नातकहरू तयार गरेको देखिन्छ। म्यानमारको लोखु परहित धाममा सञ्चालित संस्कृत पाठशाला नेपालबाहिर खोलिएका पाठशालामध्ये जेठो मानिन्छ। यो आर्थिक र भौतिक दृष्टिले पनि समृद्ध छ। दोस्रो नेपाल भनेर चिनिने मिचिना कचिन प्रान्तको भखान्ति संस्कृत पाठशाला, राउजीलसमा अवस्थित संस्कृत पाठशालाहरूले नेपालीको गौरव, गरिमामा स्थापित गरेका छन्। धर्मको प्रचार-प्रसार र संगठनलाई बलियो बनाई नेपाली जातिको अस्तित्व बचाउँदै स्नातकहरू नेपालीहरूको बसोबास गाउँ-गाउँमा स्थापित देवस्थलहरूको मर्यादा र विधिविधान स्थापना गर्न सक्षम र सक्रिय भई लागिपरेका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्। यी सबै कुराको अभिभावकत्व, संरक्षकत्व र केन्द्रको रूपमा "अखिल म्यानमा देशीय नेपाली गोर्खा हिन्दु धार्मिक" सङ्घले गर्दछ, जसको सयौं शाखा उपशाखा र दर्जनौं विभागले काम गरेका छन्।

नेपालको पञ्चायत शासन व्यवस्थामा पनि संस्कृत पाठशालाहरू त्यति विकसित हुन सकेका थिएनन्। वि.सं. २०२८ सालको नयाँ शिक्षा योजनाले झन् हाम्रो पूर्वीय वैदिक वाङ्मयलाई पन्साउन पुग्यो। तत्कालीन आचार्य गुरुजनहरूले आन्दोलन नै गर्नुपरेको थियो।

केही दशकयता समाजमा बढ्दै गएको अभिरुचि र सन्त महात्मा, गुरुजन आचार्य एवं समाजका चेतनशील व्यक्तिहरूको सत्सङ्कल्प र शतत प्रयासले प्रशस्त गुरुकुल वैदिक विद्यालयहरू स्थापना भएका छन् र विधिवत् सञ्चालनमा आएका छन्। प्राचीन गुरुकुलीय पद्धतिमा सञ्चालन र स्थापित भएका गुरुकुलको सङ्ख्या अधिक पाइन्छ भने औपचारिक रूपमा राष्ट्रिय शिक्षा नीतिको मूलधारमा समाहित संस्कृत विद्यालयहरू पनि क्रमशः थप भइरहेका छन्। एकदशकयता महर्षि फाउन्डेसनले गुरुकुलको स्थापना,सञ्चालन र विकासमा महत्त्वपूर्ण सहयोग गरेको छ। सन्त, महात्माद्वारा देवघाटमा सञ्चालित गुरुकुलहरू नेपालमै प्रेरणादायक र उत्कृष्ट खालका छन्। यी सबै गुरुकुल समाजमा दानदातव्यबाट नै सञ्चालित छन्। सरकारको साथ र सहयोग न्यून देखिन्छ। वैदिक संस्कृत गुरुकुल पाठशालाप्रतिको सामाजिक आस्थामा वृद्धि भएको देखिन्छ। विद्यालयहरूका आश्रम भोजन आदिको व्यवस्था समाजकै दानदातव्यले धानेको छ। ठूलो मेहेनत, परिश्रम र लगानी समाजले गरेको पाइन्छ। सरकारको पनि साथ-सहयोग आगामी दिनमा हुनुपर्दछ। वैदिक संस्कृत पाठशालाले राष्ट्रलाई आवश्यक पर्ने निष्ठावान्, इमानदार, नैतिक, आदर्शवान्, सक्षम जनशक्ति हरेक क्षेत्रको लागि दिन सक्छ। यो अहिलेको आवश्यकता हो।

पूर्वीय वाङ्मयको पठन पाठनका साथ धर्म, संस्कार, संस्कृतिका मूल परम्परा, कुल परम्परा, ऋषि परम्परा, वैदिक परम्परा, आर्य परम्परा, सनातन नियम, आचरणयुक्त आचार्य परम्परा, गुरु परम्परा र सभ्यतालाई निरन्तरता प्रदान गर्दै पूर्वीय वाङ्मय रहेको वर्णाश्रम धर्म र तदनुरूपका आचरण, सेवा र सनातन धर्मको मर्यादापालकका रूपमा निरन्तर लागिरहेको श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयले आज पचासौं वर्ष पार गरेको छ। राष्ट्रको राजनीतिक उत्तरचढाव र अस्थिरताको बिचमा पनि समाजको माया, प्रेम, सहयोग प्राप्त गर्दै यसले अविचलित रूपमा आफ्ना सत्कर्मयुक्त कार्यहरूलाई निरन्तरता दिँदै आएको छ। धार्मिक र देवस्थल भएकाले अन्तरङ्ग विधिविधानमा कमी आउन पाएको छैन। नित्य, नैमित्तिक यज्ञानुष्ठानहरू निरन्तर रूपमा सञ्चालन भइरहेका छन्। धार्मिक सामाजिक र शैक्षिक दृष्टिले महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त गरेको यस संस्थाले पूर्वाञ्चलबाट धेरै विद्वान् जनशक्ति तयार गरेको छ र फराकिलो सामाजिक क्षेत्रमा आफ्नो आस्था प्रतिष्ठापन गर्दै माया, प्रेम र सद्भावको अन्तरसम्बन्ध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आत्मा र शरीरको जस्तै बलियो बनाएको छ। समाजसँगको सम्बन्ध पनि शरीर र प्राणको जस्तै सबल बनेको छ।

झापाको अर्जुनधारा, साधुटार, बुट्टाबारी, गोलधाप, माईतट आदि विभिन्न स्थानमा गुरुकुल सञ्चालन भएका छन्। झापाका दर्जनौं गुरुकुलहरूले जिल्लालाई नै सुसज्जित बनाएका छन्।

हामी अहिले विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.को ठूलो हर्षोल्लासपूर्वक २०७७/७८ मा स्वर्णमहोत्सव मनाइरहेका छौं। धार्मिक एवं शैक्षिक संस्थाको प्रत्यक्ष देवस्थलसमेत भएको र हजारौं जनताको आस्थाको केन्द्र भएको परिपेक्ष्यमा यस यज्ञभूमि, देवभूमि, साधना भूमिलाई हामी सबै एकजुट भई यसको आध्यात्मिक, शैक्षिक र भौतिक विकासमा ध्यान केन्द्रित गरिरहेका छौं। समग्र समाजको सत्प्रयास, सहयोग र निरन्तर लगानी, सत्प्रेरणा, माया, सद्भाव प्राप्त भइरहेको छ। यो स्वर्णमहोत्सव यसैको परिणाम हो। यज्ञभूमि, देवभूमि, साधनाभूमिको विकासका लागि हामी सबै एकजुट भई यसको आध्यात्मिक, शैक्षिक र भौतिक विकासमा गर्नुपरेको छ।

यस आश्रमका लागि समाजको सहयोग र निरन्तरता, लगानी, सत्प्रेरणा, माया, सद्भाव प्राप्त भएको छ र यही आस्थाको प्रतिफलले हामी स्वर्ण महोत्सवसम्मको यात्रा गर्न सफल भएका छौं। माना-मुठीदेखि मुरीसम्म र पुष्पको थुँगादेखि धुप, बत्ती, तिल, जौ, चामल, पूजासामग्री, त्यस्तै थोरै आर्थिकदेखि लाखौंलाख आर्थिक र निर्माण विकासमा लगानी गर्नुहुने महानुभाव, अन्नक्षेत्रको कोष, आश्रम अक्षय कोष, कठ्ठा कठ्ठासम्मको भूमिदान, गर्नुहुने सज्जन महानुभाव, संस्थाको आधा दशकको यात्रामा हरेक पाइला पाइलामा साथ दिनुहुने सिङ्गो समाजप्रति आश्रम आभारी छ। समय समयमा समितिमा रही योगदान पुर्‍याउनुहुने समितिका उपसमितिका पूर्व पदाधिकारी महानुभावहरू, पूर्व शिक्षक, गुरुजन त्यसै गरी पूर्वविद्यार्थी मित्रहरूप्रति विशेष आदरपूर्वक सम्मान प्रकट गर्दछौं।

स्वर्ण महोत्सवले हामी सबैलाई थप दायित्व प्रदान गरेको छ। यसले अब उताको शताब्दी, सहस्राब्दीको यात्रालाई मार्ग प्रशस्त गर्दै सत्प्रेरणा प्रदान गर्दछ। आगामी पुस्ताले पनि यस सनातन, वेदपथलाई सहज रूपमा आत्मसात् गर्दै निरन्तरता दिन सक्ने बलियो जगका रूपमा हामी सबै मिलिजुली स्वर्ण महोत्सव मनाउँदै छौं। यसकै माध्यमबाट भविष्यलाई, सनातन मार्गको दिशाबोध पनि गरिरहेका छौं। हाम्रा आध्यात्मिक, धार्मिक र शैक्षिक गतिविधि एवं पद्धतिलाई नेपालको भूमि सुहाउँदो, परम्परागत, मूल्य-मान्यता, आदर्श, शास्त्रीय आधारमा प्रतिष्ठापित गर्न सक्नुपर्छ र हाम्रो गुरु र आचार्य परम्परालाई अटुट रूपले अगाडि बढाउनुपरेको छ। हाम्रा पूज्य गुरुजनहरूको सद्विचार, प्रेरणा, आशीर्वाद र समाजको ठूलो लगानी र कठिनतामा निरन्तर प्रयासको फल नै आजको यो आश्रम र विद्यालयको स्वरूप हो।

यसको तात्पर्य यतिले मात्र पूर्णता प्राप्त गरिसक्यो भनेर निष्क्रिय हुन सकिन्न।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समाजमा आध्यात्मिक जागरण र संस्थाको भौतिक विकासका साथै शैक्षिक गुणस्तरलाई अझ प्रभावकारी र स्तरीय बनाउँदै जानु छ। राष्ट्रमा धार्मिक जागरण ल्याउने गहन दायित्व हामी सबैमा आएको छ। हाम्रा पूर्वज गुरुजनका प्रतिमाहरू राख्ने कुरामा हामीले गरेको निर्णयअनुसार क्रमशः राख्दै जान सक्दा गुरुजनहरूप्रतिको सच्चा अभेद भाव हाम्रो समाजमा स्पष्ट हुन्छ र हामीले यसै गरी सिङ्गो समाजलाई एकसूत्रमा यथावत् कायम राख्न सफल हुनेछौं। संस्थाको शक्ति एकतामा हुन्छ। अनेकतामा एकता आज धर्मको मर्म हो। यो एकता राष्ट्रमा नै आवश्यकता भएको कुरा सिङ्गो राष्ट्रले बोध गरिरहेको छ।

स्वर्ण महोत्सवको पावन सुअवसरमा श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.को स्मारिका प्रकाशनमा ल्याउनका लागि श्री विवेकाश्रम कार्यसमितिले प्राध्यापक आचार्य भवानीप्रसाद खतिवडाज्यूको संयोजकत्वमा स्मारिका सम्पादन समिति गठन गर्‍यो। सो समितिले अथक सत्प्रयास र मिहिनतपूर्वक कार्य गर्न सफल भयो। विभिन्न विद्वान्हरूका विविध शीर्षकका लेखहरूलाई सङ्कलन गरी सम्पादन गर्ने जस्तो महत्त्वपूर्ण कार्य यस समितिले गरेको छ। यसका लागि आश्रम तथा विद्यालय समिति उहाँहरूप्रति आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछ। प्रस्तुत स्मारिकाको लेखन क्रम सत्प्रयास श्रीगणेश "अथ"मात्र हो। हाम्रा धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, गतिविधि र पूज्यपाद हाम्रा अग्रज मान्यवर आचार्य गुरुजनहरूका समग्र जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वका बारेमा प्रशस्त लेख्य सामग्री अझ बाँकी छन्, लेखन कार्यलाई सधैं निरन्तर गर्दै लानुपर्ने छ।

यस स्मारिकामा जे-जस्ता लेख-रचना आएका छन्। हामी पाठकले धेरै कुरा अवश्य पाउने छौं र नीरक्षीरविवेकी भई आगामी दिनका लागि सुझाव दिनुपर्छ। यसमा परिमार्जन हुँदै जान सक्छ। लेखरचनामा कहिलेकाहीं भावात्मक कुराले पनि स्थान पाउँछ, तर स्मारिका र इतिहासलाई लेख्दा यथार्थ सत्यका आधारित वस्तुपरक चित्रण प्रस्तुतिको विशिष्टता रहन्छ। पचास वर्षको लामो कालखण्ड बितेकाले एकैचोटि सबै कुरा तथ्यगत सङ्कलन हुन गाह्रो हुन्छ, यो व्यावहारिक कठिनाइ पनि हो। आफ्ना भावना, विचारलाई लेखको माध्यमबाट प्रस्तुत गरी पठाउनुहुने लेखकज्यूहरूप्रति पनि यो आश्रम समिति धन्यवाद प्रदान गर्दछ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।

अन्त्यमा, आश्रम र विद्यालयको उत्तरोत्तर प्रगतिमा लाग्न सक्ने क्षमता र सद्विचार भगवान्बाट हामी सबैलाई प्राप्त भइरहोस् र यहाँहरू सबैको यस संस्थाप्रतिको यस्तै सद्भाव र सच्चिन्तन यसरी नै विकसित भइरहोस्।

ॐ तत्सत्।

धर्मगुरु व्यासाचार्य किशोर गौतम
अध्यक्ष, विवेकाश्रम, चारपाने, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेपाल सरकार

गृह मन्त्रालय

जिल्ला प्रशासन कार्यालय

०२३ ४५५१२५ कार्यालय
४५५०८८ फ्याक्स
४५६१२१ कार्यालय
४५६११७ प्रजिअ आवास
४५५१६६, ४५५०६६, ४५५१८८

पत्र संख्या :-०७८/७९

चलानी नं. :-

(.................... फाँट)

मिति :- २०७८/१२/२३

शुभकामना ।

स्वामी श्री विवेकानन्द पुरी महाराजले आफ्नो तपस्या, ध्यान, समाधिसंगै समाजको हित गर्ने उद्देश्यले तत्कालीन अवस्थामा शिक्षाको ज्योति जगाउनका लागि २०२८ सालमा स्थापित श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयले नेपालको शिक्षा क्षेत्रमा मेरुदण्डका रुपमा रही ठूलो सहयोग गरेको तथ्य सर्वविदितै छ । स्वामीजी आफैं सिद्ध सन्त हुनुहुन्थ्यो र समाजका धेरै व्यक्तिहरुलाई सहयोग एवं सत्मार्गमा लाग्न प्रेरित गर्नुहुन्थ्यो । वैयक्तिक रुपमा नेपाल एवं भारतका अनेक स्थानहरुमा भ्रमण गर्दै शिक्षाको क्षेत्रमा अतुलनीय योगदान गर्नुभएको थियो । उहाँले तपस्या गरेका धेरै ठाउँहरुमध्ये चारपाने पनि एउटा महत्वपूर्ण स्थान हो ।

चारपानेमा स्थापित यस आश्रमद्वारा सञ्चालित विद्यालयमा हजारौं विद्यार्थीहरुले औपचारिक एवं अनौपचारिक रुपमा शिक्षा लिएका छन् । यहाँ शिक्षित व्यक्तिहरु अहिले संसारका धेरै मुलुकहरुमा उच्च स्थानमा रहेको व्यहोरा यसै स्मारिकाबाट अवगत भएको छ ।

हाम्रा पूर्वज ऋषिमुनिहरुले अध्यात्म विद्या विनाको विद्याले मात्र लोककल्याण एवं व्यक्ति कल्याण नहुने बुझेर नै दुवै प्रकारका विद्याको व्यवस्था गरेका थिए । त्यही आदर्शलाई आत्मसात् गर्दै शिक्षाको ज्योति जलाइएको ५० औं वर्षको अवसरमा प्रकाशित हुन लागेको यस स्मारिकाले धेरै विषयहरुलाई समेटेर साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.को पूर्ण इतिहास र स्वामीका उपदेशहरुको र मार्गदर्शन समेतलाई समेटेको देख्दा मलाई अपार हर्षको अनुभूति भइरहेको छ ।

म यस स्वर्णजयन्तीको पूर्ण सफलताको कामना गर्दै विद्यालयले प्रदान गर्ने शिक्षाको ज्योति अझ चम्किलो हुँदै जाओस भन्ने शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

छविलाल रिजाल
प्रमुख जिल्ला अधिकारी
प्रमुख जिल्ला अधिकारी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिर्तामोड नगरपालिका

नगरकार्यपालिकाको कार्यालय

बिर्तामोड, झापा
१ नं. प्रदेश, नेपाल ।

☎०२३ - ५३०२४४

प.सं. : २०७८/०७९ प्रशासन शाखा
च.नं. : 6299

मिति :- २०७८/१२/२२

शुभकामना

पूर्वीय वाङ्मयबाट नै मानवीय मूल्यमान्यताको सार्थकता साबित हुन्छ । वैदिक सनातन परम्पराबाट नै अध्यात्मक भाव जगाई जीव शिव बन्न सक्छ भन्ने आदर्श बोकेर 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' को सोच राखी नेपाल भारतका अनेकौं क्षेत्रमा आश्रम एवं गुरुकुलहरुको स्थापना गर्ने क्रममा झापा चारपानेमा २०२८ सालमा आएर ब्रह्मनिष्ठ १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजले बीजारोपण गरेको यस आश्रम एवं विद्यालयले विश्वसामु आफ्नो पहिचान राख्न सफल भएको छ ।

यस संस्थाबाट प्राच्य अर्वाच्य विद्या अध्ययन गरी हजारौंको संख्यामा उत्पादित विद्यार्थीहरुले पूर्वीय दर्शनको प्रचार प्रसार र स्वधर्मनिष्ठाको महिमा देश विदेशमा फैलाउने कार्य भएबाट समाजले महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल गरेको छ ।

हाम्रा पूर्वज ऋषि महर्षिहरुको आदर्श जीवनचर्यासँग जोडिएर यो विवेकाश्रम एवं साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयले स्वर्णजयन्ती वर्षको पूर्णतासँगै स्मारिका प्रकाशन समेत गरी जनसमक्ष प्रस्तुत गर्ने सङ्कल्पित कार्यले सिङ्गो समाज लाभान्वित हुने भएको छ । हाम्रो बिर्तामोड नगरपालिकाकै उत्कृष्ट गहनाको रुपमा रहेको यस संस्थाको सदैव उच्च सम्मान साथ स्वर्णजयन्ती वर्ष पूर्णताको मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दै प्रकाशन हुन लागेको ऐतिहासिक स्मारिकाबाट समाजले पूर्णलाभ प्राप्त गरोस् भन्ने मंगलभाव व्यक्त गर्दछु ।

....
ध्रुव कुमार शिवाकोटी
नगर प्रमुख
ध्रुव कुमार शिवाकोटी
नगर प्रमुख

Email : info@birtamodmun.gov.np. btmnp53@gmail.com || Website : birtamodmun.gov.np
"पूर्वाधारयुक्त नगर, विषादीरहित कृषि र व्यवसायको अभिवृद्धि,
सभ्य र स्वस्थ नागरिक, बिर्तामोड नगरपालिकाको समृद्धि"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पादकीय...

नेपालको पूर्वी क्षेत्रमा रहेको झापा जिल्लाको चारपानेमा अवस्थित श्री विवेकाश्रम श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी गुरुबाट वि.सं. २०२८ सालमा स्थापित वैदिक धर्म, दर्शन, अध्यात्म संस्कार र ज्ञानको प्रवाह गर्ने विशिष्ट आश्रम हो । आश्रम स्थापनाकै समयदेखि गुरुले यहाँ गुरुकुल स्थापना गरी अध्यात्मज्ञान एवं वैदिक शिक्षा पठनपाठनको समेत आरम्भ गर्नुभएको हो। यही गुरुकुलले आज साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको स्वरूप ग्रहण गरेको छ। यी दुवै संस्था (आश्रम र विद्यालय) आज पचास वर्ष लामो कालखण्ड पार गरी स्वर्णमहोत्सव मनाउने अवस्थामा आइपुगेका छन् । यस अवसरमा आश्रम कार्य समितिले विभिन्न कार्यक्रमसहित स्वर्णमहोत्सवको आयोजना गरेको छ। त्यसैको एउटा पक्षका रूपमा स्मारिका सम्पादन समिति गठन गरी स्मारिका प्रकाशन गर्ने निर्णय भएअनुरूप सम्पादन समितिलाई स्मारिका सम्पादनको जिम्मेवारी दिएकामा समितिले कार्य सम्पन्न गरी स्मारिका प्रस्तुत गरेको छ ।

स्मारिकामा आश्रम र विद्यालयले गरेका, धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक योगदान एवं हाम्रा पथप्रदर्शक सन्त, तपस्वी, आदर्श गुरुहरूका जीवनी एवं उहाँहरूका जीवनगाथा र उहाँहरूले गर्नुभएका सत्कर्महरूलाई समग्रमा समेट्ने प्रयास भएको छ। यसका साथै स्मारिकामा सनातन वैदिक धर्म र संस्कारगत मूल्य-मान्यता समेटिएका शास्त्रीय लेख/रचना; आश्रम र विद्यालयसँग सम्बन्धित विषय र गतिविधि; आश्रम र विद्यालयसम्बन्धी संस्मरण एवं कविताहरूसमेत रहेका छन्। आश्रम र विद्यालयले समेट्दै ल्याएका आर्ष शिक्षा र सनातन संस्कार-परम्परालाई शास्त्रीय विषयका लेख/रचनाहरूमा प्रायः समेट्ने प्रयास भएको छ भने संस्मरणात्मक लेख/रचनाहरूले आश्रम र विद्यालयसँग सम्बन्धित स्मृतिबिम्ब र गतिविधिहरूको चित्रण गरेका छन्। त्यस्तै कवितात्मक प्रस्तुतिमा कवि हृदयका भावनासमेत समेटिएका छन् ।

यो स्मारिका पचास वर्ष लामो अभिलेख भएकाले यसमा पाठक समूहले धेरै कुरा पढ्ने र जान्ने जिज्ञासा राख्नु स्वाभाविक हो; तर एउटै सामग्रीमा समग्र कुरा समेट्न निकै कठिन हुने रहेछ । लामो कालखण्डमा गरिएका कामहरूको समग्रमा अभिलेखीकरण गर्ने क्रममा कतिपय अभिलेख भेट्टाउन कठिनाइ अवश्य भएको छ । यो पहिलो प्रयास भएका कारणले यसमा समावेश हुनुपर्ने वा हुन सक्ने सामग्रीहरू समावेश हुन नसकेका पनि होलान्। तथापि, आगामी प्रकाशनहरूमा यस्ता अभाव पूर्ति हुँदै जाने विश्वास हामीले लिएका छौं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस स्मारिकामा समावेश कतिपय लेखरचनाहरू संस्थासँग विभिन्न समयमा आबद्ध महानुभावहरूका स्मृतिमा आधारित पनि रहेका छन् । सम्पादन समितिले ती महानुभावहरूका विचार तथा भावनालाई यथासम्भव दुरुस्त राख्दै उहाँहरूको स्मृति/लेखनीको सम्मान गर्ने प्रयास गरेको छ। तिथिमिति तथा तथ्याङ्कगत कुराहरूका सन्दर्भमा विभिन्न लेखहरूबिच मतैक्य नभएका अवस्थामा भने संस्थाका दस्तावेजहरूलाई आधार मानेर सच्याउने काम पनि भएको छ। तथापि, यस स्मारिकामा प्रकाशित सामग्रीमा फरक मत प्रस्तुत भएका अवस्थामा ती मत सम्बन्धित लेखकहरूका निजी भाव-विचार रहेको स्पष्ट पार्न चाहन्छौं। कतिपय विषय लिखित दस्तावेजमा समेत उपलब्ध नभएका स्थितिमा संस्थाको स्थापना कालदेखि आजसम्म निरन्तर योगदान गर्दै आउनुभएका वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध महानुभावहरूसँग छलफल तथा संवार्ता गरी सम्भव भएसम्म वस्तुगत यथार्थ प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरिएको छ । पूर्ण रूपमा तटस्थ र सतर्क भई काम गर्दागर्दै पनि प्रकाशित सामग्रीमा कतिपय त्रुटि-कमजोरी अवश्य रहेका हुन सक्छन्। यस्ता त्रुटिहरू मानवीय कमजोरी, प्राविधिक त्रुटि वा समयाभावका कारण रहेका हुन् भनी विज्ञ पाठकहरूले बुझ्नुहुने छ भन्ने हाम्रो विश्वास रहेको छ ।

सम्पादन समितिको आग्रहलाई स्वीकार गरी लेखक महानुभावहरूले अपेक्षाकृत सामग्रीहरू उपलब्ध गराएर सहयोग गर्नुभएको छ । कोरोना प्रकोपका कारण केही कठिनाइको सामना गर्नुपरे तापनि बारम्बार हामीले झक्झक्यारहँदा पनि झर्को नमानी सामग्री तयार गरी उपलब्ध गराउनुहुने सम्पूर्ण लेखक महानुभावहरूप्रति आभार प्रकट गर्दछौं । सामग्रीमा एकआपसमा रहेका भिन्नताहरूमा एकरूपता ल्याउनका लागि परामर्श दिने महानुभावप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछौं। उपलब्ध लेखरचनाहरूलाई यथोचित टङ्कण गरिदिनुहुने सहृदयी मित्र घनश्याम ओली एवं आवरण पृष्ठ तयार गर्ने सम्पन्न बस्नेतलाई विशेष धन्यवाद दिन्छौं।

संस्थाले दिएको जिम्मेवारीलाई यथासम्भव पूर्ण गरेका छौं र यो जिम्मेवारी दिएकामा संस्थाप्रति सदैव आभारी रहने छौं । धन्यवाद ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशकीय

श्रीविवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको लामो इतिहास छ । वि.सं. २०२८ सालदेखि आजसम्म यहाँ अनवरत संस्कृत शिक्षा, वैदिक सनातन धर्म, ज्ञान, कर्म, उपासना, सदाचार, शौचाचार र शास्त्रोक्त कर्महरूलाई अनुशरण गर्ने-गराउने कामहरू भइरहेका छन् । यस संस्थाले सनातन वैदिक धर्म, आध्यात्मिक ज्ञान र सामाजिक क्षेत्रमा जे जति कामहरू गरेको छ, त्यो सबै धर्मानुरागी सज्जन महानुभावहरूको सहयोग, सद्भाव र शुभेच्छाको परिणाम हो ।

कुनै पनि संस्था त्यसै उन्नति र प्रगतिको पथमा लम्कन सक्दैन, जहाँ निःस्वार्थ स्नेह, सहयोग र समर्पण भाव हुन्छ, त्यहाँ मात्र संस्थाको विकास र प्रगति सम्भव हुन्छ । तसर्थ यस संस्थाले आज जुन गति र उचाइ प्राप्त गरेको छ, यसको श्रेय पनि भौतिक, बौद्धिक, आर्थिक र शारीरिक सहयोग गर्ने महानुभावहरूमा नै जान्छ । पूज्यपाद परमहंस श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुले वि.सं. २०२८ सालमा जुन संस्थाको बिजारोपण गर्नुभयो, त्यही आज विशाल वृक्ष बनेर वैदिक सनातन धर्मानुरागी महानुभावहरूलाई छहारी दिइरहेको छ, जसको छहारीमुनि बसेर हामीहरू हाम्रा पूर्वज ऋषिमुनि, सन्त र महात्माहरूले दिएका दिव्य, ज्ञान, कर्म र भक्तिका विषयमा श्रवण, कीर्तन र मनन गरी परात्पर परमात्माको रसास्वादन गरिरहेका छौं । स्वामीजीको असीम आशीर्वाद, गुरुजनहरूको आगमन र श्रद्धालु भक्तजनहरूको श्रद्धाकै कारण यो परिसर पवित्र पुण्य तीर्थस्थल बनिरहेको छ । यहाँहरूले दिएका, मानु, मुठी, धान चामल र नगद सहयोगले आज यहाँको भूपरिसरको वृद्धि, विद्यालय, छात्राबास, भोजनालय, अतिथि निवास, सत्सङ भवन र दर्शनीय मन्दिरहरू निर्माण भइरहेका छन् । संस्थाले यहाँहरूले पुर्याउनु भएको ऐतिहासिक योगदान र श्रद्धाभावलाई कहिले बिर्सने छैन । यस लामो कालखण्डमा भए—गरेका काम र योगदान दिने व्यक्तिहरूको श्रद्धाभावलाई क्रमबद्ध सङ्ग्रह गर्ने उद्देश्य राखेर विवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको स्वर्णजयन्ती महोत्सवको पावन अवसरमा संस्थाले स्मारिका प्रकाशन गर्ने निर्णय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्यो । यसका लागि संस्थाले स्मारिका सम्पादन समिति गठन गरी समितिलाई सम्पादनको काम जिम्मा दिएअनुरूप सम्पादक समितिले कोरोनाको विषम परिस्थितिमा पनि अनवरत खटेर आफ्नो कार्य सम्पन्न गरेको छ । यस्तो परिस्थितिमा पनि देश विदेशबाट लेख रचना सङ्कलन गरी यो ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न गरेकोमा सम्पादक समितिलाई यो संस्था विशेष धन्यवाद अर्पण गर्दछ । यसैगरी जस जसले जहाँ जहाँबाट स्मारिका प्रकाशनका लागि चाहिने सामग्री सङ्कलन गरी सहयोग गर्नुभयो, उहाँहरूलाई पनि आश्रम सञ्चालक समिति धन्यवाद नदिइरहन सक्दैन । आजको व्यस्त समयमा पनि स्मारिकामा प्रकाशन गर्न योग्य शास्त्रीय विषय र ऋषितुल्य पूर्वाचार्य एवं सिद्ध महापुरुषहरूका जीवनी, आश्रम र विद्यालयसँग सम्बन्धित संस्मरण, गतिविधि र विविध विषयका लेखरचनाहरू उपलब्ध गराई अविस्मरणीय सहयोग गर्नु हुने विद्वान्, लेखक महानुभावहरूप्रति संस्था सादर सम्मान एवं धन्यवाद प्रदान गर्दछ ।

विषयको गाम्भीर्यतालाई महसुस गरी पाठकसमक्ष पुर्याउनुपर्ने कतिपय विषयमा विषयविज्ञ लेखकका लेखहरू कतै—कतै दोहोरिन तेहरिन पनि गएका छन् । यसलाई संस्थाको उद्देश्य सम्झी स्वीकार गर्नुहुन अनुरोध गरिन्छ ।

अति व्यस्त समयका बाबजुद पनि संस्थाको अनुरोधलाई स्वीकार गरी स्मारिकालाई आवरण सज्जा र सम्पादन कार्यमा महत्वपूर्ण निःशुल्क सहयोग गर्नु हुने श्री घनश्याम ओली एवं आवरण पृष्ठ तयार गरी मुद्रण कार्यमा महत्वपूर्ण सहयोग गर्नु हुने सिद्धगणेश प्रेसलाई पनि संस्था हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गर्दछ ।

यो एउटै स्मारिकामा सबै विषय, सन्दर्भ र ऐतिहासिक तथ्यहरू समेटिन नसकिएका पनि हुन सक्छन् । यहाँहरूले देखेका, भेटेका थप कुराहरू उपलब्ध भएको खण्डमा आउँदो प्रकाशनमा समेटिने नै छन् । हामीले सङ्कलन गरेका सामग्रीहरूमा कारणवश भएका त्रुटिहरू आगामी दिनमा अवश्य सच्याइने नै छ । संस्था सदैव यहाँहरूको सहयोग, आत्मीय व्यवहार र सुझावको सदैव अपेक्षा राख्दछ ।

अस्तु परिपूर्णम् ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	लेखक	पेज नं.
	जीवनी खण्ड		
१.	श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीको जीवनी	डिल्लीराम गौतम	५
२.	षडानन्द गुरुको जीवनी र व्यक्तित्व	प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा	२९
३	पं. यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) को सङ्क्षिप्त जीवनी	नीतिराज रेग्मी/हेमराज अधिकारी	२७
४	योगानन्द गुरुको संक्षिप्त जीवनी	केदारनाथ खतिवडा	३६
	महर्षि टेकनाथ गौतम गुरुको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व	डा. ठाकुरप्रसाद पोखरेल	४१
५.	गायत्रीस्वरुप ब्रह्मचारीको सङ्क्षिप्त जीवनी	लक्ष्मीप्रसाद रेग्मी/घनश्याम ओली	६३
६.	महाप्रभुका शिष्य ब्रह्माभ्यासानन्द गिरिको सङ्क्षिप्त परिचय	डा. रुद्रानन्द ब्रह्मचारी (ध्रुवश्रीः)	७५
७.	देवनारायण (देवीप्रसाद) दाहाल गुरुको जीवनी, व्यक्तित्व र योगदान	प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा	७९
८.	शान्ति महाराज (श्री १०८ स्वामी नारायणानन्द सरस्वती) को सङ्क्षिप्त जीवनी	इन्दिराज/गोविन्द पौडेल	९०
९.	पण्डित टेकनाथ गौतमको सङ्क्षिप्त परिचय र हरि कीर्तन	भानुभक्त अधिकारी	९४
१०.	आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द अधिकारीका विषयमा चलेका किंवदन्ती	हरि मञ्जुश्री	९८
११.	आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य परम्पराका सिद्ध माताहरू	घनश्याम ओली	१०५
	संस्मरण खण्ड		
१२.	वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्	श्री १००८ स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती	१११
१३.	गुरुआज्ञा शिरोधार्य गरिरहेको छु	पं. बद्रीशरण खतिवडा	११५
१४.	जेठा गुरु (योगानन्द) ले सन्यास लिँदाको अवस्था...	प्रा. डा. काशीनाथ न्यौपाने	१२२
१५.	गुरु विवेकानन्दको स्मरण	देवीप्रसाद पौडेल	१२९

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र. सं.	विषय	लेखक	पेज नं.
१६.	आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य परम्पराका सिद्ध महापुरुष	जगन्नाथ पौडेल	१३७
१७.	श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराजलाई सम्झँदा	पुष्पलाल तिम्सिना	१३९
१८.	श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराजसँग रहँदाका स्मृतिचित्रहरू	विष्णुप्रसाद पौडेल	१४२
१९.	विवेकानन्द गुरुलाई सम्झँदा...	डा. पुण्यप्रसाद सिग्देल	१५१
२०	सानो वेदव्यास	भीष्मभूषण सङ्ग्रौला	१५७
२१.	गुरुको सान्निध्य र विवेकाश्रम	घनश्याम कडरिया	१६०
२२.	विवेकानन्द गुरुसँगका केही सम्झना	लोकनाथ खनाल	१६४
२३.	गुरुसँग बिताएका अनौठा क्षणहरू	लोकनाथ भण्डारी	१६६
२४.	गुरुसँग बिताएका केही पल	हेमलाल तिम्सिना	१६८
२५.	मेरो संस्मरणमा स्वामी विवेकानन्द गुरुदेव	नन्दराम पौड्याल	१७०
२६.	स्वामी विवेकानन्द पुरी (माहिला गुरु) र विवेकाश्रम	रामप्रसाद ओझा	१७२
२७.	टेकनाथ गौतमप्रति शब्द श्रद्धाञ्जली	पं. लेखनाथ दाहाल	१७४
२८.	मनको आकाशमा मेरो गुरुकुल	डमरु पौडेल	१७६
२९.	चारपाने विद्यालय : एक संस्मरण	हरिप्रसाद खतिवडा	१९१
३०.	सार्थक शिक्षाको अनुभूति	सन्तोष न्यौपाने	१९६
३१.	पाँचथरका केही धार्मिक क्षेत्र र व्यक्तित्वहरू	दिलीपकुमार सङ्ग्रौला	१९८
३२.	संस्कृत शिक्षा आजको आवश्यकता	पिताम्बर पौडेल	२०५
३३.	सत्कर्मको फल	ध्रुवप्रसाद न्यौपाने	२०८
३४.	विवेकाश्रम र नारी शिक्षा	चित्रा भण्डारी	२०९
३५.	विवेकाश्रमको विकासमा मातृशक्तिको भूमिका	खिवराज न्यौपाने	२१२
३६.	योगानन्द गुरुसँगको सम्झना	घनश्याम कडरिया	२१४
३७.	आश्रमप्रति निष्ठा	डमरुबल्लभ खतिवडा	२१६
३८.	विवेकाश्रम	पं. श्री डिल्लीराम रिजाल	२१७
३९	आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य परम्पराका सिद्ध महापुरुष	जगन्नाथ पौडेल	२१८
४०.	मेरो देश मेरो स्वर्ग	भरत भट्टराई	२१२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र. सं.	विषय	लेखक	पेज नं.
	शास्त्रीय विषय खण्ड		
४१.	धर्मदर्शने मानवीय-मूल्यानि	प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी	२२१
४२.	यज्ञसंस्कृत्या परिपूरितं समग्रं जगत्	प्रा.डा. काशीनाथ न्यौपाने	२२४
४३.	भक्तिरसविमर्शः	डा.तेजनाथ पौडेल	२३०
४४.	पौरस्त्यदर्शनेषु दुःखतत्त्वविमर्शः	डा.विश्वनाथ धिताल	२३५
४५.	समासलक्षणं तद्भेदविमर्शश्च	जगन्नाथः शर्मा	२४१
४६.	वेदान्त बोध	अनन्तश्री महामण्डलेश्वर स्वामी आत्मानन्द गिरि	२५३
४७.	श्रेय र प्रेयमार्गको गन्तव्य	श्री १००८ स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती	२५७
४८.	अध्यात्मरामायणको दार्शनिक सार	श्री १००८ स्वामी रमणानन्द गिरि	२६१
४९.	वेद र वेदाङ्ग परिचय	श्री १००८ स्वामी केशवानन्द गिरि	२६६
५०.	वेदान्त दर्शन : व्यावहारिक विज्ञान	प्रा. शिवगोपाल रिसाल	२८१
५१.	अद्वैत परम्परामा श्रीशङ्कराचार्य	शरतकुमार भट्टराई	२८८
५२.	संस्कारको परिचय र महत्त्व	डा. गुरुप्रसाद सुवेदी	३१०
५३.	आयुर्वेदमा उल्लिखित स्वस्थ जीवनका आधार	डा.काशीराज शर्मा सुवेदी	३२२
५४.	वैदिक दर्शनभित्रको रहस्य	पं. श्री अग्निप्रसाद बराल	३३१
५५.	ब्रह्ममूलं सनातनम्	विष्णुभक्त भण्डारी	३४५
५६.	गायत्री तत्त्व र गायत्रीउपासना विमर्श	प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा	३५०
५७.	आशौचः केही समस्या र समाधान	प्रा. डा. देवमणि भट्टराई	३६६
५८.	पूर्वीय परम्परामा विवेकाश्रम साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. तथा गुरुकुलीय शिक्षापद्धति	कोमलप्रसाद पोखरेल	३७४
५९.	हामी र हाम्रो सनातन सम्पदा	डिल्लीराम गौतम	३८४
६०.	धर्मः राष्ट्रनिर्माणको मूल आधार	प्रा.मोहनप्रसाद भण्डारी	३९६
६१.	परम्परागत पुराण श्रवण विधिका सन्दर्भमा विवेकाश्रम	आचार्य दुर्गाप्रसाद खतिवडा	४०४
६२.	श्रीमद्भगवत्पाद आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्यको दर्शन	डा. बीपीराज न्यौपाने	४१०
६३	ज्योतिष शास्त्र र हस्तरेखा	ज्यो.पं. गङ्गाप्रसाद खरेल	४२३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र. सं.	विषय	लेखक	पेज नं.
६४.	पूर्वीय धर्मशास्त्रका आधारमा सन्तान उत्पादनका उपायहरू	तुलसी भारद्वाज	४३०
६५.	Ancient Gurukula education system in Nepal and India	Prof. Dr. Kashinath Nyaupane	४३३
६६.	यज्ञको स्वरूप	यज्ञाचार्य पं. हाकिम भण्डारी	४४१
६७.	सन्न्यास धर्म	भीमप्रसाद पौडेल	४४५
६८	सत्य, निष्ठा र उपकार : हाम्रो दर्शनको आधार	चन्द्रप्रसाद खनाल	४४८
	कविता खण्ड		
६९.	स्वामी विवेकानन्द पुरी (माहिला गुरु)	इन्दिराज पौडेल	४५५
७०.	गुरुकुलको सम्झना	वीरेन्द्र नेपाल	४६७
७१.	विवेकाश्रमलाई सम्झँदा...	हरिप्रसाद भण्डारी	४६८
७२.	मेरो पाठशाला	प्रजापति धिताल	४६९
७३.	श्री विवेकाश्रम स्वर्ण महोत्सव	यज्ञराज पकुवाल	४७०
७४.	चिन्तन	लहेन्द्र भट्टराई	४७२
७५.	शुभकामना	हरिप्रसाद न्यौपाने	४७४
७६	सुस्वागत	कृष्णमाया रिजाल	४७६
	आश्रम तथा विद्यालय खण्ड		
७७.	श्री विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद मा.वि. चारपाने, झापा(वि.सं. २०२८ देखि २०७८ सम्म)	दामोदर न्यौपाने	४७९
७८.	श्री विवेकाश्रम र यसको भौतिक संरचना	अम्बिकाप्रसाद रेग्मी	४९६
७९.	गुरुकुल अध्ययन परम्परा र साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.	भूमिप्रसाद दाहाल	५०८
८०.	श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराज र उहाँबाट स्थापित संस्थाहरू	गोविन्दप्रसाद पौडेल	५२७
८१	श्रीस्वर्गद्वारी आश्रम र यसको प्रभाव	अशोक पौडेल (श्रौत)	५४२
८२.	श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि. र झापाका गुरुकुलहरूबीचको अन्तरसम्बन्ध	सोमनाथ गौतम	५५२
८३.	धार्मिक एवं तीर्थभूमि विवेकाश्रम	आचार्य गायत्री दाहाल	५६३
८४	साङ्गवेद सं.मा.वि. र पिण्डेश्वर विद्यापीठको सम्बन्ध	काशीनाथ पौडेल	५६७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र. सं.	विषय	लेखक	पेज नं.
८५.	श्री विवेकाश्रममा सञ्चालित मुष्टिदान (अन्नक्षेत्र)	पूर्णानन्द तिम्सिना	५७१
८६.	संस्मरण आश्रम संस्कृतिको–उपलब्धि भ्रमण अवलोकनको	कुलप्रसाद पराजुली	५७४
८७.	धर्मरक्षाका लागि विवेकाश्रम	पं. मधुसूदन भट्टराई	५८४
८८.	गौरवशाली हाम्रो विवेकाश्रम एवं विद्यालय	मदन अधिकारी	५८६
८९.	गुरुकुल संस्कृत विद्यालयमा अङ्ग्रेजी शिक्षाको आवश्यकता	कमल उपाध्याय मिश्र	५९०
९०.	श्री विवेकाश्रम तथा श्री साङ्गवेद सं.मा.वि.सँग जोडिएका प्रसङ्ग	जगन्नाथ भण्डारी	५९२
९१.	व्यवस्थापन समिति (आश्रम तथा विद्यालय) ले गरेका महत्त्वपूर्ण निर्णयहरू	छन्दुराम भण्डारी	५९५
९२	A Short glimpse of Vivekashram & Sangaved SMV	Shyam Prasad Dahal	६२७
	परिशिष्ट खण्ड		
९३.	परिशिष्ट १ श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको विद्यार्थी विवरण	अम्बिकाप्रसाद रेग्मी	६२९
९४.	परिशिष्ट २ भूमिसम्बन्धी विवरण (जम्मा क्षेत्रफल १-२-१८.५)		६३८
९५.	परिशिष्ट ३ श्रीरामजानकी मन्दिर जिर्णोद्धारमा सहयोगी दाताहरूको नामावली २०५७-५८		६४०
९६.	परिशिष्ट ४ यज्ञशाला जीर्णोद्धारमा सहयोगी दाताहरूको नामावली २०७६-७७		६४८
९७.	परिशिष्ट ५ श्री विवेकाश्रम कार्यसमिति, चारपाने, झापा		६५५
९८.	परिशिष्ट ६ अन्नक्षेत्र सञ्चालनका लागि अक्षय कोषमा रु. ३५,००० भन्दा माथि रकम प्रदान गर्नुहुने संस्थाका आजीवन सदस्यहरूको नामावली		६५७
९९.	परिशिष्ट ७ आश्रम अक्षय कोषका लागि रु. २,१०० भन्दा माथि रकम प्रदान गर्नुहुने दाताहरूको नामावली		६६९
१००	परिशिष्ट ८ अध्यापन कार्यमा योगदान गर्ने (हाल कार्यरत नरहेका) शिक्षकहरूको विवरण (२०२९-२०७८)	जगन्नाथ भण्डारी	६९२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र. सं.	विषय	लेखक	पेज नं.
१०१.	परिशिष्ट ९ कलधारा निर्माण गर्ने महानुभावहरू		६९३
१०२.	परिशिष्ट १० शिक्षक-कर्मचारी विवरण (श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, चारपाने, झापा)		६९४
१०३.	परिशिष्ट ११ शिक्षक-अभिभावक सङ्घ (श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय)		६९५
१०४.	परिशिष्ट १२ बालकक्षा विद्यार्थी विवरण २०५३-२०६२		६९६
१०५.	परिशिष्ट १३ विभिन्न शीर्षकमा प्राप्त सहयोग विवरण		६९७
१०६.	परिशिष्ट १४ लेखा समिति र कर्मचारी विवरण (श्रीविवेकाश्रम)		६९९
१०७.	परिशिष्ट १५ स्वर्णमहोत्सव २०७८ को दीप प्रज्वलनसहित शुभारम्भ गर्ने महानुभावहरूको नामावली		७००
१०८.	परिशिष्ट १६ श्री साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, विवेकाश्रममा अध्ययन गरी रोजगारीका विभिन्न कार्यक्षेत्रमा सेवा पुऱ्याउने महानुभावहरूको विवरण (सम्पर्कमा आएसम्म) निम्नानुसार रहेको छः		७०१
१०९.	परिशिष्ट १७ श्री १०८ विवेकानन्द गुरुको प्रतिमा निर्माण तथा स्मारिका प्रकाशनमा सहयोग गर्नुहुने दाता महानुभावहरूको नामावली		७१०
११०.	परिशिष्ट १८ साधनास्थलका विविध फोटाहरू		७१३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवनी

खण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीविवेकाश्रमः

✍ पं. टेकनाथ गौतमः

नेपालपूर्वदिग्भागे विद्यते झम्प मण्डलम् ।
पुण्यजलाऽत्र कनका वहति पाप नाशिनी ॥ १

मेची नदी या वहति पूर्वसीमा प्रदायिनी ।
तयोर्मध्ये चारपाने ग्रामोऽस्ति धर्मरक्षकः ॥२

चारपाने नाम्नि ग्रामे झापामण्डल प्रान्तगे ।
पुण्यदो वर्तते तत्र श्रीविवेकाश्रमः शुभः ॥३

स्थापित आश्रमोऽयम् हि ब्रह्मीभूतेन स्वामिना ।
विवेकानन्द नाम्ना हि विवेकाश्रमः कीर्तितः ॥४

देवीप्रसाद नामासीत् आत्रेय गोत्रसम्भवः ।
ब्राह्मणवंशजो ज्ञानी स सन्न्यासोऽभवत् सुधी ॥ ५

विवेकानन्द श्रृङ्गेरी मठाम्नाय पुरी स्मृतः ।
तस्य नाम्ना स्थापितोऽयं श्रीविवेकाश्रमः शुभः ॥ ६

वर्णाश्रम सदाचार-युतो धर्मः सनातनः ।
तस्य संरक्षणार्थाय स्थापित आश्रमः किल ॥ ७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीको जीवनी

✍ डिल्लीराम गौतम

पृष्ठभूमि

सर्वलोकहिते सक्ताः साधवः परिकीर्तिताः सबैको हितसाधनमा लाग्ने व्यक्ति नै साधु हुन्छ[१] तर यस्ता साधु सबै स्थानमा पाउन कठिन हुन्छ।[२] शास्त्रीय यी कथनहरूलाई स्मरण गर्दा हामी भाग्यवान् छौं किनभने हामीले स्वर्गद्वारी महाप्रभु, बालागुरु षडानन्द, ब्रह्माभ्यासानन्द, योगेश्वराश्रम र विवेकानन्द पुरीहरूको मार्गदर्शन र छहारी प्राप्त गरेका छौं।

सिद्ध महापुरुषहरू पूर्वजन्मका अधुरा काम पूरा गर्न र ईश्वरका इच्छाले कुनै विशेष कर्म र धर्म प्रचारका लागि यस धर्तीमा आएका हुन्छन्। उद्देश्यअनुरूपका कर्म गरी विशेष परम्परा, सिद्धान्त र व्यवहारहरू स्थापित गरेर उनीहरू जान्छन्। उनीहरू किन आएका थिए भन्ने कुरा पछि मात्र थाहा हुन्छ। यस्ता महात्माहरूमा एक श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी पनि हुनुहुन्छ।

नेपालको पूर्वी पहाडको पाँचथर अनादि कालदेखि नै सिद्धमहात्माहरू जन्मिएको स्थान हो। यहाँ ऋषि, महर्षि र देवताहरूले तपस्या गरेका अनगिन्ती गुफाहरू छन्। भनिन्छ, यहाँका पहाडी चुचुराहरूमा अद्यापि देवताहरू निवास गर्दछन्। नेपाल पुण्यभूमि, देवभूमि र सिद्धभूमि हो त्यसैले यी पहाडी शृङ्खलाहरूमा सिद्ध महापुरुषहरूले तपस्या र यज्ञानुष्ठानहरू गरेका छन्। वास्तवमा यी पहाडी शृङ्खला पावन क्षेत्र हुन्।

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी पनि पाँचथरको यही पहाडी शृङ्खलामा जन्मनुभएको हो। उहाँको पैतृक इतिहास हेर्दा पं. श्रीहर्कका पाँच सन्ततिमध्ये जेठा मित्रलाल, माहिला विश्वामित्र र साहिँला भवानीशङ्करले पाँचथरको जोरपोखरी क्षेत्रमा बसोबास गरेको इतिहास भेटिन्छ। अरू दुई भाइ भने भुटानतिर लागेका थिए भनिन्छ। जेठा मित्रलालका सन्तान थिएनन्। उहाँले माहिलो भाइ विश्वामित्रका द्वितीय पुत्र हेमलाललाई पुत्रवत् पालन-पोषण, शिक्षादीक्षा र विवाह दानका कर्महरू गरिदिनुभएको थियो।

हेमलाल कर्मकाण्ड, वेद, उपनिषद्का ज्ञाता हुनुहुन्थ्यो। भारपाकी प्याकुरेल परिवारकी छोरी धनमायासँग विवाह गरी उहाँहरूबाट हरिदत्त, देवीप्रसाद र पशुपति गरी

✍ अध्यापक, नेपाल ल क्याम्पस, भक्तपुर, ठिमी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीन पुत्र र कौशिला र पद्मा गरी दुई पुत्रीसमेत ५ सन्तान जन्मिएका थिए। द्वितीय पुत्ररत्न देवीप्रसाद नै स्वामी विवेकानन्द हुनुहुन्छ। समयान्तरमा दाजु र उहाँ सन्न्यास हुनुभयो भने भाइ पशुपति कर्मकाण्डी हुँदै अन्त्यमा गृहस्थ सन्न्यास हुनुभयो। एकै परिवारका तीन सन्तान सन्न्यास हुनु सामान्य कुरा थिएन।

आध्यात्मिक चिन्तनकै क्रममा देवीप्रसाद माहिला गुरु, माहिला ब्रह्मचारी र ध्यानी ब्रह्मचारी हुँदै श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द हुनुभयो भने दाजु हरिदत्त, जेठा गुरु हुँदै श्री १०८ स्वामी योगेश्वराश्रम हुनुभयो। दिदीबहिनी गृहस्थी भएर पनि तपस्विनी जस्तै ईश्वरमा समर्पित हुनुहुन्थ्यो। जेठी बहिनी कौशिलाको विवाह मेमेङ नम्लुवानिवासी हरिकृष्ण गौतमसँग भएको थियो। उहाँबाट जन्मनुभएका पं. टेकनाथ गौतम प्रसिद्ध विद्वान् हुनुहुन्थ्यो, जसलाई नेपालको पूर्वी क्षेत्रमा गौतम गुरु भनेर चिनिन्छ। कान्छी बहिनीको भने मिश्रसँग विवाह भएको थियो।

विवेकानन्दले स्थापित गरेका वैदिक परम्पराका प्रभाहरू र शिक्षाका आभाहरू आज पनि देदीप्यमान छन्। उहाँले स्थापित गरेका संस्था र हरेक कर्महरूबाट स्पष्ट हुन्छ कि श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द नेपाल धराका एक प्रसिद्ध शिक्षासेवी, तपस्वी सिद्धयोगी हुनुहुन्छ।

महात्माहरू कोही आफ्नो जीवनमुक्तिका लागि कर्म गरिरहेका हुन्छन् भने कोही सिङ्गै समाजलाई सत्मार्ग देखाउने कर्म गरिरहेका हुन्छन्। यी दुई प्रवाहमा विवेकानन्द समाजलाई सत्मार्ग दर्शन गराउने सिद्धपुरुष हुनुहुन्छ।

जन्म र बाल्यकाल

मेची अञ्चलको पाँचथर जिल्लामा पर्ने मच्छेबुङ भन्ने स्थानमा वि.सं. १९६२ माघको वसन्त पञ्चमीका दिन देवीप्रसादको जन्म भएको हो। उहाँ पिता हेमलाल र माता धनमाया पौडेलका द्वितीय पुत्ररत्न हुनुहुन्छ। उहाँको नामकरणको समयमा जुरेको नक्षत्र नाम देवीप्रसाद हो। उहाँका दाजु र भाइ पनि सुप्रसिद्ध योगी बन्नुभयो। गाउँघरमा दाजुलाई जेठा गुरु, उहाँलाई माहिला गुरु र भाइलाई कान्छा गुरु भनेर अद्यापि सम्बोधन गरिन्छ। एउटै परिवारका सबै सदस्य उत्तिकै आध्यात्मिक र आत्मचिन्तक बनेर समाजमा धर्म प्रचारक, सदाचार प्रवर्धक बन्नुभएको छ।

देवीप्रसाद बाल्यकालदेखि नै अन्तरङ्ग स्वभावको हुनुहुन्थ्यो। उहाँका पिता हेमलाल विद्वान् र आध्यात्मिक चिन्तक हुनुहुन्थ्यो भने हजुरबुबा मित्रलाल साधु हुनुहुन्थ्यो। त्यसैले घरमा ईश्वर, आत्मा र धर्मका विषयमा सत्सङ्ग हुने गर्दथ्यो, त्यसैले उहाँले बुबा र हजुरबुबाले मानिसहरूबिच गराएका सत्सङ्ग बाल्यकालदेखि नै सुन्दै आउनुभयो। उहाँका घरपरिवारमा आध्यात्मिक वातावरण र तदनुकूलको व्यवहार थियो। बाल्यकालमा प्यारो नाति बनेर हजुरबुबाकै पछि लागेकाले साधु हजुरबुबाको असीम स्नेह उहाँले पाउनुभएको थियो। हजुरबुबाकै सङ्गतले देवीप्रसादमा साधुपनको संस्कार पनि विस्तारै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सदैं आएको थियो। उहाँमा बाल्यकालदेखि नै ईश्वरप्रतिको चिन्तन र सत्कर्मप्रतिको भावना जागृत भएको थियो। आज यो परिवार समग्र नेपालका लागि प्रेरक र उदाहरणीय बनेको छ।

उहाँ जन्मनुभएको यो परिवार भौतिक दृष्टिले हेर्दा कृषिकर्ममा लागेको सामान्य परिवार नै थियो तर आध्यात्मिक दृष्टिले यो परिवार सामान्य थिएन। हुन त सामान्य कृषिकर्मले यो परिवार धान्न मुस्किल परेकाले उहाँका पिताले गाईपालनको काम पनि गर्नुभएको थियो। सानैदेखि कहिले हजुरबुबा त कहिले पितासँग घरगोठ गर्नु पर्ने परिस्थिति देवीप्रसादको जीवनमा आयो। यस परिवेशलाई आत्मसात् गर्दै व्यतीत भएको देवीप्रसादको बाल्यकाल त्यति सुखद देखिँदैन। पिताले इमखिम र दबेखर्कमा गोठ राख्नुभएको थियो। विवाहपछिका दिनमा उक्त गोठको अभिभारा देवीप्रसाद र दाजु हरिदत्तले लिनुभएको थियो। देवीप्रसाद बाल्यकालदेखि नै समस्यासँग नडराउने स्वभावको व्यक्ति हुनुहुन्थ्यो। खेल्ने, डुल्ने बालापनका रहरहरू घरगोठका कर्महरूसँगै घुलमिल भए। धैर्यपूर्वक ती अप्ठ्यारा र आइपरेका समयसँग जुद्धै आउनुभयो। सन्तोषजनक रूपले बालापनमा खानपानको अवसर नजुटे पनि अगाडि आएका दुःखसुखसँग जुध्दै सांसारिक कर्म गर्दै उहाँले जीवनलाई सहजीकरण गर्दै ल्याउनुभएको देखिन्छ।

उहाँले घरघोठ कामसँगै हाँसखेल गर्दै बाल्यकाल, किशोरावस्था बिताउनुभएको छ। उहाँका हजुरबुबा मित्रलाल साधु चरित्रको हुनुहुन्थ्यो। प्रायः छरछिमेकले मित्रलाललाई साधु पौडेल भनी सम्बोधन गर्दथे। मित्रलाल साधना, तपस्या गर्ने गर्नुहुन्थ्यो। यस्ता व्यक्तिको संरक्षकत्व बाल्यकालदेखि नै देवीप्रसादले पाउनुभयो। त्यसैले साधुत्व वा अन्तर्वृत्ति देवीप्रसादमा नजानिंदो गरी बढ्दै जाँदै थिए।

संस्कारका अधिक अंश त प्रारब्ध कर्मबाट आएका हुन्छन्। यसपछि परिवार, शिक्षा, समाज र क्रियमाण कर्मका सङ्गतबाट नै विकसित हुन्छन्। उहाँमा पारिवारिक परिवेश र प्रारब्धगत हरेक संस्कार व्यवहारमा देखिन थालिहाले। व्यवहारका हरेक विषयी कुराहरूमा उहाँको त्यागवृत्ति देखिन थाल्यो। अन्तर्मुखी चरित्रको विकास हुँदै गएपछि उहाँमा अन्तर्वृत्ति वा अन्तर्यात्राको तिर्सना भने बढ्दै जान थाले। यति हुँदाहुँदै पनि उहाँले घरगोठका घरायसी कामकाजप्रतिको आफ्नो कर्तव्य निरन्तर गरिरहनुभयो।

पिता र पितामह (हजुरबुबा) गाईपालन/गोसेवामा लागिरहनुभएको थियो। त्यसैले विवाह अगाडि र पछाडि पनि उहाँ प्रायः गोठमै बस्ने गर्नुहुन्थ्यो। त्यसैले बुबा/हजुरबुबासँगै देवीप्रसादले पनि गाईगोठमा गाईहरूको हेरचाह गर्दै बाल्य र किशोर जीवन यापन गर्नुभयो। सानैदेखि सन्तोषी र स्वाभिमानी रहेकाले होला उहाँ निकै हृष्टपुष्ट हुनुहुन्थ्यो। अग्लो कद स्वाभिमानी र अभयी स्वभाव भएका देवीप्रसाद जस्तोसुकै कडा समस्यासँग पनि जुध्ने आँट गर्नुहुन्थ्यो। उहाँ अनावश्यक थिचोमिचो पटक्कै सहनुहुन्नथ्यो।

निरन्तर अन्तर्मुखी चरित्र रहेका उहाँका दाजु हरिदत्त (योगेश्वराश्रम) ले छोटै अवधिमा गुरुको सत्सङ्ग, गायत्री साधना र तपश्चर्याको मार्ग रोज्नुभयो र गृहस्थ त्यागी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मचारीसँगै सन्न्यास ग्रहण गर्नुभयो। यता देवीप्रसादले भने गोसेवालाई निरन्तरता दिइरहनुभयो। तीनै जना गृहस्थ भएकाले उहाँहरूका सन्तानहरू पनि थिए। हजुरबुबा र बुबा हेमलालका आध्यात्मिक सत्सङ्गका प्रवाहहरू सबैमा सरिरहेका थिए। यही कारणले उहाँमा सन्त, साधु र महात्माहरूको नजिक बस्ने, सुन्ने र सिक्ने जिज्ञासु स्वभाव बढ्दै गयो। मच्छेबुङ्बाट आजीविकाकै सन्दर्भमा वि.सं. २००९ सालमा एकतीनको खग्रेटी भन्ने स्थानमा उहाँ बसाइँ सर्नुभयो। मच्छेबुङ र एकतीन जहाँ रहे पनि बाल्यकालमा दाजु हरिदत्तका साथमा उहाँले गोसेवामा नै समय खर्चिनुभएको देखिन्छ।

शिक्षादीक्षा

तत्कालीन समयमा पढ्नका लागि विद्यालय पाउन सहज थिएन। तथापि देवीप्रसादभित्र पढाइप्रतिको मोह तीव्रतम रूपमा बढिरहेको थियो। घरमा पिता र पितामह दुवै वेद त उपनिषद्को अध्ययन र साधनालाई प्रमुख ठान्नुहुन्थ्यो। घरमै हजुरबुबा मित्रलालले नातिलाई ४-५ वर्षकै उमेरदेखि प्रारम्भिक अक्षरारम्भ गराउनुभयो। यसपछि विस्तारै दुर्गाशसशती, गीता आदिको पठनपाठन पनि गराउन थाल्नुभयो। यसरी घरगोठ गर्दै ४-५ वर्षदेखि हजुरबुबाले दिएका शिक्षादीक्षाले उहाँभित्र शिक्षाको आवश्यकता र महत्त्वको बोध हुँदै गयो। देवीप्रसाद ८ वर्षका भएपछि उहाँको व्रतबन्ध संस्कार गरियो। व्रतबन्धपछि रुद्री, वेद र कर्मकाण्डसँग सम्बन्धित अन्य विषयहरूको पनि घरमै हजुरबुबा र पिताले पठनपाठन गराउनुभयो। पिता हेमलाल पनि विद्वान् र आध्यात्मिक चिन्तन रहेका व्यक्ति हुनुहुन्थ्यो, त्यसैले उहाँलाई कर्मकाण्ड र आध्यात्मिक विषयका पुस्तकहरू पढाउन त्यति असहज भएन। बुबा/हजुरबुबाकै प्रेरणाले पनि उपनिषदीय ज्ञान पनि देवीप्रसादले सानै उमेरदेखि प्रत्यक्ष-परोक्ष रूपमा पाउनुभएको छ।

हजुरबुबाले नित्य प्रातः र सायंकालमा पाञ्चायन देवताको पूजा, आरती र स्तुति गरेको सुनेर र रामायण, महाभारत पाठ गरेको सुनेर धेरै कुरा विवेकानन्दले कण्ठ पारिसक्नुभएको थियो। गाईगोठमा हजुरबुबा मित्रलाल पौडेल (साधु) सँगै बस्ने भएकाले उहाँले वेदका ऋचा (मन्त्र) हरू कण्ठ पारी हजुरबुबालाई पाठ बुझाउने गर्नुहुन्थ्यो। यसरी पढ्ने र सुन्ने सन्दर्भमा झिँझाबुट्यान बालेर त्यसैको प्रकाशमा पढ्दै गर्दा झिँझा बलिसकेर पच्दै जाँदा आगोको उज्यालो प्रकाश मधुरो हुँदै जाँदा देवीप्रसाद हजुरबालाई "तपाईं बिस्तारो भन्नुहोस्, म सुन्छु" भन्नुहुन्थ्यो रे। एक-दुईपटक सुनेपछि आफूले सुनाएका कुरा सम्झिएर सबै आफूलाई सुनाउँदा हजुरबाले नाति शिक्षित र ज्ञानी हुने छ भन्ने लख पहिले नै काट्नुभएको थियो। यतिले मात्र पुगेन, अब कहाँ गएर थप शिक्षा आर्जन गर्न सकिएला ? यस विषयमा देवीप्रसाद दिननानुदिन चिन्तन गर्दै जान थाल्नुभयो।

देवीप्रसादले जेजति शिक्षादीक्षा हासिल गर्नुभएको थियो त्यो सहज तरिकाले पाउनुभएको देखिँदैन। उहाँभित्रको शिक्षाप्रतिको तिर्सना तीव्र रूपले बढ्दै गएको छ। पढ्नुपर्छ र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढेपछि मात्र जान्न सकिन्छ भन्ने चेत उहाँमा बाल्यकालदेखि नै आएको देखिन्छ। यसै कारणबाट उहाँ शिक्षा लिने र थप सिक्ने स्थानको खोजी गरिरहनुहुन्थ्यो। त्यस बेला भोजपुरको दिङ्लामा बालागुरु षडानन्दले विद्यालय खोली पठनपाठन गराउनुभएको थियो। उहाँको त्यो शिक्षादीक्षाको चर्चा प्रायः नेपालभरि नै फैलिएको थियो। विद्याको आकर्षणले तानिनुभएका देवीप्रसाद वि.सं. १९७२ मा १०-११ वर्षकै कलिलो उमेरमा घरबाट भागेर एक्लै दिङ्लामा रहेको विद्यालयमा पुग्नुभयो। त्यहाँ पुगेर उहाँले षडानन्द गुरुसँग केही दिन वेदादि अध्ययन गर्नुभयो। भनिन्छ देवीप्रसादको तीक्ष्ण बुद्धि र पढाइप्रतिको लगाव देखेर गुरुले यो बालक भविष्यमा एक कुशल र सक्षम धर्मप्रचारक र सन्त हुने छ भनी सङ्केत गर्नुभएको थियो। वास्तवमा सन्त, ज्ञानी र शिक्षित हुने लक्षणहरू उहाँमा स्वतः देखिँदै आएका थिए। पढ्न खोज्नु, सन्तहरूका नजिक रहन खोज्नु यसैका सङ्केत नै थिए।

जुन समयमा उहाँ दिङ्ला पुग्नुभयो बिरामीका कारण त्यस बेला गुरुको स्वास्थ्य कमजोर हुँदै गएको थियो, त्यसैले देवीप्रसादले अध्ययन अघि बढाउन पाउनुभएन। आफ्नो शिक्षाको प्यास नमेटिने भएपछि मनमा अपूर्णताको बोझ लिएर उहाँ घरतिरै फर्किनुभयो र दबेखर्कको गाईगोठमै गोसेवामा लाग्नुभयो। उहाँको विवाह भने दिङ्ला जानुअगावै भइसकेको थियो।

आफू गोठमा रहेको समयमा आफूले पढ्दै गरेका पुस्तकहरू आफैँसँग लिएर जानुभयो र स्वाध्यायन गरिरहनुभयो। नातिको शिक्षाको तिर्सना देखेर हजुरबुबा पनि गोठमै जानुभएको थियो। त्यहाँ हजुरबुबालाई वेदका मन्त्रहरू कण्ठ गरी उहाँ सुनाउने गर्नुहुन्थ्यो। त्यहाँ वेदसँगै उपनिषद्को अध्ययन र चिन्तन पनि गर्नुहुन्थ्यो भनिन्छ।

उहाँभित्र उमेरसँगै बढ्दै गएको शिक्षाको तिर्सना झन्झन् बढ्दै गएको थियो। यसपछि उहाँले इलाम चमैताका वेदान्तशास्त्री.... भट्टराई गुरु आएर पाँचथर जोरपोखरीनजिक पर्णशालामा बटुकहरूलाई राखेर पढाउँदै हुनुहुन्छ भन्ने कुरा सुन्नुभयो। आफ्नो शिक्षाको तिर्खा मेट्नका लागि उहाँ त्यहाँ पढ्नका लागि जानुभयो। उहाँले त्यहाँ गएर शिखा, रेखा, घन, जटायुक्त सारस्वरसहित शुक्लयजुर्वेद, व्याकरण र अमरकोशको पनि अध्ययन गर्नुभयो। एक-दुईपटक पढ्दैमा वेदका कठिन मन्त्रहरू पनि सजिलै कण्ठ गरी सुनाउने उहाँको क्षमता देखेर यो कस्तो प्रतिभा होला भनी गुरु पनि चकित हुनुहुन्थ्यो भन्ने उहाँका सहपाठीहरूबिच कुरा हुन्थ्यो रे। उहाँको प्रतिभाको सम्मान गर्दै गुरुले पनि उहाँप्रति भविष्यको होनहार व्यक्तिको आशा राख्नुभएको थियो।यो कुरा पछि सार्थक बन्न पुग्यो।

उहाँले पढ्दै गरेको स्थान नजिकै एक शिवालय कुटी र पोखरी पनि रहेको थियो। केहीबेर पढाइलाई विश्राम दिनेबित्तिकै उहाँ त्यहाँ गएर ध्यान गर्नुहुन्थ्यो। उहाँको त्यो साधना देखेर गुरुले देवीप्रसादलाई ध्यानी ब्रह्मचारी भनेर सम्बोधन गर्न थाल्नुभएको थियो भनिन्छ। गुरुले ब्रह्मचारी भनेकाले सबैले उहाँलाई ब्रह्मचारी भनी सम्बोधन गर्न थाले।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उहाँका दाजु जेठा भएकाले उहाँलाई जेठा ब्रह्मचारी र देवीप्रसाद माहिलो भाइ भएकाले पूर्वपरिचित मानिसहरू उहाँलाई माहिला ब्रह्मचारी भन्न थाले। भट्टराई गुरुकहाँ रहेका समयमा उहाँले ब्रह्मगायत्रीको साधना पनि गर्नुभयो। यसपछि दर्शन पढ्ने अभिरुचि उहाँभित्र जागृत भयो। त्यसैले सुभाङ गुरुका नामले प्रसिद्ध हुनुभएका यज्ञनिधि रेग्मीसँग दर्शनशास्त्र, गायत्री जप र अध्यात्म दर्शनका विषयमा गहिरो ज्ञान लिनुभएको थियो।

अध्ययनको अभिरुचि तीव्र रूपमा अझै बढिरहेकाले पढाइकै सिलसिलामा उहाँ हाङ्पाङ भन्ने ठाउँमा रहेका षडानन्द गुरुका शिष्य सन्त भण्डारीकहाँ पुग्नुभयो। त्यहाँ पुगी सन्त भण्डारीसँग साङ्ख्यदर्शन र गायत्री पुरश्चरणका बारेमा ज्ञान लिनुभयो।

स्वर्गद्वारी महाप्रभुले अब तिमी देशका विभिन्न क्षेत्रमा यज्ञानुष्ठान गराऊ भनेर ब्रह्माभ्यासानन्दलाई आज्ञा गर्नु भएको रहेछ। त्यस आज्ञालाई शिरोपर गरी वि.सं. १९९० तिर उहाँ गोपेटारमा आइपुग्नुभएको रहेछ। ब्रह्माभ्यासानन्द गोपेटारमा यज्ञ गराउँदै हुनुहुन्छ भन्ने कुरा उहाँका कानमा पर्नासाथ उहाँ आफ्ना घरायसी काम छाडेर ब्रह्माभ्यासानन्दकहाँ पुगिहाल्नुभयो। गोपेटार पुगेर देवीप्रसादले गुरुको दर्शन गरी आफ्नो पढ्ने इच्छा पनि प्रकट गर्नुभएछ। ब्रह्माभ्यासानन्दले देवीप्रसादको जिज्ञासु मनलाई शान्त पार्दै योगदर्शनको शिक्षा दिनुभएछ। उहाँभित्र रहेको पढाइप्रतिको तीव्र लगाव देखेर गुरूले योगदर्शनसँगै ब्रह्मसूत्र, शाङ्करवेदान्त भाष्य, साङ्ख्यदर्शन र उपनिषद्हरू पनि पढाउनुभयो र षट्चक्रसाधना गर्ने विधि पनि सिकाउनुभयो।

ब्रह्माभ्यासानन्द ओझा थरका महान् तपस्वी हुनुहुन्थ्यो। गाउँघरमा उहाँलाई ओझा गुरु पनि भन्दथे। उहाँबाटै पञ्चप्रणवयुक्त गायत्री साधनाको गूढ रहस्य देवीप्रसादले प्राप्त गर्नुभएको हो। उहाँको पढाइ र प्राप्त ज्ञानका कारण मानिसहरू उहाँलाई माहिला गुरु भनी सम्बोधन गर्न थाले। जहाँ रहे पनि आफ्ना नजिकमा रहेका जोकोही शिष्यहरूलाई पढ्न सिकाउने उहाँको स्वभाव थियो। यसपछिका दिनमा भने आफ्नै भान्जा टेकनाथ गौतमसँग जीवनका उत्तरार्द्धमा वेदान्त र तत्त्वबोधका विषयमा गहन विश्लेषण गर्न थाल्नुभयो।

देवीप्रसादले निकै कठोर साधनाले हजुरबुबाले गराएको अक्षरारम्भदेखि षडानन्द, भट्टराई गुरु, यज्ञनिधि रेग्मी, सन्त भण्डारी र ब्रह्माभ्यासानन्दबाट रुद्री, वेद, उपनिषद् हुँदै ज्ञान र वैदिक अनुष्ठानहरूको शास्त्रीय शिक्षादीक्षा ग्रहण गर्नुभयो। गोठमा रहँदा पनि आफूले सिकेका कुरा अरूलाई यथाशक्य सिकाउन पनि सुरु गर्नुभयो। उहाँ खर्कमा गाई चराउँदा, बिहानबेलुका काम सकेर केही समय पाउँदा रामगीता, श्रीमद्भगवद्गीता, तत्त्वबोध आदि पढ्ने र अरूलाई पनि सुनाउने गर्नुहुन्थ्यो भनिन्छ। गायत्री उपनिषद् र पढेका शास्त्रहरूको ज्ञान गढ्दै गएपछि परिणामतः घरपरिवार र आफ्नो मानेका धनसम्पत्ति नै त्यागेर देवीप्रसाद तपस्याका लागि गुफातिर लाग्नुभयो। साधनागत अनुभव र वेदान्तदर्शनको निचोड बुझिसकेपछि साधनाका लागि एकान्तस्थलको खोजी गर्दै उहाँ अनेक गुफा र सिद्धस्थान जानुभयो र साधना गर्नुभयो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृहस्थ जीवन

हृष्टपुष्ट शरीर, अग्लो कद हेर्दै आकर्षक व्यक्तित्व रहेका देवीप्रसादलाई पिता हेमलालले विवाह गरिदिने निर्णय गर्नुभयो। यो सांसारिक जीवन चक्रको एक अभिन्न कर्म पनि हो। शास्त्रीय चिन्तनअनुरूपको २५ वर्षसम्म रहनुपर्ने ब्रह्मचारी अवस्थासम्म त उहाँ रहन पाउनुभएन किनभने त्यति बेला सानै उमेरमा विवाह गर्ने चलन चलेको थियो। गृहस्थ जीवनको सार्थक ज्ञान नपाउँदै ९ वर्षकै उमेरमा वि.सं. १९७१ मै उहाँको ढुङ्गाना परिवारकी छोरी बुद्धिमातासँग विवाह भएको थियो।

विवाहपछि उहाँले आफ्नो अध्ययनलाई अझ प्रभावकारी बनाउनुभएको देखिन्छ। विवाहपछि नै उहाँ शिक्षाका लागि दिङ्ला जानुभएको हो। विवाहपछि नै वेद, उपनिषद् र वेदान्त आदिको गहन अध्ययन र साधना गर्नुभएको थियो। उहाँले घरगोठ गर्दै पारिवारिक जिम्मेवारीसहित जीवनका लागि सार कुरा शिक्षा र साधना राम्ररी अगाडि बढाइरहनुभयो। देवीप्रसाद र बुद्धिमाताबाट उदयराज र बुधराज दुई भाइ छोरा जन्मिए। जेठा छोरा उदयराजको खतिवडा परिवारकी छोरीसँग विवाह भएको थियो। विवाह गरिसकेपछि उदयराज दिङ्लामा पढ्न जानुभएको थियो। उहाँ शुक्लयजुर्वेद पुस्तक नहेरी सारस्वरमा सुनाउन सक्नुहुन्थ्यो। दैवको लीला पढ्दै रहेको बखतमा उहाँ बिरामी पर्नुभयो र सोही बिरामबाट अचानक उहाँको मृत्यु भयो। यसले देवीप्रसादको परिवारमा गहिरो चोट पर्‍यो। पुत्र वियोगको चोट सामान्य थिएन। जेठो सन्तानको वियोगले सन्तप्त पारिरहेकै थियो। पुनः कान्छा बुधराजको पनि व्रतबन्ध गर्ने उमेर पुग्दा नपुग्दै मृत्यु भयो। यसरी नै जेठी छोरी, साहिँली र कान्छी छोरीको पनि वियोग उहाँले सहनुपर्‍यो।

गृहस्थ जीवनका सार भनेका सन्तान हुन्। यिनीहरूबाटै वंशसूत्र अगाडि बढेको हुन्छ। जेठा छोराका सन्तान भएकै थिएनन्। कान्छा छोरा व्रतबन्ध गर्नु अगावै बितेकाले उनका सन्तान हुने कुरै भएन। आफ्ना उत्तराधिकारीलाई दैवले थुतेर लगे पनि आफ्नो प्रारब्धको भोग सम्झिएर उहाँ र उहाँकी धर्मपत्नी छोरीहरूको लालनपालनमा लाग्नुभयो।

आठ बहिनी छोरीहरू जन्मिएका भए पनि जेठी र साहिँली बाल्यकालमै परलोक गए भने कान्छी धनमाया विवाह भएको केही दिनमै परलोक गइन्। यस्तो वियोगको परिवेश पनि आफ्नो प्रारब्ध हो। यसलाई सम्झिएर कर्तव्यबाट विचलित हुनु हुँदैन भनी उहाँहरूले टङ्कमाया, गोमादेवी, यमुनादेवी, चामुण्डादेवी र पुण्यमाता गरी पाँच बहिनी छोरीहरूको रेखदेख गरी हुर्काउने काम गर्नुभयो। समयानुसार छोरीहरूको विवाह दान पनि गरिदिनुभयो। यसपछि घर, गोठ र परिवारप्रति गर्नुपर्ने कर्तव्य पूर्ण रूपले पालना गर्दै क्रमशः संसारप्रतिको मोहत्याग गर्न लाग्नुभयो। यसपछि निरन्तर योग, ध्यान र यज्ञानुष्ठानको यात्रा गर्न थाल्नुभयो।

हाम्रा धर्मशास्त्रहरूले गृहस्थाश्रमपछि वानप्रस्थ आश्रमको उल्लेख गरेका छन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवहारमा भोगेका, विद्यालयमा अध्ययन गरेका कुराहरूको तुलना गरी मानवजीवनको सार्थक मार्ग खोज्नका लागि नै वानप्रस्थमा प्रवेश गर्नु हो। यही शास्त्रीय चिन्तनको आश्रय लिएर ५०-५१ वर्षको उमेरतिर उहाँले गृहत्याग गर्नुभयो र तपःसाधनामा लाग्नुभयो। सांसारिक विषयको त्याग नै परमात्मा खोजको मार्ग हो भन्ने परमार्थी विचार, ज्ञान र उपदेश लिएर घर, गोठ र मोहका सबै पासाहरू चुँडाली गुरु वि.सं. २०११ सालबाट अन्तर्यात्रामा लाग्नुभयो र अरूलाई आत्मिक मार्गको उपदेश गर्न थाल्नुभयो।

साधना र यज्ञानुष्ठान

आफूले प्राप्त गरेका ज्ञान र शिक्षालाई समाजमा स्थापित गर्न र जिज्ञासुहरूलाई जीवनको सार्थक मार्ग दर्शन गराउनका लागि उहाँ लागिपर्नुभएको देखिन्छ। उहाँले वि.सं. २०११ सालमा पूर्ण रूपमा गृहत्याग गर्नुभएको देखिन्छ। त्यही समयमा मच्छेबुङमा रहेको सिंहगुफामा तपस्या गर्नुभयो। उहाँ अगाडिदेखि नै गोठमा, गुफामा वा आफू जहाँ रहनुहुन्थ्यो एक समय पढाउन वा सत्सङ्ग गर्न छुट्याउनुहुन्थ्यो। हजुरबुबा समय-समयमा एक गुफामा तपस्या गर्न जानुहुन्थ्यो। उहाँले देवीप्रसादलाई पनि त्यो गुफा देखाउनुभएको थियो किनभने सानैदेखि देवीप्रसादमा तपस्वीका गुणहरू विकसित भएका थिए। मित्रलाल साधुले तपस्या गरेकाले त्यो गुफालाई मानिसहरू साधुगुफा भन्ने गर्दथे। साधनाप्रतिको चासो वा जिज्ञासा गरिरहेकाले यो नाति तपस्वी हुन्छ भन्ने कुरा उहाँलाई थाहा थियो। शिक्षादीक्षा पाइसकेपछि त्यही गुफाबाट साधनाको परिणामस्वरूप देवीप्रसादले भगवतीका कृपाले वाक्सिद्धि प्राप्त गर्नुभयो। उहाँले साधना गरेका समयमा उक्त गुफामा बाघहरू आउने र गुफाकै रक्षा गर्ने गरेको देखेर हजुरबुबा र त्यहाँ रहेका अन्य वृद्ध व्यक्तिहरूले देवीप्रसाद भगवतीको कृपापात्र हो भन्ने कुरा बुझेका थिए।

साधना गरेका पवित्र क्षेत्रहरू

शिक्षादीक्षा लिएपछि पढाउने र तपःसाधना गर्ने उहाँको दिनचर्या नै बनिसकेको थियो। यसपछि भने उहाँलाई प्रायः मानिसहरूले माहिला ब्रह्मचारीभन्दा पनि माहिला गुरु भनेर सम्बोधन गर्न थालेका थिए। साधना र तपस्यालाई जीवनको अभिन्न कर्म मानेर वि.सं. २००९ सालपछि विभिन्न क्षेत्रहरूमा यज्ञानुष्ठान र तपस्याका विशेष कर्महरू गर्न थाल्नुभयो। उहाँले वि.सं. २०१० सालमा कोशी किनारमा रहेको विनाशी (पिनासी) मा गायत्री अनुष्ठान गराउनुभयो। यसपछि वि.सं. २०११ सालबाट नै सिद्धगुफा (सिंहगुफा), रामगुफामा बसेर तपस्या गर्नुभयो भने वि.सं. २०१२ सालमा मालिङ्गेनी भन्ने स्थानमा रहेको गणेश (गजानन) गुफामा तपस्या गर्नुभयो। यहाँ पहिरोको सामान्य समस्या देखिएकाले वि.सं. २०१३ मा मालिङ्गेनी गुफा छाड्नुभयो भनिन्छ। तपस्या र यज्ञानुष्ठानका गरिमा र महिमालाई भित्रैदेखि बुझिसकेपछि उहाँले वि.सं. २०१४ सालदेखि वि.सं. २०२४ सालसम्म नै वर्षाको समयमा आगेजुङमा बसेर अनुपम यज्ञानुष्ठान र साधना गर्नुभयो। वि.सं. २०१५ सालदेखि यहाँ निकै भिडभाड सुरु भयो। एक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समयमा मिल्के भन्ने ठाउँमा पुगेका समयमा आगेजुङतिर फर्किएर हेर्दा रातको समयमा अनकन्टार ठाउँमा बत्ती बलेको देखेपछि त्यो ठाउँ खोज्दै गुरु आगेजुङ पुग्नुभयो। त्यस ज्योतिको रहस्य बुझेपछि यस स्थानको नाम तेजपुञ्ज राख्नुभयो। आज यो नाम प्रसिद्ध छ। आगेजुङ बस्न थालेपछि उहाँले हिउँद याममा भने हिउँदे पाठशाला खोली पढाउनुका साथै समय-समयमा अन्य क्षेत्रमा यज्ञहरू गराउनुभएको देखिन्छ। आगेजुङ वा तेजपुञ्जमा बसेका समयमा उहाँले ठूलाठूला लक्षहवन महायज्ञहरू गराउनुभयो। वि.सं. २०१६ पछि शिवगङ्गामा पनि जपसाधना गर्नुभयो। यसपछि हिउँदको समय पारेर वि.सं. २०१८ सालको मङ्सिर महिनाबाट फाल्गुणसम्म थामादिन भन्ने स्थानमा गायत्री अनुष्ठान र हवनादिका वैदिक अनुष्ठानहरू गर्नुभएको देखिन्छ। वि.सं. २०१९ सालमा पुनः खाल्डेमा महिला एवं पुरुषहरूलाई लक्ष्मीगायत्री र ब्रह्मगायत्रीको अनुष्ठान गराउनुभयो। यसरी उहाँले साधना र तपस्या गरेका क्षेत्रहरू भने साधुगुफा, शिवगङ्गा गुफा, जोरपोखरी, हिंवागुफा, गजानन गुफा, सातथुम्की, भ्वाङ्गुफा, सिदिङ्वा ब्रह्मगुफाहरू रहेका छन्। यसै गरी खाल्डेकुटी, आगेजुङ, थामदिन, विश्वेश्वरथुम्की, पिनाकीघाट, शताक्षी आदि सिद्ध क्षेत्रहरूमा तपःसाधना गर्नुभएको छ। यी सिद्धपीठ र सिद्ध क्षेत्रहरूमा ध्यान, ज्ञान र यज्ञयागादिका अनुपम कार्यहरू गर्नुभएको छ। नेपालबाहेक भारतका उत्तरी क्षेत्रका सिद्ध क्षेत्रहरूमा समेत उहाँले साधना गर्नुभएको देखिन्छ।

सिद्धि र साधना

वि.सं. २०११ सालदेखि उहाँ पूर्णरूपमा साधनामय मार्गमा लागेको देखिन्छ। एकातर्फ समाजमा शिक्षाको प्रकाश दिन लागिपर्नुभएको देखिन्छ भने अर्कोतर्फ तपस्या र यज्ञानुष्ठानका साधनामय कर्ममा लागेको देखिन्छ। योगीका लागि योगसाधना अभीष्ट कुरा हो। उहाँ एकान्त अवस्थामा दिन या रात कुनै पनि समयमा योगसाधना गरिरहनुहुन्थ्यो। योगसाधनामा रहेका समयमा धेरै शिष्यले उहाँका शरीरबाट प्रकाशित आत्मिक प्रकाशको अवलोकन गरेका छन्। हरपल उहाँका अनुहारमा देखिएको चमक योगसाधनाकै उपज थियो।

उहाँसँग लामो समय बसेका मानिसहरूले उहाँका अलौकिक चमत्कारहरूको साक्षात्कार गर्नुभएको छ। गुफामा बसेर तपस्या गर्दा सिंहहरूले उहाँको सुरक्षा गर्नु, भण्डारामा दुध, दही, घिउ, चामल ल्याउनेले पत्नीको वा पतिको स्वीकृतिविना ल्याएको छ भने ल्याएको चिज घरतिरै फर्काइदिने गर्नु, कतैबाट विशिष्ट महात्मा वा समर्पित शिष्य आउँदै छन् भने अगाडि नै आश्रमका शिष्यहरूलाई सङ्केत गर्नु, जति मानिसलाई सोचेर प्रसाद (भोजन वा भण्डारा) बनाएको हुन्छ, त्यसभन्दा अधिक मानिस आए भने आफ्नै हातले बाँड्न थालेपछि अरू थप नपकाई सबैलाई पहिले पकाएकै अन्नले पुग्नु, लुप्त देवीदेवतालाई यहाँ छन् निकाल भनेर देखाएपछि तिनीहरूको तस्वीर वा आकृति भएको शिला भेटिनु, गजानन गुफामा अचानक गणेशको आकृति देखिनु र शान्तिपुरमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नदीभित्रबाट गणेशाकृतिको शिला झिक्न लगाउनु जस्ता गुरुका सिद्धिप्राप्त परिणाम हुन्। साथै, उहाँले भविष्यमा हुने धेरै कुरा बताउनुभएको थियो। आज उहाँ नभए पनि उहाँको भनाइअनुसार नै हुँदै जानुले गुरुको सिद्धचरित्र प्रमाणित हुन्छ।

आफ्ना अलौकिक चरित्रहरू गुरु आफैंले पनि निकै गुप्त राख्नुभएको थाहा हुन्छ र गुरुका अनन्य भक्तले पनि आफूले थाहा पाएका गुरुका ती चमत्कारलाई प्रस्तुत गर्न पनि चाहनुभएको छैन किनभने साधु वा सन्तयोगी चामत्कारिक सिद्धिभन्दा माथि हुन्छन्। उनीहरू चमत्कारलाई सामान्य ठान्छन्। तथापि केही सार्वजनिक भएका कुराहरू छन्। जसमा अखौंलेमा भएको ब्रह्मवैवर्त पुराणको साङ्गता भएपछि गौतम गुरुलाई गुरुले यो बाँस फुलेपछि र यो विद्यालय नजिक रहेको अमला सुकेपछि तपाईंले चलाउँदै गरेको यो स्वयंसेवक विद्यालयको पनि अवधि सकिन्छ यसपछि अन्यत्र सर्नुपर्ने हुन्छ भनेको कुरा सोहीअनुसार नै भयो र हालको विवेकाश्रमको जमिनमा तीन रात बसिसकेपछि भविष्यमा यो एक तीर्थस्थल हुनेछ भनेको कुरा आज पूरा भइरहेको छ।

वास्तवमा उहाँ निर्निमेष वेदमन्त्र, उपनिषद् चर्चा गरिरहनुहुन्थ्यो। यी ग्रन्थका ज्ञान लिन सक्ने व्यक्तिको आगमन हुनासाथ दिइहाल्नुहुन्थ्यो। एकान्त समय पाउनासाथ एकान्तमा बसेर ध्यानमा लीन भइहाल्नुहुन्थ्यो। यी उहाँका दिनचर्या नै थिए।

कर्मफलमा आश्रय नलिने र निरन्तर कर्तव्य गरिरहने सन्यासी र योगी हो। अग्निरहित र क्रियारहित हुनु मात्र सन्यासी र योगी हुनुहोइन।[३] विवेकानन्दले गीताले भनेझैं नियमहरूको पूर्ण पालन गर्नुभएको थियो। उहाँ साँच्चै सन्तमहात्मा र सन्यासी हुनुहुन्थ्यो।

महान् तपस्वी स्वामी विवेकानन्द वास्तविक सन्तगुण रहेका व्यक्ति हुनुहुन्छ। शास्त्रमा सन्तका बारेमा लेखिएको छः ब्राह्मणग्रन्थ र वेदका शब्दहरू देवताका व्यक्तमूर्ति हुन्। जसका अन्तस्करणमा यिनीहरू र ब्रह्मसँगको संयोग रहिरहन्छ त्यसलाई सन्त भनिन्छ।[४] स्वामीका चरित्रहरूलाई हेर्दा उहाँ पूर्ण सन्त हुनुहुन्थ्यो। यसरी नै जसको आत्मा आकाशझैं फराकिलो बन्दै परमात्मामय हुन्छ त्यो महात्मा बन्छ भन्ने कुरा गीताले बताएको छः त्यहाँ उल्लेख भएअनुसार धेरै जन्मका अन्त्यमा यो ब्रह्माण्डमा जे जति छन् त्यो सबै वासुदेव (परमात्मा) नै हो भन्ने ज्ञान पाएर ममा प्राप्त हुने महात्मा अतिदुर्लभ छन्।[५] कृष्णले बताउनुभएको यो गीताज्ञानले महात्माको परिचय दिएको छ। यो देखिएको सारा प्रपञ्च वासुदेव नै हो भन्ने ज्ञान पाउने मात्र महात्मा हुन्छ। स्वामीजीले सबैलाई सर्वं ब्रह्ममयं जगत् कै शिक्षा दिइरहनुभयो। यी चरित्रहरूलाई हेर्दा उहाँ सिद्ध, सिद्धिप्राप्त सन्त र महात्मा नै हुनुहुन्थ्यो भन्न सकिन्छ। उहाँका सान्निध्यमा रहेका केदारनाथ खतिवडा, विष्णुभक्त भण्डारी, पं नन्दिकेश्वर तिम्सिना, पुष्पलाल तिम्सिना, जगन्नाथ पौडेल, देवी पौडेल, भानुभक्त अधिकारी आदि धेरै व्यक्तिहरू अझ साक्षी हुनुहुन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कविता साधना

बहुमुखी प्रतिभा र प्रत्युत्पन्नमति भएका स्वामीजी आफूले जानेका, मानेका र रहस्य भरिएका कर्म र स्थानका विषयमा केही न केही लेख्ने पनि गर्नुहुन्थ्यो। उहाँले साधनामय जीवन व्यतीत गर्ने क्रममा कविताहरू पनि रचना गर्नुभएको छ। रामायण, महाभारत र पौराणिक चिन्तन र स्तुति सूक्तिहरूको वाचनका प्रभावले उहाँले छन्दमा कविता रचना गर्नुभएको छ। गुरु वन्दना गरिएको एक श्लोक कविता हेरौं:

हे ब्रह्मज्ञ गुरो सदा स्थिर भई लागोस् धरम्मा अति
मन् लागोस् गुरुदेव् सदा चरणमा राखी धरम्मा मति।
यी मनबुद्धिहरू सदा प्रभुजीका सेवा टहल्मै रहूँ
सेवादेखि शिवाय छैन अरु क्यै भन्ने विचारी रहूँ।।

गुरु र ईश्वरभक्तिले भिजेका यस्ता कवितासँगै प्रकृतिका सौन्दर्य चित्रण र सिद्ध तपस्थलका रहस्य उद्घाटन गर्दै उहाँले ज्ञान र भक्तिरसले भरिएका थुप्रै कविताहरू पनि रचना गर्नुभएको छ। उहाँले लेख्नुभएको परमात्मासँगको पुकार रहेको अर्को एक निम्न कविताले ब्रह्म र आत्मचिन्तनको गहन भाव प्रकट गरेको छ :

जस्तै व्यापक अग्नि काष्टबिच छन् घर्षण भये त्यै घरी
प्राकट्यै हुन जान्छ एस रूपले व्यापक सदा छौ हरि .
यस् थल्देखि कृपा भई सकलको उद्धार सदा भैरहोस्
पैलो पाउ महाँ छ घोर कलि यो सञ्चार ऐले नहोस्।।

यसरी हेर्दा श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी विशिष्ट छन्द कविका रूपमा पनि देखिनुभएको छ। उहाँ शिक्षण, ध्यान, साधना, तपस्या, यज्ञानुष्ठानमा मात्र सीमित हुनुहुन्नथ्यो। एकान्तमा रहेको र साधनाबाट बचेको समयमा कविता लेख्ने पनि गर्नुहुन्थ्यो। यसले उहाँको बहु आयामिक व्यक्तित्वलाई उजागर गरेको छ। उहाँले काँचो कागजमा लेख्नुभएका कविता र गद्य लेखनहरूका पाण्डुलिपि पुष्पलाल तिम्सिनामार्फत प्राप्त भएका छन्। स्वामीजीका हस्ताक्षरमा रहेका कविताहरू कलि, कलिका मानव र पाँचथरमा रहेका देवक्षेत्रका विषयहरूमा लेखिएका छन्। स्वामीजी कवि पनि हुनुहुन्थ्यो भन्ने कुरा उहाँद्वारा सिर्जना भएका कविताहरूले पुष्टि गरेका छन्। आउँदा दिनमा उहाँका कविताहरू पनि हामीले अवश्य पढ्न पाउनेछौं।

परिभ्रमण एवं तीर्थाटन

माहिला गुरुलाई अन्तरात्मामा जे ईश्वरीय आज्ञा वा प्रेरणा हुन्छ त्यस कामलाई पूरा गर्नका लागि उहाँ सदैव तत्पर हुनुहुन्थ्यो। वि.सं. २०२० सालमा केही आसपासका क्षेत्रहरू र उत्तराखण्डको यात्रा गर्ने इच्छा उहाँका हृदयमा जागृत भयो। यसै सन्दर्भमा देव र ऋषिका साधनास्थल, गुफाहरूको दर्शन गर्दै आसपासका तीर्थस्थलको परिभ्रमण गर्ने इच्छाले आङ्बोप, खोरिम्बा, गडी नाम्रेक, हिरुवादिन आदिको भ्रमण गर्नुभयो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यही सालको भाद्र महिनामा उत्तरापन्थको महान् तीर्थ बद्रीनाथ यात्रामा निस्कनुभयो। बद्रीनाथ पुगेर भगवान्को दर्शन गरिसकेपछि आसामतिर लाग्नुभयो। यसपछि आसामको सदियामा रहेको बालिज्यानमा अवस्थित कुटीमा पुग्नुभयो र त्यहाँ केही दिन बसेर उहाँ पुनः भाद्र शुक्ल अनन्त चतुर्दशीका दिन आगेजुङ (तेजपुञ्ज) नै फर्किनुभयो।

वि.सं. २०२२ साल माघ महिनामा प्रयागमा महाकुम्भको समय थियो। त्यसैले यस महाकुम्भमा स्नानका लागि उहाँ धरान, जोगवनी हुँदै दाजु योगानन्द (जेठागुरु) र अन्य धेरै जना भक्तका साथमा प्रयागराजको कुम्भको यात्रामा निस्कनुभयो। उक्त कुम्भमा आसामबाट पनि धेरै जना भक्तहरू आउनुभएको थियो। सबैका साथमा भेट भई कुम्भस्नान गरिसकेपछि माहिला गुरु आगेजुङ नै फर्कनुभयो। आगेजुङको साधनामय बसाइपछि उहाँले सन्न्यास आश्रमको चिन्तन गर्नुभयो र विस्तारै जीवनलाई नवीन यात्रामा प्रवेश गराउने योजना बनाउनुभयो।

वि.सं. २०२३ सालको कात्तिक महिनामा गुरुका भान्जा पं. टेकनाथ गौतमले अखौंले 'स्वयंसेवक÷ विद्यालयमा ब्रह्मवैवर्त पुराणको चर्तुमासा अनुष्ठान आयोजन गर्नुभएको थियो। सो यज्ञानुष्ठानमा गुरुलाई आमन्त्रण गरिएको थियो। उक्त पुराणमा गुरुले थप आध्यात्मिक प्रवचन वा सत्सङ्ग गराउनुभयो। यसपछि आफ्ना गोप्य योजनाहरू भान्जालाई सुनाएर गुरु आगेजुङबाट जुन उद्देश्यका साथ निस्कनुभएको थियो त्यसलाई पूरा गर्नका लागि आसामतर्फ लाग्नुभयो। आसाममा पुगेर उहाँले जीवनको चौथो आश्रम (सन्न्यास) ग्रहण गर्नुभयो।

योगदान

गुरुले शिक्षाका लागि निकै पिछडिएको पाँचथरको मच्छेबुङ, एकतीन, खाल्डे, सुभाङ आदि क्षेत्रहरूमा ग्रामीण क्षेत्रका मानिसका बालबालिका र प्रौढहरूका लागि पनि शिक्षा दिने काम गर्नुभयो। यी क्षेत्रहरूमा शैक्षिक मात्र नभई धार्मिक र आध्यात्मिक चेतनाको प्रचार-प्रसारमा पनि विशेष काम गर्नुभयो। वि.सं. २००९ सालमा आफू एकतीनको खग्रेटीमा बसाइँ सरेपछि त्यहीं ग्रामीण मानिसहरूका बालबालिकालाई शिक्षित बनाउनु पर्छ भनेर रुद्री, चण्डी, वेदको पठनपाठन गराउनुभएको थियो। वि.सं. २०११ देखि पूरै गृहत्याग गरेपछि नै २०१२ सालमा सुभाङको 'सिम्ले÷ भन्ने ठाउँमा एक कटेरामा हिउँदे पाठशाला खोली वेद, रुद्री, चण्डीको पठन-पाठन गराउनुभयो। २०१३ सालबाट २०१६ सालसम्म हिउँदमा मात्र खाल्डेमा पाठशाला बनाई बालबालिकालाई अक्षराम्भदेखि किशोरहरूलाई वेद, रुद्री, चण्डी, गीता, आदिको शिक्षा दिन थाल्नुभयो।

आगेजुङमा साधना, जप, तपस्या र यज्ञानुष्ठान गरी त्यस भूमिलाई साधनाभूमिका रूपमा स्थापित गर्नुभयो। यो स्थान आज तेजपुञ्जका रूपमा विशेष प्रसिद्ध छ।

यसरी नै पाँचथरबाट आसाम गएका आफ्ना शिष्यहरू रहेको स्थानमा पुगी वैदिक सदाचार, संस्कार र पद्धतिहरूलाई जीवन्त राख्न प्रेरणा दिनुभएको छ। त्यहाँ रहेका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेपाली बस्तीहरूमा पुगी वैदिक सनातन सभ्यता, यज्ञानुष्ठान र धर्मको प्रचार-प्रसार गर्नुभयो। आसामका डिब्रुगढ, आँपगाछी, मिरीछपडी, कोलछपडी, पदमफुला, रामपत्थर, पाटीपत्थर, भीष्मनगर, कुण्डिलघाट, स्याङ्स्याप, चापाखुवा, नौसुके, बालिज्यान आदिमा रहेका नेपालीहरूलाई ध्यान, ज्ञान, हवनहरूको दिगो छाप छोडी धर्मकर्मको परम्परा स्थापित गर्नुभयो। त्यहाँका आदिवासी आसामियाँ, मिरी, मिस्मी जातिहरूका मनमा पनि पूर्वीय वैदिक सनातन सभ्यताको गहन छाप राख्न सफल हुनुभयो। त्यहाँ सबै भेला भएर शिक्षादीक्षा लिन सहज होस् भनेर शान्तिपुरमा आश्रमको निर्माण गर्नुभयो। शान्तिपुर उहाँले महत्त्वपूर्ण यज्ञ गरेको स्थान हो। वि.सं. २०२४ सालमा उहाँले स्थापना गरेको त्यस आश्रममा अद्यापि सनातन वैदिक यज्ञ, भण्डारा र पठनपाठन चलिरहेकै छ। आसामको यसै क्षेत्रमा रहेको समयमा देवीप्रसादले गुरुबाट सन्न्यास ग्रहण गर्नुभयो र माहिला गुरुबाट श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी बन्नुभयो। सन्न्यास ग्रहण गरिसकेपछि पनि उहाँले शिक्षादीक्षा साधनाका सत्प्रयासहरू निरन्तर जारी राखिरहनुभयो। पहाडदेखि आसाम गएका आफ्ना शिष्यहरू यता झापातिर आएका थिए। त्यसैले श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी वि.सं. २०२८ मङ्सिर १५ गते झापाको चारपानेमा आइपुग्नुभयो। त्यसको भोलिपल्ट १६ गते धान्यपूर्णिमाका दिन पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले किनेको भूमिमा आइपुगेपछि यो स्थान निकै आनन्ददायी लाग्यो। यस स्थानमा मलाई कुटी बनाउनका लागि केही भूमि दिन सक्नुहुन्छ ? भन्नुभयो। गुरुको आज्ञा शिरोपर गर्दै उदारमना पं. नन्दिकेश्वरले हजुरलाई चाहिने जति लिनुहोस् भनेर प्रदान गर्नुभयो। गुरुले यत्ति भए पुग्छ भनी भूमि छुटयाएपछि म आज यहीं बस्छु भनी सङ्कल्प गर्नुभयो। यस दिन गुरुवार परेको थियो। गुरुको इच्छा पूर्ण गर्नका लागि स्थानीय भक्तहरूले हतारहतार अग्लाअग्ला सुन्टी ल्याई टुप्पो बाँधेर गुरु मात्र अट्ने एक गुरुकुटी बनाए। स्वामीजी तीन रात त्यही साँघुरो कुटीमा बस्नुभयो।

स्वामीजी चारपाने आउनुभएको छ भन्ने चाल पाएर टाढाटाढाका भक्तहरूको आवागमन बढ्न थाल्यो। त्यहाँ तीन रात बिताएपछि गुरुले शताक्षीको दर्शन गरेर आउने इच्छा व्यक्त गर्नुभयो। त्यहाँ रहेका स्थानीय र टाढाबाट आएका गुरुका अनन्य भक्तहरूले अग्निको धुनी र केही भक्त पनि बस्ता अट्ने गरीको एक कुटीको निर्माण गर्न लाग्नुभयो। उहाँले नै देखाउनुभएको स्थानमा पानीका लागि इनार पनि खनियो।

शताक्षीबाट दर्शन गरी फर्कंदा त्यस स्थानमा बाँस र खरबाट कुटी निर्माण भइसकेको थियो। स्वामीजीले शताक्षीबाट आफैंले ल्याएका शिवलिङ्गलाई त्यहाँ स्थापना गर्नुभयो। शिवलिङ्गमा जलधारा गरी रुद्रीपाठको आरम्भ गर्नुभयो। गुरुको उपस्थितिपछि त्यस स्थानमा नियमित रुद्राभिषेक, हवन, पाञ्चायन पूजा आरतीको आरम्भ भयो। आउने-जाने मानिसहरू बढ्न थाले। एक जना सिद्ध तपस्वीको उपस्थिति कतै पनि सामान्य हुँदैन। श्रद्धालुहरूले गुरुको नियमित दर्शन पाउन थाले। विस्तारै मानिसहरू त्यहाँ स्थापित शिवलिङ्ग र गुरुको दर्शन गर्ने उद्देश्य लिएर आउन थाले। अब गाउँको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिचमा साँझबिहान शङ्खघण्टको ध्वनि गुञ्जिन थाल्यो। यही कुटी आज विवेकाश्रमका नामले सर्वत्र परिचित छ।

स्थानीय बालबालिकाका लागि शिक्षा दिन सजिलो होस्, गाउँका कुनै बालबालिका निरक्षर नहून् भनेर कुटीमै माघ महिनाबाट पठन-पाठनको प्रारम्भ गरिदिनुभयो। यसरी आरम्भ भएको शैक्षिक उन्नतिको प्रतिफलका रूपमा आज श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय स्थापित भएको छ। यस विद्यालयमा अहिले १२ कक्षासम्मको पढाइ हुन्छ। यो आश्रम वैदिक वाङ्मयको मूल प्रवाह लिएर अगाडि बढेको छ र सनातन वैदिक यज्ञानुष्ठानका पद्धतिहरूलाई निरन्तर सुरक्षा र प्रवर्धन गरिरहेको छ।

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्दले दिएको शैक्षिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक र सांस्कृतिक योगदान अनुपम छ। विवेकाश्रम एवं साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय संस्कृत गुरुकुलका लागि नेपालकै नमुना गुरुकुल हो। यहाँसम्म पुग्नका लागि स्वामीजीकै अनुपम सत्सङ्कल्पको प्रभावको सामर्थ्य छ। अभिलेखलाई हेर्दा स्वामीजी चारपाने र शताक्षी गरी ९ महिना मात्र झापामा रहेको देखिन्छ। यति छोटो अवधिमा आफ्ना शिष्यहरूमा नमेटिने सांस्कृतिक र धार्मिक जागरणको प्रभाव छोडेर जानुभयो। आज त्यही प्रवाह बहिरहेको छ। यस प्रवाहको संवर्द्धन र प्रवर्द्धनमा मूर्धन्य विद्वान् पं. टेकनाथ गौतमको अथक र अतुलनीय योगदान पनि जोडिएको छ।

सन्न्यास ग्रहण र समाधि

वि.सं. २०२३ अखौंलेमा भएको चतुर्मासा पुराण सकिएपछि गुरु पुनः आसाम पुग्नुभयो। गुरुलाई सन्न्यास ग्रहण गर्ने इच्छा जागृत भइरहेको रहेछ। आफ्ना लागि उपयुक्त गुरुको खोजी गर्दै उहाँ ब्रह्मपुत्र किनारामा रहनुभएका श्री १००८ स्वामी नारायणानन्द पुरी कहाँ पुग्नुभयो। केही दिन स्वामी नारायणानन्दको सत्सङ्ग पाएपछि वि.सं. २०२४ साल फाल्गुण महिनाको शिवरात्रिका दिन उहाँले सन्न्यास आश्रम ग्रहण गर्नुभयो। सन्न्यास ग्रहण गरेपछि शान्तिपुरमा कुटी निर्माण गराई त्यहाँ ४ वर्षसम्म बस्नुभयो। त्यहाँ बटुक र भक्तहरूद्वारा पठनपाठन, यज्ञ र कीर्तनलाई निकै घनीभूत गराउनुभयो। आज पनि त्यो क्षेत्र सनातन वैदिक पद्धतिको सञ्चार क्षेत्र भएर रहेको छ।

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द वि.सं. २०२९ भाद्र २ गते भारतको उत्तराखण्डको यात्रामा निस्कनुभएको देखिन्छ। यात्राका क्रममा उहाँ मध्यकाशी हुँदै गङ्गोत्तरी तपकुण्ड जानुभयो। यसपछि उत्तरकाशी सिद्धक्षेत्र गोमुख पुगेर ६ महिना त्यहाँ तपस्या गर्नुभयो। यसरी नै केदारेश्वर, मन्दाकिनी, विद्यागङ्गा, पञ्चगङ्गा, चन्द्रशिला, कैलाश क्षेत्रहरूमा साधना, तपस्या गर्दै उत्तरकाशीमा पुग्नुभयो जहाँ जन्मले आफ्ना दाजु योगेश्वराश्रम रहनुभएको थियो। त्यहाँ योगेश्वराश्रमका साथमा केही दिन रहनुभयो र वि.सं. २०३० साल भाद्र शुक्ल पूर्णिमा तिथिको ब्रह्ममुहूर्तमा उहाँले जलसमाधि लिनुभयो। त्यो समयमा योगेश्वराश्रमका कुटीमा अगाडिदेखि नै धर्मानन्द र श्यामानन्द बस्नुभएको थियो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामीजी वि. सं २०३० भाद्रशुक्ल चतुर्दशीको रात अबेरसम्म उक्त व्यक्तिहरूसँगै रहनुभएको थियो। रात छिप्पिँदै गएपछि स्वामीजीले अबेर भएछ लौ अब सुतौं भन्नुभएपछि सबै आआफ्ना विस्तारातर्फ लाग्नुभयो। स्वामीजीहरू कुटीको भित्रीभागमा विश्राम गर्नुहुन्थ्यो। भित्रीभागमा प्रवेश गर्ने सानो ढोका पनि थियो। त्यसको बाहिरी भागमा चेलाहरू सुत्नुहुन्थ्यो। भित्री भागमा ब्रह्मधुनि पनि थियो। त्यही धुनिका नजिक बसेर स्वामी विवेकानन्द मन्दस्वरमा केही समय ॐ यो प्रणव ध्वनिमा समाहित भइरहनुभएको थियो। बाहिर रहनुभएका दुवै जना बिस्तारामा पल्टिइसक्नुभएको थियो। भित्रपट्टि भने मन्द आवाजमा स्वामी द्वयको संवाद भइरहेको थियो। चासो दिएर उक्त संवाद सुन्ने कुरा शोभनीय हुँदैनथ्यो। सदाभन्दा केही भिन्न परिवेश त थियो तर त्यो संवाद के थियो र किन भइरहेको थियो चेलाहरूले अनुमान गर्न सकिरहेका थिएनन्।

ब्रह्ममुहूर्तको समय आउन लागिरहेको थियो। सुतेका एक चेलालाई निद्राले छोड्दै थियो त्यही समयमा विवेकानन्द योगेश्वराश्रमको दर्शन गरी उहाँसँग बिदा लिँदै हुनुहुँदोरहेछ। बिदा लिँदै गर्दा "जन्मदा तपाईं दाजु हुनुभयो भने शरीर छाड्दा म दाजु हुने भएँ। म अब लागें। हजुरसँग ६ महिनापछि माथि नै हाम्रो भेट हुनेछ" स्वामीजीले बोलेका यी शब्दहरू एक शिष्यका कानमा पुगेछन्। उहाँका मनमा एकछिन हलचल मच्चिएछ। अबेर रात्रिमा हामीलाई सुत्न अह्राएपछि दाजुभाइबिच मधुरो आवाजमा के संवाद भएको थियो होला ? उहाँका मनामा खुल्दुली हुन थाल्यो।

मनमा उकुसमुकुस भइरहेके समयमा बिस्तारी ढोका उघारेर बलेको टर्च लाइट हातमा लिई विवेकानन्द गङगाजीतर्फ निस्कनुभयो। केही बेर अगाडि त्यस्तो संवाद सुनेको फेरि एकै छिनमा विवेकानन्द गङ्गाजीतर्फ निस्कँदाको अवस्थाले सुतिरहेका चेलालाई एक किसिमको किंकर्तव्यविमूढ बनायो। तथापि गुरु कता जानुभएको रहेछ भन्दै संवाद सुन्ने चेला गङ्गाजीतर्फ लाग्नुभयो। उज्यालो भने भइसकेको थिएन। गङ्गा किनारमा आकाशतिर फर्किएको उज्यालो प्रकाश देखियो। त्यही उज्यालोमा गुरु हुनुहुन्छ कि भनेर उज्यालोको नजिक पुग्दा त गुरुले बालेर ल्याएको टर्च लाइट बलिरहेको रहेछ र साथमा गुरुका खराउ मात्र रहेछन्। त्यतिबेला सम्ममा गुरुले समाधि लिइसक्नुभएको रहेछ। समाधि लिएको थाहा पाएर भक्तले गुरुका खराउ र उक्त टर्च लाइट मात्र साथमा लिएर फर्किएछन्। यसरी गुरुले जलसमाधि लिनुभएको दिन वि.सं. २०३० साल भाद्र शुक्ल पूर्णिमा तिथि रहेको थियो। जन्मिएर आफूले गर्नुपर्ने महत्त्वपूर्ण काम गरिसकेपछि स्वामी विवेकानन्दले मुक्तिको यात्रा तय गर्नुभएको हो। यसरी जन्मिएर आफूले गर्नुपर्ने महत्वपूर्ण काम गरिसकेपछि स्वामी विवेकानन्दले मुक्तिको यात्रा गर्नुभयो।

यसरी स्वामी विवेकानन्द सन्त, महात्मा, तपस्वी, गुरु र कवि अनेक आयाममा अभिव्यक्त हुनुभएका महापुरुष हुनुहुन्थ्यो। उहाँले शिक्षा, समाज र धर्मका क्षेत्रमा अतुलनीय कामहरू गर्नुभएको छ। यसै गरी उहाँले साधना, जप, मन्त्रसिद्धि, यज्ञानुष्ठान र तपस्याका विषयमा पनि आजको आध्यात्मिक जाज्ञासु समूहलाई अनुपम रूपले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्गदर्शन गराउनुभएको छ।

यो देवनिर्मित भारतवर्षको ब्रह्मावर्त स्थानमा जन्मिएका अग्रज सिद्ध व्यक्तिहरूले यो संसारका लागि जे शिक्षा दिएका छन्, सबैले त्यसलाई पालन गर्नु भन्ने शिक्षा मनुले दिएका छन्।[६] यस शिक्षाको अनुसरण र अनुगमन गर्दै हामीले पनि हामीभन्दा अगाडि जन्मिएर हामीलाई मार्गदर्शन गराउनु हुने स्वामी विवेकानन्दका मार्गदर्शन वा शिक्षालाई आत्मसात् गर्नुपर्छ। यही हाम्रो कर्तव्य हो। यस कर्तव्यमा रहन सक्यौं भने हामी गुरुका सच्चा भक्त हुनेछौं।

हरि ॐ तत्सत्।।

अन्तर्वार्ता

१. पं. विष्णुभक्त भण्डारी, बिर्तामोड २, चारपाने, झापा।
२. देवीप्रसाद पौडेल, बिर्तामोड २, चारपाने, झापा।
३. पुष्पलाल तिम्सिना, धुलाबारी, झापा।
४. भानुभक्त अधिकारी, बिर्तामोड २, चारपाने, झापा।

सन्दर्भग्रन्थ

मनुस्मृति, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली,
श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर २०७६
बृहन्नारदीयपुराण, चौखम्बा कृषणदास अकादमी, वाराणसी,
प्रतिभा जीवनी विशेषाङ्क, इन्दिराज पौड्याल, दमक झापाबाट प्रकाशित लेख।

फुटनोट

१. १५। ३० वृहन्नारदीय पुराण।
२. साधवो नहि सर्वत्र। २।२९ चाणक्यनीति।
३. अनाश्रितः कर्मफलं कार्यकर्म करोति य :। स सन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रिय :।। ६-११ श्रीमद्भगवत गीता।
४. ब्राह्मणः श्रुति शब्दाश्च देवानां व्यक्तमूर्तयः। सम्पूज्या ब्रह्मणा ह्येतास्तेन सन्तः प्रचक्षते।। मत्स्यपुराण।
५. वहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।। ७-१९श्रीमद्भगवत गीता।
६. एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।। २।२० मनुस्मृति।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षडानन्द गुरुको जीवनी र व्यक्तित्व

✍ प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा

१. षडानन्द गुरुको जन्म

लक्ष्मीनारायण अधिकारी र रुक्मिणीदेवीका कान्छा छोराका रूपमा विक्रम संवत् १८९२ साल मार्ग शुक्ल पञ्चमीका दिन गर्भे टुहुराका रूपमा षडानन्द गुरुको जन्म भएको कुरा उहाँको जीवनी पढ्दा थाहा हुन्छ। उहाँका जेठा दाजु नर्मदानन्द अधिकारीको अविवाहित अवस्थामै भौतिक देहलीला समाप्त भएको देखिन्छ भने माहिला दाजु देवीचरण, साहिँला दाजु माधवप्रसाद, काहिँला दाजु हरिलाल, जेठी दिदी दिव्यलोमा, माहिँली दिदी नर्मदा र कान्छी दिदी जान्धवापछि षडानन्द गुरुको यस धर्तीमा उदय भएको हो। दिङ्ला गडीगाउँका पौडेलहरू उहाँका मावली परिवार भएकाले र त्यस बखत विशेष गरेर मावलकै बसाइ भएको हुनाले षडानन्द गुरुको *अष्टवर्षं ब्राह्मणं उपनयेत्* यो गृह्यसूत्रोक्त वचनअनुसार व्रतबन्ध संस्कार, आठ वर्षको उपयुक्त समयमा मावलमा नै भएको बुझिन्छ। व्रतबन्ध संस्कारकै सन्दर्भमा द्विजत्वलाभ गरिसकेपछि देशान्तर जाने क्रममै, समावर्तन संस्कारै नभई, व्रतबन्ध यज्ञस्थलबाटै घरद्वार परित्याग गरी, जेठी दिदी द्विव्यलोमाको घर खोटाङ हुँदै विनाखर्च, भिक्षाचरणलाई चरितार्थ गर्दै ब्रह्मचारी भेषमा नै विद्याध्ययनका लागि तिरहुत (जनकपुर) मा विद्यमान ब्रह्मचर्याश्रममा पुग्नुभयो भन्ने जनश्रुति प्रसिद्ध छ।

२. ब्रह्मचर्याश्रम र भीष्मप्रतिज्ञा

यसरी द्विजत्वलाभ गरेर षडानन्द गुरुले १२ वर्षसम्म त्यस ब्रह्मचर्याश्रममा बसी गुरुकुलीय पद्धतिअनुसार विद्या अध्ययन गर्नुभयो। तिरहुत (जनकपुरको) ब्रह्मचर्याश्रम त्यस समयमा सत्सङ्ग र विद्या अध्ययनका लागि अतिप्रसिद्ध मानिन्थ्यो। किनकि त्यही ऐतिहासिक भूभागमा याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी, जनक, जनकनन्दिनी जानकी जस्ता महान् दार्शनिक विद्वान् एवं विदुषीहरूले सत्सङ्ग गर्नुभयो। त्यस्तै मण्डन मिश्र, गोन्नु झा, मगनीराम आदिजस्ता प्राचीन एवं अर्वाचीन प्रकाण्ड विद्वान्हरूका विद्वत्ताको प्रकृष्ट प्रभाव

✍ पूर्व वेदवदान्तविभागाध्यक्ष वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पनि त्यस क्षेत्रका प्रसिद्धिको परिपोषकका रूपमा लिन सकिन्छ। तर अतीव विचारणीय कुरा के छ भने अहिले त्यो तिरहुत क्षेत्र प्रायः भारतको भौगोलिक सीमाङ्कनभित्र परिरहेको छ। तत्कालीन विशिष्ट विद्वान्हरूमा त्यस आश्रममा सन्त मगनीरामको अग्रगामी भूमिका रहेको हुनाले उहाँकै सान्निध्यमा रहेर षडानन्द गुरुले वेद, व्याकरण, ज्योतिष र दर्शन विषयक अध्ययन सम्पन्न गर्नुभयो। तत्कालीन जनकपुरको शान्त सत्सङ्गमय वातावरण योगाभ्यासी सन्त-महात्माहरूको ब्रह्मविषयक तन्मयता, गुरुहरूका सान्निध्यमा रहेर गरेका अध्ययनबाट प्राप्त भएको स्वानुभूति र आफ्नो आबाल ब्रह्मचर्यमा रहने वैराग्यमूलक दृढ निश्चयले गर्दा षडानन्द गुरुले आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण गर्ने भीष्मप्रतिज्ञा गरेको कुरा उहाँको जीवनीबाट अवगत हुन्छ।

यसरी तिरहुत-ब्रह्मचर्याश्रममा रहेर आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरुले आधारभूत समग्र शिक्षा प्राप्त गरिसकेपछि प्राप्त विद्यालाई अझ परिष्कृत गर्दै उच्च शिक्षा हासिल गर्नका लागि उहाँ विश्वनाथ नगरी वाराणसी (काशी) प्रस्थान गर्नुभयो।

३. वाराणसी र विशेष अध्ययन

आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरुले विश्वनाथ नगरीको सुरम्य आश्रम मुमुक्षु भवनमा बसेर व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, पुराण आदि विषयका विशिष्ट विद्वान्हरूसँग बसी उपर्युक्त विषयको व्यापक एवं अनुसन्धानात्मक अध्ययन सम्पन्न गर्नुभयो। त्यसपछि विद्वत्ता एवं विचारले फराकिलो दृष्टि भएका षडानन्द गुरुले भारतका सुप्रसिद्ध तीर्थस्थलहरूको भ्रमण गरेको पाइन्छ। तीर्थयात्राको क्रममा देखा परेका धार्मिक विसङ्गति र विधर्मीहरूले वैदिक सनातन धर्ममाथि गर्न खोजेको आक्रमणले उहाँको मन आन्दोलित एवं उद्वेलित हुनु स्वाभाविकै थियो। किनकि उहाँ वैदिक सनातन धर्मका सच्चा प्रवर्द्धक हुनुहुन्थ्यो।

अङ्ग्रेजका कब्जामा रहेका तत्कालीन भारत भूमिमा चलिरहेको मध्ययुगीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक द्वन्द्व र त्यसले भित्र्याएका सामाजिक विचलनको अनुभूति षडानन्द गुरुका अन्तःकरणमा सहज रूपमा भिर्त्रिंदै गयो। धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचलनका कारण विचलित भएका धर्मानुरागी विशिष्ट विद्वान् एवं सन्त-महन्तहरूका आन्तरिक अभिप्रेरणाले षडानन्द गुरुलाई गायत्री माताको कृपाविना कुनै पनि क्षेत्रमा सफलता प्राप्त गर्न सकिँदैन भन्ने दृढ निश्चय भयो। विद्याभ्यास एवं योगाभ्यासद्वारा षडानन्द गुरु आध्यात्मिक सफलताको शिखरमा पुग्नुभएको भए तापनि विधिपूर्वक गायत्री पुरश्चरण गर्ने अठोटका साथ पुनः उहाँ आफ्नो मातृभूमि नेपाल नै फर्कनुभयो। किनकि यो नेपाल स्वयंमा शास्त्रसिद्ध तपोभूमि हो।

सत्ये सत्यवती नाम त्रेतायां तु तपोवनम्। द्वापरे मुक्तिसोपानं कलौ नेपालिका पुरी।।

(स्कन्दपुराण, हिमवत्खण्ड, अध्याय ७२)।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. उत्तरवाहिनी र गायत्री पुरश्चरण

पाशुपत क्षेत्रअन्तर्गत विद्यमान गोकर्णेश्वर महादेव मन्दिरदेखि २ किलोमिटर उत्तर, सुन्दरीजल भगवतीको मन्दिरभन्दा ५ किलोमिटर दक्षिण श्वेतवराह पर्वतबाट ४ किलोमिटर आग्नेय कोणमा वाग्मती नदी उत्तर बगेकी छन्। नदी उत्तर बगेको भूभागलाई प्राकृतिक तीर्थ मान्ने धार्मिक भावना बोकेका आस्थावान् व्यक्तिहरूले त्यही पवित्र भूभागलाई उत्तरवाहिनी नामले सम्बोधन गर्ने गरेको पाइन्छ। त्यही उत्तरवाहिनी वाग्मती नदीका पश्चिमपट्टि डन्डोर झाडीमा विद्यमान प्राकृतिक गुफामा बसेर षडानन्द गुरुले २४ लाख गायत्री पुरश्चरण गर्नुभयो। जपिने मन्त्रमा जति अक्षर छन्, त्यति लाख जपसा एक पुरश्चरण हुन्छ। यसरी विधिपूर्वक मन्त्रार्थ, मन्त्रशिखा र मन्त्रचैतन्यको सिद्धान्तअनुसार गायत्री पुरश्चरण गर्ने क्रममा उहाँले साक्षात् गायत्री माताको दर्शन प्राप्त गर्नुभयो भनिन्छ। त्यो प्राकृतिक सुन्दरताले भरिपूर्ण भएको शान्त, एकान्त, सुरम्य, सिद्धस्थल, धार्मिक पर्यटकीय दृष्टिले प्रचार-प्रसारको प्रतीक्षा गर्दै वर्तमान अवस्थामा पनि भग्नावशेषका रूपमा विद्यमान छ। यो प्राकृतिक एवं सिद्धस्थलको प्रचार प्रसार गर्नु समाजको कर्तव्यभित्र पर्नुपर्छ।

५. अष्टसिद्धि र बालागुरु

यसरी गायत्री माताको दर्शन प्राप्त भएपछि उहाँलाई अणिमा, महिमा आदि अष्टसिद्धि सहजै प्राप्त भए भनिन्छ। त्यसपछि उहाँको बालागुरु, गुरुमहाराज, आबाल ब्रह्मचारी आदि नामले सर्वत्र ख्याति फैलन पुगेको पाइन्छ। अनि उहाँका वरिपरि साधु, सन्त, महात्मा, भक्तजनहरूको भिड लाग्नु स्वाभाविक हुन पुग्यो।

षडानन्द गुरुबाट शैव, शाक्त, वैष्णव आदि व्यक्तिहरू मात्र होइन अपितु तत्कालीन राजा र भद्रभलाद्मी राणाहरू पनि प्रभावित भएर भक्त भएको पाइन्छ। त्यसपछि दरबारिया गुरु-पुरोहितदेखि विभिन्न उच्च ओहोदामा रहेका व्यक्तिहरूबाट पनि उहाँ गुरु शब्दद्वारा सम्बोधित हुन पुग्नुभयो। उहाँलाई श्री ५ सुरेन्द्र, श्री ३ रणोद्दीप, जनरल धीरशमशेर, जनरल जगत्शमशेर, जनरल वीरशमशेर, भीमशमशेर आदि तत्कालीन महत्त्वपूर्ण ओहोदामा विद्यमान व्यक्तिहरूले समय-समयमा भेट्ने गरेको कुरा उहाँको जीवनीबाट जान्न सकिन्छ।

भनिन्छ एक दिन भगवान् पशुपतिनाथको दर्शन गरेर फर्कने सन्दर्भमा भक्तहरूको विशेष आग्रहलाई नकार्न नसक्दा वाग्मती किनारमा रहेको पचलीभैरवको परिसरमा आफ्नो स्थायी आश्रम निर्माणको थलो रोज्नुभयो। तात्कालिक अवस्थामा त्यो स्थान सहरिया वातावरणले दूषित नभएको, शान्त, सुन्दर थियो होला। अहिले पनि अन्यत्रको अपेक्षा एकान्त नै छ। त्यहाँ बसेर उहाँले मुमुक्षु साधकहरूलाई विद्या एवं भगवदुपासनाको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माध्यमबाट मात्र मानवजीवन सफलताको बिन्दुमा पुग्न सकिन्छ भन्ने सदुपदेश प्रदान गर्दै धेरै समयसम्म योगसाधना गर्दै त्यहाँ रहँदा धेरैपटक पञ्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्री पुरश्चरण गरेको पाइन्छ।

६. दिङ्लाको वास र शिक्षामूलक धर्म-संस्कृतिको उत्थान

तीर्थाटनका सन्दर्भमा अङ्ग्रेजहरूले वैदिक सनातन धर्ममाथि गरेको अन्याय, अत्याचार, नेपालमा पनि शासकवर्ग, उच्चवर्ग र उच्च मध्यमवर्गमा विद्यमान विलासिताजन्य विकृति र गरिबी अशिक्षाका दलदलमा भासिएका मध्य एवं निम्न वर्गका दीनहीन व्यक्ति एवं समाजका विवशतालाई पनि राम्ररी बुझेका आबाल ब्रह्मचारी गुरुले आफ्नो जन्मथलो दिङ्लालाई नै कर्मक्षेत्रको केन्द्रबिन्दु बनाउने अठोट गर्नुभएको देखिन्छ।

उपर्युक्त विविध अज्ञानरूपी अन्धकारलाई हटाउनका निमित्त शिवोपासना र संस्कृत शिक्षाको दिव्यज्योति मात्र समर्थ छ भन्ने दृढ विश्वासका साथ उहाँले दिङ्लाको कैलाश डाँडामा १९३२ सालमा संस्कृत पाठशालाको स्थापना गर्नुभयो र वैदिक विधिअनुसार प्राणप्रतिष्ठापूर्वक नर्मदेश्वर शिवमन्दिरको पनि स्थापना गर्नुभयो। यसरी भगवान् शिवको उपासनाद्वारा वैदिक सनातन धर्म र संस्कृत पाठशालामा अध्ययन अध्यापनका माध्यमबाट शिक्षाको प्रचार-प्रसार गर्न एकैसाथ शुभारम्भ गर्नुभएको कुरा त्यहाँका प्रत्यक्षदर्शी महानुभावहरूबाट सुन्न पाइन्छ। यो पाठशाला रानीपोखरी संस्कृत पाठशालाभन्दा दुई वर्ष जेठो हो। यस्ता ऐतिहासिक संस्कृत पाठशालालाई साधारणीकरण गरेको वर्तमान परिप्रेक्ष्यमा समाजले *मौनं स्वीकृतिलक्षणम्* लाई चरितार्थ गर्नु हुँदैन।

७. आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रका सफल व्यवस्थापक

यसरी बालतपस्वी षडानन्द गुरुले संस्कृत पाठशाला स्थापना गरेर शिक्षाको ज्योति जगाउन थालेपछि स्थानीय आफ्ना बन्धु-बान्धव, अधिकारी, चापागाईं, पौडेल, गौतम, लम्साल, वस्नेत आदि थर जोडिएका महान् व्यक्तित्वहरूले शारीरिक, आर्थिक, भौतिक एवं भावनात्मक सहयोग गरेको देखेर सबै वर्ग र जातिका व्यक्तिहरूबाट पनि प्राप्त दानदातव्यद्वारा जग्गा किनेर त्यसको आयस्रोतबाट सीताराम गुठी स्थापना गरी गुरु, पुजारी, पण्डित, विद्यार्थी सबैलाई पारिश्रमिक एवं भोजनको रूपमा धान नै दिने व्यवस्थाको शुभारम्भ गर्नुभयो। भनिन्छ पञ्चप्रणव प्रयुक्त गायत्र्याख्य ब्रह्मोपासक षडानन्द गुरु साधनाकै क्रममा मानव समूहबाट अदृश्य हुनु र पुनः प्रकट हुनु, रुमालमा पाइला राखेर तमोर नदी तर्नु जस्ता चमत्कारपूर्ण लीलाद्वारा समाजमा सिद्ध साबित भए तापनि उहाँमा अभिमान थिएन। वास्तवमा उहाँ षड्रिपु विनिर्मुक्त भएकाले उहाँको सत्कीर्ति नेपालमा मात्र होइन अपितु भारत, भुटान, बर्मा आदि देशमा रहेका सबै समाजमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फैलिएको पाइन्छ। यसरी सबैतिर समुज्ज्वल छवि छरिएका बालागुरुले धर्म प्रचारका लागि सार्वजनिक श्रीमद्भागवत महापुराण वाचन गर्ने, चतुर्मास पुराण लगाउने, घर-घरमा तुलसी रोप्ने, द्वादशी, औंसी, सङ्क्रान्ति, पूर्णिमा जस्ता पर्वमा सिधा दान गर्ने, प्रत्येक दिन मुष्टिदान गर्ने, बाला चतुर्दशीका दिन शतबीज छर्ने, सामूहिक व्रतबन्ध गर्नेजस्ता सामाजिक कार्यको शुभारम्भ गर्नुभएको हो र जनजातिलाई संस्कृत पढ्ने व्यवस्था र वाग्मतीका वारिपारि किनारमा बसेर गायत्रीमन्त्र जप गर्नका लागि ती मान्छे बस्नुहुने खोपाको व्यवस्था मिलाउनुभयो। दासदासी प्रथा, सती प्रथा जस्ता अमानवीय परम्परा आफ्नो भावनाअनुरूप सर्वत्र उन्मूलन नभएको थाहा पाएर कानुनी रूपमा नै हटाउनका निमित्त श्री ३ चन्द्र शमशेरलाई व्यक्तिगत रूपमा भेटेर बिन्तीपत्र चढाउनुका साथै मौखिक निवेदनसमेत गरी दासदासी एवं सती प्रथा उन्मूलन गर्न सफल व्यक्तिको रूपमा पनि षडानन्द गुरुको नाम लिने गरिन्छ। यस्ता सामाजिक, आध्यात्मिक, धार्मिक व्यक्तित्व, पञ्चप्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्री उपासना एवं षट्चक्र चिन्तनद्वारा प्राप्त सिद्धिका कारण लोकमा प्रसिद्ध हुनुभएका सन्त महापुरुष पाँचथरको जोरपोखरी पुग्नुभएको तथ्य रहेको छ।

८. पाँचथर-जोरपोखरी र षडानन्द गुरु

यसरी धार्मिक संस्थाका संस्थापक मात्र होइन अपितु आध्यात्मिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रका कुशल व्यवस्थापक आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरुका मावली पौड्यालहरूमा पूर्वज मन्त्रशक्तिद्वारा अग्नि प्रकट गरेर अग्निहोत्रादि कृत्य गर्ने श्रोत्रिय ब्राह्मण हुनुहुन्थ्यो भन्ने कुरा पौड्याल वंशावलीबाट अवगत हुन्छ। यस्ता ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मणबाट अत्यन्त प्रभावित भएर तत्कालीन राजाले वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण एवं संवर्द्धन गर्नका निमित्त ती साधक महापुरुषलाई काभ्रेपलान्चोकमा बिर्ता दिएको बुझिन्छ। त्यो बिर्ता पाउने व्यक्ति हुनुहुन्थ्यो अग्निहोत्री धर्मेश्वर उपाध्याय। यी धर्मेश्वरका सन्ततिहरू केही समयसम्म त्यस क्षेत्रमा भएका आधिकारिक व्यक्तिहरूलाई वेदवेदाङ्ग अध्यापन गराउँदै बिर्ताका रूपमा प्राप्त भूभागको उपभोग गर्दै रहे भने यसपछिका पुस्ताहरू कोही रामेछाप-सैंपु गएका, कोही सैंबु-सिस्नेतिर गएका र कोही पोखरा, रोल्पा, रुकुमतिर गएका देखिन्छन्। यसै गरी कोही ओखलढुङ्गा हुँदै भोजपुरको दिङ्ला-फालिकोटमा आई बसोबास गरेका देखिन्छन्। यिनै दिङ्ला फालिकोटमा बसोबास गर्ने लीलाम्बर उपाध्यायदेखि पाँचौं पुस्ताका अग्निहोत्री पण्डित श्रीहर्क उपाध्याय पाँचथर-जोरपोखरीको पुण्यभूमिमा बसोबास गर्न पुगेका हुन्। यिनका ५ सन्ततिमध्ये ३ भाइ जोरपोखरीकै 'खाल्डे' भन्ने ठाउँमा बसेका र २ भाई सिक्किम-भुटानतिर गएको बुझिन्छ। 'न्याय नपाए गोर्खा जानू, विद्या हराए काशी अथवा दिङ्ला जानू' भन्ने लोकोक्तिले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्यन्तै चर्चा पाएका बेला नेपालका विभिन्न जिल्लाबाट मात्र होइन भारत, भुटान, बर्माबाट पनि नेपाली विद्यार्थी अध्ययनका लागि दिङ्ला आउने क्रममा पाँचथरबाट यज्ञनिधि रेग्मी, ताप्लेजुङबाट भण्डारी पण्डित र सिक्किमबाट अविचन्द्र पौड्याल आदि धेरै विद्यार्थीहरू आएर विद्या अध्ययन गरेको बुझिन्छ। विद्या अध्ययन गरेर घर फर्कने क्रममा पण्डित यज्ञनिधि रेग्मी गुरुले सिद्धस्थल जोरपोखरी आउन सादर निमन्त्रण गर्नुभएको रहेछ। पछि आफ्ना मावलीको हैसियतले श्रीहर्क उपाध्यायका छोराले आफ्नो घर सिक्किममा श्रीमद्भागवत महापुराणको प्रमुख कथावाचकको रूपमा प्रवचन गर्न विशेष आग्रह गरेको हुंदा पुराण भन्न मामाघर सिक्किम जाने क्रममा जोरपोखरी सिद्धस्थल पाँचथरमा षडानन्द गुरुको गरिमामय उपस्थिति भएको कुरा स्वर्गीय ऋषिकल्प गुरु पण्डित इन्दिराज रेग्मी गुरुका मुखाबाट मैले पनि सुन्ने सौभाग्य प्राप्त गरेको हो। पण्डित प्रवर गुरु इन्दिराज रेग्मी पण्डित यज्ञनिधि रेग्मी गुरुका पुत्ररत्न हुनुहुन्थ्यो।

यसरी १९६०-६१ तिर आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरु पाँचथरको धार्मिक पर्यटकीय तीर्थस्थल जोरपोखरीमा केही समयसम्म बसेर योगाभ्यास गर्दै आफ्ना प्रिय शिष्य रेग्मी गुरु, अविचन्द्र गुरु, भण्डारी गुरु, पौड्याल गुरुलगायत सबै भक्तजनहरूलाई आशीर्वचन प्रदान गरी त्यहींबाट सिक्किम जानुभएको कुरा जनश्रुतिबाट थाहा हुन्छ। यसरी गायत्री माताका कृपापात्र आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरुले गायत्री पुरश्चरण गरेर विविध सिद्धि प्राप्त गर्नुभएको थियो र अन्त्यमा योगवाशिष्ठ महारामायणको मनन एवं निदिध्यासन गर्दै आफ्नै आश्रम पचलीभैरव परिसरमा वि.सं. १९७३ साल ज्येष्ठ ३२ गते बिहान ९ बजे ब्रह्मलीन हुनुभएको हो। यस्ता आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रका सफल व्यक्तित्व आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरुको जीवनीबाट हामीले पनि शिक्षा लिनुपर्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं. यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) को सङ्क्षिप्त जीवनी

✍ नीतिराज रेग्मी/हेमराज अधिकारी

पृष्ठभूमि

सत्ययुगमा सत्यवती, त्रेतामा तपोवन, द्वापरमा मुक्तिसोपान र कलिमा नेपालपुरीका रूपमा प्रसिद्ध रहेको हाम्रो देश पावन पवित्र तीर्थस्थल हो। राष्ट्रदेव पशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ, स्वर्गद्वारी, देवघाटधाम, वराह क्षेत्र, जनकनन्दिनी जानकीधाम र लुम्बिनीजस्ता पवित्र मन्दिर धामहरूले सुशोभित यो देश भगवान् बुद्ध, सीता माता, जनक, गार्गी, मैत्रेयी, व्यास, विश्वामित्र जस्ता विभूतिहरूको जन्म र कर्मभूमि हो।

ने मुनिद्वारा पालित यस भूमिमा ज्ञान, ध्यान, योग, शिक्षा र अध्यात्मको निकै लामो परम्परा रहिआएको छ। गृहस्थाश्रममा पनि ऋषि परम्परालाई निरन्तरता दिँदै मानव समाजको समुन्नति र सुखका निम्ति जीवन समर्पित गर्ने महापुरुषहरूको कर्म र ज्ञानधाराबाट यो भूमि सिञ्चित हुँदै आएको छ। यसै सन्दर्भमा नेपालको सुदूर पूर्वोत्तरमा रहेको पाँचथर जिल्लामा जन्मेर शिक्षा र अध्यात्मका माध्यमबाट मानव कल्याणका निम्ति योगदान पुर्याउने ऋषितुल्य मनीषीहरूको शृङ्खला पनि निकै लामो रहेको छ। यस छोटो आलेखमा भने पाँचथरमा जन्मेर ऋषितुल्य जीवन यापन गरी शिक्षा र अध्यात्मका माध्यमबाट समाजमा अमूल्य योगदान पुर्याउने पण्डित यज्ञनिधि रेग्मीको सङ्क्षिप्त जीवनी प्रस्तुत गरिएको छ।

जन्म र पारिवारिक स्थिति :

पं. यज्ञनिधि रेग्मी गुरुको जन्म वि.सं. १९४४ सालको महाशिवरात्रिका दिन पाँचथरको सुभाङमा भएको हो। पिता चन्द्रशेखर रेग्मी र माता कौशिलादेवीको तेस्रो सन्तान र ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा उहाँको जन्म भएको हो। उहाँका रत्नमाला (वि.सं. १९३८) कृष्णमाया (वि.सं. १९४१) दुई दिदीहरू र हिमादेवी (वि.सं. १९५३) एक बहिनी एवं दाताराम (वि.सं.१९४७) देवीप्रसाद (वि.सं.१९५६) र जनकलाल (वि.सं.१९६०) गरी तीन जना भाइहरू थिए।

✍ नीतिराज रेग्मी : समाजसेवी, सुभाङ, पाँचथर

✍ हेमराज अधिकारी : साहित्यकार, ताप्लेजुङ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मँदै जुटेको अनौठो संयोग

महाशिवरात्रिको जन्म आफैंमा एउटा संयोग हो भने बालक यज्ञनिधि गुरुको धर्तीमा आगमन हुनेबित्तिकै घरमा एक जना महात्माको आगमन भएछ र उहाँले 'तपाईंको घरमा जुन बालकको जन्म भएको छ, ती बालक ज्यादै भाग्यमानी छन्, बालकलाई पहिले यो गङ्गाजलले पवित्र गर्नुहोस् अनि बाँकी कर्म गर्नुहोला' भन्दै गङ्गाजल दिनुभएछ। सुँडेनीहरूले पनि त्यो गङ्गाजलले स्नान गराई पवित्र तुल्याएछन्। यसरी पं. यज्ञनिधिले धर्तीमा पाइला टेक्नेबित्तिकै गङ्गाजलले स्नान गर्न पाउनु वास्तवमा एउटा अनौठो संयोग नै हो। यस्तो संयोग प्रायः मुस्किलले कसैकसैका जीवनमा मात्रै जुर्ने गर्छ।

बाल्यकाल, व्रतबन्ध र विद्यारम्भ

बालक यज्ञनिधि गुरुको बाल्यकाल रमाइलोसँग बितेको थाहा पाइन्छ। परिवारको जेठो छोरो भएकाले पनि मातापिताको स्नेह तथा आफन्तको प्रेम पाएका यज्ञनिधिले दिदीहरूको माया पनि प्रशस्त पाएको बुझिन्छ। आठ वर्षको उमेरमा यज्ञोपवीत संस्कार (व्रतबन्ध) पछि नियमित गायत्रीजप र विद्यारम्भ गर्नुभएका यज्ञनिधि गुरुले स्याउले पाठशालामा वेद, रुद्री, चण्डी पढ्न थाल्नुभएको हो भने आफ्नै पिताजीबाट घरमै तमसुक, भरपाई, चिठी जस्ता व्यावहारिक स्रेस्ताको ज्ञान लिनुभएको हो।

विवाह र सन्तान :

बालक यज्ञनिधि क्रमशः किशोर वयतर्फ उन्मुख भइरहँदा उहाँको विवाहका विषयमा समेत घरमा कुरो चल्न थालेको थियो। पन्ध्र वर्ष नकट्दै छोराको र रजस्वला नभई छोरीको विवाह गर्ने तत्कालीन समाजको प्रचलनअनुसार छोराको विवाहका लागि मातापिता कन्याको खोजीमा लागिसक्नुभएको थियो। अन्ततः सुभाङकै माझगाउँ बस्ने लोकनाथ ओझाकी काइँली छोरी ऋद्धिमायासँग विवाह गर्ने टुङ्गो लाग्यो र आफू १४ वर्षको छँदा आफूभन्दा दुई वर्ष कान्छी ऋद्धिमायासँग पं. यज्ञनिधिको वैवाहिक कर्म सुसम्पन्न भएको हो। सन्तानले डाँडाकाँडा ढाकून् भन्ने तत्कालीन समाजको मान्यताअनुसार पं. यज्ञनिधि र श्रीमती ऋद्धिमायाबाट अम्मराज, खिलराज, चैतन्य, त्रैलोक्यराज, इन्दिराज र डिल्लीराज गरी ६ भाइ छोरा र रुक्मिणीदेवी सापकोटा (पुवा, पाँचथर) राधादेवी सापकोटा (पुवा, पाँचथर) हुमादेवी काफ्ले (कोयाखोला, तेह्रथुम) वेदमाया गुरागाईं (हिरुवादिन, ताप्लेजुङ) लालदया ढुङ्गेल (कोयाखोला, तेह्रथुम) नुतनमाया कोइराला (ढुङ्गेसाँघु, ताप्लेजुङ), कमला रिजाल (मेहेलबोटे, पाँचथर) डम्बरकुमारी न्यौपाने (हिरुवादिन, ताप्लेजुङ) नुलमाया गौतम (कोयाखोला, तेह्रथुम) सहित ९ बहिनी छोरी गरी पन्ध्र सन्तानको जन्म भएको देखिन्छ।

पारिवारिक आर्थिक अवस्था

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं. यज्ञनिधि रेग्मीको परिवार निम्न मध्यमवर्गीय परिवार हो। त्यति बेलाको आयस्रोत भनेकै कृषि र पशुपालन थियो। धेरै छोराछोरीको जञ्जाललाई पालनपोषण, शिक्षादीक्षा र व्रतबन्ध, विवाह आदि संस्कार पूरा गराउन निकै नै कठिन थियो तापनि रेग्मी परिवार सुभाङका राम्रै महाजनमा गनिने हुनाले उक्त कर्म सहजतापूर्वक नै सम्पन्न भएको बुझिन्छ। निगुरे, पाडारे र सजिले जस्ता खेतका धान, मकै, कोदो, मास, घोरे, सागपात, फलफूल र गोठबाट आपूर्ति हुने गोरसबाट परिवारको भरणपोषण राम्रै ढङ्गले हुने गरेको कुरा जानकारहरू बताउँछन्।

घरगृहस्थीका क्रममा गोठको बसाइ

पं. यज्ञनिधिको जीवनकालसम्म पूर्वी पहाडको पाँचथर जिल्ला एक दुर्गम स्थानका रूपमा रहेको थियो। हिजोआजको जस्तो सञ्चार र यातायातको साधन पुगिसकेको थिएन। जीवन यापनको एक मात्र साधन कृषि र पशुपालनमात्रै थियो। जसका घरमा गाई, भैंसी, गोरु, बाख्रा, घोडासमेत हुन्थे, त्यही महाजन, साहु कहलिन्थ्यो। घरमा मकैको थाङ्ग्रो र खलामा धानको कुन्यु हेरेर नाता-सम्बन्ध जोड्ने चलन थियो। गाईवस्तु, बाख्रा धेरै हुनेहरूले गोठ नबसी सुखै थिएन। पं. यज्ञनिधिको परिवार पनि त्यति बेला सम्पन्न परिवारका रूपमा गनिन्थ्यो। तर जति नै सम्पन्न भए पनि खेतीपाती र पशुपालन नगरी जीवन चल्दैनथ्यो। पं. यज्ञनिधिले पनि १५ वर्षको उमेरमा गोठ बस्नुपरेको थियो। गोठमा बस्दा घरबाट लगेका चामल साटेर कोदाका पिठामा खिर पकाउँदा नपाकेर काँचै खानुपरेको रमाइलो घटना उहाँले धेरैलाई सुनाउनुभएको पनि बुझिन्छ।

शिक्षादीक्षा

राणाशासनको त्यस समयमा शिक्षादीक्षाको राम्रो व्यवस्था लगभग नेपालभरि नै थिएन। पूर्वी नेपालको भोजपुरको दिङ्लामा आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरुले वि.सं. १९३२ मा स्थापना गर्नुभएको संस्कृत पाठशाला नै एउटा शिक्षाको केन्द्रका रूपमा परिचित थियो। पूर्वी नेपालका धेरै विद्यार्थी त्यस संस्कृत पाटशालाबाट लाभान्वित बनेका देखिन्छन् र त्यस पाठशालाबाट दीक्षित बनेका धेरैले पूर्वी नेपालका विभिन्न स्थानमा त्यस्तै किसिमका पाठशाला स्थापना गरी शिक्षाको आलोक छरेका उदाहरण भेटिन्छन्।

पं. यज्ञनिधि रेग्मी पनि १६ वर्षको उमेरमा शिक्षा आर्जन गर्न आबाल ब्रह्मचारी गुरु षडानन्दका सान्निध्यमा दिङ्लामा पुग्नुभएको हो। वेद, रुद्री, चण्डी आदि पारायण गर्न सक्ने ज्ञान र सामान्य स्रेस्ताको ज्ञान घरमै हासिल गरिसक्नुभएका पं. यज्ञनिधि रेग्मीको क्षमताबाट आबाल ब्रह्मचारी गुरु षडानन्द पनि प्रभावित हुनुभएछ। परमात्माको कृपा र गुरुको आशीर्वाद भए संसारमा केही पनि असम्भव छैन। दिङ्लामा गुरु षडानन्दको सान्निध्यमा रहेर पं. यज्ञनिधिले व्याकरण, ज्योतिष, कर्मकाण्ड र योगशास्त्रको राम्रो ज्ञान हासिल गर्नुभएको बुझिन्छ। एक दिन कोठामा कसैले नदेखी एक्लै हठयोगको अभ्यास गर्न लाग्दा गुरु षडानन्दले देख्नुभएछ र उहाँले 'यज्ञनिधि तिमीले योगमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दु:ख गर्नुपर्दैन, पछि आफैं सिद्ध हुन्छ, तिमीले सम्पूर्ण ज्ञान पाउनेछौ' भनेर आशीर्वाद दिनुभएछ। वास्तवमा आशीर्वादको कुनै समयसीमा हुँदैन, श्रद्धा भएसम्म आशीर्वाद सकिँदैन, आशीर्वाद कसैले खोस्न सक्दैन र महापुरुषले दिएको आशीर्वाद नपुगी छोड्दैन भन्ने उक्ति पं. यज्ञनिधिका जीवनमा चरितार्थ बन्न पुगेको देखिन्छ। गुरुको आशीर्वादले गर्दा उहाँले सम्पूर्ण ज्ञान आर्जन गर्नुभयो। पछि गुरु षडानन्दकै आज्ञा पाएर पं. यज्ञनिधि थप ज्ञान आर्जन गर्न काशी जानुभयो र त्यहाँ १४ मारी गुरु श्रीमहान् सन्त शिवदत्त गिरीका समीपमा पुग्नुभयो।

पं. यज्ञनिधि गुरु अत्यन्तै मेधावी र प्रतिभाशाली हुनुहुन्थ्यो। उहाँलाई गुरुको मुखारविन्दबाट एकपटक पाठ सुन्न पाए कण्ठस्थ हुन्थ्यो। काशीमा विद्या अध्ययनका क्रममा उहाँसँगै एउटै डेरामा पाँचथर एकतिनका एक जना सुवेदी थरका साथी पनि बस्नुहुँदो रहेछ। बेलुका खाना खाएर सुवेदी पण्डित पाठ घोक्न थाल्नुभएछ र पं. यज्ञनिधिचाहिँ धोती ओढेर मुख छोपेर सुत्नुभएछ। भोलिपल्ट पाठ बुझाउँदा सुवेदी गुरु पाठ नआएर अकमकिनुभएछ तर यज्ञनिधि गुरुले सबै पाठ कण्ठस्थ बुझाउनुभएछ। सुवेदी गुरुचाहिँ 'म पढ्ने, तिमी पाठ बुझाउने' भन्दै कहिलेकाहीँ रिसले एकदुई मुक्का पनि हान्नुहुन्थ्यो भनेर उहाँ आफैंले अरूलाई सुनाउने गरेको कुरा उहाँका निकटस्थहरू बताउने गर्नुहुन्छ। काशीमा रहेर छोटो समयमै कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड र ज्ञानकाण्ड गरी वेदका तीनवटै अङ्गको ज्ञान प्राप्त गरी षड्शास्त्रको ज्ञान लिनुभएको थियो। मन्त्रशक्ति र तन्त्रशास्त्रको समेत राम्रो ज्ञान आर्जन गरी विद्वान् पण्डित बनेर उहाँ आफ्नै जन्मथलो सुभाङमा आउनुभयो र सुभाङ गुरुका रूपमा प्रसिद्ध हुनुभयो।

आफूपछिका विद्यार्थीका लागि प्रेरणास्रोत

पण्डित यज्ञनिधि रेग्मी दिङ्लामा अध्ययन गरी विद्वान् पण्डित भएर फर्किएको कुरा पाँचथर र ताप्लेजुङका धेरै ठाउँमा फैलियो। यस समाचारबाट धेरै मानिस उहाँलाई भेट्न सुभाङ पुगे भने उहाँबाटै धेरै कुराको जानकारी लिएर पछि पाँचथर र ताप्लेजुङका धेरै विद्यार्थी विद्या अध्ययनका निम्ति दिङ्ला पुगेको र पढी सकेर आआफ्ना स्थानमा योगदान पुर्याउनेहरूमा पं. छविलाल अधिकारी (छविलाल मुखिया, थुम्बेदिन) पं. नन्दिकेश्वर खतिवडा (थुम्बेदिन) पं. रमानन्द न्यौपाने (थुम्बेदिन) पं. चामुनारायण न्यौपाने (थुम्बेदिन) पं. धर्मानन्द अधिकारी (थुम्वेदिन) पं. बैजनाथ भट्टराई (साँघु) पं. पशुपति भट्टराई (मेदिवुङ) पं. त्रिलोचन भट्टराई (मेदिबुङ) पं. रामप्रसाद भट्टराई, पं. टेकनाथ भट्टराई (ओसे) पं. शिवराज पौड्याल (भित्रिया) पं. सोमनाथ मिश्र (मिश्रटार) आदि सयौंका सङ्ख्यामा रहनुभएको वुझिन्छ।

पं. यज्ञनिधि गुरुको दिनचर्या

ठूलो पारिवारिक जञ्जाल र अरू घरगृहस्थीका समस्या भए तापनि पं. यज्ञनिधिको दिनचर्या आफ्नै किसिमको थियो। कुनै समस्या र अभावबाट आत्तिइहाल्ने र कुनै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपलब्धिबाट मात्तिइहाल्ने स्वभाव उहाँको थिएन। कृषि नै मुख्य पेसा भए पनि भगवद्भक्ति र शास्त्रीय चिन्तनमै उहाँको समय व्यतीत हुन्थ्यो। बिहान ४ बजे ब्रह्ममुहूर्तमै स्नान गर्ने र बिहान नौ बजेसम्म दैनिक ध्यान, योग र पूजापाठमै उहाँको समय व्यतीत हुन्थ्यो। दश बजेतिर भोजन ग्रहण गरी आधा घन्टा 'सीताराजा' गर्नुहुन्थ्यो। त्यसपछि आँगनमा गुन्द्री र राडी ओछ्याएर दश, बीस विद्यार्थी अगाडि राखेर कसैलाई ज्योतिष, कसैलाई तत्त्वबोध, कसैलाई पञ्चदशी, गीता, उपनिषद् र कसैलाई महावाक्यहरूको व्याख्या गरेर पढाउनुहुन्थ्यो। तीन बजेपछि पढाउने काम बन्द गरेर मानिसहरूसँग भेटघाट सत्सङ्गका साथै चिनाटिपन हेरिदिने र धार्मिक अड्चन फुकाइदिने गर्नुहुन्थ्यो। घरव्यवहार, लेनदेन र निमन्त्रणा आदिका प्रयोजनका निम्ति गाउँघरमा घुमफिर गर्नुपर्दा घोडामा चढेर आउजाउ गर्नुहुन्थ्यो। उहाँले यही प्रयोजनका लागि घरमै घोडा पाल्नुभएको थियो। घरमा आएका मानिसलाई केही खुवाएर पठाउन पाए हुन्थ्यो भन्ने उहाँको विचार हुन्थ्यो। वैशाख महिनामा बाटामा बसेर सर्बत बाँड्ने, कात्तिक महिनामा तुलसाका फेदमा राखेर शालीग्राम पूजा गर्ने र आकाशबत्ती बाल्ने, प्रत्येक द्वादशीमा एक-दुई जना ब्राह्मण बोलाएर भोजन गराउने, अक्षय तृतीयामा जौको सातु र सर्बत बाँड्ने, श्रावण सङ्क्रान्तिमा कण्डारकको पूजा गरेर लुतो फाल्ने, गणेश चौथीमा आफैं लड्डु बनाएर चढाउने र वार्षिक पर्वहरूमा शास्त्रनिर्दिष्ट कर्महरू गर्ने उहाँको नियमजस्तै थियो। विष्णु पाञ्चायन पूजा र गायत्री जपबाट नै उहाँको नित्य दिनचर्याको क्रम सुरु हुने गर्थ्यो।

गुरुकुलीय शिक्षाका अग्रणी व्यक्तित्व

पं. यज्ञनिधि रेग्मीज्यूले वि.सं. १९७५ सालदेखि नै आफ्नै घरमा वेद, रुद्री, चण्डी, योगवाशिष्ठ, पञ्चदशी, ज्योतिष, श्रीमद्भागवत, गीता, उपनिषद् आदि पढाउन थाल्नुभएको हो। यो ऋषि परम्परालाई उहाँले दिङ्ला पाठशालामा अध्ययन गर्दा आबाल ब्रह्मचारी गुरु षडानन्दबाट नै ल्याउनुभएको बुझिन्छ। लगभग एक दशक जति घरमै शिक्षादान दिनुभएका रेग्मी गुरुको विद्यादानको महान् उद्देश्यलाई वि.सं. १९८३ सालमा सुभाङको जोरपोखरीमा व्यवस्थित ढङ्गले स्थानान्तरण गरियो। यसै गुरु परम्परालाई निरन्तरता दिँदै इलाम चमैताका भट्टराई गुरुसँग अध्ययन गरी फर्किनुभएका पाँचथर मेमेङ नम्लुवा बस्ने हरिभक्त पौडेल (योगानन्द, योगेश्वर, जेठा गुरु) र उहाँकै भाइ देवीप्रसाद पौडेल (विवेकानन्द, माहिला गुरु) ले पनि जोरपोखरीमा विद्यादान गर्नुभयो। त्यसकै निरन्तरता स्वरूप जोरपोखरीभन्दा केही माथि आगेजुङ भन्ने ठाउँमा माहिला गुरु विवेकानन्दले तेजपुञ्ज योगाश्रम स्थापना गरी आध्यात्मिक र शैक्षिक गतिविधि सञ्चालन गर्नुभयो।

वि.सं. २०२३ सालमा पाँचथर भारपा अखौंले निवासी पं. टेकनाथ गौतमले पनि घरनजिकै शिवालय र पाठशाला स्थापना गरी बटुकहरूलाई व्याकरण, ज्योतिष, वेद, कर्मकाण्ड आदि पढाउन थाल्नुभएको थियो। गौतम गुरुको यस कार्यमा माहिला गुरु विवेकानन्दको समेत आशीर्वाद थियो। पण्डित यज्ञनिधि रेग्मीज्यूकै अगुवाइमा गौतम गुरुसमेतका बटुकहरूलाई एकत्रित गरी जोरपोखरीमा पठनपाठन सुरु गरियो। वि.सं.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०१९ मा योगानन्द गुरु उत्तरकाशी जानुहुँदा रेग्मी गुरुकै सुपुत्र पं. इन्दिराज रेग्मी र पं. टेकनाथ गौतम दुई जनालाई जोरपोखरी पाठशालाको सम्पूर्ण अधिकार सुम्पिनुभएको थियो भन्ने बुझिन्छ। हाल पनि जोरपोखरीमा 'श्री ब्रह्मयोगाश्रम सिद्धस्थल' र 'ब्रह्मयोगेश्वर वैदिक विद्यापीठ' गरी दुईवटा संस्था दर्ता भई सञ्चालनमा रहेका छन्। जोरपोखरीबाट पं. टेकनाथ गौतम गुरु पनि झापा बसाइँ सर्नुभयो। व्याकरण पढ्ने विद्यार्थी उहाँकै पछि लागे। झापा बसाइमा पनि गौतम गुरुले यस परम्परालाई निरन्तरता दिनुभयो। वि.सं. २०२८ मा आसामबाट आएर माहिला गुरु विवेकानन्दले हाम्रो गुरुकुलीय परम्पराको विद्यालय भएन भनेर चारपानेमा नन्दिकेश्वर तिम्सिनासँग लगभग एक कठ्ठा जति जग्गा मागी छोटो हवन गरी जोरपोखरीबाट जगन्नाथ गुरुलाई बोलाई शुभमुहूर्तमा पूर्णानन्द तिम्सिनालाई पहिलो बटुकका रूपमा पढाउन लगाई पाठशालाको सुरुवात गर्नुभयो र पछि राम्रो हुनेछ भनी आशीर्वाद दिनुभयो। हाल विवेकाश्रम साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयका रूपमा उक्त पाठशाला सञ्चालित छ। यसरी पं. यज्ञनिधि रेग्मीले आरम्भ गर्नुभएको गुरुकुल शिक्षा परम्परा सुभाङ, जोरपोखरी, अखौंले र फेरि जोरपोखरी हुँदै चारपाने पुगेको हो भन्न सकिन्छ।

आध्यात्मिक व्यक्तित्व

व्याकरण, ज्योतिष, पुराण र धर्मदर्शनका विद्वान् रहनुभएका पं. यज्ञनिधिको जीवन अध्यात्ममय रहेको देखिन्छ। पुराणवाचन गर्नु, शिक्षादान गर्नु, प्रवचनका माध्यमबाट समाजमा आध्यात्मिक सन्देशका सार्थ नैतिक सन्देश दिनु उहाँका जीवनको आदर्श थियो। हरेक वर्षको वैशाख महिनामा बाटामा बसेर सर्बतपानी बाँड्ने, कात्तिक महिनामा तुलसाको मोठमुनि शालीग्राम भगवान्लाई विराजमान गराई पूजा गर्ने, अकाशबत्ती बाल्ने, एकादशीको व्रत लिने, द्वादशीमा उद्यापन गरी ब्राह्मणलाई भोजन गराउने, घरमा आएका अतिथिहरूलाई भरसक केही नखुवाई नपठाउने, हरेक गणेश चौथीमा आफैं लड्डु बनाई गणेश भगवान्लाई भोग लगाउने, हरेक ग्रहणमा स्नान गरी प्रशस्त दानदक्षिणा गर्ने, हरेक दिन ब्रह्ममुहूर्तमा उठी नित्यकर्म सकी ३,४ घन्टा जति पूजा गर्ने उहाँको बानी थियो। पुराण भन्दाभन्दै ध्यानमग्न हुने, भक्तिरसमा चुर्लुम्मै डुब्ने, श्रोताहरूलाई भक्तिरसमा ध्यानस्थ तुल्याउन सक्ने उहाँको सामर्थ्य रहेको थियो। आफूले पालेको घोडासमेत सूर्यग्रहणमा तमोर नदीमा स्नान गर्न जाँदा उतै ब्राह्मणलाई दान गर्नुभएको बुझिन्छ। यसबाट उहाँको दानवीर व्यक्तित्व समेत झल्किन्छ। अनेक सिद्धि प्राप्त गर्नुभएका पं. यज्ञनिधिको जीवन समाजसेवा, धर्मदर्शन र अध्यात्मकै क्षेत्रमा व्यतीत गर्नुभएको देखिन्छ।

तीर्थव्रतमा रमाउने व्यक्तित्व

पं. यज्ञनिधि तीर्थव्रतमा ज्यादै रमाउने धार्मिक व्यक्तित्व हुनुहुन्थ्यो। उहाँले धेरै ठाउँको तीर्थयात्रा पैदलै पूरा गर्नुभएको थियो। पाँचथर सुभाङदेखि वराह क्षेत्रसम्मको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उहाँको पहिलो तीर्थयात्रा थियो। त्यस्तै हिँडेरै आठराई, गुफापोखरी, त्यहाँबाट चैनपुर, भोजपुर, हलेसी महादेव हुँदै ओखलढुङ्गा, रामेछापको बाटो १५ दिनमा काठमाडौँ पशुपतिनाथको दर्शन गर्नुभएको थियो। स्वर्गद्वारी हुँदै भारतका काशी, हरिद्वार, ऋषिकेश, यमुनोत्री, गङ्गोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ धामको पैदलै यात्रा गर्नुभएको बुझिन्छ।

सिद्ध मनीषी र चामत्कारिक व्यक्तित्व

पं. यज्ञनिधि एक सिद्ध साधक हुनुहुन्थ्यो। उहाँको जीवन अनेक रहस्यले भरिएको देखिन्छ। उहाँका जीवनमा अनेकौं चमत्कारहरू भएका पाइन्छन्। कतिपय सन्दर्भ त हिजोआजका मानिसका लागि काल्पनिक पनि लाग्न सक्छन् तर ती घटना काल्पनिक नभएर यथार्थ हुन्। उहाँको जन्म नै शिवरात्रिमा भयो र जन्मँदैमा गङ्गाजलले स्नान गराउने अनौठो संयोग मिल्यो। पहाडको दुर्गम सुभाङमा त्यो संयोग मिल्नु वास्तवमा रहस्यकै विषय थियो। एकपटक सुनेकै र पढेकै भरमा पाठ नै कण्ठ गर्न सक्ने उहाँको अर्को ठूलो क्षमता थियो। उहाँले जीवनमा अनेकौं चमत्कारसमेत गर्नुभयो।

एक दिन घरमा हजुरआमाले सबैलाई मह खान दिनुभएछ। कमला छोरी मह थोरै भयो भनेर रुन थालिछन्। एक छिनमा अर्की बहिनीले त्यो मह खाइदिइछिन्। उनलाई ज्यादै रिस उठेछ र झगडा गर्न थालिछन्। गुरुले सन्ध्यामा बाधा पुगेपछि भोलि एक टिन मह ल्याइदिन्छु नरोऊ भनेर सम्झाउनुभएछ। नभन्दै भोलिपल्टै आङखोप डाँडाधरे साहिँला मुखिया कडरियाले एक टिन मह गुरुकहाँ पठाइदिएछन्। कुनै सम्पर्क र खबरविना कसरी त्यो सम्भव भयो बुझ्न सकिँदैन।

एकपटक लक्ष्मीप्रसाद दाहालले गुरु मलाई दशवटा बाछी पैंचो लागे, अब कसरी तिर्नु ? भनेर सोधेछन्। गुरुले आघौं यति बेलै तिमीसँग सबै तिरेर आफ्नै दुईवटा बाछी हुनेछन् भन्दिनुभएछ। नभन्दै गुरुले भनेकै दिन सबै बाछी तिरेर उनीसँग दुईवटा आफ्नै बाछी भएछन् र खुसी हुँदै गुरुलाई ढोग्न पुगेछन्। यो पनि एउटा अचम्मलाग्दो घटना हो। एकतिनमा योगवाशिष्ठ पुराण चलिरहँदा गुरुको चौतर्फी गुणगान सुनेर एउटी महिला गुरुको परीक्षा लिन आइछन्। उनले आफ्नो तान्त्रिक सिद्धिबाट गुरुको गला पक्रिने कोसिस गरिछन्। गुरुको गला भासिएछ। गुरुले सबै थाहा पाएर पुराण सुन्न आएकी ती महिलालाई पनि मन्त्र लाइदिनुभएछ। मध्याह्नमा सबै उठे तर ती महिला उठ्न लाग्दा गुन्द्री र राडीसमेत टाँसिएर आएछ। उनले गुरुसँग माफी मागेपछि गुरुले छोडिदिनुभएछ।

त्यस्तै सुभाङमा जोरपोखरीमा गुरुले आनन्द रामायणको कथा भन्दा जेठा गुरु योगानन्द श्रोता भएर बस्नुभएको रहेछ। गुरु पुराण भन्दाभन्दै ध्यानमग्न हुनुभएछ। कति राम राम भन्दै दौडिन थालेछन्। कोही दुई दिनसम्म पनि ध्यानमग्न भएछन्। त्यति बेलै एउटा ठूलो बाँदर व्यासमा आएर पुस्तकमाथि बसेछ। गुरुले माला लगाइदिनुभएछ। माला लाउनेबित्तिकै बाँदर अलिपएछ। अरूले सोध्दा गुरुले हनुमानजी आउनुभएको थियो भन्नुहुन्थ्यो भन्ने कुरा आजभोलि पनि त्यतातिरका बूढापाका बताउँछन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्को एकतिनमा मुक्तिनाथ खतिवडाका घरमा मण्डपपूजा गर्दा कपडा पुगेनछ। अब कपडा छैन, दोकान जान टाढा पर्छ, के गर्ने ? भनेर मुखियाले गुरुसँग भनेछन्। गुरुले कान्छा मुखिया तिमी सुत्ने खाटको लुगाको पत्रमुनि एउटा कपडा छ, त्यही ल्याऊ न भन्नुभएछ। नभन्दै कपडाका पत्रभित्र पूजाको त्यो कपडा फेला परेछ। त्यो कसरी सम्भव भयो ? रहस्यकै विषय छ। त्यस्तै एकतिनमा टङ्कनाथ भण्डारीका टारमा योगवाशिष्ठ पुराण चल्दै गर्दा माहिला ब्रह्मचारी (अद्भुत) आउनुभएछ र मण्डपको ढोकाबाहिर कोदाको नल काटेको बाँझो बारीमा बस्नुभएछ। उहाँ स्वामी ब्रह्माभ्यासका दाजु माहिला ब्रह्मचारी हुनुहुन्थ्यो। उहाँलाई 'जद्दे' पनि भन्दा रहेछन्। पुराण सुन्दासुन्दै उहाँ एउटा जनै र कौपिनमात्र लगाएर ध्यानस्थ हुनुभयो। बेलुका पनि उठ्नुभएन। गुरुले पराल ओढाइदिनू भन्नुभएछ। सात दिनपछि पुराण सकिएपछि मात्रै उहाँ उठेर जानुभएछ। वास्तवमा यो पनि गुरुको पुराण वाचनका अद्भुत कलाको चमत्कार नै थियो। त्यसैगरी ११ वर्षसम्म बोली नफुटेका चिदानन्द खतिवडा (मुखियाको लटो) लाई बोल्ने बनाउनु पनि गुरुको अलौकिक चमत्कार नै हो।

पूरा हुन नसकेको इच्छा

गुरु पं. यज्ञनिधि जीवनको उत्तरार्द्धतिर स्वर्गद्वारी महाप्रभुको दर्शन गर्ने इच्छा लिएर स्वर्गद्वारी जानुभयो। सुभाङदेखि धरानसम्म पैदल यात्रा र धरानदेखि जोगबनीसम्म बसमा र त्यहाँबाट रेलमा गोरखपुरसम्म त्यसपछि दाङ देउखुरी हुँदै पैदलै हिंडेर स्वर्गद्वारी पुग्नुभएछ। स्वर्गद्वारी पुग्ने दिन महाप्रभुले आज 'गुरु' आउँदै हुनुहुन्छ भन्नुभएछ। गुरु पं. यज्ञनिधि बेलुका पुग्नुभयो। दर्शन र सत्सङ्ग गरेर तीन दिन त्यहीं बस्नुभयो। महाप्रभुले आशीर्वाद दिंदै भन्नुभयो- 'तपाईंले आँटेको कुरा पूरा गर्न तपाईंलाई दुई वर्षको आयुले पुग्दैन, म तपाईंलाई २ वर्ष आयु थपिदिन्छु भन्नुभएछ, तर गुरुका मनमा आयु कसरी थपिएला भन्ने संशय भएछ। त्यही संशयले गर्दा महापुरुष सिद्ध महाप्रभुको आशीर्वाद पुग्न सकेनछ। उमेर र स्वास्थ्यले साथ दिने अवस्थामा गुरुले चौथो आश्रम सन्न्यास धारण गरेर काशीमा आश्रम खोली आफ्ना परम्पराका सबै विरक्तहरूलाई सन्न्यास हुन मार्गप्रशस्त गर्ने इच्छा गर्नुभएको थियो जुन पूरा हुन सकेन।

मृत्युको पूर्वघोषणा

गुरुलाई आफ्नो समय निकट आउँदै गरेको थाहा थियो। 'ठूलेलाई घर बनाइदिएर नातिको विवाह गर्नुछ' भनिरहनुहुन्थ्यो। यसै क्रममा वि.सं. २०१३ मा घर बनाउन थालेर २०१४ जेठमा पूरा गरी असारमा नयाँ घरमा कूर्मपुराण श्रवण गरी प्रवेश गर्नुभयो। २०१५ साल वैशाखमा नातिको विवाह पनि भयो। अब आफ्ना भक्त श्रद्धालुहरूलाई भेटी उपदेश गर्ने चाहना लिएर आङखोपतर्फ लाग्नुभयो। उतै पुराण भन्दै गर्दा विरामी परी घरमा ल्याइयो। परमधाम जाने तीन दिनपहिले पर्सि कस्तो साइत छ ? हेर त ठूले भन्नुभएछ। ठूले गुरुले पात्रो पल्टाएर तिथि, बार, नक्षत्र, योग, करण बताएपछि एक छिन चुप लागेर 'अब म पर्सि बिहान ११ बजेतिर मास्तिर जान्छु, संसार यस्तै छ, शोक नगर्नू' भन्नुभएछ। अब घोर कलि आउँदैछ, यो संसार ईश्वरको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचना हो, हाम्रो सनातन धर्ममा विश्वास गर्नू, मनमा थुप्रै तर्क, वितर्क आउनेछन्, तिनका पछि नलाग्नू' भन्नुभएछ। सबैका आँखामा आँसु देखेपछि 'नभई नहुने कुरामा शोक गर्नु व्यर्थ छ' भन्नुभएछ। उहाँले भनेको समय जति जति नजिक आउँदैछ, उति उति व्यथाले च्याप्दै लगेछ, उहाँले दिउँसो भन्नुभएको थियो तर राति ३ बजेतिर उहाँ बेहोस हुनुभएछ। सबै रुन कराउन थालेछन्। केही समयपछि गुरुको होस आएछ र किन रोएका भनेर सोध्नुभएछ। 'बा' बेहोस भएपछि आत्तिएर कराएका भनेपछि 'अहिले सूर्य उदाएका छैनन्, गौतम (पं. टेकनाथ) आएकै छैनन्, गङ्गाजल आइपुगेकै छैन, त्यसैले अहिले चुप लागेर सुत' भन्नुभएछ।

उज्यालो भयो। सबैलाई के हुने हो भन्ने शङ्का भयो। घाम उदाए। अखौँलेबाट गौतम गुरु आउनुभयो। पं. यज्ञनिधि गुरुलाई तुलसामोठमा लगियो। गौतम गुरुले एकादश स्कन्ध भागवत पाठ गर्न थाल्नुभयो। बिहान दश बजेतिर गुरुकी माहिली बुहारी प्रयाग कल्पबासबाट गङ्गाजल लिएर आइपुग्नुभयो। हतार हतार गङ्गाजल खुवाइयो, छर्कियो। वि. सं. २०१५ साल माघ शुक्ल त्रयोदशी तिथि फाल्गुण १० गते शनिबारका दिन बिहान ११ बजे उहाँले भनेकै समयमा उत्तरतिर आँखा हेरेर तीनपल्ट ॐ कार उच्चारण गरी गुरुले प्राणत्याग गर्नुभयो। गुरुको पार्थिव शरीरलाई तमोर नदीको किनार नक्कले घाटमा अन्त्येष्टि गरियो। काठको चिता बनाएर वैदिक विधिबाट पं. टेकनाथ गौतमले अग्नि संस्कार गरी तुलसीका सिटामाथि मुगाको कात्रो वेष्ठित गुरुको पार्थिव शरीरमा उहाँका अन्तरे छोरा पं. इन्दिराज रेग्मीले दागबत्ती दिनुभयो। यसरी मृत्युको पूर्वघोषणा गरेर सबै तजबिज पूरा गरी उहाँ संसारबाट बिदा हुनुभयो। यस किसिमको मृत्यु प्रायः सिद्ध महापुरुषहरूका जीवनमा मात्र घटित भएको देख्न सकिन्छ।

निष्कर्ष

पं. यज्ञनिधि रेग्मी पाँचथरको दुर्गम सुभाङमा जन्मेर पनि व्याकरण, वेद, ज्योतिष, धर्मदर्शन र पुराण एवं उपनिषद् र कर्मकाण्डका प्रकाण्ड विद्वान् हुनुहुन्थ्यो। उहाँले गुरुकुलीय शिक्षाको निरन्तरताका लागि अहं भूमिका निर्वाह गर्नुभयो। पुराण र प्रवचनका माध्यमबाट आध्यात्मिक र नैतिक सन्देश फिंजाउन ठूलो प्रयत्न गर्नुभयो। धर्म र अध्यात्मको सही मार्ग जनजनलाई देखाएर सनातन धर्मको महत्त्व बुझाउनुभयो। गृहस्थ जीवनमा रहेर पनि योगी, सिद्धको जीवन व्यतीत गर्नुभयो। उहाँको जीवनयात्रा हामी सबैका लागि उदाहरणीय र प्रेरक छ।

सन्दर्भ स्रोत

चिदानन्द खतिवडा, एकतीन
प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा, काठमाडौं
खेमनाथ अधिकारी, थुम्बेदिन, ताप्लेजुङ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगानन्द गुरुको संक्षिप्त जीवनी

केदारनाथ खतिवडा

पृष्ठभूमि

यो मनुष्य जीवन अतीव रहस्यपूर्ण छ। यसको रहस्य बुझ्नका लागि सृष्टिको शुभारम्भदेखि नै अनेकौं धर्मप्रेमी महानुभावहरूले आआफ्नो मतिलाई गति दिएका छन् तापनि यो जीवन आश्चर्यमय नै छ भन्दा अतिशयोक्ति नहोला। किनकि भगवान् श्रीकृष्णले पनि यस विषयलाई आश्चर्यका रूपमा चित्रण गर्नुभएको छ।

आश्चर्यवत् पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद् वदति तथैव चान्यः।

आश्चर्यवच्चैनमन्यःश्रृणोति श्रुत्वाऽप्येनं वेद न चैव कश्चित्।। *श्रीमद्भगवद्गीता २।२९*

अर्थात् कसैले यो संसारलाई आश्चर्यवान् वस्तुका रूपमा देख्दछन्। कोही आश्चर्यमय वस्तु भनेर बयान गर्छन्। कोही सुनेर पनि आश्चर्यमा पर्दछन्। कोही यस्ता पनि छन् जो सुनेर पनि बुझ्दैनन्।

यही आश्चर्यको सागरमा डुबुल्की मार्दामार्दै हजारौं मानव जन्मन्छन् र मर्छन् पनि। यो स्वाभाविक प्राकृतिक नियम हो। परन्तु यस धरातलमा यस्ता पनि मानिस जन्मन्छन् जो मरेर पनि जीवितै रहन्छन्, जसलाई राष्ट्र र समाजले खोजिरहन्छ। यस्तो खोजाइ अकारण हुँदैन। त्यस व्यक्तिको व्यक्तित्व, कृतित्व, आध्यात्मिक साधना, उपासना आदि सद्गुण, सत्कृति नै अमरताका कारण बन्दछन्। तब न नीतिशास्त्र भन्दछ- 'कीर्तिर्यस्य स जीवति÷ अर्थात् जसले यस जगत्मा जीवित अवस्थामा केही सत्कीर्ति कायम गरेका छन्, उनीहरू सदा समाजमा जीवित रहन्छन्। त्यस्ता यशः शरीरवान् आध्यात्मिक महापुरुषमध्ये एक सिद्ध महापुरुष हुनुहुन्थ्यो- श्री १०८ स्वामी योगेश्वराश्रम (जेठा गुरु) महाराज। उहाँको सङ्क्षिप्त जीवनी यथामति यहाँ प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरिएको छः

जन्म, जन्मस्थल र बाल्यकाल

वि.सं. १९६० मङ्सिर शुक्ल पूर्णिमा (दत्तात्रेय जयन्ती) का दिन पाँचथर जिल्लाको साबिक मेमेङ गाविस वडा नं. २ हाल मच्छेबुङ भन्ने ठाउँमा श्री हेमलाल र धनमाया पौडेलका ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा योगानन्द गुरुको जन्म भएको हो। उहाँको न्वारनको नाम हरिदत्त पौडेल भए पनि दाजुभाइमध्ये जेठा भएकाले सबैले उहाँलाई जेठागुरु भनेर चिन्दथे। कृषक परिवारमा जन्म भएकाले पितामातालाई कृषि कार्यमा सहयोग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्दै उहाँको बाल्यकाल खुला प्रकृतिमा आनन्दपूर्वक बितेको पाइन्छ। साथै त्यतिखेर सबैले गोठ पाल्ने प्रचलन भएकाले दबेपोखरी भन्ने ठाउँमा उहाँहरूको पनि गोठ थियो। कहिले घर कहिले गोठ गर्दै उहाँको बाल्यकाल बितेको थियो। उहाँले सनातन वैदिक परम्पराअनुसार ८ वर्षको उमेरमा व्रतबन्ध गरी द्विजत्व लाभ गर्नुभयो र सामान्य बालककै शैलीमा बाल्यकाल बिताउनुभयो।

गृहस्थी जीवन

एकतीन खुँगाका बच्चु अधिकारीकी छोरी घनमायासँग १४ वर्षकै उमेरमा उहाँ (जेठागुरु) को विवाह भएको थियो। उहाँका छोरा भुवनेश्वर र छोरी देवमाया (डिककुमारी) को जन्म भएपछि पत्नी घनमाया दिवङ्गत हुनुभयो। जेठा गुरुको गृहस्थी जीवन चिरस्थायी बन्न नसके पनि आध्यात्मिक जीवन चाहिँ सफल भएको देखिन्छ। फेरि आफू मात्र होइन, पाँचथरका गोठ, गाउँघरका सामान्य कृषक, गोठाला जो जो उहाँसँग सत्सङ्गमा जोडिनुभयो उनीहरू सबैको कल्याण भएको कुरा स्पष्ट छ, मेरो त सर्वस्व उहाँ नै हुनुहुन्छ, मलाई यत्तिको बनाएको उहाँले नै हो" भन्ने मानिसहरू अहिले पनि भेटिन्छन्। अहिले उहाँका छोराको समेत स्वर्गारोहण भएको छ भने उहाँका नातिहरू चाहिँ प्राज्ञिक क्षेत्रमा सक्रिय छन्।

शिक्षादीक्षा

बाल्यकालमा उहाँले औपचारिक शिक्षा हासिल गरेको पाइँदैन। व्रतबन्ध संस्कारमा गायत्रीमन्त्रको दीक्षा लिएर सामान्य पारिवारिक संस्कारमा अध्ययनको समय बितेको देखिन्छ। पछि शिक्षाको अभिलाषा पलाएपछि इलामको चमैता (राँकेमुनिको गाउँ) मा पं. लोकनाथ भट्टराई गुरुवाट उहाँले सस्वर (सार स्वरसहित) वेदाध्ययन सम्पन्न गर्नुभयो। सारस्वरविना वेदाध्ययन गर्ने चलन रहेकामा गाउँघरमा उहाँले सारस्वरसँग वेद पढ्न, पढाउन प्रारम्भ गर्नुभयो। उहाँले यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु), ब्रह्माभ्यासानन्द (ओझा गुरु) सँग सत्सङ्ग एवं स्वाध्याय गर्नुभयो भने ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुकै प्रेरणाले स्वर्गद्वारी जानुभयो। त्यहाँ पुगेपछि स्वर्गद्वारी महाप्रभुले सारस्वरसहित राम्रो वेद पाठ गरेको देखेर त्यहाँको वेदपाठीका रूपमा उहाँलाई वरण गर्नुभयो। उहाँ त्यस समयमा एक वर्षसम्म वेदपाठीका रूपमा स्वर्गद्वारीमा बस्नुभयो भने दोस्रोपटक चाहिँ हवनकर्ताका रूपमा वरण भई बस्नुभयो। त्यहीं एक दिन गुरुमहाराज ध्यानस्थ भएर योगमा निमग्न भएको देखेर स्वर्गद्वारी महाप्रभुले उहाँको नाम हरिदत्तको सट्टा योगानन्द राखिदिनुभएको कुरा हामीहरूले त्यहाँका पूर्वाचार्यहरूवाट सुन्ने र बुझ्ने अवसर प्राप्त गरेका हौं। त्यसपछि उहाँ योगानन्द नामले सुप्रसिद्ध हुनुभयो।

अध्यात्मप्रति रुचि र प्रेरणा

फालेलुङ गाउँपालिकाको माथिल्लो भाग दबेपोखरीको गोठमा एक दिन स्वर्गद्वारी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाप्रभुका शिष्य ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामी आइपुगनुभयो र केही समय यसै क्षेत्रमा बसी योगसाधनामा रहनुभयो। सामान्य गोठाले जीवनशैलीमा रहेका उहाँलाई एउटा कछाड, साफा जस्ता कपडा दिएर ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामीले गायत्री सिकाउँदै सन्ध्या गर्न लगाउनुभयो। यहींबाट उहाँमा वैदिक एवं आध्यात्मिक संस्कारको प्रारम्भ भएको देखिन्छ। ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामी गोठैगोठ भएको उक्त ठाउँमा गाईलाई ब्वाँसाले घाइते बनाउने, कतिको त ज्यानै लिने र गर्भिणी गाईका बाछा लुछेर खाने, गाईहरूको वीभत्स हत्या हुने अवस्थाले हैरान भएका गोठालाहरूले यसको निदान कसरी गर्न सकिन्छ भनी ब्रह्माभ्यासानन्द महाराजसँग सोधेपछि उहाँले मुसुक्क मुस्कुराउँदै एकमुठी चामल लिएर गोठका वरपर सबैतिर छर्नू भनी आज्ञा दिनुभयो। गोठालाहरूले पनि खुँगाको भन्ज्याङबाट दबेपोखरी हुँदै सन्तपुर कोठीसम्म र विशेष गौचरनहरूमा त्यो चामल छरे। त्यसका प्रभावले अर्को दिनदेखि नै ब्वाँसाले गाईलाई दुःख दिन छोडेका र एकाएक ब्वाँसाहरू लाटिएकाले सबै गोठालाहरू आश्चर्यचकित भएका थिए। ब्वाँसा जस्ता प्राणीको स्वभाव बदल्न सक्ने ब्रह्माभ्यासानन्द महाराजको यस चमत्कारले योगानन्द महाराजमा अध्यात्मप्रति रुचि र प्रेरणा अझ जागेको पाइन्छ।

योग साधना र साधनास्थल

स्वाध्याय, सत्सङ्ग र साधनालाई निरन्तरता दिँदै उहाँले जीवनलाई सार्थक मोक्षपथतर्फ उन्मुख गराएको पाइन्छ। उहाँले पाँचथर, ताप्लेजुङ, इलाम हुँदै आसामदेखि उत्तरकाशीसम्मका विभिन्न स्थानमा तपस्या एवं साधना गर्नु गराउनु भएको कुरा हामीहरूले पनि स्वयं अवलोकन एवं अनुभव गरेका छौं। उहाँले योग साधना गरेका केही प्रसिद्ध स्थानहरू निम्नानुसार रहेका छन्:

१. जोरपोखरीः २००६ सालमा जोरपोखरी सिद्धस्थलमा गायत्री पुरश्चरण गर्नुगराउनुभएको कुरा हामीहरूले स्वयं अनुभव गरेका हौं। त्यसताका धेरै भक्तहरू उक्त गायत्री अनुष्ठान र सत्सङ्गबाट लाभान्वित हुनुभएको थियो।

२. सिदिङ्बा गुफाः ताप्लेजुङ जिल्लाको तत्कालीन आङ्खोपको माथिल्लो हिमाली भागमा सिदिङ्बा गुफा विद्यमान छ। २०११ सालको नवरात्रमा यस गुफामा गायत्री अनुष्ठान भएको र त्यस अनुष्ठानमा आङ्खोपका र नाम्ब्रेकका धेरै भक्तजनहरू लाभान्वित भएका थिए।

३. पानवा कुटीः यो कुटी पाँचथर जिल्लाको फालेलुङ गाउँपालिका वडा नं. ३ मा पर्छ। यहाँ मनोरम प्राकृतिक वातावरणमा पानवा झरना आज पनि झर्झराइरहेको छ। जुन झरनाको शिरमा भुवनेश्वरी देवी र महादेवस्थान रहेको छ। झरनाको शिरमा पोथ्रे रुखले सुशोभित भएको सुन्दर टाकुरा छ। त्यही टाकुरामा कुटी बनाएर २०११ साल असोज महिनाको नवरात्रमा शुभारम्भ गरी २ महिनासम्म उहाँले गायत्री अनुष्ठान गर्नुगराउनु भएको बुझिन्छ। त्यस अनुष्ठानमा माङ्लेबुङ निवासी बनारसी खतिवडा,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टेकनाथ गौतम (गौतम गुरु), भानुभक्त खतिवडा, बृहस्पति गौतम, ऋतुवर्ण अधिकारी, मुक्तिनाथ खतिवडा, शिवलाल नेपाल आदि ग्रामवासी र बाहिरबाट आएका योगानन्द गुरु महाराजका भक्तजनहरूले गायत्री अनुष्ठान एवं सत्सङ्ग गर्ने सौभाग्य पाएको कुरा हामीहरूलाई स्पष्ट अनुभव छ। किनकि मलाई पनि त्यस अनुष्ठानमा पानी बोक्ने सुअवसर प्राप्त भएको थियो। आज पनि त्यो कुटी यथावत् रहेको र त्यस कुटीमा त्यहाँका स्थानीय भक्तजनहरूले समय समयमा यज्ञ-अनुष्ठान गरिरहेका छन्।

४. काबेली गुफाः काबेली गुफा पञ्चमीबाट तल काबेली नदीका तटमा रहेको छ। २०१८ सालमा सूर्यग्रहण लागेका दिनमा जेठागुरुका धेरै जना धार्मिक शिष्यहरूले स्नान गरेको दृश्य मेरो मानसपटलमा अहिले पनि ताजा छ। त्यतिमात्र होइन, त्यस पावन स्थल काबेली गुफामा बसेर गुरुमहाराजले बृहद् गायत्री अनुष्ठान गराउनुभयो। त्यस अनुष्ठानमा सहभागी हुने सौभाग्य पाउने महानुभावहरूमा छोकमली अधिकारी, बाटाघरे अधिकारी, धर्मानन्द पौडेल, कृष्णानन्द तिम्सिना, यमनाथ पौडेल आदि १६/१७ जना थिए।

५. गुफा ढुङ्गाः पाँचथरको फालेलुङ गाउँपालिकाको लेकाली भागमा पर्ने योगानन्द महाराजको प्रारम्भिक जीवनको गोठ भएको स्थान दबेपोखरी भन्ने ठाउँमा यो गुफा विद्यमान छ। यस गुफामा बसेर योगानन्द गुरुले केही समय दिव्य योगसाधना गरेको पाइन्छ। त्यसपछि गुरुमहाराजको आध्यात्मिक साधना अझ सबल र सफल भएको हो भन्ने कुरा गुरु स्वयं यदाकदा सुनाउने गर्नुहुन्थ्यो।

६. आगेजुङः पाँचथर जिल्लाको जोरपोखरीभन्दा ७ किलोमिटरमाथि आगेजुङ नामक सिद्धस्थल रहेको छ। त्यसमा विवेकानन्द महाराजको तपस्थली कुटी अहिले पनि छँदै छ। सोही ठाउँमा अहिले विद्यमान भुवनेश्वरी देवीस्थान र यज्ञशाला छेउमा पर्णकुटी बनाएर योगानन्द गुरुले तपस्या गर्नुभएको कुरा ताराप्रसाद खतिवडा, चिदानन्द खतिवडा, यमनाथ पौडेल, देवीप्रसाद पौडेल आदि धेरै महानुभावलाई थाहा छ।

७. अन्य स्थलः यसै गरी गुरुले तमोर नदीको तट ’कोशीतट÷, जुम्ल्याहा पोखरी, चरीभाँगे, दबेपानी, हिमगङ्गाको शिर जस्ता पूर्वाञ्चलका पवित्र भूभागमा रहेर तपश्चर्याका साथसाथै गायत्री अनुष्ठान गराएर योगानन्द गुरु केही समयपछि आसामतर्फ जानुभयो।

८. आसामको सदियाः योगानन्द महाराज २०२२ सालमा भारतको उत्तराखण्डको चारधाम यात्रा सम्पन्न गरेर उत्तरकाशीबाट भारतको सुदूरपूर्व आसामको सदियातर्फ जानुभयो। त्यहाँ ब्रह्मपुत्र नदीको तट मिरीछपडी नामक ठाउँमा आफ्ना भक्तजनहरूको सक्रियतामा सुन्दर पर्णशाला बनाएर चतुर्मासा, स्वाध्याय तथा सत्सङ्ग आदि महायज्ञ गर्नु गराउनु भयो। त्यो यज्ञ सकिएपछि त्यहाँबाट पर्शुरामको यात्रा गर्दै उहाँ शान्तिमहाराजका साथमा पुनः उत्तरकाशी जानुभयो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्न्यस्त जीवन

ब्रह्माभ्यासानन्द (ओझा गुरु), यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) सँग २००४ सालदेखि नै सत्सङ्ग र आध्यात्मिक योग साधनामा संलग्न भएर वेदान्त एवं योगदर्शनको राम्रो ज्ञान गर्नुभएका सिद्ध महापुरुष जेठागुरु महाराजले ऋषिकेशको मायाकुण्डमा अवस्थित सच्चिदानन्द आश्रममा गएर २०१९ सालमा श्री १००८ स्वामी सच्चिदानन्द आश्रम महाराजसँग सन्न्यास ग्रहण गर्नुभयो। त्यसपछि योगेश्वराश्रम नामले विभूषित हुनुभएका गुरुमहाराज उत्तरकाशीको भागीरथी गङ्गातटमा विद्यमान सारङ्ग सेवाश्रम नामक पुण्यभूमिमा योग साधना र सत्सङ्गमय जीवन व्यतीत गर्दै २०३० साल माघ शुक्ल षष्ठी तिथिका दिन ब्रह्मलीन हुनुभयो।

केही उपदेशहरू

सत्सङ्गबाट आफू पनि अत्यन्तै प्रभावित भएर अरूलाई पनि प्रेरणा दिने योगेश्वराश्रम गुरुका सदुपदेशहरू यस प्रकार छन्:

परोपकार गर्नु, कसैलाई पनि पिर नपार्नु, ब्राह्मण भोजन गराउनु, भोका, दुःखी, गरिब, निमुखाहरूलाई खुवाउनु, गायत्री जप गर्नु, वेद, गीता, उपनिषद् पाठ गर्नु, गराउनु, हरिहर भगवान्को सेवा पूजा, गर्नु आदि।

उपसंहार

संसारमा मानव जीवन प्राप्त गरेपछि सुख, दुःख, आरोह, अवरोहलाई आत्मसात् गर्दै योगसाधना र सत्सङ्गबाट मोक्ष हुनु सबैभन्दा सार्थक एवं सफल जीवन हो। यस्तो सार्थक जीवन बिताएका महापुरुषहरूको सङ्गत पाउनु अझै ठुलो भाग्य हो।

यस कुरालाई शास्त्रले यसरी स्पष्ट पारेको छ—

भाग्योदयेन बहुजन्म समर्जितेन सत्सङ्गमं च लभते पुरुषो यदा वै।

अज्ञानहेतुकृतमोहमदान्धकारनाशं विधाय हि तदोदयते विवेकः।। श्रीमद्भागवत महात्म्य।

स्वर्गद्वारी महाप्रभु, बालागुरु षडानन्द, ब्रह्माभ्यासानन्द गुरु, सुभाङ गुरु, दाहाल गुरु, गौतम गुरु, विवेकानन्द गुरु आदि गुरुहरूका सत्प्रयास र सत्प्रेरणाले आज हामी शिक्षादीक्षा एवं आध्यात्मिक साधनाको यो स्थितिमा आइपुगेका छौं। यो यथार्थलाई हामीहरूले कदापि बिर्सनुहुन्न। अस्तु परिपूर्णम्।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महर्षि टेकनाथ गौतम गुरुको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

✍ डा. ठाकुरप्रसाद पोखरेल

पुर्ख्यौली थलो र जन्म

महर्षि टेकनाथ गौतमको पुर्ख्यौली थलो इलाम जिल्लाको फुटुक गाउँ हो। उहाँका हजुरबुबा देवीप्रसाद गौतम फौजको जागिर खाने क्रममा मेची अञ्चलको सुरम्य जिल्ला पाँचथरको पूर्वोत्तर गाउँ मेमेङमा पुग्नुभयो। मेमेङ नजिकैको नम्लुवा गाउँका सुवेदीकी छोरी इन्द्रछायासँग उहाँको विवाह भयो र उहाँ ससुराली गाउँतिरै घरजम गर्न थाल्नुभयो। देवीप्रसाद र इन्द्रछायाबाट हरिकृष्ण र बोधराज दुई छोराको जन्म भयो। दुई भाइमध्ये जेठा हरिकृष्णको नम्लुवाछेउको मच्छेबुङ गाउँका पौडेलकी छोरी कौशिला (योगानन्द र विवेकानन्द गुरुहरूकी बहिनी) सँग विवाह भयो। उहाँबाट पाँच जना छोरा र दुई जना छोरीहरूको जन्म भयो। हरिकृष्ण र कौशिलाका सात जना सन्तानमध्ये ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा टेकनाथ गुरुको जन्म वि.सं. १९८४ आश्विन ८ गते चतुर्दशी तिथि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमा राति १४ घडी ११ पलामा भएको हो।

शिक्षा-दीक्षा

गौतम गुरुले पाँच वर्षकै उमेरमा आफ्ना मामाहरू योगानन्द एवं विवेकानन्द गुरुबाट शिक्षारम्भ गर्नुभएको हो। आठ वर्षका उमेरमा वैदिक विधिअनुसार व्रतबन्ध भएपछि उहाँले मच्छेबुङमा रहनुहुने योगानन्द गुरुबाट रुद्री, वेद आदि अध्ययन गर्नुभयो। देउनारायण निरौलाले ज्वाइँलाई पढ्न पठाउने भए मात्र छोरी दिने भनी राख्नुभएको सर्तका कारण टेकनाथ गुरुलाई गहन अध्ययन गर्ने अवसर प्राप्त भयो। ससुरा बुबाले इलाम बजारमा बस्नुहुने चन्द्रधर शास्त्री (काफ्ले गुरु) सँग व्याकरण, काव्य, भागवत, ज्योतिष आदि पढ्ने अवसर जुटाइदिनुभयो। गुरुले त्यहाँ संस्कृत व्याकरण, काव्य आदिको अध्ययन गरेपछि केही समय दार्जिलिङ जानुभयो। त्यहाँ धरणीधर कोइराला गुरुसँग अङ्ग्रेजी सिकेर स्कुलमा ८ कक्षादेखि १० कक्षासम्म पढेको कुरा गुरु स्वयंले भन्नुहुन्थ्यो (पं. भानुभक्त अधिकारी)। इलामबाट फर्किएर पाँचथर आएपछि सुभाङमा

✍ उपप्राध्यापक, भद्रपुर क्याम्पस।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहनुहुने, वेदान्तका विद्वान् यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) सँग उहाँले भागवत, वेदान्त आदि पढ्नुभएको बुझिन्छ।

गोठको बसाइ

फालेलुङमा रहेको दबेपोखरी क्षेत्रको कल्चुँडे भन्ने स्थानमा गौतम परिवारको गोठ थियो। टेकनाथ गौतम बाल्यकालदेखि नै अभिभावकहरूसँग गोठ जाने-आउने गर्नुहुन्थ्यो। विवाह भइसकेपछि पठनपाठनबाट फुर्सद भई घरमा बसेका अवस्थामा पनि केही समय गोठ बस्नुभएको देखिन्छ। उहाँ इलामबाट पढेर घर आएपछि पठाउन थाल्नुभयो र २००४ सालपछि केही समय उहाँबाट व्याकरण अध्ययन गर्ने नन्दिकेश्वर तिम्सिनासमेत उहाँसँगै गोठ बस्नुभएको थियो (पं. नन्दीकेशर तिम्सिना)।

घरपरिवार र सन्तति

पं. टेकनाथ गौतमको एघार वर्षकै उमेरमा इलाम जिल्लास्थित सुम्बेक गाउँका देउनारायण र जयन्ता निरौलाकी कान्छी छोरी भीमादेवीसँग वि.सं. १९९५ मै विवाह भएको भए पनि उहाँले २००१ सालको माघमा मात्र मैतालु लानुभएको बुझिन्छ। उहाँका जेठा बुद्धिप्रसाद, माहिला भोला, साहिँला डमरु, काहिँला किशोरकुमार, अन्तरे काशीनाथ र कान्छा योगानन्द गरी ६ जना छोरा र जेठी चिनमाया माहिली रेणुका साहिली चन्द्रकला काइली नीलकुमारी अन्तरी शिवमाया जन्तरी अम्बिकादेवी ठूलीकान्छी कोजाग्रती कान्छी चुडादेवी जना छोरी गरी जम्मा १४ सन्तति रहेका छन्।

पुराण वाचन

गौतम गुरुले जीवन निर्वाह र धर्मप्रचारका निम्ति पुराणवाचन गर्नुभएको देखिन्छ। वि.सं. २००१ पछि उहाँले लगभग छः दशकसम्म पुराणवाचन गर्नुभयो। उहाँको प्रवचन सुन्न सामान्यदेखि विशिष्टसम्मका व्यक्तिहरू लालायित हुनुहुन्थ्यो। उहाँले ससुरालीमा ससुराबुवा बिरामी भएका समयमा भागवत पाठ गर्नुभएको र अर्को साल त्यहीं गुरुका साढु दाजुसहित भएर पुराण भनेको जानकारी पाइन्छ। त्यसपछि २००५ सालमा नम्लुवा (आफ्नै जन्मघर) मा कान्छा काका बलभद्र गौतमलाई राखेर आनन्दरामायण पुराण वाचन गर्नुभयो। उहाँले यसरी पुराण वाचन आरम्भ गरेर पछि २०५० को दशकसम्म पनि निरन्तरता दिनुभयो।

शिक्षण कार्य

गुरु आफू विद्यार्थी छँदा पनि आफूभन्दा तल्लो तहमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूलाई सिकाउने गर्नुहुन्थ्यो। २००४ सालमा उहाँले पाँचथरको थर्पु, मालबाँसेका जयधर्म तिम्सिनाका घरमा चतुर्मासा पुराण वाचन गर्दै गरेका अवस्थामा त्यहाँ पुण्यप्रसाद,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नन्दिकेश्वर तिम्सिना आदिलाई लघुकौमुदी पढाउन थाल्नुभयो। माङ्लेबुङ बस्न थालेपछि गुरुले बद्री खतिवडा आदि अन्यलाई समेत पढाउनुभयो। उहाँले माङ्लेबुङको घरमा आउने विद्यार्थीहरूलाई घरमै वेद, रुद्री, चण्डी, गीता र लघुकौमुदी निरन्तर रूपमा पढाउनुभयो भने २०१३ सालमा अखौंले बसाइँ आउनुभएपछि २०१४ सालदेखि सुभाङको ओराङ्फुङ गाउँमा रहेको मिडिल स्कुल (विद्यालय) मा अध्यापन आरम्भ गर्नुभयो। उक्त विद्यालयमा केही समय घरबाटै लगभग एक/सवा घन्टाको बाटो धाएर पढाउनुभयो भने केही पछिदेखि उतै गाउँमा डेरा बसेर दिउँसो स्कुलमा र राति डेरा बसेकै घरमा गाउँका विद्यार्थीहरूलाई लघुकौमुदी आदि पढाउन थाल्नुभयो।

यसरी लगभग चार वर्ष जति (२०१८ सम्म) पढाएपछि सुभाङ छाडेर अखौंले आएको र त्यहाँको किवास्थित सिद्धकाली प्राथमिक विद्यालयमा दुई वर्ष जति पढाएको जानकारी पाइन्छ। उक्त विद्यालयमा पठाउँदा समेत बिहान बेलुका उहाँविद्यार्थीहरूलाई लघुकौमुदी, काव्य, वेदान्त आदि पढाउनुहुन्थ्यो। त्यहाँ घरमै आएर लघुकौमुदी, काव्य, वेदान्त आदि पढ्ने विद्यार्थीहरूको सङ्ख्या बढ्न थाल्यो र बिस्तारै गाउँघरबाट मात्र नभएर अन्यत्रबाट समेत विद्यार्थीहरू आउन थाले।

घरमा विद्यार्थीहरूको सङ्ख्या बढ्दै गएर खाने, बस्ने र पढ्ने ठाउँको अभाव हुन थालेपछि २०२३ साल भाद्र ५ गतेदेखि आफ्नै घरछेउको बारीमा तत्काललाई भकारीको छानो र मकैका ढोडको बार हालेर अस्थायी विद्यालय भवन निर्माण गरियो र त्यसैमा पठन पाठन सुरु गरियो। पछि बिस्तारै वरिपरि ढुङ्गाको गारो र खरको छानो लगाई आवास तथा छुट्टै भान्साघर भएको भवनसमेत तयार गरियो। केही समयपछि त्यहाँ विद्यार्थीहरू अटाउन छाडेका कारण बाँसका चिमको बार हालेर अर्को छुट्टै घरसमेत तयार भयो। यसरी बनेका भवनको सुरक्षाका लागि स्थानीय सज्जन, भद्रभलाद्मीहरूले निरन्तर रूपमा तन, मन, वचनले सहयोग गर्नुभयो। गुरुसँग रहेर व्याकरण, काव्य आदिको अध्ययन पूरा गरेका विद्यार्थीहरूको औपचारिक अध्ययनका लागि बनारस जाने क्रम २०२८ सालदेखि सुरु भयो।

अखौंलेमा विद्यालय स्थापना भएकै साल भाद्र शुक्ल एकादशीका दिनदेखि विद्यालयमा चतुर्मासा ब्रह्मवैवर्त पुराण लाग्यो। सो विद्यालयमा गुरुले नै चतुर्मासा पुराण वाचन गर्नुभयो। चतुर्मासा समाप्त भएपछि गुरुको निर्देशनमा त्यही सालदेखि प्रत्येक वर्ष अहोरात्र अखण्ड हरिकीर्तन सञ्चालन गर्ने परम्पराको सुरुवात पनि भयो। यसै गरी दोस्रो वर्षको चतुर्मासामा आनन्दरामायण र तेस्रो वर्षमा श्रीमद्भागवत महापुराणको आयोजना गरियो। २०२९ सालमा जोरपोखरीमा पनि विद्यालय सञ्चालन भयो तर त्यो विद्यालय एक वर्ष जति चलेर बन्द भयो। २०३१ सालदेखि अखौंलेको विद्यालय पनि पूर्ण रूपमा बन्द भयो। विवेकानन्द गुरु आएर अखौंलेको विद्यालयमा केही समय बस्नुभएका बेला

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौतम गुरुलाई विद्यालय उत्तरमा रहेको बाँस फुलेपछि र पश्चिममा रहेको अमलाको रुख सुकेपछि यहाँको भोग सिद्धिन्छ भन्नुभएको थियो भनिन्छ। उक्त भनाइअनुसार नै बाँस फुल्ने र अमलाको रुख सुक्ने क्रमसँगै विद्यालय पनि बन्द भयो।

गौतम गुरु २०२८ सालदेखि झापा र पाँचथर आउजाउ गर्न लाग्नुभयो। झापा आएपछि पनि घरमै विद्यार्थीहरू पढ्न आउने गर्दथे। गुरु जहाँ जता गए पनि विद्यार्थीहरू साथै लागेर पढ्ने गर्दथे। गुरु पुराण भन्न जाँदा पनि बिहान, दिउँसो र बेलुका विश्रामका समयमा विद्यार्थीहरूलाई पढाउने गर्नुहुन्थ्यो। यसै गरेर गुहावारीस्थित आफ्नै घरमा २०४१ सालदेखि २०४२ सम्म लगभग एक वर्ष विद्यार्थीहरूलाई श्रीमद्भागवत पढाउनुभयो। यसरी गुरुले विद्यार्थीहरू आएका बेला लघुकौमुदी, विभिन्न काव्य, श्रीमद्भागवत महापुराणका साथै समय समयमा वेदान्त, गीता, रामगीता जस्ता आध्यात्मिक ग्रन्थहरू पनि पढाउने गर्नुहुन्थ्यो।

बसाइँ सराइ

गौतम गुरु २००७ सालसम्म संयुक्त परिवारमा बस्नुभयो। सात सालको मङ्सिर महिनामा नम्लुवा घरबाट छुट्टिई भिन्न भई अलि माथि माङ्लेबुङ भन्ने स्थानमा जेठी छोरी र जेठा छोरालाई लिएर बस्न थाल्नुभयो। त्यहाँ माहिलो छोरा जन्मिएपछि वर्षा ऋतुमा खोलो कराउने हुँदा गुरुआमालाई बस्न कठिन हुने भएका कारण २०१० साल फागुनमा पुनः मूल घरमै आएर बस्नुभयो। त्यहाँ साहिँला छोरा र माहिली छोरी जन्मिएपछि २०१३ सालमा नम्लुवाबाट भारपाको अखौंलेमा बसाइँ सर्नुभयो। त्यहाँ भण्डारीको घर किनेर बस्नुभयो। त्यस घरमा आएपछि २०१५ सालमा जेठी छोरीको विवाह भयो भने काहिँला र अन्तरे छोरा तथा साहिँली छोरीको जन्म पनि त्यहीं भयो।

२०१७ सालमा बसेकै घरको उत्तरपट्टि सिमानामा रहेको गौतम बन्धुकै खेतसहितको घरबारी किनेर माथ्ला घरमा बसाइँ सर्नुभयो। २०२८ सालमा केर्खा बजार उत्तरपट्टि कमल भन्ने ठाउँमा जग्गा किनेर गुरुले मधेसको बसाइ गर्न थाल्नुभएको बुझिन्छ। २०३२ साल फागुनतिर झापाको पाडाजुँगीभन्दा केही दक्षिण गुहावारी भन्ने ठाउँमा केही जग्गा र सानो घर किनेर बस्न थाल्नुभएको हो। पछि त्यो घर भत्काई त्यहीं अर्को ठुलो घर बनाएर स्थायी रूपमा बसोबास गर्न थाल्नुभयो। पहाडको घरबारी २०४१ सालमा बेचेपछि भने त्यहाँको स्थायी बसोबास सदाका लागि अन्त्य भयो। उहाँ सुरुदेखि नै पर्व, उत्सव, पुराण, यज्ञ, सभा, बैठक आदि हुँदा प्रायः विवेकाश्रम, चारपानेमै बस्ने गर्नुहुन्थ्यो। कतिपय पूजा, कार्य आदि गर्नुपर्दा विवेकाश्रममै आएर गर्नुहुन्थ्यो। २०६५ साल असोज २२ गते बुधवार दुर्गा नवमी तिथिका दिनदेखि भने विवेकाश्रम, चारपानेमा निर्मित आफ्नै गृहमा प्रवेश गर्नुभएको कुरा उहाँको अप्रकाशित दैनिकीमा उल्लेख गरिएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीर्थयात्रा

पं. टेकनाथ गौतमले नेपाल तथा भारतका विभिन्न मठमन्दिरको दर्शन गर्नाका साथै गङ्गा, यमुना, सरयु, हिन्द महासागर आदिमा स्नान गर्नुभएको बुझिन्छ। उहाँ २०२२ सालमा जगन्नाथ पुरीको दर्शन गर्न जानुभएको थियो भने त्यसपछि उहाँले क्रमशः बनारस, वृन्दावन, हरिद्वार आदि तीर्थको भ्रमण गर्नुभएको पाइन्छ। उहाँ समय समयमा नेपालका विभिन्न तीर्थस्थलको भ्रमण गर्दै भातरका प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन आदिमा समय समयमा लाग्ने कुम्भमेलामा समेत सहभागी हुनुभएको देखिन्छ। उहाँले आफ्ना मातापिताको देहावसान भएपछि तीर्थश्राद्ध गर्नुभयो। २०५१ सालमा उत्तराखण्डका गङ्गोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ जस्ता चार धाम यात्रा पूरा गरी घर आएपछि सुपुत्रहरूलाई आआफ्नै व्यवहार गर्नू भनी जायजेथा बाँडफाँड गरिदिनुभयो। २०५२ सालमा गरिएको दक्षिण भारतको तीर्थाटनपछि भने गुरु अन्तर्मुखी योगसाधनामा समर्पित भएर लाग्नुभयो।

विवेकाश्रमप्रतिको संलग्नता

आफ्नै माहिला मामा गुरु विवेकानन्दको सत्सङ्कल्प एवं उहाँका शिष्यहरूको सहयोगबाट स्थापित विवेकाश्रमप्रति गौतम गुरु पूर्णतया समर्पित रहनुभएको थियो। उहाँले २०३३ साल वैशाख ७ गते सम्पन्न विद्यालय सञ्चालक समितिको पहिलो बैठकको अध्यक्षता गर्दै उहाँ सुरुदेखि नै चारपानेस्थित विवेकाश्रमप्रति मन, वचन र कर्मले समर्पित रहनुभयो भने आजीवन यसै संस्थामा सम्बद्ध रहनुभयो। उहाँका दैनिकी लेखनका प्रत्येक पानाका शिरमा 'विवेकाश्रमेस्मि' भन्ने लेखिएको कुराले पनि यसको पुष्टि गर्दछ।

संस्थाको स्थापना भएपछि प्रत्येक वर्ष माघ शुक्लमा पुराण तथा विभिन्न यज्ञयागादि गरी वार्षिकोत्सव मनाइँदै आएको छ। गौतम गुरु जीवनभरि नै यस संस्थाभित्र आयोजना गरिएका उत्सव, पुराण, यज्ञ आदिमा सक्रिय रूपमा सहभागी हुँदै आउनुभयो। उहाँको धाम गमनपछि पनि पूर्ववत् रूपमा समय समयका चाड, पर्वअनुसार पूजा, यज्ञ, पुराण अखण्ड हरिकीर्तन आदि हुँदै आएका छन्। गुरुकै सल्लाह एवं निर्देशनमा आश्रमभित्र दैनिक पूजा, हवन, रुद्राभिषेक जस्ता कार्य हुँदै आएका छन् भने नैमित्तिक कर्महरू पनि पर्वपर्वमा सञ्चालित भइरहेका छन्।

दैनिकी लेखन

गौतम गुरुको दैनिकी लेखन कार्य औपचारिक रूपमा २०५२ सालबाट थालनी भएको देखिन्छ। उहाँका लगभग १४-१५ वर्षसम्म लेखिएका दैनिकीका पानाहरूका शिरमा 'विवेकाश्रमेस्मि' भन्ने लेखिएको पाइन्छ। उहाँ मन, वचन र कर्मले नै विवेकाश्रमप्रति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर्पित हुनुभएको पाइन्छ। संस्थामा सुरुदेखि अन्त्यसम्म पनि अन्तर्हृदयबाटै पदीय जिम्मेवारी वहन गर्दै आउनुभयो। गुरुले आफ्ना प्रकाशित तथा अप्रकाशित दैनिकीहरूमा कर्म, उपासना र ज्ञानको प्रकाशन गर्ने संस्थाका रूपमा विवेकाश्रम रहने कुरा उल्लेख गर्नुभएको छ। यसले ब्रह्म सत्य छ र जगत् मिथ्या वा भ्रम हो भन्ने अन्तर्ज्ञान प्रदान गर्ने छ भनिएको छ-

सन्देश लिई डुल्ने छ विवेकानन्द आश्रम।
अग्रसर हुँदै गर्छ वैदिक धर्मपालन।। (२०५२ को डायरीबाट)

गुरुले हिन्दुत्वको रक्षा गरी वैदिक धर्म प्रचारमा लागेर सदाचार तथा नियम सिकाउने छ भन्ने चाहना व्यक्त गर्नुभएको छ। उहाँले दैनिकीमा विवेकाश्रमभित्र पहिलादेखि हुँदै आएका समय र पर्वअनुसारका पूजा, व्रत, अखण्ड कीर्तन, यज्ञ, पुराण, धान्याचल, अखण्डदीप प्रज्वलन, मन्दिर, भवन निर्माण आदि कार्यको वर्णन गर्नुभएको छ। यस्ता कार्यहरूमा उहाँ आफूले रेखदेख गर्ने सल्लाह र सुझाव दिने र स्वयं संलग्न भएर सम्पन्न गराउँदै आउनुभयो। धान्याचल, अखण्डदीप, यज्ञ, जप, पूजा, पाठ, मुष्टिदान जस्ता कार्य गर्दा कस्तो पुण्य प्राप्त हुन्छ भन्ने कुराको व्याख्या पनि गर्दै आउनुभएको पाइन्छ—

- *विवेकाश्रममा धान्याचल स्थायी सधैँ रहोस्। दुःखदारिद्र्यको बास कुनै दिन यहाँ नहोस्।।*
- *सहयोगीहरूकामा धान्य लक्ष्मी बसून् सधैँ। विवेकाश्रमको कीर्ति फैलियोस जहाँ तहाँ।।*
- *अखण्ड ज्योति हो हाम्रो आत्मज्योति प्रकाशन। अहोरात्र बलेको यो अखण्ड ज्योति बन्दछ।।*
- *त्रिपन्न सालको पौष नौ गते पूर्णिमा तिथि। अखण्ड ज्योति बालियो विवेकाश्रममा इति।।*
- *विवेकाश्रमको यज्ञ विवेकले चलाइयो।। जेजति जसले दिए दिनेको नै भलाइ भो।*
- *सबैका हितका लागि अखण्ड दीप बालियो।।*

यसरी गुरुले विवेकाश्रममा भए, गरेका शुभ कार्य सञ्चालनका प्रसङ्गलाई तिथि-मितिसहित सङ्क्षिप्त रूपमा वर्णन गर्नुभएको छ।

व्यक्तित्व

महर्षि टेकनाथ गौतम नेपालभरि एवं देशविदेशमा समेत गौतम गुरुका नामले सुपरिचित हुनुहुन्थ्यो। उहाँलाई आन्तरिक रूपमा दुःख, वेदना भए पनि सहज, सरल स्वभावमा रहनुभएको देखिन्थ्यो। गहुँगोरो वर्ण, उच्च कद, उचाइ सुहाउँदो मोटाइ, उमेर तहअनुसारको सम्बोधन, मधुर र आकर्षक वाणी र सम्मान गर्ने स्वभाव नै उहाँको वाहिरी सामान्य परिचय हो। कहिल्यै पनि अर्कालाई शब्दवाण प्रहार नगर्ने, सबैसँग समान व्यवहार गर्ने, महिला वा बालबालिकाहरूले बोल्न धक माने आफैँ बोलाउने र हालखबर सोध्ने, कुनै जिज्ञासा भए निराकरण गरिदिने स्वभाव उहाँको थियो। यसै कारण सर्वसाधारणदेखि विशिष्ट व्यक्तिसमेत उहाँवाट आकर्षित हुन्थे। यिनै र यस्तै खालको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वभावका आधारमा गौतम गुरुका निम्न व्यक्तित्वहरू रहेका भेटिन्छन्- आध्यात्मिक व्यक्तित्व, कथावाचक व्यक्तित्व, अध्यापक व्यक्तित्व, पारिवारिक व्यक्तित्व, सामाजिक व्यक्तित्व, राजनीतिक व्यक्तित्व, संस्थापक व्यक्तित्व, साधक व्यक्तित्व, स्रष्टा व्यक्तित्व आदि। यहाँ गुरुका यिनै विविध व्यक्तित्वबारे क्रमशः चर्चा गरिएको छः

आध्यात्मिक व्यक्तित्व

गुरुको पारिवारिक पृष्ठभूमि आध्यात्मिक आचरणमा रहेको पाइन्छ। उहाँका घरतर्फका र मावलीतर्फका अग्रजहरू विद्वान्, सिद्ध एवम् साधक हुनुहुन्थ्यो। उहाँमा आफ्ना मामाहरूको व्यापक प्रभाव परेको थियो। ब्राह्मणको मुख्य कर्म नै ब्रह्मत्व पालन गर्नु र नियम-आचारमा रहेर वर्णाश्रम धर्मानुसार व्यवहार गर्नु हो भन्ने तत्कालीन मान्यताले पनि व्यक्तित्व आध्यात्मिक बनेको देखिन्छ। योगानन्द, विवेकानन्द एवं यज्ञनिधि रेग्मी गुरुहरूको उपदेश, श्रवण तथा मनन गर्ने अवसर प्राप्त गरेर उहाँको व्यक्तित्व आध्यात्मिक बन्न पुग्यो। वेद, वेदाङ्गको अध्ययन, चिन्तन एवं निरन्तर अध्यापन, पुराण वाचनमा लाग्दै जाँदा पनि जीवन अध्यात्ममय बन्यो। बाल्यावस्थामै व्रतबन्ध भएपछि नित्य सन्ध्यावन्दन गर्ने र समय समयमा गुरुहरूबाट महिनौं हुने गायत्री अनुष्ठानमा आफू पनि बस्ने गर्नुभयो। उहाँले एघार वर्षको उमेरदेखि गायत्री अनुष्ठानमा बसेर गायत्री साधनामा लाग्नुभएको कुरा दैनिकीमा उल्लेख गर्नुभएको छ। यिनै र यस्तै खालका अवसर पाएर उहाँको व्यक्तित्व आध्यात्मिक बनेको पाइन्छ।

गुरुको आध्यात्मिक व्यक्तित्व सबैलाई प्रभाव पार्ने खालको भएको हुँदा मानिसहरू उहाँप्रति आकर्षित हुन्थे। उहाँको पुराण वाचन, आध्यात्मिक छलफल र चिन्तनबाट पनि मानिसहरू प्रभावित हुने गर्दथे। भौतिकवादी यथार्थवादमा विश्वास राखेर अध्यात्मलाई काल्पनिक र असत्य ठान्ने, परलोकमा विश्वास नगर्नेहरू पनि गुरुको प्रवचन श्रवण गरेर आनन्दित हुने गर्दथे। सबैलाई चित्त बुझाउन सक्ने उहाँको सामर्थ्यबाट प्रभावित भएर उहाँलाई सबैले हृदयतः सम्मान र सत्कार गर्ने गरेको पाइन्छ। गुरुद्वारा सिर्जित योगमञ्जरी, विवेकदर्पण, हंस मञ्जरी र सुभाषित दैनन्दिनी आदि पुस्तकहरू पढ्दा उहाँको व्यक्तित्व आध्यात्मिक भएको पुष्टि हुन्छ। ज्ञान, कर्म र उपासनाबाट प्राप्त हुने आनन्द सांसारिक एवं भौतिक वस्तुबाट प्राप्त हुने आनन्दभन्दा उच्चतर कोटिको हुन्छ। म, मेरो, परिवार, सन्तान, नाता, कुटुम्ब जस्ता कुराहरू क्षणिक हुन्। ती भनेका मानवलाई दिग्भ्रमित गराएर अज्ञानको अन्धकारमा राख्ने वस्तुमात्र हुन्। दृश्य जगत् वा मायाको संसारभन्दा पर रहेको अन्तर्जगतत्तर्फ उन्मुख भएमा मानिसलाई ब्रह्मानन्द प्राप्त हुन्छ। वैदिक वा वर्णाश्रम धर्मद्वारा प्रतिपादित मूल्यमान्यताअनुसार कर्म गर्दै ईश्वरीय चिन्तन, जप, तप र ध्यानका माध्यमबाट जीवन सफल पार्न सकिन्छ भन्ने धारणा गुरुमा रहेको पाइन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कथावाचक व्यक्तित्व

गौतम गुरुको अर्को महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व कथावाचक व्यक्तित्व हो। उहाँ बिस वर्ष उमेरको हुनु पूर्वदेखि नै पुराण वाचनमा लागेर लगभग छ दशकसम्म त्यसलाई निरन्तरता दिनुभयो। पाठ गर्दा होस् वा कथा गर्दा सबैले गुरुको प्रशंसा गर्दथे। पुराण वा अन्य आध्यात्मिक प्रसङ्गको चर्चा गर्दा उपस्थित सबै मानिसहरूलाई मन्त्रमुग्ध तुल्याउने उहाँको क्षमताप्रति सबै आकर्षित हुने गरेको पाइन्छ। मन्त्र वा श्लोक उच्चारण गर्दा पद छुट्याउने, गति, यति, लय, विसर्ग, छन्द आदिको समुचित प्रयोगका कारण अर्थ बुझे वा नबुझे पनि श्रोतामा जिज्ञासा जाग्दथ्यो। आफू जुन विषयमा केन्द्रित हुनुपर्ने हो त्यसैलाई उदाहरणद्वारा पुष्टि गर्ने तर कहिल्यै पनि विषयान्तर नहुने स्वभाव उहाँको रहेको थियो।

वर्तमान अवस्थामा चलेका साजसज्जायुक्त, सङ्गीतमय कथामा हुने गान, बजान, नृत्य जस्ता कुराको प्रयोगरहित परम्परित शान्त रूपले जिज्ञासुहरूको चाहना पुष्टि गरिदिने प्रवृत्तिले गर्दा सामान्य अवस्थामा पनि ज्ञान प्राप्तिको लालसामा मानिसहरू गुरुका वरिपरि रहन्थे। वाचनमा स्पष्टता, बोधगम्यता र माधुर्यका माध्यमबाट श्रोतामा ज्ञानको ढोका खोलिदिने स्वभाव उहाँको रहेको थियो। उहाँ लेख्य र शास्त्रीय कुरामात्र नभई कथ्य र श्रुतिपरम्परामा आधारित कुरालाई पनि प्रामाणिक रूपमा पुष्टि गरिदिनुहुन्थ्यो। उदाहरणका लागि पाँचथरमा रहेको गोपेटार, जोरपोखरीको उत्पत्ति, वरिपरिका नदीनाला एवं सिद्धस्थल आदिको वर्णन गर्दा पौराणिक तथा धार्मिक इतिहाससँग जोडेर प्रस्तुत गर्ने शैलीबाट पनि उहाँसँग मानिसहरू प्रभावित हुने गर्दथे। यसरी गौतम गुरुको वाचक व्यक्तित्वबाट उहाँका सान्निध्यमा रहने सबैले ज्ञानार्जन गरेको भेटिन्छ।

अध्यापक व्यक्तित्व

पाँचथर जस्तो भौगोलिक विकटता, विद्याको ज्योतिबाट टाढा भई अन्धकार अवस्थामा रहेको सिक्किम र नेपालको सिमानामा अवस्थित महाभारत पर्वत शृङ्खलाका रूपमा परिचित फालेलुङ (फालोट) को काखबाट प्रवाहित हिवानदी तटमा जन्मिएर हुर्कनुभएका गुरु ज्ञानपुञ्जका रूपमा देखा पर्नुभयो। उहाँ विद्यार्थी अवस्थामा रहँदैदेखि तल्लो तहका (जुनियर) विद्यार्थीहरूलाई पढाउने, सिकाउने गर्नुहुन्थ्यो। आफ्नो अध्ययन पूरा गरी इलामबाट पाँचथर घर फर्केदेखि उहाँले विद्यार्थीहरूलाई वेद, व्याकरण, भागवत आदि अध्यापन गराउन थाल्नुभयो। उहाँले तत्कालीन अवस्थाको ज्ञानशून्य मरुभूमिमा शिक्षारूपी बीज रोपेर हराभरा बनाउनुभएको थियो। उहाँले वि.सं. २०१४ देखि लगभग २०१८ सालसम्म पाँचथरस्थित सुभाङमा रहेको ओराङ्फुङ मिडिल स्कुलमा अध्यापन गर्नुभयो। त्यतिखेर कहिले घरैबाट र कहिले उतै रात बस्दै दिउँसो विद्यालय र राति आफू बसेका घरमा गाउँका बालबालिकालाई वेद, रुद्री, व्याकरण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि पढाउनुहुन्थ्यो। त्यहाँ छाडेपछि अखौंलेको सिद्धकाली प्राथमिक विद्यालयमा पनि केही समय पढाउनुभयो।

स्कुल पढाउँदा पारिश्रमिक लिए पनि संस्कृत पढाउँदा कहिल्यै कसैबाट केही नलिई निःशुल्क रूपमा ज्ञान बाँड्ने कार्यमा दत्तचित्त भई लागिरहनुभयो। निम्न वर्गका मानिसहरूलाई ज्ञान दिएर आँखा खोलिदिनुभयो। अभिभावकले विद्यार्थीमार्फत केही फलफूल वा केही कोसेली पठाए भने उहाँ अबदेखि कहिल्यै केही नल्याउनू भन्नुहुन्थ्यो। व्याकरण अध्ययन गर्ने विद्याथीहरू गुरु जहाँ, जता गए पनि उहीं पुगेर पाठ माग्ने गर्दथे। उहाँ पुराण भनेका ठाउँमा, आराम गरेर बसेका समयमा वा घरायसी काममा संलग्न हुँदाका अवस्थामा समेत विद्यार्थीहरूलाई सिकाइरहनुहुन्थ्यो। निश्चित समयबाहेक अन्य समयमा नसिकाउने, सधैंका समय र स्थानमा मात्र सिकाउने भन्ने जस्ता कुराबाट उहाँ सधैं मुक्त भएर पढाउने गर्नुहुन्थ्यो। यसै कारणले पनि विद्यार्थीहरू गुरुसँगै झोला बोकेर हिंड्ने गर्दथे।

पाँचथरमा लगभग तीन दशकसम्म अध्यापन गरी २०३० को दशकपछि झापामा बसोबास गर्न लाग्नुभएको पाइन्छ। उहाँ झापा आएपछि पनि अध्यापन कार्यमा लाग्नुभएको बुझिन्छ। तत्पश्चात् भने छिटफुट रूपमा स्वास्थ्यले साथ दिएका अवस्थामा मात्र अध्यापन गर्नुभएको देखिन्छ। उहाँले घरमा विद्यार्थी राखेर वा आफैं र सामूहिक रूपमा विद्यालय स्थापना गरी अध्यापन गर्नुभयो।

विशाल ज्ञानभण्डारका रूपमा रहनुभएका गुरुको परिश्रमद्वारा निम्न तथा निम्नमध्यम वर्गका मानिसहरूको कर्मकाण्ड, पुराण वाचन जस्ता कार्यबाट जीवनवृत्ति सञ्चालन भएको पाइन्छ। त्यस्तै उहाँबाट शिक्षित शिष्य, प्रशिष्यहरू निजामती सेवाका साथै विश्वविद्यालयका उच्च पदहरूमा पुगिसकेका छन्। गुरुको निःशुल्क विद्यादानबाट कैयौं गाउँटोल तथा जिल्लाका मानिसहरूका आन्तरिक र बाह्य चक्षु खोलिएका छन्। यसरी गुरुले तन, मन र धन लगानी गरेर निरन्तर शिक्षाको ज्योति फैलाउने काम गर्नुभयो।

पारिवारिक व्यक्तित्व

गुरुको अर्को व्यक्तित्व परिवारिक व्यक्तित्व हो। उहाँको आफ्नो घरपरिवारप्रति मात्र नभई आफूसँग अध्ययन गर्ने विद्यार्थी तथा आगन्तुक अतिथि सबैप्रति समान व्यवहार गर्ने स्वभाव रहेको थियो। गुरुको पारिवारिक स्वरूप ठुलो आकारको भएकाले लालनपालन तथा शिक्षादीक्षाका निम्ति आर्थिक बोझ छँदै थियो। एकदुईवटा सन्तान हुनेलाई त निकै समस्या हुन्छ भने गुरुका चौध-पन्ध्र जना सन्तान भएकाले उहाँमा निकै ठुलो दायित्व थियो। अतिथिका साथै महिनौं महिना त्यहीं बसेर अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूलाई समेत खुवाउने पारिवारिक व्यक्तित्व रहेको थियो। त्यहाँ कुनै कार्य विशेषले आउने (धर्मकर्मका बारेमा, जुठोसुतकका सम्बन्धमा, टिपचिना देखाउनेहरू,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाटो हिँड्ने, नाताको मात्रै नभई अन्य सबैलाई बसौं, खाऔं भन्ने, समय नपुगे पानीमात्रै भए पनि खुवाएर पठाउने उहाँको स्वभाव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को सिद्धान्तमा रहेको पाइन्छ। गुरुका घरमा गुरुआमा, दिदी, बहिनी, भाउजूहरू कसैमा पनि खाना खुवाउँदा अनुहारमा नकारात्मकताको छाया देखिँदैनथ्यो। विद्यार्थीले आज म घर जान्छु भन्दा बल्ल हिँड्ने भयो भन्ने भावनाका सट्टा कहिले आउने भनेर सोध्ने अचम्मको स्वभाव घरका सबै जनामा पाइन्थ्यो। गुरुहरू पहाड पाँचथर हुँदादेखि झापाको लखनपुर गुहावारी हुँदासम्म सित्तैमा खाने, बस्ने सुविधाबाट लाभान्वित हुने हामी धेरै विद्यार्थीहरू रहेका छौं। उहाँकै शिक्षादीक्षा र उपदेशको सदुपयोग गर्दै दैनिकी चलाउने हामीहरूको सङ्ख्या पनि निकै ठुलो रहेको छ।

सामाजिक व्यक्तित्व

गौतम गुरु आफू बसेको, पुगेको समाजका सबै मानिसहरूप्रति सद्भाव व्यक्त गर्नुहुन्थ्यो। उहाँले आफ्नो आश्रयमा आएका व्यक्तिलाई सकेसम्म साथ-सहयोग गर्ने गरेको देखिन्छ। गाउँघरका मानिसहरू बालबालिका बिरामी भए फुकफाकका लागि लिएर आउँथे। तिनलाई स्तोत्रमन्त्रद्वारा फुकफाक गरिदिनाका साथै गाउँले मानिसहरू अन्तिम अवस्थाका बिरामी भए घरमै गएर स्वस्ति, शान्ति गरिदिने, गीता, भागवत आदि पाठ गरेर बिरामी र उनका परिवारलाई सान्त्वना दिने कार्य गर्नुहुन्थ्यो। उहाँमा बटुवा, भोकाएका, तिर्खाएका, अशक्त आदिलाई समयानुसार केही खुवाएर मात्र पठाउने मानवीय प्रवृत्ति रहेको पाइन्छ। महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाले भने जस्तो 'आफू मिटाई अरू लाइदिनु जहाँ छ' भन्ने विचारलाई गौतम गुरुले व्यवहारमा लागू गर्नुभएको देखिन्थ्यो।

यस्तै सामाजिक भावनाका कारण गौतम गुरुबाट आफ्ना घरमा आएर पढ्ने विद्यार्थीहरूलाई निःशुल्क खान, बस्न र शिक्षा दिने कार्य भइरह्यो। नातागोताभन्दा बाहिरका मानिसहरूलाई समेत 'आज यतै बस्दा हुँदैन ?, खाना खाएर जाऊँ देउता, उहाँ आउनुभएछ उहाँलाई पनि खाना पकाओ है' अथवा 'आज खाना खाएको छैन होला, भोकै हुनुहुँदो रहेछ, भोक लाग्छ खाना खाएर जाऊँ' यस्तै खालका वाणीहरू गुरुका मुखारविन्दबाट निस्कन्थे। उहाँलाई फुर्सद नभएका अवस्थामा गुरुआमा, दाजु, भाउजू, दिदीबहिनीहरूलगायत घरपरिवारका सबै जनाबाट उत्तिकै स्ने-माया प्राप्त गर्दथ्यो त्यहाँ पुग्ने जोकोही मानिसले पनि।

उहाँले पहाडको घरमा विद्यार्थी सङ्ख्या बढ्दै जाँदा आफ्नै निजी जग्गामा विद्यालय निर्माण गरेर पढाउनुभयो। यस्तो कार्य जन्म गाउँ नम्लुवा (फालेलुङ) बाट भारपा, अखौंले अनि गुहावारीमा समेत भएको पाइन्छ। कुनै ज्ञानप्राप्तिको आकाङ्क्षा राखेर गुरुका सामुन्नेमा पुगेको मानिस कदापि निराश भएर फर्कनुपर्दैन थियो। गुरु संस्कृत भाषामात्र नभएर अङ्ग्रेजी भाषामा पनि निकै पोख्त हुनुहुन्थ्यो। विद्यार्थीहरूलाई अङ्ग्रेजी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पनि पढ्नुपर्छ, पत्रपत्रिका हेर्ने र समाचार सुनेर समयअनुसारको बन्न प्रेरित गर्ने उहाँको स्वभाव थियो। व्यक्ति शिक्षित भए परिवार शिक्षित हुन्छ, परिवार भए समाज र समाज भए गाउँ, जिल्ला, क्षेत्र, राष्ट्र नै शिक्षित, सभ्य र समुन्नत हुन्छ भन्ने धारणा रहेको पाइन्छ। यसरी गुरुको सत्प्रेरणा दिने सामाजिक व्यवहारबाट असङ्ख्य मानिसहरू लाभान्वित भएका छन्। समाजोपयोगी सान्दर्भिक प्रसङ्ग उठान गरी चित्तबुझ्दो सामग्री प्रदान गर्ने स्वभावबाट मानिसहरू शिक्षित र दीक्षित भएका छन्।

राजनीतिक व्यक्तित्व गौतम गुरुमा राजनीतिक चेतना पनि रहेको पाइन्छ। उहाँ राजनीतिमा पनि सक्रिय सहभागी हुनुभएको इतिहास साक्षी छ। नेपालमा २०१७ साल पञ्चायती व्यवस्थाको स्थापना भएपश्चात् गाउँपञ्चायतको गठन भई चुनाव हुने भयो। गाउँमा सक्रिय भएका परिचित व्यक्तिहरू वडा सदस्य, प्रधानपञ्च आदि पदमा प्रत्याशी बन्ने अवसर प्राप्त भयो। २०२४ सालतिर गौतम गुरु पनि भारपा गाउँ पञ्चायतको प्रधानपञ्चमा उम्मेदवार बन्नुभएको थियो। तत्कालीन अखौंले विद्यालयका विद्यार्थीहरूलाई मत प्रचार-प्रसार गर्न पठाइयो। त्यस समयमा उहाँको पहेंलो रङ्गको मत खसाउने बाकस थियो र सो बाकसका लागि मत मागिएको थियो। यसरी मत माग्न जाने विद्यार्थीहरूमा भानुभक्त अधिकारी, रिजाल थरका विद्यार्थीहरू पनि हुनुहुन्थ्यो। उक्त चुनावमा मत गणना गर्दा अर्को प्रत्याशीसँग मत बराबर भएर गोला प्रथामा जाँदा परिणाम अर्कैका पक्षमा गएको थियो। उहाँ राष्ट्र, देवता, राजा मान्नुपर्छ भन्ने प्रजातान्त्रिक विचारधाराबाट प्रभावित हुनुहुन्थ्यो। गुरुमा सधैं चुनावको समय आउँदा मतदाता भई आफूले भनेको मान्ने, राम्रो उम्मेदवारलाई जिताउन सबैसँग आग्रह गर्ने स्वभाव रहेको पाइन्छ। आफ्नो घरपरिवार, छरछिमेकी सबैलाई त्यतै मत दिन भन्नुहुन्थ्यो। उहाँमा स्वतन्त्रता, भ्रातृत्व जस्ता भावना रहेको हुनाले आफ्नो वर्णाश्रम धर्मको पालना गर्दै समयपरिस्थितिअनुसार हिंड्नुपर्छ भन्ने प्रवृत्ति गुरुमा रहेको थियो।

संस्थापक व्यक्तित्व

गुरुको संस्थापक व्यक्तित्व पनि निकै महत्त्वपूर्ण रहेको छ। उहाँले आफ्नो जीवनयात्रामा नयाँ नयाँ कार्य गर्नुभएको देखिन्छ। उहाँको संस्थापक व्यक्तित्वमा विद्यालय स्थापना, अखण्ड कीर्तन परम्पराको थालनी, अखण्डदीप प्रज्वलनको सुरुवात आदि रहेका छन्।

क) विद्यालय स्थापना

गौतम गुरु नम्लुवामा रहेकै समयदेखि आफू बसेका स्थानमा पढाउन थाल्नुभएको थियो। उहाँ २०१३ सालमा भारपाको अखौंले आएपछि घरमा बसेर पढ्ने विद्यार्थीहरूको सङ्ख्या दिनानुदिन बढ्दै जान थालेपछि घरछेउकै बारीमा २०२३ साल भाद्र महिनाको ५ गते कृष्ण अष्टमीदेखि आफ्नै बारीमा विद्यालय स्थापना गर्ने निर्णयानुसार गाउँका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानिसहरूको साथ-सहयोग लिएर भकारीको छानो र मकैका ढोडको बार लगाएर विद्यालय सुरु गरियो। त्यसै साल हरिपरिवर्तनी एकादशीदेखि चतुर्मासा ब्रह्मवैवर्त महापुराण आरम्भ भयो। विद्यार्थीहरूको सङ्ख्या त्यहाँ पनि बढ्दै गएपछि अर्को भवन थपेर विद्यालय सञ्चालन गरियो। २०२९ सालमै जोरपोखरी शिवालय उत्तरतर्फ गुरुको सक्रियतामा निर्मित अतिथि भवनमा अखौंलेका केही विद्यार्थीहरू अध्ययन गर्न थाले यहाँ विद्यालय लगभग एक वर्ष जति सञ्चालन भएर बन्द भयो भने अखौंले विद्यालय पनि २०३१ सालसम्म सञ्चालनमा रह्यो। २०२८ सालपछि गुरु मधेसतिर आउनेजाने गर्न लाग्नुभयो। २०३३ साल वैशाखको पहिलो हप्ताबाट चारपानेस्थित विवेकाश्रममा गुरुको अध्यक्षतामा बैठक बसी पूर्वस्थापित संस्कृत विद्यालय विधिवत् र नियमित रूपमा सञ्चालन गर्ने निर्णय भएअनुसार विद्यालय पूर्ण रूपमा सञ्चालनमा आयो। तत्काल अध्यापन कार्य शुभारम्भ गर्नका लागि भानुभक्त अधिकारीलाई नियुक्त गरिएको देखिन्छ। २०४१ सालमा केदारनाथ खतिवडाको आग्रहमा गुरुले गुहावारीस्थित आफ्नै घरमा लगभग एक वर्ष श्रीमद्भागवतसमेत पढाउनुभयो।

ख) अखण्ड हरिकीर्तन परम्परा

गौतम गुरुको मुख्य धारणा कलियुगमा हरिकीर्तन गर्नुपर्छ भन्ने शास्त्रीय मान्यतानुसार पाँचथरको भारपास्थित अखौंले विद्यालयमा २०२३ साल कार्तिक शुक्ल एकादशीमा एक अहोरात्र अखण्ड हरिकीर्तन भयो। यसपछि त्यहाँ लगातार प्रतिवर्ष अखण्ड हरिकीर्तन भएको पाइन्छ। अखौंलेसँगै सुभाङको सिम्ले गाउँमा र एकतिनमा पनि केही वर्ष अखण्ड कीर्तन भएको पाइन्छ। सुभाङमा चाहिँ केही वर्ष बिराउँदै पछिसम्म पनि कीर्तन भएको देखिन्छ। चारपानेमा २०३३ वैशाखको अक्षय तृतीयाका दिन अखण्ड हरिकीर्तन भयो। सो परम्परा समयपरिस्थितिअनुसार अहोरात्र वा अर्धअहोरात्र कीर्तन गर्ने परम्परा अद्यापि कायमै छ। यसरी गुरुकै सक्रियतामा अखण्ड कीर्तनको परम्परा स्थापित भएको पाइन्छ।

ग) अखण्डदीप प्रज्वलनको परम्परा

गौतम गुरुको सक्रियतामा अखण्डदीप प्रज्वलन गर्ने कार्य धेरैतिर भएका छन्। अखण्ड बत्ती बाले दारिद्र्यले बास गर्दैन भन्ने उहाँको धारणा रहेको पाइन्छ। यसैअनुसार २०५३ साल पौष ९ गते मङ्लबार मार्ग शुक्ल पूर्णिमा तिथिका दिन विवेकाश्रम (साबिक चारपाने ३) को नवनिर्मित यज्ञस्थलभित्र अनिश्चित समयपर्यन्त यज्ञपुरुष नारायण प्रीतये भनेर दीप प्रज्वलन कार्य गुरुबाट भएको पाइन्छ। त्यस दिनको दैनिकीमा गुरुले यसरी लेख्नुभएको छ—

श्रीयज्ञपुरुषो विष्णुः प्रीयतां वरदायकः। यादृशी भावना येषां तादृशी सिद्धिदायकः।।

(अप्रकाशित डायरी १ बाट)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसैगरी साधुटार, गुहाबारी, बारादशी, दमक, बेलगाछी, गोलधाप आदि स्थानमा गुरुकै सत्प्रेरणामा अखण्डदीप प्रज्वलित भइरहेका छन्। पाँचथरको जोरपोखरीमा पनि २०५५ सालमा पुराण र यज्ञ गर्ने क्रममा गुरुकै उपस्थितिमा अखण्ड बत्ती बालिएको थियो र उक्त बत्ती आजसम्म पनि बलिरहेकै छ।

साधक व्यक्तित्व

गौतम गुरुको अर्को महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व साधक व्यक्तित्व पनि रहेको छ। उहाँ बाल्यावस्थादेखि नै गायत्री पुरश्चरण गरेर विभिन्न स्थानमा बस्नुभएको पाइन्छ। गुरुले ध्यान, योगसाधनामा लागेर सिद्धि प्राप्त गर्नुभयो। पहिलोपटक पानवा नदी दोभानमा तीनमहिने गायत्री पुरश्चरण गरेको, दोस्रोपटक हिवानदीकिनारमा छमहिने गायत्री अनुष्ठानमा बस्नुभयो। त्यहाँ बस्दा उहाँ एघार वर्षको मात्रै रहेको तथ्य उहाँले नै उल्लेख गर्नुभएको छ। तेस्रोपटक पानवा नदीको देवीस्थान टप्पुमा अनुष्ठानमा रहनुभयो भने पछि जोरपोखरी र सुभाङ, सिम्लेमा बसेर गायत्री साधना गर्नुभएको पाइन्छ। गुरु बाल्यावस्थादेखि नै निरन्तर साधनामा लाग्दै आउनुभयो। त्यसकै परिणाम हुन् योगदर्शन मञ्जरी, हंसदर्शन मञ्जरी जस्ता कृतिहरू। योग साधना गर्ने विधिको वर्णन योग दर्शन मञ्जरीमा भएको भएको छ भने अजपा गायत्री मन्त्र कसरी सिद्ध गरिन्छ भन्ने कुरा हंसदर्शन मञ्जरीमा उल्लेख गरिएको छ। यस्ता पुस्तकहरू उहाँको साधक व्यक्तित्वकै उपज बनेर आएका छन्। गुरु गायत्री जप सिद्ध होस् भन्ने धारणा यसरी व्यक्त गर्नुहुन्छ—

मानस जप होस् सिद्ध अहोरात्र निरन्तर।
शुद्ध चैतन्यमा मेरो गतिको प्रेरणा गर।। (सुभाषित दैनन्दिनी पृ. ५९)
गायत्री जपमा जस्तो आनन्द अरू के छ र ?
त्यही आनन्द पाऊँ म मलाई त्यो दया गर। (पृ. ६०)
ध्यानमा जो छ आनन्द ज्ञानमा पनि मै रछु।
विषय त्याग गर्नु छ यो मन ध्यानमा लगी।
पञ्चानव्बे सालमा म एघार वर्षमा थिएँ।
गायत्री जपमा मैले ध्यानमा मन अर्पिएँ। (पृ. ६१)

गुरुका अप्रकाशित दैनिकी र सुभाषित दैनन्दिनी नामक पुस्तकभित्र यस्ता ध्यानसाधनासम्बन्धी पद्यहरू प्रशस्त रहेका छन्। उहाँले साधक भएकै कारण योग समाधिका बारेमा उपदेश गर्नुभएको छ। समाधि दुई किसिमका हुन्छन्—सम्प्रज्ञात र असम्प्रज्ञात। यिनलाई यसरी प्रस्तुत गरिएको छ—

सम्प्रज्ञात समाधिमा तीन हुन्छ प्रकाशमा। ध्येय स्पष्ट हुने गर्छ स्मृति रहन्छ ध्येयमा।।
असम्प्रज्ञातमा चित्त लय हुन्छ स्वरूपमा। चित्तको वृत्ति नाशिन्छ पुग्छ कैवल्य मोक्षमा।।

(अप्रकाशित)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुले लखनपुरको गुहाबारीमा २०५१ सालमा योगवाशिष्ठ महारामायणको योगसाधना गर्नुभयो। त्यहाँ श्री स्वामी नारायणानन्द सरस्वती मुख्य श्रोताका रूपमा रहनुभएको थियो। त्यस्तै २०५४ सालमा साधुटारको आयोजनामा योगवाशिष्ठ महारामायण र विराट् सन्तसम्मेलन भएको थियो। त्यो कार्यक्रममा पनि गुरुकै प्रमुखत्व रहेको पाइन्छ। यसरी विभिन्न समयमा लामो समयसम्म साधना गर्ने, गराउने कार्य गुरुद्वारा भएको पाइन्छ।

स्रष्टा व्यक्तित्व

गौतम गुरुको स्रष्टा व्यक्तित्व निकै महत्त्वपूर्ण रहेको छ। उहाँले मनमा लागेका आध्यात्मिक र शास्त्रीय प्रामाणिक प्रसङ्गलाई कविताका रूपमा प्रस्तुत गर्नुभएको छ। संस्कृत, नेपाली भाषामा गुरुका आध्यात्मिक विचार छन्दका माध्यमबाट आएका छन्। उहाँले अभिव्यक्तिको माध्यम प्रायः अनुष्टुप् छन्दका कवितालाई बनाउनुभएको छ। शार्दूलविक्रीडित, उपजाति छन्दका साथै केही स्तुतिपरक गीत्यात्मक लयलाई पनि प्रस्तुत गरेको भेटिन्छ। उहाँको षड्चक्र चिन्तन शीर्षकको छोटो एक पानाको लेख २०४४ सालको श्रावणी पर्वका उपलक्ष्यमा प्रकाशन गरिएको थियो। पन्ध्रवटा अनुष्टुप् छन्दमा प्रस्तुत यो रचना साधनापरक कविता हो। यसपछि योगदर्शन मञ्जरी नामक पुस्तक योगदर्शनलाई विषय बनाएर लेखिएको अनुष्टुप् छन्दमा आबद्ध पुस्तक २०४५ सालमा प्रकाशित भएको पाइन्छ। योग गर्न चाहनेहरूका निम्ति यो पुस्तक निकै उपयोगी रहेको छ। विवेकदर्पण नामक पुस्तक लघुआकारमा आएको छ। यो पनि अनुष्टुप् छन्दमा रहेको छ र यसमा विवेकाश्रमलाई विषय बनाइएको छ। यस पुस्तकको प्रकाशन २०४६ सालमा भएको हो। यसमा संस्थाको स्थापना भएपछि थालनी भएको संस्कृत विद्यालको मुख्य कार्य सनातन एवम् वर्णाश्रम धर्मको रक्षा गर्नु हो भन्ने कुरा उल्लेख भएको छ। हंसदर्शन मञ्जरी नामक पुस्तक २०५२ सालमा लेखिएर २०५४ सालमा प्रकाशित भएको छ। यो पनि योग दर्शन मञ्जरीकै आकारमा रहेको छ। यसमा हंस/अजपा गायत्री मन्त्र जपविधिलाई विषय बनाइएको छ। यहाँ पनि अनुष्टुप् छन्दको उपयोग भएको छ। हंस गायत्रीलाई किन अजपा भनिन्छ भन्ने स्पष्ट पार्दै यसका नियम तथा विधिका बारेमा उल्लेख गरिएको छ। यो अजपा गायत्रीका सम्बन्धमा जिज्ञासा राख्नेहरूका निम्ति निकै उपयोगी पुस्तक हो। यसै गरी गुरुले २०५२ सालदेखि लगभग पन्ध्र वर्षसम्म दैनिकी लेख्नुभएको पाइन्छ। उहाँका सबै दैनिकीहरू प्रकाशित छैनन्। केही समयका दैनिकीहरूलाई समेटेर आएको सुभाषित दैनन्दिनी नामक पुस्तक २०५७ सालमा प्रकाशित भएको छ। यो गुरुले २०५५ र २०५६ सालमा दैनिक जीवनमा भए-गरेका धार्मिक तथा आध्यात्मिक प्रसङ्गलाई विषय बनाइएको पुस्तक हो। यसमा पनि अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित जस्ता छन्दको प्रयोग भएको छ। प्रस्तुत विषयलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत र नेपाली दुई खण्डमा विभाजन गरिएको यो निकै गहन कृति हो। यसरी गुरुको स्रष्टा व्यक्तित्व आध्यात्मिक विषयमा केन्द्रित छ र दर्शन, चिन्तनमा आधारित छ। यसपछि गुरुका दैनिकीका रूपमा आएका थुप्रै सामग्री अप्रकाशित अवस्थामा रहेका छन्। तिनको समुचित संरक्षण र प्रकाशन भएमा अध्यात्म जगत्का जिज्ञासुहरू लाभान्वित हुने निश्चित छ।

कृतित्व

गौतम गुरु पठनपाठन, चिन्तन मननका साथै सिर्जना पनि गर्नुहुन्थ्यो। उहाँले उपनिषद्, पुराण आदि ग्रन्थमा उल्लेख भएका प्रमाण एवं धार्मिक प्रसङ्ग एवं मनोभावनालाई पुस्तकका रूपमा प्रस्तुत गर्नुभएको छ। गुरुले आध्यात्मिक विषमा आधारित थुप्रै लेख र पुस्तकहरू सिर्जना गर्नुभएको पाइन्छ। लेखन कार्य पहिलादेखि नै हुँदै आए पनि प्रकाशनचाहिँ २०४४ पछि मात्रै भएको पाइन्छ। उहाँले उक्त सालको रक्षाबन्धनका अवसरमा षड्चक्र शीर्षकको अनुष्टुप् छन्दमा संरचित पन्ध्रवटा श्लोक भएको एउटा पानाको लेख प्रकाशन गर्नुभएको छ। यसमा षड्चक्रका विभिन्न रूपहरू कस्ता हुन्छन् र तिनको कसरी चिन्तन गर्ने भन्नेबारे सङ्क्षिप्त चर्चा गरिएको छ।

योगदर्शन मञ्जरी नामक लघुआकारको योग विषयक पुस्तक २०४५ सालमा प्रकाशित भएको छ। बाहिरी पृष्ठसहित अठचालिस पृष्ठ कलेवर भएको यो पुस्तक षड्दर्शनमध्येको एक योगदर्शनमा आधारित भएर आएको छ। नरहरिनाथ योगी, अम्बिकाप्रसाद अधिकारी, खेमराज केशवशरण आदिको शुभकामनाद्वारा सुशोभित यस पुस्तकका प्रकाशक किशोर गौतम हुनुहुन्छ।

पुस्तकको आरम्भमा योगका दुईवटा मार्गहरू हुन्छन्: क) शुक मार्ग र ख) वामदेव मार्ग भनिएको छ। शुक मार्ग छिटै मुक्ति गराउने, आत्मामा परमात्माको मेल गराउने दर्शन हो। वामदेव मार्गचाहिँ अष्टाङ्ग योगद्वारा अनेक जन्म घुमाउँदै ढिलो मोक्ष गराउने मार्ग भएको उल्लेख छ। यहाँ योगको अर्थ ब्रह्मको स्वरूप, ब्रह्मविलयका साथै यम, नियम आदि योगका भेदहरूको वर्णन पाइन्छ। यसमा शुभेच्छा, सुविचारणा, तनुमानसा, सत्त्वापत्ति, असंशक्ति, पदार्थभावनी, तुर्यगाजस्ता सात कुराभन्दा पर रहेको छ मुक्तिको गति भनिएको छ। यसमा मोक्ष, सन्न्यास, ओम्कार ब्रह्म, ओम्कारको वर्णन, समाधि, ब्रह्मस्वरूप आदिको सूक्ष्म चर्चा र महर्षि पतञ्जलिको सिद्धान्त अहम् ब्रह्मास्मि आदिको वर्णन पाइन्छ। योग साधनाको वर्णन गर्दा इडा, पिङ्गला सुषुम्ना आदि नाडी, अष्टाङ्गका (यम, नियम आदि) भेदहरूको उल्लेख छ। यहाँ सिद्धासन, पद्मासन, वज्रासन, स्वस्तिकासन आदिको चर्चा रहेको छ, षट्कर्मका भेदको सूक्ष्म उल्लेख गरिएको छ। यसमा प्राणायामको विधि र हंस अजपाको छोटो परिचय पनि दिइएको छ, योगको आरम्भ कसरी गर्ने भन्ने विधि रहेको छ। प्राणायामको अभ्यास, योगीका भेद, सिद्धि,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेक, वाक् सम्बन्ध, विष र अमृत, अनुभव, शरीरका छ जादु, परम ज्योति आदिको छोटो चर्चा गरिएको पुस्तकमा योग भनेको के हो र यसले के गर्छ र जीवनका निम्ति योग किन आवश्यक छ भन्ने विषयमा चर्चा गरिएको छ।

गौतम गुरुको दोस्रो पुस्तकाकार कृतिका रूपमा विवेक दर्पण शीर्षकको लघुआकारमा आबद्ध पुस्तक २०४६ सालमा प्रकाशित भएको पाइन्छ। यसमा आनन्दप्रसाद सिग्देलको भूमिका रहेको छ। बाहिरी पातोसहित जम्मा चौध पृष्ठमा प्रस्तुत भएको पुस्तकको नौ पृष्ठसम्म मात्रै विषयको प्रस्तुति रहेको छ। यो आनन्द रामायणको सारकाण्डभित्रको रामस्तुतिबाट आरम्भ भएको छ। यहाँ आराधना, पुष्पाञ्जलि र मङ्गलाचरण रहेका छन्। पुस्तक साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय र विवेकाश्रमको सङ्क्षिप्त परिचयका रूपमा आएको छ। उत्तरकाशीबाट स्वामी विवेकानन्द स्वामीले २030 सालमा चिठी पठाउनुभएको थियो। गुरुले चिठीमा संस्कृत पढ्नु, पढाउनु पर्ने भएको हुँदा विद्यालय राम्ररी सञ्चालन गर्नु भन्नुभएको थियो र त्यसै अनुसार २०३३ साल वैशाख ७ गतेदेखि विद्यालय व्यवस्थित रूपमा सञ्चालनमा आएको प्रसङ्ग उल्लेख भएको छ। यस पुस्तिकाको वास्तविक आरम्भ मुष्टिदाताप्रतिको शुभकामनाबाट भएको छ। यहाँ सबैलाई संस्थाका निमित्त मुष्टिदान गर्न आग्रह गरिएको छ। विद्यालय स्थापनाका सम्बन्धमा यहाँ भनिएको छ—

दुई हजार तेत्तिस साल वैशाख सात गते। विद्यालय दह्रो पार्न गाउँका जनता जुटे। (पृ. ७)

यहाँ २०२८ सालबाट विवेकानन्द गुरुले यज्ञारम्भ पनि शुभारम्भ गर्नुभएको थियो। यज्ञ जनताको मुष्टिदानबाट सञ्चालन भएको उल्लेख छ। अन्त्यमा शुभकामना दिँदै भनिएको छ— विद्यार्थीहरूलाई परमार्थको ज्ञान होस्, मुष्टिदातालाई धनधान्यको अभाव नहोस्।

गुरुको अर्को पुस्तक हंस दर्शन मञ्जरी शीर्षकको पुस्तक २०५२ सालमा लेखिएको र २०५४ सालमा किशोरकुमार गौतमद्वारा प्रकाशित भएको पाइन्छ। यो पनि बाहिरी र भित्री गरी जम्मा चवन्न पृष्ठमा विस्तार भएको लघुआकारकै कृति हो। गुरुको श्री ५ महाराजाधिराज वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेवेषु समर्पिता कृतज्ञता भन्ने लेखकीय रहेको छ।

लेखकीयपछि 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' ठुला वा विद्वत् ज्ञानी जनहरू हिँडेको गोरेटो नै सबै हिँड्न मिल्ने बाटो हो भनी उल्लेख गरिएको छ। यहाँ दिङ्लाका षडानन्द र स्वर्गद्वारी महाप्रभुले अपनाएकै मार्गमा रहने, ब्रह्माभ्यासानन्दबाट योगसाधना गर्नुभएका योगानन्द र यज्ञनिधि उपाध्याय रेग्मी गुरुको आज्ञापालन गर्दै यो पुस्तक तयार भएको प्रसङ्ग उल्लेख छ।

हंस दर्शन मञ्जरीका आरम्भमा लेखकको अभिलाषा, षट्चक्रको वर्णन रहेको छ। यहाँ आधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र, अनाहत चक्र, आज्ञा चक्र र सहस्रदल कमल आदिको सङ्क्षिप्त चर्चा रहेको छ। ओम्कारको वर्णन, पुरुषको अवस्थालाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्रीय प्रमाणसहित पुष्टि गरिएको छ। अजपा ज्योतिस्वरूपमा हंस गायत्री जप गर्दाको स्थिति, वैराग्य र ज्ञानको सीमा जस्ता उपशीर्षकमा अजपा सिद्ध कसरी हुन्छ ?, यसको लक्षण, मोक्षको स्वरूप आदिको सङ्क्षिप्त उल्लेख रहेको छ। यहाँ हंस जपको विधि यसरी उल्लेख गरिएको छ —

हकारेण बहिर्यीति सकारेण विशेत्पुनः। यो सबै गुरुबाटै ता जानिन्छ मनमा गुन।।
सकारेण बहिर्यीति हकारेण विशेत् पुनः। सिपालु गुरुले मात्रै सोहं र हंस जान्दछन्।।
(पृ. ३६)

हंस गायत्री जप गर्नेहरूले अखाद्य पदार्थको सेवन, सहवास, हिंसा जस्ता कुराको त्याग गरेपछि मात्र अभ्यासद्वारा सिद्धि प्राप्त गर्दछन्। भोगको चाहनाबाट मुक्त नभएसम्म अजपा सिद्ध हुँदैन। यसरी यो पुस्तकमा हंस/अजपा मन्त्र सिद्ध गर्ने विधि, सङ्क्षिप्त मात्रामा भए पनि सरल र संवेद्य रूपमा प्रस्तुत भएको छ। अजपा अभ्यास गर्न चाहनेहरूका निम्ति पुस्तक पठनीय रहेको पाइन्छ।

गुरुको पछिल्लो समयमा देखा परेको पुस्तक सुभाषित दैनन्दिनी २०७४ सालमा प्रकाशित भएको छ। यो डिल्लीराम गौतमको सम्पादकत्व र व्यासाचार्य श्री किशोर गौतमद्वारा प्रकाशित भएको छ। यहाँका सबै कविताहरू आध्यात्मिक चिन्तनमा आधारित छन्। प्रस्तुत कविताहरू संस्कृत र नेपाली भाषा गरी दुई खण्डमा रहेका छन्। दुई हरफदेखि पचासौं हरफमा विस्तारित कविता दर्जनौं शीर्षकमा रहेर संस्कृत खण्डमा रहेका पाइन्छन्। यसै गरी नेपाली खण्डमा अझ धेरै शीर्षक सङ्ख्याका कविताहरू रहेका छन्। यहाँ धेरै कविताहरू अनुष्टुप् छन्दको संरचनामा उनिएका छन् भने केही कविता उपजाति र शार्दूलविक्रीडित छन्दमा समेत आबद्ध छन्।

संस्कृत खण्ड

प्रस्तुत पुस्तकका कविताहरू कवितामा उल्लेख भएको मितिका आधारमा हेर्दा २०५५ र २०५६ सालमा दैनिकीका रूपमा रचिएका हुन् भन्ने देखिन्छ। यस खण्डको आरम्भ गणेशस्तुतिबाट भएको छ। आफूबाट भएका भुल तथा गल्तीहरू सबै क्षमा गरिदिनुहवस्। रातमा हजुरबाट भएको कृपाबाट नतमस्तक बनेको छु। तपाईं नै शिव, विष्णु, ब्रह्मा हुनुहुन्छ, मलाई निर्मल ज्ञान दिनुहवस्। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त जुनसुकै अवस्थामा पनि हृदयमा निवास गर्नुहवस् भनी प्रार्थना गरिएको छ। यसपछि पाञ्चायन देवताको स्तुति गर्दै भवसागरबाट मुक्ति मिलोस् भन्ने चाहना प्रस्तुत भएको छ। चेष्टां करोति श्रीकृष्णः शीर्षकमा कृष्णको स्तुति गर्दै क्षमा गर्नुहवस् भनी प्रार्थना गरिएको छ। श्रीसीतारामाभ्यान्नमः भित्र सीताविवाह पञ्चमीको उल्लेख गर्दै भक्ति गर्न पाएर धन्य भएको उल्लेख रहेको छ।

प्रार्थनामा गायत्रीमाताको प्रतिदिन पूजा गर्दा सबैमा सुख, शान्ति मिल्ने छ। गायत्रीको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सधैं दृष्टि परिरहोस्, आफूमा सदैव ब्रह्म गायत्री स्फुरण भइरहोस्। वेदमाताको कृपा रहोस्, भावना शुद्ध होस्। घरमा सधैं गायत्री जप गरे आरोग्य प्राप्त भई सबै जप गर्ने ब्राह्मण दीर्घजीवी हुन् भनी प्रार्थना गरिएको छ। प्रार्थनाको एउटा उदाहरण यहाँ प्रस्तुत छ–

गायत्री पञ्चवक्त्रा या सा मां पातु हृदि स्थिता। हृदयेस्फुरतु नित्यम् ब्रह्मगायत्री सर्वदा।।
(पृ.२)

पितृहरूको चर्चा गर्ने क्रममा गुरुले आफू अत्रि गोत्रमा कौशिलादेवी र हरिकृष्णको प्रथम सन्तान भएर जन्मिएको उल्लेख गर्नुभएको छ। हजुरबुबा देवीप्रसादको श्राद्ध गरेर आफ्नो घर धन्य बनेको छ भन्दै पितृहरूको आशीर्वादले सन्तानहरूको वृद्धि हुन्छ भनिएको छ। यज्ञनिधि र योगानन्द गुरुमा पूर्वजन्मको जातिस्मरण भएको, त्यस्ता गुरुलाई अभिवादन गरेको प्रसङ्ग उल्लेख गर्नुभएको छ।

योगानन्दे यज्ञनिधौ ह्यासिज्जातिस्मृतिः पूरा। तयोः शिष्यः टेकनाथः कुर्वेऽहमभिवादनम्।। (पृ. ९)

बाला चतुर्दशी तिथिमा घरनजिक रहेको सिद्धेश्वर शिवालयमा गएर सतबीज छरेको र गायत्री माता दया गर्नुहोस् भन्दै आफ्ना जीवनको साक्षी भएको कुरा यसरी उल्लेख गरिएको छ —

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु त्वमसि साक्षीरूपिणी। त्वमेव ब्रह्मरूपासि निर्विकल्पसमाधिगा।। (पृ. १०)

यसै गरी सीताविवाह पञ्चमीको वर्णनका साथै पाँचथरको जोरपोखरी ब्रह्म योगाश्रममा २०५५ साल मङ्सिर ११ गतेका दिन अखण्डदीप प्रज्वलन गरेको प्रसङ्ग रहेको छ। अखण्ड दीप दर्शन गर्दा सम्पूर्ण अपराध नाश हुन्छन् भनिएको छ। यसरी बत्ती बाल्दा बुद्धि एवं धन-धान्य प्राप्त हुनुका साथै पुण्य मिल्छ भनिएको छ। त्यहाँ पुराण तथा लक्षहवन भएको, कुम्भकर्ण आदि हिमालको सुन्दर प्राकृतिक छटाले पूर्ण यो सिद्धस्थलको दर्शनले मात्र पनि मानिस निरोगी हुने कुराको वर्णन गरिएको छ। त्यहाँ नजिकै स्वामी विवेकानन्दको आश्रम तेजपुञ्ज, पूर्वतर्फ रहेको शिवगङ्गा जस्ता पुण्यभूमिको उल्लेख रहेको छ। झापास्थित कालिकापीठको चर्चाका साथै विवेकाश्रमको वर्णन गर्दै समस्त भक्तजनको उत्सुकता, सद्भाव रहेको आश्रम धन्य हुन्। यहाँ सरस्वतीको कृपाले अध्ययन-अध्यापन कार्य निरन्तर सञ्चालन भइरहेको छ भनिएको।

पाथीभरा देवी भगवतीको वर्णन गर्दै त्यहाँ आसपासमा रहेका हिमाल, काबेरी, इवा नदी, गुसेश्वर मन्दिर आदि धार्मिक एवम् प्राकृतिक सम्पदाको सुन्दर चर्चा रहेको पाइन्छ। पाथीभरा मन्दिरमा गएर सप्तशती पाठ गर्दा प्राप्त हुने फलको पनि वर्णन गरिएको छ—

गच्छन्ति हिमवत्प्रस्थं पठन्ति चण्डिकास्तवम्। लभन्ते परमैश्वर्यं सन्ततिं पुत्रपौत्रिकिम्।। (पृ.२८)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसमा गुरुशिष्य परम्पराको चर्चा गर्दै गुरुले हंस/अजपा गायत्री मन्त्र यज्ञनिधि रेग्मी गुरुबाट गुरुकै घरमा श्रवण गर्नुभएको प्रसङ्ग वर्णन गर्नुभएको छ। यसमा नेपाल देश पशुपतिको कृपा भएर धन्य बनेको र नेपाल र नेपालीमाथि पशुपतिनाथले कृपा गर्दछन् भनिएको छ। यो हिन्दुराष्ट्र नेपालमा वैदिक ब्राह्मणहरूको रक्षा होस्, विधर्मीको कुदृष्टि कदापि नपरोस् भन्ने गुरुको चाहना व्यक्त भएको छ। पुरुषोत्तम मासमा भगवान् पुरुषोत्तमबाट निर्मल ज्ञान प्राप्त होस् र कीर्तन गर्नाले सबैको रक्षा भगवान्बाट हुने छ भन्ने भावना प्रस्तुत भएको छ। विवेकाश्रमबाट समस्त सज्जनमा विवेकको प्रादुर्भाव होस् भन्ने कामना यहाँ व्यक्त भएको छ। विद्यालयका शिक्षक, विद्यार्थी, ज्ञानी, सद्विवेकी रहून् भन्ने चाहना प्रकट भएको छ। साथै विवेकाश्रमवासीका हृदयमा सरस्वतीको पनि निवास होस् भन्ने भावना यहाँ व्यक्त भएको छ।

यसै गरी कनकाई नदीकिनारमा अखण्डदीप प्रज्वलन गरिएको प्रसङ्गका साथै कनकाई नदीको वर्णन गरिएको छ। कलियुगमा अपराध नाश गर्ने कनकाई नदी सधैं सेवा गर्न लायक छन् भनिएको छ। इलाम जिल्लामा महमाई नामबाट परिचित नदी झापामा आएर कनकाई नामले प्रसिद्ध भएकी छन्। गायत्री देवीको प्रार्थनामा ब्राह्मणहरू गायत्रीको उपासना गरेर सत्यवादी बन्दछन्, अन्य वर्णका मानिसहरू ब्राह्मणको सेवामा लागून् भन्ने चाहना प्रस्तुत छ। यहाँ भगवान् शिवको उपासना गर्दै उहाँबाट सम्पूर्ण मानवको रक्षा होस् भनिएको छ। यसरी प्रस्तुत पुस्तकका संस्कृत खण्डमा विविध विषयका निजी र केही पुराणादिमा व्यक्त आध्यात्मिक प्रसङ्गहरू सङ्क्षिप्त रूपमा आएका छन्।

नेपाली खण्ड

नेपाली खण्डमा पनि लामा छोटा दर्जनौं सङ्ख्याका शीर्षकहरू रहेका छन्। यहाँ पनि धर्म, कर्म, दर्शन, नियम, आचार, निष्ठाका प्रसङ्गहरूको चर्चा भएको पाइन्छ। यसै गरी नेपालमा सुरु भएको द्वन्द्वले केही बाधा नगरोस् भन्ने कामना गरिएको छ। जीवन क्षणिक रहेको हुँदा जति बेला पनि नाश हुन्छ त्यसैले लोभ, आशा त्यागेर सत्कर्म गरौं भन्ने धारणा प्रकट भएको छ। मनुष्यत्वमा ज्ञान भए मात्र मनुष्यत्व रहन्छ भनिएको छ। उपासना, आराधना गरौं भन्ने प्रसङ्गसहित शिव पञ्चाक्षरी मन्त्र जप्दा जन्म-मरणको त्रास रहँदैन, यो संसार चलचित्र जस्तो रहेको हुँदा ब्रह्म चिन्तन गर्नुपर्ने धारणा व्यक्त भएको छ—

ज्ञ ब्रह्म बन्नुपर्ने छ चौरासी वर्षभित्रमा।
जान्नु नजान्नु बाहेक ज्ञ नै रहेछ ब्रह्म ता।। (पृ. ४५)

गाई ब्राह्मण, वेद, दानी, सती, सत्यवादी र त्यागीलाई पृथ्वीले धारणा गरेकी छन्। सत्य, धर्म र शुद्ध ब्राह्मणबाट मात्र धर्मको रक्षा हुन्छ। शास्त्रमा आफ्नो गुणगान र वर्णन गर्नु भनेको आफ्नै हत्या गरे बराबर हुन्छ भनिएको छ।

गुरु जोरपोखरी जान लाग्नुभएको हुँदा गायत्रीले कृपा गरेर सबै विघ्नबाधाहरू

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हटून् भन्ने विचार व्यक्त गरिएको छ। जोरपोखरी ऐतिहासिक स्थल भएको हुँदा सबैले सहयोग गरौं भनिएको छ।

मिति २०५५ पौष ५ गते सिद्धेश्वर शिवालयको शिलान्यास भएको कुरा वर्णन गर्नुभएको छ। सबै भक्त जनको अथक प्रयासबाट मन्दिर निर्माण हुन लागेको हुँदा भक्तहरूलाई शिवले प्रेरणा दिने छन् भन्ने धारणा पनि व्यक्त गरिएको छ। सुविचारभित्र आनन्द भन्ने वस्तु आफैंभित्र रहेको हुँदा भौतिक वस्तुबाट कदापि आनन्द प्राप्त हुँदैन। आफू कस्तो छु भन्ने कुरा आफैंले विचार गरी ज्ञानी बन्न सकिने कुरा यहाँ उल्लेख भएको छ—

रिसराग सुखदुःख हटेमा ज्ञानी बन्दछ।

विद्वत् व्यक्तिमा भ्रम उत्पन्न भए वर्णाश्रम हराउँछ त्यस कारण भ्रम हुनु राम्रो होइन। नित्य शिवको पूजा गर्दा सद्गति प्राप्त हुने भएकाले शिवार्चन गर्नुपर्छ भनिएको छ। विवेकाश्रमको मर्यादामा आँच नआओस् र सबैले वर्णाश्रमको पालन गरून् भन्ने गुरुको आग्रह रहेको छ। रविसप्तमी पर्वमा सूर्यनारायणको कृपा भएर विवेकाश्रममा हुँदै आएका कार्य सफल हुने छन्। सबै भक्तजनमा शिवको कृपादृष्टि भएर जीव र परमात्माको मेल रहोस् भन्ने कामना गर्दै विवेकाश्रमप्रति समर्पणको भावना विकसित भएर परम्पराको सुरक्षा भइरहोस् भन्ने गुरुको चाहना व्यक्त भएको छ। विवेकाश्रममा अखण्ड वत्ती बाल्न थालेको पनि चौथो वर्ष हुँदै गरेको प्रसङ्ग यहाँ उल्लेख गरिएको छ। अखण्डदीप प्रज्वलन गर्नाले इच्छा-आकाङ्क्षा पूर्ण हुने कुरा यसरी व्यक्त भएको छ—

वर्तन जसले दिन्छन् चिताएको ती पाउँछन्।
अखण्ड दीप देखेर देवता यश गाउँछन्।। (पृ. १०६)

सतीदेवीले तप गर्ने क्रममा पार्थिव लिङ्गको पूजा गर्दै सेलाउँदै गरेर नै पाथी भरे जस्तो चुली भएकाले पाथीभरा नाम रहन गएको हो भन्नुभएको छ। यहाँ पाथीभराको महिमा यसरी गाइएको छ—

दर्शन गर्नका लागि नरनारी गए भने।
चिताए जति पाउँछन् पार्वती शिव छन् दिने।। (पृ. १०७)

सांसारिक प्रपञ्च समाप्त हुँदै गएर गायत्री मन्त्र जप गर्नीतिर ध्यान केन्द्रित हुँदै गएको छ भनिएको छ। गायत्री जपको महत्त्वको यहाँ उल्लेख छ—

द्विजातिको अधिकार गायत्री जपमा रछ।
अरूको अधिकार छैन यो कुरा सत्यतथ्य छ।। (पृ. १३७)

जीवनको अन्तिम अवस्थामा भगवत्कृपा होस् भनी भगवान्सँग गुरुले प्रार्थना गर्नुभएको छ। मनमा रहेका कल्मषहरू नाश भएर शुद्ध भावना उत्पन्न होस् भन्दै विवेकाश्रममा आफ्नो सधैं बास होस् भन्ने चाहना व्यक्त भएको पाइन्छ। २०५६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सालको नववर्षका दिन विवेकाश्रममा अखण्ड कीर्तन भइरहँदा राष्ट्र र जनतामा सत्कर्म, सद्भाव आओस् भनी शुभकामना दिइएको छ। असत्यको नाश भई सत्य, सदाचारले निरन्तरता पाउनुपर्दछ भनिएको छ। पशुपतिनाथबाट राष्ट्र, राजा र प्रजाको पालन होस्, अधर्मको नाश र धर्मको वृद्धि भई देशमा शान्ति, सुरक्षा रहोस् भन्ने चाहना व्यक्त भएको छ।

एक दिन प्रातःकालीन सन्ध्या गर्दै रहेका अवस्थामा ब्रह्माण्ड सूक्ष्म देखिएको र आफू पनि त्यहीं हराएको प्रसङ्ग पनि उल्लेख छ। उहाँले यस्तो आश्चर्य हुनु भनेको गायत्री माताको कृपा हो भन्ने आफूलाई लागेको छ भन्नुभएको छ। गायत्रीप्रति दृढ विश्वास भएमा गायत्रीको कृपा हुने रहेछ भनिएको छ। सत्सङ्गमा कर्म, उपासना र ज्ञान मानव जीवन सफल बनाउने कुरा हुन्। सत्सङ्ग नभएको व्यक्ति पशुतुल्य हुन्छ भने सत्सङ्गबाट विशिष्ट बन्दछ। ब्रतबन्धादि संस्कारसँगै ब्राह्मणको महामन्त्र ब्रह्म गायत्री हो र गायत्री जप नगर्नेको ब्रह्मत्व नाश हुन्छ भनिएको छ।

सपनामा नदीको सङ्गममा देखा परेको सुन्दरता र अलौकिक दिव्यताको चर्चा गरिएको छ। सपना र विपना सबै वासनामात्र हुन्। कर्म, उपासना र ज्ञानले ईश्वरलाई साक्षात्कार गराउँछन् त्यसैले यिनको प्रयोगबाट ईश्वर प्राप्त हुन्छन्। तीर्थयात्रा, पाठपूजा, हवनादि कर्म, जप आदि नित्यकार्य गरी ईश्वर प्राप्त गर्ने प्रयास गरेको प्रसङ्ग उल्लेख छ।

गुरुले धार्मिक चर्चासँगै २०५६ सालमा हुन लागेको संसदको चुनावी चहलपहलको वर्णन पनि गर्नुभएको छ। जो राजा, देवताका भक्त छन्, धर्मको रक्षा गर्न चाहन्छन् तिनको विजय होस्। ईश्वरले पनि त्यस्तै मानिसलाई मात्र विजय गराउँछन् भन्ने धारणा व्यक्त भएको छ। देशको राजनीति सत्यमा आधारित होस्, राजा, प्रजा दीर्घजीवी भएर देश उन्नत र समृद्ध बनाउन लागिरहून् भन्दै पुरुषोत्तम भगवान्सँग प्रार्थना गरिएको छ।

विवेकाश्रममा अखण्ड दीप प्रज्वलित भइरहोस्, द्वीपद्वारा अज्ञानरूपी अन्धकार समाप्त भई ज्ञानज्योति प्रकाशित होस् भन्ने कुरा वर्णन गरिएको छ। साथै यसरी अखण्ड वत्ती बाले धन-धान्य, ऐश्वर्य प्राप्त हुने, परमार्थ र व्यवहार दुवैमा सुधार हुने कुरा प्रस्तुत छ। परा विद्याबाट ब्रह्म सायुज्य प्राप्त हुन्छ भन्दै गुरुले अखण्ड द्वीप सर्वत्र प्रज्वलित भइरहून् भन्ने कामना गर्नुभएको छ।

आशक्तिले मनमा बास नपाओस् भनी इन्द्रियहरू भगवान्प्रति अर्पण गर्दछु भन्ने विचार प्रस्तुत भएको छ। अलौकिक आनन्द प्राप्तिका निम्ति बोधानन्दको आवश्यकता पर्दछ र बोधानन्दका निम्ति ब्रह्म चाहिन्छ अनि ब्रह्म भन्ने वस्तु विद्याबाट मात्र प्राप्त हुन्छ। अन्त्यमा जगदम्बा भगवतीले देश र जनताको रक्षा गरून् भनी भगवतीसँग प्रार्थना गरिएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्कर्ष

यसरी गौतम गुरुका आजसम्म प्रकाशित पुस्तकहरू योगमञ्जरी, विवेक दर्पण, हंसमञ्जरी र सुभाषित दैनन्दिनी रहेका छन्। यीमध्ये सुभाषित दैनन्दिनी सबैभन्दा दीर्घकाय पुस्तक हो र यसमा उहाँले लगभग दुई वर्ष (२०५५-५६ साल) का दैनिक जीवनमा आएका अध्यात्म विषयलाई समेट्नुभएको छ। संस्कृत र नेपाली दुई खण्डमा प्रस्तुत पुस्तकमा दुवै भाषामा छन्दका माध्यमबाट प्रस्तुत गरिएका तीन सय अधिक लामा, छोटा कविताका माध्यमबाट विषयको प्रस्तुति भएको पाइन्छ। ऐहलौकिक विषय नभएर पारलौकिक विषय नै यसको मुख्य प्रस्तुति हो। गुरुका सबै पुस्तकमा अध्यात्मसम्बन्धी जप, ध्यान, योग चिन्तन पूजा, प्रार्थना एवम् स्तुतिहरू समावेश भएका छन्। वर्षभरिमा आउने मुख्य धार्मिक पर्वहरू र तीसँग सम्बन्धित गरिने नित्य र नैमित्तिक कार्य, उत्सव, समारोह, आयोजना, अनुष्ठान आदिको चर्चा एवं वर्णन गरिएको छ। सांसारिक माया, मोह आदि प्रपञ्चका कारण मानिस भौतिक जगत्मै हराएको हुन्छ। अज्ञानरूपी अन्धकारमा परेर दृश्य जगत्लाई नै सत्य ठानी त्यसैमा भुल्नेहरू जीवनभर मानसिक दुःख पाउँछन् र त्यस्ता जन पछि गएर मुक्ति पाउन सक्दैनन्। विनासत्कर्म ब्रह्मानन्द प्राप्त हुन सक्दैन र त्यसका लागि एकाग्र भएर ईश्वरीय चिन्तन, जप, तप, ध्यानलाई अपनाउनु आवश्यक छ। सबै प्राणीप्रति समभाव रहनुका साथै देवताप्रति पनि समान धारणा हुनु आवश्यक छ। उहाँमा शिव, विष्णु देवी, गणेश, राम, कृष्ण आदि भिन्न नभएर सबै एकै हुन्, कुनै देवतामा भेद हुँदैन भन्ने अद्वैत धारणा रहेको पाइन्छ।

सन्दर्भ–सामग्री

गौतम, टेकनाथ. (२०४४). षट्चक्र चिन्तन. झापाः आफैं।
गौतम, टेकनाथ. (२०४५). योगदर्शन मञ्जरी. काठमाडौंः किशोरकुमार गौतम।
गौतम, टेकनाथ. (२०४६). विवेक—दर्पण. झापाः साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय।
गौतम, टेकनाथ (२०५२). हंसदर्शन मञ्जरी. काठमाडौंः किशोरकुमार गौतम।
गौतम, टेकनाथ (२०७४). सुभाषित दैनन्दिनी. काठमाडौंः किशोर गौतम।

स्रोत व्यक्तिहरूः

श्री मैना दिदी, श्री किशोर गौतम, श्री विष्णुभक्त भण्डारी, श्री नन्दिकेश्वर तिम्सिना, श्री छन्दुराम भण्डारी, श्री भानुभक्त अधिकारी, श्री जगन्नाथ भण्डारी, श्री गुरुप्रसाद पोखेल, श्री काशीनाथ दाहाल।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारीको सङ्क्षिप्त जीवनी

✍ लक्ष्मीप्रसाद रेग्मी घनश्याम ओली

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परम्ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।

पृष्ठभूमि

परम पूजनीय श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारीज्यूको शिक्षा, साधना, तपस्या, अनुष्ठान, तीर्थयात्रा, ब्रह्मचर्य, शैक्षिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रबाट समाधिसम्मका विषयलाई प्राप्त सन्दर्भ-सामग्रीहरू र श्रुतिप्रमाणका आधारमा जीवनीपरक ढङ्गले चर्चा गर्दै उहाँको परिचय प्रस्तुत गर्ने काम यस लेखमार्फत गरिएको छ। **'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति'** यो वैदिक सिद्धान्तका आधारमा ब्रह्ममय भएका यस्ता सन्मार्गमा संलग्न सच्चा सज्जनको परिचयले भगवानका भक्तहरूलाई साधना मार्गमा अगाडि बढ्न ठूलो प्रेरणा मिलोस् भन्ने हेतुले श्री गुरुदेवको सङ्क्षिप्त जीवनी लेख्ने जमर्को गरिएको हो।

जन्म र बाल्यकाल

आचार्यवर ब्रह्मनिष्ठ श्री १०८ गायत्रीस्वरूप गुरुज्यूको जन्म कौशिक गोत्रीय रेग्मी कुलमा वि.सं. १९९० साल वैशाख २५ गते पिता पं. श्री जनकलाल रेग्मी र माता यशोदादेवीका ज्येष्ठ पुत्ररत्नका रूपमा साबिक मेची अञ्चलको पाँचथर जिल्ला सुभाङ गा.वि.स. वडा नं. ५ मुक्तुरा गाउँमा भएको हो। उहाँको पूर्वनाम पुण्यप्रसाद रेग्मी थियो। उहाँका हजुरबुबा चन्द्रशेखर रेग्मी र ज्येष्ठ पिता यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं सिद्ध पुरुष हुनुहुन्थ्यो। उहाँका पिता जनकलाल रेग्मी पनि भगवान्का अनन्य भक्त अन्तरङ्ग सिद्ध कोटिका महापुरुष हुनुहुन्थ्यो। गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी गुरुदेवका मुखारविन्दबाट अभिव्यक्त ज्ञानगङ्गामा अवगाहन गर्न पाउँदा पिता जनकलालको अन्तस्करण भरिएर समय-समयमा अचेत समान हुनुहुन्थ्यो। पछि होसमा आउँदा आँखामा आँसु भरिएको हुन्थ्यो। लौकिक रूपले गृहस्थी भए पनि आभ्यन्तर

✍ लक्ष्मीप्रसाद रेग्मी सुभाङ, पाँचथर
✍ घनश्याम ओली साहित्यकार, काठमाडौं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूपमा सन्त हुनुभएका पिताजी पछिल्लो समयमा अस्वस्थ हुँदा दुई दाजुभाइ तथा चार दिदीबहिनीहरूका साथमा वरिपरि बसिरहँदा पनि बारम्बार 'खोइ त नानी आएनन् ?' भनेर सोधिरहनुहुन्थ्यो। केही दिनपछि गुरुजी आएर प्रणाम गरेर 'पिताजी म काशीबाट आइपुगें' भन्ने गुरुजीको वाणी सुनेर 'ए नानी आइपुग्यौ ? अब मैले सर्वस्व पाएँ। मेरो जन्म र मृत्यु दुवै मङ्गलमय हुने भयो' भनेर आफ्ना लौकिक संवादलाई पूर्णविराम दिनुहुन्थ्यो।

उहाँ बाल्य कालदेखि नै अलौकिक भक्तिमय प्रतिभासम्पन्न हुनुहुन्थ्यो। आफ्ना सहपाठीहरूले लौकिक खेल खेल्न प्रोत्साहित गर्दा पनि उहाँ आफ्ना साथीहरूलाई सम्बोधन गर्दै भन्नुहुन्थ्यो, 'यो मानव जीवन यस्ता खेल खेल्नका लागि होइन, अपितु भगवद्भजनद्वारा अन्तःकरण निर्मल गरेर आफ्ना हृदयरूपी दहराकाशमा स्थित सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मालाई प्राप्त गर्नका लागि हो।' उहाँ उनीहरूलाई जप, ध्यान र कीर्तन आदि गर्न सिकाउँदै मैत्री, दया, करुणा र प्रसन्नता जस्ता गरिमामय गुणलाई सर्वोपरि जीवनमूल्यको रूपमा सकार्न प्रेरणा दिनुहुन्थ्यो। स्वयं आफू पनि भगवद्ध्यान र मन्त्र जप गर्न अति श्रद्धा गर्नुहुन्थ्यो। गाई दुहुन जाँदासमेत देब्रे हातमा ढुङ्ग्रो बोकेर दाहिने हात गोमुखीभित्र राखेर एक माला रामतारक मन्त्र जप गर्नुहुन्थ्यो भने फर्केर आउँदा पनि त्यसै गरी एक माला ज़प गर्ने उहाँको बानी थियो। यसरी उहाँले प्रत्येक दिन दश हजार श्रीराम तारक मन्त्रको जप गर्ने सङ्कल्प गर्नुभएको थियो। यदाकदा उक्त सङ्ख्या दिनभरिमा पनि नपुगे रातभरि जपेर पनि आफ्नो सङ्कल्प पूरा गरेरै छोड्ने उहाँको सहज स्वभाव बनेको थियो। यस्ता अनेक रात्रिहरू नितान्त जप गरेर बिताउनुहुन्थ्यो। साधनाको प्रभावले लामो समयसम्म समाधिस्थ पनि हुनुहुन्थ्यो भन्ने कुराहरू उहाँकै पिताजी बताउनुहुन्थ्यो। यदि घरायसी कामबाट थोरैमात्र पनि फुर्सद भयो भने कतै हराउनुहुन्थ्यो। धेरै खोजी गर्दा घरका कुनै कुनामा ध्यानस्थ भेटिनुहुन्थ्यो।

गाई चराउन वनमा जाँदा देब्रे काखीमा लौरो च्यापेर दाहिने हातले माला जसै एकाग्र चित्तले हिंडेको देखेर सबै सहपाठी साथीहरू मात्र नभएर ठूलठूला विद्वान् पण्डितहरू पनि उहाँको प्रशंसा नगरी रहन सक्दैन थिए। सामान्य गृहस्थीका पुत्र हुनाले सानै उमेरदेखि घरका काम गर्नुपर्ने हुँदा कहिले गाईवस्तु चराउनु, कहिले गाई दुहुनु, कहिले खेतमा खाजा पुर्याउनु पर्थ्यो। तर यस्ता कामहरूका बीचमा पनि भगवन्नाम जपिरहनुहुन्थ्यो। गाईवस्तु धपाउने आदि सम्पूर्ण कामहरू बायाँ हातले गरे तापनि दायाँ हातले निरन्तर भगवन्नाम उच्चारण गर्दै मन्त्र जप गर्नु उहाँको दिनचर्या हुन्थ्यो। गाई चराउँदा गाईलाई अत्यन्त प्रेम गर्ने, सकेसम्म ठूलो आवाज पनि नगर्ने उहाँको स्वभाव थियो। यदि अलिकति पनि गाईमाथि क्रोध गर्नुभयो भने परिक्रमा गरेर चारै खुट्टामा शिर राखेर प्रणाम गर्नुहुन्थ्यो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरन्तर जप गर्ने यस्ता आफ्ना पुत्रलाई सुत्ने बेलामा पिताजी 'बाबु अब सुत' भनेर आफू सुत्नुहुन्थ्यो। तर धेरै बेरपछि ब्युँझिएर हेर्दा मध्य रातसम्म पनि उहाँको जपिरहेकै अवस्था हुन्थ्यो। यसरी प्रातः उठ्दा पनि जपिरहेकै अवस्था देखेर पिताजी पनि आश्चर्यचकित हुनुहुन्थ्यो। यस्ता अनेक रात्रिहरू उहाँ नितान्त जप गरेर बिताउनुहुन्थ्यो। उमेरको वृद्धि सँगसँगै साधनाको प्रभावले लामो समयसम्म समाधिस्थ पनि हुनुहुन्थ्यो भन्ने कुराहरू उहाँका पिताजीले गर्नुहुन्थ्यो। हजुरबुबा श्री चन्द्रशेखर रेग्मीज्यूले 'गाई चराउने कि पूजा गर्ने' भनेर प्रश्न गर्दा उहाँ 'म पूजा गर्छु' भनेर लामो समयसम्म पूजामा लीन हुनुहुन्थ्यो।

अति सानो उमेरमा जीवजन्तुमा पनि समान व्यवहार गरेर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' लाई सार्थक बनाउनुहुने गुरुजीको चरित्र सबैका लागि अनुकरणीय छ। उहाँका दुई भाइ र चार दिदीबहिनी हुन्। उहाँका माहिला भाइ ओमनाथ रेग्मी, साहिँला भाइ लक्ष्मीप्रसाद र कान्छा भाइ डिलप्रसाद हुन्।

व्रतबन्ध र विद्यारम्भः

आठ वर्षको उमेरमा उपनयन संस्कार भएपछि श्री योगानन्द गुरुकै सान्निध्यमा रहेर चण्डी, गीता, सप्तशती, रुद्राष्टाध्यायी र शुक्ल यजुर्वेद कण्ठस्थ पार्नुभएको थियो। उहाँले पाँचथरको जोरपोखरीमा आयोजित गायत्री अनुष्ठानमा २४ लाख गायत्री मन्त्र जप्नुभएको थियो। उपनयन संस्कार गर्नुभन्दा पहिले नै उहाँले श्री योगानन्द गुरुसँग रामतारक मन्त्र विधिवत् श्रवण गरिसक्नुभएको थियो र विशेषतः उहाँ 'श्री राम राम राम' यही मन्त्र जप्नुहुन्थ्यो। यस मन्त्रद्वारा भगवान् राम प्रसन्न भएर दर्शन दिनुभएको कुरा उहाँकै रचना 'विष्णुसमर्चा' नामक पुस्तकको 'दिव्य दर्शन' शीर्षकबाट स्पष्ट हुन्छ।

आध्यात्मिक जीवन यात्रा

आध्यात्मिक क्षेत्रमा जीवन समर्पण गरी आफ्नो नाम सार्थक बनाउन सफल परम पूजनीय गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी नेपाल राष्ट्रमा मात्र नभएर भारतभरिकै एक गरिमामय आध्यात्मिक व्यक्तित्वका रूपमा चिनिनुहुन्छ। गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी मनुष्यजीवन, मोक्षप्राप्तिको इच्छा र महापुरुषको सान्निध्यलाई प्राप्त गर्ने तीनवटै अत्यन्त दुर्लभ कुराहरूलाई प्राप्त गरी आफ्नो जीवन धन्य बनाउने सफल महापुरुषका रूपमा चिनिनुहुन्छ। उहाँको तपोमय जीवन साँच्चै लोभलाग्दो र अनुसरणीय रहेको देखिन्छ। विद्यासाधनाको क्षेत्रमा पनि उहाँको जीवन तपस्यामय नै रहेको स्पष्ट परिलक्षित हुन्छ। उहाँ अध्ययन र अध्यापनमा सधैं रुचि राख्नुहुन्थ्यो।

आफूकहाँ अध्ययन गर्न आएका विद्यार्थीलाई वेद, वेदान्त, व्याकरण आदि शास्त्र प्रेमपूर्वक अध्यापन गराउनुले उहाँको वैदुष्य जीवनको झलक प्रकट हुन्छ। **'जननी**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' भन्ने शास्त्रोक्तिलाई समेत उहाँले आफ्नो जीवनमा आत्मसात् गर्नुभएको देखिन्छ। नेपालका प्रायः सबै क्षेत्रको भ्रमण गरी नेपालीलाई भगवद्भक्ति गरेर जीवन धन्य बनाउन आशीर्वाद तथा प्रेरणा दिनुहुने गायत्रीस्वरूप गुरुजीले नेपाली भाषामा गायत्रीमञ्जरी, विष्णुसमर्चा, भगवत्समर्चा, पाञ्चायनपूजा एवं षट्चक्रचिन्तनम् जस्ता व्यवहारोपयोगी पुस्तकहरू लेखी प्रकाशनसमेत गर्नुभएको छ।

साधना र तीर्थयात्राः

आदरणीय बडीबा श्री यज्ञनिधि रेग्मीको सान्निध्यमा रहेर धेरै विषयहरू अध्ययन गरे तापनि थप अध्ययन र साधना गर्ने इच्छाले २००८ सालमा एकतीनमा श्री गायत्री भण्डारीज्यूसँग जानुभयो। उहाँका सान्निध्यमा रहेर केही समय गायत्री उपासना गर्नुभयो। आफ्ना पूजनीय गुरु श्री १०८ स्वामी योगानन्दज्यूका सान्निध्यमा धेरै ज्ञान तथा साधनापश्चात् थप साधना एवं तीर्थाटनको इच्छाले हेवा नदीको किनारबाट तमोर एवं सप्तकोशीको किनार हुँदै गङ्गा सङ्गम आदि अनेकानेक भारतवर्षीय तीर्थहरूमा भ्रमण गरेको कुरा गुरु स्वयं सत्सङ्गको सन्दर्भमा व्यक्त गर्ने गर्नुहुन्थ्यो।

यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) सँग तीर्थयात्राको आज्ञा मागी वराह क्षेत्रमा वराह भगवान्को दर्शन गरेर केही समयसम्म त्यहीं तपस्या गरी, काशीमा विश्वनाथको दर्शन, काशीबाट उत्तराखण्डको यात्रा गर्दै गङ्गोत्तरी, यमुनोत्तरी, केदारनाथ हुँदै बदरिकाश्रममा पुगेर धेरै काल तपस्या गर्दा प्राप्त आनन्दानुभव पनि यदाकदा आफ्ना अन्तरङ्ग भक्तहरूलाई सुनाउने गर्नुहुन्थ्यो। जगन्नाथ भगवान्को दर्शन गरी बाबा तिरुपति, रङ्गनाथ, कन्याकुमारी, छोटे नारायण, बडे नारायण, तोताद्री मीनाक्षी देवी, पक्षी तीर्थ गर्दै रामेश्वर द्वादश शिवज्योतिर्लिङ्ग दर्शन गर्नुभयो र दक्षिण भारतका तीर्थहरू तुङ्गभद्रा, पण्डालपुर हुँदै किष्किन्धा (रामलक्ष्मण चतुर्मास बसेको ठाउँ) मा गएर तपस्या गर्नुभयो। त्यहाँबाट पञ्चवटीमा त्र्यम्बकेश्वरको दर्शन गर्नुभयो।

त्यसपछि ब्रह्मगिरी पर्वतमा जानुभयो। गौतम ऋषिका आश्रममा गएर तपस्या गर्नुभयो। गौतम ऋषिले तपस्या गरी ल्याएकी गोदावरी नदीमा स्नान गर्नुभयो। त्यहाँबाट द्वारकातिर जानुभयो। श्रीनगर पर्वतमा तपस्या गर्नुभयो। प्रयाग क्षेत्रमा मातातीर्थमा पुग्नुभयो र सोमनाथको दर्शन गर्नुभयो। त्यहाँबाट मूल द्वारका जानुभयो। त्यहाँबाट गोमतीद्वारका र बेडद्वारका हुँदै गोपीतलाउ नागेश्वरको दर्शन गर्नुभयो। जामनगर जानुभयो। मातातीर्थ-बिन्दुसरोवरमा (देवहुतिलाई छोरा कपिलदेवले साङ्ख्ययोगको उपदेश गर्नुभएको ठाउँ) को दर्शन गर्नुभयो। त्यहाँ केही समय तपस्या गरेर आबु जानुभयो। अम्बादेवीको दर्शन गर्नुभयो। त्यहाँबाट पुष्कर जानुभयो। ब्रह्मपुष्कर, विष्णुपुष्कर, रुद्रपुष्कर स्नान गर्नुभयो। त्यहाँबाट उत्तरपन्थ लाग्नुभयो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उहाँ १८ वर्षको उमेरमा बद्रीनाथमा ६ महिना र बद्रीनारायणको पट (ढोका) बन्द भएपछि त्योभन्दा पनि माथि व्यास गुफामा गएर केही समयसम्म अलौकिक तपस्या गर्न सफल हुनुभयो। तत्पश्चात् कैलाश पर्वत जाने विचारले प्रस्थान गर्नुभएको भए तापनि उत्तरकाशीदेखि १४ माइलमाथि गङ्गाकिनार रेवाखण्डमा पुग्दा त्यो विचार दैवसंयोग गायत्री पुरश्चरण गर्ने विचारमा परिवर्तन भयो जसको फलस्वरूप त्यहीं १२ वर्षसम्म बसेर गायत्री पुरष्चरण, पञ्चाक्षरी, द्वादशाक्षरी र गणेश मन्त्रको समेत पुरश्चरण गरी स्वनामधन्य हुनुभयो। त्यही ठाउँमा गुरु योगानन्दले उहाँलाई गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी पदवी दिनुभएको हो। उत्तरकाशी रेवाखण्ड गुरुको साधनास्थल थियो। त्यहाँ नै गुरुले जप, अनुष्ठान गरी १२ वर्ष तपस्या गरी सिद्धि प्राप्त गर्नुभएको थियो। देवदास वृक्षको फेदमा गुरुको कुटी थियो। त्यो ठूलो सम्मान र पूज्य स्थलको रूपमा अहिले पनि गढवाली ब्राह्मण भक्तहरूले कुटीको संरक्षण गरिरहेका छन्। त्यसपछि चारधामादि समस्त (६४) तीर्थ यात्रा गरेर मातापिताको दर्शन गर्न जन्मभूमि पाँचथर पुग्नुभयो। पिताजीको देहावसान भएपछि विशेष अध्ययनको सन्दर्भमा ऊनमासिक र द्वितीय मासिक श्राद्ध सकेर पुनः काशीतर्फ प्रस्थान गर्नुभयो।

केही दिन मातापितासँग बसी पुनः आफ्ना गुरु योगाश्रमका सान्निध्यमा पुग्दा 'ब्रह्मनिष्ठ हुनुका साथै श्रोत्रिय हुनु मानव जीवनको ठूलो सौभाग्य हो' भन्ने गुरुको प्रेरणा पाएर ४६ वर्षको उमेरमा दण्डी परम्पराद्वारा परिचालित वाराणसीस्थित मुमुक्षुभवन आश्रममा बसी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयअन्तर्गत श्री दक्षिणामूर्ति संस्कृत महाविद्यालयबाट संवत् २०३६ सालमा वेदान्ताचार्य प्रथम श्रेणीमा उत्तीर्ण गर्नुभयो। उहाँले ९ पटक रामेश्वरको र ५ पटक चार धामको यात्रा गरिसक्नुभएको थियो।

गायत्रीस्वरूप उपाधि

गायत्रीप्रतिको निष्ठा, प्रेम, उपासना, जप, तप, गायत्रीमय जीवन, गायत्रीरत प्रकृति ब्रह्मचिन्तन कार्य अनवरत परिपालन गरेका सदाचारलाई दृष्टिगत गरी गुरु योगानन्दले बाल्यकालको नामरूप उपाधि हटाई परमात्मोन्मुख संज्ञक गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी नाम राखिदिनुभयो। सन्तको दृष्टिमा उपाधि निषेध भएपछि ब्रह्म मात्र बाँकी रहन्छ।

गुरुको स्वभाव र दिनचर्या

शिक्षा र दीक्षामा जीवन समर्पण गर्नुहुने गुरुदेवको जीवन काशी मुमुक्षुभवनमा रहँदा आफू पढ्ने र विद्यार्थीलाई पढाउने काममा नै अधिक समय सदुपयोग हुने गर्दथ्यो। सोबाहेक जप, पूजा, अतिथि सत्कार गर्न समयको आवश्यकता पर्थ्यो। साथै शास्त्रको सार झिकेर धर्म प्रचारार्थ पुस्तक लेख्ने काम पनि गर्नुपर्दा जहिले पनि राति १२ बजेसम्म धमाधम हुन्थ्यो। उहाँका आश्रममा पुगेका सबैलाई प्रसाद नख्वाई जान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनुहुन्नथ्यो र आफैंले बनाएर चिया खुवाउनुहुन्थ्यो। उहाँ सबैलाई हजुर, तपाईं भनेर सम्बोधन गर्नुहुन्थ्यो। उहाँले भोजन बनाएको, चिया पकाएको, सबैलाई बाँडेको, सानो भाँडोमा भएका सामग्रीले धेरैलाई पुगेको, साना कचौराका प्रसादले सयौं बालक, आमाबुबालाई पुगेको जस्ता विषय अचम्मलाग्दा थिए। उहाँ सब्जी, दाल आदि नुन, भुटुन, मसला कति हालौं, कति चाहिन्छ भनी सबैसँग सोध्ने गर्नुहुन्थ्यो। सब्जी ओइरिंदा र दालमा मसला झान्दा जो शब्द निस्कन्छ त्यसलाई स्वागत गर्दै उहाँ जय भन्नुहुन्थ्यो। सबैलाई राम्ररी बुझाएर सदुपदेश गर्ने उहाँको राम्रो बानी थियो। यही कारणले भगवान्का नाम र अर्थ खोलिदिने क्रममा उहाँले राम, कृष्ण, शिव र मातापिताको मान्यताको अर्थ राम्ररी बुझाउनु हुन्थ्यो। अझ नित्य र अनित्य वस्तुको चर्चा हरेक वस्तु र पदार्थलाई केलाएर प्रस्ट पारिदिनुहुन्थ्यो। शरीर, इन्द्रिय, आत्मा, परमात्मा, ईश्वर यस्ता कुरा बुझ्न चाहनेहरूले गुरुलाई भोजन र चिया बनाएकै समयमा पनि सोध्ने गर्थे। खान पनि पाइने, सत्सङ्ग पनि हुने भएर भक्तजन आनन्द मानेर गुरुलाई छोड्न चाहँदैनथे। उहाँ दया, प्रेम, शान्ति, सद्भाव, सेवा, पूजा, दुःखीको उपकारबारे भक्तिमार्गका बाटोबाट सबैले बुझ्ने गरी सम्झाउनुहुन्थ्यो। शिवका, रामका नाम पवित्र छन्। शिव, राम, बुद्ध, कृष्ण, सूर्य, गणेश, देवीदेवतामा कुनै भेद नराखी आफ्नो हृदयमा प्रेम जुन मूर्तिप्रति हुन्छ, तिनै देवतालाई इष्टदेवता मान्दा फाइदा हुन्छ। दिनमा एकपटक आफ्ना इष्टदेवतालाई सम्झने, बोलाउने बानी लाउनुपर्छ- गायत्रीस्वरूप गुरु भन्नुहुन्थ्यो। उहाँ सधैं एक छाक मात्र भोजन गर्नुहुन्थ्यो। पानी पनि आफैं तताएर खानुहुन्थ्यो। वेदमातृभूता विद्याका अनुष्ठाता एवं ब्रह्मगायत्रीका साधक मानिनुहुन्छ गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी।

गायत्रीस्वरूपको व्यक्तित्व

सादा र सरल जीवन। शान्त स्वभाव, मधुरवाणी, विद्वत्ताका धनी, आकृतिमा सुन्दर, मुनि भेषधारी, सदाचारमा निपुण, गम्भीरताका सागर र सौम्य, शान्तमूर्ति हुनुहुन्थ्यो गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी। ब्रह्मज्ञान, अद्भुत शक्ति र भगवद्भक्ति प्रचुर मात्रामा थियो। निःस्वार्थ आफ्नो सात्त्विक ज्ञान सबैका घरघर पुगेर बाँड्नुहुन्थ्यो। भक्तहरूका लागि दया र करुणाका सागर हुनुहुन्थ्यो उहाँ। भक्तका आग्रहलाई उहाँले कहिल्यै काट्नुभएन। हजारौं मुमुक्षुहरूलाई उहाँले दीक्षा मन्त्र प्रदान गर्नुभयो र लाखौं भक्तजनका प्रिय बन्नुभयो।

आध्यात्मिक व्यक्तित्व

उहाँका मुखारविन्दबाट वेदान्तमय ज्ञान रसामृत अविरल प्रवाहित भइरहन्थ्यो। उहाँ धार्मिक, आध्यात्मिक व्याख्यान प्रवचन उपदेश पनि यथासमय दिने गर्नुहुन्थ्यो। सज्जन र सन्तमार्गीहरूका लागि ब्रह्मचारीज्यूका निर्देशन, उपदेश र स्तुतिहरू साह्रै नै पठनीय, मननीय र भक्तिपरक छन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्राह्मण आचरण र व्यवहारमा रही कुलोचित संस्कार पूरा गर्दै आठ वर्षको उमेरमा व्रतबन्धबाट गायत्री मन्त्रसँग जोडिएका गायत्रीगुरुले बाल्यकालमै आफ्नो अचम्मलाग्दो विशेष स्वभाव प्रकट गर्नुभएको थियो। पठन, ध्यान, जप तथा पूजनमा उहाँको विशेष ध्यान थियो। योगाभ्यास, आसन, निराहार व्रत गर्ने उहाँको बानी थियो। चण्डी, रुद्री, वेद, गीताको अध्ययनमा प्रवीण भएर जीवनलाई निवृत्ति मार्गमा डोर्‍याउने निर्णय गर्नुभयो। नेपाल, भारतका प्रसिद्ध तीर्थस्थल, पुण्यस्थलहरूको दर्शनका साथै पूजन, हवन, जप तप, यज्ञयागादि सम्पन्न गर्नुभयो। शास्त्रीय ज्ञानको अध्ययनको उपल्लो कक्षमा जीवात्मालाई पुर्‍याएर वेदान्त दर्शनको अन्तिम सिद्धान्त सोहम्को अनुभूति गर्ने भएका गायत्रीस्वरूप गुरुले सत्यको खोजीमा जीवन अर्पण गर्नुभयो। पराभक्तिको साधनामा एकाकार गर्ने सच्चा योगीमा आफूलाई आकर्षित गराउनुभयो। विद्या, अविद्या, कर्म, विकर्म, अकर्मका सारहरूमा मनुष्यको परम कर्तव्यको दृष्टिले स्वीकृत गरेका बाटोमा उहाँ संलग्न हुनुभयो।

उहाँका प्रमुख कर्तव्य, व्यवहार, लेखन आदिमा आडम्बररहित सरल सहज, सच्चा योगीको ज्ञान ज्योति उज्यालोको सहजता देख्न सकिन्छ। उहाँले प्रदान गर्नुभएको शिक्षादीक्षा, ज्ञान र उपदेशले भारत लगायत नेपालका विभिन्न स्थानका हजारौं मानिसको मनमा ईश्वरप्रति श्रद्धा र विश्वास जगाएको छ। उहाँ एक षड्चक्र सिद्ध साधक पनि हुनुहुन्थ्यो। उहाँ पूर्वीय दर्शनका महान् अनुयायी हुनुहुन्थ्यो। योगीको आशीर्वाद र उपदेश साधनापथमा लागेका साधकहरूका लागि अचुक औषधि र अमृत बन्छ भन्ने उहाँको धारणा थियो। उहाँ वैदिक सनातन धर्मको उपदेश दिंदै समाज र व्यक्तिलाई एक सूत्रमा बाँध्ने महान् कार्यमा लाग्नुभएको थियो।

उहाँ इष्टदेवताको रूपमा भगवान् गणेशलाई हृदयतः स्वीकार्नु हुन्थ्यो तापनि विष्णुपाञ्चायन देवताको पूजा, रामगीता, नारायणोपनिषद्, गजेन्द्रमोक्ष, श्रीमद्भगवद्गीता पाठ नगरी औषधिसम्म पनि खानुहुन्नथ्यो। उहाँ पानी पनि आफैं तताएर ग्रहण गर्नुहुन्थ्यो। स्वयंपाक व्रत अटुट रूपमा कर्तव्य दृष्टिले पालन गर्नुहुन्थ्यो। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयबाट आफ्ना कुटीमा पढ्न आएका जिज्ञासु विद्यार्थीहरूलाई वेदवेदान्त र व्याकरण परमार्थ दृष्टिले बडो रुचिका साथ पढाउनुहुन्थ्यो। उहाँ हृदयतः काशीमै बसेर आध्यात्मिक साधनाद्वारा समय व्यतीत गर्न चाहनुहुन्थ्यो तापनि भक्तहरूका भावनालाई नकार्न नसक्दा यदाकदा भ्रमण गर्ने क्रममा भारतका अधिकांश प्रान्त र नेपालका पनि प्रायः सबै जिल्ला भ्रमण गरिसक्नुभएको थियो।

कवि व्यक्तित्व

उहाँमा कवित्व प्रवाह बेजोड रहेको थियो। उहाँका विष्णुसमर्चा, भगवत्समर्चा जस्ता कृतिहरू छन्दोबद्ध नै छन्। उहाँका यी कृतिहरूमा शास्त्रीय छन्दको प्रयोग छ। अन्त्यानुप्रास मिलेको छ सबैमा। उहाँ भगवान्को कीर्तन गर्न साह्रै मन पराउनुहुन्थ्यो। उहाँले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष्णुसमर्चामा 'कैवल्य हरिकीर्तन' छुट्टै शीर्षकमा हरिको कीर्तन लेख्नुभएको छ। उहाँले पुस्तकको सुरुमा नै 'हे सज्जन हो विन्ती छ मेरो भजन गरौं अब श्रीहरिको' भनेर हरिकीर्तन लेख्नुभएको छ।

कृतिगत विशेषताः

गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारीले भगवत्भक्ति, गायत्रीउपासना, षड्चक्रचिन्तनम् र भगवत्पूजाका प्रसङ्गमा पुस्तक प्रकाशित गर्नुभएको छ। नेपाली भाषामा प्रकाशित विष्णुसमर्चा भक्तजनले अत्यन्तै रुचाएको पुस्तक हो। भगवत्समर्चा संस्कृतमा लेखिएको भगवद्भक्ति प्रवर्द्धक अर्को पुस्तक हो। त्यस्तै गायत्री उपासनासम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विषयवस्तु समेटेर लेखिएको पुस्तक गायत्रीमञ्जरी हो भने पाञ्चायन पूजा एवं षड्चक्रचिन्तनम् त्यत्तिकै महत्त्वपूर्ण अर्को पुस्तक हो।

भगवत्समर्चा

भगवत्समर्चा गायत्रीस्वरूप गुरुको संस्कृत भाषामा लेखिएको पहिलो कृति हो। यो नितान्त स्तुति सङ्ग्रह हो। यो कृति भगवान् शङ्कराचार्यको भक्तिपरम्पराको संवाहक हो भन्दा अत्युक्ति नहोला। यसभित्र उहाँका साधनामय जीवनको सुरगङ्गा प्रवाहित भएको छ। यसमा रहेका विभिन्न देवदेवीहरूका भक्तिरचनाले चित्तशुद्धिपूर्वक जीव र ब्रह्मको अभेदबोधात्मक अनुभूति गराउँछ। ब्रह्माण्डच्छत्रको दण्ड मानिने यो भावधारा नै एउटा गङ्गास्नान हो र यो स्नान कलिमलहारी र अनन्तसुखदायी पनि छ। वास्तवमा सद्भावपूर्ण सज्जन हृदय नै एउटा अनुभूतिमय गङ्गा हो। बाहिरी गङ्गास्नानमा भित्री भावगङ्गा नै प्रेरक बन्छ। भक्तिधाराको गङ्गामा रमाउने ब्रह्मचारीका विभिन्न देवस्तुतिहरूमा रहेका अर्थप्रसाद वा निश्छल अर्थराशिको औचित्य प्रदर्शन नै यस पुस्तकको प्रासङ्गिक वस्तु हो। गङ्गानाम स्मरणसरह प्रयोग गरिएका यस सङ्ग्रहका १४ वटा देवस्तुतिहरूले विभिन्न देवदेवीहरूलाई सरलभन्दा सरल शब्दार्थ पुष्पाञ्जलिद्वारा उपस्थित गराउँछन्। दीनता र नम्रता व्यक्त गरेर शरणागतिमा पुग्नका लागि यी स्तुतिपुष्पहरूले भक्तवृन्दलाई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऊर्जा प्रदान गर्छन्।

विष्णुसमर्चाः

विष्णुसमर्चा गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी गुरुदेवको भगवत्समर्चापछिको दोस्रो मौलिक कृति हो। यसमा वेदान्त दर्शन र मानव वैराग्यका असङ्ख्य विषयहरू छन्। यसमा जति गहिरिँदै गयो उति गहिरिन मन लाग्छ। यस पुस्तकमा सात अध्याय छन्। त्यस अतिरिक्त कैवल्य हरिकीर्तन र श्रीकृष्ण आरती पनि छन्। विष्णुसमर्चामा सगुणोपासनामा उपयोगी भक्ति र निर्गुणोपासनाका लागि आवश्यक आध्यात्मिक ज्ञान दुवैको मधुरतम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयोग छ। कतै कतै भक्तिज्ञानका साथै वैराग्य तत्त्वको समेत संयोजन भएको पाइन्छ। यस पुस्तकले जनसाधारणलाई सहज र सरल रूपमा भक्ति र ज्ञान तत्त्वको बोध गराएको छ।

गायत्रीमञ्जरीः

धर्मचर्चा, शास्त्रचर्चा, विशुद्ध शास्त्राचारमा निरत उहाँले वर्णाश्रम धर्मका अनुयायी गायत्रीमन्त्रमा आस्था विश्वास हुनेहरूलाई 'जप' मार्ग सुगम तुल्याउन गायत्रीमञ्जरी नामक ग्रन्थ लेख्नुभएको छ। प्रस्तुत कृतिले गायत्रीमन्त्रको महत्त्व जपविधिको प्रयोगमात्र सिकाउने होइन यस मन्त्रका प्रभावबाट प्राप्त हुने इहलौकिक पारलौकिक, सुख ऐश्वर्यको सुस्पष्ट झल्कोसमेत दिनुभएको छ। शास्त्रज्ञानबाट अनुमोदित गायत्रीमञ्जरी जस्ता ग्रन्थको विद्वत्समाजमा विशेष महत्त्व अङ्कित भएको छ। यस पुस्तकमा हाम्रा वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराणले निर्देशित गरेका विषयहरूलाई साभार गरिएको छ। गायत्रीमन्त्रको माहात्म्य, उपासनाविधि, जप, भष्मधारण, रुद्राक्षधारण, आसन, आचमन, अभिषेक आदिमा आउने अनेकौं ग्रन्थहरूका बीच गायत्रीमन्त्रको विशिष्ट रूपलाई परिचित गराउनुभएको छ। गृहस्थाश्रमीले प्रतिदिन घरमा पाञ्चायतनदेव पूजा गर्नुपर्छ। यसले सनातन धर्मको प्रतिपालन हुनुका साथै सर्वमङ्गल हुने कुरा जनाउँदै वैदिक धर्ममार्गमा निबद्ध हुन वा अनुसरण गर्न सबैमा आग्रह गर्नुभएको छ। यस कृतिले कर्मरहस्य, कर्मका उद्देश्यहरू, कर्मबाट हुने सर्वकल्याण र गायत्रीजपको महत्त्व र तिनका पद्धतिको विस्तृत विवरण दिएको हुनाले यो ग्रन्थ अतीव समाजोपयोगी सिद्ध भएको छ।

पाञ्चायन पूजा एवं षड्चक्रचिन्तनम्

देवी, सूर्य, गणेश, विष्णु र शिव यी पाँच देवताहरूलाई पञ्चदेव भन्दछन्। यी पाँच देवताहरूको पूजालाई नै पाञ्चायन पूजा भनिन्छ। हाम्रो सनातन वैदिक धर्ममा पाञ्चायन पूजा गर्ने प्रचलन प्राचीन कालदेखि चल्दै आएको हो। तर पाश्चात्य संस्कृतिको प्रभावले मानिसहरूमा धर्म, संस्कृति र भगवान्को पूजाप्रति बढ्दै गएको अविश्वास र अनास्थामाथि विश्वास जगाउन श्रीगायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी गुरुदेवले यो पाञ्चायन पूजा एवं षड्चक्रचिन्तनम् पुस्तक प्रकाशित गर्नुभएको छ। यस पुस्तकमार्फत पाञ्चायन पूजाको विधि स्पष्ट पार्दै उहाँले यसको महत्त्व र फलसमेत शास्त्र र प्रमाणका आधारमा उल्लेख गरिदिनुभएको छ।

त्यस्तै षड्चक्रचिन्तनम्मा अजपा गायत्रीको महत्त्व, विधान, पाँच प्राणवायुको गति, स्वासको गति, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध र आज्ञा यी षड्चक्रहरू कहाँ छन् र चिन्तन कसरी गर्नुपर्छ भन्ने कुरा शास्त्रीय प्रमाणका आधारमा स्पष्ट पारिदिनुभएको छ। श्रद्धालु भक्तजनले यसको अध्ययन र मनन गरी लाभ उठाउन सकून् भन्ने गुरुदेवको अभिलाषा रहेको पाइन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनौठा प्रसङ्ग

उहाँको जीवनमा धेरै अनौठा घटनाहरू पनि घटेका रहेछन्। एकपटक बद्रीनारायणबाट माथि हिमालतर्फ केही सन्तहरूका साथ ध्यान गर्न जानुभएछ। जाँदा जाँदा बाटोमा एउटा झर्ना पत्थरमा ठोक्किई परावर्तन भएको सुन्दर दृश्य देखी त्यहीं तपस्या गर्न थाल्नुभएछ। ४८ घन्टासम्म ध्यानमग्न भई त्यहाँ बसी समाधिस्थ हुने इच्छा भएको थियो तापनि पछि ध्यान खुलिसकेपछि व्यास गुफातर्फ अघि बढेको अनुभव गुरु स्वयं भक्तहरूलाई सुनाउने गर्नुहुन्थ्यो। त्यस बेला ६-७ वर्षका जस्ता एकै रूपमा समानान्तर पहेंला लुगा लगाएका, हातमा डण्डी बोकेका मानिस जस्ताले गुणगान गरी यस पृथ्वीमा पनि यस्ता व्यक्ति हुँदा रहेछन् भनी गुनगान गरेको र 'तिम्रो अहिले माथि जाने बेला भएको छैन धेरै काम गर्न बाँकी छ, फर्केर जाऊ' भनेको जस्तो सुनी यसो हेर्दा त्यहीं ती मानिस अलप भएको कुरा गुरु भन्नुहुन्थ्यो।

भगवान्को दर्शनको प्रसङ्ग पनि आफ्ना भक्तहरूलाई सुनाउनुभएको रहेछ। एकपटक भगवान् राम, सीतासहित सेतो रूपका गणेशजीले सेतो माला सुँडमा लिएर आफ्नो गलामा पहिर्याइदिएको प्रसङ्ग बताउँदै गर्दा उहाँको शरीर एक्कासि आसन छोडेर तलबाट माथि उठेको र ओम्कारको धुन गुन्जिएको, शरीरका सम्पूर्ण वस्त्र हल्लिएको, ५ मिनेटसम्म शरीर माथि नै रहेको र फेरि नादसहित यथावत् ठाउँमा आएर बस्नुभएको कुरा एक जना भक्तले प्रत्यक्ष देखेको बताउनुभएको छ।

त्यस्तै व्यासगुफामा तपस्यामा रहेको बेला हिउँले पुरिएर उहाँको जुरोमात्र देखिएको र भक्तहरूले खनेर हेर्दा उहाँ समाधि लागेर बेहोस अवस्थामा फेला परेको प्रसङ्ग पनि भक्तहरूबाटै सुनिएको हो। व्यास गुफामै तपस्या गर्दा स्वर्गबाट अप्सराहरू आएर नाच्ने, गाउने, ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भनी बोलाएर तपाईंले केही खानुभएको छैन, हामीले केही खानेकुरा ल्याएका छौं भनेर सुनाएको, हजारौं बालकहरूले लाठी बजाएर नाचगान गरेको, ९ वर्षदेखि तलका बालक एकै स्वरले घुङघुरु, कङ्कण बजाएर नाचेको देखेर गुरुले आँखा खोली हेर्दा पहेंला वस्त्र लगाएका बालकहरूको पूर्ण रूपमा दर्शन भएको घटनाहरू पनि सुनाउनुभएको रहेछ।

यस्तै एकपटक गाई चराउन जाँदा सर्प शरीरमा चढेर शिरमाथि फँडा फिजाइरहेको देखेपछि भाइ ओमनाथ रेग्मीले भगाउन खोज्दा गुरुले ओठमा औंला राखेर केही नगर्नू भन्ने सङ्केत गरेपछि सर्प आफैं फुत्त बाहिर निस्केर गएको प्रसङ्ग भाइ ओमनाथले नै बताउनुभएको हो।

गायत्रीस्वरूप ब्रह्चारीले भक्तहरूलाई गरेका महत्त्वपूर्ण उपदेशहरू

- सत्सङ्ग भनेको सत्को सङ्ग हो। सत् भनेको परब्रह्म परमात्मा हो, परमात्माको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सङ्ग गर्नु हो। साधुहरूको, सज्जनहरूको सङ्ग गर्नु भनेको नै सत्सङ्ग हो। सत्सङ्ग भनेको ठूलो कुरा हो, सत्सङ्ग पाइनसक्नु छ, अवसरहरूमा सबैभन्दा ठूलो सत्सङ्ग मानिएको छ। सत्सङ्गद्वारा चित्त निश्चल हुन्छ। चित्त निश्चल भइसकेपछि ज्ञान प्राप्त हुन्छ र जीवनमुक्ति प्राप्त गर्न सकिन्छ। जहिलेसम्म सत्सङ्ग पाइँदैन तबसम्म संसारमा घुमिरहनुपर्छ भनेर शास्त्रहरूमा वर्णन गरिएको छ।

- यो संसार भनेको दृष्टनष्ट स्वरूप हो, दृष्टनष्ट भनेको एक दिन देखियो अनि फुटिहाल्यो। भगवान्‌को भक्ति गर्यो भने फेरि जन्म लिंदा उत्तम कुलमा जन्म हुन्छ र बाबुआमा पनि धार्मिक हुन्छन्। गुरु पनि राम्रा मिल्छन्। सत्सङ्ग मिल्छ। धर्मकर्म गर्नका लागि सम्पत्ति पनि आफूसँग हुन्छ। धर्ममा मन प्रवृत्त हुन्छ। जो धार्मिक छ त्यहाँ नै साधुसन्त र महात्माहरू आउँछन्। यस्ता प्रकारले फेरि सत्सङ्ग पाइन्छ र विस्तारै मोक्ष गति प्राप्त गर्न सकिन्छ।

- सगुण र निर्गुणमा केही फरक छैन। सगुणस्वरूप उपासना गर्ने भक्तहरू र निर्गुणस्वरूप उपासना गर्नेहरू दुवैले आत्मालाई भगवान् मान्दछन्। सगुणस्वरूप ब्रह्मको इच्छा गर्ने भक्तजनहरूले रामको, कृष्णको, शिवको दर्शन गर्ने इच्छा राखेका हुन्छन्। निर्गुण स्वरूप ब्रह्मको इच्छा गर्ने भक्तजनहरूले दर्शन प्राप्त गर्दा बोधसत्ताको साक्षात्कार हुन्छ। वैकुण्ठमा, शिवलोकमा, मणिद्वीपमा, गोलोक आदिमा जहाँ पनि भगवान् परिपूर्ण हुनुहुन्छ। ज्ञानी जन बसी बसी आफ्ना हृदयमा परमात्माको ध्यान गर्छन्। यो जगत् वासुदेवमय भएको हुनाले सम्पूर्ण परमात्माको स्वरूप हो भन्ने निश्चय गर्नु नै ज्ञानी महापुरुषको चरम लक्ष्य हो।

गुरुका अधुरा कुरा

भारतबाट छोटो समयका लागि नेपाल आई विभिन्न कार्यक्रममा सहभागी भएर पछिल्लो समय झापा गोलधापस्थित गायत्रीस्वरूपाश्रमको वार्षिकोत्सव कार्यक्रम सकेर तत्काल वाराणसी फर्कने कार्यक्रमको तयारी हुँदै थियो। काठमाडौंबाट गुरुज्यूका भक्त रामचन्द्र बाँस्तोलाजीको पुत्रको व्रतबन्ध पूज्य गुरुज्यूकै उपस्थितिमा मात्र हुने एवं गुरुज्यूको अनुपस्थितिमा हुन नसक्ने आशयसहितको पत्र गुरुज्यूका समीपमा पुगेको भन्ने कुरा पछि गुरुज्यूका अन्य भक्तजनबाट थाहा पाइयो। आफ्ना भक्तको आग्रह टार्न नसकी गुरुको काठमाडौं जाने निधो भयो। काठमाडौं जाने क्रममा झापाबाट दिलीपकुमार ढुङ्गेलका पिता नारायणस्वरूपजीको घर दुहवी सुनसरी आई त्यस दिन विश्राम गरी भोलिपल्ट विराटनगर हुँदै हवाई मार्गबाट काठमाडौं प्रस्थान गर्ने तयारी हुँदाहुँदै अकस्मात् अकल्पनीय घटनाको रूपमा पूज्य गुरुले भौतिक शरीर छोडी ब्रह्मलीन हुनुभएको थियो।

गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारीले बाँकी रहेको काम सन्न्यासग्रहण गर्ने अभिलाषा र त्यसको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तयारीमा रहेको कुरा भक्तजनहरूलाई बताउनुभएको रहेछ। उहाँ सबै संसारी कुराबाट असक्त भएर, सन्न्यास ग्रहण गरेर मुक्त हुन चाहनुहुन्थ्यो। त्यो उहाँको इच्छा अधुरै रह्यो।

जीवनको अन्तिम अवस्था

गायत्रीस्वरूप गुरुदेव गोलधापस्थित गायत्रीस्वरूपाश्रमको वार्षिकोत्सव कार्यक्रम सकेर बिर्तामोड, दमक हुँदै दुहबीस्थित स्वामी श्रीनारायणस्वरूपजीका निवासमा पुग्नुभएको थियो। त्यहाँ आफैंले प्रसाद बनाई खाइसकेपछि विराटनगर इन्दिराजीको घरमा जान झोला बोकिसकेको अवस्थामा शौचादि कर्मबाट निवृत्त हुन शौचागारतर्फ जाँदा दुर्घटनाजन्य अवस्थामा २०५९ साल चैत्र ११ गते उहाँ ब्रह्मलीन हुनुभयो। गुरुका अनन्यभक्त र शिष्यहरूले श्रीमद्भागवत, विष्णुसहस्रनाम, गीता, रामगीता पाठ गर्नुभयो। गुरुको पार्थिव शरीर लिएर हजारौं नरनारी कनकाईमा जम्मा भए। कनकाई माई विराटनगर, दुहवी, झापाका विभिन्न स्थानबाट आएका गुरुका शिष्य र भक्तहरूको भिडले खचाखच भरिएको थियो। सबैको रुवाबासी मच्चियो। सबैका आँखा आँसुले भरिएका थिए। गुरुको अन्त्येष्टिको बेला आकाशमा ठूलो आवाज सुनियो। केदारनाथ खतिवडा, विष्णुभक्त भण्डारी, घनश्याम कँडरियालगायतले अन्त्येष्टि कार्यक्रमको अग्रसरता लिनुभयो। कनकाईस्थित गायत्री मन्दिरमा गुरुको शव राखिएको थियो। स्वस्तिवाचन ओम्, राम ध्वनिले गुन्जिएको थियो। आकाशमा मेघ गर्जिएजस्तो अनौठो आवाज गुन्जियो। गुरुको दाहसंस्कार भयो। चिता जलिरहेको थियो। टन्टलापुर घाम लागिरहेको थियो। एक्कासि बादलको टाटो देखियो र दररर पानी पर्न थाल्यो। आकाशबाट वर्षा भएर नै गुरुको चिता पखालियो। फेरि घाम पहिलाकै अवस्थामा लाग्न थाले, बादल हट्यो, वर्षा रोकियो। यस्तो दैवी चमत्कार भयो। सबै अचम्मित भए। कनकाई माईमा शिष्य र भक्तजनहरूको घुइँचो हेर्दा सन्त तपस्वी गायत्रीस्वरूप गुरुको अन्त्येष्टि राजकीय सम्मानको जस्तो देखिन्थ्यो।

सन्दर्भ सामग्री

भवानीप्रसाद खतिवडासमेत (सम्पा.), (२०७१), गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी स्मृतिग्रन्थ, झापाः गायत्रीस्वरूपाश्रम, गोलधाप २

श्री गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, (सन् १९...), भगवत्समर्चाः वाराणसीः लेखक

श्री गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, (सन् १९...), श्री विष्णु समर्चाः वाराणसीः लेखक

गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, (२०४६), गायत्री·मञ्जरीः वाराणसीः तारकबहादुर शाह।

श्री गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, (२०५९), पाञ्चायनपूजा एवं षड्चक्रचिन्तनम् : वाराणसीः लेखक

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाप्रभुका शिष्य ब्रह्माभ्यासानन्द गिरिको सङ्क्षिप्त परिचय

✍ डा. रुद्रानन्द ब्रह्मचारी (ध्रुवश्रीः)

ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामीजीको जन्म वि.सं. १९६० को सुरुमा पाँचथरको सुभाङमा भएको हो। गृहस्थ जीवन र त्यसमा पनि पहाडी रहन-सहन भएकाले दुःख- कष्ट भोग्दै अगाडि बढे पनि माता-पिता भगवान् भोलेनाथको अनन्य भक्त, उपासक र त्यागपरायण हुनुहुन्थ्यो। सन्त-महात्माप्रति उहाँहरूको बडो प्रेमआदर र श्रद्धा थियो। सन्तहरूलाई सकेको दान-दक्षिणा दिने निष्ठाले परिवारलाई नै सन्तप्रति श्रद्धा गर्न सिकायो।

स्वामीजी मात्र नभएर परिवारका अन्य दाजुभाइहरूको पनि बाल्यकाल विलक्षण भएको बुझिन्छ। श्रुतिपरम्परामा सुनिएअनुसार सबै भाइ छोराहरूमा माता-पिताको संस्कार सरेको थियो। सौम्य प्रकृति र आदरभावको व्यवहार सबैलाई लोभ्याउने थियो। बालक अवस्थामा पनि भगवान्प्रति नतमस्तक, खेल-रमिताभन्दा पनि एकान्त, शान्त जीवन मन पराउने र गोसेवामा लगनशीलता थियो। भगवान् शिवको भक्ति-पूजामा नै आफूलाई लगाउने र खेल पनि पूजा, आरतीकै अनुकरण गरी गर्ने स्वभावले उहाँमा विलक्षणता देखिन्थ्यो। गाउँका अन्य बालकहरूलाई समेत भगवान्को भजन-कीर्तन र पूजनको ज्ञान दिने बालक देखेर गाउँलेहरू छक्क पर्थे। संस्कारसम्पन्न बाल्यकालले नै सन्त-जीवन विरक्त शिरोमणिका रूपमा निर्माण गर्यो।

स्वामीजीका पिता संस्कारसम्पन्न, त्यागपरायण, सद्गृहस्थ हुनुहुन्थ्यो। उहाँले आफ्ना सन्तानमा पनि सनातन धर्मका संस्कारहरू यथासमयमा नै सम्पन्न गराउनुभयो। उपनयन संस्कारपछि सन्ध्या, गायत्री र नित्यकर्महरू पनि घरमा नै सिकाउनुभयो। घरको वातावरण र सामाजिक जीवनशैलीमा रमाउन नचाहने स्वामीजीको बालापनले शान्त र एकान्त स्थानको खोजी गरिरहन्थ्यो। अध्ययनको लालसा पनि तीव्र रूपमा उठिरहन्थ्यो, तर अनुकूल समय मिलिरहेको थिएन। एक दिन अचानक घर त्यागेर ज्ञानको खोजीमा निस्कनुभयो।

गृहत्याग गरेपछि वैराग्यले स्वामीजीलाई विभिन्न तीर्थस्थल, मठ-मन्दिर र सन्तहरूको साथमा पनि पुर्यायो तर मुमुक्षाको तीव्र वेग शान्त गर्ने जुन साधना र सही मार्गदर्शनको

✍ वेदाचार्य : श्री स्वर्गद्वारी आश्रम।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपेक्षा थियो, त्यो पुरा गराउन सकेन। जीवनको गोरेटोमा एक्लै भौतारिँदै कहिले घना जङ्गलमा त कहिले कोशीको तिरमा पनि कैयौं कष्टकर दिनहरू व्यतीत भए। पाँचथर र ताप्लेजुङका कुनै एकान्त स्थान छैनन्, जहाँ स्वामीजीको चरण नपुगेको होस्। तमोर नदीको किनारलाई पनि आफ्नो जीवनको महत्त्वपूर्ण स्थान बनाउन लागिपर्नुभयो, तर मनले चाहेको सम्भव भएन।

पूर्वजन्मकृत पुण्यको प्रभावले कुनै सन्तका साथमा घुमाउँदै स्वर्गद्वारीको आँगनमा पुर्यायो। पुग्नेबित्तिकै उहाँलाई आफ्नो विश्राम स्थान बल्ल भेटेझैं भयो। प्रभुको सामीप्यले, वात्सल्य र अनुग्रहले सबै चिन्ता, जिज्ञासा र आतुरता लोप गरायो। अथाह आनन्द, निश्चिन्तता र निर्भयताको सञ्चार भयो। आफ्नो स्वरूपको दर्शन, खोजीको पूर्णता र सम्पूर्ण जीवनको उद्देश्य पूरा भएको अनुभूति भयो। स्वर्गद्वारी महाप्रभुले आफ्नो अभिन्न अङ्ग नै हौ भन्दै ज्ञान र वैराग्यको पूर्णता गराइदिएपछि बाँकी नै के रह्यो र ? तीव्र मुमुक्षाको तिर्खा भएका अधिकारसम्पन्न सत्पात्रको अगाडि गुरुको वात्सल्य पोखिन किन पो अबेर हुन्थ्यो र ? श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभुको दिव्य सत्सङ्ग र विद्वान् गुरुजनहरूको सान्निध्यमा रही शास्त्राध्ययन गर्दै जाँदा ज्ञान र वैराग्य सँगै फैलिन थाल्यो। वेद, व्याकरण, वेदान्तका चूडान्त ग्रन्थहरूको समेत गहिरो अध्ययन गर्नुभयो। पुराण वाङ्मयको अध्ययन पनि गम्भीरताका साथ गर्नुभएको कुरा तत्कालीन वृद्धहरूबाट थाहा पाउन सकिन्छ।

बालावस्थामा नै गृहत्याग गरी विरक्त हुनुभएका बालब्रह्मचारी स्वामीजी स्वर्गद्वारीमा शास्त्रको अध्ययनपछि वैदिक अखण्ड महायज्ञको सेवामा संलग्न रहनुभयो।

स्वामीजीको तपस्या अत्यन्त कठोर थियो। भगवत्सेवामा निरन्तर संलग्न रहेर गायत्री उपासनामा आफूलाई समर्पित गराउनुहुन्थ्यो। निद्राजयी स्वामीजीलाई आलस्यले छुन सकेन। उहाँ ब्रह्माभ्यास योगीमात्र नभएर सिद्ध युगपुरुष हुनुहुन्थ्यो। अभिलेखहरू अध्ययन गर्दा स्वर्गद्वारी माहात्म्य र महाप्रभुको वि.सं. १९९७ साल मार्गमा देहावसान भएपछि प्युठान गौंडाले खडा गरेको तायदाती मुचुल्कामा छैटौं शिष्य ब्रह्माभ्यासानन्द भन्ने उल्लेख पाइन्छ।

स्वामीजीको जीवन त्यागको र तपस्याको प्रतिमूर्ति थियो। हिमालयको यात्रामा कहिल्यै अन्न-फल ग्रहन गर्नुभएन। जलमात्र र हिमाली जडीबुटीको सेवनले शरीरलाई कहिल्यै निर्बल हुन दिनुभएन। अलौकिक सिद्धिहरू प्रशस्तै थिए तापनि त्यसको प्रयोग सांसारिकताका लागि कहिल्यै गर्नुभएन। स्वर्गद्वारीको बसाइ अधिकांश जङ्गलमा नै हुन्थ्यो। सेवाकार्यमा ठूलो तन्मयता थियो। यज्ञको सेवालाई नै शरीरधर्म ठानेर सम्पन्न गरेका कैयौं किंवदन्ती सुनिन्छन्। जङ्गललाई मङ्गलमय बनाउने त्यागी, तपस्वीहरूको परम्परा लामै भए पनि जिज्ञासु साधकहरूलाई मार्गदर्शन गर्ने र जङ्गलको वास यतिहरूलाई किन आवश्यक छ ? भनेर प्रयोगात्मक अनुभूति गराउने विशेषता स्वामीजीमा थियो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापनाकालमा महाप्रभुको सान्निध्य पाएर त्यहाँ बसेका शिष्य-प्रशिष्यहरू सबै स्वर्गद्वारी प्रभु भनेर चिनिन्थे, जानिन्थे र प्रसिद्ध थिए। जुन शिष्य जहाँ गए पनि जनसामान्यले स्वर्गद्वारी प्रभु नै आउनुभएको जसरी श्रद्धा र भक्तिले दर्शन-भेट गर्दथे। महाप्रभुबाट दीक्षित सिद्ध योगीहरू साँच्चिकै युगपुरुष मानिन्थे। शिष्य बोधानन्द, अमरानन्द, ईश्वरानन्द, विद्यानन्दका साथै ब्रह्माभ्यासानन्दलाई त्यस बखतका सप्तऋषिकै अवतार मानिन्थ्यो।

स्वर्गद्वारी महाप्रभुको सान्निध्यमा रही शिक्षित-दीक्षित भएका र योगाभ्यास गरेर योगसिद्धि भएपछि तीर्थाटनमा गएका शिष्य-प्रशिष्यहरूको अमरगाथा विभिन्न स्थानका आस्तिकजनहरूले अहिले पनि किंवदन्ती जस्तो गरी सुनाउनुहुन्छ। स्वामी कपिलानन्दले त पाँचथर, इलाम, ताप्लेजुङ, सिक्किम, दार्जिलिङमा स्वर्गद्वारी नै हो कि जस्तो पारेर यज्ञको धुनी जगाउनुभएको थियो। ब्रह्माभ्यासानन्दले पनि पाँचथर, इलाम, झापा र मोरङमा धेरै यज्ञ-यज्ञादिको रचना गर्नुभएको थियो। त्यस वेला सबैले उहाँलाई स्वर्गद्वारी प्रभु भनेर चिन्दथे, मान्दथे। उहाँको आदर्श जीवनबाट प्रभावित भएर कैयौं व्यक्तिहरूले जीवनलाई सनातन धर्मको सेवामा समर्पण गर्नुभएको थियो। स्वामी योगानन्द र विवेकानन्द उहाँकै शिष्य थिए।

तपोबल र व्यावहारिक कुशलताका कारण तत्कालीन राणाशासक पनि स्वामी ब्रह्माभ्यासानन्दको पाउमा नतमस्तक थिए। दुष्टहरूबाट स्वर्गद्वारी आश्रमका नित्यकार्यहरूमा भएको व्यवधान र निष्पाप प्राणीहरूमाथि गरिने क्रूरता हटाउन तत्कालीन शासकहरूसँग भएको भेटवार्ता र उपदेशले स्वामीजीमाथि सबैको श्रद्धा र आज्ञाकारिता रहेको पाइन्छ। आफ्ना गुरु श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभुमाथि स्वामीजीको भक्ति र समर्पण पनि पौराणिक कुनै आदर्श शिष्यभन्दा कम थिएन। कुनै समय जङ्गलका निष्पाप प्राणीहरूलाई दुष्टहरूले मारी-मारी सक्न लागेको देखेर महाप्रभुले चिन्ता गर्दा वर्षातको भेलमा समेत नरोकिई काठमाडौं आई दुष्टहरूलाई दण्ड दिलाई रातारात आफ्ना गुरुको चरणमा हाजिर भएको प्रसङ्ग कम मार्मिक छैन। सामान्य मानिसका लागि असम्भव भएको व्यवहार तुरुन्त सम्पन्न गर्ने सामर्थ्य असाधारण व्यक्तित्वमा नै हुन्छ।

उहाँले पूर्वी पहाडका माझ किरात, पल्लो किरात र भारतका पूर्वी राज्यहरूमा भ्रमण गरी सनातन धर्मको प्रचार-प्रसार एवं जिज्ञासु भक्तजनलाई उपदेशद्वारा धन्य बनाउनुभएको थियो।

विक्रम संवत्को पचास, साठी, सत्तरी र असीको दशक स्वर्गद्वारी अखण्ड महायज्ञको निमित्त चरम उच्चबिन्दुकाल मानिन्छ। संस्थापक बालतपस्वी महाप्रभु हंसानन्द गिरिद्वारा अखण्ड मण्डलाकार यज्ञको प्रारम्भ गरिएपछि अनकन्टार स्वर्गद्वारी लेक धार्मिक यज्ञको उर्वर भूमिमा परिणत भयो। डाँडा-पाखाभरि छरिएर रहेका पर्णकुटीहरू चारै युगका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋषिहरूको वासस्थान जस्तै झलमल देखिन्थे। महायज्ञको अग्निज्योति हवनकालमा र सन्ध्या आरतीको समयमा झलझलाकार डाँडाकाँडा देखिने ज्वालामय स्वरूपमा प्रकट हुन्थ्यो।

स्वर्गद्वारी पूर्वमा पर्ने वाग्लुङ, पर्वत, पाल्पा, कास्की, गोरखा लगायत आसपासका थुम, दरा, गर्खादिखि पश्चिमतर्फ जाजरकोट, जुम्ला, दैलेख लगायत पवित्र भागहरूमा स्वर्गद्वारी महाप्रभुका शिष्यहरूले तपस्या नगरेको कुनै स्थान थिएन। काठमाडौंपूर्वका इलाका, थुमहरू भोजपुर, दिङ्ला, धनकुटा, ताप्लेजुङ, कोयाखोला, पाँचथर, इलाम थुम हुँदै तत्कालीन हिन्दुस्थानको दार्जिलिङ, आसाम, मेघालय र सिक्किमसमेत स्वर्गद्वारीका निमित्त उर्वर भूमि मानिन्थ्यो। हरेक स्थानबाट स्वर्गद्वारीका लागि ब्राह्मण, योगी, साधु-सन्तको लर्को लाग्दथ्यो।

ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामीजीले आफ्नो जीवनका अन्तिम दिनहरू भगवान् श्रीरामको पवित्र जन्मभूमि सरयू नदीको तट अयोध्याजीमा बिताउनुभयो र वि.सं. १९९६ मा त्यहीं ब्रह्मलीन हुनुभयो। सो कुटी आज पनि स्वर्गद्वारी आश्रमको परिचय दिएर र स्वामीजीको समाधिको साक्षी बनेर उभिएको छ। ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामीजीको विशेष परिचय जान्ने बुझ्ने कतिपय समकालीन व्यक्तित्वहरू हाम्रा माझ नभए पनि परम्परामा सुन्दै आइएका कतिपय श्रुतिपरम्परालाई आधार मानेर यो लेख तयार गरिएको हो। यस आलेखमा आएका परिचयात्मक प्रसङ्गहरू ब्रह्मलीन **स्वामी कृष्णानन्द** र **स्वामी रघुनन्दन** गिरिसँग गरिएको विमर्शमा आधारित छन्।

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवनारायण (देवीप्रसाद) दाहाल गुरुको जीवनी, व्यक्तित्व र योगदान

प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा

१. जन्म र बाल्यकाल

ब्रह्मलीन देवनारायण (देवीप्रसाद) दाहाल गुरुको जन्म १९७० साल ज्येष्ठ १७ गते भएको हो। उहाँ पिता प्रभाकर र माता शिवमायाका ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा साबिक मेची अञ्चल, पाँचथर जिल्ला, भारपा गा.वि.स. वडा नं. ६ (हाल हिलिहाङ गा.पा. को) टुवा भन्ने स्थानमा जन्मिनुभएको हो। उहाँका दुर्गाप्रसाद र मनोरथ दुई भाइ तथा सात जना ददी बहिनी थिए। उहाँले शुक्लयजुर्वेद आद्योपान्त (४० अध्याय) सारस्वरसहित कण्ठस्थ गर्नुभएको थियो। आजीवन निःशुल्क शिक्षा प्रदान गरी 'दाहाल गुरु' भनेर चिनिनुभएका उहाँ पाठशाला र स्कुलहरूको नितान्त अभाव रहेका अवस्थामा पनि 'पूर्वको शिक्षाको पारसमणि' भनेर चिनिने दिङ्ला पाठशाला र काशी बनारससम्म पुगेर त्यस समयमा पनि केही गर्छु भनी अघि बढ्नुभएको थियो। उहाँलाई वेदमूर्ति भनेर पनि चिनिन्छ। - (पं. काशीनाथ)

देवनारायण दाहाल गुरुको बाल्यकाल जन्मस्थानमै बित्यो। उहाँका पुर्खा सङ्खुवासभाको मादी (बूढा दाहालहरूको 'बिर्ता' मानिने) बाट पाँचथर भारपा आएका थिए। देवनारायणको व्रतबन्ध (उपनयन संस्कार) ८ वर्षकै उमेरमा मातापिताले गराइदिनुभयो। उहाँलाई गायत्री मन्त्रको उपदेश दिने गुरु उहाँकै जेठा भिनाजु पं. लोकनाथ भट्टराई त्यतिखेरका संस्कृतका मेधावी व्यक्ति हुनुहुन्थ्यो।

२. वैवाहिक जीवन र सन्ततिहरू

उतिखेर सानै उमेरमा विवाह गर्ने प्रचलन थियो। देवनारायण गुरुको विवाह पाँचथरकै साबिक एकतीन गा.वि.स. (हाल फालेलुङ गा.पा.) निवासी पिता पद्मलाल खनाल र माता लक्ष्मादेवी खनालकी माहिली सुपुत्री रुक्मिणादेवीसँग वि.सं. १९८२ मा भएको हो। उहाँका जीवनाथ र काशीनाथ दुई छोरा र वेदमाया एक छोरी गरी तीन जना सन्तति छन्।

✍ पूर्व वेदवेदान्त विभागाध्यक्ष, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौँ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. शिक्षा-दीक्षा

व्रतबन्धपछि सालाको तीव्र बुद्धि र राम्रो प्रतिभा देखेर प्रभावित भएका भिनाजु पं. लोकनाथले उहाँको घर इलामको चमैतामै लगेर विद्याध्ययन प्रारम्भ गराउनुभयो। उहाँको शिक्षा-दीक्षाको प्रारम्भ लोकनाथ गुरुबाटै भयो। त्यहाँ देवनारायण गुरुले दुर्गासप्तशती (चण्डी), रुद्राष्टाध्यायी (रुद्री), ४० अध्याय शुक्लयजुर्वेद, कर्मकाण्ड र केही ज्योतिषको पनि अध्ययन गर्नुभयो। चमैताका पं. लोकनाथ गुरु उति बेलामा पनि भारतको बनारसमा गएर पढेका, राम्रो सत्सङ्ग पाएका, विद्वान् गुरुहरूको शिष्य र स्वयं पनि प्रतिभावान् विद्यार्थी भएकाले उहाँको छत्रछायामा देवनारायण गुरुले सारस्वरसहित वेदको अध्ययन गर्ने मौका पाउनुभयो। गुरुकुल परम्पराअनुसार पढेकाले ४० अध्यायमा विभाजित शुक्लयजुर्वेद सारस्वरसहित यहीं कण्ठस्थ गरेर तीक्ष्ण बुद्धि, विलक्षण प्रतिभा र मेधावी विद्यार्थीको परिचय स्थापित गरेकाले त्यति खेरको समयमा देवनारायणबाट ठूलाठूला गुरुहरू पनि प्रभावित भएका थिए भन्ने जानकारी पाइन्छ।

देवनारायण गुरुको उमेर १६ वर्ष भएको अवस्थामा वि.सं. १९८६ मा उहाँको ससुराली एकतीनमा आयोजना गरिएको शुभकार्यमा उहाँले सारस्वरसहित वेदपाठ गर्नुभएछ। एक जनाले एकै दिनमा ४० अध्याय वेदपाठ गर्न सकेमा त्यस्तो पाठ वा पढाइलाई 'एकमुखी' वेदपाठ भनिन्छ। यस्तो पाठ त्यतिखेरको समयमा सबकोहीले गर्न सक्तैनथ्यो। देवनारायण गुरुले सारस्वरसहित एकमुखी वेदपाठ गरेको देखेर माहिला गुरु देवीचरण पौडेल पनि ज्यादै प्रभावित हुनुभएको थियो।

चमैताको अध्ययनपछि संस्कृतमा उच्चशिक्षा हासिल गर्नका लागि संस्कृत व्याकरणको अध्ययन आवश्यक रहेकाले उनै गुरु पं. लोकनाथको सत्प्रेरणा, सल्लाह र सुझावअनुसार देवनारायण गुरु १८ वर्षको उमेरमा वि.सं. १९८८ मा त्यति खेरको चर्चित संस्कृत पाठशाला, बालागुरु षडानन्द अधिकारीले स्थापना गर्नुभएको भोजपुरको दिङ्ला पाठशालामा पुग्नुभयो। सातवटी दिदीबहिनी, तीन दाजुभाइलगायतको ठूलो परिवार, घरको आर्थिक स्थिति कमजोर तर व्याकरण पढ्ने तीव्र इच्छा भएकाले कसरी अध्ययनलाई निरन्तरता दिने भन्ने चिन्ता गुरुलाई भइरहेको थियो। यस्तै अवस्थामा दिङ्लाकै धनाढ्य र उदारमना व्यक्तित्व चापागाईं थरका माहिला मुखिया भन्ने महानुभावले - 'विद्यार्थीहरू भोकले नमर्नू, सङ्क्रान्ति, औंसी, पूर्णिमा, द्वादशीजस्ता विशेष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिथिहरूमा र आवश्यक परे अरू दिनमा पनि भिक्षाका लागि गाउँमा पस्नू र अध्ययन पूरा गर्नू' भनी दिएको प्रेरणा र हौसलाअनुसार त्यसै गरी अध्ययन गर्दै १९९० को महाभूकम्पसम्ममा उहाँले संस्कृत व्याकरण 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' भ्वादिसम्म अध्ययन गरिसक्नुभएको थियो। १९९० सालको फाल्गुणमा देवनारायण गुरु दिङ्लाकै सहपाठी साथी, पाँचथर यासोक रानीगाउँका महेन्द्रप्रसाद खनालसहितका विद्यार्थीहरूसँग भारतको बनारस पुग्नुभयो। त्यति खेर दिङ्ला र बनारसबीच राम्रो सम्पर्क र सम्बन्ध थियो।

२० वर्षको कलकलाउँदो र धपधप बल्दो उमेर लिएर बनारसको नेपालीहरूका लागि सम्पर्क स्थान नेपाली संस्कृत विद्यालय, मङ्गलागौरी पुगी देवनारायण गुरुले संस्कृतमा उच्च अध्ययन थाल्नुभयो (छोरा, पं. काशीनाथ)।

४. अज्ञात रोग र त्यसको उपचार

देवनारायण गुरु बनारस पुगेको छोटो समय (३-४ महिना जति) मा नै अत्यन्त कठोर बिरामले आक्रान्त भएकाले साथीहरूले त्यहींको 'कौडिया' नामक अस्पतालमा भर्ना गरिदिए। त्यो अस्पताल त्यहींका धार्मिक संस्थाबाट सञ्चालित भएकाले अस्पतालले पनि उपचारमा कुनै कमी-कमजोरी नगरीकन उपचार गर्दागर्दै पनि होनहार दैव नटार भनेझैं दिन प्रतिदिन शिथिल हुँदै जानुभयो। शरीर सुन्निएर जिल्जिल गर्ने भएको, हातपाउ पानी भरिएका प्लास्टिकका थैलाजस्ता भएका, उपचारमा सक्रिय डाक्टरहरूले बिहानबेलुकै शरीरबाट पानी फ्याँक्ता पनि पुनः भरिने हुँदा ११ महिनासम्म उपचार गर्दा पनि देवनारायण गुरुको अवस्था नसुध्रिएपश्चात् हतोत्साही बनेका डाक्टरहरूले केही सीप नलागेपछि अभिभावकको खोजी गरे। कम्तीमा घरका आफन्तहरूले यसको मुख हेरून् भन्ने सदिच्छाले घर पठाउने चाँजोपाँजो मिलाई ठेगाना सोधीखोजी गर्दा पहिले त्यतै पढेका उनै पं. लोकनाथ भट्टराईकै ठेगानामा सिकिस्त बिरामी रहेको पत्र पठाइदिए।

उनै चमैताका गुरु पं. लोकनाथले सालो सिकिस्त रहेको पत्र प्राप्त भएपछि भारपा आएर देवनारायण गुरुलाई बनारसबाट कसरी ल्याउने भन्ने बारेमा चिन्ता गर्दा 'जे भए पनि र जसरी भए पनि, मुखमात्र हेर्नकै लागि भए पनि' बनारस गएर ल्याइदिन (ससुराली परिबारबाट) आग्रह भएको हुँदा उनै लोकनाथ गुरुले माहिला साला दाहाल गुरुका भाइ दुर्गाप्रसाद दाहाललाई साथै लिएर बनारस गई बनारसको उपचाररत कौडिया अस्पतालबाट सिकिस्त बिरामी देवनारायण गुरुलाई जिम्मा लिएर 'पार त लाग्दैन होला ? तर परिवारले मुखसम्म हेर्न पाउँछन्' भनेर रेलमार्गद्वारा सिलिगुडीसम्म ल्याए। त्यहाँबाट गाडीद्वारा दार्जिलिङ हुँदै मानेभन्ज्याङ्सम्म ल्याएर त्यहाँबाट पुनः ढाकरमा बोकाएर भारपा घरमा ल्याइपुर्याए। *(छोराहरूबाट प्राप्त जनकारी)*।

घरमा ल्याइपुर्याइएका बिरामी दाहाल गुरुको अवस्था हेरी 'सास रहुन्जेल आश रहन्छ' भनेर धामी, झाँक्री, ओझा, बिजुवा, जडीबुटी, धन्वन्तरि, ग्रहशान्ति, स्वस्तिशान्ति आदि सुनेजति र जानेजति अनेक खण्ड उपचार भयो। यी सबै उपचारपद्धति र विशेष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरेर हिमाली जडीबुटीहरूका प्रभावले ११ महिना अस्पताल बसेर उपचार गर्दा पनि पार नलागेको त्यस अज्ञात रोगबाट केही शान्ति मिल्न थाल्यो। जर्जर भएको शरीरबाट उसिनेका आलुका बोक्रा ताछिएझैं एकपत्र त्वचा (छाला) उक्किएर गयो। त्यसपछि बोलीमा स्पष्टता आउन थाल्यो। पढेको पुनःस्मरण हुन थाल्यो तर कम्मरदेखि तलको भाग भने राम्ररी चल्न सकेन। शरीरको केही भागबाट पहेंलो पानी बग्न पनि छोडेन। यसलाई पनि निको पार्न जान्नेबुझ्नेको सल्लाहअनुसार सिक्किमको तातोपानीमा लगेर नुहाउँदै केही समय यो प्राकृतिक उपचार पनि गरियो। यहाँ लाँदा उहाँका बुबाआमा, साहिँला बहिनेज्वाइँ भारपाकै काशीनाथ दवाडी, कान्छा भाइ मनोरथ र चक्रपाणि सुवेदीको सहयोगमा ढाकरमै बोकेर लगिएको थियो।

७ दिनसम्मको तातोपानीमा बारम्बार नुहाउने, डुब्नेजस्ता प्राकृतिक उपचारपछि घाउबाट पानी बग्ने र पाक्ने क्रम बन्द भयो। यसले गुरुका गाथमा निकै ठूलो शान्ति मिल्यो। बिरामीका क्रममा नसामा ठूलो असर परेकाले खुट्टा टेकेर हिड्ने अवस्था र शक्ति भएन। अब जीवनभरि नै पल्याँटीद्वारा सर्दै भित्रबाहिर गर्नुभयो। स्मरण शक्ति भने पुनर्जागरण भएकाले पढेका विद्या पूर्ववत् कण्ठस्थ नै रहे। घरमा श्रीमती (गुरुआमा) धार्मिक कुल, खनाल परिवारकी चेली, अत्यन्त पतिव्रता र सङ्घर्षशील नारी भएकाले गरिबी, आर्थिक कठिनाइ र बिरामी अवस्थाका बीचमा पनि गुरुको सेवाशुश्रूषामा केही कमी भएन, त्यसैले देवनारायण गुरुले दुःखबाट राहत पाउँदै जानुभयो।

५. व्यावहारिक जीवन

वि.सं. १९८२ मा विवाह बन्धनमा बाँधिएका देवनारायण गुरुको जीवन १९९४ बाट अझ व्यावहारिक बन्न थाल्यो। यसै सालको ज्येष्ठ शुक्ल चौथी तिथिमा गुरुका पिता प्रभाकरको देहावसान भयो। पिताको 'दशगात्र' क्रियाकर्म सकिएपछि परिवारको सल्लाहअनुसार छुट्टिएर बेग्लाबेग्लै बस्ने क्रममा १९९८ साल आषाढ २६ गते पिता देवनारायण २८ र माता रुक्मिणादेवी २६ वर्षकी हुँदा ज्येष्ठ सुपुत्र जीवनाथ दाहालको जन्म भयो। परिवारको जेठो छोरा देवनारायण बिरामी र अशक्त अवस्थाबाट बाहिर उत्रिएर नाति तथा छोराको जन्म भएकामा र दाहाल गुरुको सन्तान भएकामा परिवार र सम्पूर्ण गाउँमा नै खुसियाली छाएको थियो। इष्टमित्र, कुलकुटुम्ब सबैले हर्षोल्लास मनाएका थिए। शुभचिन्तक सबैले बधाई दिएका थिए।

पुनः २००२ साल वैशाख ६ गते देवनारायण गुरुका कान्छा छोरा पं. काशीनाथको जन्म भयो। त्यस्तै २००६ साल कार्तिक २३ गते छोरी वेदमायाको जन्म भयो। गुरु अशक्त भए पनि उहाँको व्यावहारिक जीवन गुरुमाको लय, लक्षण, सञ्चिता र सङ्घर्षका कारण दुर्घटना नभई अघि बढ्दै गयो। श्रीमान्‌को अशक्तता र आर्थिक कमजोरीका कारण गुरुमा रुक्मिणाको सङ्घर्षको कथा कुनै औपन्यासिक पात्रको सङ्घर्षभन्दा कम छैन। कान्छा छोरा पं. काशीनाथ जन्मिएको समयमा तीन दिनकी सुत्केरी गुरुमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुक्मिणाले हलोजुवा डोकामा हालेर खेतमा लाँदै गर्दा उहाँका नन्देभाइ काशीनाथ दवाडीले देखेर बाटैबाट फर्काई उहाँले उक्त काममा सहयोग गरेको कुरा अद्यापि उहाँको परिवारमा चर्चाको विषय रहेको पाइन्छ *(नाति, भूमिप्रसाद)*। यो त एउटा नमुनामात्र हो। गुरुआमाका मुखमा जहिले पनि अप्ठ्यारो पर्दा 'नारायण हरि ३ दैवशरण' भन्ने पदावली बारम्बार निस्कने गर्दथे। अक्षर राम्ररी पढ्न नसके पनि २० सम्मका गुणाङ्क कण्ठस्थ थिए। १ देखि १०० सम्म सुल्टो गतिमा लगेजस्तै गरी १०० देखि १ सम्म उल्टो गतिमा उही रूपमा गन्ती गर्न सक्ने कला थियो। धेरै कुरा गुरुमालाई सुनेरै कण्ठस्थ थिए।

६. जीवनको अन्तिम अवस्था

स्वास्थ्यलाभ भएपछि घरमै रहेर विद्याध्ययन गराउने देवनारायण गुरुको घर विद्यार्थीहरूले खाली कहिल्यै भएन। यसै क्रममा तराईमा बसोबास खुलेको र सरकारले बसोबास गर्नेकै नाममा जग्गा पनि दर्ता गरिदिन्छ अनि जाउलो खान पाइन्छ भन्ने समाचार पहाडतिर फैलियो। तराई झरिसकेका आफन्त र साथीहरूको प्रेरणाले पाँचथर भारपाबाट पनि युवाहरू तराई-मधेसतिर झर्ने लहरले देवनारायण गुरुका जेठा छोरा जीवनाथलाई पनि छोयो। उहाँ २०२६ मा तराई दमकमा झरेपछि गुरुको परिवार दुईतिर भयो। हुँदाहुँदै २०३३ फाल्गुणमा गुरुको पूरै परिवार दमक झर्यो। कान्छा छोरा पं. काशीनाथले झापाको लखनपुर (हाल कमल गा.पा. ६) मा जग्गा खरिद गरी कर्मकाण्ड, पुराणवाचन र खेतीपाती गर्दै बस्न थाल्नुभयो। गुरु पनि कान्छा छोराका साथमा त्यहीं बस्नुभयो। यहाँ पनि धेरै विद्यार्थीहरूलाई उनीहरूको योग्यताअनुसार पठन-पाठन गराउँदै आउने क्रममा २०३६ सालमा नयाँ घर बनाएर त्यहीं सर्नुभयो।

देवनारायण गुरुको अन्तिम अवस्था सन्तोषजनक नै रह्यो। श्रीमती र छोराबुहारीले अत्यन्त राम्ररी सेवाशुश्रूषा गरे। गुरुको दूरदर्शितापूर्ण निर्देशन, गुरुआमाको अथक परिश्रम, छोराबुहारीहरूको लगनशीलताले गर्दा पाँचथरबाट झापाको दमक, लखनपुर तराईतिर झरेपछि गुरुले दुई भाइ छोराका खमारमा १५०/१५० गरी ३०० मनभन्दा बढी नै धानका रास देख्न पाउनुभयो। छोराहरूको पौरखले जग्गाजमिन र खान पुग्दो सम्पत्ति जोड्न सकेकामा गुरुले आफ्ना सङ्घर्षका दिन भुल्दै जानुभयो। गुरुका कान्छा छोरा पं. काशीनाथले पं. टेकनाथ गौतम गुरुका छत्रछायामा पढेर पण्डित व्यास प्राप्त गरेकाले र लघुकौमुदी पढाउन सक्ने गरी कण्ठस्थ गरेर पढेकाले गुरुको बनारसको बिरामीको मानसिक पीडामा थोरै भए पनि मल्हम लाग्यो। जीवनको अन्तिम अवस्थामा भने दमको बिरामले १ वर्षजति पीडित भई वि. सं. २०३८ साल पौष कृष्ण चौथी तिथिका दिन बिहानको ब्रह्ममुहूर्त ४ बजे ब्रह्मलीन हुनुभयो।

७. देवनारायण गुरुको व्यक्तित्व

माथिकै शीर्षकहरूबाट पनि गुरुको व्यक्तित्वका बारेमा धेरै कुरा प्रकाशमा आएका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्। उहाँ सानैदेखि चलाख, शारीरिक रूपमा सुन्दर, फुर्तिलो र कसिलो जिउडाल भएको हुनुहुन्थ्यो। देववाणी संस्कृत र वैदिक ऋचाहरूको अध्ययनको प्रभावले उहाँको व्यक्तित्व अझ खारिँदै आयो। त्यति खेर उहाँ विद्यार्थी अवस्थामै हुँदा जो-जो गुरुहरूसँग उहाँको भेट हुन्थ्यो, गुरुहरू तुरुन्तै प्रभावित हुन्थे। उहाँ १६ वर्षको हुँदा शुक्ल यजुर्वेद कण्ठस्थ थियो। पाँचथरको एकतीन ससुरालीमा देवनारायण गुरुले सस्वर (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत) आदि मिलाएर हातको सान मिलाईमिलाई वेद पढेको देखेर माहिला गुरु विवेकानन्द साह्रै प्रभावित हुनुभयो। माहिला गुरुले यसरी वेद कसले पढ्न सिकायो ?, गुरु को हो ?, भनी जिज्ञासा राख्दा यसको उत्तर दिँदै चमैताका गुरु उनै पं. लोकनाथ भट्टराईको नाम लिनुभयो। महिँला गुरुले उत्सुताका साथ पं. लोकनाथ गुरुसँग भेट गराइदिन आग्रह गर्दा स्वयं चमैता गई लोकनाथ गुरुलाई ल्याएर माहिला गुरुसँग भेट गराइदिनुभयो। यसपछि माहिला गुरुको पनि सारस्वरसहित वेद पढ्ने इच्छा हुँदा भट्टराई गुरु पं. लोकनाथले पाँचथरकै मच्छेबुङमा पाठशाला खोली माहिला गुरु देवीचरण पौडेल (विवेकानन्द), जेठा गुरु (योगेश्वराश्रम) र गुरुहरूकै मामा ब्रह्मचारी कान्छा प्याकुरेल (मुक्तिनाथ) समेतलाई भट्टराई गुरुले देवनारायण गुरुलाई जस्तै गरी वेदाध्ययन र यस पद्धतिको शिक्षा दिनुभयो। यसरी हेर्दा देवनारायण गुरु, माहिला गुरु, जेठा गुरु र ब्रह्मचारी कान्छा प्याकुरेलका वेदगुरु पं. लोकनाथ भएको कुरा देखिन्छ। दिङ्लापूर्व इलाम, पाँचथरको वेदाध्ययन परम्परा यसै परम्पराबाट अनुप्राणित देखिन्छ। साथै जेठा गुरु योगेश्वराश्रमले पं. लोकनाथ गुरुबाट अझै आफूले सिक्न बाँकी रहेकाले चमैतामा पुर्याइदिन आग्रह गरेकाले त्यहाँ लगिदिने क्रममा केही समय सँगै बस्ता जेठा गुरु योगेश्वराश्रमबाट प्रभावित भई देवनारायण गुरुले योगेश्वराश्रमबाट गुरुमन्त्र (विष्णुदीक्षा) लिएको जानकारी मिल्छ।

देवनारायण गुरु कडा मिजासका हुनुहुन्थ्यो। पढ्न आउने विद्यार्थीले कण्ठस्थ गरेर सुनाउनुपर्थ्यो। उहाँसँग जो टिक्थ्यो, त्यसले पढी खान्थ्यो। जो टिक्तैनथ्यो, त्यो भाग्थ्यो। घरमा बसीबसी गाउँका सबै कुरा जानकारीमा लिनुहुन्थ्यो। त्यसैले उहाँको व्यक्तित्वमाथि व्यङ्ग्य गर्नेले 'घरमा बसीबसी नेपाल देख्ने ?' भनेर ठट्टामा लोभलाग्दो ईर्ष्या पनि गर्थे। देवनारायण गुरुसँग तत्कालीन अवस्थाका विशिष्ट विद्वान् पं. टेकनाथ गौतम गुरु पनि प्रभावित हुनुभएको थियो भने देवनारायण गुरु पनि गौतम गुरुसँग प्रभावित हुनुभएको थियो, त्यसैले कान्छा छोरा पं. काशीनाथलाई गौतम गुरुसँग नै पढ्न पठाउनुभयो।

देवनारायण गुरुका विद्यार्थी अवस्थामा तीव्र प्रतिभा भएको मेधावी विद्यार्थी, विद्यार्थी जीवनपछि कडा अनुशासनमा राखेर शिक्षार्थीहरूलाई विद्या दिने गुरु, आफू अशक्त भए पनि परिवार, भान्जाभान्जी सबैका अभिभावक र प्रेरणाका स्रोत, गाउँघरका लागि उचित सल्लाह दिन सक्ने सल्लाहकार, पढेका विद्या बारम्बार आवृत्ति गरेर कण्ठस्थ र ताजा राख्ने गुरुकुल परम्पराको आदरणीय व्यक्तित्व र आजीवन निःशुल्क शिक्षा दिने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुजस्ता विविध व्यक्तित्वहरू थिए। यही कारण समाज र शिक्षामा उहाँको अलग्गै पहिचान थियो।

८. देवनारायण गुरुको शैक्षिक योगदान

देवनारायण गुरु वि.सं. १९९३ सालदेखि स्वास्थ्यलाभ गर्दै घरमै बस्न थाल्नुभयो। यस्तो अवस्थामा पनि दिङ्ला र बनारससम्म पुगेर अध्ययन गरेको भएकाले समाजमा उहाँको गहिरो छाप परेको रहेछ। उहाँलाई भेट्न आउने सबैले अब हरेस नखाई बस्न र आफ्ना सन्तानलाई शिक्षा प्रदान गरिदिनुहुन गुरुलाई आग्रह गर्न थाले। त्यति खेर गाउँमा पाठशाला, स्कुल केही नभएको हुँदा समाजको आग्रहअनुसार पढ्न आउनेहरूका लागि घरमै अक्षरारम्भदेखि लिएर विद्यार्थीको स्तर, योग्यता र क्षमताअनुसार वेद, रुद्री, चण्डी, गीता आदि पढाउन थाल्नुभयो। १५ देखि २५ जनासम्म विद्यार्थीहरू दैनिक आउन थाले। वैदिक मन्त्रोच्चारणका ध्वनिले र संस्कृत वाङ्मयको मधुर गुञ्जनले गुरुको घर साधारण घरजस्तो मात्र नभएर वेदपुरुष र सरस्वतीको वासस्थान जस्तै बन्न थाल्यो। गुरुले निःशुल्क विद्या दिने भएकाले विद्यार्थी र तिनका अभिभावकहरू 'दाहाल गुरु' भनेर ठूलो आदर गर्दथे। यही क्रमले उहाँ जहाँजहाँ जानुभयो, त्यहाँत्यहाँ यस क्रमले निरन्तरता पायो। आजीवन विद्यार्थीका घोकाइका वाणीहरूले घर र निवास गुञ्जायमान भइरह्यो।

९. देवनारायण गुरुले शिक्षा दिएका मुख्य स्थानहरू

(क) देवनारायण गुरुको घर नै पठशाला जस्तै थियो। सर्वप्रथम उहाँले घरबाटै शिक्षा दिन प्रारम्भ गर्नुभयो भन्ने कुरा माथि नै उल्लेख गरियो। घरमा आउने विद्यार्थीहरू ५ वर्षदेखि वयस्कसम्मका हुन्थे। उनीहरूको अवस्था हेरी घरमा केही पात्ता र खाजा खाने बेलामा जे छ सबैलाई बाँडीचुँडी दिएर खाने परम्परा थियो। भुटेका मकै, भटमास, केराउ, मस्याम, फर्सी, इस्कुस, सुठुनी जस्ता खाजा सबै विद्यार्थीमा बाँडेर खाने चलन थियो। विद्यार्थीका लागि अहिलेको जस्तो कुर्सी, बेन्चको चलन थिएन। वर्षमा कम्तीमा २० वटा गुन्द्री, गजरा बनेर गुरुमा र उहाँको परिवारले विद्यार्थीका लागि बस्नलाई जुटाइदिन्थ्यो। भारपामा पिउने पानीको अभाव टाढाबाट डोकामा गाग्रो हाली ल्याउनुपरे पनि दिनको २ गाग्रा पानी विद्यार्थीका लागि गुरुको परिवारले जुटाउँथ्यो। प्रायः बाह्रै महिना विद्यार्थी आउँथे। रात बस्ने कमै हुन्थे तर जो त्यहाँ रात बस्थे, तिनका लागि गुरुकै घरमा भोजनको व्यवस्था हुन्थ्यो।

(ख) देवनारायण गुरुको प्रख्याति बढ्दै गएपछि पठनपाठनकै लागि पाँचथर एकतीनका 'जेठा मुखिया' भनेर चिनिने नारद खतिवडा, मुक्तिनाथ खतिवडा, 'साहिँला मुखिया' भनेर चिनिने यज्ञनिधि खतिवडा आदि खतिवडा परिवार र गुरुकै काहिँला र कान्छा साला सोमनाथ र यमनाथ खनाल, गङ्गाप्रसाद खतिवडा, कुलप्रसाद खतिवडा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा साहिँला पण्डित जगन्नाथ भण्डारीसमेतको आग्रहमा हिउँदका महिनामा प्रायः गरेर मङ्सिरदेखि चैत्रसम्म सेउले कटेराको पाठशाला बनाएर शिक्षा दिनुभयो। एकतीनमा मुखियाटार, आहाले आदि स्थानमा सरीसरी बर्सेनि पढाउनुभयो। यो क्रम करिब ५-७ वर्षसम्म चल्यो।

(ग) पाँचथरकै माङ्लेबुङका भानुभक्त खतिवडा, भवानीप्रसाद नेपालसहित ताराप्रसाद खतिवडाको आग्रहमा एकतीनमा जस्तै हिउँदे पाठशालाको रूपमा गुरुले शिक्षा दिनुभयो। त्यस्तै पल्लो माङ्लेबुङका श्रीविलास खनाल, (गुरुका माहिला भिनाजु र जेठान पनि) को आग्रहमा उहाँका सन्तान र त्यहाँका अन्यलाई पनि शिक्षा दिनुभयो।

(घ) पाँचथरकै थलाजुङका वसन्त खनालको आग्रहमा उहाँका परिवार र अन्य विद्यार्थीहरूलाई पनि पूर्ववत् हिउँदे पाठशालाकै स्वरूपमा शिक्षा दिनुभयो।

(ङ) पाँचथर भारपाकै गैरीगाउँका 'एक्ले माहिला' भनेर चिनिने जयप्रसाद रिजालको आग्रहमा पूर्ववत् पाठशालाकै रूपमा उहाँका सन्तति र अरूलाई पनि पढाउनुभयो।

(च) इलाम चमैताका उहाँकै गुरु र भिनाजु पूर्वचर्चित पं. लोकनाथ भट्टराईका छोरा र गुरुका भानिज पं. नरहरि भट्टराईको आग्रहमा ५ भाइ भानिजसहित अन्यलाई पनि पूर्ववत् केही समय अध्यापन गराउनुभयो।

(छ) जेठा छोरा जीवनाथ दाहाल २०२६ सालमा तराई दमकमा झरेपछि झापाको दमक बाह्रघरेमा २०२९ मा त्यहाँका शिक्षासेवी पुष्पलाल अधिकारी र जीवनाथ सापकोटाको आग्रह तथा रेखदेखमा उहाँहरूका सन्तानसहित अन्यलाई पनि केही समय शिक्षा दिनुभयो। यसपछि पुनः भारपामै गई २०३३ सालमा बसाइँ आएपछि लखनपुर निजी निवासमै आजीवन शिक्षा दिनुभयो। दाहाल गुरु हिंड्न नसक्ने भएकाले उक्त स्थानमा बोकेरै लगिन्थ्यो र शिक्षा दिलाइन्थ्यो।

१०. देवनारायण गुरुको तीर्थयात्रा

देवनारायण गुरु विद्यार्थी छँदा वि.सं. १९९० मा २० वर्षको उमेरमा संस्कृतमा उच्चशिक्षा अध्ययनका लागि काशी, बनारस पुगेको प्रसङ्ग माथि नै राखियो। यसपछि जीवनको लामो अन्तरालमा जेठा छोरा जीवनाथको पौरखमा २ पल्ट तीर्थयात्रामा जानुभयो। पहिले २०३१ मा जेठा छोरा जीवनाथ, माहिला भाइ दुर्गाप्रसाद र साहिँली बहिनी र ज्वाइँ मनमाया तथा काशीनाथ दवाडी र भान्जा भवानीप्रसाद दवाडीसहित पुनःपुनः, गयाजी, बनारस, रक्सौल हुँदै काठमाडौं पशुपतिनाथसम्मको यात्रा पूरा गरेर फर्कनुभयो। पुनः २०३३ सालमा तराई झरेर दमक जेठा छोराकैमा केही समय बसी माघको पूर्णकुम्भ स्नान गर्न दुवै भाइ छोरा र नाति तीर्थराजलाई समेत लिएर मेदनीप्रसाद खनाललाई सहयोगी बनाई प्रयागराजको तीर्थयात्रा सम्पन्न गर्नुभयो।

११. विविध

(क) देवनारायण गुरु वेदको पठनपाठनको आरम्भमाः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणनाथ-सरस्वती-रविशुक्रबृहस्पतीन्। पञ्चैतान्संस्मरेन्नित्यं वेदवाणीं प्रवर्तयेत्।।
गणेश-शारदा-रामो दुर्गादित्यमहेश्वरः। गुरु पिता नमस्कारं चित्रगुप्त नमोस्तु ते।।
भन्ने मङ्गलमय श्लोक पाठ गर्न लगाउनुहुन्थ्यो भने गीता, भागवत आदि पाठ गर्दा :
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।
भन्ने मङ्गलाचरण गराउनुहुन्थ्यो।

(ख) पढ्दा हल्लिने, गीतको जस्तो भाका हाल्ने, छिटोछिटो गरेर जिब्रो लट्पटयाउने, बोल्दा थेगो हाल्ने, 'य' लाई 'ए' भन्ने, 'व' लाई 'ओ' भन्ने, 'क्ष' लाई 'छे' भन्ने जस्ता विद्यार्थीका बानीलाई तुरुन्तै सुधार गराएर जे हो र जे छ, त्यही सहीसही उच्चारण गर्न लगाउनुहुन्थ्यो।

(ग) बिहान नित्य स्नान, पाञ्चायन देवताको पूजन, नित्य गीता र श्रीमद्भागवतको यथाशक्ति पाठ आदि नित्यकर्म गरेर मात्र प्रसाद भोजनादि ग्रहण गर्नुहुन्थ्यो।

(घ) श्री शङ्कराचार्यबाट अनुप्राणित आचार्य परम्परामा आधारित, वैदिक सनातन परम्पराका अनुयायी भएकाले देवनारायण गुरुका ललाटमा तत्तत् स्वस्वरूप झल्किने त्रिपुण्डक (तीन धर्का तेर्सो) चन्दन र मुनिपट्टि रातो गोलाकार टीका सदा देखिन्थ्यो।

(ङ) पढ्दा अनुष्टुप् छन्दका ३२ अक्षर, ४ पाउ र ८ विरामलाई छुट्टिने गरी निम्नानुसार पढ्न निर्देशन दिनुहुन्थ्यो। पं. टेकनाथ गौतम गुरुको पनि पढाइको लवज र निर्देशन यस्तै पाइन्थ्यो :

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।।

यसलाई - धर्मक्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे, समवेता, युयुत्सवः। मामकाः, पाण्वाश्चैव, किमकुर्वत, सञ्जय।।

यस पद्धतिमा (,) अल्पविराम (;) अर्धविराम र (।) पूर्णविरामका क्रमिक शृङ्खलामा पढ्नुपर्छ र यही क्रमले 'वाचक चलाउनू' अर्थात् शुद्धतापूर्वक पढाइको गति बढाउनुपर्छ भन्ने उहाँको मान्यता थियो।

(च) नदोहोर्याउने बरु ढिलो पढ्ने, सबैले बुझ्ने गरी स्पष्ट उच्चारण गर्ने, अस्पष्ट उच्चारण नगर्ने, विराम नभएका स्थानमा श्वासको विश्राम लिन नहुने जस्ता पठनशुद्धिका नियम हुन्थे।

(छ) पत्रादार वेदको पुस्तकलगायत अन्य पुस्तक भुइँमा राखेर पढ्न हुँदैन। वेदको पुस्तक कडा गाता (कुट, काठको पातलो फलेक) माथि बासा (पुस्तक बाँध्ने कपडा) ओछ्याएर मात्र पुस्तक राख्ने, अन्य पुस्तकको हकमा गाता लगाएर, राम्ररी सिएर मात्र राडी, खटिया, रुमाल आदिमा राखेर मात्र पढ्नुपर्छ। पढ्दा अडेस लाएर नबस्ने, पुस्तक खुला राखेर खान नहुने, मध्याह्न १२ बजे १ घन्टा विश्राम दिने (मध्याह्न बार्ने), 'अजमनकाः पाठनाशकाः' अर्थात् अ, ज, म, न, कमा पाठ बिसाउनु हुँदैन। बिसाए पाठ नासिन्छ। 'आकारे दधिभोजनं' आ मा पाठ बिसाउँदा दही खान पाइन्छ भन्ने उहाँको मान्यता थियो। लघुशङ्का, शौचालय जानु परेमा आवश्यक शुद्धीकरणपछि मात्र पुस्तक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खोलेर पढ्नुपर्ने, पुस्तकमा कोर्न नहुने, थुक लगाएर पाना पल्टाउन नहुने जस्ता नियमलाई गुरुले कडाइका साथ पालना गराउनुहुन्थ्यो। यो पठन-पाठनको आचारसंहिता र नियम सम्पूर्ण गुरुकुलहरूको सार्वभौम नियम जस्तो देखिन्छ।

(ज) देवनारायण दाहाल गुरुमा युगबोध पनि थियो भन्ने कुरा उहाँका नाति भूमिप्रसाद बताउँछन्। उनलाई हजुरबाले बिहानबेलुका घरमा संस्कृतको अध्ययन गराउने र दिउँसो नजिकैको स्कुलमा पढाउने व्यवस्था मिलाइदिनुभएको थियो। क, ख, सँगै ए, बी, सी, डी हजुरबाले नै चिनाएको उनको भनाइ छ। २००७ सालपछि आएको नवयुग चेतनाको प्रभाव गुरुमा पनि परेको थियो। त्यसैले दाहाल गुरुको परिवारमा आधुनिक शिक्षातर्फको सङ्केत गुरुकै पालादेखि प्रारम्भ भएको पाइन्छ। त्यति खेर महेन्द्रमाला र ठूलो वर्णमाला आधुनिक शिक्षाका प्रारम्भिक पुस्तक थिए। यिनै पुस्तकको सहायतामा गुरुले प्रारम्भिक शिक्षा दिनुहुन्थ्यो। संस्कृत, अङ्ग्रेजी, गणितसँगै पढ्नुपर्छ भन्ने उहाँको धारणा थियो। उहाँमा ज्योतिषको पनि ज्ञान थियो।

देवनारायण गुरुको युगबोध र युगचैतन्यका बारेमा उहाँका नाति (पूर्ववत्) सम्झेर बताउने प्रयास गर्छन्। हजुरबा दाहाल गुरुले भनेका केही कुराको स्मृति अहिले पनि ताजै छ। अबको युगमा ठूलो पदमा जान अन्तर्वार्ता कसरी हुन्छ ? भन्ने प्रश्नको गुरुले बताएको एउटा उदाहरण यस्तो थियो : मानौं तपाईं राम्रा लुगा लगाएर कतै जानुभएको छ, एउटा बालकले आएर लुगामा फोहोरमैला गरिदियो। अब तपाईं त्यसलाई के गर्नुहुन्छ ?। यस प्रश्नमा एउटाको उत्तर थियो (क) पड्काइदिन्छु। अर्काको उत्तर थियो (ख) त्यसका बाबुआमालाई धुन लगाउँछु। तेस्राको उत्तर थियो (ग) आफैं धोईपखाली गर्छु। अब भन, अन्तर्वार्ताका लागि कुन प्रश्न उपयुक्त छ। यसमा तेस्रो उत्तर ठीक छ भनी बुझाउनुहुन्थ्यो। त्यस्तै अन्य सामान्य ज्ञान र तात्कालिक बौद्धिक प्रश्न र उत्तरका नमुना पनि राखेर विद्यार्थीलाई सिकाउनुहुन्थ्यो।

पढेसम्मको लघुसिद्धान्तकौमुदीको पनि ज्ञान गुरुलाई थियो तर उहाँले कौमुदी पढाउनुभएन। संस्कृत व्याकरणको उच्चअध्ययनकै लागि बनारस गएका बखत बिरामी परेर यो सपना अधुरै रहेकाले यो अधुरो सपनाले बारम्बार नसताओस् भनेरै होला सम्भततः लघुकौमुदीको पाठ गुरुले लगाइदिएको कुरा उहाँका नाति (पूर्ववत्) लाई सम्झना नरहेको कुरा बताउँछन्।

यसरी देवनाराण दाहाल गुरुको जीवनी, व्यक्तित्व र योगदानलाई हेर्दा उहाँ एउटा युगपुरुष हुनुहुन्थ्यो। आफू आर्थिक सङ्कटमा परेको अवस्थामा पनि उहाँले कसैसँग पढाएको पारिश्रमिक भनेर लिनुभएन, तर गुरुदक्षिणालाई गुरुकुल अध्ययन परम्पराको नियमानुसार अपमान पनि गर्नुभएन। आजीवन शिक्षा प्रदान गरेर जीवन व्यतीत गर्नुभयो। वेद अध्ययनको मानक पात्र रहनुभयो। बसीबसी पनि परिवारको निर्देशन गर्नुभयो। गुरुबाट जति प्राप्त गरेको विद्या फलीभूत भएको कुरा रामप्रसाद रिजाललगायतका उहाँका शिष्यहरू बताउँछन्। आफ्ना पिता-पुर्खाले पढाइको आरम्भ गराइदिएका विद्यार्थीहरूले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रगति गर्दै कोही पुराण वाचक, कोही शिक्षक, कोही प्राध्यापकसम्म बनेर आज पनि आदर भावले गुरुलाई सम्बोधन र चर्चा गरेको सुन्दा गुरुका विद्यार्थी, शिष्य र शुभचिन्तकप्रति गुरुको परिवारले आभार प्रकट गर्दै धन्यवाद पनि दिइएको छ।

पाँचथरको एकतीनमा दाहाल गुरुले हिउँदे पाठशालाको रुपमा ६ वर्षजति पढाउनुभयो। यस क्रममा चिदानन्द खतिवडा, यमनाथ खनाल, लालुनाथ खतिवडा, ऋषिराम खतिवडा, तुलसीराम खतिवडा, यमनाथ खतिवडा, खगनाथ न्यौपाने, भवानीप्रसाद न्यौपाने, घनश्याम न्यौपाने आदि पहिलो समूहका विद्यार्थीहरू थिए भने दोस्रो समूहमा हेमराज खनाल, कमल खतिवडा, होमनाथ खतिवडा, ढुण्डीराज खनाल, हरिप्रसाद खतिवडा, माधव खतिवडा, दधिराम खतिवडा थिए।

त्यस्तै तेस्रो समूहमा चुडामणि खतिवडा मुकुन्द खतिवडा, दुर्गाप्रसाद खतिवडा, भवानीप्रसाद खतिवडा, खगनाथ सापकोटा आदि थिए भन्ने जानकारी पाइन्छ। बिरामी भएर गुरु बनारसबाट फर्किएपछि शारीरिक असशक्तताका कारण हिंड्न नसक्ने अवस्था पनि जीवनभरि नै रह्यो। तर एकतीनको मुख्याटारमा २००८ सालमा सुभाङ गुरुको नामले प्रसिद्ध हुनुभएका यज्ञनिधि रेग्मी गुरुले राम कथा प्रवचन गर्नुभएको अवस्थामा दाहाल गुरुलाई सो स्थानमा पुर्याएर भेट गराउँदा रेग्मी गुरुले दाहाल गुरुलाई जुरुक्क उठाएर तङ्ग्रयाई मण्डप घुमेर आउन आग्रह गरेको र दाहाल गुरुले पनि हिंडेर एकफेर मण्डपको परिक्रमा आफैं गरेको चामत्कारिक घटना आफूले प्रत्यक्ष देखेको कुरा घटनाका प्रत्यक्षदर्शी चिदानन्द खतिवडा गुरुका शिष्य उक्त घटनापछि बताउँछन्। उक्त घटनापछि रेग्मी गुरुले पूर्वजन्मको कमाइ यत्ति रहेछ मैले यत्ति नै गर्न सकें भन्दा दाहाल गुरुका आँखाबाट बररर आँसु झरेका देखिए भन्ने भनाइ पनि घटनाका प्रत्यक्षदर्शी खतिवडाको रहेको छ। यस्ता महापुरुष दाहाल गुरुले खोलाघारीमा गएर पनि एकदुई हिउँद पढाउनुभएको साथै माङ्लेबुङमा पनि गएर हिउँदे पाठशालाको माध्यमबाट त्यहाँ ताराप्रसाद खतिवडा, शिवलाल आदि धेरै विद्यार्थीहरूलाई वेद पढाएको कुरा उहाँको प्रत्यक्षदर्शीहरू बताउनुहुन्छ।

सन्दर्भ-स्रोत

दाहाल, देवीप्रसाद र अन्य (२०७५), वंश-परिचय, झापा, दमकः प्रभाखर दाहालका परिवार।

अन्तर्वार्ता

दाहाल, जीवनाथ, दमक झापा।
चिदानन्द खतिवडा। कमल खतिवडा
देवनारायण गुरुका भान्जा र शिष्य, भवानीप्रसाद दवाडी, दमक, झापा।
"   "   ....   ,, , आचार्य दुर्गाप्रसाद खतिवडा, केरखा।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शान्ति महाराज (श्री १०८ स्वामी नारायणानन्द सरस्वती) को सङ्क्षिप्त जीवनी

✍ इन्दिराज/गोविन्द पौडेल

जन्म तथा बाल्यकाल

शान्ति महाराजको जन्म वि.सं. १९८४ साल भाद्र महिनामा पूर्वी नेपालको पाँचथर भारपा १ अखौंले भन्ने ठाउँमा पिता लीलाधर तथा माता हरिमायाका ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा वशिष्ठ गोत्रीय भण्डारी ब्राह्मण कुलमा भएको हो। उहाँको न्वारनको नाम लक्ष्मीनारायण हो। उहाँका शिवमाया, तुलसा र सरस्वता तीन जना दिदी, हरिमाया, हंसमाया र भूमिका तीन जना बहिनी र जगन्नाथ, होमनाथ र गङ्गाराम तीन जना भाइहरू थिए। तीमध्ये हाल भाइ गङ्गाराम र बहिनी भूमिका मात्र जीवित हुनुहुन्छ।

भारपा १ अखौंलेमा सामान्य शिक्षित परिवारमा जन्मनुभएका उहाँका हजुरबुबा देवीचरण पौरोहित्य कर्ममा निपुण भएको पाइन्छ। त्यस ठाउँमा करिब २०० वर्ष अघिबाटै उहाँका बसोबास गर्दै आएको बुझिन्छ। सामान्य ~~परिवारमा~~ परिवारमा जन्मनुभएको र शिक्षा आर्जनका निम्ति एक्लै अन्यत्र जान सक्ने अवस्था नरहेकाले शान्ति महाराजको बाल्यकाल पुख्यौंली थलो भारपामै बितेको देखिन्छ।

उपनयन र घरगृहस्थी

ब्राह्मण परिवारमा जन्म भएकाले उहाँको उपनयन तथा विवाह कर्म पनि वैदिक विधिअनुसार नै भएको हो। हजुरबुबा पण्डित/पुरोहित हुनुभएकाले पनि ब्राह्मणको संस्कारअन्तर्गत गरिने व्रतबन्ध संस्कार पनि ८ वर्षको उमेरमा भएको हो। वैदिक विधिअनुसार गर्ने कर्मलाई नै शिरोधार्य गरी उहाँले पं. तुलसीराम खतिवडाबाट गायत्री मन्त्र श्रवण गर्नुभएको थियो।

उहाँको वैवाहिक संस्कार पाँचथरकै मच्छेबुङ निवासी चूडामणि तथा देवमाया ओझाका ६ सन्तानमध्ये पहिलो सन्तान जानुकादेवीसँग वैदिक विधिअनुसार सम्पन्न भएको हो।

गृहस्थ धर्ममा बाँधिनुभएका शान्ति महाराजका २ सन्तानका रूपमा दुइटी छोरीको जन्म भएको थियो। जेठी छोरी डम्बरकुमारीको जन्म अखौंलेमै २००७ साल फाल्गुन ११ गते भएको हो भने कान्छी छोरीको जन्म उहाँ भारतको मणिपुरमा बासाइँ सरेर गएपछि २०१२ सालमा भएको हो, तर कान्छी छोरीको भने छोटो समयमै निधन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भयो। यसरी उपनयनपश्चात् गार्हस्थ्य जीवनमा प्रवेश गर्नुभएका शान्ति महाराजबाट २ सन्तानको जन्म भए पनि हाल जेठी छोरी डम्बरकुमारी मात्र (अर्जुनधारा १, झापामा) हुनुहुन्छ।

शिक्षा-दीक्षा

शान्ति महाराजले आफ्नै घर अखौंलेमा हजुरबुबा पं. देवीचरण भण्डारीबाट अक्षरारम्भ गर्नुभएको हो। पुख्यौंली थलो पाँचथरको अखौंलेमा उहाँहरूको गोठ थियो। ~~स्हेको र~~ त्यही गोठमा बसेर उहाँले अक्षर चिन्नुभएको हो। त्यहाँ ढोड बालेर उहाँ सँगसँगै पढ्नेमा केदारनाथ खतिवडासमेत हुनुहुन्थ्यो। त्यसपछि भने २००८ सालतिरबाट जोरपोखरी कुटीमा पुगेपछि जेठा गुरु योगानन्द महाराजको सङ्गतमा पुगेपछि शिक्षातर्फ उहाँको झुकाव बढेको हुँदा योगानन्द गुरुबाटै शिक्षा-दीक्षा प्राप्त गर्नुभएको थियो। पण्डितका नाति भएकाले पनि उहाँलाई अक्षर चिन्न तथा पूर्वीय वाङ्मयका चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण, गीता, अमरकोश, भागवतजस्ता ग्रन्थको अध्ययन गर्न सहज बनेको देखिन्छ। यसरी उहाँले पारिवारिक वातावरणमा रही अनौपचारिक शिक्षा आर्जन गर्दै जेठा गुरुको असीम अनुकम्पाबाट पौरस्त्य वाङ्मय ग्रन्थको अध्ययन तथा सत्सङ्गमै समग्र जीवन व्यतीत गर्नुभएको कुरा सहजै अनुमान गर्न सकिन्छ।

बसाइँ-सराइ

पुख्यौंली थलो अखौंलेबाट आफ्ना केही परिवारका सदस्यलाई त्यहीं छोडी तथा केहीलाई साथमा लिई उहाँ वि.सं. २०१२ सालमा भारतको मणिपुरमा आफ्नै अगुवाइमा बसाइँ सर्नुभएको देखिन्छ। त्यस क्षेत्रमा केही महिनाभित्रै एकै परिवारका ४ जना सदस्यको देहावसान भएपछि पुनः वि.सं. २०१३ सालमा अखौंलेमै फर्किनुभयो। पुनः पुरानै थलोमा फर्केपछि खोल्मेमा गोठ बनाई गाईगोठ गर्नुभयो तर गोठमा रहेका गाईबाच्छा चितुवाले छानी छानी खान थालेपछि त्यस गोठलाई त्यहाँबाट सिद्धपोखरीमास्तिर गुडगुडे भन्ने ठाउँमा स्थानान्तरण गर्नुपरेको थियो। वि.सं. २०१७ सालमा उहाँ अखौंलेबाट बसाइँ सरेर भारतको आसाम क्षेत्रको सदिया जानुभयो र त्यहाँको आठमाइलमा एउटा कुटी निर्माण गरी त्यही कुटीमा एक चतुर्मास बस्नुभयो भने त्यसपछि केही समय ब्रह्मपुत्रकिनारमा र केही समय पाटीपत्थरमा कुटी बनाएर बस्नुभयो। पछि धेरै समय उहाँ उत्तरकाशीको लाटासेरामा बस्नुभयो।

आध्यात्मिक जीवनको शुभारम्भ

पूर्वी नेपाल पाँचथरको जोरपोखरीमा स्वर्गद्वारी महाप्रभुका शिष्य तपोमूर्ति योगी योगानन्द हुनुहुन्थ्यो। स्वर्गद्वारीबाट आउनुभएका ईश्वरांश योगी परमहंस ब्रह्माभ्यासानन्दसँग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदवेदाङ्ग र अष्टाङ्ग योगको शिक्षा लिनुभएका उहाँ बाहिरी रूपमा देख्दा सामान्य साधु जस्ता देखिए पनि योग साधनाद्वारा अष्टाङ्ग योग, षट्चक्र सिद्धि र कुण्डलिनी जागरण गरेर ब्रह्मस्वरूपमा रहने तपोसिद्ध योगी हुनुहुन्थ्यो। उहाँलाई त्यस क्षेत्रका सबैले जेठागुरु भनेर ठुलो आदर सम्मान गर्थे। यिनै जेठागुरु (योगानन्द) सँग शिक्षादीक्षा लिएर लक्ष्मीनारायण नाम भएका शान्ति महाराज नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी हुनुभएको थियो। पछि उत्तरकाशीको लाटासेरामा पुगेर तपश्चर्या गर्न थालेपछि त्यहाँका परमहंस १००८ स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वतीसँग सन्न्यास ग्रहण गरी परमहंस १०८ स्वामी नारायणानन्द सरस्वती भए तापनि उहाँलाई सबैले शान्ति महाराज नै भनेर चिन्दछन्। शान्ति महाराजले वि.सं. २०४५ सालको अर्धकुम्भमा प्रयागराज (इलाहाबाद) मा सन्न्यास ग्रहण गर्दा त्यहाँ टेकनाथ गौतम गुरु, विष्णुभक्त भण्डारीलगायत धेरै शुभचिन्तकहरूको उपस्थिति थियो।

तीर्थयात्रा र योगसाधना

परापूर्वकालमा ऋषिमुनिको तपस्थल रहेको र वर्तमानमा पनि प्रसिद्ध तीर्थस्थलका रूपमा मानिएको उत्तरकाशी भारतवर्ष उत्तराखण्डको महत्त्वपूर्ण तपोभूमि मानिन्छ। जसरी बद्रीनारायण क्षेत्रका रामगुफा, श्यामगुफा, हंसगुफा आदि विभिन्न गुफाकन्दरामा सदियौंदेखि गुप्त रूपमा बसेर परमहंस योगीहरू तपश्चर्या गर्दै आएका छन्, त्यसरी नै लाटासेरामा पनि कयौं तपस्वी तपश्चर्या गर्दै आएका पाइन्छन्। शान्ति महाराजले पनि लाटासेरामा तपश्चर्या गर्नुभयो र यस्तै विभिन्न तपस्वीमध्येका एक तपस्वीका रूपमा परिचित हुनुभयो। उहाँ जेठागुरुलाई ईश्वरकै अवतारका रूपमा मान्नुहुन्थ्यो र जेठागुरु आसामको सदिया भन्ने ठाउँमा पुग्नुभएका बेला उहाँ पनि त्यतै जानुभयो।

ब्रह्मपुत्र किनारको आसामको बालिज्यान कुटीमा पहिले धेरै जना विद्वान् र योगीहरू बसेर वेदवेदाङ्गको पठनपाठन गराउनुका साथै योग ध्यान गरेको हुँदा शान्ति महाराजले पनि त्यहाँ पुगेर निकै समयसम्म त्यस क्षेत्रका सबैलाई वैदिक आर्य संस्कृतिको शिक्षा दिनुभएको थियो।

समयको अन्तरालसँगै २०२४ सालमा आएको ब्रह्मपुत्रका बाढीले बालिज्यान कुटी बगाएपछि शान्तिपुरभन्दा केही तल नेपाली बस्ती भएको ठाउँ पाटीपत्थरमा फुसको पाठशाला निर्माण गराएर त्यस क्षेत्रका विप्रवटुसहित त्यहाँका अधबैंसे गृहस्थ, वयोवृद्ध, धर्मवृद्ध आदि नरनारीलाई गीता, चण्डी, रुद्री र वैदिक संहिताको शिक्षा दिनुभएको थियो। उहाँ त्यहाँ शिक्षा दिएर बसे तापनि नजिकैको शान्तिपुर कुटीमा विवेकानन्द स्वामीजीको सत्सङ्गमा निरन्तर गइरहने गर्नुहुन्थ्यो। स्वामीजीका सान्निध्यमा रहेर नित्य योगाभ्यास गर्ने र स्वामीजीप्रति अनन्यतम आस्था राख्ने उहाँले स्वामीजीका योगरहस्यको महत्त्व बुझेको हुँदा उहाँलाई ईश्वरकै अवतारका रूपमा मान्ने र योगीसँगै बसेर पाटीपत्थर आई पठनपाठन गराउने गर्नुहुन्थ्यो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झापामा सिद्धेश्वर स्थापना र सत्सङ्ग

शान्ति महाराज आसामको पाटीपत्थरबाट उत्तराखण्डको लाटासेरा पुगेर त्यहाँ लामो समयसम्म तपश्चर्या गरेपछि वि.सं. २०४८ मा झापा आउनुभएको थियो। स्वामीजीले झापा लखनपुरको मन्दिर डाँडामा बसेर निकै समयसम्म त्यस क्षेत्रका जनसमुदायलाई सत्सङ्ग गराउनुभयो। यसै समयमा गौतम गुरुजीबाट चतुर्मास योगवाशिष्ठ सुनेपछि त्यहाँका जनसमुदायलाई प्रेरणा दिएर त्यहाँ ठुलो यज्ञ गराएर शिवालय निर्माण गरियो। सो शिवालयमा स्वामीजीले शिवलिङ्ग स्थापना गर्नुभयो र त्यहाँ महारुद्राभिषेक गराउनुभयो। त्यसपछि यस ठाउँमा अनेकौं वैदिक विद्वान्, वेदपाठी वटु, साधुसन्त, योगी सन्न्यासीहरूको आवागमन बढ्दै गयो र यहाँ निकै समयसम्म गायत्री अनुष्ठान पनि भयो। यसरी यस ठाउँमा यज्ञानुष्ठान, पठन पाठन, धार्मिक गतिविधि बढ्दै गएपछि वि.सं. २०६६ सालमा यस क्षेत्रका विशिष्ट व्यक्तित्व जयनारायण अधिकारीले यहाँ ७ कठ्ठा जमिन प्रदान गर्नुभयो र यहाँ वर्तमानमा सिद्धेश्वर शिवमन्दिर धार्मिक संरक्षण संस्था स्थापना भई सिद्धेश्वर गुरुकुल विद्यालयसमेत चलिरहेको छ। स्वामीजीले नै शिवलिङ्ग स्थापना गरेको हुँदा यहाँको सञ्चालक समितिले संस्थाको विधानमा स्वामीजीलाई नै संस्थापक भनेर उल्लेख गरेको छ। यसरी स्वामीजी यस स्थानमा निकै समय बसेर पुनः उत्तरकाशी लाटासेरा पुगी तप, साधनामा लाग्नुभएको थियो।

साधुटारको बसाइ र समाधि

शान्ति महाराज केही समयपछि लाटासेराबाट झापाको शङ्कराचार्यपीठ, साधुटारमा आएर बस्न थाल्नुभयो र उहाँबाट त्यहाँका सबैलाई वेदवेदाङ्गको अध्ययन अध्यापन, व्याकरणको पठन पाठन, गायत्री अनुष्ठान, सनातन वैदिक आर्य संस्कृतिको संरक्षण संवर्द्धनका लागि ठुलो प्रेरणा प्राप्त भयो। यसै क्रममा शङ्कराचार्य पीठ, साधुटारमा निकै समय तपश्चर्या गरेर २०६९ साल माघ ४ गतेका दिन उहाँ ब्रह्मलीन हुनुभयो। हरि ॐ तत्सत्।

सन्दर्भ स्रोत

श्री तुलसीराम खतिवडा, साधुटार, झापा
भूमिका खनाल
केदारनाथ खतिवडा, साधुटार, झापा
डम्बरकुमारी रेग्मी, साधुटार, झापा
छन्दुराम भण्डारी, चारपाने, झापा
जयनारायण अधिकारीका सन्तति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पण्डित टेकनाथ गौतमको सङ्क्षिप्त परिचय र हरिकीर्तन

✍ भानुभक्त अधिकारी

वि.सं. १९८४ आश्विन ८ गतेका दिन पिता श्री हरिकृष्ण गौतम र माता कौशिलादेवीका ज्येष्ठ सन्तानका रूपमा पाँचथर जिल्लाको नम्लुवा भन्ने गाउँमा पं. टेकनाथ गौतमको जन्म भएको हो। उहाँको बाल्यकाल गाउँमै बित्यो। आठ वर्षको उमेरमा मामाका प्रेरणाले उपनयन संस्कार भएपछि मामाकै सङ्गतमा गायत्री जप र चण्डी, रुद्री पढी वेद, व्याकरणको अध्ययन गर्ने सिलसिलामा इलामका काफ्ले गुरुहरूसँग पढ्दापढ्दै इलाम निवासी निरौला परिवारकी सुपुत्री हिमादेवी निरौलासँग उहाँ विवाह बन्धनमा बाँधिनुभयो।

आफ्नो पढाइलाई नछोडीकन वेद, व्याकरण, कोश, काव्यका साथै मध्यसिद्धान्तकौमुदी सम्पन्न गरी पुनः दार्जिलिङ गई धिरीधामका धरणीधर गुरुसँग अङ्ग्रेजी भाषामा १० कक्षासम्मको अध्ययन सकेर घरमा आई २००३ सालमा उहाँले आफ्ना पितामातालाई श्रीमद्भागवत पुराण सुनाउनुभएको हो। त्यसपछि वि.सं. २००४ सालमा पाँचथरकै थर्पु मालबाँसेमा तिम्सिना परिवारले चतुर्मासा पुराण लगाउँदा रेग्मी गुरुको सल्लाहअनुसार गौतम पण्डित छन्, राम्रो पुराण भन्न सक्छन्, उनैलाई लगाउनू भनेपछि त्यहाँ पुराण भन्नुभएको थियो। उहाँ प्रस्ट बुझाएर पुराण भन्नुहुन्थ्यो।

उहाँको पुराणबाट सबै प्रभावित भएर बिहान-बेलुका पढ्ने विद्यार्थीहरूको भिड लाग्न थाल्यो। पछि परिवारबाट अलग भएर २०१३ सालमा भारपाको अखौंलेमा आई उहाँ बसोबास गर्न थाल्नुभयो। महिनामा ३-४ वटा पुराण भन्न थालेपछि आर्थिक अवस्था पनि बलियो बन्दै गयो। सुभाङको वरङफुङमा मिडिल स्कुलको स्थापना भयो र त्यसमा संस्कृत विषयको शिक्षक पदमा उहाँ नियुक्त हुनुभयो। त्यसपछि सुभाङमै डेरा गरी बस्न थाल्नुभयो। हामी पनि बिहानबेलुका गुरुसँग पढ्न जान्थ्यौं। उहाँ कहिल्यै नझर्किई पढाउनुहुन्थ्यो। दुई वर्षपछि पुनः किवा स्कुलमा पढाउनुभयो। त्यसपछि स्कुल छोडेर आफ्ना घरमा विद्यार्थी राखी पढाउन थाल्नुभयो। त्यति बेला पढ्ने विद्यार्थीमा बोधकुमार

✍ *पूर्वशिक्षक, साङ्गवेद संस्कृत मावि, बिर्तामोड नपा २, चारपाने, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैनाली, ईश्वरी मैनाली, गुरुप्रसाद पोखरेल, काशीनाथ दाहाल, अग्निप्रसाद खतिवडा र षडानन्द तिम्सिना हुनुहुन्थ्यो, उहाँहरू लघुकौमुदी पढ्नुहुन्थ्यो।

२०२२ साल फागुन महिनादेखि म (भानुभक्त अधिकारी) र केवलीराम खतिवडाले गुरुसँग लघुकौमुदी पढ्न थाल्यौं। त्यस बेला गुरुजी हामीलाई भन्नुहुन्थ्यो- देउता हो, आफूले पढ्दामात्रै पढिँदैन, आफूले पढेको जानेको कुरा अरूलाई सिकायो भने मात्र आफूले पढेको सार्थक हुन्छ किनभने मैले पढेर आएपछि अरूलाई नपढाएको भए अहिले तिमीहरूलाई पढाउन सक्ने थिइनँ। विद्या जति बाँड्न सक्यो त्यति बढ्ने चिज हो। त्यसैले म पढेर घर आएदेखि नै मसँग विद्यार्थी टुटेका छैनन्।

गुरुजी घरमा बसेको बेला काम गरिरहनुहुन्थ्यो। यसो आफूले सकेको काम सघाउन खोज्यो भने उहाँ हाँस्दै भन्नुहुन्थ्यो- पण्डित हो, पढ है म त काम सघाएर खुसी हुन्न; मैले पढाएको पाठ कण्ठ पारेर सुनायौ भने मात्र खुसी हुन्छु।

२०२३ साल श्रावणमा आसामको चुनपुराबाट विष्णुभक्त भण्डारी गौतम गुरुसँग व्याकरण पढ्न आएपछि गुरुजीले भन्नुभयो - अब तिमीहरू पनि अर्काकामा नबस, मेरै खेतको सिरानमा कुवा पनि छ, त्यहींनेर म जग्गा दिन्छु त्यो बाँसकै छेउमा फाँडेर सम्याउनुपर्छ र विद्यालय बनाउनुपर्छ। विष्णुभक्त गुरु घुमेर आएपछि हामी सबै भेला भयौं र त्यही ठाउँ फाँडेर, सम्याएर बाँसकै खाँवाखुट्टी गाडेर विद्यालय बनायौं। गुरुजीले कृष्णअष्टमीको साइत हेरी कृष्णअष्टमीको पूजा लगाई कथा पनि भन्नुभयो र त्यसै दिनदेखि बस्न सुरु गरियो। विद्यालय बन्यो। त्यही भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशीका दिन पाठ दिन आउँदा गुरुजीले श्रीब्रह्मवैवर्त पुराण बोकेर आउनुभयो र लौ पण्डित यो पुस्तक अनुष्ठानमा राखेर पूजा गर भनी मलाई दिनुभयो। पूजा गरेपछि पुस्तक फुकाएर पुराण भन्न थाल्नुभयो।

गुरुले भन्नुभयो- देउता हो, मैले नभ्याउँदा, म नहुँदा विष्णुभक्तले अथवा तिमीले भए पनि १ अध्याय पाठ गर्नू। बिस्तारै त्यहाँ विद्यार्थीहरूको घुइँचो लाग्न थाल्यो। गाउँका मात्र होइन, भुटान, मणिपुर, एकतीन, मालबाँसे, खुँगा, सुभाङदेखि विद्यार्थी आउन थाले। विवेकानन्द गुरुजी पनि आउनुभयो। कात्तिक महिनामा आकाशदीप, हवन, कन्याकुमारी पूजन, अखण्ड हरिकीर्तनसहित साङ्ग भयो। त्यही बेलादेखि गौतम गुरुजीले अखण्ड हरिनाम सङ्कीर्तन र अखण्ड दीपको महिमा प्रचार-प्रसार गर्न हामीलाई समेत निर्देशन दिनुभएको थियो। २०२४ साल फागुनदेखि अर्को विद्यालय अमलाको फेदमा बनाई चण्डी, रुद्री, वेद पढ्नेलाई त्यता र व्याकरण र श्रीमद्भागवत पढ्नेलाई पुरानो विद्यालयमा पढाउन थाल्नुभयो। २०२४ सालमा आनन्द रामायण पुराण भयो। २५ सालमा श्रीमद्भागवत पुराण भन्नुभयो। २०२६ सालमा पं. विष्णुभक्त भण्डारी गुरुलगायत हामी ५-६ जनाले लघुकौमुदी सकी उद्यापन गरियो। त्यही साल होमनाथ खतिवडा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आउनुभयो। २०२७-२८ सालतिर होला दुर्गाप्रसाद खतिवडा, मुकुन्द खतिवडा आदि विद्यार्थीहरू आउनुभयो। २०२९ साल श्रावण महिनामा भवानीप्रसाद खतिवडा, लेखनाथ दाहाल आदि विद्यार्थीहरू आउनुभएको हो।

२०२८ साल श्रावणमा गुरुजीले माहिला छोरा भोला र म (भानुभक्त अधिकारी) लाई बनारस लगी अब तिमीहरू काशीमा बसेर पढ्नू र परीक्षा दिनुपर्छ भनी डा. गोविन्द सुवेदी गुरुलाई 'यी दुई जना नानीहरू गुरुजीका जिम्मा लगाएँ' भन्दै हामीलाई गोविन्द सुवेदीको जिम्मा लगाई आफू नेपाल फर्कनुभयो। २०२९ सालमा होमनाथ, टङ्कनाथ आदि धेरै विद्यार्थी बनारस जानुभयो। गुरुजीले आफ्नो छोरा र चेलामा भिन्न देख्नुभएन। सबैलाई उत्तिकै प्रेमभावले बोलाउनुहुन्थ्यो। विद्यार्थीलाई तिमी, तपाईं, देउता, पण्डित यस्तो सद्भावपूर्ण बोली बोल्नुहुन्थ्यो।

अखण्ड हरिकीर्तन

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।
सत्यमा हरिको ध्यान द्वापरमा हरिपूजन। त्रेतामा हरिको यज्ञ कलिमा हरिकीर्तन।।

अनादि कालदेखि चलिआएको परम्पराअन्तर्गत व्यास, वसिष्ठ, वाल्मीकि आदि आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य परम्पराअनुसार हाम्रो गुरु परम्परामा सनातन वैदिक धर्मका संरक्षक श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ १०८ स्वामी योगेश्वराश्रम, श्रीविवेकानन्द गुरुजी महाराज एवं विद्वत्प्रवर महर्षि पं. श्री टेकनाथ गौतम गुरुजीले विशेष अनुष्ठानको माध्यमले प्रचलनमा ल्याइएको अखण्ड श्रीहरिनाम सङ्कीर्तन आजको विकराल परिस्थितिमा पनि आश्रम, मठमन्दिर अथवा गुरुहरूले निर्देश गरेका ठाउँहरूमा कहिले १२ घन्टे त कहिले २४ घन्टे अखण्ड हरिकीर्तन हुने गरेका छन्।

हामीहरूले जान्दादेखि श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुजीले चौथो आश्रम नलिँदै आगेजुङ तेजपुञ्जमा हरे राम हरे कृष्ण जय जय सीताराम जस्ता कीर्तनको रौनकमा माहिला गुरु विवेकानन्द उठेर नाच्दा लट्टाचाहिँ भुइँमा लत्रिन्थे पाउचाहिँ नटेकेको जस्तो लाग्थ्यो हामी बच्चा हुँदा।

त्यसै गरी शिवगङ्गामा, खाल्लेकुटीमा अनि थामदिनमा, पिनासीमा, काबेली गुफामा २०१८ सालको कात्तिक शुक्लमा योगानन्द गुरु, श्यामानन्द ब्रह्मचारी, कृष्णानन्द, म लगायत गाउँका बुढापाका गुरागाईं, न्यौपाने, अधिकारी धेरै जना थियौं। बेलुका आरती सकेपछि जय जय सीताराम भन्दाभन्दै को पहिला उठे पत्तो भएन, न नाच्ने कोही भएन, सबै नाचे। पछि पो नदीमा गएर राति काबेलीमा पानी छ्यापाछ्याप गर्दा थाहा भयो। माहिला गुरुको अनुहारचाहिँ झरिलो, बलेको आगाको अगुल्टो जस्तो भयो भन्नुहुन्थ्यो- मसले कार्की बा, आफू त सानै थिएँ।

त्यसै परम्पराअनुसार महर्षि पं. श्री टेकनाथ गौतम गुरुजीले जोरपोखरी अखौंलेको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्यालयमा चतुर्मासा ब्रह्मवैवर्त पुराण भन्नुभयो। आगेजुङ गुरु पनि आउनुभयो। त्यसको साङ्गताको कात्तिक शुक्ल एकादशीका दिन बिहान ७ बजे आरम्भ गरी २४ घन्टाको हरिकीर्तन एक हप्तासम्म पनि कानमा गुन्जिरह्यो। त्यस्तो अखण्ड हरिकीर्तन मेरा लागि पहिलो भयो। अन्यत्र गुरुले पुराण भनेका ठाउँमा कतै १२ घन्टा, कतै जाग्राम गराउँदा पनि पालो बाँधेर खण्डित नहोस् भनेर गराउनुहुन्थ्यो।

अर्को अनुष्ठानको विधिले गराउँदा चाहिँ एक दिन पहिला पुराणको जस्तै मण्डप बनाएर एक जना प्रतिनिधिलाई केशमुण्डन गराएर आभ्युदयिक श्राद्ध, मातृका पूजन गरी विधिवत् मण्डप पूजा गराएर विभिन्न समिति, उपसमिति बनाएर टोली गठन गरेर १-१ घन्टाको पालो बाँधेर प्रातः पूजा सकेर सर्वतोभद्रमा विष्णुलक्ष्मीको प्राणप्रतिष्ठा गराई पूजा गरी ७:३० बजेदेखि आरम्भ गराउनुहुन्थ्यो। पालो विभाजन गर्ने, टोली गठन गर्ने, महिला आमाहरूको छुट्टै ससाना नानीहरूको लागि २-४ जना सहयोगीसहित पालो राख्ने र रातको युवा पुस्ताको टोली निर्माण गरेर गराउनुहुन्थ्यो। रात बितेको पत्तै हुँदैनथ्यो। चियापान उपसमिति, फलाहार व्यवस्था उपसमिति टोलीको आराम गर्ने व्यवस्था सबै सुविधा सम्पन्न गरेर मात्र गराउनुहुन्थ्यो।

त्यसरी अखण्ड हरिकीर्तन गरेका ठाउँमा पहिला सुभाङ सिले ढाँडे खेतको हो। त्यो ठाउँमा पछि राधाकृष्ण मन्दिर र शिव पाञ्चायन मन्दिर बनेका छन्। त्यहाँ अहिले पनि सालमा एकपटक कहिले २४ घन्टे कहिले १२ घन्टे अखण्ड हरिकीर्तन भइरहेको छ।

त्यसै गरी गुरुजीले एकतीनमा, जोरपोखरीमा अनि आङ्खोपमा गर्दै झापा आएपछि २०३४ सालमा गरेको बुट्टाबारीको २४ घन्टे अखण्ड हरिकीर्तन त झन् विचित्रको भयो। त्यस्तै चारपानेमा प्रत्येक नयाँ वर्षको उपलक्ष्यमा भइरहेको छ।

अन्य दमक पशुपति मन्दिरमा, लखनपुर सिद्धेश्वर मन्दिरमा अनि गोलधापको गायत्रीस्वरूप आश्रममा, बारादशी साधुकुटीमा अखण्ड कीर्तनको महिमा श्रीमद्भागवत पुराण, रामायण आदि पुराणले भनेबमोजिम त्यसको महिमा, मुष्टिदानको महिमा, अखण्डदीपको महिमा, सम्पूर्ण भक्तजनमा बुझाएर सबैतिरबाट धर्मप्रति आस्था र विश्वासका साथ स्वधर्मको रक्षा, गुरुकुलीय शिक्षाको चौतर्फी विकास गरी आफ्ना शिष्य, प्रशिष्यहरूलाई देशविदेशमा धर्म प्रचार र सदाचारको पालना गर्न निर्देशन गर्दै २०६८ साल भाद्र शुक्ल द्वितीयाका दिन प्रातः ४:२५ बजे ब्रह्म मुहूर्तमा विवेकाश्रमको प्राङ्गणमा विद्यमान राम मन्दिरअगाडि ॐ कार उच्चारण गर्दै परमपद प्राप्त गर्नुहुने गुरुप्रति श्रद्धासुमन, शब्दगुच्छा अर्पण गर्दछु। शुभम् भवतु। सर्वेषां कल्याणं भवतु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द अधिकारीका विषयमा चलेका किंवदन्ती

✍ हरि मञ्जुश्री

नेपालका प्रथम शिक्षासेवी षडानन्द अधिकारीलाई हामी बालागुरु भन्छौं, आबाल ब्रह्मचारी भन्छौं। उनको वास्तविक नाउँ षडानन हो। उनको सालिक शब्दयात्रा प्रकाशनले बनेपामा स्थापना गरेको छ। उनका बारेमा थुप्रै किंवदन्तीहरू छन्। यहाँ त्यस्ता केही किंवदन्तीहरू म प्रस्तुत गर्न चाहन्छु।

१.षडानन्दलाई केटाकेटीमा खड्ड भनेर बोलाउँथे। उनी गाई चराउन जान्थे। एक दिन गाई चराउन जाँदा उनी पीपलको बोटमुनि बसेछन्। गर्मीको मौसम रहेछ। उनलाई अल्छी लागेछ र निदाएछन्। त्यसै बेला उनका गाई छिमेकीको बारीमा पसेछन् र मकैका बोट खान थालेछन्। आफ्नो बारीमा खड्डका गाईले मकै खाएको देखेर बारीधनी महिलाले गाई धपाइछन्। धपाउँदा उनी पीपलको बोटनेरै पुगिछन्। त्यहाँ उनले षडानन्द निदाइरहेको र उनको शिरलाई नागले फणा फुलाएर ढाकिरहेको देखिछन्। उनी गुहार माग्दै डरले भागिछन् र गाउँलेहरूलाई बोलाएर ल्याइछन्। तर उनीहरूले नाग देखेनछन्। त्यसपछि ती महिलाले षडानन्दलाई देवताको अवतार रहेछ कि क्या हो, नत्र त नागले डस्नुपर्ने भनिछन्। त्यस बेला षडानन्द छ-सात वर्षका रहेछन्।

२.षडानन्द छ-सात वर्षका हुँदा गाईवस्तु चराउन जान्थे। गाईवस्तु चराउने क्रममा एक दिन दिउँसो खाजा खाने बेलामा एउटी दमाईं जातकी महिलाले भुट्ताभुट्तैको मकै खान दिने विचारले षडानन्दलाई 'पटुका थाप, म खाजा दिन्छु' भनिछन्। षडानन्दले पटुका थापेछन्। उनले उनको पटुकामा एक घान मकै हालिदिइछन्। मकैको तातोले पटुका बल्न थालेछ। षडानन्द रुन थालेछन्। उनले षडानन्दलाई फकाइछन् र उनको घरमा गएर तातो मकैले पटुका बलेको घटना सुनाई "खड्ड भाग्यमानी छन्, भोलिपर्सि ठूला मान्छे हुन्छन्, पढ्न पठाउनू, तातो मकैले पटुका बल्नु भनेको राम्रो लक्षण हो" भनिछन्। पछि षडानन्दले दिङ्लामा मन्दिर बनाइसकेपछि नगरा बजाउने काममा तिनै महिलाका सन्तानलाई नियुक्त गरिएछ।

३. षडानन्दका जेठा भिनाजुको नाउँ श्रीकान्त थियो। श्रीकान्तले षडानन्दको बिहे गराइदिन एउटी केटीको कुरा चलाएछन्। उनले षडानन्दलाई गरगहना ल्याउन

✍ *साहित्यकार, अक्षरधाम, बनेपा, काभ्रे*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिङ्ला पठाएछन्। गहना लिएर षडानन्द भिनाजुको घरमा पुगेछन्। त्यसपछि आफ्नी छोरी गर्भेटुहुरा षडानन्दका लागि मागिएको रहेछ भन्ने कुरा केटीका बाबुलाई थाहा भएछ। त्यसपछि केटीका बाबुले श्रीकान्तका छोरालाई भए मात्र छोरी दिने कुरा गरेछन्। श्रीकान्तले निन्याउरो मुख लगाएछन्। त्यो देखेर षडानन्दलाई आफू अपमानित भए जस्तो लागेछ। अनि उनले आजीवन ब्रह्मचारी जीवन बिताउने निश्चय गरेछन्।

४. षडानन्द दिङ्लाबाट दिदीको घर सिम्पानी जान हिँडेछन्। राति ओइराङ भन्ने ठाउँमा श्यामसुन्दर राईको घरमा बास बसेछन्। सपनामा रामचन्द्र भगवान् आएर षडानन्दलाई "अब तिमी पढ्ने कुरामा मात्रै चिन्ता गर" भनेछन्। रामचन्द्र भगवान्ले उनलाई सुनको बुट्टा भरेको दाप भएको चाँदीको खुकुरी पनि दिएछन् र 'यो कसैलाई नदेखाउनू, अब तिमीलाई केही दुःख पर्दैन, तिमी तिरहुतमा गएर पढ' भनेर अन्तर्ध्यान भएछन्। षडानन्द निद्राबाट बिउँझँदा सपनामा पाएको खुकुरी आफ्नै छेउमा रहेको देखेछन्। त्यसपछि त्यही खुकुरी बोकेर दिदीको घरमा नगई सिधै तिरहुततिर लागेछन्।

५.बनारसमा रहँदा षडानन्दका साथी जगन्नाथ घिमिरे रहेछन्। उनले एक दिन षडानन्दको अनुहार अँध्यारो देखेर त्यसको कारण सोधेछन्। षडानन्दले भनेछन् "आज मैले मेरी आमालाई सपनामा देखें। उहाँ बुढी हुनुभएको रहेछ। उहाँ कालसँग सङ्घर्ष गर्दै हुनुहुँदो रहेछ। उहाँले मलाई बोलाउनुभयो। मलाई देखेर खुसीले आँसु झार्नुभयो। उहाँले मलाई माया गरेर म्वाइँ खानुभयो। मैले दिङ्ला जानुपर्ने भयो।" त्यसको भोलिपल्ट षडानन्द दिङ्लाका लागि प्रस्थान गरे। घरमा पुग्दा उनकी आमाको अवस्था उनले सपनामा देखे जस्तै थियो।

६. आमाको वार्षिक कर्म सकिएपछि परिवारबाट षडानन्दलाई विवाह गर्न दबाव दिइयो। उनको विवाहका लागि कपडा किनेर ल्याउन षडानन्द र रामसिंह घर्तीलाई भोजपुर बजार पठाए। भोजपुर बजारमा पुगेर कपडा किनियो। दिङ्ला फर्किनुभन्दा अघिल्लो रातदेखि रामसिंहलाई ज्वरो आयो। "ज्वरो हटेपछि कपडाको पोको लिएर आइज, म जाँदै गर्छु" भनी षडानन्द बिदा भए। उनी दिङ्लातिर नगई जनकपुरतिर लागे। त्यहाँ पुगेर झुटो कुरा बोलेको प्रायश्चित्त गर्न गायत्री माताको उपासना गरे।

७. गोपीकृष्ण दाहाल नाउँका पण्डित हरेक बेलुका षडानन्दको जिउमा मालिस गरिदिँदा रहेछन्। एक दिन उनले षडानन्दका शरीरभरि सेता धर्का देखेछन्। यसका विषयमा उनले षडानन्दसँग सोधेछन्। षडानन्दले भनेछन् 'मैले वाग्मतीको किनारमा तपस्या गर्दा भक्तहरू फलफूल चढाउँथे। ती फलफूल त्यहीं उम्रिन्थे र ठूला-ठूला बोट र लहरा हुन्थे। तिनै लहराले बोटमा जेलिन्थे। त्यस्तो ठाउँमा धमिराले माटो उठाएर मेरो शरीर ढाकिन्थ्यो। म ध्यानबाट उठ्ता ती लहरा र धमिराको माटोलाई मैले पन्छाउनुपर्थ्यो। त्यति बेला धमिरा हिँड्ने गरेका हुनाले मेरो शरीरमा सेता धर्का देखिएका हुन्।

८. षडानन्द काठमाडौंको श्लेष्मान्तक वनमा तपस्या गरेर बसेका बेला उनका छेउमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृगहरू आएर चर्दा रहेछन् र उनैको छेउमा बस्ता रहेछन्। चराहरू उनको काँधमा बस्ता रहेछन्। सेतो रङ्गको एउटा वानर पनि छेउकै रुखमा बस्तो रहेछ। षडानन्द स्नान गर्न निस्केका बेला पारेर त्यो वानर रुखबाट ओर्लंदो रहेछ र हतारहतार राम्रा र मिठा फल टिपेर कुटीको कुनामा राखिदिंदो रहेछ। षडानन्द त्यही फल खाँदा रहेछन्। षडानन्द त्यहाँबाट अन्यत्र जाँदा त्यो वानर, ती मृग र ती चराहरू आँसु खसाल्दै रोएको वरपरका मान्छेहरूले देखेका रहेछन्।

९. श्रीमती ज्योतिराज्यलक्ष्मी राणा एक दिन षडानन्दले तपस्या गरेको श्लेष्मान्तक वनमा सहयोगीसहित फलफूल लिएर पुगिछन्। षडानन्दले उनलाई भेट्न आउनुको कारण सोधेछन्। उनले भनिछन् "मेरा पति बुढा हुनुहुन्छ। उहाँका छोरा नभएकाले मसित बिहे गर्नुभएको हो। मबाट पनि सन्तान भएनन्। मेरो एउटा मात्रै छोरो भइदिए पनि ऊ रोलवाला जर्नेल बनेर एक दिन श्री ३ महाराज बन्ने थियो। त्यसैले म हजुरसँग छोराको भिक्षा माग्न आएकी हुँ। म दासी बनेर हजुरको सेवा गर्नेछु। हजुरको बदनामी हुने छैन।" षडानन्दले ती युवतीलाई यस्तो कुरा नगर्न भनेछन्। उनले श्लेष्मान्तक वन छाड्नुको कारण त्यही रहेछ।

१०.काठमाडौंमै हुँदा एक दिन षडानन्दमा मर्ने विचार आएछ। नभन्दै वाग्मतीमा बाढी पनि आएछ। यही बाढीमा पसेर मर्नुपर्यो भन्ने विचार गरेर उनी वाग्मतीको बाढीमा पसेछन्। तर उनी डुबेनछन्। हातगोडा चिसो पनि नभई नदीको पारि पुगेछन्। फेरि आफ्ना किताब र पूजासामान बोकेर नदीमा पसेछन्। फेरि नदीले डुबाएनछ। उनी नदीको माझमा पुगेपछि आवाज आएछ "हे षडानन्द ! तिमी आत्महत्या नगर। तिमी आफ्नो जन्मभूमि जाऊ र ठूलो कीर्ति राख, त्यसपछि मात्रै वाग्मतीमा आई देह विसर्जन गर।" षडानन्दले वरिपरि हेर्दा पीपलको बोटको हाँगामा बसेको चरोले मनुष्यको बोलीमा त्यो कुरा भनेको थाहा भएछ। त्यसपछि उनी दिङ्ला गएछन् र पाठशाला खोलेछन्।

११.षडानन्दका एक जना शिष्य नारद पाध्या चापागाईं पनि रहेछन्। उनले एक दिन अनौठो सपना देखेछन्। सपनामा एउटा योगीले षडानन्दको खुट्टामा ढोगेछन्। षडानन्दले योगीलाई "तिमी किन आयौ ?" भनी सोधेछन्। योगीले "संसारमा धर्मको नाश भएको हुनाले धर्मको रक्षा गर्न आएको हुँ" भनेछन्। त्यसैको भोलिपल्टदेखि षडानन्दले दिङ्लामा धर्मरक्षा र शिक्षादान गर्न सुरु गरेछन्।

१२. दिङ्लामा एक जना बस्नेतको गाई चर्दाचर्दै जङ्गलमा गएछ। त्यस गाईलाई बाघले खान आँटेछ। गाई ड्वाँ-ड्वाँ कराएछ। गाईको आवाज सुनेर षडानन्दले आफ्नो शक्ति प्रयोग गरेछन् र बाघलाई भगाइदिएछन्।

१३.षडानन्दलाई नन्दिकेश्वर अधिकारीले एक दिन "तपाईं अघिल्लो जन्ममा के हुनुहुन्थ्यो ? यो जन्ममा किन मान्छे भएर आउनुभयो ?" भनेर सोधेछन्। षडानन्दले श्रीमद्भगवद्गीताको कुनै एउटा श्लोक सुनाएर "यो श्लोक १०८ पल्ट जपेर सुत्नू, सपनामा उत्तर पाउँछौ" भनेछन्। नन्दिकेश्वरले त्यो श्लोक १०८ पल्ट जपेर सुत्दा "सत्यलोकमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सनत्कुमार थिए, तिनै त्रेतायुगमा कार्तिकेय, द्वापरयुगमा भीष्म र कलियुगमा षडानन भएका हुन्" भन्ने उत्तर सपनामा पाएछन्।

१४.भगवान् रामचन्द्र षडानन्दलाई सपनामा दर्शन दिइरहँदा रहेछन्। एक रातको सपनामा रामचन्द्रले "कैलाशको डाँडामा बस्न मलाई असुविधा भयो, मेरो मन्दिर सुविधा भएको ठाउँमा सार" भनेछन्। त्यसपछि षडानन्दले रामचन्द्रको मन्दिर अर्को ठाउँमा सारेछन्।

१५.षडानन्द दिङ्लाको गढीगाउँमा पुराण भनिरहेका थिए। त्यसै बेला उनका एक जना साथी त्यहाँ पुगे र उनीसँग आफ्नी छोरीको बिहे गरिदिने प्रस्ताव राखे। त्यस प्रस्तावले आफूलाई अपवित्र पारेको ठानेर षडानन्दले रातभरि धारामा स्नान गरे।

१६.दिङ्लामा भौतिक संरचनाको निर्माण सुरु भएपछि पैसाको ठुलो समस्या उत्पन्न भयो। त्यसै बेला षडानन्दको परीक्षा गर्नका लागि बलभद्र बस्नेत र छोटे बस्नेत सात हजार रूपियाँ सात दिनका लागि सापटी माग्न षडानन्दकहाँ पुगे। उनीहरूलाई देख्नेबित्तिकै षडानन्दले "पैसा माग्न आएछौ, अहिले पैसा सकिएको छ" भने। बलभद्रले भने "हजुर अन्तर्यामी हुनुहुन्छ। मान्छेको अनुहार हेरेरै मनको कुरा बुझ्नुहुन्छ। मलाई सात हजार रूपियाँ दिनुपर्यो। एक हप्तापछि फर्काइदिन्छु।" अनि षडानन्दले पूजाकोठाभित्र पसेर बाहिरका मानिसले सुन्ने गरी भने "जमदार पैसा माग्न आएका छन्, दिऊँ कि नदिऊँ?" त्यसपछि बाहिर आई धोतीमा राखेको पैसा बलभद्रका अगाडि थुपारिदिए। बलभद्रले पैसा लगे, सात दिनपछि फिर्ता गरे र आफूले परीक्षा लिएको भनेर माफी पनि मागे।

१७.नन्दिकेश्वर अधिकारी कामदारलाई पैसा दिन नसकेर छटपटाएका थिए। उनले षडानन्दलाई यो जानकारी दिएपछि षडानन्द मन्दिरभित्र पसे र केही बेरमा धोतीमा पैसा पोको पारेर बाहिर आई नन्दिकेश्वरलाई दिए। मन्दिरभित्र पैसा राख्ने ठाउँ र पैसा थिएन। त्यसैले षडानन्दले तुरुन्तै पैसा ल्याएको देखेर सबै अचम्ममा परे।

१८.जीवनाथ न्यौपानेको घरमा देवीभागवत पुराण लगाइएको थियो। एक दिन भतेरमा भात पाकिसकेपछि मान्छे थपिए। भात नपुग्ने भए पछि फेरि पकाउनुपर्छ भन्ने कुरा उठ्यो। षडानन्दले भतेरको वरिपरि घुमेर "पकाउनु पर्दैन, अझ बढी हुन्छ" भनेछन्। नभन्दै थोरै मान्छेका लागि पकाइएको भात धेरै मान्छेले खाँदा पनि उब्रिएछ।

१९.न्वागी खाने दिन पाठशालामा गाउँलेहरू भेला भएका थिए। पदमबहादुर बस्नेतकी आमा न्वागी बाँड्दै थिइन्। न्वागी नपुग्ने लागेर उनी आत्तिइन् र षडानन्दलाई त्यो कुरा भनिन्। त्यसपछि न्वागीको थाल लिएर षडानन्द आफैं न्वागी बाँड्न थाले। त्यसपछि सबैका लागि न्वागी पुग्यो।

२०.षडानन्द अरुण नदीमा नुहाएर जप गर्न लागेका थिए, पाँच-सात जना लामाहरू उनीसँग भेट्न आइपुगे। तीमध्ये एक जनाले आफूले तिब्बतमा षडानन्दको अलौकिक शक्तिका विषयमा सुनेर भेट्न आएको कुरा बताए र केही अलौकिक कुरा देखाइदिन अनुरोध गरे। उनको अनुरोध स्वीकारेर षडानन्दले अरुण नदीमा पछ्यौरा राखे र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यसमाथि बसी आँखा चिम्लेर जप गर्न लागे। पछ्यौरामाथि बसेर जप गर्दै उनी नदीको पारि पुगे र फेरि त्यसै गरी फर्किए। त्यतिन्जेलमा जप गर्ने कार्य पनि सकियो। लामाहरूले उनको जयजयकार गरे। त्यसपछि लामाहरू तिब्बत फर्किए।

२१.सूर्यग्रहण लागेको बेला ग्रहण नुहाउन नन्दिकेश्वर चापागाईंलाई लिएर षडानन्द अरुण नदीमा पुगेका थिए। ग्रहण नुहाउन नदीको वारिपारि भेला भएका मान्छेको घुइँचो थियो। त्यस बेला षडानन्दले एकपटक पीपलको पातमा बसेर, एकपटक खराउ लगाई उभिएर र एकपटक पानीभित्र अलप भएर अरुण नदी वारपार गर्दै नुहाए। उनले त्यसरी तीनपटक ग्रहण नुहाए।

२२.षडानन्दले १०८ जना वटुकहरूको सामूहिक व्रतबन्ध दिङ्लाको कैलाश डाँडामा आफ्नै खर्चबाट गरिदिँदै थिए। त्यसै बेला आकाशमा मेघगर्जन हुन थाल्यो। एकै छिनमा हुरीबतास र बिजुली चम्किएर वातावरण त्रसित बन्यो। चौरको चारैतिर तोरण टाँगेर वटुकहरूलाई भिक्षादान गरियो। त्यसको नजिकै खानाको व्यवस्था गरिएको थियो। षडानन्दले सबैलाई खाना खाएर जानू भनेका थिए। तर हुरी र वर्षाले घेरिसकेकाले कोलाहल हुन थाल्यो। षडानन्दले ठूलो स्वरले कराएर "तपाईंहरू खाना खाएर मात्रै जानुहोस्, यहाँ पानी पर्दैन, चिन्ता नगर्नुहोस्" भने। नभन्दै चारैतिर मुसलधारे असिनापानी पर्यो तर त्यसै ठाउँमा पानी परेन। सबैले खाना खाए। खाना सकिन लागेपछि षडानन्दलाई जानकारी गराइयो। उनले "चिन्ता गर्नुपर्दैन, सबैलाई खान पुग्छ" भनेर भान्साका सबै खानेकुरा छोइदिए। त्यसपछि सबैलाई खाना पुगेर पनि उब्रियो।

२३.षडानन्द पुराण भन्न पनि जान्थे। उनलाई डोलीमा चढाएर लगिन्थ्यो। उनी हिँड्न खोज्थे, तर भक्तहरू हिँडाउन मान्दैनथे। अनि उनी डोलीमा चढिदिन्थे। तर डोलेहरूलाई अलिकति पनि भारी हुँदैनथ्यो। कहिलेकाहीं षडानन्दलाई डोलीमा बोकेर हिँडेका डोलेहरू पुराण भन्ने ठाउँमा पुगेर डोली बिसाउँथे र षडानन्दलाई डोलीबाट उतार्न खोज्थे। तर षडानन्द डोलीमा हुँदैनथे। उनी डोलेहरूभन्दा पहिल्यै पुगेर व्यासासनमा बसिसकेका हुन्थे।

२४.षडानन्दमा भएको अलौकिक शक्तिको चर्चा सुनेर तिब्बतका एक जना औतारी लामा केही चेलाहरू लिएर दिङ्ला पुगे र चौतारामा बसेर शास्त्रार्थ गर्न चुनौती दिए। षडानन्द पनि चेलाहरूका साथमा त्यही चौतारामा पुगे। आफ्नो शक्ति देखाउने क्रममा औतारी लामाले आफ्नो हातको थुर्पी चौताराको ढुङ्गामा गाडे र त्यो थुर्पी उखेल्न लगाए। षडानन्दले हाँसेर त्यो थुर्पी उखेल्न आफ्ना चेला दण्डपाणि अधिकारीलाई आदेश दिए। दण्डपाणिले त्यो थुर्पी सजिलै उखेलिदिए। त्यसपछि षडानन्दले आफ्नो चिम्टा भुइँमा गाडे र त्यो चिम्टा लामालाई उखेल्न लगाए। तर लामा र शिष्यहरू सबैले बल गर्दा पनि चिम्टा उखेल्न सकेनन्। त्यसपछि लामाले आफूसँग भएको सम्पत्ति षडानन्दलाई चढाए र गोडामा ढोगेर हार स्वीकार गरे।

२५.दिङ्लामा नन्दिकेश्वर अधिकारीले बनाएको पाटीमा फलामको एउटा साङ्लो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हराएछ। त्यो साङ्लो गाउँकै एक जना मान्छेले चोरेको थाहा भएछ। षडानन्दले त्यस चोरलाई भेटेका बेला "तिमीले बदमासी गरेछौ" भनेछन्। त्यसको केही दिनमै त्यस चोरको परिवारका सबै मान्छे मरेछन्।

२६.सिक्किमबाट एउटा विद्यार्थी पढ्नका लागि दिङ्ला पुगेको थियो। सिक्किममा उसका हजुरबुबा जीवनको अन्तिम अवस्थामा पुगेका थिए। उनको इच्छा नै नातिको मुखबाट पुराण सुनेर मर्ने थियो। तर नातिले चाहिँ धेरै पढ्न सकेको थिएन। अन्तिम अवस्थामा पुगेका हजुरबुबाले नातिको मुखबाट पुराण सुन्ने इच्छा प्रकट गरेको सुनेपछि त्यो विद्यार्थी बेहोस भयो। षडानन्दले पानी छर्केर उसलाई होसमा ल्याए र "पुराण भन्न सकेस्" भनेर आशीर्वाद दिई सिक्किम फर्काइदिए। सिक्किम पुगेर उसले हजुरबुबालाई पुराण सुनायो र सिक्किमको ठुलो विद्वान्का रूपमा प्रसिद्धि कमायो।

२७.लप्टन बलबहादुर बस्नेतलाई षडानन्दले शालिग्राम दिएर "सधैं शालिग्रामको जल खानू" भनेका थिए। लप्टनले नियमित रूपमा शालिग्रामको जल खाए। उनले कहिल्यै रोग र आर्थिक अभाव भोग्नुपरेन।

२८.पुष्पलाल अधिकारी सिकिस्त बिरामी भए। उनकी आमा लीलादेवीले राति हतारहतार छोरालाई षडानन्द भएको ठाउँमा पुर्याइन्। षडानन्दले पानी छर्किदिए। पुष्पलाललाई तुरुन्तै निको भयो। त्यसपछि उनी कहिल्यै बिरामी परेनन्।

२९.षडानन्द पूजाकोठामा गई गायत्री माताको पूजा गर्थे। त्यस बेला जहिलेसुकै पनि पूजाकोठाभित्रबाट चुरा बजेको आवाज सुनिन्थ्यो। त्यो आवाज कोठाबाहिरका मान्छेले पनि सुन्थे। षडानन्दले आमा भनेर सम्बोधन गरेको र महिलाले बाबु भनेर सम्बोधन गरेको पनि सुनिन्थ्यो। बाबु भनेर बोलाउने महिलाको स्वर गायत्री माताको थियो भनिन्छ।

३०.सीतारामको मन्दिर बनाउँदा हनुमान्को मूर्तिसमेत भएको कुँदेको खाँबो साङराङबाट ल्याउनुपर्ने थियो। खाँबो बोक्न २० जना लक्का जवान गए। खाँबोलाई डोरीले बाँधेर बोक्न खोज्दा एकातिर उठ्थ्यो, अर्कातिर उठ्तैनथ्यो। जतिसुकै प्रयास गर्दा पनि खाँबो नउठेपछि त्यो कुरा षडानन्दलाई सुनाइयो। षडानन्द त्यो ठाउँमा गए र नउठेको भागपट्टि गएर हातले छोइदिए। उनले छुनासाथ खाँबो उठ्यो र हलुङ्गो पनि भयो।

३१.राणा प्रधानमन्त्री धनकुटामा पुगेको कुरा षडानन्दलाई दिङ्लामा थाहा भएछ। उनले आफ्ना चेलाहरूलाई "तिमीहरू खाना खाएर धनकुटा हिंड, म बिस्तारै जाँदै गर्छु, राणा प्रधानमन्त्रीले ५ सय रूपियाँ दिन्छन्, त्यो लिएर आउनुपर्छ" भनेछन्। त्यति बेला चाँदीका रूपियाँ हुन्थे, नोट हुँदैनथे। त्यसैले एक जनालाई ५ सय रूपियाँ बोक्न गाह्रो पर्थ्यो। षडानन्द हिंडेको केही समयपछि उनका चेलाहरू पनि हिंडेछन्। उनीहरू पाखिबास पुग्दा षडानन्द ५ सय रूपियाँको भारी छेउमा राखेर रुखको छहारीमा बसिरहेका रहेछन्। षडानन्द कतिखेर धनकुटा पुगे, कतिखेर राणा प्रधानमन्त्रीलाई भेटे,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कतिखेर रूपियाँ लिए, त्यसमा पनि ठ्याक्कै ५ सय रूपियाँ कसरी पाए, त्यत्रो बोरा कसरी बोके, कतिखेर धनकुटाबाट पाख्रिबास आइपुगे भनेर सबै छक्क परेछन्।

३२.षडानन्द दिङ्लाबाट काठमाडौं आउँदा पहिले वराह क्षेत्रमा पुग्थे, त्यहाँ भएको सुरुङमा पस्थे र काठमाडौं पशुपतिनाथको परिसरमा रहेको वासुकी मन्दिरनेरको सुरुङबाट निस्कन्थे, अनि पशुपतिनाथको चन्दन लगाएर अन्यत्र लाग्थे।

३३.दिङ्लाबाट काठमाडौं गएपछि षडानन्द पचलीघाटमा बसे। एक दिन उनी शिष्यहरूलाई ज्ञानगुनका कुरा सुनाइरहेका थिए। अकस्मात् उनको दौराको बाहुलो भिज्यो र उनले बाहुलो निचोरेर पानी फाले। त्यो देखेर एक जनाले सोधे "पानी नै नभई तपाईंको बाहुलो कसरी भिज्यो ?" षडानन्दले भने "समुद्रमा जहाज डुब्न आँट्यो, त्यसलाई डुब्न नदिन खोज्दा भिजेको हो।" शिष्यहरू छक्क परे। यो कुरा दरबारसम्म पुग्यो। कुरा बुझ्दा त्यही दिनको त्यही समयमा बम्बईको बन्दरगाहमा जहाज डुबेको कुरा थाहा भयो। त्यसपछि दरबारमा षडानन्दले ठूलो सम्मान पाए।

३४.काठमाडौंमै हुँदा उनले देह विसर्जन गर्ने विचार गरे। त्यसपछि उनले कालिमाटी बस्ने तेजप्रसाद लुइँटेल नामका योगीलाई आफूले पूजा गर्ने गरेको शालिग्राम भिक्षाका रूपमा दिए। त्यसको २१ औं दिन षडानन्दको निधन भयो।

यी किंवदन्तीहरूले षडानन्द अधिकारीको व्यक्तित्व र कर्तृत्वका बारेमा धेरै जानकारी दिन्छन् भन्ने मलाई लाग्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य परम्पराका सिद्ध माताहरू

✍ घनश्याम ओली

कलियुगमा मनुष्यहरूको चिन्तन कमजोर हुन्छ। आहार, विहार, विचार, शुद्धतामा कमी हुन्छ। धर्मको रक्षा गर्न छोडेपछि हिंसा बढ्छ, पाप बढ्छ, अनि सङ्कट आइपर्छ। मान्छेको जन्म उसको कर्म र संस्कारअनुसार हुन्छ। पूर्वजुनिमा जस्तो कर्म गरेको छ, त्यही कर्मको फल भोग्नुपर्छ। राम्रो कुलमा, राम्रो संस्कारमा, राम्रो परिवारमा जन्मेको र सत्गुरुको शिक्षादीक्षा पाएको मान्छेले अवश्य राम्रो चिन्तन गर्छ। आत्माको अनुसन्धान नै अध्यात्मक हो। आफ्नो मनोभूमिमा लुकेर बसेको जन्म जन्मान्तरको कुसंस्कारलाई उखेर फाल्नु नै अध्यात्म चिन्तन हो। ईश्वरीय सद्गुणलाई श्रद्धा र भक्तिपूर्वक चिन्तन गर्नुपर्छ। मनुष्य जीवनरूपी तीर्थलाई नर्क बनाउनु हुँदैन। भगवान श्रद्धारूपी घरमा बस्नुहुन्छ। त्यसैले जसले श्रद्धा र भक्तिपूर्वक भगवानको भक्ति गर्छ, भगवान उसैको प्रिय बन्नुहुन्छ। शरीरको खुराक संसारको वस्तु हो भने आत्माको खुराक परमात्माको चिन्तन हो। भगवानले तिमीलाई जस्तो मन पर्छ त्यस्तै स्वरूपको ध्यान गर भन्नुभएको छ। आत्मा र परमात्माको बीचमा रहेको सेतु नै मन हो। यही मनलाई नियन्त्रण गरेर परमात्माको चिन्तन गर्नु ठूलो अभ्यास हो। यही अध्यात्म चिन्तनमा, यही तपस्यामा, यही ध्यान र योगमा जीवन उत्सर्ग गरेर आफ्नो स्वरूपमा प्राप्त गर्नुभएका सम्भव भएसम्मका केही मातृशक्तिहरूको यहाँ छोटो चर्चा गरिएको छ :

देवका गुरागाईं

पिता जीवनाथ अधिकारी तथा माता शिवमाया अधिकारीकी सुपुत्रीका रूपमा पाँचथर एकतीन (हिरूवादिन) मा जन्मिनुभएकी देवका गुरागारईं भगवान्की अनन्य भक्त हुनुहुन्थ्यो। उहाँको ताप्लेजुङ हिरुवादिनका केदार गुरागाईका साथ विवाह भएको थियो। श्रीमान् केदार गुरागाईं बिहे गरेको १ वर्षदेखि नै हराउनुभयो। ३० वर्षपछि आउनुभयो। यसै बीचमा माताजी बिरामी पर्नुभयो। उहाँ सिधा उभिन सक्नुहुन्नथ्यो। उहाँ कुँजिनुभएको थियो। माताजीकी आमाले उहाँलाई त्यस बेला स्वर्गद्वारी प्रभुमहाराजकहाँ लिएर जानुभयो। "यो मेरी छोरी बिरामी छे। यसका सन्तान पनि भएनन्। साह्रै चिन्ता लाग्यो महाराज" भनेर बिन्ती बिसाउँदा प्रभु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाराजले खै के भएको छ भनेर दुखेको ठाउँमा स्पर्श गरिदिनुभएछ। गुरुमहाराजले स्पर्श गर्नासाथ उहाँ पूर्ववत् स्वस्थ हुनुभयो। अनि यिनका २ जना छोरा हुन्छन् चिन्ता नलिनू भन्नुभएको रहेछ। नभन्दै पछि माताजीका कुलप्रसाद र पर्शुराम भन्ने २ जना छोरा भए। पति पछि फेरि हराउनुभयो। यही विरक्तिबाट महतारी भगवद् चिन्तनमा लाग्नुभयो। त्यतिबेला प्रभुमहाराजले यिनले भजन गर्छिन्, कीर्तन गर्छिन् भगवानको जप साधना गर्छिन् भन्नुभएको थियो। स्वर्गद्वारी महाप्रभुले भन्नुभएको कुरा पछि आएर सार्थक भयो। हराएका उहाँका पति धेरै कालसम्म फेला नपरेको हुँदा अब पक्कै जीवित छैनन् भन्ने हिसाबले शास्त्रोक्त विधिअनुसार उहाँका पतिको पनि अन्त्येष्टि गरिएको थियो।

२०२८ सालदेखि नै म माताजीसँगको सत्सङ्गमा निरन्तर थिएँ। ०३८ सालदेखि देवका माता कन्काई माईमा निरन्तर साधनारत हुनुभयो। उहाँ सिद्ध माता हुनुहुन्थ्यो। जहिले पनि साधनारत हुनुहुन्थ्यो। बाहिरबाट हेर्दा उहाँ सामान्य देखिए पनि अन्तरंगमा उहाँ सिद्ध हुनुहुन्थ्यो। उहाँको बाहिरी संसारसँग कुनै सम्बन्ध थिएन। उहाँ अन्तरंगमै रमाइरहनुहुन्थ्यो। उहाँलाई समाधि लागेको मैले धेरै पटक पाएको छु। उहाँ थोरै बोल्ने स्वभावकी हुनुहुन्थ्यो। आफूले कर्म गर्ने मात्र हो फलको आशा गर्नु हुँदैन भन्नुहुन्थ्यो। उहाँका आशीर्वचन यस्तै थिए। देवका माताका अनन्य भक्त घनश्याम कडरिया भन्नुहुन्छ।

महेश्वरा माता

पिता रामलाल र पद्मा मैनालीकी सुपुत्रीका रूपमा सुभाङको कागतेमा जन्मिनुभएकी महेश्वरा कडरिया –धाराघरे) प्रतिमन कडरियाकी धर्मपत्नी हुनुहुन्थ्यो। उहाँ सुभाङ गुरु, जोगानन्द गुरु, विवेकानन्द गुरुहरूकै सत्सङ्गमा हुनुहुन्थ्यो। गुरुहरूले नै उहाँलाई सिद्ध माता भन्नुभएको थियो। उहाँको पूर्व संस्कारले नै यसरी साधनारत हुनुभएको कुरा उहाँका साहिँला छोरा घनश्याम कडरियाले प्रसङ्गमा बताउनुभएको हो। उहाँको समाधि कुन बेला लाग्छ भन्ने पत्तै हुँदैनथ्यो। पूजा कोठामा बस्दा, आसनमा बस्दा, बारीमा मकै भाँच्न जाँदा जुनसुकै बेला समाधि लागेको कुरा प्रतिमन कडरियाले भन्नुहुन्थ्यो। उहाँ संसार सपना हो, विकार हो। संसारमा अलमलिएर केही फाइदा छैन। भगवानको भक्ति गर्नुपर्छ भन्नुहुन्थ्यो। एकपटक उहाँका बुबा उहाँलाई भेट्न आउनुभएको रहेछ। तर माताजी समाधिमा हुनुहुँदो रहेछ। त्यो कुरा बुबालाई थाहा भएनछ। उहाँले पछि "तँ त निकै ठूली मान्छे भइछेस्। म घरमा आउँदा पनि तँ ध्यान गरेर बसिरहने ? मेरो वास्तै नगर्ने" भन्नुभएछ। माताजीले बुबा मैले केही थाहा पाइन भन्नुभएछ। यस्ता अनेकौं घटनाहरू महेश्वरा माताजीको जीवनमा पनि घटेका छन्। पछि उहाँ तराई झर्ने क्रममा झापाको बुधबारेमा केही समय व्यतित गर्नुभयो र पछि २०१७ साल असार ४ गते उहाँले परमगति प्राप्त गर्नुभएको हो। त्यो कुरा सुभाङ गुरुले १ वर्षअघि नै घोषणा गर्नुभएको रहेछ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदमाया गुरागाईं

यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) की ९ वटी छोरीमध्ये काहिंली छोरी हुनुहुन्थ्यो वेदमाया। उहाँको जन्म १९७३ सालमा पाँचथरको सुभाङमा भएको थियो। उहाँको ताप्लेजुङ हिरुवादिनका नन्दलाल गुरागाईंसँग विवाह भएको थियो। उहाँ देवका गुरागाईंकी देउरानी हुनुहुन्थ्यो। २०४५ सालतिर पतिको स्वर्गारोहण भएपछि उहाँ ०४६ सालतिर झापाको कन्काई माईमा आएर बस्न थाल्नुभएको थियो। जीवनको अन्तिम घडीसम्म पनि उहाँ मेरो जप पुग्या छैन भनेर ध्यानमा नै बस्नुहुन्थ्यो। उहाँलाई खानको कुनै वास्ता थिएन। उहाँले भोजन ध्यानबाट छुटेपछि कति बेला भोक लाग्छ, त्यतिबेला खानुहुन्थ्यो। खानाको कुनै समय थिएन। उहाँ जतिबेला पनि भगवानकै भजन गर्नुहुन्थ्यो भन्ने कुरा उहाँकै छोरी रेणुका (गुरागाईं) घिमिरेले बताउनुभएको हो। उहाँ देवका मातासँगै माईमै बस्नुभएको थियो। उहाँ पनि माईमै आफ्नो स्वरूपमा प्राप्त हुनुभयो। उहाँ जातिस्मरण सिद्ध माता हुनुहुन्थ्यो भनेर उहाँलाई राम्ररी अध्ययन गर्नुभएका गुरुहरू, उहाँका अनन्य भक्तहरूले बताउनुहुन्थ्यो।

सावित्रादेवी खरेल

शिवाकोटीकी छोरी सावित्रादेवी खरेल भक्ति माता हुनुहुन्थ्यो। उहाँको तपस्या, ध्यान, भगवद्भक्ति बाह्य रूपमा कसैले थाहै नपाइने अन्तरंगमा ध्यानस्त हुनुहुँदो रहेछ। एकपटक प्रतिमन कडरिया र सुभाङ गुरु यज्ञनिधि रेग्मी तिनै माताको घर नजिकै पुग्नुभएछ। सुभाङ गुरुलाई कता कता त्यो घरमा जान मन लागेछ। पानी प्यास लागेजस्तो भयो, प्रतिमनजी त्यो घरमा पानी खान जाऔं है भन्नुभएछ। त्यहाँ जाँदा गुरुले केही शक्ति, केही प्रकाशको झझल्को पाउनुभएछ। त्यस घरको एउटा कुनामा तिनै माता तपस्यामा लीन हुनुभएको पाउनुभएछ। गुरुलाई त त्यो कुराको पूर्वसङ्केत नै भइसकेको रहेछ। तर पनि प्रत्यक्ष गएर भेट्न मन भएछ। पानी प्यास लागेर आएको पानी खाउँ न है भन्नुभएछ। माता ध्यानबाट उठेर गुरुहरूलाई पानी दिनुभएछ। पछि चिया बनाएर दिनुभएछ। त्यो चिया कस्तो थियो रे भने त्यस्तो मीठो चिया न कहिले खाएको थियो, न फेरि खान पाइन्छ भनेर गुरुहरूले नै भन्नुभएको कुरा मामा घनश्याम कडरिया तथा मेरी आमा दिव्यश्वरी ओलीले पनि मलाई सुनाउनुभएको हो।

यस्तै आद्य शंकराचार्य गुरु परम्पराअनुसार पूर्वको स्वर्गद्वारी मानिने शय्याचल पर्वत भुवनेश्वरी धाम तेजपुञ्ज सप्तर्षि गुफाको सेरोफेरोमा रहेर तपस्या गर्ने तपस्वी भक्ति माताहरूमा वत्सला पौड्याल (खाल्डे), शारदादेवी पौड्याल, नर्वदादेवी पौड्याल, यशोदादेवी कडरिया (डाँडाघरे), डम्बरकुमारी तिम्सिना (थर्पु), तिलरूपा तिम्सिना (मालबाँसे), डम्बरकुमारी तिम्सिना (मालबाँसे), माधवा संग्रौला (सुभाङ), वनमाता (जोरपोखरी), मुक्तानन्द गिरि माता (खुँगा), हिमा गिरि (माईधार) हुनुहुन्छ भन्ने कुरा जगन्नाथ पौडेलजीबाट जानकारी भएको हो।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्मरण
खण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

✍ स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती

दुर्लभं त्रयमेवैतद् देवानुग्रहहेतुकम्। मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः।

परमात्माको अहैतुकी कृपाद्वारा यस सृष्टिमा जीवात्मालाई अमूल्य मानव तन प्राप्त हुन्छ। अनेकौं जन्ममा गरिएका पुण्यका परिपाकले गर्दा मनुष्यको मनमा विवेक जाग्रत हुन्छ। त्यो विवेकरूपी दृष्टिद्वारा संसारको यथार्थतालाई जानेर बुझेर ईश्वराश्रित हुन पुग्छ, पूर्वसंस्कारनुसार कोही मनुष्य प्रवृत्तिमार्गको आश्रय लिन्छन् त कोही निवृत्तिमार्गको। तर दुवै मार्गद्वारा प्राप्तव्य, ध्येय वस्तुतः एउटै हो।

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एवं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति। (गीता)

कसैको कर्मयोगमा निष्ठा त कसैको ज्ञानयोगमा निष्ठा। आफ्नो रुचि र पूर्वप्रवृत्तिअनुसार साधक साधनामार्गमा तत्पर हुन्छ, यस्तै आफ्नो जीवनधारालाई पूर्णरूपेण अध्यात्ममार्गमा अर्थात् निवृत्तिमार्गमा समर्पित गर्नुभएका नेपाल राष्ट्रका सपुत, उत्कृष्ट सिद्ध महापुरुष दुई दाजुभाइ स्वामी योगानन्द गिरि र विवेकानन्द पुरीजी महाराज हुनुहुन्थ्यो। उहाँहरूको व्यक्तित्वमा अध्यात्म, साहस, विवेक, वैराग्य, आत्मसन्तुलन, शान्ति, दान्ति, प्रशान्ति आत्मानुभूति स्पष्ट झल्किन्थ्यो। अहिलेको युगमा यस्ता उच्च परिपक्व योगनिष्ठ, विवेक-विज्ञाननिष्ठ व्यक्तित्व विरलै पाइन्छन्।

उहाँहरूको तपोमय, साधनामय जीवन मानव मात्रका लागि अत्यन्त उपयोगी, अनुसरणीय सर्वोत्कृष्ट प्रेरणादायी छ। सन्तद्वय योगानन्द गिरि र स्वामी विवेकानन्द पुरीजीको जीवनको पूर्वार्द्ध पनि *सर्वजन हिताय च सर्वजन सुखाय च* रह्यो भन्ने सुनेको थिएँ मैले। जीवनको पूर्वार्द्धमा नै उहाँहरू योगसिद्ध एवं गायत्रीसिद्ध महापुरुष हुनुहुन्थ्यो। दुवै स्वामीजीहरूसँग मेरो भेट भारतको उत्तराखण्ड उत्तरकाशीमा भएको थियो। मैले भेट्दा सन्तद्वय सन्न्यस्त भई जीवनको उत्तरार्द्धमा प्रवेश गरिसक्नुभएको थियो र पूर्णत्व उपलब्ध भई सिद्धावस्थामा अवस्थित हुनुहुन्थ्यो। त्यतिखेर म नैष्ठिक ब्रह्मचारीको अवस्थामा थिएँ। कैलाश आश्रम उजेलीमा पुजारी थिएँ। म पुजारी भएका बेला आफ्नो तुच्छ सीमित

✍ पीठाधीश, अभय वेदान्त साधना कुटी, देवघाटधाम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहन्ता तथा अध्यासहरूबाट माथि उठेर अपेक्षाकृत स्वस्थ र दिव्य आध्यात्मिक जीवन जिउने योगसिद्ध महापुरुष स्वामी योगानन्द गिरिजी महाराज मन्दिर दर्शन गर्नका लागि आउनुहुन्थ्यो। म त्यति बेला पञ्चाक्षर महामन्त्रको अनुष्ठानमा थिएँ। मेरो प्रेम, जपनिष्ठा, ईश्वरानुरक्ति देखेर योगानन्द स्वामीजीले प्रसन्न मुद्रामा भन्नुहुन्थ्यो- स्याबास्, ब्रह्मचारीजी यसरी नै जपमा शिवभक्तिमा एकनिष्ठ भएर लाग, ईश्वरप्रसाद प्राप्त हुन्छ। आफ्नो श्वास-प्रश्वासमा मन्त्रको जप गर भनेर सत्प्रेरणा दिनुहुन्थ्यो। साधुसन्त स्वभावतः दयालु परहितैषी हुन्छन्, सबैसँग उनीहरूको निःस्वार्थ अलौकिक प्रेम हुन्छ।

भूतानां देवचरितं सुखाय च दुखाय च।
सुखायैव हि साधूनां साधवो दीनवत्सलाः (भागवत)

भूत प्राणीहरूका लागि देवताका लीलाचरित्र कहिले सुखको निमित्त बन्छ त कहिले दुःखको। तर सन्तचरित्र सदासर्वदा सबैका लागि हितपरक एवं सुखको कारण बन्छ। पूर्व-पूर्व जन्महरूमा आफ्नो सत्प्रयासद्वारा जो साधना र सत्कर्म गरिएका हुन्छन्, तिनै सत्कर्मका पुञ्जीभूत परिणति यो जीवनमा ईश्वरकृपा, सद्गुरुकृपा एवं सन्तकृपाका रूपमा प्रकट हुन्छन्। परमेश्वरमा पाँच शक्तिहरू हुन्छन्: (१) सृष्टि शक्ति (२) पालन शक्ति (३) संहार शक्ति (४) निग्रह शक्ति र (५) अनुग्रह शक्ति। यी पाँच शक्तिमध्ये सन्त परमात्माका अनुग्रह शक्ति अर्थात् अनुग्रहमूर्ति हुन्। त्यस्ता विरक्त सन्त जसका माथि कृपादृष्टिले हेर्छन् त्यो व्यक्तिका सम्पूर्ण कल्मषहरू ध्वस्त भएर ऊ निष्पाप बन्छ।

अब प्रबुद्ध स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजसँगको भेटघाटको प्रसङ्ग। विवेक अर्थात् सम्यक् जागरण। विवेक ईश्वरीय वरदानको रूपमा कसैलाई प्राप्त हुँदैन। स्वयं मनुष्यलाई नै पुरुषार्थद्वारा ईश्वर प्रदत्त बुद्धिको सदुपयोग गरेर आफ्नो विवेक जाग्रह गर्नु पर्छ। एकपटक हाम्रो विवेकशक्ति जाग्रत भयो भने हामीलाई सत् असत्को भेद बुझ्नमा आउँछ। सद्सद् वस्तु केलाउने छुट्याउने कला आउँछ, अनि हाम्रो सत् अर्थात् आत्माको, असत् अर्थात् अनात्माको तादात्म्याध्यास हट्दै जान्छ। अहिलेसम्म हामीमा विवेकको कमीले गर्दा अनात्मामा आत्माको अध्यास र आत्मामा अनात्माको अध्यास अर्थात् स्वरूपाध्यास र संसर्गाध्यास भइरहेको छ।

अनात्मनः स्वरूपाध्यासः आत्मनि। आत्मनः संसर्गाध्यासः अनात्मनि। । अविवेकको कारणले गर्दा जो म हुँ त्यसलाई जान्दैनौं जो म होइन त्यो कर्मज (स्थूल शरीर) भुमज (सूक्ष्म शरीर) शरीरहरूलाई म मानिरहेका छौं। यही कुरालाई भगवत्पाद शङ्कराचार्य स्वामीले ब्रह्मसूत्रको अध्यास भाष्यमा उल्लेख गर्नुभएको छ।

अतस्मिन् तद्बुद्धि इति अध्यासः आत्मा-अनात्माको सम्यक् विवेकद्वारा नै यो अपरोक्षानुभूति सुलभ हुन्छ। पूर्ववासना एवं अभ्यासको कारण हामीलाई बारम्बार प्रकृतिका आवरणहरूसँग तादात्म्यभाव स्थापित भइरहन्छ। तसर्थ हामीमा सततः जागरण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र विवेक हुनु पर्छ।

यस्तै नीरक्षीरवत् सद्विवेकसम्पन्न व्यक्तित्व जीवनको सर्वोच्च लक्ष्यलाई प्राप्त गर्ने मार्गमा आउनेवाला विघ्नबाधाहरूलाई धैर्यतापूर्वक उपेक्षा एवं प्रसन्न चित्तपूर्वक सहन गर्ने असीमित मानसिक क्षमतासम्पन्न सिद्धपुरुष हुनुहुन्थ्यो स्वामी श्रीविवेकानन्द पुरीजी महाराज। उत्तरकाशीभन्दा ६ किलोमिटरअगाडि गवाना नामको गाउँ छ, त्यहाँबाट ६ किलोमिटर माथि ठाडो उकालो हुँदै ऐना देवीको मन्दिर छ। मेरो गुरुदेव कैलाश आश्रमका पीठाधीश्वरसँग व्याकरण पढ्ने बेलामा अनध्यायको दिनमा अर्थात् त्रयोदशी, चतुर्दशी, औंसी र प्रतिपदाका दिनमा पहाड गुफा एकान्तको खोजीमा जङ्गल-पर्वत घुम्नुहुन्थ्यो। गवानादेखि माथिको पर्वतमा घुम्दाघुम्दै एउटा ४ भुजावाली देवीको कालो मूर्ति भेट्टाउनुभयो।

पूज्य गुरुदेव रामानन्द सरस्वतीजी महाराज श्रीविद्याका उत्कृष्ट उपासक हुनुहुन्थ्यो। मूर्तिका लागि मन्दिर बनाउने सोचेर ढुङ्गाको छाना मन्दिर जस्तो बनाएर राख्नुभयो र तल झर्नुभयो उत्तरकाशीमा। ऋषिकेशका शिवानन्द महाराजका शिष्य प्रेमानन्दजीसँग गवानामा गुरुदेवसँग भेट भयो। गुरुदेवले भन्नुभयो- एकान्त बस्न चाहन्छौ प्रेमानन्द? जाऊ ऐनादेवी पर्वतमा मन्दिर बनाऊ र बस, म पनि आउँछु कहिलेकाहीं। प्रेमानन्द गए, मन्दिर र बस्ने कुटी बनाए। तल गवानामा प्रेमानन्दको कुटीछेउमा पूज्य स्वामी विवेकानन्दजी बस्नुहुन्थ्यो। म पनि त्यहीं थिएँ। विवेकानन्द स्वामीले मसँग सोध्नुभयो- 'तपाईंका गुरुजी कस्ता हुनुहुन्छ? मैले भनें- ओहो ! मेरा गुरुदेव त साक्षात् महादेव हुनुहुन्छ, दयालु, दीनवत्सल, भनेर म ऐनादेवी आएँ। तीन दिनपछि स्वामी विवेकानन्द पनि ऐनादेवी पुग्नुभयो। स्वामी विवेकानन्दसँग एउटा प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहेछन्।

१५-१६ वर्षको उमेर थियो। उनलाई पूरै शुक्ल यजुर्वेद याद थियो। उनलाई भागवतको वेदस्तुति पनि याद थियो। स्वामी विवेकानन्दको इच्छा रहेछ- कोही सुयोग्य सद्गुरुको हातमा त्यस विद्यार्थीलाई सुम्पिदिने। संयोगवश मेरा गुरुदेव पनि आइपुग्नुभयो ऐनादेवीमा। स्वामी विवेकानन्दले नमोनारायण गर्दै गुरुदेवसँग भन्नुभयो- महाराज शरीर रुग्ण (रोगी) भयो। यसलाई पराधीनमा राखेर अरूलाई कष्ट दिनुभन्दा गङ्गा मैयालाई सुम्पिदिन चाहन्छु। यी ब्रह्मचारी हजुरलाई भनेर ब्रह्मचारीको हात गुरुजीको हातमा राखिदिनुभयो। गुरुदेवले ती विद्यार्थीलाई लगेर संस्कृत विद्यालय बनारसमा राखिदिनुभयो। त्यसपछि स्वामी विवेकानन्द महाराजले आफ्ना गुरु स्वामी प्रेम पुरीजीसँग आएर भन्नुभयो- मेरो चेलो भएर मभन्दा पहिला जान्छस्? विवेकानन्दजीले भन्नुभयो- गुरुदेव! एक दिन त छोड्नुपर्छ नै शरीर हाँसेर छोडौं अथवा रोएर। होस रहँदै पूर्ण जागृतिमा सहजावस्थामा शरीर छोड्नुको बेग्लै आनन्द हुन्छ। प्रयोजन पूरा भयो, शरीरमा आउनेको। अब रोगी भयो राख्न ठिक छैन। आज्ञा दिनुहोस्। प्रेम पुरीजीले भन्नुभयो- जाऊ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिमी, ६ महिनापछि म पनि आउँछु। शरीरभन्दा आफूलाई बेग्लै अनुभव गरेपछि कति सहज हुँदो रहेछ शरीर छोड्न। यसमा यी गुरु चेलाको ज्वलन्त उदाहरण हो।

अब स्वामी विवेकानन्दजीले गुरुलाई नमोनारायण गर्नुभयो। आश्रमका अन्य सन्तहरूलाई नमोनारायण भन्दै यो देहरूपी पुष्पलाई हाँसी-हाँसी प्रफुल्लित मुद्रामा सबैले हेर्दाहेर्दै कैलाश आश्रमदेखि तल रहेकी ब्रह्मद्रवस्वरूपा गङ्गाजीमा समर्पित गरिदिनुभयो। ठिक ६ महिनापछि उहाँका गुरुदेव प्रेम पुरीजी महाराजले पनि सबैसँग बिदा माग्दै मैले शिष्यलाई भनेको थिएँ- ६ महिनापछि म पनि आउँछु भनेर अब म पनि जान्छु। सबैलाई नमोनारायण गर्दै जुन ठाउँबाट शिष्य विवेकानन्द गङ्गाजीमा प्रवेश गर्नुभएको थियो, त्यही ठाउँबाट प्रेम पुरीजी महाराज पनि प्रसन्न मुद्रामा प्रवेश गर्नुभयो। धन्य हुनुहुन्छ। कृतकृत्य हुनुहुन्छ उहाँहरू। आजको समयमा आत्मोद्धारको उदात्त पथमा प्रवृत्त हुनु साँच्चै नै दुर्लभ छ, कठिन छ। सितिमिति कोही लाग्दै लाग्दैनन्, लागे पनि कोही बुझ्दै बुझ्दैनन्। बुझे पनि कोही जाग्दै जाग्दैनन्। जागे पनि कोही पुग्दै पुग्दैनन्।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति। (ईशोपनिषद्)
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये (श्रीकृष्ण गीता ७.३)

गुरुको सान्निध्यमा जानु मात्र एक औपचारिकता होइन। शिष्यको मनोवृत्ति कस्तो छ, यसको अत्यधिक महत्त्व छ, जसको हृदयमा गुरूप्रति अटुट श्रद्धा छ शरणागतिको भाव एवं गुरुको वचनमा अप्रतिम विश्वास छ। त्यस्ता शिष्यको हृदयमा गुरूप्रदत्त ज्ञान पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित हुन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुआज्ञा शिरोधार्य गरिरहेको छु

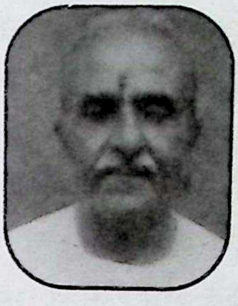

✍ पं. बद्रीशरण खतिवडा

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः।

परमादरणीय, प्रातःस्मरणीय, श्रद्धेय श्री गुरुवरका चरणकमलमा सदासर्वदा वन्दन, नमन गर्दै गुरुआज्ञाको पालना गर्ने शक्ति, धैर्य सधैं बनिरहोस्। यही आशाका साथ गुरुका केही उपदेशहरूको उल्लेख गर्ने जमर्को गरिरहेको छु। हुन त मैले सम्पूर्ण जीवनभरि प्रयत्न गरे पनि पूर्ण हुन नसक्ने कार्य हो, तर पनि कुनै कुनै प्रसङ्गमा उपदेशलाई उजागर गर्नु मानव समाज, संस्कृति, इतिहासका लागि अत्यन्तै प्रेरणास्पद र अनिवार्य पनि हुन्छ भन्ने धारणा राख्छु।

परम श्रद्धेय गुरु देवीप्रसाद पौड्यालजीसँग मेरो परिचय अत्यन्त बाल्यावस्थादेखि नै भएको हो। उहाँको स्वभाव अरू सबैलाई अत्यन्तै अनौठो लाग्थ्यो। सबैले उहाँलाई उन्मत्त पौड्याल भनेर जान्दथे। तर मलाई चाहिँ उहाँको विशेष कृपा भएकाले होला म सरल स्वभावकै मान्थें। मेरो ५ वर्षको उमेर छँदा उहाँकै ज्येष्ठ पुत्र मचिन्द्रनाथ र म सँगै अध्ययन गर्थ्यौं, त्यसै बेला सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती कण्ठस्थ सुनाउन सकेकाले गर्दा गुरुले मलाई 'देउता' भन्ने सम्बोधन गर्नुहुन्थ्यो। ८ वर्षको मेरो उमेर हुँदा हामी अझै नजिक छिमेकी भएर बस्ने सौभाग्य मिल्यो र ६ महिनामै सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी गोठ बसेकै ठाउँमा सिटा बाली बाली मलाई अध्ययन गराउनुभयो।

१४ वर्षको उमेरमा ओझा गुरुसँग लघुकौमुदी आरम्भ गर्ने अवसर पर्यो। तर ओझा गुरुका धेरै यजमान साथै उहाँको ससुराल टाढा भएको हुनाले लामो समयसम्म गुरुको सान्निध्य पाउन धेरै साह्रो पर्थ्यो। मेरो समय व्यतीत भए जस्तो अनुभव गरी गुरु देवीप्रसादजी जब श्री १०८ स्वामी विवेकानन्दजी महाराज बन्नुभयो त्यसै बेला उहाँले मलाई 'देउता' तिमी टेकनाथ पण्डितजीसँग गएर अध्ययन गर्नू भनी आज्ञा भयो। यसैले मलाई उहाँको व्यवहार अति नै प्रिय लाग्थ्यो। अन्य सामान्य गाउँबासीहरूका लागि उहाँ विचित्र नै हुनुहुन्थ्यो। किनकि धेरै छोरीहरूपछि दुई भाइ छोरा थिए, जेठा मचिन्द्रनाथले आफ्नो

✍ वैदिक सनातन धर्म प्रचारक, चारहजारे, मणिपुर, भारत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्ययन अलि माथि पुर्याएपछि आफ्नै घरमा छोरालाई पुराण भनाउन प्रारम्भ गर्नुपर्यो भन्ने विचार गरी सबै तयारी गरिसकेका बेला पढ्न गएको छोरा पण्डित बनी आउने बेलामा छोराका सहपाठी विद्यार्थीले छोराको बिरामीका कारण निधन भएको खबर सुन्नुपर्यो। यस खबरले सारा परिवारलगायत सम्पूर्ण गाउँबासी अत्यन्त दुःखी थिए। सबै भेला हुने, रुने गरेको हुनाले त्यस बेला गुरुले सबैलाई सम्झाई रुन दिनुभएन। त्यस्तै अन्य पनि विविध अवसरमा उहाँको व्यवहार अलि भिन्न देखेर होला उहाँलाई उन्मत्तको संज्ञा गाउँलेहरू दिने गर्थे। गुरुका कान्छा छोराको पनि अल्पायुमै निधन भयो।

गुरु देवीप्रसादजीले जब मलाई टेकनाथजीका सान्निध्यमा गएर अध्ययन गर्ने आज्ञा भयो तब म गुरु टेकनाथजीसँग गएँ। गुरु टेकनाथजीले अरू विद्यार्थीहरू सँगसँगै मलाई पनि पढाउन थाल्नुभयो। केही समयदेखि नै गौतम गुरुले मलाई आफ्ना यजमानका घरमा बास बस्दै जानुपर्दा सँगै लिएर जान थाल्नुभयो। सर्वदा मलाई सँगै राखेर निरन्तर अध्यापन गराउनुहुन्थ्यो। गुरुको यस्तो माया (कृपा) पाएर मेरो पढाइ अति राम्रोसँग चलिरहेको थियो। त्यसै बेला हामी ६-७ जना विद्यार्थीहरू मिलेर गुरुआज्ञा लिएर अध्ययनकै सन्दर्भमा दिङ्ला जाने भयौं। दिङ्लामा पनि हामी सबैको अध्ययन राम्रै चलिरहेको थियो।

यसैबीच २००७ सालको घटनाले अध्ययन अधुरै रह्यो। पुनः वि.सं. २०१२ मा काशी जाने विचार लिएर पैसाको बन्दोबस्त गर्न भनी म घर पुगें। त्यसै समयमा मेरा पिता स्व. खडानन्द खतिवडाले छोरालाई पण्डित बनाई घरमा पुराण लगाउने विचार गरी सम्पूर्ण तयारी गरिसक्नुभएको रहेछ। यो कुरा सुन्नासाथ म अत्यन्तै आत्तिएर अरू केही विकल्प नहुँदा गुरु देवीप्रसादजीका शरणमा पुगें। उहाँले मलाई गुरु टेकनाथ गौतमजीसँग गएर अवतर्णिका पढ्ने परामर्श दिनुभयो। त्यहाँबाट पुनः टेकनाथजीसँग गएँ। उहाँले समय अत्यन्तै छोटो हुनाले अवतर्णिका पढाउन थाल्नुभएन। भागवतका केही अध्यायहरू पाठ गराउँदै अर्थ भन्न लगाउनुभयो। यसै गरी केही समय परीक्षणपश्चात् जाऊ 'बाबु' तिमी निःसन्देह कथा भन, केही शङ्का मान्नुपर्दैन भनी आज्ञा भयो। उही आज्ञालाई शिरोधार्य गरी ओझा गुरुका सान्निध्यमा मेरो प्रथम पुराण सम्पन्न भयो। पछि पारिवारिक व्यवस्थाअनुसार मणिपुर जाने हुँदा एकपल्ट म गुरु टेकनाथजीसँग गएँ। गुरुले दिएका उपदेशले नै आजसम्म वैदिक सनातन धर्मको प्रचार-प्रसार गर्न प्रेरणा पाइरहेको छु।

गुरु उपदेशका केही बिन्दुहरू निम्न रूपमा छन् :

(१) सनातन धर्म नै सबै धर्महरूको आधार हो।

(२) ब्राह्मण पतनको प्रमुख कारण *असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः* हो।

(३) बाबु 'कल्याण' पत्रिकाको अध्ययन सदा गरिरहनू।

(४) धन र पदतिर ध्यान नदिईकन कर्मकाण्ड गर्नू।

गौतम गुरु अत्यन्तै थोरै बोल्ने गर्नुहुन्थ्यो। उहाँलाई मितभाषी भन्दा अत्युक्ति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहोला। सनातन धर्ममा उहाँको आस्था, विश्वासबाटै सहज रूपमा प्रेरणा लिन सकिन्थ्यो। उही प्रेरणाद्वारा नै आजका दिनसम्म पूर्वोत्तर भारतका यस मणिपुर प्रान्तमा सनातन धर्मको प्रचार विस्तार भएको देख्न पाइन्छ। गुरुको आज्ञानुसार अनेकपल्ट अनेक परधर्मीहरूको सङ्कट आए तापनि सर्वदा सनातन धर्मावलम्बीहरूले परास्त हुनुपरेको छैन। हामीमाझ चलिआएका अनेक रुढीहरूलाई राम्रो केलाई बनाई गर्नु पर्छ भन्ने गर्नुहुन्थ्यो। त्यसैले गर्दा धर्म, कर्मकाण्डमा एकरूपता ल्याउनका लागि प्रयत्नरत छौं।

गुरु देवीप्रसादजीले एक दिन प्रसङ्गवश मलाई भन्नुभएको थियो कि 'बाबु तिमीहरूले टेकनाथ गुरुलाई सामान्य नमान्नू है, उहाँलाई त साक्षात् भगवानको दर्शन भएको छ' भन्नुभएको थियो। गौतम गुरुका सन्तानहरू धेरै थिए। जेठी छोरी सानैमा विधवा भएकी थिइन्। परिवारको आर्थिक अवस्था अलि नमिलेको हुँदा उहाँहरू नमलुवाबाट अखौंलेमा बसाइँ जानुभयो। अखौंलेमा केही समय बितेपश्चात् गुरुले एउटा विद्यालय प्रारम्भ गर्नुभयो। केही समयसम्म विद्यालय सुचारु रूपले चल्यो। पछि २००७ मा क्रान्ति भएकाले विद्यालय समाप्त भयो। पछि सरकारले सरकारी शिक्षक नियुक्त गरी स्कुलमा पढाउनुपर्ने भएछ। सुभाङमा पढाउँदै गरेका बेला मेरो पुनः भेट गर्ने अवसर पर्यो। उहाँले मणिपुरको धेरै जानकारी पनि लिनुभयो। मलाई पनि पुनः एकपल्ट गुरुका आशीर्वचन ग्रहण गर्ने अवसर मिल्यो। उही समयमा मलाई 'भाइ कर्मकाण्ड त ठूला-ठूला गर्छौ भन्ने सुन्छु, धन, मानतिर मन गएको त छैन होला नि ? भनी सोध्नुभएको थियो। यसै गरी मधेसमा भएका बेला पनि जब जब उहाँसँग भेट गरें, सर्वदा मलाई उपदेश गरी नै रहनुहुन्थ्यो। मेरो मनमा उठेको विचार एवं वाराणसीमा मलाई सपनाजस्तो भई शिव उपासना गर्ने विचार लिई स्थान स्थानमा उपासना भए तापनि पुनः विश्वका खतिवडा बन्धुहरूलाई समेटेर उपासना गर्ने विचारको बैठक झापामा बस्यो। बैठकपछि पं. दुर्गाप्रसाद खतिवडाजीसँग हामी गुरुको आशीर्वाद लिन गयौं। सबै वृत्तान्त सुनी ल यो कार्य राम्रोसँग सम्पन्न गराउनू मेरो आशीर्वाद छ, यस प्रकारका कार्य हुनु *वसुधैव कुटुम्बकम्* को सानो नमुना हो भनी कार्यलाई आशीर्वादका साथ सहमति प्रदान गर्नुभयो। उही आशीर्वादलाई शिरोधार्य गरी हामीले तीन वर्षको कार्य पूर्ण गर्न सफल भयौं। उहाँ चारपानेमा भएका बेला एकचोटि पुनः दर्शनको मौका मिल्यो। त्यस बेला गुरु अलि बिरामी अवस्थामा हुनुहुन्थ्यो। धेरै कुराहरू गर्ने सुविधा मिलेन। आशीर्वाद लिई बिदा भयौं। पछि थाहा भयो त्यही नै गुरु र मेरो अन्तिम भेट भएछ।

श्री योगानन्दजी (जेठा गुरु) लाई पनि मेरो बाल्यावस्थामै भेट्ने अवसर मिल्यो। उहाँ ठाउँ-ठाउँमा अनुष्ठान (गायत्री अनुष्ठान) आदि गराउनुहुन्थ्यो। यसै सन्दर्भमा जोरपोखरी भन्ने ठाउँमा एक महिनासम्म सँगै बस्ने मौका मिल्यो। यसै गरी समय समयमा मेरो उहाँसँग भेटघाट भइरहन्थ्यो। पछि उत्तरकाशी (भारतको) मा उहाँको र मेरो पुनः भेट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भयो। हामीले नजिकै बसोबास गरी तीन महिना सत्सङ्ग गर्यौं। त्यस बेला उहाँ स्वामी श्री १०८ योगेश्वराश्रम भई आश्रममा बस्नुहुन्थ्यो। उहाँले दिएका उपदेशहरूले आज पनि मलाई निरन्तर प्रेरणा दिइरहेका छन्।

कान्छा गुरुको नाम श्री पशुपतिनाथ थियो। उहाँको प्रवृत्तिले नै होला सबैले साधुबा भन्ने गर्थ्यौं। उहाँ गृहस्थ धर्मको पालना गरी सरल स्वभावले जीवन यापन गरी साधु प्रवृत्तिलाई व्यवहारमा उतारेर देखाउने व्यक्तित्व हुनुहुन्थ्यो।

श्री स्वामी विवेकानन्दजीका केही कुरा घटना आदि पनि उल्लेख गर्ने विचार गरें। गुरुको अध्ययनपछि उहाँले आफ्नो गृहस्थ जीवन आरम्भ गर्नुभएको थियो। सन्तानहरूमा दुई भाइ छोरा र ६ वटी छोरी थिए। सबै परिवार 'एकतिन' भन्ने ठाउँमा बसोबास गर्न थालेपछि उहाँले गृहस्थाश्रम छोडी एकान्तमा ध्यान गर्ने विचार लिएर मच्छेबुङको एउटा ओढार जसलाई 'चितुवा' ओढार भनिन्थ्यो, उहाँ बस्न थाल्नुभएछ। पछि सबैले जानिसकेकाले त्यस ओढारलाई साधु ओढार भनी चिन्न थालियो। त्यहाँ मैले एकपल्ट गुरुलाई भेट्ने मौका पाएँ। विधिको विधानले होला त्यस दिन गुरुलाई भेट्ने म एक्लो थिएँ। गुरुले मलाई अतिप्रिय मान्नु हुँदोरहेछ भन्ने कुरा मलाई त्यस दिन स्पष्ट भयो। सबै औपचारिकता पूरा भएपछि केही अर्ती-उपदेश दिनुभयो र अन्तमा भन्नुभयो- 'बाबु देउता' यहाँ म बसेको सबैलाई थाहा भएछ। सबै जना मलाई 'साधुबा' भनी सम्बोधन गर्ने, भेट्न आउने गर्न थाले। त्यसैले म त अझै एकान्तमा हिमा खोलाको ओढारमा जान्छु होला जस्तो छ। तर यो कुरा कसैलाई थाहा छैन है देउता, तिमीलाई मात्र भनेको मनमै राख्नू भनी भन्नुभएको थियो। पछि पुनः भेट गर्ने मौका मिल्दा उहाँ त साँच्चि नै हिमा खोलाको ओढारमा जानुभएछ। त्यहाँ मैले भेट गर्नुभन्दा अघि अरू दुई जनासँग भेट भएको रहेछ। एक दिन कुनै एक जना जङ्गल जाने व्यक्तिले एउटा मान्छे नुहाएर गुफाभित्र पस्दै गरेको देखेकाले गुरुको वासस्थान पत्तो लागेको रहेछ।

जब मणिपुरबाट म वि.सं. २०१६ मा 'खुँगा' जाने मौका मिल्यो, त्यस बेला अँधेरी खोलाका शिरमा गुरु बस्नुभएको छ भन्ने कुरा सुनियो। त्यहाँ पनि गुरुसँग भेट भयो। साथै सौभाग्यले गुरुद्वारा गराइएको यज्ञमा मलाई पनि *आउनू है देउता* भनी निम्तो गर्नुभयो। यज्ञको दिन भोलिपल्टै भएकाले म पुनः अर्को दिन पनि यज्ञमा सम्मिलित हुन पुगें। फेरि २०१९ मा एकचोटि खुँगामा पुराण भन्ने सिलसिलामा जानुपर्यो। त्यस बेला फेरि गुरु आगेजुङमा यज्ञ गरेर बस्नुभएको कुरा सुन्न पाएँ। पुराण समाप्त गरी गुरुलाई भेट्न भनी म आगेजुङ गएँ र गुरुलाई भेटें। आज पनि कतै कतैबाट सुन्छु कि आगेजुङको यज्ञ अहिलेसम्म पनि निरन्तर चलिरहेको छ।

वि.सं. २०२५ माघमा गुरुजी भारतको असम राज्यको सदिया भन्ने ठाउँमा हुनुहुन्छ भन्ने कुरा सुनी त्यस ठाउँमा गएर गुरुको दर्शन गर्ने मौका पाएँ। भारत भूमिमा उहाँकै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सान्निध्यमा भएको यो सबैभन्दा ठूलो यज्ञ रहेछ। त्यो यज्ञ भएको ठाउँमा आजका दिनसम्म पनि यज्ञस्थल भनी कर्मकाण्डको स्थल रहेको छ। त्यस ठाउँमा गुरुसँग ११ दिन सँगै बस्ने मौका मिल्यो। १० दिनका दिन उहाँले मलाई एउटा आज्ञा गर्नुभयो। पण्डितजी खाता लिएर आउनुहोस् म तपाईलाई तीर्थयात्राको क्रम बाटो भन्नेछु किनभने आघौं वि.सं. २०२६ तपाईले आफ्ना मातापितालाई लिएर तीर्थयात्रा जानैपर्छ। त्यस दिन उहाँको मप्रतिको सम्बोधन सुन्दा म अलि शङ्कामा थिएँ गुरुले मलाई सर्वदा बाबु देउता भनी भन्नुहुन्थ्यो आज किन *पण्डितजी* ले सम्बोधन गर्नुभयो ? तर मैले कुनै प्रकारको प्रश्न तत्काल गर्न सकिनँ। कपीकलम लिएर गुरुले आज्ञा भएअनुसार सबै तीर्थस्थल, बाटो गर्नुपर्ने सबै कर्महरू क्रमानुसार सम्पूर्ण उत्तर भारतको यात्रा लेखाउनुभयो। मनमा सन्देह भए तापनि म पूर्ण विवरण लिएर घर फर्किएँ। मनमा कुरा खेली नै रह्यो। आघौं नै जानुपर्छ भन्ने कुरालाई लिएर।

पछि मणिपुर आएर एक दुई महिनापछिबाटै साथी मिले तीर्थयात्रा गर्न पाए हुन्थ्यो भन्ने मानिसहरू फेला पर्न थाले। गर्दागर्दै तीर्थ जाने विचारका मानिसको सङ्ख्या ४२ जना भएछ। गुरु आज्ञा र गुरुले देखाइदिएको कपीलाई नै बाटाको प्रमुख साथी (मार्गदर्शक) बनाएर असार महिना वि.सं. २०२६ मा हामीले यात्रा आरम्भ गर्यौं। देखाइदिएअनुसार सम्पूर्ण कार्य गर्दै हामी ऋषिकेशमा पुग्यौं। त्यहाँ गङ्गाजीमा आएको भेलबाढी देखियो जुन 'बेलाकुची' काण्ड भनेर आजसम्म पनि जानिन्छ। तर हामीले निर्बाध रूपमा यमुनोत्तरी, गङ्गोत्तरी, केदारनाथ आदिको यात्रा गर्यौं। केदारनाथ यात्रा गरेका बेला त्यस भेलबाडीले बद्रीनाथ धामको मार्ग अवरुद्ध छ भन्ने कुरा सुन्न थालियो। जब हामी गुप्तकाशी पुग्यौं, त्यहाँबाट गुरु आज्ञानुसारको बाटो तुङ्गनाथ भएर पैदल जानू भन्नुभएको थियो। सामान्य मार्ग रुद्र प्रयाग भएर जान्थ्यो, त्यस बेला रुद्र प्रयाग भएर जाने यात्रीहरू सबैलाई प्रशासनले फिर्ता गर्दै थियो। हामीले गुरु आज्ञा नै पालन गर्ने, निश्चय गर्यौं, जसमा हाम्रा ११ जना यात्री छुटेर फिर्ता हुनुभयो। तर तुङ्गनाथ मार्गलाई प्रशासनले केही भनेको थिएन। यस घटनाले गुरुको दिव्यदृष्टि स्पष्ट हुन गयो।

यसरी हाम्रो बद्रीनाथ धामको यात्रा पूर्ण भयो। पछि घर आएपछि हजुरका आशीर्वादले यात्रा कुशलमङ्गलपूर्ण गर्यौं, बेलाकुची काण्डले पनि हाम्रो यात्रामा बिघ्न पुर्याउन सकेन भनी चिठ्ठी लेखी प्रसाद, पुष्प गुरुलाई सदियामा पठाइयो। गुरुले सदियामा आश्रम सुरु गर्नुभएको थियो। आश्रम चलिरहेको कुरा पछिसम्म पनि सुन्न पाइरहेको थियो। पछि नेपालको चारपाने नामक ठाउँमा पनि आश्रमको स्थापना भएछ, आजसम्म पनि आश्रम यथावत् चलेकै सुन्न पाइँदैछ। त्यसपछि भारतको उत्तरकाशीमा 'गवाणा' भन्ने ठाउँमा माहिला गुरु र उत्तरकाशीकै सहर उजेली भन्ने ठाउँमा ठूला गुरु आश्रम बनाई बस्नुभएको रहेछ। केही समयपछि मेरा आँखाले राम्रोसँग काम नगरेको हुँदा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपचारनिम्ति म भारतका धेरै अस्पतालहरूमा उपचार गराई अन्तमा सीतापुर अस्पतालका चिकित्सकहरूको सल्लाहअनुसार शीतल ठाउँ साथै धुलो धुवाँ आदिबाट जोगिनू भनी उत्तर भारततर्फ बद्रीनाथ धाम जाने विचार भयो। घरतिर पत्र लेखी म धामतर्फ लागें। उही बेला मलाई पुनः एकपल्ट गुरुहरूको सत्सङ्ग गर्ने राम्रो मौका मिल्यो। केही समय यसरी नै बित्यो। एक दिन श्री बद्रीनाथ धामका पण्डाजीले लेखेको पत्र पाई म गुरुलाई सुनाउन थालें, पत्रका केही हरफहरू सुनाएको मात्र थिएँ, गुरु अलि झस्किए जसो गरी भन्नुभयो- 'ए है बाबु मैले त एउटा कुरा भन्न भुलेको रहेछु।'

मैले जिज्ञासा लिएर चिठ्ठीबाट ध्यान हटाउँदै भनें- के होला गुरु ? उहाँले भन्नुभयो- बाबु सदियामा तपाईंले पठाएको प्रसाद पुष्प हातमा आइपुग्यो, त्यसै बेला तपाईंका बडाबा र बडीआमा मेरासामु आई रुँदै विलाप गर्दै भने कि गुरु अरू सबै काम त गरे तर हामीलाई तर्पणपिण्ड केही गरेनन्। यसरी विलाप गर्दै रोए त तिनीहरू, तिमीले उनीहरूका निमित्त केही गरेनौ ? भनी गुरुले सोध्नुभयो। मलाई पनि त्रुटिको आभास भयो र भनें गुरु हाम्रा पुर्खाहरूबाटै यो कार्य छुटेको रहेछ। किनकि उहाँहरू क्षत्रीय हुनुहुन्थ्यो, त्यसैले सूचीमै (पितृहरूको) उनीहरूको नाउँ थिएन भनें। तर गुरुले आज्ञा गर्नुभयो कि तपाईं बद्रीनाथ धाम जाँदै हुनुहुन्छ, साथमा भएका बन्धुले आफ्नो कर्म गरेपछि भोलिपल्टै बन्धुद्वारा नै उनीहरूको नाउँमा ब्रह्मकपाली गराउनू भनी आज्ञा भयो, सोहीअनुसार वि.सं. २०२९ साल चैत महिनाको अन्तमा हामी उत्तरकाशीबाट बिदा भयौं। धेरै समय धाममा बसियो। यस बीचमा गुरुहरूसँग निरन्तर पत्र व्यवहार चलिरहन्थ्यो। भाद्र शुक्ल द्वादशीका दिन गुरुले लेखेका पत्रले नै मेरो जीवन परिवर्तन भएको मान्छु। पत्रको अन्तमा लेखुभएको रहेछ-

श्रीमान् पण्डितजी कदापि मनमा शङ्का नराखी रति।
श्रीरामचन्द्रजीकै चरणकमलमा राख्रोस् सदा दिन मति।।

तर चिठ्ठी सँगसँगै भाद्र शुक्ल पूर्णिमाकै दिन गुरुको समाधि भएको खबर पनि पाइयो। गुरुको त्यो सम्पूर्ण पत्र नै मेरो आजसम्मको आदर्श छ र सदा रहनेछ।

गुरुका एउटा एउटा वचन मेरा जीवनका पथप्रदर्शक छन्। सबै वचनहरूलाई उल्लेख गर्न त सम्भव हुँदैन तर उहाँको प्रसङ्ग आउँदा केही कुरा उल्लेख नगरी बस्नु गुरूप्रति अनादर सम्झन्छु। सनातन धर्मका प्रति उहाँको आस्था एवं कर्मकाण्ड गर्ने ब्राह्मण वर्गप्रति गुरु अति नै सचेत रहने सल्लाह आज्ञा दिनुहुन्थ्यो। धर्मको हानि नै हामीबाटै हुने र धर्मको टेवा पनि यसैबाट हुने कुरा सधैं भनिरहनुहुन्थ्यो। असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः यो कुरा पटक-पटक भनिरहनुहुन्थ्यो।

यसै प्रेरणाले गर्दा मसँग घटेका दुईवटा घटनाहरू पनि उल्लेख गर्ने चेष्टा गरें। एकपल्ट म आफ्नो ससुराली जाने क्रममा एक जना धनाढ्य पुरुषले आफ्ना बुबाआमाको इच्छा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ण गर्न भनी एउटा धार्मिक कार्य गर्ने विचार राखुभयो। उहाँको विचारलाई समर्थन गरी समयानुसार एकपल्ट मणिपुर आएर पुनः जाने कुरा निश्चय गरियो। जतिखेर म मणिपुरका लागि प्रस्थान हुन तयार भएँ, त्यस बेला ती धनाढ्य व्यक्ति आएर मलाई एउटा कुरा भन्नुभएको थियो भनी भन्न थाल्नुभयो। कुरो के हो भने गुरु आमाबुबाको कार्य गर्ने इच्छासँगै मेरो यस्तो विचार छ कि हजुरलाई म दुई बिघा नम्बरी र १ बिघा ऐलानी गरी तीन बिघा जमिन दान गर्ने विचार छ भन्नुभयो। त्यस बेला त मलाई यात्राको व्यस्तता थियो, सुनेर केही प्रतिक्रिया नदिईकन बाटो लागें। मनमा कता कता कुरा खेल्न थाले। मणिपुर आइपुगेपछि मलाई ती गुरु वाक्यहरू *असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः* को अर्थ स्पष्ट हुन थाल्यो। निश्चय गरें कि म त्यस कार्यक्रममा उपस्थित हुन्न, मणिपुरबाटै 'म तपाईंका कार्यमा उपस्थित हुन सकिन अन्यथा नमान्नुहोला' भनी पत्र लेखी पठाएँ। बारम्बार मलाई त्यो दृश्य मनमा आयो कि सबै कुरा निश्चय गरेपश्चात् पुनः आएर हिंड्ने बेलामा त्यस्तो प्रस्ताव राखु किन ? यस प्रश्नको उत्तर मेरा बुद्धिले *असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः* नै हो भन्ने उत्तर पाउँछ।

यस्तै अर्कोपटक मणिपुरकै मानेडाँडा भन्ने गाउँमा भयो जहाँ सङ्कल्पमात्र गरिदिंदा धेरै ठूलो अलैंचीबारी, मकै साथै अनेक फलफूल भएको साथै धान खेती गर्न योग्य जमिन देखाएर सङ्कल्प गरी माग्ने महाजनबाट जमिन पट्टा पुर्जाबिनाको भनी उम्कने बाटो खोजियो। उपरोक्त घटनाले पनि मलाई गुरुआज्ञा शिरोधार्य गर्न निरन्तर प्रेरणा प्राप्त भइरहेको छ भन्ने पूर्ण विश्वासमा छु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जेठा गुरु (योगानन्द) ले सन्न्यास लिंदाको अवस्था...

प्रा.डा. काशीनाथ न्यौपाने

श्रद्धेय चिदानन्द खतिवडाज्यू २०७४ सालमा काठमाडौं आउँदा तीन दिन मेरो आवासमा बस्नुभयो। त्यस अवसरमा मैले उहाँका बाल्यकालका र सुभाङ गुरु, जेठागुरु, माहिला गुरु, कान्छा गुरु पशुपतिनाथ, ब्रह्माभ्यासानन्द, उहाँका दाजु-भाइ, नाङ्गे ब्रह्मचारी भनिने ओझा गुरु, स्वर्गद्वारी महाप्रभु, दिङ्लागुरु षडानन्द र गुरुहरूले तपस्या गरेका ठाउँहरू, उहाँहरूका अलौकिक, लौकिक कृत्यहरूका विषयमा धेरै प्रश्न गरें। विविध घटना क्रमलाई जोडेर राखिएका सम्पूर्ण प्रश्नहरूको गम्भीर रूपमा उहाँले उत्तर दिनुभयो। मैले सबै ध्वनिमुद्रण (अडियो रेकर्ड) गरें। सामग्री एउटा पुस्तक नै बन्न सक्ने भएको छ। त्यस सामग्रीबाट जेठागुरु (योगानन्द) ले सन्न्यास लिंदाका अवस्थाको अंशलाई मात्र यहाँ प्रस्तुत गरेको छु।

प्रश्न : जोरपोखरीबाट हिंडिसकेपछिका उल्लेखनीय घटनाहरू केही छन् ?

उत्तर : धेरै घटनाहरू छन्। तीमध्ये धनकुटामा केही विचित्र घटनाहरू भए। धनकुटाको कोयाखोला पुगेपछि त्यहाँ सल्लेरी काँडे भन्ने ठाउँमा एक जना ठुला विद्वान् पण्डित हुनुहुन्छ भन्ने गुरुलाई थाहा रहेछ र त्यहाँ जानुपर्छ भन्नुभयो। त्यहाँ पुगेपछि एउटा चौतारो रहेछ गुरुले यहाँ एक छिन बस्नुपर्छ भन्नुभयो। त्यहाँ बसेपछि मैले एउटा घटनाका विषयमा सोधें तेह्रथुमका तीन जना हजुर हिंड्दा मूर्छा परे नि किन ? गुरुले भन्नुभयो ती धेरै पुण्यात्मा हुन् पछि स्वर्ग जान्छन्। नेवार भए तापनि उच्च आध्यात्मिक स्थितिका व्यक्ति हुन् भन्नुभयो। मैले गुरुलाई चौतारीबाट अब हिंडौं भने, गुरुले एक छिन बसौं, एक जना मानिस आउँदै छन् भेट गर्नुपर्छ भन्नुभयो। त्यसको केही क्षणपछि लौरो टेकेर एक जना मानिस आउनुभयो। लाम्चो अनुहारका ती वृद्धलाई गुरुले आफैं पहिला "अहं तु नारायणः" भन्नुभयो। यस्तो सुन्नासाथ ती मानिसले पनि "अहं तु नारायणस्य दासस्य दासः" यस्तो उत्तर दिनुभयो। यो सुनेपछि गुरु ध्यानमा तल्लीन भई समाधिस्थ अवस्थामा पुग्नुभएछ। उता ती मानिस पनि उभिएकै ठाउँमा समाधिमा पुग्नुभएको थाहा भयो। उहाँ सामधिमै रहेका बखत एक जना पण्डित आएर हामीलाई

विभागाध्यक्ष, बौद्धदर्शन, वाल्मीकि विद्यापीठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिएर जानुभयो- आफ्नो घरमा। हामीले पनि उहाँको ध्यान भङ्ग नगरी सोही अवस्थामा छाडेर आफ्नो बाटो समायौं। कति समय उहाँ त्यो अवस्थामा रहनुभयो त्यसको जानकारी भने हामीले पाएनौं। तर मेरो मनमा एउटा प्रश्नचाहिँ अवश्य खट्किएको थियो उहाँ जुन अवस्थामा पनि समाधिमा प्रवेश गर्न सक्ने शक्तिवान् महापुरुष को हुनुहुँदो रहेछ ? पछि थाहा भयो उहाँ पं. उमाकान्त पोखेल हुनुहुदो रहेछ।

प्रश्न : धनकुटाको वासपछि के गरियो ?

उत्तर : धनकुटाबाट हिंडेर हामीहरू धरान हुँदै जोगवनी गयौं र त्यस समयमा जोगवनी-लखनऊ रेल सेवा सञ्चालनमा थियो। हामीहरू रेलबाट लखनऊ गयौं, पुनः लखनऊबाट रेलमै हरिद्वार गयौं र त्यहाँबाट बसयात्रा तय गरी ऋषिकेश पुग्यौं।

प्रश्न : ऋषिकेशमा कहाँ जानुभयो ?

उत्तर : बसबाट झरेर सिधै स्वामी सच्चिदानन्दको आश्रममा गयौं। सो आश्रमसँग गुरुहरूको सम्बन्ध पुरानो रहेछ। तीर्थ आउँदाजाँदा गुरु यस आश्रममा आउनुभएको र उहाँलाई भेटेर गुरु बनाउने निश्चय गर्नुभएको रहेछ।

प्रश्न : जोरपोखरीबाट हिंड्नुभएको कति समयमा ऋषिकेश पुग्नुभयो ?

उत्तर : माघमा हिंडेका हामी त्यहाँ पुग्दा चैत्र १५-२० भएको थियो। गुरुले सन्यास ग्रहण गर्ने साइत हेर्नुभयो र पहिला २२ दिन गायत्री जप गर्नुपर्छ भन्नुभयो तर १० दिन जति गायत्री अनुष्ठान गरेपछि गुरुले तिमीले धेरै अनुष्ठान गरेका रहेछौ अब भयो भन्नुभयो। त्यसपछि सत्सङ्गका माध्यमबाट वेदान्तका गूढ विषयहरूलाई बुझाउन प्रवचन दिने र चिन्तन मननमा ध्यानाकृष्ट गर्ने गर्नुभयो। गुरुको निकटतामा रहँदाका दिनहरू योगानन्द गुरुले यसरी नै बिताउनुभएको थियो।

प्रश्न : सत्सङ्ग कुन भाषामा गर्नुहुन्थ्यो ?

उत्तर : हिन्दी भाषामा नै गर्नुहुन्थ्यो। गुरु पनि हिन्दीमा नै बोल्ने गर्नुहुन्थ्यो तर श्री सच्चिदानन्दजी महाराजचाहिँ नेपाली पनि राम्रोसँग बुझ्ने र स्पष्टसँग प्रशस्त मात्रामा बोल्नुहुन्थ्यो। सो समय म सँगै रहेको हुनाले गुरुहरूका बिच भएका संवादहरू अझै पनि ताजै छन्।

प्रश्न : यहाँले स्वामी सच्चिदानन्द गुरुको आध्यात्मिक स्थिति कस्तो पाउनुभयो त ?

उत्तर : उहाँको अवस्था अति उच्च थियो। उदाहरणका लागि ध्यानमा बसेपछि ५-७ घन्टा जति समाधिस्थ हुनुहुँदो रहेछ। उहाँको स्वभाव पनि उच्च थियो जे पदार्थ, जसले जति ल्याएको छ त्यो सोही दिन बाँडिसक्ने भोलि वा भरेलाई आवश्यक पर्छ भन्ने विचार नराखी लोभ र लालचाभन्दा माथि रहनुभएका त्यागी स्वभावका महाराज ठुलो योगी, ज्ञानी, ध्यानी एवं वैरागी पनि हुनुहुन्थ्यो। उहाँले सो समयसम्ममा ७० जना लाई सन्यास दीक्षा दिइसक्नुभएको रहेछ। यसबाट पनि यहाँको त्यस बेला प्रसिद्धि र आध्यात्मिक क्षमताको अनुमान गर्न सकिन्छ। जे होस् ठूला सन्त हुनुहुँदो रहेछ। गुरु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगानन्दले दीक्षा लिएपछि उहाँले मेरा अहिलेसम्मका ७० जनामा यस्तो उच्च शिष्य अर्को भएको छैन भन्नुभएको थियो।

प्रश्न : उहाँको उमेरचाहिँ कति थियो नि ?

उत्तर : उहाँ वृद्ध हुनुहुन्थ्यो। त्यो बेला गुरुको ८० वर्षको उमेर थियो। त्यसको ४ वर्षपछि ८४ वर्षको उमेरमा गुरुको शरीर शान्त भयो र गुरु ब्रह्मतत्त्वमा विलीन हुनुभयो।

प्रश्न : सत्सङ्ग कति समय हुन्थ्यो ?

उत्तर : उहाँको नित्य दण्ड विधि बिहानैदेखि ११-१२ बजेसम्म हुन्थ्यो। त्यो दण्ड विधान गर्न धेरै समय लाग्थ्यो। उहाँका शिष्यहरूले सबै ठिक्क परिदिने तर कर्मचाहिँ आफैं गर्ने उहाँको दैनिक चर्या थियो।

प्रश्न : उहाँ के-कस्तो भोजन गर्नुहुन्थ्यो ?

उत्तर : उहाँले यो चिज मिठो र यो चिज नमिठो भनेर भन्नुभएको कहिलै सुनिएन। जे कुरालाई पनि प्रसाद भन्नुहुने गुरु प्राय दुध पान गर्नुहुन्थ्यो। गहुँको सुख्खा रोटीका साथै चामलको भात ब्रह्मचारीहरूले पकाएर दिएमा स्वीकार्नुहुन्थ्यो। सन्न्यास धर्मलाई पूर्ण पालना गर्नुभएका गुरुले कहिलै अग्नि छुनुभएन।

प्रश्न : सन्न्यास धर्ममा प्रवेशको साइतचाहिँ कहिलेलाई निकाल्नुभएको थियो ?

उत्तर : १८ वैशाख २०२० सालका दिनको साइत हेर्नुभएको थियो। साथै सच्चिदानन्द गुरुले जेठागुरुलाई तिमीसँग के-कति रुपैयाँ-पैसा छ त्यो पनि सबै सक्नू र धनको लेनदेन सन्न्यास धर्ममा निसिद्ध रहेकाले दण्डीले दण्डधारणपश्चात् दण्ड विधानविपरीत कुनै कर्म गर्न नहुने बताउनुभयो। सो कुरालाई स्वीकार्दै त्यस बेलासम्म योगानन्द गुरुले विष्णुपञ्चायन पूजा गर्नुहुन्थ्यो। तिनै विष्णुपाञ्चायनको सामान गुरुका आशीर्वचनका साथ मलाई प्राप्त भयो। गुरुबाट प्राप्त सामग्रीहरूमा विष्णुपाञ्चायन, शङ्ख, तीनवटा चाँदीका पञ्चपात्र थिए। तीनवटा पञ्चपात्रमध्ये दुईवटा अरू कसैले लिए, तर आफ्नो भाग्यमा रहेका गुरुबाट प्राप्त सामग्रीहरूमा शङ्ख, एउटा पञ्चपात्र र दैनिक पूजन गरिरहेका विष्णुपाञ्चायन मेरा गुरुका अंश बनेर आजसम्म मलाई सेवाको मौका प्रदान गर्नुभएको ठानी नित्य दर्शन गर्ने गरेको छु। सुभाङ गुरुले पहिला पनि एउटा शालीग्राम दिनुभएको थियो र पछि पुनः गुरुले अर्को शालीग्राम दिंदै "तँ राजनीति गर्ने मान्छे, त्यसैले सङ्क्षेपमा शिवलाई जल र विष्णुलाई मानसिक रूपमा भए पनि पूजा गर्नू। भरिसक्के दीप बाल्नू नभए पनि भगवान्लाई सङ्क्षेपमा सम्झनू" भन्ने आज्ञा प्राप्त भएको थियो। गायत्री पञ्चाङ्ग नामक ग्रन्थसमेत दिनुभएका थियो त्यही पुस्तकका आधारमा जोरपोखरीमा गायत्री अनुष्ठान सञ्चालन गरियो। सो पुस्तक वर्तमानमा गुरुकै आश्रम जोरपोखरीमा सुरक्षित तबरले राखेको छु। त्यो पुस्तक आफूसँगै रहँदा हरवाक्य मेरा गुरुका साक्षात् वाणीसमान लाग्ने गर्दछन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न : त्यो सन्न्यास दीक्षाको विधान के थियो र कति दिन के-कसरी कस्ता कस्ता कर्महरू गर्नुभएको थियो ?

उत्तर : सन्न्यास धर्म ग्रहणका निम्ति जम्मा ५ दिन कर्म गराउनुभयो गुरु स्वामी श्रीसच्चिदानन्दले। पहिलो दिन केशमुण्डन गराउनुभयो र टुप्पी (शिखा) सानो (पाँचवटा केशमात्र) राख्नुभयो। त्यसपछि उपवास गराउनुभयो। पहिलो दिन केवल गहुँत (गौमूत्र) मात्र पान गर्नुपर्ने शास्त्रीय विधानलाई पालना गर्दै १२ घन्टामा ३ पटक गहुँत ग्रहण गर्नुभयो। त्यसपछाडि साबुदाना पकाएर पाँचतोला (केवल तीन गाँसमात्र), त्यसको ६ घन्टापछि तीन तोला दहीमात्र दिनुभयो। त्यति बेला रातको १० बजेको थियो। त्यसपछि केही खानुभएन। बिहान उठेर नुहाउनुभयो र जप गर्नुभयो गायत्रीको एक माला। त्यसपछि पाँच प्रकारका फलफूल साना साना काजु-किसमिस जस्ता टुक्रा खानुभयो। त्यसपछि अब धेरै बेर खान नहुने भएकाले गुरुले लड्डु दिँदै पाँच गाँसमा सक्नू सकिएन भने छाड्नू नखानू भन्नुभएको हुँदा गुरुको आज्ञाको पालना गर्दै पाँच गाँसमात्र खाएर शेष लड्डु त्यहीं छाड्नुभयो। यी सम्पूर्ण दृश्यहरू मेरो आँखाअगाडि घटेका घटनाहरू हुन्।

तेस्रो दिन उज्यालो भएपछि स्नान एवं गायत्री जपपछि सुजीको हलुवा १० तोला खान दिनुभयो, साथसाथै त्यसपछि दुई तोला गहुँत पनि खानुभयो। अपराह्नको समयमा दहीसँग मिश्री पिसेर त्यमा किसमिस मिसाई गुरुले खुवाउनुभयो। यो खुवाउँदै गर्दा गुरुले भन्नुभयो 'नियमअनुसार बेलुकाको समयमा दही खानुहुँदैन त्यही भएर किसमिस मिलाएर खुवाएको हो।' अरू समयमा चाहिँ बेलुका दही नखानू भन्नुभयो।

चौथो दिन पितृयज्ञयागादि कर्म गर्ने कुरा गर्नुभयो र जेठागुरु बिहानैदेखि केही नखाई बस्नुभयो। दुई जना ब्राह्मणहरूद्वारा पाठ तथा देवहवनादि कार्य पूर्ण गरी श्राद्ध कर्म सम्पन्न गर्दै आफ्ना पितृहरूलाई पिण्ड दिनुभयो र सँगसँगै आफूले आफैंलाई पनि पिण्डदान गर्नुभयो। सो समयमा मैले हेर्दा त्यहाँ जम्मा २७ वटा पिण्ड थिए। श्राद्धकर्म सकेर आफूले स्वयं बुकुवा दल्नुभयो र त्यस दिन भोजन राम्रोसँग गर्नुभयो।

पाँचौं दिन बिहान विजयहोम गर्नुभयो। त्यसका लागि ५ जना ब्राह्मणहरू आमन्त्रण गरिएका थिए। यस समयमा कार्य सम्पादनका लागि तीनवटा अग्निको स्थापना गरिएको थियो। ती तीनवटा अग्निको महत्त्व आमन्त्रित ब्राह्मण देवताहरूले गुरुलाई बताउँदा मैले पनि बुझ्ने मौका पाएँ। ब्राह्मणका अनुसार ती अग्निहरूमा प्रथम अग्नि न्वारानका निम्ति, द्वितीय अग्नि व्रतबन्धका लागि र तृतीय अग्निचाहिँ पञ्चसंस्कारसँग सम्बन्धित रहेछ। यागादि कर्म पूर्ण गर्दै अन्त्यमा सन्न्यास दीक्षा प्रदान गरी थोरै राखिएको टुप्पीसमेत उखेल्नुभयो। त्यो टुप्पी उखेल्दा रगत आउनु नहुने हुनाले बिस्तारै हलुका हातले गुरु सच्चिदानन्दले उखेलिदिनुभयो। त्यसपछि यज्ञोपवीत (जनै), कौपिन एवं कन्धनीसमेत त्याग गराउनुभयो र भन्नुभयो 'अब तिम्रा वस्त्रहरू भनेका दिशा नै हुन् (पूर्व, पश्चिम आदि दश दिशा) पृथ्वी तिम्रो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओछ्यान हो र आकाशचाहिँ तिम्रो ओढ्ने सिरक हो, साथै सिरानीचाहिँ तिम्रा दुई हात हुन्। यद्यपि सन्न्यासीहरूले दिगम्बर नै रहनु उचित हुन्छ र पनि लौकिक जनमानका नजरमा आफूलाई गोपनीय राख्नुपर्ने हुनाले यी दुइटा वस्त्र तिमीले लगाउँनू' भन्दै भर्खरै गेरुरङ्गमा रँगाएर सुक्दै गरेका दुइटा वस्त्रखण्ड धारण गर्नका लागि प्रदान गर्नुभयो। यसरी नै दण्ड विधान गरिसकेपछि दण्ड पनि धारण गराउनुभयो। साथै भगवान् शङ्कराचार्यद्वारा विरचित केही स्तोत्रहरू गाउन लगाउनुभयो। जस्तै -

न भूमिर्न तोयं न तेजो न वायु र्नखं नेन्द्रियं वा न तेषां समूहः।
अनैकान्तिकत्वात्सुषुस्त्येकसिद्धस्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम्।।
मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं न च श्रोत्रनेत्रे न च घ्राणजिह्वे।
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।

यो कर्म दिनको १.३० बजे सम्पन्न भयो। त्यसपछि भण्डाराको आयोजना गरिएको थियो। २.३० बजेसम्ममा पाहुनाहरू आइसक्नुभएको थियो। विविध खर्चसहित भण्डारा सञ्चालनका निम्ति पहिले नै जेठागुरुले गुरु सच्चिदानन्द जी महाराजलाई ३ हजार भा.रु. प्रदान गर्नुभएको थियो। त्यस समयमा गुरुले भन्नुभएको थियो हेरौं तिम्रो भाग्यले भण्डारा कत्रो हुन्छ। तर भण्डारा विशाल भयो- अकल्पनीय भण्डारामा दण्डी स्वामीमात्र ८० जना उपस्थित हुनुहुन्थ्यो। परमहंस, ब्राह्मण, विद्वान्, विद्यार्थी लगायत अन्य महानुभावहरूको बाक्लो उपस्थिति थियो। यस पुण्यकर्ममा म स्वयं भान्सेको रूपमा खिर पकाउनमा तल्लीन थिएँ। विभिन्न परिकारका मिठाई, पुरी, सब्जी लगायत अन्य परिकारहरू म स्वयंले गुरुहरूलाई अर्पण गरेको थिएँ। सो समयमा जेठागुरुले पनि आफ्ना गुरुको समीपमा रहेर प्रसाद ग्रहण गर्नुभएको अहिले जस्तो लाग्छ। उपस्थित दण्डी स्वामीहरू लगायत अन्य पाहुनाहरूले गुरुलाई वस्त्र ओढाएर सम्मान प्रकट गर्दै नगद उपहारसमेत पदान गर्नुभएको थियो। तर ती सम्पूर्ण सामग्रीहरू गुरुले आश्रमलाई नै समर्पण गर्नुभयो। सच्चिदानन्द गुरुले खरेलजी र मलाई धोती, तौलिया र भेस्ट आदि सामग्री स्नेह, आशीर्वादपूर्वक दिनुभयो।

प्रश्न : जेठागुरुको सन्न्यास आश्रमको नामचाहिं के राखिएको थियो ?

उत्तर : गुरु महाराज श्री सच्चिदानन्द आश्रमले जेठागुरुको सन्न्यास आश्रमको नाम योगेश्वर राखिदिनुभयो। गुरु सच्चिदानन्द दशनामी सन्न्यासी परम्पराको 'आश्रम' समूहमा रहनुभएको हुनाले अब जेठागुरुको सन्न्यासी नाम श्री योगेश्वराश्रम रहन गयो।

प्रश्न : चौथो आश्रम लिएपछि कति समय बस्नुभयो त त्यहाँ ?

उत्तर : चौथो आश्रम लिएपछि गुरु ५ दिनसम्म त्यहाँ बस्नुभयो र त्यहाँबाट आफ्नो गुरुलाई उत्तरकाशी बस्ने इच्छा प्रकट गरेर गुरुको आज्ञा लिएर गुरुसहित हामी पनि उत्तरकाशीको यात्रामा लाग्यौं।

प्रश्न : त्यो गुरुको चौथो आश्रमका दर्शक हजुरबाहेक अरू कोही थिए त ?

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर : आश्रममा त धेरै थिए, तर नेपालीचाहिँ म र रामस्वरूप खरेलमात्र थियौं।

प्रश्न : उत्तरकाशीमा कहाँ र कसरी बस्नुभयो त गुरु ?

उत्तर : हामी उत्तरकाशी गएपछि कालीकमली बाबा हुनुहुन्थ्यो, उहाँको नाम आनन्द बाबा थियो। उहाँसँग पुगेर गुरुले मलाई यहाँ बस्ने इच्छा छ हजुरको सहयोग चाहियो भनेपछि त्यहाँ झाडीको नजिकमा एउटा कुटी देखाउनुभयो र त्यहीं बस भन्नुभयो। त्यो सेन्टरबेरा गरेको सानो दैलो भएको कुटी थियो। साना दुईवटा खटिया अटाउने ठाउँ थियो एउटामा गुरु बस्नुभयो अर्कोमा रामस्वरूपजी बस्नुभयो, मचाहिँ बाहिर सिकुवा (बार्दली) मा बसें। त्यसको दुई दिनपछि गुरुलाई तीर्थयात्रा गर्ने इच्छा प्रकट गर्यौं। गुरुले हुन्छ जाओ भन्नुभयो त्यसपछि हामी दुई जना गुरुको आज्ञा पाएर तीर्थयात्रामा गयौं। हामी फर्किएर आउँदा गुरुले त्यो दण्ड त्यागिसक्नुभएको रहेछ। गङ्गामा लगेर सेलाउनुभएछ। गुरुलाई दण्डका बारेमा सोध्दा म अब कर्म छाड्न आएको कहाँ फेरि दण्डको सेवा गर्ने ? त्यसैले छोडेको भन्नुहुन्थ्यो।

प्रश्न : खानपिनको व्यवस्था के थियो त गुरुलाई ?

उत्तर : त्यहाँ कालीकमली बाबाको आश्रममा खिचडीको भण्डारा सधैं हुन्थ्यो सबैका लागि। जोकोही साधु या अन्य व्यक्तिले त्यो सुविधा भोग गर्न पाउने व्यवस्था थियो। गुरुले हामीलाई तीर्थ जाने बेलामा भन्नुभएको थियो म कालीकमली बाबाको आश्रममा गएर खान्छु चिन्ता नगरी जाओ। तर गुरुले त्यसो गर्नुभएनछ, उहाँ कतै जानुभएनछ, एक वा दुई दिन भोकै बस्नुभएछ त्यो कुरा थाहा पाएर गुरुलाई भित्री हृदयबाट चिन्ने सज्जनहरूले खाना लगिदिंदा रहेछन्।

प्रश्न : गुरुले अन्य सामान, सम्पत्ति के गर्नुभयो ?

उत्तर : सामान भन्नाले पूजाका सामग्री मलाई दिनुभयो। लगाउने लुगा रामस्वरूपजीलाई दिनुभयो। जपमालाको पनि सौभाग्य उहाँलाई नै मिल्यो।

प्रश्न : रामस्वरूप खरेल भनेको चाहिँ को हुनुहुन्छ ?

उत्तर : च्याङ्थापुका खरेल हुन्। चाँडै श्रीमतीको मृत्यु भयो, सन्तान भएका थिएनन्। उनी वैरागी जस्ता भएका थिए। गुरुबाट मन्त्र लिएर गुरुको सेवामा लागेका थिए। पछि गुरु उत्तराखण्ड जाने भएपछि सँगै गएका हुन् र आजीवन गुरुको सेवा गर्ने मौका प्राप्त गरे।

प्रश्न : जेठागुरु - माहिलागुरु- कान्छागुरुको जन्म स्थान कहाँ हो ?

उत्तर : उहाँहरूको जन्मस्थान मच्छेबुङ नै हो। किनकि माहिलागुरुले जन्मस्थान बेच्नु हुँदैन भनेर लिम्बू हरिप्रसाद केरुङलाई ३०० रुपैयाँमा बन्दगी दिएर एकतीन आउनुभएको थियो। पछि ती लिम्बूले जालझेल गरेर घरायसी तमसुक गराए, लिम्बुवानमा घरायसी लिखत चल्थ्यो, त्यही समयमा आफ्नो बनाएछन्। तीन हजारको कागजमा ल्याप्चे थिचाएर हडपेछन्। पछि जेठागुरुका छोरा फर्सुरामलाई हकवाला बनाएर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हामीहरूले दाबी हलाएर फिदिममा मुद्दा गराएपछि न्यायालयले त्यो जालझेल गरेर हडपेको हो भन्ने फैसला गर्यो र ६ हजार रुपैयाँ दण्ड जरिवानासमेत गरायो। तीन हजार फर्सुरामलाई र तीन हजार कान्छा गुरुलाई दिएको थियो। तर कान्छा गुरुले त्यो जन्मभूमिको पैसा खानुहुँदैन भनेर सत्यनारायण पूजा लगाएर, सबै खर्च गरेर, भण्डारा लगाएर, दान दक्षिणा गरेर समाप्त गर्नुभयो। यसबाट प्रस्ट हुन्छ कि मच्छेबुङ नै गुरुहरूको जन्मथलो हो। अर्को कुरा फिदिम अदालतले गरेको फैसला आफैंमा अझै सुरक्षित छ र त्यसबाट पनि यो सिद्ध हुन्छ कि हरिप्रसाद केरुङले जालझेल गरेर गुरुहरूको जन्मस्थान हडपेको थियो। उनले दण्डजरिवानासमेत तिरेको प्रमाण पाँचथर जिल्ला न्यायालय फिदिममा सुरक्षित रहिआएको छ।

प्रश्न : सुभाङगुरुदेखि लिएर जेठागुरु हुँदै कान्छागुरुसम्मको सङ्गत गर्नुहुने तपाईंले उहाँहरूलाई कसरी बुझ्नुभएको छ ?

उत्तर : (एकछिन मौन भएर गहभरी आँसु पार्दै रोकिएको स्वरमा)

उहाँ सबै जना गुरुहरू साक्षात् ईश्वर हुनुहुन्थ्यो। उहाँहरूले गर्न नसक्ने केही थिएन। नजानेको र नबुझेको केही थिएन। पशुवाक्यदेखि लिएर सम्पूर्ण प्रकृतिमा रहेका जीवका अवस्थितिको ज्ञान उहाँहरूमा थियो।

प्रश्न : चौथो आश्रम लिनका लागि कहिले हिड्नुभएको थियो ?

उत्तर : २०१९ साल माघ ३ गते हिड्नुभयो। पौष मसान्तमा म उहाँको आज्ञाले घर आएर बाबुआमाको आज्ञा लिएर गुरुलाई पुर्याउन जोरपोखरी आएँ। गुरुले साथ देऊ भन्नुभएको हुनाले अयोध्या जाने भनेर बालाई भने आमा र श्रीमतीलाई भनिन। बाले खुसुक्क १२० रुपैयाँ खर्च दिनुभयो। ६० रुपैयाँले अयोध्या पुगिन्थ्यो त्यसैले आउने जाने भाडा दिनुभएको थियो। राति नै भागेर घरबाट निस्किएँ। दाजुभाइलाई भन्दा गोठ बिस्यार हुन्छ भनेर जान दिने थिएनन् मलाई, त्यसैले उज्याले हुँदा जोरपोखरी पुगेको थिएँ। रामस्वरूप खरेलजी गुरुकै आश्रममा हुनुहुन्थ्यो। त्यसपछि गुरुले गौतम पण्डित र इन्दिराज रेग्मी पण्डितलाई बोला भन्नुभयो। भण्डारा गर्नुपर्छ भन्नुभयो। ब्राह्मण एवं कन्याहरूलाई खुवाउनुपर्छ भन्नुभयो। अर्को दिन भण्डारा भयो। जगन्नाथ पौडेललाई केही दिन बस्नू भन्नुभयो। हामी माघ ३ गत्ते हिंडयौं। अलि परसम्म सबै आउनुभयो। गौतम पण्डितलाई पण्डित तिमीले विद्यार्थीहरूलाई पढाउनू है भन्नुभयो। इन्दिराजलाई तिमी गुरुपुत्र हौ, बाघको बच्चो निगाले कहिलै हुँदैन याद गर्नू भन्नुभयो। इन्दिराजले हात जोडेर मेरो घरमा तीन रात बसिदिनुहोस्, तपाईंका पनि गुरुको घर हो भन्नुभयो। सबैका आँखामा आँसु थिए कोही पनि बोल्न सकेनन्। गौतम पण्डित पनि अवाक् हुदै आँसु खसाउन थाल्नुभयो। त्यसपछि गुरुसहित हामीहरू सुभाङ गयौं तीन रात त्यहीं वास बसेर क्रमशः पैदलयात्रा गर्दै धनकुटा हुँदै धरानतिर लाग्यौं।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु विवेकानन्दको स्मरण

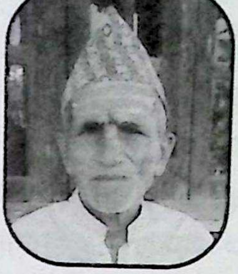

✍ **देवीप्रसाद पौडेल**

श्री गणेशाय नमः। विवेकानन्द गुरुज्यू सबैभन्दा पहिला एकतीनको शिवालयमा गएर बस्नुभयो। २०११ सालताका गुरुज्यूले आफ्नो घर त्यागनुभयो र सिंह गुफा भन्ने बाघ बस्ने गुफामा मच्छेबुङ भन्ने स्थलमा बस्न थाल्नुभयो। त्यसै गरी २०१२ सालमा पाँचथरको सुभाङको सिमले भन्ने ठाउँमा हिउँद समयमा वेद पढाउने कार्यको थालनी गर्नुभयो। त्यसै स्थानमा अनुष्ठान गर्ने एवम् गायत्री माताको जप गर्ने कार्यको समेत थालनी गर्नुभयो। २०१२ सालताकै केदारनाथ खतिवडाज्यू लगायतले मालिङ्गेनी भन्ने स्थानमा (ओडारमा) बस्नलाई व्यवस्था मिलाउनुभयो र गुरुदेव त्यहीं बसोबास गर्न थाल्नुभयो। उक्त स्थानमा गणेशको आकार भएको मूर्तिसमेत रहेको थियो। त्यहाँ बसोबास गर्दै गर्दा २०१२ को अन्त्यतिर उक्त स्थानमा पहिरो गयो। रात्रिकालमा गएको उक्त पहिरोपश्चात् त्यस स्थलभन्दा अलिकति पर गुरुलाई बस्ने अर्को स्थलको व्यवस्था गरियो।

२०१२ साल गुरुदेवको बसाइ त्यही मालिङ्गेनी भन्ने स्थानमा भयो। २०१३ सालपछि भने गुरुदेव हामी बसोबास गर्ने स्थान पाँचथरको खाल्डे भन्ने ठाउँमा आउनुभयो। खाल्डेमा नै गुरुले हामीलाई गुरुकुल शिक्षा प्रदान गर्ने कार्यको थालनी गर्नुभयो। त्यही स्थानमा गुरुदेवले विष्णुभक्त गुरुज्यूलाई पनि पढाउने कार्यमा सरिक गराउनुभयो। विष्णुभक्त गुरुज्यूले हामीलाई पठन-पाठन गराउने कार्य गर्नुहुन्थ्यो भने विवेकानन्द गुरुदेव भने त्यहीं वरपर आवतजावत गर्ने एवम् हामी पढ्ने गुरुकुलको अभिभावकत्व ग्रहण गर्ने कार्य गर्नुहुन्थ्यो। गर्दागर्दै त्यही २०१३ सालमा फेरि गएर मालिङ्गेनी भन्ने ठाउँमा गुठी (मन्दिर) मा बस्न थाल्नुभएको थियो।

उक्त ठाउँ एकदमै साँघुरो थियो। त्यसले गर्दा नजिकैको केदारनाथ खतिवडाज्यूको गोठमा गएर भण्डारा लगाउनुभयो। २०१४ सालपश्चात् हिउँदमा खाल्डेमा आएर पढाउने गर्न थाल्नुभयो भने वर्षायाममा चाहिं नन्दी भन्ने गुफामा बस्न थाल्नुभयो। त्यो गुफा पानी आउने पहराभित्र अप्ठ्यारो ठाउँमा थियो। त्यहाँ पुग्न लहरामा झुन्डिँदै झुन्डिँदै जानुपर्ने

✍ बिर्तामोड २, चारपाने, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुन्थ्यो। त्यहाँ बसेपश्चात् माथि त्यहीं रहेको तेजपुञ्ज भन्ने ठाउँमा कुटी बनाउने भन्ने इच्छा राख्नुभयो। त्यस कार्यका लागि खुँगालगायतका मान्छे मिलेर खर लगेर, पहाडको उनिउँ काटेर, भाटाका बार लगाएर कुटी बनाउनुभयो र १२ वर्षसम्म वर्षायाममा त्यहीं बस्नुभयो। त्यहाँ बसेर उहाँले गायत्री अनुष्ठान गर्ने, गायत्री जप्ने ठाउँ बनाउने, वेद पढाउने, स्वाहा गर्ने (धुनी जगाउने) होमादि गर्ने, भण्डार गर्ने, कीर्तन गर्ने (गाना गर्ने), जप गर्ने आदि काम गर्नुभयो।

२०१५ सालतिर गुरुदेवका चेलाहरू तथा त्यस ठाउँमा आउने भक्तहरूको सङ्ख्या बढ्दै गयो। त्यसपछि गुरुदेवले आफ्ना केही चेलाहरूलाई बोलाएर आउने मान्छेहरूका लागि बस्न, खान, ओत हाल्न ठाउँ भएन भनेर मलाई 'ए केटा अलिकति एक भारी भोर्लाका पात टिपेर ले न एउटा ठूलो घुम बनाउन' भन्नुभयो। अनि मैले गएर भोर्लाका पात टिपेर निकै ठूलै भारी ल्याएँछु। अरूले पनि बाँस पनि लिएर आएछन्। अनि सबै जना मिलेर त्यसबाट बडो घुम बनाइयो १५-२० जना अटाउन सक्ने। त्यसपछि त्यही घुमलाई २ पाखे बनाएर २ पट्टिबाट बारेर धुरी बनाएर २ वर्ष थाम्ने भोर्लाको पातबाट कुटी (भान्साघर) बनाएका थियौं। पछि त्यही भान्साघरलाई २०१५-१६ सालपछि तखताले छाएर फेरि बनाउनुभएको थियो। तेजपुञ्जकै अलि माथि देवीस्थान रहेको थियो

उक्त स्थानमा गुरुले होम गर्ने धुनी बनाउनुभयो। उक्त धुनीमा होम गर्ने कार्य दिनहुँ हुन थाल्यो। देवीस्थानकै अलिकति परतिर एउटा भ्वाङ थियो। त्यस भ्वाङमा चाहिँ बाघ सुतिरहेको हुन्थ्यो। त्यही भएर त्यस ठाउँमा जाँदा ओरैबाट होहल्ला गर्दै जानुपर्ने हुन्थ्यो। त्यहाँ जाँदा हामी महादेव-महादेव-महादेव भन्दै जान्थ्यौं। जसले गर्दा बाघले पनि उक्त ठाउँ छाडेको हुन्थ्यो। त्यस भ्वाङमा आकाशमा जति गडयाङगुडुङ गर्थ्यो त्यति नै वज्र (चटयाङ) ले हान्ने गर्थ्यो। त्यही भएर त्यहाँ वरिपरि बुट्टाबुट्टी केही उम्रन नै पाएका थिएनन्। त्यसो भएपछि गुरुजीले १०८ गाईको दुध त्यस ठाउँमा चढाएपछि वज्र हान्दैन भन्नुभयो। सोहीबमोजिम हामी सबै मिलेर १०८ गाईको दुध चढाउने कार्य गर्यौं, आश्चर्य, तत्पश्चात् चटयाङ पर्ने कार्य बन्द भयो।

देवीस्थानदेखि तल हेवा खोलामा टोड्के भन्ने ओडार रहेको थियो। उक्त ओडारमा मान्छे ओत बस्न मिल्ने ठाउँ थियो। त्यहाँ ओडारमा भएको दुलो माथितर्फ फर्केको थियो त्यहाँबाट पसेको चमेरो माथि देवीस्थानमा रहेको भ्वाङबाट निस्कन्छ भन्ने विश्वास मानिसहरूमा रहेको थियो। टोड्के ओडारबाट नागहरू पसेर देवीस्थानबाट निक्लने गर्थे भन्ने भनाइ पनि त्यति बेला रहेको थियो। यसरी गुरुदेव वर्षायाममा माथि तेजपुञ्जमा बस्ने गर्नुहुन्थ्यो भने हिउँदमा चाहिँ तल खाल्डेमा बसोबास गर्ने गर्नुहुन्थ्यो।

२०१६ सालताका केदार खतिवडाज्यूहरू आसाम जाने हुनुभयो। आसाम जाँदा उहाँले आफ्ना गोठमा रहेका सम्पूर्ण गाईवस्तुहरू शिवगङ्गामा लगेर दान गर्नुभयो र गुरुज्यू पनि त्यहीं शिवगङ्गामा बस्न थाल्नुभयो। एउटा ठूलो झिल्कु भन्ने गाईचाहिँ गुरुज्यूलाई दान गर्नुभयो। २०१७ सालमा केदार खतिवडाहरूले विष्णुभक्त गुरुलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आसाम लाने भनेर आउनुभयो। त्यसताका जोरपानी भन्ने ठाउँमा एक जना भण्डारी भन्ने ठूला पण्डित थिए। उनीहरूसँगै अलि तल तिलाहा भन्ने ठाउँमा अनुष्ठान गर्ने कार्यको थालनी गर्नुभएको थियो त्यो अनुष्ठान सकिनेबित्तिकै विष्णुभक्त गुरुज्यूलाई केदारजीहरूले आसाम लिएर जानुभयो। विवेकानन्द गुरुले मलाई माथि तेजपुञ्जबाट पूजाका सामान लिएर आइज भन्नुभयो। मैले पनि ती सबै सामान लिएर आएँ।

तिलाहामा गुरुज्यूहरूको अनुष्ठान भएनजिकै तल खोलाको नजिकै बेलको रुखनिर सानो ओडार रहेको ठाउँमा बसौं भन्नुभयो र त्यही ठाउँमा सफासुग्घर गरेर बस्ने व्यवस्था मिलाइयो। त्यतिखेर राजनैतिक पार्टीहरूको चहलपहल सुरु भएको थियो। पुलिसहरू यता-त्यता घुमिरहने गर्थे। मानिसहरूलाई पकड्ने समय रहेको थियो। तमोर खोलामा पिनासीघाट भन्ने एउटा स्थान रहेको थियो। पारी आठराईतिरबाट ६०-७० जनाको सङ्ख्यामा पुलिसहरू गुरुरु बन्दुक बोकेर नाउ तर्दै हामी बसेको कुटीतिर आए। तिनीहरूले पुस-माघको समयमा खेतमा हामी घाम तापेर बसिरहेको ठाउँमा धुवाँ उडेको देखेछन्। तिनीहरूमध्ये एक जना पुलिस हामी भएको ठाउँमा आइपुग्यो। ऊ हाम्रो वरपर हेरेर केही पनि नभनी फर्केर गयो। फेरि केही बेरमा २ जना पुलिस बोलाउन आए, गुरुज्यू तिनीहरूसँगै जानुभयो म पनि गुरुज्यूसँगै गएँ। त्यहाँ गएपछि त्यो समूहको नाइकेले यस्ता साधु-सन्त भएर साधुको भेष धारण गरेर जङ्गलमा सबै पार्टी जमाएर बस्छन्। तिमीहरू पनि त्यस्तै त होलाउ भन्यो। गुरुज्यूले पार्टी भनेको मैले हलोमा ठोक्ने पाटीमात्र बुझेको छु अरू त मलाई केही थाहा छैन भन्ने उत्तर दिनुभयो।

वर्षामा माथि तेजपुञ्जतिर बस्छु हिउँदमा यहाँ कोशीमा नुहाऊँ भनेर बस्न आएको भन्नुभयो। त्यस पुलिसले हामीलाई तलबाट माथिसम्म हेर्‍यो। धेरै बेर हेरेपछि होइन, हामीले तपाईंहरूलाई दुःख दियौं तपाईंहरूलाई दुःख भयो, हाम्रो काम नै यस्तै हो, तपाईंहरू डराउनु पर्दैन, अब जानुहोस् भन्यो। त्यति भनेपछि उसले पुलिसहरूलाई अघि बढ भन्यो हामी पनि तल झर्न खोज्दै थियौं त्यो दलका दुई जना पुलिसले थपक्क गुरुज्यूका खुट्टा ढोगे, छेउमा म थिएँ, मलाई पनि ढोग्यो। त्यसपछि हामी आफ्नै कुटीतिर फर्क्यौं र केही दिन गुरुज्यू त्यतै बस्नुभयो र माघ लागेपछि तल कोशी नदी (पिनासी घाट) मै कुटी बनाएर बस्नुभयो। गुरुले त्यहाँ विभिन्न गायत्री अनुष्ठान, यज्ञ, होमादि गर्नुभयो। त्यहाँ माघ, फाल्गुण र चैत्रसम्म बस्नुभयो र चैत्र अन्तिमतिर माथि तेजपुञ्जतिरै फर्किनुभयो। २०१८ सालमा थाम्दिन भन्ने ठाउँमा अनुष्ठान गर्नुभयो। त्यहाँ करिब ५०-६० जनाको सङ्ख्यामा जप गर्ने व्यक्तिहरू थिए, त्यहाँ करिब पुष, माघ, फाल्गुण महिनासम्म गुरुज्यू रहनुभयो। त्यहाँ धुनी बनाएर होमादि गर्ने, गायत्री अनुष्ठान गर्ने र भण्डारा गर्ने जस्ता कार्य गरिसकेपश्चात् गुरुज्यू माथितर्फ लाग्नुभयो, जोरपाखरीमा आएर बस्नुभयो।

२०१९ सालमा खाल्डेमा गुरुज्यूले लामो कटेरो बनाउन लगाएर एकापट्टि पुरुष र अर्कापट्टि महिलालाई बस्ने व्यवस्था मिलाएर जप गर्न लगाउनुभयो। २०२१ साल भदौमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुज्यू बद्रीकेदार दर्शन गरेर आउनुभयो। त्यसै साल फाल्गुण महिनातिर हामी बसाइँ सरेर आसाम जाने भयौं। गुरुज्यूसँगको रमाइलो बसाइ छुट्ने अवस्था आयो। यसले हामी सबैलाई एकदमै मर्माहत बनायो। तर, विधिको विधान भनौं या समयको खेल अभाव र अन्यौलताले हामीलाई बसाइँ सरेर जान बाध्य पार्यो। त्यो बेला शिवरात्रिका दिन पूजा लगाएर गुरुज्यूसँग बिदाबारी भएर हामी आसामतर्फ लम्कियौं। यसरी हेर्दा २०13 सालबाट २०२१ सालसम्म गुरुज्यूसँगै गुरुका चरणकमलमा समय बिताउने मौका मिल्यो।

२०२२ सालमा बडीबा र मसँगै गुरुज्यूलाई भेट्न भनेर आयौं। गुरुज्यूले त्यति बेला पनि अनुष्ठान गर्ने कार्य जारी नै राख्नुभएको थियो। त्यति बेला गुरुज्यू अनुष्ठान सकेर प्रयागतर्फ जानुभयो र हामी पनि आसामतर्फ नै फर्कियौं। यसरी २०२२ सालमा पनि कामका कारणले भेट हुने मौका मिल्यो तर २०२३ सालमा भने गुरुज्यूसँग भेट्ने कुनै पनि अवसर मिलेन। २०२३ सालमा भेट नभए पनि माथि दुधपोखरी, पानीपोखरी भन्ने ठाउँमा गुरुदेवले अनुष्ठानहरू गर्नुभयो भन्ने सुन्नमा आयो भने २०२४ सालमा आसाम गएर ब्रह्मपुत्रमा चौथो आश्रम लिएर बस्नुभयो।

आसाम जाँदा गुरुज्यू ब्रह्मचारी नै हुनुहुन्थ्यो। ब्रह्मपुत्रमा गएर गुरुज्यूले शिवरात्रिका दिन सन्न्यास ग्रहण गर्नुभयो। बालीजान भन्ने ठाउँमा एउटा कुटी थियो सुरुका केही दिन गुरुज्यू त्यहीं बस्नुभयो। त्यसपछि गुरुज्यूले शान्तिपुर जाने इच्छा राख्नुभयो। हाम्रो घर पनि शान्तिपुरमा नै थियो। गुरुज्यू शान्तिपुर गएर हाम्रै घरमा बस्नुभयो। शान्तिपुरमा गुरुज्यूलाई बस्ने स्थानको खोजी गर्ने तयारी भोलिपल्टबाट सुरु गर्नुपर्ने थियो। २०२२ ताका हामी पाँचथर जाँदा गुरुज्यूले शान्तिपुरमा आठै दिशाबाट आउँदा अलिक उचाइ भएको ठाउँ छ म त्यही ठाउँमा आएर बस्छु भनेर भन्नुभएको थियो। भोलिपल्ट हामी वरिपरिका केही मानिस भेला भएर त्यस्तो ठाउँको खोजी गर्न हिंड्यौं। त्यस दिन दिनभर हामी त्यस्तै ठाउँको खोजीमा हिंड्यौं तर त्यस्तो स्थान फेला नै परेन। साँझ घर फर्कियौं।

भोलिपल्ट फेरि हिजोभन्दा अझ बढी जना भेला भएर उक्त स्थान खोजी गर्नेतर्फ लाग्यौं। दोस्रो दिन भने गुरुज्यू खुरुखुरु हिंड्दै अघि लाग्नुभयो। गुरुज्यू फटाफट छिटोछिटो हिंड्दै अघि बढ्नुहुन्थ्यो जसले गर्दा हामीलाई उहाँलाई भेट्न हम्मेहम्मे नै पर्थ्यो। यसरी त्यस दिनचाहिँ गुरुले सधैं हिंडिरहेको ठाउँ जस्तै गरी कतै पनि नअल्मलिई खुरुखुरु एउटा डाँडा-डाँडा ठाउँमा गएर बस्नुभयो। मैले उक्त ठाउँमा यताउता हेरें साँच्चै नै गुरुज्यूले भने जस्तै चारैतिर गहिरो छ। म त अचम्ममा परें। मेरो मनमा त्यस बेला एउटा कुरा खेल्यो। मैले मनमनै सोचें 'गुरुज्यूले उहाँबाट देखेको ठाउँ हिजो त्यत्रो डुल्नुभयो, हिजै खुरुखुरु यहीं आएर बसेको भए पनि भइहाल्थ्यो नि !'गुरुज्यू छेउमा मुसुमुसु हाँस्दै हुनुहुन्थ्यो। एक छिनपछि गुरुले भन्नुभयो- 'त्यो त सबैलाई त्यताको ठाउँ देखाउन पो गर्या त, यहीं खुरुखुरु आउँदा त ए त्यो पनि आएछ भन्छन्, तिनीहरू सबैको विश्वास पार्न पो त्यस्तो गर्या त।'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुज्यू त्यहाँ छहारी जस्तो बनाएर त्यहीं बस्नुभयो। गुरुज्यूले त्यहाँ धुनी बनाओ भन्नुभयो। धुनी बनाउने काम गर्‍यौं, तर धुनी केले छाउने भन्ने समस्या भयो, त्यस बेला छाउने टिन त्यति पाइँदैनथ्यो। गुरुज्यूले सबैलाई घरबाट एकएकवटा टिन (तेलको टिन) लिएर आउनू, ४० वटा जतिले त छाउन पुगिहाल्छ नि भन्नुभयो। भोलिपल्ट सबैले त्यो टिनलाई काटेर पाता बनाएर धुनी छाउने काम गर्‍यौं। राति त गुरुज्यू छानामा चढ्नुभएछ र टाकटुक सबै छानो फालिदिनुभएछ। त्यस्तो जुठो टिन लाउनुहुन्छ ? भन्नुभयो रे।

अब भोलिपल्टबाट त छानो छैन सबै बुच्चै छ अब के गर्ने भन्ने समस्या फेरि आइलाग्यो, अब नयाँ टिन (जस्तापाता) किनेर ल्याऔं भन्ने कुरा भयो। १५-२० जना मिलेर २-२ वटा टिन किनेर ल्यायौं र छायौं। अब हवन गर्ने धुनी तयार भयो, त्यसै ठाउँदेखि अलि तलतिर पानी (खोला) थियो। गुरुज्यूले उक्त ठाउँलाई कञ्चनगङ्गा भनी नामकरण गरिदिनुभएको थियो। त्यहाँ गणेशको आकार भएको टाउको नभएको एउटा ढुङ्गाको मूर्ति फेला पर्‍यो। घाँटीसम्म मात्र भएको उक्त आकृति टाउको भने हटाए जस्तो देखिन्थ्यो। गुरुज्यूले भन्नुभयो "केदार गयौ भने गौरीकुण्ड भन्ने ठाउँमा तातोपानीमा नुहाउने ठाउँ छ, त्यहाँ नुहाएर यसो पछाडिपट्टि हेर्नू यसको शिर छ।" नभन्दै पछि केदार जाने मौका मिल्यो साँच्चै नै त्यहाँ त्यस्तै आकृति रहेछ। त्यसरी नै २०२५ सालदेखि लिएर २०२७ सालसम्म गुरुका चरण कमलमा नै समय बिताउने अवसर प्राप्त भयो।

२०२७ साल चैत्र महिनामा भने हामी फेरि बसाइँ सरेर झापा चारपाने आउने भयौं। चारपाने आएर यही विवेकाश्रमबाट अलिकति पश्चिमपट्टि सानो टहरो हालेर बस्यौं। पछि २०२८ साल मङ्सिर महिनामा गुरुज्यू पनि झापा नै आउनुभयो। यही हाल विवेकाश्रम भएको ठाउँमा कुटी बनाएर बस्नुभयो। गुरुज्यूले पण्डित जी (नन्दीकेशर तिम्सिना) लाई अलिकति जमिन दिनू कतिसम्म दिन सक्नुहुन्छ भनेर भन्नुभयो, पण्डितजीले हजुरलाई कति चाहिन्छ, कतिले हुन्छ आफैं नाप्नुहोस् भन्नुभयो। गुरुज्यूले खुट्टाका पाइलाले केही जमिन नाप्नुभयो, सो जमिन अहिलेको राममन्दिर भएको जमिन नै थियो। गुरु बस्ने कुटीअगाडि अहिले इनार रहेको ठाउँमा एउटा सानो कुप्चो गहिरो ठाउँ थियो। पानी सिमसिम हुन्थ्यो त्यहाँतिर पानी खन्ने साइत गर्ने कुरा भयो। त्यहाँ पानी खन्ने साइत कन्या राशिलाई जुर्‍यो गुरुज्यूले मेरो जेठो छोरोलाई पानी खन भन्नुभयो र उसैले त्यो इनार खन्ने साइत गरेको थियो।

अलि परतिर कुटी बनाउन कुटीका खाँबा खन्ने साइत मीन राशिलाई जुर्‍यो, गुरु स्वयं पनि मीन राशि नै हुनुहुन्थ्यो, तर उहाँले मलाई खन भन्नुभयो, खनियो। त्यसपछि त्यहाँ बाँस खोजखाज गरेर कुटी बनायौं। माथि खोपबाडीबाट बाँस खोजेर ल्याएका थियौं। त्यति बेला मान्छे नै त्यति थिएनन् जसोतसो दुःख गरेर कुटी बनायौं।

त्यसपछि गुरुले कनकाई माईमा गायत्री अनुष्ठान गर्ने इच्छा राखुभयो र भन्नुभयो केटा हो यहाँ बस्ने त भइहालियो, अब माईमा अनुष्ठान गर्नुपर्छ, त्यहाँ पनि एउटा बस्ने ठाउँ हेरौं भन्नुभयो। त्यस बेला दुर्गा भण्डारीका बुबा (डिल्लीराम भण्डारी) वनजाँचकीसँग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जमिन माग्न जानुभयो। त्यहाँ बस्ने भन्दा वनजाँचकीले बस भइहाल्छ भने छ र हामी पनि सोहीबमोजिम कुटी बनाउन लाग्यौं। हामीले हालको कोटिहोमबाट अलिकति मास्तिर डाँडोडाँडो जमिनमा कुटी बनाउन खाँबा गाडिसकेपछि दुर्गापुरभन्दा अलि तलतिरका दाताराम ओली भन्ने प्रधानपञ्चले पुलिसहरू लिएर आएछन्। तिनीहरूले यहाँ बस्न मिल्दैन हुँदैन भने। गुरुज्यूले यसो बस्न, स्नान गर्न त मिल्छ होला नि भन्दा तल बगरछेउमै बस यहाँ मिल्दैन भनेर भने। त्यसपछि हामीले पनि उनीहरूले भनेबमोजिम नै खोलाको बगरमा नै टाँसेर कुटी बनाउन थाल्यौं। कुटी बनाउन दिनभर लाग्यो साँझ पर्दासम्म पनि सकिएन। कुटी छाउन भ्याइएन। गुरुज्यू एक्लै त्यहीं बस्नुभयो भने हामीचाहिं घर फर्कियौं।

भोलिपल्ट बिहान गयौं, छानो छाउन भनेर एकापट्टिबाट म र अर्कोपट्टिबाट पुष्पलाल तिम्सिना छानामा चढ्यौं। केही बेरमा वनजाँचकी र पुलिसहरू आइपुगे। हालको गायत्री मन्दिरनजिकै एक जना दाहाल बस्छन्, ती दाहाल पुलिसमा थिए त्यस बेला। तिनैले यहाँ बस्नुहुँदैन साधुहरू यसै गर्छन् हुल बनाएर आउँछन्। यी सबै जङ्गल सक्न बसेका हुन् भनेर हामीले बनाउँदै गरेको कुटीमा हुर्र आगो लगाइदिए। छानाबाट हामी उफ्रेर तल झर्यौं। त्यो बेला लडेर धन्न दुर्घटना भने भएन। गुरुज्यूले यसो पानीले आवाहन गर्नुभयो। उहाँले भन्नुभयो मैले अन्नपूर्णा र गायत्री मातालाई आवाहन गरिदिएको छु। यो भूमि पछि दिव्यभूमि बन्छ भन्नुभयो। नभन्दै अहिले कनकाई माई पूर्वकै दिव्य भूमिका रूपमा रहेको छ।

त्यसपछि गुरुज्यूले सतासीतर्फ जाने इच्छा राख्नुभयो। गुरुज्यूलाई त वनजाँचकीले जान दिए तर हामीलाई भने अघि बढ्ने दिएनन्। यी सबै हुल लागेर जान्छन् र जङ्गल फँडानी गरेर सक्छन् भनेर अघि बढ्ने दिँदैनन्। अब के गर्ने ? एक जना मुक्ति भन्ने शिवाकोटी बुढो-बुढो उमेरका थिए उनी गुरुसँगै अघि बढ्न खोज्छन्, पुलिसले जान नदिई समातेर तान्छन्, केही गर्दै गुरुसँग जान दिँदैनन्। उनीचाहिं जबरजस्ती गरेर भए पनि गुरुसँगै सतासीतर्फ गए। हामी पनि सुरुङ्गा आएर जाउँ भन्ने सल्लाह गर्यौं। वनजाँचकीका टोली पनि हमीसँगै पछिपछि आउँदै थिए। आउँदाआउँदै दुर्गापुर आइपुगेपछि वनजाँचकी अन्तै लागे। अनि हामी (पुष्पलाल तिम्सिना र म) त्यहाँबाट सतासीतिर लाग्यौं। त्यति बेला भर्खर-भर्खर गाडी चल्न थालेका थिए, पुल बनेकै थिएन। बाटो बनाउने गाडीहरूचाहिं अलिअलि चल्न थालेका थिए। त्यही बाटाको सामान बोक्ने गाडीमा चढेर हामी पनि सतासीतिर गयौं। हामी सतासी पुग्दा गुरुज्यू अगाडि नै पुगिसक्नुभएको थियो। त्यहाँ एक जना नागा साधु थिए। तिनलाई झक्कड सेढाईं भन्थे। उनले नै गुरुलाई यसो बस्ने कुटीको व्यवस्था गरेका थिए। यसरी हेर्दा २०२८ सालमा झापामा आएर त्यो साल हामीले ३ वटा कुटीको निर्माण गर्यौं।

यो साल (२०२८) चैत्र महिनासम्म गुरुज्यू सतासीमा नै बस्नुभयो। चैत्र महिनामा चारपाने आउनुभयो र २०२९ साल वैशाखमा गुरुज्यूको सान्निध्यमा ठूलो हरिकीर्तन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरियो। त्यसै सालको उत्तरार्धतिर गुरुज्यू उत्तरकाशीतर्फ लाग्नुभयो। २०३० साल भदौमा अनन्त चतुदर्शीका भोलिपल्ट पूर्णिमाको दिन गङ्गाजीमा समाधि लिनुभएको खबर प्राप्त भयो।

यसरी हेर्दा २०१३ सालदेखि २०२९ सालसम्म (२०२३ सालबाहेक) गुरुज्यूका सान्निध्यमा समय बिताउने अवसर प्राप्त भयो। गुरुज्यूसँग बिताएका यी अविस्मरणीय पलहरू सम्झँदा र गुरुज्यूले दिएका उपदेशहरू आजसम्म शिरोधार्य गर्न पाउँदा मन त्यसै प्रफुल्लित हुन्छ।

गुरुज्यूले यहाँ रहँदा अन्त्यमा भन्नुभएको कुरा 'मैले यहाँ जग हालिदिएको छु पछि यहाँ धेरै विद्वान् व्यक्तिहरू आउँछन्। विद्वान्हरूको उत्पादन गर्ने क्षेत्र बन्नेछ। यहाँ बहिर्मुखी भएर आउँछन् जस्तै ठूला व्यक्तित्व आए पनि शिर झुकाउने ठाउँ बन्नेछ। राजा नै आए पनि शिर झुकाउने छन्। मैले यहाँ सिद्धि छरिदिएको छु, यो स्थान पूर्वीय वाङ्मयको एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन्ने छ। यहाँ अन्नपूर्णको कहिल्यै खाँचो पर्ने छैन।' अहिले यस विवेकाश्रमलाई हेर्दा साँच्चै नै गुरुज्यूका वाणीहरू पूरा हुँदै गरेको देख्न सकिन्छ।

२०२८ सालमा गुरुज्यू यहाँ आएर बस्न थालेपछि सामान्य पठनपाठनका रूपमा गुरुकुल स्थापना भइसकेको थियो। केही विद्यार्थीहरूले गुरुकुलीय शिक्षा आर्जन गर्न थालिसकेको अवस्था थियो। २०२९ सालमा गुरुज्यूले उत्तरकाशीतिर जाने निर्णय गर्नुभयो। तत्पश्चात् पनि यस गुरुकुललाई निरन्तरता दिनका लागि अभिभावकत्व गरिदिनुहुन पं. श्री टेकनाथ गौतम गुरुज्यूलाई पत्र लेख्नुभएको थियो रे। त्यसपछि गौतम गुरुज्यू यहाँ आउनुभयो र उहाँकै रेखदेखमा पठनपाठन कार्य अघि बढेको थियो।

गुरुज्यू ब्रह्मलीन भएपछि यस आश्रमको संवर्द्धनको जिम्मेवारी गुरुज्यूप्रति आस्था राख्ने व्यक्तिहरू तथा हामी सम्पूर्ण ग्रामवासीहरूमा आएको थियो। सोहीअनुरूप यस आश्रम तथा विद्यालयको संवर्द्धनका विभिन्न प्रयासहरू गर्दै आजको अवस्थासम्म ल्याइएको छ।

विद्यालय स्थापना भएपश्चात् विभिन्न ठाउँबाट विद्यार्थीहरू पठनपाठनका लागि आउने क्रम सुरु भयो र अध्यापनका लागि गुरुको आवश्यकता पर्‍यो। त्यसपछि सर्वप्रथम गुरुका रूपमा पं. श्री भानुभक्त अधिकारीलाई नियुक्त गरिएको थियो। लगभग ९-१० महिना अध्ययन गराएर भानुभक्त गुरुले यो विद्यालय छोड्नुभयो। त्यसपछि पं. श्रीविष्णुभक्त भण्डारी गुरुज्यू आउनुभयो र उहाँले विद्यार्थीहरूलाई पढाउन थाल्नुभयो। विद्यार्थीहरूको चाप बढ्दै गएकाले विष्णुभक्त गुरुज्यू एक्लै पठनपाठन गराउन असम्भव भएकाले अग्रज विद्यार्थीहरूको सहयोग लिँदै पठनपाठन कार्यलाई अगाडि बढाइएको थियो।

त्यस समयमा विद्यालय सञ्चालन गर्न निकै चुनौतीपूर्ण कार्य थियो। विद्यार्थीहरूको पठनपाठनका लागि तथा आवासका लागि भौतिक संरचनाहरू थिएनन्। गाउँघरबाट काठ, बाँस, पराल आदि सामग्रीहरू सङ्कलन गरेर गाउँघरकै व्यक्तिहरू मिलेर कटेराहरू निर्माण गर्ने र त्यसैमा छात्रावास तथा अध्ययनअध्यापन गराउने गरिएको थियो। त्यस समयमा विद्यार्थीहरूलाई भोजनको व्यवस्था गर्न विभिन्न मुष्टिदानहरू सङ्कलन गर्ने धनधान्याचल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यज्ञहरू आयोजना गर्ने तथा यस आश्रम तथा गुरूप्रति आस्था राख्ने व्यक्तिहरू, सनातन धर्मप्रति आस्था राख्ने व्यक्तिहरूसँग गाउँघरबाट अन्न सहयोगहरू लिने गरिएको थियो।

यस्ता विभिन्न अभावका बावजुद पनि त्यस समयमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूले गरेको प्रगति देशविदेशमा कीर्ति फैलाएको तथा विभिन्न उच्च ओहोदामा देख्न पाउँदा साँच्चै नै गुरुज्यूको आशीर्वाद प्राप्त भइरहेको भान हुन्छ। त्यसरी यो विद्यालय सञ्चालन हुँदै गयो। विद्यार्थीहरूको आगमन अझ धेरै हुन थाल्यो, साथै दाता महानुभावहरूको आगमन हुन थाल्यो। विभिन्न भौतिक संरचनाहरू बन्दै गए, दाताहरू बढ्दै गएसँगै विभिन्न अक्षय कोषहरूको स्थापना हुँदै गए। विद्यार्थी भोजनका लागि छुट्टै अन्नक्षेत्र अक्षय कोषको स्थापना गरियो।

यसै गरी विद्यालयले नेपाल सरकारबाट मान्यता प्राप्त गरेसँगै पठनपाठन थप व्यवस्थित रूपमा अगाडि बढ्यो। छात्रावासका लागि भौतिक संरचनाहरूको निर्माण गरियो। कक्षागत रूपमा पठनपाठन सुरु भयो। पहिला १० कक्षासम्म पढाइ हुने गरेकामा हाल १२ कक्षासम्म पढाइ हुन थालेको छ।

समग्रमा हेर्दा यस विद्यालयको प्रगति प्रशंसनीय छ। यस विद्यालयबाट उत्पादन भएका विद्यार्थीहरूले देशविदेशमा विभिन्न ओहोदामा रहेर अतुलनीय सेवा पुर्याइरहेका छन् र यस विद्यालयको नाम राख्न सफल भएका छन्। सनातन धर्म तथा हाम्रो हिन्दु धार्मिक परम्परा र संस्कृतिको संरक्षण गर्नमा यस विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको भूमिका अतुलनीय छ। यो संस्था सनातन धर्म तथा हिन्दु धार्मिक परम्परा संरक्षणको एक महत्त्वपूर्ण केन्द्रको रूपमा स्थापित भएको छ। यी सबै हुनुमा यसै आश्रमका संस्थापक पूजनीय गुरुदेव ब्रह्मलीन स्वामी श्री विवेकानन्द महाराजज्यूको आशीर्वाद तथा उहाँप्रति आस्था राख्ने, सनातन धर्मप्रति आस्था राख्ने सम्पूर्ण सहयोगी दाता महानुभावहरूको अतुलनीय योगदान रहेको छ।

परिशिष्ट

गुरुज्यू बस्नुभएका गुफाहरू

१. राम गुफा	खोला छेउमा
२. सिद्ध गुफा	
३. गणेश गुफा	मालिङ्गेनीमा
४. नन्दी गुफा	खोल्मेतिर
५. बेल गुफा	पिनासीघाट

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य परम्पराका सिद्ध महापुरुष

✍ जगन्नाथ पौडेल

आद्य शंकराचार्य गुरु परम्पराअनुसार पूर्वको स्वर्गद्वारी मानिने शय्याचल पर्वत भुवनेश्वरी धाम तेजपुञ्ज ससर्षि गुफाको सेरोफेरोमा रहेर तपस्या गर्ने सिद्ध साधक र तपस्वीहरूमा श्री १०८ बालतपस्वी हंसानन्द गिरि (महाप्रभु महाराज), आबाल ब्रह्मचारी श्री १०८ षडानन्द महाराज (दिङ्ला), श्री १०८ ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुमहाराज (गोपेटार), श्री १०८ कपिलानन्द महाराज (प्युठान) श्री १०८ अनन्तानन्द गिरि (खुँगा) श्री १०८ आत्मानन्द गिरी (सिक्किम), श्री १०८ थानी महाराज/कृष्णानन्द गिरि (जुम्ला), १०८ सोमेश्वरानन्द महाराज (कर्फोक, इलाम), श्री १०८ तुलसीराम बाबाजी (एकतीन), श्री १०८ कपिलानन्द दण्डी स्वामी (खुँगा), श्री १०८ योगेश्वराश्रम (जोरपोखरी), श्री १०८ विवेकानन्द पुरी (तेजपुञ्ज), श्री १०८ बोधानन्द गिरि प्रभुका चेला (स्वर्गद्वारी), श्री १०८ विद्यानन्द गिरि (प्रभुका चेला ऋषिकेश), श्री १०८ जडभरत (नाङ्गेबाबा) ओझा ब्रह्मचारी (गोपेटार), श्री १०८ धर्मानन्द महाराज (सिद्धपोखरी खुँगा), श्री १०८ खसडबाबा, श्री १०८ परमहंष महात्मा एकतीन, श्री १०८ नरहरि ढुंगाना (तेह्रथुम) गोमुखमा ब्रह्मलीन, श्री १०८ नरहरि योगी (मृगस्थली) काठमाडौं, श्री १०८ ऋषिस्वरुपानन्द तीर्थ (एकतीन), पं.श्री यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु), पं. श्री प्रजापति अधिकारी (खुँगा), पं. श्री नन्दराम भण्डारी (ठूला पण्डित, अमरपुर), पं. माधव भण्डारी (साना पण्डित, श्रीचम्पा), पं. श्री नन्दिकेश्वर खतिवडा (ताप्लेजुङ, थुम्बेदिन), पं. छविलाल अधिकारी (थुम्बेदिन), पं. श्री लीलाधर दाहाल (नाम्रेक), पं. श्री जनकलाल रेग्मी (सुभाङ), पं. विद्यापति तिम्सिना (सुभाङ), पं.भवानीशंकर पौडेल (खाल्डे), पं. श्री नमानन्द न्यौपाने (निगुरादिन) पं. श्रीहर्क पौडेल, पं. श्रीकृष्णप्रसाद तिम्सिना

✍ क्रम......

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(थर्पु), पं. श्री जनकलाल तिम्सिना (एकचेपा), पं. श्री डिल्लीराम तिम्सिना (एकचेपा), पं. श्री टेकनाथ गौतम/गौतमगुरु (अखौंले), तपस्वी गायत्रीस्वरुप ब्रह्मचारी सुभाङ, पं. श्री कृपानन्द गौतम (मच्छेबुङ, पाँचथर), पं. श्री लक्ष्मण/ दधिराम पौड्याल (निगाले), पं. देवीभक्त तिम्सिना (एकचेपा), पं. पूर्णानन्द अधिकारी (सुभाङ) हुनुहुन्छ।

यसैगरी सिद्ध माताहरूमा देवका गुरागाईं (हिरुवादिन), वेदमाया गुरागाईं (हिरुवादिन), वत्सला पौड्याल (खाल्डे), शारदादेवी पौड्याल, नर्वदादेवी पौड्याल, यशोदादेवी कडरिया (डाँडाघरे), डम्बरकुमारी तिम्सिना (थर्पु), महेश्वरा कडरिया (धारा घरे), तिलरूपा तिम्सिना (मालबाँसे), डम्बरकुमारी तिम्सिना (मालबाँसे), माधवा संग्रौला (सुभाङ), वनमाता (जोरपोखरी), मुक्तानन्द गिरि माता (खुँगा), हिमा गिरि (माईधार) हुनुहुन्थ्यो।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराजलाई सम्झँदा

✍ पुष्पलाल तिम्सिना

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरु महाराज (माहिला गुरु देवीप्रसाद पौडेल) बाल्यकालदेखि नै जिज्ञासु स्वभावका, वेद पठनमा तेजिला, गायत्री जप-अनुष्ठान र यज्ञका साधक, निःस्वार्थी र परोपकारी स्वभावका हुनुहुन्छ भन्ने कुरा म सानै छँदा काका, बडाबा र आमाहरूबाट पटक-पटक सुनेको थिएँ। मैले चाहिँ २०१६ साल असोजमा मात्रै गुरुको दर्शन पाएको हुँ। गुरु पाँचथरको आगेजुङ तेजपुञ्ज आश्रममा रहँदा २०१६ देखि २०२० सालसम्म जाने-आउने गरें। गुरुले तेजपुञ्जमा गायत्री अनुष्ठान, महारुद्राभिषेक, लक्षहवन महायज्ञ र शतचण्डीजस्ता ठूला-ठूला यज्ञहरू गराउनुहुन्थ्यो। त्यतिखेर उहाँ ब्रह्मचारीकै रूपमा शिरदेखि पाउसम्म जटाराशि भएका अलौकिक दिव्यपुरुष देखिनुहुन्थ्यो। उहाँ भूत, भविष्य देख्न सक्ने अन्तर्दृष्टि भएका परम तपस्वी र अष्टसिद्धिका साधक पनि हुनुहुँदो रहेछ भन्ने कुरा उहाँका अलौकिक कार्यहरूबाटै थाहा हुन्थ्यो। उहाँ गाउँ-गाउँमा हिउँदे स्याउले विद्यालय बनाउन लगाएर वेद-रुद्री पठनपाठनका साथै गायत्री अनुष्ठान गराउनुहुन्थ्यो। उहाँ स्वर्गद्वारी महाप्रभुका चेला ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुका शिष्य हुनुहुन्थ्यो।

पहाड पाँचथरबाट २०२० पुसमा हामी आसामको सदिया बसाइँ जाँदा उहाँ र जेठा गुरु योगानन्द तेजपुञ्जकै कुटीमा हुनुहुन्थ्यो। पछि २०२४ सालमा उहाँ आसामको सदिया जानुभयो। पाँचथरबाट आसामको सदिया गएका हामी धेरै उहीं थियौं। २०२४ मा ब्रह्मपुत्र नदीकिनारमा ठूलो यज्ञ गराएर महाशिवरात्रि पावन पर्वका दिन उहाँले पुरी सम्प्रदायका गुरु श्री १००८ स्वामी नारायण पुरी दयालु महाराजबाट चतुर्थ आश्रमको दीक्षा लिएर सन्न्यास हुनुभयो। त्यसपछि हामीले उहाँलाई विवेकानन्द गुरु भन्न थाल्यौं। उहाँ २०२४ को रामनवमीदेखि २०२८ मङ्सिर १३ गतेसम्म चापाखुवा, शान्तिपुर ६ नं. कञ्चनगङ्गा नदीको किनारमा कुटी बनाई वेद विद्यालय, गायत्री अनुष्ठान र यज्ञ-यागादिहरू सञ्चालन गर्दै-गराउँदै हामी प्रवासी नेपालीहरूका संरक्षक अनि वटवृक्षझैं शीतल छहारी बनेर रहनुभयो। शान्तिपुर कुटीलाई गुरुले आसामको सदियामा रहेको एउटा पवित्र तीर्थस्थलको रूपमा स्थापित गर्नुभयो।

✍ शिष्य, धुलाबारी, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आसाम बसाइबाट २०२६ सालमै म झापा जिल्लाको चारपाने क्षेत्र बेलडाँगीमा बसाइँ सरी आएको थिएँ। गुरुले आसामबाट मलाई पत्र लेखी बोलाउनुहुँदा २०२८ साल कार्तिकमा म आसाम गएको थिएँ। २०२८ मङ्सिर १३ गते गुरुका साथमा हामी १०-११ जना शान्तिपुर कुटीबाट नेपालका लागि प्रस्थान गर्यौं। भक्तहरूले बाटा खर्च भनी गुरुलाई दक्षिणा चढाउँदा 'दस प्रतिशत मात्रै राखेर अरू फिर्ता दिनू' भनी मलाई अह्राउनुभयो र मैले पनि त्यसै गरें। किनकि गुरु आफैं पैसा समात्नुहुन्नथ्यो। भक्तहरूले चढाएका पैसा त्यस बेलाका समयमा पनि ३००० जति भएका थिए।

२०२८ साल मङ्सिर १५ गते बुधबार बेलडाँगीमा रहेको मेरो आवासमा हामी आइपुग्यौं। त्यस दिन गुरु मेरैमा रहनुभयो। भोलिपल्ट धान्यपूजा पूर्णिमाको दिन बिहान सन्ध्यावन्दनादि सकेर काका पण्डित नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले किन्नुभएको जमिन हेर्न जाऔं भनेपछि हामी सबै जना त्यसतर्फ लाग्यौं। त्यस ठाउँमा हामी (म र भाइ हेमनाथ तिम्सिना) ले खेती गरेका थियौं। त्यस ठाउँमा पुगेपछि गुरुले काका पण्डित श्री नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको मुखमा हेरी भन्नुभयो- 'पण्डितजी मलाई कुटी बनाउन थोडा जमिन दिन सक्नुहुन्छ ?'। काकाले पनि "हजुरलाई जति आवश्यक पर्छ त्यति नै दिनेछु' भन्नुभयो। एक छिन मौन रही नाकमा हातले श्वास-प्रश्वासको नाप गरी खडा रहनुभयो र जग्गामा दाहिना परिक्रमा गरी मलाई यतिभित्रको जमिन भए अहिलेलाई पुग्छ भनी रेखाङ्कन गरिदिनुभयो। काकाले तत्काल स्वीकार गर्नुभयो र गुरुजीलाई कुटी आश्रम बनाउन त्यति जमिन (१५ धुर जति) प्रदान गर्नुभयो।

आज धान्यपूजा पूर्णिमाको दिन छ, आज म यहीं एक्लै बस्छु भन्नुहुँदा हामीले ओत बनाउने विचार गर्यौं। त्यहाँ निर्माण सामग्री केही पनि थिएन। पाटा धोएर सन्ठी सुकाएका थियौं, लामा-लामा सन्ठीको ठूलो मुठो बनाई टुप्पामा बाँधेर फेद फिंजायौं र शीत छल्ने ओत तयार पार्यौं, भुइँमा पराल ओछ्यायौं। कुटी बनाउन त्यस दिनको साइत मीनराशिलाई जुरेकाले गुरु आफैं र देवीप्रसाद पौडेल (ठूल्दाइ) ले संयुक्त रूपमा खाँबो गाड्नुभयो। त्यस दिन म (पुष्पलाल तिम्सिना), काका पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, भाइहरू हेमनाथ, पूर्णानन्द तिम्सिना, पुष्पलाल भण्डारी, चूडामणि पौडेल, डिल्लीराम भण्डारी, खगनाथ भण्डारी, परशुराम ओझा, लोकनाथ पौडेललगायत १०-१२ जना उपस्थित थियौं।

यसै दिन कुटीका नजिकै पानीको कुवा बनाउने थालनीसमेत गराउनुभयो। त्यही कुवा आज पनि आश्रमपरिसरमा इनारका रूपमा विद्यमान छ। यस इनारलाई धेरै वर्षसम्म सखुवाको डुँड लगाएर चलाइयो। पछि विर्ताबजारका व्यापारी धर्मानुरागी च्यवनलाल अग्रवालले त्यसैलाई मर्मत गरी पक्की इनार बनाइदिनुभएको हो। यस ठाउँमा गुरुमहाराज २०२८ मङ्सिरदेखि २०२९ भाद्र २ गतेसम्म मात्र बस्नुभयो। त्यतिखेर पनि कहिले शताक्षीधाम, कहिले धुलावारी, नकलबन्दा र कहिले विराटपोखरा जानुहुन्थ्यो, तर उहाँको स्थायी कुटीचाहिँ चारपानेमै नै थियो। २०२८ साल माघमा पं. टेकनाथ गौतम गुरु अखौंलेमा र जगन्नाथ पौडेल जोरपोखरी आश्रममा पहाडमै पढाउँदै हुनुहुन्थ्यो। विवेकानन्द

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुले काका नन्दिकेश्वर तिम्सिना र जगन्नाथ पौडेललाई शताक्षीधाममा बोलाउनुभयो।

जगन्नाथ पौडेल आउनुभएपछि 'गुरुले 'चारपानेमा संस्कृत विद्यालय स्थापना गरी सञ्चालन गर्ने मेरो इच्छा छ, तपाईंहरूले सहयोग गर्नुपर्यो' भन्नुभयो। उहाँहरूले पनि सहयोग गर्ने सहमति जनाउनुभयो। यसको केही दिनपछि गुरु चारपाने कुटीमा आउनुभयो। 'जगन्नाथ, तिमीलाई प्रतिनिधि बनाई यो संस्कृत विद्यालय आरम्भ गर्ने आज्ञा दिन्छु। आज २०२८ साल माघ शुक्ल द्वादशीको दिन थालनी गर्ने मुहूर्त राम्रो छ। तिमीले धुनी पूजा गरेर उपस्थित यी दुई जना (विष्णुचैतन्य ब्रह्मचारी र पूर्णानन्द ब्रह्मचारी) लाई लघुसिद्धान्तकौमुदीको पाठ दिनू भनी जगन्नाथ पौडेललाई अह्राउनुभयो र सोहीअनुसार जगन्नाथ पौडेलले पनि लघुसिद्धान्तकौमुदीको थालनी गराउनुभयो। त्यही कुटीमा बसेर मैले यस विद्यालयमा पढ्न आउने स्थानीय नानीहरूलाई सिकाउने काम गरें।

त्यति खेरका विद्यार्थीहरू जगन्नाथ भण्डारी, डिल्लीराम भण्डारी, पुष्पलाल पौडेल आदि हुनुहुन्छ। विष्णु पौडेलचाहिँ गुरुसँगै २०२९ भदौमा उत्तरकाशी जानुभयो भने पूर्णानन्द भाइलाई व्याकरण पढाउन भनी २०२९ सालमा जोरपोखरी विद्यालयमा व्याकरण पढाउँदै गर्नुभएका पण्डित टेकनाथ गौतम गुरुकोमा काकाले पुर्याउनुभयो।

२०३३ साल वैशाख ७ गते पण्डित टेकनाथ गौतम गुरुको अध्यक्षतामा विद्यालय सञ्चालक समितिको बैठक बसी बुट्टाबारीका पण्डित भानुभक्त अधिकारीलाई मासिक तलब रु. १०० र खाद्यान्न दिने सर्तमा अध्यापक राख्ने निर्णय भयो। २०३३ सालपछिका दिनमा टेकनाथ गौतम गुरुले यस विद्यालय र आश्रमको मूल खम्बा भई हामीहरूलाई परिचालन गराउँदै संस्थाको विकासमा निरन्तरता दिनुभयो। २०३३ फागुनदेखि पण्डित विष्णुभक्त भण्डारी पढाउन थाल्नुभएको हो। आश्रमबाटै परिचालित साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय र विवेकाश्रम २०४७ पछि अलग-अलग संस्थाको रूपमा सरकारी कार्यालयमा दर्ता भएका छन्।

विवेकानन्द गुरुले स्थापना गर्नुभएको यस साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयमा वेद, व्याकरण, साहित्य पढेर बनारस, वृन्दावन र हरिद्वारमा गई विद्यार्थीहरूले परीक्षा दिने गर्थे भने २०४८ सालपछि यहींबाट एस.एल.सी. परीक्षा दिने परिपाटीको थालनी भयो। पूर्वाञ्चल क्षेत्रमा वैदिक सनातन धर्मको अपार आस्था र श्रद्धा बोकेको विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको संरक्षण र संवर्द्धनमा पठित अपठित सबै व्यक्तिहरू निःस्वार्थ भावले लागिरहने र तल्लो पुस्तालाई समेत सिकाउँदै जाने हो भने यी दुवै संस्था युगौंयुगसम्म बाँचिरहनेछन्।

२०३० भाद्र २७ गते पूर्णिमाको दिन ब्रह्ममूहुर्तमा भागिरथी तट उत्तरकाशीमा विवेकानन्द गुरु महाराजले पाञ्चभौतिक शरीर त्यागी ब्रह्मलीन हुनुभएपछि गुरुको पार्थिव शरीरको दर्शन सदाका लागि हामीले गुमायौं, तर पनि उहाँले हामीलाई ब्रह्मरूपबाटै आशीर्वाद दिइरहनुभएको छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराजसँग रहँदाका स्मृतिचित्रहरू

✍ **विष्णुप्रसाद पौडेल**

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय तथा विवेकाश्रम चारपाने झापाको स्वर्णमहोत्सव वर्ष २०७८ को उपलक्ष्यमा स्मारिका प्रकाशन हुन लागिरहँदा ज्यादै खुसी लागेको छ। सर्वप्रथम यो कार्य सभ्य र भव्य रूपमा सम्पन्न हुन सकोस् भनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त गर्दछु। स्मारिका, स्मरणसँग सम्बन्धित हुने भएकाले यसमा सम्बन्धित संस्थाका ऐतिहासिक कथ्य, लेख्य तथ्यहरू प्रस्तुत हुने गर्छन्, त्यसैले यो स्मारिका विवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको ५० वर्षअघि देखिको इतिहास उजागर गर्न सफा ऐनाको रूपमा प्रकाशन हुनेछ भन्ने कुरामा विश्वस्त छु। यी दुवै संस्थाको स्थापनाकालीन समय २०२८ मा आफू प्रत्यक्ष उपस्थित भई सहभागी भएको हुँदा त्यस समयमा विवेकानन्द गुरुमहाराजले हामी सबैको भाग्योदयका निम्ति यस पवित्र ठाउँमा कुटी आश्रम र विद्यालय स्थापना गरी सञ्चालन गर्नु-गराउनु भएको कुरा मेरो मानसपटलमा अझै ताजै छन्। मेरा बुबा, आमा र हजुरबुबाहरूले समेत विवेकानन्द गुरुको असाधारण शक्ति, त्याग र सामर्थ्यका बारेमा बताउनुभएका कुराका साथै अन्त्य समयमा गुरुले दिनुभएका केही दिव्य उपदेशहरूलाई यस लेखमा प्रस्तुत गरेको छु।

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी गुरुमहाराज (पूर्व नाम- देवीप्रसाद पौडेल ब्रह्मचारी, माहिला गुरु) ले वि.सं. १९६२ साल माघ शुक्लपक्ष श्रीपञ्चमी तिथि रेवती नक्षत्रको शुभ मुहूर्तका दिन पिता हेमलाल र माता धनमाया पौडेलबाट दोस्रो पुत्ररत्नका रूपमा पूर्वी नेपालको पाँचथरमा जन्म लिनुभएको हो। ध्यानी स्वभावका भएकाले उहाँलाई ध्यानी ब्रह्मचारीसमेत भनिन्थ्यो। साधु स्वभावका हजुरबा मित्रलाल पौडेलले जप, तप, पूजापाठ गरेको देखेर, सुनेर विभिन्न देवीदेवताका स्तुतिहरू बाल्यकालमै कण्ठस्थ

✍ पथरी, शनिश्चरे, मोरङ, हाल क्यालिफोर्निया अमेरिका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पार्नुभएको थियो। यस्तो बालप्रतिभा देखेर छक्क परेको कुरा मेरा हजुरबाहरूले पटकपटक सुनाउनुहन्थ्यो। आठ वर्षको उमेरमा व्रतबन्ध भएपछि रुद्राष्टाध्यायी र शुक्ल यजुर्वेदको अध्ययन तथा गायत्री मन्त्र जपमा क्रियाशील हुनुभयो। तीक्ष्ण स्मरणशक्ति देखेर उहाँलाई वेद पढाउनुहुने इलाम चमैताका लोकनाथ भट्टराई गुरुले समेत प्रशंसा गरेको कुरा हजुरबाले मलाई सुनाउनुहुन्थ्यो। उहाँ सानैदेखि जिज्ञासु र तपस्वी हुनुहुन्थ्यो। दिङ्ला षडानन्द गुरु, पं. यज्ञनिधि रेग्मी गुरु र हाङपाङका भण्डारी गुरुसँग पूर्वीय वाङ्मयको विशद् अध्ययन गरी उहाँले विज्ञता हासिल गर्नुभयो। स्वर्गद्वारी महाप्रभुका शिष्य तत्त्वदर्शी ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुसँग उहाँले षट्चक्र चिन्तन विधि र प्रस्थानत्रयी (ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् र वेद) को गहिरो अध्ययन गर्नुभयो। गृहस्थी जीवनका क्षणिक तृष्णामा नअल्मलिई २०१० सालमै गृहसुख त्यागेर ब्रह्मचर्य धारण गरी १४ वर्षसम्म वनवासी भई तपस्या गर्दै वानप्रस्थ जीवन व्यतीत गर्नुभयो। आफ्ना गुरु ब्रह्माभ्यासानन्दबाट लिएको योगसाधना शिक्षालाई तेजपुञ्जको देवीगुफाभित्र बसी षड्चक्र चिन्तनद्वारा गरिने कुण्डलिनी जागरण सिद्धि, अष्टाङ्ग योग सिद्धि र अष्टसिद्धि साधना गर्दै ब्रह्म चिन्तनमा रहनुभयो। लामो समयदेखि गुरुसँगै रहने, बस्ने, पढ्ने र गायत्री जप गर्ने गरेका महेश्वर पौडेल, जगन्नाथ ब्रह्मचारी, कागते साहिँला, गोपु हवलदार, विष्णुभक्त भण्डारी, केदारनाथ खतिवडा, नन्दिकेश्वर तिम्सिना, षडानन्द तिम्सिना, पुष्पलाल तिम्सिना, रघुनाथ न्यौपानेलगायत धेरै शिष्यहरूबाट गुरुको त्याग, तपस्या र महिमाका बारेमा वर्णन गर्ने गर्नुभएको छ।

गुरु पाँचथर तेजपुञ्जमा रहनुहुँदा २०१८ सालदेखि उहाँसँग मैले पढ्न थालेको र २०२४ मङ्सिरदेखि २०३० भदौसम्म अविच्छिन्न रूपमा गुरुसँगै बस्ने, हिँड्ने र पढ्ने गरेकाले त्यस समयमा उहाँले गर्नु, गराउनुभएका महत्त्वपूर्ण कार्यहरू मलाई थाहा भएका हुन्। वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण गर्दै गुरुकुलीय शिक्षाको अध्ययन अध्यापनबाट सभ्य समाज निर्माण हुन सक्ने भएकाले यस क्षेत्रमा गुरुले आजीवन योगदान गर्नुभयो। पाँचथर, ताप्लेजुङ र इलाम क्षेत्रमा प्राचीन वैदिक शिक्षाको पठन-पाठन र अध्यात्म मार्गको अवलम्बन गर्दै गराउँदै २०२४ मङ्सिरसम्म पहाडमा रहनुभयो। त्यही समयमा नेपाल र भारतका तीर्थस्थलहरूको समेत भ्रमण गर्नुभयो। सुन्दर हरियाली वातावरणले युक्त भएका, डाँडाकाँडाले घेरिएका, हिमशैलको काखमा रहेका, पहाडी गुफा कन्दराहरूलाई तपस्थली, यज्ञस्थली र वैदिक शिक्षास्थलीका रूपमा उपयोग गरी पुण्यस्थल निर्माण गर्नुभयो। ती पुण्यस्थलहरू आगेजुङ तेजपुञ्ज, जोरपोखरी, शिवगङ्गा, नन्दीगुफा, गजानन गुफा, सिदिङ्बा गुफा, खाल्डेकुटी, महादेवस्थान साधुगुफा, थामदिन क्षेत्र आदि हुन्। यी पुण्यस्थलहरूलाई छोडी २०२४ मङ्सिरमा गुरु आसामको सदियातर्फ लाग्नुभयो।

पूर्वी नेपालका धेरैजसो नेपालीहरू गृहस्थी जीवन सहज रूपमा चलाउन सकिने ठानी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आसामको सदिया बसाइँ सरी गएका थिए। गुरु अचानक आसामको सदिया पुग्नुहुँदा उहाँका शिष्य प्रशिष्यहरूमा खुसीको सीमा रहेन। सदियाका विभिन्न ठाउँहरू चापाखुवा, बङ्गरा, माझौली, स्याङ्साप, नौसुके, डुमपथर, सातमाइल, पदमफुला, चुनपुरा, शान्तिपुर आदि ठाउँमा बस्ती विस्तार गरी नेपालीहरू बसेका थिए। हामी पनि उतै गइसकेका थियौं। २०२१ मा आफ्नो र २०२३ मा भाइ श्रीप्रसादको समेत व्रतबन्ध भइसकेको हुँदा बालीजान कुटीमा योगानन्द गुरु र ऋषिबाहरूसँग रुद्री पढ्न थालियो। २०२४ मङ्सिरमा विवेकानन्द गुरु त्यस ठाउँमा पुग्नुभयो र मकर सङ्क्रान्तिमा परशुराम क्षेत्रमा गई भव्य यज्ञ गराउनुभयो। त्यसै साल महाशिवरात्रिका दिन ब्रह्मपुत्रकिनार पोटिया घाटमा धेरै दिन भव्य यज्ञानुष्ठान गरेर सन्न्यास आश्रम ग्रहण गर्नुपूर्व गर्नु पर्ने सबै कर्महरू दक्षिण भारत श्रीशङ्कराचार्य शृङ्गेरी मठका अनन्तविभूषित विद्वद्वरिष्ठ सिद्धपुरुष परमहंस श्री १००८ स्वामी नारायण पुरी (दयालु महाराज) बाट विधिपूर्वक सन्न्यास आश्रम धारण गर्नुभयो। २०२४ को रामनवमीदेखि शान्तिपुर ६ नं. भन्ने ठाउँमा कञ्चनगङ्गा नदीको किनारमा कुटीआश्रम, यज्ञशाला, अनुष्ठान आदि निर्माण गरी वैदिक गुरुकुलसमेत सञ्चालन गर्नुभयो। प्रवासमा रहँदासमेत आफू बसेका ठाउँमा वैदिक वाङ्मयको अध्ययन अध्यापनमा लागिपर्नुभयो। उहाँको यो समर्पण र त्याग त्यहाँका स्थानीय जनसमुदाय लगायत प्रवासी नेपालीहरूका निम्ति थियो। शान्तिपुर कुटीमा आवासीय रूपमा उहाँसँगै रहेर शुक्ल यजुर्वेद र श्रीमद्भागवत अध्ययन गर्ने सौभाग्य मैले समेत प्राप्त गरेको हुँ। मेरो पढाइ र स्वभाव सायद, गुरुलाई राम्रो लागेर होला त्यहाँ पढ्ने धेरै विद्यार्थीहरूमध्ये मलाई प्रियतम शिष्यका रूपमा लिनुहुन्थ्यो। त्यही भएर पनि गुरुले समाधि लिनुभएको दिनसम्म मैले उहाँको साथ छोड्न सकिनँ।

गुरुका आश्रम कुटीमा जाँदा परैबाट ॐ हर हर महादेव ! महादेव ! भन्दै जानुपर्थ्यो। शिवनामरूपी पवित्र शब्दोच्चारणबाट वाक्यात्मा शुद्ध गरेर मात्रै आफन्त, धार्मिक मठमन्दिर र सन्तचरणमा जानुपर्दो रहेछ भन्ने कुरा यहाँबाट सिक्न सकिन्छ। जुन कुरालाई पश्चिमा मुलुकले पनि सूचना सञ्चारका क्षेत्रमा अग्रिम रूपमा अनिवार्य उपयोग गर्ने गरेको पाइन्छ। गुरुको दर्शन गर्न जाँदा पहिले ब्रह्मधुनीको दर्शन गरेर मात्रै गुरुको दर्शन गर्नुपर्थ्यो। गुरुकुटीमा केही सामग्री लिएर गएको भए गुरुका हातले स्पर्श गरिदिनुभएपछि भण्डार कक्षमा दिनुपर्थ्यो। गुरुका हातबाट पुष्पप्रसाद नलिईं घर फर्किन पनि पाइँदैनथ्यो। उहाँमा अन्तर्चेतन दृष्टि थियो। कसैले पारिवारिक स्वीकृतिविना गुरुआश्रममा लगिएको सामग्री अन्तर्दृष्टिबाटै अघि थाहा पाउनुहुन्थ्यो र सम्झाई बुझाई गरी घरै फर्काइदिनुहुन्थ्यो।

शान्तिपुर कुटीको यज्ञशालामा लक्षहवन महायज्ञ हुँदा वैदिक मन्त्रोच्चारणमा गुरु स्वयं सहभागी हुँदै यज्ञशाला परिक्रमा गर्नुहुन्थ्यो। हवनकर्ता हामी वटुकहरू वरिपरि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बसेर होमादि गरिरहेको बेला अग्निदेवले टिनको छाना भएको अग्लो यज्ञशालाको गजुर छुँदा पनि अग्नितापले हामीलाई केही असर गर्दैनथ्यो।

कञ्चनगङ्गा नदीबाट गणेश आकृतिको शिला निकालेर माथि अग्लो ठाउँमा गुरुकुटीका नजिकै राखेर दैनिक पूजा गर्ने गरिएको थियो। त्यस वर्ष ठुलो खडेरी परेर बालीनाली सुक्न लागेका थिए। 'अब गणेशजीको मूर्ति उहीं नदीकिनारमा लगेर राखौं तै पानी आउँछ कि, गुरुले भन्नुभयो। परशुराम ओझालगायत बलिया बलिया चार-पाँच जनाले गणेशजीको मूर्ति बोकेर नदीकिनारमै लगेर राख्नुभयो। उहाँहरू घर नपुग्दै विशाल पानी पर्यो, यस्तो अचम्म भएको थियो। सन्तानविहीन दम्पतीलाई मन्त्रसिद्धिद्वारा अभिषेक गरिदिनुभई सिन्दूर र विभूति अभिमन्त्रित गरी यसको टीका लगाउने गर्नू भनी आशीर्वाद दिई पठाउनुहुन्थ्यो। पछि उनीहरू सन्तान प्राप्ति हुन पुगी हर्षोद्गार व्यक्त गर्थे। अधिक खडेरी लाग्दा रुद्राष्टाध्यायीको तेस्रो अध्याय र आँधीहुरीसहितको वर्षा भई आपत् पर्दा चौथो अध्याय उच्च स्वरमा पाठ गर्न लगाउनुहुन्थ्यो र समस्या समाधान पनि हुन्थ्यो। जुन उपायलाई गुरुको समाधिपछि पनि मैले स्वयं उपयोग गरेको छु।

घटना भारत इन्दौरको हो, भारत हरिद्वारमा पढ्दाका इन्दौर सहरभन्दा केही पर घर भएका मेरा सहपाठी प्रिय मित्र ललितमोहन व्यासजीको घर गएको अवसरमा उनकी आमा र बहिनीका साथ इन्दौर सहर घुम्न भनी बस चढ्नका लागि हामी चार जना पैदल यात्रामा थियौं। आकाश सफा थियो, कसैले पनि छाता बोकेका थिएनौं। अचानक आँधीहुरीसहितको विशाल पानी पर्न थाल्यो। चारैतिर अन्धकार भयो। कुद्दै गएर एउटा रुखको फेद समातेर ओत लाग्यौं, रुख पनि भाँचिएलाझैं गर्दै थियो। त्यतिखेर मलाई गुरुले भन्नुभएको कुरा याद भयो र ललितजीलाई मैले यो कुरा बताएँ। उहाँले र मैले भगवान् भोलेनाथ, इन्द्र र वरुण देवतालाई सम्झँदै रुद्राष्टाध्यायीको चौथो अध्याय उच्च स्वरमा पाठ गर्यौं। सक्नै लाग्दा हावाहुरी शान्त भई पानी पर्न छोड्यो, आकास सफा भयो। ललितजीकी माताजीले खुसी हुँदै 'तुम दोनों सच्चे ब्रह्मचारी हो, मै तुम दोनों को प्रणाम करती हुँ' भन्दै आशीर्वाद दिनुभयो। पछिसम्म पनि उहाँले यो कुरा गरिरहनुहुन्थ्यो। यस्ता अनेकौं सिद्धिहरू गुरुलाई थाहा थिए।

शान्तिपुर कुटीमा गुरु रहँदा जप अनुष्ठान गर्ने र पढ्ने विद्यार्थीहरू जहिल्यै हुन्थे। पर्वैपिच्छे भव्य कार्यक्रम र भण्डाराहरू हुन्थे। पाँच-सात सय मानिसहरूले भोजन गर्थे। दुध, दही, घिउ, दाल, चामल, साग सब्जी, चरु र फलफूलहरू प्रशस्तै जम्मा हुन्थे। त्यहाँका आदिवासी जनजातिहरूले समेत गुरुलाई अपार श्रद्धा गर्थे। गुरुले पनि उनीहरूलाई स्नेह गर्नुहुन्थ्यो।

वि.सं. २०२८ भन्दा अघि नै सदियाबाट पं. नन्दिकेश्वर गुरु, पुष्पलाल तिम्सिना र परशुराम ओझा आदि नेपाल चारपाने क्षेत्रमा बसाइँ गइसक्नुभएको थियो। २०२८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मङ्सिर १३ गते शान्तिपुर कुटी छोडेर गुरु नेपालका लागि प्रस्थान गर्नुभयो। गुरुसँगै नन्दिकेश्वर गुरु, पुष्पलाल तिम्सिनालगायत हामी दस-एघार जना १५ गते नेपाल आइपुग्यौं। त्यस दिन गुरुदेव पुष्पलालजीकैमा बस्नुभयो। भोलिपल्ट १६ गते बिहान विवेकानन्द गुरुका साथमा पुष्पलाल तिम्सिना, पुष्पलाल भण्डारी र मसमेत नन्दिकेश्वर गुरुले किन्नुभएको चारपाने मोडदेखि उत्तर दिशामा रहेको जमिन हेर्न भनी आयौं। त्यहाँ आई नपुग्दै गुरुले 'पण्डितजीको जमिनको पूर्वपट्टि त पानीको स्रोत पो रहेछ त !' भन्नुभयो। आइपुगेर हेर्दा ठ्याक्कै त्यस्तै रहेछ, जहाँ अहिले इनार बनाएको छ त्यही ठाउँ हो। त्यसैको पश्चिमपट्टिको ठाउँमा पूर्वपट्टि फर्किएर विवेकानन्द गुरुले 'यो ठाउँ पछि ब्रह्मस्थलको रूपमा विकसित हुनेछ र विद्याको केन्द्र बन्नेछ, केही दिन यस ठाउँमा रहने मलाई इच्छा भयो। कुटी बनाउन थोडा जमिन दिन सक्नुहुन्छ ? भनी नन्दिकेश्वर गुरुलाई सोध्नुभयो।

उहाँले गुरुलाई आवश्यक पर्ने जमिन दिन सक्छु गुरु, भन्नुभएपछि गुरुले थोरै जमिनलाई फड्को मार्दै दायाँ परिक्रमा गरी यति भए पुग्छ भन्नुभयो। त्यस ठाउँमा ॐ नमो नारायणाय नमः भनी पद्मासन कसी, चिपिया जमिनमा राखी ॐकार नाद गर्दै श्रीशङ्कराचार्य गुरु परम्पराका आचार्य गुरुहरूलाई वन्दना गरेर परमहंस स्वरूप ब्रह्मकुटी विवेकाश्रमको स्थापना गर्नुभयो। यो दिन २०२८ मङ्सिर १६ गते धान्यपूजा पूर्णिमाको दिन थियो। यसै दिन कुटी निर्माणको शिलान्यास गरी सुन्ठीको कुटीभित्र गुरु एक्लै बस्नुभयो।

अर्को छहारी बनाई पूर्णानन्दजी र मसमेत बस्न थाल्यौं। त्यस दिन दिउँसो स्थानीय महानुभावहरू दधिराम, देवीप्रसाद, लोकनाथ, चूडामणि, रूपनारायण पौडेल, परशुराम ओझा, हेमनाथ तिम्सिना, डिल्लीराम भण्डारी, भाइ पुष्पलाल, इन्द्रलाल पौडेल लगायत दस-पन्ध्र जना जति उपस्थित थियौं। झापा चारपानेमा यसरी ब्रह्मकुटीको स्थापना गर्नुहुने गुरु परमहंस श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराजले हामी सबैको कल्याणका लागि यो काम गरिदिनुभएको हो

यसपछि शताक्षीधाम दर्शन गरेर चारपाने आउँदा बाँस सुन्ठी, पराल आदि लगाएर भक्तजनहरूले ब्रह्मकुटी निर्माण गरी छानो छाउँदै हुनुहुन्थ्यो। गुरुले शताक्षीधामबाट ल्याउनुभएका शिवलिङ्ग यही ब्रह्मकुटीभित्र स्थापना गरी रुद्राभिषेक गराउनुभयो। कुटीभित्रै यज्ञकुण्ड बनाई दैनिक चरुहोमको समेत थालनी गराउनुभयो। हालसम्ममा उपलब्ध भएको विवेकाश्रमको जमिन विस्तार र भौतिक निर्माणको तीव्रतालाई हेर्दा आश्रम स्थापनाको त्यो दिन त वामन अवतारको रूपमा गुरुमहाराज र बलिराजाको रूपमा नन्दिकेश्वर गुरु पो उभिनुभएको रहेछ भन्ने मलाई लागेको छ। गुरुमहाराजले केही दिन शताक्षीधाममा समेत रहने इच्छा गर्नुभएकाले चारपाने, दुधे र झिलझिलेका भक्तजनले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाँस-पराल लगेर सानो कुटी बनाइदिनुभयो। पूर्णानन्दजी, इन्दिराज र म शताक्षीधाममा पनि गुरुसँगै बस्थ्यौं र जप गर्थ्यौं। त्यहाँ गुरु थौरै समय मात्र बस्नुभयो।

गुरुमहाराजले पाँचथर, जोरपोखरी आश्रममा पढाउँदै गर्नुभएका जगन्नाथ ब्रह्मचारी पौडेललाई र चारपानेबाट पं. नन्दिकेश्वर गुरुलाई शताक्षीधाममा बोलाउनुभयो। केही दिनपछि (पुष महिनाको अन्त्यतिर) उहाँहरू गुरुमहाराजलाई भेट्न आउनुभयो। त्यो दिन राजा महेन्द्रको निधन भएको दिन थियो। त्यसै रात उहाँहरूसँग विवेकानन्द गुरुमहाराजले चारपानेमा संस्कृत विद्यालय स्थापना गर्नु पर्ने आवश्यकता स्पष्ट पार्दै पहाड र सदियाबाट मधेश बसाइँ आउनेहरूको सङ्ख्या आजभन्दा भोलि बढ्दै जानेछ। तिनका सन्ततिलाई शिक्षा दिन सहयोग गर्न आग्रह गर्नुभयो। उहाँहरूले खुसी व्यक्त गर्दै गुरुको सदिच्छा पूरा गर्ने प्रतिबद्धता व्यक्त गर्नुभयो। त्यति खेरै मुहूर्त जुराई २०२८ साल माघ शुक्लपक्ष द्वादशी तिथि मृगशिरा नक्षत्रका दिन चारपाने ब्रह्मकुटीमा संस्कृत विद्यालय स्थापना गर्ने निधो भयो।

गुरुसँगै जगन्नाथ ब्रह्मचारी, इन्द्रचैतन्य ब्रह्मचारी र म पनि चारपाने गयौं। सोही तिथि मितिका दिन चारपाने ब्रह्मकुटीभित्र यज्ञकुण्डमा अग्निपूजा गरेर अग्निदेवलाई साक्षी राखी शुक्ल यजुर्वेद, लघुसिद्धान्तकौमुदीका पुस्तकहरू र अनुष्ठानमा सरस्वतीको पूजा गर्न लगाएर उपस्थित हामी विद्यार्थीहरूमध्ये पूर्णानन्द ब्रह्मचारी र म विष्णुचैतन्य ब्रह्मचारीले वेद पढिसक्न लागेको हुँदा जगन्नाथ ब्रह्मचारीबाट हामीलाई लघुसिद्धान्तकौमुदीका पाणिनीय माहेश्वर १४ सूत्रहरूको पाठ दिन लगाएर संस्कृत विद्यालय स्थापना गरियो भनी उद्घोष गर्नुभयो। यस विद्यालयलाई सञ्चालन गर्दै लैजान नन्दिकेश्वर गुरु, पुष्पलाल तिम्सिना र जगन्नाथ ब्रह्मचारीलाई निर्देशन गर्नुभयो। त्यस दिन विद्यालय स्थापना गरेको उपलक्ष्यमा प्रसन्न हुँदै 'आज मिठा भात खानुपर्छ है' भन्नुभएको हुँदा हामीले चिनी लगाएर भात पकायौं र सबैले खायौं। पहाड जोरपोखरीमा पढाउँदै गर्नुभएका जगन्नाथ ब्रह्मचारी भने केही दिनमात्र चारपानेमा बसेर पहाडतर्फ लाग्नुभयो।

गुरु आफूसमेत शिक्षकका रूपमा रही इन्द्रचैतन्य ब्रह्मचारी, पुष्पलाल पौडेल लगायत हामी उपस्थित विद्याथीहरूलाई वेद, रुद्री, गीता, शिवमहिम्नःस्तोत्र, रामगीता आदि पढाउनुहुन्थ्यो र ब्रह्मचर्य पालन, सदाचार शिक्षा, अतिथि सेवा, बाल, वृद्ध सेवा, गौसेवा, गायत्री मन्त्र जप, अनुशासन आदिको महत्त्व दर्शाउनुहुन्थ्यो। चारपानेबाट गुरु उत्तराखण्डतर्फ प्रस्थान गर्नुभएपछि पुष्पलाल तिम्सिनाले स्वयंसेवक शिक्षकका रूपमा उपस्थित स्थानीय विद्यार्थीहरू- जगन्नाथ, डिल्लीराम, वेनुप्रसाद भण्डारी, दिवाकर तिम्सिना, पुष्पलाल पौडेल आदि धेरै स्थानीय विद्यार्थीहरूलाई पढाउँदै विद्यालय सञ्चालनमा निरन्तरता दिँदै जानुभयो। श्री विवेकानन्द गुरुमहाराजले स्थापना गर्दाको वेदवेदाङ्ग संस्कृत विद्यालय हाल नाम परिवर्तित भई श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालय भए पनि यस विद्यालयको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापनाकालीन पहिलो विद्यार्थी हुने सौभाग्य पाएकोमा गौरव महसुस गर्दछु।

वेदवेदाङ्ग संस्कृत विद्यालय, ब्रह्मकुटी चारपानेबाट गुरुमहाराजले भारत उत्तराखण्डको यात्रा गर्नुहुँदा उहाँका साथमा रिमाल गुरु, परशुराम ओझा, पुष्पलाल तिम्सिना र म थियौं। कनखल, हरिद्वार साधनासदन आश्रममा केही दिन बसेर गुरुले रुद्राभिषेक कार्यक्रम गराउनुभयो। त्यसपछि ऋषिकेश सच्चिदानन्द आश्रममा रहेर ब्रह्मयज्ञ गराउनुहुँदा त्यहाँका गढवाली सन्तहरूले गुरुको प्रशंसा गर्दै "ये तपस्वी सन्त नेपालका एक सच्चा अवतारी सुपुत्र है, धर्म रक्षा के लिए पृथ्वी माता ने जनम दी है" भनेर उहाँलाई त्यागी सिद्ध पुरुषका रूपमा लिन्थे। उत्तराखण्डका सत्पुण्यस्थलहरूको दर्शन गर्दै मोक्षको द्वार मानिने उत्तरवाहिनी भागीरथी गङ्गाको तटमा रहेको सारङ्ग सेवा आश्रममा पुगियो, जहाँ दण्डी स्वामी योगेश्वराश्रम (योगानन्द) गुरु रहनुभएको थियो। त्यहाँ केही समय बसेर सोही ठाउँका उजेली, लाटा, ऐनादेवी आदि ठाउँमा समेत गुरुसँगै बसियो। त्यहाँ बस्दा गुरुका समीपमा धेरै गढवाली भक्तहरू आउने गर्थे। आफ्ना विभिन्न समस्याहरू राख्थे। गुरु एक छिन आँखा चिम्म गर्नुहुन्थ्यो र 'ल, जानू, अब काम पूरा हुन्छ' भन्नुहुन्थ्यो। केही दिनपछि काम पूरा भयो गुरु, भन्दै फेरि भेट्न आउँथे। त्यस क्षेत्रका गढवालीहरूले गुरुलाई अपार श्रद्धा गर्थे। उत्तरकाशी कुटीमा बस्नुहुँदा रात्रिकालीन समयमा ब्रह्मधुनीका समीपमा बसेर रातभरि नै ॐ मन्त्रोच्चारणपूर्वक ब्रह्मनाद गरिरहनुहुन्थ्यो।

उत्तरकाशीमा विवेकानन्द गुरुसँगै रहँदा गुरुले मलाई दिनुभएका केही दिव्य उपदेशात्मक वाक्यहरूलाई उहाँकै शब्दमा जस्ताको त्यस्तै यहाँ राख्ने काम गरेको छु।

१. ब्रह्ममुहूर्तमा उठेर सुषुप्त अवस्थामा रहेको ज्ञानको पोको फुकाउन षट्चक्र चिन्तन गर्दै अजपा गायत्री मन्त्रको जप गर्नू।

२. हातमा लक्ष्मी, सरस्वती र ब्रह्माको वास हुने भएकाले मेरा यी दुई हातले आजका दिनमा राम्रा कामहरू मात्रै गरून्, भनेर बिहान उठ्नेबित्तिकै **'कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्** भनेर करदर्शन गर्दै नराम्रा काम नगर्ने सङ्कल्प गर्नू।

३. बिहान उठेर भूमिस्पर्श गर्नुभन्दा पहिले समुद्रवसने देवी पर्वतस्तनमण्डिते। विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे भनी भूमिप्रार्थना गरेर यी पाउ नराम्रा कामका निम्ति अघि नबढून् भनेर मात्र भूमि टेक्ने गर्नू।

४. सद्बुद्धि प्राप्तिका लागि प्रत्येक दिन गायत्री मन्त्र जप गर्नू।

५. सबै कुराको रक्षा र शक्ति प्राप्तिका लागि दुर्गासप्तशती पाठ गर्नू।

६. स्वास्थ्य पुष्टिका लागि गायत्रीकवच पाठ गर्नू।

७. व्याधि, ग्रह र जन्मदोष निवारण तथा गार्हस्थ्य सुखका लागि दैनिक रुद्राभिषेक गर्नू।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८. **यज्ञाद्भवति पर्जन्यःपर्जन्यादन्नसम्भवः** भनिएकाले समय-समयमा यज्ञ गर्ने गर्नू।
९. द्रव्यशुद्धिका लागि अनाथ, अपाङ्ग, रोगी र बालवृद्धहरूको रक्षाका निम्ति खर्च गर्नू।
१०. अन्नशुद्धिका लागि यज्ञ गर्नू र भण्डारा गर्नू।
११. माता, पिता, गुरु र अतिथिलाई देवतासमान मान्नू।
१२. पृथिवी नै एउटा परिवार हो भन्ने ठानेर सबैलाई आदरपूर्वक व्यवहार गर्नू।
१३. झुट बोलेर श्रेय नकमाउनू र पतन हुने काम कहिल्यै नगर्नू।
१४. जहिल्यै सत्यका पछि लाग्नू।
१५. सम्पूर्ण भूतप्राणीहरूलाई आफूझैं ठान्नू।
१६. परधन र परपुरुषार्थमा कहिल्यै लोभ र ईर्ष्या नगर्नू।
१७. पञ्चकर्म (जप गर्न, वेद पढ्न, यज्ञ गर्न, हरिकीर्तन गर्न र सकेसम्म भण्डारा गर्न) कहिल्यै नछोड्नू आदि।

२०३० भाद्र शुक्ल चतुर्दशीका दिन राति विवेकानन्द गुरुले योगानन्द गुरुसँग संवाद गर्दै "यस धराधामबाट मेरो जाने बेला भएकाले म जान्छु, आजको ६ महिनापछि षष्ठी तिथिका दिन हजुरको जाने दिन हो, आउँदाको हजुर दाजु, जाँदाको म हुने भयौं" भन्नुहुँदा रामस्वरूप ब्रह्मचारी, श्यामानन्द कडरिया र म केही बोल्न नसकी हेरेको हेर्‍यै भयौं। रातको ११ बजिसकेको थियो। हामीलाई अब सुत भन्नुभयो। हामी सुत्यौं तर निद्रा लागेन। गुरु राति नै निस्कनु होला भनी दैलामा लौरो तेर्स्याएर श्यामानन्द कँडरिया ढल्किनुभयो। कतिखेर भुसुक्कै निदाइएछ। बिहान झिसमिसेमा ब्युँझिंदा कुटीमा गुरु हुनुहुन्नथ्यो। गङ्गाकिनारमा नुहाउन जाँदा टर्चलाइट आकासतिर फर्किएर बलिरहेको थियो। चिपिया र खराउ ढुङ्गामाथि थिए, त्यहीं समाधिस्थ भई विवेकानन्द गुरुमहाराज ब्रह्मलीन हुनुभएछ। यो दिन २०३० भाद्रशुक्ल पूर्णिमाको ब्रह्ममुहूर्तको समय थियो। यस दिनदेखि मेरा लागि गुरुको काख सधैंलाई रित्तियो। आसाम सदियाबाट उत्तराखण्ड तीर्थयात्रामा हिंडेका तीर्थयात्री मेरा कान्छा हजुरबा हजुरआमा, काका बडाबा र आफन्तजनहरू त्यसै दिन बिहान गुरुहरूलाई दर्शन गर्न भनी कुटीमा आइपुग्नुभयो। 'विवेकानन्द गुरु आज समाधि हुनुभयो, कसैले पनि शोकसुर्ता नगर्नू' भन्दै योगानन्द गुरुले सबैलाई सम्झाउनुभयो। त्यसपछि योगानन्द गुरुसँग उत्तरकाशीमा रहँदा मैले तत्त्वबोध र योगदर्शनका विषयमा शिक्षा लिने सौभाग्य पाएँ।

जेठा गुरु योगानन्द गुरुमहाराजसँग ढकाल साधु, अन्तरे ढकाल ब्रह्मचारी र श्यामानन्द कँडरियाहरू उत्तरकाशीमै बस्ने गर्नुहुन्थ्यो। २०३० साल माघ शुक्लपक्ष षष्ठी तिथिका दिन (विवेकानन्द गुरुमहाराजले भन्नुभएकै दिन) योगानन्द गुरुमहाराज पनि उत्तरकाशीमै ब्रह्मलीन हुनुभएपछि उच्चशिक्षा अध्ययनका लागि म हरिद्वारतर्फ लागें। २०३७ मा शास्त्री तहसम्मको अध्ययन पूरा गरी आफ्नो घर पथरी मोरङमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आएँ। झापाको चारपानेमा २०२८ माघ शुक्लपक्ष द्वादशी तिथिका दिन स्थापना भएको र आफूले लघुसिद्धान्तकौमुदी पढ्न सुरु गरेको वेदवेदाङ्ग संस्कृत विद्यालयमा पछि पुग्ने अवसर पाएँ। म त्यहाँ पुग्दा स्वामीजीका शिष्य विष्णुभक्त भण्डारी गुरु शिक्षकका रूपमा काम गर्दै हुनुहुन्थ्यो भने त्यहाँ अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, काशीनाथ न्यौपाने, भवानीशङ्कर निरौला, वेदनिधि गड्तौला, लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा, गोविन्दप्रसाद पौडेल, छन्दुराम भण्डारी, विष्णुप्रसाद भण्डारी, छविलाल खतिवडा आदि धेरै भाइहरू व्याकरण पढ्दै हुनुहुन्थ्यो। त्यतिखेर काठको विद्यालय भवन बनाउने क्रम थियो र पथरी झोडादेखि हामीले समेत तख्ता सङ्कलन गरेर चारपाने पठाएका थियौं। आज आश्रम र विद्यालयमा भव्य पक्की भवनहरू निर्माण भइरहेको देख्दा गौरव लाग्छ। यो सबै गुरुमहाराजकै आशीर्वाद हो।

पूर्वी नेपाल र भारतका विभिन्न ठाउँमा पुगी गुरुकुलीय शिक्षा, सदाचार शिक्षा, न्यास, ध्यान योग, यज्ञानुष्ठान र अध्यात्ममार्ग अवलम्बनको शिक्षा प्रदान गर्दै सभ्य, सुशिक्षित समाज निर्माणमा जीवन समर्पित गर्नुहुने विवेकानन्द गुरुमहाराजका अवशेष कीर्तिहरूलाई संरक्षण संवर्धन र विस्तार गर्दै जानु हामी सबैको कर्तव्य हो।

आश्रम र विद्यालयको उन्नतिका लागि जजसले जुनजुन ठाउँ र पदमा रहेर सेवा पुर्याउनुभएको छ, उहाँहरूलाई त्यही-त्यही ठाउँबाट सम्बोधन र सम्मान गर्ने पद्धति र परम्परा बसाल्ने विषयमा यी दुवै संस्थासँग आबद्ध, निकटस्थ बौद्धिक व्यक्तित्वहरू र कार्यसमितिका पदाधिकारीहरूको भूमिका सर्वोपरि रहन पुगोस्, अस्तु परिपूर्णम्।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकानन्द गुरुलाई सम्झँदा...

डा. पुण्यप्रसाद सिग्देल

वि. सं. २०२२-२३ सालतिर हुनुपर्छ, मङ्सिर महिना थियो। म ९-१० वर्षको थिएँ। हजुरआमाले 'आज आगेजुङमा ठूला साधुले भण्डारा लगाउने अरे भेटीपाती लिएर म जाँदैछु। तँ पनि मेरो साथी जान्छस्' भन्दा फुर्किंदै पहिलोपल्ट म आगेजुङ पुगेको थिएँ। हजुरआमाले दही, दूध, इस्कुस, घ्यु, पुष्प अरू के के बोक्नुभएको थियो। पाँचथर जिल्लाको तत्कालीन सिरिसे गाउँ पञ्चायतको सिरान फागुने हाल याङ्वरक गाउँपालिकाबाट त्यहाँ झन्डै २ घन्टा हिँडेर पुगिन्थ्यो। वरिपरि जङ्गल माझमा एउटा गुम्बा र एउटा कुटी मात्र रहेछन् त्यहाँ।

कुटीअगाडि उभिएका एक जनाले भक्तले ल्याएको भेटीपाती समाउने अनि नजिकै बस्नुभएका लामो कपाल र दाह्री भएका हेर्दै डरलाग्दा मान्छेलाई देखाउँदै थन्क्याउने चलन रहेछ। आउने मान्छेले डरलाग्दा मान्छेलाई गुरु भन्दै ढोग्ने गरेको हुँदा हजुरआमाले मलाई पनि 'ढोग्' भन्नुभयो। तर मैले मानिनँ। गुरुले 'किन देउता डर लाग्यो ? यहाँ डराउनुपर्दैन' भन्नुहुँदा पनि म निहुरिन मानिन। गुरुले हजुरआमासँग भन्नुभयो - 'नानी डरायो, उता लानुहोस्।'

हजुरआमाका पछिपछि यताउता घुम्दै थिएँ। मावल जाँदा चिनजान भएका केही साथीसँग भेट भयो, उनीहरूसँग खेल्न थालेपछि अघिको डर र भोक हराएछ। केही बेरपछि हजुरआमाले 'प्रसाद खान आइज' भनेपछि साथीहरूसँगै बसेर टपरीमा खिर पनि होइन, ढकने पनि होइन, कनिका दूधमा पकाएको जस्तो मनभोग मिठो प्रसाद थपीथपी खाएको अहिले जस्तो लाग्छ।

आगेजुङ (तेजपुञ्ज) बाट फर्केपछि बाटामा हजुरआमासँग सोधें 'ती लामो लामो कपाल दाह्री भएका झाँक्रीजस्ता मान्छे को हुन् ?' 'नानी ती ठूला, ज्ञानी, ध्यानी साधु अरे। उहाँलाई माइँला गुरु भनेर सबैले चिन्छन् अरे। उहाँको नाम देवीप्रसाद पौडेल अरे। उनका जेठा दाजु हरिदत्त पौडेल पनि ध्यानी र ज्ञानी छन् अरे। उहाँहरूको घर मच्छेबुङमा छ अरे। अनि घरका नजिकै पीपलको बोट छ अरे। हरिदत्त सानै उमेरदेखि

✍ साहित्यकार, सुरुङ्गा, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यसका फेदमा बसेर ध्यान गर्थे अरे। गाउँमा उनलाई पिपलेबाजे भन्थे अरे। अहिले उनै पीपलेबाजे जेठा गुरु, योगानन्द गुरु नामले प्रसिद्ध हुनुहुन्छ अरे। नानी भगवान्को ध्यान गरेपछि आफूलाई आवश्यक पर्ने सामान जहाँ जत्तिखेर चाहियो त्यहीं ल्याउन सकिन्छ अरे। ती दुवै गुरु त्यसो गर्न सक्नुहुन्छ अरे। आज पनि सब्जी तयार गर्ने बेलासम्म नुन थिएन अरे तिनै लामो कपाल भएका गुरुले एउटा पहेंलो पुष्प लगेर कुटी मास्तिर डाँडामा गाडेका किलामा चढाएर कोशी नदीलाई ढोग्नुभयो अरे अनि त आए जति सबै भक्तले नुन लिएर आउनुभयो अरे।'

अघि गुरुलाई नढोगेकामा मेरो मन पिरोलिंदै थियो। फेरि हजुरआमा सम्झाउँदै भन्न थाल्नुभयो - 'तैंले पनि भगवान्को ध्यान गर्नु पर्छ। त्यस्ता ठूला साधुसँग अघि जस्तो डराउनु पर्दैन, ढोग्नुपर्छ, आशीर्वाद लिनुपर्छ, फेरि फेरि आउँदा आशीर्वाद लिनू' हजुरआमाका यी कुराले म प्रभावित भएँछु। घरमा गएर आमालाई सबै कुरा सुनाएँ। आमाले पनि गुरुहरूका विषयमा सुन्नुभएको रहेछ -'तेरा मावलदेखि पारिपट्टि मच्छेबुङका ठूला साधु पो त।' आमासँग घाँस काट्न जाँदा धेरैपल्ट आगेजुङ गएँ। असिना तर्काउने लामा बासँग २-३ पटक भेट भयो तर झाँक्री जस्ता गुरुको दर्शन गर्ने सौभाग्य प्राप्त भएन।

२०२७ साल चैतदेखि इलाम जिल्लाको तराई भूभाग बुकुवामा बस्न थालें। मेरा मनभित्र जेठा गुरु र माइँला गुरुको दर्शन एवम् उहाँहरूका चामत्कारिक कार्य सुन्ने चाहना मरेको थिएन, अझै पालुवा हाल्दै थियो। भगवान्ले 'तँ चिता म पुर्याउँछु' भन्नुहुन्छ रे, मलाई पनि त्यस्तै भयो। मेरी आमाका माइँला मामा यज्ञनिधि खतिवडाका जेठा छोरा केदारनाथ खतिवडा पाँचथर जिल्लाको खुँगाबाट आसामको सदियामा केही वर्ष बसेर आफ्नै मातृभूमिमा बस्न त्यहीं आउनुभएको रहेछ। केदारनाथ खतिवडा जेठा गुरु योगानन्द र माइँला गुरु विवेकानन्दका अनुयायी मात्र होइन, शिष्यसमेत हुनुहुँदो रहेछ। अर्कोतिर मेरी आमाभन्दा २ वर्ष कान्छी आमाको प्यारो भाइ साथै उहाँले मेरी आमासँग खुँगामा सँगै गाई, बाखा हेरेको, घाँस काटेको स्मृति पनि सँगालिराख्नुभएको रहेछ। 'मेरी साहिंली फुपूको नाति झोलीको देउता मेरो प्यारो भान्जो पढ्नुपर्छ, ज्ञानी बन्नुपर्छ' भनेर बिहान-बेलुका मलाई चण्डी पढाउन थाल्नुभयो। पढाउने क्रममा एक दिन उहाँले जेठा गुरुसँग जोरपोखरीमा पहिलो अध्याय वेद पढ्दै गर्दा 'म काबेली गुफातिर झर्छु। यहाँ जाडो पनि बढ्दै छ। अब तिमीले माइँला पौडेलसँग वेद पढ्नू' भनेपछि केदार खतिवडाले माइँला गुरुसँग वेदको अध्ययन गर्नुभएको रहेछ। माइँला गुरु नन्दी गुफामा बसेका बेला औपचारिक रूपमा वेद अध्ययन पूर्ण गर्न उत्साहित खतिवडा गुफामा पुगेर गुरुलाई अभिवादन गर्दा अभिवादन स्वीकार नगरी 'घोता तिमी सुर्ती खाँदा रहेछौ। सुर्ती खानेलाई वेद पढाउनु नहुने पढाएँछु। अब पढाउँदिन जाऊ, तिमीले वेद पढेको व्यर्थ छ। वेद पढेर पनि यस्तो गर्ने ?' भन्दै गुरु रिसाउँदा रोइकराई गरेर फेरि सुर्ती नखाने प्रतीज्ञा गरी वेद पूर्ण गरेको प्रसङ्ग सुनाउनुभयो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्को एक दिन गुरु गणेश गुफामा बस्नुभएको थियो। राति ९ बजेतिर मालिङ्गेनी हाम्रा गोठमा 'महादेव' भन्दै आउनुभयो र भन्नुभयो - 'घोता आज म यहीं बस्छु है'। गुरु त्यहीं बस्नुभयो। अलि अलि पानी पनि पर्दै थियो। उज्यालो भएपछि गुरुले गुफा हेर्न पठाउनुभयो, गएर हेर्दा गुरु सुत्ने ओछ्यानको शिरपट्टिको आधा भाग, गुरुले हवन गर्ने ठाउँ, छोडेर अरू सबै पहिरोले लगेको रहेछ। खतिवडाले कहिले लम्बुवाकी देवीलाई शिवगङ्गा नामकरण गरेको, कहिले आगेजुङमा ज्योतिपुञ्ज आउँदो रहेछ भनेर तेजपुञ्ज नामकरण गरेको प्रसङ्ग सुनाउँदा मनमनै गुरुका शक्तिको प्रशंसा गर्थें त्यस्ता महागुरुको दर्शनको अभिलाषा हुन्थ्यो।

'२०२४ सालको शिवरात्रिका पावन पर्वका दिन परमहंस स्वामी श्री नारायण पुरीजी महाराजबाट लोकलाई नै पवित्र बनाउने आसामका ब्रह्मपुत्र नदीकिनारमा विधिपूर्वक सन्न्यास ग्रहण गरी माइँला गुरु श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी नामले प्रतिष्ठित भएपछि नेपाल फर्कनुभएको थियो भान्जा। तिम्रो आत्रेय गोत्र हो। योगानन्द, विवेकानन्द गुरु पनि आत्रेय गोत्रमा उत्पन्न महापुरुष हुनुहुन्छ। मानवका रूपमा विशिष्ट देवताको अवतरण भएको जस्तो लाग्छ मलाई त। सँगै बसेका मानिसले उहाँहरूले गरेका कार्य बेग्लाबेग्लै रूपमा पनि देख्थे। उहाँहरूको जीवनदर्शनको खोजी गर्नुपर्छ, प्रकाशमा ल्याउनुपर्छ। आफ्ना अग्रज पितृप्रति आफूले गर्ने कर्तव्य बिर्सनुहुँदैन। यस्ता कार्यले समाजको उत्थान हुन्छ। सधैं विचार गर्नू है।' पढाउने क्रममा मामा सम्झाउनु हुन्थ्यो।

२०२८ साल माघमा केदारनाथ खतिवडा सपरिवार झापा जिल्लाको साधुटार बसाइँ सरेपछि गुरुहरूको जीवनदर्शन बोध गर्ने इच्छा अधुरै रहेकाले मन खिन्न थियो। यसैबीच २०३० साल असारमा मेरा धर्मकर्म मावली जेठा मामा श्री तेजप्रसाद आङबो, कान्छा मामा अइन्द्रकुमार आङबो र कान्छी माइजू अम्बिकादेवी जबेगु आङ्बोले 'भान्जा पढ्नुपर्छ। यसरी हलीगोठालोमात्र भएर हुँदैन। पाँचथर भारपाको अर्खौलेमा पं. टेकनाथ गौतम (गौतम गुरु) द्वारा सञ्चालन भएका संस्कृत विद्यालयमा प्रवेश गराइदिन्छौं। हामीसँगै जाऔं। त्यहाँ पढ्नू' भनेपछि म अर्खौले पुगें। विद्यालयमा चाहिने वस्तुको परिपूर्ति हजुरबा भवानीप्रसाद आङ्बोले पूर्ण गरिदिनुभएको थियो। गौतम गुरु गुरुहरूकै भान्जो हुनुहुँदो रहेछ। गौतम गुरुले अर्खौले र जोरपोखरीमा पनि विद्यालय सञ्चालन गर्नुभएको रहेछ। मैले जोरपोखरीमा पढ्ने सौभाग्य पाएँ। जोरपोखरीमा जेठा गुरुको आश्रम पनि रहेछ।

जोरपोखरीमा अध्ययन गर्न थालेपछि गुरु जगन्नाथ पौडेल यदाकदा आश्रममा आउने मावली दाइ चिदानन्द खतिवडा, मामा होमनाथ अधिकारी (थरी जेठा, गुरुका अनन्य भक्त) बाट जेठा गुरुले दबेगुफा (बाघेओडार), आङ्खोपको खिर्राबोटे, सिदिङ्बा गुफा, माङ्लेबुङ पानवा छाँगामाथिको ओडार र कुटी, एकतीनको शिवालय, काबेलीगुफा आदिमा १९९० देखि २०१५, २०१६, २०१७ सालतिर विभिन्न समयमा गर्नुभएका गायत्री अनुष्ठानलगायत ध्यान गरेको प्रसङ्ग साथै २०१८ सालमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जेठा गुरु र माहिला गुरुद्वारा तेजपुञ्जमा सम्पन्न महायज्ञको विवरण सुन्न र जोरपोखरी आगेजुङ सेरोफेरोमा भएका कार्य देख्ने मौका पाएँ। जेठा गुरु २०१९ साल माघ ३ गते जोरपोखरीबाट चिदानन्द खतिवडा र रामस्वरूप खरेललाई साथ लिएर भारतको उत्तरकाशी प्रस्थान गर्नुभएछ अनि २०२० साल वैशाखमा स्वामी सच्चिदानन्दजी महाराजबाट दीक्षा तथा दण्डग्रहण गरी चौथो आश्रममा प्रवेश गरी योगेश्वराश्रम नामले प्रतिष्ठित बन्नुभएछ।

त्यसै गरी माइँला गुरुले मच्छेबुङ ओडार, पञ्चमुखी भगवती स्थान एकतीन, आङ्खोप, सिदिङ्बा ठूलोभन्ज्याङ ओडार आदि स्थानमा कहीं एक्लै, कहीं शिष्यसहित गायत्री अनुष्ठान गर्नुभएको, २०२२ सालमा तेजपुञ्जमा विशेष यज्ञ गर्नुभएको, साथै २०२४ सालमा आसाम जानुभएको र सन्न्यास ग्रहण गरी विवेकानन्द पुरी बन्नुभएको र पुनः नेपाल आएर चारपाने, सताक्षीधाम आदि स्थानमा बस्नुभएको रहेछ। २०२८ साल माघमा चारपानेमा संस्कृत विद्यालयको समुद्घाटन गरी उत्तरकाशी प्रस्थान गर्नुभएको विवरण सुन्दा गुरुले तपस्या गरेका, घुमेका ठाउँको दर्शन गर्न म लालायित भएको थिएँ।

त्यस्तै गुरुद्वयका कान्छा भाइ पशुपति पौडेलसमेत गायत्रीका उपासक साथै त्यागी व्यक्ति रे भनेको सुनेर दाइ चिदानन्द खतिवडा र तुलसीप्रसाद अधिकारीलाई जिज्ञासा राख्दा स्थानीय हरिप्रसाद केरुङ भन्ने व्यक्तिले घर बस्ने घडेरी किन्न मागेर सबै घरजग्गाको कागज मिलाई आफ्ना नाममा पारेछन्। तीन वर्षपछि पौडेललाई घर छोड्न बाध्य पारिएछ। पशुपति पौडेलले आफ्नो दुखेसो मुक्तिनाथ खतिवडा, हरिशरण अधिकारी आदिलाई बिसाएपछि मुद्दा चलेछ। अदालतबाट आफ्ना पक्षमा फैसला आए पनि 'अस्ति छोडिहालें, थुकेको थुकजस्तै हो, भयो त्यहाँ जान्न' भनेर आफू केही दिन दबे गोठमा, निकै वर्ष शिवपञ्चेश्वर मन्दिर एकतीनमा र अन्त्यमा कान्छी छोरीको घर माङ्लेबुङ ताराप्रसाद खतिवडा सम्धीका घरमा १४ वर्ष बसेपछि श्रीमती र केही समयपछि पशुपति पौडेल २०५७ सालमा दिवङ्गत भएको सुनेपछि कस्तो संयोग होला जस्तो लाग्यो।

हेमलाल पौडेल र धनमाया पौडेलका पाँच सन्तानमध्ये जेठो छोरो हरिदत्त, ज्ञानावलम्बी, अन्तर्मुखी, तपस्वी, साधक बने। माहिँलो छोरो देवीप्रसाद ज्ञानका साथै विशेष रूपले कर्मावलम्बी, शिक्षा प्रचारक, समाज सुधारक, आचारवान् एवम् वर्णाश्रम धर्मप्रति पूर्ण समर्पित बने। कान्छो छोरो पशुपति गायत्री जापक, कर्तव्यनिष्ठ, शान्त र त्यागी बने। जेठी छोरी कौशिलाबाट पं. टेकनाथ गौतमजस्ता सत्शिक्षा प्रचारक, ज्ञानी, तपोनिष्ठ व्यक्तिको जन्म भयो भने कान्छी छोरी पद्माका विषयमा भने विशेष जानकारी प्राप्त हुन सकेन। यो सन्दर्भ उठान गर्न खोजेको मूल कुरो के हो भने कश्यप अदितिबाट वामन, जमदग्नि रेणुकाबाट पर्शुराम, दशरथ कौशल्याबाट राम, वसुदेव देवकीबाट कृष्णजस्ता संस्कारित एवं तपोनिष्ठ शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्वको आविर्भाव भएको पुराण आदिमा प्रमाण पाइन्छ भने हेमलाल र धनमायाको कस्तो संस्कार र तपस्या थियो,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यसको खोजी विशेष फलदायक होला कि ? हुन त गीता (४।७) मा श्रीकृष्णले अर्जुनलाई सम्झाउँदै उद्धृत गर्नुभएका अर्थलाई सार्थक पारिएको त होइन ?

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

यस धर्तीमा जब जब धर्म, संस्कार, संस्कृति, समुचित परम्परा तथा प्राणीमात्रका अहित कार्यले प्राथमिकता पाउन थाल्छन्। भौतिक जगत् र प्राणी मात्रका संरक्षणका निम्ति राजा, महाराजा वा शासकद्वारा निर्मित नीतिनियम असफल हुन थाल्छन् अनि परमात्माले तत्तत् असहज परिस्थितिलाई सहज बनाउन प्राणीमात्रलाई सहिष्णु प्रस्तुत गर्न, आफ्ना धर्म, कर्म, कर्तव्य, जिम्मेवारी बोध गराउन आवश्यक भए विविध दण्डका माध्यमले समेत प्राणीलाई सुबाटो हिँडाउन कुनै न कुनै रूपमा भगवान् अवतरित हुनुहुँदो रहेछ, जन्म ग्रहण गर्नुहुँदोरहेछ भन्ने बोध गराउन त होइन ? मत्स्यादि अवतार, वाल्मीकि, जनक, विश्वामित्र, हनुमानादि कुनै न कुनै उद्देश्य परिपूर्तिका निम्ति जगत्मा उपस्थित भएको यथार्थ वैदिक, पौराणिक, ऐतिहासिक ग्रन्थबाट पुष्टि भएकै छन्।

यो सन्दर्भ उठान गर्नुको उद्देश्य ब्रह्मका नाति महर्षि आत्रेय वंश परम्परामा कालान्तरपछि यस धरामा उपस्थित योगानन्द, विवेकानन्द, पशुपति आदिका सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक, नैतिक आदि कार्यले समाजलाई पुर्याएका योगदानको चर्चा गर्नु हो। विशेषतः सन्तका तीन गुणरूप हुन्छन् - ज्ञान, कर्म र त्याग। हेमलाल र धनमायाका तीन पुत्र गृहस्थाश्रममा रहेर पनि देहाभिमानबाट मुक्त रहेछन्। शब्द अर्थ र प्रयोग -ध्यान, ज्ञान र त्याग एकअर्काका कर्मबाट पुष्टि भएको छ। गुरुहरूको जन्म हुँदा यो धरा सामाजिक विकृति, दुराचार, अधर्म, वर्णाश्रम, आचरण र धर्मप्रति घृणा, वेदादि धर्म, संस्कारप्रति अविश्वास, मानव मानवबीच सद्भाव शून्यप्रायः भएको कठोर समय रहेछ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुश्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।

(गीता ४।८) भन्ने वचन भगवान्ले पूर्ण गर्ने समय उपस्थित भएका कारण आदि शङ्कराचार्य, निम्बाकाचार्य, बल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, स्वर्गद्वारी महाप्रभु, कपिलानन्द, अनन्तानन्द गिरी, ब्रह्माभ्यासानन्द, खसड बाबा, आवाल ब्रह्मचारी षडानन्द अधिकारी, यज्ञनिधि रेग्मी गुरु, महागुरु फाल्गुनन्द, योगमाया न्यौपाने, पं. लोकनाथ भट्टराई, पं. विष्णुलाल ओझा आदिका हारमा गुरुहरूको उपस्थिति भएको त होइन ? गुरुहरूका विभिन्न कार्यबाट शिक्षा, समाज, धर्म, वर्णाश्रम परम्परा, अन्तर्मुखी ज्ञान, कर्मप्रति समर्पण, त्याग एवम् सत्कार्य गर्नुपर्छ भन्ने कुरालाई आज पनि उहाँहरूका लाखौंलाख अनुयायी हुनुले पुष्टि गर्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्तमा,

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। आश्रमादाश्रमम् गच्छेत्। उपध्वरे गिरीणां सङ्गमेच नदीनाम्।
एतदेश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरितं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

जस्ता वेदादि शास्त्रले उद्घोष गरेका महावाक्यका अखण्ड अनुयायी, अन्तर्मुखी, ज्ञानालम्बी, ध्यान, जप र नाम स्मरणमा मग्न, निर्विकल्प समाधि, ब्रह्मविलय, योगप्राप्त, महायोगी जेठा गुरु योगेश्वराश्रम।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतां समाः।
एवं त्वयी नान्यत्वस्ति न कर्म लिप्यते नरे।
नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। (गीता ३।५)

प्रकृतिमा उपस्थित सबै प्राणीसँग रमाउन सक्ने स्वयंमा कोही र कुनै स्थान पनि कम मूल्यको हुँदैन। त्यसको समुचित ढङ्गले संरक्षण र सदुपयोग गर्नुपर्छ। वर्णाश्रम धर्मका पालनले मात्र जगत्को भलो हुन्छ भन्ने यज्ञपुरुषका अनन्य उपासक शिक्षा प्रचारक माइँला गुरु विवेकानन्द पुरी। सुख, दुःख, मान, अपमान, सम्पन्न विपन्न आदि प्राणीका बसका कुरा होइनन्। यस जगत्मा चिरस्थायी कुनै वस्तु छैनन्। यो शरीर पनि ढिलोछिटो नाश हुने नै हो। किन कसैसँग विद्रोह गर्ने, किन कसैको मन दुखाउने, उसैको सृष्टि हो जे गर्नु छ उसैले गर्छ भनेर परमात्मामा समर्पित हुने लक्ष्य लिएका कान्छा गुरु साथै गुरुत्रयका चेली कौशिला र पद्माका पवित्र आत्मालाई सम्मान गर्छु। माता धनमाया र पिता हेमलालका महान् आत्मालाई सदैव नमन, समर्पण गर्छु।

विशेष सन्दर्भ

भेटवार्ता

श्री रन्धतादेवी सिग्देल
श्री खिनमाया (सावित्रा) सिग्देल
पं. श्री आनन्दप्रसाद सिग्देल
श्री केदारनाथ खतिवडा
श्री तुलसीप्रसाद अधिकारी
श्री पुष्पलाल तिम्सिना।

फोनवार्ता

श्री जगन्नाथ पौडेल, श्री चिदानन्द खतिवडा, श्री किशोरकुमार गौतम, श्री ताराप्रसाद खतिवडा

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सानो वेदव्यास

✍ भीष्मभूषण सङ्ग्रौला

शीर्षकमा मैले जसलाई सानो वेदव्यास भनेर लेखें, उहाँको नाम यज्ञनिधि रेग्मी हो। उहाँलाई सबैले सुभाङ गुरु भनेर चिन्थे। म सानै हुँदा मलाई तिथिमिति याद रहेन तर घटना मेरा आँखामा जस्ताको तस्तै छ। यस घटनाले मेरो जीवन नै प्रभावित रह्यो भन्ने कुरा अद्यापि म महसुस गर्छु।

त्यो बेला अङ्ग्रेजी स्कुलहरू थिएनन्। गाउँले पाठशालाहरू थिए जहाँ गाउँकै गुरुजीहरूले वर्णमाला, बाह्रखरी, अरू गुणा हिसाब सिकाउने गर्थे। एक दिन सुभाङ गुरुले विद्यालयका सबै विद्यार्थी, गाउँका गण्यमान्य मानिसहरूसमेतलाई लिई आफ्नो घरमा आउन विद्यालयका गुरुजीहरूलाई खबर पठाउनुभएछ। त्यसको भोलिपल्ट गुरुजीहरूले गाउँका सबै भद्रभलाद्मीहरूलाई खबर गरेर हामीलाई लिएर गुरुको घरमा जानुभयो। विद्यार्थीलाई लैजानुको अर्थ के थियो भने गुरुकोमा भेट्न आउने मानिसले कुराउनी लिएर आउँथे र त्यो धेरै हुनाले विद्यार्थीहरूलाई बाँडिन्थ्यो। त्यो दिन गुरुघरमा निकै ठूलो जमघट भयो। हामीले पनि आँगनमा बसेर कुराउनी खायौं। केही मिसावट नभएका स्वादिष्ठ। गुरुले त्यस बखत के भन्नुभयो भने 'अब नेपालमा कलियुगले प्रवेश गर्यो र म अब रहन्न। धामगमन गर्ने खबर आइसक्यो। पर्सि तपाईंहरू सबै बिहान आठ बजे भेला हुनुहोला। घाट जाने तयारीसहित। गुरुका ती कुराहरू मानिसहरूले पत्याएनन्। त्यस बेला गुरुले केही कुरा भन्नुभएको थियो जुन अक्षरशः सत्य साबित भए।

(१) जोरपोखरी सुक्ने छन्। (२) नेपालमा राजा रहने छैनन्। यी कुराहरू तपाईंहरू धेरैले आफ्ना आँखैले देख्नुहुनेछ।

अब पर्सिपल्ट त्यसरी नै सबै गुरुघरमा भेला भए। हाम्रा बाबैहरूले पत्याएका थिएनन् र घोडा लिएर झरे। के खबर गरिहाल्नुपर्ने पो हो कि भनेर हामी केटाखाललाई पनि लगेका थिए। सबै आठ बजे गुरुघरमा भेला भइसकेका थिए। जमात ठूलै थियो। खाटमा बसिरहनुभएको थियो गुरुजी। त्यस बेला उहाँले छोरा इन्दिराजलाई बोलाएर उहाँलाई तुलसाको मोठमा लान भनियो। गुरुले भन्नुभयो म केही भगवान्‌को स्तुति पाठ गर्छु। मलाई दुई घन्टापछि काशीबाट गङ्गाजल गोपीचन्दन र प्रसाद आइपुग्छ। त्यसपछि मात्रै धाम गमन हुन्छ।

✍ शिक्षाविद, साहित्यकार, सुभाङ, पाँचथर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्चर्यजनक कुरा थियो। त्यो बेला अहिलेजस्तो सञ्चार थिएन। काशीबाट प्रसाद कसले ल्याउने हो ? यो कुरा गुरुलाई कसरी थाहा लाग्यो ? तर पनि प्रश्नको उत्तर थिएन। सबैले आपसमा यस्तै उस्तै कुरा गर्दै पर्खनुपर्ने थियो। दुई घन्टा बित्यो। दश बज्यो। कुरा के रहेछ भने गुरुका छोरा माहिलाले सुभाङ सिम्लेमा तिम्सिनाकी छोरी बिहे गरेका रहेछन्। तर उनले विवाहित पत्नी छोडेर त्यसै गाउँकी लामिछानेकी छोरी लिएर आसाम गएछन्। घरमा बस्ने औचित्य नभएपछि ती महिला माइतै गएर बसिछन् पतिकै सतित्वमा। ऊ र उनका माइतीहरू तीर्थ गर्न एक महिनाअघि गया र काशी गएका रहेछन्। घर आउने क्रममा उनी (पुरानो चतुरे जहाँबाट सिम्ले जाने र मुक्तुरा जाने बाटो छुट्छ, बूढा भएका सासू र ससुरालाई म काशीको प्रसाद गाजल उहाँहरूलाई दिएर मात्रै म त्यता आउँछु भाइहरू जाँदै गर्नू भनेर एक्लै त्यता लागिछन्। नभन्दै दश बजे त एउटी गोपीचन्दन लगाएकी र हातमा कमण्डलु बोकेकी महिला टुप्लुक्क आइपुगिन्। हल्लखल्ल भयो। कुरा माथि भनेजस्तै हो। गुरुजीले पनि त्यता हेर्नुभयो। बुहारीले भुइँमा दुई हात जोडेर दर्शन गरिन्। के के आशीर्वाद दिनुभयो। भिडको हल्लाले प्रस्ट भएन।

त्यसपछि गुरुजीले इन्दिराजलाई बोलाएर गङ्गाजलले टाउकामा अभिषेक गर्ने र गोपीचन्दन लगाइदिने कुरा भन्नुभयो। त्यसपछि गुरुजी पलेंटी कसेर ध्यानमा "हरि ॐ' भन्दै बस्नुभयो। ध्यानैबाट गुरु जानुभएछ कसैलाई थाहै भएन। धेरैपछि उहाँलाई बोलाउँदा टाउको लुरुक्क भएर झुन्डियो। भिड शान्त भयो। हल्ला बन्द भयो। हरे राम हरे राम राधे श्याम यस्तै भगवान्का नामले गुञ्जायमान भयो। त्यसपछि बाबैले बोलाएर हामीलाई घर पठाउनुभयो। साइँला (गुरुभक्त) काकालाई खबर गर्न घोडा लानका लागि। हामीले घोडा लान सक्ने क्षमता थिएन।

पछि ती उनकी बुहारी जसलाई हामी रेग्मी गुरुकै नाताले माइली पण्डित्नी भन्थ्यौं। झापाको खोपबाडीमा सँगै बसाइ भयो। त्यो बेला मैले उनलाई सोधें तपाईं माइतीसँग तीर्थ गएकी मान्छे उनीहरूको साथ छोडेर गुरुको अन्त्येष्टिमा कसरी आइपुग्नुभयो त्यहाँ। पण्डित्नीले भनिन् पुरानो चतुरेमा आइपुगेपछि भाइहरूसँग जान मेरा खुट्टा लागेनन्। जति बल गरे पनि खुट्टा अगाडि बढेनन्। मेरा अन्तस्करणले भन्यो बूढा भएका सासूससुरा बिरामी छन् त्यता जा भनेको हुनुपर्छ जस्तो लागेर भाइहरूसँग बिदा भएर म त्यता लागें।

विश्वरूप हेर्न भगवान् कृष्णले अर्जुनलाई दिव्यदृष्टि दिनुभएको थियो। सञ्जयले महाभारतको लडाइँको विवरण धृतराष्ट्रलाई बताउन वेदव्यासबाट त्यस्तै दिव्यदृष्टि पाएका थिए। त्यस्तै केही अंशको दिव्यदृष्टि यी गुरुसँग रहेछ। उनले ती बुहारी बनारसबाट आउँदा पुरानो चतुरे आइपुगेको, त्यतातिर लागेको दिव्यदृष्टि भएको कारणले नै हो। रेग्मी गुरुजीले कहाँबाट पाउनुभएको थियो थाहा भएन। उहाँले स्वर्गद्वारी महाराजलाई गुरु मान्नुहुन्थ्यो होला। स्वर्गद्वारी महाराजका फोटाहरू पछिसम्म पनि उहाँहरूको घरमा झुन्ड्याइएका थिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माहिला ब्रह्मचारी

माहिला गुरु जसको नाम देवीप्रसाद पौडेल हो। मच्छेबुङमा जन्मेर एकतिनमा बसाइँ सर्नुभएका उहाँ घरद्वार छोराहरूलाई जिम्मा लगाएर जोरपोखरीमा बस्नुभयो। उहाँलाई सबैले माहिला ब्रह्मचारी भनी चिन्थे। उहाँकै कारणले गर्दा एकतिन निवासी रेग्मी गुरुका भक्त थिए। माहिला ब्रह्मचारीसँग मेरो २०२४ सालमा म नीलगिरि माविको प्रधानाध्यापक भएपछि मात्रै सरसंगत भयो। त्यो बेला उहाँ आगेजुङ भन्ने डाँडामा कुटी बनाएर बस्नुभएको रहेछ। उहाँले मलाई उहाँका छोरीज्वाइँ पण्डित टङ्कनाथ भण्डारीमार्फत बोलाउनुभयो। त्यस्तै एउटा पर्वको कार्यक्रममा हामी आगेजुङ पुग्दा उहाँ निकै खुसी हुनुभयो। त्यसको कारण के रहेछ भने मैले नीलगिरि माविमा संस्कृत गुरुकुलमा पढ्ने विद्यार्थीहरूलाई कक्षा आठको परीक्षा लिएर त्यसको प्रमाणपत्र दिएपछि त्यो प्रमाणपत्रले बनारसमा पूर्वमध्यमाको परीक्षा दिन पाइने रहेछ। यो प्रमाणपत्र संस्कृत विद्यामा अगाडि बढ्ने ढोका रहेछ। मैले यो काम गरेबापत उहाँले हाम्रो धर्मसंस्कृतिको रक्षा गर्न धेरै मद्दत पुर्याएको कुरा गर्नुभयो। उहाँकोमा भक्तजनले चढाएको पैसा धेरै हुँदो रहेछ र त्यसको सहयोगबापत उहाँले मलाई प्रतिमहिना रु. पाँच सय विद्यालयमा सहयोग गर्ने वचन दिनुभयो। त्यो बेलाको पाँच सय भनेको यो बेलाको पचास हजार हो। त्यो पाँच सयले कक्षा आठ पढाउने सबै शिक्षकको बेतन पुग्थ्यो। मैले उहाँलाई जोरपोखरी किन छाड्नुभयो भनेर सोधेँ। उहाँले भन्नुभयो (रेग्मी) सुभाङ गुरुले भनेजस्तो उहाँको निधनपछि पोखरीहरूमा एकाएक हलचल तरङ्ग हरायो। चराहरू हिंडे सुनसान भयो। पानी महिनैपिच्छे सुक्दै गयो। मैले यो डाँडामा सर्ने विचार गरें। यहाँबाट पाथीभरा देवीको दर्शन र सबै हिमालहरूको दर्शन प्राप्त हुन्छ। तर त्यहाँ पनि कलियुग प्रवेश गरेसँगै अनावश्यक भक्तिरहित मानिसहरूको होहल्ला, नाचगान, मनोरञ्जन, विलासिता, बार्ने नबार्ने कुराको बेवास्ताले गर्दा पाथीभरा देवी कैलाशपर्वतमा सर्ने भन्ने शास्त्रमा उल्लेख छ। पाथीभरामात्र नभएर सबै देवीहरू भगवान् शिवका शक्तिहरू अन्तमा सबैले कैलाश पर्वतकै आश्रय लिनेछन्।

टंकनाथ भण्डारी जसको उल्लेख मैले गरें, उहाँको बारेमा दुई शब्द लेख्नु यस कारण पर्छ कि उहाँ सुभाङ गुरुकै चेला हो र उहाँलाई प्रायः भागवत कण्ठ थियो। रेग्मी गुरुलाई भागवत प्रवचनमा घाँटीको समस्या भएमा उहाँले टङ्कनाथ पण्डितलाई पाठ गर्ने सहायक राख्नुहुन्थ्यो। सुभाङ गुरुजीले जसरी भन्नुभएको थियो ठीक त्यसरी नै यी कुराहरू सत्य साबित भए।

(१) सबैले देख्दादैख्दै जोरपोखरी सुके। अहिले नाम छ पोखरीहरू छैनन्।

(२) राजा रहनेछैनन् भनेको वंश परम्परागतको राजसंस्था राजा वीरेन्द्रको सपरिवार हत्या भएपछि समाप्त भयो। किन यसो भनियो भने गुरु गोरखनाथको आशीर्वादबाट बनेको राजसंस्था क्रमभङ्ग भएपछि जोडिएको मानिँदैन।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुको सान्निध्य र विवेकाश्रम

घनश्याम कडरिया

वि.सं. २०२८ सालमा विवेकानन्द गुरु केही रात चारपाने बस्नुभयो। धुनीविना बस्नुभयो। धुनी लगाएर बस्नुहुन्थ्यो। पछि उहाँ सतासी गएर बस्नुभयो। उहाँ आसामबाट आइपुग्नुभएको थियो। पहिला आसाम बस्नुभएको थियो।

२०३२ सालतिर गौतम गुरुजी पहाडबाट झर्नुभयो। गौतम गुरुजी आउनुहुन्छ ? भन्नुहुन्थ्यो माताजीले। चारपानेमा कीर्तन गर्ने भनेर सबै जना गयौं। ५-६ जना बसेर हामीले कीर्तन गर्यौं। बिहान गुरुजीसँग मैले एउटा प्रश्न राखें- गुरुजी एक अहोरात्र कीर्तन गर्दा मोक्ष होइन्छ भन्ने छ ? मोक्ष भनेको के हो ? एक अहोरात्रमै मोक्ष होइन्छ भने जन्मभर कीर्तन गर्छन् कसैले ? के भनेको गुरुजी भनेर गौतम गुरुजीलाई ठाडै प्रश्न राखें। उहाँ चुप लाग्नुभयो केही भन्नुभएन। अँ अँ भन्नुभयो। गुरुलाई १३ वर्षमै प्रकाश भइसकेको रहेछ, सिद्ध होइसक्नुभएको रहेछ। मलाई थाहा थिएन। पहिल्यै त्यति गहिरो प्रश्न सोधिएछ। के सोध्न आएको मलाई अहिले अचम्म लाग्छ। मेरो पनि एउटा संस्कारले रहेछ क्यार यस्तो प्रश्न सोध्न आयो, सोध्न सक्ने कुरो थिएन। यस्तै बाहिर-बाहिरैबाट के भन्नुभयो। होइन, ठिकै भन्नुभयो। राम्रो कुरा गर्नुभयो। राम्रो प्रेमले कीर्तन गर्यो भने एक अहोरात्रमै पनि मोक्ष होइन्छ। भगवान्पट्टि फर्केर बस्यो भने हुन्छ भन्नुभयो। कसरी फर्कने होला भगवानपट्टि भन्ने भयो। केटाकेटी बेलाको कुरा भगवान्पट्टि फर्केर गर्यो भने हुन्छ भन्दा भगवान्को फोटोपट्टि फर्केर भन्ने सोच आएछ मलाई त।

चारपानेमा सुरुमा एउटा खरको झुप्रो बनायौं। टिन किन्ने कसैसँग पैसा थिएन। १-२ जना विद्यार्थी राखेर पढाऊँ अब भनेर गौतम गुरुले नै प्रस्ताव राख्नुभयो। लौ राख्नुपर्छ भनेर केदारनाथ खतिवडाले पनि भन्नुभयो। केदार दाइ, म, साहिँला पण्डित ४-५ जना बसेर ल गर्नुपर्छ भन्ने कुरा गर्यौं। सुरु गर्न त गर्ने तर खोई केले गर्ने ? न बाँस छ, न खाँबो गाड्ने चिज छ, न छाउने खर छ, केही पनि छैन। छाउन धान पाक्छ पराल काटेर छाउनुपर्छ। बाँस काटेर ल्याउनुपर्छ। त्यसो गरेर चलाउँ भन्ने कुरा भयो। २-४ जना विद्यार्थी पढाउन सुरु गर्यौं। झुप्रो बनाउन सुरु गर्यौं। जम्मै त्यहींका मान्छेले

✍ धुलाबारी, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाए। बस्ने माटोको भुइँमात्र छ। केदार दाइले अप्ठेरो पर्यो के गरौं भनेर तुलसी अधिकारी र साहिँली महतारी भएतिर जाऔं भन्नुभयो। हामी ३-४ जना भएर तख्ता (फल्याक) मागन त्यतातिर गयौं। तख्ता दान गरौं है, हामीलाई चारपानेमा स्कुल खोल्नु छ, विद्यार्थी पढाउनु छ भन्ने कुरा गर्यौं। तुलसीले म २ वटा दिन्छु भन्नुभयो। अरूहरूले पनि तख्दा दिए। ६ वटा तख्ता भए। तख्ता बोकेर ल्याएर त्यही ओछ्याएर विद्यार्थी पढाउन सुरु गरियो। त्यसै गर्दै जाँदा पछि गुरुजीको ठाउँमा मन्दिर स्थापित गर्नुपर्छ भन्ने कुरा उठ्यो। छविलाल खरेललाई पनि सुनाउनुपर्छ भन्ने कुरा भयो। पुष्पलालले कुरा उठाएछन्। छविलालले म एक हजार दिन्छु कुटी बनाउन भने। वरिपरिबाट ठूलो चौडाइ भएको कुटी बन्यो। विवेकानन्द महाराजको कुटी बन्यो। अहिले राखेका राममन्दिरका शिवलिङ्ग विवेकानन्द महाराजले सतासीबाट ल्याएर स्थापित गराउनुभएको हो। यसरी कुटी बन्यो। अनि पछि विस्तारै सबैले सहयोग गर्दै गए। त्यो कुटीमा त्यत्रो बरन्डा नराख्नुपर्थ्यो। छविलालले यति धेरै पैसा एकैचोटि दिनुहुँदैनथ्यो भनेर साहिँली महतारीले भन्नुभयो।

पछि कुटी बन्दै गयो। अर्को विद्यालय बन्यो। एउटा कोठा कसैले बनाउने भए। कसैले अर्को कोठा बनाउने भए। बन्दै बन्दै चल्दै थियो। ठूलो बन्दै गयो। एक जना काठमाडौंका वासुदेव केसीले मलाई चार कठ्ठा जग्गा चाहिन्छ, त्यति भयो भने म यहाँ सत्सङ्ग भवन बनाउँछु भनेर प्रस्ताव राखेछन्। २ कठ्ठा जग्गा थप गर्नुपर्छ भने। त्यति बेला जग्गा सस्तै थियो। २ कठ्ठा जग्गा पैसा तानतुन गरेर किनियो। केसीले एक्लैले त्यो ठूलो हल बनाएको हो। २ वर्षमा पूरा गरेर केसीजीले हल जिम्मा लगाउनुभयो। विष्णुपाञ्चायनको ठूलो मन्दिर उहाँले नै गौतम गुरुजी ब्रह्मलीन भएपछि बनाएको हो। हामी बाह्रदशीमा अनुष्ठानमा थियौं। यस्तो कुरा लिएर आए। त्यो कुरा गर मिलाओ भनेर विष्णुभक्त गुरुले पठाउनुभयो। पछि पछि त कार्यक्रम गरेर, पुराण लगाएर, विज्ञापन गरेर पैसा उठाउन थालियो।

विवेकानन्द गुरुको अनुग्रहले विष्णुभक्त गुरुको १३ वर्षको उमेरमा प्रकाश भएको कुरा गौतम गुरुले भन्नुभएको थियो। गौतम गुरुका बारेमा कुरा गर्दा गुवाबारी होस्, चारपाने होस्, माई वा साधुटार होस् गुरुकुलका लागि उहाँको जति कसैले गर्न सकेको छैन। उहाँको अनुभव, ज्ञान, क्षमता र उहाँले पुर्याउनुभएको सहयोगको जति प्रशंसा गरे पनि कम हुन्छ। उहाँले जस्तो धुनी जगाएर गुरुकुल चालु गर्न जोसुकैले सक्दैनथ्यो। गौतम गुरुको साधना र अवस्थाको बारेमा कुरा गर्न जोकोहीले सक्दैन। म उहाँलाई पहिलादेखि नै पछ्याएर हिंड्थे। उहाँमा केही छ भन्ने थाहा पाएर नै म पछ्याइरहन्थें। तर उहाँले केही कुरा भन्नुहुन्नथ्यो। जब म साधनको अवस्थामा गुरुको नजिक नजिक हुँदै गएँ, त्यति बेला बल्ल मलाई थाहा भयो उहाँ अर्कै अवस्थाको भइसक्नुभएको रहेछ। एक दिन माईमा बसेर षडानन्ददेखि सुभाङ गुरुसम्मको विषयमा सत्सङ्ग हुँदै थियो। सुभाङ गुरुसँग यसरी बस्दा अघिल्ला दिन गुरुमाताले गौतम गुरुजीलाई चिया दिएको गिलास भोलिपल्ट बिहानसम्म त्यहीं रहेछ। अनि भोलिपल्ट बिहान गुरुमाताले भन्नुभएछ-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'हिजोदेखि यो पण्डित बसेको, हिजो दिएको चियाको गिलास त्यहीं रहेछ' भनेर ठाडो गाली गर्नुभयो। ठाडो बोली थियो सुभाङ गुरुमाताको। गौतम गुरु २४ घन्टामा त्यति बेला होसमा आउनुभएको थियो रे। यस्तो समाधि लाग्थ्यो गौतम गुरुको। गौतम गुरु चुप लाग्नुभयो रे। सुभाङ गुरुले किन कराएकी भन्नुभयो रे। सुभाङ गुरुले पण्डित भोजन खानुपर्छ भन्नुभयो रे। गुरुसँगै गएर भोजन गर्नुभयो रे। त्यति बेलै १३ वर्षमै षड्चक्र प्रकाश भएको रहेछ।

गौतम गुरुजी रातभरि बस्नुहुन्थ्यो। एकछिन ढल्क्यो अनि राति बस्यो। राति बत्ती बालेर लेख्नुहुन्थ्यो। थपक्क राख्नुहुन्थ्यो। अनि बत्ती निभाउनुहुन्थ्यो। गुरुजी खाटमा हुनुहुन्थ्यो म भुइँमा सुत्थें। साधुटारमा झ्यापझ्यापी समाधि लागेर मुढोजस्तो हुनुहुन्थ्यो उहाँ एकै छिनमा। कोही थाहा पाउँदैनथे। साधुटारमा ठूलो विराट् यज्ञ थियो। त्यस यज्ञमा ठूला योगीहरू शङ्कराचार्यदेखि देवघाटका सबै ठूला योगीहरूको जमघट थियो। शङ्कराचार्य सिंहासनसहित आउनुभएको थियो। गुरुजी धुनीमा बस्नुभएको थियो। मेरो त्यति बेला हठयोगको साधना थियो। म साधनामा थिएँ।

गुरुजी ढ्याप्पै मुढोजस्तो हुनुहुन्थ्यो। गुरुजी समाधिमा हुनुहुन्थ्यो। ढकाल रहेछन् सन्न्यास भएर आएका। उनले गुरुको गोढा तानेर दर्शन गर्न गए। मैले पर ठेलिदिएँ ती जोगीलाई। २ जना थिए दाजुभाइ। गुरुजी समाधिमस्त हुनुहुन्थ्यो। देखिँदैन अवस्था हेर्न सकिंदैन, कुन अवस्थामा हुनुहुन्छ गुरुजी ? भनेर गाली गरें। जोगी त्यहीं बसे। मलाई यसले के गरेको होला भनेर रिसाएछन्। पछि गुरु जाग्नुभयो। ए तपाईहरू पनि आउनुभएको, कहिले आउनुभयो ? भनेर गुरुले भन्नुभयो। गुरुले चिन्नुभएको रहेछ। अनि पछि उनीहरूले दर्शन गरे। नियमले उनीहरू सन्न्यास भेष लगाएकाले ढोग्नु हुँदैन। दर्शन गर्न नमो नारायण गर्न मिल्छ। गुरुदेखि बाहेक सन्न्यास जोगीले अरूलाई ढोग्नुहुँदैन। उनीहरूले त्यो कुरा बुझेनन्।

जहिले जहाँ भए पनि अनुष्ठान भयो भने जाने भन्ने मेरो लक्ष्य थियो। मौका परेको थिएन कहिल्यै। पछि माईमा अनुष्ठान हुने भयो। ए साहिँला जाने होइन भन्नुभयो जीवनाथले। हामी सुरुमै गयौं ५५ सालमा। गायत्रीको पूजा सुरु भयो। पुरश्चरण सुरु भयो।

जोरपोखरीमा ०५२।५३ सालतिर गौतम गुरुसँगै लक्ष्य होममा गयौं। सुभाङ गुरुले पहिलादेखि बोलेका कुरा पूरा हुन थाले। कपिलदेव महाराजले यज्ञ गरेको ठाउँ रहेछ त्यो। त्यहाँ पनि स्वर्गद्वारीमा जस्तो पञ्चपात्राहरू भेटिएका रहेछन्। त्यहाँ दुईटा वृक्ष छन्, दुईटा पक्षी छन्। यिनै पक्षीले यो पोखरीको रक्षा गर्छन् रे। अहिले सबै मर्यादाको उल्लङ्घन भएपछि पोखरी सुक्दै गएको छ। माईपोखरी माईको मूल हो। साह्रै महत्त्व छ माईपोखरीको। त्यो भगवती माईको शिर हो। शिर त सबैतिरबाट जोडिएका छन्। माईका बारेमा गौतम गुरुजीले धेरै लेख्नुभएको छ। गुरुले 'नानी नौमती बाजासहित माई भगवती घन्केर आउँदै हुनुहुन्छ। सबैले त सुन्दैनन् कसै कसैले बाजा बजेकै सुन्छन्' भन्नुहुन्थ्यो। नवरात्रमा आज आउँदै हुनुहुन्छ भन्नुहुन्थ्यो। गुरुजीले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सबै झल्झली देखुहुन्थ्यो। आज मलाई कसले लाने मलाई हिँडेर जान गाह्रो छ भन्नुहुन्थ्यो। मैले म लान्छु भनेर लिएर गएँ, भिड ज्यादै थियो। खाल्टैखाल्टा माईको मकर मेला थियो। पर गएपछि गाडी पर्लक्क पल्टयो, गुरुजी यसो ढल्किनुभयो। उठाएर फेरि चढाएँ। जसोतसो स्नान गराएर ल्याएँ। माईको बारेमा गुरुजीले पूरै पुस्तक लेखुभएको छ। माईको वर्णन माईको कीर्ति सबै लेखुभएको छ।

गुरुजीले सबै भन्नुहुन्थ्यो, जातिस्मरण थियो। कति बेला के हुन्छ त्यो सबै कुरो एकान्त अवस्थामा मसँग हुन्थ्यो। सबैसँग खुला कुरा हुँदैनथ्यो। एकान्त अवस्था भयो भने केही रोकिँदैनथ्यो गुरुजीको। एक दिन मैले ठाडो प्रश्न गरैं- 'गुरुजी के हो त यो शरीर यत्तिकै जान्छ त ?' गुरुजीले भन्नुभयो- 'होइन नि प्रकाश हुन्छ'। हुन्छ भनेपछि त भइहाल्छ कि भनेर गुरुलाई कोटयाउँदै गएँ। अनि केही रहेछ भन्ने निश्चयात्मक हुँदै गयो। १३ वर्षदेखि तलका विद्यार्थीहरू भए भने १५ दिनमा म साक्षात्कार गराउन सक्छु भनेर तोकेर भन्नुहुन्थ्यो गुरुले। ३-४ जना बसेको ठाउँमा बेलुका यसो भन्नुभयो। अब के गर्नु आफूसँग त्यो १३ वर्ष उमेर पनि छैन, त्यो संस्कार पनि छैन। गुरुजीले उपनिषद् साह्रै हेर्नुहुन्थ्यो। उपनिषद्लाई मेरो साथी भन्नुहुन्थ्यो। सबै एकान्त भएपछि १-२ बजेपछि सबै आफ्ना काममा गएका बेला गुरुजी उपनिषद् लिएर बस्नुहुन्थ्यो। म सुन्न बस्थें। हंसोपनिषद् पढ्नुहुन्थ्यो।

यस्ता कुरा धेरै भए। कति कुरा एकान्त हुँदा सोध्न सकिए, कति कुरा सोध्न सकिएनछ। गुरुजीसँगको सत्सङ्ग भनेको अति गहन सत्सङ्ग हो। अलि एकान्त भएमात्र गौतम गुरुसँग सत्सङ्ग हुन्थ्यो। बाह्रादशीमा भएको पुराणमा गौतम गुरुजीसँग षड्चक्रको पूजा गर्ने विधिका बारेमा प्रश्न गरें। पटक-पटक यस विषयमा प्रश्न गरिरहेको थिएँ। गायत्रीस्वरूप गुरुले उतै उहाँसँग सिक्दा हुन्छ भन्नुभएको थियो। त्यस समयमा 'नानी तिमीले धेरैपटक षट्चक्रको साधन, उपासना, विधिका विषयमा प्रश्न गरेका थियौ, लौ अब समय आयो। तिमीले यसरी गर्नू' भनेर सबै प्रकाश गरिदिनुभयो। तर के गर्नु चित्र आउँदैन। दिमागमा भनेको कुरा बस्दैन। गायत्री निराजनको अवस्था कस्तो हुन्छ भने त्यो पछि बुझ्नुहुन्छ भन्नुहुन्थ्यो। गायत्रीलाई शुद्ध गर्ने अनिवार्य कुराहरू बताउनुभयो। आफ्नो अध्ययन थिएन। गुरुले भनेको कुरा कति गर्न सकियो कति सकिएन। हुन्छ विस्तारै गर्दै जानू भन्नुभयो गुरुले। गुरुकै आशीर्वादले विस्तारै हुँदै गए। हठयोगको बारेमा पनि गुरुसँग साधना गरें मैले। गुरुजी यस्तो भयो भन्थें, 'केही हुँदैन नडराऊ गर्दै जाऊ' भन्नुहुन्थ्यो। अब गौतम गुरुका बारेमा भनेर र लेखेर सक्ने कुरै छैन, उहाँको अवस्था नै प्रकाश भइसकेको अवस्था हो, सिद्धि भइसकेको अवस्था हो, जातिस्मरणको अवस्था हो। उहाँले जे बोल्नुहुन्थ्यो त्यही हुन्थ्यो। अब यो सानो स्मरणमा यो लेखमा उहाँका बारेमा सबै बताएर सकिन्न। यत्ति नै। ॐ गुरवे नमः।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकानन्द गुरुसँगका केही सम्झना

लोकनाथ खनाल

हामी सुभाङ, मुक्तुरामा खेतीपाती गरी बस्दथ्यौं। बारीको छेउमा बाटो थियो, एक दिन ढुण्डीराज भण्डारी र उनकै भाइ माहिला आउँदा रहेछन्, कहाँ गएर आउनुभएको ? भन्दा हामी आगेजुङ गएर आएका भन्नुभयो, किन भनी सोधेँ त्यहाँ ठूलो यज्ञ हुँदै छ पर्सि साङ्गता छ भन्नुभयो। त्यो सुनेर हामीलाई पनि त्यहाँ जाने इच्छा भयो र हामी पनि गयौं। यसरी नै पछि पनि जम्मा २/३ पटक त्यहाँ गई प्रसाद खाएको आज पनि बिर्सेको छैन।

त्यसपछि हामी २०२३ सालमा आसाम गयौं, २०२४ साल माघतिर हामी बसेको शान्तिपुर ६ नं. मा गुरुजी हाम्रो घर पुग्नुभयो र म पनि यहीं नदीकिनारमा बस्ने थिएँ भन्नुभयो। गुरुजीको आशय बुझी षडानन्द तिमल्सिना र हामी सबै मिली नदीकिनारामा जमिन मिलाई कुटी बनायौं, हामीहरू त्यहीं छेउछाउ बसोबास गरेका थियौं। एकपटक हामी औंसीका दिन गएका थियौं, त्यस दिन षडानन्द, प्रमानन्द र म (लोकनाथ) तीनै जनालाई लिएर नदीकिनारमा जानुभयो र त्यहाँका सबै माछा देखाई माछाको नामसमेत बताइदिनुभयो। गुरुजी माछाहरूलाई हातैमा फलफूल, प्रसादी दैनिक दिने गर्नुहुन्थ्यो।

औंसी, पूर्णिमा, द्वादशी, सङ्क्रान्तिमा हामी त्यहाँ गई भण्डारामा सहभागी बन्थ्यौं। एक दिन मलाई घरमा जप, पूजा कसरी गर्नुहुन्छ भनी सोध्नुभयो, मैले गायत्री मन्त्र काकाबाट सुनेको छु, वेदमन्त्र काफ्ले गुरुबाट सुनेको छु, पाञ्चायन मन्त्र सुनेको छैन भनें। मन्त्र नसुनी पूजा गरे फल प्राप्त हुँदैन भन्नुभयो। २ दिनपछाडि बिहानै आउनू भन्नुभयो र मलाई पाञ्चायन मन्त्र दिनुभयो। त्यसपछि हामीहरूले अति आनन्दका साथ ५ वर्ष जति गुरुजीको सङ्गत पाएका थियौं।

गुरुजी २०२८ साल पौष-माघतिर होला झापाको चारपानेमा आई पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको जमिन मागी त्यहाँ कुटी बनाउन लगाउनुभएछ। पछि हामी पनि नेपाल आयौं। पछि गुरुले माईमा बस्ने मन गर्नुभयो र हामी सबै मिली बाँस खरिद गरेर कुटी

समाजसेवी, बिर्तामोड २, चारपाने, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाउन खोज्दा प्रधानपञ्च दाताराम ओलीले ती सबै बाँस हटाई कुटी बनाउन नदिंदा गुरु शताक्षीधाममा गई कुटी बनाई बस्नुभएको थियो। हामी पनि महिनामा १-२ पटक जाने गर्दथ्यौं। २०२९ सालमा गुरुले उत्तरकाशीमा जलसमाधि लिएको खबर सुन्न पाएँ। यसरी गुरुजीले २०२८ सालमा स्थापना गरेको त्यही कुटीको सेरोफेरोमा बस्ने सौभाग्य हामीलाई मिलेको छ। विवेकानन्द गुरुज्यूप्रति मेरो सद्भाव र सम्झना रहिरहोस्। अस्तु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुसँग बिताएका अनौठा क्षणहरू

✍ **लोकनाथ भण्डारी**

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वर गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

गुरुदेवको महिमा मैले सुनेको थिएँ। गुरुदेवहरू हुनुहुन्छ भन्ने पनि सुनेको थिएँ तर दर्शन गर्ने अवसर मिलेको थिएन। आसामको बालिज्यान भन्ने ठाउँमा विद्यालयमा पढ्दा ११ वर्षको उमेरमा पहिलोचोटि गुरुको दर्शन पाइयो। त्यसको २-४ दिनपछि गुरुसँगै पर्शुराम भन्ने तीर्थमा गइयो र त्यहाँ ठूलो यज्ञ भयो। त्यहाँ मैले पनि रुद्रीपाठ गर्ने अवसर पाएँ। त्यहाँबाट विवेकानन्द महाराजले पोटिया छपडी भन्ने ब्रह्मपुत्र नदीको किनारमा चौथो आश्रम लिँदा त्यहाँ पनि भाग्यवश रुद्री पढ्ने सौभाग्य मलाई मिल्यो। त्यहाँबाट गुरुदेव शान्तिपुर भन्ने ठाउँमा पुग्नुभयो। त्यहाँ कञ्चनगङ्गा नदीको छेउमा गाउँबाट सबै गएर सानो एक कुटी बनाई बस्नुभयो।

त्यही बेला मेरो हजुरबुबा गुरुको दर्शन गर्न जानुभएछ र गुरुदेवले तिम्रो नाति १-२ महिनालाई ल्याइदेऊ भन्नुभएछ। हजुरबुबाले भोलिपल्ट मलाई लिएर जानुभयो र 'देउता मसँग बस्ने हो ?' भन्नुभयो। म बोलिन। हजुरबुबा घर आउनुभयो। म बसें। बेलुका पिठाका डल्ला धुनीमा पोलेर खाइयो। भोलिपल्ट सन्ध्यापाठ सकेपछि भोजन बनाऊ भन्नुभयो। चित्राले छाएको भान्साघर थियो। गुरुले 'भोजन बनाएर मलाई देऊ अनि तिमी पनि खाऊ' भन्नुभयो, त्यसै गरियो। त्यसको ७ दिनपछाडि टीकाराम खनाल आउनुभयो, २ जना भइयो। त्यसको ७ दिनपछि पूर्णानन्द तिम्सिना र विष्णु पौडेल आउनुभयो। लगभग तीन वर्ष ६ महिना गुरु प्रेरणाले त्यहाँ गुरुसँग बस्न पाइयो।

शान्तिपुर कुटीमा गुरुदेवसँग बस्दा गुरुदेवले 'गौरीलाल यहाँ आऊ न' भन्नुभयो। मलाई गौरीलाल पनि भन्थे। म आएँ। 'तिमी र म नदीमा जाऊँ' भन्नुभयो। नदीमा पुगेर नदीमा देखाउनुभयो र 'यहाँनेर डुबेर हेर त' भन्नुभयो। त्यहाँ डुबेर हेर्दा एउटा ठूलो शिला रहेछ। मैले ठूलो ढुङ्गो रहेछ भनें। अनि फेरि 'हल्लाइहेर त' भन्नुभयो। मैले हल्लाउन सकिनँ। भोलिपल्ट फेरि गएर 'त्यहाँका सानासाना ढुङ्गा वरपर सार त' भन्नुभयो। मैले

✍ *फूलबारी, कैलाली*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नदीमा पसेर ती ढुङ्गा दुई दिनमा सारें। त्यसको चार-पाँच दिनपछि त्यहाँ ठूलो कार्य भयो। त्यस दिन सबैतिरबाट मानिसहरू आउनुभयो। गुरुदेवले पर्शुराम ओझा दाइलाई र मलाई लिएर नदीमा जानुभयो। 'तिमीहरू दुई जना नदीमा पसेर शिला उचालिहेर निकाल्न सकिन्छ कि सकिंदैन भन्नुभयो। हामी दुई जना पसेर २-४ पल्ट हल्लाउँदा सकिने जस्तो लागेर सकिन्छ भन्यौं र बाहिर निकाल्यौं। त्यो शिला गणेशको आकार भएको रहेछ। त्यसलाई सबै जनाले कीर्तन गर्दै कुटीमा ल्याएर प्राणप्रतिष्ठा गरेर राखियो। त्यहीं पूजा गरिन्थ्यो।

अब हाम्रै घरको एउटा घटनाको सम्झना भएको छ। हाम्रो गाईगोठ थियो। एक दिन गोठको गाई बिमारी भएछ। बुबा कुटीमा जाँदा जहिले पनि दुध हुँदासम्म सानो हर्पेमा दुधै लिएर जानुहुन्थ्यो। त्यस दिन पनि दुध लिएर जानुभएछ। गुरुदेवले दुध फाटेर बिग्रेको देखेपछि बुबालाई बोलाएर "यो लगेर नदीमा सेलाएर आऊ" भन्नुभयो। गुरुदेवले "तिमीहरूको घरमा तेलको धुप खाने देउता आएछ। त्यसलाई धूपबाती गर्नू। गाईको एउटा थुन बिग्रिन्छ। अरूबाट दुध राम्रै आउँछ" भन्नुभयो। पछि त्यस्तै भयो। अनि गुरु त्यहाँबाट हिंड्ने क्रममा हामीलाई नानी देउता पर्वपर्वमा आएर पूजापाठ गर्न नछोड्नू भन्नुभएको थियो। हामी पनि त्यहाँ रहुन्जेल पर्वपर्वमा पूजापाठ गर्दै २०४० सालमा नेपाल फर्कियौं।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुसँग बिताएका केही पल

✍ हेमलाल तिम्सिना

२०१८ सालमा गुरुमहाराजसँग मेरो पहिलो दर्शनभेट भएको थियो। थर्पु मालबाँसेबाट आगेजुङ कुटीमा गुरुको झोला बोकेर ओझा कान्छा दाजु र म गएका थियौं। त्यहाँ पुग्नुभन्दा पहिले थरी अधिकारीले आइपुगेको सङ्केत गर्नुपर्छ भनेर 'महादेव महादेव' भन्नुभयो। अब जाऔं भनी हिंडियो। हामी पुग्दा कुटीको ढोका खोली सरसफाइ भइरहेको थियो। हामीलाई गुरुले भन्नुभयो- अब तिमीहरू जाओ भनी थरीले लगेको दही र मिस्री हामीलाई पनि दिनुभयो। हामी दही, मिस्री खाएर घर गयौं।

अनि पछाडि फेरि आगेजुङमा हजुरबुबा जप गर्न जानुभयो र मलाई पनि सँगै लानुभयो। म पनि हजुरबुबासँग बसें। गुरुले मलाई गणेशको मन्त्र जप्न लगाउनुभयो, म जपेर बसें। त्यहाँको हवन भण्डाराको दृश्य पनि हेर्ने मौका पाएको थिएँ। गुरुजीले भन्नुभयो- अब यता आओ मधेस हेर्न भनी डाँडामा गई 'ऊ हेर त्यो धरान हो', 'त्यो विराटनगर हो' भनी देखाउनुभयो।

यसरी नै केही समयपछि २०२१ सालमा आसाम स्याङसापमा हाम्रो घरको धनसारमा पनि बसेको सम्झना छ। अनि शान्तिपुर आसाममा फेरि पनि हवन, भण्डारा, हरिकीर्तन भई नै रहन्थे। पर्वपर्वमा जाने गरिन्थ्यो। सत्सङ्ग हुने गर्थ्यो। २०२८ साल जेठमा चारपानेमा खेतीका लागि म नेपाल आएको थिएँ। पछि मङ्सिरमा बुबा, बेनु (विष्णुप्रसाद) पौडेल र भाइ काहिँलासहित गुरुजी आउनुभयो र चारपाने तल बेलडाँगीमा खगनाथ भण्डारीजीको खेतमा खेती गरी बस्नुभएको दाजु पुष्पलालकहाँ एक रात बस्नुभयो। त्यस रात हामी पनि त्यहीं बस्यौं। भोलिपल्ट बिहान ल जग्गामा जाऔं भनी दाजु पुष्पलाल, बेनु पौडेल, बुबा, डिल्लीराम भण्डारी, देवीप्रसाद पौडेल, भाइ पूर्णानन्द र मसहित भएर गुरुजीका साथै जग्गामा आयौं। गुरुजी सोझै हाम्रो जग्गामा प्रवेश गर्नुभयो।

अनि गुरुले बुवालाई पण्डितजी मलाई थोरै जमिन दिनू भन्नुभयो। बुवाले ल गुरु आज्ञा हवस् भन्दा गुरुजीले फड्का नाप्नुभयो। यति भए पुग्छ भन्दा बुबाले अलि कम हुन्छ कि भन्नुभयो। गुरुले विस्तारै बढाउँदै जानुपर्छ केही समयसम्मका लागि यति भए पुग्छ भन्नुभयो। अनि म आज यतै बस्छु भन्नुभयो। हामीले पाटा धोएर सन्ठी सुकाएर राखेका

✍ बिर्तामोड २, चारपाने, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थियौं। ती सन्ठी निकै लामा थिए। टुप्पामा बाँधेर बस्न हुने गरी कुटी बनाइयो र अलि परतिर बेनु, पूर्णानन्द भने त्यहीं नजिकै एउटा टाटी बनाएर पूजा गर्ने अनुष्ठान र खाना बनाउने चुलो बनाउन थाले। त्यस दिन तीनै जना यहाँ बस्नुभयो। हामी राति १० बजेतिर बेलडाँगी गयौं।

भोलिबाट हामीलाई पनि त्यहीं बस्ने व्यवस्था मिलाइयो। तीन रात गुरुजी त्यही सन्ठीको कुटीमा बस्नुभयो। अनि केही दिनपछि सतासी जाने भन्नुभयो र हामी पनि गयौं। गुरुले म अब ५ दिन यहीं बस्छु, तिमीहरू यहाँ नआउनू, ५ दिनपछि मात्र आउनू भन्नुभएको थियो। अनि दाजु र म ५ दिनपछि गयौं। गुरुले हामीलाई मेरो शरीर पहिला जस्तै स्वस्थ छ छैन भनेर सोध्नुभयो। हामीले पहिला जस्तै स्वस्थ, बरू अझ अनुहार त उज्यालो देख्यौं र सो कुरा भन्यौं। गुरुजीले भन्नुभयो- म ५ दिनसम्म पानी पिएर बसें। त्यहाँ एक जना साधुबाबा थिए उनले गुरुमहाराजलाई भोकै बस्नुहुन्न भनेछन्। गुरुले ती बाबालाई कमण्डलुमा पानी ल्याउन लगाई लौ हेर भनी ४ लिटर जति पानी जाने कमण्डलुको एक कमण्डलु पानी सबै पिइदिनुभएछ। त्यसपछि गुरुले 'अझै पिऊँ' भन्नुभएछ। उनले भो गुरु भनेछन्।

सतासीमा दाजु पुष्पलाल म पनि थियौं त्यहाँ पनि सेउलाको एउटा कुटी बनाइयो। त्यहाँ निकै ठूलो भण्डारा भयो। मेलामा साधुहरू निकै थिए। ढकने पकाएर बाँडियो। सतासी र चारपाने गर्दै ३ महिना जति बित्यो।

चारपानेमा बाँसका खाँबा गाडेर कुटी बनाउने सल्लाह भयो र दाइ ज्ञानी भट्टराई, भक्तबहादुर खड्का आदि धेरै जनासँग बाँस मागेर आउनुभयो। पछि गोरुगाडा लिएर गई बाँस ल्याइयो र कुटी बनाइयो। मलाई गुरुले रुद्री थालिदिनुभयो। अलिअलि गर्दै पढें। गुरु भन्नुहुन्थ्यो साहिंला कोदाको खेती नगर्नू भरसक गर्नै परे जोतेर राम्रो पारेर छर्नू गोड्ने बेलामा दाँदे बनाएर लाउनू कोदो फल्छ। गाई पाल्नू गोरस हुन्छ। यस्ता यस्ता उपदेश गर्नुहुन्थ्यो।

कलिधन बाडे बाखापाठा कि धन बाडे दाइजो दोई
कि धन बाडे गोरस विक्रये और नपावे कोही। ।

अब अलि पछाडि काठमाडौं जानु पर्छ। वराह क्षेत्र नगई, कोशी स्नान नगरी जानु हुँदैन। हवाईजहाजमा जानु पर्छ भन्नुभयो। म पनि वराह क्षेत्र गएँ। त्यहाँ तीन दिन बस्नुभयो। मचाहिं १ रातमात्र बसें। कोका र कौशिकीको सङ्गममा विद्यमान कोदण्ड पर्वतमा चढ्नू र माछा हेर्नू। त्यसमा पनि पहेंला माछा देखिए भने राम्रो हुन्छ भन्नुभयो। माछा त देखिए, तर पहेंला देखिएनन्। गुरुले भन्नुभएको थियो- विराटनगरमा गोपु हवलदार छन्। थापा भवनमा गएर हामीलाई काठमाडौं जाने व्यवस्था मिलाओ भन्नु पर्छ, अनि जानु पर्छ साहिंला। त्यो कुरा चाहिं पूरा हुन पाएन।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरो संस्मरणमा स्वामी विवेकानन्द गुरुदेव

✍ नन्दराम पौड्याल

विवेकानन्द गुरुमहाराजका बारेमा मैले जानेका, बुझेका, सुनेका र स्मरणमा रहेसम्मका कुराहरूलाई लेखेको छु। वि.सं. १९६२ माघ शुक्ल पञ्चमीका दिन पितामह पं. श्रीविश्वामित्र उपाध्याय पौड्यालका माहिला छोरा हेमलाल पौड्याल र कौशिलादेवी पौड्यालका कोखबाट माहिला पुत्ररत्नका रूपमा गुरुदेवको जन्म भएको हो। जन्मभूमि पाँचथर जिल्लाकै मच्छेबुङ गाउँमा उहाँले आफ्नो बाल्यकाल व्यतीत गर्नुभयो। आफ्नै हजुरबुबा विश्वामित्रसँग प्राथमिक शिक्षा अध्ययन गर्नुभयो। गायत्री अनुष्ठान, वेदाध्ययन, गीता र उपनिषद्जस्ता गहनतम विषयहरू सुभाङ गुरुसँग एवम् दिङ्ला गुरुमहाराजसँग पढ्नुभएको हो।

विवेकानन्द गुरुदेवले वि.सं. २०११ साल मङ्सिर शुक्ल पञ्चमीका दिन आफ्नो व्यवहार चटक्क छोडी तपस्थली गुफामा गई तपस्यारम्भ गर्नुभयो। उहाँले आफ्नो तपस्थलीमा नै धेरै ब्राह्मण बटुकहरूलाई अध्यापन गराउनका साथै ठूलाठूला यज्ञहरूसमेत गर्नुभयो। शिक्षाको ज्योति फैलाउने एवम् सनातन धर्मको संरक्षण र संवर्द्धन गर्ने कार्यमा उहाँले आफ्ना अनुयायीहरू प्रशस्त बनाउनुभएको थियो। उहाँका मुख्य-मुख्य आश्रमहरू निम्नानुसार छन् :

१. आगेजुङ तेजपुञ्ज आश्रम २. थाल्ले कुटी ३. जोरपोखरी ४. थामदिन ५. पिनासी घाट ६. काबेली गुफा ७. सिदिङ्वा गुफा।

उहाँले अनेकौं ओडार, नदी किनार, सात थुम्केजस्ता घनाजङ्गलमा आफ्ना केही चेलाहरू साथमा लिई तपस्या गर्नुभएको थियो। वि.सं. २०२४ सालमा गुरु विवेकानन्दले भारतको पूर्व आसाम सदिया ब्रह्मपुत्र नदीको किनारमा चौथो आश्रम ग्रहण गर्नुभयो। शान्तिपुर कञ्चनगङ्गा नदीको किनारमा आश्रम बनाउनुभयो। त्यहाँ हामीजस्ता धेरै किसानहरूलाई गुरुदेवले शिक्षादीक्षा दिनुका साथै यज्ञयज्ञादि गर्दै गराउँदै ठूलाठूला भण्डाराहरूमा पनि सेवा गर्ने मौका दिनुभयो।

वि.सं. २०२८ साल मङ्सिर १२ गते हामी लगायत नेपालबाट आसाम जाने नेपालीहरूलाई "अब तपाईंहरूको आसामको भोग सकिँदै गयो। अब म पनि यहाँ रहन्न, तपाईंहरू पनि नेपाल निस्कनुहोला" भन्दै आफ्ना चेला अनुयायीहरूलाई अर्ती उपदेश गरी स्वामी विवेकानन्द नेपाल

✍ बिर्तामोड-२, चारपाने, रामचोक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आउनुभयो। मेची अञ्चल, झापा जिल्ला, हालको विर्तामोड न.पा. २, चारपाने हाल विवेकाश्रम भएको ठाउँमा आफ्ना अनुयायी पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूलाई, 'मलाई यो जग्गा अलिकति दिन सक्नुहुन्छ ?' भन्दा पं. श्री नन्दिकेश्वरज्यूले 'गुरुजीलाई जति चाहिन्छ म त्यति दिन्छु' भनेपछि अन्दाजी १५ धुर जति 'अहिलेलाई यति भए पुग्छ पछि आफैं बढ्दै जाने छ, यो सबैतिरको पूर्णपात्रो स्वरूप मेरो आश्रम यहाँ हुने छ'भन्नुभयो। प्रारम्भमा एउटा कुटी र इनारको निर्माण गरी केही समय यहाँ बस्नुभयो। यो ठाउँ पछि गएर वेदविद्यालय र प्रसिद्ध धार्मिक स्थल बन्ने छ भन्नुभएको थियो। उहाँकै इच्छाअनुसार हामीले सेवा गर्ने मौका पाएका हौं।

चारपाने र शतासी धाममा केही समय बसी भारतको उत्तराखण्ड उत्तरकाशी जानुभयो। उत्तरकाशीको लाटासेरा भन्ने ठाउँमा वि.सं. २०२९ साल भाद्र शुक्ल पूर्णिमाका दिन स्वामीजी महाराजले आफ्नो पाञ्चभौतिक देहलाई छोडी परमपद प्राप्त गर्नुभयो। उहाँको स्वभाव र भावनाहरू अत्यन्तै शान्त, नम्र र स्वच्छ थिए। सनातन धर्मभित्र पर्ने नित्यकर्मलाई नै उहाँ सर्वोपरि ठान्नुहुन्थ्यो र त्यही अर्ती-उपदेश दिनुहुन्थ्यो। अहिले उहाँ हामी सबैको स्मरणमा मात्र हुनुहुन्छ। अस्तु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामी विवेकानन्द पुरी (माहिला गुरु) र विवेकाश्रम

✍ रामप्रसाद ओझा

पाँचथरको मच्छेबुङ भन्ने ठाउँमा जन्म लिनुभएका स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराज ठूला तपोमूर्ति योगी हुनुहुन्थ्यो। उहाँले बाल्यकालदेखि नै पाँचथर, ताप्लेजुङ र सङ्खुवासभाका विभिन्न ओडार, नदीतट र पोखरी किनारमा बसेर तपश्चर्या गर्नुभयो। उहाँले मच्छेबुङको बाघे ओडार, एकतीनको गजानन गुफा, शिवगङ्गा गुफा, नन्दी गुफा, सातथुम्के भ्वाङ गुफा (सप्तर्षि आश्रम), ढ्वाङ ढ्वाङे ओडार आदि विभिन्न गुफा, कन्दरा, र नदनदीका श्मशानघाट आदि स्थानमा धेरै समयसम्म गुप्त रही तपश्चर्या गर्नुभयो। उहाँले तेजपुञ्जको देवीगुफा (भुवनेश्वरी थान) मा बसेर तीन तीनपटक गायत्री पुरश्चरण गर्नुभयो। यसै गुफामा अष्टाङ्ग योग सिद्धि, षट्चक्रचिन्तन र कुण्डलिनी जागरणसमेत गर्नुभयो। आसन सिद्ध गरेर अटल पद्मासनमा बस्न सक्ने उहाँलाई यहाँका बाघभालु आदि हिंस्रक जन्तुले पनि संरक्षण गरेका थिए। प्रायः ऐकान्तिक स्थल खोजेर तपश्चर्यामा तन्मय बन्ने उहाँले घरायसी अन्न, नुन, तेल सबै त्यागनुभएको थियो। केवल वनस्पति कन्दमूल बाजुको, क्याञ्जो (सिद्धिको भोक मेटाउने वनस्पति (झार) ठोट्ने, मालिङ्गाका टुसा मात्र केही दिन बिराएर सेवन गर्दै तपश्चर्या गर्ने उहाँलाई कतिपयले तपस्वी ब्रह्मचारी, ध्यानी ब्रह्मचारी, माहिला ब्रह्मचारी, आगेजुङका योगी भन्थे भने धेरैजसोले माहिला गुरु भन्थे। तपस्या गर्दागर्दै उहाँका जटा लामा भएका हुँदा कतिपयले उहाँलाई जटाधारी योगी भन्थे।

इलाम चमैताका भट्टराई गुरु, बालागुरु षडानन्द आदिसँग वेदवेदाङ्गको अध्ययन गर्नुभएका उहाँले स्वर्गद्वारी महाप्रभुका शिष्य ब्रह्माभ्यासानन्दबाट गायत्री उपासना, अष्टाङ्ग योग विधि, षट्चक्रचिन्तन र कुण्डलिनी जागरण विधि सिकेर उहाँबाट ठूलो प्रेरणा लिनुभएको थियो। उहाँले जुन जुन ठाउँमा तपस्या गर्नुभयो, ती सबै ठाउँमा त्यस क्षेत्रका जनसमुदायलाई सहभागी गराएर गायत्री जपाउने र रुद्री, चण्डी, वेद, गीता आदि वेदवेदाङ्गको शिक्षा दिने गर्नुभयो। आफू जहाँ जहाँ पुग्नुभयो ती सबै ठाउँमा विभिन्न फुस्का कटेरा निर्माण गराएर सनातन वैदिक गुरुकुलीय पद्धतिअनुसार त्यस क्षेत्रका सबैलाई सहभागी गराएर गायत्री जपाउने र वेदवेदाङ्गको पठनपाठन गराउने गर्नुभयो। यदाकदा आफूले तपस्या गरेका गुफामा पनि गायत्री जपाउने र पठनपाठन गराउने गर्नुभयो। उहाँ स्वामी ब्रह्माभ्यासानन्दका अन्तर्वासी भएको हुँदा उहाँले

✍ पूर्वविद्यार्थी, श्री साङ्गवेद संस्कृत मा. वि., बिर्तामोड २, चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहस्यमय योग सिद्धि गर्नुभएको थियो। गुप्त रूपमा रहँदै तपस्या गर्ने सिलसिलामा कहिले गुप्तेश्वर महादेवथान, खलङ्गा गढीको सिद्धकाली गुफा, पिलाकीघाट, काबेलीगुफा, सभापोखरी, थाङ्वागुफा, भैरवपोखरी, तिम्बुपोखरी, पार्वतीकुमार पोखरी हुँदै लक्ष्मीपोखरीसम्म पुग्नुभयो भने कहिले कैलाश मानसरोवरमा पुगेर गुप्त रूपमा तपस्या गर्नुभयो। यसरी विभिन्न ऐकान्तिक स्थलमा लुकी लुकी तपश्चर्या गर्ने र पुनः आगेजुङ आएर यस क्षेत्रका मानिसलाई सहभागी गराएर पटक पटक गायत्री जपाउने, पुरश्चरण गराउने गरेर उहाँले पूर्वी नेपालका हजारौं विप्रवटु, गृहस्थ, धर्मवृद्ध आदिलाई वेदवेदाङ्गको पठनपाठन गराएर सनातन वैदिक आर्यसंस्कृतिको पुनर्जागरण गराउनुभयो।

समयको अन्तरालसँगै उहाँ २०२२ सालमा प्रयागराज पूर्ण कुम्भमा पुग्नुभयो। पाँचथर, ताप्लेजुङका धेरैलाई साथमा लिएर प्रयाग पुग्नुभएका उहाँले त्यहीं त्रिवेणी सङ्गममा आफ्ना शिरजटा सेलाउनुभयो। यसपछि भारत र नेपालका विभिन्न मठमन्दिर, शान्तिपीठ आदि तीर्थस्थलको यात्रा गर्दै २०२४ सालमा आसामको पर्शुराम क्षेत्रमा पुग्नुभयो। त्यहाँ पुगेर बालिज्यान कुटीमा केही समय बसी त्यस क्षेत्रका सबैलाई वेदवेदाङ्गको पठनपाठन गराएर गुरुकुलीय परम्पराको पुनर्जागरण गराउनुभयो। यसपछि ब्रह्मपुत्र नदीका किनारमा विशाल यज्ञ अनुष्ठान गराएर उहाँले परमहंस सन्न्यास ग्रहण गर्नुभयो। यसरी सन्न्यास लिएपछि उहाँको नाम स्वामी विवेकानन्द पुरी भएको थियो। यसपछि कञ्चनगङ्गा नदीको किनार, शान्तिपुर भन्ने ठाउँमा कुटी आश्रम स्थापना गरेर यहाँ निकै समय बसी त्यस क्षेत्रका भक्तजनलाई जप, तप, योग, यज्ञ, ज्ञान र ध्यानको शिक्षा, वेदवेदाङ्गका शिक्षा दिनुका साथै धेरैलाई गायत्री जपाएर त्यहाँ सनातन वैदिक संस्कृतिको पुनर्जागरण गराई २०२८ सालमा झापा चारपाने आएर पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले दिएको जमिनमा कुटी आश्रम स्थापना गराउनुभयो।

केही दिनपछि यो ठाउँमा वेद विद्यालय स्थापना गरी यहाँ निकै समय बसेर यहाँका सबैलाई वेदवेदाङ्गको पठनपाठन गराउनुभयो। स्वामी विवेकानन्द पुरीले स्थापना गरेको हुँदा यस आश्रमको नाम विवेकाश्रम भएको हो भने उहाँले स्थापना गरेको वेदविद्यालय नै पछि साङ्गवेद विद्यालय भएको हो। यसरी स्वामीजीले स्थापना गर्नुभएको यस विद्यालयमा केही वर्षपछि पं. भानुभक्त अधिकारीले पठनपाठन गराउनुभएको र पछि श्री विष्णुभक्त भण्डारीले पढाउँदै आउनुभएको छ। मैले पनि यसै विद्यालयमा पढ्ने अवसर पाएको थिएँ। समयको गतिसँगै यो विद्यालय साङ्गवेद माध्यमिक विद्यालयका रूपमा स्वीकृति भएपछि यहाँ धेरै गुरु, गुरुमाहरूबाट पठनपाठन भइरहेको छ। स्वामी विवेकानन्द पुरीले २०३० सालमा उत्तरकाशी पुगेर भागीरथी गङ्गाका किनारमा समाधि लिनुभयो।

पाँचथर, ताप्लेजुङका विभिन्न स्थानमा तपश्चर्या गरेको अवस्थादेखि लिएर आसाम हुँदै चारपानेमा आई पठनपाठन गराएका प्रायः सबै कुरा देखी सुनी जानेका र चारपानेबाट स्वामीजीका साथमा उत्तरकाशीसम्म पुग्ने मेरा पिता पर्शुराम ओझाले भनेको स्वामीजीको तपोमय जीवनको सन्देश प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरेको छु। अस्तु

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टेकनाथ गौतमप्रति शब्द श्रद्धाञ्जली

✍ पं. लेखनाथ दाहाल

अथाह ज्ञानका भण्डार पं. टेकनाथ गौतम गुरुको जन्म पूर्वको पहाडी जिल्ला पाँचथरमा भएको हो। वि.सं. १९८४ साल आश्विन ८ गते पिता हरिकृष्ण गौतम र माता कौशिलादेवीको कोखबाट ज्येष्ठ पुत्ररत्नका रूपमा उहाँको जन्म भएको हो। मेमेङ नम्लुवा जस्तो विकट र शिक्षाको पहुँच नपुगेको ठाउँमा जन्म भए तापनि हुने बिरुवाको चिल्लो पात भनेझैं सानैदेखि विद्याको महत्त्व बुझ्नुभएका गुरुले आफ्ना मामाहरूको सान्निध्यमा रही प्रारम्भिक शिक्षा आर्जन गर्नुभयो।

सरल स्वभाव, नम्रता र विद्वताको कारणले गर्दा सबैले उहाँको सङ्गत र सान्निध्यताको आशा राख्थे। पीठाधीश, मठाधीश, साधुसन्त, विद्वान्, विदुषी मात्र नभई राजनीतिकर्मीसमेत उहाँबाट सल्लाह लिने गर्थे। *परोपकाराय सतां विभूतयः* भन्ने सूक्तिलाई चरितार्थ गर्दै शिक्षा प्रदान गर्ने क्रममा निजी तथा सरकारी विद्यालयमा धेरै समय सेवा गरिरहँदा गुरुकुलीय शिक्षा आजको आवश्यकता भन्ने महसुस गरेर जागिरलाई समेत ध्यान नदिई आफ्नै लगानीमा विद्यालय स्थापना गरी गुरुकुल सञ्चालन गर्नुभयो। आसाम, मणिपुरदेखि लिएर नेपालका विभिन्न भागबाट सयौं विद्यार्थीहरू आएर अखौंले जोरपोखरीमा पढी आज देशविदेशमा संस्कृति संरक्षणका लागि धर्मगुरुहरू धर्मको प्रचारमा हुनुहुन्छ भने मुलुकका ठूला पदमा समेत रहेर राष्ट्र सेवा गर्दै हुनुहुन्छ।

गुरुले सुरु गर्नुभएको गुरुकुल जोरपोखरी पाँचथरमा हाल राम्ररी सञ्चालनमा छ। त्यस्तै उहाँकै निर्देशन र प्रेरणाले धेरै गुरुकुल विद्यालयहरू सञ्चालनमा छन्। व्याकरण, वेदान्त, दर्शन, ज्योतिष आदि पूर्वीय वाङ्मयको पूर्ण ज्ञान भएकै कारणले उहाँका शिष्य-प्रशिष्यहरूले नजिकबाट राम्ररी अध्ययन गर्ने मौका मिलेको हो। श्रीविवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालयलाई यस अवस्थामा पुर्याउन उहाँको ठूलो योगदान छ।

उहाँका कृतिहरू सुभाषित दैनन्दिनी, योगदर्शन मञ्जरी, हंसदर्शन मञ्जरी आदि केही प्रकाशित र केही प्रकाशोन्मुख छन्। यीबाहेक थुप्रै फुटकर कविताहरू संस्कृत र नेपाली

✍ कनकाई-१ दुर्गापुर (झापा)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुवै भाषामा छन्। उहाँको योगदानको कदर गरी वि.सं. २०५३ सालमा राजा वीरेन्द्रबाट प्रबल गोरखा दक्षिण बाहु चौथोद्वारा विभूषित गरियो भने उहाँलाई वि.सं. २०५९ सालमा श्री ५ ज्ञानेन्द्रबाट रजत पदकले सम्मान गरिएको थियो।

श्री विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा.वि. परिसरमा श्रीरामजानकी मन्दिरमा सधैंझैं ब्रह्मचिन्तन गर्ने क्रममा वि.सं. २०६८ भाद्र शुक्ल द्वितीयाको ब्रह्ममुहूर्तमा ॐकार ध्वनि उच्चारण गर्दै उहाँ ब्रह्मलीन हुनुभयो। पूर्वीय वाङ्मयका उज्ज्वल नक्षत्रको धराधाम त्यागले वैदिक सनातन संस्कृतिमा अपूरणीय क्षति हुन पुगेको छ। गुरुको दिव्यसन्देश हामी सबैका लागि प्रेरणादायी छ।

श्रद्धाञ्जली पुष्पगुच्छा शब्दन्यास गरीकन।
हृदयैबाट विह्वल भै भाव अर्चे अनेकन।।
हाम्रो वैदिक संस्कृति फैलाऔं विश्वमा अब।
महर्षि गुरुको सन्देश बुझौं है सभ्य मानव।।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनको आकाशमा मेरो गुरुकुल

✍ डमरु पौडेल

श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालय, विवेकाश्रम, चारपाने मेरो प्रथम दिव्य ज्ञानधाम हो जहाँबाट मैले जीवनका शैक्षिक आँखा उघारेको थिएँ। हाम्रो पौडेल कुलमा जन्म लिएर कुल उद्धार गर्दै अन्ततः ज्ञानपारङ्गत दैवीगुणी साझा सिद्ध महायोगी बन्नुभएका गुरु विवेकानन्दले २०२८ सालमा स्थापना गर्नुभएको यस गुरुकुलीय पावन ज्ञानस्थलमा मैले २०३८ सालदेखि २०४४ सालसम्म बाल्य तथा किशोरकालीन ज्ञानग्रहणको सुअवसर पाएको थिएँ। म जन्मिएकै साल जन्मिएको यस गुरुकुलको स्वर्ण जयन्ती महोत्सवका अवसरमा प्रकाशित स्मारिकामा तत्कालीन स्मृतिपुञ्जहरू पस्किने अवसर प्रदान गर्नुहुने श्रद्धेय सम्पादक समितिप्रति आभारी छु। अनुभूतिका शृङ्खलाहरू धेरै छन् तर लेखको आयतन सीमालाई हृदयङ्गम गरी केही थोरै स्मरणीय प्रसङ्गहरू मात्र पस्कने जमर्को गरेको छु।

१. विवेकाश्रम/विद्यालय/छात्रावासको तत्कालीन भौतिक परिवेशको सम्झना

त्यो बेला विद्यालय र आश्रम अन्योन्याश्रित र अभेद्य थिए। अर्थात् एउटै संस्थाका रूपमा चिन्थ्यौं हामी। तत्कालीन विद्यालय परिसरको पश्चिम-दक्षिण कुनामा बाहिर वरिपरि अग्लो फराकिलो सिमेन्टको पेटी भएको पक्की मन्दिर थियो जो विवेकानन्द गुरुले आश्रम स्थापनार्थ पाइला राखेको र त्रिशूल गाढेको स्थानमा बनाइएको हो। पूर्व र दक्षिणपट्टि ढोका भएको यस मन्दिरमा पश्चिम र उत्तरपट्टि चाहिँ झ्याल थिए। भित्र बिचमा हवनकुण्ड थियो जहाँ बिहान नित्य अग्नि प्रज्वलन गरी हवन गरिन्थ्यो। पूर्वउत्तर कुनामा उठाएर बनाइएको पूजाअनुष्ठान, त्यससँगै पश्चिममा क्रमशः जलधारी र सानो कुण्डसहित शिवलिङ्ग स्थापना, विवेकानन्द र योगानन्द गुरुहरूका फोटा अनि हवन सामग्री आदि राखनधरन थिए। छात्रावास, विद्यालय, कक्षा कोठा, सभाकक्ष, पुस्तकालय जे भने पनि, मन्दिरको उत्तरपट्टि काठै काठले बनाएको र परालले छाएको, एकतले, होचो टाँड भएको, एल आकारको एउटा टहरो थियो। यसको निर्माणमा स्थानीय गाउँबासी शुभेच्छुकहरूले धेरै श्रम खर्चिनुभएको थियो। मन्दिरको पूर्व-दक्षिणमा

✍ लखनपुर झापा, हाल केन्टकी, अमेरिका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाँसका भाटाले बारेर माटाले लिपेको भान्साघर थियो जसलाई पछि भत्काएर उत्तरपट्टि सारियो। बिच आँगनमा करवीर पुष्पको झ्याम्म परेको रुख, त्यसको पूर्वपट्टि इनार र वरिपरि फूलबारी, इनारको दक्षिण-पूर्वमा अलिक पर खोल्साको डिलमा टाटीले बारेको पाइखाना, मन्दिरको पश्चिम र दक्षिणमा तिम्सिना परिवारको सुपारी बारी। स्थानले प्राचीन गुरुकुलको पूर्ण झल्को दिन्थ्यो। टहराभित्र पस्ने ढोका तीन वटा भए पनि भित्र वारपार एउटै खुला हल जस्तो थियो। पूर्वतिर तानिएको एललाई भने छुट्टै कोठाको रूप दिइएको थियो र यसमा पस्ने मूल ढोका पनि छुट्टै थियो। यो विद्यालयको कार्यालय थियो। यसैमा बसेर गुरुजीले बिहान हामीलाई पाठ दिनुहुन्थ्यो। यसमा एउटा खाट पनि राखिएको थियो जसमा प्रायः सहायक शिक्षक गुरु सुत्नुहुन्थ्यो।

हामी सबैका लस्करै राखिएका आआफ्ना गुन्द्री र बिछ्यौनाहरू हुन्थे। दिउँसो ओछ्यान पट्याएर राख्थ्यौं र लस्करै बसेर पढ्थ्यौं अनि बेलुका ओछ्यान पल्टाएर सुत्थ्यौं। कहिलेकाहीं ठुलो हावापानी आएका बेला छानाको परालका कुहिएका डल्ला ओछ्यानमाथि खस्दा तर्सिएर उठिन्थ्यो। पढ्नलाई छुट्टै कक्षाकोठाहरू थिएनन्। दिउँसोको समयमा पानी नपरेका बेला त बाहिर आँगनमा, मन्दिरका पेटीमा, करवीरका फेदमा बसेर नि पढ्थ्यौं। राति ओल्लो छेउको व्यक्ति घुर्दा पल्लो छेउसम्मकालाई असर पर्थ्यो। सुतेपछि पल्लो छेउको कोही खितिति हाँस्यो भने ओल्लो छेउसम्मकाका आन्द्रा बटारिन्थे। तर गुरुले थाहा पाउनुहोला भन्ने डरले जबर्जस्ती हाँसो नियन्त्रण गर्थ्यौं। आआफ्ना राखनधरनका लागि प्रायः सबैका टिनका बाकसहरू हुन्थे जो सिरानतिर माथि फलेक ठोकेर बनाइएको ठाउँमा राखिन्थ्यो। कोही कोही साथीहरूले अरूलाई बाँड्नुपर्ला भनेर घरबाट ल्याएको मिस्री बत्ती निभाएर सबै सुतेपछि बाकसबाट सुटुक्क निकालेर खान्थे र खाँदाखाँदै निदाएकाले बिहान उठ्दा ओठभरि कमिला भएको घटना अहिले सम्झँदा नि रमाइलो हाँसो उठ्छ। त्यो बेला बिजुली बत्ती थिएन। मासिक एक एक रुपैयाँ उठाएर एक टिन मट्टितेल किन्ने चलन थियो। बेलुका मट्टितेल हालेर सलेदोवाला तीन चार वटा बत्ती बालिन्थ्यो। एउटा बत्तीका वरिपरि आठ-दस जनाका दरले बस्थ्यौं र सबैले आवाज निकालेर पढ्थ्यौं। एक किसिमको वैदिक पठन कोलाहल नै हुन्थ्यो, यद्यपि ध्यान दिएर पढाइ लेखाइ गरिन्थ्यो अनि नाकभरि चाहिं बत्तीका धुवाँको कालो कस भरिन्थ्यो। जति नै निद्रा लागे पनि बेलुका दस बजेअघि सुत्न पाइँदैनथ्यो। कहिलेकाहीं त पढ्दापढ्दै उँघेर टुप्पीमा बत्तीको आगो सल्किने डरसमेत हुन्थ्यो।

अहिले त यो दिव्य पावनधामको भौतिक आयतन तन्किँदै गयो होला। आधुनिक सुविधायुक्त विशाल भवन र मन्दिरहरूको झिलिमिलिले सुसज्जित भयो होला। तर कङ्क्रिटका बजारमा गुरुकुलीय प्राचीन आदर्श मर्म चाहिँ नमरे हुन्थ्यो। आजका प्रतिस्पर्धी सम्पन्न दाताहरूको दान दातव्य संसारमा हिजो आफ्नो गाँस काटेर अनि अहोरात्र खटेर विद्यालयको भौतिक जीवन बचाउने ती मनकारी छरछिमेकी, गाउँले र शुभेच्छुकहरूको कर्मवीर नाम नहराए हुन्थ्यो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. अध्ययन पद्धति, पाठ्य विषय र सहपाठीहरूको सम्झना

त्यो बेला विद्यालयमा पूर्ण गुरुकुलीय पद्धतिमा पठनपाठन हुन्थ्यो। बार होइन तिथिका आधारमा बिदाहरू हुन्थे। हरेक चतुर्दशी, औंसी/पूर्णिमा र प्रतिपदामा बिदा हुन्थ्यो जसलाई अनुध्याय भनिन्थ्यो। हामी प्रायः त्रयोदशीकै दिन घर जान्थ्यौं र प्रतिपदाका दिन फर्कन्थ्यौं। पक्षका बिचमा अष्टमीका दिन पनि बिदा हुन्थ्यो। यो दिनचाहिँ प्रायः हाम्रो लुगा धुने र सरसफाइको दिन हुन्थ्यो। विद्यालयमा कक्षागत श्रेणी थिएन। चण्डी, गीता र रुद्रीबाट आरम्भ भई वेद, व्याकरण, अमरकोश र रघुवंशको अध्ययन नै पठनपाठनका मुख्य विषय थिए।

विद्यालयमा पढाइचाहिँ बुझाइभन्दा घोकाइ प्रक्रियामा अलिक बढी केन्द्रित हुन्थ्यो। चण्डी, रुद्री र वेदको अध्ययन त पूर्ण रूपमा लयबद्ध घोकाइ प्रक्रियामै केन्द्रित थिए। गुरुले पाठ दिनुहुन्थ्यो र त्यसपछि दिइएको पाठ सार-स्वरसहित घोकेर कण्ठ गरी बुझाउनु पर्थ्यो। दिनभरिमा कसले बढी श्लोक र मन्त्रहरू घोकेर कण्ठ गरी बुझाउने भन्ने हाम्रो प्रतिस्पर्धा चल्थ्यो। म पनि पढाइमा राम्रै दर्जामा पर्थें तर मित्र हरि भण्डारीलाई हामी कसैले जित्न सक्दैनथ्यौं। हरि भण्डारीले एक दिन वेदका ४५ ओटा मन्त्र सार-स्वरसहित कण्ठ गरी बुझाएर अम्बिकाप्रसाद रेग्मी गुरुबाट एउटा सुकेको नरिवल पुरस्कार पाएको अहिले पनि झलझली याद आउँछ। वेद पठनमा सारै मिठो लयमाधुर्यका नमुना व्यक्तित्वचाहिँ दाजु जगन्नाथ भण्डारी हुनुहुन्थ्यो। लघुसिद्धान्तकौमुदी व्याकरणका लागि चाहिँ तहगत सहपाठी समूह बनाइएको हुन्थ्यो र समूहमा सूत्र साध्ने, बुझ्ने र घोक्ने गर्थ्यौं। माथिल्लो समूहले तल्लो समूहलाई सिकाउने जिम्मेवारी दिइएको हुन्थ्यो। मेरा सुरुका सहपाठीहरूमा डिल्लीराम गौतम, सुमित्रा, खिला र टीका भण्डारीको नाम याद छ। अत्यन्त शालीन स्वभावकी खिला भण्डारी (विष्णुभक्त गुरुपुत्री) ठुली भएपछि विवाहपश्चात् बितेको खबर सुनेर सारै दुःख लाग्यो। सहपाठी सरहका आदरणीय प्रिय मित्रहरू हरि, कर्णाखर, डमरु खतिवडा, विष्णु, शिव, महेन्द्र रेग्मी, वेणु, सेमन्त, हरि, यादव, साम्ब भण्डारी, दिवाकर, सोमनाथ, फणीन्द्र तिम्सिना, परशुराम, चन्द्र खनाल, बुद्धि, होमनाथ, तेजप्रसाद पौडेल, धर्मानन्द ओझा, घनश्याम ढकाल, सोमनाथ सुवेदी तथा काशी, प्रकाश, कुबेर, भानु, लय, नारद, ङमनाथ पौडेल, प्रभाकर, शिव तिम्सिना, राम ओझा, खेमानन्द खतिवडा आदि प्यारा भाइहरूलाई सम्झिरहन्छु। हामीलाई सिकाउने जिम्मा चाहिँ बद्रीनाथ खतिवडालाई थियो। गीता, व्याकरण, अमरकोश आदि चाहिँ छोरीहरूलाई पनि पढाउने राम्रो चलन थियो। गीता पढ्न आउने यमुना खनाल, गीता, माया भण्डारी, पुष्पा, हरिमाया पौडेल, पार्वता, चन्द्रा, यमुना, तिम्सिनाहरूको नाम अझै स्मृतिपटलमा ताजै छ। कतिपय अग्रजहरू कहिलेकाहीं श्रीमद्भागवतको पाठ अध्ययन अभ्यास पनि गर्नुहुन्थ्यो। जसमा अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, भवानीप्रसाद खतिवडा, दामोदर न्यौपाने लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा, जगन्नाथ भण्डारी, पुष्पलाल पौडेल, काशीनाथ न्यौपाने, डिल्लीराम भण्डारी, भूमिप्रसाद

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दहाल, छन्दुराम भण्डारी गोविन्द पौडेल र गजाधर खतिवडाको नाम सम्झना छ। यस लेखमा सन्दर्भवश उल्लेख भएबाहेक पनि धेरै अग्रज, सहपाठी र भाइबहिनीहरूको अनुहार झलझली छ तर अहिले उमेरसँगै विस्मरण शक्ति तेजिलो हुँदै गएकाले सबैको नाम सम्झनचाहिँ असमर्थ भएँ।

विद्यालयमा कुनै पनि परीक्षा बोर्डको सम्बन्धन थिएन। विद्यालयको अध्ययन समाप्ति वर्षमा पूर्वमध्यमा (प्रवेशिका) परीक्षा दिन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयअन्तर्गत नेपाली संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी, भारत जाने चलन थियो। त्यहाँ पनि हामी विद्यालयको छात्रावासमै बसेर पढ्थ्यौं। दुईतीन महिना जति बसेर अन्य विषयको पनि अध्ययन गरी परीक्षा दिन्थ्यौं। यो परीक्षा प्रथम र द्वितीय गरी दुई वर्ष दिनुपर्थ्यो। अर्थात् दुई वर्ष लगातार बनारस गएर परीक्षा दिनुपर्थ्यो। त्यसपछिको उत्तरमध्यमा, शास्त्री आदि अध्ययन र परीक्षाका लागि सुरुमा बनारस, हरिद्वार आदि ठाउँमै पढ्ने चलन थियो भने विशेषतः २०४५ सालबाट चाहिँ पिण्डेश्वर विद्यापीठ धरान गएर पठनपाठन गर्ने परम्परा नै आरम्भ भयो। यसका प्रेरक सूत्रधारका रूपमा दाजु भूमिप्रसाद दाहाललाई हामी सधैं सम्झिरहन्छौं।

कर्मकाण्डीय शास्त्रीय महत्त्वको पाटो र व्याख्या आफ्ना ठाउँमा होला तर विधागत ज्ञान कौशलका आधारमा हेर्ने हो भने त्यो बेला विद्यालयमा मुख्य पाठ्य विषयका रूपमा पढाइ हुने उक्त ग्रन्थहरू नै पूर्वीय ज्ञानका मुख्य आधार र भण्डार रहेछन्। उक्त ग्रन्थहरूको गहन अर्थपरक शास्त्रीय दार्शनिक ज्ञानको बोधपूर्ण अध्ययन त त्यस समयमा हामीले गर्न सकेनौं तर चण्डी, रुद्री, गीता र वेदको लयबद्ध घोकाइले छन्दशास्त्रीय उच्चारणगत शुद्धता र लयात्मकता, लघुसिद्धान्तकौमुदी व्याकरणको सूक्ष्म अध्ययनले भाषिक शुद्धता, अमरकोशको घोकाइले शब्दभण्डार र रघुवंशको अध्ययनले साहित्यिक शिल्पको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष गहन ज्ञान प्रदान गरेछन् हामीलाई र आज त्यसैको जगमा हामी आफ्नो विषयमा सबल बनी सम्मानका साथ जीवनगुजारा गरिरहेका छौं। देशका जुनसुकै भागमा पुगे पनि शैक्षिक कर्ममा इज्जतका साथ जमेर जमाएर बाँच्न सकेका छौं।

३. ध्यान/मेडिटेसनको विशिष्ट अभ्यास

विद्यालयमा वैदिक अनुशासनआबद्ध निश्चित दिनचर्याहरू थिए। प्रायः नित्य बिहान चार बजे उठ्थ्यौं र विधिपूर्वक शौच, स्नान गर्थ्यौं। तत्पश्चात् मन्दिरको पेटीमा आआफ्ना पिरा, कुसन वा राडीहरू ओछ्याएर गोमुखी मालाका साथ एकाग्र चित्तले विधिपूर्वक जप गर्दथ्यौं। जपपछिको पूजा आरती र पञ्चामृत प्रसाद ग्रहणपश्चात् मात्र नित्य पठनपाठन प्रक्रिया आरम्भ हुन्थ्यो। यो जप, पूजा र आरतीको प्रक्रिया बेलुकी साँझमा समेत नित्य चल्दथ्यो। त्यो बेला यो जप, ध्यानको मनोवैज्ञानिक महत्त्व थाहा थिएन। केवल गर्नु पर्छ भनेर गरिन्थ्यो। गुरु, देवता र धर्मका डरले भए नि अराएका सिकाएका सबै कर्महरू पूर्ण इमानदारीपूर्वक गर्थ्यौं। वास्तवमा यो जप, ध्यान त हाम्रो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिमागमा सिर्जना भएका अनेकथरी विकार (भाइरस) हरू मेटाएर/डिलिट गरेर ताजा तन्दुरुस्त र स्वच्छ पारी स्मरण शक्ति बढाउने सर्वोत्तम वैज्ञानिक विधि पो रहेछ। बिहान दिमाग स्वच्छ पारी अध्ययन कार्य आरम्भ गर्ने र बेलुकी पनि स्वच्छ दिमाग पारेर शयन गर्ने कति वैज्ञानिक प्रक्रियाको अभ्यास गराउनुभएको रहेछ गुरुहरूले त्यो बेला, आज महसुस भइरहेछ।

आज दुनियाँमा मेडिटेसन भनेर यही ध्यान विधिलाई दिमागी उपचारको विशिष्ट प्रयोगका रूपमा स्वीकारिएको छ। स्थान, देश, महादेश र भाषाअनुसार जप्ने मन्त्र र शब्दहरू फरक-फरक होलान् तर विधि, प्रक्रिया र परिणाम एउटै हो। आज ठुलाठुला डाक्टर, वैज्ञानिकहरूले समेत मेडिटेसनलाई मानव मस्तिष्क स्वच्छताको सर्वोत्कृष्ट प्रक्रिया मानेर अपनाएका छन्। हाम्रा आदिम महान् ऋषिमुनिहरूको दिव्य चिन्तनबाट आविष्कृत जप, ध्यान हरेक विद्यार्थीहरूका लागि अतिआवश्यक प्रक्रिया रहेछ जसबाट हाम्रो दिमाग स्वच्छ भई स्मरण शक्ति वृद्धि हुने र अध्ययनमा सकारात्मक प्रभाव पार्ने रहेछ। आज पनि म अलिक तनाव र बेचैनी बढ्यो भने ध्यानमा बस्छु र नियन्त्रण गर्छु। हो, हिजो नबुझी आस्था र विश्वासका लागि गरें तर आज बुझेर आफ्नो मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्यका लागि गरिरहेको छु। बुझेर गरौं या नबुझी त्यसले मलाई वास्तविक म बन्नमा अत्यन्त ठुलो योगदान पुर्याएको छ, मेरो ज्ञानको संसारलाई सदा स्वच्छ र फराकिलो तुल्याएको छ।

४. गुरुकुलीय पोसाक संस्कृति र पाइन्ट निषेध सन्दर्भहरू

विद्यालयमा प्राचीन गुरुकुलीय पोसाक पहिरन परम्पराको कडा अनुशासन थियो। आधुनिक पोसाकहरू वर्जित थिए। कट्टु लगाउने चलन थिएन। त्यसका लागि लगौंटी लगाइन्थ्यो। लगौंटीबाहिर मिलाएर कछाड लगाउँथ्यौं। माथिचाहिं गन्जी, कुर्ता, दौरा वा सेतो, पहेंलो आदि सात्त्विक रङ्गको चाहिं सर्ट लगाउन पनि पाइन्थ्यो। शिरमा ढाकाटोपी लगाउँथ्यौं। कपाल अलिक लामो भएपछि बिलेटले खौरेर काट्ने चलन थियो। दिउँसो कक्षा समयमा भने हुनेहरूले कुर्ता-सुरुवाल र दौरा-सुरुवाल नि लगाउँथे तर धेरैजसो चाहिं प्रायः कछाडमै हुन्थ्यौं। खाना खाँदा लगाउने र जप गर्दा लगाउने कछाड फरक-फरक हुनुपर्थ्यो। खाना पकाउँदा खाँदा तौलिया गाम्छा फेर्ने पनि गर्थ्यौं।

विद्यालयमा पाइन्ट वा हाफ-पाइन्ट लगाउन भने पूर्ण निषेध थियो। बाल्यकालमा जे पाइँदैन त्यसमा अभिरुचि बढ्नु स्वाभाविक हो। हामीलाई पनि पाइन्ट, हाफ-पाइन्ट लगाउन औधी रहर लाग्थ्यो। पाक्षिक रूपमा हुने बिदामा घर जाँदा कछाड लगाएर जान असहज हुन्थ्यो। बाटामा, गाडीमा मान्छेहरूले नराम्ररी जिस्क्याउँथ, हेप्थे। त्यसैले विद्यालयबाट निस्कँदा कछाड लगाएरै निस्कन्थ्यौं अनि चारपाने चोक आइपुग्ने बेलामा बाटाछेउमै बायाँपट्टि एउटा बाँसको झाङ थियो। त्यहीं छेलिएर हाफ-पाइन्ट फेर्थ्यौं तर चारपाने चोक पुगेर बस नचढुन्जेल सारै डरमर्दो हुन्थ्यो। कसैले देख्ला र गुरुजीलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भनिदेला कि भन्ने चिन्ताले सताउँथ्यो। कतिपय साथीहरू त घरबाट आउँदा चारपाने चोकमा खड्काजीको घुम्ती दोकानमै राख्थे हाफ-पाइन्ट, पाइन्ट र पछि घर जाने बेलामा त्यहीं गएर घुम्तीको पछाडिपट्टि यसो छेलिएर पल्याकपुलुक हेर्दै फेर्थे। मैले चाहिँ पहिलोपल्ट बनारस परीक्षा दिन जाँदा लगाएको हुँ पाइन्ट। मेरा सौखिन र सम्पन्न सहपाठी प्रिय मित्र महेन्द्र रेग्मीको निर्देशनमा सिलाएको। त्यतिखेर सारै चुज पाइन्ट लगाउने चलन रहेछ। लिन जाँदा एकपटक लगाएर ट्रायल गर भन्यो टेलरवालाले तर महेन्द्रले खुट्टाको फेर १२ इन्चको अडर गरिदिएका रहेछन् मेरो खुट्टै छिरेन। महेन्द्रले छिर्छ छिर्छ, मसँग आइडिया छ भन्दै लिएर हिंडे मलाई। बनारस जाने दिन खुट्टामा पोलिथिन झोला बाँधिदिए र पाइन्ट छिराइदिए। रमाइला रसिला डिल्ली भण्डारी दाजुको नेतृत्वमा दुई दिनको यात्रापश्चात् बनारस पुग्यौं। छात्रावासमा पुग्ने बेलामा साँझ परेको थियो। म दैलोमा उछिट्टिएर लडें। दाहिने घुँडा ठोक्किएर पाइन्ट धसारिई घुँडामा घाउ नै भयो। कोठामा गएर पाइन्ट खोल्न खोज्दा पाइन्ट हलचल नै भएन। दुई दिनसम्म रेलमा झुन्डाएर बस्दा खुट्टा सुन्निएछन्। नसुन्निकन त नछिर्ने पाइन्ट सुन्निएपछि झन् के छिर्थ्यो ? डिल्ली दाजुले कैंचीले काटेर उधारिदिनुभयो र त्यो पाइन्टरूपी जेलबाट मेरा खुट्टा मुक्त भए। मेरो यो पाइन्ट काण्ड साथीहरूमाझ पछिसम्म पनि हँसीमजाक र मनोरञ्जनको विषय भएको थियो।

एकपटक गोविन्द पौडेल, छन्दुराम भण्डारी, शिव ढकाल, हेमलाल ढकाल, तीर्थ ढकाल, डमरुबल्लभ खतिवडा, पीताम्बर भट्टराई दाइहरूले विदाका बेलामा विद्यालयबाहिर कतै पाइन्ट लगाएर हिंडेको भन्ने सूचना कसैबाट प्रधानाध्यापक गुरुजीकोमा सम्प्रेषण भएछ। यस विषयले विद्यायलमा ठूलै रूप लियो। पछि अन्य सबैले ससर्त क्षमा पाए पनि दाजु गोविन्द पौडेललाई भने विद्यालयबाट निकालियो। म सानै थिएँ। विद्यालयमा दाजुकै पूर्ण भरोसा र रेखदेखमा थिएँ। दाजु रुँदै विद्यालयबाट निस्कनुभयो। मलाई त्यति बेला आफू टुहुरो भए जस्तो महसुस भयो। धेरै रोएँ। मावली दाजु डमरुवल्लभ खतिवडाले फकाइफुल्याइ गर्नुभयो। उता घरमा आमाबुबाको रुवावासी भयो। दाजुलाई विद्यालयमा पुनः पढ्न पाउने परिस्थिति सिर्जना गर्न बुबाआमा र स्वयं दाजुले गुरुजीहरूसँग धेरै अनुनय-विनय गर्नुभयो। पटक-पटक धाएर रोइकराइ गर्नुभयो। तर पनि पार लागेन। खुदुनाबारी, साधुटारस्थित आदरणीय केदारनाथ खतिवडा विद्यालय व्यवस्थापन समितिका सबैभन्दा प्रभावशाली सदस्य हुनुहुन्थ्यो र नाताले आमाका काका पनि। सारै हक्की र नेतृत्वगुणी आध्यात्मिक नैष्ठिक व्यक्तित्व। उहाँ विद्यालयमा आउँदै हुनुहुन्छ रे भन्ने सुन्दा मात्र पनि हाम्रो सातो जान्थ्यो र अत्यन्त सतर्क भएर नियम-अनुशासन र अध्ययनमा दत्तचित्त हुन्थ्यौं हामी। आमा दाजुलाई लिएर उहाँको घरमै जानुभएछ र दुई दिनसम्म त्यहीं बसेर अश्रुधारासहित अनेक बिन्ती-अनुनय गर्नुभएछ। अन्ततः आफू निरक्षर भए पनि छोराछोरीलाई जसरी भए नि पढाउनै पर्छ भन्ने शोच भएकी हाम्री आमाका आँसुको सत्यनिष्ठायुक्त बलले केदार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाको मन पगालेछ र उहाँले दाजुलाई विद्यालयमा फर्किन अनुमति प्रदान गर्नुभएछ। उहाँले बोलेपछि प्रधानन्यायाधीशले बोलेसरह नै हुन्थ्यो विद्यालयमा। सबैले ससम्मान स्वीकार्नुहुन्थ्यो। फलस्वरूप दाजु पुनः फर्किनुभयो विद्यालयमा। मेरो खुसीको सीमा नै रहेन। बुबाआमामा नवीन प्राण भरियो। दाजुको नयाँ संसार खुल्यो। दाजु गोविन्द पहिलेदेखि नै हरेक तवरले अग्रपङ्क्तिकै विद्यार्थीका श्रेणीमा पर्नुहुन्थ्यो। पछि अझै मिहिनेत गर्नुभयो। आफ्नो अनुशासित अथक मिहिनेतले श्रद्धेय गुरुजीहरूको स्नेह र सबैको विश्वास प्राप्त गर्न सफल हुनुभयो र पढ्दापढ्दै त्यहीं सहायक शिक्षक भएर काम गर्ने इज्जतिलो अवसरसमेत पाउनुभयो। अहिले त्यो बेलाको गुरुकुलीय पहिरनको स्मृतिले मनमा छुट्टै रमाइलो र शान्तिको महसुस हुन्छ। जे भए नि विद्यालयको यो कडा अनुशासन संस्कारले आजसम्म हामीलाई सही बाटोमा डोर्याइरहेको छ। अहिले हाम्रो संस्कार, संस्कृति, सनातन धर्म र राष्ट्रिय स्वाधीन मर्मविपरित नाबालकदेखि नै घाँटीमा टाई झुन्ड्याइदिएर नानीबाबुहरूलाई स्कुल पठाएको आम दृश्य देख्दा सारै दुःख लागेर आउँछ। हाम्रो पूर्वीय सनातन संस्कृति नै पश्चिमी सभ्यताको डढेलोमा सल्किँदै नष्ट हुने हो कि भन्ने चिन्ताले सताउँछ।

५. पुरस्कार र प्रेरक प्रभाव

म पढ्न गएको बेलादेखि केही वर्षसम्म आदरणीय अम्बिकाप्रसाद रेग्मी दाजु सहायक शिक्षक हुनुहुन्थ्यो। उहाँ भद्र, शालीन र अत्यन्त मेधावी व्यक्तित्वका धनी हुनुहुन्थ्यो। त्यो बेला मेरो किशोर उन्मुख बालमस्तिष्कमा विद्वान् भनेकै आदरणीय अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, पण्डित भनेकै श्रद्धेय टेकनाथ गौतम र नन्दिकेश्वर तिम्सिना अनि गुरु भनेकै पूज्य विष्णुभक्त भण्डारीमात्र हो भन्ने छाप परेको थियो। आदरणीय अम्बिका गुरुलाई हामी अत्यन्तै श्रद्धा गर्थ्यौं र उहाँसँग निकै डराउँथ्यौं पनि। उहाँले कहिल्यै कुट्नु त भएन तर हामीलाई सचेत गराई पढाइमा एकाग्र पार्न बेला-बेला टेबलमा सानो लट्ठीले डङ्ङ पार्दा हाम्रो सातो जान्थ्यो। पढाइमा प्रोत्साहित गर्न राम्रो पढ्नेलाई कहिलेकाहीं नरिवल, मिस्री, कापी, कलम आदि पुरस्कारहरू पनि दिनुहुन्थ्यो। प्रायः अष्टमीका दिन बेलुका उहाँ अतिरिक्त क्रियाकलापहरू गराउनुहुन्थ्यो। एक दिन बेलुका पहिलोचोटि वक्तृत्वकला प्रतियोगिता आयोजना गरिएको थियो। विद्यालयवरिपरिका अभिभावकहरू पनि आउनुभएको थियो। निर्णायक मण्डलको मुख्य व्यक्तित्व श्रद्धेय पण्डित नन्दिकेश्वर तिम्सिना हुनुहुन्थ्यो। म अरू प्रतियोगीहरूभन्दा सानै थिएँ तर पनि त्यस प्रतियोगितामा प्रथम भएँ र पुरस्कार पाएँ। विद्यालय र गाउँभरि चर्चा र प्रशंसाको पात्र बनें। यो घटनाले मेरो जीवनमा अत्यन्त ठुलो उत्प्रेरणा प्रदान गर्यो। हरेक कार्यक्रम तथा पुराणहरूमा बोल्नका लागि अवसर पाउन थालें। पछि धरान पिण्डेश्वरमा उत्तरमध्यमा र शास्त्री अध्ययन गर्ने क्रममा क्याम्पसमा आयोजना हुने नेपाली तथा संस्कृत दुवै भाषाका वक्तृत्वकला प्रतियोगिताहरूमा मेरो प्रायः एकच्छत्र विजय राज

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चल्यो। जिल्लामा हुने हरेक कलेजस्तरीय वाक्कला प्रतियोगिताहरूमा पनि मैले कहिल्यै दोस्रो स्थानमा झर्नु परेन। पछि काठमाडौं गएपछि पनि द रेयुकाई लगायत विभिन्न सङ्घसंस्थाले आयोजना गर्ने राष्ट्रिय स्तरका वक्तृत्वकला प्रतियोगिताहरूमा समेत विजय हासिल गरें। यही वाक्कलाको प्रभावले पछि शिक्षण, प्राध्यापन तथा रेडियो कार्यक्रम सञ्चालन, उद्घोषण आदि पेसामा समेत प्रभावकारी रूपमा जम्न सकियो। आज यो दूरदेश अमेरिकामा आएर पनि स्थानीय सङ्घसंस्थाहरूमा सफल नेतृत्व गर्दैं बस्न सकिएको छ। मेरो यो सबै कर्म प्रेरणाको मूल स्रोत श्रीसाङ्गवेद विद्यालय नै हो जसलाई मैले सधैं मनको आकाशमा विपुल श्रद्धाका साथ सजाएर राख्ने गरेको छु।

६. भान्सा पद्धति तथा दाउरा अभावका दुःखद क्षणहरू

भान्साका लागि आआफू मिलेर बढीमा पाँच जनासम्मका समूह बनाई खाना पकाएर खान्थ्यौं। आआफ्नो समूहका छुट्टाछुट्टै चुला हुन्थे। खाना खाइसकेर खाएको ठाउँ गोबर या माटोले लोटाएर लिप्नुपर्थ्यो। घरबाट पन्ध्र दिनका लागि नापेर लगेको चामल, गुन्द्रुक, सिन्की, आलु, नुन भुटुन र तेलले टुमटुम गरी दुःखले मात्र पुग्थ्यो। कति दिन त एक छाक मात्र खाएर नि टारियो। सागसब्जी किनेर खान पैसा हुँदैनथ्यो। गरीबीसँग सिँगौरी खेलिरहेका बुबाआमाको पुग्ने गरी खर्च दिने हैसियत थिएन। कहिलेकाहीं गाउँमा हलुङ्गेको लोहोटा बोकेर मोही माग्न हिंड्थ्यौं। भएका बेला सबैले दिनुहुन्थ्यो। छैन भनेर रित्तो लोहोटा फर्किएका बेलाको निराशा भने आफैंमा दयनीय हुन्थ्यो। त्यत्रा विद्यार्थीहरूलाई सधैं दिएर साध्य पनि थिएन। मागेर ल्याएको मोहीसँग भात खान पाउँदा अमृतै खाए जस्तो लाग्थ्यो। मलाई चाहिँ माग्न हिंड्न मरेको जुनी जस्तै लाग्थ्यो। अति नै असहज र लाज लाग्थ्यो तर पनि बाध्यताले विवश पार्थ्यो र हिंडिन्थ्यो। दाजु गोविन्दको रेखदेख र साथमा हुन्जेल त मैले धेरै कष्ट भोग्नु परेन भान्साका लागि तर दाजुको पढाइ सकिएर बिदा भएपछि भने निकै हन्डर खाएँ। त्यो बेला मलाई भान्सामा हार्दिकतासाथ सहयोग गरेर साथ लिने मित्रहरू कुलप्रसाद दाहाल र पुण्य भण्डारीप्रति धेरै ऋणी छु।

हरेक द्वादशीका दिन बिहान प्रायः सबै गाउँलेहरू चामल, सागसब्जी आदि सिधा लिएर आउनुहुन्थ्यो मन्दिरमा अनि गुरुजीले हामी सबैलाई एक छाक चामल, सागसब्जी र तेल बाँड्नुहुन्थ्यो। हामी खुसीले फुरुङ्ग पर्थ्यौं। कहिलेकाहीं आनासुकी पैसा भएका बेला बुधबार बेलुका चारपाने चोकमा लाग्ने हटियामा गई सागसब्जी किनेर ल्याउँथ्यौं। प्रायः बिहान नौदेखि दस र बेलुका चारदेखि पाँच बजे खाना पकाएर खाने समय तोकिएको हुन्थ्यो। दुई छाक खानाबाहेक चियाखाजा केही खाने चलन थिएन। खोइ कुन सालको हिउँदमा हो बिर्सिएँ असाध्यै जाडो आएको थियो। पूज्य प्रधानाध्यापक विष्णुभक्त गुरुजीले एक डेड महिनासम्म उहाँको घरमै चिया पकाएर ल्याई बाँड्नुभएको थियो। असाध्य जाडोमा त्यो चिया खान पाउँदाको आनन्द अहिले पनि अवर्णनीय लाग्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हामीलाई सबैभन्दा बढी समस्या दाउराको हुन्थ्यो। वरिपरि दाउराको स्रोत केही थिएन। हिउँदको समयमा अष्टमीका दिन दाउरा खोज्न दुई घन्टा हिंडेर दहीझोडा जान्थ्यौं। बाटामा बिरिङ खोला तर्नुपर्थ्यो। खोलामा पुल थिएन। कहिलेकाहीं त झन्डै कम्मर कम्मरसम्म पानी हुन्थ्यो। डराउँदै डराउँदै एकअर्काको हात समातासमात गरेर खोला तरिन्थ्यो। जङ्गल त पुग्यो तर काट्ने बन्चरो नै हुँदैनथ्यो। जङ्गलमा खोजखाज गरेर भेटिएका ठुटाहरू काँधमा बोकेर ठसठस कन्दै पसिना चुहाउँदै फर्कन्थ्यौं। बिहान सात बजे हिंडेका मान्छे दिउँको तीन-चार बजे मात्र आइपुथ्यौं। भोक र थकाइले शरीर नै लखतरान हुन्थ्यो। तर अब केही दिन दाउराको समस्या टर्नेभो भन्ने खुसीले सबै थकाइलाई बिर्साउँथ्यो। छात्रावासमा बस्ने सायद हामी अधिकांश विपन्न परिवारकै थियौं होला। एकाध अलिक हुनेखाने परिवारका साथीहरू भने राम्रा झरझर परेका सखुवाका दाउरा किनेर ल्याउँथे। हामी नहुनेहरू ती दाउरा हेरेरै चित्त बुझाउँथ्यौं।

अहिले त विद्यालयमा विद्यार्थीहरूलाई भान्साको कुनै दुःख छैन होला। अभावहरूसँग सिंगौरी खेल्नुपरेको छैन होला। बत्ती पानी प्रविधि सबै थोकको यथेष्ट सुविधा होला। साथमा आधुनिक विषयहरू पनि पढ्न पाएका होलान्। अनुशासन र निष्ठामा रहेर राम्रो अध्ययन गरिदिए हुन्थ्यो भन्ने मलाई लाग्छ। हाम्रो पूर्वीय विशालतम तर्कसिद्ध दर्शनज्ञानगङ्गामा गर्वका साथ चिन्तनस्नान गरे हुन्थ्यो भन्ने लाग्छ।

७. व्रत संस्कार, फलाहार अभाव, प्रदोष उत्सव, कीर्तन रोमाञ्चकता र भण्डाराको सम्झना

हरेक पन्ध्र दिनमा आउने एकादशीका साथै प्रायः त्रयोदशी र कहिलेकाहीं द्वादशीमै पर्ने प्रदोष व्रत लिनुपर्थ्यो। कहिलेकाहीं त एकादसी, प्रदोष र शिवरात्रिको लगातार व्रत ह्याट्रिक नै पर्थ्यो। यसका अलावा रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, रक्षा बन्धन आदि धार्मिक, सांस्कृतिक पर्व विशेषका व्रतहरू पनि आउँथे। फलाहार खानलाई खासै केही हुँदैनथ्यो। प्रायः भोकभोकै बिताइन्थे व्रतका दिनहरू। त्यो बेला मलाई मेरो घर पनि विद्यालयबाट नजिकै भएको भए त जे-जस्तो भए नि केही फलाहार खान त पाउँथें नि भन्ने लाग्थ्यो। व्रतप्रति पूर्ण विश्वास र आस्था थियो तर किशोर अवस्थाको खाने उमेरको भोको पेटप्रतिको पीडा पनि कम थिएन।

प्रदोष व्रत त दिनभर पानीसमेत नखाई निराहार लिने प्रतिस्पर्धा चल्थ्यो। खान नपाए पनि खोइ किन हो यो प्रदोष व्रत भने रमाइलो उत्सव जस्तै लाग्थ्यो। यो व्रतका दिनचाहिँ बेलुका पुजा-आरती सकिएपछि खाना खान पाइन्थ्यो। घाम नअस्ताई खाना बनाएर ठिक पार्थ्यौं र बेलुका पूजा सकिएपछि प्रसाद ग्रहण गरेर खाना खान्थ्यौं। यो दिन भने सकेसम्म मिठो पकाएर खाने होडबाजी चल्थ्यो। यो दिन बेलुका विद्यालय छेउछाउमा घर भएका व्रत लिने कतिपय साथीहरू पनि रमाइलोका लागि हामीसँगै भान्सा समूहहरूमा मिसिएर विद्यायलमै खाना खान्थे। घरबाट सागसब्जी, दही, मोही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र दाउरा लिएर आउन सक्ने असल साथी आफ्नो समूहमा आइदेओस् भन्ने हाम्रो भित्री इच्छा हुन्थ्यो। धर्मानन्द ओझा, हरि भण्डारी, बुद्धि पौडेल, सोमनाथ तिम्सिनाहरू सबैको रोजाइमा पर्थे। प्रदोष व्रत र त्यस दिन बेलुका गरिने विशेष शिवपूजाको अगुवा प्रायः मित्र दिवाकर तिम्सिना र दाजु होमनाथ पौडेल हुन्थे। सारै निष्ठापूर्वक व्रत लिने र पूजा गर्ने संस्कार थियो उहाँहरूको। यद्यपि यसका अग्रज अगुवा भने दाजु काशीनाथ न्यौपाने हुनुहुन्थ्यो। पूजाका लागि दिउँसै बेलपत्र र पुष्प टिपेर ठिक पाथ्र्यौं। मन्दिर, पूजास्थल र पूजा-वर्तनहरूको विशेष सरसफाइ गर्थ्यौं। सबैले यथाशक्य आठाना, एक रुपैयाँ उठाएर जम्मा पारी नरिवल र मिस्री किनेर ल्याउँथ्यौं। बेलुका पूजा-आरती सकिएपछि प्रसादका रूपमा बाँडिने ससाना एक-दुई टुक्रा नरिवल र मिस्री खाँदाको स्वाद र आनन्द अव्याख्येय हुन्थ्यो। गाउँका धेरैजसो अभिभावकहरू पनि आउनुहुन्थ्यो, सारै रमाइलो लाग्थ्यो।

शिवरात्रि, कृष्णजन्माष्टमी, रामनवमीहरूमा रातभर कीर्तन गरेर जाग्राम बस्दाको क्षण सम्झँदा सारै रमाइलो लाग्छ। हरेक कार्यक्रममा अत्यन्त उत्साहका साथ सरिक हुने र सारै मिठो गरी जिउ मर्काउँदै कीर्तन गर्ने हृष्टपुष्ट ज्यानका आदरणीय अभिभावक परशुराम ओझाज्यूको उज्यालो र हँसिलो मुहारको अहिले पनि झलझली याद आउँछ। कीर्तन तथा अन्य कार्यक्रममा अपनत्वपनका साथ उपस्थित भएर सदा साथ सहयोग र ऊर्जा प्रदान गर्ने आदरणीय अभिभावकहरू हँसिला शान्तस्वभावी लोकनाथ पौडेल, बातैपिच्छे हँसाउने खगनाथ र पुष्पलाल भण्डारी, हक्की स्वभावका देवीप्रसाद पौडेल, अग्निप्रसाद खतिवडा, मृदुमुस्कानी चूडामणि पौडेल, खुला हृदयी झुनप्रसाद तिम्सिना, शालीन होमनाथ तिम्सिना, खिमनाथ ओझा, भद्र शिष्ट पूर्णानन्द तिम्सिना, हँसमुखी देवीप्रसाद खनाल, भद्र र समयचेतनाका अगुवा लोकनाथ खनाल र घनश्याम तिम्सिनाज्यूहरूको नाम कहिल्यै बिर्सने छैन। एघार-बार बजेसम्म त प्रायः अभिभावकहरू पनि बसेर कीर्तन गर्नुहुन्थ्यो। त्यसपछि प्रायः हामी विद्यार्थी वर्ग मात्र हुन्थ्यौं। कीर्तनको नेतृत्व प्रायः दाजुहरू छन्दुराम भण्डारी र गोविन्द पौडेलले गर्नुहुन्थ्यो। गाउँका सानाठुला सबै दिदीबहिनीहरू पनि राति अबेरसम्म बसेर उत्साहका साथ कीर्तनमा सक्रियता जनाउनुहुन्थ्यो। सबैको नाम अहिले याद छैन। कोही कोही त सारै मिठो गरी भजन गाउनुहुन्थ्यो। कीर्तनअनुयायी कृष्णा, मेनुका , खगमाया, निर्मला, राधिका, सीता दिदीहरू र पुष्पा, हरिमाया, सुमित्रा, गीता, टीका, माया, पार्वता, तुलसा लगायतका बहिनीहरूको नाम सम्झना छ। पूरै रात मन्दिरभित्र बसेर हार्मोनियम र झ्यालीका साथ कीर्तन गर्दै बिताउँथ्यौं। कीर्तनचाहिँ हामीलाई मनोरञ्जनको उत्साही पर्वजस्तो लाग्थ्यो।

आश्रम र विद्यालयका संस्थापक सिद्धयोगी गुरु विवेकानन्दको पुण्यतिथि भाद्र शुक्ल पूर्णिमा तथा जेठागुरु योगानन्दको पुण्यतिथि माघ शुक्ल षष्ठीका दिन विद्यालयमा विशेष जप, पाठ, यज्ञसहित भण्डारा हुने गर्थ्यो। भण्डारा भनेको वास्तवमा सिद्ध योगीहरूका पुण्यस्मृतिमा गरिने सामूहिक श्राद्ध रहेछ। भण्डाराका दिन टाढाटाढाबाट पनि सिद्ध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुहरूका भक्त र आश्रमका शुभेच्छुकहरू गच्छेअनुसार सागसब्जी, चामल, दही दुध, घिउ आदि बोकेर आउनुहुन्थ्यो। मानिसहरूको ठुलो उपस्थिति हुन्थ्यो। अघिल्लै दिन गाउँलेहरू भेला भएर पूर्वतयारी र कामको जिम्मेबारी बाँडफाँड गर्नुहुन्थ्यो। बिहानैदेखि, मन्दिरमा जप, पाठ, यज्ञ, पूजाको काम आरम्भ हुन्थ्यो भने बाहिर प्रायः महिलाहरू सागसब्जी सुधार्न, केलाउनमा व्यस्त रहनुहुन्थ्यो। भान्सामा धोती कसेर पुरुषहरू भिड्नुहुन्थ्यो। बाहिरै आगो बालेर ठुलाठुला डब्बी र कराईहरूमा खाने कुराहरू पकाउने काम हुन्थ्यो। खाना खानका लागि केराका थाम काटेर ल्याइन्थ्यो र त्यसलाई एक-डेड फीटका टुक्रा पारेर काटी तिनबाट एकएक दाम्चा निकालेर तिनलाई थालका रूपमा प्रयोग गरिन्थ्यो। खाना नपोखियोस् भनेर दायाँ बायाँ दुई छेउमा दाम्चाकै ससाना टुक्रा काटेर ठेप्सी लगाइन्थ्यो। यज्ञ आरती सकिएपछि आँगनमा लस्करै लाइन मिलाएर तख्ता-फलेकहरू बिछ्याएर भोजनका लागि बसाइन्थ्यो। एकपटकमा सय जनासम्मको पनि भोजन सम्पन्न हुन्थ्यो। यस्ता दुई-तीन तरेलीमा भोजनको काम सकिन्थ्यो। लस्करै बसेर विधिपूर्वक मन्त्रोच्चारणका साथ अप्सानी लगाउने प्रक्रिया सकेर एकैपटक खान आरम्भ हुन्थ्यो अनि खाइसकेर पानी अचाई एकैपटक हरिहर भन्दै चुठ्न उठ्ने प्रक्रिया हुन्थ्यो। भोजनमा दाल, भात, सागसब्जी, दही, मोही, मनभोग र प्रसादका रूपमा ढकनेसमेत हुन्थ्यो। चामलको खस्रो पिठोलाई घिउमा भुटेर पानी तथा चिनी हाली पकाइने हलुवालाई मनभोग भन्ने गरिन्थ्यो। श्रद्धेय गुरुजीहरूका पुण्यस्मृतिमा आयोजना हुने भण्डारा हामी विद्यार्थीलाई ठुलो उत्सवजस्तै लाग्थ्यो। अलि-अलि दक्षिणा पनि पाइने अनि मिठोमिठो खान पनि पाइने। आज पनि मलाई ती भण्डाराहरूमा गरिएका सामूहिक दिव्य भोजनको धेरै याद आउँछ। गुलियो मनभोगको सम्झना आउँछ। केराका दाम्चाको झझल्को आउँछ। हरिहर शब्दको स्मृति आउँछ। अहिले खाइने ठुलाठुला आधुनिक भोज भतेर र पार्टीहरूका परिकार फिक्का लाग्छन् भण्डारा सम्झिँदा।

८. अङ्ग्रेजी निषेध सन्दर्भको सम्झना र आजको तितो यथार्थ

त्यो बेला विद्यालयमा अङ्ग्रेजी पढ्न-पढाउन पाइन्नथ्यो। कहिलेकाहीं कसैले लुकीछिपी कापीमा एबीसीडी लेखेको गुरुजीले थाहा पाउनुभयो भने कडा कारवाही हुन्थ्यो। भद्र स्वभावका शिव ढकाल पढाइमा सारै तेजिला हुनुहुन्थ्यो। व्याकरणमा त सबैभन्दा मेधावी। अङ्ग्रेजी अक्षर लेख्न पनि सिपालु। कोहीकोही साथीहरू लुकीछिपी उहाँबाट अङ्ग्रेजी अक्षर लेख्न सिक्थे तर भूमिगत शैलीमा। खोइ के सन्दर्भमा हो, व्यापारी च्यवनलाल अग्रवालले एकैखाले पित्तलका लोहोटा दान दिएका थिए। आआफ्नो लोहोटा चिन्नलाई कतिपयका लोहोटामा अम्बिका गुरुले टयाकटयाकेले नाम लेखिदिनुभएको थियो। शिव ढकालले चाहिं आफ्नो लोहोटा चिन्न अझै सजिलो होस् भनेर अङ्ग्रेजीमा नाम लेख्नुभएछ। पछि गुरुजीले थाहा पाएपछि त्यो लोहोटामा ल्याएको जल चढाउन समेत निषेध भयो र त्यो लोहोटा फाल्नु नै परेको थियो। एक दिन विद्यालयको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यालय ढोकामा खरीले एबीसीडी पाँच सात अक्षर लेखेकाले चञ्चल स्वभावका प्रिय मित्र परशुराम खनालले पाएको कडा दण्ड अझै याद आउँछ।

हुन त अङ्ग्रेज र अङ्ग्रेजी भाषा हाम्रो समग्र पूर्वीय सभ्यताका लागि धेरै अघिदेखि नै मन्दविष बनेर छाएको तथ्य जगजाहेर छ। तर हामीले चिनियाँ, कोरियन, जापानी र रसियनहरूले जस्तो आफ्नै भाषामा ज्ञान-विज्ञान, गणित, अनुसन्धान, सूचना-प्रविधि, र व्यापार-वाणिज्यका विषयहरूको प्रयोगात्मक प्रवर्धन गर्न नसकेकाले त्यसका लागि अङ्ग्रेजी भाषाका अगाडि घुँडा टेक्न बाध्य हुनु परेको छ। अङ्ग्रेजी सिक्नु रहर होइन बाध्यता हो हाम्रा लागि। आज चाहेर नचाहेर जबर्जस्त संसारको आवश्यकता बनेको अङ्ग्रेजी भाषाको शब्दकोश त्यतिखेर अमरकोशसँगै घोकाउने काम गराइदिनुभएको थियो भने आज म अमेरिकामा आफ्नो धर्म, संस्कृति र सभ्यताको प्रचार-प्रसारमा कति धेरै काम गर्न सक्ने थिएँ होला भन्ने लाग्छ। मैले विद्यालयमा पढ्ने अवसर पाएर नेपाली र संस्कृत जति मात्रामा जानें सिकें त्यति नै मात्रामा अङ्ग्रेजी पनि सिक्न पाएको थिएँ भने अहिले अमेरिकाका राम्रा विश्वविद्यालयको प्राध्यापक बनिसक्ने थिएँ कि! तर आज यो आधुनिक संसारमा आएर भाषाकै कारण मरिच चाउरिएझैं चाउरिनुपरेको छ। साथमा अङ्ग्रेजीको नि ज्ञान भइदिएको भए हाम्रो विद्यालयबाट उत्पादित दर्जनौं दर्जन विद्वान् गुरु-पण्डितहरूका बोली र प्रवचनको मूल्य र महत्त्व यो आधुनिक समाजमा कति धेरै हुन्थ्यो होला। हामीहरूमा विषयगत विशेष ज्ञान, सिप, दक्षता, वाक्कला, प्रस्तुति क्षमता र नेतृत्व गुण भएर पनि अङ्ग्रेजीको ज्ञान नहुनाले धेरै ठाउँमा ठुलाठुला अवसरहरूबाट वञ्चित हुनुपरेको र पछि सर्नुपरेको तितो सत्य आज भोगिरहेका छौं हामी। यसमा श्रद्धेय गुरुजीहरूको कुनै दोष छैन। उहाँहरूले समय, परिस्थितिअनुसार परम्परागत रूपमा जे सिक्नुभो जान्नुभो त्यही सिकाउनुभो, ज्ञान, निष्ठा र अनुशासनको बाटो देखाउनुभो। केवल समयप्रवाहको यथार्थलाई अलिकति बोध गरेर भाषिक बाटोको पाटो थोरै फराकिलो पारिदिनुभएको थियो भने आज हामी र हामीले उहाँहरूबाट प्राप्त गरेको विपुल ज्ञानराशिप्रति अलि बढी न्याय हुने रहेछ भन्ने कुरामात्र हो।

९. कर्मकाण्डीय सहभागिता, आर्थिक राहत र ग्यास्ट्रिक प्रवर्धन

पछि पछि बाहिरफेर विभिन्न कर्मकाण्डीय कार्यहरूमा चण्डी, रुद्री, वेद र श्रीमद्भागवत एकाह आदि पाठका लागि विद्यालयबाट विद्यार्थीहरूको माग हुन थाल्यो। माग र निम्तोअनुसार गुरुहरूले पठन क्षमतावान् सबैलाई पालो मिलाएर पठाउनुहुन्थ्यो। मान्छेहरूले निकै टाढाटाढाबाट पनि बोलाउँथे। गएका ठाउँमा कसैले पुरेत भन्यो भने सारै चित्त दुख्थ्यो। पण्डित भनिदिए फुरुङ्ग पर्थ्यौं। म चण्डीपठनमा पोख्त हुनाले चण्डी पाठसम्बन्धी ठुलाठुला कार्यक्रमहरूका लागि पनि छनोट हुन्थें। एकपटक अधिकारी परिवारमा नौदिने सम्पुटिक चण्डीपाठका लागि विष्णुभक्त गुरुजीका साथ पाँचथर च्याङथापु जाने अवसरसमेत पाएको थिएँ। यस्तोमा गएर पाएको दक्षिणाले हामीलाई ठुलो आर्थिक राहत प्रदान गर्ने गर्थ्यो। दक्षिणाकै पैसाबाट पहिलोचोटि मैले चिटिक्क

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परेका (आकाशे रङ्गका) कुर्तासुरुवाल बिर्तामोडको स्मार्ट टेलर्समा सिलाएर लगाएको थिएँ। त्यतिखेर मलाई आफू हिरो नै भएको अनुभूति भएको थियो। जुत्ता र ब्याग पनि किनेको थिएँ।

प्रायः लघुरुद्री पढ्न गएका बेला बिहान केही नखाई पढ्न आरम्भ हुन्थ्यो। पढिनसकी केही खानु हुँदैन भन्ने संस्कार थियो। मध्याह्नमा चिया खुवाउँथे। कहिलेकाहीं चिया खाने गरेको छैन भन्दा दुध दिने गर्थे। तर कतै-कतैचाहिँ यो सूत्र फेल खान्थ्यो। दुध खानलाई चिया खान्न भन्यो साधा मरिचपानी पो ल्याएर दिन्थे। हामी हिस्स बुढी हरिया दाँत हुन्थ्यौं। कसैकसैकामा चाहिँ फलफूल काटेर पनि खुवाउँथे। कार्जे सकिएर खाने बेला हुँदा बेलुकै हुन लाग्थ्यो। खाद्यान्नमा प्रायः सेल रोटी, पुरी, बुनियाँ र सब्जी नै हुन्थ्यो। दिनभरि सस्वर पढेर हावा भरिएको आन्द्रामा बेलुका चिल्लो चाप्लो खाने कुरा भरिदिएपछि र भोकभोकैका धेरै व्रतहरूको समष्टिले शरीरमा ग्यास्ट्रिक रोगको गतिलो जग बसेछ त्यति बेला। अहिले पनि हामी अधिकांश ग्यास्ट्रिकका पिण्डरोगी छौं। वटुक ब्राह्मणहरूलाई बिहान फलफूल दुध आदि शुद्ध नास्ता गराएर पढ्न लगाउँदा के नै बिग्रन्थ्यो होला र ! सायद अहिले सुधार भयो होला यो भोको पेटको ग्यास्ट्रिक पढाइमा।

१०. गढीमाई कोटीहोम यज्ञ सहभागिताको रोचक स्मरण

विद्यालयमा छँदा सहभागी भइएको सबैभन्दा ठुलो यज्ञचाहिँ योगी नरहरिनाथको आह्वानमा झापाको कनकाई माईमा भएको कोटीहोम महायज्ञ हो। यसमा हामी सबै विद्यार्थी, गुरुहरू र कतिपय अभिभावकहरू समेतको विविध जिम्मेवारीका साथ सक्रिय सहभागिता रहेको थियो र एक महिना विद्यालय पूरै बन्द भएको थियो। पाँच सय जना ब्राह्मणहरूबाट लगातार एक महिना हवन गरी सम्पन्न भएको यस ऐतिहासिक महायज्ञमा हाम्रा श्रद्धेय प्रधानाध्यापक विष्णुभक्त गुरुजीको संयोजनमा हाम्रो विद्यालय टिमले नै नेतृत्व गरेको थियो। यो महायज्ञका अनुभूतिहरूको छुट्टै उपन्यास नै बन्न सक्छ; यहाँ वर्णन गरेर सम्भव छैन। यति विशाल महायज्ञ त नेपालमा सायदै भएका होलान् र हुन सक्ने सम्भावना पनि कमै छ अब।

यो महायज्ञ भएको अर्को साल मङ्सिरमा योगी नरहरिनाथले बारा जिल्लाको गढीमाईमा अर्को कोटीहोम महायज्ञको आयोजना गरी हाम्रो विद्यालय परिवारलाई विशेष निमन्त्रणा गर्नुभयो। त्यति टाढा जान सहज त थिएन तर जानै पर्ने स्थिति भएकाले गुरुजीले नाइँनास्ती गर्न सक्नुभएन र हामीलाई लिएर जानुभयो। वीरगञ्ज जाने कनकाई बसमा बिहान सखारै चढियो पूरै टिम।

वीरगन्जबाट अर्को बस चढेर कलैया पुगियो। त्यहाँबाट गढीमाई पुग्न फेरि अर्को गाडी चढ्नुपर्थ्यो। प्रत्येक पाँच वर्षमा एक महिना लाग्ने गढीमाई मेलामा जाने र आउनेको घुइँचोले कलैया बजारमा पाइला राख्ने ठाएँ थिएन। बल गरेर एउटा ट्रकमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चढ्यौं सबै जना। चढ्नासाथ भाडाचाहिँ उठाइहाल्यो तर ट्रक पञ्चमी हिँडाइमा थियो। दुई घन्टामा एक किलोमिटर पनि अघि सर्न सकेन भिडभाड र बाटोको जामले गर्दा। ट्रक अब अगाडि सर्ने लक्षण नभएपछि हामी ओर्लिएर हिँड्दै जाने निर्णय गरी अघि बढ्यौं। बाटामा बलि दिएका पशुपक्षी बोकेर मेलाबाट फर्कनेहरूको घुइँचो थियो। देख्दै आङ जिरिङ्ग हुने। गढीमाइको यो मेला विश्वमै सबैभन्दा बढी पशुबलि दिइने मेला हो जहाँ एक महिनामा एक लाख पशुपक्षीको बलि चढाइन्छ। हाम्रो सनातन हिन्दु दर्शनमा कहींकतै नभएको यो बलिप्रथाले हाम्रो धर्मको मर्ममाथि नै आघात पुर्याइरहेको छ। खोइ कहिले कसरी अन्त्य होला यो धर्मका नममा गरिने हिंस्रक कुकार्यको !!

घन्टौंको हिँडाइपछि गलेर भुतुक्क हुँदै साँझ झमक्क हुँदा हामी यज्ञस्थलमा पुग्यौं। ठुलो पोखरी, पोखरीको पूर्वपटि डिलमा गढीमाइको मन्दिर अनि मन्दिरबाट पूर्वपटि खुल्ला खेतमा भव्य मेलाको झिलिमिलि थियो। मेलामा असी प्रतिशत भन्दा बढी यात्री सहभागी चाहिँ भारतीयहरू हुँदारहेछन्। पोखरीको पश्चिम दक्षिण डिलमा कोटीहोमका लागि हामीलाई बस्न सुत्न बनाइएका पराले अस्थायी झुप्रा। त्यसका तल दक्षिणपट्टि यज्ञस्थल। यो यज्ञचाहिँ सारै दुखिया पाराको थियो। मेलाले यसलाई छायाँमा पारेको थियो। आयोजना सारै फितलो थियो। विचरा सिद्धयोगी नरहरिनाथले त के गरून् र ! त्यो उराठलाग्दो ठाउँमा शुभेच्छुक र यज्ञमर्म बुझ्ने जनमानसकै अभाव थियो। हवन गर्न चरुको समेत अभाव हुन्थ्यो। जौ चामल नभएर वनस्पतिहरूका ससाना टुक्रा बनाएर समेत हवन गरियो कुनै कुनै दिनमा त। बेलुका एक छाक खाइन्थ्यो त्यो पनि सारै रुखो भात। दहीमोही देख्न पाइएन। डब्बीमा पकाएको कतै काँचो र कतै गिलो भात अनि रुखोसुखो सब्जीका भरमा जबर्जस्त भथ्यौं पेट। विचरा विष्णुभक्त गुरु खटेर लागिपर्नुहुन्थ्यो खाना बनाउन र हामीलाई खुवाउन। गढीमाईमा दिइएको बलिमा बगेको रगतको दुर्गन्ध बेला बेलै ह्वास्स आउँथ्यो। दक्षिणतिर तल खेतमा कलहरू गाडिएका थिए। बिहान हिलोमा गजगजी टेक्दै गएर नुहाउनुपर्थ्यो। जतासुकै दिसा गरिएको हुन्थ्यो मेलामा आउने मान्छेहरूबाट। त्यसमा टेकिएला कि भन्ने पिर हुन्थ्यो हामीलाई। सुत्ने ठाउँ पराल ओछ्याएर बनाइएको थियो। माथिबाट यसो आआफ्ना तन्ना बिछ्याएर सुत्थ्यौं। सुतेका ठाउँमा सिरानेमुनि सर्प आएर बसेका घटनाहरू सुनाउनुहुन्थ्यो दाइहरू। हामी कतिपय साने भएकाले डराउँछन् भनेर भन्नुभएनछ त्यति बेला। पोखरीमा प्रशस्त पानीसर्पहरू थिए। झन्डै एक महिनाको सारै टिठलाग्दो बसाइपछि यज्ञ समापन भयो। आउनेजाने भाडासमेत नपुग्ने गरीको नाममात्रको दक्षिणा पाइयो। गढीमाईलाई बिदा गरेर वीरगन्ज फर्कियौं। बसको व्यवस्था मिलाउन असहज भएकाले दुई दिनसम्म वीरगन्जको गीतामन्दिर धर्मशालामा बसियो। धर्मशालामा मारवाडी समाजका पदाधिकारीहरूले खाना बनाएर खुवाउनुभयो। एक महिनापछि सारै मिठो गरी खाना खान पाउँदा पेटै छक्क परेको थियो। खुवाएको जम्मा दाल, भात र सब्जी थियो तर स्वादिलो। त्यो खानाको स्वाद अहिलेसम्म याद भइरहेको छ। जे भए

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पनि गढीमाई तीर्थस्थलमा एक महिना जति बसेर यज्ञसेवा गरियो। त्यो बेला असहज र दुःख भए पनि अहिलेचाहिँ सुखद अनुभूति भइरहन्छ। स्मरणीय जीवन घटनाका रूपमा सम्झना आइरहन्छ। ती दिनहरू अब फर्केर आउँदैनन्। ती क्षणहरू अब भोग्न पाइँदैन। केवल सम्झनामा सजिएर बसेका छन्। यादमा अडिएर रमेका छन्।

११. निष्कर्ष

विद्यालयमा पढ्दाका दुःखसुखका रोचक अनुभूतिहरू अनेक छन्। दर्जनौं शीर्षकका छुट्टाछुट्टै लेखहरू बन्छन्। सबै यहाँ उल्लेख गर्न सम्भव भएन। मेरो सातवर्षे यो छात्रावास बसाइ जीवनका सुवासित रङ्गहरूले सजिएको छ, जीवनबोधका ढङ्गहरूले भरिएको छ, जहाँ मेरो बाल्य तथा किशोरकालीन सपनाहरूको आकाश उघ्रिएको थियो, निष्ठायुक्त ज्ञानको सुनौलो बिहानी झुल्किएको थियो। मैले घरबाट चामल बोकेर लाने गरेको खागीको नाम्ले झोलाले आज पनि मलाई जीवनको धरातल सम्झाइरहन्छ। दहीझोडाबाट बोकेको दाउराले कर्मवादको पाठ पढाइरहन्छ। विद्यालयमा कहिलेकाहीं संयुक्त रूपमा गरिने वेदपाठको त्यो वैदिक गुञ्जन ध्वनिको स्मृतिले अन्तर्मनमा दिव्य शान्तिबोध गराइरहन्छ। त्यो एकाग्र चित्तयुक्त गायत्रीमन्त्र जपको सम्झनाले मस्तिष्कमा स्वच्छताको प्राण भराइरहन्छ। वास्तवमा अभाव र दुःखको कोखबाट नै निष्ठा र इमानदारितापूर्ण सफल जीवनको बीज उत्पन्न हुने रहेछ। कठोर अनुशासन पालनाको जगबाट नै जीवन व्यवस्थापनको सुन्दर द्वार खुल्ने रहेछ। श्रीसाङ्गवेद विद्यालयले प्रत्यक्ष रूपमा मलाई आधुनिक विषयगत ज्ञानसिपको रेडिमेट भान्सा पस्किदिएन होला तर पूर्वीय ज्ञानगङ्गाको पवित्र जलले मनको बाँझो खेत सिञ्चन गरेर उर्वर भने अवश्य बनाइदियो जसमा कर्मखेती गरेर आज जीवनका सुन्दर फूलहरू फुलाइरहेको छु, पूर्वीय ज्ञानसभ्यताका मूलहरू फुटाइरहेको छु। मेरो त्यो गुरुकुलको सम्झनाले सधैं सधैं मेरो छाती गर्वले फुलिरहन्छ अनि शिर श्रद्धाले झुकिरहन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चारपाने विद्यालय : एक संस्मरण

✍ हरिप्रसाद खतिवडा

वि.सं. २०३६-३७ तिरको कुरा हो। तत्कालीन खुदुनाबारी १, साधुटारबाट संस्कृत शिक्षा अध्ययन गर्नका लागि चारपानेमा आइयो। ९-१० वर्षको उमेरमा बडीबाका छोरा बासु दाइ र साथी विष्णु रेग्मीसँग करिब १४ किलोमिटर (साधुटारबाट चारपानेसम्म) दूरी पैदल यात्रा गरिन्थ्यो। ठूलो र बाक्लो खागीको कपडाको झोला जसमा १२-१४ माना चामल, केही पिँडालुका सेला र साना बोत्तलमा अलिकति तेल हालेर आफ्नो अध्ययन क्षेत्र गुरुकुलतर्फ प्रस्थान गरिन्थ्यो।

एकातर्फ पढ्न जाँदा केही खुसी भए पनि उमेरका आधारमा आमाको काख र घरपरिवारको साथ छोड्नु सजिलो त कहाँ थियो र! तीन दिनको छुट्टीमा घर आएर फर्किनुपर्दा नराम्रो लाग्दथ्यो। अघिल्ला दिनदेखि नै खान मन लाग्न छाड्दथ्यो। मनमा किसिम-किसिमका मनोद्वन्द्वहरू चल्ने गर्दथे। मनमा नमिठो अनुभूति लिएर आँखामा टिलपिल टिलपिल आँसुका साथ आफूभन्दा ठूलो झोला बोकेर गन्तव्यतिर लाग्दथैं। केही तल बाटामा आएर झोला बिसाएर फेरि फर्किएर आफ्नो घरतिर हेर्दै मनमा नमिठो अनुभूति गर्दै विभिन्न कुराहरू सोच्न थाल्दथें। सँगै रहेका दाइले के भयो हरि ? रुन थालिस् कि के हो ? के सोचेको भन्दा केही होइन, आँखामा के पसेछ भनी नजानिदो पाराले आँसु पुछ्न थाल्दथें र अब कति दिनपछि घर फर्कने होला भनेर दिन र घन्टा गन्न थाल्दथें।

खाना खाएर १०-११ बजेतिर हिंडेका हामी बेलुकीपख मात्र चारपानेको आवासमा पुग्दथ्यौं। त्यस दिन केही पनि गर्न मन लाग्दैनथ्यो। दिनभरिको थकान, घाँमको हिंडाइ, मानसिक पीडा, घरको सम्झना, पढाइको चिन्ता र खाना पकाउने चिन्ताले बेलुकीको खानासमेत नखाई त्यसै सुतिन्थ्यो। केटाकेटी अवस्था बिहानै घर छाडेर हिंड्ने भनेपछि मन नलागी नलागी अलिकति खाएको खाना अनि त्यत्रो बाटो हिंडाइ र थकाइले खाना पकाउन मन लाग्दैनथ्यो, त्यसको मुख्य कारण भोक थियो। कति खेर उज्यालो होला

✍ उपप्राध्यापक, शारदा क्याम्पस, महेन्द्रनगर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र खाना पकाएर खाने भन्दै पर्खनुपर्दथ्यो। बिहान हुनेबित्तिकै पकाएर खान पनि कहाँ पाइन्थ्यो र ? नित्यकर्म सकेर केही समय स्वाध्ययन गरी निश्चित समयमा मात्र खाना पकाउन मिल्थ्यो।

बिहानको आठ बजेपछि क्रमशः विद्यार्थीहरू नाङ्लाका पर्खाइमा बसेका देखिन्थे। आफ्नो पालो सम्झँदै माटाका चुलामा दहीझोडा जङ्गलबाट सहुलियतमा ल्याएका बाङ्गा मुढा, सार्वजनिक भुत्ते बन्चरो, ९-१० वर्षको उमेर, के चिर्न सकिन्थ्यो र ? केही दाउराका चोइटा ल्याएर भात पकाउन सुरु गर्दथे। चिसा दाउरा चुइँय गर्दथ्यो, फुक्दा फुक्दा भनन रिंगटा चल्दथ्यो र धुवाँ बेजोडले आई झ्याप्प आगो बल्दा मनमा आनन्द आउँथ्यो र ठूलै युद्ध जितेको आभास हुन्थ्यो। अब भात पाक्ने भयो, खाना खान पाइने भयो भनी एक प्रकारको आनन्द आउँथ्यो। अनि कुनै साथीसँग गुन्द्रुक र फाँडो मागेर ल्याई खाएको स्वाद अहिले पनि ताजै छ। साँच्चै नै भोक मिठो कि भोजन मिठो भन्ने उक्ति चरितार्थ हुन्थ्यो। अनि आफ्ना पालामा माझेका भाँडाको पिंध जति माझे पनि नजाने, डढेको कालो कराई नारी दुख्ने गरी मस्काएर राखिन्थ्यो। रमाइलो कुरा त अर्को साथी आएर कहीं कतै कालो छ कि ? भित्र कतै भातका सिता छन् कि भनी परीक्षण गर्दथे। आहा ! त्यो समय पनि एक प्रकारको रमाइलो नै मान्नु पर्दछ।

केही रमाइला पलमध्ये आफ्नो भात पकाउने पालाको स्मरण आउँछ। आफ्ना पालामा जना गनेर साना टोक्रीले एक एक टोक्री चामल हाल्ने गर्दथ्यौं। आफ्नो चामल बच्छ भनी केही कम पनि लगाइन्थ्यो। परिणामस्वरूप कहिलेकाहिँ खाना कम हुन गई आफूले नै कम खानुपर्दथ्यो। प्रत्येक एकादशीका दिन मकैका चामल वा मकै भए त ठिकै छ नत्र व्रत नै हुने गर्दथ्यो। कहींकतै पहाडे साथीहरूले खाएर बचेका मकैका ठेट्ना पाए स्वाद मानी मानी खाने गरिन्थ्यो। खुसीको कुरा द्वादशीका दिन बिहान गुरु विष्णुभक्त भण्डारीज्यूले विद्यार्थी गनेर चामल दिनुहुन्थ्यो। अघिल्ला दिनको व्रत, भोलिपल्टको ब्राह्मण भोजनको रासन, रमाइलो नै हुने गर्दथ्यो। अझ कहिलेकाहीं त गाउँबाट मोही ल्याएर आनन्दपूर्वक भोजन गरिन्थ्यो।

आहा ! बाल्यकाल पनि कति रमाइलो हुँदो रहेछ। कस्ता कस्ता क्रियाकलाप हुँदा रहेछन् ? त्यस समयमा मूल्याङ्कन गर्न सकिएन। आजभोलि ५० वर्ष कटेपछि त्यो समय सम्झिएर चुकचुकाउनुबाहेक के नै पो रहन्छ र ? ११-१२ वर्षको उमेर हुँदो हो समवयस्क साथी सोमनाथ तिम्सिनासँग धेरै घनिष्ट सम्बन्ध गाँसिएको थियो। यतिसम्म कि हामीमध्ये एकलाई कसैले केही भनेमा त्यसमाथि जाइलाग्दथ्यौं। सबै साथीभाइहरू सोमु र हरि भन्दथे। यो कुरा घरनजिक भएकाले उनका परिवारलाई समेत थाहा थियो। सोमु साँच्चै नै सरल, मिजासिला स्वभावका थिए र हालसम्म पनि छन्। यस्ता घनिष्ट मित्रसँग अचानक झगडा भयो, हामीबीच बोलचाल बन्द भयो। साथीहरूले अझ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगोमा घिउ थप्ने काम गरे, त्यति खेरको परिवेश पनि त्यस्तै थियो, सानो कुरा पाए भने बढाइ-चढाइ गरेर झगडा गराउने।

हामीबीच झन्डै छ महिना जति बोलचाल बन्द भयो। हितैषी साथीका बीचमा झगडा भएर बोलचाल बन्द हुँदा बोल्न सुरु गर्न पनि कठिन हुँदो रहेछ। केही महिनापछि एउटा नयाँ कार्यक्रम आयो। प्रत्येक घरका लागि एकएक पण्डितद्वारा रुद्राभिषेक गरी यजमानले घरमा भोजन गर्न लैजाने। जसमा म सोमनाथकै घरमा परें या जानीबुझी अग्रज साथीहरू छन्दुराम भण्डारी, गोविन्द पौड्याल, डिल्लीराम गौतम आदिले मिलाएको हुनुपर्दछ। एक दिनको कुरा हो रुद्राभिषेक गरिसकेपछि मेरा छेउमा आएर अर्कापट्टि फर्किएर सोमुले खाना खान जानू अरे भने। म सुनेर पनि नसुनेझैं गरी आफ्नै सुरमा बसें। फेरि त्यही वाक्य दोहोर्याए। हामी दुवै जना नबोली उनका घरमा गयौं। मिजासिला स्वभावका उनका बुबाआमाले राम्ररी ब्राह्मण भोजन गराई मलाई बिदा गर्नुभयो। म पनि मिठो भोजन र दक्षिणा पाएर खुसी हुँदै फर्किएर आई करविरका रुखमुनि बसेर पढ्न सुरु गरें। त्यसको दुईचार दिनपछि देखि हामीबीच बोलीचाली सुरु भयो। नयाँ दुलाहा-दुलहीझैं हामी लजाउँदै बोल्न थाल्यौं।

पुस-माघको महिना जाडाको कुरै नगरौं, लामो काठ र माटाले बनेको घर भुइँमा लगाएको ओछ्यान, पातलो डल्ला परेको सिरक, रात बिताउन निकै कठिन पर्दथ्यो। बिहान ४ बजे उठेर च्यवनलाल अग्रवालले बनाइदिएको इनारमा गई पूर्ण स्नान गर्नुपर्दथ्यो ननुहाई आएको शङ्का लागेमा लँगौटी र कन्दनीसमेत जाँच्ने काम हुन्थ्यो। कहिलेकाहीं त त्यसै लगौंटी भिजाएर पनि काम चलाउन थालियो, तर डर भने धेरै हुन्थ्यो। यस्ता कडा नियममा बसी विद्यार्थी जीवन बिताइएको थियो।

धेरैवटा रमाइला रोचक कुरामध्ये एउटा रमाइलो र रोमाञ्चक कुरा गुहाबारीबाट गौतम गुरुजी, साधुटारबाट बडीबा केदारनाथ खतिवडा र उत्तरकाशीबाट शान्ति महाराज आउँदा धेरै सजग रहनुपर्दथ्यो। उहाँहरूका अगाडि पर्यो भने जे पनि सोध्न सक्नुहुन्छ भनेर तर्कनुपर्दथ्यो। आहा ! सम्बन्ध भन्ने कुरा पनि कति प्रभावशाली हुँदो रहेछ, मलाई त्यति डर लाग्दैनथ्यो। किनभने मेरा जेठा बडीबा केदारनाथ खतिवडा र शान्ति महाराज मेरी आमाका जेठा मामा। उहाँहरूले सबै विद्यार्थीहरूका अगाडि 'हरि, के छ खबर?' भन्दा म आफूलाई ठूलो शक्तिशाली र गौरवान्वित सम्झन्थें। एक दिन त मलाई र मेरा सहपाठी धर्मानन्द ओझालाई बडीबाले रुद्रीको पहिलो अध्याय १० पटक पढ्न लगाएर १-१ रूपैयाँ दिनुभयो। यसलाई मैले विद्यार्थी कालको सबैभन्दा उपलब्धिमूलक कुरा ठानेको छु। समय क्रम व्यतीत हुँदै जाँदा चण्डी, रुद्री र केही मात्रामा वेद अध्ययन गरी म आफ्नो गाउँको विद्यालय साधुटारमा पढ्न गएँ। मलाई एकातर्फ आफ्ना घरनजिकका विद्यालयमा पढ्न जाँदा खुसी लागेको थियो भने अर्कातर्फ आफ्ना साथीभाइ छाडेर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानुपर्दा नरमाइलो पनि। तर बढी मात्रामा भने म खुसी नै भएको थिएँ।

समय गतिशील भएझैं जीवनमा पनि केही परिवर्तन हुँदै गयो। अब घरनजिकैको विद्यालयमा पढ्न थालें। केही वर्षपछि हामी (कर्णाखर खतिवडा, शिव रेग्मी र म) १३-१४ वर्षको उमेरमा भागेर हरिद्वार गयौं। त्यहाँ पनि चारपाने विद्यालयले ठूलो गुन लगाएको छ। खाली खुट्टा, हाप पेन्ट र सर्टमात्र एकसरो लुगामा त्यहाँ पुगेर आश्रम खोज्दा धेरै दुःखको सामना गर्नुपर्यो। अन्त्यमा संस्कृत पढेको छ भन्दै ॐ नमो नारायणाय भनेर २-४ श्लोक शिवमहिम्नःस्तोत्र र रुद्रीका मन्त्र सुनाउँदा खुसी भएर महन्तद्वारा आश्रममा बस्ने व्यवस्था मिलाइयो। त्यसपछि ठूलाठूला सेठ आउँदा अगाडि बोलाएर वेदका मन्त्रहरू सारस्वरसहित भन्न लगाउन थालियो। साना अनाथझैं लाग्ने नेपाली बालकद्वारा मिठो स्वरमा वेदमन्त्र पढेको सुन्दा खुसी भएर सेठहरूले पैसा दिन थाले। यही विद्यालयका जगले पूर्वमध्यमा, उत्तरमध्यमा र शास्त्री पढ्नमा ठूलो सहयोग पुग्यो। साथै एमए, एमएड तह पढ्न र कवितावाचन, कथावाचन तथा शिक्षण कार्यकलापमा समेत यसले ठूलो सहयोग पुर्यायो।

वर्तमान समयमा संयोगले नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयमा उपप्राध्यापक पदमा नेपाली विषय अध्यापन गराइरहेको छु। नेपाली र संस्कृत विषयमा नजिकको सम्बन्ध रहेको पाइन्छ। स्नातक र स्नातकोत्तर तहका विभिन्न विषयका विभिन्न विधामा संस्कृतका परिभाषाहरूको सहारा लिनुपर्ने हुन्छ। जसले गर्दा मलाई अध्यापन गराउन ठूलो सहयोग पुगेको छ। मलाई जीवन जिउन, अनुशासनमा रहन, परिश्रम गर्न, आशावादी बन्न, सहयोगी भावनाको विकास गर्न, आस्तिक भावनाका साथ जीवन यापन गर्न, दक्ष शिक्षकका रूपमा स्थापित हुन, शाकाहारी जीवन बाँच्न, कठोर परिश्रम गर्न, सामाजिक मूल्य र मान्यतामा आधारित भई अगाडि बढ्न, साथीभाइहरूसँग मित्रताको हात अगाडि बढाउन र सात्त्विक जीवन बिताउनलगायतका धेरै कुराहरूको प्रेरणा र शिक्षा दिएको छ। त्यसैले म आफूलाई बाल्यकालमा उचित शिक्षा दिएर आधारशिला तयार पारिदिने विद्यालयलाई कहिल्यै भुल्दिन र भुल्नु हुँदैन भन्ने मान्यता राख्दछु।

विगतमा सानो र जीर्ण झुपडीका रूपमा रहेको विद्यालय, बोराले बेरेर बनाएको शौचालय, पानी भित्र छिर्ने बाँसका सिटा र काँसलाई माटाले लिपेर बनाएको भान्साघर अनि वर्तमान अवस्थामा रहेको बहुतले शैक्षणिक भवन, २-३ तले छात्राबास भवन, विशाल आकारको हेरिरहुँ जस्तो मन्दिर, नमुना धार्मिक हल आदि अवलोकन गर्दा मन हर्षविभोर हुन्छ, छाती चौडा हुन पुग्दछ। यस संस्थामा अध्ययन गरेका विद्यार्थीहरूले राम्रो प्रगति गरेको सुन्दा छाती गर्वले फुल्दछ, मन प्रफुल्ल हुन्छ। जम्मा २-३ वर्ष मात्र यस विद्यालयमा पढेको मलाई त यति आनन्दानुभूति हुन्छ भने जसले यस विद्यालयका लागि जीवन सुम्पिए, जसले छिमेकी भएर हरेक दुःख-सुखमा साथ दिए,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्यालयको उन्नतिमा तन, मन, धन र वचनले सहयोग गरे, ती शुभचिन्तकहरूलाई कस्तो लाग्ला ? धन्य छन् दुध, दही, मोही, अन्न, पुष्प आदि प्रदान गरेर पुण्यवान् बनेका चारपानेबासीहरू। धन्य छन् ती अभिभावकहरू जसले आफ्ना सन्ततिलाई सो संस्थामा पढ्न पठाई सहयोग गरे।

अन्त्यमा, विद्यालयका मालीका रूपमा रहेका संरक्षक, विगत र वर्तमानका सम्पूर्ण पदाधिकारीज्यूहरू, हालसम्म अध्ययन गरी जीवन सार्थक बनाउन सफल विद्यार्थी साथीहरू सबैप्रति नमन गर्दछु। समयसापेक्ष वायुयानबाट पुष्पवृष्टि गराउँदै स्वर्ण जयन्ती मनाउने कार्यमा विशेष भूमिका निभाउनुहुने आश्रमका अध्यक्ष व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतमज्यू, विद्यालय व्यवस्थापन समितिका अध्यक्ष छन्दुराम भण्डारीज्यूलगायत सम्पूर्ण पदाधिकारीज्यूहरूलाई विशेष धन्यवाद दिँदै शतत नमन गर्दछु।

धन्य ! साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय धन्य ! विवेकाश्रम चारपाने !

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सार्थक शिक्षाको अनुभूति

सन्तोष न्यौपाने

श्रीविवेकाश्रम साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयमा २०५३ सालमा विद्यार्थीका रूपमा मेरो प्रवेश भएको हो। मेरी आमाले यहाँ भर्ना गरिदिनुभएको हो। त्यहींबाट मेरो जीवनमा नयाँ अध्यायहरू सुरु भए। वैदिक आचरणमा रहेर गुरुकुलीय परम्पराबाट अध्ययन प्रारम्भ भयो। ब्रह्ममुहूर्तमा उठ्ने, स्नानादि कर्म सकी सन्ध्योपासन, यज्ञशालामा हवन, विष्णुपाञ्चायन पूजन षोडशी, पुरुषसूक्त पाठसँगै बिहानीको नित्यकर्म सकिन्थ्यो। त्यसपछि स्वाध्यायको समय रहन्थ्यो, प्रायः बिहानको ८:३० बजे चामल थाप्ने घन्टी बज्थ्यो। ट्वाकका हिसाबले 'बटुको' चामल पाइन्थ्यो अनि भोजन तयार गरी भोजन गरिसकेर वर्तन सफा गरी ९:४५ बजे विद्यालयको घन्टी बज्थ्यो। दिनभरि गुरुहरूबाट पाएको पाठ पढिसकेर बेलुकीको भोजन सूर्यास्तअगावै गर्ने नियम थियो। साँझ परेपछि पुनः सन्ध्योपासना गरी एकै स्वरमा ३०-४० जनाले शिवमहिम्नः स्तोत्र पाठ गर्दा आनन्द लाग्थ्यो।

अहिलेको बोर्डिङ स्कुलको स्वार्थी शिक्षाका तुलनामा हामीले पाएको गुरुकुलीय शिक्षा अग्रस्थानमा रहेको अनुभूति भइरहेको छ। विवेकानन्द गिरी महाराजको सत्सङ्कल्पमा स्थापना भएको विवेकाश्रमबाट र गुरुजनहरूबाट पाएको शिक्षाले नै आज म यस अवस्थामा छु। छात्रावासमा रहँदा भोजनको अत्यन्त महत्त्व हुन्थ्यो।

नुन, भुटुन, सब्जी, दाउरा सबैको जोहो आफैं गर्नुपर्दथ्यो। आश्रमबाट चामल पाइन्थ्यो। विद्यालय वरिपरिका गाउँबाट विद्यार्थीलाई अत्यन्त स्नेह गरिन्थ्यो। गाउँमा मोही पारेको थाहा पाएपछि जग, भाँडा बोकेर मोही मागन जानेको लर्को नै हुन्थ्यो। साँच्चै अमृत समान लाग्थ्यो मोही। त्यो बेला मेरो उमेर १० वर्षको थियो। अभाव, प्रभाव र दबावसँग राम्रैसँग भलाकुसारी गर्न जान्दथें, सायद गुरुकुलीय आचरणले सिकाएको थियो। खाने र लाउने कुरामा धेरै विद्यार्थीलाई अपुग थियो, अभावैचाहिँ थिएन। आधा पेट र खाली पेटसँगै बितेका केही दिनहरू सम्झँदा नरमाइलो लागे पनि आज संस्कार र

वेदाचार्य, मेचीनगर ७ झापा, हाल भक्तपुर, बालकोट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृतिसँगै सार्थक शिक्षा पाएको अनुभूति हुन्छ।

थोरै दुःख, थोरै सुख, थोरै खुसी जम्मा हुँदै अध्ययनको क्रम अगाडि बढ्दै गयो। भण्डाराका दिन, ब्राह्मणभोजनमा जान पाउँदा खुसी लाग्थ्यो। जगन्नाथ भण्डारी गुरुले रुद्रीपाठमा जाने ११ ब्राह्मणको लिस्ट बनाउँदा लिस्टमा आफ्नो नाम परेको दिनको खुसीको त सीमा नै रहन्नथ्यो। मिष्ठान्न भोजन र दक्षिणाले नयाँ रौनक प्रदान गर्दथ्यो। दहीझोडाबाट दाउरा ल्याउनु, पुराना मोजाको भकुन्डो बनाएर खेल्नु, करवीरका दानाहरूको पास खेल्नु, विद्यार्थीहरूको मनोरञ्जनको साधन थियो।

श्री १०८ विवेकानन्द पुरी महाराज, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी गुरु, टेकनाथ गौतम गुरु आदि ब्रह्मनिष्ठ गुरुहरू र अन्य गुरुहरूको आशीर्वाद र मार्ग निर्देशन अनि गुरुकुलीय अध्ययन अगाडि बढ्दै जाँदा कहिले पूर्वमध्यमासम्म पुगियो, थाहै नपाई छात्राबासबाट बिदा हुने दिन आइपुगेछन्। तर विद्यालयप्रतिको अगाध स्नेहका कारण बिदा हुने चाहना नहुँदा नहुँदै पनि उच्चशिक्षा हासिल गर्नका लागि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, वाल्मीकि विद्यापीठ काठमाडौं आइपुगियो। अध्ययनका क्रममा शुक्ल यजुर्वेद विषयमा आचार्य तहसम्म अध्ययन गरियो। २४ तत्त्वको शरीर मनुष्य जन्मको उद्देश्यका बारेमा चिन्तन मननसहित भगवत्सेवामा दिनहरू बितिरहेका छन्।

आजसम्म प्राप्त भएको सदाचरण, सत्मार्ग र सत्त्वज्ञानको जगका रूपमा रहेको विवेकाश्रम, वैदिक वाङ्मयको उत्थानका लागि संस्कार र शिक्षाको माध्यमबाट समाज, राष्ट्र र विश्वलाई पूर्वीय दर्शनको महत्त्व चिनाउने ऊर्जावान् व्यक्तित्वहरूको उद्गम स्थलका रूपमा ऊर्ध्वगति सधैं बनिरहोस्।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँचथरका केही धार्मिक क्षेत्र र व्यक्तित्वहरू

✍ दिलीपकुमार सङ्ग्रौला

यस लेखमा पाँचथर जिल्लामा रहेको धार्मिक पर्यटकीय क्षेत्र जोरपोखरी र आगेजुङको चिनारीका साथै पाँचथरमा जन्मिएर आध्यात्मिक क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण योगदान गर्नुहुने व्यक्तित्वहरूको सामान्य चिनारी प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरिएको छ।

जोरपोखरी

नेपालको प्रदेश नं १ मा पर्ने पाँचथर जिल्लाको उत्तरपूर्वी पहाडको उच्च भूभागमा रहेको ठाउँ हो जोरपोखरी। पर्यटकीय र धार्मिक क्षेत्र जोरपोखरी नेपालकै प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटकीय स्थलहरूमध्ये एक हो। यस क्षेत्रमा दुईवटा पोखरीहरू रहेका छन्। गोलाकार पोखरीलाई सिद्धपोखरी र लाम्चो पोखरीलाई देवीपोखरी नामकरण गरिएका यी प्रसिद्ध पोखरीहरू हुन्।

पोखरीभन्दा माथि डाँडामा रमाइला ठाउँहरू छन्। यस ठाउँका वरिपरि खुँगा, एकतीन, भारपा, सुभाङ, गोपेटार, अमरपुर, सिदिन आदि ठाउँहरू रहेका छन्। उक्त ठाउँमा लिम्बू, राई, ब्राह्मण, क्षेत्री, मगर, गुरुङ कामी, दमाईं, सार्की आदि जातिको बसोबास रहेको छ। स्वर्गद्वारी आश्रम प्युठानबाट वि.सं. १९८४ मा स्वामी कपिलानन्द पाँचथरको जोरपोखरीको डाँडामा आउनु भई चार महिनासम्म लक्षहवन महायज्ञ गराएर जानुभएपछि सिद्धस्थलका रूपमा यो ठाउँ चिनिन थालेको हो। विक्रम संवत् १९८७ मा सुभाङ निवासी चन्द्रप्रसाद सङ्ग्रौला (जन्तरे मुखिया) ले स्थापना गरेको शिवालय मन्दिर नेपालको एक ऐतिहासिक र पुरानो मन्दिर हो। उक्त मन्दिरको स्थापनाकालमा हर्कबहादुर लिम्बूले सो मन्दिरलाई आवश्यक जग्गा उपलब्ध गराउनुभएको तर मठमन्दिर स्थापना गर्न निःशुल्क जग्गा लिन नहुने हुँदा त्यस बेलाको कम्पनी रूपैयाँ १० दिएर मन्दिर निर्माण गरी जग्गा मन्दिरका नाममा उपभोग गरेको प्रमाण पाइन्छ। त्यस ताकाको जग्गा खरिद गर्दा छिन्ती राजिनामाको चलन थिएन। सुब्बाहरूको किपट व्यवस्था हुँदा सोहीअनुरूप लेनदेन गरिन्थ्यो।

✍ *शिक्षासेवी, लखनपुर, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यी दुई पोखरी अतिसुन्दर नीलो पानीले भरिएका हुन्थे। पोखरीहरू सधैं सफा हुन्थे। यहाँ झरेका फोहोर, पातपतिङ्गर चराहरूले उठाएर लैजान्थे भन्ने त्यहाँका पाका मानिसहरू अहिले पनि बताउँछन्। उक्त शिवालय मन्दिरमा पूजापाठ गर्ने पुजारीलाई खानपिनको व्यवस्था चन्द्रप्रसाद सङ्ग्रौला (जन्तरे मुखिया) ले गर्नुभएको र हालसम्म पनि पूजापाठका लागि उहाँकै सन्ततिहरूले सहयोग गरिरहेका छन्। उक्त धार्मिक स्थल हाल पाँचथर जिल्लाको हिलिहाङ गाउँपालिका वडा नं ६ मा पर्छ। उक्त रमणीय देवस्थलमा पहिले-पहिले धेरै साधुसन्तहरू आउने गर्थे। उहाँहरूबाट भएका कामहरू अलौकिक र आश्चर्यजनक थिए, जसलाई अहिलेका मानिसहरूले विश्वास गर्नसमेत कठिन हुन्छ। सो ठाउँमा मन्दिर स्थापना गरी धार्मिक स्थलका रूपमा स्थापित गराउन चन्द्रप्रसाद सङ्ग्रौलालाई प्रेरित गर्ने काममा गुरुहरू स्वामी कपिलानन्द, ब्रह्माभ्यासानन्द र पण्डित यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) ले गर्नुभएको थियो।

प्रत्येक वर्ष बालाचतुर्दशीका दिन यस ठाउँमा ठूलो मेला लाग्छ। पोखरी र मन्दिरका वरिपरि धेरै मानिसहरूले सद्बीज छर्दछन्। भक्तजनहरू भेला भएर भजन-कीर्तन गर्दछन्। उक्त स्थाननजिकै चतुर्दशीको दिन बजार लाग्ने गर्दछ। त्यसैले यो बजार चतुरे बजार भनेर चिनिएको छ। यस बजारमा चारैतिरका व्यापारीहरू र अन्य सामान खरिद गर्ने मानिसहरूको बाक्लो उपस्थिति हुन्थ्यो। लिम्बू जातिका मानिसहरूको संस्कृति, रीतिरिवाज र परम्पराअनुसार रातभरि च्याब्रुङ नाच नाचेर रात बिताउँथे। तरुनी-तन्नेरीहरू रमाइलो गर्दथे तर त्यो अनुशासित र पवित्र हुन्थ्यो। तामाङ जातिका मानिसहरूसमेत उपस्थित भएर डम्फू नाच नाच्दै रात बिताउँथे र रमाइलो गर्थे। याङबरक गाउँपालिकाको थर्पु भन्ने ठाउँमा नेपालीहरूको ठूलो चाड दशैं मनाउँदा लिम्बू जातिको निसान मौलोमा पूजाआजा गरी राँगा बलि दिने र पूजाआजा गर्ने चलन हालसम्म पनि कायम छ।

आगेजुङ

जोरपोखरीभन्दा करिब चार किलोमिटर माथि रहेको, घना वनजङ्गलले भरिएको लेकाली उच्च भूभागलाई आगेजुङ भनिन्छ। यस ठाउँमा प्राचीन कालमा सप्तर्षिहरूले तपस्या र यज्ञ गरेको ठाउँ हो भन्ने जनश्रुति पाइन्छ। यहाँ बाघभालु बस्ने ठुल्ठुला भ्वाङ रहेका छन्। बाघभालु लाग्ने घना जङ्गलका बीचमा तिनै देवीथानका ओडार (भ्वाङ) मा एक्लै बसेर घरगृहस्थी त्याग गरेका जटाधारी सन्त ब्रह्मचारी देवीप्रसाद पौडेल (माहिला गुरु) ले २०१२ सालदेखि बाह्र वर्षसम्म तपस्या गर्नुभयो र यज्ञहरू गराउनुभयो। उहाँले यस ठाउँलाई सिद्धस्थल भुवनेश्वरी शक्तिपीठ तेजपुञ्जका नामले परिचित गराउनुभएपछि यो ठाउँ सबैका लागि दर्शनीय स्थल बन्न पुगेको हो। यस ठाउँबाट पाँचथर, ताप्लेजुङका सबै पर्वतमाला र कुम्भकर्ण हिमशृङ्खलाहरू राम्ररी अवलोकन गर्न सकिन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क. धार्मिक तथा शैक्षिक व्यक्तित्वहरू

१.ब्रह्माभ्यासानन्द गुरु

पाँचथरको गोपेटार क्षेत्रमा ओझा वंशमा जन्मिएका सन्त हुनुहुन्थ्यो ब्रह्माभ्यासानन्द। बालक कालमै स्वर्गद्वारीमा पुगेर अध्ययन गरेका र योगसिद्धि प्राप्त गरी प्रभुमहाराजकै आज्ञानुसार वैदिक सनातन धर्मको रक्षाका खातिर जोरपोखरी क्षेत्रमा आएर वि.सं. १९८७ देखि दस वर्षसम्म बसेर न्यास, ध्यान, योग र वैदिक शिक्षा प्रदान गर्नमा उहाँ समर्पित हुनुभयो। उहाँ त्रिकालदर्शी सिद्धपुरुष हुनुहुन्थ्यो। सुभाङ गुरु, स्वामी योगानन्द, विवेकानन्दहरूले उहाँसँगै वेदान्त शास्त्रको शिक्षा लिनुभएको हो भन्ने कुरा मेरा बुबा चन्द्रप्रसाद सङ्ग्रौला बताउनुहुन्थ्यो। जोरपोखरी क्षेत्रलाई तपस्थल र सिद्धस्थलका रूपमा चिनाउने काममा उहाँको ठूलो योगदान रहेको छ।

२. पण्डित यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु)

पाँचथर सुभाङमा वि.सं. १९४४ मा रेग्मी परिवारमा जन्म लिएर पूर्वीय वाङ्मय र संस्कृत व्याकरणको विशद अध्ययन गरेका पौराणिक शास्त्रको कुशल व्याख्याताका रूपमा चिनिनुभएको हो यज्ञनिधि रेग्मी गुरु। उहाँमा पौराणिक शास्त्रसम्बन्धी तर्कपूर्ण विश्लेषण गर्ने क्षमता उच्च थियो। उहाँ समुन्नत समाज निर्माणका लागि पूर्वीय पौराणिक विज्ञान र पाश्चात्य आधुनिक विज्ञानलाई एकैसाथ लिएर जानु आवश्यक छ भन्ने विचार राख्नुहुन्थ्यो। २०१५ सालमा सुभाङको मुक्तुरा भन्ने ठाउँमा सिद्धेश्वरी प्राथमिक विद्यालय स्थापना गर्नमा उहाँले खेल्नुभएको नेतृत्वदायी भूमिका प्रशंसनीय छ। हाल उक्त विद्यालय नीलगिरि मध्यमिक विद्यालयका नामले सञ्चालित छ। स्वघोषित तिथिमितिका दिन २०१५ सालमा भक्तजनहरूका माझमा देहत्याग गरी उहाँ ब्रह्मलीन हुनुभयो।

३. श्री १०८ स्वामी योगेश्वराश्रम (जेठा गुरु- योगानन्द)

जोरपोखरीको कुटीमा विद्यार्थीहरूलाई वेद पढाउँदै र ध्यान गर्दै बस्ने जेठा गुरु योगानन्द (हरिदत्त पौडेल) विक्रम संवत् १९६० मङ्सिर शुक्ल पूर्णिमाका दिन पाँचथरको मच्छेबुङमा जन्मिनुभएको हो। मेरा बुबाकै दौंतरीझैं देखिने उहाँ गृहस्थी जीवन त्याग गरेर तपस्यामा लाग्नुभएको थियो। उहाँ सुभाङ गुरुसँग वेदान्तको अध्ययन गर्न मच्छेबुङबाट सुभाङ आउनुहुन्थ्यो। स्वर्गद्वारी प्रभुमहाराजसँग योग, ध्यान र वेद अध्ययन गरी विक्रम संवत् १९८७ सालदेखि जोरपोखरीलाई मुख्य आश्रयस्थल बनाई यज्ञअनुष्ठानहरू गराउँदै र वेद आदिको पठनपाठन गराउँदै विक्रम संवत् २०२० सालसम्म सो स्थानमा रहनुभयो। सन्न्यास ग्रहणपश्चात् उत्तराखण्डको उत्तरकाशीमा विक्रम संवत् २०३० साल माघ महिनामा समाधि भई ब्रह्मलीन हुनुभयो। उहाँले पाँचथर जोरपोखरी आश्रममा रहँदा गुरुकुलीय संस्कृत शिक्षाको प्रवर्धन गर्नमा र अनुशासित,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धार्मिक समाज निर्माण गर्नमा ठूलो योगदान दिनुभयो।

४. श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द (माहिला गुरु)

विक्रम संवत् १९६२ सालमा पाँचथरको मच्छेबुङमा जन्मनुभएको हो माहिला गुरु देवीप्रसाद पौडेल। उहाँ पं. हेमलाल पौडेल र धनमाया पौडेलका माइला छोरा हुनुहुन्थ्यो। उहाँ वेद पठनपाठनमा तेजिला हुनुहुन्थ्यो। पाँचथरका विभिन्न गुफाहरूमा तपस्या गर्ने क्रममा पाँचथरको आगेजुङवरपरका विभिन्न ठाउँमा अनौठा घटनाहरू घट्ने, बाघ कराउने, आगोको मुस्लो देखिने गर्न थालेपछि त्यहाँका समुदायहरूले चिन्ता व्यक्त गरे।

माहिला गुरुले २०१२ सालमा त्यस ठाउँमा विभिन्न अनुसन्धान गरी त्यहाँ भुवनेश्वरी शक्तिपीठ रहेको कुरा पत्ता लगाई केही समयसम्म पूजापाठ गरेपश्चात् सो स्थानमा शान्ति स्थापना भई त्यो आगेजुङ तेजपुञ्ज रमणीय तीर्थस्थल र देवस्थलका रूपमा परिणत भयो। सो कार्यमा खुँगाका वकिलप्रसाद जबेगु, पदमप्रसाद जबेगु, नारद खतिवडा, माधव अधिकारी, खाल्डेका पौडेलहरू, रघुनाथ न्यौपाने, मैनाली परिवार र लिङ्देन परिवारबाट समेत गुरुआश्रममा सहयोग प्राप्त भएको थियो। पछिल्लो चरणमा सो स्थान पाँचथर जिल्लाकै धार्मिक पर्यटकीय क्षेत्रको रूपमा स्थापित भएको छ। सो हुनुमा यस आश्रमका नजिकै हालै बनेका रमणीय बौद्ध गुम्बाहरूले समेत पर्यटकहरूको मन बढी आकर्षण गरेको देखिन्छ। गुरुका शिष्यहरू र पण्डित-पुरोहितहरू कार्यक्रमको आयोजना हुँदा मात्रै त्यस ठाउँमा जाने र स्थानीय ब्राह्मण-क्षेत्री समुदायहरूले चासो नदिने हो भने सो ठाउँको परिचय भोलिका दिनमा इतिहासका पानामा मात्रै नरहला भन्न सकिन्न। सो स्थानबाट धेरै ठाउँहरू अवलोकन गर्न सकिन्छ।

बाघभालु लाग्ने वनमा उहाँ एक्लै महिनौं दिनसम्म तपस्या गरेर बस्नुहुन्थ्यो। पाइतालासम्म जटा भएका देवीप्रसाद ब्रह्मचारी सिद्धपुरुष हुनुहुन्थ्यो। उहाँको अलौकक दिव्यशक्तिका अगाडि सबै झुक्दथे। पाँचथरमा रहँदा उहाँले ठाउँ-ठाउँमा यज्ञ-अनुष्ठानहरू गराउनुभयो। गुरुकुल पाठशालाहरू सञ्चालन गराएर ग्रामीण नरनारीहरूलाई साक्षर बनाएर शिक्षाको क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण योगदान दिनुभयो। उहाँले समाजलाई पढ्नुपर्छ भन्ने चेतना दिनुभयो। केही समय आसाम गएर बसी २०२८ सालमा झापाको चारपानेमा विवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय स्थापना गर्नुभयो। वैदिक सनातन धर्मको आस्थाका धरोहरका रूपमा यो आश्रम र विद्यालय परिचित छन्। विक्रम संवत् २०१२ सालदेखि घरबार त्यागी विश्व कल्याणका लागि गुरुकुल शिक्षा, सदाचार शिक्षा, न्यास ध्यान र यज्ञको प्रचार-प्रसारमा लाग्नुभयो। विक्रम संवत् २०२४ सालमा सन्न्यास धारण गर्नुभयो। पछिल्लो चरणमा भारतको उत्तराखण्ड उत्तरकाशीमा ध्यानमग्न भई २०३० भाद्र महिनामा ब्रह्मलीन हुनुभयो। उहाँ त्रिकालदर्शी , शिक्षासेवी, परमार्थीचिन्तक र आध्यात्मिक युगपुरुष हुनुहुन्थ्यो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. पं. टेकनाथ गौतम गुरु

पण्डित यज्ञनिधि रेग्मीको देहावसानपछि धार्मिक र बौद्धिक क्षेत्रमा पाँचथरमा टेकनाथ गौतम गुरु उदीयमान हुनुभएको हो। मैले जान्दा उहाँको वासस्थान पाँचथरको अखौंले भन्ने ठाउँमा थियो। उहाँले आफ्नै घरमा निजी संस्कृत विद्यालय स्थापना गरेर धेरै विद्वानहरू उत्पादन गर्नुभयो जुन विद्यार्थीहरू अहिले पनि समाजमा सम्मानित भइरहेका छन्। जोरपोखरीमा चल्दै गरेको गुरुकुललाई समेत व्यवस्थित गरी उहाँले संस्कृत भाषामा दिनुभएको ज्ञान अतुलनीय छ। २०१५ सालमा स्थापना भएको पाँचथर ओराङफुङको सरस्वती मिडिल स्कुलमा संस्कृत र नेपाली विषयको शिक्षक भई २०३० सालसम्म शिक्षण कार्य गर्नुभयो।

आफ्नो जीवनकालमा धेरै आरोह अवरोह व्यहोरेर आर्जन गर्नुभएको बौद्धिकता र संस्कृत शिक्षाप्रतिको उहाँको लगाव प्रशंसनीय छ। आफूले प्राप्त गरेको ज्ञान प्रदान गर्नमा उहाँले आफूलाई जहिल्यै सरिक गराउनुभयो। सुखमा नमात्तिने र दुःखमा नआत्तिने धैर्यशाली पुरुषको रूपमा उहाँले आफूलाई प्रस्तुत गर्नुभयो। विक्रम संवत् २०३२ सालमा तराईतिर झर्ने क्रममा उहाँको बसोबास हालको झापा जिल्ला, कमल गाउँपालिका वडा नम्बर ६ मा हुन पुग्यो। उहाँकै परामर्श र सहयोगमा उहाँबाट समेत शिलान्यास गरिएको सिद्धेश्वर शिवमन्दिर, लखनपुरमा शिक्षा नै सर्वोपरि हो भन्दै गुरुकुल स्थापना गर्नमा पनि प्रेरणा प्रदान गर्नुभयो।

उक्त विद्यालयमा गुरुकुलीय संस्कृत शिक्षाको राम्रो पठनपाठन भइरहेको छ। हाल झापाकै ठूलो धर्मिक स्थल मानिने चारपानेमा वि.सं. २०२८ सालमा माहिला गुरु विवेकानन्दले स्थापना गर्नुभएको साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयमा समेत २०३३ सालदेखि सञ्चालक समितिमा रहेर सहयोग गर्दै आउनुभयो। हालसम्म पनि उहाँका सन्तानहरूले सो ठाउँका मन्दिर तथा विद्यालयमा केही न केही सहयोग पुर्याउँदै आइरहेका छन्। उहाँबाट शिक्षा प्राप्त गरेका विद्यार्थीहरू हाल ख्यातिप्राप्त पण्डितका रूपमा स्थापित भएका छन्। उहाँले २०४० सालतिर आफ्नै घर गोहाबारीमा ३ वर्षसम्म भागवत पाठशाला चलाएर भागवतका व्याख्याता बीस-पच्चिस जना पण्डितहरू तयार पार्नुभयो। ती पण्डितहरूमा लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा, भवानीप्रसाद खतिवडा, इन्दिराज पौडेल, अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, छन्दुराम भण्डारी, भूमिप्रसाद दाहाल, खेमराज खतिवडा, अम्बिकाप्रसाद खतिवडा, ठाकुरप्रसाद पोखेल, भास्कर नेपाल आदि धेरै हुनुहुन्छ।

६. गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी

पाँचथर जिल्ला तत्कालीन सुभाङ हाल हिलिहाङ गाउँपालिका वडा नम्बर ५ मा विक्रम संवत् १९९० साल वैशाख २५ गते पिता जनकलाल रेग्मी तथा माता यशोदादेवी रेग्मीको कोखबाट ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा जन्मिनुभएका पुण्यप्रसाद रेग्मी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाल्य कालदेखि नै न्यास, ध्यान र धर्मकर्ममा लाग्नुभएको थियो। गृहस्थी जीवन नभोगी आध्यात्मिक चिन्तनबाट प्रभावित भई गायत्रीअनुष्ठानको आयोजना गर्दै ब्रह्मचर्य जीवन बिताउने निर्णयअनुरूप आजीवन ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत गरी आफ्ना परिवारहरूप्रति सहानुभूति राख्दै विक्रम संवत् २००८ सालसम्म योगानन्द ब्रह्मचारी र गायत्री भण्डारीको सङ्गतमा जोरपोखरीमा बस्नुभयो। त्यसपछि भारतका विभिन्न तीर्थस्थलहरू घुम्दै प्रसिद्ध तीर्थस्थल बद्रीनाथदेखि माथि हिमालयमा तपस्या गरी ज्ञान आर्जन गर्नुभएको हुँदा आफ्नो पुरानो नाम त्याग गरी गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारीको नामले प्रसिद्ध हुनुभयो। त्यसपछि उत्तरकाशीको गङ्गाकिनारमा केही समय तपस्या गर्नुभयो। काशीमा आएर मुमुक्ष भवनमा बसी वेदान्त विषयको गहिरो अध्ययन गर्नुभयो र आचार्य उपाधि ग्रहण गर्नुभयो। उहाँका गायत्रीमञ्जरी, भगवत्समर्चा, विष्णुसमर्चा, पाञ्चायन पूजा पद्धति जस्ता कृतिहरू प्रकाशित भएका छन्। नेपालका विभिन्न ठाउँहरू घुम्दै त्यहाँको समाजलाई सच्चरित्रता, नैतिकता र आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान गर्दै आफ्नै मातृभूमि नेपालमा विक्रम संवत् २०५९ साल चैत्र ११ गतेका दिन आफ्ना शिष्य नारायणस्वरूप ब्रह्मचारीको आवास दुहबीमा देहत्याग गरी ब्रह्मलीन हुनुभयो। उहाँको जीवनचर्यालाई सुरुदेखि अन्त्यसम्म हेर्दा उहाँ आफैं भगवान्को अवतार हो भन्दा कुनै अत्युक्ति नहोला।

७. माधवप्रसाद भण्डारी (साना गुरु)

पाँचथरको अमरपुर गाउँमा वि.सं.१९६९ मा जन्मिएर यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) सँग र दिङ्ला पाठशालामा उहाँले प्रारम्भिक अध्ययन गर्नुभयो। भारतको बनारस र हरिद्वारका विभिन्न विद्यापीठहरूमा अध्ययन गरी पूर्वीय शास्त्र वेद, व्याकरण र ज्योतिष शास्त्रको विद्वत्ताले खारिएका विद्वानको रूपमा चिनिनुहुन्छ साना गुरु माधवप्रसाद भण्डारी। होचो शारीरिक कद, मिजासिलो स्वभाव र सहयोगी भावना भएका गुरु साना पण्डितका उपनामले बढी चर्चित हुनुभयो। पहाड अमरपुर र झापा सहरेडाँगीमा रहेको आफ्नै घरलाई संस्कृत पाठशाला बनाएर धेरै वर्षसम्म तमाम विद्यार्थीहरूलाई वेद, व्याकरण, ज्योतिष र साहित्यको अध्ययन गराउनुहुने गुरुले शिक्षाको क्षेत्रमा उदाहरणीय विशिष्ट योगदान गर्नुभयो।

८. नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी

वि.सं. १९९८ सालमा पाँचथर मैदानेमा जन्मिएका काजी ढुङ्गेलका छोरा हुन् टीकाराम ढुङ्गेल, अर्थात् नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी। साधारण शिक्षा र उच्च विचार लिएका यिनी २०२२ सालतिर मोरङ. हात्तीमुढा र दुहबीमा बसाइँ सरी आएका हुन्। सभ्यसमाज निर्माण गर्न लागि पर्ने यिनले ४० वर्षको उमेरमै घरगृहस्थी जीवनभोगाइ त्याग गरी ब्रह्मचर्य धारण गरेर गायत्रीस्वरूप गुरुको निकटतम शिष्य बनी गायत्रीमन्त्र जप पुरश्चरणबाट आफूलाई तपोमय बनाउँदै शैक्षिक, धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्रको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्थानमा निरन्तर लागिपर्नुभयो। विनयी, त्यागी, नीडर, सदा हँसमुख, प्रसन्न चित्तमा रहने उहाँ ७० वर्षको नहुँदै ब्रह्मलीन हुनुभयो।

९. किरात गुरु फाल्गुनन्द

किरात गुरु फाल्गुनन्दको जन्म पाँचथर जिल्लाको पौवा सारताप हालको फाल्गुनन्द गाउँपालिकामा भएको हो। वहाँ किरात धर्मका धर्मगुरु हुनुहुन्छ। सम्पूर्ण किरातधर्मीहरूले उहाँलाई ईश्वरकै रूपमा लिने गर्छन्। उहाँलाई अन्य समुदायका मानिसहरूले पनि समाजसुधारक व्यक्तिका रूपमा लिने गरेका छन्।

१०. डा. स्वामी प्रपन्नाचार्य

उहाँको जन्म पाँचथर फिदिम नगरपालिकाको लालीखर्क भन्ने ठाउँमा भएको हो। २७ वर्षको उमेरमा अक्षरारम्भ गरी वेदमा विद्यावारिधि गर्ने उहाँ पहिलो नेपाली हुनुहुन्छ। वेदको पठनपाठन, गायत्री मन्त्रलगायत सम्पूर्ण धर्मग्रन्थहरू कुनै जातजातिको पेवा नभई सबैले अध्ययन र अनुभव बटुली प्रचार-प्रसार र ज्ञान दिनुपर्छ, यो कुरा सबैको बराबर अधिकार हो भन्ने तथ्य उहाँले प्रमाणित गरेर देखाउनुभयो। उहाँ नेपालमा मात्र नभएर भारतलगायत विश्वका विभिन्न मुलुकमा आदरणीय र बौद्धिक व्यक्तित्वका रूपमा स्थापित हुनुभयो। उहाँ नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान र राजसभा स्थायी समितिको सदस्यसमेत रहनुभएको थियो। मृगस्थली काठमाडौंमा उहाँ ब्रह्मलीन हुनुभयो।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत शिक्षा आजको आवश्यकता

✍ **पिताम्बर पौडेल**

आजको वर्तमान युगमा संस्कारित समाज निर्माणका लागि संस्कृत शिक्षा अत्यन्त आवश्यक छ। संसारमा जम्मा दुई किसिमका शिक्षा रहेका छन्। एउटा अध्यात्म शिक्षा र अर्को भौतिक शिक्षा। अध्यात्म शिक्षाले व्यक्तिलाई सुशिक्षित, कर्तव्यनिष्ठ, आचारवान् र एक जिम्मेवारी गर्ने सन्दर्भमा ठूलो भूमिका खेलेको हुन्छ। अध्यात्म शिक्षा जसको अर्को संज्ञा हो संस्कृत शिक्षा। वैयाकरणका दृष्टिमा डु कृञ् करणे भन्ने धातुबाट सम् उपसर्ग पूर्वक क्त प्रत्ययान्त शब्द जो अनेकौं परिभाषाद्वारा परिष्कृत रहेको छ। सम्यक् कृतमिति संस्कृतम् अर्थात् संस्कार गरिएको, शुद्ध पारिएको, सफा गरिएको, सजाइएको शिक्षालाई नै संस्कृत शिक्षा भनिन्छ।

संस्कृतका अन्य विशेषतालाई हेर्ने हो भने शोभनङ्कृतं संस्कृतम्, सुन्दरङ्कृतम् संस्कृतम्, समीचीनङ्कृतम् संस्कृतम्, शान्तङ्कृतम् संस्कृतम्, सङ्कर्षणङ्कृतम् संस्कृतम्, संवर्द्धनङ्कृतं संस्कृतम् जस्ता विशेषताले भरिएको संस्कृत शिक्षाको बारेमा समाज र राष्ट्रले नबुझ्नाले उपेक्षित अवस्थामा पुर्याइएको देखिन्छ। विश्वको आदिम सभ्यता, ऋषि सभ्यता अनि आर्ष सभ्यतासँग जोडिएको संस्कृत यो एउटा भाषामात्र नभई एक जीवन जिउने कला र सिद्धान्त पनि हो।

वर्तमान परिवेशमा यदि जिउने र मर्ने कला कसैले सिकाउँछ भने त्यो संस्कृत शिक्षाले सिकाउँछ। संस्कृतले बाँच्न मात्र सिकाउँदैन, यसले त मर्न पनि सिकाउँछ। मृत्युको बोध गराउँछ। यसले अभय बन्न सिकाउँछ अनि मृत्युलाई मोक्षमा बदल्न सिकाउँछ। त्यसैले भनिएको छः

मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणम्।एषा सञ्जीवनी विद्या सञ्जीवयति मानवम्।।

संस्कृत एक सञ्जीवनी विद्या हो। जसद्वारा सञ्जीवनी ऊर्जा प्राप्त भएको महसुस गर्न सकिन्छ। चेतनाको नवीन स्वरूप नै संस्कृत हो। भोगका लागि मात्रै होइन, मोक्षका लागि पनि संस्कृत शिक्षा अत्यन्तै आवश्यक छ। चेतनाको कमीले भनौं या त अबुझपनले भनौं कसै कसैले संस्कृत शिक्षालाई विरोधमै अल्झाइरहेका छन्। तर संस्कृतले आज के दिएको

✍ *विद्यार्थी कक्षा ११, श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा.वि. चारपाने झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छैन हामीलाई ? हाम्रा पुर्खा ऋषिहरूले उपनिषद् दिए, योग शास्त्र दिए, खगोल, भूगोल, इतिहास, गणित, तमाम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पुरुषार्थ सिद्धि गर्ने कला दिए। अतः संस्कृत जीवन जिउने सशक्त कला पनि हो। वर्तमान विश्व परिवेशलाई मध्यनजर गर्ने हो भने आजको आधुनिकता साथै डरलाग्दो भौतिकता भित्रका हिंसा, द्वन्द्व, कलह, अशान्ति यी सम्पूर्ण कुकृत्यको एउटै मात्र उत्तर हो- भौतिकवाद अथवा भौतिक शिक्षा।

मैले यहाँ भौतिकवादको कुरा गरिरहँदा विरोधजन्य विषयतर्फ केन्द्रित नभई यहाँको वर्तमान तितो सत्यलाई चित्रण गर्दै छु। अध्यात्मजगत् यानि कि संस्कृत शिक्षा जहाँ हत्या, हिंसा, बलात्कार, अत्याचार, दुराचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, दमन शोषण जस्ता कुरालाई पैतलामुनि कुल्चिएर र वैदिक आदर्शलाई जागृत गराई समाज रूपान्तरणमा ठूलो भूमिका निर्वाह गर्ने सामर्थ्य संस्कृत शिक्षामा छ। कसैलाई उपकार गर्न सक्दैनौं ठिक छ तर अपकार नगर। 'लडेकालाई उठाउन सक्दैनौ ठिक छ तर उठेकालाई नलडाऊ' आदि मानवीय सिद्धान्त बोकेको संस्कृत शिक्षा आजको समस्या नभई बरु समस्याको निदान हो। किनभने श्रीखण्डको वृक्षमुनि बसेर विदेशी अत्तर खोजी गरेजस्तै हामी स्वरूपका नेपाली स्वभावका विदेशी बनिरहेको अवस्था छ। वास्तवमा विश्वमा अनेकानेक कला संस्कृति रहेका छन् तर संस्कृत जसले आत्मचिन्तन यानि कि स्वयं आफूलाई चिन्न सक्ने शक्ति प्रदान गर्दछ। त्यसैले भनिन्छ-

जानाति विविधा भाषा जानाति विविधाः कलाः।
आत्मानं नैव जानन्ति यो न जानाति संस्कृतम्।

जतिसुकै विद्या जानोस् जतिसुकै भाषा, कला, विविधतालाई जानेको होस् तर अन्ततोगत्वा आत्मालाई चिन्ने एउटै शिक्षा संस्कृत शिक्षा हो। जसले कस्त्वं कोऽहं कुतः आयातः यसलाई छर्लङ्ग रूपमा चिनाइदिएको छ। नाफा र घाटाको अर्थतन्त्रलाई चलाउन संस्कृत पढिरहनु पर्दैन। तर राष्ट्र रूपान्तरण, देश रूपान्तरण, संस्कार अनि सामाजिक एकताका निम्ति पनि संस्कृत शिक्षा आजको आवश्यकता हो किनभने भौतिक विकासमा मानसिक शान्ति कायम राख्ने एउटामात्र शिक्षा संस्कृत शिक्षा हो।

उपनिषद्लाई सम्झने हो भने *ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः* अर्थात् ज्ञानविना जीवात्माको मुक्ति नै छैन। अतः या विद्या सा विमुक्तये त्यो विद्या विद्या हो जसले सांसारिक वासनाबाट मुक्त गराओस्। वर्तमानको राजनीतिक अस्थिरता, जातीय सङ्कीर्णता, लैङ्गिक विभेद साथै तेरो र मेरो भनिने संसारका ढोंगी, आडम्बरी शैलीप्रति उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् भन्ने भावले एक कर्तव्यबोध गराइरहेको छ। त्यसैले संस्कृत शिक्षा कर्तव्यबोधको अलौकिक साधन हो। आज प्रत्येक घरमा अशान्ति छाइरहेको छ, कलह मच्चिरहेको छ। राष्ट्रमा हेर्ने हो भने राष्ट्रिय समुन्नति र एकता खोज्न विदेशिनुपर्ने अवस्था सिर्जना भएको यो विषम परिस्थितिबाट माथि उठ्नका निम्ति आजको प्रमुख आवश्यकता नै संस्कृत शिक्षा हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वमा शतम् वर्गमा भएका भाषा परिवारको जननी भाषा नै संस्कृत भाषा हो। त्यसैले नासाका वैज्ञानिकहरूले पनि संस्कृत भाषाको चमत्कार अनि प्रभावलाई बुझेर आज ती वैज्ञानिकहरू पनि संस्कृत भाषा अँगाल्दै आएको कुरा अवगत नै छ। संस्कृत भाषाका अघि अन्य कुनै पनि भाषालाई तुलना गर्न सकिँदैन जसरी फलाम र सुवर्णलाई तुलना गर्न सकिँदैन। संस्कृतभित्रको महत्तालाई बोध गर्न सक्ने अर्को संस्कृतमा एउटा श्लोक सुप्रसिद्ध छ-

संस्कृतश्रवणं पुण्यं भाषणं पापनाशनम्।
पठनं शक्तिवृद्धिश्च लेखनं मोक्षदायकम्।।

संस्कृत शिक्षा संसारको यस्तो एउटा विशाल वृक्ष हो जहाँ सम्पूर्ण विषय समेटिएका छन्। यो देव भाषा गेहे गेहे जने जने भनेझैं प्रत्येकका घरघरमा प्रत्येक व्यक्तिका हृदयमा साथै विद्यालय, कलेज, सरकारी निकाय, राज्य शासन सत्ता एवं देशका शासक वर्ग सम्पूर्णका मनमा संस्कृतप्रतिको भावना जागृत नभएसम्म न देशले, न समाजले, न कुनै आत्माले भौतिक विकासको साथसाथै आध्यात्मिक चेतनाको अनुभव महसुस गर्न सक्दैन। अहिलेको समयले संस्कृत ज्ञान, चेतना, चिन्तन, मनन र जागरणको पथलाई लक्षित गरिरहेको छ। कुनै विषय, कुनै वस्तु स्वार्थका लागि र परमार्थका लागि जोडिन्छन् तर संस्कृत शिक्षा बहुजनहिताय बहुजनसुखायका निम्ति क्रियाशील छ। भगवान् श्रीकृष्ण गीताको दशौं अध्यायमा अर्जुनलाई उपदेश दिँदै भन्नुहुन्छ- अध्यात्मविद्या विद्यानाम् अर्थात् सम्पूर्ण विद्याहरूमा म अध्यात्म विद्या हुँ।

अतः यो भगवान्को अद्वैत भनाइ सार्थक गर्नका निम्ति पनि भौतिक शिक्षा सँगसँगै अध्यात्म संस्कृत शिक्षा जोडिनु अत्यन्तै आवश्यक देखेको छु। ब्राह्मणका छोराले मात्रै संस्कृत शिक्षा अध्ययन गर्ने एक जातीय एवं पुरुषले मात्र नभएर देशका हरेक नागरिकले यसलाई अध्ययन गर्न अवश्यक छ। संस्कृत ब्राह्मणको मात्र नभई हामी सम्पूर्ण ॐ कार परिवारको आस्था र विश्वासको केन्द्रबिन्दु हो किनभने हामी भन्छौं सर्वे भवन्तु सुखिनः सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् हामी सँगै हिंडौं, सँगै बोलौं, अनि हाम्रो मन विचार सबै एउटै जन्मियोस् न कि हामी विभक्त हुन सकौं आदि आदर्श बोकेको संस्कृतलाई तपाईं हामी सम्पूर्ण देशवासीहरूले हृदयङ्गम गरौं, आफ्नो अस्तित्व कायम राख्न र संस्कृति यथावत् राख्नका लागि हामी सम्पूर्ण नेपाल आमाका सन्तान लागिपरौं। संस्कृत हराए संस्कृति हराउँछ, संस्कृति हराए पहिचान हराउँछ, पहिचान हराए हाम्रो अस्तित्व हराउँछ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्कर्मको फल

✍ ध्रुवप्रसाद न्यौपाने

पुण्य कर्म जहाँ हुन्छ सो ठाउँलाई पुण्यभूमि भनिन्छ। यस्तो पुण्यभूमिमध्ये एक हो झापाको चारपानेस्थित विवेकानन्द आश्रम। सनातन हिन्दु धर्मको संरक्षण गर्ने पवित्र इच्छा बोकेर २०२८ सालमा विवेकानन्द पुरी (श्री १०८ विवेकानन्द स्वामी) ले यस ठाउँमा गुरुकुलीय पद्धतिबाट पठनपाठन हुने संस्कृत शिक्षाको स्थापना गर्ने परिकल्पना गरी स्थानीय समाजमा प्रस्ताव राख्नुभई समाजको साथ-सहयोगबाट गुरुकुल स्थापना भएको पाइन्छ।

कर्म गरे पक्का फल प्राप्त हुनेछ भन्ने उक्ति यहाँ सार्थक बनेको छ। यो पवित्र कर्मको बिरुवा झाङ्गिएर ठूलो वृक्ष बनिसकेको छ। स्वामी विवेकानन्द आश्रम श्री साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. चारपाने हुँदै अझ फराकिलो बन्न पुगेको छ। यस ठाउँमा वेद, रुद्री, चण्डीबाट सुरु गरिएको शिक्षा लघुकौमुदी, रघुवंश, हितोपदेश, पञ्चतन्त्र समेतको शिक्षामा परिणत गरी हाल नेपाल सरकारबाट मान्यता प्राप्त संस्कृत मा.वि. भइसकेको छ। यस पुनीत कार्यमा संलग्न गुरुहरू, स्थानीय अभिभावक, संचालक समितिसमेत धन्यवादका पात्र हुनुहुन्छ।

यस पवित्र ठाउँमा शिक्षाको पवित्र ज्योति मात्र नभई अन्य धार्मिक कार्यक्रमहरू अटुट रूपमा सञ्चालन भइरहेका छन्। विद्यालयमा छात्रावासको व्यवस्था, छात्रावासमा बस्ने विद्यार्थीलाई भोजनको व्यवस्था हाल कक्षा ४ देखि कक्षा १२ सम्म सञ्चालन हुँदै गरेको यस विद्यालयमा जम्मा विद्यार्थी सङ्ख्या २२५ पुगेको छ भने आवासीयतर्फ १३५ विद्यार्थी छात्रावासमा बसेर शिक्षा आर्जन गरिरहेको पाइन्छ। देख्दा सुन्दा नै महान् कार्य छ। यो महान् कार्यको स्थायी स्रोत छैन तर पनि यति धेरै सङ्ख्यामा विद्यार्थीले यहाँ गरिने दैनिक हवन, वार्षिक रूपमा लगाइँदै गरेको पुराण, यसको व्यवस्थापन र व्यवस्थापनमा खटिनुहुने महानुभावहरूप्रति हामी परबाट देख्ने, सुन्ने सबै नतमस्तक भएका छौं। देवीदेवताका मन्दिर, विद्यालय भवन, छात्रावास, गौशाला, अखण्डदीप प्रज्वलन आदिले समाजबाट भएको यो पुण्यभूमि एक पवित्र स्थलको रूपमा प्रसिद्ध हुँदै हाल पचासौं वर्षमा आफूलाई उभ्याउन सफल भई आफ्नो स्वर्णजयन्ती मनाइरहेको छ। यस पवित्र समयमा हृदयदेखि नै शुभकामना अर्पण गर्दछु।

❑

✍ *भद्रपुर १०, चन्द्रगढी, पूर्वशिक्षक,श्री साङ्गवेद संस्कृत मा. वि., बिर्तामोड २, चारपाने*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकाश्रम र नारी शिक्षा

✍ चित्रा भण्डारी

जगज्जननी सीतामाताको उद्गमस्थल परम पवित्र दिव्यभूमि नेपालमा समय समयमा सन्त, महात्मा विद्वान् र विदुषीहरूको जन्म हुने गर्छ। उहाँहरूको अनुपम कृपाबाट दिव्यज्ञान तथा भगवद् चिन्तन गर्ने सौभाग्य प्राप्त हुने गर्छ। ज्ञानभूमि तथा शान्तिभूमि नेपालमा जन्म लिएपछि अध्यात्म ज्ञान प्राप्त गरी मोक्षको बाटो पहिचान गर्न सक्नु नै यस माटोको विशेषता हो। अनेक जन्ममा रुमलिरहेको यस जीवले धेरै पुण्यको सञ्चय भएपछि भगवत् कृपाबाट मात्र नेपालजस्तो पवित्र भूमिमा जन्म लिने अवसर पाउँछ।

नेपालको पूर्वी झापा जिल्लाको बिर्तामोड नगरपालिका २ चारपानेमा रहेको 'विवेकाश्रम' पनि साधु, सन्त महात्माहरूसँग जोडिएको छ। वि.सं. २०२८ सालमा स्वामी श्री १०८ विवेकानन्द पुरीजी महाराजले यस आश्रमको स्थापना गर्नुभएको हो। संसारी मायाले व्याप्त मानवहरूलाई अध्यात्म ज्ञान अतिआवश्यक भएको र अध्यात्म ज्ञानका लागि संस्कृत वाङ्मयको अध्ययन अपरिहार्य भएको ठानी स्वामीजीले यस आश्रमको स्थापना गर्नुभयो। त्यसपछि यस आश्रमको विद्या अध्ययन अध्यापन कार्यमा गौतम गुरुज्यूले (महर्षि पं. टेकनाथ उपाध्याय गौतम) आजीवन यसको संरक्षण गर्ने काम गर्नुभयो।

'विद्याविहीन पशु' भन्ने उक्तिलाई मनन गरेर हामी सबै विद्याविहीन पशुझैं मनुष्यको हितका लागि परोपकारमै जीवन अर्पण गर्नुहुने सन्त महात्माज्यूहरू श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द स्वामी श्री १०८ योगेश्वरानन्द, महर्षि पं. टेकनाथ गौतम गुरुलगायत यस संस्थामा सहयोग गर्ने सबै गुरुजीहरू पूजनीय हुनुहुन्छ।

नेपालको शैक्षिक प्रणालीमा गुरुकुलीय परम्परा पुरानो वैदिक परम्परा हो। गुरुकुल शिक्षा पद्धतिमा नारीहरूलाई कहिल्यै अलग गरिएन। गार्गी, मैत्रेयी जस्ता विदुषीहरूको इतिहासले संस्कृत र संस्कृतिमा नारीहरू कहिल्यै अलग छैनन् भन्ने कुरा बुझिन्छ। तर पछि किन यो परम्परा लोप भयो त्यो बुझ्न अलिक कठिन नै छ। जुन समयमा गार्गी, मैत्रेयीजस्ता विदुषी थिए त्यस समयमा शिक्षा ज्ञान प्राप्ति र मोक्ष प्राप्तिको विषय थियो। विस्तारै युग परिवर्तन हुँदै जाँदा शिक्षा पनि पैसा वा

✍ *पूर्वविद्यार्थी, श्री साङ्गवेद संस्कृत मा. वि., बिर्तामोड २, चारपाने*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन प्राप्तिका लागि मात्र प्रयोग हुँदै गएको जस्तो भान हुन्छ। नेपालमा कृषि परम्परा अपनाइएको र त्यस कार्यका लागि धेरै जनशक्तिको आवश्यक पर्ने भएकाले एउटै घरभित्र पनि एउटा छोरो पढाउने अरूलाई कृषितिर लगाएको हाम्रो समाजमा देखिएको छ। गृहकार्यमा धेरै व्यस्त हुनुपर्ने भएकाले धेरै शिक्षाबाट वञ्चित भए। नारीहरू पनि घरको काममा व्यस्त हुने हुनाले पढ्ने छुट्टै समय थिएन। छोरीले पढ्नै नहुने भन्ने मान्यता त थिएन तर छोरीले वा सबैले पढ्नैपर्छ भन्ने अनिवार्यता भने थिएन। विवेकाश्रममा स्थापना कालदेखि नै नारीलाई शिक्षाबाट वञ्चित गरिएन तर घरको काम व्यस्तताले नारीहरू घरमै आगो बालेर रहेको खरानीमा सुन्ठीले कोरेर 'क ख' आदि वर्णहरू घरमा पाक बनाउँदा सिक्थे। सिक्नलाई बन्देज थिएन तर अनिवार्य सिक्नैपर्छ भनेर अनिवार्यताचाहिँ लागु गराएको पाइएन। त्यसो त मेरी आमासँगका साथीहरूले पनि निरक्षर भएर बस्नुभएको थिएन। २०१३ सालतिर जन्मिए पनि आमाले थोरै पढ्ने अवसर त प्राप्त गर्नुभएछ। हाम्रो पालासम्म आइपुग्दा सबैले पढ्न थालेका थिए। हामी भने भाग्यमानी रहेछौं परापूर्वकालमा विदुषीहरूले प्राप्त गरेको त्यो संस्कृत वाङ्मयको ज्ञान सन्त कृपाबाट सजिलै प्राप्त भयो।

२०४२।४३ सालतिर विवेकाश्रमबाट अक्षरारम्भ गर्ने अवसर मिल्यो। यहाँ शिवमहिम्नःस्तोत्र, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र, रामगीता आदि दिव्य ग्रन्थहरूको अध्ययन गर्ने अवसर मिल्यो। यो मेरो जीवनभरिको सबैभन्दा ठूलो उपलब्धि हो। किनकि अहिलेको बोर्डिङ विद्यालयको शिक्षा हेर्नुपर्छ। एक साल पढिसकेपछि ती पुस्तक सबै कबडीमा परिणत हुन्छन्। तर मैले बाल्यकालमा अध्ययन गरेका यी पुस्तकहरूको महत्त्व त दिनानुदिन बढ्दैछ, घट्दैन। यो विद्या कवाडीमा परिणत हुने विद्या होइन। गीताको एउटामात्र श्लोक जानियो भने पनि त्यो मृत्युपर्यन्त काम आउँछ। मेरो विचारमा संस्कृत विद्या सुन विद्या हो जसलाई जुनसुकै गहनामा परिवर्तन गरे पनि आगामा पगाले पनि त्यसको मूल्य घट्दैन, बरु झन् चम्कन्छ।

मेरा सहपाठीलगायत मभन्दा माथिल्लो श्रेणीमा अध्ययन गर्ने साथीहरू त्यस समयमा खुब उत्साहका साथ पढ्ने गर्नुहुन्थ्यो। मनु तिम्सिना, देवका पौडेल, राधिका भण्डारी, सुमित्रा भण्डारी, माया भण्डारी, टीका भण्डारी, तुलसा खनाल आदि धेरै सहपाठी मित्रहरू हुनुहुन्थ्यो। बिहान ७ बजेबाट पठनपाठन सुरु हुन्थ्यो। एउटा काठले बनेको विद्यालय थियो। शिव पाञ्चायन मन्दिर र हवनशाला पनि मन्दिरभित्रै थियो।

त्यस काठको भवनभित्र सबै जना उपस्थित भएपछि सामूहिक रूपमा सरस्वती वन्दना (रविरुद्रपितामहविष्णुनुतं) गर्थ्यौं। त्यसपछि गणेश, शारदा, आदित्य आदिको वन्दना पनि सामूहिक रूपमा गर्थ्यौं। वन्दना गरिसकेपछि आआफ्नो पाठ गुरुबाट लिएर पढ्न बस्थ्यौं। हामीले पढेका पाठहरू घोकेर कण्ठस्थ बुझाउनुपर्थ्यो। काठको एउटा भवनभित्र बसेर आआफ्नो पाठ पढ्दा त्यो भवन नै गुञ्जायमान हुन्थ्यो। १० बजेतिर भोजन गर्ने समय हुन्थ्यो। १२ बजेतिर विश्राम, विश्रामपछि लेखाउने गर्नुहुन्थ्यो। त्यसपछि साढे ४ बजेसम्म विद्यालयमा नै पढेर घर फर्कन्थ्यौं। छुट्टी हुने बेलामा 'सीताराम सीताराम' यो कीर्तन गरेर अनि जय जयकार लगाएर मात्र छुट्टी हुन्थ्यो। बेलुका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पनि ९ बजेसम्म अनिवार्य पढ्नुपर्थ्यो। पढे वा नपढेको बुझ्न बेलुका पनि गुरुजीहरू घरघरमा आइपुग्नुहुन्थ्यो। बिहान पनि आफू छिट्टै उठेर पाठ गरेन भने त्यो पनि थाहा पाइहाल्नुहुन्थ्यो। अनि विद्यालय पुगेपछि सबै साथीका अगाडि नपढेको कुरा भन्नुपर्दा त्योभन्दा लज्जास्पद कुरा केही पनि लाग्दैनथ्यो। यसरी गुरुजीहरूले हाम्रा लागि बिहानदेखि रातिसम्म खटेर रहनुभयो। हाम्रो हौसला बढाउन पुरस्कारको व्यवस्था गर्नुहुन्थ्यो। कहिले चकलेटको पुरस्कार त कहिले कापी र कलम हुन्थ्यो।

हामीलाई शिक्षा प्रदान गर्नुहुने गुरुजीहरू आचार्य डिल्लीराम गौतम गुरुज्यू, पं. छन्दुराम भण्डारी गुरुज्यू, अम्बिकाप्रसाद रेग्मी गुरुज्यू, गोविन्द पौडेल गुरुज्यू, मित्रलाल ढकाल गुरुज्यू, बद्रीनाथ खतिवडा गुरुज्यूहरू सबैले स्वयंसेवकको रूपमा काम गरेर हामीलाई संस्कृत शिक्षा प्रदान गर्नुभयो। त्यस बेला प्रधानाचार्यको रूपमा मेरा पिता विष्णुभक्त भण्डारी हुनुहुन्थ्यो। परम पूजनीय ब्रह्मलीन पं. महर्षि टेकनाथ उपाध्याय गौतम जसलाई हामी 'गौतम गुरु' भनेर चिन्दछौं, उहाँको अतुलनीय योगदान यस आश्रमलाई रहेको छ। उहाँले आफ्ना गृहस्थका अनेकौं समस्यालाई वास्ता नगरी संस्कृत सेवामा जुट्नुभएको हुनाले आज हामी यतिसम्म भएका छौं। यसरी विगतलाई नियाल्दा त्यो बाल्यकाल शिक्षा ग्रहणको आनन्दलाई सम्झँदा फेरि बाल्यकालतिर फर्कौं कि जस्तो पो लाग्छ तर समय पनि भगवान् नै हो जसले जीवन सधैं परिवर्तन गराइरहन्छ। गीतामा त्यसै कहाँ भनिएको हो र *देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।*

यस आश्रममा पढाइलगायत विभिन्न पर्वहरूमा उत्सव पनि हुने गर्छन्। रामनवमी, कृष्णाष्टमी, शिवरात्रि, तीज, ऋषिपञ्चमी, अनन्तचतुर्दशी, जनैपूर्णिमा आदि प्रत्येक पर्वहरूमा विधि विधानपूर्वक तत्तत् देवताहरूको आराधना तथा उत्सव हुने गर्छ। अखण्ड हरिनाम सङ्कीर्तन बिहान-बेलुकाको नित्य आराधना, पूजा सदैव यस आश्रमले गर्दै आएको छ। बाल्यकालदेखि नै यस आश्रमका हरेक पर्व र उत्सवमा भाग लिँदै, सहभागिता जनाउँदै आइएको हुनाले यहाँको आश्रम मेरो हृदयभित्र रहेको छ। हरेक वर्षको माघको शुक्ल पक्षमा यहाँको वार्षिकोत्सव हुने गर्छ।

यसरी स्वामी श्री १०८ विवेकानन्द पुरीजी महाराज र योगानन्द पुरीजी महाराज, गौतम गुरुज्यू लगायत सम्पूर्ण गुरुज्यूहरूले मजस्ता केही योग्यता नभएका मलीन मानवहरूको हितका लागि यस गुरुकुलको स्थापना गर्नुभएको हो। अहिले पनि यहाँ माध्यमिक विद्यालय तहसम्मको पढाइ सञ्चालन हुँदै आएको छ। मुष्टिदानबाट सुरु भएको यस विद्यालयले अहिले निकै राम्रो व्यवस्था गरिसकेको छ। अहिले पनि माताहरू गीताको अध्ययन गर्दै हुनुहुन्छ। अक्षर चिन्ने अवसर नपाएका आमाहरूलाई विशेष गरी गीताको अध्यापन गर्ने कार्य भइरहेको छ। यसरी विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयले नारीलाई पनि अध्यात्म ज्ञानतर्फ उन्मुख गराउन सदैव अभिप्रेरित गरेको छ र गरिरहेको छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकाश्रमको विकासमा मातृशक्तिको भूमिका

✍ आचार्य खिवराज न्यौपाने

वैदिक सनातन धर्ममा प्राचीन कालदेखि नै विशिष्ट व्यक्तिहरूको समर्पण भएको पाइन्छ। यस्ता व्यक्तित्वहरूले वैदिक सनातन धर्मलाई जनजनमा पुर्याउने कार्यमा गहन भूमिका निर्वाह गर्दै शास्त्रीय ज्ञानका आधारमा मानव जीवनको वास्तविक रूपलाई चिनाउने कार्य गर्नुभएको छ। यो पुण्यभूमि नेपाल आमाको काखमा स्वर्गद्वारी महाप्रभु, बाल ब्रह्मचारी षडानन्द, ब्रह्माभ्यासानन्द, यज्ञनिधि (सुभाङ गुरु), गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, स्वामी योगीश्वराश्रम, पं. टेकनाथ गौतम गुरु आदि यस देशका आभूषण हुनुहुन्थ्यो। यसैबीच स्वामी विवेकानन्द एक सिद्धपुरुष हुनुहुन्थ्यो। उहाँले नेपालको पूर्वी भाग बिर्तामोड २ चारपाने झापामा आएर वि.सं. २०२८ सालमा साधनासिद्ध चिम्टा गाड्दै 'यो ब्रह्मस्थल हो, यहाँबाट ठूलठूला विद्वान्हरू जन्मनेछन्' भन्दै आफ्नो आश्रमको परिकल्पना गर्नुभएको थियो। त्यसपछि गुरुकुलको स्थापना पनि गरियो र श्री साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय विवेकाश्रम नामकरण भयो। यो आज उच्चशिक्षा प्रदान गर्ने विद्यालयमा परिणत भइसकेको छ। यस आश्रमलाई यहाँसम्म ल्याउनमा सम्पूर्ण भक्तजनहरूको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको छ।

विवेकाश्रम अहिले जुन अवस्थामा आइपुगेको छ, यसमा मातृशक्तिहरूको योगदान अतुलनीय रहेको छ। मैले पनि यसै विद्यालयमा अध्ययन गर्ने सुअवसर प्राप्त गरेको थिएँ। त्यस समयमा विद्यार्थीलाई भोजनको व्यवस्था आश्रमले गर्न सक्ने अवस्था थिएन। विद्यार्थी स्वयंले रासनको व्यवस्था गर्नुपर्ने थियो। प्रातःस्मरणीय गुरु पं. विष्णुभक्त भण्डारीज्यूको कृपापात्र बन्ने सुअवसर मलाई प्राप्त भयो र शिवालयको सेवा गर्ने मौका मिल्यो। त्यसपश्चात् मलाई घरबाट रासन बोक्ने समस्याबाट मुक्ति मिल्यो।

शिवालयमा दैनिक पूजा हवनादि यज्ञमा सम्पूर्ण विद्यार्थीहरूको सहभागिता रहने गर्थ्यो। मलाई आजसम्म एउटा कुराको याद आइरहेको छ। यज्ञशाला शिवालयभित्र नै थियो र हवनकुण्डको पश्चिमतर्फ दुईवटा टिनका पात्रमा चामल राख्ने गरिन्थ्यो। प्रत्येक दिन वरिपरिका आमाहरूले मुष्टिदान गर्नुहुन्थ्यो। सबैले ल्याएको मुष्टिदान त्यही टिनमा राख्ने गरिन्थ्यो। द्वादशी र औंसीमा विद्यार्थीहरूलाई आश्रमका तर्फबाट सिधादान गरिन्थ्यो। दैनिक हवन पनि त्यहींबाट हुने गर्थ्यो तर ती दुवै टिनमा चामल कहिल्यै खाली हुँदैनथ्यो। अहिले सम्झँदा ती दुवै पात्र

✍ *प्राचार्य, ओमकारेश्वर वैदिक विद्यापीठ, गायत्रीस्वरूपाश्रम, हल्दीबारी १, गोलधाप, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वास्तवमा अक्षय पात्र रहेछन्।

आमाहरू बिहानै एउटा हातमा पानीको लोटा र अर्को हातमा मुष्टिदानको चामल थालीमा लिएर आउँदै गरेको देख्दा आफ्नै आमा आए झैं लाग्थ्यो। जब बारीमा केरा पाक्थे तब आश्रममा विद्यार्थीहरूलाई पहिले दिनु पर्छ भन्ने उहाँहरूको मान्यता थियो। जब बारीमा मकै पाक्थे ठूलो ढाकीमा बोकेर आमाहरू आश्रममा प्रवेश गर्नुहुन्थ्यो। त्यसरी ल्याएका चिजहरू सबैले बाँडेर खाँदा अत्यन्तै आनन्दको अनुभूति हुन्थ्यो। वास्तवमा अन्नदानभन्दा ठूलो दान विद्यादान बाहेक अर्को छैन। 'अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम्'।

विभिन्न शास्त्रहरूमा अन्नदानको महिमा वर्णन गरिएको पाइन्छ। त्यसमा पनि मुष्टिदानको महिमाको विशेष प्रकारले वर्णन गरिएको छ। जो अन्न आफ्नो परिवारलाई तयार गरिएको हुन्छ, त्यसबाट एक मुठी पर सारिन्छ भने त्यसलाई मुष्टिदान भनिन्छ। मुष्टिदान गर्नमा गहन भूमिका मातृशक्तिको नै रहेको हुन्छ। आमाहरूले यस कार्यलाई अत्यन्तै श्रद्धापूर्वक आफ्नो भागबाट छुट्याएर जहाँ ऋषिकुल, गुरुकुल र गुरुआश्रममा लगेर दान गरिन्छ भने त्यो अन्न खाएर विद्यार्थीहरूले वेदका ऋचा पढ्दै अन्नलाई पचाउँछन् भने जो अन्नदाता हो उहाँहरूका दश कुल पूर्व आफूसहित ११ र आफूभन्दा पछिका १० कुल गरेर जम्मा २१ कुलका पितृहरूको कल्याण हुन्छ भनिएको छ।

कुक्षौ तिष्ठति यस्यान्नं विद्याभ्यासेन जीर्यति।
तदन्नं तारयेत् पितॄन् दश पूर्वान् दशावरान्।

विवेकाश्रम परिसरका मातृशक्तिले केवल अन्नदान मात्र गर्नुभएको छैन विद्यार्थीहरूलाई अध्ययन गराउने प्रेरणाको स्रोत पनि बन्नुभएको छ। बालिकादेखि वृद्ध माताहरू श्रीमद्भगवद्गीताका साथै अन्य शास्त्रहरूको अध्ययन गर्न विद्यालयमा आउने गर्नुहुन्थ्यो। आदरणीय गुरु पं. विष्णुभक्त भण्डारीज्यूले अर्थसहित गीतालगायतका शास्त्रहरूको अध्यापन गराइरहनुभएको छ। यो देखेर पनि विद्यार्थीहरूलाई अध्ययनलाई निरन्तरता दिएमा कुनै पनि शास्त्रको ज्ञान गर्नलाई उमेरले कुनै असर नगर्ने रहेछ भन्ने प्रेरणा प्रदान गर्नुभएको छ। आश्रम परिसरमा हुने जति पनि वार्षिक पर्वहरू जस्तै कृष्णाष्टमी, रामनवमी, अनन्तचतुर्दशीलगायत जति पनि चाडपर्वहरू छन् ती सबै पर्वहरूमा मातृशक्तिको सहभागिता सक्रिय रूपमा रहन्छ। त्यसै गरी चतुर्मासभरि आयोजना हुने सत्सङ्गमा पनि मातृशक्तिको अत्यधिक सहभागिता हुने गरेको पाइन्छ। आज विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद मा. वि. ले स्वर्ण महोत्सव सभ्य र भव्य रूपमा मनाइरहेको छ। यसमा विशेष गरेर मातृशक्तिको अतुलनीय योगदान रहेको मैले महसुस गरेको छु।

आगामी दिनहरूमा पनि यसै गरी मातृशक्तिहरूले सहयोग गरिरहनुहुनेछ भन्ने पूर्ण विश्वास लिंदै सम्पूर्ण आमाहरूलगायत यस आश्रमलाई तन, मन, धन र वचनले सहयोग पुर्याउनुहुने महानुभावलाई हृदयदेखि नै धन्यवाद प्रदान गर्दछु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगानन्द गुरुसँगको सम्झना

घनश्याम कडरिया

योगानन्द गुरुसँगको मेरो सत्सङ्ग थोरै समयमात्र भए पनि उपलब्धिपूर्ण रह्यो। त्यति बेला म युवावस्थामै थिएँ। मलाई सत्सङ्गको महत्त्व, गुरुहरूको उपदेशको ज्ञान त्यति थिएन। मैले मेरै पिताजी प्रतिमन कडरिया र माताजी महेश्वरा कडरियाबाट जे-जति सुनेको र बुझेको थिएँ त्यति नै थियो। यो २०२० सालतिर आसाममा हुँदाको कुरा हो। हामी त्यति बेला आसामको राजागढ भन्ने ठाउँमा बस्थ्यौं। त्यस समय योगानन्द गुरु, विवेकानन्द गुरु, केदारनाथ खतिवडालगायत गुरुहरू पनि आसामका विभिन्न ठाउँको तीर्थाटनमा हुनुहुन्थ्यो। त्यहाँ बेलाबखत सत्सङ्ग हुने गर्थ्यो। भक्तहरूको भक्तिले तानेर, भक्तहरूलाई उद्धार गर्न, त्यो भूमि पवित्र गर्न गुरुहरू त्यहाँ जानुभएको रहेछ। यस्तो गहिरो कुरा हाम्रो दिमागमा कसरी बस्थ्यो र ? भनिन्छ— सन्तको लक्ष्य नै परोपकारपुण्याय हो। सन्तले जुन भूमि टेक्यो त्यो भूमि पवित्र हुन्छ।

योगानन्द गुरुसँगको सत्सङ्गकै प्रसंगमा भन्नुपर्दा एकपटक भक्तहरूलाई उहाँको उपदेश यस्तो थियो— 'कोदो पनि खाओ, गुन्द्रुक पनि खाओ, तर भजन चाहिँ नछोड। तिमीहरूले खानु हुँदैन भनेको होइन। तर भजन गर। त्यही भजनले तिमीहरूको त्यो सबै बानी छुटाउँछ।'

योगानन्द गुरुसँगको सामान्य प्रसङ्गमा आसामको तीनसुकियामा १३ दिन बसेको बेला एक दिन पं. शान्तिराम निरौला, छविलाल कडरिया मेरा पिताजी, म र योगानन्द गुरुजी गरी हामी ५ जना थियौं। त्यहाँ योगानन्द गुरुले आसामको तीनसुकिया जाने भन्नुभयो र हामी दिउँसो २ बजेतिर त्यता हिंड्यौं। उहाँले आज भोलाजारमा बस्ने र भोलि तीनसुकियाका लागि गाडी चढ्ने भन्नुभयो। हामी खैरेनी भन्ने ठाउँमा पुगेपछि गुरुले एउटा प्रसङ्ग उठाउँदै भन्नुभयो— 'आज त हामी पाँचै जना भेला भएछौं। तपाईंहरूलाई एउटा कुरा सोध्न मन लाग्यो, यहाँ हाम्रा अगाडि भगवान् प्रकट भएर ककसलाई के-के माग्न मन छ, म त्यो कुरा पूरा गरिदिन्छु भन्नुभयो भने के माग्नुहुन्छ ?'

छविलाल कडरियाले 'हाहा.. गुरु मलाई चाहिएको सबै कुरा माग्छु नि, अनि गुरु म त भगवान्को भक्ति पनि माग्छु नि' भन्नुभयो। निरौला पण्डितलाई पनि गुरुले त्यही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न सोध्नुभयो— 'ए पण्डित देउता ! अनि तिमी के-के माग्छौ भन त।' निरौलाले 'विद्या दिनु, सम्पत्ति दिनु, यस्तै त माग्नु होला नि गुरु' भन्नुभयो। अनि पिताजीलाई गुरुले सोध्नुभयो— 'ए प्रतिमन, तिमी के माग्छौ भन त।' पिताजीले 'गुरुदेव भगवान्ले दिन चाहनुभयो भने भक्ति दिनु, चरणको स्पर्श दिनु, भगवान्बाट जे दया हुन्छ त्यही दिनु भन्छु नि' भन्नुभयो। गुरुले 'ल त्यो पनि ठीक छ' भन्नुभयो।

अब मेरो पालो आयो। मलाई पनि गुरुले त्यही सोध्नुभयो। म अलि बच्चै थिएँ, मलाई त्यति ज्ञान थिएन। सत्सङ्ग थिएन। पिताजीबाट जे सुनेको थिएँ, त्यही हो। माताजी ध्यान गर्नुहुन्थ्यो, माताजीबाट केही सुनेको थिएँ। त्यही सुनेको आधारमा मैले गुरुसँग भनें— 'अब के माग्नु र गुरुदेव, भगवान्को भक्ति माग्छु नि' भन्न आएछ। त्यसपछि गुरुले भन्नुभयो— 'जजसले जे-जे इच्छा गर्‍यौ, जे-जे माग्यौ, त्यही पायौ, भगवान्ले त्यो सबै दिनुभयो, ल ढुक्क हौ' भन्नुभयो। उहाँ स्वयं भगवान् स्वरूप हुनुहुँदो रहेछ। स्वयं प्रकाश हुनुहुँदो रहेछ। कसले चिन्न सक्यो र ?

अनि कान्छा मुखिया छविलाल कडरियाले 'हा हा अब गुरुको पालो। गुरुले के माग्नुहुन्छ' भनेर सोध्नुभयो। गुरुले भन्नुभयो— 'ल ठीक छ, मेरो पालो आयो। म त के भन्छु भने म बिलाइजाने, म हराइजाने भन्छु।' गुरुको यस्तो कुरा सुनेर सबै छक्क पर्‍यौं। त्यति बेला त त्यस कुराको ज्ञान भएन। अहिले सम्झन्छु, उहाँ त पहिले नै बिलाउनुभएको रहेछ। के बुझ्नु हामीले। पछि योगानन्द गुरु आसामको सदिया जानुभयो। त्यहाँ ५-६ महिना बस्नुभयो। अनि केही दिन मिसगढी बस्नुभयो र त्यतैबाट उत्तरकाशी जानुभयो। एक-डेढ वर्ष त्यता गएर बस्नुभयो। उहाँ चिदानन्द गुरु महाराजकहाँ जानुभयो। उहाँलाई सन्न्यास बनाउने गुरु उहाँ नै हुनुहुन्थ्यो। उहाँ सिद्ध योगी हुनुहुन्थ्यो। उहाँ भन्नुहुन्थ्यो- यह ब्रह्मचारी नहीं हैं, यह तो विलय गतिका योगी है।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रमप्रति निष्ठा

डमरुबल्लभ खतिवडा

सत्व, रज, तमो गुणात्मिका प्रकृतिदेखि पर रहेका परात्पर परमेश्वरको पूर्ण बोध गरिसक्नुभएका हाम्रा आराध्य गुरुवर श्री १०८ स्वामी ब्रह्मलीन विवेकानन्द पुरी महाराज वितराग, श्रोत्रिय र ब्रह्मनिष्ठ हुनुहुन्थ्यो भन्ने कुरामा कसैको पनि विमति नहोला। उहाँलाई सांसारिक कर्मकाण्ड, जनजाल याने भौतिक प्रपञ्चले कत्ति पनि प्रभाव पारेको थिएन तापनि मन, वचन र कर्मले वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण एवं सम्बद्र्धन गर्नका लागि हरहमेशा उहाँ चिन्तित हुनुहुन्थ्यो। जसको फलस्वरुप उहाँले नेपालको पूर्वी भाग झापा जिल्लाअन्तर्गत चारपानेमा संस्थापित विवेकाश्रम एवं साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयले समाजलाई जुन योगदान दिइरहेको छ, यो अविस्मरणीय र प्रशंसनीय छ। शास्त्रमा भनेको पनि छ—

पुंशां किलैकान्तधियां स्वकानां
या सम्पदो दिवि भूमौ रसायां
न राति यद्द्वेष उद्वेग आधि
र्मदः कलिव्र्यसनं संप्रयास। भा.ष.अ.२२ ।

यो सिद्धान्तलाई स्वामीजीले अत्यन्त सुदृढताका साथ व्यवहारमा उतार्नुभएको थियो। त्यसैले त उद्धवजीलाई श्रीकृष्णले भन्नुभएको हो— अनुव्रजाम्यहं नित्यं पुययत्यंग्रीरेणुभी

स्वयं हि तीर्थानी पुनन्ति सन्तः

अतः यो गुरुकुललाई केवल अध्ययन र अध्यापन याने जीविकोपार्जनको साधन मात्र नसम्झेर अध्यात्मिक चेतनाको उर्वरभूमिको रुपमा साकार गराउने प्रयास गर्नुपर्छ भन्ने धारणालाई सुदृढ पार्ने हामी सबैको परम कर्तव्य र लक्ष्य पनि हो।

अब संस्थाको संरक्षण र सम्बद्र्धन कसरी सुदृढ हुन्छ भन्ने सङ्कल्प शक्ति र इच्छाशक्ति सबल एवं सुदृढ हुनु सबैमा आवश्यक छ भन्दै आश्रमप्रति निष्ठा प्रकट गर्दछु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकाश्रम

✍ पं. श्री डिल्लीराम रिजाल

पूर्वीय सभ्यता र संस्कृतिको परम्परा आज पनि कायमै छ। नेपालमा आश्रमद्वारा सञ्चालित गुरुकुल परम्पराको इतिहास लामै छ ।भोजपुरको दिङ्लामा स्थापित षडानन्द आश्रमको गुरुकुलीय परम्परा, प्युठान स्वर्गद्वारी आश्रम र पाठशाला, देवघाटको महेष सन्न्यास आश्रम, गलेश्वर आश्रम, काठमाडौंको नेपाल वेदविद्याश्रमलगायत यसका उदाहरण हुन्। यस्तै आश्रमहरूको कोटीमा चारपानेस्थित श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयलाई राख्न सकिन्छ।

यस आश्रममा रामनवमी, कृष्णाष्टमी, शिवरात्रि, तीज, ऋषिपञ्चमी, अनन्तचतुर्दशी, जनैपूर्णिमा जस्ता पर्वहरूमा विधिविधानपूर्वक तत्तत् देवताहरूको आराधना तथा उत्सव हुने गर्छ। अखण्ड हरिनाम सङ्कीर्तन बिहान-बेलुकाको नित्य आराधना, पूजा सदैव यस आश्रमले गर्दै आएको छ। हरेक वर्षको माघको शुक्ल पक्षमा यहाँको वार्षिकोत्सव हुने गर्छ।

मैले शिक्षाको ज्योति फैलाउन पाएको विद्यालय श्री श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.को स्वर्ण जयन्तिका अवसरमा प्रकाशन हुन लागेको स्मारिकाले इतिहासको गौरवतालाई समेटेकाले अत्यन्त खुसी महसुस गरेको छु। मलाई यस कृतिका लागि लेख लेख्न हौसला दिने यस संस्थाका महासचिव एवम् श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.का अध्यक्ष पं. श्री छन्दुराम भण्डारीप्रति आभार व्यक्त गर्दछु।

सदैव शिक्षाको उन्नयनमा आउने सबैमा एक मात्र नाम श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.ले आगामी शैक्षिक सत्रमा समयसापेक्ष शिक्षा, शिक्षामा नैतिकता, व्यवहारिकता एवम् जीवनोपयोगी शिक्षामा जोड दिनसकोस्। यस संस्थाका लागि अहोरात्र निष्पक्ष रुपले डटिरहने कार्यकारिणी समिति, गुरुजन, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, संस्थाका आजीवन सदस्य, अन्नदाता सम्पूर्णमा साधुवाद भन्दै स्वर्ण जयन्तिको अपार शुभ कामना दिन चाहन्छु। अस्तु !

✍ अर्जुनधारा न. पा १ साधुटार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरो देश मेरो स्वर्ग

✍ **भरत भट्टराई**

प्रकृतिक सुन्दरताले सजिएको पूर्व मेचीदेखि पश्चिम महाकालीसम्म फैलिएको विश्व मानचित्रमा उच्च सानका रूपमा परिचित मेरो देश नेपाल अटल छ। विश्वका सात महादेशमध्ये एसिया महादेशमा दुई ठूला राष्ट्र भारत र चीनका बिचमा रहेको एक स्वतन्त्र भूपरिवेष्टित देश हो। शान्तिका अग्रदूत गौतम बुद्धको जन्म भएको, विश्वको उच्च शिखर सगरमाथाको देश, विश्वका साना देशमध्ये एक हो, तर यसको नाम विश्वभरि नै फैलिएको छ। तराईको धोती,पहाडको टोपी र हिमालको बख्खुमा समेटिएको हिमाल, पहाड, तराईले ढाकिएको भौगोलिक धरातल हो। यस देशमा असारे भाका, लोक झ्याउरे लय, देउडा, बालुन, खैंजडी, मालसिरी, तामाङ सेलो, रामलीला, सँगिनी गुञ्जिरहेका छन्। बहुजातीय, बहुभाषिक र बहुसांस्कृतिक मेरो देशमा डाँफे, मुनाल, कस्तूरी, मृग, हात्ती, गैंडा जस्ता जङ्गली पशुपक्षीहरू खेलिरहेका छन्। विविध भाषा, धर्म, संस्कार र संस्कृति आदिको अपूर्व सङ्गम स्थलका रूपमा विकसित भएको छ। सद्भाव र सहिष्णुता मेरो देशको विशेषता हो। यहाँ कला, संस्कृति भूगोल इतिहास, प्रकृति, प्राकृतिक जीवजन्तु आदिको सग्लो रूप पाइन्छ। मादल, खैंजडी, पञ्चेबाजाको तालमा मेरो देश इतिहास गाउँछ। हाम्रा संस्कृतिहरू ओकल्दा दशैं, तिहार, ल्होसार, छठ, उँधौली, उँभौली, गाईजात्रा, धाननाच, बिस्केट जात्रा, साकेला आदिमा मेरो देश विजयोत्सव मनाउँछ। त्यसैले मेरो देश यहाँको भूगोल, प्रकृति, संस्कृतिमात्र होइन यी सबैको समष्टि रूप हो। मेरो देशका यी पहिचानहरूलाई मैले सधैं बचाइराख्न सके मेरो देश विश्वमा नै विराट् र महान् रहन सक्छ।

मेरो देशमा विश्वका कुबेर लोभिन सक्ने प्राकृतिक सम्पदाहरू रहेका छन्। यहाँ कहिल्यै आरोहण पुरा नहुने एकपछि अर्को, अर्कोपछि अर्को अवसरका रूपमा हिमशृङ्खलाहरू छन्। यहाँ मनमोहक हिमालहरू उच्च लेकाली हिमकुण्डहरू पाइन्छन्। यी मनमोहक सौन्दर्यमा रमाउन चाहनेहरूलाई लामो वा छोटो दूरीका पदयात्राको लागि

✍ *शिक्षक, श्री साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. बिर्तामोड,-२, चारपाने*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहज व्यवस्थापन गरिएको छ। यहाँका नदीहरू जलविहारका दृष्टिले अतिउपयुक्त र आनन्ददायक छन्। मेरो देश अनगिन्ती झरनाहरू, तालतलैयाहरू, लेकबेंसी, समथर भूभाग, खोँच र उपत्यकाजस्ता प्राकृतिक विविधताले बेहुली सिँगारिएझैं सिँगारिएको छ। विविध प्राकृतिक सम्पदाले ढाकिएको मेरो देशमा जस्तो वातावरणबाट आएका मानिसलाई पनि स्वागत गर्दछ। मेरो देशले गर्मीमा आँत हर्हराएको मानिसहरूलाई तराईमा उत्पादित खर्बुजा र आँपले आनन्द दिन सक्छ भने हिमाली क्षेत्रमा विविध रोगका कारण भौतारिएका मानिसहरूलाई हिमाली जडिबुटीले औषधोपचार गर्न सक्छ। मेरो देश मानिसले जस्तो चाहना राख्यो त्यस्तै भौगोलिक तथा प्राकृतिक वातावरण प्रदान गर्न सक्छ। त्यसै कारण मेरो देश सानो भए पनि आँखाको नानीझैं सम्मानित र गर्वका साथ बाँचेको छ। विश्वमा जलस्रोतको दोस्रो धनी देश भनेर चिनिएको मेरो देश प्राकृतिक स्रोत र साधनमा अत्यन्त धनी छ। स्वच्छन्द बगेका यहाँका नदीहरूमा पानीमात्र बगेको छैन, पानीसँगसँगै विद्युत्को सम्भावित ठूलो धनराशि बगेको छ।

मेरो देशका वनजङ्गल, पहाड, हिमालमा हरियाली र हिउँको खानीमात्र थुप्रिएको छैन यहाँ त विश्वलाई निरोगी पार्न सक्ने अनेकौं जडीबुटीको भण्डारण छ। जडीबुटीरूपी अर्थतन्त्रको विशाल खानीलाई मेरो देशले संरक्षण गरेको छ। जातीय, सांस्कृतिक, भाषिक तथा भौगोलिक विविधताको देशका रूपमा परिचित मेरो देश हरेक क्षेत्रमा नवीनता पस्कन तयार छ। त्यसैले मेरो देश मेरो स्वर्ग हो। स्वर्ग समानको मेरो देशलाई नेतृत्व गर्ने राजनीतिकर्मीहरूले अहिले देखिएका विकृति विसङ्गतिको अन्त्य गर्न पहल गर्नु अतिआवश्यक छ। आफ्नो व्यक्तिगत स्वार्थलाई छाडेर देश र जनताको हितमा काम गर्न सक्ने सोचका साथ नेतृत्व अघि बढ्न प्रयास गरे नेपालमा जन्मिएको सार्थक हुनेछ। यहाँका ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्वका सम्पदाहरू नासिने र मासिने छैनन् संरक्षित हुनेछन्। नवीन चेतना र चिन्तन नै राष्ट्रनिर्माणका आधारहरू हुन्। अनेकतामा एकता मेरो देशको गौरव हो। प्राकृतिक र सांस्कृतिक स्रोत-साधनले सम्पन्न मेरो देशको विविधताले विश्वलाई आकर्षण गर्न सक्छ। मेरो देश विश्वमा उच्च नुरका साथ अग्र स्थानमा रहन सक्छ, त्यसैले मेरो देश मेरो स्वर्ग हो।

यस्ता गरिमामय देश नेपालको पूर्वी भाग झापा जिल्लाको चारपानेमा विगत ५० वर्षदेखि वैदिक वाङ्मयको अध्ययन, अध्यापन गर्दै आचारवान सभ्य समाजको निर्माणमा निरन्तर लागेको संस्था विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको स्वर्ण महोत्सवको सफलताको कामना गर्दै यो लेखलाई यत्तिमै बिट मार्दछु ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्रीय विषय खण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्मदर्शने मानवीय-मूल्यानि

✍ प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी

ओं नमो धर्माय महते। साम्प्रतं "धर्मदर्शने मानवीय-मूल्यानि" इति विषयमाश्रित्य किञ्चित् प्रस्तोतुमिच्छामि। तत्र सर्वादौ धर्मपदं विविच्यते। मानवीय-सद्‌गुणगणानां समूह एव धर्मपदवाच्यो भवति। सद्‌गुणा एव मनुष्यैर्धारणीया भवन्ति न त्वसद्‌गुणाः। इममेव भावं प्रकाशयतां भगवता मनुना कथितम् 'धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।' अस्मन्मनीषिभिधर्माधर्मयोः पुण्यापुण्ययोः शुभाशुभयोश्च सम्यक् प्रकाशनं विधाय रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादिवदिति निष्कर्षः प्रदत्तः।

एवमेव दर्शनपदमपि किञ्चिद् विचारमर्हति। दृश्धातोर्निष्पन्नो दर्शनशब्दो वस्तुतस्तु ज्ञान-पर्याय एव। यद् वस्तु यथा विद्यते तस्य तेनैव रूपेण ज्ञानमनुभूतिर्वा दर्शनमित्यभिधीयते। यद्यपि सामान्य व्यवहारकालेऽपि बहुधास्माभिर्दर्शनपदं प्रयुज्यते किन्त्वत्र प्रयुक्तं दर्शनपदं तत्त्वदर्शनपरं तत्र बहुभिः सम्यगिति पदं संयोज्य सम्यक्दर्शनमित्यपि प्रयुज्यते। सम्यक्पदयोजनेन सामान्यदर्शनात् तस्य भेदः सूचितः। बौद्धदर्शने सम्यग्दृष्टिपदं प्रयुक्तम् अवलोक्यते। दर्शनप्रयोजनं निरूपयता भगवता मनुनापि समुल्लेखि-

सम्यग् दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्ननिबध्यते। दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते॥

इत्थमुभयोरर्थज्ञानानन्तरं धर्मदर्शनपदं विविच्यते। धर्मस्य शुभमार्गस्य दर्शनं ज्ञानं धर्मदर्शनं तस्मिन् धर्मदर्शने, मानवीयमूल्यानि इत्यस्माकं प्रतिपाद्यविषयः। अत्र तावत् किं मानवीयमूल्यं यतो हि जगति विद्यमानाः सर्वेऽपि जीवा आहार-निद्राभयमैथुनादिस्वाभाविककर्माणि तु कुर्वन्त्येव, तत्र पशुमानवयोर्न कोऽपि भेदो दृश्यते। अत एव शास्त्रेणोच्यते-धर्मेण हीनाः पशुभिः समाना :॥

धर्मदर्शने विज्ञाते सति सर्वेषु प्राणिषु एकात्मबुद्धिर्जायते। एकात्मबुद्धियुक्तो जनः कदापि कस्यापि हानये यत्नशीलो नैव भविष्यति। अहिंसा, सत्यम्, अस्तेयम्, ब्रह्मचर्यम्, अपरिग्रहः, दया, क्षमा, प्रेम, सहयोगप्रभृतीनि मानवीयमूल्यानि भवन्ति। कस्य मानवस्य कियन्मूल्यमिति एभिः सद्‌गुणैरेव निर्धार्यते। येषु मानवेषु यावन्तः सद्‌गुणास्तेषां मूल्यमपि तावदेव। अष्टादशपुराणानुसारं प्रकाशयता केनापि विदुषा कथितम्

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

धर्मदर्शनबोधयुक्ततायां सत्यां-

✍ अध्यक्ष : तुलनात्मकधर्मदर्शनविभागस्य, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये, वाराणस्याम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

इदं भगवद्वाक्यं प्रतिष्ठितं भवति । सर्वत्र आत्मदृष्टिः भगवद्दृष्टिर्वा जायते। सर्वत्र भगवद्दृष्टियुक्तो जनः कमपि जनं कर्मणा न तुदति न वा क्लेशान्वितं करोति। सर्वधर्माणां सारभूतं वस्तु किमिति जिज्ञासायां समुत्पन्नायां तत्समाधीयते पद्येनानेन–

श्रूयतां सर्वधर्मस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

अनाद्यनन्तेऽस्मिन् भवप्रवाहे सर्वे प्राणिनः सुखमिच्छन्ति। न कोऽपि मानवः, पशुः, पक्षी, कीटो वा दुःखमिच्छति। विवेकाभावात् सर्वसुखोत्पादनकर्मणि मनुष्येतरजीवा न तावत् सफलाः। तेषु जीवेषु मनुष्यः श्रेष्ठः प्राणी मन्यते। उक्तञ्च भागवते शास्त्रे–दुर्लभो मानुषो देहः।

किन्तु खेदस्य विषयोऽयं विद्यते यद् एवंविधं सर्वगुणगणविशिष्टं मानुषं जन्म लब्ध्वापि मानवाः प्राकृतिक–काम–क्रोध–लोभ–मोह–मद–मात्सर्यादिदोषदूषिताः पशुतुल्या जायन्ते। ते परस्परं द्वेषयुक्ताः ताडनहननादिकर्माणि कुर्वन्तो मानवं जन्म कलङ्कयन्ति। एतान् विचित्रकर्मपरायणान् शुभाशुभकर्मप्रवृत्तान् लोकान् विलोक्य साश्चर्यं समुट्टङ्कितं भगवता व्यासेन श्रीमद्भागवते–

प्रायेणैतद्भगवत ईश्वरस्य विचेष्टितम्। मिथो निघ्नन्ति भूतानि भावयन्ति च यन्मिथः॥

लोके मानवानां द्विधा प्रवृत्तिर्दृश्यते। तत्र केचन धर्मदर्शन–तत्त्ववेत्तारः सदा सर्वभावेन सर्वसेवार्थं तत्परा दृश्यन्ते। त इत्थं चिन्तयन्ति–

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्। कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

अपि च–

क्रीडन्तु मम कायेन हसन्तु विलसन्तु च। दत्तस्तेभ्यो मया कायः चिन्तया किं ममानया॥

ते केवलं सर्वान् प्राणिनः सुखिनः कर्तुं चेष्टन्ते। यतो हि तेषां दृष्टौ सर्वत्र भगवतस्वरूपमेव भवति।

ते मन्वते–

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः॥ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्॥

किन्तु ये धर्मदर्शनतत्त्वशून्या भवन्ति, ते स्वकीयं सुखमेव सर्वोत्तमं सुखं मन्यन्ते। यया कयापि रीत्या स्वसुखावाप्तये यतन्ते। मम कर्मणा अन्यो दुःखं लभते इति न तेषां चिन्तनविषयो भवति। ते–

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः, ईहन्ते कामभोगार्थम् अन्यायेनार्थसञ्चयान्।

एवं भावभावितास्ते स्वान् अजरामरवन् मत्वा परान् तुदन्ति, वञ्चयन्ति च। एवंविधा जना यद्यपि संसारे आपाततः सुखिनो दृश्यन्ते परं तेषां सुगतिः नैव सम्भवति। इह लोके परत्र च ते दुःखमेवानुभवन्ति। उक्तञ्च बोधिचर्यावतारे–

दुःखमेवाभिधावन्ति दुःखनिःसरणेच्छया। सुखेच्छयैव संमोहात् स्वसुखं घ्नन्ति शत्रुवत्॥

एवंविधजनविषये गीतायामपि सूचितं भगवता श्रीकृष्णेन–

तानहं द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥

अत्र निष्कर्षरूपेणेदमेव वक्तुमिच्छामि यत् जगतीतले यो यथा कर्म कुरुते तथा फलं लभते। शुभकर्मकारी शुभफलेन युज्यते। अशुभकारी चाशुभेन। अतः धर्मस्य दशलक्षणात्मकस्य सर्वत्र सम्यग्दर्शनं कृत्वा मनुष्येण सर्वत्र समदृष्ट्या प्रवर्तितव्यम्। मनुस्मृतौ प्रतिपादितानि धर्मस्य दशलक्षणानि न केवलमेकधर्मलक्षणानि अपितु सर्वधर्मसाधारणानि सन्ति। तानि च–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

जगति विद्यमानाः सर्वे धर्माः सम्प्रदायाश्च धर्मलक्षणान्येतानि स्वीकर्तुमर्हन्ति। एवमेव तत्त्वसाक्षात्कारकं दर्शनमपि सर्वग्राह्यम्। न तत्र देशकालादिको भेदः। सर्वदेशकालजातिसम्बद्धा जनाः सोत्साहं सम्यग्दर्शनमधिगन्तुमर्हन्ति समधिगते धर्मदर्शनतत्त्वे–

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

इत्थं धर्मदर्शने सुप्रतिष्ठिते प्रत्येकं मानवेषु भगवद्बुद्धिर्जायते, आत्मबुद्धिर्जायते, सम्मानबुद्धिर्जायते, सहयोगभावना जायते। शोकमोहादयो दोषा दूरङ्गता भवन्ति।

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत इति औपनिषदिकी सूक्तिर्मानसपटले विराजते। ततश्च
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥
सूक्तिरियं चारितार्थ्यं भजते। ॥ जयतु संस्कृतम् ॥

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यज्ञसंस्कृत्या परिपूरितं समग्रं जगत्

✍ प्रा.डा. काशीनाथ न्यौपाने

वेदसंस्कृतिमधिकृत्य विवेचनं कदाचिन्मादृशानां न सम्भवं यद्यपि तथापि विदुषामादेशमपाकृत्य न शक्यं स्थातुमिति "नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्रिण" इति न्यायमनुसृत्य च स्वात्मशक्तिमनतिक्रम्यैव किमपि सङ्क्षेपेण संस्कृतिरिह विवेच्यते याज्ञिकानाम्।

सृष्टिस्वरूपं द्विविधमिति वेदधर्ममाह आचार्यो यथा

"स भगवान् सृष्ट्वा इदं जगत् तस्य च स्थितिं चिकीर्षुः मरीच्यादीन् अग्रे सृष्ट्वा प्रजापतीन् प्रवृत्तिलक्षणं धर्मं ग्राहयामास वेदोक्तम्।

ततः अन्यान् च सनकसनन्दनादीन् उत्पाद्य निवृत्तिलक्षणं धर्मं ज्ञानवैराग्यलक्षणं ग्राहयामास।

द्विविधो हि वेदोक्तो धर्मः प्रवृत्तिलक्षणो निवृत्तिलक्षणश्च।

जगतः स्थितिकारणं प्राणिनां साक्षाद् अभ्युदयनिःश्रेयसहेतुर्यः स धर्मो ब्राह्मणाद्यैर्वर्णिभिराश्रमिभिश्च श्रेयोर्थिभिः अनुष्ठीयमानः।"

इह प्रवृत्तिलणं धर्ममिति निर्देशनेनाचार्यो यज्ञानामेवोपदेशं प्राह। प्रवृत्तिलक्षणं विना निवृत्तिलक्षणस्या- सम्भवादपि सर्वादौ यज्ञानामेव स्थितिं जगाद। यतो जगतः स्थितिरपि प्रवृत्त्यैव सञ्जायते। तथा च प्राणिनां निःश्रेयसो हेतुत्वमपि तत्रैवाभ्युदयपूर्वकत्वात् सर्वत्र यज्ञानामाहात्म्यं संस्कृतिश्च वर्वर्ति सर्वोपरि।

एवमेव भगवान् यास्कः प्राह -वेदमन्त्रार्थतत्त्वानुशीलनमधिकृत्य यथा "साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः, तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदाङ्गानि चेति।"

इत्थं मन्त्रद्रष्टार ऋषयो साक्षात्कृतधर्मभ्यो वेदान् उपदेशयाम्बभूवुः। न केवलं वेदान् एव, अपितु वेदाङ्गान्यपि ते उपदेशयामासुः। ते च वेदाश्चत्वारः-ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथऽर्ववेदश्चेति। शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति वेदाङ्गानि षट्। पुराणन्याय-मीमांसा धर्मशास्त्राणि चेति चत्वार्युपाङ्गानि। उपपुराणानामपि तत्रैवान्तर्भावः। न्याये वैशेषिकस्य, मीमांसायाञ्च वेदान्तानामन्तर्भावः। रामायण-महाभारत-साङ्ख्य-पातञ्जल-

✍ *बौद्धदर्शनविभागो नेपालसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाशुपत-पाञ्चरात्रादीनाञ्च धर्मशास्त्र इति चतुर्दश विद्याः। तथाहि

पुराणन्यायमीमांसा धर्मशस्त्राङ्गमिश्रिताः।

वेदाःस्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश॥ *(अग्नि पु.१.१७)*

आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्ववेदोऽर्थशास्त्रञ्चेति चत्वार उपवेदाः। एषां वेदेष्वन्तर्भावः। पृथग्गणनया त्वष्टादश विद्याः।

वेदेषु यज्ञविषयिकी दृष्टिरित्थं विलोक्यते

"यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।" (शुक्ल यजुर्वेदः ३१.१६.)

अनेन ज्ञायते यद् यज्ञस्य माहात्म्यम्। यज्ञानां प्रारम्भो यज्ञादेवाभूदिति यज्ञमयत्वं सर्वकर्मणामनुभूयते। यज्ञे खलु भवन्ति अनेकविधानि वस्तूति। परन्तु यज्ञस्य कास्ति भरिभाषा ?

देवतामुद्दिश्य समन्त्रक द्रव्यत्यागो याग इति तदीयं लक्षणं मीमांसकैरुररीकृतम्। ताश्च देवता अनेकाः सन्ति। तासु काषाञ्चन नामानि निम्नतया विलोक्यन्ते- इन्द्र-अग्नि-सोम-वायु-सूर्य-सविता-विश्वेदेवा-मित्र-वरुण-सरस्वती-अश्विनीकुमार-आदित्यगण-अर्यमा-वृहस्पति-द्यावापृथिवी-उषा-पूषा-मरुद्गण- ऋगुगणादयः सन्ति।

इमा देवताः। ताः समुद्दिश्य द्रव्यत्यागो विधीयते। तत्र समन्त्रकत्वं परममावश्यकम्। अमन्त्रकता न खलु स्वीक्रियते। मन्त्राश्च प्रयोगसमवेतार्थस्मारकत्वं ऋतुक्रमे.भवन्ति। यथा

प्रयोगसमवेतार्थस्मारकत्वं ऋतुक्रमे। मन्त्राणामर्थवत्त्वं तन्न स्यादन्यत् प्रयोजनम्॥१॥
उत्तमामन्त्रणास्यन्तत्वन्तलिङ्गादिमन्त्रणात्। मन्त्रता यन्त्रिता तासां श्रुतीनां वाक्कदक्बके॥२॥
तेषां दृष्टार्थकत्वाच्च यागन्तःस्मरणादपि। उच्चारणमदृष्टार्थं मन्त्राणां नाभ्युपेयते॥३॥
ब्राह्मणश्रौतवाक्यानां सार्थक्यं चार्थवादतः। परिसङ्ख्यात्मकत्वेन मन्त्राणां क्वचिदुह्यते॥४॥
मन्त्रद्वारार्थबोधे तु साक्षाद् वाक्येऽवधारिते। तदन्तर्ब्राह्मणोक्तं तद् वाक्यं तेन निरुध्यते॥५॥
मन्त्रस्मर्तव्यतौचित्यान्नियमात् परिनिष्ठितात्। तेन तद् व्यतिरिक्तत्वे क्वचित् कर्म न युज्यते॥६॥
समन्त्रं कृतयागस्य फलं तत् तद् व्यवस्थितम्। ततस्ते तत्पदार्थान्तःस्मृतेः सन्त्युपकारकाः॥७॥
चोदनान्तर्गतं मन्त्रप्रामाण्यमवसीयते। क्वचिद्विश्वजितो न्यायान्नामधेयाच्च तत् क्वचित्॥८॥
नियमोक्तं फलं तत्र मन्त्रे चेच्चरमोदितम्। पारम्पर्येण तत्रैतददृष्टार्थत्वमिष्यते॥९॥
ऋतेमन्त्रात्क्वचिद्यागःस्वातन्त्र्याच्चेद्विधीयते।तन्निष्फलंभदेन्नूनमपूर्वानुदयादिह॥१०॥

(मीमांसा पदार्थविज्ञाने पृ.४९(४०)

उदाहरणानि यथा-

अग्नये जुष्टं निर्वपामि (तै.सं.१.१.४.१.) इत्युत्तमपुरुषः।

अग्ने यशस्विन् यशसे ममर्यय (तै.स.१.१.९.२.) इत्यामन्त्रणम्।

उर्वी चासि वस्वी चासि (तै.सं.१.१.९.) इत्यस्यन्तम्।

इषे त्वोर्जे त्वा (तै.सं.१.१.१.) इत्यस्यन्तरूपम्।

लक्षणस्योपयोगश्च पूर्वाचार्यः प्रदर्शितः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋषयोऽपि पदार्थानां नान्तं यान्ति पृथक्त्वशः ।

लक्षणेन तु सिद्धानामन्तं यान्ति विपश्चितः ॥ (शा.भा.२.१.७.)

द्रव्यत्यागविषये सन्ति मतजातानि। किन्तु सर्वत्र शास्त्रोक्तविधिना विविधेषु खलु यागेषु विविधाः सामग्र्यः त्यज्यन्ते समर्प्यन्ते। तत्सर्वं याज्ञिककृत्यैरेवानुगन्तव्यं भवति।

अग्निः

अग्निरेव देवानां हव्यवाहकत्वेन प्रसिद्धः। तस्य च ऋग्वेदे प्राथम्येनोपस्थापनत्वात्तस्य माहात्म्यं यज्ञमयत्वञ्च सुतरां प्रसिद्धम्। ऋग्वेदे च यथा–

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् (ऋ १.१.१.)

तथैव द्वितीयमपि मन्त्रपदं तत्रैव–

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरिड्यो नूतनैरुता सदेवाम् एह वक्षति।

एवमेव सन्ति बहूनि मन्त्रपदानि खल्वग्निमधिकृत्य । इयञ्च यज्ञसंस्कृतिर्न केवलं कर्मकाण्डगत– वैशिष्ट्यमावहति किन्तूपनिषत्स्वपि तद्वदेवानुभूयते। यथा दृश्यत ईशोपनिषदि–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद्धनम् ॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जीजिविषेच्छतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतो न कर्म लिप्यते नरे॥ (ईशोपनिषद् १.२)

अत्र तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा इति त्यागपूर्वकस्य भोगस्य तात्पर्यं यज्ञपूर्वकमिति याज्ञिकाः स्वीकुर्वन्ति। त्यागो नाम देवतामुद्दिश्य द्रव्यत्याग इति पूर्वमेव प्रतिपादिततरम्।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि इत्यत्रापि यज्ञीयं कर्मैवेति याज्ञिका आमनान्ति।

एवमेव बृहदारण्यकोपनिषदि–

ॐ उषा वा अश्वस्य मेध्यस्य शिरः। सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणो व्याप्तमग्निर्वैश्वानरः संवत्सर आत्माश्वस्य मेध्यस्य। द्यौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी पाजस्यं दिशः पार्श्वे अवान्तरदिशः पर्शव ऋतवोऽङ्गानि मासाश्चार्धमासाश्च पर्वाण्यहोरात्राणि प्रतिष्ठा नक्षत्राण्यस्थीनि नभो मांसानि। ऋवध्यं सिकताः सिन्धवो गुदा यकृच्च क्लोमानश्च पर्वता ओषधयश्च वनस्पतयश्च लोमान्युद्यन्पूर्वार्धो निम्लोचञ्जघनार्धो यद्विजृम्भते तद्विद्योतते यद्विधूनुते तत्स्तनयति यन्मेहति तद्वर्षति वागेवास्य वाक् (१.१.)

इह खलु ब्रह्मोपदेशायापि यज्ञस्यैव स्तुतिः। अश्वस्य मेध्यस्येत्यादिना यज्ञतत्त्वानि समुपस्थाप्यन्ते। अथवा आत्मज्ञानायोपदिष्टमपि शास्त्रं यज्ञादेव प्रारभ्यत इति यज्ञमयत्वं सर्वज्ञानानां नितरां सुष्पष्टम्।

स्मार्तं यज्ञमयत्वम्

न केवलं वैदिकग्रन्थेषु किन्तु वेदानुकूलस्मृतिग्रन्थेस्वपि यज्ञानां संस्कृतिं स्मार्ता ऋषयः समुपस्थापयामासुः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यथा पञ्च महायज्ञानां चर्चा बहुत्र समुपलभ्यत एव। महायज्ञत्वं नामाल्पकृत्येन महत्फलप्राप्तिरिति स्मार्तविदुषामाशयः। प्रत्यहं गृहिभिः क्रियमाणं पञ्चविधं कर्मापि यज्ञशब्देनैव निर्दिश्यत इति यज्ञस्य सार्वत्रिकी स्वीकृतिः। यथा मनुः–

अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।

स्वाहा दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्। (मनुस्मृतिः२.११.)

सृष्टिविद्यैव वेदविद्येति सुस्पष्टम्।

अणोरणीयान् महतो महीयान् इत्युक्तं विद्यत एव। अणुमहतोः तस्यैवाक्षरतत्त्वस्य व्यक्तिरस्तीति विद्वन्मतम्। अस्य तत्त्वस्य स्रोतो विनाशि विद्यते।

यत्किमपि समष्टि ज्ञानं ज्ञातत्त्वं वाविद्यते तत्सर्वमपि वेद ऋषिभिः प्रतिष्ठापितमिति याज्ञिकमतम्। तच्च ज्ञानं वाग्रूपेण विराजते वेदेषु। सा वाक् द्विधैव विभक्तास्ति।

(१) परा (२) अपरा चेति। अपरा खलु स्थूलशब्दमयी सती बुद्धितत्त्वं स्पृशति। परावाक्तु मूलमक्षरतत्त्वमेव या हृदयं स्पृशति, तदन्तश्च विशति तथा च स्वशक्त्या जीवनं निर्माति। इयमेव सहस्राक्षरा वाक् चोच्यते। अनयैव गायत्र्यादिसप्तछन्दसां वितानता प्रसरति। यथोक्तं

अक्षरेण मिमते सप्तवाणीः (ऋ.१.१६४।२४)

याज्ञिकैर्देवानां पूजा विधीयते। देवतानां सङ्ख्या बह्वी। परं तासां देवतानां मूलं किमिति विचार्यमाणे किञ्च शक्तिश्च केति चिन्तायां वैदिकैरत्र प्रजापतिरयमिति निर्णीतम्। प्रजापतिश्च द्विधा संविभक्तः। अनिरुक्तो निरुक्तो वा ह्यमूर्तो मूर्तः परोक्षः प्रत्यक्षो वा। अथवा ऊर्ध्वोऽधश्च। किं वा स एष वा। प्रत्यक्षप्रजापतितत्त्वमात्मत्वेन विराजते। इदं दृश्यमानं प्रपञ्चजातमपि तत्रैवान्तर्भवति।

विश्वातीतं रूपञ्च प्रजापतेः तत्त्वेन भासते। प्रजापतिरेवाजायमानत्वेन पुनर्बहुधा जायमानत्वेनापि वरीवर्ति। तदुक्तं भगवत्यपौरुषेये मन्त्रसंहितायाम्–

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो वहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् हतस्थुर्भुवनानि विश्वा॥ (यजुर्वेदः ३१।१९)

अजायमानस्वरूपमेव विश्वातीतमुच्यते।

अस्यैव प्रजापतेः शक्तिः सर्वदेवेषु प्रसरणेन ते सर्वे शक्तिमन्तो भवन्तो हवींषि गृह्णन्ति।

ताश्च देवता प्रामुख्येन इमाः सन्तीति पूर्वमेव विवृतमेव।

अग्निविद्या

वैदिक–यज्ञविद्यादृष्ट्या प्रजापतिरेव मुख्यं तस्यैव संवत्सरविद्या चाग्निविद्या चेति प्रकारद्वयम्। अग्निविद्यैव शक्तिरस्ति तथा संवत्सरविद्या कालतत्त्वमिति द्वयोः सम्मिलितस्वरूपमेव यज्ञविद्येति निश्चीयते। वेदतत्त्वज्ञानानुदृष्ट्या अग्निविद्यैव सर्वोपरि विराजते। सैव च यज्ञतत्त्वम्।

यज्ञकर्मसु ऋत्विजो होतारो यजमानादयो भवन्ति। तत्र होतृशब्दे किञ्चिद् वैशिष्ट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यं विलोक्यते। होतृशब्देन देवशक्तेरावहनकर्तृत्वं व्यज्यते। अयं भावो होतृपुरुषकृतावाहनेन बाह्यभूततत्त्वं गृहीत्वा अग्नौ तस्य हवनं विधाय तद् हविर्भूततत्त्वमात्मरूपेण परिवर्तनशीलकारकः शक्तिभूत एव होता भवति। अत एव सर्वेषां यज्ञीयपदार्थानां यज्ञसम्पादनशीलपरिषदश्च किमपि लोकोत्तरं महत्त्वं सर्वदा प्रकटीभूतं सर्वत्र वैदिक–लौकिकसत्साहित्येषु विलोक्यत एव।

यज्ञकर्तृत्वेन स्वयमेव प्रकृतिः सर्वदा संयुक्ता वर्तते।

संवत्सरगत्यैव सा प्रक्रमते। संवत्सरश्च षड्भिर्भागैर्मार्गैर्वा राराजते। अत एवोक्तं शतपथ ब्राह्मणे यज्ञात्मत्वेन सृष्टिः प्रसवितृ भवतीति संवत्सरात्मकः काल उपयुज्यते। इयं च संवत्सरप्रकृतिः चक्रामत्कत्वेन यज्ञात्मकत्वेन च स्वकार्यसञ्चालने प्रवर्तिता भवतीति प्रत्यक्षतया सूक्ष्मेक्षिकया च द्रष्टुं शक्यमेव।

चक्रात्मकत्वं सर्वव्यापि यत एकस्मात् कालस्वरूपाद् निगर्त्य तस्मिन् कालस्वरूपे स्वगत्या समुपस्थितिरेव चक्रात्मिका गतिः।

तस्मिन्नेव काले यानि शक्तिभूतानि बाह्यस्थितानि बलादाकृष्यान्तः समर्पयति सैवस्थितिः यज्ञावस्थेति निर्णयः।

अग्नौ सोमतत्त्वस्याहुतिरेव हवनमिह विद्यते। संवत्सरे एकस्मिन् कालपात्रे अग्निना सोमस्य यावती मात्रा तत्र संपूर्यते सैव यज्ञात्मिका पद्धतिः प्रकृतिर्वा स्थितिश्चेति विद्वन्मतम्। अत एवोक्तम्

संवत्सरो यज्ञः प्रजापतिः (शतपथ १।२।५।१२)। इत्यादिना।

न केवलमेतावदेव किन्तु प्रजापतिः स्वयमेव यज्ञचक्राय यज्ञानामायोजनं सर्वत्र प्रकृतौ सर्वदा भूयादिति धिया स्वयमेव स्वात्मन आहुतिं निर्माय किं वा स्वात्मानमेवाहुतिरूपेण स्वात्मना स्वात्मानं संवत्सररूपवह्नौ जहौ। इत्थं यज्ञविधानमभूदकरोद् वा।

अस्य ब्रह्माण्डात्मकस्य यज्ञस्य यूपे स्वात्मानं पशुत्वेन प्रथमं बबन्ध। स्वत्मानमाहुतिं कृत्वा हुतवान्। अतः प्रजापतिरेव पुरुषः। एतदेवोक्तं–

कासीत्प्रमा प्रतिमा किं निदानम् (ऋ. १०।१३०।३)

एतस्य सर्वस्य गभीरविचारेण प्रकृतिः स्वयमेव यज्ञानामायोजने सर्वदा तत्परेति विज्ञायते। वेदेपिशरदहविरित्युक्तम्। ग्रीष्मञ्चाग्निरित्यपि श्रुतम्। अतो यज्ञसंस्कृतिः सर्वत्र मानवजीवने लसति। न केवलमेतावदेव गर्भाधानसंस्कारादारभ्य यावन्ति कृत्यानि अस्माकं जीवने विधीयन्ते तानि यज्ञमयान्येव। अत एव अन्त्येष्टिरिति मृत्योः सद्य क्रियमाणं कर्म निर्दिष्टम्। इष्टिर्नाम यज्ञः। अनेन विवरणेन ज्ञायते यज्ञसंस्कृतिः पूर्णं जीवनं व्याप्य विराजत इति।

कर्मापि यज्ञमयमेव भूयाद् यज्ञात्मकं कर्म न बध्नाति। अत एवोक्तं भगवता–

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर॥

(गीता ३.९.)

अन्ते चास्माकं संस्कृतिर्यज्ञमयी। तामधृत्यैव जीवनमिदं सफलसोपानमारोहतीति शम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सान्दर्भिक-ग्रन्थसमूहः

अग्निपुराणम्, (सं) रामशङ्कर भट्टाचार्यः,वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत संस्थान वि.२०५५ ।

ईशोपनिषद् गोरखपुर : गीताप्रेस, वि.२०६६ ।

ऋग्वेदसंहिता (सं) प्रसन्नचन्द्र गौतम, काठमाण्डौ : कुलचन्द्र गौतम स्मृति संस्था, सन् २०२१ ।

कविराज, गोपीनाथ, भारतीयसंस्कृति और साधना, पटना : विहारराष्ट्भाषापरिषद्, सन् १९६३ ।

चतुर्वेदी, गिरिधर शर्मा, वैदिकविज्ञान और भारतीय संस्कृति, पटना : विहार राष्टभाष परिषद्, सन् १९६२ ।

न्यौपाने, काशीनाथ, मीमांसापदार्थविज्ञानम् , वाराणसी : इन्डिका बुक्स् पब्लिसर्स, सन् १९९४ ।

बृहदारण्यकोपनिषद् , गोरखपुर : गीताप्रेस,वि २०७४ ।

भगवद्‌गीता (शाङ्करभाष्यसमेता, (अनु.सं.) श्रीहरिकृष्ण दास गोयन्दका, गोरखपुर : गीताप्रेस, वि.२०४६।

शुक्लयजुर्वेद, (सं) स्वामी रामस्वरूप, दिल्ली : चौखम्बाविद्याभवन, सन् १९७३ ।

यास्कः, निरुक्तम् , वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, सन् १९८९ ।

शतपथब्राह्मणम् (स) वेणीरामशास्त्री, वाराणसी : चौखम्बा संस्कृतप्रतिष्ठानम् सन् १९६६ ।

शिवराम किंकर, आर्यशास्त्र प्रदीप, दिल्ली : भारतीय विद्या प्रकाशन, सन् १९९१ ।

सूर्यकान्त, वैदिक देवशास्त्र, दिल्ली : श्रीभारत भारती लिमिटेड, सन् १९६१ ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भक्तिरसविमर्शः

✍ डा.तेजनाथ पौडेल

काव्यशास्त्रे रसस्यातिविशिष्टं स्थानमस्ति। काव्यशास्त्रीयग्रन्थेषु प्रारम्भकालाद् अद्यावधि काव्यशास्त्रविषयिणी चर्चा तद्विषयकं यावच्चिन्तनं च जातं तत्र सर्वैरप्याचार्यैः काव्येषु रसस्य सत्ता अनिवार्यरूपेणाङ्गीकृता। रसानामभिव्यक्तिः सामाजिकानां हृदि रसोद्रेकश्च नाटकस्य काव्यस्य च प्रमुखं लक्ष्यं भवति। काव्येषु काव्यकाराणां, दृश्यकाव्येषु नटानाञ्चेदमेवोद्देश्यं भवति यत्ते पाठकानां सामाजिकानाञ्च हृदि रसोद्बोधनं कुर्युः। 'आस्वादनात्मानुभवो रसः काव्यार्थ उच्यते'[१] इति भरतमुनेः वचनानुसारं काव्यस्य पठनेन, श्रवणेन, दर्शनिन वा यदानन्दः प्राप्यते तदेव रस इति कथ्यते। तस्य निष्पतिश्च विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् भवति[२] विभावेन, अनुभावेन, व्यभिचारिभावेन च व्यक्तः स्वयं तत्तद्रूपेण परिणम्य पिण्डीभावेन प्रकाशितः सचेतसां स्वज्ञानयोग्यमनस्विसामाजिकानां रत्यादि स्थायीभावः रसतां प्राप्नोति। भावाः सामाजिकानां हृदि सर्वदैव तिष्ठन्ति। लौकिके व्यावहारिके च जीवने यदा वयं क्रोधोत्साहजुगुप्सादिभावाननुभवामः तदा तस्य अनुभवस्य प्रभावः अस्माकमवचेतने मस्तिष्के विराजमानो भवति तथा च यदा वयं काव्येषु नाटकेषु वा तत्तद्भावानां चित्रणं पठामः पश्यामो वा तदा स एव विहितो भावः अवचेतनमस्तिकाच्चेतनमस्तिष्के समायाति अयमेव भावः काव्येषु वर्णितिन विभावादिनामभिव्यक्तीभूत्वा रसरूपेण परिणतो भवति अत्रैव वयमानन्दं प्राप्नुमः। संस्कृत-काव्यशास्त्रानुसारमयमेवानन्दः रससंज्ञया ज्ञायते। स तु रसो ब्रह्मानन्दसहोदरो न ज्ञाप्यः, न कार्यः, न नित्यः, न भावी, न वर्तमानः, न निर्विकल्पकवेद्यः, न सविकल्पकवेद्यः, न प्रत्यक्षः, न परोक्षः, नोत्पाद्यो न वाच्यः, किन्त्वलौकिकः स्वप्रकाशः अखण्डस्वरूपश्चास्ति।

रसस्य सङ्ख्यात्वनिर्णयविपये विद्वाँसो विवदमाना एवावलोक्यन्ते। भरतादयः प्राचीनशास्त्रकाराः मुख्यरूपेण अष्टावेव रसान् स्वीकुर्वन्ति[३] मम्मटविश्वनाथप्रभृतिभिराचार्यैः काव्येषु शान्तरसस्यापि सत्ताङ्गीकृता।[४] ततः कालान्तरे रसानां सङ्ख्या विवर्धमाना इव दृश्यते काव्यशास्त्रीयग्रन्थेषु। उज्ज्वलनीलमणिग्रन्थे रूपगोस्वामिनः भक्तिरसस्यापि स्थापनां कुर्वन्ति ते भक्तिरसामृतसिन्धौ भक्तिरसस्यैव मुख्यगौणभेदेन भेदद्वयं स्वीकुर्वन्ति। तेषां मते शान्तः प्रीतिः, प्रेयान् वत्सलं, मधुरञ्च पञ्च मुख्यरसाः, हास्यम्

✍ *असिस्टेन्ट प्रोफेसर, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, श्रीरणवीरपरिसर, जम्मू भारतम्*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अद्भुतं, वीरः, करुणः, रौद्रः भयानकः, बीभत्सश्च सप्त गौणरसाः भवन्ति। इत्थं तेषां मते रसस्य द्वादशा भेदा भवन्ति। ५ अस्मिन् भज्य-आलम्बन विभावः तस्यातुलनीयं सामर्थ्यं सौन्दर्यं सन्तापसन्तप्तजनकपरमकल्याणप्रवणं पावनं रूपञ्चोद्दीपनम् रोमाञ्च नेत्रविकास हृदयस्पन्दनादयोऽनुभावाः हर्षवेगादयश्च व्यभिचारिणः भवन्ति। यदा जन्मान्तरीय-पुण्योपचयेन मानवः आत्मीयजनसम्बन्धमसारं मत्वा नैजमन्तः करणं परमप्रेमास्पदे आनन्दघनसच्चिदानन्दरससागरे परमात्मनि प्रवाहयति तदा तदेव भक्तिशब्दवाच्यतां प्रपद्यते, भक्त्यैव भक्तो भगवन्तं याथातथ्येन विज्ञातुं प्रभवति। भगवान् किल रसरूपः, प्रेममयो वा, तदंशत्वाज्जीवोऽपि तदभिन्न एव परन्त्वविवेकेन मानवः स्वीयान्तः करणप्रेमरसं सांसारिके पुत्रकलत्रस्वजनादौ नियोजयति। तत्समागमेन सुखी तद्वियोगेन च दुःखी जायते। परन्तु यदा तेषां समेषां सांसारिकविषयवासनानां जन्मान्तरीयपुण्यसञ्चयेन यथार्थज्ञानं भवति तदा भक्तिमार्गमबलम्ब्य परमात्मन्येवागाढरतिं कृत्वा सर्वतोभावेन तदालम्बनतत्परो भवति। निरन्तरमेव तस्यालम्बनद्वारा परमात्मनः स्वरूपज्ञानस्याभासं भवति हृदि तदा समाधाविदं सः सर्वदा तस्मिन्नेव निमग्नो जायते। यथा समाधिद्वारा चेतसः समताधिगमात् मानसिको वैषम्यभावः समूलमपसरति, तथैव भगवद्भक्त्या परमानन्दसम्बन्धसत्वात् पापराशिः प्रणश्यति। धर्मशास्त्रानुसारेण प्रबलतरमपि पापकर्म प्रचुरेण प्रायश्चितमाध्यमेन अपक्षीयते। अतः विविधस्मृतिग्रन्थेषु पातकमहापातकोपपातकातिपातकादिनां पृथक् पृथग्रूपेण प्रायश्चित्तव्यवस्था निधारितास्ति। परन्तु भक्तेरयमसाधारणो महिमा यत् सामान्यापि भक्त्या महोग्राण्यपि पापानि प्रणश्यन्ति। भगवद्भक्तिमासादयितुं विचारकाठिन्यं योगपरिश्रमं ज्ञानभक्तिशालित्वं किमपि नापेक्षितम् तदर्थं तु केवलं भगवन्तं प्रत्यनन्यानुरागः सर्वापेक्षितो भवति भगवद्भावभावितो भक्तः किमाचारः कीदृगधिकारः किं श्रेणिकः किं जातीयः कोऽपि कथं न स्याद् यदि जन्मान्तरीयार्जितपुण्यपुञ्जप्रभावात् तस्य चेतसि भगवदनुरागोदयो जायेत तर्हि तं भक्तेः पथश्च्यवयितुं न कोऽपि समर्थः स्यात्। गीतायां स्वयमेवोक्तं भगवता श्रीकृष्णेन-

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।६ अपि चेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग् व्यवसितो हि सः।।७

लोके यथाग्निनाध्मातं सुवर्णं निर्मलं सत् स्वीयं स्वाभाविकं स्वरूपं प्रतिपद्यते तथैव जीवोऽपि भगवद्भक्तिद्वारा मलिनसंस्कारपरिच्युतः अध्यात्ममार्गेऽग्रेसरन् अञ्जनसम्प्रयुक्तं चक्षुः सूक्ष्मं वस्तु इव स्वकीयं वास्तविकं स्वरूपमासाद्यते। ध्यातव्यमस्ति यत् मानवानां कल्याणाय सत्ययुगादौ ज्ञानवैराग्ययोर्मोक्षसाधकत्वेऽपि कलियुगे भक्तेरेव प्राधान्यमस्ति भगवद्भक्तौ च न तपसः आवश्यकता, न वेदादीनामध्ययनमनिवार्यता, न च योगानुष्ठानमपेक्षितमस्ति, न वा ज्ञानमनिवार्यतया कारणमस्ति किन्तु भगवत्यनन्यानुरागमात्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रमेवापेक्षितं विद्यते। तस्माद् भगवद्भक्तौ रूपस्यायुषश्च मूल्यं नास्ति। न च विद्यायाः धनस्य जातेश्चोत्कर्षोऽपेक्षते। न वा सदाचारसद्गुणयोः प्राधान्यमस्ति नापि बलं मुख्यं विद्यते किन्तु अनन्यं प्रेमैव प्रतीक्ष्यते प्रेममयो भगवान्। अतोऽनन्यया भक्तत्या भावितहृदयाः अम्बरीष[८] प्रभृतयो राजानो भगवन्तमर्चयित्वा परमं पदं प्रापुः। सुदामा[९] केवलैः पृथुकतण्डुलैः, गजेन्द्रः[१०] केवलेन पुष्पेण, शबरी[११] च बदरीफलैरेव भगवन्तं तर्पयित्वा स्वं स्वं मनोरथमवापुः। स्मृतिपुराणादिग्रन्थेषु वर्णनमवलोक्यते यत् भगवतो भक्तेन सम कोऽपि प्रियः नास्ति[१२] भक्तस्य प्रगाढया भक्त्या प्रसन्नो भगवान् सर्वमपि परिहाय भक्तस्य कृतेऽलौकिकं कर्म निवर्तयति[१३] असम्भवं च सम्भवयति। यथाक्षिविहिनाः खगशावकाः प्रतिक्षणं मातरं प्रतीक्षन्ते, बुभुक्षिताः वत्साः मातुर्दुग्धं पातुमातुराः भवन्ति यथा वा कापि वियोगिनी वनिता प्रवासिनं प्रियतमं परिरब्धुमुत्कण्ठिता भवति तथैव स्वाराध्यदेवं भगवन्तं द्रष्टुं भक्तानां हृदयं विह्वलं भवति। यथोक्तं श्रीमद्भागवते -

अजातपक्षाः इव भातरं खगाः स्तन्यं यथा वत्सतराः क्षुधार्ताः।
प्रियं प्रियेव व्युषितं विषण्णा मनोरविन्देनु ! दृदृक्षते त्वाम्।।[१४]

अनन्तकरुणावरुणालयः भक्तजनवाञ्छाकल्पतरुः भगवान् भक्तानां सकलमनोरथानवश्यं पूरयति। भगवतः श्रीकृष्णस्य सन्देशमादाय वृन्दावनमुपगम्य तत्र तद्वियोगविह्वलानां गोपीनामपूर्वं प्रेम पर्यालोच्य उद्धवस्य मनसि शङ्काजायत यत् किं भक्तानपि त्यजति भगवान् ? इति। सर्वज्ञो भगवान् श्रीकृष्ण उद्धवस्येमां शङ्कामपनेतुमेव तेन सह कुब्जागेहे गत्वा प्रार्दशयत् यद् यदाहं भक्तिमतीमिमां कुब्जामपि न परित्यजामि, तदा मदर्थमेव परित्यक्तसर्वस्वानां परमभक्तानां गोपीनां परित्यागं कर्तुं कथमहं शक्नोमि। तमेव भावं गर्गसंहितायामेवं निगदितम्-

सैरन्ध्रीमपि संत्यक्तुमहं शक्तोऽस्मि नोद्धव। किमुत व्रजलोकांस्तानिति व्यञ्जनिमामगात्।।[१५]

श्रीमद्भागवते भक्तेः स्वरूपं विशदरूपेण विवर्णितमस्ति। भगवतः भक्तस्य च परस्परसम्बन्ध कीदृशः स्यादित्यादिविषया अपि तत्र विस्तरेणोपन्यस्ताः वर्तन्ते तदनुसारं केवलं शारीरिकं सान्निध्यं नास्त्यपितु मनस एव मुख्यं सान्निध्यमपेक्षितम्। यत्र यस्मिन् भगवति हृदयेन प्रेम वर्तते तत्रैव वास्तविकं सान्निध्यं भवति। प्रेम विना शारीरिकी समीपता व्यर्थैव भवति। गोपीनां हृदयेषु श्रीकृष्णविषयकं प्रेम सत्यभरितमासीत् संयोगः वियोगः विप्रलम्भश्चेति द्वे प्रेम्णः स्वरूपे निर्धारिते संयोगे सन्निधिः, वियोगे च दूरं भवति उभयोरालम्बनं परन्तु संयोगापेक्षया वियोगे मानसं सन्निध्यसीमितं भवति। यतो हि प्रियतमसान्निध्यं सीमितं भवति। किन्तु वियोगे सर्वदैव प्रियतमस्य स्मरणं चिन्तनं दर्शनिच्छा च जायते। श्रीमद्भागवते वर्णितकक्षानुसारं दूरे वर्तमानस्य भगवतः श्रीकृष्णस्य हृदये गोपिका आसन्[१६] तासां हृदये च भगवान् नित्यनिरन्तररूपेण विराजमानः आसीत्[१७] अत एव निरन्तरं परमप्रेमास्पदभगवच्चिन्तया निर्धूतसकलकल्माषाणां श्रीकृष्णप्रेमपयोधिनिमग्नानां गोपिकानां

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदयपटले प्रसृतमपूर्वम् प्रेमं पर्यालोच्य तासां चरणसरोरुहरेणुकणस्पृहया वृन्दावनस्थानां गुल्मलतौषधीनां मध्ये यत्र कुत्रापि किमपि जन्म वाञ्छता परमतत्त्वज्ञानिनोद्धवेनापि श्रीकृष्णभक्तिपारावारे आत्मानं वारं वारं निमज्जनं कृत्वेव प्रेमगद्गदपूर्णया वाचेदं वचनमगादि श्रीमद्भागवते-

आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।
या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम्।।

नारदजनकसंवादक्रमे व्रजौकसां गोपीनां सौभाग्यवैभववर्णनमकुर्वता नारदेन जनकं प्रति निरगादि गर्गसंहितायामेवं

तासां तपः किं कथयामि राजन् ! पूर्वे परे ब्रह्मणि वासुदेवे।
याश्चक्रिरे प्रेम हृदिन्द्रियाद्यैर्विसृज्य लोकव्यवहारमार्गम्।।१८

प्रसङ्गेऽस्मिन् भक्तिरसस्य परमं स्परूपं द्रष्टुं शक्यते गोप्यः कृष्णलालसतत्पराः तथा आसन् यत् तान् लोकलज्जाभयनिन्दादिविषयान् ज्ञानमेव नासीत् श्रीकृष्णसमर्पितप्राणाभिः गोपिकाभिः कुलमर्यादां गार्हस्थ्यधर्ममपि परित्यज्य भगवन्तं श्रीकृष्णमानन्दकन्दसच्चिदानन्दस्वरूपं परं ब्रह्म जीवनतरणिः प्रवाहितासीत् यदर्थं भगवता श्रीकृष्णेनापि कथितं तासां मनोदशाविषये-

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विवुधायुषापि वः।
या मा भजन् दुर्जरगेहशृङ्खलाः संवृत्य तद्वः प्रतियातु साधुना।।१९

यदा भगवान् भक्तानामुपरि प्रसन्नो भवति तदा भक्तेभ्यः सर्वं ददाति। गुणाधानपूर्वकं दोषानपनोदयन्ति भक्तानां हृदयेषु विद्यमानानहङ्काराश्छित्वा भक्तमनांसि नूनं निर्मलानि कुरुते। रासत्वप्रसङ्गे यदा भगवान् श्रीकृष्णः गोपीरभिमानवतीर्ज्ञात्वा तासामहङ्कारदूरीकरणाय रासमध्ये एव ताः परित्यज्य अन्तर्हितो जातः तदानीं ताः व्याकुलता मार्गमाणाः तन्मयतामवाप्य तस्य तास्ताः लीलामनुसरणं विदध्युः

पृच्छतेमा लता बाहूनाप्याश्लिष्टा वनस्पतेः।
नूनं तत्करजस्पृष्टा बिभ्रत्युत्पुलकान्यहो।।
इत्युन्मत्तवचो गोप्यः कृष्णान्वेषणतत्पराः।
लीला भगवतस्तास्ताः ह्यचक्रुस्तदात्मिका।।२०

यथा पतिप्राणायाः पतिव्रतायाः पत्युसान्निध्ये हृदयगतं प्रेम तीव्रत्वं भजते तथैव प्रेमपात्रे भगवति चक्षुर्विषयातिक्रान्ते प्रेमासक्तस्य भक्तस्य हृदयं विरहयन्त्रणा व्याकुलं जायते। भक्तहृदयादुद्वेलितो विरहाग्निरहर्निशं भक्तहृदयकाननं दन्दह्यते।२१ इति योगसूत्रद्वारा महर्षिणा पतञ्जलिनाप्येतदेवानुमोदितम्। गोपीनां प्रचुरं प्रेम पर्यालोच्यापि मध्ये-मध्ये श्रीष्णातिरोधानकारणमेतदेव यद् विरहे न्यूनमपि प्रेमाधिक्यमाप्नुयात् येन गोप्यो मोक्षप्रदं पूर्णं प्रेमाधिगच्छेयुः। तासां तासां तदप्राप्तौ जायमानामन्तरायाणां

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विरहाग्निना दहनमत्यावश्यकम्। श्रीमद्भागवते एषः प्रसङ्गोपवर्णितोऽवलोक्यते तदनुसारमतिदुर्लभं मानवदेहमासाद्य यो दिवानिशं भगवच्चरणचिन्तनपरायणः सन् संसारसागरादात्मानमुद्धर्तुं न प्रयतते स निन्दनीयः कापुरुषोऽस्तीति वर्णयित्वा तमात्महा शब्देन सम्बोधितः यथा-

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम्।
मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान् भवाब्धिं न तरेत् स आत्महा।। २२

संसारस्य स्वरूपं परिमाणञ्च गोपदेन सह तुलनां विधाय भक्तजनानां सर्वविधाः विपत्तयः केवलं भगवच्चरणाविन्दसेवनेन दूरीभवन्ति परमं धाम्नः प्राप्तिश्च जायते इति प्रतिपादितं तद्यथा

वस्तुतो जानामत्र कृष्णं स्थास्नुचरिष्णु च।
भगवद्रूपमखिलं नान्यद् वस्त्विह किञ्चन।।
सर्वेषामपि वस्तूनां भावार्थो भवति स्थितः।
तस्यापि भगवान् कृष्णः किमतद्वस्तु रूप्यताम्।।
समाश्रिता ये पदपल्लवप्लवं महत्पदं पुण्ययशो मुरारेः।
भवाम्बुधिं वत्सपदं परं पदं पदं पदं यद् विपदो न तेषाम्।। २३

इत्थं साहित्यशास्त्रस्य श्रीजीवातुभूतस्य रसतत्त्वंस्य यथा साहित्यशास्त्रे महत्त्वं वर्तते तथैव दार्शनिकदृष्ट्यापि महत्त्वं सर्वातिशेते दार्शनिकदृष्ट्या रसानां चिन्तनं क्रियते चेत् रसस्य सकलमपि तत्त्वं दार्शनिकमेव विद्यते। दर्शनि ब्रह्मसाक्षात्कारस्य यादृशं स्वरूपं भवति तादृशमेव स्वरूपं रसास्वादनद्वारा जायते। रसो वै स रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति[२४]

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम्। सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ।। २५

इत्यादि गीतायाः पुण्यवचनान्याश्रित्य विचारं क्रियते चेत् सर्वाणि दार्शनिकतत्त्वानि अपि रसेषु संवलितानि दृश्यन्ते।

१. नाट्यशास्त्रे (अभिनवभारती)
२. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्ररसनिष्पत्तिः।
३. शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः। वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्यरसाः स्मृताः ६.१५
४. निर्वेदः स्थादीमावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः। का.प्र. ४
५. एवं भक्तिरसो भेदाद्द्वयोः द्वादशधोच्यते भक्तिरसामृतसिन्धौ ३.५.८९
६. श्रीमद्भगवद्गीता १.३२
७. तत्रैव ९.३०
८. श्रीमद्भागवते ९.६-६ अध्याययोः
९. तत्रैव १०.८० अध्याये
१०. तत्रैव ८.२ अध्याये
११. रामायणे
१२. भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः गीता १२.२०
१३. तत्रैव १२ अध्याये
१४. श्रीमद्भागवते ६.११.२६
१५. गर्गसंहितायाम् ५.३
१६. श्रीमद्भागवते रासपञ्चाध्यायीमध्ये
१७. तत्रैव
१८. गर्गसंहितायाम् ४.४.१२
१९. तत्रैव
२०. श्रीमद्भागवते १०.३०.१४
२१. तीव्रसंवेगानामसन्नः योगसूत्रे १.२९
२२. श्रीमद्भागवते
२३. तत्रैव १०.१४.५८
२४. तैतरीयोपनिषद्
२५. गीतायाम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पौरस्त्यदर्शनेषु दुःखतत्त्वविमर्शः

✍ डा.विश्वनाथ धिताल

प्राणभृन्मात्रेप्सितं सुखम्, परं न सर्वोऽपि प्राणी सुखभाग्। सर्वान् दुःखमनुवर्तते, सर्वे दुःखमनुवर्तन्ते। अस्याञ्च स्थितौ सर्वेष्टं सुखं कथङ्कारमुपलब्धं भवेत् ? दुःखं वा कथं विनिवर्तेत ? इति पृच्छाद्वयमापतति। एतत्प्रश्नद्वयसमाधानायैव सर्वाणि शास्त्राणि, सर्वाणि पौरस्त्यदर्शनानि च प्रवृत्तानि। तत्र च दुःखनिवृत्त्यर्थं प्रतियोगितया उपस्थितस्य दुःखस्य ज्ञानमपेक्षितमिति दुःखस्वरूपनिरूपणमावश्यकं भवति।

तत्र दुःखन्नाम प्रमेयविशेषः- 'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनःप्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्' (न्यायसूत्र १-१-९) इति सूत्रात्। प्रमेयो नाम प्रमाविषयः, प्रमा च यथार्थज्ञानमिति। दुःखेन चात्मनः साधनं भवति, दुःखसमवायिकारणत्वादात्मनः। महर्षिणा गौतमेन चोक्तम् - 'इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्' (न्या. सू. १-१-१०) इति। दुःखवत् इच्छाद्वेषप्रयत्नादीन्यप्यात्मसाधनानीति तदाशयः। तथा हि- सुखदुःखादयः समवायसम्बन्धेनात्मनि उत्पद्यन्ते, आत्मा च तान् प्रति तादात्म्यसम्बन्धेन कारणं भवति। एवञ्च दुःखमात्मनि तिष्ठतीत्यपि सिद्धमेव। अत आत्मनिष्ठो गुणविशेषः दुःखम्। दुःखञ्च जीवात्मन्येव न परमात्मनि इति विवेकः। दुःखं न कोऽपि इच्छति, परं सर्वोऽपि लभते, लब्धं सदनुभवति च प्रातिकूल्येन इति 'सर्वेषां प्रतिकूलतया वेदनीयं दुःखम्' इति तर्कसङ्ग्रहे अन्नंभट्टः। दुःखञ्चाधर्मजन्यमिति 'अधर्मजन्यं दुःखं स्यात्प्रतिकूलं सचेतसाम्' (१४५) भाषापरिच्छेदे विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यः। सुखम्, सुखदत्वात् सुखसाधनं प्रति च जीवानां स्वाभाविको रागः, तद्वैपरीत्येन दुःखम्, दुःखसाधनञ्च प्रति द्वेष इति 'इतरद्वेषानधीनद्वेषविषयत्वं दुःखत्वम्' इति तर्कसङ्ग्रहन्यायबोधिन्यां गोवर्धनसुधीः। दुःखे द्वेषाद्दुःखविषये द्वेषः, अतः दुःखद्वेषाधीनद्वेषविषयत्वं दुःखसाधने, दुःखे तु स्वत एव द्वेषो भवतीति इतरद्वेषानधीनद्वेषविषयत्वं दुःखस्येति। इत्थञ्च न्यायनये आत्मनिष्ठाधर्मजन्यगुणविशेषः दुःखम्, तच्च प्राणिसामान्येन प्रातिकूल्येनानुभूयते। इयं न्यायवैशेषिकदर्शनानुसारिणी चर्चा।

साङ्ख्यवेदान्तादिदर्शनेषु दुःखत्रविषयिणी चर्चा दरीदृश्यते - आध्यात्मिकम्,

✍ Assistant professor, Department of Humanistic Studies,
IIT (BHU), Varanasi, India.Visiting Professor, VU University, Amsterdam, Nederlands.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आधिदैविकम्, आधिभौतिकञ्चेति। श्रीमदीश्वरकृष्णविरचितायाः साङ्ख्यकारिकायाः साङ्ख्यतत्त्वकौमुद्याख्ये व्याख्याने षड्दर्शनाचार्येण श्रीमता वाचस्पतिमिश्रेण शास्त्रारम्भणप्रयोजकत्वं दुःखस्य साधितम्। तथा हि- यदि जगति दुःखपदार्थः खपुष्पवदलीकः स्यात्तदा, अलीकस्य परिहारानपेक्षणीयत्वेन तत्परिहाराशक्यत्वात्तदर्थं शास्त्रारम्भणमनपेक्षितम्, सदपि दुःखम् सर्वैरानुकूल्येन यद्यनुभूयेत, न जिहास्येत तदापि न शास्त्रमावश्यकम्, जिहासितत्वेऽप्यशक्यसमुच्छेदता यदि तदापि न शास्त्रस्यौचित्यम्, परन्तु दुःखमस्ति, जिहासितमप्यस्ति, अस्योच्छेदोऽपि शक्यः, लौकिकानुश्रविकोपायेन च न दुःखस्यैकान्ततोऽत्यन्ततश्च निवृत्तिरिति व्यक्ताव्यक्तज्ञज्ञानद्वारा दुःखत्रयं निवर्तते इति। उक्तञ्चेश्वरकृष्णेन साङ्ख्यकारिकायाम् -

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे सापार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात्।।०१।।

तत्र आध्यात्मिकम् दुःखन्नाम आत्मानम्- शरीरम्, मानसम् वा अधिकृत्य प्रवर्तमानम् दुःखम्, दुःखस्याध्यात्मिकत्वञ्चात्र आन्तरोपायसाध्यत्वरूपमिति। तच्च आध्यात्मिकं दुःखं शारीरिकमानसिकभेदेन द्विविधम्। शारीरिकं दुःखम् शरीरस्थित्यापादकानां वातपित्तश्लेष्मणां वैषम्येण भवति, मानसिकञ्च दुःखम् काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-विषादादिकारणप्रयोज्यम्। आधिभौतिकम् दुःखञ्च भूतविशेषकारणकम्, भूतान्यधिकृत्य प्रवर्तमानम्। मनुष्य-पशु-पक्षि-मृग-स्थावरादिनिमित्तम्। आधिदैविकञ्च दुःखं देवयोनिविशेषनिमित्तकम्, देवतायक्षग्रहादिनिमित्तकम् इति। एतत् दुःखत्रयं जातमात्रस्य जन्तोः साधारणम्। अयत्नतोऽपि पूर्वकृतकर्मवशाज्जीवेन दुःखत्रयम् सोढव्यमेवेति पौरस्त्यसिद्धान्तः। अतो भागवते प्रह्लादो वदति -

सुखमैन्द्रियकं दैत्या ! देहयोगेन देहिनाम्।
सर्वत्र लभ्यते दैवाद्यथा दुःखमयत्नतः।। ७/६/३ इति।

दुःखवत्सुखमपि दैवाल्लभ्यते, तदर्थन्न प्रयतितव्यमित्याशयः। इयं च वार्ता लौकिकसुखविषयिणी, न पारमार्थिकसुखविषयिणी। तत्र प्रयत्नाधिक्यस्यापेक्षणीयत्वात्। अत उपनिषदो गर्जन्ति - क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया। दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति (कठोपनिषद् १-३-१४) इति।

अत्रेदमवधेयम् - सर्वं जगत् त्रिगुणात्मकम्। सत्त्वरजस्तमांसि गुणत्रयम्। त्रिभ्य एव गुणेभ्यः सर्वं वस्तुजातं जायत इति साङ्ख्यानाम्, योगिनाम्, वेदान्तिनाञ्च मतम्। तत्र सत्त्वं लघु, प्रकाशात्मकम्, सुखात्मकञ्च। रजः चलम्, उपष्टम्भकम्, दुःखात्मकम्। तमो गुरु, आवरकम्, मोहात्मकमिति। एवञ्च रजोगुणपरिणामभेदो दुःखम्। जगत्याञ्च सर्वं त्रिगुणात्मकमिति सर्वस्यापि रजःपरिणामरूपत्वेन दुःखत्वमेवेति सर्वं जगदेव दुःखात्मकमिति सिध्यति। यद्यप्यविवेकिन एवं न विवेचयन्ति, अतो जागतिकपदार्थेषु सुखं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्वते। सम्यग्विवेचने तु विवेकिनां दुःखमेव सर्वमिति। योगसूत्रे भगवान् पतञ्जलिरपि वदति - परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्त्यविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः(२-१५) इति। परिणामदुःखात्, तापदुःखात्, संस्कारदुःखात्, गुणवृत्तीनां परस्परविरोधाभावाच्च विवेकिनां सर्वं दुःखमेवेति। अतो बौद्धा अपि आर्यसत्यचतुष्टयं वर्णयन्ति -

१) दुःखम् - जगति दुःखमस्ति।

२) समुदयः - दुःखस्य कारणमस्ति।

३) निरोधः - दुःखस्य निवारणमस्ति।

४) मार्गः - निवारणाय मार्गोऽप्यस्ति।

एनमेवाधिकृत्य सर्वं दुःखं दुःखम् इति तेषां वादः। अनयैव रीत्या योगशास्त्रेऽपि व्यूहचतुष्टयं वर्णितं भवति।

१) हेयम्

२) हेयहेतुः

३) हानम्

४) हानोपायः। इति।

तत्र हेयम् दुःखमिति।

बहुधा शास्त्रेषु लोकव्यवहारेषु च विवेचितेषु इदमेव तथ्यं स्फुटति यत् - सर्वं जगदेव दुःखात्मकमिति। दुःखमये गभीरे महार्णवे क्रियासमभिहारेणावगाहनकुशलाः प्राणिन अनेकानर्थशोकव्राताकुलिते जगति जागतिकपदार्थेषु वा बहुजनिकृतपुण्यजन्यसुखम्मन्वानाः पुनः पुन आसज्जन्ते। नद्या आवर्ते यथा कीटा एकस्मादावर्तादन्यस्मिन्नावर्ते तस्माच्चावर्तात्पुनरन्यस्मिन्नावर्त इत्येवंरीत्या आवर्तादावर्तान्तरमनुधावन्तो न कदापि ततो विमुच्यन्ते, तद्वद्दुःखपङ्कलङ्कितेभ्यो विषयेभ्यो विषयान्तरमनुधावन्तो जीवा न मुच्यन्त इति स्थितिः। पञ्चदश्यां प्रथम एव तत्त्वविवेकप्रकरणे विद्यारण्यस्वामी ब्रवीति -

कुर्वते कर्म भोगाय कर्म कर्तुं च भुञ्जते।
नद्यां कीटा इवावर्तादावर्तान्तिरमाशु ते।
व्रजन्तो जन्मनो जन्म लभन्ते नैव निर्वृत्तिम्।। इति। १-३०

कर्मणे भोगो भोगाय च कर्मेत्येवंरीत्याऽनादिकालतो निवरच्छिन्नरूपेण प्रवहन्ती कर्मभोगपरम्परा भृशं दुःखचक्रं परिवर्धयन्ती परिभ्रामयन्ती च प्रवर्तमाना वर्तत इति भावः। एवं प्रवर्धन्त्यां परम्परायां न जाने कति दुःखानि अस्माभिरनुभूतानि, अधुनाप्यनुभूयन्ते, एवंरीत्या प्रचलितायां सत्यां मुहुर्मुहुरनुभाविष्यते/अनुबोभोष्यते च। इष्टाप्राप्त्यनिष्टप्राप्त्यादिजन्यशोकवैश्वानरदन्दग्धाः दुःखेषु सुखबुद्ध्या पुनः पुनरनुपतन्तीति भगवन्तं नृसिंहं स्तुवन् प्रह्लादो वदति -

यस्मात्प्रियाप्रियवियोगसयोगजन्म-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शोकाग्निना सकलयोनिषु दह्यमानः।
दुःखौषधं तदपि दुःखमतद्धियाऽहम्
भूमन् ! भ्रमामि वद मे तव दास्ययोगम्।। इति। भागवतम्- ७-९-१७

एवमेव सर्वस्य जगतः दुःखात्मकतां ख्यापयन्नाह भगवान् योगेश्वरोऽपि गीतायाम् - दुःखालयमशास्वतम्' (श्रीमद्भगवद्गीता ८-१५)। विलक्षणविचक्षणो मणिकृद् गङ्गेशोपाध्यायश्च मणिग्रन्थे आह - अथ जगदेव दुःखपङ्कनिमग्नमुद्दिधीर्षुरित्यादि। एवंरीत्या सर्वे पदार्थाः दुःखमयाः।

पदार्थानां दुःखात्मकता न केवलं शास्त्रसम्मता, अनुभवसम्मतापि, लोकवैपरीत्ये शास्त्रत्वासम्भवाल्लोकनियामकत्वाच्छास्त्राणामिति लोकसिद्धान् अर्थान् एव शास्त्राणि विवेचयन्तीति वक्तुमुचितम्, कुत्रचिल्लोकाऽसिद्धाऽपूर्वरहस्यप्रकटनन्तु शास्त्राणां लोकसिद्धमार्गेभ्योऽप्यस्माकम् अपूर्वं स्वरूपम्, सामर्थ्यञ्चास्तीति प्रतिबोधनार्थम्। वस्तुतस्तु अपूर्वविषया अपि महापुरुषादितो लोकसिद्धा एव, न हि लोकसिद्धत्वन्नाम सर्वावच्छेदेन लोकसिद्धत्वमपि तु लोके कुत्रचिदपि सिद्धं सल्लोकसिद्धत्वं सिध्यति। लोके तावत् तत्तत्विषयाणां प्राप्तौ प्राणिनो यतमाना बहुशो व्यथन्ते, ततश्च कदाचित्तु यतमानेऽप्यसिद्धिः, सिद्धौ सत्यां कथञ्चित्सुखलब्धेऽपि तत्तद्वस्तुसंरक्षणपरिवर्धनादिचिन्ता, विनाशसम्भावना, चौरादिभयं च भृशं पीडयन्त्येव, पुनश्च वैनाशिकवस्तुनो विनाशे मुहुः शोको भवति, न केवलं नियतकालिको शोकः, अपि तु तदुपभोगजन्यसंस्कारवशादाजीवनं तत्प्राप्तिविषयिणी इच्छा पुनः पुनः समुपचरन्ती भूयो भूयो विषयसाधनेषु प्रेरयति, पुनश्च प्रयत्नः, पुनः प्राप्तिः, पुनर्भोगः, पुनर्विनाशः, पुनः शोकः, पुनरिच्छा एवमनादिचक्रं प्रचलत् दुःखयति सर्वान्। तथैव संसारे नैके विषया इच्छाविषयाः, अनेकेषु विषयेषु प्रसरन्त्य अनेका इच्छाः कदाप्यपरिसमाप्ताः सदैव दुःखकारणम्। एवं क्रोधमोहमदालस्यादिदोषेण सर्व एव दुःखिताः। अहङ्कारमहिषासुरस्तु कं न बाधेत? दैन्यदारिद्र्यादिकम्, तेन परसेवापराधीनत्वार्धचन्द्रादिकम्, परदेशवासादिपीडा, सम्पत्सत्त्वेऽप्यनिर्वाच्यो लोभः, सम्पद्रक्षणादिविषयश्च शोक एवंरूपाणि अनेकानि दुःखानि कं कं प्राणिनं न दुःखयेयुः ? तत्तत्सुखभोगेनेन्द्रियाणां शक्तिह्रासश्च कं कं न बाधेत ? यथोक्तं कठोपनिषदि - श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्

सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः। १-२९

इत्थञ्च सर्वस्यापि जगतो दुःखात्मकता सिद्ध्यत्येव।

जगतो दुःखात्मकतायां सिद्धायां प्रश्नः भवति - किमनेन दुःखाकुलितेन जगता? यदि जगति सर्वत्र दुःखमेव, सर्वं जगद् दुःखात्मकमेव, तदा तु सुखस्याशङ्काऽपि दूरतोऽपबाधिता स्यादिति ? अत्रोच्यते - यद्यपि सर्वं जगद् दुःखात्मकम्, दुःखरूपञ्च, तथापि अनेनैव दुःखमयेन जगता अनन्तं सुखं लभ्यते। न तावद् दुःखमन्तेण सुखं भवति। दुःखमननुभवन्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखबोधः न भवति। अत एव चार्वाका सुखाभावरूपमेव दुःखम्, दुःखाभावरूपमेव च सुखमित्यामन्वते। यद्यपि दुःखाभावरूपम् न सुखम्, न वा सुखाभावात्मकम् दुःखम्, अन्योन्याश्रयापत्तेः। दुःखाभावरूपसुखज्ञानाय 'अभावज्ञाने प्रतियोगिज्ञानं कारणमिति रीत्या दुःखज्ञानमपेक्षितम्, एवम् सुखाभावदुःखज्ञानाय सुखज्ञानमपेक्षितमिति अन्योन्याश्रितत्वमिति चार्वाकवाग् असाध्वी तथापि दुःखमननुभवन् सुखानुभवो दुःशकः। उक्तञ्च -

'न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति।
संशयं पुनरारुह्य यदि जीवति पश्यति।।' इति। (महाभारतम्, आदि- १३९-७३)

संसारजन्यदुःखानुभवमन्तरेण न तन्नाशोपाय अनुसन्धीयते, न वा तत्र प्रयत्यते। दुःखमेव सर्वं प्रेरयति। दुःखानुभवेन दुःखाननुभवाय यतते जीवः। अतः शास्त्रेषु वैराग्यं चर्च्यते बहुशः। वैराग्यन्नाम नान्यदपि तु क्रियासमभिहारेण दुःखमनुभूय तत्तद्विषयाणां जिहासा एव। यथोक्तं भगवदाद्यगुरुणा -

'तद्वैराग्यं जिहासा या दर्शनश्रवणादिभिः।
देहादिब्रह्मपर्यन्ते ह्यनित्ये भोगवस्तूनि।।' (विवेकचूडामणिः २१)
न दुःखमननुभूय वैराग्यम्। यथोक्तं मुण्डकोपनिषदि -
'परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान्
ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।' १- २-११

न च वैराग्यमन्तरा लक्ष्यसिद्धिः, तत्तद्विषयविषयरागाकृष्टचेतसो विषयानुधावने लक्ष्यसिद्धौ प्रवृत्त्यनुपपत्तेः। एवञ्च दुःखमस्माकं गुरुः, शिक्षकः, प्रेरकः, मार्गदर्शकश्च वर्तते। दुःखरूपेण गुरुणा भृशं पाठिता एव प्राणिनः(विद्यार्थिनः) संसरणरूपां परीक्षामुत्तरन्ति। अत एव कुन्ती भगवन्तं दुःखं ययाचे न सुखम् -

'विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो।।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्।।' - भागवतम्, १-८-२५

तथा हि - दुःखेन दुःखितो जनः तन्निवृत्तये यत्र तत्र यतमानः कथञ्चिदीश्वरानुग्रहवशात् सद्गुरुं लभमानः तत्कृपया 'आत्वा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः' (बृहदारण्यकोपनिषद् २-४-५) इत्यादिश्रुतिबोधितात्मानात्मविवेकज्ञानं लभते। तेन च देहाद्यात्मभावरूपमिथ्याज्ञानम् नश्यति। मिथ्याज्ञाने नष्टे रागादयो दोषाः नश्यन्ति, दोषाणां विनाशे रागद्वेषाद्यभावात् प्रवृत्तिर्न भवति, प्रवृत्त्यभावे भोगतत्त्वज्ञानाभ्यां प्रारब्धकर्मणां नाशः, ततो जन्माभावः, ततश्च दुःखाभाव इति। न्यायसूत्रकृता उक्तमपि- 'दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः' (न्या.सू. १-१-२) इति। अयं 'एकविंशतिदुःखध्वंसो मोक्षः' इति न्यायवैशेषिकसिद्धान्तः। साङ्ख्ययोगनये तु सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिः मोक्षसाधनम्। प्रकृतेः गुणान् स्वस्मिन्नारोप्य दुःखितः पुरुषो यदा स्वस्मात् प्रकृतिं भिन्नत्वेन जानीते, तदा स्वकीयसुखरूपतामनुभवतीति। वेदान्तिनस्तु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अविद्यानिवृत्तिः, स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च मोक्ष इत्यामनन्ति। स्वरूपतो मुक्तोऽपि जीव अनाद्यविद्यावशात् स्वं बद्धं जानीते, अविद्यया रज्जौ सर्पवत्। पुनः रज्जुज्ञानेन सर्पस्य निवृत्तिरिव स्वस्वरूपसाक्षात्कारेणाविद्यानिवृत्तिः, ततश्च पूर्वतो लब्धस्यैव स्वस्वरूपानन्दस्य प्राप्तिर्भवति, न त्वपूर्वस्येति वेदान्तिनः। साङ्ख्यवेदान्तादिनयेऽपि दुःखमन्तरा सुखं न भवति। अत्रापि अनादिवासनया संसाराकृष्टचेतसः, स्वभावतो बहिःप्रवृत्तशीलानामिन्द्रियाणाञ्च प्रत्याहरणादिना निरोधाय वैराग्यस्य अत्यन्तापेक्षत्वात्, वैराग्याय च दुःखस्य कारणत्वादिति। एवं दर्शनान्तरेष्वपि सुखलाभार्थं दुःखस्य परमाऽऽवश्यकता भवति।

इत्थञ्च त्रिगुणात्मके भुवने रजोगुणस्य सर्वत्र प्रविष्टत्वेन, विषयाणां वैनाशिकत्वेन, विषयभोगावस्थायां कथञ्चित्सुखलेशप्रतीतावपि तस्य तापपरिणामसंस्कारादीनां दुःखात्मकत्वेन, कामक्रोधादिदुःखददैतेयद्वारा भृशं प्रहरणेन, कदाप्यपूरणीयानाम् अनेकाषामिच्छानां हेतुना, एवंविधबहुभिर्हेतुभिर्जगतो दुःखात्मकता सिद्धा। तथापि दुःखमेव सुखे प्रवर्त्तयति, रामयुधिष्ठिरप्रभृतयो राजानो दुःखानुभवेन सुखं लेभिरे। दीर्घकालतपोदुःखेन ऋषयः परां शान्तिं जग्मुः। सुदामा दुःखेन भगवन्तं प्राप्तवान्। रन्तिदेव एकोनपञ्चाशद्दिनं यावत् भोजनं अकुर्वन् स्वस्य प्रजानाञ्च सुखं लब्धवान्। लक्ष्मीप्रसादः कतिपयदुःखानि सोढ्वा लक्ष्मीप्रसादताङ्गतः। थोमसो नवनवतिवारं यावदसफलोऽन्ते प्रदीपगोलकनिर्माणे सफलो बभूव। एवमनेकविधानि उदाहरणानि दृष्टिपथमाजङ्गमीति। एवञ्च जगति सर्वेऽपि महापुरुषा दुःखानुभवेनैव महापुरुषत्वम् आपन्नाः। तस्मात् दुःखमेव समेषां सुखकारणमिति सिध्यति, अतो न दुःखमुपेक्ष्यम्, दुःखेन दुःखिना न भाव्यम्। दुःखेन उपकृतत्वमनुभवन् यतनीयमिति।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समासलक्षणं तद्भेदविमर्शश्च

जगन्नाथः शर्मा

विषयपरिचयः

सारल्यमार्गानुसरणे समसनम्=समासः सङ्क्षेपस्तस्यार्थः। यत्र समासस्तत्र पूर्वोत्तरपदयोर्विभक्तेर्लोपः प्रायो विज्ञेयः। समासस्यार्थं बोधयितुं यद् वाक्यमुच्यते तद्विग्रह इत्यभिधीयते। केवलसमासं विहाय

प्रधानतया चत्वारो भेदाः समासस्य भवन्ति-

१. अव्ययीभावः— प्रायःपूर्वपदार्थप्रधानः ग्रामस्य समीपम् =उपग्रामम्।

२ तत्पुरुषसमासः—प्रायः उत्तरपदार्थप्रधानः[1] सूर्यस्य पुत्रः=सूर्यपुत्र इत्यादि।

३.बहुव्रीहिः— प्रायोऽन्यपदार्थप्रधानः त्रीणि लोचनानि यस्य सः= त्रिलोचनः।

अयं बहुव्रीहिः समानाधिकरणः, व्यधिकरणश्चेति भेदेन द्विविधः। समासघटकयोः पूर्वोत्तरपदयोर्विभक्तिः समाना चेत् समानाधिकरणो भिन्ना चेद् व्यधिकरण इति च कथ्यते। आद्यस्योदाहरणम्— प्राप्तमुदकं यं सः=प्राप्तोदकः(ग्रामः)। तथैव कृतभोजनः (बालः), अधीतकाव्या (गङ्गादेवी), दत्तधनः (भिक्षुकः) ,पतितफलः(वृक्षः), नीलकण्ठः (मयूरः), श्वेताम्बरा (बालिका), प्रभूतसलिलम् (सरः) इत्यादि।

द्वितीयव्यधिकरणबहुव्रीहेरुदाहरणम्- चक्रं पाणौ यस्य सः=चक्रपाणि (विष्णुः)

भाले चन्द्रो यस्य सः =भालचन्द्रः (शिवः)। विषं कण्ठे यस्य सः विषकण्ठः (शिवः) इत्यादि।

४.द्वन्द्वसमासः' प्राय उभयपदार्थप्रधानः (रामश्च कृष्णश्चेति रामकृष्णौ।

समासस्थले ज्ञेयविशेषांशाः

१.परस्परान्वितयोः सुबन्तयोर्नामपदयोर्वा प्रायः समासो भवति।

२.अर्थमनुसृत्य समासो भिन्नो भवति।

३.वृत्त्यर्थाऽवबोधकं वाक्यं विग्रहः। कृत्तद्धित—समास—एकशेष—सनाद्यन्ता वृत्तयः पञ्च। तत्र सर्वत्रैव विग्रह इष्टः। अतो यत्र यत्र विग्रहवाक्यं तत्र सर्वत्र समास एवेति न निश्चयः।

सहप्राध्यापक, व्याकरणविभागः, जनताविद्यापीठम्, नेपालसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नेपालः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४.वृत्तीनां पृथक्पृथग्ग्रहणेन एकशेषोऽपि न समासः। किन्तु सोऽपि पञ्चवृत्तिषु अन्यतम एव। यथा माता च पिता च =पितरौ[२], हंसश्च हंसी चेति हंसौ[३], अत्र स्त्रीलिङ्गपदेन सममुक्तं पुल्लिङ्गपदमुभयद्योतकं भवति। अत एव पुलिङ्गपदमेव शिष्यते।

५.एवमेव यत्र सङ्ख्यावाचकं पूर्वपदं भवति, तत्र सर्वत्र द्विगुसमासः इत्यपि न। त्रीणि लोचनानि यस्य सः=त्रिलोचनः, अत्र बहुव्रीहिर्वर्तते। तस्मात् सावधानमनाः सन् विवेकेनेदं ज्ञेयम्— यत्र तद्धितार्थः समाहारो वा दृश्यते चेदेव सङख्यापूर्वो द्विगुसंज्ञको भवति। तत्र किं प्रमाणमिति चेत् 'सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः[४], 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च[५]' इति सूत्रद्वयमेवाऽत्र कारणम्।

६.समाहारद्वन्द्वस्त्वनुद्भूतावयवविवक्षायां सर्वत्र भवितुं शक्नोति, तद्यथा घटपटौ-घटपटमित्यादि ज्ञेयम्। केषुचित् स्थलेषु समाहार एव उक्तः, न तु इतरेतरद्वन्द्वः तद्यथा- 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्[६]' 'अनुवादे चरणानाम्[७]' इत्यादिसूत्रैः।

अवान्तर भेदाः

पूर्वं व्याकरणसिद्धान्ते कृत्तद्धितसमासैकशेषसनाद्यन्तभेदेन पञ्च वृत्तयः प्रतिपादिताः। तासु अष्टाध्याय्यां द्वितीयाध्यायस्यादौ 'समर्थः पदविधिः'[८] इत्यत्रोपवर्णिताः समासवृत्तिरिह परिशील्यते। समासो नाम एकार्थवाचकतां प्राप्तो भिन्नार्थकानेकपदसमूहः।

समुपसर्गपूर्वकात् अस् धातोर्घञि प्रत्यये[९] समासशब्दो निष्पद्यते। तस्मात् समस्यन्ते संक्षिप्तीक्रियन्ते अनेकानि पदानि यत्रेति विग्रहः। अर्थात् पृथग्भूतार्थप्रतिपादकानां नानाशब्दानामेकस्मिन्नर्थे शक्तिस्वीकारः क्रियते तत्र। विग्रहवाक्यावयवपदार्थेभ्यः परोऽन्यो योऽयं विशिष्टैकार्थः तत्प्रतिपादिका वृत्तिर्भवति। एतदेव संक्षेपेण कौमुद्यां लिखितम्-

'परार्थाभिधानं वृत्तिः' 'वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः[१०]'। इति। विग्रहोऽपि द्विविधो वर्तते—लौकिकोऽलौकिकश्च। तत्र नित्यविध्युद्देश्यतावच्छेदकाऽनाक्रान्तत्वात् (परिनिष्ठितत्वात्)— व्याकरणसंस्कृतत्वात् साधुर्लौकिक इति कथ्यते। प्रयोगाऽनर्हः— व्याकरणसंस्कृतत्वाभावरूपोऽसाधुरलौकिकः यथा 'राज्ञः पुरुषः' इति लौकिको विग्रहो वर्तते। राजन् ङस् पुरुष सु इत्यलौकिकश्च विग्रहो वर्तते। तथा च बहूनां पदानां मिलित्वैकपदीभवनं समास इति वक्तुं शक्यम्। नित्यसमासो हि अविग्रहः (लौकिक-विग्रहवाक्यरहितः) भवति। अर्थात् तस्मिन् समासे विग्रहो नाङ्गीकर्तव्यः। तस्य समासस्य नित्यत्वात्। तद्यथा 'कृष्णसर्पः' इति। अस्यार्थो भवति विषधरसर्पः। किन्तु कृष्णश्चासौ सर्पः इति विग्रहे स्वीकृते तु कृष्णवर्णविशिष्टोऽविषधरोऽपि सर्पः प्रतीयेत, अतोऽत्र विग्रहो नेष्टः। केषाञ्चित् समासानां पुनः स्वपदविग्रहो न भवति, परन्तु समस्यमानपदसमानार्थकपदान्तरेण विग्रहस्तु स्वीक्रियते। तथापि तत्र न नित्यताहानिः। यथा अधिहरि। अधिविद्यम् , अधिगोपमित्यादिषु विग्रहे इति शब्दः श्रूयते, समासस्तु तदर्थकाधिशब्देन सम्पाद्यते। अत एव 'अव्ययं—विभक्ति—समीप—समृद्धि—व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रति—शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु[११]' इति सूत्रेण विहितस्य समासस्य नित्यत्यव्यवहारः सिद्ध्यति पूर्वोक्तनियमस्याऽव्यभिचारात्।

भूषणसारग्रन्थोक्तदिशा समासस्य षड्विधत्वम्

कौण्डभट्टो दीक्षितोक्तमतमनुसृत्य समासस्य षड्विधत्वं प्रतिपादितवान् तद्यथा-
सुपां सुपा तिङा नाम्ना धातुनाऽथ तिङां तिङा।।
सुबन्तेनेति विज्ञेयःसमासःषड्विधो बुधैः[१२]। इति।

१.अत्र सुपां- सुपा इति षड्विधात्मके समासे प्रथमः समासः सुबन्तस्य सुबन्तेन सह ज्ञेयः। पदद्वयमप्यत्र सुबन्तं भवति। यथा सुमद्रम्, यूपदारू, कृष्णश्रितः, राजपुरुषः।

२. सुपां तिङा- 'गतिमतोदात्तवता तिङाऽपि समासः'[१३] इति वार्तिकेन विधीयमानः समासः, 'सह सुपा'[१४] इत्यत्र योगविभक्तेन 'सह' इति पूर्वयोगेन सुबन्तस्य पूर्वपदस्य तिङन्तेन जायमानश्च समास इत्युभयमप्यत्र ग्राह्यम्। पर्यभूषयत् अनुव्यचलत् इत्याद्युदाहरणम्।

३. सुपां नाम्ना- 'तृतीयस्तु 'सुबन्तस्य प्रातिपदिकेन समम्। यथा 'कुम्भकारः' इत्यत्र कुम्भं करोतीति लौकिकविग्रहे 'उपपदमतिङ्'[१५] इति सूत्रेण 'गतिकारकोपपदानां कृद्भिःसह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः'[१६] इति परिभाषाप्रमाणेन सुबुत्पत्तेः पूर्वमेव समासो भवति। अत्र विशेषस्तु गतिकारकोपपदानामिति परिभाषया—उत्तरपदे सुबुत्पत्तेः प्रागेव समासो भवतीति नियमः कृतः न तु पूर्वपदे सुबुत्पत्तेः प्रागेव समासो भवतीति नियमः। तेन पूर्वपदं सुबन्तं भवत्येव। एवं 'प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्'[१७] इति सूत्रेण प्रत्ययलक्षणत्वात् पदत्वाच्च 'चर्मक्रीति' इत्यवस्थायां नलोपः सिद्धो भवति। अन्यथा पूर्वपदेऽपि सुबुत्पत्तेः प्राक् समासाऽभ्युपगमे चर्मन् इति पूर्वपदस्य पदत्वाभावात् 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य'[१८] इति सत्रेण नलोपो न स्यात्।

४. सुपां धातुना- 'क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणं च'[१९] इति वार्तिके निपातनात्, तेनैव वार्तिकेन विधानाद् वा सुबन्तस्य धातुना निर्वर्तमानः 'आयतस्तू' इत्यादिश्चतुर्थः। अत्र पूर्वपदं सुबन्तं, उत्तरपदं धातुः, तेन सह समासः। अत्र आयतं स्तौतीति लौकिकविग्रहे 'आयतस्तूः। कटं प्रवते इति लौकिविग्रहे कटप्रूः इति सिद्ध्यति। तत्र 'कट ङस् प्रु' एवम्— आयत ङस् स्तु इति अलौकिकविग्रहौ बोध्यौ। अत्र समासानन्तरं धातोरुकारस्य दीर्घश्च भवति।

५. तिङां तिङा- योऽयं मयूरव्यंसकादिगणे पठितेन 'आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये'[२०] इति गणसूत्रेण तिङन्तस्य तिङन्तेन विहितः पिबतखादता इत्यादिः स पञ्चमः। अर्थात् समासेऽस्मिन् पदद्वयमपि तिङन्तं भवति 'पचत भृज्जत' इति सततं यस्यां क्रियायामभिधीयते सा पचतभृज्जता इति। एतादृशान्यन्यान्यपि रूपाणि तत्र भवन्ति। अत्र क्रियारूपस्यान्यपदार्थस्य प्राधान्यात् स्त्रीत्वाट्टाप्, पिबत, खादत, पचत,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भृज्जतेति पदं लोट्लकारस्य मध्यम पुरुषस्य बहुवचने वर्तते।

६. तिङ सुबन्तेन- षष्ठस्तु जहीत्येतत्कर्मणा बहुलं समस्यते आभीक्ष्णे गम्ये समासेन चेत्कर्ताऽभिधीयते, इत्यर्थकेन 'जहिकर्मणा बहुलमाभीक्ष्ण्ये कर्तारं चाभिदधाति'[२१] इति मयुरव्यंसकादिगणसूत्रेण तिङन्तपूर्वपदस्य सुबन्तेन विहितः 'जहिस्तम्बः' इत्यादि उदाहरणम्।

अत्र 'जहि' इति पदं तिङन्तमस्ति। 'स्तम्बम्' इति पदं सुबन्तमस्ति। जहि स्तम्बम् जहि स्तम्बमिति य आहेति लौकिकविग्रहे, 'जहि स्तम्ब अम्' इत्यलौकिकविग्रहे पूर्वोक्तेन गणसूत्रेण समासे सति तत् सिद्धम्।

इत्थं कौण्डभट्टादिप्राचीनवैयाकरणप्रतिपादितान् भाष्यकाराभिमतान् समासषड्भेदान् प्रतिपादितवती सुपां सुपेति भूषणस्थकारिका। तत्रायं प्रश्नो वर्तते- प्रारम्भे 'अव्ययीभावतत्पुरुष द्वन्द्वबहुव्रीहिभेदात् समासश्चतुर्विधः' इति मतञ्च पूर्वमुक्तम्। तत्र पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः, उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः। उभायपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः, अन्ययदार्थप्रधानो बहुव्रीहिरित्यपि तेषां लक्षणं चोक्तम्।

तदिदानीं कथं सङ्गच्छेत ? इति चेत् पर्यभूषयत्, अनुव्यचलत्, इत्यादीनां समासानां क्वाचित्कत्वाद् बाहुल्येन समासस्य चातुर्विध्यदर्शनात् प्रायोवादोऽयमिति सर्वत्र ज्ञेयम्। अन्यथा चतुर्विधत्वमेव समासस्येति दाढ्र्यं स्यात् तत्तु न सम्भवति। तथा सति यं केवलसमास इति नाम्ना प्रोक्तवान् कौमुदीकारः तस्य गणना कुत्र वर्तते ? एवञ्च भूतपूर्वः, दृन्भूः, आयतस्तूः, वागर्थाविव, इत्यादीनां समासाधिकरणबहिर्भूतानामसङ्ग्रहापत्तेः।

किञ्च पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः, इत्यादिलक्षणमप्यव्यास्यतिव्याप्तिग्रस्तत्वात् प्रायिकमेव ज्ञेयम्।

तथाहि- 'अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्'[२२] इति वार्तिकनिष्पन्ने 'उन्मत्तगङ्गम्' इत्यस्मिन् समासे अन्यपदार्थप्राधान्यात् पूर्वपदार्थप्राधान्याभावाच्च बहुव्रीहिलक्षणातिव्याप्तिरव्ययीभावलक्षणाऽव्याप्तिश्च। एवं 'सूपस्य लेशः' इति विग्रहे 'सुप्प्रतिना मात्रार्थे'[२३] इति निर्वृत्ते 'सूपप्रति' इति समासे उत्तरपदार्थप्राधान्यात्तत्पुरुषलक्षणातिव्याप्तिरव्ययीभावलक्षणाऽव्याप्तिश्च।

अपि च 'अर्धपिप्पली' इत्यत्रार्धरूपस्य पूर्वपदार्थस्य प्राधान्यात् तत्पुरुषलक्षणाऽव्याप्तिरव्ययीभावलक्षणाऽतिव्याप्तिश्च। तथा 'द्वित्राः' इति समासे उभयपदार्थप्राधान्याद् बहुव्रीहिलक्षणाऽव्याप्तिद्र्वन्द्वलक्षणातिव्याप्तिश्च। एवं 'शशकुशपलाशमित्यत्र समाहाररूपान्यपदार्थस्य प्राधान्याद् बहुव्रीहिलक्षणातिव्याप्तिद्र्वन्द्वलक्षणाऽव्याप्तिश्च। अतः पूर्वोक्तस्य सर्वस्यापि लक्षणस्य निर्दुष्टत्वाभावात् अन्ततो गत्वा शुद्धलक्षणमिदं वर्णनीयम्- 'अव्ययीभावाद्यधिकारस्थविधिविहित समाससंज्ञकत्वम्' अव्ययीभावादिसमासानां लक्षणमिति गुरुचरणाः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगदीशभट्टस्य मते समासभेदः

समासः कतिविध इति प्रश्ने समासः सप्तधा इति तद्विभागो जगदीशभट्टेन शब्दशक्तिप्रकाशिकायामुक्तः[२४]। तथा हि—

स चायं षड्विधः कर्मधारयादिप्रभेदतः
यश्चोपपदसंज्ञोऽन्यः तेनासौ सप्तधा मतः।।श.श.प्र.श्लोकसं. ३२।

अर्थात् अयं च समासः कर्मधारय—द्विगु—तत्पुरुष—अव्ययीभावः—बहुव्रीहि—द्वन्द्व—उपपदभेदात् सप्तविधः।

इति।

काशिकाकारमतेन समासभेदः

नित्याऽनित्यभेदेन समासो द्विविध इति काशिकावृत्तिकारः[२५], यत्र समासेऽवयवार्थविरुद्धसमुदायार्थः प्रतीयते स नित्यसमासो यथा- उद्दालकपुष्पभञ्जिका इत्यादि। यत्र च अवयवार्थसहकृतः समासार्थस्तत्र अनित्यसमासः। यथा-राजपुरुषः, इति।

भोजराजमतेन समासविभागः

भोजराजस्तु स्वीयश्रृङ्गारप्रकाशग्रन्थे अन्यथैवं समासान् व्यभजत[२६]। तथाहि समासस्त्रिविधः-प्राकृतः, वैकृतः, शेषश्च। तेषु समस्तपदानामव्ययीभावादिसंज्ञानिमित्तं पूर्वपदप्रधानादिका प्रकृतिः। तत्र भवः प्राकृतः। स च चतुर्विधः-अव्ययीभावः, तत्पुरुषः, बहुव्रीहिः, द्वन्द्वश्चेति। तत्र पूर्वपदार्थप्रधानोऽअव्ययीभावः। सत्रिविधः अव्ययानामनव्ययानां कर्मप्रवचनीयानाञ्च। अधिहरि, अग्रेवणम्, अनुगङ्गमिति क्रमेण उदाहरणानि। उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः। स त्रिविधः-व्यधिकरणः, समानाधिकरणः, द्विगुश्च। राजपुरुषः, नीलोत्पलम्, पञ्चमूलीत्यादिक्रमेण उदाहरणानि। अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः। स द्विविधः प्रधानसम्बन्ध्यर्थः, अप्रधानकार कार्थश्च। यत्राऽन्यपदार्थः प्रथमान्तार्थः स प्रधानसम्बन्ध्यर्थः इत्युच्यते। यथा दक्षिणपूर्वा, दण्डादण्डि, इत्यादि। अप्रधानसम्बन्ध्यर्थो नाम षष्ठ्यर्थसम्बन्धः यस्य अन्यपदार्थः सः। यथा—पीताम्बर इत्यादि। अन्यविभक्त्यर्थप्रधानो बुहुव्रीहिः कारकार्थः। प्राप्तोदकः, उप हृतपशुरित्यादि। उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः। सोऽपि त्रिविधः। इतरेतरविषयः समाहारविषयः, उभयविषयश्चेति। धवखदिरौ, पाणिपादम्, अश्ववडवौ—अश्ववडम् इत्याद्युदाहरणानि।

विकृतिर्नाम प्रकृतेरन्यथात्वम्। तत्र भवो वैकृतः। सोऽपि चतुर्विधः- प्राधान्यविपरीतः, सामर्थ्यविपरीतः, वाक्याधिकारार्थः, अर्थान्तरगामी च। प्राधान्यविपरीतः पुनस्त्रीधा-पूर्वपदार्थप्राधान्यविपरितोऽव्ययीभावः, शाकप्रति, उन्मत्तगङ्गमित्यादि। उत्तरपदार्थप्राधान्यविपर्ययस्ततपुरुषो यथा राजदन्तः, पूर्वकायः, गोवृन्दारकः, इत्यादि। अन्य पदार्थप्राधान्यविपर्ययो बहुव्रीहिः- यथा—द्वित्राः, पञ्चषा इत्यादि। सामर्थ्यविपरितोऽपि त्रिविधः। पदाऽसामर्थ्यहितुकः, वाक्याऽसामर्थ्यहितुकः, वृत्यसामर्थ्यहितुकश्चेति। देवदत्तस्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुकुलम्, द्विजेभ्यः अयं द्विजाय सुपः, असूर्यं पश्या, इत्यादिक्रमेणोदाहरणानि। अर्न्थान्तरगामी च त्रिविधः। पूर्वार्थत्यागी, त्यागात्यागी, च। शक्रगोपः, कृष्णसर्पः, शतं पत्राणाम् अस्याः शतपत्रिकेत्यादिक्रमेणोदाहरणानि। उदाहृतप्रकाराभ्यामन्यः शेषः। सोऽपि चतुर्धाः- सूत्रशेषः, असूत्रशेषः, ज्ञापकशेषः, एकशेषश्चेति। निष्कौशाम्बिः, पृषोदरः, कदुष्णम्, पितरौ- इत्यादिक्रमेणोदाहरणानीति।

उद्देश्यविधेयभावे समासविधेर्विवादः

यत्रोद्देश्यविधेयभावस्य स्पष्टप्रतीतिः तत्र नं समासः इति पदमञ्जरीटीकायाम् 'चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः'[२७] इति सूत्रस्य व्याख्यानप्रसङ्गे हरदत्ताशयः। तत्रोदाहरणञ्च-

आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयादित्यत्र कृष्णोद्देशेनाऽऽशीर्वचनस्य विधानात्रात्र समासः इति। अर्थात् आशीर्विषये हि उद्देश्यविधेयभावो गम्यते। समासे तदनवगमात्र समासः इति तस्याशयः।

किन्तु नेदं वृत्तं समीचीनं, महाभाष्ये क्वचिदपि समासविधायकेषु सूत्रेषु उद्देश्यविधेयभावान्नात्र समासः, इत्याशयकवाक्यस्याऽदर्शनिन, अथ च क्वचिदप्युद्देश्यविधेयभावेनान्वितसमासे तस्याऽसाधुत्वाऽबोधनेन च नायं पन्थाः भाष्याभिमतः इत्यनुमीयते। अत एव श्रीमता मम्मटेन प्रदत्ते-

न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयस्तत्राप्यसौ तापसः।
सोप्यत्रैव निहन्ति राक्षसकुलं जीवत्यहो रावणः।
धिक् धिक् शक्रजितं प्रबोधितवता किं कुम्भकर्णेन वा।
स्वर्गग्रामटीकाविलुण्ठनवृथोच्छूनैः किमेभिर्भुजैः२८।।

इति काव्यप्रकाशश्लोके वृथोच्छुनैरित्यत्रोच्छूनोद्देश्येन वृथात्वविधानात् वृथात्वमिति समासे गुणीभूतमिति समासगतमविमृष्टविधेयांशत्वं पददोष एव। न तत्र वाक्यदोष इति प्रकाशकाराणमाशयः। यदि तत्रोद्देश्यविधेयभावेनाऽन्वये समासस्य व्याकरणनिषिद्धत्वं स्यात्तदाऽस्याऽसाधुत्वे च्युतसंस्कृतिदोष एवोदाहृतं स्यात्। अतः उद्देश्यविधेयभावो न समासस्य रोधकः इति प्रतीतिः। यद्यपि टिकच्प्रत्ययस्य तद्धितप्रकरणे ऽदर्शनादत्र- अल्पो ग्रामो ग्रामटिका इति प्रयुक्तप्रयोगस्याऽन्यथाऽनुपपत्तेः टिकच्प्रत्ययः क्वचित् प्रत्ययाधिकारे वक्तव्यः, तदैव 'ग्रामटिका' इति शब्दस्य साधुत्वम्। तथापि जानन्ति काव्यप्रकाशकारास्तत्र 'तस्मै हितः' इति विग्रहेण तद्धितः इति प्रत्ययाधिकारसंज्ञाया अन्यत्रेव एकवचनान्तेन सिद्धे बहुवचनान्तेन 'तद्धिताः' इति कथनेन तेभ्यः प्रयोगेभ्यो हिता इति विग्रहध्वननात् पाणिनेरिच्छाऽत्रानुमीयते अष्टाध्याय्यामनुक्ता तत्सदृशाः टिकजादयोऽपि प्रत्ययाः पाणिन्यभिमता। अत एव तेन तद्धितान्तमङ्गीकृत्य स प्रयोगो व्यधायि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समासस्वरभेदे समाससंज्ञाभेदेन विग्रहभेदः।

भगवता पाणिनिना समासस्य क्वचिदव्ययीभावादिसंज्ञकत्वं, कुत्रचिद् विशेषसंज्ञारहितत्वञ्चोपपादितम्। एतादृशविभागस्य उदात्तादिस्वरः, समासान्तकार्याणि, समासाश्रयविधयः, अलुक् च कारणानि भवितुमर्हन्ति। केषुचित् स्थलेषु समासरूपस्यैकत्वेऽपि स्वरभेदेन समासभेदात् विग्रहभेदो भवति। यदा 'समासस्य'[२९] इति सूत्रं प्रवत्त्य अन्तोदात्तस्वरेणोच्चार्यते तदा तत्पुरुषसंज्ञायाः कर्तव्यत्वात् तत्पुरुषस्य विग्रहस्य बाध्यता भवतीति दृष्टान्तभूते 'इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व' इति मन्त्रे- इन्द्रस्य शत्रुः (इन्द्रस्य शातयिता) इत्यर्थो लभ्यते स्म। 'बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्'[३०] इति सूत्रेणाद्युदात्तस्वरं विधाय तत्रोच्चारितमतो बहुव्रीहिविग्रहस्य बाध्यतायामिन्द्रः शत्रुः यस्य सः अर्थात् इन्द्रो यस्य शातयिता इत्यर्थो लब्धः। येन त्वष्टुस्संकल्पविघातात् स्वरवैपरित्येन वृत्रो हतः। एवं समासनियमसिद्ध्यर्थमपि पाणिनिः स्वरभेदान् स्वव्याकरणे प्रदर्शितवान्। अत एव समासस्य वैशिष्ट्यं सर्वत्र बोध्यम्।

समासभेदे रूपभेदः

शब्दस्वरूपस्य वैलक्षण्यमपि समासभेदस्य प्रयोजनमस्ति। तद्यथा-

शिवस्य सखा इति लौकिकविग्रहे शिव ङस् सखि सु इति अलौकिकविग्रहे तत्पुरुषसमासे सञ्जाते शिवसखिशब्दात् 'राजाह सखिभ्यष्टच्'[३१] इति सूत्रेण टच्प्रत्ययः समासान्ते भवति। प्रवृत्ते हि टचि टिलोपे शिवसखः इति रूपं तत्र साधु। यदा तु कस्यचित् शिव सखा यस्येति बहुव्रीहेर्विवक्षा तदानीं पूर्वोक्तष्टच् न सम्भवतीति 'अनङ् सौ'[३२] 'सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ'[३३] 'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपुक्तं हल्'[३४] इत्यादिभिस्सूत्रैस्तत्र कृष्णसखा इति रूपसिद्धत् समासभेदेन रूपभेदोऽपि भवतीति पारदर्शिपाणनिना विहितस्य समासभेदस्याऽपरं माहात्म्यम्।

समासशक्तिविषये विवादः

समासशक्तिविषये तत्तन्मतानुसारिणः परस्परं विवदन्ते। तत्र मीमांसका नैयायिकाश्च व्यपेक्षावादिनो वर्तन्ते। तेषां मते अवयवैरर्थबोधो जायते। तेऽवयवातिरिक्तां पृथक शक्तिं समासे न कल्पयन्ति। शाब्दिकैस्तु समासादिवृत्तौ भिन्नभिन्नार्थोपस्थापकानां पदानामेकार्थोपस्थितिजनकतारूपैकार्थीभावरूपसामर्थ्यसत्वात् व्यपेक्षाशक्तिरूपं मतं नाङ्गीकुर्वन्ति। अपि तु ते वैयाकरणाः समासे समुदाये विशिष्टशक्तिमङ्गीकुर्वन्ति। अत एव राजपुरुषादिपदे राजसम्बन्ध्यभिन्नः पुरुष इत्यादिविशिष्टार्थे शक्तिः स्वीक्रियते तैः। तत्र 'समर्थ पदविधिः'[३५] इति सूत्रमेव प्रमाणम्। तथाहि समर्थः पदविधिरिति सूत्रेण पदमुद्दिश्य यो विधीयते स समर्थ इत्यर्थो लभ्यते। तत्र शक्त इत्यर्थे समर्थपदप्रयोगभूयस्त्वदर्शनात् समर्थ इत्यस्य विग्रहवाक्यार्थाऽभिधाने शक्तः इत्यर्थो वर्णनीयः, तथा च भक्त इत्यनेन भक्त्याश्रयवत् शक्त इत्यनेन शक्त्याश्रय इत्यर्थः सिद्धयतीति समाससमुदायेऽपि अर्थनिरूपिता शक्तिर्वर्तते

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति तेषामाशयः। तत्र व्यपेक्षवादिन आक्षिपन्ति, समुदायेऽप्यवयवशक्त्यैवार्थबोधनिर्वाहसम्भवः स्यात्तर्हि समासे शक्तिः कथं स्वीकर्तव्या। अत एव ते राजपुरुषादिपदेऽवयवशक्त्यैवेष्टबोधसिद्धेः समुदायशक्तिकल्पनं निर्युक्तिकमिति वदन्ति।

यथा वैयाकरणभूषणसारग्रन्थस्थाः पङ्क्तयोऽवलोक्यन्ताम्—

'यत्तु व्यपेक्षावादिनो नैयायिकमीमांसकादयो न समासे शक्तिः, राजपुरुष इत्यादौ राजपदादेः सम्बन्धिलक्षणयैव राजसम्बन्ध्यभिन्नः पुरुष इति बोधोपपत्तेरिति'[३६] तत्र नैयायिकानामाशयः- 'राजपुरुषः' इत्यत्र राजपदस्य राजसम्बन्धिनि लक्षणया 'राजसम्बन्ध्यभिन्नः पुरुषः' इतीष्टस्य बोधस्योपपत्तिः सम्भवैव। अत्र पूर्वपदे तत्सम्बन्धिनि लक्षणायामभेदेनैवान्वयस्य सुवचत्वात्। 'सविशेषणानां वृत्तिर्न वृत्तस्य विशेषणयोगो न' इति वचनेन राजपदार्थे 'ऋद्धस्य' इति विशेषणस्याऽन्वयापत्तिरूपदोषोऽपि नास्तीति।

समासशक्तिविषये मीमांसकाऽपि शाब्दिकं मतं नाङ्गीकुर्वन्ति। तेऽपि नैयायिकानामिव व्यपेक्षापक्षमेव स्वीकुर्वन्ति। अवयवशक्तिसमर्थकास्तेऽप्यवयवशक्त्यैव राजसम्बन्ध्यभिन्नपुरुषबोधो भविष्यतीति नैयायिकवत् राजपदस्य राजसम्बन्धिनि लक्षणामुररीकुर्वन्ति। तथा च तेषामपि मते 'ऋद्धस्य' इति विशेषणस्य राजपदार्थेऽन्वयापत्तिरूपो दोषो 'सविशेषणानां वृत्तिर्न वृत्तस्य विशेषणयोगो न' इति वचनेनैव वार्यते।

वैयाकरणमतेन समुदायशक्तिस्वीकारे तु 'राजपुरुषः' इत्यत्र राजपदार्थस्य मुख्यविशेषणतयोपस्थितेरभावात् न तत्र 'ऋद्धस्य' इत्यस्य विशेषणस्यान्वयः। पदजन्यप्रतीतिविशेष्यताश्रयरूपपदार्थत्वस्य तत्राऽविद्यमानत्वात्। समुदायशक्त्यैव 'राजपुरुषः' इत्यस्मात् 'राजसम्बन्ध्यभिन्नः पुरुषः' इत्यर्थबोधो जायते। अयमेव पक्षः एकार्थीभावरूपो वर्तते। तद्विषयं प्रमाणीकुर्वन्तीमाः भूषणस्थाः कारिकाः[३७]

समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत्।
बहूनां वृत्तिधर्माणां वचनैरेव साधने।
स्यान्महद् गौरवं तस्मादेकार्थीभाव आश्रितः।।

पङ्कजशब्ददृष्टान्तेन समुदाये शक्तिं साधयत्यत्र कौण्डभट्टो भूषणसारग्रन्थे। अर्थात् 'समुदायः शक्तिमान् पदविधित्वात्' इत्यनुमानेन विशिष्टशक्तिं साधयितुं शक्यते इति श्लोकध्वननेन सूचयति न व्यक्ततयाऽभिधत्ते। सर्वमतेन पद्मार्थनिरूपिता शक्तिः पङ्कजशब्देऽस्तीति तस्याशयः।

ननु दृष्टान्ते योगादेव पङ्कजनिकर्तृत्वेन रूपेण पद्मस्योपस्थितत्वात् साध्यवैकल्यमिति चेन्न, तथा सति तेन रूपेण कुमुदादीनामपि बोधप्रसङ्गात् पद्मत्वरूपेणैव पद्मोपस्थितये समुदायशक्तेरावश्यकत्वात्। न चाऽत्रापि लक्षणा सुवचा, अनुपपत्तिप्रतिसन्धानं विनैव तत्र पद्मार्न्थस्य प्रतीतेः सर्वसम्मतत्वात्। किञ्च 'वा पुंसि पद्मम्' इति कोशात् तत्र रूढिशक्तिरावश्यकी, न हि कोशे लाक्षणिकानां पाठो दृश्यते। एवं रथकारादिपदेऽपि। अत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एव मीमांसायां रथकाराधिकरणे 'वर्षासु रथकारोऽग्नीनादधीत' इति श्रुतिस्थरथकारशब्दाद् रूढ्योपस्थितस्य सङ्करजातिविशेषस्याऽधिकारित्वं प्रकल्प्याऽपूर्वविधः कल्पनं सिद्धान्तितं सङ्गच्छते। अन्यथा तच्छ्रुतेः क्लृप्तयोगेन ब्राह्मणादिविषयतयैवोपपत्तौ तत्कल्पनमयुक्तं स्यात्। न चैवं पक्षतावच्छेदकाऽऽक्रान्तपङ्कजादिपदेऽतिरिक्तशक्तेस्सिद्धत्वादंशतस्सिद्धसाधनमिति वाच्यम्। प्रकृते पक्षतावच्छेदकावच्छेदेन समुदायशक्तिमत्वाऽनुमितेरभीष्टतया तत्र सामानाधिकरण्येन सिद्धेरप्रतिबन्धकत्वात्। राजपुरुषादिपदे व्यभिचारसंशयस्य तु नानुमितिं प्रति प्रतिबन्धकत्वम्, तस्य ग्राह्यसंशयपर्य्यावसायित्वेन तदनुकूलत्वात्। न च व्यभिचारशङ्कानिर्वतकानुकूलतर्कशून्यत्वेन पदविधित्वरूपहेतोरप्रयोजकत्वमिति शङ्क्यम् 'समर्थः पदविधिः' इत्यनुशासनलभ्यव्याप्तिग्रहमूलकस्य 'यदि पदविधित्वं समुदायशक्तिमत्वस्य व्यभिचारि स्यात्तर्हि तद्व्याप्यं न स्यात् अस्ति च पदविधित्वं सम|ुदायशक्तिव्याप्यं नातो व्यभिचारि' इत्यनुकूलतर्कस्य तत्र सत्वात्।

किञ्च विशिष्टशक्त्यनभ्युपगमे 'राज्ञः पुरुषः' इत्यत्रेव 'राजपुरुषः' इत्यादावपि राजादिपदार्थस्य स्वतन्त्रोपस्थितिसत्वात् तत्र ऋद्धादिपदार्थान्तरान्वयापत्तिः।

तदभ्युपगमे तु राजादेः पदार्थैकदेशत्वात् 'पदार्थः पदार्थेनान्वेति न तु तदेकदेशिनेति न्यायेन न पदार्थान्तरान्वयापत्तिः'। यत्तु सविशेषणानामिति वचनेन तद्वारणं सम्भवतीति, तत्र तस्य न्यायसिद्धार्थानुवादकत्वौचित्यात्। एवमेव व्यपेक्षायां वाक्यस्य, एकार्थीभावे समासस्य च साधुत्वमिति स्वभावत एव प्रयोगनियमसम्भवात् समासाधिकारे 'विभाषा' वचनमपि न कार्यम्। अत एव व्यपेक्षापक्षमुद्भाव्य 'अथैतस्मिन् व्यपेक्षायां सामर्थ्ये योऽसावेकार्थीभावकृतो विशेषः स वक्तव्यः'[३८] इति भाष्यकारेण तद्दुषणमभ्यधायि। यदि तु नैयायिकसरणिमनुसृत्य पूर्वोक्तरीत्या राजपुरुषादिसमासे राजादिपदस्य तत्सम्बन्धिनि लक्षणाऽभ्युपगमेन राजादेः पदार्थैकदेशत्वात् न तत्र ऋद्धादे विशेषणतयान्वय प्रसक्तिः। विभाषावचनञ्च कृतमेव। यद्वा लक्षणया राजसम्बन्ध्यभिन्नः पुरुषः इत्यर्थस्य बुबोधयिषायां राजपुरुष इति समासस्य, शक्त्या राजसम्बन्धवान् पुरुषः, इत्यर्थबुबोधयिषायां राज्ञः पुरुषः इति वाक्यस्य च साधुत्वमिति व्यवस्थायाः कर्तुं शक्यतया तद्वचनमपि न कार्यम्।

अत एवैकार्थीभावपक्षमेव वृत्ताऽभ्युपगच्छता वररुचिना 'पृथगर्थानां पदानामेकार्थीभावस्समर्थवचनम्'[३९] इति वार्तिकमभिहितम्। तं वार्तिकं व्याचक्षाणेन भगवता भाष्यकारेण 'पृथगर्थानां पदानामेकार्थीभावस्समर्थवचनम्, क्व पुनः पृथगंर्थानि? क्वैकार्थानि ? वाक्ये पृथगर्थानि राज्ञः पुरुष इति। समासे पुनरेकार्थानि' राजपुरुष[४०] इति। इत्युक्तं सङ्गच्छते। तत्राऽर्थेषु पृथक्त्वं भिन्नभिन्नोपस्थितिविषयत्वमिति नागेशेनोद्योतटीकायां व्याख्यातम्[४१]।

समास इत्युपलक्षणं वृत्तिमात्रस्य। एवञ्चोक्तभाष्येण राज्ञः पुरुषः इत्यादि वाक्येऽवयवनिष्ठपृथक्शक्त्युपस्थापितानामर्थानां शाब्दबोधविषयत्वम्, राजपुरुष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यादिवृत्तौ तु समुदायशक्त्युपस्थापितानां तद्विषयत्वमिति स्पष्टतयाऽवगम्येत। तथा च मुनित्रयसम्मतकल्पनायाः न्याय्यत्वात् तद्विरुद्धकल्पनायाश्चाऽन्याय्यत्वात् समासादिवृत्तौ विशिष्टशक्तिरभ्युपेयेति शाब्दिकसिद्धान्तः।

तस्मादेव व्यपेक्षावादिसिद्धान्तं दूषयित्वा स्वसिद्धान्तोपस्थापनाय कौण्डभट्टो भूषणसारग्रन्थस्य समासप्रकरणे[४२] निम्नलिखितान् श्लोकान् मुक्तकण्ठेनाऽभ्यधत्त-

समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत्।
बहूनां वृत्तिधर्माणां वचनैरेव साधने
स्यान्महद् गौरवं तस्मादेकार्थीभाव आश्रितः
चकारादिनिषेधोऽथ बहुव्युत्पत्तिभञ्जनम्।
कर्तव्यं ते न्यायसिद्धं त्वस्माकं तदिति स्थितिः।
अषष्ठ्यर्थबहुव्रीहौ व्युत्पत्त्यन्तरकल्पना।
क्लृप्तत्यागश्चास्ति तव तत् किं शक्ति न कल्पये।
आख्यातं तद्धितकृतोर्यत् किञ्चिदुपदर्शकम्।
गुणप्रधानभावादौ तत्र दृष्टो विपर्ययः।
पर्यवस्यच्छाब्दबोधाऽविदुरप्राक्क्षणस्थिते
शक्तिग्रहेऽन्तरङ्गत्वबहिरङ्गत्वचिन्तनम्। इति।

एवञ्च वृत्ताऽवयवशक्तिकल्पनायां महद्गौरवम्, त्रिमुनिसिद्धान्तविरुद्धञ्च भविष्यतीत्युपर्युक्तवचनेन सिद्धम्।

निष्कर्षः

पृथक्पृथग्भूतार्थप्रतिपादकानां नानापदानामे एकस्मिन्नर्थे समुदायशक्तिरिति तत्रैव वृत्तिरिति व्यवहारः। तस्यैव भावः कौमुदीकारेण परार्थाभिधानं वृत्तिरिति उक्तम्। समासभेदाः कतीत्यत्र समासः पञ्चविध इति कौमुदीकारः भूषणकारस्तु सुपां सुपा तिङा नाम्ना धातुनाऽथ तिङां तिङा। सुबन्तेतेनेति च ज्ञेयः समासः षडविधो बुधैरिति षोढा समासस्य भेदान् प्रोक्तवान्। प्रायोवादेन समासश्चतुर्विध इति केचित्। चतुर्विधसमासे अव्ययीभावः तत्पुरुषो बहव्रीहि र्द्वन्द्वश्च आगच्छन्ति। तत्पुरुषसमासे एव कर्मधारय द्विगु—नञ्-कुगतिप्राद्युपपदविशेषसंज्ञाः दृश्यन्ते। अव्यीभावादिविशेषसंज्ञारहिता भूतपूर्वः, अनुव्यचलत्, जीमूतस्येव, काकतालीयम्, आत्मनेपदमित्यादयो वर्तन्ते। षड्विधेषु तु चत्वारः सुबन्तपूर्वपदकाः सन्ति। द्वौ च तिङन्तपूर्वपदकौ वर्तेते। तत्र (१) सुपां सुपा- नीलघटः, (२) सुपां तिङा- अनुव्यचलत्, (३) सुपां नाम्ना- कुम्भकारः (४) सुपां धातुना- आयतस्तूः (५) तिङां तिङा- पचतभृज्जता (६) तिङा सुबन्तेन- जहिस्तम्बः। समासाः चत्वार इति प्रायोवादत्वेन पूर्वोक्तविशेषसंज्ञारहितेषु वागर्थाविव, इत्याद्युदाहरणं ग्राह्यम्। नैयायिकमीमांसकादयोऽवयवशक्तिवादिनः शाब्दिकास्तु समुदायशक्तिवादिन इति सारसंक्षेपः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१. दीक्षितः, पृ.सं. २१६

२. बनारसीदास ; २०१२ ई.।

३. पाणिनिसूत्रम् (१।२।७०)

४. पाणिनिसूत्रम् (१।२।६७)

५. पाणिनिसूत्रम् (२।१।५२)

६. पाणिनिसूत्रम् (२।१।५१)

७. पाणिनिसूत्रम् (२।४।२)

८. पाणिनिसूत्रम् (२।४।३)

९. पाणिनिसूत्रम् (२।१।१)

१०. पाणिनिसूत्रम् (३।३।१९)

११. पूर्ववत् वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी पृ. २१५।

१२. पाणिनिसूत्रम् (२।१।६)

१३. भट्टः, पृ.३३२।

१४. पूर्ववद् भूषणसारग्रन्थस्य ३३२ पृष्ठे लिखितमिदं वार्तिकमिति।

१५. पाणिनिसूत्रम् (२।१।४)

१६. पाणिनिसूत्रम्(२।२।१९)

१७. भट्टः, नागेशः, परिभाषेन्दुशेखरः, (परिभाषासंख्या ७ ६)
तृतीयसं., वाराणसी : चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम्, १९९७ ई.।

१८. पाणिनिसूत्रम् (१।१।६२)

१९. पाणिनिसूत्रम् (८।२।७)

२०. कात्यायनवार्तिकम् (संख्या ७२५।)

२१. मयूरव्यंसकादयश्च(२।१।७२)इति सूत्रस्थं गणसूत्रम्।

२२. एतदपि मयूरव्यंसकादयश्च(२।१।७२)इति सूत्रस्थं गणसूत्रम्।

२३. पाणिनिसूत्रम् (२।१।२१)

२४. पाणिनिसूत्रम् (२।१।९)

२५. भट्टः, जगदीशः, शब्दशक्तिप्रकाशिका, (पृ. १९२ तः १९४ यावत्)
चौखम्बाप्रेसः, पुनर्मु. वाराणसी : १९३४ ई.।

२६. पूर्ववत् शब्दशक्तिप्रकाशिका (पृ. १९६)

२७. भोजरचितः, शृङ्गारप्रकाश(मूलमात्रम् पृ. ६२ तः ६५यावत् , मैसूरप्रेसः
आन्ध्रः १९५५ ई.।

२८. पाणिनिसूत्रम् (२।३।७३)

२९. मम्मटः, काव्यप्रकाशः(७।१८३ श्लोकसं.), वाराणसी : ज्ञानमण्डललिमिटेड, २००४ ई.।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३०. पाणिनिसूत्रम् (६।१।२३)
३१. पाणिनिसूत्रम् (६।२।१)
३२. पाणिनिसूत्रम् (५।४।९१)
३३. पाणिनिसूत्रम् (७।१।९३)
३४. पाणिनिसूत्रम् (६।४।८)
३५. पाणिनिसूत्रम् (६।१।६८)
३६. पाणिनिसूत्रम् (२।१।१)
३७. पूर्ववत् भूषणसारः पृ.सं. ३६६।
३८. पूर्ववत् भूषणसारः पृ.सं. ३४८।
३९. पतञ्जलिः, व्याकारणमहाभाष्यम् (कैयटनागेशकृतप्रदीपोद्योतटीकोपेतम्) पृ. ३१५, दिल्ली : मोतीलाल वनारसीदास, १९६७ ई.।
४०. पूर्ववत् महाभाष्यम् पृ.सं. ३२१।
४१. पूर्ववत् महाभाष्यम् पृ.सं.३२२।
४२. तत्रैव।
४३. पूर्ववत् भूषणसारः पृ.सं. ३४८तः ३६७ यावत्।

सन्दर्भग्रन्थसूची

१. दीक्षितः, भट्टोजि, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, (बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता) पुनर्मुद्रणम्, वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास; २०१२ ई.।
२. पतञ्जलिः, व्याकरणमहाभाष्यम् (कैयटनागेशकृतप्रदीपोद्योतटीकोपेतम्) दिल्ली : मोतीलाल वनारसीदास, १९६७ ई।
३. पाणिनिः, अष्टाध्यायी (प्रह्लादटिप्पणीसहिता) वाराणसी : प्रकाशक- चौखम्बा प्रेसः, २०४२ वि.सं।
४. भट्टः, कौण्ड; वैयाकरणभूषणसारः (दर्पणहिन्दीव्याख्योपेतः) व्या. द्विवेदी, ब्रह्मदत्तः, प्रथमसं-वाराणसी : चौखम्बा ओरियन्टालिया १९८५ ई.।
५. भोजरचितः, शृङ्गारप्रकाशः, मूलमात्रम् मैसूर प्रेसः आन्ध्र १९५५ ई.।
६. मम्मटः, काव्यप्रकाशः, वाराणसी : ज्ञानमण्डललिमिटेड, २००४ ई.।
७. मिश्रः, विश्वनाथः, परिभाषेन्दुशेखरः, सुबोधिनीति हिन्दीव्याख्योपेतः तृतीयसं., वाराणसी : चौखम्बासुरभारती, २०१२ ई.।
८. भट्टः, जगदीशः, शब्दशक्तिप्रकाशिका, चौखम्बाप्रेसः, पुनर्मु., वाराणसी : १९३४ ई.।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदान्त बोध

✍ अनन्तश्री महामण्डलेश्वर स्वामी आत्मानन्द गिरि

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

वैदिक सनातन धर्मका माध्यमले वसुधामा निवास गर्ने जीवमात्रको कल्याणद्वारा सबै प्राणीहरूमा समान भावको सुख, शान्ति, निरामयले युक्त भएको औपनिषदिक अद्वैत सिद्धान्त नै हो भन्ने बोध सर्वविदित छ।

भगवत्पाद आचार्य शङ्करले मानवमात्रलाई कल्याण प्राप्त हुने ज्ञानको द्वार (ढोका) खोलिदिनुभएको छ। परम्परादेखि प्राप्त साम्प्रदायिक सङ्कीर्णताले रहित वैचारिक आक्रोश र व्यक्तिहितका सिद्धान्तलाई हटाएर निरन्तर परम आनन्दको सागरमा रमण गर्ने ज्ञानका पथप्रदर्शक आचार्य परम्पराले प्राप्त ज्ञान, वैभव वर्तमान समयमा मिथ्या धार्मिक विचारहरू रूढिग्रस्त मान्यता र पाखण्डपूर्ण क्रियाहरूको अधीनमा पूर्णतया लुप्त हुने स्थितिमा पुगेको छ।

श्रुति तथा उपनिषद्का सिद्धान्तहरू व्यक्ति, सम्प्रदाय र राष्ट्रवादभन्दा पनि पर समग्र विश्वब्रह्माण्डको कल्याणलाई ध्यानमा राखी परम सत्य ज्ञान जो श्रुति, स्मृति र अनुभूतिद्वारा सिद्ध भएको छ जसलाई प्रतिपादन गर्ने शास्त्रहरूलाई 'वेदान्त' दर्शन भनेर पाश्चात्य र पूर्वीय विद्वान्हरूले नामाकरण गर्नुभएको छ। अद्वैत ब्रह्मलाई प्रतिपादन गर्ने तर्कहरूको गौण प्रयोग आचार्य शङ्करले स्वकीय सिद्धान्तलाई प्रतिपादन र परकीय सिद्धान्तलाई निराकरण गर्ने प्रयोग गर्नुभएको छ। **श्रुत्यानुगृहीत ह्यात्र तर्कोऽनुभवाङ्गत्वेनाश्रीयते", "गुरुतस्तर्कतश्चैव श्रुतिमतस्तर्कोऽनुसन्धीयताम्** मन्त्रहरूको देवता, छन्द र ऋषिहरूको निरूपण गर्न गुरूपरम्परा, तर्कशास्त्र र ब्राह्मण ग्रन्थ कठोर तार्किक प्रयोगलाई त्यति मान्यता प्रदान गरिएको कुरा प्राप्त हुँदैन। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' यस मन्त्रलाई व्याख्या गरेर अनेकत्वमा एकत्व, व्यष्टि भावलाई छोडेर समष्टि भावको उदय अथवा यो पनि भन्न सकिन्छ कि क्षुद्र अहं भावलाई त्यागेर समदृष्टिको अनुभव गराउनु नै वेदान्तको व्यावहारिक पक्ष हो।

✍ *पीठाधीश, गलेश्वर आश्रम, देवघाट*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैदिक दर्शनको द्वितीय पक्ष मानव समाजमा सदाचारको स्थापना गर्नु पनि हो। जसमा नैतिकतापूर्वक निष्काम कर्म सम्पादन गर्नु पर्ने अवश्य कर्तव्यलाई बढाउन खोजेको देखिन्छ। **'कर्मयोगस्य ज्ञानयोगोपायत्वं प्रतिपादितम्, न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते'** यस श्लोकको व्याख्या गर्ने क्रममा निष्काम कर्महरू सत्त्वशुद्धिका कारण हुन्छन् भन्नी बोध गराउनु हो। सुसंस्कृत भएको मन नै ज्ञान प्राप्त गराउनमा सहयोगी हुन्छ। यस कारण निष्काम कर्महरू ज्ञान लाभ गर्नमा सहयोगी नै हुन्छन्। स्वच्छन्द आचरण र भोगवादहरूको खण्डन गर्दै सन्तुलित गृहस्थ त कर्मसन्न्यासका मार्गहरूलाई प्रतिपादन गरेर श्रुतिसम्मत वर्णाश्रमको व्यवस्थाहरूको प्रतिपादन गरेको पाइन्छ। अहङ्कार, फलाकाङ्क्षा र कर्तृत्व भावनाको निषेध गरेर रहने महामानव नै यहाँ सन्न्यासी हो। सन्न्यासमा समस्त कामनाहरूको त्याग गरिन्छ, यस कारण हाम्रो समाजले सन्न्यासीहरूलाई महान् हुन् भनेर स्वीकार गरेका छन्, सम्बोधन गरेका छन् 'महात्मा'।

ज्ञानको दृष्टिमा अविद्याको निवृत्ति अवश्य गर्नु पर्दछ। आफ्नो जीवन कालमा नै अज्ञान बन्धनको निवृत्ति सम्भव हुन्छ। वेदान्तको दृष्टिमा जीवले स्वरूपबोध गरेपछि उसको लोकागमन हुँदैन भन्ने कुरालाई स्वीकार गरेको छ। 'न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति' जीवनमुक्त पुरुषको शरीर रूप उपाधि नष्ट भएपछि अद्वितीय ब्रह्ममा लीन हुन्छ उसको अन्यत्र उत्क्रमण वा गमनागमन हुन सक्दैन। 'उपाधिनाशाद् ब्रह्मैव सन् ब्रह्माप्येति निर्द्वयम्'।

जसरी वृक्ष, तृण, पराल, भुस र वस्त्रहरू डढेपछि खरानी बन्दछन् त्यसै गरी शरीर, इन्द्रिय, प्राण र मनादि समस्त दृश्य पदार्थहरू दग्ध भएपछि परमात्म स्वरूप नै हुन जान्छ। 'ज्ञानग्निदग्धमोयाति परात्मभावम्'। मोक्षकामी पुरुषले शास्त्रविहित कर्मानुष्ठान तथा वैराग्यको अभ्यास गर्दै हृदयमा परमार्थ बोधरूप ज्ञान प्राप्त गरेर त्यस ज्ञानाग्निद्वारा विषय वासनाहरूलाई दग्ध बनाएपछि परमात्म भावलाई प्राप्त गर्दछ।

'ब्रह्मादिस्थावरान्तेषु वैराग्यं विषयेष्वनु। यथैव काकविष्ठायां वैराग्यं तद्धि निर्मलम्।' (अपरोक्ष्यानुभूति) ब्रह्मलोकको प्राप्तिबाट आरम्भ गरेर तृणपर्यन्त सांसारिक विषयहरूमा जसलाई वैराग्य उत्पन्न भएको छ। त्यस प्रकारका मनुष्यहरूको बुद्धि जसरी काकविष्ठामा हेय रूप हुन्छ त्यसरी नै सबै विषयहरूमा भयो भने त्यो वैराग्यलाई निर्मल वैराग्य भनिन्छ। जुन मनुष्यले यस जगत्मा नानाभाव पदार्थहरूलाई सत्यको रूपमा स्वीकार गर्दछ भने उसलाई मायाले ठगेको हुन्छ। 'इह पश्यति नानात्वं मायया वञ्चितो नरः' श्रवणादिमा केही दार्शनिकहरूले विधिको अभावलाई मान्दछन् **'आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यः'** (बृह.।२।४।५) यी वाक्यहरू मोक्षका लागि ब्रह्मसाक्षात्कारको विधान गर्न सक्दैनन् किनभने ब्रह्म साक्षात्कार ब्रह्मरूप भएको हुनाले ब्रह्म नित्य स्वरूप हो, जसमा विधेयत्व (कृति साध्यत्व) सम्भव हुन सक्दैन 'तस्मान्न बोध विधिपरा वेदान्तः' (पृ ८२।भा।)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ज्ञो नित्यचैतन्य्योक्यमात्मा' जुन जडस्वरूप तथा आगन्तुक (जन्य) ज्ञान हुने गर्दछ त्यो कदाचित् परोक्ष कदाचित् सन्दिग्ध र कदाचित् विपर्ययग्रस्त हुने गर्दछ। परन्तु आत्मामा यी सबै कार्य कहिल्यै पनि हुन सक्दैनन्। आत्माले कुनै वस्तुको अनुमान गर्ने समयमा पनि अपरोक्ष हुन्छ विपरीत ज्ञानको समयमा पनि स्वयंमा अविपरीत रहेको हुन्छ, यस्तो आत्मस्वरूप चैतन्यको अभाव कहिल्यै पनि हुँदैन।

जीव अणु हुन सक्दैन किनभने व्यापक विभू ब्रह्म भएकाले जीव पनि विभू नै हो। यस कारण श्रुतिहरूमा जीवलाई विभू भनेर नै कथन गरिएको छ 'स वा एष महानज आत्मा' (बृह.।४।४,२२) यदि जीवलाई अणु भन्ने हो भने शरीरव्यापिनी वेदना उत्पन्न हुन सक्दैन। 'न साधनायत्तस्यानित्यत्वात्' अद्वैत मतमा मोक्षतत्त्व कुनै साधनाद्वारा जनित होइन। ब्रह्मस्वरूप मोक्ष नित्य हो केवल ज्ञानद्वारा नै उसको अभिव्यक्ति हुन्छ। ब्रह्ममा कर्तृत्व-भोक्तृत्वको भान नै बन्धन हो। यो भान रहेसम्म मोक्ष कदापि हुन सक्दैन 'न अविद्याप्रत्युपस्थापितत्वात्' परमात्मा पनि न बद्ध हुन्छ न मुक्त नै किनभने परमात्मा पनि नित्य मुक्त हुन्छ। बुद्ध्यादिहरूको सङ्घात पनि बद्ध र मुक्त हुँदैन किनभने त्यो अचेतन (जड मात्र) हो यथार्थमा भन्नुपर्दा आत्मा एक हो, बुद्ध्यादि सङ्घात रूपहरू उपाधिहरूको भेदले भिन्न जस्तो हो। विशुद्ध भएर पनि अविशुद्ध जस्तो हुन जान्छ। बुद्ध्यादि सङ्घात रूप उपाधिलाई विलयन गरेको अवस्थामा मुक्त जस्तै र अन्य उपाधिको योगले बद्ध जस्तो प्रतीत हुन्छ। एउटा उपाधिको योगमा उपहित र विलयनमा अभाव भए जस्तो हुन्छ। यसरी नै मोक्षको सम्बन्ध न परमात्मासँग हुन्छ न बुद्ध्यादि सङ्घातसँग नै, परन्तु बुद्ध्यादि उपाधिको सम्बन्धले जीवभावलाई प्राप्त गरेको आत्मा नै बद्ध र मुक्त हुन्छ। यही अर्थलाई विचार गरेर श्रुतिले अन्वय र व्यतिरेक भाव प्रदर्शन गरेका छन्।

'यत्र हि द्वैतमिव भवति, तदितर इतरं पश्यति' (बृह.२।४।१४) इत्यादि श्रुतिहरूले सोपाधिक आत्मामा नै कर्तृत्वभोक्तृत्वादि सिद्ध गर्दछन्। जसरी बाज आकाशमा उड्दाउड्दै थाकेर आफ्नो गुँडमा पुगेर शयन गर्दछ यसरी नै जाग्रत र स्वप्नमा अन्तःकरणको सक्रियताले आत्मा क्रियाशील जस्तो भएर आफूलाई श्रान्त अनुभव गर्दै सुषुप्तिमा सुषुप्त जस्तो हुन्छ।

वाक्य अथवा शास्त्रहरू जुन परम तात्पर्यमा प्रवृत्त हुने गर्दछन् त्यही उसको मुख्यार्थ हुने गर्दछ। शास्त्रद्वारा प्रतिपादित जति पनि विधिवाक्यहरू छन् ती सबै वाक्यहरू कर्ताले इच्छा गरेको अभीष्ट अर्थलाई प्राप्त गर्ने उपायहरूको उपदेश प्रदान गर्ने गर्दछन्। यस कारण इष्ट साधनता प्रतिपादन गर्नु नै शास्त्रको परम तात्पर्य हो। अनुद्यमान कर्ताको स्वरूप प्रकाश गर्ने सामर्थ्य विधिवाक्यमा हुँदैन। लोकमा प्रसिद्ध भएका कर्ताहरूलाई अनुवाद गरेर यदि कुनै शास्त्रले इष्टोपायताको प्रतिपादक मान्न सकिंदैन। यस कारण 'तत्त्वमसि' इत्यादि अभेद बोधक शास्त्रहरूको स्वाभाविक कर्तृत्वमा विरोध भएको हुनाले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आत्मामा अविद्या प्रयुक्त कर्तृत्व नै समाधान हो।

'एष ह्येव साधु कर्म कारयति' (कौषीतकी ३।८) यी श्रुति मन्त्रहरूमा सबै जीवका कर्महरू र जीवहरू ईशसत्ताको अधीनमा रहन्छ भन्ने कुरा प्रदर्शन गरिएको छ। यो अन्य विरोधी प्रबल प्रमाण उपस्थित भएमा बाधित हुन सक्दछ। तर यस भनाइलाई बाधित गर्ने अन्य कुनै विरोधी प्रबल प्रमाण उपलब्ध हुँदैनन्। यस कारण यी श्रुति वाक्यहरूको तात्पर्य ईश्वर प्रशंसामात्र हो भनेर मान्न सकिँदैन। जीवहरूको ईश्वराधीनता कल्पनीय होइन यो त श्रुतिमन्त्रहरूद्वारा सिद्ध भएको अवस्थामा अन्य प्रवर्तकको कल्पनालाई मात्र अवरोधकको रूपमा मान्न सकिन्छ। प्रमाणले सिद्ध भएको प्रवर्तकलाई प्रवर्तकको प्रतिबन्धक भनेर प्रमाणित गर्न सकिँदैन।

ईश्वर निरवयव हो यस कारण जीव ईश्वरको अंश हो भनेर मान्न सकिँदैन। यस विषयमा अन्य हेतु यो पनि हो कि यदि जीवहरू ब्रह्मका अंश हुन् भनेको अवस्थामा जसरी जीवमा अनेक प्रकारका क्लेशहरू हुन्छन् ती सबै ईश्वरमा पनि स्वतः उपलब्ध हुन्छन्। यो भएको अवस्थामा जीव मुक्त भएर ब्रह्मलोक प्राप्त गर्न सक्दैन किनभने त्यहाँ पनि इहलोकमा प्राप्त भएको दुःख जस्तै निरन्तर दुःख हुन सक्छ। इति।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रेय र प्रेयमार्गको गन्तव्य

✍ श्री १००८ स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती

वेदान्त सिद्धान्तअनुसार जगत्मा तीन प्रकारका पदार्थहरू देखिन्छन्। सत्पदार्थ, असत्पदार्थ र मिथ्यापदार्थ। त्यसमा सत् वा सत्य पदार्थ त्यो हो जसको तीनै कालमा बाध हुँदैन। त्यसैले आचार्यहरूले **त्रिकालाबाध्यत्वं सत्यत्वम्** भनेर सत्यको परिभाषा गर्नुभएको छ। यस परिभाषाअनुसार सत्य पदार्थ केवल ब्रह्ममात्र सिद्ध हुन्छ, किनकि **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म, सच्चिदानन्दरूपाय, ॐ तत्सदिति निर्देशः** इत्यादि श्रुति र स्मृति वाक्यहरूले ब्रह्मलाई नै सत् शब्दले अभिधान गरेका छन्। त्यसै गरी जो पदार्थ हुँदा पनि हुँदैन र देखिंदा पनि देखिंदैन त्यस्तो पदार्थलाई असत् पदार्थ भनिन्छ। जसको केवल सामान्यवृत्तिमात्र बन्दछ। जस्तै खपुष्प, शशश्रृङ्गादि पदार्थ असत् पदार्थ हुन्। योगदर्शनमा यसलाई **शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः** भन्ने सूत्रानुसार विकल्पवृत्ति भनेर बताइएको छ। यस्तो असत् पदार्थलाई कसैको कार्य मान्न पनि मिल्दैन। त्यसैले श्रीधर स्वामीले पनि श्रीमद्भागवतको टीकामा **अकार्येभ्यश्च खपुष्पादिभ्यस्तद्व्यतिरेकात्** भनेर उल्लेख गर्नुभएको छ। यसको तात्पर्य असत् पदार्थको सृष्टि नै छैन तर शब्द प्रयोगको आधारमा वृत्तिमा निहित रहेको अनुभव गर्न सकिन्छ।

त्यसै गरी सत् र असत्देखि भिन्न अर्को पदार्थ छ, मिथ्या पदार्थ। जो देखिन्छ, अनुभवको विषय पनि बन्छ तर यथार्थ ज्ञानद्वारा बाधित हुन्छ वा नाश हुन्छ। त्यसैले मिथ्यात्वको लक्षण **ज्ञानबाध्यत्वं मिथ्यात्वम्** भनेर आचार्यहरूले गर्नुभएको छ। यसको तात्पर्य यथार्थज्ञान भएपछि जो हट्छ, त्यो नै मिथ्या हो। जस्तै बाह्य प्रपञ्च जो देखा परेको छ, यी सबै मिथ्या पदार्थ हुन्। यथार्थ ब्रह्मतत्त्व साक्षात्कार भएपछि यी सबै व्यावहारिक पदार्थहरू स्वतः निवृत्त हुन्छन्। यसरी सामान्य ढङ्गले विचार गर्दा जो छ देखिंदैन त्यो सत्पदार्थ हो, जो छुँदा पनि छैन, देखिंदा पनि देखिंदैन त्यो असत् पदार्थ हो र जो देखिन्छ तर वास्तवमा छैन त्यो मिथ्या पदार्थ हो भन्ने कुरा प्रस्ट हुन्छ। हामी जीवात्मालाई सत्पदार्थले पनि दुःख दिंदैन र असत् पदार्थले पनि दुःख दिंदैन केवल मिथ्या पदार्थले दुःख दिइरहेको हुन्छ किनकि मिथ्या पदार्थ नै व्यावहारिक पदार्थ हो। व्यवहार सत्य र मिथ्याको सम्मिश्रणबाट मात्रै सम्भव छ।

✍ *पीठाधीश, श्रीहरिहर सन्न्यास आश्रम, देवघाटधाम*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्यले अध्यास भाष्यमा यसै कुरालाई **सत्यानृते मिथुनीकृत्य अहमिदम् ममेदम् इति नैसर्गिकोऽयं लोकव्यवहारः** भनेर व्यक्त गर्नुभएको छ, त्यसैले व्यावहारिक संसार विचित्रको छ। यसलाई सत्‌रूपले सिद्ध गर्न पनि सकिँदैन र असत् रूपले सिद्ध गर्न पनि मिल्दैन। त्यसै हुनाले कतिले यसलाई अनिर्वचनीय पनि भन्दछन्। नाम रूपात्मक विचित्रको यो संसारमा ब्रह्मतत्त्व साक्षात्कार नभएसम्म जीवात्माहरू विविध योनिमा जन्म लिइरहन्छन् र मरिरहन्छन्। यो भवचक्र रोकिँदैन। अविद्या काम र कर्मका आधारमा शास्त्रनिषिद्ध कर्ममा प्रवृत्त हुँदा कहिले पापातिशयका कारण जीवात्मा अतिनीच स्थावर योनिमा प्राप्त हुन्छ भने फेरि कहिले शास्त्रीय संस्कार प्रबल भएर शुभ कर्मको आचरणले ब्रह्मलोकसम्मको गतिलाई प्राप्त गर्दछ। त्यसै गरी कुनै बेला फेरि धर्माधर्मको समानतामा जीवात्माले मनुष्य योनि प्राप्त गर्दछ र संस्कारानुसार व्यवहार गर्दछ। शास्त्रहरूले पनि यिनै रहस्यलाई व्यक्त गरेको पाइन्छ। शुभैराप्नोति देवत्वं निषिद्धैर्नारकीं तनुम्। उभाभ्यां पुण्यपापाभ्यां मानुष्यं लभतेऽवशः (नै.सि. ४१)

त्यसै हुनाले नै मनुष्य योनिलाई दुर्लभ मानिएको हो। दुर्लभो मानुषो देहो, न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्, जन्तूनां नरजन्म दुर्लभमतः इत्यादि स्मृति पुराणादिका प्रसिद्ध सूक्तिहरूले पनि मनुष्य जीवनको प्रशंसा गरेको पाइन्छ। इह चेदवेदीदथसत्यमस्ति न चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः भनेर उपनिषद्‌ले समेत मुक्तिको द्वारको रूपमा मनुष्य जीवनलाई स्वीकारेको देखिन्छ। यस्तो परिस्थितिमा मनुष्यले कुन पथ अवलम्बन गर्नुपर्ला ? भन्ने जिज्ञासा विचारवान् मनुष्यको मनमा जाग्न सक्छ। सामान्यतया मनुष्यका अन्तःकरणका वृत्तिहरू बहिर्मुखी हुन्छन्।

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूः यस्तो उपनिषद् वाक्यले नै जो कुरा प्रस्ट पारेको छ। सतही ज्ञान र सामान्य विषयप्रतिको लालसाका कारणले मनुष्य सहज रूपमा गहिरो चिन्तन र तत्त्वज्ञानतर्फ उन्मुख बन्न सक्दैन। त्यसैले सामान्य व्यक्तिका लागि र विशेष व्यक्तिका लागि प्रजापतिले नै प्रवृत्ति धर्म र निवृत्ति धर्म गरी दुई प्रकारको धर्मको विधान गरेको देखिन्छ। द्विविधो हि वेदोक्तधर्मः प्रवृत्तिलक्षणो निवृत्तिलक्षणश्च भनेर जगद्गुरु शङ्कराचार्यले गीताभाष्यमा पनि उल्लेख गर्नुभएको छ। अतः दुई प्रकारको मार्ग सबैका अगाडि छर्लङ्ग छन्। आ-आफ्नो प्रवृत्तिअनुसार मनुष्यले यात्रा गर्दछन् द्वाविमावथपन्थानौ यत्र वेदा प्रतिष्ठिताः प्रवृत्तिलक्षणो धर्मो निवृत्तिश्च सुभाषितः। (महा.शा.२४०) भनेर स्मृतिले दुईवटा मार्ग प्रस्ट पारेको छ।

उपनिषद्‌को भाषामा यही प्रवृत्तिमार्ग र निवृत्तिमार्गलाई नै प्रेयमार्ग र श्रेयमार्ग भनेर वर्णन गरिएको छ। यसलाई अरू-अरू नामले पनि ठाउँ-ठाउँमा सङ्केत गरेको भेटिन्छ। ज्ञानमार्ग र कर्ममार्ग, योगमार्ग र भोगमार्ग, निःश्रेयमार्ग र अभ्युदयमार्ग आदि सबै यसैका नाम हुन्।

कल्याणको साधन भएको ज्ञानमार्ग र उन्नतिको साधन भएको कर्ममार्ग अलग-अलग छन्। भिन्न-भिन्न फल दिने ती दुवैले मनुष्यहरूलाई आफूतर्फ आकृष्ट गर्दछन्। ती दुईमध्ये जसले कल्याणको साधन भएको ज्ञानमार्गलाई रोज्दछ, उसले मोक्षरूपी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वोत्कृष्ट फल प्राप्त गर्दछ भने जो व्यक्तिले सांसारिक भोगहरूलाई नै स्वीकार गर्दछ, ऊ वास्तविक लाभबाट वञ्चित हुन्छ भनेर कठवल्लीमा व्यक्त गरिएको छ र श्रेय मार्गानुयायीलाई विचारवान् तथा प्रेयमार्गानुयायीलाई मन्दको संज्ञा पनि दिइएको छ - श्रेयश्च प्रेयश्चमनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः। श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते (क.उ.१-२-२) यी दुई मार्गको नामबाट नै श्रेयमार्ग कल्याण कारक छ र प्रेयमार्ग मनुष्यलाई तत्काल प्रिय लागे तापनि परिणाममा राम्रो छैन भन्ने कुरा प्रस्ट छ।

विचाररहित अवस्थामा मनुष्य प्रेयमार्गकै वशीभूत बन्दछ। विभिन्न योग र योग साधनमा लिप्त मनुष्यलाई विषयहरूले आफूतिर आकर्षित गर्दै बाँधिरहेका हुन्छन्। विसिन्वन्ति पुरुषपशुं बध्नन्ति इति विषयाः यस्तो व्युत्पत्तिबाट बनेको विषय शब्द सार्थक भइरहेको हुन्छ। जबसम्म विषयमा दोष दृष्टि र भोगादिमा वैराग्य जाग्दैन तबसम्म मनुष्यले श्रेयमार्गको विषयमा विचारै गरेको हुँदैन। सर्वे क्षयन्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः। संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्।।(वा.रा.२-१०५-१६) यस्ता विषयहरूलाई राम्रोसँग विचार गरेर गहना कर्मणो गतिः, कर्मणा बध्यते जन्तुः, तत्किं कर्माणि घोरे माम् इत्यादि शास्त्रीय आधारमा कर्मगतिलाई बुझ्नु आवश्यक छ। वस्तुतः शान्ति र कल्याणको बाटो श्रेयमार्ग नै हो।

तावत् कर्माणि कुर्वीत ननिर्विद्येत यावता (श्रीमद्भा. ११-२०-९) आदि शास्त्रानुसार कर्म परम लक्ष्य होइन, केवल चित्तशुद्धिका लागि हो। त्यसैले त अर्जुनले रणभूमिको बीचमा पनि श्रेयमार्गको उपदेशका लागि कृष्णसँग बार-बार प्रार्थना गरेका थिए- यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे, तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्, यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् आदि। अतः यी दुई मार्गलाई विवेकपूर्वक बुझेर श्रेयमार्गलाई अँगाल्नु समझदार मनुष्यको कर्तव्य हो। श्रेयमार्गलाई अँगाल्नु त्यति सजिलो त छैन क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति। तथापि त्यसैमा पुरुषार्थ छ। जसरी प्रेयमार्ग र श्रेयमार्ग गरेर पथ विभाजन गरिएको छ, त्यसरी नै ती मार्गसम्बन्धी विद्या, पुरुषार्थ आदि पनि विभक्त छन्।

द्वे विद्ये वेदितव्ये परा चैवापरा च भनेर उपनिषद्ले प्रेयमार्गसम्बन्धी अपरा विद्या र श्रेयमार्गसम्बन्धी परा विद्याको विधान गरेको छ। धर्मादि तीन पुरुषार्थले प्रेयमार्गसँग सम्बन्ध राख्दछन् भने परमपुरुषार्थ मोक्षले श्रेयमार्गसँग सम्बन्ध राख्दछ। यी दुई मार्गका गति, विधि, व्यवस्था नितान्त भिन्नै छन्। तर पनि कुनै बिन्दुमा यी दुई मार्गको सम्बन्ध रहन सक्छ, यदि शास्त्रीय विधिअनुसार निष्काम भावनाले कर्मानुष्ठान गरेको खण्डमा स्ववर्णाश्रम धर्मेण तपसा हरितोषणात्, आदौ स्ववर्णाश्रमवर्णिताः क्रियाः आदि शास्त्रीय वचनहरूले तिनै कुरालाई सङ्केत गरेको देखिन्छ। प्रक्रिया छोटो लामो होला, सिद्धिमा तारतम्य रहला तर यी दुवै वैदिक मार्गको परम लक्ष्यमा विकल्प छैन। निर्विण्णानां ज्ञानयोगः कर्मयोगस्तु कामिनाम् (श्रीमद्भा. ११-२०-७) ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् (भगवद्गीता- (३-३)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि स्मृतिवचनहरूले परम लक्ष्यमा ऐक्य जनाइरहेका छन्।

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते (भगवद्गीता- ५-५) यो वचन पनि यही सिद्धान्तको परिपोषक हो। यसरी विचार गर्दा ईश्वरार्पण बुद्धिले वा निष्काम भावनाको अनुष्ठान गरिएका कर्महरू चित्तशुद्धिका साधन बन्दछन् र क्रमशः अनुष्ठातालाई श्रेयमार्गतर्फ अभिमुख बनाउँदछन् भन्ने कुरा छर्लङ्ग हुन्छ। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः यस स्मृतिवचनको मूल आशय पनि यही हो। त्यसैले कर्मयोग वा प्रेयमार्ग र ज्ञानयोग वा श्रेयमार्ग अलग-अलग प्रवृत्तिका पथ हुन्। तथापि बन्धनको कारण नबन्ने गरी आचरण गरेका कर्महरूले ज्ञानमार्गतिर नै सहयोग पुर्याउँदछन्। वस्तुतः त्यस्तै कर्मलाई नै कर्म भनिएको छ जो बन्धनको कारण बन्दैन तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये अर्थात् बन्धनको कारण नबन्ने कर्म र मुक्तिको मूल कारणरूप ज्ञानमा खासै विरोध छैन भन्नु यस वचनको तात्पर्य हो। त्यसैले अधिकारीअनुसार मार्गमा भेद देखिन्छ, तर लक्ष्यमा विकल्प रहँदैन। यही नै शास्त्रको तात्पर्य हो। यसरी प्रेयमार्ग र श्रेयमार्ग गरी दुई पथहरू वेदद्वारा प्रतिष्ठापित छन्। जसमा दुईखाले अधिकारीहरू सृष्टिको आदिकालदेखि नै सम्बद्ध देखिन्छन्।

मरिच्यादीन् अग्रे सृष्ट्वा प्रवृत्तिलक्षणं धर्मं ग्राहयामास।
अन्यांश्च सनकादीन् उत्पाद्य निवृत्ति लक्षणं धर्मं ग्राहयामास

आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्यको यो भनाइले नै दुईवटा बाटाको आ-आफ्नो विशेषता सङ्क्षेपमा प्रकट गरेको पाइन्छ। वस्तुतः श्रेयमार्ग साक्षात् श्रेय साधन छ भने प्रेयमार्ग परम्परया श्रेयहेतु बन्दछ। जुनसुकै वैदिक मार्गको अवलम्बन गरे पनि ढिलो-चाँडो अन्त्यमा भेट हुने ठाउँ एउटै हो। रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषाम्। नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव भनेर पुष्पदन्ताचार्यले भनेझैं साधनमा भिन्नता भए तापनि साध्य वा लक्ष्यमा भिन्नता छैन। कल्याण चाहने व्यक्तिले दुवै मार्गलाई राम्रोसँग बुझेर साक्षात् कल्याणको साधन श्रेयमार्गलाई नै अपनाउनु अझै श्रेयस्कर देखिन्छ। मनुष्य जीवनको परम लक्ष्य पनि यही हो। श्रेयांसि बहुविघ्नानि भन्ने उक्तिअनुसार श्रेयमार्गमा धेरै विघ्नहरू हुन सक्छन् तैपनि परमपुरुषार्थ सिद्धिका लागि यही नै साक्षात् साधन हो र सबैको अन्तिम गन्तव्य पनि यही हो।

अन्त्यमा नेपालको शिक्षा क्षेत्रमा लामो इतिहास बोकेको र पौरस्त्य वाङ्मय एवं संस्कृतिको संवर्द्धनमा समर्पित संस्था श्रीविवेकाश्रम एवं श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, चारपाने, झापाको अझै उत्तरोत्तर प्रगतिको कामना गर्दछु र संस्थालाई यस स्थितिमा पुर्याउन प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपले दत्तचित्त भएर लागि पर्नुहुने सबै धर्म-संस्कृतिप्रेमी सज्जनहरूमा साधुवाद दिन्छु। अस्तु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्यात्मरामायणको दार्शनिक सार

✍ स्वामी रमणानन्द गिरि

श्रीरामचरित्रलाई विषय बनाउने संस्कृत वाङ्मयका विभिन्न ग्रन्थमध्ये अध्यात्मरामायण अत्यन्तै प्रसिद्ध ग्रन्थ हो। वाल्मीकीय रामायण आदिकाव्य र सिद्धकाव्यसमेत मानिन्छ। तर वाल्मीकीय रामायणमा रामलाई ईश्वरीय पात्रभन्दा आदर्श मानवीय पात्रका रूपमा चित्रण गरिएकाले रामभक्तहरूका लागि रामको ईश्वरीय स्वरूपको स्पष्ट प्रतिपादन गरिएको ग्रन्थ आवश्यक ठानी अध्यात्मरामायणको रचना भएको बुझिन्छ। अतः अध्यात्मरामायणमा आध्यात्मिक र दार्शनिक प्रसङ्गहरू प्रशस्त मात्रामा आउँछन्।

अध्यात्मरामायणमा अद्वैत वेदान्तसिद्धान्तको स्पष्टतया प्रतिपादन भएको पाइन्छ। यसको पहिलो अध्यायलाई रामहृदय भनिन्छ, जसमा हनुमान्लाई उपदेश गर्दै सीताले राम सबै उपाधिले शून्य, निर्गुण, निष्क्रिय ब्रह्मतत्त्व हुन् भनी उपदेश गरेको देखिन्छ - रामं विद्धि परं ब्रह्म सच्चिदानन्दमद्वयम् (श्लोक १।१।३२)। ब्रह्मको सान्निध्यले मूल प्रकृतिरूपा आफूले नै संसारको सृष्टि गर्ने भनी सीताले बताएको प्रसङ्गमा प्रकृतिकारणवादको सङ्केत पाइन्छ। तर यहाँको प्रकृतिकारणवाद साङ्ख्यसिद्धान्तको जस्तो स्वतन्त्र प्रकृतिलाई कारण मान्ने नभई वेदान्तदर्शनअनुसार ब्रह्मको सत्ता र चैतन्यलाई प्राप्त गरेर नै कारण बन्ने सिद्धान्त हो। त्यही क्रममा रामले हनुमान्लाई उपदेश दिंदा तीन थरी आकाशको दृष्टान्त दिई चैतन्यको तीन भेद बताउनुभएको छ। महाकाश, घटावच्छिन्न आकाश र जलमा प्रतिबिम्बित आकाश गरी आकाशका तीन भेद भए जस्तै पूर्ण ब्रह्म, अन्तःकरणावच्छिन्न साक्षी र अन्तःकरणमा प्रतिबिम्बित जीव गरी तीन चैतन्यको चर्चा गरिएको छ (१।१।४६)। तत्त्वमसि आदि महावाक्यले अन्तःकरणावच्छिन्न साक्षी र ब्रह्मको एकता गराउने र त्यसैमा अन्तःकरणप्रतिबिम्बित अहङ्कार पनि अभिन्न हुने बताइएको छ। यस्तो तत्त्वज्ञान भक्तिरहित व्यक्तिलाई प्राप्त नहुने भएकाले

✍ पीठाधीश, महेश सन्न्यास आश्रम, देवघाटधाम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भक्तिको अत्यन्त महत्त्व रहेको छ भन्ने पनि बताइएको छ (१।१।४९-५१)।

अहल्याले रामको स्तुति गरेको प्रसङ्गमा रामलाई स्वयंप्रकाश, पुराणपुरुष परमात्मा भनी बताउँदै भगवान् शिवले समेत रामनामको जपमा रस लिनुहुने बताइएको छ। यस प्रसङ्गमा विशेष गरी भक्तिलाई कल्याणप्राप्तिको साधनका रूपमा बताइएको छ। परशुरामले गरेको श्रीरामको स्तुतिमा विभिन्न दार्शनिक चिन्तनहरू आएका छन् (१।७।३१-४२)। त्यहाँ मायाको आश्रय र विषय दुवै ब्रह्म नै हो भन्ने बताइएको छ, जुन सिद्धान्त वेदान्तमा विवरणप्रस्थानको मत भनी प्रसिद्ध छ। मायालाई अविचारितसिद्धा अर्थात् अनिर्वचनीय भनिएको छ। जीवको परिभाषा गर्दै अविद्याको कार्य सूक्ष्म शरीरमा प्रतिबिम्बित चित्शक्ति नै जीव हो भनिएको छ। ज्ञानस्वरूप आत्मामा बन्धन छैन र जड बुद्धिमा ज्ञान छैन। यी दुवैको परस्पर अविवेक वा अध्यासद्वारा नै म संसारमा बाँधिएको छु भनी आभास हुन्छ भन्ने अध्याससम्बन्धी चिन्तन पनि यहाँ पाइन्छ। अन्तमा भक्तिविहीन व्यक्तिलाई ज्ञान र मोक्ष प्राप्त नहुने भनी साधनका रूपमा भक्तिमा जोड दिइएको छ।

अयोध्याकाण्डमा नारदले त्रिगुणात्मिका प्रकृतिले रचेको संसाररूपी गृहस्थीमा रहने श्रीराम महागृहस्थ हुनुहुन्छ भनी स्तुति गर्ने क्रममा अविद्याको स्वरूप, लिङ्गशरीर, जीवात्मा र जीवका विभिन्न अवस्थाहरूको चर्चा गरिएको छ (२।१।२०-२९)। आत्माको आभासले युक्त अज्ञानलाई अव्याकृत भनिन्छ। अनादि अनिर्वाच्य यो अविद्या नै आत्माको कारण उपाधि हो। स्थूल, सूक्ष्म र कारण तीन उपाधिले विशिष्ट जीव हो भने तीनैवटा उपाधिले मुक्त तत्त्व नै परमात्मा हो। जाग्रत्, स्वप्न र सुषुप्ति यी अवस्थाहरूको साक्षी चिन्मात्र तत्त्व नै श्रीरामतत्त्व हो। अज्ञानबाट डोरीमा सर्प देखा परे जस्तो ब्रह्ममा जगत् देखा परेको छ र तत्त्वज्ञानद्वारा सम्पूर्ण प्रपञ्च निवृत्त हुन्छ भनी बताइएको छ।

अरण्यकाण्डमा महर्षि अगस्त्यले श्रीरामको स्तुति गर्ने क्रममा सृष्टिभन्दा अघि रहेको अद्वितीय तत्त्वदेखि सम्पूर्ण सृष्टिप्रक्रियाको वर्णन गर्नुभएको छ। ब्रह्ममा रहने र ब्रह्मलाई नै विषय गर्ने माया परमात्माद्वारा क्षुब्ध भएपछि महत्तत्त्व, अहङ्कार र पञ्चतन्मात्राको क्रमले सृष्टिप्रक्रिया आरम्भ हुन्छ। राम चिन्मय तत्त्व भएकाले यी सबै अवस्थाहरूभन्दा विलक्षण हुनुहुन्छ। विद्या र अविद्या दुवै मायाकै भेद हुन्। प्रवृत्तिमार्गमा लाग्ने अविद्याका अनुयायी हुन् भने निवृत्तिमार्गमा लाग्ने विद्याका अनुयायी हुन्। यहाँ पनि भक्तिरूपी अमृतले रहित भएका व्यक्तिहरूलाई मोक्षसुखको आस्वादन नहुने भनी भक्तिको महत्त्व बताइएको छ (३।३।२०-४२)।

पञ्चवटीमा रामले लक्ष्मणलाई दिएको उपदेशमा (३।४।१९-५२) पनि प्रशस्त दार्शनिक चिन्तनहरू देखिन्छन्। त्यहाँ श्रीरामले पहिले मायाको स्वरूप

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बताई अनि ज्ञानको साधन र ज्ञेय परमात्मतत्त्वको वर्णन गर्दछु भनी उपदेश आरम्भ गर्नुभएको छ। मायाका आवरण र विक्षेप दुई रूपमध्ये आवरणले ज्ञानस्वरूप आत्मालाई ढाक्छ र विक्षेप शक्तिले स्थूल-सूक्ष्म प्रपञ्चलाई उत्पन्न गर्दछ। डोरीमा सर्प देखिए जस्तै भ्रमद्वारा देखिएको यो सारा संसार विचार गरेको खण्डमा सिद्ध हुन सक्दैन। मूल प्रकृतिदेखि स्थूल महाभूतहरूबाट बनेको शरीरसम्म सबै क्षेत्र हो। तर जीव भने परमात्मस्वरूप भएको हुनाले यी सबैभन्दा विलक्षण छ भनिएको छ। यहाँ जीवः परमात्मा भन्ने अभेदवाचक शब्दको प्रयोग गरी अद्वैत मतको पुष्टि गरिएको छ। गीताको तेह्रौं अध्यायमा अमानित्व आदि ज्ञानका साधनहरू बताए जस्तै यहाँ पनि श्रीरामले मानाभाव इत्यादि शब्दले तिनै साधनहरूको प्रतिपादन गर्नुभएको छ। मोक्षको अवस्था पनि आत्मामा औपचारिक हो।

वस्तुतः मोक्ष आफ्नै स्वरूप हो भनिएको छ। जसरी आँखा भए पनि रातको अन्धकारमा वस्तु देखिँदैन तर दियो बालेपछि देखिन्छ, त्यस्तै भक्तिविना व्यक्तिले परमात्मतत्त्वलाई जान्न सक्दैन भनी ज्ञान-वैराग्यको साधनका रूपमा भक्तिको अनिवार्यता देखाइएको छ।

राक्षस कबन्धको उद्धार भइसकेपछि गन्धर्वका रूपमा उसले गरेको स्तुतिमा पनि विभिन्न दार्शनिक विषयहरू आएका छन् (३।९।३०-५४)। आत्माका दृग् र दृश्य गरी दुई रूपहरू छन्। आत्मा, बुद्धि र बुद्धिमा परेको आत्मप्रतिबिम्ब यी तीनको समष्टिलाई नै जीव भनिन्छ भने यिनको साक्षी ब्रह्म हो। हिरण्यगर्भ परमात्माको सूक्ष्म शरीर हो भने विराट् स्थूल शरीर हो। सम्पूर्ण लोकहरू विराट् पुरुषका नै विभिन्न अवयवहरू हुन्। यस्तो विराट् रूपलाई ध्यान गरियो भने मोक्ष प्राप्त हुन्छ भनिएको छ।

शबरीलाई श्रीरामले नवधा भक्तिको उपदेश गर्नुभएको छ (३।१०।२०-३३)। श्रीमद्भागवतको प्रह्लादको प्रसङ्गमा जस्तै नवधा भक्ति भन्ने शब्दको प्रयोग गरिए तापनि यहाँ उपदेश गरिएको नवधा भक्ति अलि फरक खालको छ। सत्सङ्गतिदेखि तत्त्वविचारसम्म भक्तिका नौ सोपान या साधन हुन्छन् भनी बताइएको छ। तुलनात्मक रूपमा हेर्दा यहाँ श्रीरामले उपदेश गरेको नवधा भक्ति तत्त्वविचार र ज्ञानतर्फ बढी झुकेको पाइन्छ। नवौं साधन तत्त्वविचारद्वारा जन्मिएको भक्ति पक्कै ज्ञानस्वरूप नै हुनु पर्छ। त्यस्तो ज्ञानरूपा भक्तिद्वारा निश्चित रूपमा नै मोक्ष प्राप्त हुन्छ भन्ने चिन्तन यहाँ पाइन्छ।

युद्धकाण्डमा विभीषणले श्रीरामको स्तुति गर्दा (६।३१७-३३२) श्रीराम व्याप्य र व्यापकको रूपले सारा जगत्को रूपमा प्रकट हुनुभएको बताएका छन्। त्यहाँ ज्ञानस्वरूप तत्त्वको साक्षात्कार नगरी जगत्को

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बोध नहुने बताइएको छ। आत्मा पाँच कोशदेखि अतिरिक्त निर्गुण र निरूपाधिक छ। चक्षु, श्रोत्र आदि इन्द्रियले रहित भएर पनि ऊ द्रष्टा, श्रोता बन्न सक्छ। षड्भावविकारले रहित त्यस्तो तत्त्वको ज्ञान प्राप्त गर्न भक्तिरूपी सिँढीको आवश्यकता पर्दछ। भक्तिको सिँढीबाट नै ज्ञानयोगरूपी राजप्रासादमाथि चढ्न सकिने निष्कर्ष विभीषणको छ।

उत्तरकाण्डको पाँचौं सर्गमा श्रीरामले लक्ष्मणलाई महत्त्वपूर्ण उपदेश प्रदान गर्नुभएको छ, जसलाई रामगीता भनिन्छ। कर्मले पुण्य, पाप र राग-द्वेषद्वारा बारम्बार संसारचक्रमै जन्माइरहने भएकाले त्यो बन्धनको कारण हो। अज्ञानबाट जन्मिएको यो बन्धनलाई ज्ञानले नै नष्ट गर्न सक्छ। कर्म पनि अज्ञानकै कार्य भएकाले त्यसको अज्ञानसँग कुनै विरोध छैन। त्यसैले ज्ञानकर्मसमुच्चयद्वारा मोक्ष मिल्छ भन्न सकिँदैन। जीवात्मा र परमात्माको भेदलाई नष्ट गर्ने तत्त्वज्ञान अन्तःकरणमा प्रकट भएपछि माया र मायाको कार्य तत्कालै लुप्त हुन्छ।

मुमुक्षु व्यक्तिले श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुबाट तत्त्वमसि आदि महावाक्यको श्रवण गर्नुपर्दछ। पहिले तत्, त्वम् यी पदहरूको अर्थ बुझी भागत्यागलक्षणाको विचारद्वारा यिनीहरूको अभेद बुझ्नुपर्दछ। आत्मा पञ्चकोश, तीन शरीर र तीनै अवस्थादेखि पर रहेको छ। जन्म, मृत्यु आदि सबै विकारभन्दा पनि यो पर छ। अहङ्कारको अध्यास सबैभन्दा पहिलो अध्यास हो। चित् र जडको परस्पर यही अध्यासले नै सारा संसार प्रतीत भइरहेको छ र अज्ञानद्वारा देखिएको संसारलाई आनन्दस्वरूप सर्वव्यापक आफूमा नै विलीन गर्नुपर्दछ। त्यसका लागि प्रणवार्थचिन्तन महत्त्वपूर्ण साधन हो। यसरी वेदान्तका विविध विषय उपदेश गरिएको छ।

रामको राजसूय यज्ञमा वाल्मीकिले कुशलाई ब्रह्मोपदेश गर्नुभएको छ। चित्स्वरूप आत्माको शरीररूपी राज्यमा अहङ्काररूपी मन्त्री रहेको छ। त्यही अहङ्कारसँग तादात्म्य राख्नाले आनन्दस्वरूप आत्मा पनि शोक र मोहमा परिरहेको छ। हजारौं वर्ष कठोर तपस्या गरे पनि सङ्कल्प नाश नभई मोक्ष प्राप्त हुँदैन। अतः त्यसका लागि नै प्रयास गर्नुपर्दछ, जसबाट जीव ब्रह्म बन्न सक्दछ भनी उपदेश गरिएको छ (७।६।४०-५५)।

अन्तमा रामले कौसल्या मातालाई तत्त्वोपदेश गर्नुभएको छ। श्रीमद्भागवतमा कपिलदेवले देवहूतिलाई तत्त्वोपदेश गरेजस्तै शैली र शब्दावलीमा यहाँ सङ्क्षिप्त रूपमा कौसल्यालाई उपदेश गरिएको छ। मोक्षलाई प्राप्त गर्ने ज्ञानयोग, कर्मयोग र भक्तियोग तीन बाटाहरू छन्। भक्ति पनि स्वभावभेदले सात्त्विक, राजस र तामस हुन्छ। अनन्त गुणयुक्त परमात्मतत्त्वमा मनको वृत्ति अविच्छिन्न लागिरहनु नै निर्गुण भक्तियोग हो। यो अहैतुकी भक्ति सालोक्य आदि मुक्तिहरूभन्दा पनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रेष्ठ छ। त्यसलाई प्राप्त गर्न स्वधर्माचरण, विधर्मको त्याग, वेदान्तवाक्यश्रवण आदि विभिन्न साधनहरूको अवलम्बन गर्नुपर्दछ। प्रतिमा आदिमा गरिने पूजा सर्वत्र परमात्मदर्शन गर्ने उपाय हो। भेददृष्टिपूर्वक पूजा गर्नेबाट परमात्मा प्रसन्न हुनुहुन्न। सम्पूर्ण प्राणीहरूको हृदयभित्र शुद्ध चेतन जीवको रूपमा परमात्मा निवास गर्नुहुन्छ। यसरी भक्ति या ज्ञानयोगमध्ये कुनै एउटाको अवलम्बन गरेर मुक्त हुन सकिन्छ भनी श्रीरामले बताउनुभएको छ।

यी सबै प्रसङ्गहरूलाई हेर्दा अध्यात्मरामायणको दर्शन स्पष्टतया अद्वैत वेदान्तसिद्धान्तको अनुकूल रहेको देखिन्छ। तत्त्वज्ञान नै मोक्षको साधन हो र ज्ञानका लागि भक्ति अनिवार्य छ भन्नु नै अध्यात्मरामायणको दार्शनिक सार हो भन्न सकिन्छ।

यस आलेखमा अध्यात्मरामायणको दार्शनिक सार अद्वैत सिद्धान्त नै हो भनी सप्रमाण प्रस्तुत गरिएको छ। ब्रह्मलीन परमपूज्य गुरुवर श्री १००८ डा. स्वामी रामानन्द गिरिजी महाराजद्वारा लिखित अध्यात्मरामायणको रामानन्दी टीकाको दृष्टिबिन्दुका आधारमा यो आलेख रचिएको छ। अध्यात्मरामायणका श्लोकहरूको उल्लेख प्रायशः सङ्केतका रूपमा मात्र गरिएको छ। अधिक जिज्ञासुहरूले रामानन्दी टीकाको अध्ययन गरी विस्तृत अर्थबोध गर्न सक्नुहुन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेद र वेदाङ्ग परिचय

✍ श्री १००८ स्वामी केशवानन्द गिरि

भूमिका

वेद पौरस्त्य संस्कृतिको आत्मा हो। मानव जातिको प्रकाश स्तम्भ हो। विश्व संस्कृतिको आधार हो, जसबाट विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व र विश्वकल्याणको प्रथम शङ्खघोष भएको हो। वेदको प्रकाशबाट नै मानव जातिको समुन्नतिको ढोका खुलेको हो। वेद ज्ञानको अथाह भण्डार हो। यसमा ज्ञान एवं विज्ञानका सम्पूर्ण धाराहरू सूत्र रूपमा समाहित छन्। त्यसैले मनु भन्नुहुन्छ- सर्वज्ञानमयो हि सः।

वेदको अर्थ

वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् (धातु) विद ज्ञाने देखि घञ् प्रत्यय गरिसकेपछि निष्पन्न हुन्छ। वेदको अर्थ हुन्छ- ज्ञानराशि या ज्ञानको सङ्ग्रह। संस्कृत व्याकरणअनुसार विद् धातुका विभिन्न अर्थहरू छन्। ती विभिन्न अर्थहरू भएका धातुबाट वेद शब्दको निष्पत्ति हुन्छ। १. विद सत्तायाम् - हुनु (दिवादि) २. विद ज्ञाने - जान्नु (अदादि) ३. विद विचारणे - विचार गर्नु (रुधादि) ४. विद्लृ लाभे - प्राप्त गर्नु (तुदादि)[१]

यिनै अर्थहरूलाई समन्वय गर्दै ऋक्प्रातिशाख्यको व्याख्यामा आचार्य विष्णुमित्र वेदको अर्थ यस प्रकार गर्दछन्- विद्यन्ते, ज्ञायन्ते, लभ्यन्ते एभिर्धर्मादिपुरुषार्था इति वेदाः। अर्थात् जुन ग्रन्थको अध्ययन-अध्यापनद्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारै पुरुषार्थको प्राप्ति हुन्छ, त्यसैलाई वेद भनिन्छ।

वेदको परिभाषा गर्दै आचार्य सायण भन्दछन् - इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः। अर्थात् जुन ग्रन्थले इष्टवस्तुको प्राप्ति र अनिष्टवस्तुको निवारणको अलौकिक उपाय बताउँछ, त्यसलाई वेद भनिन्छ। वेदका विभिन्न नामहरू छन्। गुरूपरम्पराद्वारा श्रवण गरी स्मरण गरिने हुँदा यसलाई श्रुति पनि भनिन्छ। अभिप्रायपूर्ण, सङ्गतिपूर्ण र गम्भीर अर्थ बताउने हुनाले वेदलाई निगम भनिन्छ। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सम्पूर्ण पुरुषार्थहरूको बोध गराउने हुँदा वेदलाई आगम भनिएको हो। ऋक्, यजुः र

✍ *उपाध्यक्ष, महेश सन्न्यास आश्रम, देवघाटधाम*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साममा विभक्त भएको हुँदा यसलाई त्रयी भनिन्छ। सम्पूर्ण विषयवस्तुहरूलाई क्रमवद्ध रूपमा पद्य या छन्दमा बाँधिएको हुनाले वेदलाई छन्दस् भनिन्छ। प्रतिदिन अभ्यास गरिने हुनाले वेदलाई आम्नाय भनिएको हो। उपनिषद्हरूमा वेदलाई स्वाध्या भनिन्छ।

वेदको महत्त्व

सनातन धर्मको आधारशिला वेद नै हो। वेद धर्मको गूढ रहस्यको उद्घाटनका लागि एकमात्र साधन हो।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।[२] महाभाष्यकार पतञ्जलि व्याकरण महाभाष्यमा द्विज जातिले निष्कारण वेद एवं वेदाङ्गको अध्ययन गर्नुपर्ने कुरामा जोड दिन्छन्। ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्ययो ज्ञेयश्च। धार्मिक, शास्त्रीय विधि एवं व्यवहारहरू वेदकै आधारमा निर्धारित छन्। सर्वज्ञानमयो हि सः भनी मनुले वेदलाई सम्पूर्ण विद्याको स्रोतका रूपमा व्याख्या गरेका छन्। त्यसैले वेदमा दार्शनिक, राजनीतिक, सामाजिक, भौतिक एवं अन्य विभिन्न विषयवस्तु र पक्षहरूमा चर्चा एवं परिचर्चा गरिएका छन्। अध्यात्म एवं दार्शनिक तत्त्वका बारेमा विभिन्न उपनिषद् एवं ब्राह्मण ग्रन्थहरूमा विवेचन गरिएको छ। त्यसैले वेदको धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूपमा महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको छ। वयं राष्ट्रे जागृयाम अर्थात् हामीहरू राष्ट्रभक्तिले पूर्ण हुनुपर्छ र सचेत रहनुपर्छ भन्ने उद्घोषद्वारा वेदले आफ्नो राष्ट्र र समाजप्रति राजनीतिक रूपमा सचेत रहनुपर्ने कुरा बताएको छ।

वेदको विभाजन

अपौरुषेयः शब्दराशिर्वेदः यस व्युत्पत्तिअनुसार वेदको स्वरूप शब्दात्मक छ, जो अपौरुषेय हो। पौरस्त्य विचारधाराअनुसार वेद नै सर्वोपरि प्रमाण हो। जुन प्रमेयको प्रत्यक्ष आदि प्रमाणद्वारा ज्ञान गर्न सकिँदैन, त्यसलाई शब्दप्रमाणद्वारा जान्नुपर्दछ। त्यो प्रमाण वेद नै हो। मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्[३] अर्थात् मन्त्र (संहिता) र ब्राह्मणग्रन्थको संयुक्त रूप नै वेद हो।

वेदका चार संहिताहरू छन्- १. ऋग्वेद संहिता, २. यजुर्वेद संहिता ३. सामवेद संहिता र ४ अथर्ववेद संहिता।

संहिता भनेको पदहरूको अत्यन्त नजिकमा रहनु हो। योग्य पदसमूहको एकीकरण नै संहिता हो। वेद पढ्नु र वेदको अभ्यास गर्नु सजिलो काम होइन। कलियुगमा मनुष्यहरूको अल्पायु एवं शक्तिमा ह्रास आउने कुरालाई मध्यनजर गर्दै वेदपुरुष भगवान् नारायणको अवतारका रूपमा वेदव्यासले वेदलाई चार भागमा विभक्त गरिएको पौराणिक मान्यता छ। वेद चार भागमा विभक्त गरिसकेपछि चार शिष्यहरूलाई अलग-अलग चार वेदको उपदेश गरेको प्रसङ्ग पुराणहरूमा वर्णित छ।

ती चार वेदहरू ऋक्, यजुः, साम र अथर्वका नामले प्रसिद्ध छन्। पैल, वैशम्पायन,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैमिनि र सुमन्तु नामका यी व्यासका चार शिष्यहरूले आफूले पढेको वेदको संरक्षण एवं प्रचार-प्रसारका लागि आफ्ना भिन्न-भिन्न शिष्यहरूलाई पढाए र तिनै शिष्यहरूको नामबाट विभिन्न शाखा-प्रशाखाहरू प्रसिद्ध भए।

ऋग्वेद

ऋक्को अर्थ हुन्छ, स्तुतिपरक मन्त्र। ऋच्यते स्तूयते अनया इति ऋक् - जुन मन्त्रद्वारा देवी-देवताहरूको स्तुति गरिन्छ, तिनीहरूलाई ऋक् या ऋचा भनिन्छ। ऋग्वेदमा विभिन्न देवी-देवताहरूको स्तुति गरिएका मन्त्रहरू छन्। त्यसैले यसलाई ऋग्वेद भनिन्छ। यस्ता ऋचाहरूको सङ्ग्रह भएका कारण यसलाई ऋग्वेद संहिता भनिन्छ। चार वेदहरूमध्ये ऋग्वेद सबैभन्दा महत्त्वपूर्ण मानिएको छ। सम्पूर्ण वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थहरूमा ऋग्वेदको नाम नै सर्वप्रथम लिइएको छ र चार वेदमध्ये सबैभन्दा ठूलो ग्रन्थ पनि ऋग्वेद नै हो। यो संहिता होता नामक ऋत्विक्सँग सम्बन्धित छ।

ऋग्वेद संहिताको विभाजन दुई प्रकारले गरिएको पाइन्छ - अष्टक क्रम र मण्डल क्रम। अष्टक क्रममा अष्टक, अध्याय, वर्ग र मन्त्रको क्रम हुन्छ भने मण्डल क्रममा मण्डल, अनुवाक्, सूक्त र मन्त्रको क्रम हुन्छ। जसअनुसार ऋग्वेदमा अष्टक क्रमअनुसार ८ वटा अष्टक, ६४ अध्याय, २०२४ वर्ग र १०,५५२ मन्त्रहरू छन् भने मण्डल क्रमअनुसार १० मण्डल, ८५ अनुवाक्, १०२८ सूक्त र १०,५५२ मन्त्रहरू छन्।

यजुर्वेद

वेदहरूको क्रममा द्वितीय पङ्क्तिमा यजुर्वेदको नाम आउँछ। निरुक्तअनुसार यजुर्यजते[४] - यज्ञसँग सम्बन्धित मन्त्रलाई यजुष् भनिन्छ। यजुर्वेदको सम्बन्ध कर्मकाण्डसँग छ। यस वेदको ऋत्विग् अध्वर्यु हो। त्यसैले यस वेदलाई अध्वर्युवेद पनि भनिन्छ। यज्ञमा अध्वर्यु नाम गरेका ऋत्विक् यजुर्वेदको प्रतिनिधित्व गर्दछन् र उनी नै नेतृत्व पनि गर्दछन्। त्यसैले सायण भन्दछन्- अध्वर्युनामक एक ऋत्विग् यज्ञस्य स्वरूपं निष्पादयति। अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेता।[५] अनियताक्षरावसानो यजुः- जुन मन्त्रमा पद्यहरूमा अक्षरसङ्ख्या निर्धारण हुँदैन, त्यसलाई यजुष् भनिन्छ। ब्राह्मण आदि ग्रन्थहरूमा यजुर्वेदलाई विष्णुस्वरूप मानिएको छ। यजुर्वेदमा विशेष गरी यज्ञअनुष्ठानका बारेमा विशद् चर्चा गरिएको छ।

यजुर्वेद मुख्य रूपमा दुइ भागमा विभक्त छ - शुक्ल यजुर्वेद र कृष्ण यजुर्वेद। यी दुई भागलाई दुई सम्प्रदायमा विभक्त गरिएको पाइन्छ - आदित्य (सूर्य) सम्प्रदाय र ब्रह्म सम्प्रदाय। शुक्ल यजुर्वेद आदित्य सम्प्रदायसँग सम्बद्ध छ भने कृष्ण यजुर्वेद ब्रह्म सम्प्रदायसँग सम्बन्धित छ। शतपथ ब्राह्मणमा बताइएअनुसार शुक्ल यजुर्वेद आदित्यसँग सम्बद्ध र याज्ञवल्क्यद्वारा आख्यात हो। शुक्ल यजुर्वेदलाई वाजसनेयी माध्यन्दिन संहिता भनिन्छ। यस संहिताका ऋषि याज्ञवल्क्य हुन्। उनी नेपाली हुन्, मिथिलानिवासी हुन्। यिनका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिताको नाम वाजसनि भएकाले याज्ञवल्क्यलाई वाजसनेय भनिन्छ। वाजसनेयसँग सम्बद्ध भएको हुनाले यस संहितालाई वाजसनेयी संहिता भनिएको हो। याज्ञवल्क्यले दिनको मध्याह्नमा भगवान् सूर्यबाट यस वेदलाई प्राप्त गरेको हुनाले माध्यन्दिन संहिता पनि भनिएको हो, तर कतिपय आचार्यहरू याज्ञवल्क्यको शिष्यको नाम माध्यन्दिन भएको हुनाले यस शाखाको नाम उनकै नामबाट प्रसिद्ध भएकाले माध्यन्दिन संहिता भएको मान्दछन्।

शुक्ल यजुर्वेद नाम रहनुमा कारण

पौराणिक आख्यानअनुसार याज्ञवल्क्य वैशम्पायनका शिष्य हुन्। विद्याग्रहण गरिसकेपछि गुरुसँग मतभेद हुँदा क्रुद्ध भएर गुरुले आफूले पढाएको विद्या फिर्ता गर्न भने र याज्ञवल्क्यले पनि गुरुसँग अध्ययन गरेका सम्पूर्ण विद्या वमन गरिदिए। पुनः गुरुको आदेशअनुसार तित्तिर आदि शिष्यहरूले याज्ञवल्क्यले वमन गरेको यजुःको भक्षण गरे। वमन गरिएका कारण र बुद्धिको मलीनताका कारण त्यस यजुःलाई कृष्ण भनिएको हो। त्यसपछि याज्ञवल्क्यले भगवान् सूर्यको उपासना गरी भगवान् सूर्यबाट विद्याग्रहण गरेको हुनाले उनले प्राप्त गरेको वेदलाई शुक्ल यजुर्वेद भनियो।

शतपथ ब्राह्मणअनुसार आदित्यद्वारा प्राप्त वेद शुक्ल यजुर्वेद नामले प्रसिद्ध भयो, जो मन्त्रात्मक भएकाले शुद्ध छ।[६] याज्ञवल्क्यले यही वेदलाई प्राप्त गरेर शतपथ ब्राह्मणको उपदेश गरे। शुक्ल नाम रहनुका कारण मन्त्र र ब्राह्मण छुट्टाछुट्टै रहनु हो भने, कृष्ण नाम रहनुको कारण मन्त्र र ब्राह्मणको सम्मिश्रण हो भन्ने कुरा जाबाल संहितामा बताइएको छ।

यजुर्वेदको शाखा

शतपथ ब्राह्मणअनुसार यजुर्वेदका १०१ शाखाहरू छन्। महर्षि पतञ्जलिले आफ्नो व्याकरण महाभाष्यमा एकशतमध्वर्युशाखाः अर्थात् १०१ शाखा यजुर्वेदका हुन्छन् भनेका छन्। षड्गुरुशिष्यको सर्वानुक्रमणीको वृत्तिमा र कूर्म पुराणमा पनि यजुर्वेदका १०१ शाखाहरूको उल्लेख पाइन्छ। त्यसै गरी चरणव्यूहमा यजुर्वेदका ८६ शाखाहरूको उल्लेख गरेको पाइन्छ। मुण्डकोपनिषद् एवं सीतोपनिषद्मा १०९ शाखाहरू निर्देश गरिएका छन्। प्राचीन कालमा शुक्ल यजुर्वेद एवं कृष्ण यजुर्वेदका अनेक शाखाहरू रहेको कुरा यसबाट पुष्टि हुन्छ। अहिले केवल ६ शाखाहरूमात्र उपलब्ध छन्। तीमध्ये शुक्ल यजुर्वेदका २ शाखा र कृष्ण यजुर्वेदका ४ शाखा।

शुक्ल यजुर्वेद

चरणव्यूह आदि ग्रन्थहरूमा शुक्ल यजुर्वेदका १५ शाखाहरूको वर्णन पाइन्छ। याज्ञवल्क्यका १५ शिष्यहरू थिए। ती शिष्यहरूको नामबाट १५ शाखाहरू प्रवर्तन भएका हुन्। वर्तमान ती सम्पूर्ण शाखाहरू उपलब्ध छैनन्। ती १५ शाखाहरू

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसप्रकार छन् - १. माध्यन्दिन, २. काण्व, ३. शापेय, ४. तापायनीय, ५. कापाल, ६. पौण्ड्रवत्स, ७. आवटिका, ८. परमावटिका, ९. पाराशर्य, १०. वैधेय, ११. वैनेय, १२. औधेय, १३. गालव, १४. वैजव, १५. कात्यायनीय। वर्तमानमा शुक्लयजुर्वेदका २ शाखाहरू उपलब्ध छन्- माध्यन्दिन र काण्व। यिनीहरूका एक-एक संहिता र ब्राह्मणहरू उपलब्ध छन्।

वाजसनेयी माध्यन्दिन संहिता

माध्यन्दिन ऋषि, याज्ञवल्क्यका १५ शिष्यहरूमध्ये एक शिष्य हुन्। माध्यन्दिन ऋषिद्वारा प्राप्त गरिएको यजुर्वेदको शाखाविशेषलाई माध्यन्दिन भनिन्छ। कोही आचार्यहरूको मतमा मध्यदिनमा महर्षि याज्ञवल्क्यले भगवान् सूर्यसँग प्राप्त गरेको हुनाले यसलाई माध्यन्दिन भनिएको स्वीकारदछन्।

वाज भनेको अन्न हो। वाज अर्थात् अन्न दिने व्यक्तिलाई वाजसनि भनिन्छ र वाजसनिको पुत्र वाजसनेय हुन्छ। महीधरका अनुसार याज्ञवल्क्यको पैत्रिक नाम वाजसनेय हो। वाजसेनयसँग सम्बन्धित भएको हुनाले यजुर्वेदको यस संहितालाई वाजसनेयी संहिता भनिएको हो। सूर्यको नाम वाजसनि पनि हो। अतः सूर्यको शिष्य भएका कारण याज्ञवल्क्यको नाम वाजसनेय हुन्छ र वाजसेनयसँग सम्बन्धित शाखा भएको हुँदा शुक्लयजुर्वेदको माध्यन्दिन शाखालाई वाजसनेयी पनि भनिन्छ। यस संहितामा ४० अध्याय, ३०३ अनुवाक् र १९७५ मन्त्रहरू छन्। त्यसै गरी शतपथ ब्राह्मणका अनुसार यजुर्वेदका अक्षरहरूको सङ्ख्या २,८८,००० छ, अर्थात् ३६ अक्षर भएको ८ हजार बृहती छन्द।[७]

काण्व संहिता

महर्षि कण्वको उल्लेख ऋग्वेदमा पाइन्छ। आदित्य पुराणका अनुसार कण्वका पिता बोधायन हुन् र उनका गुरु याज्ञवल्क्य हुन्। महर्षि कण्व नै यस शाखाका प्रवर्तक हुन्। वर्तमानमा काण्व संहिताको प्रचार भारतको महाराष्ट्र प्रान्तमा पाइन्छ भने माध्यन्दिन संहिताको प्रचार पूरै नेपाल, उत्तरी भारत र महाराष्ट्रमा पाइन्छ। यस संहितामा ४० अध्याय, ३१७ अनुवाक् र २,०८६ मन्त्रहरू छन्। वाजसनेयी शाखामा भन्दा यसमा १११ मन्त्र बढी छन्।

शुक्ल यजुर्वेदको विषयवस्तु

शुक्ल यजुर्वेद मूलरूपमा कर्मकाण्डपरक वेद हो। यसमा विभिन्न यज्ञहरूको विधि र त्यस यज्ञमा प्रयोग हुने मन्त्रहरूको सङ्कलन पाइन्छ। यज्ञ गर्ने ऋत्विक्को नाम अध्वर्यु हो। ऋग्वेदअनुसार अध्वर्यु यज्ञको संयोजक, निष्पादक र प्रमुख नेता पनि हुन्। यस प्रकार शुक्ल यजुर्वेदको प्रमुख कार्य यज्ञ सम्पादन नै हो।

अध्याय १ र २ मा दर्श-पौर्णमाससँग सम्बन्धित यागहरूको वर्णन एवं विवेचन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरिएको छ। त्यसै गरी ३ अध्यायमा अग्निहोत्र र चातुर्मास्य यागका मन्त्रहरूको सङ्कलन पाइन्छ। चातुर्मास्य यागको अभिप्राय हो चार-चार महिनामा ऋतु परिवर्तनपछि गरिने विशिष्ट यज्ञ। अध्याय ४ देखि ८ सम्म अग्निष्टोम यागको वर्णन पाइन्छ। ९ र १० अध्यायमा वाजपेय र राजसूय यज्ञको विवेचना गरिएको छ। यसमा राज्याभिषेक, राजाको काम, कर्तव्य र अधिकारका बारेमा विस्तृत विवरण प्रस्तुत गरिएको छ।

११ अध्यायदेखि १८ अध्यायसम्म अग्निचयनको वर्णन र विभिन्न प्रकारका वेदीहरूको निर्माणका बारेमा वर्णन गरिएको छ र त्ससम्बन्धी मन्त्रहरू पनि यिनै अध्यायहरूमा पाइन्छन्। १६ औं अध्यायलाई शतरुद्रीय भनिन्छ। यस अध्यायमा रुद्रको विराट् स्वरूपको वर्णन गरिएको छ र यसमा शतरुद्रीय हवनका मन्त्रहरू छन्। १८ औं अध्यायमा वसोर्धारासम्बद्ध मन्त्रहरू छन्। १९ देखि २१ अध्यायमा सौत्रामणि यागको वर्णन गरिएको छ। २२ देखि २५ मा अश्वमेध यज्ञको विशद् वर्णन गरिएको छ। सार्वभौम आधिपत्यका लागि अश्वमेध यज्ञ गरिन्छ। २२ औं अध्यायमा आब्रह्मन् आदि मन्त्रहरूद्वारा राष्ट्रको प्रार्थना गरिएको छ। २६ देखि २९ अध्यायमा खिल मन्त्रहरूको सङ्ग्रह पाइन्छ।

३० औं अध्यायमा पुरुषमेधको वर्णन गरिएको छ र त्यहाँ १८४ व्यवसायहरूको उल्लेख गरिएको पाइन्छ। ३१ औं अध्यायमा पुरुषसूक्तका मन्त्रहरू छन् भने ३२ औं अध्यायमा विराट् पुरुषको दार्शनिक एवं आध्यात्मिक स्वरूपको वर्णन गरिएको छ। ३३ औं अध्यायमा सर्वमेध विषयक मन्त्रहरूको सङ्कलन गरिएको छ। ३४ अध्यायको प्रारम्भमा शिवसङ्कल्पोपनिषद् छ भने यसमा मनोविज्ञानको सूक्ष्म अध्ययन पाइन्छ। ३५ औं अध्यायमा पितृमेधको वर्णन पाइन्छ। ३६ देखि ३८ अध्यायमा प्रवर्ग्यनामक यज्ञसँग सम्बन्धित मन्त्रहरू छन्। ३९ अध्यायमा प्रवर्ग्ययागसँग सम्बन्धित मन्त्रहरू छन्। ४० औं अध्यायलाई ईशावास्योपनिषद् पनि भनिन्छ, जो उपनिषद्हरूमा प्रथम स्थानमा पर्दछ।

सामवेद

स्यति छिनत्ति दुःखं ज्ञेयत्वात् इति साम अर्थात् मन्त्रहरूको गायनद्वारा दुःखको निवृत्ति गर्ने मन्त्रलाई साम भनिन्छ। गीतिषु सामाख्या यस जैमिनीय सूत्रमा पनि जैमिनिले गीतप्रधान मन्त्रलाई साम भनेका छन्। ऋग्वेदमा स्तोत्ररूप अथवा गीतरूप मन्त्रलाई आङ्गूष्यं साम भनिएको छ। आङ्गूष्यको अर्थ हुन्छ - स्तोत्र या गीतरूप मन्त्र। जब मन्त्र या ऋचा गीतको रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ, तब साम बन्दछ। बृहदारण्यकोपनिषद्मा साम चामष्येति तत्साम्नः सामत्वम्[८] यस वाक्यबाट साको अर्थ ऋक् र अमको अर्थ गान हो भनी सामको व्युत्पत्ति गरिएको छ। यस प्रकार ऋचा र गानलाई मिलाएर सामवेदको मन्त्रभाग पूर्ण हुन्छ। मन्त्रभागलाई संहिता भनिन्छ। यस वेदको ऋत्विक् उद्गाता हो। सामवेद संहितामा २ आर्चिक २७ अध्याय र १,८७५ मन्त्रहरू रहेका छन्। शतपथ ब्राह्मणअनुसार सामवेदमा ४ हजार बृहती छन्द (३६ अक्षर) बराबर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्षरहरू छन्, अर्थात् जम्मा ४००० गुणा ३६ बराबर १,४४,००० अक्षरहरू छन्।[९]

अथर्ववेद

चार वेदहरूमध्ये अन्तिम क्रममा रहेको अथर्ववेदलाई अथर्वाङ्गिरस वेद, ब्रह्म वेद, भिषग्वेद र क्षत्र वेद पनि भनिन्छ। अथ लोकमङ्गलाय अर्व्यति प्रस्तूयते इति अथर्व अर्थात् लोककल्याणका लागि प्रस्तुत गरिएकाले यस वेदलाई अथर्व भनिएको हो। पाणिनीय व्याकरणअनुसार थुर्वी धातु हिंसा अर्थमा छ, थुर्वी धातुबाट थर्व बन्दछ। थर्व भनेको हिंसा हुनु हो। अथर्व भनेको हिंसा नहुनु हो। वैदिक वाङ्मयमा हिंसा शब्दको अर्थ हानि या परस्परको असामञ्जस्य हो। हिंसा दुई किसिमका हुन्छन् - ऐहलौकिक र पारलौकिक। अथर्ववेदोक्त कर्मद्वारा यस भौतिक संसारमा हुने दुःख, कष्ट आदि अरिष्टको निवारण गर्नु नै हिंसा नहुनु हो। त्यसै गरी अथर्ववेदोक्त कर्मको आचरणद्वारा र अथर्ववेदले बताएको ज्ञानमार्गद्वारा पारलौकिक सुखलाई सुनिश्चित गर्नु नै पारलौकिक हिंसाको निवारण गर्नु हो। अथर्ववेदको शौनकीय शाखामा २० काण्ड, ३६ प्रपाठक, ७३६ सूक्त र ५९८७ मन्त्रहरू छन्। मूलरूपमा अथर्ववेदमा दर्शन, वैषज्य विद्या, शान्ति एवं पौष्टिक कर्म, राजनीति आदि विषयमा विस्तृत एवं विशद् चर्चा गरिएको छ।

२. ब्राह्मण -।
३. आरण्यक - १. ऐतरेय, २. शाङ्ख्यायन।
४. उपनिषद् - १. ऐतरेय, २. कौषीतकि, ३. बाष्कल मन्त्र।
५. कल्पसूत्र
श्रौतसूत्र - १. आश्वलायन २. शाङ्खायन श्रौतसूत्र।
गृह्यसूत्र - १. आश्वलायन, २. शाङ्खायन, ३. कौषीतकि-शाम्बव्य- गृह्यसूत्र
शुक्ल यजुर्वेद विवरण
१. शाखा - १. माध्यन्दिन, २. काण्व
२. ब्राह्मण - १. शतपथ ब्राह्मण
३. आरण्यक - बृहदारण्यक
४. उपनिषद् - १. ईशोपनिषद्, २. बृहदारण्यक।

५. कल्पसूत्र -

श्रौतसूत्र - कात्यायन श्रौतसूत्र।
गृह्यसूत्र - पारस्कर गृह्यसूत्र।
शुल्बसूत्र - १. कात्यायन शुल्बसूत्र
कृष्ण यजुर्वेद विवरण
१. शाखा - १. तैत्तिरीय, २. मैत्रायणीय, ३. कठ (काठक), ४. कपिष्ठल-कठ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. ब्राह्मण - तैत्तिरीय, काठक ब्राह्मण।

३. आरण्यक - तैत्तिरीय आरण्यक।

४. उपनिषद् - १. तैत्तिरीय, २. कठ, ३. श्वेताश्वतर, ४. मैत्रायणी (मैत्री), ५. महानारायण उपनिषद्।

५. कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र - १. बौधायन, २. वाधूल, ३. मानव, ४. भारद्वाज, ५. आपस्तम्ब, ६. काठक, ७. सत्याषाढ, ८. वाराह, ९. वैखानस श्रौतसूत्र।

गृह्यसूत्र - १. बौधायन, २. मानव, ३. भारद्वाज, ४. आपस्तम्ब, ५. काठक, ६. आग्निवेश्य, ७. हिरण्यकेशी, ८. वाराह, ९. वैखानस, १०. चारायणीय, ११. बैजवाप गृह्यसूत्र।

शुल्बसूत्र - १. बौधायन, २. मानव, ३. आपस्तम्ब, ४. मैत्रायणीय, ५. हिरण्यकेशी (सत्याषाढ), ६. वाराह शुल्बसूत्र।

सामवेद विवरण

१. शाखा - १. कौथुम, २. राणायनीय, २. जैमिनीय।

२. ब्राह्मण

कौथुमीय - १. ताण्ड्य महाब्राह्मण (पञ्चविंश वा प्रौढ), २. षड्विंश ब्राह्मण (अद्भुत ब्राह्मण), ३. सामविधान, ४. आर्षेय, ५. मन्त्र (उपनिषद्), ६. देवताध्याय, ७. वंश, ८. संहितोपनिषद् ब्राह्मण।

जैमिनीय - १. जैमिनीय (आर्षेय), २. जैमिनीय तलवकार, ३. जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण।

३. आरण्यक - तवलकार

४. उपनिषद् - १. छान्दोग्य, २. केन उपनिषद्।

५. कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र - १. आर्षेय (मशक) कल्पसूत्र, २. क्षुद्र कल्पसूत्र, ३. जैमिनीय श्रौतसूत्र, ४. लाट्यायन श्रौतसूत्र, ५. द्राह्यायण श्रौतसूत्र, ६. निदान सूत्र, ७. उपनिषद् सूत्र।

गृह्यसूत्र - १. गोभिल, २. कौथुम, ३. खादिर, ४. द्राह्यायण, ५. जैमिनीय गृह्यसूत्र।

अथर्ववेद संहिता विवरण

१. शाखा - १. शौनक, २.पैप्पलाद।

२. ब्राह्मण - गोपथ ब्राह्मण

३. आरण्यक - ह

४. उपनिषद् - १. प्रश्न, २. मुण्डक, ३. माण्डूक्य उपनिषद्।

५. कल्पसूत्र

श्रौतसूत्र - १. वैतान श्रौतसूत्र

गृह्यसूत्र - १. कौशिक सूत्र।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदका अङ्गहरू

अङ्‌ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि वेदका गुण एवं वास्तविक अर्थ जसद्वारा जानिन्छ, त्यसलाई वेदाङ्ग भनिन्छ। वेदाङ्गद्वारा मन्त्रहरूको अर्थ, त्यसको व्याख्या, यज्ञमा विनियोग आदि विभिन्न कार्यहरूको बोध हुन्छ। वेदका मन्त्रहरूको शुद्ध उच्चारणका लागि, शब्दहरूको अर्थ ज्ञानका लागि, तिनीहरूको योग्यस्थानमा विनियोगका लागि, काल निर्धारणका लागि र छन्द ज्ञानका लागि सहायक उपकरणहरूको आवश्यकता हुन्छ। तिनै आवश्यकता परिपूर्तिका लागि वेदका ६ अङ्गहरूको कल्पना गरिएको छ।

शिक्षा

शिक्षाको कार्य हो वर्णोच्चारणको विधि बताउनु। आचार्य सायणले ऋग्वेद भाष्यभूमिकामा शिक्षाको परिभाषा गर्दै भनेका छन् - स्वर, वर्ण आदिको उच्चारणको शिक्षा दिने शास्त्र नै शिक्षाशास्त्र हो।[१०] तैत्तिरीयोपनिषद्‌मा शिक्षाका ६ अङ्गहरूको उल्लेख गरिएको पाइन्छ - वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम र सन्तान।

वर्तमानमा ३५ शिक्षा ग्रन्थहरू उपलब्ध छन्। यी ग्रन्थहरूमा मन्त्रका उच्चारण, उच्चारणका विधिहरू, स्वर एवं व्यञ्जनका भेदहरू, स्थान, प्रयत्न, अनुनासिक विसर्ग, ह्रस्व, दीर्घ आदि वर्णहरूका उच्चारण विधि र सन्धिका नियमहरूका बारेमा विस्तृत विवेचन गरिएको छ। मुख्यरूपमा पाणिनीय शिक्षा, भरद्वाज शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, व्यास शिक्षा, वाशिष्ठी शिक्षा आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थहरू पर्दछन्।

कल्प

आचार्य सायणका अनुसार यज्ञसम्बन्धी विधिहरूका समर्थन र प्रतिपादन गरिएको शास्त्रलाई कल्प भनिन्छ। ऋग्वेद प्रातिशाख्य टीकामा विष्णुमित्रले वैदिक कर्महरूको साङ्गोपाङ्ग विवेचन गरिएको शास्त्रलाई कल्प भनेका छन्।[११] यी भनाइअनुसार वेदमा वर्णन गरिएका साना-ठूला सम्पूर्ण यज्ञहरूको विधि-विधानका बारेमा वर्णन गरिएको शास्त्रलाई कल्प भनिन्छ। कल्पमा यज्ञका विधि-विधानलाई सूत्ररूपमा प्रस्तुत गरिएको हुन्छ। त्यसैले यसलाई कल्पसूत्र पनि भनिन्छ।

कल्पसूत्रका मूलरूपमा ४ भेदहरू छन् - १. श्रौतसूत्र २. गृह्यसूत्र ३. धर्मसूत्र ४. शुल्वसूत्र।

१. श्रौतसूत्रः श्रौतको अर्थ हुन्छ- श्रुतिप्रतिपादित या श्रुतिमा वर्णित। श्रौतसूत्रमा वेदमा वर्णन गरिएका ठूला यज्ञ-अनुष्ठानको विस्तृत विवेचन र वर्णन गरिएको हुन्छ। यज्ञका आरम्भदेखि अन्त्यसम्म के-के गर्नुपर्दछ ? भन्ने कुराको क्रमैले विवरण प्रस्तुत गरिएको हुन्छ। मुख्यरूपमा श्रौतसूत्रमा दर्शपूर्णमास, सोमयाग, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध आदि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यज्ञहरूको वर्णन पाइन्छ।

२. गृह्यसूत्रः यस सूत्रमा गृहस्थ जीवनमा सम्बद्ध १६ संस्कारहरू, पञ्च महायज्ञ, सप्त पाकयज्ञ, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, पशुपालन, कृषि कर्म आदि सम्बद्ध कर्महरूको यज्ञसम्बन्धी विधिहरू बताइएको हुन्छ।

३. धर्मसूत्रः धर्मसूत्र धार्मिक आचार संहिताको ग्रन्थ हो। यसमा मानिसले गर्नुपर्ने काम-कर्तव्यका बारेमा विस्तृत विवेचन गरिएको छ। वर्णाश्रमधर्मको कर्तव्य, आचार-विचार, विधि-व्यवहार, मान्यता एवं सामाजिक जीवनका कर्तव्याकर्तव्यको विशद् विवेचन यस सूत्रमा गरिएको हुन्छ।

४. शुल्वसूत्रः शुल्वसूत्र गणितशास्त्रीय ग्रन्थ हो। यसमा ज्यामिति शास्त्रसम्बन्धी अनेक तथ्यहरू दिइएको हुन्छ। साना एवं ठूला वेदी निर्माणका विधि, यज्ञमण्डप निर्माणविधि, त्यसको नाप, परिमिति एवं क्षेत्रफलका बारेमा शुल्वसूत्रमा बताइएको छ।

व्याकरण

व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम् जुन शास्त्रले प्रकृति-प्रत्ययको विभागद्वारा शब्दहरूको विवेचन गर्दछ, त्यस शास्त्रलाई व्याकरण भनिन्छ। पाणिनीय शिक्षामा मुखं व्याकरणं स्मृतम् भनी व्याकरणलाई वेदको मुखस्थानिक अङ्गको रूपमा अर्थ्याइएको छ। व्याकरणको कार्य साधु शब्दको निष्पादन, प्रकृति-प्रत्ययको विवेचन, शुद्ध एवं अशुद्ध शब्दहरूको पृथक्करण हो। व्याकरणको मूल उद्देश्य वेदको रक्षा नै हो। आचार्य पतञ्जलिले महाभाष्यमा व्याकरणका मुख्यरूपमा ५ प्रयोजन बताएका छन्- रक्षा, ऊह(तर्क), आगम, लघु र असन्देह।[१२]

व्याकरण भाषागतरूपमा मुख्यतः दुई भागमा विभाजित छन्- लौकिक व्याकरण र वैदिक व्याकरण। व्याकरणकारहरूमा आचार्य पाणिनिपूर्वका आपिशलि, काश्यप, गार्ग्य, भारद्वाज, शाकटायन, स्फोटायन आदि पर्दछन् भने पछिका व्याकरणकारहरूमा पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, भर्तृहरि, कैयट आदि प्रमुखरूपमा रहेका छन्।

त्यसै गरी वैदिक व्याकरणहरूमा मुख्यरूपमा ऋग्प्रातिशाख्य, शुक्लयजुः प्रातिशाख्य, तैत्तिरीय प्रातिशाख्य, सामवेदीय प्रातिशाख्य र अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य रहेका छन्। यी प्रातिशाख्यहरूमा वेदका तत्तत् शाखासम्बद्ध वर्णोच्चारणका विधि, सन्धि नियम, शब्दका रूपहरू, धातुका रूपहरू, उदात्तादि स्वरहरू र छन्दका ज्ञानका बारेमा विस्तृत रूपमा चर्चा गरिएको छ।

निरुक्त

निरुक्तको अर्थ हुन्छ- निर्वचन या व्युत्पत्ति। शब्दको मूलरूपको ज्ञान गराउनु,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दमा प्रकृति-प्रत्ययको स्पष्टीकरण गर्नु, धात्वर्थ एवं प्रत्ययार्थको विवेचना गर्नु, समानार्थक एवं नानार्थक शब्दहरूको विश्लेषण गर्नु नै निरुक्तको कार्य हो। शब्दको उत्पत्ति एवं त्यसको विकास प्रक्रियाको अध्ययनद्वारा शब्दार्थको यथार्थ बोध गराउने हुँदा निरुक्तलाई शब्दव्युत्पत्ति शास्त्र पनि भनिन्छ। भाषाशास्त्रीय दृष्टिकोणले निरुक्तको महत्त्व सर्वोपरि छ। मूलरूपमा यास्काचार्यको निरुक्त नै वर्तमानमा उपलब्ध एकमात्र ग्रन्थ हो। यसमा १२ अध्याय छन् र अन्त्यमा दुई परिशिष्ट अध्यायसहित जम्मा १४ अध्यायहरू छन्। निरुक्तको कार्य वैदिक शब्दहरूको विश्लेषण, प्रकृति-प्रत्ययको विभाजन र त्यसका माध्यमबाट वेदका शब्दहरूको यथार्थबोध गराउनु नै हो।

छन्दः

छन्दांसि छादनात् अर्थात् छन्दले भावहरूलाई ढाकेर समष्टिरूप प्रदान गर्दछ भनी यास्काचार्यले निरुक्तमा बताएका छन्। आचार्य कात्यायनले सर्वानुक्रमणिमा छन्दको लक्षण गर्दै भनेका छन्- यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः अर्थात् जसमा वर्ण या अक्षरको सङ्ख्या निर्धारित हुन्छ, त्यसलाई छन्द भनिन्छ। यस प्रकार अक्षरको सङ्ख्याको आधारमा छन्दको नाम राखिन्छ। छन्द निर्धारणका लागि आचार्यहरूले विभिन्न ग्रन्थहरूको रचना गरेका छन्। तिनीहरूमध्ये मुख्यरूपमा ऋग्प्रातिशाख्य, साङ्खायन श्रौतसूत्र, सामवेदको निदानसूत्र, पिङ्गल छन्दसूत्र आदि छन्।

छन्दले हृदयको कोमल भावनाहरूलाई मनोरम किसिमले अभिव्यक्त गर्दछ। विस्तृत भाव एवं विचारलाई सङ्क्षेपमा सुसम्बद्ध गर्ने सुन्दर विधा हो, छन्द। छन्दले शब्दावलीमा माधुर्यको अभिव्यक्ति प्रदान गर्दछ, हृदयमा आह्लादकता ल्याउँछ। छन्दमा लेखिएका मन्त्र या सूक्तहरू सरल तरिकाले स्मरण गर्न सकिन्छ। त्यसै कारण भगवत् आराधनमा छन्दोमयी वाणी प्रस्तुत गर्ने प्राचीन परम्परा रहेको छ। वैदिक वाणी छन्दोमय हुन्छ। त्यसैले छन्द ज्ञानका लागि शिक्षाग्रन्थहरूको ज्ञान आवश्यक हुन्छ। शास्त्रहरूमा भनिएको छ- देवता, छन्द आदिको ज्ञानविना अध्ययन, अध्यापन र मन्त्रहरूको जप गर्नुहुँदैन। अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च। योऽध्यापयेद् जपेद्वापि पापीयान् जायते तु सः।।

वेदमा मुख्यरूपमा गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती, आदि छन्दहरूको प्रयोग गरिएको पाइन्छ। ती छन्दहरूमा कहीं एक अक्षर कम हुन्छन् त कहीं एक अक्षर बढी हुन्छन् र कहीं दुई अक्षर कम त, कहीं दुई अक्षर बढी। छन्दमा अक्षर कम या बढी हुनुलाई पारिभाषिक शब्दको प्रयोग गरिएको छ-

निचृत्- १ अक्षर कम, भुरिक्- १ अक्षर बढी, विराट्- २ अक्षर कम, स्वराट्- २ अक्षर बढी वेदमा प्रयोग भएका मुख्य छन्दहरूको नाम तथा प्रत्येक पादमा हुने वर्ण सङ्ख्याको विवरण यसप्रकार छ-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	छन्द	अक्षर	पाद १	पाद २	पाद ३	पाद ४	पाद ५
१	गायत्री	२४	८	८	८	-	-
२	उष्णिक्	२८	८	८	१२	-	-
३	पुर उष्णिक्	२८	१२	८	८	-	-
४	ककुभ् उष्णिक्	२८	८	१२	८	-	-
५	अनुष्टुप्(भ्)	३२	८	८	८	८	-
६	बृहती(पथ्या)	३६	८	८	१२	८	-
७	पङ्क्ति	४०	८	८	८	८	८
८	सतोबृहती	४०	१२	८	१२	८	-
९	प्रस्तार पङ्क्ति	४०	१२	१२	८	८	-
१०	विराट् पङ्क्ति	४०	१०	१०	१०	१०	-
११	त्रिष्टुप्	४४	११	११	११	११	-
१२	जगती	४८	१२	१२	१२	१२	-
१३	अतिजगती	५२	१३	१३	१०	८	८
१४	अतिशक्वरी	६०	१६	१६	१२	८	८
१५	अष्टि	६४	१६	१६	१६	८	८

ज्योतिष

ज्योतिषको अर्थ हो- ज्योतिर्विद्या। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पिण्डहरूको गणना ज्योतिषमा गरिएको छ। ज्योतिर्मय पदार्थहरूको विवेचन गरिएको शास्त्रलाई ज्योतिष या ज्योतिर्विद्या भनिन्छ। वेदाङ्ग ज्योतिषका लेखक लगधका अनुसार ज्योतिषामयनम् अर्थात् ग्रह, नक्षत्र आदिको गतिको विवेचन गर्ने शास्त्रलाई ज्योतिष शास्त्र भनिन्छ। ज्योतिष शास्त्रलाई कालशास्त्र, कालविज्ञान आदि विभिन्न नामले बताइएको पाइन्छ। वेदमा यज्ञको सर्वोपरि महत्त्व छ। यज्ञका लागि समय निर्धारण गरिएको छ। ब्राह्मणग्रन्थहरूमा यज्ञ-अनुष्ठानका लागि उपयुक्त ऋतु, मास र पक्षहरूको मिति निर्धारण गरिएको छ। निर्धारित मिति ज्ञानका लागि ज्योतिषको आवश्यकता अपरिहार्य हुन्छ। त्यसैले वेदाङ्ग ज्योतिषमा भनिएको छ- यज्ञको निर्धारित कालको ज्ञानका लागि ज्योतिषको ज्ञान आवश्यक हुन्छ। जसरी मयूरको जुरो, सर्पको मणि, शिरको सर्वोपरि स्थानमा पर्दछ, त्यसै गरी ज्योतिष शास्त्र पनि वेदाङ्गहरूमा मूर्धन्य छ। *(यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा। तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्।* ।

संहिता पाठ

ईश्वरको वाणी भएको हुनाले वेद अपौरुषेय हो। अपौरुषेय वेदको स्वर एवं वर्णलाई सुरक्षित राख्न मन्त्रद्रष्टा ऋषि-महर्षिहरूले वेदपाठ विधिको उपदेश गरे। यिनीहरूमा ३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकृतिपाठ र ८ विकृति पाठको उपदेश गरिएको पाइन्छ। प्रकृतिपाठमा संहितापाठ, पदपाठ र क्रमपाठ पर्दछन् भने विकृतिपाठमा जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ र घन पर्दछन्। यिनै विभिन्न पाठका विधिद्वारा अभ्यास गरिने हुँदा वेदलाई आम्नाय पनि भनिन्छ।

महर्षि कात्यायनको अनुसार वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता अर्थात् वर्णहरूको एकै श्वासको झोक्कामा उच्चारण गर्नु नै संहिता हो। आचार्य पाणिनिका अनुसार परः सन्निकर्षः संहिता अर्थात् वर्णहरूको अत्यन्त नजिकमा उच्चारण हुनु नै संहिता हो। अपौरुषेय वेदवाणीको गुरूपरम्पराअनुसार अध्ययन गर्नुपर्दछ। जसमा वर्णहरूको उच्चारण एक श्वासमा अर्थात् अत्यन्त नजिकमा गर्नुपर्दछ। शिक्षाशास्त्रले निर्धारण गरेको पद, पाद, आधा मन्त्र र मन्त्रान्त आदि बाहेक अन्य स्थानमा विराम नगरीकन एक श्वासको प्रयोग गरी पाठ गर्नुलाई संहिता पाठ भनिन्छ। संहिता पाठ गर्दा पहिलो मन्त्र सकिएपछि त्रिमात्रा काल अर्थात् करिब तीन सेकेन्ड विश्राम लिनुपर्दछ र दोस्रो मन्त्रको आरम्भ गर्नुपर्दछ। कण्डिकाको बीचमा दुइ मात्रा काल विश्राम गर्नुपर्दछ। यस प्रक्रियामा रिक्तहस्त हुँदा वैदिक विद्वान्ले दाहिने हात माथि उठाएर दुइ मात्रा काल स्थिर गर्नुपर्दछ। रिक्तहस्तका बारेमा आचार्य याज्ञवल्क्य भन्दछन्- विवृति (दुइ स्वरको मध्यमा रहेको सन्धि नभएको स्थान, जसलाई ऽ ले जनाइन्छ) मा, मन्त्र समाप्त भएपछि, मन्त्रको बीचमा, मन्त्रको पदपाठको समयमा र पादको समाप्तिपछि शून्यहस्त (हात स्थिर) गर्नुपर्दछ।

उदात्त, अनुदात्त र स्वरित स्वरको परिवर्तन नगरी वेदाध्ययन गरिन्छ भने त्यसलाई संहिता पाठ भनिन्छ, जसको स्वरूप यसप्रकार छ - गुरुक्रमेणाध्येतव्यः ससन्धिः सावसानकः। त्रिस्वरोऽपरिवर्त्यश्च पाठ आद्यस्तु संहिता।।

संहिता पाठलाई यमुना नदीसमान पुण्यप्रद मानिएको छ।[१३] संहिताको पाठद्वारा सूर्यलोकको प्राप्त हुने कुरा याज्ञवल्क्य शिक्षामा बताइएको छ।

उदाहरण-

ओषधय् समवदन्त् सोमेन सह राज्ञा। यस्म्मै कृणोति ब्ब्राह्म्मणस्त्त राजन्न्पारयामसि (शु.य. १२।९६)

पदपाठ

वाजसनेय प्रातिशाख्यअनुसार अर्थः पदम् अर्थात् अर्थ लाग्ने अक्षर या वर्ण समुदायलाई पद भनिन्छ। पाणिनीय व्याकरणअनुसार सुप्तिङन्तं पदम् अर्थात् सुप् र तिङ् प्रत्ययले युक्त वर्ण समुदायलाई पद भनिन्छ। वेदका मन्त्रहरूलाई पद-पद छुट्याएर सस्वर गरिने वेद पाठलाई पदपाठ भनिन्छ। वेदको पदपाठ पुण्यदायिनी सरस्वतीसमान मानिएको छ। याज्ञवल्क्य शिक्षामा बताइएको छ पदमुक्ता सरस्वती अर्थात् पदपाठ गर्नाले सरस्वती नदीमा स्नान गरेको पुण्य प्राप्त हुन्छ। त्यसै गरी पदपाठ गर्ने व्यक्तिले पदं च शशिनः पदम्[१४] अर्थात् चन्द्रलोक प्राप्त गर्दछ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण-

१	२	३	४	५	६
ओषधय	सम्	वदन्ते	सोमेन	सह	राज्ञा ॥
७	८	९	१०	११	१२
यस्मै	कृणोति	ब्राह्मणः	तम्	राजन्	पारयामसि ॥

क्रम पाठ

दुई-दुई पदहरूको पाठ गर्दै पछिल्लो पदलाई त्योभन्दा पछाडिको पदसँग जोडेर मन्त्रको अन्तिमसम्म पाठ गर्नु नै क्रम पाठ हो। द्वे द्वे पदे सन्दधात्युत्तरेणोत्तरमावसा नादपृक्तवर्जम्[१५] अर्थात् अपृक्तादि विशेष स्थलहरूलाई छोडेर सामान्यरूपमा दुई दुई पदहरूलाई सन्धियुक्त अवसानसम्म सस्वर पाठ गर्नुलाई क्रमपाठ भनिन्छ। क्रमपाठ पदपाठसँग आधारित छ र जटा आदि अष्टविकृति पाठको मूल क्रमपाठ नै हो। शास्त्रमा यसको महत्त्वको बारेमा बताइएको छ- संहिताको पाठबाट पुण्य प्राप्त हुन्छ, पदपाठद्वारा दुई गुणा पुण्य प्राप्त हुन्छ, क्रमपाठद्वारा तीन गुणा पुण्य प्राप्त हुन्छ भने जटापाठद्वारा छ गुणा पुण्य प्राप्त हुन्छ।[१६]

उदाहरण-

१	२	२	३	३	४
ओषधयः	सम्	सं	वदन्ते	वदन्ते	सोमेन
४	५	५	६	६	६
सोमेन	सह	सह	राज्ञा	राज्ञेति	राज्ञा
७	८	८	९	९	१०
यस्मै	कृणोति	कृणोति	ब्राह्मणः	ब्राह्मणः	ब्राह्मणः
१०	११	११	१२	१२	१२
ब्राह्मणः	राजन्	राजन्	पारयामसि	पारयामसीति	पारयामसि

विकृति पाठ

प्राचीन ऋषि-महर्षिहरूले गुरुमुखोच्चारणानूच्चारण विधिबाट आफूले पढेका वैदिक संहिताको सस्वर पाठ परम्परालाई जीवित राखे र स्वरगत एवं वर्णगत सम्भावित दोषबाट मुक्तिका लागि विकृतिपाठको परम्परा चलाए, जो वैदिक साहित्यको एउटा नौलो परम्परा हो। यसअन्तर्गत दुई पदलाई लिएर अन्य विभिन्न पदसम्म क्रम-व्युत्क्रम-सङ्क्रम पाठको विधान हुन्छ। यसका ८ प्रकार छन्, जसलाई अष्टविकृति पाठ भनिन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आचार्य व्याडिले विकृति पाठको लक्षण यस प्रकार गरेका छन्-

शैशिरीये समाम्नाये व्याडिनैव महर्षिणा। जटाद्याविकृतिरष्टौ लक्ष्यन्ते नातिविस्तरम्।।

जसअनुसार मुख्यरूपमा अष्टविकृति पाठको वर्णन गरिएको छ- जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ र घन।

संहिता, पद, क्रम आदि पाठलाई यस क्रममा बुझ्न सकिन्छ।

(क. प्रथमपद, ख. द्वितीयपद, ग. तृतीयपद, घ. चतुर्थपद...)

१. संहितापाठ - मन्त्रहरूको मूल रूपको पाठ क ख ग घ यस क्रममा पद नछुटयाई गर्ने।
२. पदपाठ - मन्त्रहरूको मूल रूपको पाठ क ख ग घ यस क्रममा पद छुटयाई गर्ने।
३. क्रमपाठ - पदको क्रम मिलाएर पाठ गर्ने, जस्तैः कख, खग, गघ।
४. जटापाठ - पदहरूलाई यस क्रममा पाठ गर्ने, जस्तैः कख, खक, कख। खग, गख, खग। गघ, घग, गघ।
५. शिखापाठ - पदहरूलाई यस क्रममा पाठ गर्ने, जस्तैः कख, खक, कखग। खग, गख, खगघ।
६. घनपाठ - पदहरूलाई यस क्रममा पाठ गर्ने, जस्तैः कख, खक, कखग, गखक, कखग। खग, खगघ, घगख, खगघ।

१.मनुस्मृति २।७

२.सत्तायां विद्यते ज्ञाने, वेत्ति विन्ते विचारणे।
विन्दति विन्दते प्राप्तौ श्यन्-लुक्-श्नम्-शेष्विदं क्रमात्।।(सिद्धान्तकौमुदीकारिका)

३.तैत्तिरीय संहिता भाष्यभूमिका

४.स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।(तैत्तिरीयोपनिषद् १/११/१)

५.मनुस्मृति २/६

६. व्याकरण महाभाष्य (पस्पशाह्निक)

७.यजु. ९/२३

८.प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न वुद्ध्यते।एनं विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता।।(ऋग्वेद-सायणभाष्य)

९.बौधायनगृह्यसूत्र ३/२/६३

१०.ऋग्वेदभाष्यभूमिका

११.आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येन-आख्यायन्ते।(शत० १४/९/४/३३)

१२.जाबाल संहिता अध्याय १

१३.वेदाङ्गज्योतिष, याजुष श्लोक ४

१४.विवृत्तौ चावसाने च ऋचोऽर्द्धे च तथा परे।पदे च पादसंस्थाने शून्यहस्तं विधीयते ॥ (या.शि. पूर्वार्ध १५)

१५.वाजसेनय प्रातिशाख्य ४/१८३

१६. संहिता पाठतः पुण्यं द्विगुणं पदपाठतः।त्रिगुणं क्रमपाठेन जटापाठेन षड्गुणम्।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदान्त दर्शन : व्यावहारिक विज्ञान

✍ प्रा. शिवगोपाल रिसाल

ब्रह्मसाक्षात्कारको साधन भएको हुनाले दर्शन भन्नाले ब्रह्मसाक्षात्कार भनेर पनि बुझ्न सकिन्छ। सबभन्दा प्रिय वस्तु, मुख्य वस्तु आत्मा नै हो। अतः आत्मा नै द्रष्टव्य- दर्शन गर्न योग्य हो। अर्थात् साक्षात्कारको विषय बनाउन योग्य हो। यसका लागि सर्वप्रथम आचार्य र शास्त्रद्वारा श्रवण गर्न योग्य र सुनिसकेपछि मनन, चिन्तन गर्न योग्य पनि आत्मा नै हो।

यसरी श्रवण र मनन गरिसकेपछि श्रुतिअनुकूल मननबाट सिद्ध भएको आत्माकै निदिध्यासन गर्नु पर्छ। निदिध्यासन भनेको निश्चयपूर्वक ध्यान गर्नु हो। यसैलाई निर्गुण उपासना पनि भनिन्छ। [१] यसरी क्रमैसँग श्रवण, मनन र निदिध्यासन गरेपछि आत्माको साक्षात्कार हुन्छ। त्यसैले दर्शन भनेको साक्षात्कार पनि हो। 'मैले श्रीपशुपतिनाथको दर्शन गरें' भनेको श्रीपशुपतिनाथको साक्षात्कार गरें भनेको त हो नि।

वेदको महावाक्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुका मुखारविन्दबाट सुन्नुपर्छ। सुनेको वाक्यलाई उपपत्तिसहित मनन गर्नुपर्छ। यसरी मनन गरिएको वेदको तत्त्वलाई (ब्रह्मलाई), आत्मालाई आफूदेखि अभिन्न मानेर निदिध्यासन गर्नुपर्छ। श्रवण, मनन र निदिध्यासन दर्शनको हेतु भएकाले दर्शन नै हुन्। दर्शन त आत्मा नै हो, आत्मासाक्षात्कार नै हो। यहाँ दर्शन भन्नाले त्रिपुटी अन्तःपाती रजोगुण विशिष्ट दर्शन भने होइन। सामान्य भौतिक दृष्टिले विचार गर्दा द्रष्टाले दृश्यलाई दर्शन गर्ने भन्ने अर्थमा पनि दर्शनको प्रयोग हुन्छ। तर यो सामान्य दर्शन भयो, भौतिक दर्शन हाम्रो वर्तमान प्रसङ्ग हो आध्यात्मिक दर्शन, वेदान्त दर्शन, आत्मानुभव गर्ने, आत्मसाक्षात्कार गर्ने दर्शन।

भगवान् श्रीकृष्णले ब्रह्मज्ञान प्राप्तिका लागि अमानित्व आदि बीस साधन बताउनुभएको छ। तिनमा सबभन्दा पछिल्लो हो- 'तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्'। [२] तत्त्वज्ञान भनेको जीवात्मा र परमात्माको एकता ज्ञान हो। तत्त्वज्ञानको अर्थ हो मोक्षस्वरूप परमात्मा। त्यस्तो परमात्मालाई देखाइदिने, चिनाइदिने, बोध गराइदिने, साधन नै दर्शन हो। त्यसैले साधन

✍ प्राध्यापक, पद्मकन्या क्याम्पस, बागबजार/आध्यात्मिक व्यक्तित्व

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नै साध्य भयो यहाँ र भगवान्ले यी बीसवटै साधनलाई ज्ञान भन्नुभयो। अनि त दर्शनलाई ज्ञान भन्न मिल्यो, ज्ञानलाई ब्रह्म भन्न पनि सकियो। स्वर्ग र अपवर्गको साधनलाई नै दर्शन भन्न पनि सकिन्छ।

दर्शन दुई प्रकारका छन्- श्रुतिसापेक्ष र श्रुतिनिरपेक्ष। श्रुतिसापेक्ष दर्शन ६ वटा र श्रुतिनिरपेक्ष पनि ६ वटा गरी पूर्वीय गोलार्द्धमा बाह्र दर्शन प्रसिद्ध छन्। वेदलाई मान्ने श्रुतिसापेक्ष दर्शन हुन्- १. साङ्ख्य २. योग ३. न्याय ४. वैशेषिक ५. पूर्वमीमांसा र ६. उत्तरमीमांसा (वेदान्त)। साङ्ख्यका आचार्य कपिल, योगका पतञ्जलि, न्यायका कणाद, वैशेषिकका गौतम, पूर्वमीमांसाका जैमिनि र उत्तरमीमांसाका (वेदान्त) वेदव्यास आचार्य हुन्। श्रुतिलाई नै आधार मानेर विभिन्न आचार्यहरूले आआफ्ना सिद्धान्त र दर्शनलाई प्रवर्तन गरेका छन्। श्रीमध्वाचार्यले प्रवर्तन गरेको अद्वैतवाद, श्रीमद्शङ्कराचार्यले प्रवर्तन गरेको अद्वैतवाद, श्रीनिम्बाकाचार्यले प्रवर्तन गरेको द्वैताद्वैतवाद, श्रीमद्वल्लभाचार्यले प्रवर्तन गरेको शुद्धाद्वैतवाद र श्रीरामानुजाचार्यले प्रवर्तन गरेको विशिष्टाद्वैतवाद प्रसिद्ध छन्। त्यस्तै श्रुति निरपेक्ष भनेर मानिएका ६ दर्शन हुन्- बौद्धदर्शनअन्तर्गतका १. माध्यमिक २. योगाचार ३. सौत्रान्तिक र ४. वैभाषिक गरी चार तथा अरू दुई- ५. आर्हतदर्शन (जैनदर्शन) र ६. चार्वाकदर्शन।

दर्शन शब्दले इन्द्रियजन्य ज्ञानलाई पनि बुझाउने भएकाले दर्शनलाई व्यापक दृष्टिले हेर्नु नै समीचिन देखिन्छ। यहाँ दर्शन भन्नाले भौतिक विचार, चिन्तन आदिलाई भनेको होइन भनी बुझ्नुपर्छ। यथार्थ, पारमार्थिक यो लोक र परलोकको पनि बाटो देखाइदिने उपदेश, सन्देश, चिन्तनधारा र पद्धतिलाई दर्शन भनेको हो।

वेदान्त

वेद भनेको ज्ञान हो, जान्नु हो, बोध हो। जान्नुको पूर्णता नै वेदान्त हो। अब जानेर सकियो। वेदले बताएको अन्तिम निचोड, सार, सर्वस्व नै वेदान्त हो। वेदको अन्त अर्थात् वेदको मर्म, रहस्य नै वेदान्त हो। यो ज्ञान महावाक्यले प्रतिपादन गरेको जीवात्मा र परमात्माको एकात्मबोधक ज्ञान नै वेदान्त हो।

वेदको अन्तिम भाग उपनिषद् हो- यही नै वेदान्त हो। निष्काम कर्मयोगले चित्तको मलदोष पन्छाएर चित्तलाई शुद्ध बनाउँछ। उपासना किंवा भक्तिले चित्तको विक्षेवदोष हटाएर चित्तलाई अझ परिमार्जित अर्थात् विशुद्ध बनाउँछ। अब ज्ञानले, ज्ञानकाण्डले चित्तमा रहेको आवरणदोषलाई अपस्चरण गरेर चित्तलाई चैतन्य नै बनाइदिन्छ। यसरी ज्ञानैज्ञानले भरिएको वेदको अन्तिम खण्ड, अन्तिम भाग उपनिषद् किंवा वेदान्तले ज्ञान गराउँछ र जीवलाई शिवभावमा स्थापित गराउँछ। अब जान्नु बाँकी छैन, त्यसैले उपनिषद्लाई वेदान्त भनियो।

उपनिषद् शब्दार्थको निरुक्तिका सन्दर्भमा उपाद्य जगद्गुरु भाष्यकार भगवान्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शङ्कराचार्य महाभागले भन्नुभएको छ- विशरण (नाश), गति र अवसादन अर्थात् शिथिल पार्नु वा थिल्थिलो पार्नु- यी तीन अर्थ दिने तथा 'उप' र 'नि' उपसर्गपूर्वक एवं 'क्विप्' प्रत्ययान्त *तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणीः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् (मुण्डकोपनिषद् १।२।१२)*

'सद्' धातुको संयोगबाट 'उपनिषद्' यो रूप बन्दछ। मोक्ष मात्रको इच्छा गर्ने तीव्र मुमुक्षु पुरुष अत्यन्त विरागको र शमदमादि षट्सम्पत्तिसहित विवेकले युक्त भएर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुका समीपमा पुगेर ब्रह्मज्ञानको उपदेशको जिज्ञासा राख्छन्। (४) यसरी विधिपूर्वक सद्गुरुका समीपमा उपसन्न भएका शिष्यलाई गुरुले उपदेश दिनुहुन्छ- उपनिषद्का महावाक्यहरूकै आधारमा र शिष्यले उपनिषद्को अनुशीलनबाट निष्कर्षमा पुग्छन् र परिणाम के हुन्छ भने संसारको अर्थात् अज्ञानको बीजको विशरण हिंसन अर्थात् विनाश हुन्छ। यसभन्दा अगाडि त संसारको भोगको वासनालाई थिलथिलो पार्छ उपनिषद्विधाले, अध्यात्मविद्याले।

शिथिलीकरण गरेको वासनाबाट पार भएपछि मुमुक्षुले गति प्राप्त गर्छन्, अगाडि बढ्छन्। अनि त अज्ञानलाई मूलसहित नष्ट गरिदिन्छिन्। यही हो उपनिषद्को मर्म, रहस्य र सार सर्वस्व। अनादिकालदेखिको अज्ञानलाई नष्ट गरेर ज्ञानलोकमा पुर्याउनु र जीवलाई मुक्त गर्नु नै उपनिषद् किंवा वोन्तको उद्देश्य हो। अतः जीवको लक्ष्य नै मोक्ष भएकाले त्यही प्रयोजनका लागि वेदान्तदर्शन अग्रसर भएको छ।

व्यावहारिक

व्यवहारमा प्रयुक्त भनेको व्यावहारिक हो। यो पारमार्थिक होइन। भरे-भोलि नै नाश हुनेलाई व्यावहारिक भन्दछन्। देख्नमा छ तर हुनमा छैन। व्यवहार कालमा भएकै जस्तो तर परमार्थमा वास्तवमा नभएकालाई व्यावहारिक भन्छन्। मोटामोटी अनुभवमा आएको दैनन्दिनीमा भोगिएको नै व्यावहारिक हो। तीन प्रकारका सत्य मानिएका छन्- पारमार्थिक सत्य, व्यावहारिक सत्य र प्रातिभासिक सत्य। १. पारमार्थिक सत्य भनेको सदासर्वदा रहिरहने-आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म। २. व्यावहारिक सत्य भनेको जीवात्मा, घर, परिवार, यो लोक परलोक आदि। सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय आदि हाम्रा जीवनमा अनुभवमा आएका कुरा व्यावहारिक सत्यमा पर्छन्। यिनीहरू केही काल रहन्छन् तर नाशवान् हुन्। परमार्थमा, यथार्थमा छैनन्, होइनन्। ३. प्रातिभासिक सत्य भनेको एकै छिनमा देखिने तत्कालमा नै अर्थात् विचार गर्दासाथै नष्ट हुने। जस्तो मन्द अन्धकारमा डोरीमा देखिएको सर्प, मरुभूमिमा देखिएको पानी, सियोमा देखिएको चाँदी। यी विचारकालमा नष्ट भइहाल्छन्।

व्यावहारिक सत्य भनेको संसार हो, व्यवहार हो- आफूले दिनका दिन भोग गरिएको कुरा हो। व्यवहारमा आएको, जीवनमा भोगिएको, अनुभवले प्रमाणित गरेको नै विज्ञान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पनि हो। त्यसैले वेदान्त दर्शनलाई जीवनमा उतारिएको छ भने त्यो व्यावहारिक विज्ञान भयो। पुस्तकमा भएको वेदान्तलाई अथवा सद्गुरुका मुखारविन्दबाट निस्केको वेदान्त वाक्यलाई आफ्नो जीवनमा उतारिएको अनुभवको कसीमा घसेको, जीवनमा आत्मसात् गरेको अनुभवजन्य वेदान्त नै विज्ञान हुन्छ। नत्र त वेदान्त दर्शनमात्र हुन्छ। वेदान्त पढ्नका लागि, जान्नका लागि, परीक्षामा उत्तीर्ण हुनका लागि, श्लोक कण्ठ पार्नका लागि पङ्क्तिका पङ्क्ति जस्ताको तस्तै उतार्नका लागि मात्र होइन। त्यस्तो वेदान्त त पाण्डित्य प्रदर्शन गर्नका लागि काम लाग्ला, तक्मा पाउनका लागि उपयोगी सिद्ध होला। जीवनमा, दैनन्दिनीमा खरो उत्रेको वेदान्तमात्र आत्मकल्याणका लागि उपयोगी सिद्ध हुन्छ।

प्रयोगपरक वेदान्तले मात्र जीवन आनन्दमय बन्दछ। वेदान्तले भन्छ- ब्रह्म सत्य हो, जगत् मिथ्या हो। जीव नै ब्रह्म हो, अरू होइन, छैन। (५) अब यो सिद्धान्त भयो। दर्शन भयो। यसलाई जीवनमा उतार्नु भनेको आफूलाई जगत्मा होइन, अविनाशी सत्य ब्रह्ममा पार्नुपर्यो र नाशवान्, मिथ्या जगत्मा सत्यता बुद्धि नगरेर जगत्बाट उपराम भएर बस्नुपर्यो। शरीर पनि, घरपरिवार, मान-प्रतिष्ठा पनि जगत्भित्रै परिहाल्यो। अनि यिनमा सत्यताबुद्धि गरेर, यिनका लागि मरिहत्ते गर्ने कुरै भएन। जगत्बाट तीव्र वैराग्य लिएर आत्मामा, ब्रह्ममा, आफूमा, ईश्वरमा रमाउनु नै वेदान्तलाई विज्ञानमा, व्यावहारमा ल्याउनु ठहरिन्छ। नत्र मुखको मात्र वेदान्तले काम दिँदैन। अरूलाई पर्दा वेदान्त, आफूलाई पर्दा मरणान्त भयो भने वेदान्तको मर्यादा भएन, वेदान्तको अनुशासनभित्र बसिएन- यो त मुखको मात्र वेदान्त भयो।

भगवान् श्रीकृष्णले अर्जुनलाई पाइला-पाइलामा 'तिमी शोक गर्न योग्य छैनौ, तिमीले देह र गेह सम्झेर, साँचो मानेर शोक गर्नुभएन' भन्नुभएको छ- गीतामा। अर्जुनले स्वीकार गर्नुभयो, शोकरहित हुनुभयो। आफ्नो कर्तव्यकर्म गर्छु भन्नुभयो। मोहले गर्दा देह-गेहमा म र मेरो बुद्धि हुन्छ। यो वेदान्त नपढेका, नबुझेका, नसुनेका संसारी विषयीहरूको काम हो। वेदान्त सुनेका, पढेका, बुझेका, श्रवणपछि मनन र निदिध्यासन गरेका र वेदान्तलाई, गुरुवाक्यलाई आत्मसात् गरेका अनुभवी वेदान्तीहरू त शोक र मोहबाट पार पुगेका हुन्छन्- अनुभवानन्दमा मस्त भएका हुन्छन्। बरु वेदान्ती भने अनुवादमा, अनुवादानन्दमा रमाएका हुन्छन्। यत्ति हो अनुभवी वेदान्ती र कुराका मात्र वेदान्तीमा पाइने अन्तर।

वेदान्त दर्शन नपढे पनि, श्रोत्रिय नभए पनि ब्रह्मनिष्ठ हुन सकिन्छ। पढ्नु, सुन्नु, सुनाउनु ठूलो कुरो होइन, हुनुपर्यो, जीवनमा उतार्नुपर्यो, वेदान्त सिद्धान्तअनुरूप जीवन बाँच्नुपर्यो, वेदान्तले बताएअनुसार दैनन्दिनी बताउनुपर्यो। वेदान्तलाई जीवन बाँच्ने शैली, बाँच्ने कला बनाएका विज्ञानानन्दमा, अनुभवानन्दमा चुर्लुम्म डुबेका अनुभवी वेदान्ती कस्ता हुन्छन् त भन्दा- (६)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यही ब्रह्मको, आत्माको, ईश्वरको, कूटस्थ चैतन्यको, साक्षीको मात्र चिन्तन गर्छन्। त्यही बह्मविषयक वार्तामा संलग्न हुन्छन्, परस्परमा यही ब्रह्मविषयक छलफल, स्वाध्याय सत्सङ्ग, ऊहापोह गर्छन्। आफूले बुझेको अरूलाई बुझाइदिन्छन्, नबुझेको बुझ्नेसँग सोध्छन् र आफू स्पष्ट हुन्छन्, चित्तवृत्ति परब्रह्म परमात्मामा मात्र लगाइरहन्छन्- यसरी तत्त्वको बोध गर्छन्। यसरी रातदिन, नित्य निरन्तर ब्रह्मको अखण्ड अभ्यास गर्नू भनेर विद्वान्हरूले भनेका छन् र आफू पनि गरिरहन्छन्। वेदान्तीले मोक्षको इच्छा गर्ने हो भने विषयलाई विषवत् आजै, अहिले नै छोडिदिनुपर्छ। (७) यो हो ज्ञानवान् जीवनमुक्त ऋषिकुमार अष्टावक्रले आफ्ना परमप्रिय शिष्य राजा जनकलाई दिएको ब्रह्मोपदेश।

अध्यात्मविद्या, वेदान्तविद्या, आत्मविद्या, ब्रह्मविद्या प्राप्त गर्नका लागि आफैं अग्रसर हुनुपर्छ। आफैं उठ्नुपर्छ, जाग्नुपर्छ, आफैं ब्रह्मज्ञानी गुरुका समीपमा गएर उपसन्न शिष्य भएर नम्रतापूर्वक जिज्ञासा गरेर आत्मतत्त्वका विषयमा सुन्नुपर्छ। यसरी सुनेका वेदवाक्यलाई आत्ममनन गरी, निदिध्यासन गरी आत्माको अपरोक्ष साक्षात्कार गर्नुपर्छ। (८) यसरी आत्मज्ञान गर्नुपर्छ- स्वयंका अनुभवमा ल्याउनुपर्छ। वेदान्तविद्या आत्मसात् भएपछि दुःखको सर्वथा अभावपूर्वक निरतिशय आनन्दानुभूति हुन्छ र जन्म-मृत्युको चक्करबाट पार पुगिन्छ। फेरि फर्केर आउनुपर्दैन। (९) वेदान्त दर्शन वास्तवमा व्यावहारिक विज्ञान नै हो। यो केवल अध्ययन अध्यापन वा चिन्तनको मात्र विषय नभएर जीवनमा उतारेरै अनुभव गरी लाभान्वित हुने, उपकृत हुने विद्या हो, पराविद्या हो, अपरा होइन। वेदान्तबाट अनुभवानन्द हुन्छ, आत्मानन्द हुन्छ, ब्रह्मानन्द हुन्छ, शिवानन्द हुन्छ। यति भएन भने अनुवादानन्दसम्म त होला। त्यसको काम छैन।

माथि हामीले श्रुतिसापेक्ष र श्रुतिनिरपेक्ष गरी बाह्र दर्शनको सामान्य जानकारी दिएका थियौं। तीमध्ये सर्वोपरि हो अद्वैत वेदान्त दर्शन। यसलाई पनि जीवनमा, अनुभवमा ल्याएर कृतकृत्यता प्राप्त गरियो भने जीवन धन्य बन्यो। यसैमा हाम्रो कल्याण छ।

वेदमा, उपनिषद्मा, पुराणहरूमा के लेखिएको छ भनेर जान्नु ठूलो कुरा होइन। अलिकति प्रतिभा भएका संस्कृत आदि भाषाको राम्रो ज्ञान भएका विद्वान्हरूले यी शास्त्रको ज्ञान गरेका हुन्छन् र वेदमा, उपनिषद्मा, पुराणमा यसो यसो भनिएको छ, लेखिएको छ भनेर भन्न सक्छन्। तर यो नै हाम्रो लक्ष्य होइन। कारण त के भने वेदले, उपनिषद्ले, पुराणले के भन्न खोजेको हो ? यसको रहस्य के हो ? यसको सार के हो ? भनेर जान्नु महान् हो। तर त्यतिले पनि पुग्दैन, यसरी वेदादि शास्त्रले देखाएको, लेखाएको सार सर्वस्वलाई आफ्नो जीवनमा उतार्नु, अनुभवमा ल्याउनु,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आफू लाभान्वित हुनु, उपकृत हुनु नै सर्वोपरि कुरो हो।

उपनिषद्मा भनिएको छ- सत्यं वद। धर्मं चर। (तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली) सत्य बोल। धर्म गर। सत्य के हो ? धर्म के हो ? जान्नैपर्यो। अनि जानेको, बुझेको कुरा जीवनमा उतार्नुपर्यो। सत्य बोल्नुपर्यो। धर्म गर्नुपर्यो। बल्ल उपनिषद् पढेको सार भयो, नत्र बेकार भयो।

पुस्तकको वेदान्त, गुरुमा भएको वेदान्त, प्रवचनमा आएको वेदान्त, विश्वविद्यालयमा गुरुले पढाएको वेदान्त मात्रले काम दिंदैन। आफ्नो जीवनमा, अनुभवमा, दैनिक व्यवहारमा, बाँच्ने शैलीमा आत्मसात् भएको, पचेको, जिउमा लागेको वेदान्त नै व्यावहारिक विज्ञान हो। व्यावहारिक, अनुभवजन्य वेदान्त हो। जबसम्म जीवनमा उत्रँदैन, तबसम्म परोक्ष मात्र भयो। यो पनि काम लाग्छ- परीक्षामा उत्कृष्ट अङ्क प्राप्त गर्नका लागि, पुरस्कृत भएर तक्मा पाउनका लागि, जागिर खानका लागि। तर वेदान्त दर्शन यतिमा नै सीमित भएको हुँदैन।

यसको लक्ष्य, उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र, आदि प्रस्थानत्रयीले लेखाउन, देखाउन, सम्झाउन, बनाउन खोजेको यतिमात्र होइन है, होइन।

वेदान्त दर्शनले जीवनमुक्त ज्ञानीमा मात्र शोभा पाउँछ। वेदान्त दर्शन पढेको, बुझेको, लेख्न र बोल्न जानेको तथाकथित विद्वान्, पण्डित, विज्ञ, विशेषज्ञ, प्राध्यापक, डाक्टरमा मात्र सीमित छैन है। यो त यथार्थ, पारमार्थिक, जीवनमा उतारेका, ज्ञानवान्, मुक्तात्मा, वेदान्तीमा मात्र शोभायमान हुन्छ। कुरै कुराको वेदान्त दर्शन प्लास्टिकको फूलजस्तै हो, हेर्नमा त राम्रो तर न त वास्ना आउँछ, न त भ्रमरा र मौरी नै गएर बस्छन्।

माथि प्रसङ्ग आइसकेको छ। गुरु कस्तो खोज्नुपर्छ भन्दा- 'श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्' भनिएको छ। श्रोत्रियमात्र भएर पुग्दैन, ब्रह्मनिष्ठ पनि हुनैपर्छ। बरु श्रोत्रिय नभए तापनि ब्रह्ममा निष्ठा भएको त हुनैपर्छ। श्रोत्रिय पनि भए सुनमा सुगन्ध भयो। ब्रह्मनिष्ठ भनेको ब्रह्मको अपरोक्ष साक्षात्कार गरेको हो। आफू ज्ञानी भए न शिष्यलाई ज्ञानी बनाउन सक्छ। वेदान्त दर्शन त जीवनदर्शन हो, व्यावहारिक दर्शन हो। यसले जीवन बाँच्ने कला सिकाउँछ। वेदान्त पढेपछि, वेदान्त बुझेपछि विशुद्ध खाले, व्यावहारिक वेदान्ती बन्नुपर्छ। नत्र दर्शन दर्शनका लागि मात्र भयो जीवनका लागि भएन। फुटबलमा विद्यावारिधि गरेको डाक्टरसाबले फुटबलको मैदानमा उत्रेकै छैन भने लाज मर्नुभयो। गृहविज्ञानमा महाविद्यावारिधि (डीलिट) गरेकी गृहिणीलाई हलुवा पकाउन आउँदैन, जाने पनि मिठो, स्वादिलो, खाउँ-खाउँ लाग्ने हलुवा बनेन भने तिनको डीलिट बेकारै भयो, प्रमाणपत्रमा नै रह्यो, व्यवहारमा आएन, व्यावहारिक विज्ञान भएन।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतः वेदान्त दर्शन भन्नासाथै व्यावहारिक विज्ञान भनेर बुझ्नुपर्छ र यहाँ वेदान्त भन्नाले अद्वैत वेदान्त नै भन्ने बुझिन्छ। यसरी वेदान्त जीवनमा अनुभवमा आयो भने वेदान्त सफल भयो। वेदान्तीको जीवन धन्य बन्यो। शिवमस्तु।

(१) (क) आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः। (ख) श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः ज्ञात्वा च सततं ध्येय इति दर्शनहेतवः।

(२) (श्रीमद्भगवद्गीता १३।७-११)

(३) सदेर्धातोर्विशिरणगत्यवसादनार्थस्योपनिपूर्वस्य क्विप्प्रत्ययान्तस्य रूपमुपनिषद् इति। (कठोपनिषद् शाङ्करभाष्य, सम्बन्धभाष्य)

(४) परीक्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन।

(५) ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।) (जगद्गुरु शङ्कराचार्य, ब्रह्मज्ञानदलमाला २०

(६) तच्चिन्तनं तत्कथजनमन्योन्यं तत्प्रबोधनम्। एतदेकपरत्वं च ब्रह्माभ्यासं विदुर्बुधाः।।) (आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य, लघुवाक्यवृत्ति १७)

(७) मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत् त्यज। (अष्टावक्रगीता १।२)

(८) उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत (कठोपनिषद् १।३।१४)

(९) क. न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते। ख. तरति शोकमात्मवित् (छान्दोग्योपनिषद् ८।१५।१) र ७।१।३)

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अद्वैत परम्परामा श्रीशङ्कराचार्य

✍ शरदकुमार भट्टराई

वेदान्तको अत्यन्त प्रसिद्ध तथा आधिकारिक ग्रन्थ ब्रह्मसूत्रका रचयिता बादरायण हुनुहुन्छ। उहाँलाई नै पराशर मुनिका पुत्र वेदव्यास र कृष्णद्वैपायन पनि भनिन्छ। ब्रह्मसूत्र जस्तै अर्को ग्रन्थ भिक्षुसूत्र पनि त्यस समयमा प्रसिद्ध थियो। भिक्षुसूत्रका रचनाकार पाराशर्य भएको कुरा पाणिनिले आफ्ना ग्रन्थमा उल्लेख गर्नुभएको छ। यो भिक्षुसूत्र भनेको पनि ब्रह्मसूत्र नै हो र पाराशर्य भनेका वेदव्यास नै भएको कुरा विद्वान्हरूले भनेका छन्। यिनैलाई नै यहाँ बादरायण भनिएको हो।

आचार्य बादरायणले आफ्नो ग्रन्थ ब्रह्मसूत्रमा प्राचीन कालका धेरै आचार्यहरूको नाम उल्लेख गरेका छन्। ती सबै आर्षवेदान्तका आचार्यहरू थिए। आचार्य बादरीको नाम ब्रह्मसूत्रमा चारपटक आएको पाइन्छ। उनी पूर्वमीमांसा र उत्तरमीमांसाका पनि ठूला आचार्य थिए। आचार्य आश्मरथ्यको नाम ब्रह्मसूत्रमा दुई स्थानमा उल्लेख भएको छ। आचार्य आत्रेयको नाम भने ब्रह्मसूत्रमा एक पटक मात्रै आएको छ। त्यसै गरेर आचार्य काशकृत्स्नको नाम पनि ब्रह्मसूत्रमा एउटा सूत्रमा आएको देखिन्छ। त्यसै गरेर आचार्य औडुलोमिको नाम तीन पटक, आचार्य कार्ष्णाजिनिको नाम एक पटक र आचार्य जैमिनिको नाम भने सबभन्दा धेरै बाह्रपल्ट आएको देखिन्छ।

प्राचीन वेदान्तमत : प्राचीन दर्शनशास्त्रको अध्ययनबाट त्यस समयमा वेदान्तशास्त्रका ठुला-ठुला आचार्यहरू भएका देखिन्छन्। केही आचार्यहरूका बारेमा यहाँ सङ्क्षिप्त उल्लेख गर्नु सान्दर्भिक हुन्छ।

१. भर्तृप्रपञ्च : ‘आचार्य भर्तृप्रपञ्चले वेदान्तदर्शनका क्षेत्रमा उल्लेखनीय काम गरेका थिए। उनका ग्रन्थहरू हाल उपलब्ध नभएको कुरा विद्वान् अनुसन्धाताहरूका अनुसन्धानबाट थाहा हुन आएको छ। भर्तृप्रपञ्चले कठोपनिषद् र बृहदारण्यकोपनिषद्मा भाष्य लेखेका थिए। सुरेश्वराचार्य र आनन्द गिरिका समयमा भर्तृप्रपञ्चका ग्रन्थहरू उपलब्ध भएको अनुमान हुन्छ। किनभने उनीहरूले भर्तृप्रपञ्चको मतलाई उपन्यासपूर्वक खण्डन

✍ पूर्वसचिव, नेपाल सरकार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरेका छन्। सो कुरा भर्तृप्रपञ्चका ग्रन्थहरूको अभावमा हुन सक्ने थिएन। भर्तृप्रपञ्चको सिद्धान्त ज्ञानकर्मसमुच्चयवाद हो।

आद्य जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्यले आफ्नो बृहदारण्यकोपनिषद्का भाष्यमा कतिपय ठाउँमा औपनिषदम्मन्य भनेर भर्तृप्रपञ्चको उपहास गर्नुभएको छ। त्यस वेलाको दार्शनिक क्षेत्रमा भर्तृप्रपञ्चको पाण्डित्य र प्रभाव विशेष रूपमा भएको तथ्य विभिन्न प्रमाणहरूबाट प्रमाणित हुन आउँछ। त्यसै कारणले पनि हुनुपर्दछ, आचार्य श्रीशङ्कराचार्यका पट्टशिष्य सुरेश्वराचार्यले पनि भर्तृप्रपञ्चलाई आफ्नो वार्तिकमा 'सम्प्रदायवित्' र 'ब्रह्मवादी' भनेर लेखेका छन्। दार्शनिक दृष्टिले भर्तृप्रपञ्चको मत द्वैताद्वैत, भेदाभेद, अनेकान्त आदि अनेक नामहरूले प्रसिद्ध मानिन्छन्। उनको सिद्धान्तअनुसार परमार्थ एक र अनेक पनि हो। ब्रह्मरूपमा एक र जगद्रूपमा अनेक हो। यसै कारण नै एकान्ततः कर्म र ज्ञानलाई छुट्टाछुट्टै नमानेर दुवैको समुच्चयलाई मानिएको हो। यसै कारण भर्तृप्रपञ्चको मतलाई 'ज्ञानकर्मसमुच्चयवाद' भनिएको हो।

भर्तृप्रपञ्चका दृष्टिमा जीव अनेक छन् र यी परमात्माका एक देशमा मात्र रहन्छन्। विद्या, कर्म र पूर्वकर्मसंस्कार जीवमा विद्यमान रहन्छन्। अविद्या परमात्माबाट अभिव्यक्त भएर जीवमा विकार उत्पन्न गर्दछ र अनात्मस्वरूप अन्तःकरणमा धर्मभावले रहन्छ। जीव परममोक्ष प्राप्त गर्नुभन्दा पहिले हिरण्यगर्भभावमा प्राप्त हुन्छ। हिरण्यगर्भत्व मोक्षावस्था होइन तर त्यो मोक्षको पूर्वकालिक अन्तराल अवस्था मात्रै हो। यस अवस्थामा परमात्माको आभिमुख्य सधैंका लागि विद्यमान रहन्छ। काम, वासना आदि जीवका धर्म हुन्। जीवको नानात्व औपाधिक होइन। यो नानात्व धर्म र दृष्टिका भेदले मात्रै हो। ब्रह्म एक भएर पनि समुद्रतरङ्गझैं द्वैत र अद्वैत ऊ दुवै हो। जसरी अद्वैतभाव सत्य हो र त्यसै गरेर द्वैतभाव पनि सत्य हो। द्वैतभावको सत्ताबाट कर्मकाण्डको प्रामाण्य स्वीकार गर्नुपर्ने देखिन्छ। कार्यकारणभाव कल्पित नभएर सत्य हो। मुमुक्षु र मुक्त पुरुषको आत्मदर्शन एकै प्रकारको हुँदैन।

भर्तृप्रपञ्चले प्रथम दर्शनलाई परिच्छिन्न परमात्मदर्शन भनेका छन्। परिच्छेदक विज्ञान नै अविद्या हो। 'अहमेव इदं सर्वम्' इत्याकरक अर्थबोध परमात्मामा सधैं विद्यमान छ तर तिरस्कृतविज्ञान सांसारिक आत्मामा यस प्रकारको बोध अनित्य हो। अविद्याका सम्बन्धबाट परमात्मा नै हिरण्यगर्भमा परिणत हुन्छ। हिरण्यगर्भ सर्वत्र व्यापक छ। हिरण्यगर्भ जगदात्मा हो। हिरण्यगर्भसँगको आसत्तिको सम्बन्धबाट जीवभाव विकास हुन्छ। असङ्ग र वासना अन्तःकरणका धर्म हुन्। यही नै जीवमा सङ्क्रान्त भएर जीवधर्म बन्दछ। जीव नै कर्ता, भोक्ता र ज्ञाता हो। भर्तृप्रपञ्चका दृष्टिमा जीव ब्रह्मको परिणामस्वरूप हो। यिनका मतमा इन्द्रियहरू भौतिक हुन्। आहङ्कारिक होइनन्। मोक्ष दुई प्रकारका छन्। १. अपरमोक्ष अथवा अपवर्ग। २. परामुक्ति वा ब्रह्मभावापत्ति। यसै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देहमा ब्रह्मसाक्षात्कार भयो भने प्रथमकोटिको मोक्ष आविर्भूत हुन्छ। यो जीवन्मुक्तिजस्तै हो। यसैलाई अपवर्ग भनिन्छ। वस्तुतः आसङ्गत्यागनिमित्तक संसारनिवृत्तिमात्रै हो। देहपात नभईकन ब्रह्ममा लय हुन सकिँदैन तर देहपात भएपछि दोस्रो परमोक्षको उदय हुन्छ। यही नै ब्रह्ममा जीवको लय अथवा जीवको ब्रह्मभावापत्ति हो। यस अवस्थाको आविर्भाव अविद्यानिवृत्तिबाट हुन्छ।

उपर्युक्तअनुसार ब्रह्मसाक्षात्कार भएर पनि अविद्या पूर्णतया निवृत्त हुँदैन भन्ने भर्तृप्रपञ्चको मत देखिन्छ। अविद्यानिवृत्तिका साथसाथै जीवको ब्रह्मभावको उपलब्धिको प्रतिबन्धकरूपमा रहेको शरीर छुटेपछि मात्रै परा मुक्ति प्राप्त हुन्छ।

परमात्मा अथवा परब्रह्म नित्य पदार्थ हो। परब्रह्ममा सबै कुरा अव्यक्तरूपमा रहन्छन्। ब्रह्मको परिणाम तीन प्रकारले हुन्छ १. अन्तर्यामी तथा जीवनरूपी, २. अव्याकृत, सूत्र, विराट् र देवतारूपमा र ३. जाति तथा पिण्डरूपमा। यसलाई प्रकारान्तरले तीन भागमा विभाजन गरिएको छ। १. परमात्मराशि, २. जीवराशि र ३. मूर्तामूर्तराशि। वास्तवमा भर्तृप्रपञ्च प्रमाणसमुच्चयवादी थिए। उनी लौकिक प्रमाण र वैदिक प्रमाण दुवैलाई सत्य मान्दथे। उनले लौकिक प्रमाणगम्य भेद र वेदगम्य अभेदलाई सत्य मानेका छन्। त्यसै कारण भर्तृप्रपञ्चका मतमा केवल कर्म र केवल ज्ञान मोक्षका साधन हुन सक्तैनन्। मोक्षप्राप्तिका लागि ज्ञानकर्मसमुच्चय नै उत्कृष्ट साधन हो। यसै भएर नै उनलाई समुच्चयवादी भनिएको हो।

२. भर्तृहरि : 'भर्तृहरि पनि ठुला वेदान्ती थिए। उनले लेखेका भिन्नै वेदान्तसम्बन्धी ग्रन्थहरू उपलब्ध नभए तापनि उनको वाक्यपदीय व्याकरणविषयक ग्रन्थ नै प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रन्थ हो र उनका शतकहरूमध्ये वैराग्यशतक वेदान्तपरक ग्रन्थ हो।

३. उपवर्ष : 'आचार्य श्रीशङ्कराचार्यले ब्रह्मसूत्रको भाष्यमा कहींकहीं प्राचीन वृत्तिकार उपवर्षको मत उल्लेख गर्नुभएको छ। वृत्तिकार उपवर्षले पूर्वमीमांसा र उत्तरमीमांसा दुवैमा वृत्ति लेखेका थिए। उनको नाम शाबरभाष्यमा पनि उल्लेख भएको पाइन्छ। आचार्य उपवर्ष शबरस्वामीभन्दा प्राचीन भएको यसैबाट पनि थाहा हुन्छ।

४. बोधायन : 'आचार्य बोधायनले ब्रह्मसूत्रमा वृत्ति लेखेका थिए। यस वृत्तिका केही वाक्यहरूलाई आचार्य रामानुजले आफ्ना भाष्यमा उद्धरण गरेका छन्। आचार्य बोधायनले 'कृतकोटि' नामक वेदान्तवृत्ति पनि लेखेका थिए।

५. ब्रह्मनन्दी : 'प्राचीन कालमा एक जना वेदान्ताचार्य ब्रह्मनन्दीका नामबाट आविर्भूत भएका थिए। यिनको सिद्धान्त स्वामी मधुसूदन सरस्वतीले सङ्क्षेपशारीरकको आफ्नो टीकामा उल्लेख गरेका छन्।

६. ब्रह्मदत्त : 'श्रीशङ्कराचार्यभन्दा पहिले एक जना अत्यन्त प्रसिद्ध वेदान्ती आचार्य ब्रह्मदत्त थिए। यिनले पनि वेदान्तसूत्रमा भाष्य लेखेका थिए। यिनले जीवलाई अनित्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र ब्रह्मलाई नित्य भनेर लेखेका छन्। यिनका मतका बारेमा धेरै जना आचार्यहरूले टीकाटिप्पणी गरेका हुँदा पनि आचार्य ब्रह्मदत्त वेदान्तका ठुला विद्वान् थिए भनेर अनुमान गर्न सकिन्छ।

७. भारुचिः'आचार्य भारुचिका बारेमा आचार्य रामानुजले उनको ग्रन्थ वेदार्थसङ्ग्रहमा उल्लेख गरेका छन्। भारुचिको नाम अत्यन्त आदरका साथ आचार्य रामानुजले उल्लेख गरेका हुँदा यिनी निर्विशेष ब्रह्मवादी थिएनन् भन्न सकिन्छ।

८. द्रविडाचार्य ः 'द्रविडाचार्य प्राचीन वेदान्ती थिए। यिनले छान्दोग्योपनिषद्मा अतिबृहत् भाष्य लेखेका थिए। बृहदारण्यकोपनिषद्मा पनि यिनको भाष्य भएको प्रमाण पाइन्छ। यिनको नाम श्रीशङ्कराचार्यले आफ्नो माण्डूक्योपनिषद्का भाष्यमा आगमवित् र बृहदारण्यकोपनिषद्को भाष्यमा सम्प्रदायवित् भनेर उल्लेख गर्नुभएको छ। यसबाट पनि द्रविडाचार्य वेदान्तविषयका ठुला विद्वान् भएको प्रमाणित हुन आउँछ।

९. सुन्दरपाण्ड्य ः 'श्रीशङ्कराचार्यभन्दा पहिले यिनले एउटा कारिकाबद्ध वार्तिकको रचना गरेका थिए। यो वार्तिक ब्रह्मसूत्रको कुनै प्राचीन भाष्य अथवा वृत्तिका आधारमा लेखिएको थियो, तर कसको भाष्य वा वृत्तिका आधारमा उनले वार्तिक लेखेका थिए, सो कुरा निश्चितरूपमा भन्न सकिने देखिँदैन। यिनका वार्तिकका तीन श्लोकहरू श्रीशङ्कराचार्यले ब्रह्मसूत्र समन्वयाधिकरणको भाष्यको अन्त्यमा 'अपि चाऽऽहुः' भनेर उद्धृत गर्नुभएको छ। यसबाट पनि यी श्रीशङ्कराचार्यभन्दा पहिलेका प्रसिद्ध आचार्य रहेछन् भन्न सकिन्छ। यीबाहेक अरू आचार्यहरू पनि यस परम्परामा देखिन्छन्।

श्रीबादरायणद्वारा रचित ब्रह्मसूत्रमा धेरै थरी आचार्यहरूले धेरै थरी भाष्यहरू लेखेका छन्। ती भाष्यहरूमा भगवान् श्रीशङ्कराचार्यले लेख्नुभएको भाष्यले नै विशेष ख्याति प्राप्त गरेको छ। श्रीशङ्कराचार्यभन्दा पछिका आचार्यहरूले पनि विभिन्न पक्षको अवलम्बन गरेर वेदान्तसूत्रमा आ-आफ्नो मतको अनुकूल हुने गरेर भाष्यको रचना गरेका थिए। अर्वाचीन समयका आचार्यहरूमा भास्कराचार्य, यादवप्रकाश, रामानुज, श्रीकण्ठ, निम्बार्क, मध्व, वल्लभ आदि मुख्यरूपमा देखिन्छन्।

आद्य जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्य आउनुभन्दा पहिले बौद्ध आदि नास्तिक र अरू केही आस्तिक सम्प्रदायहरूको विस्तारबाट अद्वैतवेदान्तका प्राचीन ग्रन्थहरू र सम्प्रदायहरूसमेत विच्छिन्न हुन लागेका थिए। त्यस वेला आचार्य शङ्करले गर्नुभएको भाष्यरचनाको मुख्य प्रयोजन प्राचीन ग्रन्थहरूको र सम्प्रदायको पुनरुद्धारका साथै वैदिक धर्मको पुनरुज्जीवनका लागि नै हो भन्ने देखिन्छ। तर्कपादमा जुन जुन सम्प्रदायहरूको खण्डन गरिएको छ, ती पूर्णतः वा केही अंशमा अवैदिक हुन्। ती सबै मतहरूको प्रादुर्भाव त्योभन्दा पहिले नै भइसकेको देखिन्छ। तात्कालिक वैदिक सम्प्रदायले बौद्ध, जैन, पाशुपत, पाञ्चरात्र, साङ्ख्य, योग, न्याय, वैशेषिक आदि सबै मतहरूलाई वैदिक सिद्धान्तका रूपमा ग्रहण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरेको थिएन। यी सम्प्रदायहरूको उदयपछि वैदिक मत बिस्तारै म्लान हुँदै गएको थियो। त्यसै कारण त्यस समयमा वैदिक सिद्धान्तलाई पुनःस्थापित गर्नु अत्यावश्यक भइसकेको थियो।

श्रीशङ्कराचार्यको गुरुपरम्परा : 'श्रीशङ्कराचार्यका गुरुको नाम गोविन्दपाद थियो र उहाँका गुरुको नाम गौडपादाचार्य थियो। गौडपादाचार्यसम्मको गुरूपरम्परा ऐतिहासिक कालअन्तर्गत मान्न सकिने देखिन्छ भने त्योभन्दा माथिको गुरूपरम्परामा भने विद्वान्हरूका बिचमा मतभेद देखिन्छ।

श्रीशङ्कराचार्यका गुरु गोविन्द भगवत्पादले कुनै पनि वेदान्तसम्बन्धी ग्रन्थको रचना गरेको पाइँदैन। रसहृदय नामक एउटा ग्रन्थ गोविन्द भगवत्पादका नामबाट प्रकाशन भएको पाइन्छ। त्यो ग्रन्थ वेदान्तसम्बन्धी नभएर रसायनशास्त्रसम्बन्धी थियो। गुरु गोविन्दपाद नर्मदा नदीका तटमा बस्नुहुन्थ्यो। उहाँ महायोगी हुनुहुन्थ्यो। उहाँको शरीर रसक्रियाबाट सिद्ध थियो भन्ने भनाइ विद्वन्मण्डलीमा चर्चित थियो र अहिलेसम्म पनि चर्चित छ। उहाँको देह एक हजार वर्षसम्म रहेको थियो र उहाँ अन्तिमसम्म पनि १६ वर्षको जस्तो देखिनुहुन्थ्यो भन्ने पनि भनाइ छ। यसबारेमा तथ्य प्रमाण भने पाइँदैन। भगवत्पाद श्रीशङ्कराचार्यले गुरु गोविन्दपादबाट नै सन्न्यास लिनुभएको थियो।

भगवान् श्रीशङ्कराचार्यको समयका बारेमा मतैक्य देखिँदैन। विभिन्न मत भए पनि आविर्भाव भएको मिति वि.सं. ८४५ तदनुसार सन् ७८८ र तिरोभाव मिति वि.सं. ८७७ तदनुसार सन् ८२० लाई मानिएको छ। उहाँका पिताको नाम श्रीशिव गुरु र आमाको नाम विशिष्टा थियो।

श्रीशङ्कराचार्यले कुन कुन ग्रन्थहरूको रचना गर्नुभएको थियो सो कुरा यकिन गरेर भन्न कठिन छ। श्रीशङ्कराचार्यद्वारा रचित ग्रन्थहरूको सूची २०० जतिको देखिन्छ। यिनमा प्रकरणग्रन्थ, भाष्य, थरी थरीका स्तोत्रहरू र अन्य रचनाहरू पनि समाविष्ट छन्।

आचार्य शङ्करका परम्परामा शङ्कराचार्य नाम भएका आचार्यहहरू धेरै हुन्थे। आदि शङ्कराचार्यद्वारा स्थापित मठहरूमा जति पनि आचार्यहरू नियुक्त हुन्थे ती सबैको नाम पनि शङ्कराचार्य नै हुन्थ्यो र अहिलेसम्म पनि सो परम्परा चलिरहेकै छ। केही उपनिषद्हरूमा, गीतामा र ब्रह्मसूत्रमा उहाँले भाष्यहरूको रचना गर्नुभएको थियो। जसलाई प्रस्थानत्रयी पनि भनिन्छ। गौडपादाचार्यकृत माण्डूक्यकारिकामा पनि उहाँले भाष्य लेख्नुभएको थियो। विष्णुसहस्रनाम र सनत्सुजातमा पनि उहाँको भाष्य छ। शङ्कराचार्यको गायत्रीभाष्य पनि प्रसिद्धै छ। मण्डलब्राह्मणोपनिषद् पनि आद्य शङ्कराचार्यको हो भनेर मानिन्छ। यिनका अतिरिक्त विवेकचूडामणि, सर्ववेदान्तसिद्धान्तसङ्ग्रह, उपदेशसाहस्रीसमेत आदि शङ्करका नै रचना हुन्। यसमा विवेकचूडामणिलाई उहाँको रचना होइन पनि भनिन्छ। त्यसै गरेर प्रपञ्चसार, सौन्दर्यलहरी, सर्वसिद्धान्तसङ्ग्रह आदि ग्रन्थहरू पनि शङ्करका रचनाहरू हुन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपर्युल्लिखित ग्रन्थहरूका अतिरिक्त ससाना कृतिहरू पनि शङ्करका नामबाट प्रकाशित भएका छन्। तिनमा मुख्य गरेर एकश्लोकी, कौपीनपञ्चक, अद्वैतपञ्चरत्न, आत्मबोध, अद्वैतानुभूति, अद्वैतरसमञ्जरी, अपरोक्षानुभूति, निर्वाणषट्क, पञ्चरत्न, निरञ्जनाष्टक, स्वात्मप्रकाशिका, आर्यापञ्चक, विज्ञाननौका, अनात्मश्रीविगर्हणप्रकरण, जीवन्मुक्तानन्दलहरी, गुर्वष्टक, केवलोऽहम्, परापूजा, चर्पटपञ्जरिका या मोहमुद्गर, निर्गुणमानसपूजा, प्रौढानुभूति, तत्त्वोपदेश, प्रश्नोत्तररत्नमालिका, ब्रह्मनामावलीमाला अथवा ब्रह्मज्ञानावलीमाला, निर्वाणमञ्जरी, प्रातःस्मरणस्तोत्र, धन्याष्टक, मणिरत्नमाला, मठाम्नाय, ब्रह्मानुचिन्तन अथवा आत्मानुचिन्तन, मनीषापञ्चक, सदाचार, सहजाष्टक, स्वात्मनिरूपण अथवा आत्मबोध, दशश्लोकी अथवा निर्वाणदशक, सारतत्त्वोपदेश, वेदवेदान्ततत्त्वसार, वाक्यवृत्ति, योगतारावली, लघुवाक्यवृत्ति, ज्ञानसन्न्यास, बालबोधिनी, चिदानन्दात्मकस्तोत्र, महावाक्यमन्त्र, महावाक्यविवरण अथवा महावाक्यदर्पण, महावाक्यविवेक, अष्टश्लोकी, द्वादशमहावाक्य-विवरण, पञ्चीकरणप्रकरण, आत्मानात्मविवेक।

त्यसै गरेर आद्य शङ्कराचार्यका रचनाहरू अरू पनि छन्- प्रबोधसुधाकर, दक्षिणामूर्तिस्तोत्र, वाक्यसुधा, परमहंससन्ध्योपासन, गायत्रीपद्धति, अज्ञानबोधिनी, त्रिपुटीप्रकरण, दक्षनामाभिधान, सर्ववेदान्तसिद्धान्तसङ्ग्रह, केरलाचारसङ्ग्रह, सामवेदमन्त्रभाष्य, वज्रसूच्युपनिषत्सार, हरितत्त्वमुक्तावली, जीवब्रह्मैक्यस्तोत्र, मायापञ्चक, ज्ञानगङ्गाशतक, मायापञ्चक, शतश्लोकी, सन्न्यासपद्धति, सर्वसिद्धान्तसङ्ग्रह, नवरत्नमाला सर्वप्रत्ययमाला, मन्त्रार्णवस्तुति, मन्त्रमात्रिका पुष्पमाला, अवधूतषट्क, ज्ञानगीता सिद्धान्तपञ्जर।

उपर्युक्त ग्रन्थहरू र रचनाहरूका अतिरिक्त विभिन्न देवदेवीहरूका स्तुतिपद्यहरू पनि प्रशस्त देखिन्छन्। तीमध्ये केही स्तोत्रहरू आदि शङ्कराचार्यका नाममा परवर्ती शङ्करहरूले लेखेका हुन सक्तछन्। यिनको अझै अनुसन्धान र विश्लेषण हुनुपर्दछ भन्ने विद्वान्हरूको भनाइ भएको पाइन्छ।

विभिन्न देवीदेवताका स्तोत्रहरूमा श्रीशिवस्तोत्रहरू १२, श्रीशक्तिस्तोत्रहरू २७, श्रीविष्णुस्तोत्रहरू २२, श्रीगणेशस्तोत्रहरू ४, युगलदेवतास्तोत्रहरू ६, नदी र तीर्थविषयक स्तोत्रहरू ९, साधारण स्तोत्रहरू १० समेत छन्। यी स्तोत्रहरूसमेत गरेर आद्य शङ्कराचार्यका रचनाहरू २०० भएको कुरा महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराजले ब्रह्मसूत्रको भूमिकामा लेख्नुभएको देखिन्छ, तर माथि उल्लेख भएका र अहिलेसम्म प्राप्त भएका रचनाहरू केवल १६६ मात्रै देखिन्छन्।

आद्य शङ्कराचार्यका शिष्यहरू : ‘श्रीशङ्कराचार्यका प्रमुख शिष्यहरूमा पद्मपाद, हस्तामलक, त्रोटकाचार्य र सुरेश्वराचार्य थिए। यो कुरा गुरूपरम्परामा उल्लेख भएको पनि पाइन्छ। जस्तै-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिञ्च तत्पुत्रपराशरञ्च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।।
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादञ्च हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरुन्सन्ततमानतोऽस्मि।।

श्रीशङ्कराचार्य लोकोत्तर बुद्धिसम्पन्न हुनुहुन्थ्यो भने उहाँका शिष्यहरूमध्ये सुरेश्वराचार्य र पद्मपादाचार्य पनि केही अंशमा उस्तै बुद्धिसम्पन्न थिए। हस्तामलकाचार्य र त्रोटकाचार्यका बारेमा विशेष केही थाहा हुन सकेको छैन। सुरेश्वराचार्यले नैष्कर्म्यसिद्धि, तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यवार्तिक, बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्त्तिक, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रवार्त्तिक अथवा मानसोल्लास, पञ्चीकरणवार्त्तिक, काशीमृतिमोक्षविचार आदि ग्रन्थहरूको रचना गरेका थिए। वेदान्तशास्त्रका इतिहासमा वार्त्तिककार पदले केवल सुरेश्वराचार्यलाई मात्रै जनाउँछ। सुरेश्वराचार्य केवल वेदान्तीमात्र नभएर धर्मशास्त्रमा पनि उनको अगाध ज्ञान थियो।

सुरेश्वराचार्यको गृहस्थाश्रमको नाम मण्डन मिश्र थियो। सन्न्यास लिनुभन्दा पहिले उनी कुमारिल भट्टका शिष्य थिए। उनी पहिले कर्मवादी मीमांसक थिए। श्रीशङ्कराचार्यसँग शास्त्रार्थमा पराजित भएपछि उनले श्रीशङ्कराचार्यसँग सन्न्यास लिएका थिए। त्यसपछि उनको नाम सुरेश्वराचार्य राखिएको थियो। उनले सन्न्यास लिनुभन्दा पहिले मण्डन मिश्रका नामबाट पनि ग्रन्थहरू लेखेका थिए। कतिपय विद्वान्हरू सुरेश्वराचार्य र मण्डन मिश्र एकै व्यक्ति भएको कुरामा एकमत छैनन्। मठाम्नायकाअनुसार सुरेश्वराचार्य द्वारका-मठका प्रथम अधिष्ठाता थिए।

श्रीशङ्कराचार्यका अर्का शिष्य पद्मपादाचार्य थिए। सन्न्यास लिनुअघिको उनको नाम सनन्दन थियो। उनले श्रीशङ्कराचार्यको ब्रह्मसूत्रभाष्यको प्रथमांशलाई पञ्चपादिकाका नामबाट व्याख्या गरेका थिए। यो पञ्चपादिका अद्वैतवेदान्तमा अत्यन्त प्रसिद्ध छ। प्रकाशात्मयतिले यस पञ्चपादिकामा विवरण नाम गरेको व्याख्या लेखेका थिए। यस पञ्चपादिका-विवरणमाथि माधवाचार्यको विवरणप्रमेयसङ्ग्रह र अखण्डानन्दको तत्त्वदीपननामक प्रसिद्ध व्याख्यानग्रन्थ पनि प्रकाशित भएका छन्। वेदान्तमा विवरणप्रस्थानको मूल आधार नै पञ्चपादिका हो।

पद्मपादाचार्यले अर्को एउटा विज्ञानदीपिका नामक ग्रन्थ पनि लेखेका थिए। उक्त ग्रन्थ नेपालको पुरातत्त्वसङ्ग्रहालयमा सुरक्षित छ। यस ग्रन्थमा खास गरेर कर्मको विचार र कर्मनिवृत्तिको उपायका बारेमा उल्लेख भएको छ।

मठाम्नायकाअनुसार पद्मपादाचार्य पुरीस्थ गोवर्द्धनमठका प्रथम अधिष्ठाता थिए। पद्मपादाचार्य काश्यपगोत्रीय ऋग्वेदी ब्राह्मण थिए। यो कुरा मठाम्नायमा संस्कृत भाषामा श्लोकबद्ध गरेर लेखेको पाइन्छ। जस्तै :

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोवर्द्धनमठे रम्ये विमलापीठसंज्ञके।पूर्वाम्नाये भोगवारे श्रीमत्काश्यपगोत्रजः।।
माधवस्य सुतः श्रीमान् सनन्दन इति श्रुतः।प्रकाशब्रह्मचारी च ऋग्वेदी सर्वशास्त्रवित्।
श्रीपद्मपादः प्रथमाचार्यत्वेनाभ्यषिच्यत।।

श्रीशङ्कराचार्यका अर्का शिष्य त्रोटकाचार्य अथवा तोटकाचार्य हुन्। यिनलाई कसैकसैले प्रसिद्ध विद्वान् तथा टीकाकार आनन्द गिरि हुन् भनेर पनि भनेका छन्। कुनै एक लेखकले वन्दना गर्दै लेखेका पनि छन् ' 'तोटकं चानन्दगिरिं प्रणमामि जगद्गुरुम्।' तर यस कुरालाई विश्वास गर्ने आधार भने खास पाइँदैन। किनभने आनन्दगिरि त्रोटकाचार्यभन्दा धेरै पछिका थिए। त्रोटकाचार्यले कुन कुन ग्रन्थ लेखेका थिए भन्ने सम्बन्धमा केही कुरा थाहा हुन सकेको छैन। उनले कुनै नाम चलेका ग्रन्थ लेखेका थिएनन्। यिनका सम्बन्धमा खाली तोटककालनिर्णय, तोटकव्याख्या, तोटकश्लोक, श्रुतिसार-समुद्धरण आदिको उल्लेख भएको पाइन्छ।

श्रीशङ्कराचार्यका अर्का शिष्य हस्तामलक थिए। उनैलाई पृथ्वीधराचार्य पनि भनिन्छ। हस्तामलकका नामसँग सम्बद्ध हस्तामलकस्तोत्र प्रसिद्ध छ। जसमा बाह्र श्लोकहरू निबद्ध छन्। त्यसमा श्रीशङ्कराचार्यले भाष्य लेख्नुभएको छ। यस सम्बन्धमा मतमतान्तरहरू पाइन्छन्। हुन सक्तछ, श्रीशङ्कराचार्यका रचनामा हस्तामलकाचार्यले भाष्य लेखेका थिए अथवा दुवै श्रीशङ्कराचार्यका नै थिए। निश्चितरूपमा भन्न सकिने देखिँदैन। मठाम्नायकाअनुसार हस्तामलकाचार्य शृङ्गेरीमठका प्रथम मठाधीश थिए। यो कुरो पनि निर्विवाद पाइँदैन।

श्रीशङ्कराचार्यले सनातन वैदिक धर्मको पुनः संस्थापनामा ठुलो देन दिनुभएको छ। दक्षिणपूर्वी एसियामा पहिलेदेखि नै सनातन वैदिक धर्मको प्राबल्य रहेको थियो। नास्तिक तथा अवैदिक र विदेशी विधर्मीहरूको हमलाले गर्दा शङ्कराचार्यको प्रादुर्भाव हुनुभन्दा पहिलेदेखि नै यस धर्ममा विचलन आउन थालेको थियो। त्यस समयमा यस धर्मको उद्धार गर्न शङ्कराचार्यका साथसाथै कुमारिल भट्ट र मण्डनमिश्रजस्ता अरू उद्भट विद्वान्हरूको पनि भारतवर्षमा प्रादुर्भाव भएको थियो। ओरालो लाग्न लागेको सनातन वैदिक धर्म मुख्य रूपमा आदिशङ्करबाट नै पुनःस्थापित भएको हो। हिन्दुधर्मभित्रै भारतवर्षमा त्यस समयमा देखा परेका विभिन्न मतमतान्तर र विवादहरूलाई साम्य पारेर शङ्कराचार्यले विभिन्न सम्प्रदायका बिचमा एकताको सूत्र स्थापित गर्नुभएको थियो। यद्यपि वैष्णव, शैव, शाक्त, तान्त्रिक, वाममार्गी-लगायतका सम्प्रदायहरू उहाँको अद्वैत सिद्धान्तको विरोधमा थिए र अहिलेसम्म पनि त्यो विरोध छँदैछ। तथापि शङ्कराचार्यद्वारा संस्थापित अद्वैतवेदान्तको प्रचार, प्रसार र प्रभाव आज भारतीय उपमहाद्वीपमा मात्र सीमित नभएर संसारभरि फैलन सफल भएको छ। जीवनको र असार संसारको समेत अन्तिम सम्बल आज यही अद्वैत सिद्धान्त नै हुन गएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपर्युक्तअनुसार वैदिक धर्मको संरक्षण गर्ने क्रममा श्रीशङ्कराचार्यले गृहत्यागीलाई सन्न्यासको र गृहस्थहरूलाई वर्णाश्रम धर्मको पनि यथोचित पुनर्व्यवस्था गर्नुभएको थियो। यसका लागि विभिन्न कालजयी ग्रन्थहरूको प्रणयन गर्नुका साथै भारतीय उपमहाद्वीपका चार कोणमा चार आम्नाय मठहरूको स्थापना गर्नुभयो। आफ्नो नामधारी उत्तराधिकारीहरूलाई अद्वैत वेदान्तको प्रचार र धर्मसंरक्षणका लागि समेत ती मठहरूमा स्थापना पनि गर्नुभयो। ती चारै मठहरूको सीमा, कार्यक्षेत्र, अधिकार र कर्तव्यसमेतको निर्धारण गर्नुका साथै आचार-संहितासमेत तयार गरेर शङ्कराचार्यले सबै मठाधीशहरूलाई यथासमय तत्कालै दिनुभयो। त्यसरी निर्धारण गरिएका मठ र क्षेत्रहरूसमेत निम्नअनुसार छन् :

१.भारतवर्षको पूर्वपट्टिको मठको नाम गोवर्द्ध हो। यसलाई पूर्वाम्नाय भनिन्छ। त्यसको सम्प्रदाय भोगवार हो। पद अरण्य र वन हो। क्षेत्र पुरुषोत्तम हो र देवता जगन्नाथ हुन्। देवी विमला हुन् र प्रथम आचार्य पद्मपाद हुन्। तीर्थचाहिँ महोदधि हो। त्यहाँका ब्रह्मचारी प्रकाश हुन् र वेद ऋक् हो। महावाक्य प्रज्ञानं ब्रह्म हो र गोत्र काश्यप हो। यस मठअन्तर्गत अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्ग, उत्कल, बर्बर आदि देशहरू पर्दछन्।

२.भारतवर्षको दक्षिण दिशामा दक्षिणाम्नायका रूपमा शृङ्गेरी नाम गरेको मठको स्थापना गरियो। त्यसका सम्प्रदाय भूरिवार र पद भने सरस्वती, भारती र पुरी हुन्। त्यसको क्षेत्र रामेश्वर हो र आदिवराह देवता हुन्। देवी कामाक्षी हुन् भने प्रथम आचार्य हस्तामलक अथवा पृथ्वीधर हुन्। तुङ्गभद्रा तीर्थ हो र चैतन्य ब्रह्मचारी थिए। वेदमा यजुः हो र महावाक्यमा अहं ब्रह्मास्मि हो। गोत्र भूर्भुवः हो भने शासनाधीन देशहरूमा आन्ध्र, द्रविड, केरल, कर्णाटक आदि हुन्।

३.भारतवर्षको पश्चिमपट्टिको मठको नाम शारदा हो। त्यसलाई पश्चिमाम्नाय भनिन्छ। यसको सम्प्रदायलाई कोटवार भनिन्छ। पदलाई तीर्थ र आश्रम भनिन्छ। क्षेत्र द्वारका हो र देवता सिद्धेश्वर हुन्। देवी भद्रकाली हुन् र प्रथम आचार्य सुरेश्वराचार्य अथवा विश्वरूप हुन्। तीर्थ गोमती हो र ब्रह्मचारी स्वरूप हुन्। वेद सामवेद हो र महावाक्य तत्त्वमसि हो। गोत्र अविगत हो भने शासनाधीन देशहरू सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र आदि पर्दछन्।

४.भारतवर्षको उत्तरपट्टिको मठ ज्योतिर्मठ हो। यसलाई उत्तराम्नाय भनिन्छ। यसको सम्प्रदाय आनन्दवार हो। पद गिरि, पर्वत र सागर हो। क्षेत्र बदरिकाश्रम हो। देवता नारायण हुन् र देवी पूर्णगिरि हुन्। आचार्य त्रोटक हुन् भने तीर्थ अलकानन्दा हो। ब्रह्मचारी आनन्द हुन् र वेद अथर्व हो। महावाक्य अयमात्मा ब्रह्म हो भने गोत्र भृगु हो। यस मठअन्तर्गतका शासनाधीन देशहरूमा कुरु, काश्मीर, पाञ्चाल, कम्बोज आदि देशहरू पर्दछन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपर्युक्त चार मठहरूका अतिरिक्त श्रीशङ्कराचार्यले काशीस्थित मठमा महेश्वर नाम गरेका शिष्यलाई मठाधीशमा नियुक्त गर्नुभएको थियो। आफू बस्नका लागि उहाँले काञ्चीकामकोटिपीठमा स्थान बनाउनुभएको थियो। काञ्चीको कामाक्षीदेवीका मन्दिरमा नै उहाँलाई सिद्धि प्राप्त भएको थियो भन्ने प्रसिद्धि पनि छ। त्यहीं नै आचार्य शङ्करको पाषाणमयी मूर्तिस्थापना गरेको पाइन्छ।

श्रीशङ्कराचार्यका हाल प्रचलित गुरु र शिष्यहरूको परम्पराअनुसार गौडपादाचार्यका प्रशिष्यमा श्रीशङ्कर पर्नुहुन्छ। श्रीविद्यार्णवका अनुसार गौडपादाचार्य र श्रीशङ्करका बिचमा अरू पाँच जना गुरुहरूका नाम देखिन्छन्। तिनमा गौडपादका शिष्य पावक, उनका शिष्य पराचार्य, उनका शिष्य सत्यनिधि, उनका शिष्य रामचन्द्र, उनका शिष्य गोविन्दपाद र उनका शिष्य श्रीशङ्कराचार्य भएका पाइन्छन्।

त्यसै गरेर गौडपादाचार्यलाई श्रीशुकदेवका साक्षात् शिष्य नमानेर यी दुई जनाका बिचमा लामो अन्तराल देखाइएको छ। तर पनि गौडपादाचार्यले सम्भवतः कुनै अलौकिक उपायद्वारा श्रीशुकदेवका साथ शिष्यत्व ग्रहण गरेको अनुमान यस ग्रन्थमा गरिएको छ। तर पनि यस कथनलाई सबैले सहजै स्वीकार गरेका छैनन्। त्यतिमात्रै नभएर शक्ति र पराशरका बिचमा पनि ठुलो अन्तर देखाइएको छ। त्यसै गरेर पराशरपछि व्यासको नाम नभएर श्रीशुकदेवको नाम देखिन्छ। व्यासको नाम भने श्रीशुकदेवका चार शिष्यहरूपछि मात्रै देखिन्छ।

उक्त ग्रन्थका अनुसार श्रीशङ्कराचार्यका शिष्यहरूका नाममा पनि पूर्णतः अन्तर देखिन्छ। त्यस विवरणमा १४ जना शिष्यहरूको नामावली दिएको देखिन्छ। ती सबै शिष्यहरू देवीका उपासक भएका र उनीहरूमा अलौकिक शक्ति भएको कुरा पनि उक्त ग्रन्थमा वर्णन गरेको पाइन्छ। ती १४ जना शिष्यहरूमध्ये ५ जना सन्न्यासी र अरू ९ जना गृहस्थ थिए भन्ने पनि त्यसमा उल्लेख छ। ५ जना सन्न्यासी शिष्यहरूमा पद्मपाद, बोध, गीर्वाण, आनन्दतीर्थ र अर्का पाँचौं शिष्य गुरुकै नाम भएका शङ्कर नै थिए। त्यसै गरेर गृहस्थ शिष्यहरूमा सुन्दर, विष्णु शर्मा, लक्ष्मण, मल्लिकार्जुन, त्रिविक्रम, श्रीधर, कपर्दी, केशव र दामोदर थिए।

यसरी अद्वैत वेदान्तमा अनादि कालदेखि नै सम्प्रदाय र गुरूपरम्परा साथसाथै अक्षुण्णरूपमा चलेको देखिन्छ। किन्तु लामो कालक्रमको अन्तरालमा गुरूपरम्परा भने टुट्तै र पुनः जोडिँदै गरेको वस्तुतथ्य शास्त्रहरूको अध्ययनबाट थाहा हुन्छ। उदाहरणका लागि महाभारतअन्तर्गत भीष्मपर्वमा आएको श्रीमद्भगवद्गीताको अध्याय चारको प्रथम श्लोकदेखि आठौं श्लोकसम्मको भगवदुक्तिबाट यो कुरा स्पष्ट हुन्छ। किन्तु सम्प्रदायपरम्परा भने सामान्यतया चलेको नै देखिन्छ।

श्रीशङ्कराचार्यको समय र त्योभन्दा पहिलेको दार्शनिक परिस्थिति :‘ श्रीबादरायणद्वारा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचित ब्रह्मसूत्र र श्रीशङ्कराचार्यद्वारा त्यस ब्रह्मसूत्रमा भाष्य लेख्ताको समयका बिचमा लामो समयको अन्तराल परेको देखिन्छ। त्यस बिचमा भारतवर्षमा विभिन्न प्रकारका धर्म तथा तत्सम्बन्धी दार्शनिक मतवादको प्रचार भएको थियो। तीमध्ये धेरैजसो अवैदिक नै थिए। श्रीशङ्कराचार्यले वैशेषिक, साङ्ख्य र योगदर्शनलाई पनि एक किसिमले वेदबाह्य नै मान्नुभएको छ। यीबाहेक जैन, बौद्ध, पाञ्चरात्र र पाशुपत दर्शनहरू पनि श्रीशङ्करका दृष्टिमा अवैदिक नै थिए। यसै कारण ब्रह्मसूत्रको तर्कपादमा यी सबै मतको श्रीशङ्करले खण्डन गर्नुभएको छ। बादरायणले वैशेषिक मतको खण्डन गर्नुभएको छ, तर न्यायको भने खण्डन गर्नुभएको छैन। तर्कपादमा बौद्धदर्शनका सर्वास्तिवाद अर्थात् वैभाषिक र विज्ञानवाद अर्थात् योगाचारको पनि खण्डन गरिएको छ।

प्राचीन अद्वैतवादसँग श्रीशङ्कराचार्यको अद्वैतवादको सम्बन्ध :' भारतवर्षमा अद्वैतवाद अति प्राचीन कालदेखि नै प्रचलित थियो। धेरैजसो उपनिषद्हरूमा सर्वत्र अद्वैतवादपरक मन्त्रहरू र कथाहरूको प्रसङ्ग पाइन्छ। वेदहरूका मन्त्र भागमा पनि अद्वैतवेदान्त भरपूर रूपमा पाइन्छ। महाभारत, पुराण र अरू प्राचीन ग्रन्थहरूमा पनि अद्वैतवेदान्त मत यत्रतत्र पाइनु यसको विशेषता हो। यो विधा पहिलेदेखि अत्यन्त प्रसिद्ध भएको देखिन्छ। प्राचीन वेदान्तसूत्रकारहरूमा कतिपय सूत्रकारहरू अद्वैतवादी पनि थिए। यिनीहरूका अतिरिक्त बौद्धमतमा माध्यमिक तथा योगाचारी अद्वैतवादीहरू थिए। यसै कारण नै बुद्धको एउटा नाम अद्वैतवादी पनि थियो। वैयाकरण, शाक्त, शैवहरू सबैले अद्वैतवादलाई मान्दथे। श्रीशङ्कराचार्यभन्दा पहिले पनि अद्वैतवाद अपरिचित थिएन। मण्डन मिश्रले ब्रह्मसिद्धि भन्ने ग्रन्थमा अद्वैतवादको समर्थन गरेका छन्। दिगम्बराचार्य समन्तभद्रले आफ्नो ग्रन्थमा अद्वैतपक्षको उल्लेख गरेका छन्। जस्तै :

अद्वैतैकान्तपक्षेऽपि दृष्टो भेदो विरुध्यते।
कारकाणां क्रिययोश्च नैकं स्वस्मात् प्रजायते।। (आप्तमीमांसा २४)

समन्तभद्र शङ्कराचार्यभन्दा प्राचीन थिए भन्ने देखिन्छ। त्यसै गरेर शान्तरक्षितले पनि आफ्नो ग्रन्थ तत्त्वसङ्ग्रहमा (३२८-३२९) प्राचीन अद्वैतमतको वर्णन गरेका छन्।

नित्यज्ञानविवर्तोऽयं क्षितितेजोऽनलादिकम्। आत्मा तदात्मकश्चेति सङ्गिरन्तेऽपरे पुनः।।
ग्राह्यलक्षणसंयुक्तं न किञ्चिदिह विद्यते। विज्ञानपरिणामोऽयं तस्मात्सर्वः समीक्षते।।

यस कारिकाको व्याख्या गर्दै विद्वान् कमलशीलले क्षिति आदि प्रपञ्चविज्ञानलाई प्रतिभासस्वरूप भनेका छन्। शान्तरक्षितको भनाइअनुसार विवर्त र परिणाम यी दुवै शब्दहरू पर्यायवाची हुन्। किनभने उनले पहिलो श्लोकमा क्षिति आदिलाई नित्यज्ञानको विवर्त भनेर दोस्रो श्लोकमा तिनीहरूलाई विज्ञानपरिणाम भनेका छन्। यिनका मतमा आत्मा नित्यज्ञानरूप हो र क्षिति आदि जगत् यसैको परिणाम अथवा विवर्त हो। कवि भवभूतिलाई पनि त्यो प्राचीन विवर्तको कुरा थाहा थियो। त्यसै कारण उनले आफ्नो उत्तररामचरित्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाटकमा 'ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि प्रविलयः कृतः.' भनेर लेखेका छन्। कुमारिल भट्टले पनि श्लोकवार्तिकमा वेदान्तको अद्वैतवादको उल्लेख गरेका छन्। योगवासिष्ठमा पनि प्राचीन अद्वैतवादको प्रशस्त मात्रामा उल्लेख भएको पाइन्छ।

माथि उल्लेख भएका यी अद्वैतवादहरू एकै किसिमका नभएर थरीथरीका छन्। माध्यमिकको शून्याद्वयवाद, योगाचारको विज्ञानाद्वयवाद, शाक्तको शक्त्यद्वयवाद, वैयाकरणको र मण्डनसम्मत प्राचीन वेदान्तको शब्दाद्वयवाद हो। सबै अद्वैतवादी नै हुन् तर ती सबैमा प्रशस्त भिन्नता पाइन्छ। श्रीशङ्कराचार्यको अद्वैतवादमा अरूको भन्दा भिन्नता देखिन्छ। यस अद्वैतवादमा सबै दृष्टिबाट असाधारण विशिष्टता भएको कुरामा विद्वान्हरूको राय एक छ।

केही पण्डितहरूको भनाइमा श्रीशङ्कराचार्यले बौद्धमतलाई अनुसरण गरेर नै बौद्धमतको खण्डन गरेका थिए। 'मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमेव च' भन्ने पौराणिक वचन पनि देखिन्छ। गौडपादाचार्यको माण्डूक्यकारिकालाई लिएर विद्वान्हरू उनलाई बौद्धदर्शनको माध्यमिक मतका प्रभावमा परेका भनेर दोषारोपण गर्दछन्। उनका कारिकामा पनि बौद्धदर्शनले आत्माका बारेमा भने जस्तै उल्लेख भएको कुरा विद्वान्हरू कारिकाको उद्धरण गर्दै भन्दछन् :

अस्ति नास्त्यस्ति नास्तीति नास्ति नास्तीति वा पुनः।
चलस्थिरोभयाभावैरावृणोत्येष बालिशः।।
कोटयाश्चतस्र एतास्तु ग्रहैर्यासां सदावृतः।
भगवानाभिरस्पृष्टो येन दृष्टः स सर्वदृक्।।

अर्थात् आत्मा सत्, असत्, सदसदुभयात्मक र सदविल-क्षणसमेत यी चतुष्कोटिनिर्मुक्त आत्मालाई जसले साक्षात्कार गर्दछ, त्यो नै सर्वदर्शी वा सर्वज्ञ हो।

गौडपादभन्दा धेरै पहिले नागार्जुनले पनि उनको माध्यमिक कारिकामा यही कुरा लेखेका थिए :

न सन्नासन्न सदसन्न चाप्यनुभयात्मकम्।
चतुष्कोटिविनिर्मुक्तं तत्त्वं माध्यमिका विदुः।।

यही चतुष्कोटिको कुरो कवि श्रीहर्षले नैषधीयचरितमा पनि उल्लेख गरेका छन् :

साधुं प्रयच्छति न पक्षचतुष्टये तां तल्लाभशंसिनि न पञ्चमकोटिमात्रे।
श्रद्धां दधे निषधराड् विमतौ मतानाः मद्वैततत्त्व इव सत्यतरेऽपि लोकः।। (नैषध १३।३६)

अद्वैतवादी कवि श्रीहर्षले आफ्नो नैषधीयचरित्रमा बुद्धलाई पनि विधूतकोटिचतुष्क र अद्वयवादीका रूपमा नै वर्णन गरेका छन् : धीमन्तराज नेउपाने ९८४१४४२७१९

एकचित्ततदितरद्वयवादिन्न त्रयी परिचितोऽथ बुद्धस्त्वम्।
पाहि मां विधूतकोटिचतुष्कः पञ्चबाणविजयी षडभिज्ञः।। (नैषध १९।८८)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसरी विचार गर्दा शून्यवादीको शून्य अथवा तत्त्व र गौडपादाचार्यको आत्मा प्रायः एकै प्रकारको देखिन्छ भनेर विद्वान् विचारकहरूको भनाइ भएको पाइन्छ। यसै गरेर समालोचकको भनाइमा गौडपादको अजातवाद पनि नागार्जुनरचित माध्यमिककारिकामूलक भएको देखिन्छ। जस्तै :

न स्वतो नापि परतो न द्वाभ्यां नाप्यहेतुतः।

उत्पन्ना जातु विद्यन्ते भावाः क्वचन केचन।।(माध्यमिककारिका १।७)

यही कुरा गौडपादाचार्यले माण्डूक्यकारिकाको अलातशान्ति-प्रकरणमा पनि उल्लेख गरेका छन् :

स्वतो वा परतो वापि न किञ्चिद्वस्तु जायते। सदसत् सदसद्वापि न किञ्चिद्वस्तु जायते।।

माध्यमिक बौद्धका मतमा परमार्थतत्त्व प्रपञ्चातीत छ। यस अंशमा शङ्कराचार्यको मत पनि मिल्दछ। सम्पूर्ण वस्तुको मायिकत्व र स्वप्नत्व दुवै दर्शनमा समान मानिएको छ। पारमार्थिक र व्यावहारिक सत्ता पनि दुवै दर्शनले मानेका छन्। अजातवाद र शून्यवादमा पनि खास भिन्नता नभएको हुँदा नै आधुनिक पण्डितहरू शङ्कराचार्यको अद्वैतवादलाई बौद्धको शून्यवादको औपनिषद संस्करण मात्र हो भन्दछन्।

केही आलोचकहरूका भनाइमा अति प्राचीन शिवाद्वयवादको आधारमा शङ्कराचार्यले आफ्नो मत स्थापना गर्नुभएको थियो। उहाँले सूतसंहितालाई अठारपटक पढेर शारीरकभाष्य अर्थात् ब्रह्मसूत्रको भाष्य लेख्नुभएको थियो भन्ने प्रवाद भएको पनि पाइन्छ। जस्तै :

तामष्टादशधालोच्य शङ्करः सूतसंहिताम्। चक्रे शारीरकं भाष्यं सर्ववेदान्तनिर्णयम्।।

सूतसंहिता प्राचीन शिवाद्वैतसम्प्रदायको ग्रन्थ हो। यस ग्रन्थका भाष्यकार माधवमन्त्री सुप्रसिद्ध शैवाचार्य क्रियाशक्ति पण्डितका शिष्य थिए। शङ्कराचार्यको दक्षिणामूर्तिस्तोत्र र सुरेश्वराचार्यको वार्तिकको समेत अध्ययन गर्दा शङ्कराचार्यलाई शिवागमका बारेमा विशेष परिचय थियो भन्ने थाहा हुन्छ। यस कारण शिवागमको प्रभाव शङ्कराचार्यको लेखनमा पर्न जानु स्वाभाविकै देखिन्छ भन्ने भनाइ पनि विद्वान्हरूका बिचमा पाइन्छ।

उपर्युक्तअनुसार अत्यन्त छोटकरीमा केही स्वनामधन्य अद्वैत मतको उल्लेख गरियो। यीमध्ये धेरैजसोको ज्ञान शङ्कराचार्य जस्तो विचक्षण पुरुषलाई थियो नै होला भन्न सकिन्छ। यीमध्ये केही मतको सामान्य प्रभाव शङ्कराचार्यका लेखनमा परेको पनि हुन सक्तछ तर त्यसो भन्दैमा उहाँले यिनैका आधारमा अद्वैतवादको प्रचार गर्नुभएको थियो भन्नु कत्ति पनि मिल्ने देखिँदैन।

श्रीशङ्कराचार्यपछिको वेदान्त : 'श्रीशङ्कराचार्यपछि भट्टभास्कर र यादव प्रकाशको नाम विशेष रूपमा उल्लेख भएको पाइन्छ। भट्टभास्करले त्रिदण्डीमतअनुसार वेदान्तसूत्रमा भाष्य लेखेका थिए। यिनको समय निश्चित छैन, नवौं शताब्दीतिर हुन सक्ने अनुमान गरिएको छ। यिनी पनि भर्तृप्रपञ्चजस्तै समुच्चयवादी थिए। यिनका मतमा ज्ञानले मात्रै मुक्ति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुँदैन, कर्म पनि चाहिन्छ भन्ने देखिन्छ। ज्ञानको उत्पत्ति कर्मले हुँदैन, श्रवण, मननरूप साधनहरूबाट हुन्छ भन्ने उनको भनाइ पाइन्छ। उनका मतमा ज्ञानका लागि जीवनभरि शमदमादिको अनुष्ठानका साथै आश्रमोचित अनुष्ठानको पनि आवश्यकता देखिन्छ तर कर्मको त्याग कुनै पनि अवस्थामा ठिक हुन सक्तैन। श्रुतिले सर्वकर्मसन्न्यासको विधान कहीं पनि गरेको छैन भन्ने पनि पाइन्छ।

भट्टभास्करका मतमा मोक्षका लागि ज्ञान र कर्म दुवै आवश्यक छन्। ज्ञानबाट अविद्याको निवृत्ति हुन्छ। त्यसबाट भेदज्ञान भने निवृत्त हुँदैन। प्रारब्धकर्म समाप्त हुँदैन। प्रारब्धकर्म नाश नहोउन्जेल जीवको कर्तृत्व र भोक्तृत्वको अनुवृत्ति भई नै रहन्छ। त्यस कारण कर्मसहितको विद्या नै अपवर्गको साधन हो, केवल विद्या अपवर्गको साधन हुन सक्तैन। उनले भनेका छन् : 'समुच्चिताभ्यामेव ज्ञानकर्मभ्यामविद्यानिवृत्तिद्वारेण अपवर्गो व्यज्यते नान्यतरेणं' श्रवण र मननलाई पुनः पुनः अभ्यास गरेमा 'तत् र त्वम्' को व्युत्पत्ति भएर आत्मस्वरूपको ज्ञान हुन्छ भनेर भट्टभास्करले भनेका छन्। यो कुरा सबैलाई हुँदैन। जसको चित्तमा संस्कार अपटु छ, त्यसले एकै पटकमा ब्रह्मात्मभावको अनुभव गर्न सक्तैन। जबसम्म अन्तःकरणमा अविद्या रहन्छ, तबसम्म कर्तव्य रहिरहन्छ। अविद्याको निवृत्ति भएपछि जब ब्रह्मभावको उदय हुन्छ, तब मात्रै कुनै प्रकारको कर्तव्य शेष रहँदैन। साक्षात्कारात्मक ज्ञानका लागि केवल एकपटक मात्रै श्रवण र मनन गर्नु पर्याप्त हुँदैन भनेर भट्टभास्करले भनेका छन्।

भट्टभास्करको मतमा प्रपञ्च परमात्माको अवस्थाविशेष हो। प्रपञ्च सत्य हो र भेद पनि सत्य हो। जीवात्मा र परमात्मामा स्वभावतः भेद छैन तर उपाधिका कारण भेद खडा हुन्छ। उपाधि हटेपछि भेदभाव पनि स्वतः हट्तछ। यसलाई मुक्ति वा शुद्ध परमात्मरूपमा स्थिति हुनु भनेर भनिन्छ।

दृश्यमान् यो प्रपञ्च ब्रह्मको स्वाभाविक परिणाम हो भनेर भट्टभास्कर मान्दछन्। ब्रह्मको विक्षेपशक्तिका कारण नै सम्पूर्ण सृष्टिस्थिति आदिको व्यापार अनवरत चलिरहन्छ। जसरी सूर्य आफ्नो किरणलाई विक्षेप गर्दछन्, त्यसै गरेर ब्रह्म पनि आफ्नो अनन्त र अचिन्त्य शक्ति विक्षेप गर्दछ। ब्रह्मको त्यस प्रकारको व्यापारको परिणामको फल नै जगत् हो। परिणाम नै ब्रह्मको स्वभाव हो। निरवयव वस्तुको परिणाम हुन सक्तैन भन्ने कुरा ठिक होइन। परिणामको एकमात्र प्रयोजक स्वभाव हो, सावयवत्व होइन। दुधबाट दहीरूप परिणाम हुन्छ। त्यसरी दही हुनुको कारण दुध सावयव भएर होइन तर त्यो दुधको स्वभाव हो। यदि सावयवत्वलाई नै परिणामको कारण मान्ने हो भने जलबाट दधिरूप परिणामको प्रसङ्ग आउन सक्तछ। भास्करको मतमा सावयव वस्तुको परिणाम हुनै सक्तैन। परिणाम हुने भनेको नै निरवयव वस्तुको हुन्छ :

अप्रच्युतस्वरूपस्य शक्तिविक्षेपलक्षणः। परिणामो यथा तन्तुनाभस्य पटतन्तुवत्।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जसरी अप्रच्युतस्वरूप तन्तु नै पटरूपमा अवस्थित हुन्छ र त्यसरी नै अप्रच्युतस्वभाव आकाशबाट नै वायुको उत्पत्ति हुन्छ। त्यसै गरेर अप्रच्युतस्वभाव ब्रह्मबाट नै जगत्को आविर्भाव हुन्छ। जस्तैः 'चेतनस्य सर्वज्ञस्य सर्वशक्तेः स्वतन्त्रस्य शास्त्रैकसमधिगम्यस्य *जगत्कारणस्य परिणामो व्यवस्थाप्यते, स हि स्वेच्छया स्वात्मानं लोकहितार्थं परिणमयन् स्वशक्त्यनुसारेण परिणमयति'*

साधारण मनुष्यका बुद्धिमा त्यस्तो शक्ति छैन, जसले वस्तुशक्तिलाई परिच्छेद गर्न सकोस्। परमेश्वरको स्वाभाविक शक्ति अचिन्त्य छ। कार्यकारणभावका विषयमा भास्कर भन्दछन् ' कार्य सत् हो र कारण नै तत् तत् अवस्थामा प्राप्त भएर कार्यको रूप धारणा गर्दछ। अवस्था र अवस्थावान्मा तथा धर्म र धर्मीमा आत्यन्तिक भेद छैन। यी दुवै एकै हुन्। गुणहीन द्रव्य र द्रव्यहीन गुण हुनु सम्भव छैन। उपलब्धिबाट भेदाभेद थाहा हुन्छ। समुद्र जलरूपले एक हो, तर तरङ्गादिरूपले अनेक हो। यसमा तरङ्गादि समुद्रका धर्म हुन् तर समुद्र तरङ्गादिको धर्म होइन। त्यसै कारण यिनलाई समुद्रका शक्तिका रूपमा लिइन्छ। शक्ति र शक्तिमान्मा अनन्यत्व र अन्यत्व दुवै सिद्ध हुन्छन्। शक्तिमान् एक भए पनि शक्तिगत भेदलाई प्रत्याख्यान गर्न सम्भव छैन। यसै कारण भास्करले भनेका छन् ' 'तस्मात् सर्वमेकानेकात्मकम्, नात्यन्तं भिन्नमभिन्नं वा'

कारणका दुई प्रकारका अवस्था हुन्छन्। पहिलो स्वरूपावस्था हो र दोस्रो कार्यावस्था हो। ईश्वरका दुई प्रकारका शक्तिहरू भोक्तृ र भोक्ता हुन्। ईश्वरको भोक्तृत्वशक्ति जीवरूपमा अवस्थित छ भने भोग्यत्वशक्ति आकाशादि अचेतनरूपमा पनि ईश्वर नै परिणत भएको छ।

उपासना र योगाभ्यास नगरीकन अपरोक्ष ज्ञान हुन सक्तैन भन्ने कुरा भास्करले आफ्ना ग्रन्थमा उल्लेख गरेका छन्। यहाँ त्यस कुरालाई सारांशमा दिइन्छ। वाक्, मन, बुद्धि, महान्, आत्मासमेत प्रपञ्चातीत शान्त ब्रह्मतत्त्व निवृत्तिमार्गको क्रम हो। सर्वप्रथम वाक् र मनलाई रोक्नुपर्दछ। त्यसपछि मनलाई बुद्धिमा र बुद्धिलाई महान् आत्मामा लगाउनुपर्दछ। अन्त्यमा त्यसै महान् आत्मा अर्थात् जीवात्मालाई शान्त प्रपञ्चातीत सर्वव्यापी अमृतरस परमात्मासँग संसृष्ट गर्नुपर्दछ र 'स एवाहमस्मि इत्याकारक' भावना गर्नुपर्दछ। यो नै योग अथवा उपासना हो। यसको फल अपरोक्ष ज्ञान अथवा विष्णुको पद प्राप्ति हो। सनकादिकृत योगशास्त्रमा यसैलाई योग भनिएको छ। किनभने यस मतमा ध्यान, धारणा र समाधि नै योगका अङ्ग हुन्। यस मतमा अभिप्रेत ब्रह्मप्राप्तिका लागि चित्तको एकाग्रतालाई ध्यान भनिन्छ। प्राण, इन्द्रिय, बुद्धि र मनको युगपत् सन्धानलाई नै धारणा भनिन्छ। श्रद्धा र प्रयत्नका साथसाथै नित्य चिन्तन गर्नु नै समाधि हो।

भास्करका मतअनुसार ब्रह्मा, विष्णु र महेश्वर परमात्माका स्वरूप नभएर अवयव हुन्। यही त्रिमूर्ति उत्तीर्ण ब्रह्मवादको नामले प्रसिद्ध छ। उनले वासुदेव कृष्णलाई भगवान्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानेका छैनन्।

भास्करले सृष्टिको क्रम पनि दिएका छन्। १. अव्याकृत आकाश अथवा भूतसूक्ष्मको सृष्टि प्रथम सृष्टि हो। सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् परमात्माले प्राणीहरूका भोगका लागि आवश्यक पर्ने यसैलाई पहिले सृष्टि गर्नुभयो। २. हिरण्यगर्भको सृष्टि। ३. हिरण्यगर्भमा अनुप्रवेश र तदनुरूप अवस्थिति। ४. आकाशादि क्रमले ब्रह्माण्डको सृष्टि। ५. स्थावरान्त सम्पूर्ण जगत्को सृष्टि। प्राणीहरूले कर्मको अनुसरण गर्नका लागि सृष्टि हुनु स्वाभाविक छ। सृष्टिका आरम्भमा परब्रह्मका अनुग्रहबाट प्रजापतिका मनमा वेद आविर्भूत भयो। सृष्टिका साथसाथै वेदको पनि आविर्भाव हुने गर्दछ।

भास्करका मतमा पनि सद्योमुक्ति र क्रममुक्ति गरेर दुईथरी मुक्ति छन्। दुवैथरी मुक्तिका बाटोबाट गएको प्राणीले फेरि जन्ममरणको संसृतिमा फर्कनु पर्दैन। जो साक्षात् अर्थात् कारणब्रह्मका उपासक छन् तिनले सद्योमुक्ति प्राप्त गर्दछन्। जो परम्पराअनुसार ब्रह्मोपासना गर्दछन् र जो कार्यब्रह्मका उपासक छन्, तिनीहरू सर्वप्रथम अर्चिरादि मार्ग अर्थात् देवयानपथबाट हिरण्यगर्भमा प्रवेश गर्दछन्। त्यसपछि त्यहाँ अन्तःकरण शुद्ध भएपछि ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुन्छ र हिरण्यगर्भका साथसाथै एकत्र मुक्ति प्राप्त गर्दछन्। हिरण्यगर्भ नै कार्यब्रह्म हुन्। महाप्रलयमा कार्यब्रह्म नाश हुँदा अर्थात् हिरण्यगर्भ मुक्त हुँदा हिरण्यगर्भका अङ्गीभूत जीवहरू पनि मुक्त हुन्छन्। मुक्तपुरुषहरूमध्ये जुन जुन पुरुषहरू परम कारण समुच्चयमा प्राप्त हुन्छन् तिनीहरूको ऐश्वर्यको अवधि रहँदैन तर मुक्त भएर पनि जुन पुरुष पृथक् रहन्छ, जसको कार्यब्रह्ममा अवस्थिति हुन्छ, त्यस्ताको ऐश्वर्यको अवधि रहन्छ। कार्यब्रह्मलोकमा मुक्त पुरुष आफ्नो इच्छाअनुसार शरीर धारणा गर्न सक्तछ र परिहार पनि गर्न सक्तछ। दुवै अवस्थामा विषयहरूको भोग मनद्वारा हुन्छ। शरीरी अवस्थामा जाग्रत् अवस्था जस्तै स्थूलभावले उपभोग हुन्छ भने विदेह अवस्थामा स्वप्नवत् उपभोग हुन्छ। ती मुक्त पुरुषहरू संसारको काममा हस्तक्षेप गर्न सक्तैनन्। जगत् व्यापारमा एकमात्र नित्यसिद्ध परमेश्वरको अधिकार रहन्छ। सूर्यमण्डल नै आधिकारिक मण्डल हो। यसको नामान्तर संवत्सरचक्र वा वैराज शरीर हो। यसमा सबै लोकहरू, सबै वेदहरू र सबै देवताहरू सन्निविष्ट छन्। कार्यब्रह्मलोकसम्म नै लिङ्गशरीर रहन्छ। त्यस कारण वस्तुतः त्यो लोक पनि संसारमण्डलअन्तर्गत नै पर्दछ। लिङ्गशरीर सूक्ष्म भएको कारण चाँडै लीन हुँदैन तर कार्यब्रह्मलोक अतिक्रमण गरेपछि भने लिङ्गशरीरको निवृत्ति हुन्छ। त्यस वेला करणवर्ग रहँदैनन्। कारणावस्थामा सबै एकाकार हुन्छन्। भास्करका मतमा मोक्ष सम्बोध हो अर्थात् मोक्षमा ज्ञान रहन्छ भन्ने हो। उनको भनाइमा यो नै श्रौतमत हो। मोक्षका सम्बन्धमा शङ्कराचार्यको निःसम्बोधन मतलाई भास्करले मान्यता दिएका छैनन्।

एक अर्का वेदान्ती यादवप्रकाश पनि भेदाभेदवादी थिए। आचार्य आश्मरथ्यको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धान्तका आधारमा नै यादवप्रकाशको सिद्धान्त प्रकाशित भएको थियो। व्यासराजले तात्पर्यचन्द्रिकामा यादवप्रकाशका मतको उल्लेख गरेका छन्। यादवप्रकाशले ब्रह्मसूत्र र गीतामा भेदाभेद पक्षकाअनुसार भाष्य लेखेका थिए। यादवप्रकाश निर्गुण ब्रह्म र मायावाद मान्दैनथे। यिनका मतमा ज्ञानकर्मसमुच्चय नै मुक्तिको साधन हो। शुद्ध कर्म र ज्ञानबाट मुक्ति हुन सक्तैन। यिनका मतमा भेद ज्ञानबाट संसारमा प्रवृत्ति हुन्छ। भेदाभेदबोधबाट संसारको निवृत्ति हुन्छ र मोक्ष हुन्छ। भेद र अभेद समरूपमा सत्य हुन्। चित् र अचित्मा कुनै वास्तविक भेद छैन। साधनबलबाट अचित् क्रमशः चित्मा परिणत हुँदै जान्छ। यी दुइटै अनादिकालदेखि नै ब्रह्मका विकासका रूपमा विद्यमान रहेका छन्। भास्कर र यादवमा केही मत भिन्नता देखिन्छ। भास्कर उपाधिलाई मान्दछन् भने यादवप्रकाश उपाधिलाई मान्दैनन्। ब्रह्म भिन्न र अभिन्न छ। ब्रह्मको स्वरूप सन्मात्र हो। चित्, अचित् र ईश्वर ब्रह्मका उपभेदहरू हुन्। ईश्वर स्वप्रकाश, सर्वशक्तिसम्पन्न तथा आनन्दमय हो तर जीव खण्डभावमात्र हो। ब्रह्म आफ्नो परिणामशक्तिद्वारा आफूलाई धेरै बनाउँदछ। ब्रह्म प्राणमयरूपमा चित् र अचित् पनि हो। यादवप्रकाश पनि पुराना अरू केही आचार्यहरू सरह जीवन्मुक्तिलाई मान्दैनन्। यिनी परिणामवादी वेदान्ती हुन्।

पिशाचले बादरायणका ब्रह्मसूत्रमा एउटा भाष्य लेखेको थियो भन्ने प्रवाद मध्वसम्प्रदायमा प्रसिद्ध छ। त्यसै गरेर पिशाचको गीताभाष्य पनि थियो भनिन्छ।

श्रीशङ्कराचार्यदेखि लिएर रत्नप्रभाकारसम्मको अद्वैतवेदान्तको इतिहासः 'श्रीशङ्कराचार्यका साक्षात् शिष्यहरू र उनीहरूद्वारा प्रणीत ग्रन्थहरूका बारेमा माथि नै सारांशमा उल्लेख गरिसकिएको छ। सुरेश्वराचार्यका शिष्य सर्वज्ञात्ममुनिले ब्रह्मसूत्रमाथि सङ्क्षेप-शारीरक नाम गरेको एक सुन्दर पद्यात्मक व्याख्यानको रचना गरेका थिए। यस ग्रन्थमा आफ्ना गुरु सुरेश्वराचार्यलाई देवेश्वर भनेर उनले उल्लेख गरेका छन्। धेरै अघिदेखि यस ग्रन्थको पठनपाठन चलेर आइरहेको छ। यस ग्रन्थमाथि धेरै थरी अर्वाचीन विद्वान् वेदान्ताचार्यहरूले टीका लेखेका छन्। तीमध्येमा नृसिंहाश्रमको तत्त्वबोधिनी, मधुसूदनसरस्वतीको सारसङ्ग्रह, पुरुषोत्तमदीक्षितको सुबोधिनी र रामतीर्थको अन्वयार्थप्रकाशिका मुख्य हुन्। राघवानन्द सरस्वतीकृत विद्यामृतवर्षिणी र विश्ववेदकृत सिद्धान्तदीप अहिलेसम्म प्रकाशित हुन सकेका छैनन्। पञ्चप्रक्रिया भन्ने अर्को ग्रन्थ पनि सर्वज्ञात्ममुनिले लेखेका थिए भन्ने सुनिन्छ तर प्रमाणित भने भएको छैन।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र वाचस्पति मिश्रको नाम भारतीय दर्शनको इतिहासमा अत्यन्त गौरवका साथ लिने गरिन्छ। उनले वैशेषिक दर्शनलाई छोडेर अरू सबै दर्शनहरूमाथि उत्कृष्ट व्याख्यानग्रन्थहरूको रचना गरेका थिए। वेदान्तशास्त्रमा आचार्य वाचस्पति मिश्रका दुइटा ग्रन्थहरू अत्यन्त प्रसिद्ध छन्। एउटा ग्रन्थ मण्डन मिश्ररचित ब्रह्मसिद्धिमाथि लेखिएको ब्रह्मतत्त्वसमीक्षानामक टीका हो र अर्को श्रीशङ्कराचार्यको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शारीरकभाष्यमाथि लेखिएको भामती टीका हो। ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा वर्तमान समयमा उपलब्ध छैन भने भामती उपलब्ध छ।

न्यायकन्दलीकार श्रीधराचार्यले पनि अद्वयसिद्धि नामक एउटा वेदान्त ग्रन्थ लेखेका थिए। अव्यययात्माका शिष्य विमुक्तात्मा प्राचीन कालमा अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् वेदान्ताचार्य थिए। यिनले रचना गरेको इष्टसिद्धि नामक ग्रन्थ शाङ्करवेदान्तका मूलग्रन्थहरूमा परिगणना गर्न योग्य देखिन्छ। मधुसूदन सरस्वतीले आफ्नो अद्वैतसिद्धिको सिद्धिनामान्त ग्रन्थका रूपमा यसको उल्लेख गरेका छन्। ब्रह्मसिद्धि, (विमुक्तात्माकृत) समेत तीन प्राचीन सिद्धिनामान्त ग्रन्थहरूका अपेक्षाले नै मधुसूदन सरस्वतीले चार सिद्धिनामान्त ग्रन्थ भनेर लेखेका हुन् भनिन्छ। इष्टसिद्धिमा आचार्य ज्ञानोत्तमले टीका लेखेका थिए। त्यो टीका अत्यन्त प्रसिद्ध थियो। ज्ञानोत्तमले नैष्कर्म्यसिद्धिमा पनि चन्द्रिका नामक टीका लेखेका थिए। त्यसै गरेर ब्रह्मसूत्र शारीरक भाष्यमा पनि उनले विद्याश्री नाम गरेको टीका लेखेका थिए। ज्ञानोत्तम सर्वज्ञात्मा र तत्त्वबोधभन्दा पछाडि काञ्ची सर्वज्ञपीठका अध्यक्ष भएका थिए।

श्रीशङ्कराचार्यका प्रमुख चार शिष्यहरूमध्ये एक शिष्य पद्मपादाचार्यले शारीरक मीमांसा भाष्यको एक भागमा पञ्चपादिका नामक एक व्याख्यान ग्रन्थ लेखेका थिए। त्यसमा परमहंस परिव्राजकाचार्य अनन्यानुभवका शिष्य यतिवर प्रकाशात्माले विवरण नामक एउटा उत्कृष्ट ग्रन्थको रचना गरेका थिए। वेदान्तदर्शनका इतिहासमा यस ग्रन्थको नाम अत्यन्त महत्त्वका साथ लिइन्छ। भामतीप्रस्थानजस्तै गरेर विवरणप्रस्थान भनेर यसको पनि नाम लिइन्छ। प्रकाशात्माले शारीरक भाष्यमा पनि न्यायसङ्ग्रह नाम गरेको टीका लेखेका थिए। शब्दनिर्णय नामबाट प्रकाशात्माको अर्को पनि ग्रन्थ वर्तमान समयमा उपलब्ध छ। न्यायसङ्ग्रह र शब्दनिर्णय ग्रन्थहरूबाट वेदान्तशास्त्रको प्राचीन समयका विषयमा धेरै कुरा थाहा हुन सक्तछ।

उत्तमामृतयतिका शिष्य ज्ञानामृतयतिले सुरेश्वराचार्यको नैष्कर्म्यसिद्धिमा विद्यासुरभि नाम गरेको एउटा सुन्दर टीकाग्रन्थ लेखेका थिए। यस ग्रन्थको प्रकाशन अहिलेसम्म हुन सकेको छैन। नैषधचरितका कवि श्रीहर्षले खण्डनखण्डखाद्य नाम गरेको एउटा उत्कृष्ट खण्डनात्मक प्रकरणग्रन्थको रचना गरेका छन्। यद्यपि अभिनव वाचस्पति मिश्रले खण्डनोद्धार नामक ग्रन्थमा र अरू पनि कैयौं नैयायिकहरूले विभिन्न समयमा विभिन्न प्रकारले खण्डनखण्डखाद्यलाई खण्डन गर्ने प्रयास गरेका थिए। तैपनि अहिलेसम्म खण्डनको कीर्ति कत्ति पनि खण्डित हुन सकेको छैन। अझ उल्टै शङ्कर मिश्रजस्ता नैयायिकले यसको टीका लेखेर यसको महत्त्व ख्यापन गर्ने काम गरेको देखिन्छ। अद्वयाश्रमका शिष्य रामाद्वयले वेदान्तकौमुदी नाम भएको एउटा आलोचनात्मक टीका ब्रह्मसूत्रका प्रथम चार अधिकरणमा लेखेका थिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शारीरक भाष्यमा रामानन्दतीर्थका शिष्य अद्वैतानन्दले ब्रह्मविद्याभरण भन्ने एउटा उच्चकोटिको ग्रन्थ लेखेका छन्। त्यो ग्रन्थ हाल कुम्भकोणम्बाट प्रकाशन भइसकेको छ। आत्मवासका शिष्य आनन्दबोध भट्टारकले न्यायमकरन्द नामक अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रन्थ लेखेका थिए। चित्सुख आदि ठुलाठुला आचार्यहरूले यसको टीका लेखेका छन्। न्यायदीपावली, प्रमाणरत्नमाला र प्रकाशात्मयतिको शब्दनिर्णयमा दीपिका नामको टीकासमेत आनन्दबोधले लेखेका थिए। चित्सुखाचार्यका गुरु गौडेश्वराचार्य ज्ञानोत्तमका कुनै ग्रन्थ पनि अहिलेसम्म पाइएका छैनन्। तर ज्ञानोत्तम पनि त्यस वेलाका प्रसिद्ध ग्रन्थकारमध्येमा गनिन्थे। चित्सुखाचार्यको तत्त्वप्रदीपिका ग्रन्थमा उल्लेख भएअनुसार उनले न्यायसुधा नामको एउटा ग्रन्थ लेखेका थिए। यसै गरेर प्रत्यक्स्वरूपाचार्यकृत नयनप्रसादिनी टीकाबाट पनि ज्ञानोत्तमकृत ज्ञानसिद्धि नामक अर्को ग्रन्थको पनि परिचय पाउँन सकिन्छ। तत्त्वप्रदीपिका नामक ग्रन्थबाट चित्सुखाचार्य जगद्विख्यात भएका छन्। उनले अरू पनि ग्रन्थहरू लेखेका थिए। उनले शारीरक भाष्यमा भावप्रकाशिका, मण्डन मिश्रको ब्रह्मसिद्धिमा र नैष्कर्म्यसिद्धिमा अभिप्राय-प्रकाशिका नामक टीकाहरू लेखेका थिए। आनन्दबोधले न्यायमकरन्द र प्रमाणरत्नमालामा टीका लेखेका थिए। प्रकाशात्मयतिको पञ्चपादिकाविवरणमा चित्सुखाचार्यले भावद्योतिनी नाम गरेको टीका लेखेका थिए। यिनका अतिरिक्त अधिकरणसङ्गति र अधिकरणमञ्जरी नाम भएका ससाना ग्रन्थहरू पनि चित्सुखाचार्यले लेखेका छन्। उनले विष्णुपुराण र श्रीमद्भागवतमा पनि सुन्दर व्याख्यान लेखेका थिए। चित्सुखाचार्यले खण्डनखण्डखाद्यमा एक उत्कृष्ट व्याख्यान लेखेका थिए। विज्ञानात्मभगवान् नाम भएका ज्ञानोत्तमका एकअर्का शिष्यको पनि अस्तित्व थाहा भएको छ। यिनले श्वेताश्वतर र तैत्तिरीय आदि उपनिषद्हरूमा विवरणात्मक टीका लेखेका थिए। चित्सुखाचार्यका प्रधान शिष्य सुखप्रकाशले आनन्दबोधाचार्यका न्यायमकरन्द र न्यायदीपावलीमा टीका लेखेका थिए। उनले आफ्ना गुरुको तत्त्वप्रदीपिकामाथि भावद्योतनिका नामक महत्त्वपूर्ण टीका लेखेका छन्। हालै उनको अधिकरणरत्नमाला नाम भएको अर्को ग्रन्थ पनि उपलब्ध भएको छ।

अनुभवानन्दका शिष्य व्यासाश्रम अथवा अमलानन्दले भामतीमा वेदान्तकल्पतरु नामक एउटा टीका लेखेका थिए। भामतीप्रस्थानमा उनको ठुलो प्रसिद्धि छ। यसमा अप्पयदीक्षितको परिमलका साथै अरू पनि टीकाहरू लेखिएका छन्। जसमध्ये वैद्यनाथकृत कल्पतरुमञ्जरी अति प्रसिद्ध छ। ब्रह्मसूत्रको अभिप्राय बुझ्नका लागि अमलानन्दले शास्त्रदर्पण नाम गरेको एउटा स्वतन्त्र वृत्तिग्रन्थ लेखेका छन्। आकारमा सानो भए तापनि यसलाई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ मानिन्छ। अनुभूतिस्वरूपाचार्ययतिले गौडपादीय माण्डूक्यकारिकाको शाङ्करभाष्यमा टीका लेखेका छन्। आनन्दबोधरचित प्रमाणरत्नमालामा पनि उनको टीका पाइन्छ। अनुभूतिस्वरूपका शिष्य जनार्दनकृत तत्त्वालोक प्रसिद्ध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रन्थ हो। आनन्दशैल या आनन्दगिरिका शिष्य अखण्डानन्दले पञ्चपादिकाविवरणमा तत्त्वदीपन र भामतीमा ऋजुप्रकाशिका टीका लेखेका थिए। प्रत्यक्स्वरूपाचार्यको चित्सुखीको टीका मानसनयनप्रसादिनी अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रन्थ हो।

जनार्दनसर्वज्ञका पुत्र स्वामीन्द्रपूर्णका शिष्य विष्णुभट्ट उपाध्यायले पञ्चपादिकामा ऋजुविवरण नामक एउटा टीका लेखेका थिए। चौधौं शताब्दीमा भएका अद्वैतवेदान्तका आचार्यहरूमा विद्यातीर्थ, भारतीतीर्थ, विद्यारण्यस्वामी आदिका नामहरू वेदान्तदर्शनको इतिहासमा विशेषरूपले उल्लेखनीय छन्। विद्यातीर्थ परमात्मतीर्थका चेला थिए। उनका यद्यपि खास कुनै विशिष्ट ग्रन्थहरू देखिँदैनन्, तै पनि सायणाचार्य र माधवाचार्य या विद्यारण्यस्वामीहरूमाथि उनको जुन प्रकारको असाधारण प्रभाव थियो, त्यसैबाट उनको विशिष्ट महत्त्व भएको अनुमान गर्न सकिन्छ। माधवाचार्यका भाइ सायणाचार्य थिए। माधवाचार्य नै सन्न्यास लिएपछि विद्यारण्य स्वामीका नामले प्रसिद्ध भएका हुन्। विद्यारण्यस्वामीका शिष्य रामकृष्णले पञ्चदशीमा प्रसिद्ध टीका लेखेका छन्। आनन्दाश्रमका शिष्य शङ्करानन्दले कैवल्योपनिषद्, कौषीतकी, नृसिंहतापनीय, ब्रह्म, नारायण आदि उपनिषद्हरूमा दीपिका नामक टीका लेखेका थिए।

प्रसिद्ध नैयायिक उपस्कारकर्ता शङ्कर मिश्रले खण्डनखण्डखाद्यमा एउटा टीका लेखेका थिए। त्यो प्रकाशित भएको छ। शङ्कर मिश्रले भेदरत्नप्रकाश नामक ग्रन्थको रचना गरेर अद्वैतमतको खण्डन गर्ने प्रयत्न गरेका थिए। यसरी एक जना प्रसिद्ध नैयायिकले अद्वैतवेदान्तका बारेमा लेख्नु प्रशंसनीय कार्य हो। परमहंसपरिव्राजकाचार्य आनन्दपूर्णले खण्डनखण्डखाद्यको टीकाका अतिरिक्त ब्रह्मसिद्धिको भावशुद्धि टीका, बृहदारण्यकवार्तिकटीका, न्यायकल्पलतिका, पञ्चपादिकाटीका, पञ्चपादिकाविवरणटीकाको टीकारत्नसमेत लेखेका थिए। यिनले न्यायचन्द्रिका नाम गरेको एउटा प्रकरणग्रन्थ पनि लेखेका थिए। यसमा चार परिच्छेद छन्। यिनले आफ्ना ग्रन्थमा वादीन्द्र, वासुदेवसूरि, विष्णुभट्ट, मानमनोहर, नीतितत्त्वाविर्भाव, न्यायलीलावती आदि ग्रन्थकारहरू र ग्रन्थहरूको नाम पनि लेखेका छन्। शुद्धानन्दका शिष्य आनन्दगिरिका पनि अनेक ग्रन्थहरू प्रसिद्ध छन्। उनका प्रायः ती सबै ग्रन्थहरू टीकात्मक छन्। उनले लेखेका टीकाहरूमा शारीरक भाष्यटीका न्यायनिर्णय, गीताभाष्यटीका, पञ्चीकरणविवरण, उपदेशसाहस्री टीका, न्यायरत्नदीपावली व्याख्या, वाक्यवृत्ति, त्रिपुटी आदि ग्रन्थहरूका टीकाहरू र बृहदारण्यकसमेत मुख्य मुख्य उपनिषद्हरूका टीकाहरू पनि अत्यन्त प्रसिद्ध छन्।

आनन्द गिरिको उपदेशसाहस्रीको टीकाको एक प्रति काशी संस्कृत कलेजको पुस्तकालयमा सुरक्षित छ। उक्त प्रतिको लिपिकाल शकसंवत्सर १४७३ मानिएको छ। वेदान्तसिद्धान्त-मुक्तावलीकार प्रकाशानन्दले दृष्टिसृष्टिवादका विषयमा उत्कृष्ट ग्रन्थ लेखेर वेदान्तको मुख्य सिद्धान्तलाई युक्तिपूर्वक प्रचार गर्ने स्तुत्य प्रयत्न गरेका छन्। उनका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिष्य नानादीक्षितले त्यस ग्रन्थको सिद्धान्तदीपिका नामको एउटा व्याख्या लेखेका थिए। सन् सोह्रौं शताब्दीमा स्वामी मधुसूदन सरस्वती र स्वामी नृसिंहाश्रमसमेत दुवै जना अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान्हरू थिए। स्वामी मधुसूदन सरस्वतीले सङ्क्षेपशारीरकको टीकाको साथै अन्य थुप्रै टीकाहरू र अद्वैतसिद्धिजस्तो प्रौढ प्रकरण ग्रन्थ पनि लेखेका थिए। स्वामी मधुसूदन सरस्वतीका बारेमा लेखिएको अद्वैतसिद्धिनामक लेख ब्रह्मसाक्षात्कार २०६५ मा प्रकाशित भइसकेको छ। त्यसैबाट विशेष अवगत हुने नै छ।

जगन्नाथ तथा गीर्वाणेन्द्र सरस्वतीका शिष्य नृसिंहाश्रम पनि प्रकाण्ड विद्वान् थिए। उनले वेदान्ततत्त्वविवेक नाम गरेको प्रसिद्ध ग्रन्थ लेखेका थिए। उनी आफैंले त्यसको दीपन नामक टीका पनि लेखेका थिए। उनले अद्वैतदीपिका, भेदधिक्कार, पञ्चपादिकाको टीका वेदान्तरत्नकोष, पञ्चपादिकाविवरणको टीका प्रकाशिका र अखण्डानन्दकृत तत्त्वदीपनको टीका भावप्रकाशिका समेत लेखेका थिए। यिनको नृसिंहविज्ञापन नामक अर्को एउटा सानो ग्रन्थ पनि प्रकाशित भएको थियो। भट्टोजीदीक्षितका परिवार यिनैसँग सम्बन्धित थिए। विख्यात मीमांसक तथा शैवाचार्य अप्पयदीक्षितलाई पनि यिनैले शाङ्करमतको अनुसरण गर्न प्रेरित गरेका थिए भन्ने प्रसिद्धि पाइन्छ। नृसिंहाश्रमका शिष्य नारायणाश्रमले भेदधिक्कारमा सत्क्रिया नाम गरेको टीका लेखेका थिए। नारायणाश्रमका शिष्य माधवाश्रमले स्वानुभवादर्शन नामको ग्रन्थ लेखेका थिए। सदानन्दले वेदान्तसारको रचना पनि यसै समयमा गरेका थिए।

कृष्णतीर्थका शिष्य रामतीर्थ स्वामी मधुसूदन सरस्वतीका समकालीन थिए। यिनले पनि सङ्क्षेपशारीरकमाथि एक टीका लेखेका थिए। उनका अरू प्रसिद्ध ग्रन्थहरूमा ब्रह्मसूत्रभाष्यको टीका शारीरकरहस्यार्थप्रकाशिका, उपदेशसाहस्रीको टीका पदयोजनिका, वेदान्तसारको टीका विद्वन्मनोरञ्जिनी, दक्षिणामूर्तिवार्तिकटीका आदि पनि छन्। कृष्णानन्द सरस्वतीका शिष्य नृसिंह सरस्वतीले वेदान्तसारमा सुबोधिनी टीका लेखेका छन्। रङ्गराजाध्वरीन्द्र सुप्रसिद्ध मीमांसक अप्पयदीक्षितका पिता थिए। यिनले अद्वैतविद्यामुकुर र पञ्चपादिका विवरणदर्पण नाम भएका दुइटा वेदान्त ग्रन्थहरू लेखेका थिए। अप्पयदीक्षित सर्वोत्तम पण्डित थिए। स्वामी मधुसूदन सरस्वतीले आफ्नो ग्रन्थ अद्वैतसिद्धिमा अप्पयदीक्षितको नाम सर्वतन्त्रस्वतन्त्र भनेर ससम्मान उल्लेख गरेका छन्। उनले विभिन्न विषयहरूमा थुप्रै ग्रन्थहरू लेखेका थिए। तीमध्ये वेदान्तका मुख्य ग्रन्थहरू ब्रह्मसूत्रको टीका, न्यायरक्षामणि, वेदान्तकल्पतरुको व्याख्या कल्पतरूपरिमल र स्वतन्त्र प्रकरणग्रन्थ सिद्धान्तलेशसङ्ग्रह हुन्। यिनले श्रीकण्ठभाष्यमा शिवार्कमणिदीपिका नामक एउटा उत्कृष्ट ग्रन्थको रचना गरेका थिए। उनको अर्को ग्रन्थ उनका गुरु नृसिंहाश्रमको ग्रन्थ तत्त्वविवेकको टीका थियो। महाभारतका टीकाकार नीलकण्ठ चतुर्धरले वेदान्तकतक भन्ने प्रसिद्ध ग्रन्थ लेखेका थिए। यिनले आनन्दमयाधिकरणविचारनामक एक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्को ग्रन्थको पनि रचना गरेका थिए।

नृसिंहाश्रमका प्रशिष्य तथा वेङ्कटनाथका शिष्य प्रसिद्ध नैयायिक धर्मराजाध्वरीन्द्रले वेदान्तको प्रसिद्ध प्रकरणग्रन्थ वेदान्तपरिभाषाको रचना गरेका थिए। उनले तत्त्वचिन्तामणिका प्राचीन दश टीकाहरूलाई खण्डन गरेर एउटा नयाँ टीका लेखेका थिए। उनका छोरा रामकृष्णले आफ्ना पिताका ग्रन्थमा वेदान्तशिखामणिनामक एउटा व्याख्यान लेखेका थिए। रामकृष्णले लेखेको वेदान्तसारटीका पनि कहीं कहीं पाइन्छ।

प्रसिद्ध मराठी भागवतका रचयिता भक्तवर एकनाथजीका प्रपौत्र, प्रथम आपदेवका पौत्र तथा प्रथम अनन्तदेवका पुत्र प्रसिद्ध मीमांसक मीमांसान्यायप्रकाशकार द्वितीय आपदेवले वेदान्तसारमा बालबोधिनी नामक एउटा टीका लेखेका छन्। यी आपदेव स्मृतिकौस्तुभकार द्वितीय अनन्तदेवका पिता थिए।

नारायणतीर्थ र ब्रह्मानन्दतीर्थहरूले स्वामी मधुसूदन सरस्वतीको सिद्धान्तबिन्दुमा टीका लेखेका थिए। टीकाहरूको नाम क्रमशः लघुव्याख्या र न्यायरत्नावली हो। नारायणतीर्थको ब्रह्मसूत्रमा विभावना नाम गरेको टीका पनि पाइन्छ र उनको नाम ब्रह्मानन्द हो। उनले ब्रह्मसूत्रमा मुक्तावली नामक टीका लेखेका थिए। उनको मुख्य कृति भने अद्वैतसिद्धिमा लेखिएको अद्वैतचन्द्रिका नै हो। यस टीकाका लघुचन्द्रिका र गुरुचन्द्रिका गरेर दुई थरी टीकाहरू पाइन्छन्। लघुचन्द्रिका सर्वत्र प्रसिद्ध छ भने गुरुचन्द्रिका पनि मैसुरबाट प्रकाशित भएको छ। ब्रह्मानन्दको अद्वैतसिद्धान्तविद्योतननामक अर्को ग्रन्थ संस्कृत कलेज काशीबाट प्रकाशित भएको छ।

काश्मीरका सदानन्द ब्रह्मानन्दका चेला थिए। उनको कृति अद्वैतब्रह्मसिद्धि अत्यन्त प्रसिद्ध छ। रामानन्द सरस्वतीले ब्रह्मसूत्रमा ब्रह्मामृतवर्षिणी नाम गरेको वृत्ति र विवरणमा विवरणोपन्यास नाम गरेको टीकासमेत लेखेका थिए। अप्पयदीक्षितले सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहमा विवरणप्रमेयसङ्ग्रहलाई नै विवरणोपन्यास हो भनेर लेखेका छन्। गोविन्द र रामानन्द दुवै जना श्रीरामचन्द्रका उपासक थिए। गोविन्द र लघुचन्द्रिकाकार ब्रह्मानन्द दुवै जनाले शिवरामाचार्यबाट ज्ञान प्राप्त गरेका थिए। यदि ब्रह्मानन्दद्वारा उल्लिखित शिवराम गोविन्दका ज्ञानदाता शिवरामसँग अभिन्न मान्ने हो भने उनको समय १७ औं शताब्दीको साटो १८ औं शताब्दी मान्नु पर्ने हुन्छ। रत्नप्रभामा अद्वैतानन्दका शिष्य पूर्णप्रकाशानन्द सरस्वतीले चतुःसूत्रीपर्यन्त एउटा टीका लेखेका छन्। यीबाहेक अरू पनि धेरै आचार्यहरूले शाङ्करभाष्यमा वृत्ति, विवरण, कारिका, टीका आदि लेखेका छन्।

आद्य जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्यको तिरोभाव :' सनातन वैदिक धर्मको पुनरुद्धार गर्न भगवान् श्रीशङ्करकै अवतार लिएर जन्मनुभएका श्रीशङ्कराचार्य ३२ वर्षको अत्यल्प आयुमा नै माथि उल्लेख भएका कल्पनातीत कालजयी कामहरू गरेर यस संसारबाट जानुभयो। उहाँका सम्बन्धमा भनिएको छ—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कारको परिचय र महत्त्व

✍ डा. गुरुप्रसाद सुवेदी

१. विषयप्रवेश

मानिस मानिस भएर मात्र पुग्दैन, असल मानिस हुनुपर्छ। त्यो असलपन त्यत्तिकै आउने होइन। त्यसका लागि संस्कार चाहिन्छ। त्यसैले हाम्रा पूर्वजहरू संस्कारको कुरा गर्दछन्। संस्कार विकारको विपरीतार्थी शब्द हो। विकार अर्थात् बिग्रिनु। संस्कार अर्थात् सप्रिनु, राम्रो हुनु, असल हुनु। एउटा मानिस असल हुँदा उसको परिवार, समाज र राष्ट्र हुँदै विश्व नै असल हुन्छ। एउटा व्यक्ति खराब हुँदा त्यसको प्रभाव पनि फैलिँदै जान्छ। त्यसैले समाज सुधार गर्न व्यक्ति असल र संस्कारयुक्त हुनुपर्छ भन्ने हाम्रा पूर्वजहरूको मान्यता हो।

यही मान्यतामा आधारित भएर वैदिक मन्त्रद्रष्टा ऋषिहरू र त्यसपछिका स्मृतिकारहरूले संस्कारमा जोड दिए। अनि अर्कोतिर संस्कारसम्बन्धी शोधखोज पनि भइरहेको छ। संस्कारका आधारहरू धेरै छन् तर पनि मानिसलाई असल मानिस बनाउन उसको शरीर, मन र वचनमा नवीनताको आधान गर्नुपर्दो रहेछ। त्यसका लागि पूर्वज ऋषिमुनिहरूद्वारा केही न्यूनतम संस्कारका कुराहरू तोकिएका छन्। यहाँ तिनै संस्कारहरूको चर्चा गरिन्छ।

२. संस्कारको लक्षण र परिभाषा

सम् उपसर्ग पूर्वमा हुने कृ धातुदेखि भाव अर्थमा घञ् प्रत्यय लगाउँदा संस्कार शब्द निष्पन्न हुन्छ। संस्करणम् संस्कारः यो शाब्दिक व्युत्पत्ति हो। शास्त्रकारहरूले संस्कारको परिभाषा यसरी गरेका छन्- आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो हीनाङ्गपूरको दोषापमार्जनंकरोतिअतियाधायको विहितक्रियाजन्योतिशयविशेष एव संस्कार इत्युच्यते (वीरमित्रोदय) अर्थात् दोषलाई हटाउने, कमीको पूर्ति गर्ने, शरीर र आत्मासम्बन्धी विशेष गुणको आधान गर्ने शास्त्रविहित कर्मबाट उत्पन्न हुने अतिशय विशेष (विशेषता) लाई संस्कार भनिन्छ। संस्कारबाट जन्मसम्बन्धी बीजोद्भव र गर्भादिजन्य विकारको

✍ *प्राचार्य, महेश संस्कृत विद्यापीठ, देवघाटधाम, तनहुँ*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निराकरण हुने कुरा मनुले पनि भनेका छन् -

गर्भैर्होमैर्जातकर्मचूडामौञ्जीनिबन्धनैः।बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते ॥ (मनुस्मृति)

अर्थात् गर्भजन्य संस्कार, होम, जातकर्म, चूडाकर्म, उपनयन आदि संस्कारहरूले बीजसम्बन्धी र गर्भसम्बन्धी दुरितलाई हटाएर द्विजत्व सम्पादनका लागि योग्यताको आधान गरिन्छ। मणि चम्किन जसरी संस्कार चाहिन्छ, त्यसरी नै मानिसमा प्रकाश आउन संस्कार चाहिन्छ। चित्र तयार भएपछि त्यसलाई चम्काउन रङ्ग भर्नुपर्छ, त्यसरी नै जीवनमा थप विशेषता प्राप्त गर्न संस्कार भर्नुपर्छ तर संस्कार जहिले मन लाग्यो उहिले थपेर संस्कार भयो भन्न चाहिँ पाइँदैन। काँचो माटोबाट जुनसुकै पात्र बनाउन सकिन्छ तर पाकेको माटोबाट अर्को आकृति बनाउन सकिँदैन। त्यसैले नीतिकारहरूले सानै उमेरमा तोकिएको समयमा संस्कार सम्पन्न गर्नुपर्छ भन्ने कुराको उल्लेख गरेका छन् - यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्। (हितोपदेश)

३. संस्कारका भेदहरू

संस्कार के हुन् भन्ने थाहा पाउन संस्कारहरू कति थरी छन् भन्ने कुरा जान्नु महत्त्वपूर्ण हुन्छ। विभिन्न तरिकाले संस्कारलाई विभाजन गरिएको छ। हारीत स्मृतिमा ब्राह्म र दैवको रूपमा संस्कार दुई थरी हुने कुरा बताइएको छ। गर्भाधान आदि स्मार्त संस्कारहरू ब्राह्म हुन्। पाकयज्ञ आदि वैदिक यज्ञसँग सम्बद्ध संस्कारहरू दैव संस्कार हुन्। यी संस्कारहरूबाट मानवशरीर ब्राह्म अर्थात् ब्राह्मणोचित सद्गुणसम्पन्न बन्दछ। मनु भन्दछन् - महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः। (मनुस्मृति)

ब्राह्म संस्कारअन्तर्गत धेरै संस्कारहरू भए पनि प्रमुख संस्कारहरू सोह्रवटा छन्। जस्तै
गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च। नामक्रिया निष्क्रमोन्नप्राशनं वपनक्रिया ॥
कर्णभेदो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः। केशान्तश्च समुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः ॥
त्रेताग्निसङ्ग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः।

संस्कारको परिगणनामा यो श्लोक पनि प्रसिद्ध छ -

गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिधे।
नामाख्यं सह निष्क्रमेण च तथान्नप्राशनं कर्म च।
चूडाख्यं व्रतबन्धकोप्यथ चतुर्वेदव्रतानां पुरः।
केशान्तः सविसर्गकः परिणयः स्यात् षोडशी कर्मणाम् ॥

१. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४. जातकर्म, ५. नामकर्म, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूडाकर्म, ९. कर्णभेदन, १०. व्रतबन्ध, ११. वेदारम्भ, १२. केशान्त, १३. समावर्तन, १४. विवाह, १५. अग्न्याधान, १६. त्रेताग्निसङ्ग्रह। यी सोह्र संस्कारहरू हुन्। कतिपय आचार्यहरूले कर्णभेदनलाई छुट्टै संस्कार मान्नुभएको छैन। समावर्तन र अन्त्येष्टिलाई छुट्टै सङ्ग्रह गरेको पनि पाइन्छ। जे होस् संस्कारको मूल मान्यता जीवनलाई रूपान्तरित गरी ब्राह्म जीवन प्राप्त गर्नु र मानवजीवन सफल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाउनु संस्कारको मुख्य प्रयोजन हो।

यी सबै संस्कारहरूलाई समय सीमाको आधारमा चार भागमा बाँडिएको छ। प्राग्जन्म संस्कार, शैशव संस्कार, विद्याग्रहण संस्कार र गृहस्थाश्रमसम्बद्ध संस्कार। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त यी तीन प्राग्जन्म संस्कार हुन्। जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडा र कर्णभिदनसम्मका संस्कार शैशव संस्कार हुन्। उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त र समावर्तन शैक्षणिक संस्कार हुन् भने विवाह र अग्न्याधान गृहस्थाश्रमका संस्कार हुन्। जातुकर्ण्यको मान्यतामा अन्त्यकर्मलाई पनि संस्कार भनिएको छ तर अरू आचार्यको चाहिँ यस विषयमा सहमति देखिँदैन।

४. सोह्र संस्कारको सङ्क्षिप्त परिचय

क) गर्भाधान -

हरेक प्राणीहरूको सृष्टि स्त्री र पुरुषको संसर्गबाट हुने कुरा सर्वविदित छ। पुरुषले स्त्रीमा बीज आधान गर्नु गर्भाधान हो। पशु, पक्षी आदि जङ्गम प्राणीमात्र नभएर बोट, वृक्ष आदिको समेत सृष्टि बीजनिषेचनबाटै सुरु हुन्छ। यो प्राकृतिक नियम हो। यहाँ जिज्ञासा हुन्छ - प्राकृतिक प्रक्रियालाई संस्कारको नाम किन दिने ? प्राकृतिक प्रक्रिया विधि, मन्त्र र पद्धतिसँग किन जोड्नुपर्यो ? समाधान हो - पशु, पक्षी र वनस्पतिहरू प्रकृतिको नियमलाई मान्दछन्। ऋतुकालको अनुशासन हुन्छ। निश्चित समयमा मात्र समागम गर्दछन्। पशुहरूले सुँघेर गर्भिणी भए-नभएको थाहा पाउँछन् र गर्भिणीमा समागम गर्दैनन् तर ज्ञानशक्ति पाएको भनिने मनुष्यचाहिँ स्वेच्छाचारी बन्दछ। विकृति फैलाउँछ। त्यस्तो विकृति नफैलियोस् भनेर ऋषिमुनिहरूले समयसीमा र विधिपद्धतिको परम्परा सुरु गरे। आज हामी त्यसलाई संस्कृति पनि भन्दछौं। यो संस्कार वा संस्कृतिको मूल स्वरूप वेदमा नै पाइन्छ। जस्तै - गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वती गर्भं ते अश्विनोभावाधत्तां पुष्करस्रजौ। (अथर्ववेद ५-२५) यस मन्त्रले नारीलाई गर्भधारण सामर्थ्य प्राप्त भएपछि मात्र मर्यादाभित्र रही सुरक्षित गर्भधारण गराउनुपर्ने कुराको सङ्केत गरेको छ। यस्तै ऋतौ भार्यामुपेयात् यो प्रसिद्ध श्रुतिकथनले पनि गर्भाधानका लागि विधिपूर्वक विवाहित पत्नी र ऋतुकाल अनिवार्य मानेको छ। यो अवश्य पनि मर्यादाको लक्ष्मणरेखा हो।

विवाहको चौथो दिन चतुर्थी कर्म गर्दा प्राणास्ते प्राणान्सन्दधामि इत्यादि मन्त्रहरूले पति र पत्नीबीच प्राण, शरीर, इन्द्रिय र मनको समेत एकाकार हुन विधिपूर्वक प्रार्थना र प्रतिज्ञा गरिन्छ। त्यसपछि ऋतुकालमा मात्र दिन जुराएर शास्त्रीय विधि पूरा गरी समागम गर्न सकिन्छ। रजोवती भएको चार रात्रिपछि पुत्र चाहँदा छैटौं, आठौं, दशौं, बाह्रौं, चौधौं र सोह्रौं रात्रि अनि पुत्री चाहँदा पाँचौं, सातौं, नवौं र पन्ध्रौं रात्रि उपयुक्त मानिन्छ। त्यसमा पनि ज्येष्ठा, मूल, मघा, अश्लेषा, रेवती, कृत्तिका, अश्विनी, ३ उत्तरा नक्षत्र निषिद्ध छन्। चतुर्दशी, अष्टमी, औंसी, पूर्णिमा, रिक्ता तिथि, सङ्क्रान्तिजस्ता पर्व, उपवास, एकछाके बसेको बेला, श्राद्धादि दिनमा गर्भाधान गर्नुहुँदैन भन्ने शास्त्रीय निर्देशन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छ। तोकिएको दिनमा देवपूजन र आभ्युदयिक कर्म गरेपछि सङ्कल्पपूर्वक यत्ते सुसीमे इत्यादि मन्त्र पाठ गरेर हृदय छुने र रेतो मूत्रम् भन्ने मन्त्र पढेरै आधान गर्ने व्यवस्था छ। यसरी उपयुक्त स्थान, समय र विधिको निर्देशनले मात्र योग्य सन्तति उत्पादन हुन्छ भनी कडा निर्देशन दिने पूर्वज ऋषिमुनिहरूले योग्य सन्ततिको परम्परालाई सुरक्षित गर्न कति सावधानी अपनाएका रहेछन् भन्ने कुराको जानकारी प्राप्त हुन्छ।

ख) पुंसवन

गर्भाधानपछि दोस्रो वा तेस्रो महिनामा गर्भस्थ शिशु भ्रूण बन्ने समयमा पुंसवन संस्कार गर्नुपर्दछ। गर्भवती हुँदाका आहार, विहार र व्यवहारको प्रत्यक्ष प्रभाव गर्भस्थ शिशुमा पर्दछ। त्यसैले गर्भवतीले के-कस्तो सोच, विचार गर्ने भन्ने कुराको ठूलो महत्त्व हुन्छ। पुंसवन संस्कारको तात्पर्य यही हो। पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्ता आदि पुरुष नक्षत्रमा रिक्ता तिथि नपरेको बेला स्नानादि गरेर पवित्र हुने र दिनभर उपवास बसी सायङ्काल दीप, कलश आदि पूजा गर्ने, त्यसपछि अस्याः पत्न्या उत्पत्स्यमानगर्भस्य बैजिक-गार्भिकदोषपरिहारार्थम् भन्ने सङ्कल्प गरी मातृकापूजन, आभ्युदयिक, ग्रहपूजन आदि गर्ने। त्यसपछि वरको जरा र कमलो कोपिला, कुशको जरा अनि सोमलता अथवा गुर्जो र ब्राह्मीलाई सफा गरी पिस्ने र हिरण्यगर्भः भन्ने मन्त्र पढ्दै पत्नीको दायाँ नाकमा एक-दुई थोपा त्यो रस राखिदिने। त्यसपछि पत्नीको काखमा जल भरिएको करुवा राखेर पतिले साहिली औंलाले पत्नीको पेट छुँदै सुपर्णोसि भन्ने मन्त्र पढ्नुपर्दछ। यो संस्कारले पिता-माताको चाहनाअनुसार छोरी वा छोरा जन्माउन सक्ने देखिन्छ। पुंसवन शब्दको तात्पर्य पुरुषको उत्पत्तिका लागि भन्ने गलत अर्थ गरेर लैङ्गिक विभेद गरेको भन्ने आरोप लगाउन मिल्दैन। वेद र उपनिषद्का धेरै ठाउँमा पौरुष, पुंस्त्व वा पुरुषार्थ भन्ने अर्थमा पुरुष शब्दको प्रयोग हुने भएकाले पुंसवन शब्दको तात्पर्यचाहिँ असल सन्तान उत्पत्तिका लागि भन्ने नै हो।

ग) सीमन्तोन्नयन

गर्भाधानपछि छैटौं या आठौं महिनामा सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्नुपर्दछ। उपयुक्त समयमा पूर्ववत् पूर्वाङ्ग कर्म गरिसकेपछि तिल र मुँगी मिलाएर चरु बनाउनुपर्दछ। विधिपूर्वक अग्निस्थापना र घ्युको आहुतिपछि डुम्रीका दुई फलको झुप्पा, तीन कुशको गुच्छा र दुम्सीको काँडाबाट बनेको विशेष प्रकारको काइँयो लिएर पतिले वा अन्य कोही सधवा नारीले गर्भवतीको सिउँदोलाई माथि फर्काएर कोर्नुपर्दछ। त्यतिखेर पढिने अयमूर्जावतो वृक्ष ऊर्जीव फलिनी भव आदि मन्त्रहरूले गर्भवती नारीलाई तेजस्वी सन्तान पैदा गर्न तयार पारिन्छ। यो सीमन्तोन्नयन संस्कार हो।

सीमन्तोन्नयनकै दिनमा पर्याप्त घ्यु भएको यज्ञशेष खिचडी खाने र वीरगाथा वा वीररसप्रधान सङ्गीत सुन्ने विधान छ। यसबाट पनि गर्भस्थ शिशुको शारीरिक एवम् मानसिक बल बढ्ने देखिन्छ। गर्भवती नारीलाई रामायण, महाभारत आदि सद्ग्रन्थ पढ्न

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगाउनु, वीरगाथा सुनाउनु वा जस्तो सन्तान अपेक्षित हो सोअनुकूल शास्त्रचिन्तन गर्नु र गराउनुको समेत ठूलो महत्त्व हुन्छ। महाभारतका पात्र अभिमन्युले गर्भमा चक्रव्यूह भेदन गर्ने कला सिकेको र प्रह्लादले गर्भावस्थामा नै नारदबाट भगवान्को भक्ति सिकेको सन्दर्भले गर्भावस्थाको संस्कारको कति ठूलो महत्त्व छ भन्ने कुराको सङ्केत गर्दछ। यी तीन प्राग्जन्म संस्कार हुन्। अचेल यी संस्कारहरू लुप्तप्रायः भएका छन्। जसको परिणाम पछाडिका संस्कारहरूको प्रत्यक्ष प्रभाव कम देखिन थालेको छ।

घ) जातकर्म

बालकको जन्म हुनासाथ जातकर्म संस्कार गर्नुपर्दछ। यो पहिलो शैशव संस्कार हो। प्रसूतिको सम्भावना भएपछि आवश्यक पूर्व तयारी गर्नुपर्दछ। प्रसववेदना सुरु हुनासाथ यजतो दशमास्यो आदि मन्त्र पढ्दै सूतिकालाई अभिमन्त्रित जलले सेचन गर्नुपर्दछ। त्यसपछि अवैतु पृष्णीः इत्यादि मन्त्र पढ्नुपर्दछ। बालकको जन्म हुनासाथ पिताले स्नान गर्नुपर्छ। मूल, ज्येष्ठा, व्यतिपात आदि प्रतिकूल समयमा बालक जन्मिएको भए बालकको मुख नहेर्दै नदीमा वा सम्भव नभए घरमै सुवर्णोदकले स्नान गर्नुपर्दछ। त्यसपछि कुलदेवता र पितामाता आदि कुलवृद्धलाई प्रणाम, शुद्ध वस्त्र लगाई तिलचन्दनले अलङ्कृत भई शुद्धासनमा बसेर दीप, कलश आदि पूजा एवम् आभ्युदयिक श्राद्धको प्रतिनिधि सुवर्णदान र अन्नदान गर्नुपर्छ। त्यसपछि ममात्मजस्य गर्भवासजनितदोषोपशमनपूर्वकं आयुर्मेधाभिवृद्धये बीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जातकर्म करिष्ये भनेर सङ्कल्पपूर्वक सुवर्णयुक्त अनामिकाले बालकलाई गोघृत र मधु चटाउनुपर्दछ। ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि यी मन्त्रले घृतमधुप्राशन गराएपछि अग्निरायुष्मन् इत्यादि मन्त्र सुनाउँदै दिवस्परि आदि मन्त्र पढेर बालकको स्पर्श गर्ने अनि मात्र नालच्छेदन गर्ने विधान छ। त्यसपछि बालकलाई प्रोञ्छन् गरेर आमाले इमं स्तनम् इत्यादि मन्त्र पढ्दै स्तनपान गराउने अनि अश्मा भव परशुर्भव यी मन्त्रहरूद्वारा बालकको स्पर्श गर्ने विधि छ। यी मन्त्रहरूको तात्पर्य विचार गर्दा बालकको शारीरिक एवम् मानसिक स्वस्थताका लागि कति सूक्ष्म चिन्तन गरिएको रहेछ भन्ने कुरा थाहा हुन्छ। आफ्ना संस्कारहरू भुलेर सर्वस्व हस्पिटललाई ठान्ने र आवश्यक नपर्दा पनि शल्यक्रियाको रहर गर्ने दम्पतीहरूबाट संस्कारविहीन सन्ततिहरू जन्मिनु स्वाभाविक नै भयो।

जातकर्मपछि बालकको सिरानतर्फ मन्त्रपूर्वक जलकलश राख्नुपर्दछ र ढोकाअगाडि मकलमा अग्नि बालेर सर्स्युँ र कनिकाको आहुति दिनुपर्छ, जसलाई शण्डामर्क हवन पनि भनिन्छ। यो हवन आशौचनिवृत्तिपर्यन्त दैनिक रूपमा गर्नुपर्दछ। यी जातकर्म र छैटौं दिनमा गरिने षष्ठिकादेवीको पूजन गर्दा सूतक लागेको मानिँदैन।

बालकको शरीरमा कुनै उपद्रवको सङ्केत देखिएमा बालकलाई काखमा उत्तरीय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्त्रले ढाकेर कुर्कुरः सुकुर्कुरो आदि मन्त्र पढेर रक्षा गर्नुपर्दछ। साथै कानको नजिकमा अग्निरायुष्मान् इत्यादि मन्त्र पढ्दै बालकको दीर्घायुष्य कामना गरेपछि जातकर्म संस्कार पूरा हुन्छ। छैटौं दिनमा गरिने षष्ठिकापूजन, जीवन्ती र शस्त्रगर्भा भगवतीको पूजन जातकर्मकै एक अङ्ग हो। अलग संस्कार होइन।

ङ. नामकर्म

एकादशेह्नि नाम कुर्यात्। एघारौं दिनमा अथवा त्यसपछि उपयुक्त दिनमा नामकर्म संस्कार गर्नुपर्छ। त्यस दिनमा माता-पिता दुवैलाई स्नान गराएर गणपत्यादिपूजन, अग्निस्थापनापूर्वक हवन, पञ्चगव्यहवन, हुतशेषप्राशन, शण्डामर्कहवन र अभिषेकपछि नाम राखिन्छ। यो प्रचलित विधि नै हो।

जीवनमा नामको ठूलो महत्त्व हुन्छ। व्यक्ति कस्तो हुने ? उसको स्वभाव र संस्कार कस्तो बनाउने ? भन्ने कुरा नामले निर्धारण गर्छ। नाम उच्चारण गर्दा हुने ध्वनि र आउने भाव उसको भविष्य निर्धारण गर्ने आधार हुन्छ। त्यसैले गृह्यसूत्रमा कस्तो नाम राख्ने भन्ने कुरालाई बढी महत्त्व दिइएको छ। दुई वा चार अक्षर भएको अगाडि घोष वर्ण (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, न, ब, भ, म, य), बीचमा अन्तःस्थ (य, र, ल, व) र अन्त्यमा दीर्घ स्वर भएको नाम उपयुक्त हुन्छ। कृदन्त (धातुबाट प्रत्यय लगाएर बनेको) नाम राख्नुपर्छ। पुरुषको नाम तद्धितान्त (शब्दबाट बनेको शब्द) राख्नुहुँदैन। स्त्रीको चाहिँ तद्धितान्त राख्न सकिन्छ तर विषम अक्षर (३, ५ अक्षरको) आकारान्त नाम राख्नुपर्दछ। यस्तै बालकमा आफ्नै परम्परागत संस्कार प्रबल हुन्छ भन्ने मान्यताअनुसार वर्णानुकूल ब्राह्मणको शर्मा, क्षत्रियको वर्मा, वैश्यको गुप्त र शूद्रको नाममा दास लगाउने विधि छ। आज आफूखुसी नयाँ-नयाँ नाम राख्ने होडबाजी चल्दै गर्दा नामसाङ्कर्यले स्वभावसाङ्कर्य हुँदै वर्णगत वैशिष्ट्यमा पनि साङ्कर्य आउन थालेको छ।

च) निष्क्रमण

बालकलाई सर्वप्रथम घरबाट बाहिर निस्किने तयारी गर्नुलाई निष्क्रमण संस्कार भनिन्छ। बालक जन्मेको बाहौं दिनसम्ममा उपयुक्त दिनमा निष्क्रमण संस्कार गर्न सकिन्छ। तेस्रो महिनामा सूर्यको दर्शन गराउने र चौथो महिनामा चन्द्रदर्शन गराउने विधि वीरमित्रोदयमा उल्लेख गरिएको छ। मन्त्रपूर्वक सूर्यको दर्शन गराउँदा बालकको आयु बढ्दछ र चन्द्रमाको दर्शनबाट उसको हृदयमा भावनाको समुचित विकास हुन्छ भन्ने शास्त्रीय मान्यता छ।

छ) अन्नप्राशन

शास्त्रीय विधिपूर्वक पहिलोपटक अन्न खुवाउनुलाई अन्नप्राशन भनिन्छ। छैटौं महिनामा उपयुक्त दिन हेरेर यो संस्कार सम्पन्न गर्नुपर्छ। दीप, कलश आदि पूजा, मातृकापूजन,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आभ्युदयिक श्राद्ध र हवन आदि गरिसकेपछि अन्नपतेन्नस्य नो इत्यादि पढेर अन्नप्राशन गराउनुपर्छ। विधिपूर्वक अन्नप्राशन गराउँदा अन्नबाट बल र बुद्धि साथै आयु प्राप्त हुन्छ भन्ने शास्त्रीय विधि छ। 'जस्तो अन्न त्यस्तै मन। जस्तो मन त्यस्तै प्रवृत्ति।' भन्ने प्राच्य विज्ञानको आधारमा अन्नप्राशनकै दिन जीविकापरीक्षण पनि गरिन्छ। बालकको अगाडि विभिन्न शस्त्र, पुस्तक, लेखनी आदि वस्तु राख्दा सर्वप्रथम बालकले जुन वस्तुमा हात लगाउँछ त्यसैबाट उसको जीविका हुन्छ भन्ने मान्यता छ।

ज) चूडाकर्म

वर्ष दिन पूरा भएपछि दोस्रो वा तेस्रो वर्षमा उपयुक्त दिन हेरेर चूडाकर्म गरिन्छ। चूडाकर्मबाट बल, आयु र तेजसको वृद्धि हुने कुरा शास्त्रमा बताइएको छ। चूडाकर्म गर्दा गर्नुभन्दा पहिले दीप, कलश आदि पूजन, मातृकापूजन, आभ्युदयिक श्राद्ध आदि कर्म पूरा गरी मन्त्रपूर्वक थालीमा गोमयकुण्ड बनाई त्यसमा दूध, दही, घ्यु आदि राख्नु र मन्त्रपूर्वक जुटिकामा क्षुरस्पर्श गरी चूडाकर्म गर्नुपर्छ। अचेल व्रतबन्धकै दिनमा चूडाकर्मको कर्म पूरा गर्ने प्रचलन छ। शास्त्रीय मान्यताअनुसार पहिले नै तेस्रो वा पाँचौं वर्षभित्रै चूडाकर्म गर्नु उपयुक्त हुन्छ भनिएको छ। चूडा शब्दको अर्थ शिखा हो। हिन्दीमा चोटी भन्ने शब्द प्रचलित छ। यो शब्द चूडाबाटै बनेको हो। पहिलोपटकको मुण्डनसँगै शिखा राख्ने संस्कार दिनु चूडाकर्म संस्कारको विशेषता हो। कुनै पनि कर्म गर्दा उपवीत र शिखा चाहिन्छ। सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। द्विजलाई वैदिक कर्ममा उपवीतको आवश्यकता छ भने शिखा सबैका लागि आवश्यक छ। शिखाले मानिसको जीवनमा ब्रह्माण्डीय ऊर्जासँग सन्तुलित तालमेल मिलाउन सहयोग पुर्याउँछ। चिन्तनको, विचारको र ध्यानको माध्यमबाट सर्वव्यापी पूर्ण ब्रह्मशक्तिसँग मनुष्य जीवनको सम्बन्ध जोड्ने काम गर्दछ। त्यसैले चूडाकर्म संस्कारको धेरै ठूलो महत्त्व भएको हो।

झ) कर्णवेध

तेस्रो वा पाँचौं वर्षमा उपयुक्त दिन हेरेर कर्णवेध संस्कार गर्नुपर्दछ। जुनसुकै संस्कार गर्दा पूर्ववत् दीप, कलश स्थापना, गणेशपूजन, कुलदेवतास्मरण र पितृस्मरण गर्नैपर्छ। त्यसपछि सङ्कल्पपूर्वक पूर्वतिर फर्काएको बालकको हातमा मिठाइ दिएर भद्रङ्कर्णेभिः मन्त्रद्वारा दाहिने कानको मन्त्रणा गर्नू। त्यसपछि वक्ष्यन्ती वेदागनीगन्तिकर्णम् इत्यादि मन्त्र पढेर देब्रे कानको मन्त्रणा गर्नू। त्यसपछि सधवा स्त्रीबाट अथवा सुवर्णकार वा चिकित्सकबाट सुवर्णशलाका लिई कर्णविधन गराउनू। कुमारको कर्णवेध गर्दा पहिले दाहिने कान र कुमारीको चाहिँ पहिले देब्रे कानको भेदन गर्नू भन्ने विधि छ। कान छेडिएको नभएसम्म संस्कार पूरा हुँदैन भन्ने नेपाली परम्परा नै हो। गहना झुन्ड्याउनका लागि मात्र नभएर शरीरको सुरक्षा र विशेष गरी मूत्राशयसम्बन्धी रोगबाट जोगाउनका लागि पनि कर्णवेध संस्कारको ठूलो महत्त्व छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चमे वर्षे विद्यारम्भं कारयेत् भन्ने शास्त्रीय नियम छ। वर्तमान समयमा बालक दुई वर्षको नहुँदै मन्टेश्वरीको नाममा स्कुल पठाउने गरिन्छ। यो राम्रो कुरा होइन। पाँच वर्षसम्म बालकलाई अक्षरारम्भ गराउनु वा पुस्तक पढ्न बाध्य बनाउनु आवश्यक छैन भन्ने कुरा प्राचीन ऋषिमुनिहरूको चिन्तन हो। अपरिपक्व मस्तिष्क भएको बालकलाई जबरजस्ती घरबाट बाहिर पठाउनु र पढ्न बाध्य पार्नुले उसको शारीरिक एवम् मानसिक विकासमा व्यवधान खडा गर्दछ। त्यसैले पाँच वर्षपछि मात्र विद्यारम्भ वा अक्षरारम्भ गराइन्छ। कतिपय आचार्यहरूले यसलाई छुट्टै संस्कारको संज्ञा पनि दिएका छन्। तर सोह्र संस्कारको परिगणनाभित्र अक्षरारम्भको परिगणना गरिएको छैन। अक्षरारम्भ गर्दा सरस्वतीपूजन गुरूपूजन गरेर विधिपूर्वक अक्षरारम्भ गराउनुपर्दछ। कतिपय काव्यशास्त्रहरूमा विद्यारम्भ वा अक्षरारम्भको चर्चा आउनुले प्राचीन कालमा समेत यो संस्कारको ठूलो महत्त्व थियो भन्ने थाहा हुन्छ।

ञ) व्रतबन्ध

शैक्षणिक संस्कारको पहिलो सुरुवात विद्यारम्भबाट हुन्छ भने त्यसको विधिवत् शुभारम्भ उपनयन संस्कारबाट हुन्छ। उप भनेको नजिकमा नयन भनेको लैजानु हो। वेदाध्ययनका लागि गुरुको नजिकमा लैजानु उपनयनको सबैभन्दा ठूलो विशेषता हो। त्यसैले पारस्करगृह्यसूत्रका व्याख्याकार गदाधरले उपनयन शब्दको अर्थ यसरी गरेका छन्- आचार्यस्य उप समीपे माणवकस्य नयनम् उपनयनमित्युच्यते। उपनयनञ्च विधिना आचार्यसमीपनयनम्, अग्निसमीपनयनम्, सावित्रीवाचनम् वा अन्यदङ्गमिति। उपनयनका मुख्य चार अङ्गहरू छन्। जनै, गायत्रीमन्त्र, वेदाभ्यास र व्रतपरिपालन। व्रतपरिपालनलाई महत्त्व दिन हाम्रा पूर्वजहरूले व्रतबन्ध भन्ने नाम दिएका छन्। व्रतबन्धको अर्थ हो। व्रतमा बाँधिनु। व्रतबन्ध गरिसकेपछि प्रतिदिन स्नान र सन्ध्योपासनको नियम हुनुपर्दछ। कुनै पनि हालतमा गायत्रीमन्त्र जप्न छोड्नुहुँदैन। अभक्ष्य भक्षण गर्नुहुँदैन। नियमित वेदपाठ गर्नुपर्छ। गुरुसेवा, अग्निसेवा आदि नियमहरू कहिल्यै छोड्नुहुँदैन भन्ने प्रतिबद्धता नै व्रतबन्ध हो।

ब्राह्मणका लागि सातौं वा आठौं वर्षमा व्रतबन्ध गर्ने विधि छ। क्षत्रियका लागि दशौं वा एघारौं वर्ष र वैश्यलाई एघारौं वा बाह्रौं वर्षमा व्रतबन्ध गर्नुपर्छ। कारणवश ढिलो भएछ भने पनि ब्राह्मणका लागि १६ वर्षभित्रमा व्रतबन्ध हुनैपर्छ १६ वर्ष कटेपछि व्रतबन्ध गर्नुको अर्थ छैन। ऊ संस्कारहीन हुन्छ र उसलाई व्रात्य भनिन्छ। विवाह गर्ने बेला व्रतबन्ध गर्न खोज्नु, दक्षिणा मिल्छ भनेर जहिले पनि व्रतबन्ध गराउनु दुवै गलत काम हुन्। व्रतबन्ध गर्दा समय जुराउनुपर्छ। नजुरेको समयमा पनि व्रतबन्ध गर्ने प्रचलन राम्रो होइन। व्रतबन्ध विशुद्ध संस्कार भएकाले यसलाई विधिपूर्वक सम्पन्न गर्नुपर्छ, अन्यथा संस्कार पूर्ण हुँदैन।

व्रतबन्धको विधि प्रचलित भएकाले यहाँ विधिनिर्देश गरिएन। व्रतबन्धमा उपवीत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात् जनै लगाउनुको महत्त्व छ। तर जनै लगाउनुलाई व्रतबन्धको अङ्ग माने पनि जनैलाई धागोमात्र सम्झिने र विदेशबाट मगाएको धागो काँधमा लगाएर जनैधारी ठान्ने वर्तमान परम्पराको यज्ञोपवीत र व्रतबन्धसँग कुनै साइनो छैन। जनै र धागो फरक फरक चिज हुन्। जनै शब्दको मूल यज्ञोपवीत हो। यज्ञनिमित्तक अभिमन्त्रणा गरेको विधिपूर्वक बनाएको सूत्रलाई यज्ञसूत्र वा यज्ञोपवीत भनिन्छ। वेदका एक लाख मन्त्रहरूमध्ये ६ हजार मन्त्रहरू (कर्मभाग र उपासना भाग) को अध्ययन र निर्देशनको पालन यज्ञोपवीतसँग सम्बद्ध छ। त्यसैले ६ अङ्गुलको धागोबाट जनै बनाइन्छ। जनैमा रहेका तीन शिखाहरूले तीन व्याहृति, तीन वेद र त्रिगुणात्मक जगत्सृष्टि गर्ने परम तत्त्व परब्रह्मसँग सम्बन्ध राख्छन्।

हरेक सूत्रका सरा र शिखाहरूलाई ऊर्जावान् बनाउन मन्त्रद्वारा अभिमन्त्रित हुनुपर्दछ। यसरी अभिमन्त्रित यज्ञोपवीतको वेदाध्ययनसँग सम्बन्ध छ। त्यसैले सेवाकर्ममा लाग्ने वेदाध्ययनको जिम्मेबारी वहन गर्नु नपर्ने वर्गलाई जनै लगाउनु आवश्यक छैन। जनै लगाउनु वा वेदाध्ययनको नियम पालन गर्नु त्यति सजिलो कुरा होइन। सेवाको मात्र जिम्मेबारी लिएका व्यक्तिलाई जनै नलगाए पनि हुने स्वतन्त्रता दिनु भनेको जनै लगाउन नदिएर वञ्चित गरेको भन्ने ठान्नु मूर्खतापूर्ण र हास्यास्पद कुरा हो।

यज्ञोपवीत संस्कारको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो गायत्रीमन्त्र ग्रहण। गायत्रीमन्त्र द्विजातिको सबैभन्दा महत्त्वपूर्ण मन्त्र हो। गायत्री मन्त्रद्वारा संस्कारित हुनुलाई शास्त्रमा दोस्रो जन्म भनिएको छ। पहिलो जन्म पिता-माताबाट भयो भने दोस्रो जन्म गुरु र गायत्रीबाट भयो। दोस्रो जन्म भएकोले व्रतबन्ध गरेको व्यक्तिलाई द्विज भनिन्छ। जन्मबाट ब्राह्मण भए पनि संस्कार गरेर मात्र द्विज हुन्छ। विधिपूर्वक गायत्री मन्त्रको साधना गर्दा मानिस सामान्य मानिस नभई विशिष्ट ऊर्जा प्राप्त गर्ने, भगवत्तत्त्व साक्षात्कार गर्ने व्यक्ति बन्दछ। कारणवश अरू शास्त्रीय कर्म गर्न नसके पनि सदाचार पालन गर्दछ र गायत्रीमा निष्ठा राख्दछ भने त्यो प्रशंसनीय हुन्छ। सदाचारको पालन नगर्ने र गायत्रीमन्त्र जपमा निष्ठा नराख्ने व्यक्ति जतिसुकै विद्वान् भए पनि त्याज्य छ भनेर शास्त्रकारहरूले बताएका छन्। मनु भन्दछन् - गायत्रीमात्रसारोपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः। नायन्त्रितश्चतुर्वेदी सर्वाशी सर्वविक्रयी। गायत्री मन्त्र गुरुको मुखबाट विधिपूर्वक सुन्नुपर्दछ अनि मात्र मन्त्र हुन्छ। युट्युबमा सुनेर वा पुस्तक पढेर लिइएका अक्षरपङ्क्तिहरू मन्त्र हुन् सक्तैनन्। मन्त्रग्रहण भनेको गुरुशिष्यको परम्परागत विधि र गुरुका माध्यमले आफूमा प्राप्त हुने ईश्वरीय ऊर्जाको प्रवाह हो। त्यसैले सनातन संस्कृतिमा गुरुको महत्त्व बताइएको हो।

ट) वेदारम्भ

ब्राह्मण कुलमा जन्मिएकोलाई ब्राह्मण भने पनि संस्कार नगरेसम्म ऊ द्विज हुँदैन। ब्राह्मणले द्विज बनेर मात्र पुग्दैन, विप्र बन्नुपर्छ। विप्र बन्न वेदाध्ययन आवश्यक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छ। त्यसैले भनिन्छ - जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्काराद् द्विज उच्यते। वेदपाठाद् भवेद्विप्रः त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते। ।यज्ञोपवीत संस्कार गरेपछि वेद पढ्ने अधिकार प्राप्त हुन्छ। तर वेदाध्ययन पनि विधिपूर्वक हुनुपर्छ। त्यसैले वेदारम्भलाई छुट्टै संस्कार मानिएको छ। व्रतबन्धसँगै गुरुसेवा, अग्निसेवा र नियमित व्रतपालनपूर्वक वेदाध्ययन गर्नुपर्छ। वेद अनन्त छन्। सबै वेद सबैले पढ्न सकिँदैन। त्यसैले ऋषिमुनिहरूले स्वशाखाको वेद पढ्ने र शाखाअनुसार संस्कार गर्ने परम्परा चलाएका छन्। आफ्नो शाखा नबुझी अरूको वेद पढ्दा शाखारण्ड दोष हुन्छ भने विधि पूरा नगरीकन वेदाध्ययन गर्दा वेदाध्ययनको फल प्राप्त हुँदैन, उल्टै प्रत्यवाय लाग्छ। वेदारम्भ गरिसकेपछि विधिपूर्वक कम्तीमा बाह्र वर्ष लगाएर वेदाध्ययन पूरा गरेपछि मात्र समावर्तन संस्कार गर्नुपर्छ। यो प्राचीन पद्धति हो। वर्तमान समयमा व्रतवन्धकै दिन वेदारम्भ गरेर तुरुन्तै समावर्तन पूरा गरेको मान्ने चलन छ। यसरी कथञ्चित् विधि पूरा गरे पनि वेदाध्ययन पूरा हुँदैन। त्यसैले गुरुमुख गरेर वेद अध्ययन पूरा गर्नैपर्छ। यसलाई वेदव्रत वा ब्रह्मव्रत भनिन्छ। वेदाध्ययनसँगै वेदाङ्गको पनि अध्ययन गर्नुपर्छ। अनि मात्र साङ्गवेद पूरा हुन्छ। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द र ज्योतिष वेदका अङ्गहरू हुन्। व्रतबन्धपछि गुरुकुलमा गएर नियमपूर्वक अङ्गसमेत वेदको अध्ययन गर्नुपर्दछ। अनि मात्र वेदाध्ययनको नियम पूरा भएको मानिन्छ।

ठ) केशान्त

व्रतबन्ध गरेर व्रतमा बाँधिएपछि वेदाध्ययनका नियमहरू पालन गर्नुपर्छ। जसलाई ब्रह्मचर्य व्रत पनि भनिन्छ। क्रमशः उमेर बढ्दै गएपछि मानिसमा काम भावनाको उदय हुन् थाल्छ। तर काम भाव प्रकट भएर मानिस गलत बाटोमा नजाओस् र मर्यादाको सीमा उल्लङ्घन नगरोस् भनेर कडा किसिमको ब्रह्मचर्यको नियम सिकाइएको हुन्छ। ब्रह्मचर्यले नै ब्राह्मणको ब्राह्मणत्व सुरक्षित छ। ब्रह्मचर्याद् ब्राह्मणस्य ब्राह्मणत्वं विधीयते। ब्रह्मचर्य व्रतको सबैभन्दा महत्त्वपूर्ण पक्ष हो बीर्यरक्षा। प्राचीन कालमा भनिन्थ्यो - मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुरक्षणात्। अर्थात् एक बुँद पनि वीर्य व्यर्थमा खेर जानु भनेको मृत्यु नै हो वीर्यरक्षा नै जीवनरक्षा हो। आज यो परम्परा क्रमशः हराउन थालेको छ। त्यसैले समाजमा चारित्रिक न्यूनता बढ्दै गएको छ र चरित्रको बन्धनमा बाँधिन नपरेकै कारणले बलात्कार र व्यभिचार जस्ता मानवताका कलङ्कहरूको समाचार सुनिन थालेका छन्।

प्राचीन कालमा हरेक बालकलाई गुरुकुलको निवासको नियमसँगै ब्रह्मचर्य व्रतको कठोर नियम अनिवार्य थियो। जसमा सिएको लुगा नलगाउने, मेखलामात्र लगाउने, लठ्ठी लिने, आफ्नो घर नबस्ने, गुरुकुलमा बस्ने, गुरुसेवा गोसेवा गर्ने, भिक्षा मागेर खाने, तेल, मह, पिरो, अमिलो जस्ता उन्मादक वस्तुहरू नखाने, उच्छृङ्खल गीतसङ्गीतहरू नसुन्ने, छाता, जुत्ता नलगाउने, नङ, केश पाल्ने जस्ता नियमहरूको पालन गर्नुपर्थ्यो। १६ वर्षसम्म यसरी नियम पूरा गरेपछि व्यक्तिमा अलि परिपक्वता आउँछ भन्ने मान्यता हो। त्यसैले त्यो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्रतबन्धदेखि पालिएको केशलाई भखरै पलाउन थालेका दारीजुँगालाई समेत १६ वर्षमा विधिपूर्वक काट्ने गरिन्छ। यसैलाई कहीं गोदान कर्म वा केशान्त संस्कार भनिन्छ।

ड) समावर्तन

सम्यक् आवर्तनं अर्थात् वेदाध्ययन पूरा गरी गुरुकुलबाट विधिपूर्वक घर फर्किनुलाई समावर्तन भनिन्छ। शुभ दिनमा वैदिक विधिद्वारा अभिमन्त्रित जलले स्नान गरिने भएको हुनाले त्यस दिनपछाडि बटुकलाई स्नातक पनि भनिन्छ। समावर्तन पूरा भएपछि वेदाध्ययनका नियमहरूको साङ्गता हुन्छ। त्यस दिनपछाडि छाता, जुत्ता प्रयोग गर्न, शृङ्गार सामग्री र गाजल आदि आलङ्कारिक वस्तुहरू स्वीकार गर्न अनुमति प्राप्त हुन्छ। समावर्तन भएर गुरुघरबाट घर आइसकेपछि गृहस्थाश्रममा प्रवेश गर्ने योग्यता प्राप्त हुन्छ। वर्तमान समयमा व्रतबन्धकै दिन एकै क्षणमा समावर्तन पूरा भएको मानिन्छ। कथञ्चित् विधि पूरा गरे पनि समावर्तनको समय पूरा नभएको हुनले समावर्तनको अवधिसम्म यथाशक्ति ब्रह्मचर्य व्रत पालन गर्नु र समावर्तनको अवधिमा गुरुको अनुमति लिएर मात्र गृहस्थाश्रममा प्रवेश गर्नु उचित हुन्छ।

ढ) विवाह

वैदिक सनातन संस्कृतिमा प्रसिद्ध चार आश्रमहरूमध्ये गृहस्थाश्रम महत्त्वपूर्ण छ। वशिष्ठ ऋषि भन्नुहुन्छ- चतुर्णामाश्रमाणाञ्च गृहस्थस्तु विशिष्यते। गृहस्थाश्रममा प्रवेश गर्नुको तात्पर्य हो विवाह संस्कार सम्पन्न गर्नु। अभिभावक पिता-माता वा गुरुजनहरूले कुल, खान्दान र शील-स्वभावको विचार गरेर तयार गरिएकी असमानगोत्रा अर्थात् गोत्र फरक भएकी कन्यासँग विधिपूर्वक विवाह गर्नु विवाह संस्कार हो। विवाहलाई विषयभोगको रूपमा मनाउनु विकृति हो। वर्तमान समयमा विवाहलाई संस्कारको रूपमा भन्दा पनि मोजमस्ती र फोटो खिचाउने कृत्यको रूपमा मनाएको पाइन्छ। यो संस्कार होइन। संस्कार त्यो हो, जहाँ शास्त्रोक्त विधिको परिपालन होस्। वर र कन्याको नक्षत्र र गुण विचार गरेर उपयुक्त कन्यालाई विवाहका लागि तयार पारेपछि अभिभावकहरूले नियमपूर्वक वाग्दान गर्दछन्। त्यसपछि गृह्यसूत्रमा उल्लेख भएअनुसार उपयुक्त समयमा विधिपूर्वक कन्याको पिताले कन्यादान गर्दछन्। कन्यादान स्वीकार गर्ने व्यक्तिलाई नारायणको रूपमा र कन्यालाई लक्ष्मीको रूपमा पूजा गर्ने पनि विधि छ। विवाहका विधिहरू प्रायः प्रतीकात्मक रूपमा लोकमा प्रचलित छन् र ती हरेक कर्महरूको विशेषतालाई गहिरिएर विचार गर्दा गृहस्थाश्रम साँच्चिकै एउटा शास्त्रीय कर्म गर्न तोकिएको आश्रमीय पद्धति हो भन्ने लाग्छ। त्यसैले हाम्रो परम्परामा पत्नीलाई पत्नीमात्र नभनेर धर्मपत्नी भन्ने र पत्नीले पतिलाई सामान्य पुरुष नठानेर भगवान्‌कै सम्मान गर्ने परम्परा छ। वरले वधूलाई हृदयालम्भन गर्दा भन्ने मन्त्रहरू मम व्रते ते हृदयं दधामि इत्यादि मन्त्रहरूले पति र पत्नी दुई नभएर एउटै गृहस्थाश्रम रूप रथका दुई चक्का भएको देखिन्छ। हरेक वैदिक वा लौकिक कर्म गर्दा पत्नी नभएसम्म कर्म पूरा नहुने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधिले पनि विवाह संस्कारलाई वैदिक संस्कृतिमा कति महत्त्व दिइएको रहेछ भन्ने कुरा सिद्ध हुन्छ।

ण) अग्न्याधान

विवाह संस्कार सम्पन्न भएपछि प्रत्येक दिन हवन गर्न विधिपूर्वक अग्नि स्वीकार गर्नुपर्ने हुन्छ, जसलाई गृह्याग्नि पनि भनिन्छ। अग्नि तीन थरी छन् - गार्हपत्य, आहवनीय र दाक्षिण। गृहस्थाश्रममा प्रतिदिन प्रज्वलित गरिने अग्निलाई गृह्याग्नि वा गार्हपत्य अग्नि भनिन्छ। विशेष हवनका लागि आवाहन गरिएको आहवनीय अग्नि हो। मृत्युपछाडि शरीरको हवन गरिने अग्नि दाक्षिणाग्नि हो। अग्नि स्वीकार गरेर प्रतिदिन अग्निहोत्र गर्नैपर्ने शास्त्रीय विधि हो तर यो विधिलाई वर्तमान समयमा नियमपूर्वक पालन गर्ने गरेको पाइँदैन तर अग्निहोत्रको प्रतिनिधिभूत नित्य हवन गर्ने र बलिवैश्वदेव गर्ने विधि अझै पनि प्रचलित छ। हरेक गृहस्थले पञ्च महायज्ञहरू गर्नैपर्छ। ब्रह्मयज्ञ (वेदाध्ययन), पितृयज्ञ (पितृतर्पण र नित्यश्राद्ध), देवयज्ञ (हवन र देवपूजन), भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेव) र मनुष्ययज्ञ (अतिथिपूजन)। यी पाँच महायज्ञहरू हरेक गृहस्थका अनिवार्य कर्तव्यहरू हुन्। विशेष गरी ब्राह्मणलाई षट्कर्मा भनिन्छ। वेदपाठ गर्नु र गराउनु, यज्ञ गर्नु र गराउनु र दान दिनु र लिनु यी षट्कर्महरू ब्राह्मणका कर्तव्यहरू हुन्।

६. उपसंहार

ब्राह्मणले ब्राह्मणत्वको रक्षा गर्न शास्त्रीय नियमहरूको यथासम्भव पालन गर्नैपर्छ। ब्राह्मणले मात्रै होइन क्षत्रिय, वैश्य आदि सबै द्विजातिका आ-आफ्ना कर्तव्यहरू शास्त्रमा विहित छन्। शास्त्रले बताएअनुसार स्वकर्तव्य पालन गरेमा मात्र सिद्धि प्राप्त हुन्छ र जीवन सफल हुन्छ। भगवद्गीतामा भगवान् श्रीकृष्ण भन्नुहुन्छ- स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। आ-आफ्ना कर्तव्य गरेर जीवनको सफलता प्राप्त गर्नु मानवको कर्तव्य हो। त्यसैले भनिन्छ - शास्त्राणि यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति मानवाः। मतयो यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानराः।। शास्त्रले जे कुरा बताएका छन् त्यसको परिपालन गर्ने मानवहरू हुन्। आफूखुशी मनपरी व्यवहार गर्नेहरू मानव होइनन् वानरहरू हुन्। त्यसैले सत्संस्कारको परिपालना गर्दै शास्त्रोक्त कर्म गरेर आफ्नो यो अमूल्य जीवनलाई सफल र सार्थक बनाउनु हामी सबैको कर्तव्य हो।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आयुर्वेदमा उल्लिखित स्वस्थ जीवनका आधार

✍ डा.काशीराज शर्मा सुवेदी

हाम्रो जीवनमा नभई नहुने र भएमा जीवन सफल र सरल हुने उपाय स्वस्थ हुनु अथवा रोगहरूबाट मुक्त रहनु हो। स्वस्थ जीवन नै जीवनमा सुखको आधार हुन्छ र त्यसकै माध्यमबाट जीवनका सबै उद्देश्य पूरा गर्न सकिन्छ। स्वस्थ जीवनको मूल आधार आयुर्वेद हो।

आयुर्वेदको आधार अथर्ववेदलाई मानिएको छ। यो शाश्वत र अनादि छ। जुन शास्त्रबाट आयुको स्वरूप, आयुको मान, आयुका प्रकार, आयुलाई हित गर्ने अर्थात् त्यसको संरक्षण र संवर्धन गर्ने खानपान र व्यवहारको साथमा आयुलाई अहित गर्ने खानपानका वस्तु र व्यवहारको बारेमा ज्ञान हुन्छ त्यसलाई आयुर्वेद भनिन्छ।[१] शरीर, इन्द्रिय, मन र आत्माको संयोग भएर चेतन र क्रियाशील भएको अवस्थालाई आयु अथवा जीवन भनिन्छ। आयुको मान भन्नाले मानिस अथवा कुनै प्राणी सामान्य अवस्थामा कति समयसम्म बाँच्न सक्छ त्यो अवधि हो। वैदिक कालदेखि नै त्यो अवधि सय वर्षको मानिंदै आएको पाइन्छ- शतं जीवेम शरदः। यो सरदर आयु हो।

आयुका प्रकार चार मानिएका छन्- हित आयु, अहित आयु, सुख आयु र असुख (दुःख) आयु। शरीर हृष्टपुष्ट, इन्द्रियहरू आआफ्नो काम गर्न समर्थ, मन प्रसन्न तथा रोगरहित भई स्वस्थ रहेको आयुलाई सुख आयु र त्यसको विपरीत शरीर दुब्लो-कमजोर, इन्द्रियहरू आआफ्ना कामहरू गर्न असमर्थ, मन खिन्न, क्रोध-चिन्ता-भय आदिले व्याकुल भई जीवनका लक्ष्यहरू पाउन नसकेको जीवनको अवस्थालाई दुःख आयु भनिन्छ।[२] प्राणीहरूको हितमा संलग्न भएको, असल कर्महरू गर्ने र नराम्रा कामहरूबाट जोगिएको जीवन हित आयु हुन्छ भने त्यसको विपरीत प्राणीहरूलाई हिंसा आदिद्वारा हानि पुर्याइरहेको, नराम्रा आफु र अरूलाई हानि हुने कामहरूमा लागेको तथा हित हुने कामबाट विमुख भएको जीवन अहित आयु हुन्छ।

आयुर्वेदको प्रयोजन स्वस्थ व्यक्तिको स्वास्थ्यको रक्षा गर्नु र रोगीहरूको रोगको

✍ *उपप्राध्यापक, आयुर्वेद क्याम्पस, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवारण गरी तिनलाई स्वस्थ बनाउनु हो। त्यस प्रयोजनलाई सिद्ध गर्ने अथवा त्यसमा मद्दत गर्ने खाने-पिउने पदार्थहरू तथा विभिन्न कामहरू आयुका लागि हित गर्ने हुन्छन् भने तिनका विपरीत काम गर्ने अर्थात् उक्त प्रयोजन सिद्ध नगर्ने तथा त्यसमा बाधा पुर्याउने खाने-पिउने वस्तुहरू र विभिन्न कामहरू आयुका लागि अहित गर्ने मानिन्छन्। आयुलाई हित गर्ने पदार्थहरूलाई औषधि अथवा भेषज भनिन्छ र अहित गर्ने पदार्थहरूलाई अभेषज भनिन्छ।

संसारमा कुनै पनि वस्तु सधैं हित गर्ने अथवा हानि गर्ने हुँदैन, किनभने संसारमा पाइने सबै वस्तुहरू पाञ्चभौतिक अर्थात् पाँच महाभूतहरू मिलेरै बनेका हुन्छन् तैपनि धेरैजसो प्रयोग गर्दा हित गर्ने वस्तुलाई हित र प्रायः अहित गर्ने वस्तुलाई अहित मानिन्छ। किनभने हित मानिएको वस्तु पनि प्रयोग गर्न नजानेमा, मात्रा बढी भएमा, राम्रो संस्कार नगरिएमा अहित हुन जान्छ र अहित भनेको वस्तु पनि प्रयोग गर्न जान्दा हित गर्ने हुन्छ। जस्तो कि दुध सामान्य रूपमा हित गर्ने मानिन्छ तर त्यसको सेवन अमिलो वस्तुसँग, नउमालीकन, बासी अवस्थामा गर्दा त्यसले हित गर्दैन। विष हानिकारक हो तर संस्कार गरेर उचित मात्रामा प्रयोग गर्दा त्यसले कैयन् रोगहरू निको पार्न सक्छ।[३]

भेषजका फेरि दुई प्रकार मानिएका छन् 'स्वस्थ व्यक्तिमा ऊर्जा दिने र रोगीको रोग निको पार्ने। स्वस्थ व्यक्तिलाई स्वस्थ रहन मद्दत गर्ने भेषजअन्तर्गत हित आहार, हित विहार, सदाचार[४], रसायन तथा वाजीकरण यी उपायहरू पर्छन्। यी सबै स्वस्थ जीवनका लागि अपनाइने कर्महरू हुनाले यिनको सामूहिक नाम स्वस्थवृत्त हुन्छ।[५] हित आहार र विहार मानिसको शरीरको प्रकृति (बनोट), दिन-रात-ऋतु आदि समय, रोगको अवस्था आदिअनुसार हुन्छन्। स्वस्थ रहन प्रतिदिन गर्नु पर्ने कामहरूलाई दिनचर्या भनिन्छ भने छुट्टाछुट्टै ऋतुहरूअनुसार गर्न योग्य कामहरूलाई ऋतुचर्या भनिन्छ।

दिनचर्या

मानिसको दैनिक जीवनको आरम्भ सूर्योदयबाट हुन्छ। स्वस्थ रहनका लागि मानिसले दिनदिनै सूर्योदयदेखि सावधान भई केही शरीरलाई हित गर्ने कामहरू गर्नु पर्ने हुन्छ। ती कामहरू यस प्रकार छन्

१) ब्राह्म मुहूर्तमा उठ्नु

सूर्योदय हुनुभन्दा पहिलेको १-१.५ घण्टाको समयलाई ब्राह्म मुहूर्त भनिन्छ।[६] स्वस्थ रहनका लागि यस समयमा उठ्नु आवश्यक हुन्छ। उठेपछि परमात्माको, गुरुहरू तथा इष्ट देवतालाई मनमा प्रणाम गर्नु पर्छ। साथमा माङ्गलिक वस्तुहरू दही, घ्यू , ऐना, सर्स्युँ, बेल, गोरोचन, फूलको माला, आफ्नो हत्केलाको दर्शन र स्पर्शन गर्नु पर्छ।

२) शौच

उठेपछि मल-मूत्रको विसर्जन गर्ने इच्छा स्वाभाविक रूपमा हुन्छ। अतः आलस्य नगरी मल-मूत्रको विसर्जन गरेर मलद्वार शुद्ध गरी माटो वा साबुन आदिद्वारा हात-गोडा राम्रो गरी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धुनु पर्छ। यसो गर्नाले कान्ति र बल बढ्छ, शरीर शुद्ध भई पापको नाश हुन्छ।

३) दन्तधावन

भोजन मुखबाट गरिन्छ। मुखमा भएका दाँत, जिब्रो आदि स्वच्छ भएमा भोजन गर्दा त्यसबाट राम्रो पोषण पाइन्छ। नत्र त्यहाँ जम्मा भएको मल आदिबाट अन्न दूषित भई एकातिर राम्रो पोषण हुन पाउँदैन, अर्कोतिर दूषित अन्नको सेवनबाट रोगहरू उत्पन्न हुने डर पनि हुन्छ। साथमा दाँत, जिब्रो आदिमा जमेको मलले गर्दा दाँतहरू मैला देखिने, तिनको क्षय हुने, मुख गन्हाउने जस्ता अनेक समस्याहरू उत्पन्न हुन्छन्। यी समस्याहरूबाट बच्नका लागि दिनदिनै आफू बसेको गाउँ होस् वा सहर, त्यहाँ दतिउन, ब्रस, दन्तमञ्जन जे उपलब्ध हुन्छ त्यसद्वारा दाँत माझ्ने गर्नु पर्छ। दतिउनमा निम, बबुल, करञ्ज, आँप, शिरीष र अपामार्ग आदिको डाँठ प्रयोग गर्न सकिन्छ। त्यसका लागि सम्बन्धित डाँठ कान्छी औंला जति मोटो लिएर त्यसको एकातिर चबाएर नरम कुचो जस्तै बनाई त्यसले दाँतको भित्र-बाहिर, दायाँ-बायाँ सबै भाग सफा हुने गरी र गिजाहरू नघोटी माज्नुपर्छ। त्यसो गर्नाले दाँतहरू स्वच्छ र सुन्दर देखिन्छन् र रोगहरूबाट मुक्त हुन्छन्।[७] दतिउनले दाँत माझ्ने काम घाँटी, तालु, ओठ, दाँतका रोगहरू, मुख पाकेको बेलामा, दम, खोकी लाग्दा, वमन भइरहेको अवस्थामा, अजीर्ण हुँदा निषेध गरिएको छ।

४) जिह्वानिर्लेखन

दाँत माझेपछि जिब्रो सफा पार्न जिब्रीको प्रयोग गर्नु पर्छ। जिब्रो सफा गर्ने कामलाई जिह्वानिर्लेखन भनिन्छ। त्यसका लागि चाँदी, तामा आदि धातुबाट बनेको जिब्री अथवा दतिउन नै बिचबाट चिरेर प्रयोग गर्न सकिन्छ। जिब्री अथवा दतिउन प्रयोग गर्दा त्यो दश अङ्गुल लामो, कोमल (कमलो) र स्निग्ध हुनु पर्छ। त्यसलाई हलुका हातले बिस्तारै जिब्रोको फेददेखि टुप्पोसम्म सफा हुने गरी चलाउनु पर्छ। यसको प्रयोगबाट जिब्रोको मल तथा दुर्गन्ध हट्छ, मुखको स्वाद राम्रो हुन्छ।

५) गण्डूषधारण

जिब्रो सफा गरिसकेपछि मुखमा पानी लिएर बारम्बार चार-पाँचपटक कुल्ला गर्नु पर्छ। त्यसका लागि मौसमअनुसार सामान्य अवस्थामा चिसो पानीले र हिउँदतिर मनतातो पानीको प्रयोग गर्नु पर्छ। त्यसबाट मुखमा भएको कफ, र्याल आदि फोहोर पदार्थ बाहिर निस्कन्छ र मुख शुद्ध हुन्छ।[८]

६) मुखप्रक्षालन

कुल्ला गरेपछि चिसो अथवा मनतातो पानीले मुख धुनु पर्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७. नस्य तथा अञ्जनको प्रयोग

नाकको र आँखाको स्वच्छता एवं स्वास्थ्यका लागि क्रमशः नाकमा नस्य र आँखामा अञ्जनको प्रयोग गर्नु पर्छ। दैनिक रूपमा नस्यको प्रयोग गर्दा तोरी वा सर्स्युंको तेल अथवा औषधिसिद्ध अणुतेल आदि २-२ थोपा नाकमा राख्नुपर्छ। आँखामा अञ्जनको प्रयोग गर्नु पर्छ।

८. नखादिकर्तन (नङ आदि काट्नु)

हप्तामा ५-६ दिनको अन्तरमा आफ्ना नङ, दाह्री, जुँघा आदि काट्ने गर्नुपर्छ। त्यसबाट स्वच्छताका साथमा शरीरको शोभा पनि बढ्छ।

९. व्यायाम

शरीरका अङ्गहरूलाई बलियो र सुगठित राख्न आफ्नो शक्तिअनुसार दिनदिनै व्यायाम गर्नु पर्छ। व्यायाम गर्नाले शरीरमा हलुङ्गोपन हुन्छ, शारीरिक कामहरू राम्रोसित गर्ने शक्ति बढ्छ, शरीरका अङ्गहरू पुष्ट र सुगठित हुन्छन्, शरीरमा भएका दोषहरू घटेर जान्छन्, पाचनशक्ति र शरीरको सुन्दरता बढ्छ। वृद्ध अवस्थाले चाँडै अशक्त हुनु पर्दैन, शरीरमा मोटोपना भए त्यो घट्दै जान्छ। विशेष खालका परिश्रम पर्ने व्यायामहरू हिउँद र वसन्त ऋतुमा गर्नु पर्छ। हल्का व्यायाम, योग आसन आदि सबै ऋतुहरूमा गर्न सकिन्छ।[९]

१०. अभ्यङ्ग

व्यायाम गरेपछि केही आराम गरी शरीरका अङ्गहरूमा अभ्यङ्ग अर्थात् तेल लगाएर मालिस गर्नु पर्छ। समयअनुकूल र पर्याप्त हुँदा शरीरका सबै अङ्गहरूमा मालिस गर्नु पर्छ। नभ्याएको अवस्थामा शिरमा, कानमा र गोडामा विशेष रूपमा गर्नु पर्छ। अभ्यङ्गका लागि तोरी-सर्स्युंको तेल, सुगन्धित अगर आदिबाट अथवा विभिन्न औषधिहरूबाट सिद्ध तेलको उपयोग हुन सक्छ। अभ्यङ्ग गर्नाले शरीरको थकाइ मेटिन्छ, बल, कोमलता बढ्छ, निद्रा राम्रो लाग्छ र शरीर पुष्ट पनि हुन्छ तथा वायु र कफसम्बन्धी रोगहरू हुन पाउन्नन्। शिरमा अभ्यङ्ग गर्नाले आँखाको ज्योति राम्रो रहन्छ, केश काला, लामा, कोमल हुन्छन्। गोडामा अभ्यङ्ग गर्नाले गोडा दह्रा हुन्छन्, आँखाको शक्ति बढ्छ, निद्रा राम्रो लाग्छ, गोडा लाटो हुने, जकडिने, पैताला फुट्ने हुँदैन। ज्वरो आइरहेको अवस्थामा, अजीर्ण हुँदा, वमन र अतिसार भएको अवस्थामा पनि शरीरमा अभ्यङ्ग गर्न हुँदैन।

११. उद्वर्तन

शरीरमा भएको मल पसिनाको माध्यम हुँदै छालाबाट निस्कने गर्छ। त्यसले छालामा मयल जम्मा हुने, खटिरा आउने, चिलाउने आदि हुन्छ। अतः त्यस मललाई हटाउन पिठो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदिमा तेल, बेसार पानी मिसाई शरीरमा दल्ने र केही बेरपछि त्यसलाई मलेर निकाल्ने गरिन्छ। त्यसलाई उद्वर्तन भनिन्छ। उद्वर्तन गर्नाले मेद र कफ घट्छ, छाला स्वच्छ र कोमल हुन्छ।

१२. स्नान

उद्वर्तनपछि शरीरलाई पूर्ण रूपमा शुद्ध बनाउनका लागि स्नान गर्नु अर्थात् नुहाउनु पर्छ। स्नान गर्दा स्वस्थ अवस्थामा सकभर चिसो पानीले बिहानै नुहाउनु पर्छ। हिउँदतिर भने मननातो पानीले स्नान उचित हुन्छ। चिसो पानीले स्नान गर्दा पित्तको शमन हुन्छ, शरीरमा फुर्ती आउँछ। तातो पानीले स्नान गर्दा कफको शमन भई बल बढ्छ। तर शिरमा बढी तातो पानीले स्नान गर्नु हुँदैन। घाँटीभन्दा माथि चिसो पानी र तलको भागमा मनतातो पानीले स्नान गर्नु उचित हुन्छ। तातो पानीले निरन्तर शिरमा स्नान गर्दा केश कमजोर भई झर्ने र आँखाको दृष्टि पनि कम हुने डर हुन्छ। स्नान गर्नाले अग्निको दीपन हुन्छ, ओज, बल र आयु बढ्छ, शरीरको मयल, पसिना, चिलाउने आदि हट्छ, तिर्खा, थकाइ, दाह शान्त हुन्छन्। अर्दित रोग, आँखा, मुख, शिर र कानका रोग लागेको अवस्थामा, अजीर्ण हुँदा, रुघा लागेको बेलामा र भोजन गरेको लगत्तै स्नान गर्नु हुँदैन।

१३. अङ्गपरिमार्जन

स्नान गरेपछि स्वच्छ लुगाले शरीरका शिरदेखि गोडासम्म सबै अङ्गहरू पुछ्नु पर्छ। यसो गर्नाले छालामा भएका दोषहरू हट्छन् र शरीरको कान्ति बढ्छ।[१०]

१४. वस्त्रधारण

अङ्गपरिमार्जन गरेपछि मौसमअनुसार सुहाउने सुती अथवा ऊनी आदि लुगाहरू लगाउनु पर्छ। हिउँदका महिनाहरूमा पाट अथवा ऊनका र केही रातो रङ्गका लगाउनु राम्रो हुन्छ। सुती वस्त्रहरू जुनसुकै ऋतुमा पनि लगाउन सकिन्छ। ती ऋतुअनुसार शीत अथवा न्याना पनि हुन्छन्। वस्त्र धारण गर्नाले छाला घाम, धुलोमैलोबाट सुरक्षित हुन्छ र शरीरको शोभाका साथमा यश र आयु पनि बढ्छन्।[११]

१५. भोजन

उक्त कर्महरूद्वारा शुद्ध भएपछि मङ्गल वस्तुहरूको दर्शन गरी उचित समयमा भोजन गर्नु पर्छ। ब्राह्मण, गाइ, आगो, फूलको माला, घ्यु, सूर्य, पानी र राजा यी आठ वस्तुहरू मङ्गल गर्ने मानिएका छन्। भोजन सामान्य रूपमा बिहान र बेलुका मात्र गर्ने विधान छ। बिहान एक प्रहरअघि (तीन घण्टा) र दुई प्रहर (६ घण्टा) पछिको भोजन हित गर्ने मानिएको छैन र ठिक समय पहिलो र दोस्रो प्रहरको बिचमा (९-१०बजेतिर) हुन्छ। दुई प्रहरको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिचमा पाचक रसको उत्पत्ति अर्थात् स्राव हुन्छ र त्यस बेलामा भोजन गर्दा पाचनक्रिया राम्रो हुन्छ। दुई प्रहर बितेपछि भोजन गर्नाले शरीरको बल घट्छ।[१२] बेलुकाको भोजन पहिलो प्रहरभित्र (६-९ बजे) गरिसक्नु उचित हुन्छ। स्वस्थ रहनका लागि भोजन गर्दा धेरै कुराको विचार राख्नु पर्छ। भोजन गरिने अन्न शरीरलाई हित गर्ने, राम्रो गरी शुद्ध र सही किसिमबाट तयार गरिएको, बेमेल खाने कुरा नमिसाइएको, ठिक्क मात्राको, बसेको ठाउँ र मौसम सुहाउँदो, आफ्नो रुचि र शरीरको अवस्था सुहाउँदो हुनु पर्छ। भोजन तातो, स्निग्ध, सफा होस्, नहडबडाई, ढिलो नगरी, नबोली, नहाँसी, प्रसन्नताका साथ, खानामा ध्यान दिंदै-स्वाद लिंदै खाइयोस्।

भोजन गर्दा सधैं हित गर्ने खाद्य वस्तुहरू खोजी खोजी खाने गर्नु पर्छ। त्यस्ता वस्तुहरूमा शाली, षष्टिक धानको चामल, गहुँ, जौ, मुङको दाल, तर्कारीहरूमा चारपाते चरीअमिलो, जीवन्ती, काँचो मूला, बेथेसाग, पर्वर, फलहरूमध्ये हर्रो, अमला, दाख र अनार, शुद्ध पानी, दुध, घ्यु, मह, सिधे नुन पर्छन्।[१३] भोजनमा पहिले मधुर (गुलियो), त्यसपछि क्रमैसँग अमिलो, नुनिलो अनि पिरो, तितो र टर्रो खाना खानु पर्छ। अनार आदि फलहरू सुरुमा नै खानु पर्छ। तर केरा र काँक्रो सुरुमा खाँदा हित गर्दैनन्। खानामा रुचि कम हुने, पाचनशक्ति कमजोर हुने मानिसले खाना खानुभन्दा पहिले अदुवासँग सिधे नुन खाँदा राम्रो हुन्छ। भोजनको अन्तमा दुध खानु पर्छ। भोजन गर्दा पानीको प्रयोग कम मात्रामा गर्नु उचित हुन्छ। भोजनको बिचमा पानी खाने गर्नाले शरीर ठिक्क अवस्थामा रहन्छ, भोजनभन्दा पहिले खाँदा शरीर दुब्लो हुन्छ र भोजनपछि पानी खाने गर्नाले शरीर मोटो हुने सम्भावना हुन्छ। त्यसपछि हातमुख धोई राम्रोसित मुख सफा हुने गरी पानीले कुल्ला गर्नु पर्छ। मुखलाई सुगन्धित र मनलाई प्रसन्न राख्न पान, सुखमेल, ल्वाङ आदि मुखमा राख्ने गर्नु पर्छ। त्यसपछि १०० पाइलाजति अर्थात् १०-१५ मिनेटसम्म टहल्ने गर्नुपर्छ। यति गरेपछि आफ्नो व्यवसायअनुसारको काममा लाग्नुपर्छ।

१६. व्यवसाय

व्यवसाय आफ्नो ज्ञान र सिपअनुसारको, रुचि भएको अथवा परम्पराअनुसारको गर्नु पर्छ। परम्परागत व्यवसायमा कृषि, पशुपालन, व्यापार र राजसेवा (सरकारी जागिरका काम) आदि पर्दछन्। यसबाहेक समय, परिस्थितिअनुसार आइपर्ने विभिन्न कामहरू पनि आफू र समाजका लागि उपयोगी भएमा गर्न सकिन्छ।

१७. निद्रा

दैनिक शारीरिक र मानसिक काम गर्दा उत्पन्न हुने थकाइ मेट्न र शरीरलाई पुनः शक्ति मिल्नका लागि सबै प्राणीहरूलाई निद्राको रूपमा वरदान पाइएको छ। त्यसै भएर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वाभाविक निद्रालाई आयुर्वेदमा आहारपछि दोस्रो महत्त्वपूर्ण वस्तु मानी स्वास्थ्यका लागि आवश्यक तीन उपस्तम्भहरूमा समावेश गरी यसलाई भूतधात्री अर्थात् प्राणीहरूको रक्षा गर्ने धाईआमा भनिएको छ। त्यस्तै निद्रा लागेको बेलामा अरू काममा संलग्न भई लगातार निद्रालाई छल्ने काम राम्रो होइन त्यसबाट अनेक शारीरिक, मानसिक रोगहरू हुन सक्छन् भनी चेताइएको छ। निद्राको स्वाभाविक समय राति हो तर कामको प्रकृति, मौसम र शरीरको अवस्था हेरी कुनै अवस्थामा दिनमा पनि निद्राको सेवन गर्न सकिने जनाइएको छ। रात्रिमा काम गर्नु पर्ने मानिस, गर्मीको मौसम, रोगी, वृद्ध र बालकहरूले दिउँसो पनि केही समय सुत्न सक्छन् तर त्यो अपवाद मात्र हो। सामान्यतया दिउँसो सुत्नु र राति जागा बस्नु दुवै रोगका कारण मानिएका छन्।

१८. ब्रह्मचर्य

स्वास्थ्यको संरक्षणका लागि निद्रापछि अर्को महत्त्वपूर्ण उपाय ब्रह्मचर्य हो र यो पनि तीन उपस्तम्भहरूमा समावेश गरिएको छ। ब्रह्मचर्य भन्नाले अविवाहित अवस्थामा जीवनोपयोगी ज्ञानविज्ञान, सिप कमाउनमा दत्तचित्त भई बढी सिंगारपटार, स्त्रीहरूको सङ्गत, तिनीहरूप्रति वासनाको दृष्टि आदिबाट बच्ने र शरीरको सारभूत वस्तु वीर्यलाई नष्ट हुन नदिनु हो। विवाहित अवस्थामा पनि ऋतुकालमा मात्र आफ्नै विवाहित पत्नीका साथ सन्तानोत्पत्तिका लागि सहवास गर्ने र अरू समयमा संयमित रहनु हो।

१९. सदाचार

मानिसद्वारा जीवनमा गरिने विभिन्न कामहरूमध्येमा धेरैजसो कामहरू प्राकृतिक आवश्यकताका रूपमा हुन्छन्, जस्तै भोजन गर्नु, निदाउनु, सहवास गर्नु। त्यस्ता कामहरूमा आहारबाहेक अरू कामहरूलाई आयुर्वेदमा विहार अथवा चेष्टा भनिन्छ। त्यस्ता कामहरूका अतिरिक्त जुन कामहरू धर्मशास्त्रको विधान, देश वा समाजको कानुन अथवा व्यवस्थालाई पालन गर्न ऐच्छिक रूपमा अथवा आदेशका रूपमा गरिन्छन् तिनलाई आचार भनिन्छ। हुनलाई आचारको सम्बन्ध प्राकृतिक रूपमा गर्ने कामहरूसँग पनि हुन्छ।

आचारका दुई पक्षहरू हुन्छन् - गर्न लायक काम र गर्न निषेध गरिएका कामहरू। गर्न लायक कामहरूलाई सामान्य रूपमा आचार र विशेष अर्थमा सदाचार भनिन्छ। तिनलाई शुभ कर्म पनि भनिन्छ। निषेध गरिएका कामहरूलाई दुराचार, पाप कर्म अथवा निषिद्ध कर्म भनिन्छ। आयुर्वेदमा प्राकृतिक र आचारात्मक दुवै किसिमका कामहरूको विचार गरी तिनीहरूलाई गर्न हुने, गर्न नहुने भनी वर्णन गरिएको छ र स्वास्थ्यको संरक्षणमा तिनको महत्त्व विस्तृत रूपमा दर्शाइएको छ। आचारलाई रसायनको रूपमा वर्णन गरी स्वास्थ्यको संरक्षणमा त्यसको विशेष भूमिका भएको पनि जनाइएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सदाचारसम्बन्धी केही बुँदाहरू —

- प्राणीहरूका सबै कामहरू सुख पाउनका लागि हुन्छन्। त्यो सुख धर्मको पालनविना हुन सक्दैन। अतः मानिसले सधैं धर्म गर्न तत्पर हुनु पर्छ।
- त्यसका लागि असल काममा प्रेरणा दिने मित्रहरूको सङ्गत गर्नु पर्छ, खराब काममा लगाउने दुष्टहरूसँग हेलमेल गर्नु हुँदैन।
- पाप कर्महरू गर्न हुँदैन। ती दश किसिमका हुन्छन् १) हिंसा गर्नु, २) चोरी गर्नु, ३) व्यभिचार गर्नु, ४) चुक्ली लगाउनु, ५) कठोर वचन बोल्नु (निन्दा, अपमानजनक शब्दको प्रयोग आदि), ६) झुट्टा कुरा गर्नु वा ढाँट्नु, ७) समय, प्रसङ्ग नमिल्दा कुरा गर्नु, ८) कसैप्रति घृणा अथवा हानि पुर्याउने विचार गर्नु, ९) ईर्ष्या गर्नु, १०) उल्टो सोच्ने, नास्तिक विचार राख्ने गर्नु।
- कुनै पेसा आदि बाँच्ने आधार नभएका, रोगले थलिएका, प्रिय व्यक्तिको वियोग भई शोकमा रहेका मानिसहरूलाई सक्दो सहयोग गर्नु पर्छ।
- कुनै आशा लिएर आएका मानिसलाई निराश गराई फर्काउनु, अपमान अथवा निन्दा गर्नु हुँदैन।
- देवता, गाई, ब्राह्मण, बुढापाका, वैद्य, अतिथि यी सबैको आदर-सम्मान गर्नु पर्छ।
- सम्पत्ति हुँदा होस्, आपत्ति पर्दा होस् विचलित हुने अर्थात् मात्ने-आत्तिने गर्नु हुँदैन।
- उचित समयमा, हित हुने र सत्य कुरा कम शब्दमा मिठो बोलीद्वारा बोल्ने गर्नु पर्छ।
- अर्को मानिसले बोल्नुभन्दा पहिले नै प्रसन्न मुद्रामा बोल्ने, राम्रो शीलस्वभाव लिने गर्नु पर्छ।
- आफू मात्र सुखी हुने विचार लिने, अरूमा पूरै विश्वास गर्ने अथवा बढी शङ्का गर्ने बानी गर्नु हुँदैन।
- कसैले आफूलाई अपमान गरेको, मालिकले स्नेह नराखेको, कोही आफ्नो शत्रु भएको कुरा अरूलाई भन्नु हुँदैन।
- इन्द्रियहरूको संयम गर्छु भनेर तिनलाई बढी रोक्ने अथवा जे-जे मनमा लाग्छ त्यस्तो काम गर्नु पनि हुँदैन।
- धर्म, अर्थ अथवा काम यीमध्ये कुनै पनि प्रयोजन सिद्ध नहुने अथवा एउटा गर्दा अर्को बिग्रने काम गर्नु हुँदैन।
- सार रूपमा सबै प्राणीहरूप्रति दया र प्रेमको भावना राख्नु, आफूसँग भएका वस्तु असल पात्रमा दिने गर्नु, शरीर, मन र बोलीमा नियन्त्रण गर्नु, अरूको हितमा नै आफ्नो हित हुने सम्झनु नै सदाचार हो। जुन मानिसले मेरो दिनरातको समय के-कस्ता काममा लागेको छ भनेर सम्झँदै व्यवहार गर्छ त्यो कहिल्यै दुःखी हुँदैन।[१४]

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१. हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्। मानञ्च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। (चरकसंहिता, सूत्र. १।४१)

२. शरीरेन्द्रियसत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते।। (चरकसंहिता, सूत्र. १।४२)

३. तत्र शारीरमानसाभ्यां रोगाभ्यामनभिदुरतस्य विशेषेण यौवनवतः समर्थानुगतबलवीर्ययशःपौरुषपराक्रमस्य ज्ञानविज्ञानेन्द्रियेन्द्रियार्थबलसमुदये वर्तमानस्य परमर्द्धिरुचिरविविधोपभोगस्य समृद्धसर्वारम्भस्य यथेष्टविचारिणः सुखमायुरुच्यते, असुखमतो विपर्ययेण। (चरकसंहिता, सूत्र. ३०।२४)

४. हितैषिणः पुनर्भूतानां परस्वादुपरतस्य सत्यवादिनः शमपरस्य परीक्ष्यकारिणोऽप्रमत्तस्य त्रिवर्गं परस्परेणानुपहतमुपसेवमानस्य पूजार्हसम्पूजकस्य ज्ञानविज्ञानोपशमशीलस्य वृद्धोपसेविनः सुनियतरागरोषेर्ष्यामदमानवेगस्य सततं विविधप्रदानपरस्य तपोज्ञानप्रशमनित्यस्याध्यात्मविदस्तत्परस्य लोकमिमं चामुं चावेक्षमाणस्य स्मृतिमतिमतो हितमायुरुच्यते, अहितमतो विपर्ययेण।। (चरकसंहिता, सूत्र. ३०।२४)

५. प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च।। (चरकसंहिता, सूत्र. ३०।२४)

६. यदाहारजातमग्निवेश ! समाँश्चैव शरीरधातून् प्रकृतौ स्थापयति, विषमाँश्च समीकरोत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति, इत्येतद्धिता-हितलक्षणमनपवादं भवति।।(चरकसंहिता, सूत्र. ३०।२४)

७. योगादपि विषं तीक्ष्णमुत्तमं भेषजं भवेत्। भेषजं चापि दुर्युक्तं तीक्ष्णं सम्पद्यते विषम्।। (चरकसंहिता, सूत्र. १। १२६)

८. आहाराचारचेष्टासु हितार्थी प्रेत्य चेह च। परं प्रयत्नमातिष्ठेद् बुद्धिमान् हितसेवने।। (चरकसंहिता, सूत्र. ७।६०)
स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तु तद् वृष्यं तद् रसायनम्। प्रायः, प्रायेण रोगाणां द्वितीयं प्रशमे स्मृतम्।। (चरकसंहिता, चिकित्सा. १।१।६)

९. स्वस्थवृत्तं यथोद्दिष्टं यः सम्यगनुतिष्ठति। स समाः शतमव्याधिरायुषा न वियुज्यते।। (चरकसंहिता, सूत्र. ८।३१)
मानवो येन विधिना स्वस्थस्तिष्ठति सर्वदा। तमेव कारयेद् वैद्यो यतः स्वास्थ्यं सदेप्सितम्।।
दिनचर्यां रात्रिचर्यामृतुचर्यां यथोदिताम्। आचरन् पुरुषः स्वस्थः सदा तिष्ठति नान्यथा।। (भावप्रकाशः, पूर्वखण्डः, दिनचर्या. ५।१२)

१०. रात्रेरन्तिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः। स ब्राह्म इति विज्ञेयः (आह्निकसूत्रावली)

११. ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुष :।। (अष्टाङ्गहृदयम्, सूत्रस्थान ३।१)

१२. ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत स्वस्थो रक्षार्थमायुषः। तत्र सर्वाघशान्त्यर्थं स्मरेद्धि मधुसूदनम्।।
दध्याज्यादर्शसिद्धार्थविल्वगोरोचनस्रजाम्। दर्शनं स्पर्शनं कार्यं प्रबुद्धेन सुखावहम्।। (भावप्रकाशः, पूर्वखण्डः, दिनचर्या. ५।१५-१६)

१३. आयुष्यमुषसि प्रोक्तं मलादीनां विसर्जनम्। तदन्त्रकूजनाध्मानोदरगौरववारणम्।। (भावप्रकाशः, पूर्वखण्डः, दिनचर्या. ५।१५-१६)
गुदादिमलमार्गाणां शौचं कान्तिबलप्रदम्। पवित्रकरमाख्यातमलक्ष्मीकलिनाशनम्।।
प्रक्षालनं मतं पाण्योः पादयोः शुद्धिकारणम्। मलश्रमहरं वृष्यं चक्षुष्यं राजसापहम्।। (भावप्रकाशः, पूर्वखण्डः, दिनचर्या. ५।२२-२३)

१४. गण्डूषमपि कुर्वीत शीतेन पयसा मुहुः। कफतृष्णामलहरं मुखान्तःशुद्धिकारकम्।।
सुखोष्णोदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः। दन्तजाड्यहरश्चापि मुखलाघवकारकः।। (भावप्रकाशः, पूर्वखण्डः, दिनचर्या. ५।४२-४३)

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैदिक दर्शनभित्रको रहस्य

✍ पं. श्री अग्निप्रसाद बराल

मानव मस्तिस्कको जहाँसम्म पहुँच छ, ती सम्पूर्ण पदार्थहरूको विभाजन दुई विभागमा हुन्छ, एक- ती पदार्थ जुन हाम्रा अनुभवका विषय छन्, दोस्रो ती विषयलाई जान्नेवाला तत्त्व, दार्शनिक भाषामा यिनै दुईलाई क्रमशः दृश्य र द्रष्टा अथवा जड र चेतन भनिन्छ। यसमा सम्पूर्ण दृश्य वर्गको मूल कारण जो छ त्यसैलाई प्रकृति, माया, या प्रधान, भनिन्छ, द्रष्टा जो छ कहिल्यै कुनै दृश्यको विषय हुँदैन, अतः यस बेला त्यसको विषयमा विचार नगरौं, यति त प्रस्ट छ कि दृश्य सर्वदा परिवर्तित भइरहन्छ, द्रष्टा अपरिवर्तनशील छ।

प्रकृति या माया स्वभावैले परिवर्तनशील हुन्छ, साँच्चै भनौं भने परिवर्तनकै कारण उसको प्रतीति हुन्छ, आफ्नो मूल रूपमा त प्रकृति पनि अव्यक्त र अलिङ्ग नै छ। त्यसमा क्षोभ भएर जब ऊ व्यक्त रूपमा आउँछ अनि नै उसको प्रतीति हुन्छ। त्यही प्रकृतिको व्यक्त रूप नै यो प्रपञ्च हो, र जो निरन्तर परिवर्तनशील छ, परिवर्तनमा स्थिति तर क्षणिक नै हुन्छ, वास्तवमा उत्पत्ति र प्रलयको नाम नै परिवर्तन हो, यो क्रम स्थूल सूक्ष्म तथा समष्टि-व्यष्टि सबै पदार्थमा पाइन्छ।

जुन प्रकार हाम्रो स्थूल शरीरमा परिवर्तन हुन्छ त्यस्तै सूक्ष्म शरीरमा पनि परिवर्तन भइरहन्छ। यस दृष्टिले हेर्ने हो भने सबै पदार्थहरू क्षणिक छन् तथापि त्यस कुराको हामीलाई व्यवहारमा आभास भएर पनि परिवर्तन नभएजस्तो लाग्छ, जस्तै नदीमा पाँच मिनेट पहिले पुगेको व्यक्तिले जुन पानी देख्छ, पाँच मिनेटपछि पुग्नेले त्यो देख्दैन। यो कुरा जान्दाजान्दै पनि उही पानीजस्तो लाग्छ। त्यस्तै हाम्रो शरीरमा पनि निरन्तर परिवर्तन भइरहेको छ, ५ मिनेट पहिले जुन शरीर थियो, ५ मिनेट पछि त्यो हुँदैन। त्यस्तो नहुँदो हो त जन्मँदा कलकलाउँदो बालक कसरी दारीजुँगा फुलेर कहिले बुढो भयो थाहै हुँदैन। यसै गरी सबै पदार्थ वास्तवमा क्षण परिणामी भएर पनि स्थिर जस्तो लागदछ। साँच्चै भनौं भने यो परिवर्तन या प्रतीयमान स्थितिको नाम नै पदार्थ हो, तात्त्विक दृष्टिले त केवल निरन्तर परिवर्तन या गतिको आभास हुन्छ, पदार्थको कुनै सत्ता हुँदैन।

✍ साहित्याचार्य, सामाजिक एवं धार्मिक व्यक्तित्व

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसरी क्षणिक या स्थायी जति पदार्थ छन्, ती सबैको आरम्भ र अन्त हुन्छ। आरम्भको नाम उत्पत्ति हो भने अन्तको नाम नाश हो, अतः सबै पदार्थ उत्पत्ति नाशशील हुन्छन्। यो उत्पत्ति र नाशको क्रम निरन्तर चलिरहन्छ। यस क्रमद्वारा पदार्थको तात्त्विक नाश हुँदैन। केवल परिवर्तनमात्र हुन्छ, जस्तै घडा फुटेर खवटा हुन्छ, खवटा फुटेर धुलो हुन्छ, धुलो पनि अझै फुट्छ र चूर्ण मल भएर बोट बिरुवाको आहार हुन्छ। फेरि त्यसले फलफूलको रूप धारण गर्दछ। यसै गरी विश्वका सम्पूर्ण पदार्थ रूपान्तरण हुन्छन्। यिनीहरूले नयाँ नयाँ रूप धारण गर्दछन्। यही निरन्तर नै यी पदार्थहरूको जन्मान्तर हो। अतः संसारका प्रत्येक पदार्थहरू स्वभावले नै नयाँ नयाँ जन्म धारण गर्दै रहन्छन्। उनीहरूको आत्यन्तिक उच्छेद (नाश) कहिल्यै हुँदैन।

यो त भयो हाम्रो जड तत्त्वको कुरा, अब हामीलाई जीवको जन्मान्तरको बारेमा विचार गर्नु छ, माथि हामीले जुन द्रष्टा र दृश्य दुई तत्त्वका उल्लेख गर्यौं, त्यसमा उपर्युक्त परिवर्तन केवल दृश्य तत्त्वको हुन्छ, द्रष्टा तत्त्वको कहिल्यै परिवर्तन हुँदैन ऊ सदा अपरिवर्तित नै रहन्छ। त्यसैले द्रष्टालाई ईश्वर भनिन्छ।

किन्तु जीव एक यस्तो तत्त्व हो जसलाई न दृश्य भन्न सकिन्छ न द्रष्टा नै भन्न सकिन्छ। यो त यी दुईभन्दा भिन्न यस्तो विलक्षण तत्त्व हो जसलाई द्रष्टा पनि भन्न सकिँदैन दृश्य पनि भन्न सकिँदैन। फेरि द्रष्टा र दृश्यभन्दा भिन्न अर्को विलक्षण तत्त्व कुनै हुँदा पनि हुँदैन।

द्रष्टाले सम्पूर्ण दृश्यलाई प्रकाशित गर्दछ, तर दृश्यको धर्मसँग कुनै सम्बन्ध रहँदैन तथापि अविवेकवश उसमा दृश्य धर्मको सम्बन्धको भ्रान्ति हुने गर्दछ जस्तै फिल्मका पर्दामा प्रतीत हुने दृश्यमा यद्यपि त्यो पर्दाको कुनै सम्बन्ध रहँदैन तथापि पर्दाविना दृश्य प्रकाशित पनि हुँदैन। त्यस कारण त्यो दृश्यसँग सम्बद्धजस्तो लाग्छ। यसै प्रकारले दृश्यको आधार भएको हुनाले द्रष्टा दृश्यको धर्मले उपरत्ति जस्तो लागेको मात्र हो, यही अविवेकजनित उपरत्तिका कारणले नै जीव आफूलाई स्थूल, सूक्ष्म, कारण, शरीरका धर्मले सम्बद्धमात्र होइन, सम्पन्न पनि सम्झन थाल्छ। यही देहाध्यासका कारणले नै त्यो जीव विशुद्ध द्रष्टा नरहेर कर्मका, कर्मको फलको पनि कर्ता-भोक्ता मानिन्छ र नै देहको सुखदुःखको कारण आफूलाई सुखी-दुःखी मान्न थाल्छ। यसैले शुद्ध ईश्वर रूपद्रष्टा जीव हुन्छ र शरीरका साथमा तादात्म्य सम्बन्ध बनाउँछ।

परिवर्तनका क्रममा स्थूल शरीर त यहाँ डढाएमा खरानी, जनावरलाई खवाएमा विष्टा, जमिनमा गाडेमा माटै हुने हो, त्यस कारण पुनर्जन्म सुख दुःख आदि हुने भनेको सूक्ष्म शरीरको हो। सूक्ष्म शरीर संस्कारको पुत्ला हो, सूक्ष्म शरीर भनेर मानिने १७ ओटा समूहमा स्थूल जगत्को घातक कारण विपादि, हतियार आदि रोग व्याध आदिको कुनै प्रभाव पर्दैन, सूक्ष्म शरीर त, आफ्नो संस्कारअनुसार परिवर्तित हुने हो। त्यही सूक्ष्म शरीरमा जीवको तादात्म्य अध्यास हुन्छ र संस्कारअनुसार परिवर्तन भएको सूक्ष्म

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीरलाराई जीवले आफ्नो परिवर्तन या पुनर्जन्म मान्छ।

यहाँ एउटा शङ्का हुन्छ त्यो के भने पुनर्जन्म भनेको त नयाँ स्थूल शरीर धारण गर्नु हो, परिवर्तन हुनु त पुनर्जन्म होइन भने यो प्रक्रियालाई पुनर्जन्म किन भनियो ? यो शङ्का ठीकै छ। यसलाई यसरी समाधान गर्नुपर्छ। पहिले सूक्ष्म शरीर भनेको के हो ? त्यो जान्नुपर्यो, त्यो हो पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच प्राण, मन बुद्धि यी सत्रवटाको समूहलाई सूक्ष्म शरीर भनिन्छ। यसमा मन, बुद्धि र पाँच ज्ञानेन्द्रिय ज्ञान शक्ति हुन्। पाँच कर्मेन्द्रिय र पाँच प्राण क्रिया शक्ति हुन्।

शक्ति कुनै आधारविना रहन सक्दैन जस्तै बिजुलीको करेन्ट एक शक्ति हो। त्यो तारविना प्रसारित हुँदैन जस्तै मोटर, जहाज, रकेट आदि शक्तिद्वारा चल्छन् तर तिनीहरूलाई सक्रिय गराउन आधार चाहिन्छ, हामीसँग बल शक्ति, बुद्धि शक्ति हुन्छ तर शरीररूपी आधार छैन भने त्यसको कुनै प्राकटय हुँदैन। कुनै प्रकार स्थूल शरीर स्वीकार गरेपछि मात्र सूक्ष्म शरीर आफ्ना व्यापारमा समर्थ हुन्छ। यसै कारण आफ्ना व्यापारका लागि कुनै न कुनै स्थूल शरीरको कल्पना गरिरहन्छन्।

यतापट्टि जब यो स्थूल शरीरबाट सूक्ष्म शरीरसहित जीवात्मा प्रयाण गर्दछ, जसरी घिउतेल हालेको भाँडामा घिउतेल खन्याए पनि कुनै न कुनै रूपमा ती घिउतेलमा भएका भौतिक कणहरू रहेकै हुन्छन्, त्यस्तै पाञ्चभौतिक स्थूल शरीरबाट सूक्ष्म शरीरको समूह निस्किए पनि त्यो सूक्ष्म शरीरको समूहमा भौतिक कणहरू रहेकै हुन्छन्। यिनैलाई हाम्रा शास्त्रहरूले भूत सूक्ष्म भनेका छन्।

जीवनमा आफ्नै र मरेपछि पनि बन्धुहरूद्वारा गरिएका अग्निजल आदिमा गरिएका श्रद्धास्वरूप स्वाहूतका कण त्यसमा मिसिन्छन्। यसरी भूत सूक्ष्म र स्वाहुत कणद्वारा सूक्ष्म शरीरलाई वहन गर्ने एउटा अतिवाहिक शरीर बन्छ। त्यही शरीरमा आरूढ सूक्ष्म शरीरयुक्त जीवात्मा आफ्नो संस्कारअनुसार लोकतिर प्रयास गर्दछ। हाम्रा वेदशास्त्रमा मृतात्माको आठ प्रकारको दशा बताएको छ, मरेउप्रान्त जीवात्माको प्रथमतः गति र अगतिका भेदले दुई प्रकारको दशा हुन्छ। अगति भनेको लोकान्तरमा नगई यहीं रहनु र गति भनेको लोकान्तरमा जानु हो। अगति चार प्रकारको हुन्छ, सर्वोत्तम अगति र अधम अगति, त्यसमा सर्वोत्तम अगति पनि दुई प्रकारको हुन्छ। सर्वोत्तम अगति तत्त्वदर्शीको हुन्छ, जो तत्त्वदर्शनद्वारा अविद्या र अविद्याको कार्य लिङ्ग शरीरको बाध भएको हुँदा ऊ कहीं जाँदै जाँदैन। आफ्नो वास्तविक स्वरूप ब्रह्म भावमा अवस्थित हुन्छ। दोस्रो शब्दमा भन्ने हो भने जीवभूमि स्वरूपबाट माथि उठेर स्वयं ब्रह्मस्वरूप हुन्छ, जसको तात्पर्य यो हो कि उपाधि सम्बन्धद्वारा कल्पित जीवभाव मेटिएर विशुद्ध ब्रह्मस्वरूपमा अवस्थित हुन्छ, जस्तै ऐनामा कल्पित सूर्य ऐनारूप उपाधि नष्ट भएपछि शुद्ध आफ्नो बिम्बस्वरूप सूर्यमा नै मिल्छ। यही अगतिको नाम मुक्ति हो, मुक्ति पनि दुई प्रकारको हुन्छ। क्षीणोदर्क मुक्ति र भूमोदर्क मुक्ति। क्षीणोदर्क मुक्ति भनेको शरीर, इन्द्रिय, प्राण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि अनात्म पदार्थद्वारा भएको आत्म व्याप्तिलाई नेति नेति प्रक्रियाद्वारा हटाएर ज्ञानद्वारा जुन निराकार निर्विशेष विशुद्ध आत्मदर्शन प्राप्त हुन्छ, त्यसैलाई क्षीणोदर्क भन्नुपर्छ।

अर्को छ भूमोदर्क मुक्ति। **सर्वं खलु इदं ब्रह्म, इदं सर्वं यदध्यात्मा सर्वं वासुदेवः** यो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ब्रह्म नै हो जे-जति छ यो आत्मस्वरूप हो या वासुदेव स्वरूप हो भन्ने ज्ञान प्रक्रियाद्वारा आत्मव्याप्तिको विस्तार भएर विश्वात्मा दर्शनद्वारा जो प्राप्त हुन्छ त्यो भूमोदर्क मुक्ति हो। क्रियाद्वारा आत्मव्याप्तिको विस्तार भएर विश्वात्म दर्शनद्वारा जो प्राप्त हुन्छ त्यो भूमोदर्क मुक्ति हो। ज्ञानद्वारा यी दुई मुक्तिलाई प्राप्त गर्ने ज्ञानीले कहीं जानै पर्दैन। त्यस कारण यिनलाई सर्वोत्तम अगति भनिएको हो।

तेस्रो अगति भनेको मरणोपरान्त यही पृथ्वीमा जन्म लिने स्थावर, वृक्ष, लता, कीट, पतङ्ग, जो अस्थिहीन छन्। यिनीहरूको मरणोपरान्त यही पृथ्वीमा जन्म हुने भएकाले तेस्रो अगति हो। त्यस्तै चौथा अगति भनेका अस्थियुक्त पशुपक्षी आदि मानिन्छन्। यी चार प्रकारमा प्राणीहरूलाई कहीं जानु नपर्ने हुनाले अगति भनिएको हो।

अब गतिको विषयमा कुरा गरौं। गति पनि चार प्रकारको हुन्छ, (१) ब्रह्मलोक गति, (२) स्वर्गलोक गति, (३) पितृलोक गति, (४) निकृष्ट नरक गति। सर्वोत्कृष्ट विविध तत्त्वदर्शी अगतिको उत्क्रान्तिसँग कुनै सम्बन्ध रहँदैन कारण उनका प्राण, न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति (बृह. ४-४-६ यो श्रुति वचनअनुसार उनका प्राण उत्क्रमण नगरीकन, अत्रैव समवलीयन्ते) यो वचनअनुसार यही नै ज्ञानद्वारा सविलास अविद्याको निवृत्ति हुनाले आफ्नो अधिष्ठान ब्रह्मतत्त्वमा लीन हुन्छन्। वेदान्त शास्त्रको उद्घोष छ, (अधिष्ठानविशेषो हि बाधः कल्पितवस्तुतः) कल्पित वस्तुको निवृत्ति आफ्नो अधिष्ठानदेखि अतिरिक्त हुँदैन।

यी माथि बताइएका दुई प्रकारका ज्ञानीदेखि बाहेक अरू ६ वटै प्रकारका प्राणीहरूको मृत्यु उत्क्रान्तिद्वारा नै हुन्छ।

उत्क्रान्ति गत्या गतीनाम् (वेदान्त दर्शन २-३-१९)
स यदास्माच्छरीरादुत्क्रामति सहैवैतैः सर्वैरुत्क्रामति (कौषीतकी ३-४)
ये वै चास्माल्लोकात्प्रयाति चन्द्रमष मेव ते सर्वेगच्छन्ति (कौषीतकी १।२
तस्माल्लोकात्पुनरेत्यस्मै लोकाय कर्मणे (बृ.ह. ४।४।६)

जीवात्मा भुक्तशेष कर्मको फल भोगका निमित्त फेरि यही लोकमा आउँछ। यसैलाई शास्त्रमा प्रत्यावृत्ति या आगति भनिन्छ।

अब उत्क्रान्ति भनेको के हो ? त्यतातिर लागौं। स्थूल शरीर र सूक्ष्म शरीरको विषयमा हामीले सामान्य चर्चा गरिसक्यौं। हामीसँग स्थूल पार्थिव र सूक्ष्म तैजसयुक्त यो शरीर छ, त्यसैद्वारा हामी सांसारिक व्यवहार गर्दछौं, जब कर्मयोगले सूक्ष्म शरीरयुक्त जीवात्मा यो स्थूल शरीरबाट बाहिर जाने उपक्रममा लाग्छ अनि हाम्रा प्राणहरू उत्क्रमण गर्न थाल्छन्, त्यो जीवनमा अत्यन्त कष्टकर समय जसलाई हामी उत्क्रान्ति अथवा उभर्को भन्छौं। स्थूल शरीरबाट सूक्ष्म शरीर छुट्टिनु मृत्यु हो भने छुट्टिन लाग्दा हुने कष्टको नाम नै उत्क्रान्ति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या उभर्को हो। यो अत्यन्त कष्टकर अवस्था हामीले आफ्ना मरणासन्न आफन्तहरूको प्रत्यक्ष देखेका छौं, जन्मान्तरमा अनुभव पनि गरेका छौं। त्यसैले हामी मृत्युदेखि साहै डराउँछौं। यही कारण हो हामी मृत्यु शय्यामा रालसिंगान हुनु झाडापिसाब हुनु।

उत्क्रान्ति अवस्थामा जीवात्मालाई चार प्रकारकै दुःख हुन्छन् ती हुन् (१) विश्लेषज दुःख (२) मोहज दुःख (३) अनुतापज दुःख (४) दृश्य दर्शनज दुःख

(१) विश्लेषज दुःख

हाम्रा सूक्ष्म शरीर र स्थूल शरीर छुट्टाछुट्टै भएर पनि एउटै जस्तो भएर गम लगाएर टाँसेको कागजजस्तो भएर मिलेका छन्, जस्तै कानद्वारा श्रवण शक्तिले सुन्छ तर कानले सुनेको भान छ, दृष्टि शक्तिले देख्छ, आँखा मैले देखेको भन्छ, त्यस्तै छाला जिब्रो नाकमा पनि आफू कर्ता भएको भ्रम छ। त्यस्तै कर्मेन्द्रियमा पनि छ, जुन भारी शरीर र इन्द्रिय अर्थात् स्थूल सूक्ष्म शरीरले मिलेर उठाएको थियो त्यो सूक्ष्म शरीर एक्लैले उठाउनुपर्दछ, जसरी टाँसिएको कागजलाई छुट्याउनुपर्दा अत्यन्त मुस्किल हुन्छ बीच-बीचमा फाट्ने च्यातिने डर हुन्छ, त्यस्तै मिलेका स्थूल सूक्ष्म शरीरलाई छुट्टिनुपर्दा अत्यन्त दुःख हुन्छ। यसैलाई विश्लेषज दुःख भनिन्छ।

(२) मोहज दुःख

जब मनुष्य मर्न लाग्छ, अनि उसका आफन्तहरू बाबुआमा, पतिपत्नी, छोराछोरी अरू आफन्तहरू पनि वरिपरि घेरेर रुन कराउन बिलौना गर्न थाल्छन्। ती आफूले जिन्दगीभरि उचनीच कर्म गरेर भरण पोषण गरेका बन्धुबान्धवलाई रुँदै कराउँदै गरेको अवस्थामा छोडेर जान पटक्कै मन हुँदैन तर नछोडी हुँदैन। विवश भएर छोडेर जानैपर्छ। यसैलाई मोहज दुःख भनिन्छ।

(३) अनुतापज दुःख

जब मनुष्य मर्न लाग्छ अनि उसले जिन्दगीभरि गरेका दुष्कर्महरूको सम्झना हुन्छ। जीवनभरि मैले आफूलाई उद्धार गर्ने किसिमका राम्रा कर्महरू केही गरिन, मेरी श्रीमती मेरा छोराछोरी मैले यिनको हुँदो गर्नुपर्छ भनेर खालि उनको भरण पोषणका लागि मात्र नाना प्रकारका दुष्कर्महरू गरिरहें। आखिरमा मेरा यी आफ्ना भनेकाहरूले मलाई केही सघाउने रहेनछन्। मैले गरेका दुष्कर्मको फलको भोग मैले एक्लै गर्नुपर्ने रहेछ भन्ने पश्चात्तापले सताइरहन्छ। यसैलाई अनुतापज दुःख भनिन्छ।

(४) दृश्य दर्शनज दुःख

मर्न लागेका व्यक्तिका सामुन्ने उसले अघि गरेका राम्रा नराम्रा कर्महरू र ती कर्मद्वारा उसलाई हुने सुख-दुःखको परिणामको भावी चित्र उपस्थित हुन्छ, अनि आफूले गरेका दुष्कर्म र त्यसको परिणाम जसले गर्दा आफूले जानुपर्ने नरकादिको दृश्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आफूलाई लिन आएका डरलाग्दा क्रूर यमदूतहरूको दर्शन पाई भावी परिणाम सोचेर अत्यन्त दुःखी हुनुलाई नै दृश्य दर्शनज दुःख भनिन्छ।

जो धर्मात्मा व्यक्ति छ, त्यसलाई यस प्रकारको दृश्य दर्शनज दुःखको प्रभाव पर्दैन। ऊ त आफूले गरेको धर्मको प्रभावले प्राप्त हुने स्वर्गादि सुखलाई सम्झिएर निश्चिन्त हुन्छ। अब मरण समयका उत्क्रान्तिजन्य चार प्रकारका दुःखलाई पार गरिसकेपछि भूत सूक्ष्म र श्रद्धा कण निर्मित आतिवाहिक शरीरलाई प्राप्त गरेको जीवात्मा कहाँ जान्छ। त्यस विषयमा हाम्रो शास्त्रको भनाइ के छ ? हाम्रो वेदले भन्छ-

द्वे सृती अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च (ऋ १०।८८।१५)

मनुष्यहरूको जाने दुइटा बाटा सुनेको छु। एउटा देवताको देवयान, अर्को पितृहरूको पितृयान। समस्त विश्वभरिका प्राणीहरू जब यो लोकबाट लोकान्तरका लागि प्रस्थान गर्दछन (मातरं पितरं अन्तरा) पृथ्वी र स्वर्गको मध्यवर्ती अन्तरिक्षमा यिनै दुईटा बाटाबाट जान्छन्।

वेदको यो मन्त्रले पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्यु (स्वर्ग) यी तीन लोक र त्यहाँ जाने दुई प्रकारका बाटाको मात्रै होइन, निम्नाङ्कित मन्त्रहरूद्वारा ती तीन लोकका निवासी ११-११ देवता जसले जीवात्मालाई त्यहाँ त्यहाँ गमनका लागि मद्दत गर्दछन् त्यसको स्पष्ट उल्लेख गरेको छ।

जस्तै-

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सु क्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञ मिमं जुषध्वम् (ऋ. १।१३९।११)
ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम्
ये देवा अन्तरिक्षैकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम्
ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् (अथर्ववेद (१९।२९।११-

यी माथिका मन्त्रहरूद्वारा पृथ्वी, अन्तरिक्ष र स्वर्गमा शासन गर्ने ११-११ देवता हुँदा रहेछन् जसले मृत्यूपरान्त परलोकमा जान जीवात्मालाई मद्दत गर्दा रहेछन् भन्ने बुझियो।

पृथ्वी, अन्तरिक्ष र स्वर्गमा शासन गर्ने ११-११ देवताहरू

पृथ्वीका शासक

मुख्य-अग्नि-उनका सहायक १० देवता (१) जातवेदा (२) वैश्वानर (३) द्रविजोदा (४) तनु पात् (५) नारा शास (६) त्वष्टा (७) वनस्पति (८) ग्रावाण (९) रथ (१०) आप

अन्तरिक्षका शासक

मुख्य-वायु-उनका सहायक १० देवता (१) वरुण (२) रुद्र (३) इन्द्र (४) पर्जन्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) बृहस्पति (६) यम (७) मित्र (८) क (९) विश्वकर्मा (१०) सविता

स्वर्गका शासक

मुख्य-सूर्य-उनका सहायक १० देवता (१) अश्विनौ (२) उषा (३) सूर्या (४) त्वष्टा (५) सविता (६) भग (७) पुषा (८) विष्णु (९) यम (१०) अजैकपाद

हाम्रा वेदादि शास्त्रहरूमा पृथ्वीदेखि माथि ब्रह्मलोकसम्म सातवटा लोक पाँचवटा मण्डल र तीन त्रिलोकको परिकल्पना गरिएको छ। त्यसै हुँदा हामीहरू प्राणायाम साधना गरेर प्राण वायुलाई उँभो लाने क्रममा ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् भनेर सप्त व्याहृतिको उच्चारण गर्दछौं। यिनै सप्त भुवनलाई सात लोक भनिन्छ, यिनीहरूकै बीचमा पाँचवटा मण्डलको उल्लेख छ, जस्तै (१) सप्त सागरवेष्टित पृथ्वीलाई भूमण्डल भनिन्छ, (२) अर्को पृथ्वी र सूर्यको बीच आकाशमा अरू मण्डलभन्दा सानो चन्द्रमण्डल छ, (३) अर्को छ सूर्य मण्डल जसलाई स्वर्ग मण्डल पनि भनिन्छ। (४) अर्को छ महलोकदेखि माथि जनलोक जसलाई परमेष्ठी मण्डल भनिन्छ, (५) पाँचौं तपोलोकदेखि माथि रहेका सत्यलोकलाई स्वयम् भूमण्डल, ब्रह्मलोक भनिन्छ, यसैभित्र तीन त्रिलोक पनि पर्छन्, तिनको गणना यसरी गरिन्छ।

पहिला यी पृथ्वी जसलाई भूलोक भनिन्छ अनि पृथ्वी र सूर्यका बीचमा रहेको आकाश जसलाई भूवर्लोक भनिन्छ। अनि सूर्य जसलाई स्वर्लोक भनिन्छ, यो भयो भूः, भुवः, स्वः, एउटा त्रिलोक, अर्कोमा सूर्य या स्वर्ग मण्डल, दोस्रो सूर्यभन्दा माथि रहेको आकाश जसलाई महलोक भनिन्छ र त्यसमाथि रहेको जनलोक जसलाई परमेष्ठी मण्डल पनि भनिन्छ, यी तीनवटाको समूह दोस्रो त्रिलोकी हुन्छ। तेस्रोमा परमेष्ठी मण्डल या जनलोक, त्यसमाथि रहेको आकाश तपोलोक भनिन्छ, अनि सत्यलोक जसलाई स्वयं भूमण्डल भनिन्छ। यी तीनवटाको समूह तेस्रो त्रिलोकी भनिन्छ।

यी त भए पृथ्वीदेखि स्वयं भूमण्डलसम्मका जीवात्माका गन्तव्य· स्थानहरू। ती बाटा र गन्तव्य स्थानहरूमा कस्ता कस्ता जीवात्माहरू कसरी कुन ठाउँमा पुग्छन् त्यस विषयमा हाम्रा शास्त्रको उद्घोष के छ ? त्यतापट्टि लागौं।

दुई प्रकारका अगति जसलाई मुक्ति भनिन्छ, त्यसले कहीं जानै पर्दैन। त्यो ज्ञानीहरूको हुन्छ, जसको प्रकारको विषयमा हामीले पहिले नै पटक-पटक कुरा गरिसकेका छौं। जो पापीहरू जसको नारकी गति हुन्छ, तिनको पनि पछि कुरा गरौंला। बाँकी तीन प्रकारको गति, ब्रह्मलोक गति, स्वर्गलोक गति, पितृलोक गतिको विषयमा अब चर्चा गरौं। मानिस स्वभावैले चार प्रकारको हुन्छ, (१) ज्ञानी, (२) उपासक, (३) कर्मठ, (४) कुकर्मी।

ज्ञानीको विषयमा पटक-पटक चर्चा भइसकेको छ। अब उपासकको विषयमा चर्चा गरौं। उपासक पनि दुई प्रकारका हुन्छन् १) ब्रह्मोपासक। अर्को पञ्चाग्नि उपासक, उपासकका विषयमा राजा परीक्षितलाई श्री शुकदेव स्वामीले श्रीमद्भागवतको द्वितीय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्कन्धको दोस्रो अध्यायमा भगवानको उपासना कसरी गर्नुपर्छ, त्यस्ता उपासकको गति मुक्ति कस्तो हुन्छ भनेर सद्योमुक्ति र क्रममुक्ति बताउने क्रममा कसरी ब्रह्मोपासक भूत सूक्ष्मको सहाराद्वारा ब्रह्मलोकमा जान्छ, जहाँ कल्पायुष भएका देवताहरू रमण गर्दछन् द्विपरार्धावसानमा ब्रह्माका उपदेशद्वारा ज्ञान प्राप्त गरेका हुँदा त्यस्ता परब्रह्मोपासकहरू ब्रह्मासँगै मुक्त हुन्छन्।

कार्यात्यये तदध्यक्षेण सहातः परमभिधानात् ॥ १० ॥ ब्रह्मसूत्र भाष्यम् ४.३.१०)

अर्काथरी पञ्चाग्नि उपासकहरूको चाहिँ कल्पायुष देवताहरूका साथमा विहार गरेर कल्पपछि यही लोकमा आगमन हुन्छ तर त्यो ब्रह्मलोक गति विद्या, तपस्या, योग र समाधिले मात्र प्राप्त हुन्छ, कर्मद्वारा त्यस्तो गति प्राप्त हुन सक्तैन।

न कर्मभिस्तां गतिमाप्नुवन्ति विद्यातपोयोगसमाधिभाजाम् (श्रीमद्भागवत २।२।२३)

एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवमावर्तं नावर्तन्ते (छा. ४.१५.५)

यसरी ब्रह्मलोक जाने उपासकहरू पनि ब्रह्मोपासकहरूको द्विपरार्धावसानमा ब्रह्मोपदेशद्वारा मुक्ति र पञ्चाग्नि उपासकहरूको कल्प क्षयमा पुनरागमन हाम्रा शास्त्रहरूमा वर्णित छ।

अब ज्ञानी र उपासकहरूका विषयमा ज्ञान भइसकेपछि कर्मठको विषयमा चर्चा गरौं। कर्मठहरूको पनि देवलोक गति र पितृलोक गतिका प्रकारले २ प्रकारको गति हुन्छ। पितृलोक भनेको र स्वर्गलोक भनेको भेद यत्ति छ कि पितृलोक ग्राह्य चन्द्रलोक पृथ्वी र सूर्यलोकको मध्यवर्ती अन्तरिक्षमा छ।

देवलोक ग्राह्य स्वर्गलोक या भूर्लोक सूर्यलोकभन्दा मास्तिर परमेष्ठी मण्डलमा पर्दछ। यत्तिकैमा अर्को प्रश्न उठ्यो देवयान र पितृयान यी दुई मार्गको के अन्तर छ, यी मार्गहरू कहाँबाट विभाजित हुन्छन् ?

अब पहिले पितृयान मार्गको वर्णन गरौं। पितृयान मार्गका क्रमशः सात पर्व छन्। ती हुन् (१) धूम (२) रात्रि (३) कृष्ण पक्ष (४) दक्षिणायन सम्वत्सर, पितृलोक, चन्द्रलोक। यहाँ धूमादि भनेर धुवाँ भन्ने अर्थ विवक्षित छैन। यहाँ तदभिमानी आतिवाहिक देवता भनिएको हो, पहिले यी चार पडाव छन्। **(आतिवाहिकास्तल्लिङ्गात्)** वेद ४-३-४ यो बाटाबाट जाने व्यक्ति संवत्सराभिमानी अतिवाहिक देवतासँग मिल्न पाँउदैन, यसरी गएको व्यक्ति पाँचौं पर्व पितृलोक, छैटौं आकाश र सातौं चन्द्रलोक पुग्छ। छान्दोग्योपनिषद् ५-१०-३-४)

देवयानका जम्मा १४ पर्व छन्। ती हुन् (१) अर्चि अग्निज्वाला, (२) दिवस, (३) शुक्लपक्ष, (४) उत्तरायणका ६ महिना, (५) संवत्सर, (६) देवलोक, (७) वायु, (८) आदित्य, (९) परमेष्ठी मण्डल, (१०) विद्युत् तपोलोक, (११) वरुण, (१२) इन्द्र, (१३) प्रजापति, (१४) ब्रह्मलोक।

यसरी जुन उपासक ब्रह्मलोकको यात्री छ, त्यो विद्युत् लोक अर्थात् तपोलोकमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुग्नेबित्तिकै ब्रह्मलोकबाट उसलाई लिन दिव्य पुरुष पठाइन्छ, अनि उनै दिव्य पुरुषले वरुणादि लोक हुँदै ब्रह्मलोकमा पुर्याइदिन्छन् (छान्दोग्य ५-१०-१-२)

यस प्रकार **विद्यातपोयोगसमाधिभाजाम्** हरूको ब्रह्मलोकसम्म र अरू कर्मठहरूको आफूले गरेको कर्मअनुसार देवयान मार्ग यात्री हो भने तत्तत् लोकसम्म पुर्याएर आतिवाहिक शरीरबाट निवृत्त भई दिव्य शरीरलाई धारणा गर्दै आफूले गरेका शुभ कर्मको फल भोग गर्न पाउँछ।

यता धूममार्गबाट जानेवाला व्यक्ति पनि पितृलोकदेखि चन्द्रलोकसम्मको आफ्ना कर्मानुसारको यात्रा अतिवाहिक शरीरद्वारा गरेको छ र तत्तत् लोकमा पाइने कर्मार्जित सुख भोग गर्न पाउँछ। आफ्नो कर्म क्षीण भएपछि फेरि यस लोकमा आफ्नो संस्कारअनुसार उच्च कुलमा भाग्यवान् भएर जन्म लिन आउँछ, पुनः पार्थिव शरीरले गरिएका सत्कर्मद्वारा ऊर्ध्वगतिमा प्राप्त हुन्छ।

अब निकृष्ट नरक गतिको विषयमा कुरा गरौं। निकृष्ट नरक गति र अदेह प्रेतत्व पापी या अधर्मीहरूको हुन्छ। अधर्मी भनेको यस विश्व ब्रह्माण्डमा दुई प्रकारको प्रवृत्ति हुँदो रहेछ जसलाई हाम्रा शास्त्रहरूले र हामीले पनि पाप, धर्म, असल, कमसल, राम्रो, नराम्रो, दैवी, आसुरी, सात्त्विकी, तामसी आदि आदि हरेक नामले पुकार्दा रहेछौं। हाम्रा वेदादि शास्त्रहरू र तिनमा भएका यथार्थ सारलाई बुझ्ने हाम्रा ऋषिमुनिहरूले आफ्ना भावी सन्ततिहरूको कल्याणका लागि कर्तव्याकर्तव्यको विचार गरी पुराण, धर्मशास्त्र, स्मृति आदि ग्रन्थहरूमा उल्लेख भएका हाम्रा विहित अविहित कर्महरूको सारांश नै पाप र धर्म भनेर चिनिदो रहेछ। जस्तै :

वेदप्रणिहितो धर्मः अधर्मस्तद्विपर्ययः। (श्रीमद्भागवत ६। ३।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्। परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्। आदि।

जुन कुरा पहिले गर्न अलिक गारो हुन्छ, तर पछि त्यसको परिणाम सुखमय राम्रो मनलाई शान्ति दिने हुन्छ, जुन कुरा गरेबापत पछि गएर पश्चात्ताप गर्नुपर्दैन। मनमा आनन्द भइरहन्छ भने दुःख सहेर गरेको कामले पनि परिणाममा आनन्द दिने हो। त्यस्तो कर्मलाई धर्म, अथवा दैवी कर्म मानिदो रहेछ।

जुन कर्म गर्दा क्षणिक सुख अनुभूति भए पनि सजिलैसँग गरिए पनि गरिसकेपश्चात् त्यस कर्मको परिणामले घोचिरहन्छ भने त्यस्ता कर्मलाई आसुरी कर्म या पाप कर्म भनिदो रहेछ। उदाहरणका लागि यसरी सम्झन सकिन्छ, हामीसँग दुःख गरेर कमाएको १००० रूपैयाँ छ, त्यसले हामी बजार गएर अभक्ष भनेर शास्त्रमा उल्लिखित कुराको सेवन गर्छौं। वेश्यालय, जुवाघरमा जान्छौं, तत्तत् वस्तुको सेवन गर्छौं र पैसा सक्छौं। जब त्यस कर्मको परिणाम निस्कन्छ अनि पछुतो गर्छौं। यसैलाई पापकर्म भनिदो रहेछ जो गर्दा सजिलोजस्तो लाग्छ, परिणाम दुःखमय हुन्छ।

अर्कोतिर हामी १००० रूपैयाँ लिएर बजार निस्कन्छौं, बजारमा कुनै दुर्घटनामा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परेको मानिस भेट्यौं भने उसलाई आफ्नो पैसा खर्च गरेर हस्पिटल पुर्याउँछौं, कुनै भिखारी भोकालाई खाना खुवाउँछौं, कुनै अभर परेको व्यक्तिलाई सहयोग गरेर पैसा सक्छौं, पहिले खर्च गर्ने बेलामा हातको पैसा जाँदा केही असमञ्जस हुन्छ तर त्यसको परिणाममा हामी कहिल्यै दुःखी हुँदैनौ, यसैलाई धर्म भनिदो रहेछ।

जो इन्द्रिय लोलुपताले गर्दा नाना प्रकारका दुष्कर्म गर्ने पापीहरूमा उनीहरूको पनि दुई प्रकारको अवस्था हाम्रा शास्त्रहरूमा बताइएको छ, जसको दशाह क्रिया पनि हुँदैन त्यस्ता पापीहरू आतिवाहिक देहलाई पनि प्राप्त गर्न नपाई वायुस्वरूप प्रेत भएर कल्पकल्पान्तसम्म वायुमण्डलमा घुमिरहन्छन्, किनभने जसको शरीर हुँदैन, उसले आफूले गरेका शुभाशुभ कर्मफलको भोग गर्न पाउँदैन। भोग नगरीकन कर्म सकिँदैन। (नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि -गरुड पुराण)। अर्कोथरी व्यक्तिहरू जसका आतिवाहिक शरीर प्राप्त होस् भनेर छोराछोरी आदि आफन्तहरूले सो नभए आफैंले भए पनि अतिवाहिक शरीर निर्माणका दशाह क्रिया आदि विधिपूर्वक गरिदिएको छ, त्यसबाट उत्पन्न श्रद्धाकण र पूर्वोक्त भूत सूक्ष्मद्वारा निर्मित अतिवाहिक शरीरद्वारा १७ तत्त्वले युक्त जीवात्मा आफ्नो कर्मभोगका लागि यस लोकबाट प्रयाण गर्दछ।

यसरी पापीहरूले जाने नरकादि कहाँ छन्, भन्ने प्रश्न र त्यसको उत्तर परीक्षित शुकदेव संवादको रूपमा श्रीमद्भागवतमा यसरी वर्णन गरिएको छ।

परीक्षित सोध्छन्-नरका नाम भगवन् किं देशविशेषा अथवा बहिस्त्रिलोक्या आहोस्विदन्तराल इति। हे भगवान् नरक भनेको कुन देश विशेष हुन्। ती कहाँ छन् ? यी तीन लोकभित्रै पर्दछन् कि यी भूः भुवः स्वः तीन लोकबाहिर पर्दछन्।

शुकदेव स्वामी भन्नुहुन्छ- अन्तराल एव त्रिजगत्यास्तु दिशि दक्षिणस्यामधस्ताद्भूमेरू-परिष्टाच्च जलाद्यस्यामग्निस्वात्तादयः पितृगणा दिशि स्वानां गोत्राणाम् परमेण समाधिना सत्या एवाशिष आशासाना निवसन्ति।

यी तीन लोकभित्रै दक्षिण दिशापट्टि पृथ्वीभन्दा मुनि जलभन्दामाथि नरकहरू छन्। यही दक्षिण दिशामा अग्निष्वात्ता आदि पितृहरू आफ्ना वंशधरहरूका लागि मङ्गलको कामना गर्दै बस्नुहुन्छ। (भा.प.स्क.अ २६-४-५)

यस लोकदेखि यम लोकसम्मको दूरीको विषयमा हाम्रो गरुड पुराणमा (षडशीति सहस्राणि योजनानां प्रमाणतः। यममार्गस्य विस्तारो विना वैतरणी द्विज) भनेर ८६ हजार योजन बताइएको छ। यो दूरी पार गर्न मृतात्मालाई १ वर्ष लाग्ने र १ दिनरातमा २४७ योजन हिँड्नुपर्ने शास्त्रको उल्लेख हुँदा लगातार प्रतिघन्टा करिब १२७ किलोमिटरका दरले हिँड्नुपर्छ, यसरी जाँदा बाटामा पर्ने १६ पडावहरूको गरुड पुराणले यसरी उल्लेख गरेको छ।

सौम्यं सौरिपुरं नगेन्द्रभवनं गन्धर्वशैलागमौ क्रौञ्चं क्रूरपुरं विचित्रभवनं ब्रह्मपदं दुखदम्।
नाना क्रन्दपुरं सुतप्तभवनं रौद्रं पयोवर्षणं शीताख्यं बहुभीतिधर्मभवनं याम्यं पुरं चाग्रतः। ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) सौम्यपुर (२) सौरिपुर (३) नगेन्द्रभवन (४) गन्धर्वनगर (५) शैलागमपुर (६) क्रौञ्चपुर (७) क्रूरपुर (८) विचित्रभवन (९) ब्रह्मपुर (१०) दुःखदपुर (११) नाना क्रन्दपुर (१२) सुतप्तभवन (१३) रौद्रपुर १४) पयोवर्षणपुर (१५) शीतपुर (१६) बहुभीतिपुर। यी १६ वटा पडावलाई पार गरेपछि मात्र मृतात्मा यमलोकमा पुग्छ। यसरी जाने मृतात्माले बाटामा जस्तोजस्तो दुःखकष्ट सहनुपर्दछ। अनि यमलोकमा पुगेपछि यमराजको आज्ञाले आफूले गरेका दुष्कर्महरूको भोग गर्न त्यही अतिवाहिक शरीरका साथमा कुम्भिपाकादि नरकमा धकेलिने कुरा र जो धर्मात्माहरू छन् उनीहरू बाटाभरि सूक्ष्म शरीरलाई वहन गर्ने अतिवाहिक शरीरलाई त्यहीं छोडेर दिव्य देहलाई धारणा गरेका छँदा स्वर्गादि सुखको भोगका लागि आआफ्ना कर्मले आर्जिएका लोकतिर जान्छन्।

धेरै कालसम्म तत्तत् लोकमा बसेर भोगद्वारा कर्मफललाई क्षीण गरेर पुनः यस लोकमा आफूले आर्जन गरेको संस्कारलाई साथ लिई ऊचनीच योनिमा जन्म लिन आउँछन् भन्ने कुरा हाम्रा पुराणहरूमा र प्रायः गरेर मृत्यु उपरान्त सुनिने गरुण पुराण आदिबाट हामीलाई थाहा भएकै कुरा हो।

अब आयो स्वर्गादिको सुख भोग र नरकादिको दुःखभोग भोगिसकेपछि यस लोकमा फर्किने जीवात्माको आगमन क्रमको कुरा।

तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात् पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम्। पुमान् रेतः सिञ्चति योषितायां बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥

छान्दोग्योपनिषद्को यस मन्त्रद्वारा पञ्चाग्नि विद्याको सार दिइएको छ, सूर्यं चक्षुर्गच्छतु, यस मन्त्रदेखि दिएको पञ्चाग्नि विद्यामा यसरी व्याख्या गरिएको छ, (१) द्युलोक (२) पर्जन्य (३) पृथ्वी (४) पुरुप (५) स्त्री, यी पाँचलाई अग्नि मानेर यिनमा हवन हुने आहुतिको यसरी वर्णन छ : क्रमशः श्रद्धा, सोम, वृष्टि, अन्न, रेतः (वीर्य) श्रद्धा निष्पन्न आहुतिको सूक्ष्म कणको सहारा पाएको जीवात्मा स्वर्गादि लोकमा गएको हुन्छ, जब भोगद्वारा त्यो कर्मफल समाप्त हुन्छ अनि भोगद्वारा पुण्य क्षीण भएपछि अनुताप अग्निद्वारा श्रद्धा कणहरू विलीन हुन्छन्। तिनै विलीन भूत सूक्ष्मसहित जलद्वारा वेष्टित जीवात्मा स्वर्गबाट फिर्ता हुँदै यस लोकतिर फर्कन्छ। त्यसपछि पर्जन्याग्निमा शरीरारम्भक विलीन सोमको आहुति हुन्छ, जसबाट वृष्टिको निष्पत्ति हुन्छ। त्यो वृष्टिको तृतीय पृथिवी अग्निमा आहुति हुन्छ, त्यो आहुति भएपछि पृथ्वीमा अन्न औषधि आदि उत्पन्न हुन्छन् तिनै बृही यवादि अन्न औषधिहरूमा स्वर्गच्युत जीवात्मा धेरै समय संसृष्ट रहन्छ, यो ब्रीह्यादि संश्लेषको अन्त अत्यन्त कष्टसाध्य छ, दोस्रो शब्दमा भन्ने हो भने ब्रीह्यादि अन्नबाट जीवात्माको जिष्क्रमण अत्यन्त कठिन छ, श्रुति भन्छ, अतो वै खलु दुर्निष्प्रपतरम्, (छान्दोग्य ५।१०।६)

जब चतुर्थ पुरुषाग्निमा त्यो अन्न हवन हुन्छ, अनि रेतः, शुक्र र रसादि क्रमद्वारा निष्पन्न सप्त धातु, अनि त्यो शुक्राहुतिबाट मातृकुक्षिस्थ गर्भको जन्म हुन्छ। अब त्यही गर्भ क्रमशः ९-१० महिना गर्भमा रहेर सम्पूर्ण अङ्गप्रत्यङ्गले युक्त भएर मातृयोनिबाट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाहिरिन्छ, अनि शिशु, बाल, कुमार, पौगण्ड, युवा, प्रौढ, वृद्ध आदि संज्ञाद्वारा पुकारिन्छ।

यस प्रकार जो तत्त्वज्ञानी छ, उसको मुक्ति हुन्छ, त्यसले कहीं जानै पर्दैन र जन्ममरणको प्रपञ्चबाट मुक्त हुन्छ। जो विद्या, तप, योग, समाधियुक्त उपासक छ, त्यो ब्रह्मलोक पुगी ब्रह्मोपाशक हो भने ब्रह्माको अन्तसँगै ब्रह्माको उपदेशद्वारा ज्ञान प्राप्त गरेर मुक्त हुन्छ, पञ्चाग्नि उपासक हो भने ब्रह्मलोकसम्मका ऐश्वर्यसुखको भोग गरेर पुनः यही भूमिमा जन्म लिन आउनुपर्छ, त्योभन्दा अरू कर्मठहरू परमेष्ठी मण्डलसम्मका सुखको अनुभव गर्न पाउँछन्, जो जीवनमुक्त छन् ती र अरू अगतिदेखि बाहेक जसको आफ्नो संस्कार कर्मअनुसार पृथ्वीदेखि ब्रह्मलोकसम्म जाने साधन भनेको आतिवाहिक शरीर नै हो जसको उल्लेख योभन्दा अघि गरिसकिएको छ, अन्तर केवल यति हो धर्मात्मा गन्तव्य स्वर्गादिमा पुगेपछि अतिवाहिक शरीरलाई त्याग गरी दिव्य शरीर धारण गरेर सुखभोग गर्छ, पापी त्यही अतिवाहिक शरीरद्वारा नै नरकादिमा धकेलिन्छ।

दुवै थरीले आफ्ना कर्मफलको भोग सकिएपछि यस लोकमा फर्कनुपर्दाको क्रम अघि भनियो अन्तर केवल यति हो, उसको संस्कारअनुसार कहाँ जाने ऊचनीच योनिको निर्धारण हुने मात्र हो। मनुष्य आफ्ना शुभ कर्मअनुसार पुण्यको फल भोग्नका लागि दुइटा बाटा भएर जान्छन्, एक पितृयान अर्को देवयान, पिता द्यौ र माता पृथ्वीका बीचमा जुन गतिशील छ, यिनै दुइटा मार्गमा समाहित हुन्छन्।

छान्दोग्योपनिषद्ले शिष्ट मानवहरूलाई दुई भागमा विभाजित गरेको छ। एक- गाउँमा बसेर लोकोपकारमा संलग्न हुनेवाला धर्मात्मा, अर्को आरण्य वनमा गएर श्रद्धासहित तपस्याको जीवन व्यथित गर्नेवाला वैखानस तपस्वी। एक- लोकसङ्ग्रही लोकमङ्गल विधायक हो भने दोस्रो तपस्वी आत्मसाधक हो। लोकसङ्ग्रही पितृलोक जान्छ भने दोस्रो तपस्वी ब्रह्मलोक जान्छ, एकको गन्तव्य पितृयानद्वारा हो भने दोस्रो देवयानद्वारा हो।

तद्य इत्थं विदुः। ये चे मेऽरण्ये श्रद्धा तप इति उपासते तेऽर्चिषम् अभि संभवन्ति अर्चिषो अहःरन्ह आपूर्यमाण पक्षम् आपूर्यमाणपक्षात् यान् षडुदङ्ङेति मासाँस्तान्। मासेभ्य संवत्सरम् संवत्सरात् आदित्यम्। आदित्यात् चन्द्रमसम् चन्द्रमसो विद्युतम्। तत्पुरुषोऽमानवः स एतान् ब्रह्मगमयति। एष देवयानः पन्था इति। (छान्दो. ५।१०।१ र, २)

जुन व्यक्ति अरण्यमा श्रद्धा राखेर तपको अनुष्ठान गर्छन् ती व्यक्ति अर्चिसम्मुख हुन्छन् अर्चिबाट दिनदिनबाट शुक्ल पक्ष, शुक्ल पक्षबाट उत्तरायण, उत्तरायणबाट संवत्सर, संवत्सरबाट आदित्य, आदित्यबाट त्यहाँभन्दा माथि महः नामका चन्द्रमा, महःस्थानीय चन्द्रमाबाट तपः नाम गरिएको विद्युत्लाई प्राप्त गर्दछन् अनि विद्युत् मानव पुरुषले ती तपस्वीलाई ब्रह्मलोकमा लैजान्छन्। यो नै देवयान पथ हो। विद्युत् पुरुपको वर्णन (विद्युतः पुरुषादधिन्) यजु ३२।२ मा पनि छ।

जुन व्यक्ति गाउँघरमा बसेर इष्टापूर्त दानधर्म आदिको अनुष्ठान गर्छ मृत्युपश्चात्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धूममा समाहित हुन्छ। धूमबाट रात्रि, रात्रिबाट कृष्णपक्ष, कृष्णपक्षबाट दक्षिणायन मासमा प्राप्त हुन्छन्। त्यहाँबाट संवत्सरमा नभई पितृलोकमा प्राप्त हुन्छन्। पितृलोकबाट आकास, आकासबाट चन्द्रमामा पुग्छन्। यो चन्द्र देवताको अन्न हो। देवताहरू यसैलाई खान्छन्। वेदले भनेको छ- सोमेन आदित्याः बलिनः सोमले नै आदित्यमा बल प्राप्त हुन्छ। यसरी सोममा पुगेको व्यक्ति जबसम्म त्यहाँबाट सम्पातको समय हुँदैन तबसम्म त्यहीं वास गरेर पुनः त्यही मार्गबाट पृथ्वीमा आउँछ।

अथ य इमे ग्राम इष्टापूर्ते दत्तमित्युपासते ते धूममभिसम्भवन्ति धूमाद्रात्रिं रात्रेरपरपक्ष मपरपक्षाद्यान्षड्दक्षिणैति मासांस्तान्नैते संवत्सरमभिप्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥

मासेभ्यः पितृलोकम्। पितृलोकात् आकासम्। आकाशाच्चन्द्रमसम् एष सोमो राजा। तद्देवानामन्नम्। तं देवा भक्षयन्ति। छान्दो ५ । १० । ३ । ४

तस्मिन्यावत्संपातम् उषित्वा अथ तमेव अध्वानं पुनर्निवर्तन्ते। छान्दो ५ । १० । ५

तद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशो ह यत्ते रमणियां योनिम् आपद्येरन्। ब्राह्मणयोनिं वा क्षत्रिययोनिं वा वैश्ययोनिं वा। अथ ये इह कपूय चरणाः अभ्यासो ह यत्ते कपुयां योनिं आपद्येरन् श्वयोनिं वा शूकरयोनिं वा चाण्डालयोनिं वा। ५ । १० ।

यसरी कर्मभोग सकेर फर्किएको व्यक्ति जो राम्रो आचरणको अभ्यासी छ, त्यो राम्रो ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य आदि योनिमा प्राप्त हुन्छ। जसको नराम्रो आचरण छ, त्यो चाण्डाल, कुकुर, सुँगुरको योनिमा प्राप्त हुन्छ।

अथैतयोः पथोर्न कतरेण च न तानि इमानि क्षुद्राणि असकृत् आवर्तीनि भूतानि भवन्ति जायस्व म्रियस्व इति एतत् तृतीयं स्थानम्। तेनासौ लोको न सम्पूर्यते तस्मात् जुगुप्सेत तदेष श्लोकः ५ । १० । ८

स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबंश्च गुरो स्तल्पमावसन् ब्रह्महा चैते पतन्ति चत्वारः पञ्चम श्चाचांस्तैरिति ५ । १० । ९

जुन व्यक्ति देवयान अथवा पितृयानमध्ये दुवै पथको योग्य छैन, त्यस्तालाई क्षुद्र भूत भनिन्छ। जो बारम्बार जन्मँदै मर्दै गर्छन्, पैदा हुनु र मर्नु नै यिनीहरूको स्थान हो। यस्ता प्राणीहरूबाट उपर्युक्त लोकको सम्पूर्ति हुँदैन। यिनलाई सबैले घृणा गर्दछन्।

सुन चोर्नेवाला, मदिरा पिउनेवाला, गुरुको शय्यामा सुत्नेवाला, गुरूपत्नीसँग व्यभिचार गर्नेवाला, ब्रह्महत्या गर्नेवाला यी चारलाई पतित भनिएको छ, अनि पाँचौं पतित त्यो हो जो यिनीहरूको साथ दिन्छ।

गुरु वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।
आततायिनमायात्तं हन्यादेव विचारयन् (मनु)
न श्रेयः सततं तेजो न नित्यं श्रेयसी क्षमा।
तस्मान्नित्यं क्षमा तात पण्डितैरपवारिताः
अश्वमेधसहस्राणि सत्यं च तुलया धृतम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अश्वमेघसहस्राद्वै सत्यमेव विशिष्यते
(तैत्तरीयोपनिषद् १।११।१)

यो विश्वब्रह्माण्डमा जोजति सूक्ष्म तरल छ, त्यसको त्यति नै ऊर्ध्वगति हुन्छ। जस्तै बरफभन्दा पानी पातलो हुन्छ। पानीभन्दा बाफ पातलो हुन्छ। बाफभन्दा बिजुली पातलो हुन्छ। बिजुलीभन्दा मन पातलो हुन्छ। मनभन्दा चैतन्य पातलो र सूक्ष्म हुन्छ। वैज्ञानिकहरूले बिजुलीको एक सेकेन्डमा एक लाख छयासी हजार सात सय सत्सठ्ठी माइल गति बताएका छन्। त्यो गति भएको बिजुलीको स्पर्श अनुभव हुन्छ। स्पर्श अनुभव नै नहुने मनलाई त्योभन्दा सूक्ष्म र गतिमान् मान्नुपर्छ। त्यस मनमा पनि व्यापक भएर रहेको चैतन्य कति पातलो र सूक्ष्म होला र त्यो चैतन्यको गति बिजुली र मनको भन्दा कति बढी होला।

मनुष्य जुन अन्न खान्छ त्यो परिपाक भएपछि तीन भागमा विभाजित हुन्छ। अन्नको स्थूल अंश विष्ठा हुन्छ, मध्यम अंशबाट मासु बन्छ सूक्ष्म अंशबाट मन बन्छ। मनुष्य जुन पानी पिउँछ त्यो पानी परिपाक भएपछि स्थूल अंश मूत्र बन्छ, सूक्ष्म अंशबाट रगत बन्छ, सूक्ष्मतम अंशबाट प्राण बन्छ। मनुष्य जुन तैजस अंश पदार्थ घिउतेल आदि भोजन गर्छ, त्यसको स्थूल अंशबाट हड्डी बन्छ, सूक्ष्म अंशबाट मासी वा मज्जा बन्छ, सूक्ष्मतम अंशबाट वाक (वचन) बन्छ। यसबाट स्पष्ट हुन्छ कि मनुष्य जो भोजन गर्छ त्यसैको परिपाक मन, प्राण, वचन हुन्। मनुष्य जीवनका यिनै तीन प्रमुख स्तम्भ हुन्।

अन्नमशितं त्रेधा विधीयते तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत्पुरिषं भवति यो मध्यमस्तन्मांसं योऽणिष्ठस्तन्मनः। आप पीतास्त्रेधा विधीयन्ते तासां यः स्थविष्ठो धातुस्तन्मुत्रं भवति यो मध्यमस्तल्लोहितं योऽणिष्ठः स प्राणः। तेजोऽशितं त्रेधा विधीयते तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तदस्थि भवति यो मध्यमः स मज्जा योऽणिष्ठः सा वाक्।

छन्दोग्योपनिषद् अ. ६।१-३।

पूजा र साधनामा के अन्तर छ ?

प्राप्य वस्तुको चाहनालाई पूजा भनिन्छ। त्यसलाई प्राप्त गर्ने प्रयत्नलाई साधना भनिन्छ। उदाहरणका लागि जस्तै पानी प्राप्त गर्नुपर्नेछ, त्यसलाई पानीको चाहना या पूजा भनिन्छ, त्यसका लागि पानी निकाल्ने कल गाड्नुलाई साधना भनिन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्म मूलं सनातनम्

✍ **विष्णुभक्त भण्डारी**

गायत्रीको महिमा वर्णन, वेद, पुराण, इतिहास, उपनिषद् रामायण आदि सबै ग्रन्थमा सर्वत्र उपलब्ध छ। **गायत्र्यास्तु परं नास्ति, न गायत्र्याःपरं मन्त्रम्** गायत्रीभन्दा अर्को देवता र गायत्री मन्त्रभन्दा अर्को मन्त्र सर्वोत्कृष्ट छैन। वेद, पुराण, स्मृति, उपनिषद्को सार नै गायत्री हुन्। मनन शक्तिसम्पन्न मानवले ज्ञात-अज्ञात अवस्थामा गरेका सम्पूर्ण पाप प्रक्षालन गर्नका निमित्त वेदमाता गायत्रीको उपासना गर्नु आवश्यक छ। **गायत्रीं यो न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः** जसले गायत्रीको महत्त्व नबुझी अरू कर्ममा परिश्रम गर्दछ त्यसको त्यो सबै परिश्रम व्यर्थ हुन्छ। त्रिवृत् ॐ यो एकाक्षरी ब्रह्मबाट व्याहृति र व्याहृतिबाट त्रिपदा गायत्री, त्रिपदा गायत्रीबाट वेदको प्राकट्य भएको मानिन्छ।

त्रिण्यक्षराण्यजायन्त। तिस्रो व्याहृतयस्त्रिपदा गायत्री त्रयोवेदास्त्रयोदेवास्त्रयोवर्णाः (शाण्डिल्योपनिषद् ३।१)

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी। गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्। (गायत्री रहस्य)

गायत्री महिमाको वर्णन गर्न न कसैले सकेका छन्, न सकिन्छ, आफ्नो सामर्थ्यअनुसार गरिने हो। द्विजत्व लाभ गरेका मुमुक्षुहरूलाई ब्रह्मतत्त्व साक्षात्कार गर्न गायत्री उपासना नै सरल र सहज उपाय हो। पहिले ऋषिमुनिहरूले पनि गायत्रीको नै पुरश्चरण उपासना गरेर ऋषित्व, मुनित्व, देवत्व प्राप्त गरेका हुन्। विश्वामित्रले पनि भनेका छन्- 'धिक् बलं क्षत्रियबलं बलं ब्रह्मबलं स्मृतम्। गायत्रीको उपासना गरेर नै वशिष्ठ गुरुबाट विश्वामित्रले ब्रह्मर्षि पद प्राप्त गरेका हुन्।

हाम्रो वैदिक सनातन धर्ममा ब्रह्मज्ञ वशिष्ठ, विश्वामित्रादि ऋषिहरूबाट नै गायत्री उपासनाको परम्परा चल्दै आएको हो भन्ने कुरा शास्त्रमा बताइएको छ। षडानन्द गुरु महाराजले पनि गायत्रीकै उपासनाद्वारा ब्रह्मतेज प्राप्त गरी चमत्कार गर्नुभएको हो भन्ने कुरा उहाँकै जीवनीबाट सर्वविदित छ। उहाँकै शिष्य गुरु यज्ञनिधि (सुभाङ गुरु) हुँदै योगानन्द गुरु, विवेकानन्द गुरु, नेतृराम (गायत्री) भण्डारी, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, नारायणानन्द (शान्ति महाराज), नारायणस्वरूप

✍ पूर्वप्रअ, श्री साङ्गवेद संस्कृत मा. वि., बिर्तामोड २, चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मचारी, कृष्णानन्दहरूले पनि गायत्रीको उपासना गर्नुभएको हो। योगानन्द गुरुले धेरै स्थानमा बसी गायत्रीको पुरश्चरण (उपासना) गर्नु-गराउनु भएको हो। सुभांङको सिम्लेमा गायत्री पुरश्चरण गर्नेमा पुष्पलाल सङ्ग्रौलालगायत प्रमुख थिए। खुँगाको "पात्लेपानी' भन्ने ठाउँमा गायत्री अनुष्ठानमा पूजा गर्ने श्रीकेदारनाथ खतिवडा हुनुहुन्थ्यो। त्यहाँ सुभाङ गुरुकै आज्ञाले योगानन्द गुरुले पुरश्चरण गराउँदा अन्य उपासक यज्ञनिधि खतिवडा, बलभद्र खनाल, नारद खतिवडा, नरपति अधिकारी, जगन्नाथ अधिकारी, देवीचरण (छोकमाली) अधिकारी, दिननाथ अधिकारीलगायत थिए।

त्यस्तै हाल फालेलुङ गाउँपालिकाको माङलेबुङको पानवा छाँगाको परिसरमा पनि गुरु योगानन्दबाटै गायत्री अनुष्ठानमा बसेर जप गर्नेहरू पं. टेकनाथ गौतम (गौतम गुरु) बनारसी खतिवडा, भानुभक्त खतिवडा, कुलप्रसाद खतिवडा, मोतीखर खतिवडा, मुक्तिनाथ खतिवडा, शिवलाल नेपाल, शिवशङ्कर दाहाल, तुलसीराम दाहाल, हरि शर्मा अधिकारी थिए।

यस्तै गरी जोरपोखरी कुटीमा योगानन्द गुरु धेरै वर्षसम्म बसी ग्रामवासी भक्तजनहरूलाई शिक्षा-दीक्षा उपदेश गरी १२ हजारभन्दा अधिक जप गराउनुभयो। यही सन्दर्भमा म विष्णुभक्त भण्डारीलाई पनि जोरपोखरीकै ठुलोकुटी (अहिले जीर्ण भएकाले नयाँ निर्माण गरिएको छ) मा बसी योगानन्द र विवेकानन्द गुरुदेवहरूबाटै अनुगृहित भएर गायत्री मन्त्र जप गर्ने अवसर प्राप्त भएको थियो। उहाँहरूकै आज्ञानुसार आफूले गरेका कर्मका केही अनुभवहरूको संस्मरण व्यक्त गरेको छु।

गायत्रीको पूजा-उपासना गर्न विभिन्न पूजाविधिहरू प्राप्त भए तापनि तीमध्ये आधिकारिक पूजापद्धति विश्वामित्र कल्पोक्त गायत्रीपञ्चाङ्ग (गायत्री रहस्य) नै प्रसिद्ध छ। पञ्चप्रणवप्रयुक्त गायत्रीमन्त्र जप गर्ने परम्पराको शास्त्रमा सर्वत्र प्रमाण पाइन्छ। पञ्चप्रणव लगाएर जप गर्ने, पूजा विधि, नियम, आहार, आसन इत्यादि सबै कुरा गायत्रीपञ्चाङ्ग (गायत्रीरहस्य) मा उल्लेख छ। सोही पूजापद्धतिका आधारमा गायत्रीको पूजा-उपासना गर्ने विधि सङ्क्षेपमा यहाँ चर्चा गरिएको छ।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य भूर्भुवःस्वस्तथैव च।
तूर्यं सहैव गायत्रीजपं एवमुदाहृतम्।।

गायत्री पुरश्चरण

जप गरिने मन्त्रमा जति अक्षर छन्, त्यति लाख जप, जपको दशांश हवन, हवनको दशांश तर्पण, तर्पणको दशांश मार्जन, मार्जनको दशांश ब्राह्मण भोजन गराउनु नै पुरश्चरण हो।

गायत्री छन्दो मन्त्रस्य यथा सङ्ख्याक्षराणि च।
तावल्लक्षाणि कर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा।
जीवहिनो यथा देहो सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरण हीनस्तु तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः। (पुरश्चर्यार्णव)

आत्मशुद्धि अर्थात् कर्ताशुद्धिका लागि ३ लाख अथवा १ लाख सङ्ख्यामा मन्त्र जप गर्नु पर्छ भने मन्त्रशुद्धिका लागि १० हजारपटक मन्त्र जप गर्नु पर्छ। यहाँ मन्त्र भन्नाले जुन मन्त्रको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरश्चरण गर्ने हो त्यो मन्त्र सम्झनु पर्छ।

मन्त्रशोधनतः पूर्वं देहशुद्धिर्विधीयते।
तदर्थं तु जपं कुर्यात् त्रिलक्षं लक्षमेव वा। (पुरश्चरण भाष्कर)
आत्मतत्त्वशोधनाय त्रिलक्षं प्रजपेद् बुधः।
अथवा चैकलक्षं तु श्रुतिप्रोक्तेन वर्त्मना। (देवीभागवत ११।२१।८)
यस्य कस्यापि मन्त्रस्य पुरश्चरणमारभेत्।
व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत्। (देवीभागवत ११।२१।४)

गायत्री पद्धति

ब्रह्ममुहूर्तमा उठी शास्त्रोक्त विधिअनुसार शौच स्नानादि गरेर सन्ध्योपासना पद्धतिअनुसार सन्ध्या गर्दा गर्नुपर्ने कर्म यस प्रकार छन् :

शिखा बन्धन, आसन शुद्धि, प्राणायाम, मार्जन, जल सिञ्चन, अघमर्षण, सूर्याघ्र्य, सूर्योपस्थान, न्यास, ध्यान, मुद्रा, श्रापमोचनपूर्वक सन्ध्या, नित्य पाञ्चायतन देवता पूजन, नित्य हवन सकेर गायत्रीको विशेष पूजा गर्न प्रारम्भ गर्नुपर्दछ। प्रारम्भमा प्रतिज्ञा सङ्कल्प गरी गायत्री न्यास, मानसी पूजा सकेर बाह्य पूजा गर्न जलशुद्धि गरिन्छ। थालीमा त्रिपदा गायत्रीको प्रतीकका रूपमा त्रिकोण लेखी त्यसमा पञ्चोपचारले पूजा गरी त्यसमाथि जलको घडा राखी ८ चोटि गायत्री मन्त्रद्वारा अभिमन्त्रण गरी पूजा गर्नुपर्छ। यसलाई सामान्याघ्र्य पात्र भनिन्छ।

त्यसपछि विशेषाघ्र्य पात्र निर्माण गरिन्छ। ठुलो अर्को थालीमा षट्कोण लेख्ने र आग्नेयमा हृदयाय नमः इत्यादि मन्त्रले न्यास गरी दीप, कलश, गणेशको पुनः पूजा गरी षट्कोणको पूजा गर्ने, अग्निमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः इत्यादिले १२ देवताको पूजा गर्ने, विलोम मातृकाले पूर्वोक्त कलशको जल लगाउने र पुनः सोम मण्डलादि १३ नामले पूजा गरी अङ्कुश मुद्रा देखाई गङ्गादि ७ नदीको स्मरण गरी आवाहन गर्ने, योनि मुद्रा, धेनु मुद्रा, शङ्ख मुद्रा देखाई पुनः ८ चोटि गायत्री मन्त्रले मन्त्रेर मत्स्य मुद्राले शोधन गरी सामान्य अर्घ्यको जलले सेचन गर्नु पर्छ। ॐ आत्मतत्त्वाय नमः देखि 'परोरजसे सावदोम्' सम्म ७ चोटि मन्त्रेर त्यसै पात्रको जल निकाली ३ चोटि पूजा सामग्री र आफूलाई समेत जलले सेचन गर्ने, यो विशेषाघ्र्य भयो।

अन्य पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, शुद्धोजल, पुनराचमनीय आदि पात्र र पञ्चामृत मधुपर्कादि सबै पूजाको सामग्री ठिक गरी पूजा गर्दा गायत्री मन्त्र नै भनिरहने, परमात्मामा नै मन लगी जोड्ने। पूज्यपूजक एकीभाव भई सबै उपचारले मानसी पूजा गरेर बाह्य पूजा गर्न आज्ञा लिने र पीठपूजा गर्न थाल्ने। पीठ पूजामा ६४ कोठा थालीमा लेखी कोठाका बाहिरी भागमा पूर्व, दक्षिण, पश्चिम र उत्तरमा क्रमशः ॐ तत् नमः। ॐ भूः नमः। ॐ स्वः नमः। ॐ तपः नमः भनी पूजा गर्ने। माझमा ॐ तदादि चतुःषष्ठीवर्णेभ्यो नमः भनी पूजा गर्ने। त्यसपछि ॐ मं मण्डुकाय नमः देखि सर्वतोमुख्यै नमः सम्म ४६ देवताको पूजा गरी धूप, बाती, नैवेद्यादि चढाई पीठपूजा सम्पूर्ण गर्ने। पुनः त्यसमाथि अर्को ठुलो थालीमा गायत्रीको यन्त्र लेखेर राख्ने अनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वोक्त ऋषिन्यास गरी प्राणायाम गर्ने, मूर्ति भए प्राणप्रतिष्ठा गरी पूजा प्रारम्भ गर्ने। आवाहन, आसनदेखि लिएर समर्पणपर्यन्त गायत्रीको यन्त्र लेखेको थालीका माझमा पूजा गरिसकेर मात्र दश आवरण पूजा गर्ने र अङ्ग पूजा गरिसकेर धूपबाती सबै समर्पण गर्ने। निराजन (आरती), पुष्पाञ्जली, क्षमार्पण, पूजा निवेदन आदि गर्ने। अनि गायत्रीहृदय पाठ गरिसकेर सङ्ख्याको जप १२ बजेसम्म गर्ने। अन्त्यमा गायत्री कवच पढी आफ्नो मध्याह्न सन्ध्या गर्ने र मध्याह्नको सङ्क्षेपले पूजन निराजन आदि गरी विसर्जन गर्नुपर्छ। त्यसपछि गायत्रीको चरणोदक प्रसादादि ग्रहण गरी भोजन गर्नुपर्छ। गायत्री पुरश्चरण अथवा प्रायश्चित्तात्मक गायत्री अनुष्ठान गर्दा १ चोटि मात्र भोजन गर्नुपर्दछ। अशक्त भएमा जल, दुध, फल आदि हविष्यान्न ग्रहण गर्न सकिन्छ। विधि पक्ष यत्ति नै हो।

यस्ती गायत्री माताको परम महिमा भएको हुँदा विवेकानन्द गुरुजीले पनि विविध स्थानमा बसी धेरै भक्तजनहरूलाई गायत्री जप गराउनुभएको हो। विवेकानन्द गुरुले गायत्री निराजन (आरती) को रचना गर्नुभएको छ। त्यो गायत्री निराजनको अहिले पनि धेरै भक्तजनहरूले कण्ठस्थ गरेको पाइन्छ।

श्रीविवेकानन्द गुरुका विषयमा थोरै समयमा लेखेर सकिंदैन। उहाँ त्रिकालज्ञ, सर्वजनमर्मज्ञ, समदर्शी, ब्रह्मज्ञ हुनुहुन्थ्यो। श्रीविवेकानन्दमा अव्यक्त योग, व्यक्त योग, सिद्ध योग तीन अवस्थामा तीन योग नै शिष्यहरूले अनुभव गर्न सकिन्थ्यो।

अव्यक्त योग

गृहस्थाश्रममा रहँदा सानो उमेरबाट अध्ययनतिर नै उहाँको विचार हुँदा साधारण गाउँघरका गृहस्थ जनसँग नमिल्ने असाधारण लक्षणहरू थिए। घर बस्दा, काम गर्दा, गोठ बस्दा अरूको भन्दा अलग व्यवहार देखिन्थ्यो। गोठका घरका बस्ताका साथीसँगीहरूलाई योग्य शिक्षा उपदेश सरल व्यवहारका कुनै पनि कुराको यथायोग्य सल्लाह दिने गर्नुहुन्थ्यो। अर्काको हानिनोक्सान आफ्नै जस्तो मानी दया भाव देखाउनुन्थ्यो। सबैमा समभावले व्यवहार गरे पनि परमात्मामा नै योगासक्तमना हुनुहुन्थ्यो।

व्यक्त योग

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' यो श्रुति वचनलाई सार्थक सिद्ध गर्न त्यक्त परिग्रह भई निम्नानुसारका तपस्थलीमा तपस्या गर्न लाग्नुभयो। मच्छेबुङको सिद्ध गुफा, हिवानदीको राम गुफा, मालिङ्गेनीको गणेश गुफा (गजानन) गैरीको नन्दी गुफाहरूमा बसेर तपस्या गर्दाका सामाग्रीहरू काट्ने हतियारमा सानो कर्द थियो, पकाउनेमा केवल १ सानो डल्ले लोटा थियो। चलाउने १ छिर्लिङ नामक १ सानो कमण्डलु थियो, १ पुर्लुक नामक ग्लास थियो, ओड्नेमा १ बर्की र ओछ्यानमा १ सानो आसनी थियो, जप्नलाई २ पञ्चपात्रा र आचमनी १ थाली थियो। खानलाई १ सिल्बरको बटुको थियो, सिद्ध गुफामा बस्दा केवल रात्रिमा एक्लै रहनुभयो। पानी १ कि.मि.भन्दा टाढा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीतलपाटीमा मात्र थियो। कहिले कोही ग्राम्य जनताले ल्याइदिन्थे बाँसको ढुङ्ग्रोमा। प्रायः त्यहाँ बाघ नै अरू बेला बस्तथे भने गुरु बसेका बेलामा कहिले २ पाखामै बाहिर नै बसी गर्जी स्वागत गर्छन् भन्नुहुन्थ्यो। कसैले सुकेका मकैको १ झुत्तो लगिदियो भने घोगो पानीमा भिजाई खरानी लगाई धुनीमा पोल्दा जस्तो हुन्छ त्यसैले निर्वाह गरिन्छ भनी कहिलेकाहीं प्रसङ्गमा गुरु आफैं भन्नुहुन्थ्यो। सारै अप्ठ्यारो र भिर भएकाले त्यहाँ जान कठिन थियो। यस्तै यस्तै जीवनको परवाह नगरी तपस्या गर्नुभएको हो। जहाँ जहाँ ओडार गुफा थिए, त्यहीं त्यहीं बसी तपस्या गर्दा शरीरमा के कस्तो आभूषण थियो। शरीरमा कटिउपर १ ब्रह्मगादो बाँधेको, उँधो १ कछाड लगाइएको शिरमा केवल जटा, मुकुटमा १ गाम्छाले बाँधेको, ललाटमा भस्म लाइएको प्रायः शरीरमा पनि भस्म, गलामा ठूला दाना भएको रुद्राक्षको माला र पाउमा काठका खराउ लाइएको हुन्थ्यो।

अग्लो मूर्ति, मोटा लामा बाहु, हातपाउ कोमल, ठूलो मोटो नासिका, पाउका कुर्कुचा र अग्र भाग केही उच्च हुँदा मध्य भागको अर्ध भागचाहिँ भूमिमा सबै छाप नदेखिने, हिंड्दा केही झुकेको हो कि भन्ने प्रवाह पर्ने उहाँको प्रकृति देख्दामा पनि अनौठो झस्को पर्ने खालको थियो। तपस्याले गर्दा सिधा अनुहारमा हेर्न नसकिने धप् धप् बल्दो तेजको कान्ति देखा पर्दथ्यो।

रात्रिमा कहिले नाद गर्दा घण्टको शब्दझैं रननन गर्ने शब्द जस्तो थरीथरीका शब्दहरू सुनिन्थे। कहिलेचाहिँ 'जय जय सीताराम हरि, जय जय सीताराम भनी उठेर कीर्तन गर्दा नाच्दा एउटा भिन्न दृश्य देखिन्थ्यो।

कहिले सिंहनाद गर्दा नादको आवाजले कुटीमा नै प्रतिध्वनिझैं विचित्र ध्वन्यात्मक शब्द सुनिन्थ्यो। उहाँहरूको रात्रि नै दिन जस्तो हुन्थ्यो। सुत्ने कम मात्र हुन्थ्यो। कहिले केही चेष्टाविना नै रात्रिमा बसी ध्यानमग्न हुनुहुन्थ्यो। यस्ता किसिमले योग तपस्या गर्नुभएको हो।

सिद्ध योग

योग सिद्ध भएपछि तेजपुञ्ज (आगेजुङ) शिवगङ्गा आदि स्थलमा बसी ऐश्वर्ययुक्त पटक-पटक ठूलठूला लक्षहवन, पुराण, नाना किसिमका जन आश्चर्ययुक्त कर्म गर्नु गराउनु भएको अघटित घटनाहरू पनि भएको अझै पनि झल्किरहेको छ। भक्तजनहरू भन्ने गर्नुहुन्छ यस्तो यस्तो गर्नुभयो सबै जसरी जुन प्रकारले जस्तो जस्तो स्वभावले लिएर आएको वस्तु, चिज, पदार्थ छ त्यो सबै जान्नुहुन्थ्यो भन्ने कुरा धेरैका धेरै प्रकारका छन्। त्यो केही आश्चर्य होइन किनकि भूत, भविष्य, वर्तमान त्रिकालज्ञ सज्जन गुरुहरूलाई हामीहरूले गरेको कुरा जान्नमा सामान्य हो।

यस्ता यस्ता लक्षणहरू केही गुरुसँगै बस्ताका दृश्यहरू लेखियो तर यति नै मात्र होइन, केवल १-२ दृश्यहरू लेखियो। सन्त पुरुषहरूको स्वानुभव हामी जस्ताको के सामर्थ्य लेख्न ? केवल क्षमा प्रार्थना गर्दै विराम लिन्छु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गायत्री तत्त्व र गायत्री उपासना विमर्श

✍ प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा

१.गायत्रीतत्त्व :-

'आत्मा वै गायत्री' = गायत्री छन्दोपाधिक आत्मा नै गायत्री हुन्। यही कुरालाई पोषण गर्दै भगवत्पाद शङ्कराचार्य भन्नुहुन्छ 'एतद्गायत्र्याख्यं ब्रह्म' यो त गायत्री संज्ञक ब्रह्म नै हो। अतः 'नेति नेति' श्रुति प्रमाणद्वारा जाति, गुण, क्रिया, सम्बन्ध आदि सारा प्रपञ्चको प्रतिषेध गरेपछि अवशेष रहने जुन बोध सत्तात्मक 'चित्' शक्ति हो त्यही नै गायत्री तत्त्व हो। यो चिद्रूप ब्रह्मलाई गायत्री शब्दद्वारा बुझ्ने र बुझाउने परम्पराका पछाडि विविध कारणहरू छन्। जसमध्ये यी तीन कारण प्रमुख छन्। तीमध्ये **पहिलो कारण** हो - गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री तु ततः स्मृता। -गायत्री प्रोच्यते तस्माद् गायन्तं त्रायते यतः। (याज्ञवल्क्य) गायन्तं त्रायते देवी तद् गायत्रीति गद्यते। (वसिष्ठ) अर्थः गान गर्ने (जप गर्ने) व्यक्तिलाई त्राण अर्थात् विशेष रक्षा गर्ने हुनाले त्यो चिद्रूप ब्रह्म तत्त्वलाई नै गायत्री भनिएको हो।

दोस्रो कारण हो - *प्राणा गया इति प्रोक्ता त्रायते तानथापि वा। -भारद्वाज*
गयः प्राण इति प्रोक्तस्तस्य त्राणादपीति वा। - वसिष्ठ
तद्यत् प्राणं त्रायते तस्माद् गायत्री। -बृ.उ. ५।१४।४
गयान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री। -ऐतरेय ब्राह्मण
गयान् प्राणान् त्रायते गायत्री। -शाङ्कर भाष्य

अर्थः गय भनेको प्राण अथवा प्राणोपलक्षित इन्द्रियहरू हुन् र ती प्राण एवं इन्द्रियहरूको रक्षक एवं प्रकाशक जो व्यष्टि रूपमा हृदयाकाशमा विद्यमान पुण्डरीक वेशमस्थ प्रत्यगात्मा र समष्टि रूपमा सूर्यमण्डलान्तर्गत विद्यमान परमात्मालाई नै गायत्री भनेको हो। तब न यो 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽहमस्मि' र परोरजसेसावदोम् को समन्वय हुन सक्छ। **तेस्रो कारण** हो - **'सर्वच्छन्दसां हि गायत्रीछन्दः प्रधानः** (शाङ्कर भाष्यः) अर्थात् सम्पूर्ण छन्दहरूमा गायत्री छन्द प्रधान हो। **चतुर्विंशत्यक्षराणां सत्वेन गायत्री**

✍ *पूर्व वेदवेदान्त विभागाध्यक्ष, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्दलाई अनुष्टुप् छन्द भनिन्छ भने चौबीस अक्षरात्मक **छन्दः** अर्थात् बत्तीस अक्षरात्मक छन्दलाई गायत्री छन्द भनिन्छ। यो चर्चाको विषयभूत ब्रह्मगायत्री पनि चौबीस अक्षरात्मक छन्दलाई गायत्री छन्द भनिन्छ। यो चर्चाको विषयभूत ब्रह्मगायत्री पनि चौबीस अक्षरात्मक गायत्री छन्दद्वारा आच्छादित भएको हुनाले छन्दप्रधानतया गायत्री भनिएको हो न कि तत्त्वप्रधानतया। तात्त्विक दृष्टिले त गायत्री ब्रह्म नै हो। मन्त्रको दृष्टिले सावित्री हो। यस यथार्थतालाई प्रमाणित गर्ने मत्स्य पुराणको वचन यस प्रकार छ -

अर्थोऽयं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थो विनिर्णयः। गायत्री भाष्यरूपोऽसौ वेदार्थः परिबृंहितः। (मत्स्यपुराण)

अर्थ : ब्रह्मसूत्र र वेदार्थले भरिएको महाभारत एवं भागवत गायत्री मन्त्रको भाष्य हो। त्यस कारण ब्रह्मसूत्रलाई 'गायत्रीसूत्र' र श्रीमद्भागवत एवं महाभारतलाई गायत्री भाष्य भन्दा अतिशयोक्ति हुँदैन। अतः ब्रह्मसूत्र, महाभारत र श्रीमद्भागवतको जुन प्रयोजन हो त्यही नै ब्रह्मगायत्री मन्त्रको पनि प्रयोजन हो।

सर्ववेदान्तसारंयद्‌ब्रह्मात्मैकत्वलक्षणम्। वस्त्वद्वितीयंतन्निष्ठंकैवल्यैकप्रयोजनम्। । भागवत १२/१३/१२

जीव र ब्रह्मको एकतारूप बोधस्वरूप ब्रह्म नै सम्पूर्ण उपनिषद् अर्थात् वेदान्तको सार हो। जुन वेदान्तको सार र प्रयोजन हो, त्यही नै भागवतको सार हो। जुन भागवतको सार हो, त्यही नै गायत्रीमन्त्रको पनि सार अर्थात् प्रयोजन हो। किनकि गायत्री मन्त्रका भाष्यभूत भागवतको सार कैवल्य मोक्ष भएपछि गायत्री मन्त्रको सार पनि स्वतः कैवल्य मोक्ष हुने नै भयो। त्यस कारण गायत्री मन्त्रोपासनाको मुख्य प्रयोजन कैवल्य मोक्ष नै हो। ब्रह्मगायत्रीको उपासना गर्दा कसरी कैवल्य मोक्ष प्राप्त हुन्छ ? भन्ने जिज्ञासा समाधानका लागि अब गायत्री मन्त्रको अर्थ चिन्तन गरौं।

२. गायत्री शब्दको अर्थ

गै शब्दे 'धातुबाट शतृ प्रत्यय भएर निष्पन्न गायत् शब्द प्रयुक्त गायन्तं त्रायते यस विग्रहमा गायत् शब्दपूर्वक त्रैङ् पालने धातुदेखि आतो नुपसर्गे कः यस पाणिनीय सूत्रद्वारा क प्रत्यय, आत्व, आलोप, षिद्गौरादिभ्यश्च यस सूत्रले ङीष् भएर गायत्री शब्द बन्दछ। अर्को गा स्तुतौ अथवा गै शब्दे धातुबाट भावमा घञ् प्रत्यय भएर सम्पन्न गाय शब्दबाट गायेन त्रायते यस विग्रहमा गाय शब्दपूर्वक त्रैङ् पालने धातुबाट सुपि च यो सूत्रले क प्रत्यय र पूर्ववत् ङीष् प्रत्यय भएर निष्पन्न गायत्री शब्दको अर्थ हो **गीयते ब्रह्मतत्त्वमनया इति** गायत्री जसको जप अर्थात् अर्थानुसन्धान गर्दा ब्रह्मतत्त्व गाइन्छ अथवा जानिन्छ त्यही नै गायत्री वा गायत्री हो। सम्पूर्ण वेदार्थले भरिएको श्रीमद्भागवत, महाभारत एवं ब्रह्मसूत्र नै जसको भाष्य हो, त्यस्ता ब्रह्मगायत्रीको अर्थ हामीहरू जस्ता साधारण साधकबाट असम्भव जस्तो प्रतीत भए तापनि यथाधीत यथामति गायत्रीमन्त्रको अर्थ गर्ने प्रयास गरिन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मगायत्री मन्त्रका अक्षरार्थ, पदार्थ, पादार्थ (वाक्यार्थ) तात्पर्यार्थ र भावार्थ आदि विविध अर्थ मन्त्रविद् विद्वान् ऋषि (महर्षिहरू) ले श्रुति, स्मृति, पुराणादि शास्त्रमा गर्नुभएको छ। जसमध्ये यहाँ पदार्थलाई माध्यम बनाएर विचार गरौं, गायत्री मन्त्रमा विद्यमान ॐ, तत्, सवितुः, वरेण्यं आदि पदको अर्थ के हो ?

३. ॐ को अर्थ

ॐ यो अक्षर अव रक्षणे धातुबाट बन्छ। अव रक्षणे धातुबाट निष्पन्न भएका ॐ कारको अर्थ हुन्छ अविद्यामूलक संसार सागरबाट रक्षा एवं मोक्ष गर्नेवाला। पाणिनीय व्याकरणानुसार ॐ को निर्माण प्रक्रिया यस प्रकार प्रस्तुत गर्न सकिन्छ- अवति रक्षति इति यो विग्रहमा अव रक्षणे धातुबाट मन् प्रत्यय, 'अवनष्टिलोपः'यो उणादि सूत्रद्वारा टिको लोप, 'अव 'म'यस अवस्थामा **'ज्वर-त्वर-स्रिव्य विमवामुपधायाश्च'** यस सूत्रद्वारा उठ् भएपछि अ उ म् यस अवस्थामा 'आद्गुणः' सूत्रले गुण भएर ओम् (ॐ) यो रूप सिद्ध हुन्छ। 'ॐ' अव्यय वाचक शब्द हो। अतः यो अक्षर अविनाशी, ब्रह्मवाचक अव्यय शब्द भएको हुनाले, सात विभक्ति एक्काइस वचनमा एउटै रूप हुन्छ - ओम् ओम् ओम्। प्रकर्षेण नूयते स्तूयत आत्मा इति प्रणवः यो व्युत्पत्तिअनुसार प्रणव पनि ब्रह्मवाचक नै भएको हुनाले ॐ कारको पर्यायवाची शब्द प्रणव पनि हो। प्रणवो मन्त्राणां सेतुः मन्त्रमहोदधि पार गर्नका लागि प्रणव अर्थात् ॐ कार पुल हो। नाद, बिन्दु र कलाको त्रिपुटी प्रणवमा सन्निहित छ। ब्रह्मगायत्री जब नाद, बिन्दु, कलामा परिणत हुन्छ तब उपासकलाई अपार आनन्दको अनुभूति हुन्छ। ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म ॐ यो एकाक्षरी ब्रह्म हो। यस ओम्कारका उपासकहरू आ-आफ्नो ढङ्गले ब्रह्मरूप आनन्दको अनुभव गर्छन्। अकार, उकार, मकार, नाद र बिन्दु यी पाँच अक्षरले संयुक्त ॐ कारको उच्चारण गर्दा घण्टाको नाद जस्तै प्लुत्त उच्चारण गर्नुपर्दछ। यसरी उच्चारण गरिएका अनाहत ध्वनिले अज्ञान नष्ट भई गायत्र्याख्य ब्रह्मतत्त्व प्रकाशित हुन्छ।

४. व्याहृतिको अर्थ

गायत्री मन्त्रमा ॐ कारदेखि पछाडि व्याहृतिको महत्त्वपूर्ण स्थान छ। विशेषण आह्यते सर्वं विराट् इति 'व्याहृति' अर्थात् विशेष रूपले सम्पूर्ण विश्वलाई व्यक्त गर्छ जसले त्यही नै व्याहृति हो। उपर्युक्त 'ॐ कारमा विद्यमान अ उ म् बाट क्रमश भूः भुवः स्वः यी तीन व्याहृति प्रकट भएका हुन्। यी तीन व्याहृतिहरू अनेकार्थ बोधकको रूपमा विद्वज्जगत्मा विख्यात छन्। व्याहृतको अर्थ क्रमशः भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक हो। प्रधान, पुरुष, काल। सत्त्व, रजः, तमः। अग्नि, वायु, सूर्य। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर। जन्म, जरा, मृत्यु। जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति। विश्व, तैजस, प्राज्ञ एवं उत्पादक, पोषक, संहारक र सत् चित्, आनन्द आदि अनेक अर्थमा चरितार्थ भएको पाइन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. तत् पदको अर्थ

व्याहृति उच्चारण गरिसकेपछि आसन्न उच्चार्यमाण त्रिपदा ब्रह्मगायत्रीको पहिलो शब्द हो 'तत्'। तत् यो सर्वनाम शब्द हो। जसको अर्थ हुन्छ 'त्यो' त्यो कुन रु ***सदेवसौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्।*** *तच्छब्देन प्रत्यग्भूतं स्वतःसिद्धं परं ब्रह्मोच्यते (शाङ्कर भाष्य)।* ***ॐ तत् सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः*** (गीता १७।३०) अर्थात् तत् शब्दको अर्थ साक्षात् अपरोक्ष स्वतःसिद्ध परब्रह्म हो। **ॐ तत् सत्** यी ब्रह्मका तीन वटा नाम हुन्। अर्थात् तत् शब्दको अर्थ हो यो जगत् प्रपञ्चको सृष्टि हुनुपूर्व विद्यमान त्यो मायावान् कारणब्रह्म-

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः (गीता ५।१७)

जसमा बुद्धि लगाउनाले तन्मय भएका एकमात्र परमात्मामा निष्ठा राख्ने भगवत्परायण व्यक्ति ज्ञानद्वारा पापरहित भएर जुन फेरि नफर्कने स्थानमा पुग्छन्। त्यो नै तत् पदको अर्थ हो। **तत् सत्यं स आत्मा।**

६. सवितुः शब्दको अर्थ

षूङ् प्राणिप्रसवे धातुबाट तृन् प्रत्यय भएर निष्पन्न सवितृ शब्दका षष्ठी विभक्तिको एक वचनमा 'सवितुः 'यो रूप हुन्छ जसको सामान्य अर्थ हुन्छ 'सूर्यको' भन्ने। तर यहाँ सवितुः शब्दको सामान्य अर्थमात्र ग्रहण गरेर गायत्रीको अर्थ गतार्थ हुँदैन अपितु विशेषार्थ लिनुपर्दछ। सविता शब्दको विशेषार्थ हो उत्पन्न गर्नेवाला-

सविता सर्वभूतानां सर्वभावश्च सूयते।
सृजनात्प्रेरणाच्चैव सविता तेन कथ्यते।

वृद्ध या. ९।५० सविता वै प्रसवनामीशे। (कृष्ण युजर्वेद)

सम्पूर्ण भूत पदार्थको प्रसवन अर्थात् उत्पन्न गर्ने हुनाले कारण ब्रह्मलाई नै यहाँ सविता शब्दद्वारा ग्रहण गर्नुपर्छ। किनकि *'तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यम्। एष हि खल्वात्मा* **सविता।'** यसबाट यो कुरा स्पष्ट भयो कि भूतसृष्टि जसबाट हुन्छ त्यही नै सविता हो। भूतसृष्टि कसबाट हुन्छ र ? *'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजीज्ञासश्व तद् ब्रह्म'* अर्थात् जसबाट पञ्चतन्मात्रादि भूत पदार्थको उत्पत्ति हुन्छ जसद्वारा जीवित रहन्छन् र अन्त्यमा जसमा गएर लीन हुन्छन् त्यही नै सवितुः शब्दको वास्तविक अर्थ हो। अर्थात् सोपाधिक परावर कारण ब्रह्म नै सविता शब्दको अर्थ हो - *असौ वै देवः सवितेति (शतपथ ब्राह्मण)*

७. वरेण्यं शब्दको अर्थ

वृञ् वरणे धातुबाट एण्य प्रत्यय भएर निष्पन्न 'वरेण्यं' शब्दको अर्थ हो - वरण गर्न योग्य, श्रेष्ठ अर्थात् सेवनीय, निरतिशय आनन्द।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वरेण्यं सर्वतेजोभ्यः श्रेष्ठं वै परमं पदम्।
स्वर्गापवर्गकामैर्वा वरणीयं सदैव हि। (अग्निपुराण, २१६।५०।)
वरेण्यं सेव्य मित्यर्थः।
वरेणीयं निरतिशयानन्दम्। (शाङ्करभाष्य)

अर्थात् वरेण्यं शब्दको वास्तविक अर्थ स्वर्ग अपवर्ग अथवा कैवल्य गति चाहने मुमुक्षु मात्रले सदैव प्रार्थनीय सम्पूर्ण तेजहरूभन्दा श्रेष्ठ, अवर्णनीय आनन्द हो। किं वा निरतिशय आनन्दस्वरूप ब्रह्म नै वरेण्यं शब्दको अर्थ हो। श्वेताश्वतरोपनिषद्ले पनि भनेको छ **तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यम्**- ९४।१४०।

८. भर्ग शब्दको अर्थ

भ्रस्ज् पाके, भञ्जो आमर्दने अथवा भृज् भर्जने धातुबाट भृज्यते रागादिरनेनेति यो व्युत्पत्तिअनुसार निष्पन्न भर्ग शब्दको अर्थ अविद्याजन्य सकल अज्ञानादि दोष भर्जक सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती तेज हो।

भजनीयं द्विजा भर्गः तेजश्चैतन्यलक्षणम्। (स्कन्दपुराण सूतसंहिता)
अविद्यादोषभर्जनात्मकं ज्ञानैकविषयत्वं भर्गत्वम्। (शङ्कर- महीधर भाष्य)
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति। (कठोपनिषद्)

यत् प्रकाशेन सर्वप्रकाशः प्रकाशते स एव भर्गः अर्थात् - जुन तत्त्व प्रकाशित भएको हुनाले नै सूर्य, चन्द्र तारागण आदि सबै प्रकाश प्रकाशित हुन्छन् त्यो प्रकाश नै भर्ग हो।

प्रकारान्तबाट 'भर्ग'शब्दमा विद्यमान भर्ग को पृथक् (पृथक् अक्षरार्थ) भ=भगण, सूर्यमण्डल, र= सूर्यमण्डलान्तर्गत पुरुष, ग= किरण' गर्ने हो भने पनि भर्ग शब्दको मुख्य अर्थ सूर्यमण्डलान्तर्गत विद्यमान प्रकाशमै पर्यवशित हुन्छ।

९. देवस्य शब्दको अर्थ

दिवु क्रीडा, विजिगीषा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्न, कान्ति, गति अर्थ भएका दिवु धातुबाट 'पचाद्यच्' अच् प्रत्यय भएर देव शब्द निष्पन्न हुन्छ। भगवत्पाद शङ्कराचार्यका शब्दमा देव शब्दको अर्थ- सर्वद्योतनात्मकाऽखण्डचिदेकरसम् अर्थात् सर्वप्रकाशक, अखण्ड एकरस चैतन्य हो।

दीप्यते क्रीडते यस्मात् रोचते द्योतते दिवि।
तस्माद् देव इति प्रोक्तः स्तूयते सर्वदैवतैः -वाचस्पत्यम्)।।
एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च। (श्वेताश्वतरोपनिषद्)

सम्पूर्ण प्राणीहरूको अन्तरात्मा भएर गूढरूपले रहेको सर्वसाक्षी, सर्वभूताधिवास, सर्वकर्माध्यक्ष, निर्गुण चेतन नै देव शब्दको वास्तविक अर्थ हो। देव शब्दविषयक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दकल्पद्रुमको परिभाषाले पनि यही भन्छ- *सर्वभूतेष्वात्मतया द्योतयते स्तूयते, सर्वत्र गच्छति तस्माद्देवः।* उपर्युक्त अर्थगर्भित देव शब्दकै षष्ठी विभक्तिको एक वचनको रूप हो देवस्य। जसको अर्थ हुन्छ प्रकाशस्वरूप भएका भन्ने। अर्थात् ***सूर्यमण्डलान्तर्वती तेज भर्ग*** **हो भने, यहाँ सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती दीप्ति नै देव हो।**

१०. धीमहि शब्दको अर्थ

धीङ् आधारे अथवा ध्यै चिन्तायां धातुबाट निष्पन्न रूप हो धीमहि। जसको सामान्य अर्थ हुन्छ, ध्यान गर्दछौं। ध्यानको महत्त्व जति आध्यात्मिक क्षेत्रमा छ त्यति नै आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक एवं व्यावहारिक क्षेत्रमा पनि छ भन्दा अतिशयोक्ति नहोला। किनकि जुन वस्तुको ध्यान हुन्छ, त्यहाँ मन जान्छ। मन गएपछि रुचि पैदा हुन्छ। रुचि पैदा भएपछि तद्विषयक आकाङ्क्षा वृद्धि हुन्छ। बढेका आकाङ्क्षाले प्रयत्न पैदा गर्दछ। प्रबल प्रयत्न भएपछि अभीष्ट वस्तु प्राप्त हुन्छ। तसर्थ ध्यान बीज हो भने सफलता फल हो। त्यस कारण कुनै पनि क्षेत्रमा सफलतारूपी फल प्राप्त गर्नु छ भने कर्तव्य कर्ममा ध्यान दिनै पर्दछ। यही कुरा रुद्रयामलोत्तर तन्त्रमा भनिएको छ -

ध्यानेन लभते लक्ष्यं लक्ष्येण लभते सुखम्।
सुखेनानन्दवृद्धिः स्यादानन्दो ब्रह्मविग्रहः।।

अर्थ : सावधान भएर ध्यान गर्नाले लक्ष्य प्राप्ति हुन्छ। लक्ष्य प्राप्ति भएपछि सुख अवश्यमेव हुन्छ। सुखानुभूतिरूप साधनद्वारा स्वाभाविक आनन्द वृद्धि हुन्छ। त्यो स्वाभाविक आनन्द नै ब्रह्मविग्रह हो। श्रुतिले पनि भनेको छ **'आनन्दं ब्रह्म'**। त्यस कारण ब्रह्मगायत्रीरूपी महावाक्यद्वारा ब्रह्मतत्त्व साक्षात्कार गर्ने साधनचतुष्टय सम्पन्न साधकको आन्तरिक पुकार हो यो '*तत् देवस्य सवितुः वरेण्यं भर्गः धीमहि*'। त्यो प्रकाशस्वरूप सूर्यको वरण गर्न योग्य तेजको हामी ध्यान गर्दछौं। यो भयो ब्रह्मगायत्रीका पूर्वार्धको अर्थ। अब उत्तरार्धमा प्रवेश गरौं।

११. धियः शब्दको अर्थ

ब्रह्मगायत्रीका उत्तरार्धको पहिलो शब्द हो धियः। यो ध्यै चिन्तायां धातुबाट निष्पन्न धी शब्दका द्वितीया विभक्तिको बहुवचनान्तरूप हो। जसको अर्थ हुन्छ सद्बुद्धि। गायत्रीको पूर्वार्द्ध 'त्यो प्रकाशस्वरूप सविताको वरण गर्न योग्य तेजको हामी ध्यान गर्दछौं' भनियो। अब यो ध्यानको प्रयोजन के हो ? र ध्यान किन गरिन्छ ? यसको स्पष्ट प्रतिपादन ब्रह्मगायत्रीको उत्तराद्र्धमा भएको छ।

आत्मतत्त्व साक्षात्कारका लागि मात्र नभएर आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, राजनीतिक लक्ष्य प्राप्तिका लागि पनि अत्यावश्यक सामग्रीमध्ये एउटा अपरिहार्य सामग्री हो सद्बुद्धि। सद्बुद्धिको अर्थ हो सत्लाई विषय गर्ने बुद्धि, श्रद्धा अथवा तदाकाराकारित

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्तवृत्ति। यो स्थिति त्यति सजिलै प्राप्त हुनेवाला छैन र सद्बुद्धिभन्दा ठूलो सम्पत्ति र दुर्बुद्धिभन्दा ठूलो विपत्ति यो विश्वब्रह्माण्डमा अरू केही पनि छैन। किनकि सद्बुद्धि भए सबै थोक प्राप्त हुन्छ। दुर्बुद्धिले भएको पनि गुम्छ। अतः शास्त्रमा पनि भनिएको छ-

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः।
विपद् विस्मरणं विष्णोः सम्पन्नारायणस्मृतिः।।
यावन्न हि मनः शुद्धं तावज्ज्ञानं कथं भवेद्।
शुद्धे मनसि वै ज्ञानं कथं वा नभवेद्ध्रुवम्।।(रामनारायणदत्त शास्त्री, वेदान्तदर्शन)

त्यस कारण प्रकाशस्वरूप सूर्यको वरण गर्न योग्य भर्गको ध्यान गर्नुको प्रयोजन सद्बुद्धि प्राप्ति नै हो। धी अथवा सद्बुद्धि भनेको के हो भन्ने विषयमा शास्त्र वचन यस प्रकार छन् -

धर्मादिविषया बुद्धि धी (सायण), धियो धारणवत्यो बुद्धयः *(विष्णुसहस्रनाम भाष्य)*

अर्थात् धर्मादि विषयलाई धारण गर्ने बुद्धिलाई 'धी' भनिन्छ। साधन र साध्यका भेदले धर्म दुई प्रकारका छन्। साधन धर्म भनेको सत्कर्म हो भने साध्य धर्म भनेको ब्रह्म नै हो। धारणाद्धर्ममित्याहुः अर्थात् अज्ञानादि सकल जनसमूहलाई सत्तारूपले धारण गरेको हुनाले ब्रह्मलाई नै धर्म शब्दले सम्बोधन गरिन्छ। अतः साध्य साधन उभय धर्मलाई धारण गर्ने बुद्धिको नाम नै धी हो।

कर्मयज्ञसहस्रेभ्यस्तपोयज्ञो विशिष्यते।
तपोयज्ञसहस्रेभ्यो जपयज्ञो विशिष्यते।
जपयज्ञसहस्रेभ्यो ध्यानयज्ञो विशिष्यते।
ध्यानयज्ञात्परो नास्ति ध्यानं ज्ञानस्य साधनम्। (लिङ्गपुराण पूवाद्र्ध ७५।१३०)

हजारौं कर्मयज्ञभन्दा तपोयज्ञ विशेष छ। हजारौं तपोयज्ञभन्दा जपयज्ञ विशेष छ, हजारौं जपयज्ञभन्दा ध्यानयज्ञ विशेष छ। त्यस कारण ध्यानयज्ञभन्दा ठूलो ज्ञानको अरू कुनै साधन छैन।

१२. यः शब्दको अर्थ

यो त्रिपदा ब्रह्मगायत्री मन्त्रको तेस्रो पाउको दोस्रो शब्द हो 'यः'जसको अर्थ हुन्छ जो। यहाँ यो यः शब्दले त्यसैलाई सङ्केत गरेको छ जो तत् शब्दको अर्थ हो। 'यत्तदोर्नित्यसम्बन्धः' यो सर्वप्रसिद्ध नियमानुसार तत् शब्दले जुन अर्थ ग्रहण गरेको छ, यत् शब्दले पनि त्यही अर्थ बुझाउने हुनाले यहाँ यो यः शब्दको अर्थ पनि साक्षात् अपरोक्ष, स्वतःसिद्धः परमात्मारूप ब्रह्म नै हो। -*यत्सत्यंज्ञानादिलक्षणम्। योऽन्तःसुखोन्त रारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः।*स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोधिगच्छति। (गीता ५।२४) जुन साधकले आभ्यन्तर्ज्योतिरूप सुखमा रमाउन सिकेको छ, त्यो योगी साक्षात् ब्रह्मरूप हुन्छ र अन्तमा निर्वाणपद प्राप्त गर्दछ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३. नः शब्दको अर्थ

यहाँ 'नः' शब्दको अर्थ हो अस्माकम्- हाम्रो। यो बहुवचनान्त नः शब्द पाणिनीय व्याकरणको नियमानुसार **'बहुवचनस्य वस्नसौ'** यो सूत्रले अस्मद् शब्दका षष्ठी विभक्ति विशिष्ट अस्माकम्का स्थानमा नस् आदेश भएर सन्धिकार्यपूर्वक निष्पन्न भएको 'हामीहरूको' भन्ने अर्थप्रद शब्द हो। यहाँ एक व्यक्तिले उपासना गरिरहेको अवस्थामा मेरो नभनेर किन हामीहरूको भनियो ? भन्ने प्रश्न अत्यन्त सारगर्भित छ। यस विषयमा एउटा संस्कृत सदुक्ति छ- **एकत्वं न प्रयुञ्जीत गुरावात्मनि चेश्वरे** अर्थात् ईश्वर, गुरु र आफूलाई पनि एक वचन प्रयोग नगर्नु। तर यतिले मात्रै आफूलाई पनि एकवचन प्रयोग गर्नुहुँदैन भन्नुको ताप्पर्य उद्घाटित हुँदैन। यसको उद्घाटन त वेदान्त दर्शनले मात्र गर्दछ। कुनै पनि व्यक्ति स्वयंमा कहिल्यै पनि एक्लो हुँदैन। शरीरको दृष्टिले हेर्ने हो भने स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर गरी तीन र कोशको दृष्टिले विचार गर्ने हो भने ऊ अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय र आनन्दमय कोश गरी पाँच रूपमा छ। यस्तै कलाको दृष्टिले सो इन्द्रिय समूहलाई लिएर एघार हुन्छ। यिनीहरूमध्ये सबैका प्रत्येक अधिष्ठातृ देवताहरू छन्। जसमध्ये एउटाको पनि बुद्धि बिग्रियो भने लक्ष्य प्राप्ति हुनेवाला छैन। जस्तै घरपरिवारमा पनि एउटा सदस्यको बानी व्यहोरा बिग्रियो भने घर व्यवहार चौपट हुन्छ। त्यस्तै साधकका शरीरमा रहेका सबै शरीर इन्द्रियादि साधन र अधिष्ठातृ देवताहरूलाई लिएर 'नः धियः' यहाँ बहुवचन प्रयोग गरेको हो। यो पनि गायत्री मन्त्रको एउटा विशेषता हो।

१४. प्रचोदयात् को अर्थ

त्रिपदा गायत्रीको अन्तिम शब्द हो प्रचोदयात्। प्र उपसर्गपूर्वक चुद् सञ्चोदने धातुबाट निष्पन्न लिङ् लकारान्त शब्द हो प्रचोदयात्। यसको अर्थ सायण एवं महीधरले समान रूपमा गर्नुभएको छ- **चुद प्रेरणे प्रकर्षेण चोदयति प्रेरयति सत्कर्मानुष्ठानाय-** (शुक्लयजुर्वेद ३। ३५)

तैत्तरीय सम्बन्ध भाष्यमा पनि भनिएको छ- **प्रचोदयात्- प्रकर्षेण प्रेरयति सकलकर्मानुष्ठानप्रवीणां, दुष्कर्मविमुखां चास्मद्धिं करोति इति।** अर्थात् मेरा प्रवीण बुद्धिलाई दुष्कर्मबाट विमुख गरेर सत्कर्मप्रति प्रेरित गर्नुहोस्। अतः गायत्री मन्त्रमा सुबुद्धिभन्दा विशेष सद्बुद्धिलाई जोड दिएको छ। सत्लाई विषय गर्ने बुद्धि नै सद्बुद्धि हो। त्यस कारण प्रचोदयात्को अर्थ हो सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती पुरुषले हाम्रा बुद्धिलाई दुष्कर्मबाट विमुख गराएर सत्कर्मप्रति प्रेरित गरून्, अर्थात् सत् कर्ममा लगाऊन्।

१५. चतुष्पदी गायत्रीको गन्तव्य, प्रतिष्ठा

अहिलेसम्म हामीहरूले त्रिपदा गायत्रीको सङ्क्षेपमा पदगत अर्थ गर्यौं। यस परिप्रेक्ष्यमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाम्रा अन्तःकरणमा एउटा प्रश्न पैदा भएको हुनुपर्छ कि धर्मका सत्य, शौच, दया, तप आदि चार पाउ भएजस्तै गायत्रीका चार पाउ कुन-कुन हुन् ? किनकि वेदले पनि गायत्रीलाई चार पाउको रूपमा चित्रण गरेको छ। जस्तै- *'गायत्र्यस्यैकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे, नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेसावदोमा प्रापत्* (बृ.उ.५।७) हे गायत्री ! तिमी त्रैलोक्यात्मा रूपले एकपदी, त्रयी विद्यारूपले द्विपदी, प्राणादि अभिधान रूपले त्रिपदी र सूर्यमण्डलान्तर्गत पुरुष रूपले चतुष्पदी हुनुहुन्छ भने निरुपाधिकतया तपाईं पदरहित हुनुहुन्छ। तपाईंको वास्तविक स्वरूप, रूपरहित, निर्गुण निराकार छ। त्यस्ता कार्यवर्गदेखि पर रहेका तपाईंका दर्शनीय तुरीय (चतुर्थ) पदलाई नमस्कार छ। असौ अदः मा प्रापत् त्यो यो विघ्नकारक पापले, मा प्रावत् तपाईंलाई प्राप्त गर्ने काममा विघ्न नपारोस्। यसरी वेदले चित्रण गरेका गायत्री मन्त्रका चार पाउमध्ये प्रथम पाउ हो **तत्सवितुर्वरेण्यम्** द्वितीय पाउ **भर्गो देवस्य धीमहि,** तृतीय पाउ **धियो यो नः प्रचोदयात्,** हो भने चतुर्थ पाउ हो **परोरजसेसावदोम्**। यी चार पाउदेखि पर गायत्रीको अपद अर्थात् पदरहित निर्गुण निराकार एवं बोधघन स्थिति छ। त्यही स्थिति चतुष्पदी गायत्रीको गन्तव्य अर्थात् प्रतिष्ठा हो।

यसरी ब्रह्मगायत्री मन्त्रको पदगत अर्थ मर्यादामा रहेर मनन गर्दा त्रिपदा गायत्रीको गन्तव्य सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती पुरुष, हिरण्यगर्भ, अर्थात् परावर ब्रह्मसम्म मात्र हो भने, चतुष्पदी गायत्रीको गन्तव्य पदरहित परात्पर बाह्मवगति हो भन्ने कुरा अर्थ मर्यादाबाट नै सिद्ध हुन्छ। किनकि **'तत् देवस्य, सवितु; वरेण्यं, भर्ग; धीमहि, य; न; धिय; प्रचोदयात्**। त्यो प्रकाशस्वरूप सूर्यका वरण गर्न योग्य तेजको हामी ध्यान गर्दछौं। जो सूर्यमण्डलवर्ती पुरुषले हाम्रा बुद्धिलाई दुष्कर्मबाट विमुख गराएर सत्कर्मप्रति प्रेरित गरून्। यो भयो त्रिपदा गायत्री मन्त्रको अर्थ।

१६. तुरीय पदको अर्थ र प्रयोजन

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

जगत्को भरणपोषण गर्ने हे सूर्य देवता ! तपाईंका सच्चिदानन्द स्वरूपलाई सुनजस्ता चम्किला ज्योतिर्मय पात्रले ढाकेको छ। सत्यधर्मको परिपालन गर्ने मेरा प्रति कृपा गरेर आत्माको प्रत्यक्ष दर्शन गर्नका लागि ती ज्योतिर्मय आवरणहरू हटाइदिनुहोस्। किनकि

यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते ꣹श्यामि।
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि।

(ईशावास्योपनिषद् १६)

जो हजुरको अतिशय कल्याणमय रूप छ, त्यो स्वरूपको दर्शन गर्न चाहन्छु। जो सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती पुरुष छ, त्यो म हुँ। यस प्रकार सूर्यमण्डलान्तर्गत विद्यमान पुरुषका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दर्शत पदको प्रत्यक्षीकरणका लागि सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती पुरुषसँग प्रार्थना गरेको छ। यही नै त्रिपदा गायत्री मन्त्रको अर्थ हो। उपर्युक्त विवेचनाअनुसार त्रिपदा गायत्रीको गन्तव्य परावर ब्रह्म अर्थात् सगुण निराकार ब्रह्मपद प्राप्ति हो। अब विचार गरौं त्रिपदा गायत्रीको अभिधेयभूत चतुर्थपादको अर्थ के हो ? गायत्रीको तुर्यपद- **'परोरजसे सावदोम्'** को अर्थ हो। **रजसे परः असौ अदः ओम** कार्यवर्गदेखि पर रहेका तपाईंका दर्शत पदलाई देख्न चाहन्छु। 'असौ अदः त्यो यो विघ्नकारक पापले, तपाईंलाई प्राप्त गर्ने काममा विघ्न नपारोस्, सोऽहम् त्यो म हुँ। यस प्रकार चतुष्पदी गायत्रीको माध्यमबाट प्रत्यगात्मा र परमात्माको अभेदबोध भएपछि अर्थात् 'स अहमेवास्मि'यो निश्चय भएपछि अरू जान्न अवशेष रहँदैन। यस यथार्थतालाई बृहदारण्यक श्रुतिले यसरी प्रमाणित गरेको छ। ***सैषा गायत्र्येतस्मिन् स्तुरीये दर्शते पदे परोरजसि प्रतिष्ठिता तद्वै तत्सत्ये प्रतिष्ठितम्।*** बृ.उ.५।४।४

यसरी त्रिपदी गायत्री चतुष्पदीमा र चतुष्पदी सत्यमा प्रतिष्ठित छन्। भगवत्पाद शङ्कराचार्य पनि चतुष्पदा गायत्रीको महत्त्व दर्शाउँदै भाष्यमा भन्नुहुन्छ- यथासौ सविता सर्वाधिपत्यलक्षणया श्रिया यशसा च ख्यात्या तपति एवं हैव श्रिया यशसा च तपति योस्या एतदेवं तुरीयं दर्शतं पदं वेद। जो उपासक चतुष्पदी गायत्रीको माध्यमले दर्शत पदलाई जान्दछ। ऊ सूर्यसमान आयुः कीर्ति र यश आदिले प्रकाशित हुन्छ।

नीलकण्ठले- देवीभागवतको नीलकण्ठी टीकामा चतुष्पदी गायत्रीको प्रयोजन प्रष्ट्याउने क्रममा उद्धृत गर्नुभएको शास्त्रीय वचन यस प्रकार छ - उन्मुखत्वं भवेत्तेन सच्चिदानन्दरूपिणः (तेन त्रिपदा गायत्रीमा तुरीय पद लगाएर मन्त्र जप्नाले) सच्चिदानन्द स्वरूपिणी गायत्री उन्मुख हुनुहुन्छ। अर्थात् तुरीय पदविना त्रिपदा गायत्रीले मात्र सच्चिदानन्द स्वरूपिणी गायत्री माता उन्मुख हुनुहुन्न। अरू शास्त्रमा पनि तत्सम्बन्धी वचन प्राप्त हुन्छन् जस्तै-

तुर्यं सहैव गायत्रीं जप एवमुदाहृतम्।
धर्मशास्त्रपुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत।।
पञ्चप्रणवसंयुक्तां जपेदित्यनुशासनम्।
स द्विजः परमो ज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात्।।

देवीभा.११।१७।४

अन्यथा प्रजपेद्यस्तु स जपो विफलो भवेत्। तुरीयपादो गायत्र्याः **परोरजसे सावदोम्।।**(देवीभा.११।१७।११।१७।५

अर्थ- धर्मशास्त्र, इतिहास र पुराणहरूको पञ्च प्रणवयुक्त गायत्रीमन्त्र जप गर्नू भन्ने अनुशासन भएको हुनाले जो द्विज पञ्च प्रणवयुक्त गायत्री जप गर्दछ उसले सायुज्य मोक्ष प्राप्त गर्दछ। अन्यथा अर्थात् तुरीयपद नलगाई गरेको जप विफल हुन्छ। तुरीय पद भनेको **'परोरजसे सावदोम्'** हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७. गायत्री मन्त्रमा पञ्च प्रणवको प्रयोग र प्रयोजन

ॐ इति स्मरणेनैव ब्रह्मज्ञानं परावरम्।तदेकं मोक्षसिद्धिं च लभेतामृतमश्नुते।।

अर्थ- ॐ यो एकाक्षरी ब्रह्मको स्मरण गर्नाले मात्र पनि परावर ब्रह्मज्ञानको पराकाष्ठा मोक्षसिद्धिका साथै उपासकले अमरत्व लाभ गर्दछ।

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्।एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।

अर्थ- ॐ को अवलम्बन गर्नु सर्वोत्तम हो। ॐ को अवलम्बन गर्नु नै परम पुरुषार्थ हो, किनकि ॐ को आश्रय लिनाले ब्रह्मलोकको महिमालाई साधकले सजिलै प्राप्त गर्दछ।

ॐ कारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः।।

अर्थ - योगीहरू अनुस्वारयुक्त ॐ कारको सदा ध्यान गर्दछन्। अतः समस्त काम पूर्ति गर्नेवाला मोक्षदायक ओंकारलाई बार-बार नमस्कार गर्दछु।

यसरी विविध शास्त्रको आलोडनपूर्वक अवलोकन गर्दा यो कुरा सिद्ध हुन्छ कि ॐ कारको उच्चारण गर्नाले ब्राह्मीभाव बढ्छ। जसको फलस्वरूप साधक सजिलै ईश्वराभिमुखी बन्दछ। यसरी ॐकारको श्रेष्ठतालाई मध्यनजर गरेर हाम्रा पूर्वाचार्यहरूले मात्र होइन वेदले पनि 'ॐ स्मर (शतपथब्राह्मण) भनेर ॐकारलाई सर्वोपरि महत्त्व दिएका हुन्। किनकि

यदोंकारं अकृत्वा किञ्चिदारभ्यते तद् निष्फलो भवति तस्माद् वज्रभयाद् भीत ओंकारं पूर्वमारभेदिति

-ॐकारको उच्चारणविना आरम्भ गरेको कार्य निष्फल हुन्छ। त्यस कारण आरम्भ गरेको जप यज्ञयागादि कार्य निष्फल नहोस् भन्ने हेतुले ॐकारको उच्चारणपूर्वक जपादि कार्यारम्भ गरोस्। इत्यादि शास्त्रवचन भएको हुनाले मन्त्रोच्चारणपूर्व ॐकार उच्चारण नगरे मन्त्र चित्त शुद्ध गर्न सामर्थ्य हुँदैन, अथवा फलदायी हुँदैन। छान्दोग्योपनिषद्मा 'सैषा चतुष्पदा गायत्री'भनेको हुनाले ऋषभदेवपुत्र राजा भरत र छन्दोग ऋषिहरू पनि चतुष्पदी गायत्रीकै उपासना गर्नुहुन्थ्यो भन्दा अतिशयोक्ति हुँदैन। किनकि जसरी गायत्र्याख्य ब्रह्मचिन्तन गर्ने क्रममा वागात्मा, पृथिव्यात्मा, प्राणात्मा र अन्तरात्मा रूपले चार भाग गरी गायत्रीलाई चतुष्पदीकै रूपमा छान्दोग्य श्रुतिले चित्रण गरेको छ त्यसरी नै बृहदाख्यक श्रुतिले पनि त्रैलोक्यात्मरूपा, प्रथमपदी, त्रयीविद्यारूपा द्वितीयपदी, प्राणादि अभिधानभूता तृतीयपदी र सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती पुरुषरूपा चतुर्थपदीको रूपमा चिन्तन गरेको छ। प्रथम पादस्थ त्रैलोक्यात्म रूपले तीनै लोकलाई व्याप्त गरेको छ। द्वितीय पादमा रहेका आठ अक्षरले ऋक्, यजुः, सामाख्य त्रयी विद्यालाई व्याप्त गरेको छ र तृतीय पादले प्राण, अपान एवं व्यानलाई व्याप्त गरेको छ भने चतुर्थ पाद 'परोरजसे सावदोम्'ले कार्यवर्गदेखि पर रहेका सूर्यमण्डलवर्ती परमात्माको र प्रत्यगात्माको एकता सिद्ध गरेको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसरी चतुष्पदी गायत्रीको इयत्तालाई अलग-अलग रूपमा बुझेपछि प्रणवको गहिराइलाई बुझ्नु नितान्त आवश्यक हुन्छ। तसर्थ विचार गरौं प्रणवको अर्थ र पञ्च प्रणव प्रयोग गर्नुको प्रयोजन के हो ?

रक्षण, गति, कान्ति, तृप्ति, अवगम, प्रीति, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ, याचन, क्रिया, इच्छा, दीप्ति अवाप्ति, आलिङ्गन, हिंसा दान, भोग, वृद्धि यी १९ अर्थ भएका प्र उपसर्गपूर्वक अव रक्षणे धातुबाट 'मन्' प्रत्यय भएर बनेका ओम्‌को जुन अर्थ हो प्रणवको पनि त्यही अर्थ हो किनकि प्र उपसर्गपूर्वक 'णू स्तवने धातुबाट अप् प्रत्यय भएर प्रणव शब्द निष्पन्न हुन्छ 'प्रणवो मन्त्राणां सेतुः 'प्रणव मन्त्रको पुल भएको हुनाले प्रत्येक मन्त्रका शब्दार्थलाई वाक्यार्थसम्म र वाक्यार्थलाई लक्ष्यार्थसम्म पुर्याउने काम प्रणवबाट मात्र सम्भव छ। तसर्थ उपर्युक्त चतुष्पदी गायत्रीमा रहेका पदगत अर्थलाई एकीकृत गरेर परमात्मासम्म पुर्याउने सामर्थ्य प्रणवमा अन्तर्निहित रहेको हुँदा प्रत्येक पदमा प्रणव प्रयोग गर्नुको प्रयोजन हो। त्यस कारण चतुष्पदी गायत्रीमा विद्यमान चार पाउका आदिमा र व्याहृतिको उच्चारण गर्नुपूर्व पनि प्रणव उच्चारण गर्नू भन्ने अभिप्रायले देवीभागवतमा भनियो- 'पञ्चप्रणवसंयुक्तां जपेदित्यनुशासनम्'। (देवीभागवत ११।१७।४)

तुरीय पद र पञ्च प्रणव प्रयोगको विषयलाई लिएर भएका मतमतान्तरको समाधान वर्तमान परिप्रेक्ष्यमा गायत्री मन्त्रोपासक साधकहरूको गायत्री मन्त्र जपविषयक विचार सर्वेक्षण गर्दा एक प्रणव, दुई प्रणव तीन प्रणव, ६ प्रणव र पञ्च प्रणव प्रयुक्त गायत्रीमन्त्र जप गर्ने गरेको पाइयो। यसै गरी तुरीय पदको विषयमा पनि सर्वत्र सर्वेक्षण गर्दा कतिले त तुरीय पद के हो थाहै नपाएको र थाहा पाएका साधकहरूले पनि कसैले आठ प्रतिशत तुरीय पद लगाएको पाइयो- अर्थात् एक सय आठपटक गायत्री मन्त्र जप गर्दा त्रिपदा गायत्री सयपटक र आठपटक मात्र चतुष्पदी जप गरेको पाइयो भने कतिले जति जपे पनि सबै पञ्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्री मन्त्र जपेको पाइयो। यो विविधताको कारण के हो त भनेर अनुसन्धान गर्दै जाँदा श्रीमद्देवीभागवत महापुराणमा प्रमाण उपलब्ध भयो कि-

ॐ कारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च।
चतुर्विंशत्यक्षरां च गायत्रीं प्रोच्चरेत्ततः।
एवं नित्यं जपं कुर्याद्ब्राह्मणो विप्रपुङ्गवः।
स समग्रं फलं प्राप्य सन्ध्यायाः सुखमेधते।। देवीभा.११।१६।१०५-१०६

अर्थ- सर्वप्रथम ॐकार उच्चारणपूर्वक व्याहृतिसहित चौबीस अक्षरले युक्त भएकी ब्रह्मगायत्रीको जप गर्नाले सन्ध्याको समग्र फल प्राप्त गरेर सुखी जीवन व्यतीत गर्दछ।

सम्पुटैका षडोंकारा गायत्री विविधा मता।
धर्मशास्त्रपुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत।।
पञ्चप्रणवसंयुक्तां जपेदित्यनुशासनम्। देवीभा.११।१७।४

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपसङ्ख्याष्टभागान्ते पादो जप्यस्तुरीयकः।।
स द्विजः परमो ज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात्।
अन्यथा प्रजपेद्यस्तु स जपो विफलो भवेत्।।देवीभा.११।१७।५

पञ्च प्रणवसंयुक्ता, एकोंकारा, सम्पुटैका, षडोंकारा गरी गायत्रीमन्त्र जप गर्ने विधि चार प्रकारको मानिएको छ। तर धर्मशास्त्र, इतिहास एवं पुराणहरूमा पञ्च प्रणव प्रयुक्त गायत्री मन्त्र जप गर्नू भन्ने विशेष अनुशासन भएको हुनाले जो द्विज पञ्च प्रणव प्रयुक्त आठ प्रतिशत तुरीय पद लगाएर गायत्री मन्त्र जप गर्दछ उसले सायुज्य मोक्ष प्राप्त गर्दछ। तुरीय पद नलगाई गरेको जप निष्फल हुन्छ।

सम्पुटैका षडोंकारा भवेत्सा ऊर्ध्वरितसाम्।
गृहस्थी ब्रह्मचारी वा मोक्षार्थी तुरीयां जपेत्।।
तुरीयपादो गायत्र्याः परोरजसे सावदोम्।। देवीभा.११।१७।६

ऊर्ध्वरिता ब्रह्मचारीले सम्पुटैका र षडोंकारा गायत्री जप गर्नू, मोक्ष चाहने गृहस्थी वा ब्रह्मचारीले पञ्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्री जप गर्नू। तुरीप पद भनेको परोरजसे सावदोम् हो।

उपर्युक्त प्रमाणभित्र पसेर पदगत अर्थ केलाउँदा यो कुरा सिद्ध हुन्छ कि जसलाई सुखी जीवन जिउने मात्र इच्छा छ, उसले श्रद्धापूर्वक एकोंकार प्रयुक्त त्रिपदा गायत्री जप गर्नू किनकि एकोंकार प्रयुक्त गायत्री जपको फल बताइयो - स समग्र फलं प्राप्य सन्ध्यायाः सुखमेधते। यहाँ सुखमेधतेमा विशेष जोड दिएको छ। मोक्ष चाहने गृहस्थी वा ब्रह्मचारीले प्रञ्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्री जप गर्नू किनभने पञ्च प्रणव प्रयुक्त चुतष्पदी गायत्री जपको फल बताउँदा भनियो - स द्विजः परमो ज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात् - यहाँ सायुज्यमाप्नुयात् मा विशेष जोड देखिन्छ। अब रह्यो सम्पुटैका र षडोंकारा यी दुवै विधामा ॐकार अन्त्यमा लगाउनुपर्ने हुन्छ- किनकि प्रणव सम्पुट भनेको आरम्भमा र अन्त्यमा प्रणव लगाउनु हो भने षडोंकार पक्षमा पनि अन्त्यमा प्रणव लगाउनुपर्ने हुन्छ। तसर्थ अन्त्य ॐकार पक्षलाई शास्त्रले ऊर्ध्वरिता साधकबाहेक अरूलाई निषेध गरेको छ जस्तै - अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ बुद्धिमवाप्नुयात्। (याज्ञवल्क्यस्मृति, आचाराध्याय)। त्यस कारण श्रीमद्देवीभागवत महापुराणोक्त गायत्रीमन्त्र जपका चार विधामध्ये ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारीले षडोंकारा र सम्पुटैका, संसारमा सुखी जीवनमात्र चाहने साधकले एक प्रणव प्रयुक्त त्रिपदा गायत्री र सायुज्य मोक्ष चाहने गृहस्थी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारीले प्रञ्च प्रणव प्रयुक्ता चतुष्पदी गायत्री जप गर्नु शास्त्रानुकूल देखिन्छ।

अब रह्यो तुरीयपद विषयक विविधता। यस विषयको बीजभूत प्रबल प्रमाण पहिले नै बताइसकिएको छ कि जपसङ्ख्याष्टभागान्ते पादो जप्यस्तुरीयकः। अन्यथा प्रजपेद्यस्तु स जपो विफलो भवेत्। देवीभा.११।१७।५-अर्थात् जपसङ्ख्याको आठ भागचाहिँ तुरीय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदसहित गायत्री मन्त्र जप्नुपर्दछ। विनातुरीय (चतुर्थ) पद त्रिपदा गायत्री मात्र जप गर्नाले गरेको जप निष्फल हुन्छ।

तसर्थ शतावृत्ति गायत्रीमन्त्र जप गर्दा ९२ पटक विनातुरीय पद र आठपटक तुरीय पदसहित गायत्री मन्त्र जप गर्नू भन्ने- 'जपसङ्ख्याष्टभागान्ते पादो जप्यस्तुरीयकः'को अर्थ हुन्छ। तर यो शतावृत्ति जप गर्दा ९२ पटक त्रिपदा गायत्री र ८ पटक चतुष्पदी गायत्री जप्ने प्रचलनचाहिँ कहीं सर्वेक्षण गर्दा पनि कसैले गरेको पाइएन। बरु १०८ पटक गायत्री जप्दा १०० पटक त्रिपदा र ८ पटकमात्र चतुष्पदा गायत्री जप गर्ने गरेको सर्वेक्षणको परिणाम प्राप्त भयो। तर यो पनि १०८ जपसङ्ख्याको ठीक आठ भाग त होइन। किनकि १०८ जपसङ्ख्याको आठ भाग त ८.६४ हुन्छ। त्यस कारण न्यून हुनुभन्दा त 'अधिकस्य, अधिकं फलम्'यो सर्वमान्य सिद्धान्तलाई स्वीकारेर स्वर्गद्वारी महाप्रभुले र षडानन्द गुरुले मोक्षार्थी साधकहरूलाई प्रच्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्री जप्ने र जपाउने परम्परा प्रामाणिक श्रुति एवं युक्तिसङ्गत देखिन्छ।

१८. चतुष्पदी गायत्रीको अर्थ

सर्वव्यापक भएर सबैको रक्षा गर्ने सच्चिदानन्द स्वरूप, त्यो प्रकाशमय सूर्यका वरण गर्न योग्य तेजको हामी ध्यान गर्दछौं। जो सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती ज्योतिर्मय पुरुषले हाम्रा बुद्धिलाई प्रेरित गरून्। त्यो सूर्यमण्डलान्तवर्ती ज्योति म हुँ।

१९. गायत्री उपासनाको अर्थ

यो गायत्री उपासना शब्दको अर्थ हो- गायत्रीको उपासना। गायत्रीतत्त्व के हो भन्ने विषयमा अहिलेसम्म हामीहरूले विचार गर्यौं। अब सङ्क्षेपमा विचार गरौं। उपासना शब्दको अर्थ के हो र कसरी गायत्रीको उपासना गरिन्छ ? उप उपसर्गपूर्वक आस उपवेसने धातुबाट उपासना शब्द निष्पन्न हुन्छ। जसको अर्थ हुन्छ समीपमा बस्नु। किनकि उप भनेको समीप र आसन भनेको बस्नु हो। अब यहाँ प्रश्न हुन्छ कसको समीपमा को बस्ने ? यसको छरितो उत्तर हो उपास्यको समीपमा उपासक बस्ने। उपास्य को हो सूर्य मण्डलान्तर्वर्ती तेज (भर्ग) अथवा परमात्मा। उपासक को हो ? अन्तःकरणान्तर्वर्ती ज्योति अथवा प्रमाता (जीवात्मा)। त्यस कारण प्रमाता र परमात्माको अभिमुखीकरण नै गायत्रीउपासना हो। यसैलाई अर्को शब्दमा भन्दा चित्तको चिन्तनीय विषयाकाराकारित निरन्तरावृत्ति नै उपासना हो। उपर्युक्त औपासनिक सिद्धान्तअनुसार षडानन्द गुरु, योगानन्द गुरु, विवेकानन्द गुरु, रेग्मी गुरु, गायत्रीस्वरूप गुरु र गौतम गुरुहरूले गायत्री पुरश्चरण गर्नुभएको कुरा उहाँहरूको जीवनीबाट जान्न सकिन्छ।

२०. पुरश्चरणको अर्थ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरः अग्रतः चरणम् पञ्चाङ्गकर्माचरणम् यत्र इति यो विग्रहमा पुरस् शब्दपूर्वक चर गतिभक्षणयोः धातुबाट ल्युट् प्रत्यय भएर पुरश्चरण शब्द निष्पन्न हुन्छ। **साधनं मूलमन्त्रस्य पुरश्चरणमुच्यते।** (वायवीय संहिता) कुनै पनि वैदिक, तान्त्रिक, शाबर आदि मन्त्रमा जति अक्षर छन् त्यति लाख जप, जपको दशांश हवन, हवनको दश प्रतिशत तर्पण, तर्पणको दश प्रतिशत मार्जन, मार्जनको दश प्रतिशत ब्राह्मण भोजन गर्नु वा गराउनु पुरश्चरण हो। पुरश्चरण गर्दा जति पहिलो दिन जप गरिन्छ त्यति नै प्रतिदिन जप गर्नुपर्दछ, घटीबढी गर्नु हुँदैन।

प्रारम्भ दिनमारम्य, समादीदिवसावधि
न न्यूनं नातिरिक्तं च जपं कुर्या दिने दिने। (गायत्रीरहस्य)

अतः सुखार्थीले त्रिपदा गायत्रीको पुरश्चरण गर्दा चौबीस लाख जप तदनुसार हवन, तर्पण, मार्जन र ब्राह्मण भोजन गर्दा गराउँदा एक पुरश्चरण हुन्छ भने मोक्षार्थीले चतुष्पदी गायत्रीमा ३२ अक्षर हुने हुनाले ३२ लाख जप तदनुसार जपको दश प्रतिशत हवन, हवनको दश प्रतिशत तर्पण, तर्पणको दश प्रतिशत मार्जन र मार्जनको दश प्रतिशत ब्राह्मण भोजन गर्दा एक पुरश्चरण हुन्छ। विश्वामित्र पञ्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्रीका उपासक हुनुहुन्थ्यो। त्यस कारण उहाँको मतमा ३२ लाख जप, तदनुसार हवन, तर्पण, मार्जन र ब्राह्मण भोजन गर्दा एक पुरश्चरण हुन्छ भन्ने विश्वामित्रको वचन यस प्रकाश छ -

द्वात्रिंशत् लक्षमानं तु विश्वामित्रमतं तथा।
३२ लाख गायत्री मन्त्र जप्दा एक पुरश्चरण हुन्छ।

चतुष्पदी गायत्री मन्त्रका उपासक विश्वामित्रले अकाम वा मोक्षकाम भावले गर्नुपर्ने चतुष्पदी गायत्रीको उपासना सर्वकाम भावले गरेको हुनाले सद्यःसिद्धि प्राप्त भएन। तसर्थ सकाम उपासना गर्ने हो भने एक प्रणव प्रयुक्त त्रिपदा गायत्रीको उपासना गर्ने र निष्काम वा मोक्षकाम भावले गायत्र्याख्य ब्रह्मको उपासना गर्ने हो भने पञ्च प्रणव प्रयुक्त चतुष्पदी गायत्रीको उपासना गर्नुपर्छ भन्ने शास्त्रीय सिद्धान्तमा आबद्ध आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरु र स्वर्गद्वारी महाप्रभुले मोक्षार्थी ब्रह्माभ्यासानन्द गुरु, थानी महाराज, योगानन्द गुरु, विवेकानन्द गुरु, रेग्मी गुरुलगायत आधिकारिक आफ्ना हितचिन्तक मुमुक्षु शिष्यहरूलाई पञ्च प्रणव प्रयुक्ता चतुष्पदी गायत्री मन्त्र जप्नुपर्छ भनेर सदुपदेश दिनुभएको कुरा मैले पञ्च प्रणव प्रयुक्ता चतुष्पदी गायत्रीका उपासक महर्षि टेकनाथ गौतम गुरु, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी गुरुबाट सदुपदेश पाएको हुँ। प्रातः स्मरणीय षडानन्द गुरुले मोक्षार्थीलाई पञ्च प्रणव प्रयुक्ता चतुष्पदी गायत्री मन्त्र प्रदान गर्ने र भोगार्थीलाई एक प्रणव प्रयुक्ता त्रिपदी गायत्री प्रदान गर्ने गरेको रहस्य पनि उद्घाटन भएको छ।

२१. पञ्च प्रणव प्रयुक्त गायत्री उपासना र विवेकाश्रम

उपर्युक्त शास्त्रीय प्रमाणअनुसार ऊध्वरिता सनकादिजस्ता नैष्ठिक ब्रह्मचारीले सम्पुटैका षडोङ्कारयुक्ता चतुष्पदी गायत्री जप्नुपर्छ। यो संसारमा सुखी जीवन जिउन मात्र चाहने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्तिहरूले एक प्रणव प्रयुक्ता त्रिपदी गायत्री जप्नुपर्छ र मोक्ष चाहने गृहस्थ र ब्रह्मचारीले पञ्च प्रणव प्रयुक्ता चतुष्पदी गायत्री जप्नुपर्छ भन्ने उक्त शास्त्रीय सिद्धान्तअनुसार आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द गुरु र स्वर्गद्वारी महाप्रभुद्वारा उपदिष्ट हाम्रा पूर्वाचार्य गुरुहरूले दिएको उपदेशअनुसार ब्रह्माभ्यासानन्द, योगानन्द, विवेकानन्द, यज्ञनिधि रेग्मी, टेकनाथ गौतम गुरु र गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी गुरु परम्परामा वर्तमान समयसम्म पञ्च प्रणव प्रयुक्त ब्रह्मगायत्री मन्त्र सुन्ने, सुनाउने र जप्ने प्रचलन छ।

यसैगरी नेपालको पूर्वी क्षेत्र झापा जिल्लाको चारपानेमा विद्यमान विवेकाश्रमले पनि पञ्चप्रणव प्रयुक्ता चतुष्पदी गायत्री उपासनाका माध्यमबाट सनातन वैदिक संस्कार, संस्कृति र सभ्यतालाई यथाशक्य संरक्षण एवं संवर्द्धन गर्दै आएको छ। अस्तु परिपूर्णम्।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आशौचः केही समस्या र समाधान

✍ प्रा. डा. देवमणि भट्टराई

विषय प्रवेशः

अशुचिको भाव आशौच हो, कर्मानर्हत्व हो अर्थात् आशौच परेपछि त्यो व्यक्ति कर्म गर्न योग्य हुँदैन। उसले धर्मकर्मका कार्यहरू गर्न आशौच बार्नुपर्ने कालावधि पर्खनुपर्दछ। जननाशौच वा मृताशौचको बार्ने समय सपिण्ड दाजुभाइलाई दशरात्रिपर्यन्त र समानोदक बन्धुलाई तीन रात्रिपर्यन्त बार्नुपर्ने शास्त्रनिर्देश रहेको छ। त्यसै गरी सगोत्र दाजुभाइलाई एक अहोरात्रको आशौच लाग्ने व्यवस्था शास्त्रले निर्देश गरेको छ। सपिण्ड भन्नाले मुख्य कर्ताबाट सात पुस्ता, समानोदक भनेको १४ पुस्तासम्म र सगोत्र भनेको १५ देखि २१ पुस्तासम्म शास्त्रले निर्देशन गरेको छ। त्यसभन्दा माथिको आशौच स्नानले शुद्ध मानिन्छ। यस्तै जननाशौच दिन पुगेपछि सुनियो भने बार्नुपर्दैन र जननाशौचमा अतिक्रान्ताशौच लाग्दैन तर मृताशौचमा चाहिँ ३ महिनाभित्र सुनिएमा ३ दिन, ६ महिनाभित्र सुनिएमा पक्षिणी र ६ महिनापछि एक वर्षभित्र सुनिएमा एक दिनमात्र बार्नुपर्छ भने वर्ष दिनपछि स्नानमात्रले शुद्ध मानिन्छ।

आशौच बार्ने भनेको मानवमात्रले हो। शुचि वा कर्म कर्तव्यको अवधारणा एवं शास्त्रनिर्देश मानव वर्गका लागि हो। मानव त्यो जीवात्मा हो जो मोक्षका लागि मोक्षद्वारमा उभिएको छ र ऊ यस जीवनमा नै कर्मद्वारा आफूलाई मोक्षमार्गमा लगाउन सक्दछ। मानव अनेकौं जन्मका तपस्याद्वारा मोक्षद्वारमा पुगेको हुन्छ र त्यहाँ पुगेर पनि असत्कर्मको अनुसरण गर्दछ भने ऊ चौरासी लाख योनिमा फेरि फर्कनुपर्दछ। धर्मशास्त्रीय कर्मरूपी अमृतद्वारा चित्त शुद्धि गर्दै आफू परिष्कृत हुँदै दृढ निश्चय गराउने काम धर्मशास्त्रनिर्दिष्ट शौचाचारले गर्दछ। धर्मशास्त्रनिर्दिष्ट धन, धर्म, कर्मादि शुद्ध भएन भने उसको व्यवहार चरित्र आदिका कारण ऊ फेरि सांसारिक भुमरीमा पर्दछ र मोक्षद्वारमा पुगेको व्यक्ति अधोगतिमा पर्दछ। अतः जन्मजन्मान्तरको चित्तशुद्धिका लागि हरेक दिन, हरेक क्षण, हरेक समयमा सत्कर्ममात्र गर्नुपर्दछ। ज्ञाताज्ञात अवस्थामा अशुद्धि भए तापनि

✍ *धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यसको निराकरण एवं शुद्धिका कारक तत्त्वहरू १२ प्रकारका मानिएका छन् भनी मनुस्मृतिमा बताइएको छ।

ज्ञानं तपोऽग्निराहारो मृन्मनो वार्युपाञ्जनम्।
वायुः कर्मार्ककालौ च शुद्धेः कर्तॄणि देहिनाम्।।(मनुस्मृति ५।१०५)

ज्ञान, तपस्या, अग्नि, शुद्ध आहार, माटो, मन, वारि (जल) उपलेपन (बुकुवा, गोबर आदि), वायु, कर्म, सूर्य, समय यी शुद्धिका कारकतत्त्वहरू मानिएका छन् यसको पालना नै कर्ताको शुद्धता हो। अतः कर्ताको चित्तशुद्ध्यर्थ विभिन्न प्रकारले शुद्ध भएर मात्रै कर्म गर्ने अधिकारी हुन्छ भन्ने रहेको छ।

२.आशौच लक्षित वर्ग (आशौच कसलाई लाग्छ, कसलाई लाग्दैन ?)

आशौच बार्नुपर्ने वा आशौचले प्रभाव पार्ने भनेको मानव समुदायलाई हो। मानव समुदायलाई शास्त्रको ज्ञान भएको अवस्थामा सवै धर्म सम्प्रदायले आ-आफ्नो रीतिरिवाजअनुसार जननाशौच, मरणाशौच आदि सबै प्रकारका आशौचहरू बार्दछन्। सनातन धर्मशास्त्रको पहुँच नभएका र यसको असर थाहा नपाउने समुदायले पनि आफ्नो रीतिअनुसार आशौच बारेको थाहा पाइन्छ। सनातन धर्मले बार्ने आशौच प्रक्रिया विज्ञानसम्मत रहेको छ। सनातन सम्प्रदायका मानिसले सनातन परम्पराका आशौचहरू बारेको पूजापाठमा सरिक भएको र आफ्ना घरमा पनि पर्वहरू मनाएको देख्न सकिन्छ। हरे कृष्ण हरे राम नाममन्त्र जप्दै सनातन धर्म अँगालेर यावत् सनातनी कृत्यहरू सनातन धर्मशास्त्रकै आधारमा गरेको देख्न सकिन्छ भने छठ पर्व, स्वस्थानी, तिज, शिवरात्रिआदि पर्वमा पनि सनातन धर्मका कृत्यहरू पूजाआदि संस्कार सम्पादन गरी व्रतोपवास, कथावाचन, अध्ययन, अनुसन्धान गरेको देखिन्छ भने देउसीभैलो आदिमा सरिक भई आत्मसात् गरेको, शिवरात्रिमा शिवालयहरूमा हुने दर्शनमा मानवमात्रको उपस्थिति एवं अर्चन तथा भजनादि गर्दै सनातन धर्मका मूल्य-मान्यता स्वीकार गरेको देख्न सकिन्छ। यी व्रत, पूजा, भजनादि सनातन धर्मका कृत्यहरू शाश्वतमा आधारित एवं मूल्य-मान्यता सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय छन् भन्ने अन्यधर्मीहरूले नै प्रमाणित गरेको देख्न सकिन्छ। यस्तै सनातन धर्मका कृत्यमा प्रवेश गरिसकेपछि त्यसभित्रका नीतिनियम जुठो सूतक, रजस्वला, देवदर्शन आदिका नियम पनि ती सबैले मानेको एवं बारेको पाइन्छ भने उनीहरूको जिज्ञासा सारा मानवको कल्याणमा केन्द्रित भई सारा मानव समुदायले आशौच बार्नुपर्ने रहेछ भनी शुद्धता र पवित्रतामा हामी मानवले ख्याल गर्नुपर्ने रहेछ भनी केन्द्रित भएको स्वदेशी तथा विदेशी सबैलाई देख्न सक्दछौं। अतः आशौचको लक्षित वर्ग भनेको सारा मानव समुदाय मात्र रहेछ भन्ने स्पष्ट हुन आउँछ र मानवकै लागि मात्र चित्तशुद्धिमार्फत मोक्षद्वार खुला हुने रहेछ भनी बुझ्न सकिन्छ। मानवेतरलाई आशौचको प्रभाव त्यति रहँदैन।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३.आशौच दिनसङ्ख्या निर्णय

अशुचित्व यावद् मानवमात्रमा पर्ने निश्चय भएपछि रक्त सम्बन्धका कारण आशौच बार्ने निश्चय धर्मशास्त्रले गरेको पाइन्छ। यस्तै पछि जोडिएका निश्चित सम्बन्धमा पनि ऊ आशौची भएको हुन्छ नै। त्यसैले आशौच बार्नुपर्ने निश्चय गरेर नै ऊ आशौची हुन्छ र आशौच बार्नुपर्ने निश्चय गरेको पाइन्छ।

'जनने मरणे नित्यमाशौचमनुधावति।
सपिण्डश्चैव बन्धुश्च यत्र क्वचन गच्छति।।'

जननाशौच एवं मृताशौचमा कर्ता आदि समीपका नातेदारलाई आशौचले समातेको हुन्छ, छोएको हुन्छ। त्यस आशौचले कसैको दुःखसुखको अवस्थालाई विचार गर्दैन र ऊ सपिण्ड दाजुभाइ एवं विभिन्न सम्बन्धका भाइबन्धु समानोदकादि र 'बन्धुश्च' मा आएको 'च' कारले सम्बन्धमा परेका सबैलाई शास्त्रनिर्दिष्ट आशौच प्रारम्भ भइहाल्दछ भनिएको हो। यसमा मृताशौचमा अग्निहोत्रीलाई दाहपश्चात् आशौच प्रारम्भ हुन्छ भने अग्निहोत्ररहितलाई मृत्युको यथार्थ ज्ञानपछि तुरुन्त नै आशौच प्रारम्भ हुन्छ।

अनग्निमत उत्क्रान्तेराशौचादि द्विजातिषु। दाहादग्निमतोविद्याद् विदेशस्थे मृते सति।। (पैठीनसिको वचन धर्मसिन्धु, पृष्ठ. ८७१)

दाहादेव तु कर्तव्यं यस्य वैतानिको विधिः। (त्यहीं ब्रह्मपुराणको वचन)

यसरी आशौच प्रारम्भ अग्निहोत्रीलाई दाहसंस्कार गरेको दिनदेखि र अग्निहोत्ररहित व्यक्तिलाई मरेकै दिनदेखि गणना गर्नुपर्दछ भनिएको छ। अतः सम्बन्धअनुसारको आशौचका बारेमा बुँदागत रूपमा सङ्क्षेपमा यहाँ केही उल्लेख गरिन्छ। विशेष र सामान्य गरी आशौच दुई प्रकारका मानिएका छन्।

क) विशेष आशौच

- मातापिताको १ वर्ष विशेष आशौच लाग्ने
- सौतेनी आमाको ६ महिना विशेष आशौच लाग्ने
- पतिको १ वर्ष विशेष आशौच लाग्ने
- पत्नीको ३ महिना र विशेष शोक रहिरहे ६ महिनासम्म विशेष आशौच लाग्ने
- सहोदर दाजुभाइको ४५ दिन विशेष आशौच लाग्ने
- छोराको ४५ दिन विशेष आशौच लाग्ने
- सपिण्ड दाजुभाइको १ महिना विशेष आशौच लाग्ने

विशेष आशौचको परिचय :

यो आशौच भनेको माङ्गलिक कार्य भनेर चिनिने कार्यलाई विशेष गरेर चूडाकर्म,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्रतबन्ध र विवाहका लागि विशेष वार्नुपर्ने भनेको हो तर नित्यकर्म ११ दिनदेखि खुल्दछ भने नैमित्तिक कर्म १३ दिनदेखि खुल्दछ। नित्यकर्मअन्तर्गत नित्य सन्ध्यावन्दनादि पर्दछन् भने नैमित्तिक कर्म भनेको तिथिश्राद्ध, जन्मोत्सव पूजा आदि पर्दछन्। काम्य कर्मअन्तर्गत यज्ञअनुष्ठान, व्रतोद्यापन, प्रतिष्ठा, पुराण श्रवणादि पर्दछन्। यी कार्यहरू गर्दा नान्दीमुखी श्राद्ध गरिन्छ। गर्भाधानादि संस्कारमा पनि नान्दीमुखी श्राद्ध त गरिन्छ तर संस्कारबाहेकका विशेष अनुष्ठानलाई र विशेष संस्कारहरू चूडा, उपनयन र विवाहमा बाहेकका विशेष माङ्गलिक कृत्य भनी तोकेको हुँदा यी तीनवटा संस्कार र विशेष अनुष्ठानहरू विशेष आशौचभित्र गर्न मिल्दैन। त्यसैले यसलाई विशेष आशौच शब्दले व्यवहार गरिन्छ। यसमा पनि कालातिक्रमण एवम् योग्यवर या वधूको यति बेला नै उपस्थिति भएको अवस्थामा श्रीशान्ति एवं विनायक शान्ति गरी गर्नू भन्ने शास्त्रीय निर्देश भने पाइन्छ। अतः आशौचभित्र यथासम्भव नगर्नू भन्ने नै उचित रहेको शास्त्रीय निर्देश तथा आशय हो। गर्नै पर्ने अवस्था आएमा स्वस्तिशान्ति गरी गर्नुपर्दछ।

ख) सामान्य आशौच

विशेष आशौच जानिसकेपछि अब सामान्य आशौचका बारेमा चर्चा गरौं। नातापरक आशौच सम्बन्धित व्यक्तिमा मात्रै रहने हुँदा घरका अन्य व्यक्तिमा र अन्नमा दोष नरहने पनि शास्त्रीय मान्यता छ। भान्जाको आशौच भने मामामाइजू दुवैमा लाग्दछ। सपिण्ड दाजुभाइलाई १० रात्रि, समानोदक बन्धुलाई तीन रात्रि र सकुल्य बन्धुलाई एक रात्रि आशौच लाग्दछ भने यीबाहेक अर्थात् २१ पुस्तामाथिकालाई स्नानमात्रले शुद्धि मानिएको छ। ७ पुस्तासम्म सपिण्ड, ८-१४ पुस्तासम्म समानोदक र १५-२१ पुस्ता सम्मकालाई

क्र.स	नातासम्बन्ध	आशौच बार्ने दिन
१	मातामह (मावलका हजुरबा)	तीन रात
२	मातामही (मावलकी हजुरआमा)	पक्षिणी तीन रात
३	मातुल (आमा)	तीन रात
४	मातुलानी क) सौतेने मातुलानी	पक्षिणी
५	सापत्न मातुलः	तीन रात
६	सापत्न मातुलानी	आशौच लाग्दैन
७	मातृष्वसा (सानीमा-ठूलीआमा)	पक्षिणी
८	पितृष्वसा (फुपू)	पक्षिणी
९	बन्धुत्रय : **क) आत्मबन्धुः** आफ्नै फुपूका छोरा, आफ्नै सानीमा-ठूलीआमाका छोरा, आफ्नै मामाका छोरा। **ख) पितृबन्धुः** बुवाका फुपूका छोरा, घरकी हजुरआमाका दिदीबहिनीका छोरा र बुवाका मामाका छोरा। **ग) मातृबन्धुः** आमाका फुपूका छोरा, आमाका सानीमा-ठूलीआमाका छोरा र आमाका मामाका छोरा।	पक्षिणी (दुई दिन एक रात अथवा एक रात दुई दिन)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकुल्य दाजुभाइ भनिन्छ।

१०	गायत्री गुरु	तीन रात
११	दीक्षा आदि गुरु	अहोरात्र
१२	गुरुपत्नी र गुरुपुत्र	अहोरात्र
१३	स्वयंद्वारा उपनीत र पाठित शिष्य	तीन रात
१४	सासु-ससुराको (ज्वाइँले)	तीन रात
१५	ज्वाइँको (सासु-ससुराले)	एक रात (आफ्नै घरमा मरेमा तीन रात)
१६	सानाबा, ठूलोबुबा, फूपाजु र साढुभाइ आदि	स्नानमात्रै (उपकारी भएमा एक दिन)
१७	सालो	एक दिन
१८	सालो (अनुपनीत) र सालाको छोरा	स्नानमात्रै
२०	विवाहिता साली	एक दिन (स्नानमात्रै)
२१	अविवाहित साली	स्नानमात्रै .
२२	सौतेनी सालो वा साली	स्नानमात्रै
२३	समान जातिको सहपाठी	पक्षिणी
२४	पुरोहित	अहोरात्र
२५	वरण गरेर काम लगाएको अवस्थाको पुरोहित	तीन रात
२६	उच्च जातिको मित	पक्षिणी
२७	समान जातिको मित	अहोरात्र
२८	तल्लो जातिको मित	स्नानमात्रै
२९	विधिपूर्वक सन्न्यास ग्रहण गरेको सन्न्यासी	स्नानमात्रै (सपिण्ड दाजुभाइलाई)
३०	सन्न्यासीका पत्नी, पुत्र आदिको कर्तव्य : यति सन्न्यासीका पत्नी पुत्रादिले १० दिन नित्यानन्द यतिको पद्धतिअनुसार काजकिरिया गर्ने र ११ दिनमा नारायण बलि गरी १२ दिनमा पार्वण श्राद्ध एवं १६ दिनम सन्न्यासी, ब्राह्मण तथा अनाथहरूलाई भोजन गराई दक्षिणा तथा वस्त्र, जलपात्र आदि दान गरिदिने	
३१	आफ्नो घरमा आएको कोही व्यक्ति	तीन रात
३२	आफ्नो सहोदर दिदी वा बहिनी	तीन रात
३३	सौतेनी दाजुबहिनी (विवाहित)	पक्षिणी
३४	सौतेनी दाजुबहिनीको (अविवाहित)	एक दिन
३५	उपनीत भान्जा	तीन रात
३६	अनुपनीत भान्जा (चूडाकर्म गरेको)	पक्षिणी
३७	वहिनीज्वाइँ वा भिनाजु	स्नानमात्रै (उपकारी सम्झिए १ दिन)
३८	छोरीले बाबुआमा र सौतेनी आमाको	तीन रात (दाजुभाइसँगै बसेर काजकिरिया गरेमा १३ दिन)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९	बाबुआमाले छोरीको (अविवाहितको पनि)	तीन रात
	(यसैभित्र (३+४+३) १० पिण्ड दिई चार दिनमा एघारौं बराबरको काम गरी पाँचौं दिनमा सपिण्डी स्थानीय एकोद्दिष्ट गरी दानादि गरिदिने)	
४०	पत्नी पोइला गएमा : क) आफ्नो जाति वा माथिल्लो जातिमा गएमा	तीन रात
	ख) हीन जातिमा गएमा	स्नानमात्रै
४१	सम्धी-सम्धिनी	स्नानमात्रै
नोटः आशौचसम्बन्धी निर्णय गर्दा गुणी, निर्गुणी, उपकारी, अनुपकारी, आचरणशील वा अनाचारी आदिका बारेमा पनि विचार गर्नुपर्ने हुन्छ।		

४. आशौच सम्पातसम्बन्धी केही समस्या एवं निर्णयहरू

आशौच सम्पात भनेको एउटा आशौच परिरहेको अवस्थामा अर्को आशौच पर्नु हो। यस्तो अवस्थामा पूर्वापर बलाबलको विचारअनुसार निर्णय गर्नुपर्ने हुन्छ। प्रायः महागुरुको आशौच प्रबल हुने हुनाले यसभित्र परेका सम्पात भएका अन्य आशौचहरू महागुरुमा नै समाहित हुने हुँदा उनीहरूको स्नान र अञ्जलिदानसम्म मात्र आशौच हुन्छ र त्यसपछि महागुरु (माता, पिता र पत्नीका लागि पति) को कार्य सरासर गर्ने अधिकार पुत्रादि कर्तामा रहन्छ। पछि मर्नेका पनि आफ्ना माता-पिता-पुत्रादिका लागि महागुरु नै भएकाले उनीहरूले पनि सरासर १३ दिन नै बार्नुपर्ने हुन्छ।

पूर्वाशौचेन या शुद्धिः सूतके मृतके तथा। सूतिकामग्निदं हित्वा प्रेतस्य च सुतानपि।

थप स्पष्टताका लागिः

पुत्र, पुत्रवधू, पत्नी, अविवाहित कन्या, विवाहिता कन्या, बन्धुबान्धव र नातासम्बन्धी गरी आशौच बार्नेहरू सामान्यतया सात कोटिका देखिन्छन्। ती सबैको आशौच बार्ने स्वरूप र दिनसङ्ख्या पनि फरक-फरक रहेका हुन्छन्। कारण हो माता, पिता र पति महागुरु कोटिमा पर्दछन्। यिनीहरूको आशौच वर्ष दिनसम्म नै रहन्छ र दशौं दिनको सूर्यास्तसम्म अरू कसैको मृताशौच परेमा महागुरुभित्र नै समाहित हुने हुँदा पछि मरेकाको स्नान र जलाञ्जलिबाहेक अरू थप जुठो बार्नुपर्दैन, महागुरुको आशौचमा नै सकिन्छ।

अतः ५,७ दिनमा आशौच खप्टियो भने मातापिताकामा नै समाहित हुने भएकाले मातापिताका काजकिरियाको काम सरासर सक्नुपर्दछ। एघारौं, बाह्रौं, तेह्रौं पनि सक्नुपर्दछ। महागुरुको आशौचको प्रबलताका कारण सपिण्डी रोक्ने वा शुद्धशान्ति रोक्ने प्रसङ्ग नै आउँदैन। पुत्रवधूको पनि पुत्रवत् व्यवहार हुन्छ भने अविवाहित पुत्रीका लागि पनि यही नियम लाग्दछ। विवाहिता पुत्रीका हकमा घरपट्टिको आशौच प्रबल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुन्छ उताको नै बार्नुपर्दछ। बन्धुबान्धवलाई आशौच सम्पातमा पहिलो आशौचले दोस्रो आशौचलाई लैजान्छ। नातासम्बन्धी आशौच आ-आफ्नो दिनसङ्ख्याअनुसार बारिन्छ।

पछि मरेकाको आशौच कति र ककसलाई लाग्छ, अनि काजकिरिया कसरी गरिन्छ भन्नेतर्फ विचार गर्दा पछि मरेकाको आशौच पुत्र, पुत्रवधू, पत्नी र अविवाहित छोरीलाई बाहेक अरू सम्पूर्ण बन्धुबान्धवहरूलाई पहिलो आशौचले नै लैजान्छ। यी पुत्र, पुत्रवधू, पत्नी र अविवाहित छोरीले भने आफ्ना पितामाता आदि महागुरु भएकाले आफ्नो आशौचको पूरा १३ दिन नै बार्नुपर्दछ। पहिलाका आशौचले लाँदैन। अर्थात् अन्यका आशौचले माता, पिता र पतिको आशौच लाँदैन।

अतः पहिलो दिनदेखि १३ दिनसम्मका यावत् कर्म गर्ने अधिकार हुन्छ। यसमा पनि दशम दिनको सूर्यास्तपछि अर्को आशौच परेमा भने भिन्न नियम छ। दशम दिनको सूर्यास्तपछि रात्रिको तीन प्रहरसम्म अर्को आशौच परेमा २ रात बढाउने चौथो प्रहरमा सूर्योदयभन्दा पहिले परेमा तीन रात बढाउने। सूर्योदयपछि भएमा पूरै दश दिन नै बार्नुपर्छ तर एघारौँका आद्य मासिक, आद्याब्दिकसम्म गरी बाँकी काम थाती राख्नुपर्छ। विवाहित छोरीका हकमा भने मातापिताको तीन रातको आशौचपछि घरतिरको आशौच आएमा घरतिरका आशौचले नै जित्दछ र उतैको आशौच बार्नुपर्दछ। शुद्ध भएपछि यता माता वा पिताको दानादि गर्नुपर्दछ।

दशम दिनको सूर्यास्तभन्दा पहिले अर्को समान मानको वा न्यून मानको आशौच परेमा र ज्ञान पनि भएमा पहिलो आशौचले नै शुद्धि हुन्छ। दशम रात्रिको तीन प्रहरभित्र अर्को आशौच परेमा र ज्ञान पनि भएमा २ दिन थप बार्नुपर्दछ भने दशम रात्रिको चौथो प्रहरमा अर्थात् स्थूलमानले ५६ घडीभित्र अर्को आशौच पनि बारेको र ज्ञान पनि भएको अवस्थामा तीन रात्रि थप बार्नुपर्दछ। ११ दिनको सूर्योदयपछि त पहिलो परेको पनि र पछि परे पनि थप ११ दिन नै बार्नुपर्दछ। पहिलो मृताशौचको ११ दिनको आद्य मासिक र यसभित्रका शय्यादान आदि, आद्य आब्दिक, वृषोत्सर्ग (गर्नु पर्ने भए) सम्ममा काम गर्नुपर्दछ। घटश्राद्ध (३६५) र ऊनादि पञ्चदश मासिक श्राद्ध भने सपिण्डीको जुराएको दिन वा उसै दिन भए पनि त्यहीं गरिन्छ। १२ दिनमा रोकिएको सपिण्डी ४५ दिनमा तिथिअनुसार गर्ने वा हस्ता, आर्द्रा, रोहिणी र अनुराधा नक्षत्रमध्ये एक नक्षत्रमा गर्नु पर्दछ।

सपिण्डीकरणश्राद्धमुक्तकाले कृतं न चेत्।
हस्तार्द्रारोहिणीभे वानुराधायां च तच्चेरत्। ।(धर्मसिन्धु पृ. ९५६)

यसै गरी उत्तरपाथेय श्राद्ध सपिण्डी श्राद्ध गरेको भोलिपल्ट नै गर्नुपर्दछ। १२ दिनमा गर्ने प्रमाण पाइँदैन। भ्रमवशात् गर्ने गरेको हो। प्रेतः सपिण्डनादूर्ध्वं पितृलोकं स गच्छति। कुर्यात्तस्य तु पाथेयं द्वितीयेऽह्नि सपिण्डनात्। ।(धर्मसिन्धु पृ. ९६०)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५. परिमार्जनयोग्य केही विषयहरू

क. आशौचमा जनै १० दिनमा नफेरेर ११ दिनमा नै फेर्नुपर्दछ यस्तै तीनदिने आशौचमा चार दिनमा फेर्नुपर्दछ। दश दिनमा आशौच गएकै हुँदैन।

ख. विवाहित छोरीले माइतीमा नै मातापिताको आशौच बारेर बसेको अवस्थामा माइतीको आशौची अन्न, सकटान्न भक्षण गरेका कारण गोदानादि गर्न नमिल्ने तर स्पर्श दोष नरहने हुँदा वाह्य सरसहयोग गर्न मिल्ने देखिन्छ। यद्यपि यो परम्परा कमै देखिन्छ। आफ्नै घरमा बसेको भए त ४ दिनमा गोदानादि गरेर शुद्ध मानिन्छ नै। आशौचको अन्नादिमा दोष हो। दिनसङ्ख्याले शुद्ध हुने हो।

ग. पाँचदिने आशौचको व्यवस्था नभएकाले ३ रात्रिमात्र आशौच हो। अतः तीन रात्रिको आशौचलाई ५ दिन भन्ने भ्रम हटाउनु पर्दछ। ४ दिनमा शुद्ध हुने हो।

घ. १५ दिने मासिक भनी पाक्षिक मासिक पनि अशास्त्रीय नै देखिन्छ र २० दिनपछि जुराएर गरिने मासिक दोस्रो मासिक हो। यो मासिक २० दिनपछि जुराएर द्वितीय मासिकको नजिक पारेर गर्नु पर्दछ।

ङ. जननाशौच परिरहेको बेलामा मृताशौच परी थुनिएको नामकरण संस्कार कहिले गर्ने र नामाकरण नगरी सपिण्डी गर्न मिल्छ कि मिल्दैन भन्ने विषयमा विचार गर्दा मृताशौच र जननाशौच पर्दा मृताशौच बलवान् भई जननाशौचका कृत्यहरू गर्न मिल्दैन अर्थात् ११,१२ दिनको मुख्य नामकरण काल बाधित भयो। यो नामकरण मृताशौचको १३ दिनमा जुरे १३ दिनमा या १३ दिनपछिका दिनहरूमा धर्मसिन्धुको नामकरण प्रकरणअनुसार जुराएर गर्नुपर्छ। नामकरण नगरी सपिण्डीकरण श्राद्ध गर्नुहुँदैन भन्ने कुरा शास्त्रसम्मत देखिँदैन। अतः नामकरण जुराएर गर्ने। यताका मृताशौचका कार्य सरासर गर्नुपर्दछ। नामकरणका कारण सपिण्डी रोक्न हुँदैन।

६. उपसंहार

आशौचको प्रवृत्ति अग्निहोत्रीलाई दाहसंस्कारबाट हुन्छ भने निरग्निक (अग्निहोत्ररहित) लाई मृताशौचमा मरेको निश्चय भएपछि अर्थात् मरेर आशौच परेको र मरेको निश्चय ज्ञान भएको अवस्था भएपछि मात्र आशौच प्रवृत्त हुन्छ। त्यस अवस्थाअनुसार लास पछि जलाए पनि आशौचको प्रवृत्ति भने निश्चयपश्चात् तत्काल भइहाल्छ, बार्न थालिहाल्नुपर्छ, लास जलाउने वा नजलाउनेसँग यसको सम्बन्ध देखिँदैन। एकपटक बारेको आशौच फेरि बार्नु पर्दैन। जननाशौच पनि परेको र ज्ञात पनि भएको अवस्थामा तत्काल प्रवृत्त हुन्छ। ७ पुस्तासम्म जननाशौच एवं मृताशौच दश रात्रि नै बार्नुपर्दछ भने ८-१४ पुस्तासम्मको आशौच तीन रात्रि बार्नुपर्दछ। १५-२१ पुस्ताको एक दिन आशौच बार्नुपर्दछ। त्यसपछिको आशौच स्नानले शुद्ध भइन्छ।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु। यतो धर्मस्ततो जयः।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वीय परम्परामा साङ्गवेद विवेकाश्रम संस्कृत मा.वि. तथा गुरुकुलीय शिक्षापद्धति

✍ कोमलप्रसाद पोखरेल

१. गुरुको महिमा

गुरु पूर्वीय परम्परामा एउटा अनन्त एवं महत्त्वपूर्ण खोज हो भने गुरु-शिष्य परम्परा भारत वर्षको पहिचान हो। यस अनुलोम परम्परालाई पूर्वले नियमित, प्राकृतिक तथा सुल्टो परम्पराका रूपमा लिएको छ। यसले गुरुको महत्त्व राम्ररी बुझेको छ, गुरुको गरिमा र आयामको यथातथ्य पहिचान गरेको छ। यति मात्र होइन भारत वर्षका लागि गुरु सर्वव्यापक हो। यस परम्परामा शिष्य गुरुका समीपमा जान्छ र इच्छानुसार आफ्ना ज्ञानको तिर्खा मेटाउँछ।

गुरुका बारेमा पूर्व के भन्छ हेरौं -

शब्दमा गुरु -

गु शब्दस्त्वन्धकारश्च रु शब्दस्तन्निवारकः। अन्धकारनिरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते।।

वर्णमा गुरु -

गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्य हारकः। उकारो विष्णुरव्यक्तस्त्रितयात्मा गुरुः परः।।

गुरुका लक्षण

ज्ञानं स्वानुभवः शान्तिर्वैराग्यं वक्तृता धृतिः। षड्गुणैश्वर्ययुक्तो हि भगवान् श्रीगुरुः प्रिये।।
चातुर्यवान् विवेकी च अध्यात्मज्ञानवान् शुचिः। मानसं निर्मलं यस्य गुरुत्वं तस्य शोभते।
गुरवो निर्मलाः शान्ताः साधवो मितभाषिणः। कामक्रोधविनिर्मुक्ताः सदाचाराः जितेन्द्रियाः
(गुरुगीता २७१)।
शान्तो दान्तः कुलीनश्च विनीतः शुद्धवेशवान्। शुद्धाचारः सुप्रतिष्ठः शुचिर्दक्षः सुबुद्धिमान्।
आश्रमी ध्याननिष्ठश्च मन्त्रतन्त्रविशारदः। निग्रहानुग्रहे शक्तो गुरुरित्यभिधीयते।।
उद्धर्तुं चैव संहर्तुं समर्थो ब्राह्मणोत्तमः। तपस्वी सत्यवादी च गृहस्थो गुरुरुच्यते।।

✍ साहित्यकार, कनकाई ३, सुरुङ्गा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।

अर्थात् गुरु सच्चा ज्ञानको आविष्कारक र त्यसको संरक्षक हो भने अज्ञानको संहारक पनि हो। समग्रमा गुरु यस जगत्को सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता सर्वशक्तिमान् परब्रह्म परमात्मा हो।

गुरुका सम्बन्धमा गोस्वामी तुलसीदासको भनाइ यस प्रकार रहेको छ -

गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई। जों बिरंचि संकर सम होई (राम चरितमानस)।।

अर्थात् कुनै व्यक्ति ब्रह्म, शङ्करसमान नै किन नहोस् गुरुविना ऊ भवसागर पार तर्न सक्दैन।

बंदउँ गुरु पद पंकज कृपा सिंधु नररूप हरि।

महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर (राम चरितमानस)।।

अर्थात् म ती गुरु महाराजका चरणकमलको वन्दना गर्दछु, जो कृपाका सिन्धु तथा नर रूपमा श्रीहरि नै हुनुहन्छ र जसको वचन महामोहरूपी अन्धकारलाई नाश गर्ने सूर्यको प्रकाश हो।

अर्का सन्त कबिरको विचार -

तीरथ गए तो एक फल, संत मिले फल चार। सद्गुरु मिले तो अनन्त फल, कहे कबीर विचार।

अर्थात् तीर्थ जाँदा एक फल प्राप्त हुन्छ भने सन्त समागमबाट चार गुणा फल प्राप्त हुन्छ र अझ सद्गुरुको सान्निध्यबाट त झन् अनन्त फल प्राप्त हुन्छ।

श्रीमद्भगवद्गीताको उद्घोष -'शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्' भनेर आफ्नो शिष्यत्व स्वीकारेका अर्जुनलाई श्रीकृष्ण भन्छन्

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः (१८-६६)।

सबै धर्महरू त्यागी मेरा शरणमा पर,छुटाउँछु सबै तिम्रा पाप, निश्चिन्तले बस।

अर्थात् सबै साधनहरूलाई छोडेर केवल नारायण स्वरूप गुरुको शरणागत हुनुपर्दछ। उहाँले नै सबै पाप नाश गरिदिनुहुन्छ। यसमा शोक गर्ने काम छैन भन्ने यस श्लोकको मूल अभिप्राय हो।

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्यां प्रयच्छति। अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः।।

अर्तात् जन्मदाता, उपनयनकर्ता, विद्यादाता, अन्नदाता र भयत्राता यी पाँच पिता मानिन्छन्, गुरु र पितामा केही भेदभाव छैन। (चाणक्य नीति)।

एकमेवाक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत्। पृथिव्यां नास्ति तद्द्रव्यं यद्दत्त्वा चानृणी भवेत् (अत्रिसंहिता)

यसरी वास्तवमा गुरु पूर्वको अटल सम्पत्तिका रूपमा रहेको देखिन्छ भने पश्चिमलाई गुरुको नाम र महत्त्वमात्र होइन ठेगाना पनि थाहा छैन। पश्चिमले कहिल्यै जानेन गुरुको आयाम। पश्चिमको शब्दकोशमा शिक्षक-विद्यार्थी (टिचर-स्टुडेन्ट) मात्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहेको देखिन्छ, त्यसैले पश्चिमाहरू शिक्षक र विद्यार्थीका बारेमा मात्र राम्ररी बताउन सक्छन्। उनीहरूलाई गुरु-शिष्यको ज्ञान अलिकति पनि नभएकाले अहिलेसम्म उनीहरू यस रसबाट सर्वथा वञ्चित रहेका छन्। वर्तमान समयमा विश्वभर पश्चिमबाट आयातीत आधुनिक शिक्षा प्रणालीको वर्चस्व रहेको हुनाले पूर्वकाहरू पनि सोही लहैलहैमा लागेर गुरुशिष्य परम्पराबाट ओझेल पर्न थालेका छन्। वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रतिलोम प्रणाली भएको हुनाले यस प्रणालीमा शिक्षक शिक्षार्थीको अनुगामी हुन्छ। शिक्षार्थी जहाँ छन् त्यहाँ गएर शिक्षकले शिक्षा दिनुपर्छ। त्यसैले पूर्वका लागि यो परम्परा अप्राकृतिक र उल्टो हो। वास्तवमा गुरुकुलीय शिक्षाको आशय ज्ञान हो र ज्ञानका आकाङ्क्षी शिक्षार्थी हुन्। सो आकाङ्क्षा गुरुले मात्र पूरा गराउँछन्। आधुनिक शिक्षाप्रणालीमा गुरुको स्थान शिक्षकले लिएको छ। उसले ज्ञान होइन परीक्षामुखी परिधीय शिक्षा दिने गरेको छ। परम्परित गुरुकुलीय शिक्षण पद्धतिमा शिक्षा दिने कार्य पेसा नभएर आनन्द थियो, सुख थियो र सम्मानित पनि, तर आधुनिक शिक्षा प्रणालीमा शिक्षकले अतीतबाट प्राप्त सूचना वा जानकारीको थोरै प्रतिशतमात्र विद्यार्थीहरूमा जबर्जस्ती थोपर्ने गरेको पाइन्छ भने गुरुकुलीय परम्परामा गुरुले आफूमा भएको सम्पूर्ण ज्ञान निःस्वार्थ एवं निष्काम भावनाद्वारा शिक्षार्थीमा दान गरेको देखिन्छ

असल शिष्यका लक्षणहरू :

वाङ्मनःकायवसुभिर्गुरुशुश्रूषणे रतः। एतादृशगुणोपेतः शिष्यो भवति नारद।।
देवताचार्यशुश्रूषां मनोवाक्कायकर्मभिः। शुद्धभावो महोत्साहो बोद्धा शिष्य इति स्मृतः।।
शान्तो विनीत शुद्धात्मा श्रद्धावान् धारणक्षमः। समर्थश्च कुलीनश्च प्राज्ञः सच्चरितो व्रती।

(शब्दकल्पद्रुम)

२. गुरुकुलीय शिक्षा पद्धतिको परिचय

घरमा नबसी गुरुका अधीनमा रहेर ब्रह्मचर्यपूर्वक त्याग एवं तपस्यायुक्त जीवन यापन गर्दै विद्या आर्जन गर्नु परम्परागत गुरुकुलीय शिक्षा प्रणालीको प्रमुख उद्देश्य हो। यस प्रणालीमा मूलतः तीन तत्त्व पाइन्छन्, जसमा

१. गुरु र शिष्यको आत्मिक सम्बन्ध,
२. सत्य, तप, दम, शम आदि साधनहरूद्वारा दृढ चरित्र-निर्माण तथा
३. स्वाध्याय अर्थात् अपरा विद्या-प्राप्ति पर्दछन्।

यसका लागि ६ वर्षको उमेरमा गुरुकुलमा प्रवेश गरिन्छ। कुनै कुनै गुरुकुलमा सो उमेरभन्दा बढी उमेरकाहरूले पनि प्रवेश पाउने गरेको देखिन्छ। प्राचीन कालमा आठ वर्षमा उपनयन संस्कार सम्पन्न भएपछि गुरुको सान्निध्यमा रहेर विद्या अध्ययन गर्नुपर्ने प्रावधान थियो। अहिले पनि गुरुकुल शिक्षाले दिने अर्थ यही नै हो। त्यति बेला विद्यार्थीले २५ वर्ष नपुगदासम्म गुरुका साथमा बसेर विद्या अध्ययन गर्नुपर्थ्यो। पूर्ण ब्रह्मचर्यमा रहेर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्या अध्ययन गर्नुपर्ने भएकाले यसैलाई ब्रह्मचर्याश्रम पनि भनिन्छ। प्राचीन गुरुकुलहरूमा वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण आदि आर्ष ग्रन्थ पढाउनुका साथसाथ गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, चिकित्सा, भूगोल, खगोल, अन्तरिक्ष विज्ञान, गृह-निर्माण, कला, सङ्गीत कला, राजनीति, अर्थशास्त्र, न्याय, विमान विद्या, युद्ध आयुध-निर्माण, योग, यज्ञ एवं कृषि इत्यादि मनुष्यका भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नतिका लागि आवश्यक पर्ने सबै विषय अध्यापन गराइन्थ्यो। कृष्णले गुरुकुलमै चैसट्ठी कलासम्बन्धी विद्याध्ययन गरेको कुराबाट यसको पुष्टि हुन्छ।

प्राचीन गुरुकुलमा पढाइको समय तालिका सूर्योदयदेखि लिएर सूर्यास्तसम्म हुन्थ्यो। सूर्यास्तको समयपछि शिक्षार्थीहरू सन्ध्यावन्दन एवं अग्निहोत्र आदि कार्य सम्पन्न गरी रात्रिको भोजनपश्चात् विश्राम गर्थे। केवल दुईपटक मात्र भोजन हुन्थ्यो। किनभने मान्छेको दीर्घायुका लागि दुईपटक भोजन गर्नु समीचीन ठहर्छ। उपर्युक्त अनुसार गर्नु गराउनुपर्ने कुरालाई मनन गरेर आजका गुरुकुलहरूले आध्यात्मिक आदर्शको कोशेढुङ्गा बन्न सक्नुपर्छ। यही नै आजको आवश्यकता हो।

३. गुरुकुलीय शिक्षाको उद्देश्य

प्रत्येक व्यक्तिको जीवनको उद्देश्य वैदिक साहित्य, पुराण, ब्रह्मसूत्र, गीता, उपनिषद् जस्ता पूर्वीय वाङ्मयको अध्ययन मनन तथा सन्ध्यावन्दन, यज्ञयागादिको अनुशीलन, मातापिता, गुरुजन, वृद्ध व्यक्तित्वको सेवाका साथै जीवजन्तु, पशुपक्षी, एवं बोटबिरुवाप्रति आत्मिक मैत्री भाव जस्ता कुराबाट प्राप्त हुन सक्छ। यस प्रकारको उद्देश्य प्राप्ति गुरुकुलीय शिक्षाबाट मात्र सम्भव छ। यसका साथसाथै गुरुकुलमा अध्ययन, अध्यापन गर्ने शिष्य र गुरुहरूले योगाभ्यासद्वारा ईश्वरको सक्षात्कार गरेर भौतिक पदार्थबाट पाउन नसकिने आनन्द प्राप्त गर्न सक्नुपर्दछ। सर्वव्यापक एवं आनन्दस्वरूप ईश्वरको प्राप्ति गुरुकुलीय शिक्षाबाट नै सम्भव छ भन्ने कुरा गाउँले सर्वसाधारणमा समेत पुर्याउनु पनि यस शिक्षाको एउटा उद्देश्य हो। गुरुकुलमा संस्कृत अथवा नेपाली भाषाका माध्यमबाट अध्यात्म, वैदिक साहित्य, उपनिषद्, पौराणिक साहित्य जस्ता विषयहरू अध्ययन अध्यापन हुनु नितान्त आवश्यक छ। यस प्रणालीमा गुरुकुलीय शिक्षाका साथसाथ आधुनिक शिक्षा पनि दिन गर्न सकिने हुँदा यसको उद्देश्य पवित्र, गहन, व्यापक एवं सर्वतोमुखी हुनु अत्यावश्यक देखिन्छ।

यस शिक्षाका केही प्रमुख उद्देश्यहरू यस प्रकार रहेका छन् :

क. गुरु-शिष्यका बीच पिता-पुत्रको सम्बन्ध हुन्छ भन्ने परम्परागत नैतिक अदर्शलाई पुनःस्थापित गर्नु,

ख. बालकको शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास गर्नु,

ग. विद्यार्थीहरूको चरित्र विकास गर्नुका साथै प्राचीन पूर्वीय संस्कृतिप्रति अस्था जगाउनु,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घ. वैदिक तथा संस्कृत साहित्यलाई शिक्षामा उपयुक्त स्थान दिलाउनु,

ङ. प्राचीन पूर्वीय ज्ञानविज्ञान एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञानको समन्वय स्थापित गर्नु, गराउनु,

च. पूर्वीय अध्यात्म दर्शन, विज्ञान, इतिहास जस्ता विषयमा शोध गर्नु, गराउनु आदि।

४. गुरुकुलीय शिक्षाको ऐतिहासिकता

हाम्रो पूर्वीय सनातन परम्परालाई हेर्दा त्रेतायुगदेखि गरुकुल परम्परा प्रारम्भ भएको पाइन्छ। वेद तथा पुराणहरूमा वर्णित प्रमुख प्राचीन गुरुकुलहरूलाई तलको तालिकामा देखाउने प्रयत्न गरिएको छ :

तालिका

क्र.सं.	गुरुकुलहरू	प्रमुख गुरु	प्रमुख शिष्य
१	वशिष्ठ आश्रम	वशिष्ठ	राजा दशरथ
२	विश्वामित्र आश्रम	विश्वामित्र	राम, लक्ष्मण.
३	वाल्मीकि आश्रम	वाल्मीकि	लव कुश
४	तृणबिन्दु आश्रम	तृणबिन्दु	हनुमान्
५	भारद्वाज आश्रम	भारद्वाज	उनकै छोराछोरी
६	धौम्य आश्रम	धौम्य	आरुणि, उपमन्यु
७	कपिल आश्रम	कपिल	देवहूति
८	कण्व आश्रम	कण्व	शकुन्तला
९	अत्रि आश्रम	अत्रि	आत्रेयहरू
१०	गौतम आश्रम	गौतम	शतानन्द
११	शौनक आश्रम	शौनक	दश हजार शिष्य
१२	परशुराम आश्रम	परशुराम	भीष्म, द्रोण, कर्ण
१३	वेदव्यास आश्रम	वेदव्यास	पैल, वैशम्पायन
१४	सान्दीपनि आश्रम	सान्दीपनि	कृष्ण, बलराम
१५	द्रोणाचार्य आश्रम	द्रोणाचार्य	पाण्डव, कौरव

भारत वर्षको प्राचीन इतिहास हेर्दा त्यस बखत तीन प्रकारका शिक्षण संस्था रहेको देखिन्छ, जस्तै - गुरुकुल, परिषद् र तपस्थली। गुरुका आश्रममा गुरुका साथ रहेर अध्ययन गर्ने संस्थालाई गुरुकुल भनिन्थ्यो भने विषय-विशेषज्ञद्वारा दीक्षा दिने संस्थालाई परिषद् भनिन्थ्यो। त्यसरी नै सभा सम्मेलनमा प्रवचनद्वारा ज्ञान प्रदान गरिने स्थानलाई तपस्थली भनिन्थ्यो। प्राचीन नैमिषारण्यलाई तपस्थलीका रूपमा लिन सकिन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन कालको गुरुकुलीय शिक्षा सर्वथा निःशुल्क थियो। गुरुकुलको खर्च गाउँलेको दान र सरकारी अनुदानबाट चल्थ्यो। गुरुकुलीय शिक्षाको व्यवस्था गाउँदेखि टाढा जङ्गलमा गरिन्थ्यो। छात्र र छात्रा दुवैका लागि बेग्लाबेग्लै गुरुकुलको व्यवस्था गर्ने गरेको पाइन्छ। छात्र र छात्रा अध्ययन गर्ने गुरुकुलको दूरी लगभग १२ कोस हुनुपर्ने प्रावधान थियो। गुरुकुलहरूमा शिक्षाको माध्यम संस्कृत नै थियो भन्ने कुरा तलको उद्धरणबाट थाहा पाउन सकिन्छ -

संस्कृतं देवभाषास्ति वेदभाषास्ति संस्कृतम्। प्राचीन ज्ञानभाषा च संस्कृतं भद्रमण्डनम्।।

अर्थात् संस्कृत देवताको भाषा हो, संस्कृत वेदको भाषा हो, यो प्राचीन ज्ञानको भाषा पनि हो र यसले भाग्यलाई सिंगार्दछ)।

पौराणिक कालभन्दा धेरैपछि गुरुकुलीय शिक्षाले विश्वविद्यालय तहसम्म फड्को मारेको थियो। यसै क्रममा प्राचीन भारत वर्षमा नालन्दा विश्वविद्यालय, तक्षशिला विश्वविद्यालय, वल्लभीपुर आदि विश्वप्रसिद्ध गुरुकुल संस्था सञ्चालनमा थिए भने आधुनिक कालमा सर्वप्रथम हरिद्वारको कांगडी नामक गाउँमा सन् १९०२ मा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालयको स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वतीले गरेका थिए।

५. नेपालमा गुरुकुल-शिक्षा

प्राचीन कालमा गुरुकुलको जुन किसिमको स्वरूप थियो नेपालमा पनि त्यही किसिमको स्वरूप रहेको पाइन्छ। खास गरी भारत वर्ष (उत्तरमा हिमालय शृङ्खलादेखि दक्षिणमा कन्याकुमारीसम्म र पूर्वमा बङ्गालको खाडीदेखि पश्चिममा अरब सागरसम्म) को गुरुकुल पद्धति दुईवटा परम्परामा रहेको पाइन्छ - शैव परम्परा र वैष्णव परम्परा। शैव परम्परामा शिवबाट पार्वतीले प्राप्त गरेका विद्या पर्दछन्, जसमध्ये व्याकरण, तन्त्रविद्या, सङ्गीत विद्या आदि प्रमुख छन् भने वैष्णव परम्परामा नारायणबाट क्रमशः ब्रह्मा, वशिष्ठ, शक्ति, परासर, व्यास, शुकदेव, गौडपाद, शङ्कराचार्य आदिमा विकसित भएको पाइन्छ। विशेष गरी नेपालका हिमशृङ्खलालाई प्राचीन ऋषिमुनिको साधनास्थलका रूपमा लिइन्छ। व्यास, विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य जस्ता धेरै ऋषिमुनिहरूको साधनाभूमि नेपाल पनि हो भन्ने कुरामा दुई मत छैन।

५.१ लिच्छविकालीन गुरुकुल शिक्षा

नेपालमा लिच्छवि कालमा गुरुकुलीय शिक्षाको विकास राम्रोसँग भएको भन्ने छ। त्यस बेलाको राजकीय भाषा संस्कृत थियो। यसबाट पनि त्यस बेलाको शिक्षामा गुरुकुलको महत्त्वपूर्ण स्थान थियो भन्न सकिन्छ। त्यस बेला वेद, व्याकरण, न्याय, साहित्य, दर्शन, ज्योतिष जस्ता विषयहरू पठनपाठन हुने गरेको कुरा संस्कृत भाषामा लेखिएका तत्कालीन शिलालेखबाट अवगत गर्न सकिन्छ। गुरुलाई दरबारमै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राखेर पढ्ने चलन र शिष्य गुरुकुलमै गएर पढ्ने दुवै चलन थियो। लिच्छविकालीन शासकहरू निकै नै शिक्षाप्रेमी थिए। तीमध्ये अंशुवर्माको स्थान उच्च रहेको छ। उनी स्वयं संस्कृत भाषाका मर्मज्ञ विद्वान् भएकाले शैव, वैष्णव, बौद्ध तीनै किसिमका सम्प्रदायप्रति समान आस्था राख्ने गर्थे। आफ्ना शासनकालमा उनले गुरुकुलहरूको वर्गीकरण गरेका थिए। लिच्छविकालीन गुरुकुल शिक्षाबाट नालन्दा तथा तक्षशिलाजस्ता गुरुकुलको झलक पाइन्थ्यो। यो भनाइ प्राचीन शिलालेखका धुरन्धर पण्डित योगी नरहरिनाथको हो। लिच्छविकालमा शिक्षामा अधिकतम विकास भएकाले नेपालको इतिहासमा लिच्छवि युगलाई स्वर्णयुग मानिन्छ।

५.२ मल्लकालीन गुरुकुल शिक्षा

नेपालमा लिच्छवि कालमा संस्कृत भाषाका गुरुकुलमात्र सञ्चालित रहेको पाइन्छ भने मल्ल कालमा संस्कृतका साथै पाली भाषाका गुरुकुलको पनि स्थापना भएको देखिन्छ। साहित्य, कला, विज्ञान जस्ता विषयमा त्यस बेला लेखिएका ग्रन्थहरू अद्यावधि उपलब्ध छन्। लिच्छवि कालका तुलनामा मल्लकालीन गुरुकुल शिक्षा केही कमजोर देखिन्छ। यस बेलाका गुरुकुलहरूले केही मात्रामा कर्मकाण्डीय विषयक शिक्षासमेत दिने गरेको पाइन्छ।

५.३ शाहवंश कालीन गुरुकुल-शिक्षा

पृथ्वीनारायण शाहभन्दा अघिदेखि नै नेपालमा गुरुकुलीय शिक्षण परम्पराले मान्यता पाउँदै आएको छ। त्यस बेला गोरखा, लमजुङ, तनहुँ, कास्कीलगायत स्थानमा केही गुरुकुलहरू रहेका थिए। राणा शासन कालमा भने गुरुकुल शिक्षामा निकै ह्रास आएको थियो, तर देवसमशेरका पालामा भने केही सुधार भएको पाइन्छ। शाहकालमा सञ्चालित सरकारी भाषापाठशालालाई पनि अंशतः गुरुकुल शिक्षाका रूपमा लिन सकिन्छ।

५.४ वर्तमान गुरुकुल शिक्षा

संवत् २००२ मा पद्मसमशेर प्रधानमन्त्री भएपछि कमजोर हुँदै गएको गुरुकुल शिक्षा पचासको दशकदेखि क्रमशः कछुवा गतिमा अगाडि बढ्दै गएको छ। वर्तमान समयमा नेपाल सरकार, शिक्षा मन्त्रालयले पनि गुरुकुल शिक्षालाई मूल प्रवाहमा ल्याएको छ। देवघाटमा रहेका गुरुकुलमा महेश संस्कृत गुरुकुल, परमानन्द संस्कृत गुरुकुल, वेदवेदाङ्ग गुरुकुल निकै सम्पन्न देखिन्छन्। यिनीहरूको सञ्चालन व्यवस्था पनि उत्कृष्ट रहेको पाइन्छ। झापामा तेइसवटाभन्दा बढी गुरुकुलहरू सञ्चालित छन्। तीमध्ये विवेकाश्रम साङ्गवेद संस्कृत मा.वि, चारपाने बिर्तामोड, वेदवेदाङ्ग संस्कृत पाठशाला, साधुटार, अर्जुनधारा संस्कृत वेदविद्यापीठ, अर्जुनधाराको अवस्था राम्रो छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६. गुरुकुलका विशेषता

गुरुकुलमा अध्ययन गर्ने बालकहरू गुरुकुलका अङ्ग बन्दछन्, उनीहरू जन्म दिने आफ्ना मातापिताको सानो परिवारबाट आचारको शिक्षा दिने आचार्यको ठूलो परिवारका सदस्य बन्दछन्। उनीहरूलाई त्यहाँ तपस्यापूर्ण जीवनको अभ्यास गराइन्छ। बालकहरूले त्यहाँ निःशुल्क शिक्षा प्राप्त गर्दछन्। त्यहाँ धनी-गरिब, उच्च-नीच, महिला-पुरुषको कुनै भेदभाव रहँदैन। एकै स्थानमा सर्वतोमुखी ज्ञान प्रदान गर्नु, व्यावहारिक शिक्षामा जोड दिनु, स्वावलम्बी बन्न उत्प्रेरित गर्नु, राष्ट्रप्रेम तथा वसुधैव कुटुम्बकम् को भावना जागृत गराउनु, सदाचार र सच्चरित्रतामा जोड दिनु, गुरु ज्ञानदाता र अभिभावक दुवै हो भन्ने भावना जागृत गराउनु आदिजस्ता कुराहरू गुरुकुलका प्रमुख विशेषता हुन्।

६. १ सनातन धर्म र गुरुकुल

झुल्कनु पूर्वमा सूर्य अस्ताउनु यथा क्रम। शास्त्रले भनिआएको यही नै हो सनातन।।
सृष्टिदेखि सधैं नित्य हावा चल्छ निरन्तर। अरूकै लागि यो चल्छ यही नै हो सनातन।।
नदीमा मिल्नु खोल्साले, नदी सागर सङ्गम। गूढार्थ जसले बुझ्छ बुझ्यो त्यस्ले सनातन।।
जसका दूधले हाम्रो हृष्टपुष्ट छ यो तन। साक्षात् गौ, धरणी, माता नै हुन् हाम्रा सनातन।।
ब्रह्माण्ड सृष्टिका पूर्व निस्केको पहिलो स्वर। प्रणवाक्षरलाई नै भन्छन् शुद्ध सनातन।।
पृथिवी जल आकाश वायु तेज मिलीकन। हाम्रो देह बनेको छ, हुन् यी पाँच सनातन।।

भौतिक विकासका कारण अत्यधिक रूपमा प्रदूषित विश्वलाई धर्मो रक्षति रक्षितः, वेदो खिलो धर्ममूलम्, वसुधैव कुटुम्बकम्, धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा जस्ता वैदिक उद्घोषहरूलाई केन्द्रबिन्दुमा राखेर शिक्षा दिने स्थान गुरुकुल नै भएको हुनाले गुरुकुल शिक्षा र सनातन धर्म एक सिक्काका दुई पाटा हुन् भन्दा अतिशयोक्ति नहोला।

६.२ उपनिषद्, नैतिक शिक्षा र गुरुकुल

उपनिषद् शब्द उपनि पूर्वक सद् धातुबाट क्विप् प्रत्यय लागेर बनेको हो। अर्थात् 'उपनिक्विप्' उपनिषद्। यस व्युत्पत्तिअनुसारको अर्थ हुन्छ - सम्पूर्ण अनर्थलाई पैदा गर्ने सांसारिक क्रियाकलापलाई उपनिषद्‌ले नाश गर्छ, संसारको कारणस्वरूप अविद्यालाई शिथिल तुल्याउँछ वा समाप्त पार्दछ र ब्रह्मज्ञान प्राप्त गराउँछ। यसको अर्को व्युत्पत्ति यस प्रकार रहेको छ - उप समीपे ज्ञानप्राप्त्यर्थं निषीदति इति उपनिषद् (अर्थात् मुमुक्षु शिष्य आआफ्ना गुरुका समीप ज्ञान प्राप्त गर्नका लागि बस्नु वा संलग्न हुनु)। यसरी हेर्दा उपनिषद् र गुरुकुलको अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहेको देखिन्छ।

६.३ गुरुकुल र आहारविहार

गुरुकुलमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूलाई दुध, फल तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गराइन्छ। मद्य, मांस, धूम्रपान जस्ता आमिषजन्य वस्तुहरू अत्यन्त कडाइका साथ वर्जित गरिएका हुन्छन् यस संस्थामा। सादा जीवन उच्च विचारलाई गुरुकुलका आचार्य तथा विद्यार्थीहरूले पूर्णरूपेण परिपालन गर्नुपर्छ र गरेका हुन्छन्। हाम्रा पूर्वीय मनीषीहरूले आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः भनेर गरेको उद्घोषलाई अहिले आएर विज्ञानले समेत अनुसरण गरेपछि सात्त्विक भोजनको महत्त्व र गरिमा बढ्दै गएको छ। तुलनात्मक रूपमा शाकाहार गर्ने मानिस मांसाहार गर्ने मानिसभन्दा अधिकतम स्वस्थ र दीर्घजीवी भएको छ र हुन्छ भन्ने कुरासमेत वैज्ञानिक अनुसन्धानले पनि पुष्टि गरेको छ। मांसाहारीका तुलनामा शाकाहारी धेरै प्रतिशत निरोगी रहने हुनाले सबै मांसाहारीले गुरुकुलको सिको गरी शुद्ध शाकाहारी बन्नुपर्ने देखिन्छ।

७. उपसंहार

प्राचीन आचार्यहरूले गुरुकुलीय शिक्षालाई शरीर, मन र आत्माको सर्वाङ्गीण विकासको साधनका रूपमा लिएका छन्। अतः शिक्षाले भौतिक उपलब्धिसम्म मात्र सीमित नभएर आत्मचिन्तनसम्मको लक्ष्य निर्धारित गर्दछ। शिक्षाको सम्बन्ध बालक जन्मिनुभन्दा अघिदेखि ऊ परिपक्व नागरिक नबनुन्जेलसम्म निरन्तर रहन्छ। मातापिता र गुरुबाट नै उसले संस्कार र शिक्षा प्राप्त गर्दछ। मातापिताका संस्कारबाट सन्तानको प्रारम्भिक व्यक्तित्व निर्माण हुन्छ र पूर्व प्रभावबाट ऊभित्र संस्कारहरूको जन्म हुन्छ। यिनै संस्कारहरूको क्रमबद्ध निर्माण नै बालकको शिक्षा हो। यसै कारण हाम्रा पूर्वज मनीषीहरूले षोडश संस्कारको प्रावधानलाई अनिवार्य वनाएका हुन्। यसरी हेर्दा असल परिवेशमा परम्परित तथा सुसंस्कृत जीवनोपयोगी शिक्षा दिनुलाई गुरुकुलका प्रमुख विशेषताका रूपमा लिन सकिन्छ।

गुरुकुलका विशेषताका आलोकमा हेर्दा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको सञ्चालन वस्तुतः गुरुकुलीय पद्धतिमा नै भएको पाइन्छ। पवित्रता, शुद्धता, नैतिक आचरण, श्रवण, मनन, निदिध्यासन जस्ता कुराहरूलाई गुरु र शिष्य दुवैले यथोचित रूपमा पालना गरेको देखिन्छ। यस गुरुकुलले अहिलेसम्म सयौं योग्य गुरु, योग्य पण्डित, योग्य पुरोहित उत्पादन गरिसकेको छ। समाज र राष्ट्रका लागि गरेको यस किसिमको योगदान ज्यादै प्रशंसनीय छ। श्रीहरिः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्दर्भ सूची

आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश (द्वितीय संस्करण सन् १९६९), दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास प्रा.लि.

कल्याण उपनिषद् अङ्क ११ औं पुनर्मुद्रण (सं. २०६८ : ३४९),

तैत्तिरीयोपनिषद् सप्तम अनुवाक्, गोरखपुर, भारत : गीताप्रेस।

कामन्दकीय नीतिसार (२०२९), काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान।

पोखरेल, कोमलप्रसाद, सजिलो कोमलगीता (अनुवाद वि.सं. २०७५) झापा : पुण्यप्रभा पोखरेल र पुष्पादेवी पोखरेलं

तुलसीदास, टीकाकार हनुमानप्रसाद पोद्दार (२०४६, रामचरितमानस, (बालकाण्ड, ३१४।४), गोरखपुर : गीताप्रेस।

वेदान्त-दर्शन र ब्रह्मसूत्र (वि.सं. २०६७), पूर्ववत् : पूर्ववत्।

श्रीमद्भगवद्गीता शाङ्करभाष्य (वि.सं. २०१५), पूर्ववत् : पूर्ववत्।

सुवेदी, गुरूप्रसाद (प्र.सं.२०७०), गुरुकुल सन्देश, काठमाडौं : शिक्षा विभाग, गुरुकुल आश्रम शिक्षापरिषद्, नेपाल।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हामी र हाम्रो सनातन सम्पदा

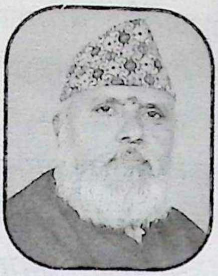

✍ डिल्लीराम गौतम

हामी ऋषि सन्तति हौं। हामी जन्मिएको स्थान ऋषिहरूकै साधना स्थल हो। यही स्थलमा देवताहरू धर्तीमा आउँदा मानव शरीरमा आएका छन्। मनुपुत्र प्रियव्रतले विश्वलाई सात भागमा विभाजन गरे पनि उहाँले राजधानी बनाएको स्थान भारतवर्ष नै हो। प्रियव्रतका प्रथम पुत्र आघ्नीध्रले जम्बूद्वीपको शासन गरेका थिए। जम्बूद्वीप नौ भागमा विभक्त भएपछि हिमालवर्षमा आघ्नीध्र पुत्र नाभिले राज्य गरेका थिए। नाभिपछि ऋषभदेवले राज गर्दा यस क्षेत्रलाई अजनाभ वर्ष भनिएको छ। ऋषभदेवको राजधानी हालको पाल्पा क्षेत्रमा रहेको थियो र उहाँले पुलह आश्रममा तपस्या गर्नुभएको थियो।

त्यस समयमा साधना गरेको क्षेत्र रुरुक्षेत्र हरिहर क्षेत्र हो। आज यसैलाई रिडी भन्दछन्। उहाँले स्थापना गरेका हृषीकेश भगवानको दर्शन गर्न हामीले पाइरहेका छौं। यही अजनाभवर्ष नै अजनाभपुत्र भरतले राज्य गरेपछि भारत वर्षका रूपमा यो परिचित भयो। भरतको राजधानी पाल्पामा रहेको हालको भैरव मन्दिरमै थियो भनिन्छ। केही विद्वान्हरूले भने चितवनको भरतपुर हो भनेका छन। उनले अन्तिम तपस्या गरेको स्थान देवघाट हो।

भारतवर्षभित्र रहेको महत्त्वपूर्ण क्षेत्रहरूले भारतवर्षको महत्त्व बढाएका छन्। शास्त्रमा सरस्वती र दृशद्वती नदीलाई देवनदी भनिएको छ र यी दुई नदीका बीचमा रहेको क्षेत्रलाई देवताहरूले रचना गरेकाले यसलाई देवक्षेत्र मानिएको छ। यसका नजिकै रहेका (कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल-पञ्जाब र शूरसेन-मथुराभित्र रहेको एक प्रान्त) क्षेत्रहरू ब्रह्मर्षि रहने स्थान थिए। यसैका नजिकमा रहेको नेपालको महत्त्व अझ उँचो रहेको कुरा पुराणमा आएको छ। सातद्वीपमध्ये जम्बू श्रेष्ठ छ। जम्बूद्वीपमा वाराणसी श्रेष्ठ छ र वाराणसीभन्दा चारगुणा बढी पशुपति क्षेत्रको महत्त्व छ किनभने सबै कामना पूरा गर्ने र मुक्तिदाता साक्षात् पशुपति यहाँ रहनुभएको छ। नेपाल विशेष गरेर देवदेशकै नामले परिचित छ। यसर्थ यहाँको शासनप्रशासन धर्ममा आधारित हुनुपर्छ किनभने हिजो यहाँ धर्म भगवतीले 'ने' मुनिलाई यस क्षेत्रलाई धर्मकै आधारमा

✍ *अध्यापक, नेपाल ल क्याम्पस, भक्तपुर, ठिमी*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शासन गर्न अह्राउनुभएको थियो।

उक्त विशेषतालाई बुझ्दा यसैभित्र देवता, ऋषिहरूले वैदिक सभ्यताको निर्माण गरेको इतिहास पुराणमा आबद्ध छ। भारतवर्षमा जन्मनु भनेको मानवजीवनलाई सार्थक बनाउनु हो। त्यसमा पनि नेपालचाहिँ देवभूमि र पुण्यभूमि हो। यस्तो देशमा हामीले जन्मन पाएको छौं। यही हाम्रो गौरव हो। यस गौरवलाई हामीले हाम्रा अग्रजहरूले देखाएको मार्ग र दिएको उपदेशलाई आत्मसात् गर्नुपर्छ।

हामी सनातन वैदिक सभ्यताका उपज हौं। हिजो हिंडेकै मार्गमा आज पनि हिंड्ने अवसर मिलेको छ। हामीले गरेका सत्कर्महरूले नै हामीले वैदिक दर्शन र ज्ञानका धरोहरहरूको सान्निध्य पाइरह्यौं। त्यसैले उहाँहरूका मार्गदर्शनले हामीकहाँ धर्म, अध्यात्म र वैदिक साधनाहरूको प्रभाव उत्तिकै सबल छ। आधुनिक शिक्षाले धर्म, साधना र अध्यात्म चिन्तनमा उदासीन बनाए पनि पराइधर्म र संस्कृतिले किच्न खोजे पनि हामीलाई कहिल्यै कमजोर भएको महसुस हुन दिएको छैन।

अनादि संस्कृति, नैतिक संस्कार र सनातन वैदिक सभ्यता हाम्रो सम्पदा हो। यो सम्पदाको तुलना विश्वका कुनै सम्पदासँग हुन सक्तैन। त्यस्तो सम्पदाको बीज शाश्वत धर्म हो। धर्मको जग वेद हो। वेद ब्रह्मको निश्वास हो। यसर्थ हामी सनातन धर्म, दर्शन र ज्ञानले निर्माण भएको सभ्यताका अनुयायी हौं। यस्तो अटल जगमा निर्माण भएको हाम्रो सभ्यातामा वैदिक दर्शन, आध्यात्मिक र वैदिक ज्ञान अनि सनातन धर्मको समन्वय छ। हामीलाई सदैव सन्मार्गतिर डोहोर्याउन धर्म, दर्शन र अध्यात्मिक ज्ञानका आलोक बनेर स्वर्गद्वारी महाप्रभु, ब्रह्माभ्यासानन्द, यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ् गुरु), योगेश्वराश्रम, विवेकानन्द पुरी, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, पं टेकनाथ गौतम गुरुहरू हाम्रा अगाडि लागेर हामीलाई हाम्रो मार्गदर्शन गराउनुभएको छ। यो विवेकाश्रम र यससँग जोडिएका हामी उहाँहरू हिंडेका र उहाँहरूले देखाएका मार्गमा हिंडिरहेका छौं।

मनुस्मृतिमा मनुले यो देवनिर्मित देशको महत्त्व बुझाई यहाँ जन्मिएका अग्रजहरूले जुन संस्कार, शिक्षा र चरित्र सिकाए विश्वका सबैले अनुसरण गर्नु भन्ने अर्ती दिएका छन्। सगौरव हामी हाम्रा अग्रजहरूको यस चिन्तनलाई आत्मसात् गर्नुपर्छ भनी आत्मसात् गरिरहेका छौं। हामी स्पष्ट छौं कि हाम्रा अग्रजहरू तिनै ऋषिमुनि थिए, जसले यावत् वेदज्ञान, विज्ञान र दर्शन यो विश्वलाई दिए। यसको दृष्टान्त हाम्रो गोत्र हो। गोत्र नै ऋषिवंशको परिचय हो। त्यसैले हामी र हाम्रो देशको इतिहास सबैभन्दा पुरानो र अखण्ड छ। स्कन्दपुराणमा यो नेपाल सत्ययुगमा सत्यवती थियो भने त्रेतामा तपोवनी नामले प्रसिद्ध बन्यो अनि द्वापरमा मुक्तिक्षेत्र बन्न पुग्यो र कलीमा नेपाल बनेर स्थापित छ। हाम्रो ऐतिहासिक परिचय र हाम्रा पुर्खा को थिए भनी परिचय दिन यहाँभन्दा अर्को के उदाहरणको आवश्यक पर्छ र।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरु, गौरव र गरिमा

जसको अन्तःकरणमा ज्ञानको प्रकाश भएको हुन्छ, त्यही गुरु हो। अज्ञान र अविद्या रहुन्जेल गुरुत्व प्राप्त भएको हुँदैन। पठनपाठन र संस्कारका कर्महरू आफूले पढेअनुरूप अरूलाई सिकाउनु भनेको शिक्षक हुनु हो। शिष्यको अन्तःकरणमा ज्ञानको दीप जगाउनका लागि शिक्षक होइन, गुरुको आवश्यकता पर्छ। यस्ता गुरुत्व बोकेका महान् गुरुहरूकै कारण आज हामी यहाँसम्म आउन सकेका छौं र हाम्रो मौलिक धरोहर सुरक्षित छ। हामीकहाँ स्वर्गद्वारी महाप्रभु, बालागुरु षडानन्द, ब्रह्माभ्यासानन्द, योगेश्वराश्रम, विवेकानन्द पुरी, गायत्रीस्वरूप र पं टेकनाथ गौतम जस्ता आत्मज्ञानी गुरुहरू हुनुहुन्थ्यो। जसका ज्ञानप्रकाशले हामी उज्यालिएका छौं। हाम्रा श्रद्धेय अग्रज गुरुहरू विरक्त हुनुहुन्थ्यो। हो उहाँहरूका अगाडि अपार धनको उपस्थित हुन्थ्यो। उहाँहरूलाई त्यसले तान्दैन थियो। उहाँहरूको स्वभाव चाणक्य नीतिले भनेझैं विरक्तस्य तृणं जगत् अर्थात विरक्त मानिसका लागि यो जगत् नै तृण बराबर लाग्दछ।

स्वर्गद्वारी महाप्रभु जसको नाम आध्यात्मिक क्षेत्रमा अग्र स्थानमा छ। उहाँले जगाउनुभएको वैदिक ज्ञान, वैदिक हवन र गायत्री जपसाधनाको प्रकाश सधैं आलोकमय छ। जसका शिष्य र प्रशिष्यहरूले त्यस दिव्यतालाई चारैतिर फैलाए। महाप्रभुले जप, अनुष्ठान र हवन वैदिक मौलिक परम्परालाई गति प्रदान गर्नुभयो। उक्त कर्महरूले मानवजीवनको सार्थक उपलब्धि हुन्छ भन्ने चेतना प्रदान गरिरहेका छन्। यस्तै अर्का सिद्ध महापुरुष बालागुरु षडानन्द जसले नेपालमा आध्यात्मिक ज्ञानको दियो बाल्ने काम गर्नुभयो। पढाइका लागि सुलभ अवस्था नभएका समयमा उहाँले आधुनिक नेपालका लागि दिङ्लाबाट पाठशालाको अभियान चलाउनुभयो। जसका कारण दिङ्ला गुरुको रूपमा उहाँको प्रख्याति रह्यो। जसका आलोकमा आज सयौं गुरुकुल र आधुनिक शिक्षालयहरू स्थापित छन्। आज हामी सगौरव उहाँहरूको नाम लिन्छौं। त्यो गरिमालाई समग्र देशले जोगाएर राख्नुपर्छ। यसर्थ हामीकहाँ (विवेकाश्रममा) सनातन गुरुपरम्परा यथावत् कायम रहेको छ।

नेपाल आफैंमा विशेष गरिमा बोकेको पुण्यक्षेत्र हो। त्यसमा पनि गुरुहरूको अवतरणले यो देश महातीर्थ बनेको छ। यसमा पनि यहाँ गुरुहरूको आगमन ज्ञानप्रचारका लागि भएको छ। पणेनामा जन्मिएका पाणिनिले संसारकै लागि संस्कृत व्याकरण सिकाए। यो संसारकै पहिलो व्याकरण हो। तनहुँबाट वेद व्यासले वेदको गुप्तज्ञान पुराण र महाभारतका माध्यमबाट संसारलाई दिए। कपिलवस्तुबाट कपिलले साङ्ख्यदर्शन दिए। मिथिलाबाट जनकले जनकदर्शन र याज्ञवल्क्यले याज्ञवल्क्यस्मृति अनि अष्टावक्रले अष्टावक्रगीता (अद्वैत गीता) दिए। यसरी नै लुम्बिनीबाट गौतम बुद्धले बुद्धदर्शन स्थापित गरे। शतरुद्र पर्वत आज शिवपुरीले चिनिएको छ यसैलाई दुष्ट राजाहरूको संहार गरेर पर्शुराम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बस्नु भएको महेन्द्र पर्वत हो भन्दछन्। नागार्जुन ऋषिले तपस्या गरेको नागार्जुन पर्वत जीवन्त छ। दोलाशिखर जहाँ भगवान् विष्णु रहनुभएको थियो त्यही चाँगुनारायण हो भनिन्छ। तेजपुञ्ज आगेजुङ सनकादि मुनिले तपस्या गरेको सिद्धभूमि मानिन्छ। यसले नेपालको वैशिष्ट्य स्थापित भएको छ। यही गरिमा हाम्रो परिचय हो।

एकातिर नेपालको सनातन महिमा अर्कोतिर ऋषिमय हाम्रा गुरुहरूको सान्निध्य अपरम्पार कुराहरू हुन्। महाजनस्य सम्पर्कः कस्य नोन्नतिकारकः महात्माहरूको सङ्गतबाट कसको उन्नति भएको छैन र वास्तवमा सन्तलाई तीर्थका पनि तीर्थ मानिन्छ। दिव्य र अलौकिक सिद्धमहापुरुष स्वर्गद्वारी, षडानन्द, योगेश्वराश्रम र विवेकानन्द गुरुहरू त्यही कोटीका महापुरुष हुनुहुन्छ। षडानन्दले गरेको साधना जप, र ध्यानले जगमगाएको नेपाली माटोमा योगमायाजस्ता परम साधिकाहरू जन्मिए। योगमायाकै साथमा साधनारत गङ्गामाताबाट आफ्ना जीवनमा पूरा गर्न नसकेका काम पूरा गर्न षडानन्दले पुनर्जन्म लिएर सात वर्ष रहेका प्रसङ्गहरू समेत हामीले सुन्न र पढ्न पाएका छौं। अघिल्ला जन्ममा स्वर्गद्वारी महाप्रभु र बालागुरु दाजुभाइ हुनुहुन्थ्यो भन्ने कुरा विद्वान् साधकहरू भन्दछन्।

यस्तै पूर्वजन्मका साधकहरू यज्ञनिधि रेग्मी, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी र टेकनाथ गौतम आफ्ना शिष्यका कर्म र पूर्वजन्मका आफ्ना अधुरा कामहरू पूरा गर्नका लागि आउनुभयो। त्यसैले हामी उहाँहरूका अर्ती, उपदेश र ज्ञानहरू हुबहु स्वीकार गरिरहेका छौं। गुरु चिनिसकेपछि उहाँहरूले दिएको आदेशहरू अविचारणीय हुन्छन् भन्ने शास्त्रको निचोड छ। त्यसैको सार लिनका हामी लागिरहेछौं। उहाँहरूले अज्ञानका पर्दा हटाउँदै हाम्रा संस्कार र परम्परा के हुन् ? हामीहरूका आदर्श कर्महरू के हुन् ? यी प्रश्नहरूका उत्तर दिएर मौलिक यात्रातिर जानका लागि ढोका खोलिदिनुभयो। उहाँहरूले हाम्रा आन्तर्यमा रहेका मन, बुद्धि र कर्मका दोष (मैलो) पखाल्ने उपायहरू सिकाउनुभएको छ। कीर्तनले पूर्वजन्मका कर्मदोष छुट्ने र ध्यान, मन्त्र साधनाले मन र चित्तका दोष पखालिने र निर्मल भई ब्रह्म सान्निध्य पाइने शिक्षा दिनुभयो। जबसम्म मानिसको मन निर्मल हुँदैन, उसले गरेका पूजा जपका कामसमेत निरर्थक हुन्छन् भन्ने पुराणका वचनहरूलाई बुझाउँदै मन पवित्र राख्ने साधनाहरू गराइरहनुभयो। यज्ञ, गायत्री जप, पाञ्चायन पूजाका विधि, भण्डारा, सत्सङ्गका सत्कर्म गर्ने परिवेश तयार गरिदिनुभयो।

हाम्रा मार्गदर्शक गुरु

जसका कीर्तिपताकाले हामी उँचो शिर लिएर सगौरव वैदिक सभ्यता र सनातन धर्मको बारेमा कुरा गरिरहेछौं। त्यस्ता सिद्ध महापुरुषहरू यज्ञनिधि रेग्मी, योगेश्वराश्रम, विवेकाश्रम, टेकनाथ गौतम, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारीलाई हामीले हाम्रा आदर्श मानेका छौं। आफ्नो मृत्युका दिन तोकेर त्यसै दिन ब्रह्मलीन हुने यज्ञनिधि रेग्मी, विवेकानन्द र योगेश्वराश्रम आत्मद्रष्टा महायोगीहरू हुनुहुन्थ्यो भनिरहनै पर्दैन। उहाँहरूका हामी शिष्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रशिष्य हुँदै आएका छौं। उहाँहरू सामान्य व्यक्ति हुनुहुन्नथ्यो। आफ्ना सिद्धिहरू लुकाएर पूर्वजन्मका परिचय गोप्य राखी गर्नुपर्ने आध्यात्मिक कार्यहरू पूरा गरिसकेपछि उहाँहरू आज आफ्ना उत्तराधिकारी छोडेर जानुभएको छ।

विवेकानन्द, योगेश्वराश्रमहरूले आगेजुङ तेजपुञ्ज, जोरपोखरी तपस्या गरेका गुफाहरू अनादिकालदेखिका सिद्ध स्थानहरू थिए। प्रज्ञाका लागि जोरपोखरी, भारत आसामको शान्तिपुर, चारपानेको विवेकाश्रम उन्नत र उच्च प्रभाले पूर्वकालका यज्ञीय र शिक्षाभूमि थिए भन्ने कुराको पूर्ण सङ्केत मिलेको छ। चारपानेको सेरोफेरोलाई हेरौं।

पूर्वउत्तर कृष्णथुम्की जहाँबाट लोहासुरसँग लड्न पाण्डवले कृष्णबाट लड्ने उपाय लिएका थिए। पूर्वदक्षिण विराटपोखरा गाईलाई पानी पियाउनका लागि विराट राजाले खनेका पोखरीहरू छन्। सिधै उत्तर अर्जुनले गाईलाई पानी पियाउन खनेको पोखरी छ जसलाई अर्जुनधारा भनिन्छ। केही उत्तरपट्टि पाण्डवहरूको आश्रयस्थल थियो, कालान्तरमा पाण्डुपुरका नामले प्रसिद्ध रहेको छ। दक्षिणी क्षेत्रमा किचकवधमा किचकको राजधानीको उत्खनन भइरहेको छ। यी ऐतिहासिक र सिद्ध क्षेत्रहरूले नै झापाको दिव्यतालाई उजागर गरेका छन्। सायद यतै कतै धौम्य आदि ऋषिहरूको गुरुकुल हुनुपर्छ। त्यसैका प्रभावहरूले झापामा वैदिक गुरुकुलहरू धेरै छन्।

संस्कार त नित्य प्रवहित भइरहन्छ। यिनै सुगन्धहरूले पूर्वजन्मका संस्कार बोकेर मानिसहरू चारपानेमा आए र त्यही संस्कारलाई पूर्णता दिनका लागि गुरुहरू यहाँ आउनुभयो। गुरुहरू जहाँ जहाँ जानुभयो; ती स्थानहरू आध्यात्मिक क्षेत्रका रूपमा विकसित भएका छन्। ती स्थानहरूले गुरुहरूलाई तानेको देखिन्छ। उहाँहरू ती स्थान खोज्दै जानुभएको होइन, ती क्षेत्रहरूले उहाँहरूलाई आमन्त्रण गरेको लाग्छ।

ती क्षेत्रहरूमा रहेका सूक्ष्म सत्त्वमयी देवदेवीका क्रीडाहरूले गुरुको शुद्ध चित्तलाई तान्यो। अविद्याले ढाकेका हाम्रा भौतिक आँखाले जरा, मुढा, पहाड, समतल, हरियाली मात्र देख्यौं। त्यसैले हामीले आफूलाई चिन्न र गुरुहरूलाई समयमै पर्गेल्न सकेनौं। हिजो सिद्ध तपस्वी महर्षि जसले हामीलाई केही सिकाउन चाहेका थिए र ईश्वरका इच्छानुरूप गर्नुपर्ने केही काम बाँकी थिए, त्यसैलाई पूरा गर्न उहाँहरू आउनुभएको थियो। सन्तत्व प्राप्त भएका उहाँहरूलाई यसरी चारैतिर सामान्य मानिसहरूझैं चहार्नुपर्दैन थियो। उहाँहरू हाम्रा लागि आउनुभएको हो। उहाँहरूले हामी जहाँ जहाँ पुग्यौं त्यहाँ त्यहाँ पुगेर हामीलाई संसारको मायाजालबाट बाहिर ल्याउन प्रयत्न गरिरहनुभयो।

अन्तःकरण शुद्ध नभई सिद्ध महापुरुष र देवता चिन्न सकिँदैन। यसका लागि कि त विवेकजन्य ज्ञान हुनुपर्यो कि त शास्त्रजन्य ज्ञान अनुभवमा रूपान्तरित हुनुपर्यो। अन्तःकरण शुद्ध नभई विवेकजन्य ज्ञान सम्भव हुँदैन। शास्त्रजन्य ज्ञानका लागि आध्यात्म शिक्षा अपरिहार्य हुन्छ। त्यसैले गुरुहरूले आफू जहाँ बस्नुभयो त्यहाँ वेद, रुद्री, चण्डी, वेदाङ्गको अध्ययन र उपनिषद्‌ीय सत्सङ्ग गराइरहनुभयो। साथसाथै हवन, जप, अनुष्ठान, कीर्तन,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साधना गराइरहनुभयो। उहाँहरूको त्यो दिव्य सत्कर्मकै तेजले उहाँहरू बसेका स्थानहरू अहिले पनि देदीप्य छन्।

योगेश्वराश्रम आन्तर्य ज्ञानप्रवाहमा डुब्नुभएको थियो भने स्वामी विवेकानन्द पुरी, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी र पं टेकनाथ गौतम ज्ञानप्रचारक पनि हुनुहुन्थ्यो। त्यसैले उहाँहरू उच्च तहका आध्यात्मिक कवि पनि हुनुहुन्थ्यो। उहाँहरूका कृतिले हामीलाई ईश्वरका नजिक पुर्याइरहन्छन्। उहाँहरूका वाणीबाट पश्यन्ती र परावाणीहरू निस्किएका छन्। उहाँहरूका कृति पढ्नाले र सुन्नाले मात्र पनि हाम्रो अन्तःकरण शुद्ध बन्दछ। पं टेकनाथ गौतमले घरलाई नै विद्यालय बनाई वेद, व्याकरण र निरुक्त जस्ता गहन विषयहरूको ज्ञान प्रदान गर्नुभयो। अन्तर ज्ञानका विषयमा चुर्लुम्म डुबेर हजारौं जिज्ञासुका जिज्ञासा मेटाउँदै अविरल ज्ञान प्रदान गरिरहनुभयो। उहाँले लेखेका कृतिहरू समग्र आउन सके भने उहाँलाई हाम्रा सामान्य शब्दले चिनाइरहनै पर्दैन।

गुरुहरूका दिव्यज्ञान प्रवाह

आत्मा, अध्यात्म र आध्यात्मिक जीवन कसरी चिन्न सकिन्छ ? त्यहाँसम्म पुग्ने दर्शनहरू के के हुन् ? उक्त चर्चामा उल्लेख गरिएका गुरुहरूले आफ्ना चरित्र, व्यवहार र चिन्तनमा चरितार्थ गर्नुभएको थियो र यसैका आधारमा हामीलाई शिक्षण गरिरहनुभयो र उक्त चरित्र सिकाइरहनुभयो। आत्माको नजिक पुर्याउने आध्यात्मिक दर्शनहरू उहाँहरूका बोलीचालीमा थिए। जन्मको साथमा मृत्यु आएको छ तर मृत्युले शरीरलाई मात्र छुने हो। अविनाशी आत्मा त अमर रहन्छ। त्यसैले उहाँहरूले हामीलाई जन्मनुको औचित्य र कर्मका विज्ञान सिकाउनुभयो।

हामी प्रारब्धले जन्मियौं। त्यसैले सत्कर्मले सञ्चित कर्म घटाएर क्रियमाण (गर्दै गरेको) कर्म सुधार्नुपर्छ भन्दै उहाँहरूले हामीलाई अनेकौं उपायहरू सिकाउनुभएको छ। भौतिक शरीरलाई चलाउने अध्यात्मिक शरीर नै सबै कुराको जड हो। त्यसैले यसलाई बिग्रन दिनु हुँदैन। पूजा, जप, ध्यान, सत्सङ्ग, हवन र कीर्तन यसकै लागि हुन्। मनका इच्छा वा कर्मका वासनाहरू ननासिएसम्म आफ्नो आत्माको दर्शन हुँदैन। जीवको चैतन्य शक्तिले ज्ञानको उचाइ लिएपछि आत्मबोध हुन्छ। यही आत्मा हामी हौं। आफ्नो परिचय आफूलाई नै थाहा भएन भने कसरी मुक्ति सम्भव हुन्छ ? जस्ता उन्नत ज्ञानहरू हामीलाई प्रदान गर्नुभयो। हाम्रा स्वनामधन्य पूर्वोक्त गुरुहरूले हामीलाई मुक्तिमार्गको पथप्रदर्शन गराउनुभएको छ।

भौतिक शरीर छोड्नुमात्र मुक्ति होइन। सांसारिक दुःख र विषय वासनाबाट छुट्कारा पाउनु नै वास्तविक मुक्ति हो। सद्य र क्रममुक्तिका बारेमा पुराणहरूमा विशेष चिन्तन भएका छन्। मुक्तिका सालोक्य, सामीप्य, सादृश्य र सायुज्य चार प्रकारका पनि उत्तिकै चर्चा गरिएका छन्। हामीलाई गुरुहरूले मुक्तिको अन्तिम चरण सायुज्यसम्म पुग्ने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेक तरिकाहरू हामीहरूलाई कृपा गर्नुभएको छ। सहज रूपमा बुझ्दा आत्मालाई कर्मवासनाबाट छुट्कारा दिनु नै मुक्ति हो। यसपछि कुन अवस्थाको मुक्ति प्राप्त हुने हो, तदनुरूपको कर्मविज्ञानले निर्धारण हुन्छ। हामीले पुराणहरूमा पढेका बृहस्पति, वशिष्ठ, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, आश्वालायन, धौम्य, भारद्वाज ऋषिहरू नै यो संसारमा पुनः आध्यात्मिक गुरु बनेर आएका छन्। चिन्न नसक्दा हामी अल्मलिएका छौं।

चिन्तन र मननको धेय

गुरुहरूले हामीलाई चिन्तन र मननको ध्येय पनि सिकाउनुभएको छ। शास्त्रज्ञानलाई गुरुहरूले अनुभवमा रूपान्तरित गरी उपदेश गर्नुभएको छः वास्तवमा नयाँ कोही जन्मिँदैन। जन्मने पहिलेकै हुन्। कतिपय देवताहरू सूक्ष्मरूपले स्वर्गमा रहेका छन् भने स्थूलरूपले संसारमा आएर अनौठा कर्म गरिरहेका छन्। यो सृष्टिको नियमित चक्रलाई उनीहरूले नै नियमितता दिएका छन्। देवताझैं असुरहरू पनि यो धर्तीमा आएका छन्। स्वरूपमा उस्तै रहे तापनि प्रवृत्ति र चरित्रले फरक छन्। जालझेल, छलकपट, मायावी कर्म आज पनि छन्। असुरहरूका कर्म पनि उत्तिकै छन्।

यहाँ देवताहरूका कर्म, ऋषिहरूका कर्म, मनुष्यकर्म, असुर कर्म एवं रितले चलिरहेका छन्। हामीले ठम्याउन सक्नुपर्छ। यसैका लागि हाम्रो कर्तव्यमा विचलन नआओस् भनेर गुरुहरूले हामीलाई मार्गदर्शक र संरक्षक छाडेर जानुभएको छ। चारैतिर घुमेर सत्मार्गबाट विचलित हुन नदिई हामीलाई सम्झाइरहनुभएको छ। भ्रमण गर्ने योगी नै पूज्य हुन्छ भन्ने चाणक्यको वचन छ। वास्तवमा यही सत्य हो।

हाम्रो यात्रा कल्पौंकल्पको छ, हरेक जन्ममा हामी उही हुन्छौं तर हाम्रो भूमिका भने फरक बनेको हुन्छ। गुरुहरूले आफ्नो परिचय आफैं पाउनुपर्छ भनेर त्यसका लागि शास्त्रीय ज्ञान दिनुभएको छ। यसका लागि ब्रह्मज्ञानका लागि उपनिषद् र आत्मज्ञानका लागि आस्तिक दर्शनहरू छाडेर जानुभएको छ। यी दर्शनहरू पढ्न र बुझ्न गाह्रो भएमा उहाँहरूले दिएको दिव्य उपदेशमात्र शिरोपर गरे पुग्छ।

तत्त्वचिन्तनका लागि दर्शन

मुक्तिका लागि शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त र आत्मा तत्त्वहरू चिन्नुपर्दछ। यी तत्त्वहरूको ज्ञानले मात्र मुक्ति सम्भव भएकाले अक्षपाद गौतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि, जैमिनि र व्यास आदिले ज्ञानसूत्रहरू तयार पारेका हुन्। अनेक जन्मका अभ्यास, प्रयत्नअनुसार आत्माको नजिक पुग्ने ज्ञान नै दर्शन हुन्। यी ज्ञानसूत्रका माध्यमबाट आत्मदर्शन हुने भएकाले यी ज्ञानसूत्रहरूलाई दर्शन भनियो।

वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्य, उपनिषद्, धर्मशास्त्र र पुराणहरूमा रहेका यी सूत्रहरूलाई उक्त महर्षिहरूले सूत्रबद्ध गरिदिनुभएको हो। सूत्र सङ्कलक ऋषिहरू अलग र उनीहरूले चिन्तनका लागि ठम्याएका तत्त्वहरू फरक फरक भएकाले दर्शनहरू नै फरक लागेको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो। वास्तवमा आस्तिक दर्शनहरूमा तात्त्विक कुरा एकै छ। हामी त अलग अलग छौं। तर हामीभित्रको 'म' एकै छ। नारी पुरुष, जाति, वर्ग जगत्भित्र त्यही एक 'म' छ। यसैको विस्तारमा जगत्, जीव, र ईश्वरका रूपमा विभक्त भएको हो। यी तीन तत्त्वलाई महर्षिहरूले फरक फरक तरिकाले सूत्रबद्ध बुझाएका छन्। कसैले एक तत्त्व ब्रह्मबाट नै सबै कुरा बुझाए। कसैले जडचेतन वा प्रकृति र पुरुष दुई तत्त्वको वर्णन गरेर र दुई तत्त्वबाट सबै कुरा बुझाए। कसैले प्रकृतिका द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव सात तत्त्वको वर्णन गरे भने कसैले प्रकृतिका प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डता, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान यी सोह्र तत्त्वको वर्णन गरेका छन्। यी तत्त्वहरू बाहिरी तर्क र विवरणका रूपमा मात्र फरक फरक हुन्। बुझाउने क्रममा पात्रहरूको अवस्था र तह बुझेर यी तथ्यहरू स्थापित भएका छन्।

उक्त तत्त्वहरूको विश्लेषण र निष्कर्षले दर्शनमा सत्कार्यवाद, असत्कार्यवाद र विवर्तवाद गरी तीन सिद्धान्त स्थापित भएका छन्। कार्य वा परिणाम कारणमा निहित हुन्छ भन्ने सिद्धान्त सत्कार्यवाद भयो भने कारणमा कार्य हुँदैन कार्य नयाँ परिणाम हो तर कारण कार्यको सहयोगीमात्र हो भन्नु असत्कार्यवाद हो। कारण कार्य जे भने पनि त्यो ब्रह्म हो। यो प्रकृति आभासमात्र हो भन्ने सिद्धान्त विर्वतवाद हो। साङ्ख्यले सत्कार्यवाद, न्याय र वैशेषिकले असत्यकार्यवाद स्थापित गरी सत्यको दर्शन गराएका छन्। न्याय, वैशेषिक र साङ्ख्यले जगत्का कारक प्रकृतिलाई नै मानेका छन्। मीमांसाले कर्म दुवै र योगदर्शनले शक्तिलाई मूल कारण मानेका छन्।

यो दृश्यभौतिक प्रकृति ईश्वरकै प्रतिरूप वा आभास हो। ब्रह्मबाहेक अर्को भिन्न तत्त्व केही छैन भनेर शाङ्कर वेदान्तले ब्रह्म नै एकतत्त्व हो भनेर बुझाएका छन् भने न्यायले १६ पदार्थ तत्त्व देखाएको छ। वैशेषिकले अभावसहित प्रमुख सात तत्त्वको कुरा गरेको छ। साङ्ख्यमा प्रकृति र पुरुष प्रमुख दुई तत्त्वलाई दर्शाइएको छ भने पूर्वमीमांसाले कर्मको मर्म र धर्मको विवेचना गरेको छ। आस्तिक र आध्यात्मिक दर्शनहरूमा कर्म, ज्ञान र तत्त्वको तार्किक विवेचना गरिएका छन्। कर्म, ज्ञान र तत्त्वको ज्ञान नै मुक्तिको उपाय हो भन्ने दर्शनहरूको निष्कर्ष हो।

सरसरी दर्शनहरूको चिन्तन गर्दा यो सृष्टिको कारणमा वेदान्तले ब्रह्म, न्याय, वैशेषिकले अणु आदि प्राकृतिक पदार्थ, मीमांसाले कर्म, साङ्ख्यले प्रकृति र योगदर्शनले शक्तिलाई राखेको छ। यी भए आस्तिक दर्शनहरूका निष्कर्षहरू र यसभन्दा माथि त उपनिषद् रहेको छ। उपनिषद्ले मात्र ब्रह्मको परिचय र मोक्षको रहस्य बताउन सक्छ। दर्शनहरू त दुःख मोचन र सत्यको नजिकमा पुर्याउने साधन हुन्। उपनिषद् भने ब्रह्मको नजिक पुर्याउने साधन हुन्।

संसारमा अनादि समयदेखि नै नास्तिक दर्शनहरू रहेका छन्। प्रमुख नास्तिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दर्शनका रूपमा रहेका चार्वाक सिद्धान्त (लोकायत दर्शन) बौद्ध दर्शन, जैन दर्शनहरू हुन्। यिनीहरूका बारेमा पनि गुरुहरूले दिग्दर्शन गराउनुभएको छ। झापाको चारपानेमा रहेको पनि विवेकाश्रमले सञ्चालन गरेको साङ्गवेद सँस्कृत विद्यालयमा सारमा उक्त दर्शनहरूको दिग्दर्शन गराइरहन्छ। आस्तिक दर्शनहरूको भने यहाँ व्यावहारिक प्रयोग भइरहन्छ।

दर्शनका प्रमुख दुई धार

दर्शनहरूको प्रवाह अनादि समयदेखि हुँदै आएको हो। सूत्रबद्ध गर्ने काममात्र धेरै पछाडि ऋषिहरूबाट भएको हो। पौराणिक कथनअनुसार अनादिकालमा देवराज इन्द्र र बलीपुत्र विरोचन ब्रह्माकहाँ तत्त्वज्ञान लिन एकैपटक गएका थिए। दर्शन मनन गर्नुपर्ने विषय भएकाले मनन गरुन् भनेर ब्रह्माले दुवैलाई एकैचोटि जलमा, ऐना र आँखामा जे देखिन्छ त्यही आत्मा हो, तत्त्व हो भनेर शिक्षा दिनुभयो। इन्द्र र विरोचन दुवैले सूक्ष्म बुद्धिले विचार गरे। विरोचनले ऐना, आँखा र जलमा हेर्दा जे देखिन्छ त्यही आत्मा हो भन्ने ठाने र त्यहाँ हेर्दा देखिने त शरीर हो। त्यसैले त्यो शरीरलाई नै आत्मा माने। जसरी ऐनामा शरीरको प्रतिबिम्ब देखिन्छ, त्यसरी नै शरीर पनि बिम्ब हो। त्यही कुरामा सन्तुष्ट भएर विरोचन फर्किए।

यस कुरामा इन्द्र विश्वस्त हुन सकेनन्। जल, आँखा र ऐनामा देखिने त त्यहाँ नहेरिकन देखिएकै छ। जल, आँखा र ऐनामा त्यही देखिएको छ किन जल, ऐना र आँखामा हेर्नु भनेको होला भनी जिज्ञासा र शङ्का राखी चिन्तनमा डुबिरहे। यही जिज्ञासा लिएर पितामहकहाँ गएर पुनः जिज्ञासा शान्त बनाई आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान प्राप्त गरे। यी बाहिरी कुरा त शरीर जसरी पानी देखिन्छ त्यस्तै यो शरीर आत्माको आभासमात्र हो। शरीर आत्मा होइन भन्ने ज्ञान इन्द्रलाई भयो। यहींबाट भौतिक र आध्यात्मिक दर्शनको भिन्न चिन्तन सुरु भएको हो।

विरोचनले असुरहरूमा देहात्मवादी तत्त्वज्ञान बुझाए भने इन्द्रले शरीरलाई चलाउने आत्मा तत्त्वलाई बुझाए। असुरहरूले देहलाई प्रमुख तत्त्व माने भने देवताहरूले आत्मालाई प्रमुख माने। प्रह्लादबाहेक कामोपभोगमा यिनीहरू लागे किनभने प्रह्लादले कयादुको गर्भमा रहँदा नारदबाट आत्मदर्शनको ज्ञान पाएका थिए। सम्भवतः लोकमा यो दर्शन व्यापक हुँदै गएकाले यसैलाई लोकायत दर्शन पनि भनिएको हुनुपर्छ। यसका सर्जक बृहस्पति हुन् भनिन्छ। देवगुरु बृहस्पतिभन्दा भिन्न कोही बृहस्पति थिए कि ? जिज्ञासा चलिरहेको छ। वेदलाई प्रमाण मान्नु नै आस्तिक हो अर्थात् आत्मा र परमात्मामा विश्वास राख्ने आस्तिक हुन् भन्ने चिन्तन छ।

स्मृतिको वाक्यले भनेको छः नास्तिक भनेको वेदलाई प्रमाण नमान्ने वा वेदलाई निन्दा गर्ने व्यक्ति हो भन्ने थियो तर ईश्वर र जीवत्व स्वीकार नगर्ने नास्तिक हुन् भनेर आज बुझ्ने गरिन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नास्तिक दर्शन वेदबाह्य र मानवकृत छ। यसले भौतिक सुखभोगको उद्देश्य राखेको छ। आस्तिक दर्शनशास्त्रको उद्देश्य जीव र जगत्‌को तत्त्व बुझाउनु हो। हाम्रो मन चेतना र विषयको बीचमा अलमलिइरहेको छ।

यसैले मोहतिर भाव गयो भने चेतनातिर जान सकिँदैन। चेतनामा पुगेपछि भावजगत् खुल्छ। अहिले संसारमा फैलाउँदै गएको दर्शन नास्तिक भौतिक दर्शन हो। आस्तिक भौतिक दर्शनमा न्याय र वैशेषिक पनि हुन्। न्याय, वैशेषिक र साङ्ख्यदर्शनहरूले जगत् निर्माणको मूल तत्त्व नै प्रकृतिलाई मानेका छन्। प्रकृति भौतिक तत्त्व हो। वैशेषिकले अविनाशी परमाणुतत्त्वकै उन्नतिबाट यस ब्रह्माण्डको निर्माण भएको हो भनेको छ। न्यायमा पनि यही कुरा स्थापित छ। साङ्ख्यअनुसार पुरुष (आत्मा) को संयोगपछि प्रकृति रूपान्तरित हुँदै गएको हो। पुरुषलाई तटस्थ तत्त्वमा राखेको छ। यस जगत्‌को सृष्टि कसरी भएको भन्ने कुरालाई नै यी दर्शनहरूले मूल बनाएका छन्।

उत्तरमीमांसा (वेदान्त) ले ब्रह्मतत्त्वकै बाहिरी आवरण वा शरीरका रूपमा यो ब्रह्माण्ड निर्माण भएको हो। यो ब्रह्मकै आभास हो। यसलाई बुझ्नका लागि मन, बुद्धि, चित्त र अहङ्कारको बोध हुनुपर्छ भन्ने चिन्तन यसमा छ। भौतिक वा प्राकृतिक र आत्मिक तत्त्वहरूको ज्ञान भएपछि आत्मा र शरीर वा प्रकृति र पुरुषको बोध हुन्छ। यस सत्यको बोध नभएसम्म न मन शान्त हुन्छ न बुद्धि स्थिर हुन्छ। मन स्थिर र बुद्धि शान्त भएपछि मात्र आनन्द प्राप्त हुन्छ।

पूर्वमीमांसाले वेद ईश्वरीय वाणी हो। संसारका कुनै धर्म र भाषामा पाउन नसकिने अमूल्य आध्यात्मिक धन हो। यसको मूल दर्शन रहेको उपनिषद् आध्यात्मिक प्राप्ति हो। चार वेदका ११३ शाखा मानिएका छन्। त्यति नै ब्राह्मण र संहिता, आरण्यक र कल्पसूत्र थिए भनिन्छ। प्रत्येक शाखाका उपनिषद् पाइन्छन्। ब्राह्मण ग्रन्थले मन्त्रको अर्थ निर्णय गरेको छ। उपनिषद्‌हरू क्रियात्मक विद्या हुन्, यी काल्पनिक होइनन्।

हामीहरूलाई हाम्रा तत्त्वदर्शी पूर्वोक्त गुरुहरूले कर्म र ज्ञानको सदुपदेश गर्नुभएको छ। सत्कर्म र सद्ज्ञान नै मुक्तिका द्वार हुन्। तत्त्व विवेचनाबाट दुःखमोचन हुने हुनाले दर्शनहरूमा तत्त्व विवेचन भएको हो।

हामी र विवेकाश्रम

यसअगाडि नै हामी र हाम्रो परिचयका सन्दर्भको केही चिन्तन भएको छ। स्वर्गद्वारी महाप्रभु, दिङ्ला गुरु, षडानन्द गुरु हुँदै यता पाँचथरतिर हामीकहाँ पहाडीगुफा, गोठ, गुरुहरूकै घरहरूमा वैदिक ज्ञानका अपरिहार्य विषयहरू बन्दै आएको कुरा अग्रजहरूले बताउनुभएको छ। जोरपोखरी, अखौंले पाठशालाकै रूपमा स्थापित थिए। नेपालको तराईमा भने हाम्रो गुरु परम्परामा २०२८ सालपछि हाम्रो पठनपाठनको एक मेरुदण्डका रूपमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकाश्रम स्थापित भयो। यसपछि हाम्रै परिवारमा चारैतिर एकपछि अर्को गुरुकुलहरू खोलिँदै गए।

२०२८ मङ्सिर १६ गतेका दिन विवेकानन्द पुरीले चारपानेमा पदार्पण गरी कुटी निर्माण गर्नुभएको कुरा त्यस बेलाका प्रत्यक्षदर्शी र जग्गादाता नन्दिकेश्वरले बताउनुभएको छ। जहाँ गुरुले कुटी बनाउने जमिन रोज्नुभयो, त्यो पं. नन्दिकेश्वरको भूमि थियो। त्यही भूमि आज विवेकाश्रमको पुण्यक्षेत्रका रूपमा परिचित छ। कुटी निर्माण गरिसकेपछि आफू जहाँ जहाँ गयो, त्यहाँ आफ्ना साथ रहने शिष्यहरूलाई रुद्री, शप्तशती, गीता आदि पढाउने गुरुको चर्या थियो। गुरु सतासीतिर जानुहुँदा निरन्तर गुरुसेवामा लागिरहने पुष्पलाल तिम्सिनाले कुटी र कुटीमा स्थापित शिवपाञ्यायन देवताको आराधना गर्नुभएको देखिन्छ।

वि.सं.२०२८ मङ्सिरदेखि २०२९ भाद्र २ गतेसम्म सतासी र विवेकाश्रम गर्दै विवेकानन्द गुरु करिब नौ महिना रहनुभयो। सतासीमा गरेका उहाँका तपस्या र साधना मेरा पिता वोधनाथ गौतमले नजिकबाट नियाल्नुभएको थियो। पिताजी २०२६-२७ सालदेखि नै सतासीनजिकै रहेको कमलझोडामा रहनुभएको थियो। विवेकानन्द गुरुका कान्छा भानिज भएकाले मामाको नजिकमा रहेर उहाँले केही सेवा गर्ने मौका पाउनुभएको थियो। उहाँबाटै गुरुका अलौकिक केही कर्म मैले सुन्न पाएको थिएँ। यसै गरी लामो समय गुरुकै सेवामा लाग्नुभएका मेरा काइँला बा अनन्तलालले अझ बढी गुरुका दिव्यकर्महरू मलाई सुनाउनुभएको थियो। ती दिव्यकर्मका पुञ्ज विवेकानन्दले पाइला टेकेर सङ्कल्प गरिसकेपछि नहुने कुरा के थियो र !

अट्ठाइस सालदेखि गुरुको त्यस आश्रमलाई सुरक्षा र संवर्द्धनमा जुटेका महानुभावहरूले २०३३ सालमा व्यवस्थित रूपले आश्रम चलाउनका लागि आश्रम संरक्षरण समिति, विद्यालय सञ्चालक समिति निर्माण गरेपछि पठनपाठनले नियमितता प्राप्त गर्यो। संस्कृत व्याकरण वा लघुसिद्धान्त कौमुदीको सघन अध्यापनको आवश्यकता पूरा गर्नका लागि विष्णुभक्त गुरुको आगमन भएपछि यहाँको पठनपाठनले नेपालकै एक नमुना प्रस्तुत गर्यो। आफ्नो जीवन र आफू बसेको घरलाई नै शिक्षाका लागि उपयोग गर्नुहुने पं. टेकनाथ गौतमको प्रमुख संरक्षण प्राप्त भएपछि यसको अनुपम संवर्द्धन भयो। यसपछि नेपाल र भारतबाट विद्यार्थीहरू आउन लागे। विवेकानन्द गुरुले रोप्नुभएको यो ज्ञानको बीज उच्च र गरिमायुक्त बनी आज चारैतिर फलिरहेको छ।

२०४६ सालमा औपचारिक दर्ता भएपछि यस साङ्गवेद विद्यालयले औपचारिक कक्षा ८, ९ र १० को पठनपाठन सुरु गरेको हो। आज कक्षा १२ सम्मको अध्यापन भइरहेको छ। यहाँबाट शिक्षण गरेर निस्किएका विद्यार्थीहरू संस्कृत महाविद्यालयका प्राचार्य, सरकारी निजामतीतर्फ सहसचिवसम्म भएर कामहरू गरिसकेका छन्। सरकारी शिक्षक, विश्वविद्यालयका प्राध्यापक अनगिन्ती छन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान र सनातन धर्मका लागि लागिपर्ने सबै महानुभावहरूको निःस्वार्थ सेवा र समर्पणको नमुना बनी यो आश्रम र विद्यालय उच्चतामा गइरहेको छ। हामी यही आश्रमका उपज र विद्यालयबाट दीक्षित भएका हौं भन्नमा गौरवको अनुभूति हुन्छ। यस विवेकाश्रमले वेदवेदाङ्गको पढाइसँगै सनातन परम्परा, संस्कार सिकाउनका लागि योग, ध्यान, हवन आदि इष्ट र पूर्त यज्ञको प्रवाह गराएको छ। इष्ट यज्ञमा द्रव्य र ज्ञानकर्महरू छन् भने पाठशाला, पाटीपौवा, जलदानका कर्महरू पूर्त यज्ञमा पर्दछन्। यसका साथै पुराण र अध्यात्म दर्शनहरूको मूल आदर्शको ज्ञान गराउने काम भएको छ।

यस आश्रम र विद्यालयले हामीलाई षट्दर्शनकै परिधिमा रहेर शिक्षादीक्षा दिइरहेको छ। यहाँबाट प्रशिक्षित भएर निस्कने हरेक विद्यार्थीमा जैमिनि दर्शनअनुरूपको यज्ञसम्बन्धी ज्ञान, वेदान्तले दिएको ब्रह्मतत्त्वको ज्ञान र साङ्ख्यले दिएको प्रकृति र पुरुषको ज्ञान अनि योगदर्शनले बताएका अष्टाङ्ग योगको दिग्दर्शन प्राप्त भएका हुन्छन्।

मच्छेबुङमा जन्मनुभएका देवीप्रसाद पौडेल, माहिला ब्रह्मचारी, माहिला गुरु हुँदै विवेकानन्द पुरीसम्मका यात्राभित्र बालागुरु षडानन्द, ब्रह्माभ्यासानन्द, पं. यज्ञनिधि रेग्मी र पं. टेकनाथ गौतमका प्रभाहरू समाहित भएका छन्। विवेकानन्द गुरु जो आफैंमा तेजपुञ्ज ज्ञानसागर महायोगी हुनुहुन्छ उहाँ पुगेका कुनै क्षेत्र आध्यात्मिक ज्ञानले सिञ्चित नभएका छैनन्। उहाँले गरेका जगत् हितका महान् कर्महरू सबैका लागि अनुकरणीय र वन्दनीय छन्।

उहाँले गरेका कामको गर्वमात्र गरेर पुग्दैन, उहाँले छोडेर गएका कीर्तिस्तम्भहरूको संरक्षण र संवर्द्धन गर्नु शिष्यहरूको कर्तव्य हो। यसपछि हामी जे गर्न सक्छौं त्यो गुरुकै करुणा हो भन्ने भाव हामीमा जागृत हुनुपर्छ। मैले गरेको हुँ भन्ने अहङ्कार आयो भने गुरुबाट हामी टाढिएका हुन्छौं। गुरुभक्तिप्रतिको अविच्छिन्न भक्ति भनेको नै गुरुले देखाएको मार्गमा हिंड्नु, उहाँले दिएका शिक्षालाई व्यवहारमा उतार्नु र सदैव संस्थाको संवर्द्धनका लागि काम गर्नु हो।

ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्म: राष्ट्रनिर्माणको मूल आधार

✍ प्रा.मोहनप्रसाद भण्डारी

मानव चेतनाको विकाससँगै धर्मदर्शनका विषयमा नास्तिक र आस्तिकको विवाद चलिरहेकै छ। यहाँ कहिले आस्तिक र कहिले नास्तिक पक्षको पराजय हुँदै आएको लामो शृङ्खला देखिन्छ। नास्तिकता र आस्तिकताको प्रश्न ईश्वरको अस्तित्व स्वीकार गर्ने कि नगर्ने भन्ने विषयसँग सम्बन्धित छ। वैदिक प्रमाणहरूका आधारमा ईश्वरको अस्तित्व स्वीकार गर्ने पक्षलाई आस्तिक भनिन्छ भने वैदिक प्रमाण र ईश्वरीय अस्तित्व दुवैप्रति विश्वास नगर्ने पक्ष नास्तिक हो।

आस्तिक-नास्तिक दुवै चिन्तन धाराका फेरि पनि अनेक शाखाहरू पल्लवित छन्। धार्मिक दार्शनिक कोणबाट तिनलाई सम्प्रदाय भनिन्छ। पूर्वीय चिन्तन परम्परामा नास्तिक धाराअन्तर्गत बौद्ध, जैन र चार्वाक् तीन साम्प्रदायिक शाखा सक्रिय छन्। त्यस्तै आस्तिक धाराअन्तर्गत न्याय-वैशेषिक, साङ्ख्य-योग र मीमांसा-वेदान्त यी तीन युगल शाखा अर्थात् ६ वटा साम्प्रदायिक शाखा सक्रिय रहेका छन्। उल्लिखित ६ वटा आस्तिक विचारलाई वैदिक दर्शन भनिन्छ भने तीनवटा नास्तिक विचारलाई इतरवैदिक दर्शन भनिन्छ। दुवैलाई जोडेर उक्त नौवटै चिन्तन धारालाई हिन्दु दर्शन भनिन्छ। यी भए जीवन जगत्लाई हेर्ने नौवटा दृष्टिकोण अर्थात् नौवटा पूर्वीय दर्शन।

अब लागौं धर्मतिर, यी उल्लेखित नौवटै दर्शनहरू जीवन-जगत्सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचारधारा हुन् भने धर्म तदनुरूप गरिने आचरण हो। धार्मिक दृष्टिले जैन र बौद्धका आफ्नै आचार संहिता, आफ्नै कर्मकाण्ड, आफ्नै उपासना र आफ्नै निष्कर्ष छन्। चार्वाकको आचरण भनेको जसरी भए पनि भौतिक सुख प्राप्तिका निम्ति गरिने प्रयास हो। बाँकी ६ वटा आस्तिक विचारअन्तर्गत जुन धार्मिक व्यवस्था गरिएको छ समष्टिमा त्यसलाई वैदिक सनातन धर्म भनिन्छ। यिनै हुन् हामीले हिंड्दै गरेका धार्मिक बाटाहरू। मानव चेतना, मानव जीवन र उसको समाजले अपनाएका यावत् गतिविधिरू धर्मका यसै परिधिभित्र पर्दछन्। जीवनका अरू पक्ष जस्तै व्यक्ति, समाज राष्ट्र कुनै पनि धर्मविना पाइलो चाल्न

✍ *पूर्वप्राचार्य, दमक क्याम्पस, ऋतम्भरा कुञ्ज, दमक-४, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सक्तैन। अझ राष्ट्र निर्माणको मूल आधारस्तम्भ नै धर्म हो। धर्मविनाको राष्ट्र निर्माण भुसमाथिको लिउन या भनौं खरानीको रसायन हालेर बनाइएको बालुवाको पुलभन्दा पनि फरक हुँदैन।

राज्यका प्रत्येक नागरिकमा आआफ्ना कर्तव्यप्रतिको बोध र त्यसतर्फको निष्ठापूर्वक संलग्नता नभएसम्म वास्तविक अर्थमा राष्ट्रनिर्माण हुन सक्तैन। त्यो धार्मिक आस्था, जसले आफू र अर्कोमा समानताको प्रत्याभूति गराउँछ, त्यस आस्थाको प्रतिष्ठा नभएसम्म समाजको उन्नयन भनेको नेताको भाषण या कुनै सिद्धान्तको सूत्रमा मात्रै सीमित रहनेछ, भनौं त्यो आकाशको फल कहिल्यै झर्ने छैन।

समाजमा एकातिर एकथरी अवैध तरिकाले कमाएको सम्पत्तिबाट अतुल वैभवको सुख सम्पन्नता भोगिरहेका छन् भने अर्कातिर अर्कोथरी अभाव र विपन्नताको पीडादायी नियति खपिरहेका छन्। एकातिर निम्नवर्गमा उब्जिने ईर्ष्या, राग र द्वेषले उच्चवर्गलाई ढाल्न धारिलो आरा तानिरहेका छन् भने अर्कातिर उच्चवर्ग प्रमादवश गरिबबाट अधिकतम श्रम लिएर न्यूनतममात्र पारिश्रमिक दिई आफ्नो विलासिताको भोगसामग्री जुटाउन दिनरात लागिरहेको छ।

माथिल्लो वर्ग तल्लो वर्गलाई सकभर केही दिन चाहँदैन भने तल्लो वर्ग माथिल्लो वर्गबाट सबैथोक खोस्न चाहन्छ। यसरी सम्पन्नता र विलासिताको भोगमा आसक्त धनीवर्ग तथा दरिद्रता, उत्पीडन र ईर्ष्याले पीडित निर्धनवर्ग दुवै आआफ्ना कर्तव्यपथबाट स्खलित भएर राष्ट्रिय एवं सामाजिक जीवनलाई सङ्कटमय बनाइरहेका छन्। परिणामतः बाह्य तथा आन्तरिक रूपले राष्ट्रनिर्माण कार्य ठप्प भएको छ।

राष्ट्र निर्माणको दिशामा साँच्चै लाग्ने हो भने आन्तरिक रूपबाट नै राज्यले जनताको मनोबल उच्च गराउने सामाजिक तथा राष्ट्रिय परिवेश निर्माण गर्नुपर्छ। त्यसका निम्ति देश तथा जनता दुवै आत्मनिर्भर हुनु अनिवार्य हुन्छ। आर्थिक रूपले जनतामा दैनिक उपभोग्य सामग्रीको पर्याप्त आपूर्ति, स्वास्थ्य तथा सामाजिक सुरक्षाको पूर्ण प्रत्याभूति, समुचित शिक्षाको सर्वसुलभ व्यवस्था जस्ता आधारभूत कुराहरू आत्मनिर्भरताका अनिवार्य सर्त हुन्।

संसारका देशहरूको भौतिक प्रगतिको सापेक्षतामा सञ्चार तथा सूचना, यातायात, विद्युतीकरण आदिको पर्याप्त परिचालन हुनु राष्ट्रको बाह्य निर्माण पक्ष हो भने जनतामा आत्मनिर्भरता र सुरक्षाको अनुभूति, उच्च मनोबल, धार्मिक तथा आध्यात्मिक चेतनाको जागृति जस्ता विषयहरू राष्ट्रनिर्माणका आन्तरिक पक्ष हुन्। जुन भौतिक प्रगतिलाई हामी राष्ट्रनिर्माण भन्छौं त्यो राष्ट्र नै होइन। राष्ट्र त देशका जनताको भावनात्मक एकता हो। माथि भने जस्तो जनताको विभाजित मानसिकताले सामाजिक सामञ्जस्य स्थापित गराउन, राष्ट्रिय एकताको भावना जागृत गराउन र राष्ट्रनिर्माणको दिशामा एकजुट हुने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातावरण सिर्जना गर्न सक्तैन। त्यसका लागि जनतामा आध्यात्मिक चेतनाको विकास गराउनु एकमात्र सहज माध्यम सिद्ध हुन सक्छ। आध्यात्मिकताले जहिले पनि सामाजिक समताको शिक्षा प्रदान गर्छ। आध्यात्मिकताको त्यो स्तरसम्म पुग्न व्यक्तिलाई धार्मिक सदाचरणका कैयौं खुट्किलाहरू पार गर्नुपर्ने हुन्छ।

धार्मिक दृष्टिले योग विज्ञानका अष्टाङ्गमध्ये यम, नियमलाई मात्रै हेर्ने हो भने पनि तिनले राष्ट्रनिर्माणको दिशामा कति महत्त्वपूर्ण भूमिका वहन गरेका छन् सहजै बुझ्न सकिन्छ। यी यम, नियमअन्तर्गतका विभागहरू सामाजिक धर्माचरणका प्रारम्भिक खुट्किला हुन्। यिनले प्रत्येक व्यक्तिलाई समतामूलक सामाजिक जीवन जिउने शिक्षा दिन्छन्। नियम भन्नाले योग विज्ञानको भाषामा नियन्त्रण गर्ने या सन्तुलित राख्ने प्रविधि भन्ने अर्थ बुझाउँछ। यसअन्तर्गत निम्नानुसारका ५ वटा विभागहरू छन्। 'शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः' (पातञ्जल योगसूत्र २ । ३२)

१. शौचः

यो बाह्य तथा आन्तरिक (शारीरिक तथा मानसिक) रूपले शुद्धीकरण प्रक्रिया हो। धार्मिक, आध्यात्मिक दृष्टिले यस प्रक्रियाको माध्यमद्वारा शरीर तथा अन्तःकरण परिशुद्ध भई साधक सहजतापूर्वक मोक्षमार्गको दिशामा लाग्न सक्छ। त्यसै गरी राष्ट्रनिर्माण कार्यमा संलग्न व्यक्तिका निम्ति शौचको उत्तिकै ठूलो आवश्यकता पर्दछ। राष्ट्रनिर्माण कार्य आफैंमा एक किसिमको योग साधना जस्तै हो। यसमा संलग्न व्यक्तिको शोच र व्यवहारमा शुद्धीकरण नभएसम्म राष्ट्रनिर्माण कार्य सम्पन्न हुन सक्तैन। आफ्नो शोच र व्यवहारमा शुद्धता नभएको व्यक्तिबाट यो कार्य योजना दिवास्वप्नमात्र भएर रहने छ।

२. सन्तोषः

उपलब्ध स्रोत-साधनलाई सदुपयोग गर्दै जीवन जिउने कलाको अभ्यास हो यो। राष्ट्रनिर्माणको दिशामा यसले धनी वर्गमा भोग विलासिताको तीव्र आकाङ्क्षा अनि विपन्न वर्गमा ईर्ष्या, द्वेष र आक्रोशको मानसिकतालाई न्यूनीकरण गर्दै आपसमा सहयोग र सहसम्बन्धको भावना वृद्धि गराउँछ, साथै समाजमा सबैसँग मिलेर बस्न सक्ने कला सिकाउँछ।

३. तपः

शीतोष्ण सुखदुःखादि सहन गर्दै आफ्नो उद्देश्य प्राप्तिका निम्ति निरन्तर लागिरहने अभ्यास हो तप। राष्ट्रनिर्माणको महान् कार्यमा कठोर तपको आवश्यकता पर्दछ। इमानदारितापूर्वक कडा परिश्रम नभए यो महान् कार्य पूरा हुन सक्तैन। राष्ट्रनिर्माण आफैंमा एक महान्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तपःसाध्य कर्म हो। जहाँ राजनीति देश र जनताका नाममा नभएर तिनकै सेवाका निम्ति गरिन्छ तबमात्रै वास्तविक राष्ट्रनिर्माण सम्भव हुन सक्छ।

४. स्वाध्यायः

यो लोक र परलोकसम्बन्धी विवेचन गरिएका शास्त्र र तत्सम्बन्धी व्याख्या विश्लेषणहरूको अध्ययन गरिरहने अभ्यास हो। स्वाध्याय भनेको राष्ट्रनिर्माण कार्यमा संलग्न व्यक्तिले आफ्ना योजना र प्रतिबद्धता कार्यान्वयन गर्न गराउन तत्सम्बन्धी दस्तावेज, फायलहरूको निरन्तर अध्ययन गरिरहनु पर्छ। त्यस्ता महात्माहरूको अधिकांश समय आफ्ना योजनाहरूको अध्ययनमै खर्च भएको हुनुपर्छ।

५. ईश्वरप्रणिधानः

ईश्वरप्रतिको विश्वास र भरोसा हो यो। यो जगत् निर्माण गर्ने र सञ्चालन गर्ने नियन्ता कोही छ। जो छ उसले कतै कसैप्रति वैमनस्य र भेदभाव नगरी समताका आधारमा जगत् सञ्चालन गरिरहेको हुन्छ। त्यसै निर्विकल्प सत्ताको नाम ईश्वर हो र यस जगत्‌को सर्वोपरि शक्तिकेन्द्र तथा जीवनको उच्च सङ्गति केन्द्र हो। राष्ट्रनिर्माण कार्यमा संलग्न व्यक्तिका निम्ति राष्ट्र नै उसको ईश्वर हो। त्यसैले राष्ट्रप्रतिको विश्वास र भरोसा उसको परम धर्म हो। उसका निम्ति यही अनिवार्य सर्त हुने छ। जनता नै राष्ट्र हो र देशका समस्त जनताको भावनात्मक एकता नै राष्ट्रनिर्माणको मूलधार हो। त्यसैले राष्ट्रनिर्माणमा संलग्न व्यक्तिले कुनै भेद भाव र पक्षपात भाव नराखी जनताको सेवामा समर्पित हुनुपर्छ।

त्यसै गरी यम भन्नाले कुनै कार्य सम्पादन गर्न सहजताका लागि बनाइएका विधिप्रविधिहरू भन्ने बुझाउँछ। योग साधनामा यमको अनिवार्य आवश्यकता पर्दछ। राष्ट्रनिर्माण पनि एउटा उच्चस्तरीय साधना नै हो। यसनिम्ति पनि विधिप्रविधिहरूको आवश्यकता अनिवार्य हुन्छ। सर्वविदितै छ, यम पालन नभए राज्य कसरी चल्न सक्छ? योग शास्त्रमा यमका पनि पाँचै विभागहरू छन्: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य र अपरिग्रहः।

१) अहिंसाः

मन, वचन र कर्मले अरू कसैलाई पीडा नपुर्याउनुको नाम अहिंसा हो। लोककल्याणकारी कानुनी राज्य व्यवस्थामा अहिंसाको अत्यन्तै महत्त्वपूर्ण योगदान रहन्छ। हिंसाले बर्बरता जन्माउँछ। बर्बरता निरङ्कुश अधिनायकवादी राज्य-व्यवस्थाको लक्षण हो। यहाँ लोककल्याणकारी प्रजातान्त्रिक समाजवादी राज्यव्यवस्थाको बोट हुर्किन सक्तैन। त्यसैले असल तथा स्वस्थ राष्ट्रनिर्माणका लागि अहिंसा तथा बर्बरताको समूल परित्याग हुनुपर्छ। 'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः' कुनै पनि राज्य, समाज या समुदायमा अहिंसाको संस्कृति प्रतिष्ठित रहन सक्यो भने त्यहाँ शत्रुत्व भाव समाप्न हुन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गई असल राष्ट्रको निर्माण हुन सक्छ।

२) सत्यः

सधैं साँचो बोल्नु र साँचो गर्नुको नाम सत्य हो। 'धर्मः सत्याज्जायते, दयया दानेन च वर्द्धते, क्रोधान्नश्यति' अर्थात् धर्म सत्यबाट जन्मन्छ, दया र दानको पौष्टिकता पाएर हुर्किन्छ भने क्रोधले धर्मलाई नष्ट गरिदिन्छ। धर्म-राज्यमा सत्यको सम्प्रभुता रहन्छ। जहाँ सत्य छैन त्यहाँ धर्म रहने कुरै भएन। कुनै पनि लोककल्याणकारी राज्यव्यवस्था सत्यकै धरातलमा अडिएको हुन्छ र त्यसै धरातलमा उभिएर मात्र असल राष्ट्र निर्माण गर्न सकिन्छ।

३) अस्तेयः

यो चोरी नगर्नु हो। यसको तात्पर्य मन, वचन र कर्मले अरू कसैको वस्तु या पदार्थ चोरी नगर्नु अस्तेय हो। साथै आफ्नो कर्तव्यभित्र पर्ने कुनै काममा बेइमानी नगर्नु आर्थिक अनियमितता, हिनामिना, भ्रष्टाचार, सामाजिक या नैतिक दुराचरण नगर्नुको तात्पर्यमा अस्तेय शब्द प्रयोग भएको छ। राष्ट्रनिर्माणको अभियानमा अस्तेयका सबै पक्षहरूको उत्तिकै आवश्यकता पर्दछ।

४) ब्रह्मचर्यः

ब्रह्मत्वं, समत्वं एकत्वं वा चरति अनुसन्धयति इति ब्रह्मचर्यः। ब्रह्मानुसन्धानका निम्ति निर्धारित जीवन अवधि र त्यसका निम्ति निर्देशित नियम पालनको अभ्यासलाई ब्रह्मचर्य भनिन्छ। यसको प्रत्यक्ष तात्पर्य कुनै पनि स्त्री वा पुरुषसँग मन, वचन र कर्मले सहसम्बन्ध स्थापित नगर्नु भन्ने हो। गृहस्थका लागि परस्त्री या परपुरुषसँग सहवास नगर्नु, आफ्नै दाम्पत्य सम्बन्धमा सन्तुष्ट रहनुलाई पनि ब्रह्मचर्य नै भनिन्छ। यसले राष्ट्रिय तथा सामाजिक जीवनमा यौन दुराचरणसम्बन्धी समस्या पूर्णतया समाधान गर्दछ। त्यसैले राष्ट्रनिर्माण कार्यमा संलग्न व्यक्तिका लागि ब्रह्मचर्यको पालन गर्नु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष मानिन्छ।

५) अपरिग्रहः

अनावश्यक वस्तु सङ्ग्रह नगर्नु, जति चाहिन्छ त्यति मात्रै सञ्चय गर्नु र त्यसैको सदुपयोग गर्नुको नाम हो अपरिग्रह। आवश्यकताभन्दा बढी सञ्चय गर्नाले अरूका लागि आवश्यक उपभोग्य वस्तुमा अभाव उत्पन्न हुन सक्छ। जसबाट समतामूलक समाजमा व्यवस्थामा विभेदको खाडल पर्न गई सामाजिक सन्तुलनको स्थिति बिग्रिन सक्छ। त्यसैले प्राच्य समाजविज्ञान परम्परामा अनावश्यक सञ्चय गर्नु अपराध मानिन्छ। लोककल्याणकारी धार्मिक, सामाजिक राज्य व्यवस्थामा यसलाई अझै कडाइका साथ लागु गर्न श्रीमद्भागवतले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यसरी निर्देश गरेको छ।

यावत् भ्रियेत जठरं तावत् सत्वं हि देहिनः अधिकं योऽभिमन्येत सस्तेनो दण्डमर्हति। यसको तात्पर्य जतिले आफ्नो पेट भरिन्छ, त्यतिमात्रै सञ्चय गरोस्। त्योभन्दा बढी सञ्चय गर्न खोज्ने चोर हो त्यसलाई दण्ड दिनुपर्दछ भन्ने हो। भागवतको यस श्लोकले नितान्त समतामूलक समाजको निर्माण गर्ने उद्घोष गरेको बुझिन्छ। यस कोणबाट हेर्दा लोककल्याणकारी राज्य निर्माणका लागि अपरिग्रहको कति ठूलो महत्त्व रहेछ भन्ने स्पष्ट हुन्छ।

यी त केवल योगशास्त्रअन्तर्गत यम र नियमका उदाहरणमात्र हुन्। समस्त धार्मिक, आध्यात्मिक साहित्यमा राष्ट्रनिर्माणका निम्ति सहयोग पुर्याउने यस्ता हजारौं सूक्त, मन्त्र, श्लोक र प्रसङ्गहरूमा छरिएर हरेका विधि-प्रविधिहरू छन् जसले लोककल्याणकारी राज्य निर्माणको दिशामा अमूल्य सहयोग पुर्याइरहेका छन्।

'वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः' हामी राष्ट्रनिर्माणका निम्ति जागा भएर अघि बढौं। यो राष्ट्रिय एकताका भावनाको साङ्गठनिक उद्बोधन हो। यस्तो भावनाले जहिले पनि राष्ट्रलाई छिन्नभिन्न हुनबाट जोगाइरहेको हुन्छ। त्यस्तै 'प्रादुर्भूतोस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे' यहाँ महान् वैभव तथा ऐश्वर्यरूप परासत्तालाई मानवीकृत गर्दै आफ्नो राष्ट्रमा प्रादुर्भाव भइदिन र यश तथा कीर्तिको अभिवृद्धि गरिदिन आह्वान गरिएको छ। त्यसैगरी ...आराष्ट्रे राजन्यः सूरइषव्योतिव्याधि महारथो जायतां ...योगक्षेमो नः कल्पताम्' यजुर्वैदिक यस मन्त्रले आशीर्वचनका रूपमा राष्ट्रको सर्वतोमुखी उत्थानको कामना गरेको छ। त्यस्तै 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि।' (रामायण)। यहाँ माता र मातृभूमिको महत्ता स्वर्गभन्दा पनि गहन हुन्छ भनिएको छ। मातृभूमिको ममता भनेको आफ्नो राष्ट्रप्रतिको ममता हो। सबै जनताको यस्तो एकीकृत ममता नै राष्ट्रप्रतिको ममता नै हो। सबै जनाको यस्तो एकीकृत ममता नै राष्ट्रनिर्माणको सबल साधन बन्दछ। त्यस्तै 'माता मे पृथ्वी पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (अथर्ववेद) मनुष्य र धर्तीका बिच माता-पुत्रको कति गाढा सम्बन्ध छ यहाँ ? पृथिवी माता हुन् भने त्यहाँ बसोबास गर्ने सबै उनका सन्तान हुन्। समष्टिमा संसार एउटै परिवार हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को भावनाले समस्त पृथ्वीको सार्वभौम एकात्मक राष्ट्र र त्यसैमा पल्लवित राष्ट्रियतातर्फ सङ्केत गर्दछ।

यसरी राष्ट्र र राष्ट्रियताका लागि, लोककल्याणकारी राष्ट्रनिर्माणका लागि तनावरहित, सङ्गतिपूर्ण, शिष्ट र सभ्य व्यक्तिहरूले भरिएको समाज निर्माणका लागि धर्म अपरिहार्य साधनसिद्ध भएको छ। धर्मको तात्पर्य यहाँ धर्मको नाममा संसारमा देखिएका अनेक सम्प्रदाय र पन्थहरूप्रतिको आग्रह नभएर समस्त जीवन जगत्को पूर्वापर विश्लेषण गर्ने, मानव जातिको सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विविध पक्षको मार्गदर्शन गर्ने, सृष्टिकै आदिम विधायक संस्थाको रूपमा प्रतिष्ठित वैदिक सनातन धर्म नै एकमात्र शाश्वत धर्म हो। संसारका सबै सम्प्रदायको नेतृत्वदायी भूमिका यसले वहन गरेको छ। सबै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्प्रदाय तथा पन्थहरूका विधि नियम र विचारहरू यसैबाट प्रादुर्भूत हुन्छन् र अन्ततः यसैमा अन्तर्भूत हुन्छन्। वैदिक सनातन धर्म यो कुनै सम्प्रदाय होइन, बरु यो त आफैंमा धर्मको एउटा महावारिधि हो। खोज्न सके, टिप्न सके यहाँ कैयौं अमूल्य निधिहरू छन्, मुगा, मोती र रत्नहरू छन्। यहाँ योगका अनेकौं साधनहरू छन्, धर्मार्थकाममोक्षका विधि-प्रविधिहरू छन्, योगका साधन र रोगका उपचारहरू छन्। यहाँ ज्ञान छ, विज्ञान छ, खगोल एवं भूगोल छ, तीन लोक छन् चौध भुवन छन्। पाप छ, पुण्य छ, स्वर्ग-नरक दुवै छन्। यहाँ समाज छ, राज्य छ, शासन, प्रशासन र अनुशासन छन्। यहाँ अधिकार छ, कर्तव्य छ, बन्धन र मुक्ति दुवै छन्। खगोल, भूगोलका सबै थोक छन्, यहाँ कुनै कुराको अभाव छैन। यो वैदिक सनातन धर्म, मानव धर्म हो, समस्त प्राणीको धर्म हो, प्राकृतिक धर्म हो, समाज-धर्म हो, राष्ट्रधर्म हो, यो सार्वभौम विश्वधर्म हो।

यसले 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।' को कामना गर्दै समाजका सबैलाई 'सङ्गच्छध्वं संवदध्वं..., सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यङ्करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै' को आह्वान गर्दछ। यसले समाजलाई 'सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद, प्रजातन्तु मा व्यवच्छेत्सी। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव। एषः आदेशः, एष उपदेशः, एषा वेदोपनिषद्, एतदनुशासनम्' यो सूक्तिसमूह समाजका लागि नीति निर्देशक सिद्धान्त हो, अनुशासन हो। यसले व्यक्ति, समाज र राष्ट्रसमेतलाई सर्वपक्षीय उत्कर्षको शिखरसम्म पुर्याउँछ। धर्म यिनै कुराहरूको परिचालन गर्ने एक उच्चस्तरीय आचरण हो, सदाचरण हो, सबैलाई आफूवरिपरि घुमाउने मियो हो। जीवनको सङ्गठित केन्द्र हो। धर्मको अनुपस्थितिमा समाज अराजकताको सिकार बन्ने छ, राष्ट्रविशृङ्खल बन्ने देशले अरूको दासता स्वीकार्न बाध्य हुनुपर्ने छ।

यसरी व्यक्ति, समाज र राष्ट्रकै निम्ति अपरिहार्य सिद्ध भएको धर्मलाई कुनै राज्य वा राजनीतिले कसरी निरपेक्ष राख्न सक्छ ? धर्मबाट निरपेक्ष हुनुको तात्पर्य आफ्नो कर्तव्यबाट निरपेक्ष हुनु हो। निरपेक्ष भनेको निष्कर्मण्यता हो, नियमहीनता हो, अनुशासनहीनता हो, उच्छृङ्खलता हो। कुनै पनि वस्तुको निरपेक्षतालाई विज्ञानले सिद्ध गर्दैन किनभने विज्ञानका दृष्टिमा समस्त जीवन जगत् सापेक्षताकै धरातलमा अडिएको छ भने राजनीति वा राज्य धर्मबाट कसरी निरपेक्ष रहन सक्छ ? निरपेक्षको तात्पर्य एक किसिमको नास्तिकता नै हो। तर नास्तिक भएर पनि तपाईं आफैंबाट कसरी निरपेक्ष रहन सक्नुहुन्छ ? तपाईंको शरीर छ, नाम छ, पहिचान छ। यी सबैले चैतन्य आत्माको अपेक्षा राख्तछन्। चैतन्य आत्मा रहेन भने तपाईंको नाम रूपादि पहिचानको कुनै अर्थ रहँदैन। उता चैतन्य आत्मा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आफैंमा तटस्थ कूटस्थ नित्य विभु स्वरूप भएर पनि नितान्त निरपेक्ष रहन सक्तैन। उसलाई पनि आफ्नो सत्ता साबित गर्न कुनै शरीरको आवश्यकता अनिवार्य हुन्छ। आत्माविना शरीरको अस्तित्व रहँदैन भने शरीर नभए आत्माको पनि सत्ता साबित गर्न सकिँदैन। यसरी शरीर र आत्मा दुवै एकअर्काको अपेक्षा राख्तछन् भने एउटा लोककल्याणकारी संस्थाको रूपमा रहेको राज्य धर्मबाट कसरी निरपेक्ष रहन सक्छ ?

जतिसुकै कट्टर नास्तिक भए पनि साँच्चै नै ईश्वर छैन भनेर निश्चयका साथ के तपाईं भन्न सक्नुहुन्छ ? ईश्वरका विषयमा तपाईंलाई केही पनि थाहा छैन र पनि सन्देह गर्नुहुन्छ अथवा ईश्वरको सत्ताप्रति तपाईंलाई कत्ति पनि विश्वास छैन किनभने तपाईंले ईश्वरलाई कहिल्यै देख्नुभएको छैन। हो नदेखेको कुरालाई कसरी यसै हो भन्न सकिन्छ ? गाह्रै पर्छ र पनि सत्यलाई अस्वीकार गर्न सकिँदैन। नदेखेको कुरालाई स्वीकार नगर्ने हो भने तपाईंका दश पुस्ता अघिका कुप्रा हजुरबुबा भए-नभएकोप्रति पनि तपाईंलाई सन्देह छ? संसारका समस्त पदार्थमा विद्यमान अग्निको अस्तित्वप्रति पनि सन्देह छ? तपाईंले खाएको चामल या स्याउको दानाभित्रको पौष्टिकता (क्यालोरी) प्रति पनि सन्देह छ ? ती कुनैलाई तपाईंले देख्नुभएको छैन। सन्देह भए पनि तपाईं तिनलाई पूर्णरूपले नकार्न सक्नुहुन्न। किनभने तपाईंलाई सन्देह मात्रै छ, भएको या नभएको कुरामा निश्चय छैन। 'नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः' सन्देह मात्रै गर्नेहरूका निम्ति यो लोक र परलोक दुवै सुखपूर्ण बन्न सक्तैन। त्यस्तै 'संशयात्मा विनश्यति' सत्यप्रति संशय गर्नेहरूको विनाश अवश्यम्भावी छ। त्यसो हुँदा सत्य वस्तुप्रतिको सन्देह छोडेर निश्चयात्मकतासाथ सत्यको पहिचान गरी त्यसप्रति विश्वास गरौं। आप्त वचनप्रति विश्वास गरौं। आफ्नो कर्मप्रति विश्वास गरौं। आफ्नो समाज र राष्ट्रप्रति विश्वास गरौं। सकारात्मक सोचले राष्ट्रसेवाको कार्यमा अघि बढौं। सङ्गतिपूर्ण जीवन जिउन आफैंप्रति, आफ्नो धर्मप्रति, परलोक र ईश्वरप्रति विश्वास राख्तै एकताबद्ध भएर राष्ट्रनिर्माणको महायज्ञमा जुटौं राज्य र समाजलाई धर्मबाट निरपेक्ष गराउन सकिँदैन। धर्मबाट निरपेक्ष गराउन खोजे आफू र आफ्नो राष्ट्र दुवैको विनाश हुनु अवश्यम्भावी छ। धर्म राष्ट्रनिर्माणको मेरुदण्ड हो। आधारस्तम्भ हो। अडिने धरातल हो। यो खस्कियो या भत्कियो भने राष्ट्र अपाङ्ग बन्दछ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परम्परागत पुराण श्रवण विधिका सन्दर्भमा विवेकाश्रम

✍ आचार्य दुर्गाप्रसाद खतिवडा

वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणे नात्र संशयः। (नारदीय पुराण)

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' सनातन धर्मको मूल ग्रन्थ वेद नै हो। वेदलाई सम्पूर्ण धर्महरूको जन्मदाता मानिएको छ। वेद मानवमात्रका लागि अत्यन्तै प्रामाणिक एवं प्राचीनतम ग्रन्थ हो। वेदका अर्थ राम्रोसँग अध्ययन गर्दा पुराणहरू सबै वेदका 'पूरणात् पुराणम्' को उक्तिलाई चरितार्थ गर्दछ। सम्पूर्ण वेदको अर्थलाई पूर्ण गर्छ भनेर नै 'पुराण' नाम राखिएको हो।

वेदको संस्कृत भाषा प्राचीन भाषा भएकाले सजिलै बुझ्न जान्न कठिन छ र वेदको शैली रूपकमय तथा प्रतीकात्मक छ। यसको ठिक विपरीत पुराणको भाषा व्यावहारिक तथा शैली रोचक एवं आख्यानमय छ। यस कारण भक्ति एवं भावविभोर भएका व्यक्तित्वहरूलाई तत्त्वबोध गराउन पुराणबाहेक अन्य कुनै पनि साधनस्रोत छैन। वेद ब्रह्म वाचक शब्द हो **एकं ब्रह्म द्वितीयो नास्ति** ब्रह्म एउटा मात्र छ दोस्रो ब्रह्म छैन। भनेपछि 'एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय' यस उक्तिलाई चरितार्थ गर्दै यो सृष्टिको क्रम अगाडि बढेको हो। चौराशी लाख योनिको भवाटविलाई पूर्ण रूपमा सचेत गराई जीव र आत्मालाई ऐक्य गराउने माध्यम नै सम्पूर्ण पुराणहरूमा रहेको भएको पाइन्छ। युगधर्मको व्यवस्थानुसार सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि चारै युगमा आ-आफ्नो धर्म व्यवस्था भएको पाइन्छ।

द्वापर युगसम्मका नरनारीहरूले वैदिक सनातन धर्मको पालना गर्दै आए। कुनै शङ्का गरेनन्। शास्त्र वचनलाई भगवान्का सत्यवाणी सम्झे। कलियुगको आगमनपछि सनातन धर्ममा आँच आउने कुरा महसुस गरी कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) ले वेदलाई ऋक्, यजुः, साम र अथर्व गरी चारवेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्थापत्य वेद र गन्धर्व वेद गरी चार उपवेद तथा महाभारत, उपनिषद्, अनेकौं आगम, निगमादि ग्रन्थहरूको संरचना गर्दै पुराणादि धर्मग्रन्थहरूको रचना गर्ने काम गर्नुभएकै कारण आजको अवस्थामा विश्वका प्राणीहरू धर्म, संस्कृति, मर्यादा, परम्परामा आबद्ध भई गर्वसाथ 'मानव' भन्न सकेका छौं। यसमा दुई मत छैन।

द्वापर युगको पावन समयमा अवतार लिएका कृष्णद्वैपायनले एउटै सिंगो पुराणबाट

✍ *उपाध्यक्ष, वैदिक सनातन धर्म संरक्षण समिति, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मात्र तत्त्वज्ञान गर्न नसक्ने अवस्थालाई विचार गरी भगवान्‌को महावाणीलाई शिरोधार्य गर्दै समायावधिले स्वाध्याय, पठन पाठन गर्न सक्ने पुराणहरूको रचना गर्नुभएको हो।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। (गीता ४।७)

अर्थात्, जब जब धर्मको हानि हुन्छ; अधर्मको बोलबाला हुन्छ तब तब तब म प्रकट हुन्छु र (अधर्मको विकाश गर्छु)।

यो महान् वाणीलाई शिरोधार्य गर्दै अनन्त भगवान्‌का अवतारहरूमध्ये मुख्य मुख्य अवतारले गरेका लीला, कर्मकाण्डहरूबाट मानव मात्रलाई हितकारक, जीवनोपयोगी पुराणहरू संशोधन गर्ने क्रममा कलियुगीय नरनारीले पालना गर्न सक्ने मात्र आवश्यक विधा १८ महापुराण, १८ उपपुराण १८ औपपुराण र धर्म, संस्कृति, मर्यादा पालन हुन सक्ने गहिरो विचार गरी यस धर्तीमा वेदव्यासले राखिदिनुभएको छ। जसको नाम निम्नानुसार छ।

१८ महापुराणहरू

क्र.सं.	पुराण नाम	श्लोकसङ्ख्या	अध्याय सङ्ख्या
१	ब्रह्मपुराण	१२,०००	२४५
२	पद्महापुराण	५५०००	६४१
३	विष्णुमहापुराण	२३०००	१२७
४	शिवमहापुराण	२४०००	४६४
५	भागवत महापुराण	१८०००	३३५
६	श्रीमन्नारदीयपुराण	२५०००	२०७
७	मार्कण्डेय महापुराण	९०००	१३४
८	अग्नि महापुराण	१५४००	३८३
९	भविष्य महापुराण	१४५००	६०५
१०	ब्रह्मवैवर्त महापुराण	१८०००	२६६
११	लिङ्ग महापुराण	११०००	१६०
१२	वराह महापुराण	२४०००	२१८
१३	स्कन्द महापुराण	८११००	१६७१
१४	वामन महापुराण	१००००	१९२
१५	कूर्म महापुराण	१७०००	९५
१६	मत्स्य महापुराण	१४०००	२९०
१७	गरुड महापुराण	१९०००	३१८
१८	ब्रह्माण्ड महापुराण	१२०००	१६१

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं लैङ्गं सगारुडम् । नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कान्दसंज्ञितम् । २३ ।
भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं सवामनम् । वाराहं मात्स्यं कौर्मं च ब्रह्माण्डाख्यमिति त्रिषट् । २४ । (श्रीमद्भागवत १२ । ७ अध्याय)

उपपुराणहरू :

१) आदिपुराण (सनत्कुमार)
२) नरसिंह पुराण (नृसिंह)
३) नन्दिपुराण (कुमार)
४) शिवधर्मपुराण
५) आश्चर्य पुराण (दुर्वासा)
६) नारदीय पुराण (नारद)
७) कापिल पुराण (कपिल)
८) मानव पुराण (मनु)
९) औशनस पुराण (उशना)
१०) ब्रह्माण्ड पुराण
११) कालिका पुराण (सती)
१२) वारुण पुराण (वरुण)
१३) माहेश्वर पुराण (वासिष्ठलैङ्ग)
१४) साम्ब पुराण (आदित्य)
१५) सौर पुराण (सूर्य)
१६) पाराशर पुराण (पराशर)
१७) मारीच पुराण (भागवत)
१८) भार्गव पुराण (वासिष्ठ)

श्रीमद् देवीभावगत महापुराण

औपपुराणहरू

१) सनत्कुमार पुराण
२) बृहन्नारदीय पुराण
३) आदित्य पुराण
४) सूर्य पुराण
५) नन्दिकेश्वर पुराण
६) कौर्म पुराण
७) भागवत पुराण
८) वशिष्ठ पुराण
९) भार्गव पुराण
१०) मुग्दल पुराण
११) कल्कि पुराण
१२) देवी पुराण
१३) महाभागवत पुराण
१४) बृहद्धर्म पुराण
१५) परानन्द पुराण
१६) बह्नि पुराण
१७) पशुपति पुराण
१८) हरिवंश पुराण

उल्लेखित उपपुराण र औपपुराणहरूको लेखनकार्य 'वेदः प्रणिहितो धर्मः' कै आधारमा भएको छ। १८ महापुराण व्यासले संरचना गरिसकेपश्चात् ऋषि, महर्षि, विद्वान्, विदुषीहरूले यी नै महापुराणलाई अवलोकन अनुसन्धान गर्दै लेख्नुभएको तथ्य आधार छ।

यी अठार महापुराण, उपपुराण, औपपुराणहरू कुनै पञ्च लक्षणसम्पन्न छन् भने कुनै पुराण दश लक्षणसम्पन्न छन्।

अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः। मन्वन्तरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः।।
(श्रीमद्भागवतमहापुराण २।१०।१)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।(अन्यपुराणहरू सबैमा)।

उक्त लक्षणहरूले सम्पन्न पुराणअन्तर्गत वर्णाश्रम धर्मको विशद् चर्चा-परिचर्चा छ। ३२ विद्या ६४ कलाले मानवलाई व्यावहारिक जीवन यापन गर्न उच्चशिक्षा प्रदान गरेको छ। यति मात्र नभएर क्षणभङ्गुर शरीरको माध्यमबाट मोक्षगति प्राप्त गर्न आवश्यक पर्ने नित्य, नैमित्तिक, काम्य, निष्काम कर्म, भक्ष्याभक्ष, शौच-स्नान, द्रव्यशुद्धि, जपानुष्ठान विधि, प्रायश्चित्त, दान, तपस्या, सेवामूलक विषय, धर्म महिमा, काम, क्रोध, लोभ, नास्तिक्यादि दोष वर्णन, अहङ्कार दोष, आशौच, असत्य, अहिंसा परमधर्म, मन वचन शरीरबाट गरिने पाप, पुण्य वर्णन, ज्ञान महिमा, धर्म-प्रशंसा, स्वाध्यायको चमत्कारिता, यज्ञ महिमा, शील, स्वभाव, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय जित्ने विधि-विधान, सत्यमेव जयते नानृतम्, सदाचारको वर्णन, तीर्थ महिमा, व्रतोपवास, श्रद्धा-भक्ति महिमा, अष्टाङ्गयोग वर्णन, देवपूजा, श्रद्धाफल, अतिथि-अभ्यागत सेवा गो-महिमा, दयादान, धर्म विचार, स्त्री धर्म, राजधर्म, विविध दान महिमा, न्याय निर्णय, ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थ, सन्न्यास निर्णय, ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्रको कार्यक्षेत्र विभाजन, इष्टाकर्म र पूर्तकर्मको विवेचना, ऊर्ध्वलोक, अधोलोक र ८४ लाख नरकका कुण्ड आदिको वर्णन उत्कृष्ट रूपमा यिनै पुराणहरूमा वर्णन गरिएको छ। यी ग्रन्थहरूको सदा सर्वदा पठनपाठन श्रवण, मनन चिन्तनले मात्र उत्तम फल प्राप्त गर्न सकिन्छ।

पुराण एवं धर्मशास्त्रमा असङ्ख्य यस्ता महान् वाणीहरू छन्। जसलाई सदैव ग्रहण गरिरहनु पर्दछ।

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमद। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। श्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।

नास्ति सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम्। अतः सर्वेषु कार्येषु सत्यमेव विशिष्यते।।
धर्मं चरत माधर्मं सत्यं वदत नानृतम्। दीर्घं पश्यत मा ह्रस्वं परं पश्यत मा परम्।।
सत्यं धर्मस्तपोयोगः सत्यं ब्रह्म सनातनम्। सत्यं यज्ञः परः प्रोक्तः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।

यस्ता महनीय गहनीय विशिष्ट उक्तिहरूले मानव मात्रलाई उच्चकोटिको शिक्षा प्रदान गरेको पुराणहरूमा नै छ। जन्मतः मृत्युपर्यन्त मानवले मानव बन्न कर्ममा निरन्तर लागिरहनु पर्दछ। जन्मले मात्र मानव सिद्ध हुन नसक्ने कर्मले, चिन्तन, मनन, स्वाध्यायले मात्र म मानव हुँ भन्ने यथार्थ पुराणभित्रै रहेका उक्तिहरूमा छन् जस्तै :

धर्मे रागः श्रुतौ चिन्ता दाने व्यसनमुत्तमम्। इन्द्रियार्थेषु वैराग्यः सम्प्राप्तः जन्मनः फलम्।। (स्कन्दमहापुराण कौमारी खण्ड २ अ. ४८)

'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः' धर्मशास्त्र, पुराण पढेर मात्र हुँदैन, त्यसलाई व्यवहारमा उतार्न सक्नुपर्छ। आचार-निष्ठाविनाको कर्म सुकेको तृणसमान हुन्छ। त्यसैले पुराणहरूमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्णित धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त गर्न द्रव्यशुद्धि, अन्नशुद्धि, चित्तशुद्धि, भावशुद्धि, आहारशुद्धिको नितान्त आवश्यक हुन्छ। कुनै महापुराण, उपपुराण, औपपुराण, महाभारत, रामायण जस्ता ग्रन्थहरूको अनुष्ठान गर्दा नीतिसम्मत भए-गरेमा मात्र मनोवाञ्छित कामना सिद्ध हुन्छ। पुराणादिको अनुष्ठान गर्ने प्रबल इच्छा भएमा सर्वप्रथम ज्योतिष शास्त्रले दिएको निश्चित समयमा नै गर्नुपर्दछ अथवा पुराणचक्र यस प्रकार बचाएर मात्र गर्नु उचित हुन्छ।

गुरुभाद् वेदवेदाब्जशराङ्गब्धि गुणैः क्रमात्।
धर्मासिरिन्दिरा प्राप्तिः कथासिद्धिः परं सुखम्।
पीडाकथ भूपतिमयं ज्ञानप्राप्तिः क्रमात् फलम्।।

(देवीभागवत महापुराण महात्म्य ६।५।६)

यस्तै पुराणश्रवण विधिको विस्तृत विवेचना श्रीमद्भागवत महापुराण, श्रीमद्देवीभागवत महापुराण, श्रीमद् शिवमहापुराण, हरिवंश औपपुराण आदिमा गरिएको छ। कर्ता र वक्ताको नियम, निष्ठा, आचार एउटै हुनुपर्छ भन्ने यस श्लोकले छर्लङ्ग पारेको छ।

वक्त्रा क्षौरं प्रकर्तव्यं दिनादर्वाक् व्रतासये। (भागवत माहात्म्य ६ अ.)

वक्त्रा क्षौरं हि संस्कार्यं दिनादर्वाक् व्रतासये। (शिवमहापुराण महात्म्य अ. ६।३२)

पुराण प्रारम्भपूर्व नै अधिकार प्राप्तिका लागि दीक्षित हुनुपर्छ अर्थात् गायत्री मन्त्र ग्रहण गरिसकेको हुनुपर्छ। वर्णाश्रम धर्मानुसारको अधिकारी बनिसकेको हुनुपर्छ।

पुंसां दीक्षाविहीनानां नाधिकारः कथाश्रवे।
सर्वेषां श्रवणं कार्यं स्त्रीभिः पुम्भिश्च यत्नतः। (शिवमहापुराण माहात्म्य ७।४)
विष्णुदीक्षाविहीनानां नाधिकारः कथाश्रवे। (श्रीमद्भागवत माहात्म्य ६।४४)

यो श्रीमद्भागवत महात्म्यमा उल्लेख भएको नीतिलाई एकाधिकार हुन्छ वा विभेद गर्न सक्छ भन्ने आशंकाले समाधानार्थ यो नियम प्रस्तुत गरिएको छ।

विष्णुदीक्षा न सा दीक्षा या दीक्षा भेदकारिणी।
पञ्चदेवार्चना दीक्षा सा दीक्षा वैष्णवी मता।।

पुराणानुष्ठानमा हविष्य पदार्थको सेवन, 'एकभुक्तेन' एक छाक खाएर, ब्रह्मचर्यमा रहेर काम, क्रोध, मद, मान, मत्सर भाव, लोभ, घमण्ड, मोहादि सांसारिक विषयलाई त्यागेर, कोही कसैमा वैरभाव नगरी, वेद, ब्राह्मण, गुरु, गौमाता, व्रतीहरूको निन्दा कुनै प्रकारले नगरी 'कथाचित्तः शुद्धमति' कथामा शुद्ध मन लगाएर उदार चित्तले नम्र भएर कथा सुन्नु पर्दछ।

दिव्य पुराणानुष्ठानमा रहनुहुने श्रोतावर्गले ध्यान दिनुपर्ने यी विषयहरू पनि छन्। कथा सुन्ने श्रोताले व्यासमण्डपमा स्थापित देवताहरूको सभक्ति पूजाअर्चना गर्ने र कथा सुन्ने। शिरमा फेटा बाँधेर, ताम्बुलादि अमल वस्तु मुखमा लगाएर, अग्ला सिंहासनमा बसेर कथा सुन्नु हुँदैन। उल्लिखित नियमाचारको परिधिमा रहेर कथा श्रवण गरेमा मात्र फलदायक हुन्छ। माहात्म्यका सबै नियम विनियमको विषयमा सङ्क्षेपतः लेख्ने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयास गरिएको छ। विशद् ज्ञान पुराणका माहात्म्यहरूबाटै विज्ञवर्गले गर्न सक्नु हुने छ। वेदव्यासजीले सबै पुराणहरू लेखिसकेर अन्तिम सारतत्त्व के छ ? भन्ने प्रश्नमा यही लेखुभएको छ भने हाम्रो अल्पज्ञाताले कहाँ के कति लेख्न सकिन्छ र ?

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

हामीले पाएको यही उक्ति छ यसलाई बारम्बार प्रयोग गरिरहनुपर्छ, हाम्रो कर्तव्य अवश्यमेव पूर्ण ब्रह्मले पूरा गरिदिनु हुने छ।

सदा सेव्या सदा सेव्या सदा सेव्या विशेषतः (शिवपुराण माहात्म्य)
सदा सेव्या सदा सेव्या श्रीमद्भागवती कथा। (भागवत माहात्म्य ३।२५)

अन्त्यमा, पाशुपत क्षेत्र नेपालको पूर्वी भाग झापा जिल्ला विर्तामोड नपा वडा नं. २, चारपानेमा रहेको श्रीविवेकाश्रम र श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयले प्रकाशन गर्न लागेको ऐतिहासिक 'श्रीविवेकाश्रम स्मारिका' ले महत्त्वपूर्ण कार्यलाई संरक्षण, संवर्द्धन गर्ने आशा लिइएको छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमद्भगवत्पाद आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्यको दर्शन

✍ डा. बीपीराज न्यौपाने

पूर्वीय परम्पराअनुसार वेद अपौरुषेय हो। वेद कुनै पुरुषविशेषद्वारा निर्मित होइन। अतः यस वेदबोधित व्यवस्थामा पुरुषस्वभावजन्य त्रुटि, भ्रम, प्रमाद, लिप्सा आदिको सम्भावना हुँदैन। पुरुषनिर्मित पदार्थमा स्वार्थ या परार्थ अथवा पक्षपात जस्तो बुझिन्छ, वेदबोधित भएको हुनाले यो व्यवस्था जब स्वयं ईश्वरप्रदत्त नै हो तब त्यो वैदिक धर्म विश्वजनीन या मानव मात्रको धर्म हो, यसै कारणले यसलाई सनातन धर्म भनिन्छ। यो सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, परमपिता, परमेश्वरको निश्वासभूत वेद भगवान्द्वारा बोधित मानव मात्रको कल्याणकारक सनातन धर्म या सार्वभौम कर्म हो।

भगवान् विश्वनाथसँग शास्त्रार्थ

अनेकौं विचित्र घटनाहरूले भरिएको छ आचार्य शङ्करको जीवनी। ती घटनाहरूमध्ये केही यस्ता घटना छन् जसलाई बिर्सन सकिँदैन। वाराणसीमा भएको एउटा घटनाबाट उहाँको जीवनीलाई बुझ्न सरल हुन्छ। यो घटना यस्तो प्रकारको छ - आचार्य शङ्कर भ्रमणकै क्रममा भूतभावन भगवान् विश्वनाथको नगरी काशीमा पुग्नुभयो र मणिकर्णिका घाटमा गएर अद्वैतवादको उपदेश गर्नुभयो। साना शङ्करजीको विलक्षण बुद्धि देखेर काशीका विद्वान्हरू आनन्दले गद्गद भए। यस ठाउँमा शङ्करले पहिलो शिष्य प्राप्त गर्नुभयो - सनन्दन, जो चोल देशका बासिन्दा थिए।

कुनै दिन आचार्य शङ्कर जब आफ्ना विद्यार्थीका साथ मध्याह्न कर्मका निम्ति गङ्गातटमा जाँदै हुनुहुन्थ्यो, त्यसै समयमा चार वटा कुकुर लिएर हिंडेको भयङ्कर चाण्डालसँग बाटामा जम्काभेट भयो। आचार्य शङ्करले त्यस व्यक्तिलाई आफ्नो बाटोबाट हट्न जब आदेश दिनुभयो तब चण्डालले जोडसँग कराएर भन्यो तपाईं त सन्न्यासी हो साथै विद्यार्थीलाई अद्वैत तत्त्वको शिक्षा दिनुहुन्छ परन्तु तपाईंको यस कुराले साबित गर्यो कि तपाईं केही पनि जान्नुहुन्न रहेछ। जब यो संसार का कुना-कुनामा उनै सच्चिदानन्द परम ब्रह्मबाट व्याप्त भइरहेको छ

✍ *उपप्राध्यापक, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब कोही कसैलाई कहाँ छाडेको छ ? तपाईं पवित्र सन्न्यासी हो, म जन्मसिद्ध चाण्डाल हुँ, यो पनि तपाईंको दोस्रो आग्रहमात्र हो, किनकि जो चैतन्य तत्त्व विष्णु आदि देवताहरूमा प्रकट हुन्छन् जुन किराफट्याङ्ग्रा आदि रूपमा प्रादुर्भाव भइरहेका छन्। अब तपाईं बाटोबाट हट्नुहोस् भनिसकेपछि कसलाई हटाउन खोजेको हो देहलाई या आत्मालाई? यदि तपाईं चाण्डाल जातिका निम्ति यो पाञ्चभौतिक देहलाई हटाउन चाहनुहुन्छ? त्यसो हो भने अन्नमय यो देह तपाईं र हाम्रो समान हो किनकि दुवै समान तत्त्वले बनेका छौं। यदि तपाईं देहस्थित आत्मालाई नै आत्माको बाटोबाट हटाउन चाहनुहुन्छ त्यही त असम्भव छ। किनकि आत्मा व्यापक छ। व्यापक वस्तु यता उता कहीं पनि जान सक्दैन।

आचार्य माधवले आफ्नो शङ्करदिग्विजय महाकाव्यको छैटौं सर्गमा चाण्डालको यस प्रश्नको जवाफ अत्यन्त दार्शनिक ढङ्गबाट सुन्दर तरिकाले प्रस्तुत गर्नुभएको छ -

शङ्करो दिवसमध्यमभागे पङ्कजोत्पलपरागकषायाम्।
जाह्नवीमभिययौ सह शिष्यैराह्निकं विधिवदेष विधित्सुः।।

मध्याह्नको समयमा आचार्य शङ्कर आफ्ना शिष्यहरूका साथ मध्याह्नको धार्मिक कृत्य गर्नका लागि कमल पुष्पको परागबाट सुगन्धित गङ्गातटतर्फ जानुभयो।

सोऽन्त्यजं पथि निरीक्ष्य चतुर्भिर्भीषणैः श्वभिरनुद्रुतमारात्।
गच्छ दूरमिति तं निजगाद प्रत्युवाच ननु शङ्करमेनम्।।

बाटोमा शङ्करजीले भयानक चार कुकुरले घेरेको एक चाण्डाल देखेर टाढा हट्नुहोस् टाढा हट्नुहोस् यसो भनेपछि चाण्डालले शङ्करजीसँग भन्यो-

अद्वितीयमनवद्यमसङ्गं सत्यबोधसुखरूपमखण्डम्।
आमनन्ति शतशो निगमान्तास्तत्र भेदकलना तव चित्रम्।।

सयौं उपनिषदादि ग्रन्थहरूले अद्वितीय, असङ्ग अनिन्दनीय सत् चित् आनन्दरूप भेदहीन अखण्ड ब्रह्मलाई नै प्रतिपादन गर्दछन्। यस्तोमा पनि तिमी भेदको कल्पना गर्दछौ। यो निकै आश्चर्यको कुरा हो। एउटै ब्रह्म जब प्रत्येक शरीरमा व्याप्त छ, त्यसो हुँदा कसैलाई भिन्न सम्झिनु एकदमै अनुचित छ।

दण्डमण्डितकरा धृतकुण्डाः पाटलाभवसनाः पटुवाचः।
ज्ञानगन्धरहिता गृहसंस्थान् वञ्चयन्ति किल केचन वेषैः।

दण्ड, कमण्डलु आदि धारण गरेर लुगालाई पहेलो रङ्गले रँगाएर केही बोलचालको चतुरता प्राप्त गरेर वस्तुतः ज्ञानका गन्धले रहित भएर मानिसहरू केवल भेष मात्रले गृहस्थहरूलाई ठग्ने गर्छन्।

गच्छ दूरमिति देहमुताहो देहिनं परिजिहीर्षसि विद्वन्।
भिद्यतेऽन्नमयतोऽन्नमयं किं साक्षिणश्च यतिपुङ्गव साक्षी।।

हे विद्वन् ? तपाईंले जे भन्नुभयो (बाटो छोड), भन्नुको तात्पर्य के शरीरसँग हो अथवा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देहीसँग हो। यो शरीर अन्नद्वारा परिपुष्ट भएका कारणले अन्नमय मानिन्छ। के एउटा अन्नमय अर्को अन्नमयभन्दा भिन्न हो? यस शरीरभित्र बसेको जुन जीव हाम्रो समग्र क्रियाहरूको द्रष्टा भएको हुनाले साक्षी भनिएको हो, त्यस कारण के एउटा साक्षी अर्को साक्षीभन्दा भिन्न हुन सक्छ ?

ब्राह्मणश्वपचभेदविचारः प्रत्यगात्मनि कथं तव युक्तः।
विम्बितेऽम्बरमणौ सुरनद्यामन्तरं किमपि नास्ति सुरायाम्।।

के प्रत्यगात्म (ब्रह्म) का विषयमा ब्राह्मण र चाण्डालको भेद गर्नु तपाईं जस्तो अद्वैतवादीका लागि ठिक हुन्छ ? गङ्गामा अथवा मदिरामा प्रतिविम्बित हुने सूर्यमा के कस्तो प्रकारको भेद हुन्छ ? परन्तु दुवै वस्तुमा बिम्बीभूत सूर्य ता एउटै नै हो, त्यसै गरी प्रत्येक शरीरमा स्थित साक्षी आत्मा भने एउटै नै हो।

शुचिर्द्विजोऽहं श्वपच व्रजेति मिथ्याग्रहस्ते मुनिवर्य कोऽयम्।
सन्तं शरीरेष्वशरीरमेकमुपेक्ष्य पूर्णं पुरुषं पुराणम्।।

हे मुनिवर ! म पवित्र छु, तिमी अपवित्र चाण्डाल हौ, त्यस कारण तिमीले ठाउँ छोडनु पर्छ, यस्तो खालको मिथ्या आग्रह कस्तो हो, किनकि शरीरमा बस्ने एउटा पूर्ण अशरीरी पुराण पुरुषलाई यस प्रकारले अपमान गर्दै हुनुहुन्छ।

अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमाद्यं विस्मृत्य रूपं विमलं विमोहात्।
कलेवरेऽस्मिन् करिकर्णलोलाकृतिन्यहंता कथमाविरास्ते।।

अचिन्तनीय, अव्यक्त, अनन्त, आद्य, उपाधिशून्य आफ्नो स्वरूपलाई अज्ञानद्वारा बिर्सिएर, हात्तीको कानझैं चञ्चल रहेको यस शरीरमा तपाईं भिन्नताको भावना किन गर्दै हुनुहुन्छ।

विद्यामवाप्यापि विमुक्तपद्यां जगर्ति तुच्छा जनसंग्रहेच्छा।
अहो महान्तोऽपि महेन्द्रजाले मज्जन्ति मायाविवरस्य तस्य।।

यदि यस्तो हो भने अज्ञानी मानिसहरूको मान्यताअनुसार यस्तो गर्दै छु, त्यसो हो भने मोक्षमार्ग रूपी विद्यालाई प्राप्त गरेर पनि तिम्रा हृदयमा सामान्य मानिसहरूप्रतिको यस्तो तुच्छ खालको विचार किन आइरहेको छ ? यो आश्चर्यको कुरा हो किनकि मायाविशिरोमणि परमात्माको विशाल इन्द्रजालमा तपाईं जस्तो महान् पुरुष पनि कसरी निमग्न हुँदै हुनुहुन्छ ?

यस्तो प्रकारको वचन भनेर जब चाण्डाल चुप लाग्यो, अनि चाण्डालको यस्तो प्रकारको विचार सुन्नेवित्तिकै आचार्य शङ्करलाई यो मान्छे चाण्डाल हो भन्ने विषयमा शङ्का लाग्यो। उहाँले स्पष्टसँग भन्नुभयो जुन सद्बुद्धि पुरुषका लागि यो सम्पूर्ण विश्व सधैं आत्मा रूपमै प्रकट हुन्छ, त्यो चाहे ब्राह्मण होस् चाहे चाण्डाल नै किन नहोस् त्यो मेरा लागि वन्दनीय छ।

भाति यस्य तु जगददृढबुद्धेः सर्वमप्यनिशमात्मतयैव।
स द्विजोऽस्तु भवतु श्वपचो वा वन्दनीय इति मे दृढनिष्ठा।।

आचार्य शङ्करको यस्तो भावना सुन्नेवित्तिकै त्यो चाण्डाल हरायो र शङ्करले आश्चर्यमय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रद्वारा हेर्दा त्यस ठाउँमा भगवान् अष्टमूर्ति विश्वनाथलाई देखुभयो। आचार्य शङ्करले भूतभावन भगवान् विश्वनाथको स्तुति यसरी गर्नुभयो -

दासस्तेऽहं देहदृष्ट्याऽस्मि शम्भो जातस्तेंऽशो जीवदृष्ट्या त्रिदृष्टे।
सर्वस्याऽऽत्मन्नात्मदृष्ट्या त्वमेवेत्येवं मे धीर्निश्चिता सर्वशास्त्रैः।।

हे शम्भो ! देहविचारबाट म हजुरको दास हुँ। अनि हे त्रिलोचन ! जीवका दृष्टिबाट म तपाईंकै अंश हुँ। शुद्ध आत्मादृष्टिले विचार गर्दा सबैको आत्मा नै हजुर हो। यो दृष्टिले म तपाईंदेखि कुनै पनि प्रकारले भिन्न छैन। सम्पूर्ण शास्त्रद्वारा निश्चित गरिएको मेरो ज्ञान यही हो। यस्ता प्रकारका स्तुतिले प्रसन्न भएर भनवान् विश्वनाथले आचार्य शङ्करलाई ब्रह्मसूत्र भाष्य लेख्न आज्ञा दिनुभयो।

आचार्य शङ्करले व्यासाश्रममा गएर भाष्य लेख्ने विचार गर्नुभयो। आफ्ना शिष्यमण्डलीका साथ गङ्गातिरबाट व्यासाश्रम पुग्नुभयो र त्यहाँबाट सिधै बदरीनाथ पुग्नुभयो, त्यहाँ पुगेर उहाँले यज्ञेश्वर भगवान् विष्णुको प्राचीन मूर्तिको उद्धार गर्नुभयो। त्यस ठाउँका ब्राह्मणहरूमा वेदको ज्ञान अभाव भएको देखेर उहाँले वैदिक नम्बूदरी ब्राह्मणहरूलाई भगवान्को पूजा अर्चनाका लागि छान्नुभयो। आचार्यद्वारा प्रवर्तित यो परम्परा अहिलेसम्म विद्यमान छ। ती पुजारी आजभोलि रावलका नामले प्रसिद्ध छन्।

आचार्य शङ्करको अद्वैत सिद्धान्त

आचार्यको अद्वैत-वेदान्त सिद्धान्तअनुसार केवल ब्रह्मको मात्र सत्तालाई स्वीकारिएको छ। नाम रूपात्मक मायिक जगत् स्वप्नवत् हुनाले यसको कुनै सत्ता या परमार्थता छैन उहाँको भनाइअनुसार प्रमाण आदि समस्त व्यवहारभन्दा पहिले नै त्यस आत्माको सिद्धि हुन्छ। त्यसैले आत्माको निराकरण हुन सक्दैन। निराकरण त कुनै आगन्तुक वस्तुको मात्र हुन्छ, स्वभावको हुँदैन। के अग्निबाट ऊष्णतालाई निराकृत गर्न सकिन्छ। भावपरिवर्तन केवल ज्ञातव्यमा सम्भव हुन्छ, ज्ञातामा होइन। यस कारण प्रमाणका सिद्धिको करणीभूत आत्मा कुनै पनि प्रमाणका बलमा कसरी सिद्ध गर्न सकिन्छ र ? त्यस कारण आत्माको सत्ता स्वयंसिद्ध हुन्छ, किनकि आफ्नो अस्तित्वका विषयमा कुनै पनि प्राणीहरूलाई सन्देह हुँदैछ।

शङ्कराचार्यका अनुसार यो (आत्मा) ब्रह्म नै एक मात्र परम सत्य हो। जीव र जगत्को सत्ता मिथ्या हो। अज्ञानका (माया, अविद्या) कारण जीव र जगत्को सत्ता प्रतीत हुन्छ, किन्तु यो डोरीमा सर्पको प्रतीतिझैं असत्य छ, र जब ज्ञानद्वारा यो आभास नष्ट हुन्छ त्यसपछि ब्रह्म मात्र अवशिष्ट रहन्छ। अद्वैत सिद्धान्तअनुसार ब्रह्म निर्गुण छ, अनन्त छ, किन्तु मायाद्वारा उपहित भएर जीवका लागि उपास्य र जगत्का लागि सृष्टिकर्ता हो।

यस ब्रह्मसँग तादात्म्य प्राप्त गर्नु नै प्रत्येक जीवका लागि जीवनको लक्ष्य हो। यस प्रकारको ऐकात्म्यलाई अनुभव गर्नु नै आत्माको वास्तविक स्वरूप अनुभव हुनु हो। यसैलाई मोक्ष भनिन्छ। मोक्ष प्राप्ति ज्ञानद्वारा हुन्छ, किनकि सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म आदि श्रुतिमा ज्ञानलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नै आत्मस्वरूप भनिएको छ। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः यस श्रुतिका अनुसार ज्ञानका अतिरिक्त कुनै अन्य साधनद्वारा मोक्ष प्राप्ति हुँदैन। भक्ति र कर्म ता ज्ञानका सहायक हुन्छन्, किनकि यसबाट आत्मसंस्कार हुने हुनाले मनुष्य ब्रह्म ज्ञानको अधिकारी हुन्छ। यस प्रकार ज्ञान प्राप्ति हुँदा जीवलाई ब्रह्म स्वरूपको बोध या आत्मानुभव हुन्छ। यस्तो अवस्थामा जीवको जीवका रूपमा अस्तित्व रहँदैन, किन्तु यो ब्रह्म रूपद्वारा अनन्त सत्तामा परिणत हुन्छ। परिच्छिन्न जीव भावको निवृत्ति नै अपरिच्छिन्न ब्रह्म प्राप्ति हुनु हो। यो नै मोक्ष हो। यस्तो परिस्थितिमा जगत्को पनि कुनै सत्ता रहँदैन, किनकि जीव र जगत् दुवैको सत्ता व्यावहारिक हो। जबसम्म जीव सांसारिक बन्धनमा रहन्छ, तबसम्म त्यसको प्रतीति भइ नै रहन्छ, मोक्षको अवस्थामा सम्पूर्ण सांसारिक बन्धनबाट मुक्त भएर स्वप्रकाश चैतन्य स्वरूप, अखण्ड ब्रह्ममा पर्यवसान हुन जान्छ। अद्वैत सिद्धान्तअनुसार यो स्थिति नै सर्वोच्च स्थिति हो। आध्यात्मिक मार्गका पथिकको यो नै चरम गन्तव्य स्थान हो। जीवनमा साधनाको परमसिद्धि हो, जहाँबाट पुनः यो जन्म-मरणका जञ्जालभूत संसारमा आउनु पर्दैन।

आचार्य शङ्करका अनुसार मायाको स्वरूप

आचार्य शङ्करको महती विशेषता के छ भने उहाँले उपनिषद् प्रतिपाद्य सिद्धान्तहरूको समन्वय आफ्नो ब्रह्मसूत्रभाष्यमा युक्तिमत्तापूर्वक गरेका छन्। उपनिषद्हरूमा एकातर्फ जगत्लाई ब्रह्मसँग उत्पत्तिको वर्णन गरिएको छ, अर्कातर्फ ब्रह्मलाई नै एकमात्र सत्य मानिएको छ र विद्याद्वारा जगत्को नानात्व रूप भएर एकत्व प्राप्तिको प्रतिपादन हो। यस्ता खालका विरुद्ध वाक्यहरूको समन्वय गरेर आचार्यद्वारा जगत्लाई स्वप्नवत्, मरुमरीचिका या इन्द्रजालझैं असत्य मानिएको छ। यदि जगत् सत्य हो भने ब्रह्म ज्ञान भएपछि कसरी जगत्को बाध हुन्छ ? यदि ब्रह्म निर्गुण हो भने स्रष्टा कसरी हुन सक्छ। यस खाले विषम समस्याको समाधान गर्न बिचमा मायालाई स्वीकार नगरी हुँदैन। अतः मायालाई सत् ब्रह्म र असत् जगत्लाई जोड्ने कडीका रूपमा मानिएको छ। यस उद्देश्यद्वारा आचार्यले माया जस्तो तत्त्वलाई कल्पना गरे। यो माया न सत्य छ न असत्य नै छ।

यद्यपि उपनिषदादि ग्रन्थहरूमा माया शब्दको प्रयोग धेरै नै पाइन्छ, इन्द्रो मायाभिःपुरुरूप ईयते इत्यादि। गीतामा पनि माया शब्दलाई धेरै ठाउँमा प्रयोग गरिएको पाइन्छ। मायामेतां तरन्ति ते यत्रारुद्धानि मायया, योगमायां समाश्रित्य इत्यादि। परन्तु अद्वैतवादमा मायालाई यसरी सदुपयोग गर्ने श्रेय आचार्य शङ्करलाई जान्छ।

जगत्को कारण ब्रह्म

यद्यपि ब्रह्मको स्वरूपलक्षण **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म** इत्यादि रहेको छ, परन्तु ब्रह्मको तटस्थ लक्षण ब्रह्मसूत्रअनुसार **जन्माद्यस्य यतः** इत्यादि हो। अर्थात् जसबाट जगत्को उत्पत्ति, स्थिति तथा लय हुन्छ त्यो नै ब्रह्म हो। जब ब्रह्म निर्गुण एवं निर्विकार हुन्छ। त्यसो हो भने त्यसबाट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नामरूपात्मक जगत्‌को उत्पत्ति कसरी हुन्छ, यसकै उपपत्तिका लागि मध्यमा मायाको कल्पना गर्नु अनिवार्य जस्तै भयो। यसै मायालाई ब्रह्मको शक्ति भनिन्छ। यो संसारको उपादान कारणरूपा हो। नामरूपात्मक जगत् यसै मायामा सूक्ष्म रूपले अवस्थित छ। त्यसै कारणले यसलाई अव्यक्त पनि भनिएको हो। मायाको उपाधिले युक्त भएको हुनाले ब्रह्म निर्गुण नभएर सगुण हुन्छ। त्यसैलाई ईश्वर भनिन्छ। यो ईश्वर संसारको कर्ता हो। त्यसैले ईश्वरलाई तटस्थ लक्षणद्वारा प्रतिपादन गरिएको छ। ब्रह्मसूत्रभाष्यमा आचार्य शङ्कर लेख्नुहुन्छ -

परमात्मनः (ईश्वरस्य) स्वरूपाश्रयमौदासीन्यम् मायाव्ययाश्रयञ्च प्रवर्तकम्।

आफ्नो शुद्ध चैतन्यरूपले इश्वर यस् जगत्‌को निमित्त कारण मानिन्छ, परन्तु मायाका उपाधिले युक्त चैतन्यरूपद्वारा उपादान कारण मानिन्छ। यो जगत् ब्रह्मको विवर्त हो, तर मायाको परिणाम हो। यी संसारका सम्पूर्ण कार्यहरूको कारण-शक्तिको सामूहिक रूप नै माया हो, यसको आश्रय भने ब्रह्म हो, जसलाई मायाले युक्त भएपछि ईश्वर भनिन्छ।

अव्यक्तं सर्वकार्यकारणशक्तिसमाहाररूपे परमात्मनि ओतप्रोतभावेन समाश्रितम् (शाङ्करभाष्य) ईश्वर सृष्टिका लागि पूर्णतः मायामा आश्रित रहेको छ। संसार मायाको जञ्जाल हो। एउटै ब्रह्म मायाका कारणले नाना रूपहरूमा अवभासित हुन्छ।

एक एव परमेश्वरः कूटस्थनित्यो नामधातुः अविद्यया मायावीवदनेकधा विभाव्यते।

वेदान्तका अनुसार मायाको स्वरूप अनिर्वनीय छ। यदि मायालाई सत् मान्ने हो भने अद्वैत सिद्धान्तमा बाधा आउँछ। अर्को कुरा सत् हुने हो भने यो कहिल्यै नाश हुँदैन त्यसैले यसलाई सत् रूप मान्न सकिँदैन। शशविषाणादिझैं यसलाई एकान्त असत् पनि मान्न सकिँदैन किनकि जगत्‌रूपी प्रपञ्चलाई उत्पन्न गर्न सक्ने शक्तिलाई अवश्य भावरूप मान्नुपर्छ। नैयायिकहरूले अज्ञानलाई ज्ञानाभाव मान्दछन् भने वेदान्तीहरूले यो अज्ञान या मायालाई भावरूप नै मान्दछन्। आचार्य शङ्करले पनि जगत्‌को कारणभूता मायालाई त्रिगुणात्मक भनेका छन्।

अव्यक्तनाम्नी परमेशशक्तिः अनाद्यविद्या त्रिगुणात्मिका परा।
कार्यानुमेया सुधियैव माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते।।

भावरूप हुँदाहुँदै पनि ब्रह्मज्ञान भइसकेपछि माया नष्ट हुन्छ, अतः तर्कद्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त गर्न सकिँदैन। ज्ञानका अगाडि माया टिक्न सक्दैन। ज्ञानले मायालाई जान्नु भनेको जस्तो कि दियोको उज्यालोमा अँध्यारो देख्नु। ज्ञानको जब उदय हुन्छ त्यो यसरी नष्ट हुन्छ मानौं *सूर्योदय भएपछि अन्धकार।*

अज्ञानं ज्ञातुमिच्छेद् यो ज्ञानेनात्यन्तमूढधीः। स तु नूनं तमः पश्येद् दीपेनोत्तमतेजसा।।
सेयं भ्रान्तिः निरालम्बा सर्वन्यायविरोधिनी। सहते न विचारं सा तमो यद्वद् दिवाकरम्।।

अज्ञान नाश भएपछि नामरूपात्मक जगत् पनि ज्ञानीका लागि नष्ट हुन्छ र उसले ब्रह्म प्राप्ति गर्दछ। वेदान्तले तीन प्रकारका सत्ताहरू स्वीकार गरेको छ।

क) पारमार्थिक सत्ता। ख) व्यावहारिक सत्ता। ग) प्रातिभासिक सत्ता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क) पारमार्थिक सत्ता- पारमार्थिक सत्ता वास्तविक सत्ता हो। जब ज्ञानका दृष्टिले जगत्लाई हेरिन्छ भने त्यो असत्य प्रतीत हुन्छ, त्यस कारण जगत् हाम्रा इन्द्रियका लागि अवश्य सत्य छ, परन्तु वास्तविक रूपमा त्यो सत्य छैन।

ख) व्यावहारिक सत्ता- जगत्को समस्त व्यावहारिक विषयता पदार्थहरूमा रहन्छ। यी जागतिक पदार्थ पाँच प्रकारका धर्महरूले युक्त छन् - अस्ति, भाति, प्रिय, नाम तथा रूप। सुरुका तीन वटा केवल ब्रह्मका रूपमा छन् भने अन्तिमका दुईले नाम र रूपात्मक जगत्लाई बताउँदछन्। यद्यपि नामरूपात्मक सांसारिक पदार्थहरूको कुनै पनि पारमार्थिक सत्ता हुँदैन, तर पनि व्यवहार कालमा यसको सत्ता मान्नु अत्यन्त आवश्यक हुन्छ। त्यसैले व्यवहार कालमा नै सत्ता हुने भएका कारणले जगत्को तथा जागतिक पदार्थको सत्ता व्यावहारिक सत्ता हुन्छ।

ग) प्रातिभासिक सत्ता- प्रतीति कालमा सत्यझैं लाग्ने हुन्छ परन्तु पछि बाधित हुनेलाई प्रातिभासिक सत्ता भनिन्छ। अँध्यारोमा रहेको डोरी सर्पझैं देखिन्छ, अतः यहाँ सर्प एउटा प्रतिभासिक पदार्थ हो। त्यहाँ उज्यालो बालेर हेर्दा सर्प हराउँछ, अधिष्ठान डोरी मात्र देखिन्छ। डोरीमा सर्प भएझैं यस संसारलाई पनि बुझ्नुपर्छ। आविद्यिक दृष्टिको अध्यस्त यो संसार सत्य जस्तो प्रतीत हुन्छ, परन्तु वेदान्तका दृष्टिले यो सारा प्रपञ्च बाधित हुन्छ र केवल ब्रह्म सत्य मात्रै रहन्छ।

ब्रह्म

आचार्य शङ्करका अनुसार ब्रह्म एउटा यस्तो सर्वव्यापी सत्ता हो, जुन यस जगत्का अणु-अणुमा व्याप्त रहेको छ। निराकार, निर्विकार, अविनाशी, अनादि, चैतन्य तथा आनन्दमय छ, ब्रह्मको अस्तित्वलाई सिद्ध गर्न आचार्यले कुनै आवश्यकता ठान्नुभएन। पहिलो कुरा त आफ्नो आत्माको अस्तित्वबाट नै ब्रह्म स्वतः सिद्ध हुन जान्छ, सर्वस्यात्मभावात् ब्रह्मास्तित्वसिद्धः अर्को कुरा श्रुतिप्रमाणले पनि स्वतः सिद्ध गरेको छ। श्रुतिहरू ब्रह्मलाई साक्षात्कार गराउने ऋषिहरूको अनुभूतिकै अभिव्यक्ति हुन्। त्यस कारण ब्रह्मका बारेमा शङ्का गर्न मिल्दैन। ब्रह्मको सिद्धि अनुमान प्रमाणले कहिलै पनि गर्न सकिँदैन। त्यसका लागि शब्द-प्रमाणको आश्रय लिनु पर्छ। ब्रह्म भनेको सच्चिदानन्दरूप हो। सत्को अर्थ जुन आफ्नो निश्चित रूपबाट कहिलै पनि व्यभिचरित हुँदैन। यद्रूपेण यन्निश्चितं तद् रूपं न व्यभिचरितम् अर्थात् सत्यको कहिल्यै पनि बाध हुन सक्दैन। **सत्यत्वं बाधराहित्यम्** ब्रह्म ज्ञानस्वरूप एवं चैतन्य हो। त्यो सधैं प्रबुद्ध छ, स्वप्न, सुषुप्ति वा जाग्रत अवस्थाहरूले अबाधित छ। यो स्वतः प्रकाशशील छ, पूर्णकाम भएका कारणले त्यो आनन्दघन छ। यसको विपरीत संसार अनृत, जड तथा दुःखमय छ। विवेक चूडामणिमा आचार्यले ब्रह्म स्वरूपको वर्णन यसरी गर्नुभएको छ-

अतः परं ब्रह्म सदद्वितीयं विशुद्धविज्ञानघनं निरञ्जनम्।
प्रशान्तमाद्यन्तविहीनमक्रियं निरन्तरानन्दरसस्वरूपम्।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईश्वर

ब्रह्म आफ्नो बीजशक्ति अनादि मायाद्वारा नै जगत्को उत्पत्तिका लागि तटस्थलक्षणलाई धारण गर्दछ। माया शक्तिले युक्त यस ब्रह्मलाई नै सगुण ब्रह्म या ईश्वर भनिन्छ। उपनिषद्हरूमा दुई प्रकारका ब्रह्मको वर्णन पाइन्छ, परब्रह्म र अपरब्रह्म। प्रथम निर्गुण ब्रह्म, द्वितीय सगुण या ईश्वर। पहिलो निरूपाधिक छ, दोस्रो सोपाधिक छ। निर्गुण ब्रह्मको व्याख्या या परिभाषा हुन सक्दैन। त्यो अवाङ्मनसगोचर छ। सीमित विचारले गृहीत गर्न सकिंदैन। ब्रह्मका विषयमा गरिने छलफल सबै ईश्वरकै विषयमा हुन्। जुन समय हामी अनुपहित ब्रह्मका बारेमा बताउँछौं तत् क्षण त्यो उपहित ईश्वर भइहाल्छ। त्यही ईश्वर नै जगत्को उपादान कारण र निमित्त कारण पनि हो। जसरी माकुरो आफ्नो चैतन्यांशद्वारा जालो उत्पत्तिमा निमित्त कारण हुन्छ र आफ्नो शरीरले उपादान कारण हुन्छ। त्यस्तै प्रकारले ईश्वर पनि उपाधि-मायाका प्राधान्यद्वारा जगत्को उपादान कारण हो र शुद्ध चैतन्यका प्रधानताले निमित्त कारण हो। जगत् मायाको परिणाम हो। परन्तु जगत् ब्रह्मको विवर्त हो।

यो ईश्वर स्थावर र जङ्गम समस्त प्रपञ्चको साक्षी हुने भएकाले तथा समस्त अज्ञानलाई प्रकाशित गर्ने भएका कारण सर्वज्ञ छ। सम्पूर्ण जीवहरूलाई उनीहरूको कर्मअनुसार फल दिने हुनाले सर्वेश्वर भनिन्छ। सबै जीवलाई आफ्नो आफ्नो कर्ममा प्रेरणा दिने हुनाले सर्वनियन्ता भनिन्छ। सपूर्ण जीवको अन्तर्हृदयमा स्थित भएर उनीहरूलाई नियन्त्रित गर्ने भएका कारण अन्तर्यामी पनि भनिन्छ। ईश्वर नै जगत्को कर्ता, पालक, एवं संहर्ता हो। यो सगुण ईश्वर उपासकहरूको उपासनाको विषय पनि हो। किनकि ब्रह्म ता प्रशान्तता अथवा क्रियाले रहित छ। त्यसैले ब्रह्मको उपासना हुन सक्दैन। मायायुक्त सगुण ब्रह्म (ईश्वर) को मात्रै उपासना हुन सक्छ।

निर्गुणमपि सद् ब्रह्म नामरूपगतर्गुणैः सगुणम् उपासनार्थमुपदिश्यते (शाङ्करभाष्य)
उपासकहरूका भक्तिले प्रसन्न भएर यस ईश्वरले विभिन्न रूपलाई धारण गर्ने गर्दछ।

जीव

आत्मा या परब्रह्म एउटा अद्वितीय तथा आकाश झैं विभु छ। यो जगत्को आधार हो। यो व्यापक चैतन्य जब विशुद्ध मायाका उपाधिले उपहित हुन्छ, अनि सगुण भएर ईश्वरका नामले पुकारिन्छ। जब यो चैतन्य इन्द्रिय-मन-अहङ्कारादि उपाधिहरूले युक्त हुन्छ अनि जीव नामले पुकारिन्छ। यद्यपि आत्मा एउटै हुन्छ, तर उपाधिभेदका कारणले त्यो अनेक जीवहरूका रूपमा प्रतीत हुन्छ।

पर एवात्मा देहिन्द्रियमनोबुद्ध्याद्पाधिभिः परिच्छिद्यमानो बालैः शरीर इत्युपचर्यते। *(शाङ्करभाष्य)*

मन-बुद्धि-अहङ्कारादि अन्तःकरणको उपाधिले नै जीवलाई विभुबाट पृथक् गर्दछ। आत्मा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असंसारी र अतीन्द्रिय चैतन्य हो भने जीव व्यावहारिक चैतन्य हो। यो जीव आत्माको अंश पनि होइन र परिणाम पनि होइन। जीव भनेको आत्माको विभिन्न रूपमा प्रतीति मात्र हो। शरीरादि अविद्याको परिणाम हो तर वास्तविक चाहिँ होइन। जब जीवगत अविद्या नष्ट हुन्छ अनि फेरि त्यो मूलरूप आत्मामा आउँछ-

मायानिर्मितस्य जीवस्य अविद्याप्रत्युपस्थापितस्य अविद्यानाशे स्वभावरूपत्वात् (शाङ्करभाष्य)

जीव नै प्रमाता, भोक्ता तथा कर्ता हो उसैले शुभाशुभ कर्महरूलाई अर्जित गर्दछ र त्यसको फल भोग गर्दछ। स्वयं आवागमन र संसरण गर्दछ, ऊ आफैं बन्ध र मोक्षको अधिकारी हुन्छ। यद्यपि आत्मा चिदानन्दमय हुने भएकाले अमर्त्य छ, परन्तु कामनाहरूबाट गरिएका कर्म र त्यसको भोग गर्नका लागि शरीर धारण गर्ने र कर्मफलहरूको अवसानमा मर्ने भएका कारणले गर्दा यसलाई मर्त्य पनि भनिन्छ। यद्यपि विज्ञानात्मा परमात्मनोऽनन्य एव तथापि अविद्याकामकृतं तस्मिन् मर्त्यत्वमधिरोपितम्। (शाङ्करभाष्य) इत्यादि भनिएको छ।

जगत्

नित्य परिवर्तनशील, तथा परिणामी स्वभाव भएको र माया शक्तिद्वारा सगुणभूत यो जगत् परमार्थतः सत्य छैन। किनकि परिणाम या परिवर्तन यस जगत्को स्वभाव हो, यो एक क्षणका लागि पनि प्रवृत्तिशून्य नभई रहन सक्दैन अर्थात् यो हरेक क्षण परिवर्तनशील छ। सत्यका सम्बन्धमा शङ्कराचार्यले जुन परिभाषा गर्नुभएको छ, उहाँका अनुसार यो जगत् सत्य छैन। आचार्यका शब्दमा जुन रूपबाट जुन पदार्थ निःसृत हुन्छ, त्यही रूपबाट त्यसको बाध नहुनु सत्यत्व हो। परन्तु प्रतिक्षण परिणामी, नियमित परिवर्तनशील यो संसारको कुनै पनि वस्तु यस परिभाषाका अनुसार सत्य कोटिमा आउँदैन। स्वप्नझैं यो जगत् मिथ्या छ। स्वप्नमा देखिएका पदार्थ जाग्रत् अवस्थामा प्राप्त नहुने हुनाले बाधित हुनु प्रत्यक्ष नै हो। परन्तु जाग्रत अवस्थामा अनुभूत स्तम्भादि पदार्थको कुनै पनि दशामा बाध हुँदैन। अर्को कुरा स्वप्नज्ञान स्मृति मात्र हो जबकि जागृत ज्ञान उपलब्धिस्वरूप छ, यस प्रकारले स्वप्न तथा जाग्रत् दशामा स्पष्ट अन्तर भएको हुनाले यो जगत्लाई पनि स्वप्न जस्तै एकदमै असत्य पनि भन्न सकिँदैन। व्यावहारिक सत्तामा जागतिक पदार्थहरूको कथमपि अस्वीकार गर्न सकिँदैन। अतः जगत्को पारमार्थिक सत्ता नहुने हुँदा पनि व्यावहारिकी सत्ता सर्वथा मान्य छ।

तमःप्रधान विक्षेपशक्तिले संयुक्त अज्ञानोपहित चैतन्यबाट सूक्ष्म तन्मात्राहरू र आकाशको उत्पत्ति भएको हो। आकाशबाट वायुको वायुबाट अग्निको अग्निबाट जलको जलबाट पृथ्वीको उत्पत्ति भयो। यी सूक्ष्म भूतहरूका सात्त्विक, राजस र तामस अंशबाट सत्र अवयव भएका पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय, पञ्च प्राण, बुद्धि र मन सूक्ष्म शरीरहरूको उत्पत्ति तथा स्थूल भूतपदार्थको उत्पत्ति हुन्छ। स्थूल भूतपञ्चीकृत हुन्छन्। प्रत्येक स्थूल भूतपञ्चभूतात्मक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुन्छन्। यसलाई पञ्चीकरण भनिन्छ। वेदान्त सिद्धान्तअनुसार यो जगत् ब्रह्मको विवर्त हो। किनकि यो चैतन्यमा कल्पित असत्य नानारूपात्मक प्रतिभास हो। त्यस कारण यसलाई अनिर्वचनीय पनि भनिन्छ। कार्यको अनिर्वचनीयताको पारिभाषिक संज्ञा विवर्त हो।

परिणाम तथा विवर्तवाद

तात्त्विक परिवर्तनलाई परिणाम तथा अतात्त्विक परिवर्तनलाई विवर्त भनिन्छ। दही दुधको परिणाम हो भने रज्जुसर्पको विवर्त हो किनकि दही आफ्नो मूलतत्त्व दुधबाट परिवर्तित भएर दही बन्दछ। साथै माधुर्यादि आस्वादनमा पनि केही सामनता रहन्छ। परन्तु रज्जुसर्पको सत्ता भनेको ता भिन्न प्रकारको हो। रज्जु आफ्नो मूलरूपले परिवर्तित भएको हुँदैन, अपितु त्यसमा एउटा अनिवर्चनीय सर्पको प्रतीति हुन्छ, जसलाई हामी कल्पनाप्रसूत सर्प पनि भन्न सक्छौं। ठिक यस्तै स्थिति अधिष्ठान ब्रह्ममा अध्यस्त यो जगत्को पनि भएको छ। यसलाई वेदान्त मतानुसार विवर्त भनिन्छ। यद्यपि सत्यको अधिष्ठान ब्रह्म नै हो, यो जगत् त्यसैमा अध्यस्त काल्पनिक तथा मिथ्या छ। परन्तु अनादि अविद्याद्वारा विषयवासनाले वासित अन्तःकरणले संसार पनि (रज्जुमा सर्प भएझैं) मानिसलाई सत्य जस्तै लाग्छ। आत्मा भनेको सत्-चित्-आनन्दस्वरूप हो। परन्तु मानिसले यसमा पनि कर्तृत्व-सुखदुःखादि धर्मको आरोप गर्दछ। यसको एउटै मात्र कारण भनेको अध्यास हो। आचार्यले अध्यासका स्वरूपलाई राम्रोसँग सुबोध भाषामा बताउनुभएको छ। अध्यासो नाम अतस्मिन् तद्बुद्धिः अर्थात् तत् पदार्थमा तद्भिन्न पदार्थकै स्वरूपको आरोप गर्नु नै अध्यास हो। जस्तो आफ्ना पुत्र-कलत्रादि सुखी या दुःखी हुँदा आफूलाई नै सुख, दुःख भएको जुन अनुभव हुन्छ, पुत्र-कलत्रादिलाई सत्कृत या तिरस्कृत गर्दा आफैंलाई सत्कार या तिरस्कार भएको अनुभव हुन्छ भने यो बाह्य धर्मको अध्यास हो। कहिलेकाहीं धर्मी विषयक अध्यास पनि हुन्छ। जस्तो देहेद्रियादि विकृत या अन्ध-बधिरादि हुँदा देहकै धर्मको देही धर्मी (विषयी) आत्मामा यसको अध्यास हुन्छ। जस्तो म अन्धो छु बहिरो छु आदि। यस प्रकार वस्तुमा अवस्तुको जुन आरोप-रूप पाइन्छ त्यो नै अध्यास हो। अतः अध्यारोपापवादाभ्यां निष्प्रपञ्चं प्रपञ्चयेत् इत्यादि न्यायद्वारा जिज्ञासु शिष्यले यस जगत्को वास्तविकता जान्नुपर्दछ।

आत्मा र ब्रह्मको एकता

उपाधिविशिष्ट क्लेशकर्मादिहरूमा बद्ध जीवलाई निरूपाधिक शुद्ध-बुद्ध मुक्त स्वभाव भएको ब्रह्मसँग एकता कसरी सिद्ध गर्न सकिन्छ। तत्त्वमसि महावाक्यको भनाइअनुसार त्वम्=जीव, तत्=ब्रह्म, असि=हौ, अर्थात् जीव र ब्रह्ममा कुनै भेद छैन यी दुवै एउटै हुन्। तत्त्वमसि महावाक्य यी दुवैको अभेद प्रतिपादक वाक्य हो। आपाततः हेर्दा जीव र ब्रह्ममा अनेक विरुद्ध धर्महरूको बाहुल्य देखिन्छ। जीव अल्पज्ञ तथा अणु छ, जब कि ब्रह्म सर्वज्ञ तथा विभु छ। यस किसिमको परिस्थिले गर्दा यी दुवैको एकता कसरी सिद्ध हुन सक्छ ? उपनिषद् महावाक्यको यथार्थ ज्ञान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आद्यावृत्ति वा अविद्यावृत्तिद्वारा गर्न सकिँदैन। यसको ज्ञानका लागि लक्षणावृत्तिको आश्रय लिनुपर्दछ। यस महावाक्यद्वारा वेदान्तको शिक्षा दिने गरिन्छ। जीव र ब्रह्ममा पूर्ण अभेद छ। यी दुवैमा शुद्ध चैतन्यलाई लिएर मात्रै एकता गर्न सकिन्छ। यहाँ एउटा उदाहरण दिएर बताउन खोजिएको छ, **सोऽयं देवदत्तः** यो उही देवदत्त हो, जुन देवदत्तलाई हिजो देखेको थियो, आजको यो उही देवदत्त हो। यहाँ हिजो देखेको देवदत्तसँग अभिन्नता तथा तादात्म्य विद्यमान छ, परन्तु दुवै देवदत्तमा परस्परविरुद्ध धर्म पनि विद्यमान रहेका छन्। त्यसो हो भने यी दुईमा एकता कसरी सिद्ध हुन सक्छ ? लक्षणावृत्ति या भागत्यागलक्षणाद्वारा तात्कालिक एवं एतत्कालिक यी दुवै विरुद्ध रहेको विशेषण हटाउँदा दुवैको एकता सिद्ध हुन्छ। यो दृष्टान्तका सहायताले तत्त्वमसि यो महावाक्यको अर्थ बताउन सकिन्छ। त्वम्को अर्थ- अल्पज्ञ चेतन जीव र तत्को अर्थ सर्वज्ञ चेतन ब्रह्म। यहाँ अल्पज्ञत्व र सर्वज्ञत्व दुवै एकआपसमा विरुद्ध धर्म भएका वाक्य भए। यस्तो अवस्थामा जीव तथा ब्रह्ममा एकता तथा अभिन्नता कसरी मान्न सकिन्छ ? भागत्यागलक्षणाद्वारा विरुद्ध धर्मलाई छोडेर केवल चैतन्यांशलाई मात्र ग्रहण गरेर अभेद सिद्ध गर्न सकिन्छ। अर्थात् चेतन आत्मा तथा चेतन ब्रह्म दुवै एउटै हुन् भन्ने एकता सिद्ध मानिन्छ।

साधन अथवा मार्ग

वेदान्तमा तीन प्रकारका साधन अथवा मार्ग रहेका छन्। श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन। सवैभन्दा पहिले ब्रह्मतत्त्वको प्रतिपादक वेदान्त ग्रन्थहरूलाई गुरुमुखद्वारा सुन्नुपर्दछ, त्यस्तो कार्यलाई श्रवण भनिन्छ। गुरुमुखबाट सुनिएको वेदान्त तत्त्वलाई तर्कद्वारा युक्तिपूर्वक स्वयं नै मनन गर्नुपर्दछ, त्यसलाई मनन भनिन्छ। अनि मात्रै त्यसलाई आत्मा तथा ब्रह्मका एकताको ज्ञान हुन सक्छ। शाब्दिक ज्ञानले मात्रै कुनै पनि लाभ हुँदैन, यस्तो शाब्दिक ज्ञान केवल परोक्ष ज्ञानको जनक मात्र हुन्छ। अपरोक्ष ज्ञान स्वानुभूतिमा आश्रित रहन्छ। गुरुले साधकलाई **तत्त्वमसि** अथात् तिमी स्वयं चेतन ब्रह्म हौ भने। परन्तु यो उपदेशमाथि निरन्तर अभ्यास तथा निदिध्यासन गर्नुपर्दछ। अनि मात्र यो शब्दप्रमाणजन्य परोक्षज्ञान अपरोक्ष ज्ञानमा परिणत हुन्छ। अनि मात्र साधकले अनुभव गर्न थाल्दछ कि अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् म नै ब्रह्म हुँ। यस्तो साधनका बलमा जीव र ब्रह्मको भेदभाव मेटिन्छ, र एकत्वको ज्ञान हुन जान्छ। भ्रम पनि हटेर जान्छ अनि मात्र साधकलाई मोक्ष प्राप्ति हुन्छ। यस्तो क्रियात्मक साधनद्वारा साधकले आफ्नो अभिष्ट वस्तु पाउँदछ।

मुक्तिको स्वरूप

मुक्तिको स्वरूपलाई बुझ्नका लागि वेदान्तले एउटा सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत गरेको पाइन्छ- कुनै मानिसले आफ्ना घाँटीमा एउटा सुन्दर सुनको माला लगाएको छ, त्यस मालालाई बिर्सेर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माला हरायो भनी एताउता माला खोज्दछ। अर्को व्यक्तिले भनेपछि माला आफ्नै घाँटीमा रहेको थाहा पाउँछ मालाप्राप्तिले उक्त व्यक्ति प्रसन्न हुन्छ। मुक्तिको पनि ठिक यस्तै स्थिति हो। जीव आफ्ना स्वभावले मुक्त छ। मुक्ति प्राप्य पनि होइन र उत्पाद्य पनि होइन। मुक्तिको उत्पादन पनि हुँदैन र प्राप्ति पनि हुँदैन। परन्तु जीव मुक्ति बिर्सिएर बाहिर खोज्न थाल्दछ। जव ज्ञानी गुरुको उपदेशले अज्ञान वा भ्रम हट्दछ र विवेक उत्पन्न हुन्छ तब उक्त व्यक्ति स्वाभाविकी मुक्ति प्राप्त गरेर प्रसन्न हुन्छ। मुक्त पुरुषले सच्चिदानन्द ब्रह्मसँग आफ्नो एकता प्रतिष्ठित गर्दछ। उसलाई अलौकिक आनन्दको पनि अनुभूति हुन्छ र ब्रह्मको साक्षात्कारबाट साधक कृतकृत्य हुन्छ।

आचार्य शङ्करको अभूतपूर्व योगदान

अद्वैत सिद्धान्तको प्रकीर्ण वाक्य उपनिषद्हरूमा पनि यत्र तत्र सर्वत्र पाइन्छ। यसमा गवेषणापूर्ण सिद्धान्तको रूप एकवाक्यता गर्ने श्रेय आचार्य शङ्करलाई नै जान्छ। आफ्नो अलौकिक विद्वत्ता तथा तर्ककुशलताले यत्र तत्र प्रकीर्ण सिद्धान्तहरूको सुन्दर समन्वय आचार्यको ब्रह्मसूत्रभाष्यमा उपलब्ध रहेको छ। भगवान् शङ्करले आफ्ना सिद्धान्तहरूको प्रतिपादन तथा ती सिद्धान्तहरूलाई पुष्ट गर्नका लागि र अन्य मतहरूको निराकरण गर्नका लागि भगवती श्रुतिको आश्रय लिएको पाइन्छ। शङ्कराचार्यद्वारा प्रतिपादित साधनमार्ग नितान्त मनोरम तथा मानव मात्रको पथ्य रहेको छ। उनले कर्मको तिरस्कार गरेको पाइँदैन, अपितु चित्तशुद्धिका लागि निष्काम अनुष्ठान गर्नका लागि प्रेरित गरेको पाइन्छ।

उपनिषद्मा केवल सिद्धान्तका रूपमा रहेको अद्वैत वेदान्तलाई शङ्कराचार्यले व्यावहारिक धर्मका रूपमा धारण गरेको देखिन्छ। वस्तुतः वेदान्तले विश्वका प्रत्येक जीवमा, प्रत्येक प्राणीमा विद्यमान ब्रह्मकै सत्ता स्वीकार गरेको भेटिन्छ। जब सबै जीव ब्रह्मका रूपमा प्रकटित छन्, प्रकारान्तरले यी सबै एउटै चैतन्यका अविभाज्य रूप मानिन्छन्। अनि ईर्ष्या, द्वेषादिका लागि कुनै ठाउँ पनि रहँदैन। वेदान्तले विषयसुखलाई तुच्छ बुझेर जीवलाई अगाडि बढ्नका लागि प्रोत्साहन गरिरहेको छ। विषयसुख क्षणिक हुन्छन्, परन्तु आध्यात्मिक सुख चिरस्थायी हुन्छन् र वेदान्तले चिरस्थायी सुखका अगाडि जान जीवलाई प्रेरित अथवा स्फूर्ति प्रदान गर्दछ र प्रत्येक जीवलाई अनन्त शक्तिसम्पन्न हुने शिक्षा दिएर अग्रगमनको उपदेश प्रदान गर्दछ।

वेदान्तले हाम्रा सामुन्ने नरबाट नारायण बन्ने अमूल्य आदर्श प्रदान गरेको छ। वेदान्त शिक्षाको पहिलो सोपान भनेको वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् समस्त संसारलाई अफ्नो आफन्त सम्झेर त्यही आदर्शअनुसार चल्ने वेदान्तको महनीय शिक्षा रहेको छ। आज क्षुद्र स्वार्थी भावनाबाट परास्त मानव समाज शङ्करको चेतनाद्वारा लोक कल्याणका लागि अमृतमयी रहेको छ।

आजको समाज भौतिक साधनहरूको बर्बरताले ग्रस्त भएर एकअर्कालाई निल्ने अवस्थामा रहेको छ। यस्तो प्रकारको हिंसा वा कटुता तथा अधिकार लिप्साले ग्रस्त मानव समाजलाई आचार्य शङ्करको अद्वैतोपदेशले साँच्चिकै अमृतको काम गर्ने छ। आज सम्पूर्ण विश्वले आचार्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शङ्करको त्यो एकतापूर्ण, अखण्ड वा अद्वैत उपदेशामृततिर धेरै आशा र उत्कण्ठापूर्ण दृष्टि लगाइरहेका छन्। जस्तो कि आजभन्दा सयौं वर्षपूर्व आचार्यले आफ्नो दिग्विजयका अवसरमा भन्नुभएको थियो - द्वितीयाद् वैभयं भवति भएको कारण नै द्वैतभावना हो। यदि तिमी निर्भय वा निर्द्वन्द्व तथा निरापद रहन चाहन्छौ भने अद्वैत सिद्धान्तको आश्रय लेऊ, जहाँ वसुधैव कुटुम्बकम् जस्ता उदात्त विचारहरूको साम्राज्य रहेको छ।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

- ईशादि नौ उपनिषद् (सं.) गोयन्दका, ईशादि नौ उपनिषद् हरिकृष्णदास, गोरखपुर : गीताप्रेस, वि.सं.२०५२।
- जेकब, कर्णेल जी.ए., वेदान्तसार (विद्वन्मनोरञ्जनी) वाराणसीः चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, १९७५।
- धर्मराजाध्वरीन्द्र वेदान्तपरिभाषा सं. गजानन शास्त्री दिल्लीः मुसलगांवकर वाराणसी चौखम्बा विद्याभवन १९८३।
- पतञ्जलि, योगसूत्र वाराणसीः भारतीय विद्या प्रकाशन सीमा प्रेस, १९७१।
- पाल, डायसन, सं.वेदान्त दर्शन लखनऊः उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ आकादामी १९७१।
- प्रकाशात्मयति, पञ्चपादिकाविवरण मद्रासः गवर्नमेण्ट ओरियण्टल सिरीज, १९५८।
- मधुसूदन सरस्वती, अद्वैतसिद्धि सं.अनन्तकृष्ण शास्त्री, दिल्लीः परिमल पब्लिकेशन्स, १९८२।
- माधवाचार्यः शंकरदिग्विजय, दिल्ली, मोतीलाल वनारसीदास, १९६७
- विद्यारण्यमुनि, पञ्चदशी सं.पीताम्बर, दिल्ली : रतन एण्ड बुक्स सेलर्स, १९६०।
- शङ्कराचार्य, अपरोक्षानुभूति कलकत्ताः अद्वैत आश्रम, १९५५।
- शङ्कराचार्य, सं. छान्दोग्योपनिषद् गोरखपुरः गीताप्रेस, वि.सं. २०५२।
- शङ्कराचार्य, विवेकचूडामणि सं. आनन्द राघव, हरिद्वारः महन्त स्वमी आनन्दराघव श्रीमुनिमण्डलाश्रम, १९९६।
- शङ्कराचार्य, वेदान्तसूत्र शाङ्करभाष्य, दिल्ली, मोतीलाल वनारसीदास, १९८८

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष शास्त्र र हस्तरेखा

✍ ज्यो.पं. गङ्गाप्रसाद खरेल

ब्रह्मा यत्पदलग्नपांसबलजाखण्डप्रभावः कृती विश्वोत्पादनचातुरीषु दिनपो यज्ञादिषु स्वोदयात्।।

शम्भुश्रीहरिचण्डिकागणपतिर्ब्रह्मादिदेवाः भृशं यन्मायावशगाः शिवं दिशतु नो रामाभिधानो हरिः।।

भावार्थः जसका पाउमा लागेको धुलाका क्षेत्रको अखण्ड प्रभावले संसारको रचना गर्ने चातुर्यमा ब्रह्माजी कृतकृत्य भए, आफ्ना उदयले यज्ञादिमा सूर्य सफल भए, शङ्कर, श्रीविष्णु, चण्डिका, गणेश ब्रह्मा आदि देवता जसको मायाका अधीन भए, सोही रामनामक भगवान् श्रीहरिले मेरा मनोरथहरू पूर्ण गरून्। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

हाम्रो यो श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय (वेदविद्याश्रम गुरुकुल) तथा विवेकाश्रम धाम चारपानेले विद्यालय स्थापना भएको स्वर्णमहोत्सवको अवसरमा स्मारिका ग्रन्थ प्रकाशन गर्न लागेको छ। म पनि यस संस्थाको सदस्य रहेको हुनाले मलाई यस ऐतिहासिक स्मारिकामा आफूले आजसम्म अध्ययन र फलादेश गरेको ज्योतिष शास्त्रसम्बन्धी केही कुरा कोर्ने प्रबल इच्छा भएर लेख्ने अभ्यास नहुँदा नहुँदै पनि लेख्ने प्रयास गरेको छु। श्रद्धेय गुरुजन, पाठकवर्ग र शुभचिन्तकहरूले यस प्रयासलाई कहीं कतै त्रुटि भएमा सुधारी पढिदिनुहुनेछ भन्ने आशा लिएको छु।

ग्रह-नक्षत्रहरूको स्वरूप र स्वभावको अध्ययन अनि यसले मानवलाई प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमा पार्ने प्रभावलाई अध्ययन गर्ने शास्त्रलाई ज्योतिष शास्त्र भनिन्छ। वेदका षडङ्ग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, निरुक्तमध्ये ज्योतिषशास्त्रलाई वेदको नेत्र (आँखो) मानिएको छ।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते। ज्योतिषामयनं चक्षुः निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्। तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

✍ *बिर्तामोड २ चारपाने, सदस्य, श्रीविवेकाश्रम कार्यसमिति*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थः छन्द वेदको पाउ हो, कल्प हात हुन्, ज्योतिष आँखो हो, निरुक्त कान हुन्, शिक्षा घ्राण हो मुख व्याकरण हो। त्यसैले यी वेदका षडङ्गको जसले अध्ययन गर्दछ, ती व्यक्ति ब्रह्मलोकमा समेत पूजनीय हुन्छन्। यस तथ्यअनुसार वेदवेदाङ्गको अध्ययन गर्दा ज्योतिष शास्त्र पनि अनिवार्य रूपले पढ्नुपर्छ भन्ने कुरा स्पष्ट भएको छ। अन्य शास्त्रहरूको परम्परा भएझैं ज्योतिष शास्त्रको पनि आफ्नै विशिष्ट परम्परा चल्दै आएको पाइन्छ। जस्तैः-

सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठात्रिपराशराः। कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो गुरुः। शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः।।

सूर्य, ब्रह्मा, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अङ्गिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, बृहस्पति, शौनक आदि अठार जना ऋषि महर्षिहरूलाई ज्योतिष शास्त्रका प्रवर्तक मानिन्छन्। यिनै महर्षिहरूबाट प्रवाहित भएको ज्योतिष शास्त्रको परम्परा आज पनि गाउँघर, गुरुकुल र देश विदेशका विभिन्न विश्वविद्यालयहरूमा पढ्ने पढाउने सभ्यताका रूपमा आधुनिक प्रविधिसँग जोडेर यस शास्त्रको गुरुशिष्य परम्परा झनै मौलाइरहेको छ। यो शास्त्र व्यवहारका लागि अत्यावश्यक छ र यस शास्त्रको आवश्यकतालाई यसरी औंल्याइएको छ।

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्।

मयूरको विशेषता प्वाँखमा हुन्छ भने सर्पहरूको शिरमा भएको मणिले उनीहरूको विशेषता झल्काएको हुन्छ। त्यसरी नै वेदाङ्गशास्त्रहरूमा ज्योतिषशास्त्रलाई सबै अङ्गको प्रमुख विशेषता भएको शास्त्र मानिएको छ। सम्पूर्ण वैदिक यज्ञकर्म गर्नुपर्दा ज्योतिषी गुरुबाट मुहूर्त ठम्याउनुपर्दछ किनभने दैवज्ञं तु समाहूय मूहर्तं पृच्छ्य यत्नतः (भा. मा.५.२) श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ गर्नुपर्दासमेत गृहस्थले ज्योतिषी गुरुलाई मुहूर्त सोध्नुपर्दछ भनिएको छ। यज्ञजस्तो पवित्र, शुभकार्य गर्दा निश्चित रूपले तिथि, बार, नक्षत्र, योग, करण, पक्ष, मास, ऋतु आदि शुभाशुभ कालको विचार पुर्याएर गरेको कर्मको परिणाम शुभ हुन्छ। अतः वैदिक तथा तान्त्रिक यज्ञहरू जति पनि छन् ती सबै ज्योतिष पञ्चाङ्ग तिथि, बार नक्षत्र, योग र करणद्वारा निर्धारित समुचित समयमा गरेमात्र फलदायी हुन्छन् भन्ने शास्त्रीय प्रमाण रहेको पाइन्छ।

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताङ्गयज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्।।

वेदशास्त्र यज्ञका लागि प्रवृत्त हुन्छ, यज्ञ समुचित कालमा गर्नुपर्दछ। यो ज्योतिष काल निर्णय गर्ने शास्त्र हो। यस शास्त्रलाई जसले जान्दछ त्यो नै यज्ञलाई जान्दछ। त्यसैले उचित समयमा विधि पुर्याएर गरिएको यज्ञले जीवजगत्को कल्याण हुन्छ भन्ने तथ्य उपर्युक्त भनाइले प्रस्ट पार्दछ। श्रीकृष्ण भगवान्ले श्रीमद्भगवद्गीतामा अर्जुनलाई कर्मयोगको उपदेश दिँदै यज्ञको वैशिष्ट्यलाई यसरी प्रस्तुत गर्नुभएको छ -

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञकर्मसमुद्भवः।।
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।
-गी. ३।१४.१५।

यज्ञद्वारा समय समयमा जलवर्षा हुने, जल वर्षाले बालीनाली, अन्न, औषधी फस्टाउने, अन्न र औषधीले मानवलगायत जीवमात्रको कल्याण हुने भएकाले यज्ञ अपरिहार्य भएको कुरा स्वयं भगवान् श्रीकृष्णले माथिका पद्यहरूमा प्रस्तुत गर्नुभएको छ। तिनै यज्ञहरू फलदायी बनाउन ज्योतिष शास्त्रले कालशोधन गरी यज्ञयागादिको समय निर्धारण गर्नुपर्दछ। यो ज्योतिष विद्या मनुष्यजातिको भूत-वर्तमान र भविष्यको दर्पण पनि हो।

गणित ज्योतिष र फलित ज्योतिष गरी यसलाई दुई भागमा विभाजन गरिएको छ। गणित ज्योतिषले गणना गरेर सबै ग्रहहरूको स्थिति बताउन सकिन्छ। आज पनि एक सय वर्षअगाडिको सूर्य र चन्द्र ग्रहण ज्योतिषको गणनाबाट नै घोषणा गर्ने गरिएको यथार्थ हाम्रो सामु छर्लङ्ग छ। यस विषयमा त आधुनिक विज्ञानसमेत अचम्मित छ। रमाइलो कुरा त यस्तो छ आजको प्रबुद्ध समाज विज्ञानमा विश्वास गर्छ र गर्नुपर्ने बाध्यता पनि छ तर वैज्ञानिकहरूको केन्द्र नासालाई शून्य कसैले सिकायो भने त्यो केवल भारत वर्षको गणित ज्योतिषले नै सिकाएको हो भन्ने कुरा धेरै विद्वान्हरूका लेखहरूले स्पष्ट पारेका छन्। गणित ज्योतिषले हरेक ग्रहको स्वभाव, अवस्था, स्थिति आदिको गणना गर्दछ भने फलित ज्योतिषले फलादेश गर्दछ। मानिसहरू विशेष फलित ज्योतिषप्रति आकर्षित भएको पाइन्छ। भविष्यप्रतिको जिज्ञासा र सहज पथप्रदर्शनको सबै मानवलाई आवश्यक हुन्छ। भूत, वर्तमान र भविष्यको यथार्थलाई किटान गरी समस्याको समाधानसमेत प्राप्त हुने भएकाले आजको विकसित युगमा समेत ज्योतिषशास्त्र सबैको आशाभरोसा र दिग्दर्शक बनेको पाइन्छ। यस कुरालाई यसरी स्पष्ट पारिएको छः

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ (ज्योतिष तत्त्वाङ्ग १५६)।।

अन्य शास्त्रहरू परोक्ष फल प्रदान गर्ने किसिमका छन् भने ज्योतिष शास्त्र प्रत्यक्ष शास्त्र हो। यसका साक्षीहरू चन्द्रमा र सूर्य रहेका छन्। वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र, चार वेद, अठार पुराण, रामायण आदि ग्रन्थ शास्त्रहरूको एकमात्र उद्देश्य सबै मानिसहरूले यज्ञ, जप, तप, दान व्रतादिको साधनाद्वारा स्वस्थ जीवन यापन गर्दै अन्त्यमा परमात्मालाई प्राप्त गरून् भन्ने नै हो। त्यसैले उचित समयमा गरिएको सत्कर्म फलदायी बन्छ भने अनुचित समयमा गरिएको यज्ञकर्म निष्फलमात्र नभई समग्र मानवलाई नै असफल तुल्याउँछ। यो समयको गणना नै ज्योतिषशास्त्र हो। यज्ञकर्म गर्दा होस् अथवा कुनै यात्रा, व्यापार, उद्योग आदि जुनै कार्य गर्दा किन नहोस् विज्ञ ज्योतिषी गुरुसँग परामर्श लिएर कार्य गर्नु राम्रो हुन्छ। हाम्रा गुरुकुलहरूमा ज्योतिष विद्याको अध्ययन, अध्यापन गराउन सके मात्र ज्योतिष शास्त्री गुरुहरूले समाजलाई सही वैदिक कर्मकाण्डीय दिग्दर्शन गर्न सक्नुहुन्छ भन्ने मेरो व्यक्तिगत ठहर रहेको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त रेखा

निरञ्जन निराकार श्री परंब्रह्मको इच्छा र असीम अनुग्रहद्वारा यस ब्रह्माण्डको रचना भएको हो। त्यसपछि क्रमशः चराचर सबै प्राणीहरूको सृष्टि गरी उनीहरू आ-आफ्नो नियम, आचरण आदि स्वधर्ममा रहेर व्यवहार गरून् भन्नका लागि कानुनजस्तै धर्मशास्त्रको स्वयम् रचना गर्नुभयो। स्वस्थ आरोग्य रहनाका लागि आयुर्वेद शास्त्रको रचना गर्नुभयो अनि भूत, वर्तमान, भविष्यत् काल जान्नका लागि भनेर ज्योतिषशास्त्रको रचना गर्नुभयो। जुन ज्योतिषशास्त्रको अनुभवबाट हाम्रा महर्षिहरूले तीनै कालको विषय जानेर उपदेश र मानवीय जीवनको कार्यदिशासमेत निर्देशन गर्नुभयो। यो कुरा कृष्ण अवतारमा गर्गाचार्य गुरुले र राम अवतारमा महर्षि वशिष्ठले स्वयं भगवान्को शारीरिक लक्षण अनि भविष्यको कार्यचित्रसमेत ज्योतिषशास्त्र र सामुद्रिक शास्त्रको माध्यमले चित्रण गर्नुभएको कुरा रामायण र भागवतमा स्पष्ट लेखिएको छ। श्रीमद्भागवतको दशमस्कन्ध कृष्णको नामकरणको प्रसङ्गमा नन्दबाबाको यस भनाइले थप स्पष्ट पार्दछ।

ज्योतिषामयनं साक्ष्यात् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।। (भागवत.१।८।५)

यस्तो ज्योतिषशास्त्र र लाक्षणिक सामुद्रिक शास्त्रले नै व्यक्तिको भूत, वर्तमान र भविष्यको निर्क्योल गर्न सकिन्छ। ज्योतिषलाई कालशास्त्र पनि भनिएको छ। अवान्तर भेदसहित ज्योतिष शास्त्रका अनेक भेद शाखाहरू छन् : जीवध्वनिशास्त्र, केरलसंहिता, साकुनशास्त्र, होराशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र जस्ता धेरै शास्त्रहरू रहेका छन्। यिनीहरूमा सामुद्रिक शास्त्रलाई पनि ज्योतिष शास्त्रको मुख्य भेदका रूपमा मानिएको छ। यस शास्त्रका अध्ययनबाट प्राचीन कालका महर्षिहरूले भूत, वर्तमान, भविष्यत् कालको यथार्थ विषयलाई बताइदिनुहुथ्यो भन्ने कुरा शास्त्रहरूको अध्ययन अनुशीलनले स्पष्ट पार्दछ।

ज्योतिष शास्त्रले मानवको जन्मपत्रिका आधारमा शुभाशुभ फलादेश गर्दछ। यसमा इष्ट घडीको वा इष्ट समयको सही पहिचान गरी जन्मपत्रिका निर्माण गर्नुपर्ने हुन्छ। अनि जन्मपत्रिकाकै आधारमा फलादेश गर्न सकिन्छ। जन्मपत्रिका बनाउँदा इष्ट घडी थोरै फरक पर्न गएमा फलादेशमा धेरै अन्तर पर्दछ तर सामुद्रिक शास्त्रले मनुष्यका शरीरमा भएका अनेक चिह्नहरूको माध्यमले फलादेश गर्न सकिन्छ। यी शारीरिक चिह्नहरू कसैले बनाएको नभई प्रारब्धअनुसार आफैं बनेका हुन्छन्। मनुष्यका हातखुट्टामा हलक्षत्र पद्मरथ, ध्वज, कमल, हात्ती, घोडा आदि अनेक रेखा चिह्न परेका हुन्छन्। तिनैबाट बताइएको फलमा खासै अन्तर पर्दैन तर मुस्किल यो छ कि ती रेखाहरूको रूप आकार प्रकार ठिक ठिक मिलेका हुँदैनन् केही रेखाको रूप आकारसम्म परेका हुन्छन्। तिनलाई छुट्याई ठहर्याउन कठिनाइ पर्छ। ती रेखा र चिह्नहरू लाक्षणिक शास्त्रहरूको अभ्यास र मननबाट मात्र छुट्टिन सक्छ। हस्तरेखाका विषयमा 'रेखाः कामदुघाः स्मृताः' रेखालाई कामधेनु मानिएको छ। त्यसैले हस्तरेखालाई ठिक ठहर्याई फलादेश भएमा अन्यथा हुँदैन। हस्तरेखाको अध्ययन गर्ने व्यक्तिले पुरुषको दाहिने हात हेर्नुपर्छ भने महिलाको देब्रे हात हेर्नुपर्दछ भनिएको छ। जस्तैः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथातः सम्प्रवक्षामि हस्तरेखाविचारणम्।
दक्षिणे पुरुषं ज्ञेयं वामे वामाकरं शुभम्।।(सामुद्रिक शास्त्र हस्तरेखा रहस्यम् उ.ख.१)

यो हस्तरेखाको ज्ञान भगवान् शिवले समुद्र नामक मुनिलाई पहिलोपटक सुनाउनुभएको थियो। त्यहीँबाट हस्तरेखालाई सामुद्रिक शास्त्र भनिएको हो। त्यसैले यस शास्त्रको प्रारम्भ भगवान् शिवबाट भएको मानिन्छ। यस शास्त्रको राम्रो ज्ञान भयो भने भविष्यका बारेमा खासै अलमलिनुपर्दैन। जस्तैः

शिवोक्तं तत्र सामुद्रं हस्तरेखाशुभाशुभम्।
येन विज्ञानमात्रेण पुरुषो न विशोचति।।(सा. ह. रहस्यम्)

हस्तरेखाका विषयमा यस छोटो लेखमा सबै कुरा बताउन सम्भव नभए पनि ज्योतिषशास्त्रको अध्ययनका क्रममा धेरै वर्षअघि यस लेखकले कण्ठस्थ पारेका तथ्यपरक केही श्लोकहरू प्रस्तुत गर्न गइरहेको छु। यसले अरू लक्षण शास्त्रको अध्ययन गर्न चाहने जिज्ञासुलाई केही हदसम्म भए पनि यी पद्यहरू काममा आए मेरो लेख सफल हुनेछ। जस्तैः

यस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिश्च जायते।
धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः।।
तुलाग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते।
तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात् पुरुषस्य न संशयः।।

पद्मचापादिखड्गं च अष्टकोणादि दृश्यते। स्त्रियाश्च पुरुषस्यापि धनवान् स सुखी नरः।।
शङ्खचक्रध्वजाऽकारो मत्स्याकारश्च दृश्यते। सर्वविद्याप्रदानेन बुद्धिमान् स सुखी नरः।।
त्रिशूलं करमध्ये तु तेन राजा प्रवर्तते। यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजने।।
शक्तितोमरवाणैश्च करमध्ये च दृश्यते। रथचक्रध्वजाकारैः सः च राज्यं लभेन्नरः।।
अङ्कुशं कुण्डलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत्। तस्य राज्यं महाश्रेष्ठ सामुद्रवचनं यथा।।
रविचन्द्रकृतानेक अष्टकोणत्रिनेत्रकम्। मन्दिरं गज अश्वानां चिह्ने धनसुखी नरः।।

अङ्गुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्य विराजते।
उत्तमो भक्ष्यभोजी स्यात् स नरः सुखमेधते।।(सा. ह. रहस्यम्)

हातमा मीन (माछा) रेखा भएमा कार्यसिद्धि हुन्छ अनि धनवान् र पुत्रवान् हुने कुरामा कुनै संशय छैन। हातमा तुलाग्राम वज्ररेखा परेमा वाणिज्यमा सिद्ध व्यापारी हुन्छ। शङ्ख, चक्र, मत्स्यका आकार परेका छन् भने विद्यावान् बुद्धिमान् र सुखी हुन्छ। शङ्ख, चक्र, ध्वजाकार, मत्स्याकार रेखा छन् भने राजा अथवा मन्त्री हुन्छ। हत्केलामा त्रिशूलको चिह्न भएमा दान, यज्ञ, धर्म गर्ने र गुरु, द्विज, देवको पूजा गर्ने प्रकृतिको हुन्छ। बुढी औंलाको उदरमा जौको बालाको चिह्न भए, त्यो मनुष्य सुख भोग गर्ने हुन्छ।

मध्यमातर्जनीमूले यवो यस्य प्रदृश्यते।
धनवान् सुखभोगी स्यात् पुत्रदारगृहादिषु।।(सा.ह.रहस्यम्)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यमा र तर्जनी (चोर औंला) का मूलमा जौको चिह्न भए धनी, सत्पुत्र र सुशील पत्नी भएको परिपूर्ण सुख भोग गर्ने हुन्छ। शक्ति, तोमर, वाण, रथ, चक्र, ध्वजाकार, चिह्न परेका छन् भने मनुष्य राजा वा राजासमान होला। अङ्कुश, कुण्डल, चक्र जसका हातमा छन् भने त्यसको श्रेष्ठ राज्य हुन्छ भन्ने कुरा सामुद्र मुनिले बताएका छन्। रवि, चन्द्र, ताराका अनेक चिह्न अनि अष्टकोण परेको छ भने ठूलो प्रतापी हुन्छ। पहाड, कंकण, योनि, नरमुण्ड, घडा, ग्रह आदिको चिह्न परेका छन् भने सो राजा अथवा मन्त्री होला। सूर्य, चन्द्र, त्रिनेत्र, अष्टकोण, मन्दिर, हात्ती, घोडाको चिह्न परेको छ भने मनुष्य धन, यश, सुखभोग गर्ने हुन्छ। मध्यमा र तर्जनीमा (चोर) औंलाको मूलमा यव चिह्न परेको भए धनवान्, पुत्र, परिवारले र घरले परिपूर्ण हुन्छ। यसरी हातका रेखाहरूको र अनेकन चिह्नको आ-आफ्नै लक्षण रहेका हुन्छन् भन्ने कुरा सामुद्रिक हस्तरेखा रहस्यम् आदि पुस्तकहरूमा अध्ययन गर्न सकिन्छ। हात शरीरका अवयवहरूमा सर्वोत्कृष्ट अङ्ग हो भनेर सामुद्र मुनिले यसरी व्यक्त गर्नुभएको छ।

अङ्गे हस्तप्रशस्तोऽयं शीर्षादपि विशिष्यते।

साध्यान्ते पादशौचाद्या धार्मिक्यो येन सत्क्रिया।।

सर्वाङ्ग लक्षणप्रेक्षाव्याकुलानां नृणां मुदे।

श्रीसामुद्रेण मुनिना येन हस्त प्रकाशितः।।

हस्तेन पाणिग्रहणं पूजाभोजनशान्तयः।

साध्या विपक्षविध्वंः सुमुखाः सकलाः क्रियाः।।

पितृरेखा भवेद् गङ्गा मातृरेखा सरस्वती।

आयू रेखा च यमुना सत्सङ्गतीर्थमक्षयम्।।

मनुष्यका अङ्गहरूमा हात प्रधान अङ्ग हो किनभने हातविना आहार, व्यवहार, पूजा, सेवा, पाद शौचादि कुनै पनि कार्य गर्न सकिँदैन। त्यसैले सामुद्र मुनिले सबै मानव जीवनको लक्षण हातमा नै राखिदिएका हुन्। पितृरेखा गङ्गा, मातृरेखा सरस्वती र आयुरेखा यमुना हुन् भनी हातमा त्रिवेणी सङ्गम देखाइएको छ। यस त्रिवेणी सङ्गमलाई अक्षय तीर्थ मानिएको छ। जसबाट पितृलाई तर्पण गरिन्छ भने देवताको पूजा गरिन्छ। जीव जगतको कल्याण गर्ने पनि हात नै हुन्।

कराग्रे बसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।।

हातका अग्र भागमा लक्ष्मी, मध्य भागमा सरस्वती र मूलमा ब्रह्मा बस्ने भएकाले प्रातःकालमा उठ्नेबित्तिकै हातको दर्शन गर्यो भने दिन शुभ रहन्छ भन्ने शास्त्रीय प्रमाण रहेको छ।

निष्कर्षमा वेदको षडङ्गमध्ये एक प्रमुख अङ्ग वेदको नेत्रका रूपमा ज्योतिषशास्त्रलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानिएको छ। भगवान् सूर्य, महर्षि वशिष्ठ, ऋषि गर्गाचार्य आदि ऋषिहरूबाट यस शास्त्रको परम्परा आजसम्म अक्षुण्ण रहेको छ। ज्योतिषशास्त्र खगोल भूगोलको गहन अध्ययन गर्ने वैदिक शास्त्र हो। यसका धेरै भेदहरूमध्ये सामुद्रिक शास्त्र पनि एक हो। भगवान् शिवले समुद्र नामक मुनिलाई दिइएको ज्ञान भएकाले यस शास्त्रको नाम सामुद्रिक शास्त्र भनिएको हो। यसबाट मानवीय हातका रेखा र सङ्केतबाट जीवनको अध्ययन गर्न सकिन्छ। ज्योतिषशास्त्र र सामुद्रिक शास्त्र हामीलाई अत्यन्त उपयोगी शास्त्रहरू भएकाले हाम्रा गुरुकुलहरूमा अरू वेद, व्याकरण, अमरकोश, गीता आदिको अध्ययनसँगै यस शास्त्रको पनि अध्ययन गर्न नितान्त आवश्यक छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वीय धर्मशास्त्रका आधारमा सन्तान उत्पादनका उपायहरू

तुलसी भारद्वाज

ज्योतिषको सन्तान योगसँग सम्बन्धित छ, जसमा निःसन्तान दम्पतीको दोष पत्ता लगाई उपाय खोज्ने रहेको छ। यस खोजमा सन्तानमा छोरा वा छोरी चाहिने जोडीलाई सोहीअनुसार सन्तान जन्माउन साइत हेर्ने विधि सिकाउने र दिनचर्याको नियम आदि कुराहरू समावेश हुनेछन्। जन्मकुण्डलीमा सन्तान पक्ष हेर्ने मूलतः पञ्चम भाव हो। यस स्थानसँग सकारात्मक अनि बलवान् ग्रहको सम्बन्ध रहेमा विश्व प्रकाशक सन्तान, तेजस्वी, गुणवान्, इमानदार, समाज सुधारक सन्तान जन्मन्छन्, साथै यही पञ्चम स्थानमा नकारात्मक बलवान् ग्रहको सम्बन्ध भए चोर, फटाहा सन्तान जन्मन्छन्।

सन्तान भन्ने कुरा एक्लो कुरा होइन। यसैले श्रीमान्-श्रीमतीको बेमेलमा १८ भन्दा बढी अङ्क आउनु वा कम्तीमा पचास प्रतिशत गुण स्वभाव मिल्नुपर्छ तब मात्र ती दम्पतीको विचार मिल्छ। यौनिकता मिल्छ, सन्तान चाहना मिल्छ। इच्छित सन्तान शारीरिक र मानसिक रूपमा स्वस्थ हुन्छ। केटा र केटीको चिना जुधाउँदा योनि शीर्षकमा कति गुण मिलेको छ यसले दुई जनाको अलग-अलग यौनेच्छा र आपूर्तिमा समानता छ वा छैन भन्ने कुराको निर्क्योल गर्दछ। यदि त्यो पक्ष मिलेको खण्डमा सन्तान तन्दुरुस्त जन्मन्छ, नमिलेको खण्डमा कमजोर, सुस्त, विकलाङ्ग वा नजन्मनेसम्मको दोष रहन्छ। त्यही चिनाको लग्न र राशि कुण्डलीको पञ्चम भावसँगको सम्बन्ध सूर्य र शनि ग्रहको छ भने विलम्भ सन्तान वा सन्तान बाधकसम्मको दुष्योग बन्दछ।

सृष्टिको हरेक उत्पत्ति सम्यक् सङ्कल्पबाट नै हुन्छ। श्रीमान्-श्रीमतीको ग्रह सकारात्मक रहेमा मात्र सम्यक् सङ्कल्प हुन्छ। अन्यथा सन्तान भए नै पनि दुर्गुणी सन्तान हुनेछन्। सम्यक् सङ्कल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम्। (याज्ञवल्क्य स्मृति १-७०) सुयोग्य सन्तानका लागि असमान गोत्रमा, दुवै पक्षको मामली, बुढामावलीसँग जुठोसूतक बार्नु नपर्ने परिवारबाट विवाह गर्नू भन्ने पूर्वीय मान्यतासँग हुबहु मिल्ने गरी पाश्चात्य दर्शनका चार्ल्स डार्बिनको विकासवादको सिद्धान्तमा दोस्रो पुस्ता, तेस्रो पुस्ता खिनाउटो हुँदै जानुमा समान जिनको क्रसिङ प्रमुख कारण बताइएको छ। २३ जोडा क्रोमोजोममा पुरुष जेठो र स्त्री कान्छी भइन् भने सन्तानमा आमा र बाबाका गुण भेला हुन्छन् उल्टो भएमा दोष भेला हुन्छन् भनिएको छ। यसैले हामीकहाँ "बुहारी हेर्दा सानी हेर, जुत्ता

वि===

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हेर्दा ठूलो' भन्ने भनाइ नै छ। पहिलो सन्तान छोरा वा छोरी जे भए पनि दोस्रो सन्तानमा छोरा नै चाहिने वा छोरी नै चाहिने भन्ने इच्छा हुनु स्वाभाविक नै हो, तर प्रकृतिको देन र लेखान्त कस्तो छ, यसमा केही मनन गर्नुपर्ने हुने रहेछ।

आज संसारको समग्र पुरुषस्त्रीको सङ्ख्या, कुनै पनि देश, प्रदेश, स्थान विशेषको जनसङ्ख्यालाई हेर्दा आधा पुरुष आधा महिला नै रहेको पाउँछौं। यसमा प्रकृतिको कुनै न कुनै गणना पद्धति पक्कै छ। कहिले पनि कुनै पनि स्थान विशेषमा ९०-९५ एउटै लिङ्गका जन्मदैनन्। आधा जति छोरा र आधा जति छोरी नै जन्मन्छन्। त्यही प्रकृतिको गूढ रहस्यलाई केही हदसम्म पत्ता लगाएर पूर्वमा र पश्चिममा छोरा जन्माउने र छोरी जन्माउने केही विधिहरू छन्। तन्त्र शास्त्रको 'शिवस्वरोदय' ग्रन्थका अनुसार पुरुषको सूर्यनाडी अर्थात् दाहिने नाकको दुलोबाट श्वास प्रश्वास भएका बेला सम्भोग भएमा पुत्र गर्भ रहन्छ। चन्द्र नाडी अर्थात् देब्रे नाकको दुलाबाट श्वास प्रश्वास भएको बेला सम्भोग भएमा पुत्री गर्भ रहन्छ। यो सिद्धान्तसँग मिल्नेजुल्ने पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तुको थ्यौरी संसारमै प्रसिद्ध छ। यसका बारेमा गुगलमा प्रशस्त सामग्री पाइन्छन्। जसमा दाहिने अण्डकोष र देब्रे अण्डकोपबाट जाने शुक्रकीटमा क्रमशः पुरुष र स्त्री गर्भ रहन्छ भनिएको छ।

हाल आएर चाइनिज क्यालेन्डर भनी छोरा र छोरी जन्माउने समय हेर्ने चलन छ, जसमा स्त्रीको उमेर र महिनाबाट गर्भ रहेको समयका आधारमा छोरा वा छोरी जन्मने तालिका दिइएको छ। ज्योतिष शास्त्रअनुसार महिनावारीको दिनबाट छैटौं, आठौं लगायत सोह्रौं दिनसम्मका जोडी दिनहरूमा सम्भोग भए छोरा जन्मने र सातौं, नवौं आदि बिजोडी दिनमा गर्भ रहे छोरी जन्मने भनी उल्लेख गरिएको छ। पूर्वीय धर्मशास्त्रका यी सन्तान उत्पादनका उपायहरूसँगै मेडिकल साइन्सका आधारमा क्याल्सियम, आइरन, प्रोटिनलगायत खाद्य सामग्री प्रचुर मात्रामा खाने गरेमा सन्तान हृष्टपुष्ट हुन्छन् भन्ने मान्यता छ। त्यसैले गर्भवती महिलालाई प्रायः आइरन र क्याल्सियम चक्की खान लगाइन्छ।

प्रजनन प्रणालीलाई दुरुस्त राख्न खानेकुरामा रङ्गका आधारमा काला वस्तुमा आइरन पाइने कालो दाल, गहत, फापर, कोदो, बैगुन आदि खानु राम्रो मानिन्छ भने सेता वस्तुमा दुध, दुग्ध पदार्थ, काजु आदिमा क्याल्सियम प्रचुर मात्रामा पाइन्छ। अनौठो र आश्चर्य लाग्ने कुरा के छ भने शुक्र ग्रह सेतो ग्रह हो। शुक्र कमजोर भयो भने शुक्रकीट शुक्राणु कमजोर हुन्छ। शब्द व्यवस्थापनको यो सत्यसँगसँगै मेडिकल साइन्सले के भन्छ भने हड्डीभित्र मज्जा जम्मा हुन्छ। त्यही मज्जाबाट शुक्रकीट बन्छ। मज्जा कमजोर भए शुक्रकीट पातलो वा बाक्लो हुने, शुक्राणुको सङ्ख्या नपुग्ने, गर्भ नरहने आदि कुरा गर्छ भने यता ज्योतिषमा शुक्र बलवान् बनाउन सेतो सामग्री चढाउने खाने यस्तो उपाय बताउने गरिन्छ।

लामा खानेकुरा र डोला खानेकुराका आकारका आधारमा पनि गर्भवती महिलाले के खान्छिन् सन्तानको लिङ्ग निर्धारण हुन्छ भनी बताइन्छ। फर्सी खाए छोरी केरा खाए छोरा भन्ने प्रचलन पनि छ। ज्योतिषमा दोहद भन्ने एक शब्द छ जसले दैनिक खाने र यात्रामा निस्कने वा गर्भवती महिलालाई दैनिक अलग-अलग रङ्ग र स्वादका खानेकुरा दिनुपर्छ, सन्तान स्वस्थ जन्मन्छ भन्ने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्रको मत छ। ज्योतिषको दोहद सिद्धान्तमा धेरै कुरा आउँछ।

बारका आधारमा बिहीबारको दोहद दही हो। यसैले बिहीबार दही खाएर यात्रा गर्दा शुभ हुन्छ भन्ने शास्त्रको मत छ तर अहिले लामो यात्रामा निस्कँदा सधैं नै दही खाएर निस्कने चलन छ। दैनिक अलग-अलग खानेकुरा खाएर निस्कनु वा खानु सधैं राम्रो हुन्छ। सन्तान उत्पादनमा समस्या आउँदैन। यसरी सबै खानेकुरा मात्रा मिलाएर अलग-अलग दिन खानाले शरीरमा अलग-अलग प्रोटिन, भिटामिन, आइरन सबै कुरा पुग्ने विचार पुर्याएर नै हाम्रा अग्रज ऋषिमुनिले दोहदको चलन चलाएका हुन्। ज्योतिषमा छोरा र छोरी जन्माउने कुरामा अरू धेरै आधारहरू छन्। जस्तो सम्भोगको समयमा चलेको दशा, पुरुषबार, स्त्रीबार, पूर्णिमा छेक, औंसी छेक, पुरुष लग्न, स्त्री लग्न, नवांश आदि को गहिरो अध्ययन छ।

सन्तानको स्वस्थताका लागि निर्णयसिन्धुमा गर्भिणी नियम र गर्भिणी पति नियम भनेर एक परिस्कृत नियम बताइएको छ। जसमा अहिलेका डाक्टरहरूले पनि प्रायः तिनै कुरा भन्नुहुन्छ। लामो यात्रामा, नजानु, अप्ठेरो बाटो, गाडी, घोडा नचढ्नु आदि इत्यादि। यहाँ त गर्भवती महिलाको रेखदेखका लागि यतिसम्म बताइएको छ कि 'गर्भिणी इच्छितं द्रव्यं तस्यै दद्यात् यथोचितम्' गर्भिणीले इच्छा गरेका सामान उनलाई छिट्टै दिनू जुन-जुन उपयुक्त छ। खानपानमा पनि सावधानी अपनाउनू, अमिलो पिरो टर्रो नखानू। यी कुराहरू उल्लेख गरिएको छ।

निःसन्तान दम्पतीका लागि धार्मिक उपायहरूमा हरिवंशपुराण श्रवन, देवकीसुत गोविन्द मन्त्र जप, पुत्रेष्टि यज्ञ, पुत्रदा एकादशी व्रत आदि। पूर्वीय धर्मशास्त्रका यी सन्तान उत्पादनका उपायहरूसँगै मेडिकल साइन्सका आधारमा क्याल्सियम, आइरन, प्रोटिन लगायत खाद्य सामग्री प्रचुर मात्रामा खाने गरेमा सन्तान हृष्टपुष्ट हुन्छन् भन्ने मान्यता छ। त्यसैले गर्भवती महिलालाई प्रायः आइरन र क्याल्सियम चक्की खान लगाइन्छ। सन्तान सुख भन्नाले सन्तान जन्मनु सुख, सन्तानले दिने सुख अर्को सुख मानिन्छ। वास्तु शास्त्रानुसार पञ्च तत्त्वको तालमेल परम आवश्यक मानेको छ। हाम्रो शरीरमा र ममी वस्ने वासस्थानमा उक्त तत्त्व मिले मात्र सुख सम्पत्ति र आनन्द पाइनेछन्।

सन्तान सुखसँग सम्वन्धित वास्तुशास्त्रमा भूमिको कोल्टोपनका आधारमा पूर्वपट्टि अग्लो भए सन्तान नाश र पश्चिमपट्टि अग्लो भए सन्तान प्राप्ति भनेको छ। हाम्रो शारीरिक दोष र वास्तु दोष खप्टिन गएमा दोष वृद्धि भई सन्तान नजन्मन पनि सक्छ। गुण मिलेमा धेरै राम्रा सन्तति जन्मन सक्छन्। सन्तानमा छोरा वा छोरी जन्माउने सरल प्राकृतिक र विश्वस्त विधि छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ancient *Gurukula* education system in Nepal and India

✍ Prof. Dr. Kashinath Nyaupane

Introduction

Tradition of Sanskrit Education is believed to be of very ancient time in the Indian Subcontinent (present day Nepal and India). Nepal was well known as a land of vast knowledge and education. For that, Buddha could be an ample example. Buddha had completed intensive study during his childhood, and had mastered *Pali*, *Prakrit* and Sanskrit languages. However, such knowledge wasn't easily accessible to all. Only children from well-established families were able to receive an education in Sanskrit. This educational system functioned through a type of lineage in Brahmin families, whereby the son was taught by his father and the father by his father; or in case of royal families, the princes and princesses were taught by royal teachers who used to be learned Brahmin. This meant that this type of education was exclusive.

The only other means of education accessible to the public was the *Gurukula*. *Gurukula* is a type of ancient school in Nepal and India that is residential in nature with the students and the *Guru* or teacher living together as equals, in proximity, irrespective of their social standing, many a time within the same house. *Gurukula* translates into 'home of the teacher', and rightfully so, since the students were largely a part of the teacher's household. The students would come from different economic backgrounds, different social standings and both genders. Males and females were both equals in the Vedic times and no distinctions were made between them in the *Gurukula* education system. *Gurukula*s were *Vedic*, *Buddhist* or *Jain*; I shall be discussing the Vedic *Gurukula* in this article. The *Guru* would always be a learned Brahmin sage, who would be a master of the *Veda* and its branches.

'Guru'

The word '*Guru*' in itself is composed of two roots, *'gu'* means ignorance or darkness, and '*ru*' means to destroy or to remove. *Guru* can essentially be defined as someone who removes the darkness and brings light. Hence, ancient teachers were

✍ विभागाध्यक्ष, बौद्धदर्शन वाल्मीकि विद्यापीठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

known as *Guru*s. According to Vedic tradition, a scholar could only be proclaimed as a *Guru* once he finds an eight year old Brahmin lad, welcomes the lad into his own household, conducts his '*Upanayana*' ceremony and finally teaches him the Vedas. *Upanayana* is a ritual done by boys where they take some Vedic vows at the age of eight, and it marks their coming-of-age to proceed towards formal Vedic Studies.

There were two types of *Guru*s, *Acarya* and *Upadhyaya. Acaryas* were the ones who taught the students, fed them, clad them, and gave them a place in their own household for free. They would turn young children into wise young scholars and send them off only after graduation. The other types of teachers were *Upadhyayas*. They would teach the students for their own livelihood, thereby incurring tuition charges from the students. Therefore, *Acaryas* were considered great among teachers. Generally, *Upadhyayas* taught royal families, while the *Acarya*s ran the *Gurukula*s.

Gurukula

As discussed earlier, *Gurukula*s were the homes of teachers that also acted as residential schools for the students. The students were considered a part of the teacher's family. Students lived in a warm homely environment, without discrimination from either the *Guru* or their fellow students, despite their economic background or social standing. The *Guru*s treated all students equally, be it a King's son or a peasant's, as though they were his own children.

The primary source of food for the *Gurukula* was *bhikshya*. *Bhikshya* means alms or donations, generally food such as food grains, vegetables, fruits etc. Students had to go to nearby communities regularly asking for donations to generate rations essential for them to eat, and they had to offer such collected donations to their *Guru*. The *Guru* then rationed the food and distributed them to the students in equal amounts, so that they could eat communally. Sometimes the donated food would be pre-cooked, but mostly it would be raw grains or vegetables. So students took turns with cooking duties. Similarly, everyone would circulate their chores, hence taking turns at cleaning, washing clothes, collecting firewood from the forests, and gathering *kush* grass (for various rituals) and picking fruits from the forests. They also indulged in cow-farming for milk, butter and yoghurt; and very rarely in agriculture for vegetables and crops.

Story about the leaking paddy field

The relationship between the *Guru* and the student was considered sacred. The *Guru* offered the student food, board, clothes and education, with affection and compassion. In return, the students greatly respected their *Guru*s and would follow the *Guru*'s instructions without hesitation. There is a very famous story in the Upanishads, about the devotion of a student towards the *Guru*'s commands.

'A *Gurukula* used to farm paddy, which needs a lot of water in the field to grow.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

But due to flooding, the dams around the field started to crack and the water started to leak out of the fields. The *Guru* was distressed due to this situation and therefore, asked his student to cover the leaks and prevent the loss of water from the paddy field. The student humbly accepted his task and went to the field to deal with the situation. He tried sealing the leaks with soil and with stones, but all his attempts did not work. He tried to devise a plan to seal off the water leakage all day, and to no avail. Finally, as night was approaching, he decided that there was no other way, so he lay down in the field, with his body pressed against the cracks so that water couldn't escape. He stayed there all night, and in doing so, prevented the loss of water from the paddy field. Meanwhile, in the *Gurukula*, it was discovered that the student was missing. So early in the morning the next day, the *Guru* and a few other students set out to search for him. The *Guru* called out his name in the field and there was a response. So he approached the sound only to discover his student, lying in the field, covered in mud. The student explained to the *Guru* why he did so; and upon hearing his story, the *Guru* was so pleased that he instantly blessed the student with all knowledge.'

From this story, we see how determined the student is to obey his *Guru* and to not disappoint him. Thus, we can understand the reciprocal relationship between the *Guru* and his students. *Guru*s have a great deal of affection and compassion for their students, and the students have a great deal of respect, devotion and affection for their respective *Guru*s.

Teaching-learning system at the Gurukula

Every ancient *Gurukula* had only one *Guru*. But there were a large number of students in the *Gurukula*s. So the question arises, how did one *Guru* manage to teach such a large number of students, of different academic levels, all at the same time?

The system worked in a special way. The *Guru* taught the most senior students himself, and those students taught their juniors, and they their juniors; such that the students admitted a few months before them taught the newly admitted students. Whatever knowledge the students gained, they had to immediately teach to their successors, in a repetitive manner. In this way, teaching and learning happened simultaneously. So, everyone would easily memorize the tenets.

Subjects taught at the Gurukula

Primarily, eighteen (18) different subjects were taught at the *Gurukula*. They included:

1. Four *Veda*s: The primary scriptures of ancient Indian religion and philosophy composed of sacred hymns and formulas. The four Vedas are *Rig Veda, Yajur Veda, Sama Veda* and *Atharva Veda*.
2. Six Disciplines of Vedas:

   i) *Siksa* (phonetics and phonology): It deals with the letters of the Sanskrit alphabet, accent, quantity, stress, melody, and rules of

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

euphonic combination of words during a Vedic recitation.

ii) *Kalpa* (rituals): It deals with the procedures for Vedic rites of passage: rituals associated with major life events such as birth, wedding and death in family, as well as discussing the personal conduct and proper duties of an individual in different stages of his life.

iii) *Vyakarana* (grammar): It deals with the rules of grammar and linguistic analysis to establish the exact form of words and sentences to express ideas properly.

iv) *Nirukta* (etymology): It deals with explanation of archaic words as well as linguistic analysis to help establish the proper meaning of the words, given the context they are used in.

v) *Chanda* (prosody): It deals with the poetic meters, including those based on fixed number of syllables per verse, and those based on fixed number of morae per verse.

vi) *Jyotish* (astrology): It deals with the study of astronomy, astronomical events such as eclipses, and the movement of celestial bodies like planets and stars to determine calendars etc.

1. *Purana*s (historical canons): It includes 72 books containing historical canon.

2. *Nyaya* (logic): It is one of the major branches of Indian Philosophy that deals with analysis of logic and epistemology.

3. *Mimamsa* (Vedic rituals): It deals with the philosophy of Vedic rituals and ritualistic hermeneutics.

4. *Dharmasastra* (religious canons): It deals with the study of religion and religious canons.

5. *Ayurveda* (medicine): It deals with the study of the ancient medical system, along with healing, treatment and medication.

6. *Dhanurveda* (archery): It deals with weaponry, mostly archery with bows and arrows.

7. *Gandharvaveda* (music): It deals with music and musical instruments, and all types of classical dances.

8. *Arthasastra* (economics): It deals with economics and political sciences.

Apart from these, other 64 performing arts were also available for study in certain special *Gurukula*s.

Beginning of study

Even though the formal studies in a *Gurukula* started at eight years old for young students, their introduction to letters and syllables was done earlier on. It was prohibited to expose kids under the age of five to schools and any form of scholastic education. But when a

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

child turns five, a ceremony called *akshararambha* was done to introduce him to basic alphabets and syllables, and gradually start to teach him to read and write. This was also a preparation to send the child to *Gurukula* when he turns to an appropriate age.

Duration and method of study

Life in the ancient times was demarcated into four phases. Assuming a person lived for 100 years, each quarter of their lives (25 years) was called a phase or an *ashram*. The first 25 years was known as the *Brahmacarya* phase. During that time, a person is meant to study and learn the above-mentioned subjects. Since they started at 8 years old and studied till 25, they spent almost 18 years studying in the *Gurukula*.

The accessibility to books or reading materials was rare. Therefore, students recited the words uttered by the *Guru*. The initial phase of studying was largely verbal. Regarding the Vedas, their primary course of study, they recited and memorized the Vedic hymns and verses without the knowledge of their meanings for almost twelve years, till the age of 20. After that, in the final five years of their study, they would understand the meanings of the whole Vedic canon that they previously memorized. In this way, young children commit Vedas to their memory and when they come of age, they would understand the meanings of their memorized texts. This is a very efficient way to impart canonical knowledge.

A famous poet has mentioned this method of acquiring knowledge in one of his poems this way:

'*Adhiti bodhacharana pracaranaihi*'

It means, 'first one needs to memorize, then he needs to understand, then he needs to practice and finally needs to teach others.'

Daily routine and vacations

It was mandatory to already be awake two hours prior to the dawn. Till dawn, they used to start self study and recite the Vedic hymns. After sunrise, they would exercise, do yoga and practice combat, with and without weapons. After that, some students would set out to the forests to gather *kusha* grass, fruits and firewood, and the rest would set out to the villages and nearby towns to ask for alms and donations. They would rest for an hour after consuming food, and would restart studying with the *Guru* or their fellow students after noon. They would consume light food during the evening and study till 9 pm. Then they would go to sleep.

They did not have summer vacations, winter vacations or weekends; national or public holidays didn't matter to them. However, in each fortnight according to the ancient lunar calendar, the first day and the eighth day were considered holidays. The first day, called the *Pratipada*, was considered unsuitable to study, for anyone who studies that day would have their knowledge thinned out. This is also mentioned in a verse in an ancient Sanskrit epic, the *Valmiki*'s *Ramayana*.

Ram's wife Sita had been abducted and held captive by the villain Ravana

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

in Lanka. So Ram had sent his loyal follower Hanumana to Lanka to survey the situation and inform him of Sita's condition. When Hanumana returned from Lanka, he said to Rama: 'My Lord, your wife is slender, lean and thin by nature. But separation from you has further thinned her just as the knowledge of someone who studies during the first day of the fortnight.'

Graduation ceremony

At the age of 25 years, the students completed their study at the *Gurukula.* Then they would leave for their home and would start their family lives. There would be a formal ceremony to send off the students, called *Samavartana*, which means completion. It marked the fulfillment of the vows taken by the children at the age of eight in their *Upanayana* ritual. Therefore, in their *Samavartana,* they consider their vows fulfilled and themselves free to move on with their lives by returning home. During *Samavartana*, the *Guru* bestows his final teachings to the students. They were:

1. Always speak the truth; never lie.
2. Always follow the rules of the tenets.
3. Never be lazy to study.
4. Impart your knowledge whenever you can.
5. Always respect the gods and your ancestors.
6. Treat your parents, teachers and guests like gods.

Before returning home, however, some students have a desire to express their gratitude to their *Guru* and hence offer them '*Gurudakshina*' which means 'offering to the teacher' of their own free will. There are many examples of the offering, acceptance and rejection of *Gurudakshina* in the ancient canons.

A few students who desired to deeply study their particular fields of interest would ask permission from the *Gurus* to keep staying in the *Gurukula*. Such students lived there for many more years, specializing in particular subjects, without having to follow certain rules of student life, but without disturbing the younger students.

Modern education systems

When Westerners knew about the vast knowledge and treasure in Sanskrit language, they started teaching, learning and researching it. The thousands of years old traditional system of *Gurukula* Sanskrit education transformed into the modern education system and got placed in the formal system. Prior to the formulation of education policy by the British rule in India, Sanskrit education was largely imparted in its own traditional *Gurukula*-based model. In other words, then governments or state systems did not pay that much attention to education. Any resource spent in education was either religiously or willingly, but there was no mandatory rule to provide support in education. It means that education was not run from state support. Therefore, the students had to go for *Bhiksya* in many households, as they

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

did in the ancient times, to collect resources mostly, from which the then education system was run and lasted for ages.

But this tradition of *Gurukula* education gradually lost its momentum when British rule got hold of India. However, they could not discard the traditional Sanskrit education from India as it was the crux of education there even after enforcement of their new education policy. Therefore, they established Sanskrit colleges in some parts of India in that sequence. In 1791 AD, Banaras Sanskrit College was established and formal teaching and learning of Sanskrit was started there.

Slowly, the modern education system started to replace the traditional *Gurukula* system. Due to the influence of British rule in Nepalese power politics, the British educational system started to dominate the Nepalese' education system as well. During the late 18th century, in the Rana regime, as Nepal stepped towards the English education system, Sanskrit education also got state recognition and received state protection, and had a chance to be organized. But the achievement was not so easy to make, and actually was a result of a long time struggle of many individuals who fought hard to preserve the ancient Sanskrit education systems.

By the 20th century, both countries completely adapted to the modern education systems. But some people, even if with slight changes, were keeping the *Gurukula* tradition alive in their communities. Today, as the world functions in formal degrees and modern education systems, there are still some *Gurukula*s left in Nepal and India that function parallel with the modern systems.

Advantages of Gurukula education system

Gurukula education system is discarded for the rank-based competitive education system of today. But it is quite an effective and important method of teaching and learning, which has some distinct advantages over the modern education system, such as:

1. The system of education was more collaborative than competitive, so that there was no unhealthy competition or animosity between peers. Everyone could learn at their own pace, free of judgment, increased stress levels, and familial and societal pressure to achieve excellent grades. This made the education system knowledge and learning based, as opposed to the marks-based education of today.

2. Living in *Gurukula* made the children more responsible for their own actions, and hence more independent. They learnt to take care of themselves, do their own chores, cook food, and fend for themselves, in the absence of parents to do it for them. They also learnt discipline and to abide by the rules of community, which automatically made them decent human beings.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. They would have to live off the donations given to them by the society. This led to development of gratitude, which then instilled a sense of duty towards the society, and motivated them to give back to the society when they arrived at a position to do so.

4. While asking for donations, they also learnt to let go of their ego, vanity or pride, and developed a sense of humility. They occasionally met with harsh remarks or criticism while asking for donations, and would have to learn to accept the criticism with politeness and softness. This ultimately made them better citizens.

5. The *Gurukula* system ensured a healthy relationship of love, respect and trust between the teacher and the student, which directly translated into motivation for both parties to do better. This also developed a sense of security in the students and compensated for their separation from their biological parents.

6. In the modern education system, there is absence of creation of moral conscience and ethical training, which took place in the traditional *Gurukula* system.

7. Since the *Gurukula* system was not commercial in nature, the motivation for teaching was not corrupted by desire for wealth. Furthermore, monetary situations did not hinder the students' education. Money, therefore, was not a deciding factor for the quality of education received, unlike today's modern system.

8. The *Gurukula* education focused on applied knowledge, which would be put to use in the lives' of students later, and was not limited to bookish knowledge like that of today. It prepared students for all fields of life to face the world that lay ahead of them.

Conclusion

As we step into an age of globalization of technology, we cannot deny the fact that the modern education system has become a major part of the functioning of society. But at the same time, we cannot overlook the negative impacts of such a system. So perhaps the world needs to take a step back and learn a few things from the classical education systems, which were more simplistic and yet effective. And all the while, there must be efforts made to preserve the ancient systems, and attempts to combine the positive methods from systems like *Gurukula* into the education system for our children and theirs. Perhaps a combination of the traditional and the modern is what the world needs.

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यज्ञको स्वरूप

✍ यज्ञाचार्य पं. हाकिम भण्डारी

यज्ञको अर्थः

संस्कृत व्याकरणअनुसार यज् धातुबाट नङ् प्रत्यय गर्दा यज्ञ शब्द बन्दछ। जसको अर्थ हुन्छ **इज्यन्ते देवा अनेनेति यज्ञः** अर्थात् जसबाट देवताहरू पुजिन्छन् त्यसलाई यज्ञ भनिन्छ। धर्म र राष्ट्रको मर्यादाको रक्षाका लागि महापुरुषहरूलाई एकत्रित गर्नु पनि यज्ञ नै हो। मत्स्यपुराण १४४।४४ मा भनिएको छः

देवानां द्रव्यहविषां ऋक्सामयजुषां तथा।
ऋत्विजां दक्षिणानां च संयोगो यज्ञ उच्यते।।

जुन कर्ममा देवता, हवनीय द्रव्य, वेदमन्त्र, ऋत्विक् र दक्षिणा यी पाँचको संयोग हुन्छ त्यसलाई यज्ञ भनिन्छ।

यसै सन्दर्भमाः

१. यजनं इन्द्रादिदेवानां पूजनं सत्कारभावनं यज्ञः।
२. इज्यते देवेभ्यः अस्मिन्निति यज्ञः।
३. इज्यन्ते सम्पूजिताः तृप्तिमासाद्यन्ते देवा अत्रेति यज्ञः।
४. यजनं धर्मदेशजातिमर्यादारक्षणायै महापुरुषाणामेकीकरणं यज्ञः।
५. इज्यन्ते सङ्गतीक्रियन्ते विश्वकल्याणाय परिभ्रमणं कृत्वा महान्तो विद्वांसः वैदिकशिरोमणयः व्याख्यानरत्नाकाराः निमन्त्रन्ते अस्मिन्निति यज्ञः।
६. इज्यन्ते स्वकीय बन्धुबान्धवादीनां प्रेयः सम्मानभाजां सङ्गतीकरणाय आहूयन्ते प्रार्थ्यन्ते च येन कर्मणेति यज्ञः।
७. इज्यन्ते चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्याः सच्छिष्येभ्यः सम्प्रदीयन्ते (उपदिश्यन्ते) सदाचार्यैर्येन वा स यज्ञः। (गौतमधर्मसूत्र ८।१८)

यज्ञको भेद यस प्रकार उल्लेख गरिएको पाइन्छः

✍ वशिष्ठ, वाराणसी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८. औपसानहोमः वैश्वदेवम्-पार्वणम्-अष्टकामासिकश्राद्धम्-श्रवणा शलगव इति सप्तपाकयज्ञ संस्थाः। अग्निहोत्रम्। दर्शपौर्णमासौ आग्रयणम् चातुर्मास्यानि निरूढपशुवन्धः सौत्रायणी पिण्डपितृयज्ञादयो-दर्विहोमा इति सप्त हविर्यज्ञसंस्थाः। आग्निष्टोमः उकथः षोडशी वाजपेय अतिरात्रः आप्तोर्याम इति सप्तसोमसंस्थाः।

९. पञ्चमहायज्ञ आज पनि प्रचलित छन् ब्रह्म-पितृ-देव-भूत-मनुष्य।

१०. यज्ञेनाप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण मानवाः।
आप्यायन्ते धर्मयज्ञा यज्ञाः कल्याणहेतवः।। (पद्मपुराण सृष्टिखण्ड ३।१३२)

११. यज्ञैराप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण वै प्रजाः।
आप्यायन्ते धर्मयज्ञा यज्ञाः कल्याणहेतवे।। (विष्णुपुराण १।६।८)

१२. यज्ञादेव प्रजाश्चैव यज्ञादन्ननियोगिनः।
सर्वं यज्ञात्सदा भावि सर्वं यज्ञमयं जगत्।। (कालिकापुराण ३१।४०)

१३. ये यजन्ति स्पृहा शून्या हरिभक्तान् हरिं तथा।
त एव भुवनं सर्वं पुनन्ति स्वांघ्रिपांशुना। (नारदपुराण ३९।६४)

१४. यज्ञदानादिकं कर्म भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम्। (अग्निपुराण ३८१।४८)

१५. स्वाहा स्वधा वषट्कारा यत्र सम्यगनुष्ठिताः।
अजश्रं चैव वर्तन्ते वसेत्तत्राहचारयन्।। (महाभारत शान्तिपर्व १८७।५१)

१६. यज्ञकर्ता शक्रलोके वसते शाश्वतीः समाः।
दानी चान्द्रसमं लोकं व्रती सौरं व्रजत्यलम्।। (गर्गसंहिता वि।ख।घरज्ञण्

१७. यज्ञेन देवा विमला विभान्ति यज्ञेन देवा अमृतत्वमाप्नुयुः।
यज्ञेन पापैर्बहुभिर्विमुक्तः प्राप्नोति लोकान् परमस्य विष्णोः।। (महर्षि हारित)

१८. यज्ञात् सृष्टिः प्रजायन्ते अन्नानि विविधानि च। तृणान्यौषध्यथ च फलानि विविधानि च।
जीवानां जीवनार्थाय यज्ञः संक्रियतां बुधैः।। (महर्षि वसिष्ठ)

१९. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे। (ईशोपनिषद् २)

२०. आध्वर्यवस्य यज्ञेषु प्राधान्याद् व्याकृतः पुरा।
यजुर्वेदोऽथ हौत्रार्थमृग्वेदो व्याकरिष्यते।। (महर्षि सायणाचार्य)

२१. अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।। (मनु ३।७६)

२२. अपत्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने पुराध्यम्।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्।। (ऋग्वेद ६।५१।१३)

२३. स्वाहास्वधास्वस्तिविवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि।।

२४. देशः कालः पृथग् द्रव्यं मन्त्रतन्त्रर्त्विजोऽग्नयः।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवतायजमानश्च ऋतुर्धर्मश्च यन्मयः। ।
स एष भगवान् साक्षात् विष्णुर्योगेश्वरेश्वरः। । (श्रीमद्भागवत १०।२३।४७)

२५. ग्रामे ग्रामे स्थितो देवो ग्रामे ग्रामे स्थितो मखः।
गेहे गेहे स्थितं द्रव्यं धर्मश्चैव जने जने। । (भविष्यपुराण-प्रतिसर्गपर्व)

२६. देवानां द्रव्यहविषां ऋक्सामयजुषां तथा।
ऋत्विजां दक्षिणानां च संयोगो यज्ञ उच्यते। । (मत्स्यपुराण १४४।४४)

२७. औपसानहोमः वैश्वदेवम्-पार्वणम्-अष्टका मासिकश्राद्धम्-श्रवणा- शलगव इति सप्त पाकयज्ञ संस्थाः। अग्निहोत्रम् दर्शपौर्णमासौचातुर्मास्यानि निरूढपशुबन्धः-सौत्रायणी-पिण्डपितृयज्ञादयो दर्विहोमा इति सप्त हवियज्ञसंस्थाः। अग्निष्टोमः - अत्यग्निष्टोमः - उक्थः षोडशी-वाजपेय-अतिरात्र-आप्तोर्याम इति सोम-संस्थाः।

२८. देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। । (शुक्लयजुर्वेद ३।५०१)

२९. देवभूतपितृब्रह्म मनुष्याणामनुक्रमात्।
महासत्राणि जानीयात्त एव हि महामखाः। । (छन्दोगपरिशिष्ट)

३०. अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भूतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्। । (मनुस्मृति३।७०)

३१. यज्ञनिष्पत्तये सर्वमेतद् ब्रह्मा चकार ह।
चातुर्वर्ण्यं महाभाग यज्ञसाधनमुत्तमम्। । (प.पु.सृष्टिखण्ड ३।१२१)

३२. आदौ ब्रह्ममुखाद् विप्रः समुद्भूतः पुरानघः।
वेदास्तत्रैव सञ्जाताः सृष्टिसंस्थितिहेतवः। ।
तस्मात् विप्रमुखे वेदाश्चार्पिताः पुरुषेण हि।
पूजार्थं सर्वलोकानां सर्वयज्ञार्थतो ध्रुवम्। । (प.पु.सृष्टिखण्ड ४८।११३-११४)

३३. शान्तिमङ्गलहोमेषु नास्तिक्यं यत्र जायते।
राजा वा म्रियते तत्र स देशो वा विनश्यति। । (मत्स्यपुराण २३७।११)

३४. व्रतेन दीक्षामाप्नोति... श्रद्धया सत्यमाप्यते। । (शुक्लयजुर्वेद १९।३०)

३५. यज्ञोऽभूद्वराहस्य कायाच्छम्भुविदारितात्।
यथाहं कथये तद् श्रृण्वन्त्ववहिता द्विजः। । (यज्ञोत्पत्ति- महर्षि मार्कण्डेय)

३६. मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराधात्। । (पाणिनीय शिक्षा)

३७. पञ्चमहायज्ञ
भूतयज्ञो-मनुष्ययज्ञः-पितृयज्ञो-देवयज्ञो-ब्रह्मयज्ञ इति। (शतपथ ब्राह्मण ११।५।५।१)
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होमो दैवो बलिर्भूतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।(मनुस्मृति ३।७०)

३८. या वै प्रजा यज्ञे अनन्वाभक्ताः पराभूता वै ताः एवमेवैतद्याः इमाः प्रजा अपराभूतास्ता यज्ञमुख आभजति। (शतपथब्राह्मण २।३।१।२०)

३९. न यज्ञाः सम्प्रवर्तन्ते न तरस्यन्ति तापसाः।
आहारदुःखान्निश्रीकाः प्रजाः क्षीणाः भयातुराः।।(कालिकापुराण २०।१९)

४० अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।(श्रीमद्भगवद्गीता ३।१४)

यज्ञको सङ्क्षिप्त अनुक्रम यस प्रकार छः

१. नित्यकर्म विधायैव प्रायश्चितं समाचरेत्।गणेशं पूजयेदादौ स्वस्तिवाचनपूर्वकम्।।
२. मातृणां पूजनं कार्यं नान्दीश्राद्धमतः परम्।आचार्यमथ कृत्वैव ब्रह्माणं गाणपत्यकम्।।
३. सदस्यमुपद्रष्टारमृत्विजो वृणुयात्ततः।प्रवेशनं मण्डपस्य तावद् दिग्रक्षणं पुनः।।
४. ततो मण्डपपूजादि ग्रहादिस्थापनं ततः।देवताग्रहहोमं च पूर्वाङ्गमिति कथ्यते।।
५. पूजास्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा।संस्रवादिविमोकान्तं होमशेषं समापयेत्।।
६. पूर्णपात्रादिदानं च गोदानं च ततः परम्।श्रेयो मण्डपदानादि ह्यभिषेको विसर्जनम्।।
७. विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्वा भोजयेद् विधिपूर्वकम्।शुभाशीर्ग्रहणं कुर्यादुत्तराङ्गक्रमो ह्ययम्।।

यस प्रकार ग्रन्थादिमा प्राप्त श्लोकादिद्वारा यज्ञका स्वरूपबारे सङ्क्षिप्त लेख पाठकहरूसमक्ष प्रस्तुत गरियो।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्न्यास धर्म

✍ भीमप्रसाद पौडेल

आर्य-अनार्य, स्त्री-पुरुष, सुर-असुरादि ठूला-साना जीव समान रूपमा हितकारक हुन्छन्, त्यही साधारण धर्म हुन्छ। यो साधारण धर्मअन्तर्गत धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, दया, दान, तप, परोपकार, सत्य पर्न जान्छ। जस्तै सन्न्यासहरूका निवृत्ति धर्म, गृहस्थीहरूका प्रवृत्तिधर्म, स्त्रीधर्म, पुरुषधर्म, आर्य धर्म, अनार्य धर्म, वैष्णव धर्म, शाक्त धर्म आदि हुन्छन्। जस्तै पूर्व जन्मार्जित पुण्योपचयका प्रभावबाट असाधारण शक्तिमै व्यक्ति विशेषद्वारा गरिन्छ। यो सन्न्यास धर्म विशेष धर्म हो। यसको उल्लेख गर्न निकै कठिन हुन जान्छ।

वर्णाश्रम धर्मावलम्बी आर्य जातिको हितकारक हुन्छ र त्यसैद्वारा अनुष्ठान गरिन्छ। अर्को माध्यमबाट कतै हुँदैन। यही नै यसको विशेष धर्मता हो। प्रवृत्ति, निवृत्तिको भेदबाट मानव धर्मका दुई भेद शास्त्रमा निर्णित हुन्छन्। जसमा सन्न्यास धर्म नै निवृत्ति धर्मको अन्तिम लक्ष्य हुन्छ। सन्न्यासको अधिकार त यथार्थतः वर्णाश्रम धर्मको साधनबाट मानवमा क्रमशः विकसित हुन जान्छ। पूर्वजन्ममा गरेको पुण्यको माध्यमबाट नै सन्न्यासको अधिकार प्राप्त हुन जान्छ। ब्रह्मचर्याश्रममा प्रवृत्ति धर्मको सदुपयोगको शिक्षा र गृहस्थ धर्ममा आधार लिएर धर्मानुकूल चरितार्थ, वानप्रस्थमा निवृत्ति मार्गको सदुपयोगको शिक्षा, सन्न्यासाश्रममा चरितार्थताको सिद्धान्त हुन जान्छ।

प्रसिद्ध स्मृतिकार त्रिकालदर्शी महर्षिहरूले त सन्न्यासको अधिकार ब्राह्मणलाई नै मुख्य रूपमा निर्दिष्ट गरेको पाइन्छ अन्यलाई होइन। जस्तै - आफूमा अग्नि आरोपित गरेर ब्राह्मण गृहबाट प्रव्रज्या गर्नु। ब्राह्मण नै परिव्राजक हुन्छन्। वेदव्रत पूर्ण भएपछि विद्वान् ब्राह्मण मोक्षको आश्रय लिनुपर्छ भनेको छ।

श्रुत्युक्त ब्राह्मणका चार आश्रम हुन्छन्। क्षत्रियका तीन, वैश्यका दुई तथा शूद्रका एक। विष्णु चिह्न धारण गर्न मुखज अर्थात् ब्राह्मणको धर्म हो। क्षत्रिय, वैश्यका लागि होइन यो दत्तात्रेय मुनिको कथन मानिन्छ।

✍ पूर्वविद्यार्थी, साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रौत-स्मार्त वचनअनुसार विवेचनाबाट सर्वाङ्गपूर्ण वैदिक सन्न्यासको दीक्षा विधि ब्राह्मणका लागि नै सिद्ध देखिन जान्छ। पुराण, तन्त्रहरूमा ब्राह्मणेत्तर अन्य वर्णहरूको लागि पनि गृह परित्यागपूर्वक निवृत्ति मार्गको अवलम्बन विधि मिल्दछ। तर वेदोक्त सन्न्यास दीक्षाको विधान अन्य वर्णलाई निषेध पाइन्छ। विप्रातिरिक्त विषय विरक्त अन्य वर्ण पनि निवृत्ति मार्गअनुसार गर्न चाहन्छन् भने निवृत्ति ग्रहणेच्छु गृहस्थ धर्मलाई छोडेर कुनै विशिष्ट प्रव्रज्या गर्न सकिन्छ। यही नै सन्न्यासाश्रमोचित तथा वैराग्याभ्यास हेतुका प्रव्रज्यामा विशेष भेद देखिन्छ। जस्तै - शूद्रको गर्भबाट समुत्पन्न महात्मा विदुरले परमहंस गति प्राप्त गर्नुभयो। त्यस कारण वेदोक्त सन्न्यास-दीक्षा केवल ब्राह्मणहरूका लागि मात्र निहित देखिन्छ बुझाइअनुसार। अन्य वर्णमा महात्माहरूका लागि निवृत्ति पोषक प्रव्रज्या नै ग्राह्य हुन्छ। यही नै शास्त्रसम्मत समुचित मार्ग देखिन्छ।

शास्त्रज्ञानबाट पाप-पुण्य संसारको अनुभव श्रवणबाट प्रपञ्चबाट विरत भएर क्रोध, ईर्ष्या, असूया, अहंकार, अभिमानात्मक समस्त संसारलाई छोडेर दारैषणा, धनैषणा, लोकेषणा, देहवासना, शास्त्रवासना, लोकवासनालाई त्याग्दै वमनको समान समस्त संसारलाई मानेर साधनसम्पन्न जो सन्न्यस्त हुन्छ त्यही ज्ञानसन्न्यास कहलाउँछ।

क्रमशः सबैथोक छोड्दै या छोड्ने अभ्यास अनुभव ज्ञानवैराग्यबाट स्वरूपानुसन्धानद्वारा शरीरमात्र अवशिष्ट सन्न्यास लिएर जुन जातरूपधर हुन्छ ज्ञानवैराग्य सन्न्यास प्राप्त हुन्छ। ब्रह्मचर्यलाई निवृत्ति गर्दै, गृहस्थ पार गरेर, वानप्रस्थलाई अपनाएर वैराग्यको अभावमा आश्रमानुसार सन्न्यास लिइन्छ भने वैराग्य सन्न्यास प्राप्त हुन्छ। विद्वत्सन्न्यास, ज्ञानसन्न्यास, विविदिशा सन्न्यास, कर्मसन्न्यास गरी सन्न्यास चार प्रकारका हुन्छन्।

कर्मसन्न्यास दुई प्रकारका हुन्छन्। एक निमित्त सन्न्यास दोस्रो अनिमित्त सन्न्यास। निमित्त सन्न्यास नै आतुर सन्न्यास अनिमित्त सन्न्यास नै क्रम सन्न्यास हो। आतुर अवस्थामा सबै कर्मको लोप गर्दै प्राणोत्क्रमण क्रममा जो सन्न्यास हुन्छ त्यही नै निमित्त सन्न्यास हुन्छ। दृढाङ्ग नै समस्त कृतकलाई नश्वर एवम् देहादिलाई हेय जान्दै हंस, शुचिपद्, वसु, अन्तरिक्ष, सद्धोता, वेदिषद्, अतिथि, दुरोणसत्, नृषद्, वरसद्, ऋतसत्, व्योमसत्, अब्जा, गौजा, ऋतजा, अद्रिजा, ऋत, बृहत्, ब्रह्म अतिरिक्त सबैको नश्वर जानेर क्रमशः जसले सन्न्यास लिन्छ, निमित्त सन्न्यास हुन्छ।

सन्न्यास ६ प्रकारका मानिन्छन् : १) कुटीचक, २) बहूदक ३) हंस ४) परमहंस ५) तुरीयातीत ६) अवधूत।।

कुटीचक - सन्न्यास शिखा, यज्ञोपवित, दण्ड, कमण्डलु कौपिन, कन्थाधारी हुन्छ।

बहूदक - सन्न्यास प्रायः सबै नै कुटीचक जस्तै नै हो।

हंस - सन्न्यास जटाधारी त्रिपुण्डक या ऊर्ध्वपुण्ड्र मधुकरी वृत्तिमा रहने।

परमहंस - शिखा, यज्ञोपवितरहित, पाँच घरमा १ भिक्षावृत्ति, करपात्री समस्त अङ्गमा भष्मधारण।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुरीयातीत - सन्न्यास गोमूत्र फलाहारी देह निर्वाहार्थ अन्नाहार गर्नु नै हो। शरीरलाई नगनको स्वरूप।

अवधूत - सन्न्यास कुनै नियम नभएको निन्दित पतितलाई छोडेर सबै वर्णमा नमागीकन दिएको चिज प्रसाद स्वीकार गर्ने अजिंगर वृत्ति।

सन्न्यास स्वेच्छामय भगवान् साकार, निराकार दुइटै नै योगीजनहरू सतत निराकार तेज स्वरूपको ध्यान गर्दछन् र यो सन्न्यास धर्ममा चार मठ छन् या पाइन्छ। १) जोशी मठ २) गोवर्धन मठ ३) शृङ्गेरी मठ ४) द्वारका मठ। यिनै मठबाट सन्न्यासका विधा र विभाजनअनुसार नामकरण गरिएको देखिन्छ। जसअनुसार गिरि, पुरी, भारती, पर्वत, अरण्य, वन, तीर्थ, सागर, सरस्वती, आश्रम यिनै सन्न्यास विधिका अखडा यस प्रकार पाइन्छ। जुन अखडा, आवाहन अखडा, अग्नि अखडा, महानिर्वाणी अखडा, निरञ्जनी अखडा, अटल अखडा, अरण्य अखडा आदि पर्छन्।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्य, निष्ठा र उपकार : हाम्रा दर्शनको आधार

✍ चन्द्रप्रसाद खनाल

आजको युग भौतिक पक्षले भुमरी पारेको युग हो। क्रियाकलापहरू साना ठूला जस्ता भए तापनि भौतिक पक्षलाई आधार मानेर अगाडि बढाइन्छन्। आध्यात्मिक कर्महरू पनि नाफाघाटाको उद्देश्यबाट चलायमान छन्। समग्रमा बसेर होस् वा एकान्तमा अनुभव गर्दा होस् आजका मानिसका क्रियाकलाप·निश्चय नै तत्काल देखिने अवस्थाको परिणाम वा क्रियाकलापको पक्षमा सक्रिय छन् चाहे त्यो आध्यात्मिक वा भौतिक होस्।

विश्वको संरचनागत विभाजनलाई हेर्दा पश्चिमको समाजले भौतिक पक्षलाई त धेरै हदसम्म शासन र व्यवस्थापन गरेको पाइन्छ तर अध्यात्मको अभावले भौतिक अनुशासन कायम भए तापनि मानसिक असन्तुष्टि अचाक्ली बढेको सर्वत्र पाइन्छ जुन कारणले गर्दा वास्तवमा जीवनलाई शान्तिपूर्ण प्रगतितर्फ लैजान भने निकै गाह्रो परेको तथ्य यत्रतत्र सर्वत्र देख्न पाइन्छ।

प्रकृतिलाई सबल र सशक्त शोषण मात्र गरेर मानवजीवनका भौतिक पक्षलाई सहज र सरलताका साथै केही पक्षमा सशक्त बनाउन पनि पश्चिमाध्ययन निकै सबल देखिएको छ। जीवनलाई जगतसँग जसोतसो मिठो पार्न लागेको भौतिक विकासले मेडिकेसनलाई दरिलो बनाउन लागिरहँदा मेडिटेसनलाई बिर्सिनाले आज धेरै कुरा भएर पनि नभएझैं वा अभावको अनुभूतिकै साथ समाजमा विकास भएझैं हिंडिरहेको पाइन्छ जुन विषय पश्चिमा विचारकमाझ चिन्ताको जरो बन्दै गएको छ।

एउटा जीवन बन्न पनि आमाबुबाको प्रेमको अनुपम सङ्गम हुनुपर्ने यथार्थ सत्यलाई मनोरञ्जनको उत्पत्तिको रूपमा सन्तानका बारेमा बुझाइका कारण जन्माएर पश्चिमा संस्कार सन्तानहीन समाज बनेको यथार्थ अब ढाकेर ढाकिंदैन र त्यसले हामीमा स्थान पाउनु हाम्रो समाजका लागि घातक हुन्छ भन्ने पङ्क्तिकारको बुझाइ हो। यस्तो संरचना निर्माण हुनुमा वास्तविक शरीरको बनावट र कर्मको मर्मलाई बुझ्ने ज्ञानको अभाव नै

✍ *पूर्वविद्यार्थी, साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुख्य कारण रहेको पक्ष बौद्धिक जगतमाझ मन्थनीय छ। बुझ्नुपर्ने सत्य के हो भने जीवन १००% अध्यात्म र १००% भौतिकताको अतुलनीयजन्य संरचनाले प्राप्ति भएको स्वरूप हो भन्ने यथार्थ सत्यमा शंका नै अज्ञानताको मूलाधार मान्न सकिन्छ।

यस अध्यात्मको आधार सत्य हो। विश्वको सर्वोच्च शिखरको अमृतत्त्वद्वारा सिञ्चित हाम्रो समाज सत्यकै बाटोबाट विजयी भएको तथ्य प्रमाणित छन्। सत्य न्यायमा मौलाउँछ अनि अन्यायमा ओइलाउँछ। सत्य कठोर होइन कोमल हुन्छ। व्यावहारिक निष्ठाको प्रयोग हामी पूर्वीय वैदिक आधारमा युधिष्ठिरको कर्म गर्ने प्रक्रियाबाट बुझ्न सक्छौं।

सत्यको स्वरूप अलग्गै हुँदैन, भएको स्वरूपलाई सत्यको नजरले प्रयोग गर्नु नै सत्य स्वरूप हुन्छ। सत्य अनुपम मार्ग हो। सत्यबाट सहजता प्राप्त हुन्छ। सत्यले सवल बनाउँछ। सत्यले विजयी बनाउँछ। सत्य सदाचारी हुन्छ। सत्य सफल हुन्छ। सत्य शक्तिशाली हुन्छ तर सत्य बनावटी हुँदैन। सत्य प्राकृतिक हुन्छ अनि परिस्कृत हुन्छ। सत्यमा सम्पूर्णता हुन्छ। मूलतः सत्य पूर्ण हुन्छ तर असत्य अपूर्ण हुन्छ। कहिलेकाहीं पूर्णझैं देखिए पनि देखिएको असत्य आफैंमा अपूर्ण हुन्छ। असत्य अन्याय पक्षधर हुन्छ, अपराधजन्य हुन्छ। सत्यको परिणाम सधैं सुन्दर र ऐतिहासिक हुन्छ। सत्य चिरस्थायी हुन्छ भने असत्य क्षणिक हुन्छ।

महाभारतमा युधिष्ठिरको न्याय, निष्ठा र सत्यले र संसारलाई र स्वयंलाई पुरस्कृत गरेको यथार्थ वर्णित छ। गुप्तवासमा रहँदाको पीडामा पनि सत्य र न्यायको पक्षमा उभिँदा र भीम अर्जुन होइन, माद्रीका सन्तानलाई जीवित बनाउन रोजाई गर्दा सबै फिर्ता पाएको यथार्थ प्रकाशित छ। व्यावहारिक निष्ठाको प्रयोग हामी पूर्वीय वैदिक आधारमा युधिष्ठिरको कर्म गर्ने प्रक्रियाबाट बुझ्न सक्छौं। महाभारतको वनपर्वमा यक्षको प्रश्नमा युधिष्ठिरको न्यायोचित उत्तरले स्वयंले नसोचको उच्च परिणाम प्राप्त भएको सत्य छर्लङ्ग छ तथापि पछिल्ला प्रयोगकर्ताहरूको संकीर्णताले गर्दा यसको उपस्थिति कमजोर देखिन थालेको छ। तसर्थ समयसापेक्ष यसको सशक्त स्वरूप समाजरूपी प्रयोगशालामा थप व्यावहारिक प्रयोगमा लानु टड्कारो आवश्यकता भएको छ भन्ने हाम्रो बुझाइ हो।

निष्ठा निराधार हुन्छ तर निर्माणको आधार हुन्छ। एशियाबाट पहिलो नोबल साहित्य पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ ट्यागोरका अनुसार Faith is pregnant word. Pregnant को अर्थ हुन्छ गर्भिणी। गर्भीर्णीबाट के जन्मन्छ, के जन्मँदैन ? पक्कैलाई थाहै छ। यो शब्दको अर्थ मष्तिष्कको लेवलको आधारमा परिभाषित हुन्छ भन्ने स्वयं एशियाका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेताको भनाईले बुझाउँछ। निष्ठा (Faith) ले नै प्रह्लादले खाँबाबाट (आजको भाषामा पिलर) भगवान निकाले भने गजेन्द्रले निष्ठाकै कारण स्वयं भगवानलाई उतारे। निष्ठाले नै जन्मनु भएको तपाईं पनि भने निष्ठाले नै ८४ लाखको योनिमा आफ्नो स्रोत निर्धारण गर्छ। So, the level of faith decides what you are and will be. गीतामा भगवान श्रीकृष्णले निष्ठाको स्वरलाई परिचित पार्नुभएको छ। तपाईंको निष्ठाको स्तरअनुसार सम्पूर्णता प्राप्ति हुन्छ। कसको खोजीमा तपाईंको निष्ठा कुदेको छ, त्यसको स्वरूप तपाईं प्राप्त गर्नुहुन्छ भन्ने स्वयं स्पष्ट छ। तसर्थ कृष्ण गीतामा भन्नु हुन्छः

यो यो यां यां तनु भक्तः श्रद्धयार्चितुच्छिति।

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।।

भगवान कृष्ण भन्नुहुन्छ म सबैको आत्मामा छु तर फरकमा छु। जुनले जस्तो प्रकारको चाहनाको उद्देश्यले कर्म गर्छ, म त्यसमा उसको विचार सम्बोधन गरिदिन्छु। कर्मको परिणाम आस्थाको आधारमा प्राप्ति हुने यथार्थलाई स्वयं कृष्णले गीतामा परिभाषित गर्नुभएको छ। फेथ (आस्था) को विभिन्न स्वरूप र परिणामको मार्गको बारेमा व्याख्या गर्नुभएको छ। विचार र सङ्गतबाट बाटो निर्धारण हुनेछ। सही बाटोमा हिंड्ने र बाटाको नियम पालना गर्नाले नै सम्मानित गन्तव्यमा सहज पुगिने कुरा यहाँ बुझ्न सकिन्छ।

स्मरणीय के छ भने हामी यहाँ स्वतन्त्र छौं। भगवानले हामीलाई स्वतन्त्र छोड्नुभएको छ तर निरीह भएर होइन, निगरानीमा हो। उपहारको रूपमा दिइएको स्वतन्त्रतालाई सदुपयोग गर्ने रूपरेखा पनि दिएको छ। तसर्थ सोहीअनुरूप हिंड्नु र हिंडाउनु नै वास्तविक जीवनको अर्थ निस्कन्छ भन्ने बुझिन्छ। गन्तव्यको आनन्द बाटोको नियमले निर्धारण गर्छ।

यो स्पष्ट मार्गदर्शन पूर्वीय वाङ्मयमा मात्र पाइन्छ भने वैदिक वाङमय नै चराचर जगत् नियन्त्रकको मार्गचित्र प्रस्तुति हो भन्ने बुझ्नु जरुरी छ। सत्य र सही निष्ठाले कर्मशिल स्वभावमा परिवर्तन आउँछ र शक्ति प्राप्त हुन्छ। विचार निर्माणको आधारले मात्र कर्म स्वरूप निर्धारण गर्छ।

विचारमा परिवर्तन ल्याउन हाम्रो समाज, संस्कार र शास्त्रीय संरचनाले स्पस्ट रूपमा मार्गचित्र दिएको छ। हरेक कर्म परोपकारको गर्भबाट सिञ्चित हाम्रो पैतृक समाज परिकल्पनामा मात्र होइन, व्यवहारमा पनि एक मुट्ठी मकैको चामल बाँडेर खाने व्यावहारिक स्वरूपबाट हुर्केको हो। के हो त परोपकार ?

परेषां प्राणिनां हितभावनाया स्वहानीलाभयोः चिन्ताम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अकृत्वा यानि कार्याणि क्रियन्ते तानि परोपकार कार्याणि कथ्यन्ते।

अरूको हित कर्म जसमा आफ्नो स्वार्थ लुकेको हुँदैन, यस्ता कर्मलाई परोपकार भनिन्छ।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपिडनम्।।

एक घरी केरा बाँडेर खाएर हुर्किएका हाम्रा पितापुर्खा परोपकार समाजका व्यावहारिक आधार स्तम्भ मानिन्छन्। लामो कथामा होइन, वास्तविक परोपकारमा टेकेर उम्रिएको यो हाम्रो समाज संस्कार बचाउन पुरोहितकोमा आवश्यक परेको बखत जनै र चामल अनि पैसा लिएर गई न्वारन गराइदिने कुरा मेरो बुबाको आस्था म बिर्सन सक्दिन जुन कर्म पूर्वीय दर्शनको वैदिक स्वरूपको व्यवहारिक प्रयोगको अवस्थाको रूपमा बुझ्नु वाञ्छनीय छ।एकजना चाइनिज दार्शनिक कन्फ्युसियसको भनाइ छ : When wealth is centralized, people are dispersed, when wealth is distributed, people are brought together. वितरण वा दान नै परोपकारको आधार हो भन्ने यहाँबाट पनि बुझ्न सकिन्छ।परोपकार नै समाज एकाकारको आधार हो।परोपकार समाज एकाकार गर्ने एक महान् अस्त्र पनि हो।

आज विद्यालय शिक्षामा नैतिक चरित्र निर्माण गर्ने सत्य, आस्था र परोपकार जुन हाम्रो समाज सञ्चालनको आधारपक्ष रहँदै आएको हो, यसको क ख ग नै विचलित हुन थालेको पाइन्छ।केही गुरुकुल, केही निजी (संस्थागत) विद्यालय र नगन्य सामुदायिक विद्यालयलाई छोडेर समग्र शैक्षिक क्षेत्रले हाम्रो माटो र हाम्रो बाटो भुलेको देखिन्छ।सरकारी वा निजी विद्यालयको पाठ्यक्रमको बनावटमा नै अशुद्धता रहँदै आएको छ भने धेरै गुरुकुलहरू पनि संस्कारभन्दा पनि सरकार र परम्पराभन्दा पनि पैसाप्रतिको रापमा झाँगिन थालेको यथार्थ बौद्धिक तथा सचेत जगतमाझ परिचित हुन थालेको छ।केही गुरुकुलहरू त समग्र विकासभन्दा पनि सम्प्रदाय विकास र चन्दनको डिजाइन व्यवस्थापनमै व्यस्त रहेको पाइन थाल्नु हामी पूर्वीय दर्शनका आस्थावान समुदायका लागि दुखद पक्ष हो।यसलाई व्यावहारिक रूपले वैदिक दर्शनका कर्मलाई परिवारका क्रियाकलापमा पुर्याउन थप सशक्त बन्नुपर्ने छ भने सरकारका नीतिहरूमा पूर्वीय दर्शनलाई प्राक्टिसमा लान ठोस योजना बनाउन हाम्रोजस्तो संस्थाले संयुक्त पहल गर्नु अनिवार्य देखिन्छ। संस्कारसहितको शिक्षाको अद्वितीय इतिहास बोकेको गुरुकुलीय शिक्षामा पूर्वकै एक खम्वा विवेकाश्रम अब मन्थन मात्रमा आफूलाई उभ्याएर सबल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महसुस गर्नुमात्र होइन, मञ्जनको रूपमा समाजमा गई नैतिकवान् समाज निर्माणको मुहान बन्न लाग्नु जरुरी देखिन्छ।

शिक्षामा नैतिकताको महत्त्व पक्षलाई अनिवार्य रूपमा प्रवेश गराउन सशक्त रूपमा प्रस्तुत हुँदै आगामी पिँढीको समाज वृद्धवृद्धाको सम्मान र बालबालिकाको संरक्षण साथै नेपाली भावको नैतिकता झल्कने नेपाली रूप विश्वको चुचुरोझैं चम्काउनु हाम्रो दायित्व हुनुपर्दछ।।।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कविता खण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामी विवेकानन्द पुरी (माहिला गुरू)

✍ इन्दिराज पौडेल

भोक्ता छ ब्रह्मै सब भोग्य ब्रह्मै। ब्रह्मै छ यो प्रेरयिता अचम्मै।।
वेदान्तले भन्दछ तीन एकै। अनन्त ब्रह्माण्ड छ ब्रह्म भित्रै।।

स्वामी थिए एक सुधन्य धाम। पुरी महाराज विवेक नाम।।
भन्थे सबैले यिनी ब्रह्म रूप। आनन्दमा तन्यमय सत्य रूप।।

नामै थियो स्वामिजिको सचित्र। विवेक आनन्द पुरी पवित्र।।
अष्टाङ्गयोगी अटल स्वरूप। षट्चक्र सिद्ध प्रभु योग रूप।।

भन्थे कसैले यिनलाई योगी। त्रिकालदर्शी मुनि सिद्ध योगी
भन्थे कसैले यिनी मुक्त आत्मा। तपोमुनी एक थिए महात्मा।।

भन्थे कसैले अवतारी बाबा। भन्थे कसैले तपसिद्ध बाबा।।
विभिन्न रूपै कहिले लिने ती। सबै कहन्थे गुरु माहिला यी।

मेची र कोशीका विभिन्न गुफाहरूमा लुकी-लुकी तपश्चर्या गर्नुका साथै पाँचथरको आगेजुङ सिद्धस्थलमा धेरै समयसम्म तपश्चर्या गरेर तीन-तीन पटक गायत्री पुरश्चरण, अष्टाङ्गयोग सिद्धि, षट्चक्रसिद्धि र कुण्डलिनी जागरण गरेका परमार्थपथका पथद्रष्टा, तपोमूर्ति योगी थिए माहिला गुरु। तपश्चर्याका प्रारम्भदेखि नकाटी राखेका हुँदा यिनका शिरजटा घुँडासम्म पुगेका थिए। २०२२ सालमा पाँचथरबाट ठुलो जनसमुदायलाई साथमा लिएर प्रयागराजको पूर्णकुम्भमा पुगेका यिनले त्यहीं त्रिवेणी सङ्गममा आफ्ना ब्रह्मजटा सेलाएका थिए। त्यसपछि नेपाल र भारतका विभिन्न शक्तिपीठ, तीर्थस्थल र चारधामको यात्रा गरेर यिनी आसामको पर्शुराम क्षेत्रमा पुगेका थिए। त्यहाँ पुगेर बालिज्यान नदीको किनारमा रहेको गायत्री अनुष्ठान कुटीमा केही समय बसेर त्यस क्षेत्रका सबैलाई जप, तप, योग, यज्ञ, ज्ञान, ध्यान र वेदवेदाङ्गको शिक्षा दिएका थिए। यसपछि ब्रह्मपुत्र नदीका किनारमा भव्य अनुष्ठान गराएर यिनले चौथो आश्रम सन्न्यास लिएका थिए। यिनलाई सन्न्यास गराउने गुरु दक्षिण भारत काञ्चीपुरी क्षेत्रको

✍ सहप्राध्यापक, दमक क्याम्पस, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शृङ्गेरीमठका अनन्तविभूषित परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १००८ स्वामी नारायण पुरी महाराज थिए। यिनै स्वामीसँग सन्न्यास आश्रम लिएपछि माहिला गुरु पनि अनन्त विभूषित परमहंस श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराजका नामले विभूषित भएका थिए।

यसरी शृङ्गेरीमठको शङ्कराचार्य परम्पराबाट सन्न्यास लिएर १०८ स्वामी भए तापनि यिनलाई सबैले माहिला गुरु नै भन्दथे। यसरी सन्न्यास लिएपछि यी स्वामीजी (माहिला गुरु) ले अरुणाचल प्रदेशको समीप पर्शुराम क्षेत्रनजिक पर्ने शान्तिपुर भन्ने ठाउँमा कुटी स्थापना गरेर त्यस क्षेत्रका अनेकौं वटु र लाखौं जनतालाई वेदवेदाङ्गको शिक्षा र योगध्यानको शिक्षा दिएर सनातन वैदिक संस्कृतिको पुनर्जागरण गरेका थिए।

यिनै स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराजले २०२८ सालमा मेची, झापाको चारपानेमा आई विवेकाश्रम र वेदवेदाङ्ग विद्यालय स्थापना गरेर यस क्षेत्रका सबैलाई सनातन वैदिक संस्कृति र योगध्यानको शिक्षा दिई आर्ष संस्कृतिको पुनर्जारण गरे। आसामको शान्तिपुरबाट झापा, चारपानेमा आउँदा शान्तिपुर आश्रमले स्वामीजीलाई 'प्रभु' शब्दले सम्बोधन गरेर सश्रद्धा बिदा दिएको हृयविदारक भावलाई नै यहाँ प्रस्तुत गरिन्छ।

अनेक भक्तै गण बीच एक। अनेक विप्रै वटुवेद साथ।।
लिएर हिड्ने सुविवेक योगी। हिड्नु भयो शान्तिपुरै वियोगी।।

ती शान्तिपुरै मूरति बनेर साष्टाङ्ग साथै नमनै गरेर
अवाक झार्छीन् बरबर आँसु। जानुहवस् चारपाने पिपासु।।

बोली रहेको छ प्रभू भनेर। प्रभू यहाँ आउ कृपा गरेर।।
तिम्रो अपारै महिमा सबैले। बुझ्न् त्यहाँका मुटु धड्कनैले।।

हेरेर कण्ठै अवरूद्ध पारी। पाऊ प्रभूका परि लम्पसार।।
अव्यक्त भावै प्रभूका दिलैमा। सुधन्यछिन् चारपाने प्रभूमा।।

नमन् गरी शान्तिपुरै भनेर विवेक आनन्द हिँडे झुकेर
फूलै सरी दिव्य सुवास छर्दै विवेक स्वामी गुरु माहिला नै।।

आसामको शान्तिपुरबाट स्वामीजी केही वेदपाठी विप्रवटु र केही भक्तलाई साथमा लिएर २०२८ साल मङ्सिरमा झापा, चारपाने आइपुग्नुभयो। यहाँ स्वामीजीका केही शिष्यहरू आसामबाट आएर थोरै थोरै जमिन लिएर बसेका थिए तर कुनै पनि गृहस्थका घरमा प्रवेश नगर्ने यी परमहंस स्वामी भएका हुँदा केही दिन खुला खेतमा बनाइएको सुन्ठीका कुटीमा बसेपछि त्यही ठाउँमा पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले श्रद्धापूर्वक स्वामीजीलाई आफ्नो जमिन अर्पण गर्नुभयो। त्यही जमिनमा स्वामीजीले एउटा फुस्को कुटी निर्माण गराएर त्यहाँ गायत्री अनुष्ठान, ब्रह्मधुनी र शिवलिङ्ग स्थापना गर्नुभयो। यहाँका भक्तहरूले परमहंस नामअनुसारको 'विवेकानन्द पुरी आश्रम' भनेर यस स्थललाई सम्बोधन गर्न थाले। केही समयपछि यस आश्रममा गुरुले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पठनपाठन आरम्भ गर्नुभयो। यसलाई विद्यालयको रूप दिएपछि वेदवेदाङ्ग विद्यालयका रूपमा स्थापित भयो। यहाँ दैनिक हवन, रुद्राभिषेक र वेदवेदाङ्गको पठन-पाठन हुन थाल्यो।

स्वामीजीकै निर्देशनअनुसार चलिरहेको यो आश्रममा धेरै वर्षपछि व्यवस्थापन समितिको गंठन भयो र यस समितिद्वारा विवेकानन्द पुरी आश्रमलाई सङ्क्षेपीकरण गरेर 'विवेकाश्रम' भन्ने नाम दिइयो भने वेदवेदाङ्ग विद्यालयलाई 'साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय' भनेर नाम परिवर्तन गरियो।

आसामबाट स्वामीजी आएर आश्रम र विद्यालय स्थापना गर्दाको स्थितिलाई यहाँ कवितात्मक रूपबाट प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरिएको छ। साथै यहाँका पद्यमा स्वामी विवेकानन्द पुरी (माहिला गुरु) लाई प्रायः प्रभु नामले सङ्केत गर्नुका साथै स्वामीजी आउने खबर पाएर यहाँका गाउँबस्ती, हरियाली डाँडा-काँडा र पहिले तपस्या गरेका गुफासमेत खुसी भएको भावलाई यसरी प्रस्तुत गरिएको छः

स्वामीजी प्रभु आउने खबरकी गंगा बगेकी थिइन्।
उर्ले छाल उछ्ाल दिव्य लहरी चारैपना धन्य छिन्।।
हेर्दै ती हरिया पहाडहरूले स्वागत् प्रभुको गरे।
चार्पानि धरती मुसुक्क गरँदै धन्यै भएकी थिइन्।।

माईधार किनार दोमुख चुली आऊ प्रभु लौ अनि।
चार्पाने धरती त धन्य बहिनी बस्छौं कि काखमा भनी।।
हेर्दैछन् सब नै हरीत चुचुरा झर्नाहरूले पनि।
लोकालोक र अन्नपूर्ण शिखर जाज्वल्यमानै बनी।।

साधू गुफ हिमा गजानन गुफा काबेलीका जंगल।
त्यहाँका सब वन्यजन्तु भनछन् तिम्रो यहाँ मंगल।।
एकैतीन र जोरपोखरी सबै यज्ञे गराऊ भनी।
आगेजुङ गुफा र सिंह सबले गर्छन् पुकारा पनि।।

गाउँका सब धन्य-धन्य सबमा उत्साह भावै भयो।
स्वाध्यायै तपका विभाव मनमा ईश्वरप्रणीधान को।।
चारैपान बनेकी तीर्थ रूपनै झापा पवित्रै भयो।
भक्तिभाव बढेर उर्लन गयो भन्नै नसक्नु भयो।।

स्वामी विवेकानन्द पुरी शान्तिपुरबाट चारपाने आइपुग्दा प्रभुको स्वरूप कस्तो थियो भन्ने कुरा निम्न पद्यमा चित्रण भएको छ :

गेरूवस्त्र विभूति भष्म शिरमा रूद्राक्ष माला धरी।
साक्षात् रूप शिवै सरी प्रभु थिए वणर्न् गरौं के गरी।।
ज्योति-ज्योतिमयै ललाट प्रभुको के हुन् कसोरी यहाँ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्यासै रूपमा खराउ चिपिया छन् योगिका साथमा।।
झल् झल् दिव्य मुहारका चमकमा आभा कति हो कती।
त्यस्तै ज्ञान अपार ब्रह्म गुरुमा थियो कति हो कती।।
प्रेमैभाव बढेर उर्लन गयो बोली बिना चक्षुले।।
गंगाका झरना छुटई प्रभुमा मौनैब्रती वाँणिले।।

धर्तिमाथि उठेर योग गरने यी तत् तदाकार नै।
साक्षात् ब्रह्मसरी थिए स्वरूपमा देख्दा मनुजै अनि।।
सिंहै बाघ बिचै बसरे कति हो योगै गरेका प्रभू।
आगेजुङ गुफा लुकेर कति हो मन्त्रै जपेका प्रभु।।

सत्चित् रूप थिए प्रभू त परिब्राट् दर्शन् अपूर्वै थियो।
सुन्टीका कुटीमा बसेर प्रभुले रातै व्यतित् गर्नु भो।।
आनन्दै शुभ भाव जागृत भई श्री चिद्घनै लौ फुटे।
प्राणायाम सबै उपस्थित हुँदा ॐ कार नादै छुटे।।

गृहस्थी थरमा प्रवेश नलिने सन्यास योगी थिए।
काँचो वा पकवान्न जे छ मिलेन सन्तोष मानी लिए।।
ॐकारै ध्वनिनादमा लिन भई यो विश्व ब्रह्मै सरी।
प्राणीमा शिवतत्व दर्शन गरी जीवै त ब्रह्मैमयी।।

आसाम शान्तीपुर बाट जाने।भनेर आए प्रभु चारपाने।।
झोली चिपिया प्रभु आत्मराम अलौकिकै रूप थियो नि धाम।

पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाका मनमा उत्पन्न भएको स्वामीजीप्रतिको श्रद्धाभावः

राज्मार्गदिखि अलि उत्तरैमा।सत् पूण्य भूमि धरणी तलै मा।।
यो चारपाने रमणीय गाउँ।यहीं प्रभूको कुटीया बसाऊँ।।

यस्तो विचारै मनमा लिएर।श्री नन्दिकेश्वर गुरुले गमेर।।
योगी प्रभू ब्रह्म विवेक लाई।साष्टाङ्ग गर्दै चरणै समाई।।

पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाका खेतमा, स्वयं नन्दिकेश्वर, उनका पुत्र हेमनाथ र भतिजा पुष्पलाल मिलेर झट्पट् गरी सुन्ठीको कुटी बनाएपछि त्यही कुटीमा स्वामीजीले तीन रात बिताउनुभयो।

साथैमा प्रभुका बसे वरिपरी सुन्टी कुटी बाहिर।
रामै नाम जपी बसे सबजना को भित्र को बाहिर।।
पुष्पैलाल र नन्दिकेश्वर गुरु देवी प्रसादै पनी।
हेमैनाथ थिए अति फुरतिला रेख्देख गर्थे उनी।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हेमैनाथ र पुष्पलाल दुईले सुन्टी कुटीको जुरो।
निर्माणै गरँदा प्रसन्न प्रभूले हेर्नू भएको थियो।।
सुन्टी कुटीको छ अपूर्व भाव। अव्यक्तता मै गरी अश्रुहार।।
सुन्टी त वेदै सरिका ऋचा भै। भने प्रभूलाई बसौं यहाँ नै।।

श्री नन्दि भक्तै प्रभुमा झुमिन्छन्। पर्जन्यको भाव खुलाई भन्छन्।।
हामी बिचैमा कति मोह मायाँ। यो प्रेम भावै छ नि धाम छायाँ।।

शिरै झुकाइ नतमस्तकैमा। आँसु खसाए बररै चरण्मा।।
कण्ठै भयो रूद्ध अवाक बोली। श्री नन्दिकेश्वर् कति हो नबोली।।

तल्लीन भै ध्यान क्रमै बसाए। चिन्तन् प्रभूमा सब नै हराए।।
भए सबै सन्तसरी भिखारी। प्रभूकृपा पाउँ भनी निहारी।।

त्यहाँ भए स्तब्ध सबै जसोरी। बोल्दैन कोही प्रभुलाई हेरी।।
आँखा भए गोमुख रूपका नै। भयो यहाँ ब्रह्मसभा सरी नै।।

आगेजुङेका तपमा जसोरी। वरी-परी बाघ थिए कसोरी।।
चारैपना आज तपैसरी भो। आगेजुङेको त गुफासरी को।।

सबै मिलेरै कुटिया बनाए। यहाँ सबै जाग्रममा रमाए।।
जीवात्मरूपी सब जाग्रतै छन्। समाधि रूपै प्रभु लीन मै छन्।।

श्री राम रामै सबले जपेका। तपोमयै रूप सरी बसेका।।
श्रद्धा महीमा भनि सक्नु छैन। त्यो भाव व्यक्तै गरि सक्नु छैन।।

यो रात कस्तो अति दीव्य जस्तो। यो रात ज्योतीर्मय रूप जस्तो।।
साधू गुफा हीम गुफा सरी नै। सुन्टीकुटी ब्रह्म गुफा सरी नै।।

ब्रह्मास्म्यहं रूप विवेक स्वामी। शृङ्गेरी मठ्का त पुरी थिए नी।।
भूर्भुवः गोत्रै र बराह देव। खंब्रह्म हो मन्त्र यजूर वेद।

रात्रिमा पनि ब्रह्मनाद गरँदै श्रीराम मन्त्रै जपी।
आज्ञा गर्नुभयो सुशिब्यहरूमा जप्नु निरन्तर् भनी।।

रामैनाम ध्वनि चले तुमुलमा गुञ्जायमानै भयो।
त्यो बेला सिरी रामले गुरुसँगै दर्शन दिएको थियो।।

रामैभक्त थिए प्रभू प्रतिक्षणै श्रीराम मन्त्रै जपी।
साक्षात्कार गराइ दर्शन पनि पाए कतिले तपी।।

भक्तीभाव अपार सुन्टि-कुटीमा वाणी अलौकीका।
गुञ्जियो सिरिराम मन्त्र सबमा ज्योति स्वरूपी छटा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले स्वामीजीलाई जमिन अर्पण गरेका बेलाको भावः

नन्दीकेश्वर तिंसिना सहित नै ओझा थरैका सबै।
आत्रेयादि वसिष्ठ गोत्रथरका भेला भएका सबै।।
हेमैनाथ र पुष्पलाल सबले शीरै झुकाई यहाँ।
ओं ओं ओं भनदै प्रभु चरणमा साष्टाङ्ग गर्दै यहाँ।।

बस्नूपर्छ यहीं भनेर सबले श्रद्धा फुकाए पछी।
वारम्बार झुकेर नन्दि गुरु ता भक्कानिए बेसरी।।
मेरो यो जगडा सबै प्रभुमहाँ गर्छु म अर्पण् भनी।
आफ्ना अन्तरभाव व्यक्त गरँदै प्रेमाश्रु धारा गरी।।

श्रद्धा भाव थियो नि ब्रह्मगुरुमा बोली विना गद्गदी।
पाऊ मै परने निरन्तर यिनी भक्ति र श्रद्धा कति।।
शिष्यै नन्दि र ब्रह्मरूप प्रभु छन् भावै दशामा कती।
ज्योती नै सरि देखिए प्रभु सँगै श्री नन्दिकेश्वर् पनी।।

स्वामीका चरणै धुली सरि महूँ भन्दै भई रुध्द नै।
लाग्दाछन् दुइ नै जनम् जनमका योगी र चेला सँधै।।
आफ्ना सूध-बूधै हराई प्रभुमा श्री नन्दीजीले अनी।
झाँपै हालि भने प्रभू चरणमा मै दिन्छु जग्गा भनी।।

यस्तो प्रेम बुझी अवाक हुनुभो स्वामी विवेकै पनी।
गद्गद् वाणि भयो मुहार झललै घ्यौतै सरीका बनी।।
तिम्रो प्रेम अपार ब्रह्मसरि नै श्रद्धा विशालै अनी।
खैंचेरै तिमिले मलाई त यहाँ चुम्बक् सरी नै बनी।।

स्वामीजीले कुटी आश्रम निर्माण गर्ने स्थान ग्रहण गरेको भावः

नन्दीकेश्वरका अपार मनमा भावै अलौकीकको।
जाग्रीतै हुन गो कसो गुरु भनी स्तब्धै भयो बोलिको।।
श्रद्धा प्रेम र सत्यभाव बुझने स्वामी रहस्यै थिए।
बुझ्नेले गुरु थापि त्यै क्षणमहाँ दीक्षा लुकेरै लिए।।

नन्दीकेश्वरका उदार मनमा जग्गा दिने भावना।
श्रद्धापुञ्ज बनी प्रभू गुरु भनी अर्पण् गरे लौ यहाँ।।
नन्दीवाक्य सुनेर ब्रह्म गुरुले केही इसारा गरी।
ऐलेलाइ यती जमीन तिमिले दीयौ सुकीर्ती गरी।।

तिम्रा आग्रहमा लिएँ शिवजीमा विश्वास राखी दियौ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिम्रो कीर्ति पनि निरन्तर सँधै फैलाइ राख्ने भयौ। ।
यो श्रद्धा यिनको महत्तम बुझी पूणरैव आशीषले।
आत्मै ब्रह्म स्वरूप ठानी प्रभुले लिनू भयो प्रेमले। ।

पुण्यशीलका नाति कृष्णप्रसादका साहिँला पुत्र पं. नन्दिकेशर तिम्सिना हुन्। उनी घनश्याम, झुनप्रसाद, हेमनाथ, पूर्णानन्द, लेखनाथ, जीवनाथ छ जना पुत्र र टङ्कमाया, यशोदा, जमुना, मेनुका, कमला पाँच पुत्रीका पिता हुन्। यिनले आफ्नै खेतको एक छेउमा स्वामी विवेकानन्द पुरीलाई हतारहतारमा सुन्ठीको कुटी बनाएर राखेका थिए। त्यही ठाउँमा उनले स्वामीजीलाई आफ्नो जमिन अर्पण गरेपछि सबै मिलेर त्यस ठाउँमा काठ-बाँस र सिरू खरको एउटा ब्रह्मकुटी निर्माण गरे। यो कुटी निर्माण भएपछि २०२८ मार्गशीर्ष धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन त्यो कुटीभित्र ब्रह्मधुनी, गायत्री अनुष्ठान र शिवलिङ्ग स्थापना गरेर स्वामीजीले भव्य रुद्राभिषेक गराई यसको समापनमा विशाल भण्डारा गराएका थिए। यसै दिनदेखि 'विवेकानन्द पुरी आश्रम' स्थापना भएर सनातन वैदिक आर्ष संस्कृतिका कार्यहरू निरन्तर रूपमा सञ्चालन हुँदै आएका छन्।

परहंस स्वामी विवेकानन्द पुरीका वाणीः

शृङ्गेरी मठको प्रतीक कुटी यो सन्यासको आश्रम।
आजैदेखि भयो नि आज विरूवा रोपेसरी धर्तिमा। ।
गायत्री अनि ब्रह्मधुनी सहितै श्री शंकरै थापना।
बस्नेछन् अब यो सुब्रह्म थलमा वेदध्वनी माझमा। ।

दाता नन्दी यिनी उदार मनका सन्यासिका भक्त छन्।
पुख्यौली यिनको छ वेद कुलको विश्वासका पात्र छन्। ।
सन्यासी रूपमा बसेर प्रभुले ओंकार नादै गरी।
आनन्दै शुभ नादका स्वर महाँ वीवेक आश्रम भनी। ।

मार्गैशीर्ष थियो नि शुक्लपुणिमा धान्यै पुजाका दिन।
योगै सिद्ध परेछ थापनु भयो अठ्ठाइसै सालमा। ।
श्री स्वामी परमैव हंस रूपले पद्मासनैमा बसी।
यो दीव्यस्थलमा विवेक रूपका शङ्कर् विराजै गरी। ।

मन्त्रैसिद्ध गरी विवेक प्रभुले ईशै बसाए पछि।
सुन्पाती अनि भैरूङादि फुलले पूजा गराए पछि। ।
शृङ्गेरी मठका विधि चरणमा भूतेशको थापना। ।
विवेकेश्वर नाम राखि प्रभु ता घण्टौ समाधी महाँ। ।

बस्नुभो कति ब्रह्मनाद गरँदै गंगाधरै रूपमा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखेले प्रभुलाई भिन्न रूपमा देखी भए संभ्रम।।
केही माथि उठे जसो पनि भयो आसन् तलै देखियो।
यो देखी सबलई कौतुक भयो आश्चर्य रूपै थियो।।

संकल्पै रूपमा यिनी त कहिले आगेजुङै मा हुँदा।
कैले झर्झर ज्योति रूप कहिले बाघै बनेका हुँदा।।
कैले पक्षी भई उडेर रूखमा फल्फूल झार्ने यिनी।
कैले तम्मरमा पुगेर कति हो मान्छे निकाल्थे चिनी।।

कैले सिद्धि पुगेर सून फुल नै धूपी बुगी फूल नै।
ल्याई पूजन गर्दथे प्रतिदिनै गायत्रि माता भनी।।
माताले प्रभुलाई दर्शन दिइ लेऊ समाधी भनिन्।
मुक्तै छौ तिमी योगमा लिन हुने आज्ञा गरेकी थिइन्।।

कैले फूल थुँगो बनेर बसने हातैमहाँ भक्तका।
ती भक्तै पनि हिंड्दथे प्रभु सँगै यात्रा कतै गर्नता।।
डाँडा हिमचुली गुफाहरू महाँ कैले प्रभु लुप्त भै।
थापे यी प्रभुले नि चारपनमा मत्युञ्जयी रूप नै।।

वीवेकेश्वर त्र्यम्बकै झलझली जाज्वल्यमानै बनी।
देखीए शिव चन्द्रशेखर यहीं वीवेक ईश्वर् बनी।।
वामैदेव महेश रूप सबले देखे अरे लौ यहाँ।
स्वामीजी प्रभुले भने स्मरहरै छौ व्यास कण् कण् महाँ।।

चारपानेनिवासी श्रद्धेय पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले आफ्नो अलिकति जमिन स्वामीजीलाई अर्पण गरेका ठाउँमा त्यहाँका सबै मिलेर काठबाँस र सिरू काँसको ब्रह्मकुटी निर्माण गरेपछि, स्वामीजीले कुटीभित्र ब्रह्मधुनी, गायत्री अनुष्ठान वेदी र विवेकेश्वर महादेव (शिव लिङ्ग) स्थापना गरेर भव्यरूपमा रुद्राभिषेक गराउनुभयो।

भव्यै रूप महाँ शिवै स्वरूपको रूद्राभिषेकै भयो।
ब्रामणवृन्द सबै उपस्थित भई वेदध्वनि घन्कियो।।
नादैनाद छुटे तुमूल ध्वनिमा देवै महादेवका
यो ब्रह्मोत्सवमा बजे डमरू र झ्याली महादेवका।।

नन्दीकेश्वर हेमनाथ पुपपैलाली जगन्नाथले।
पूणरानन्द र विष्णु आदि सबले रूद्री पढेका थिए।।
उदात्तै अनुदात सार स्वरमा रूद्री ध्वनी घन्किए।
आगेजूङ र जोरपोखरी सबै गुफा पनी चम्किए।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेक नारी नरका बिचैमा। थिए यहाँ ब्रह्म गुरु सबैमा।।
यज्ञै गराए प्रभुले उदार। आनन्दको छाल थियो अपार।।

यहाँ थिए एक महान जोगी। सत्चित् स्वरूपै भव मुक्त योगी।।
समाधि मग्नै भइ आसनैमा। अटल् बसे धूनि समीप माहाँ।।

ताँती छुटेको नर नारी वृन्द। धुनी समीपै सब धन्य धन्य।।
थिए अभिभावक रूप स्वामी। अव्यक्तमा व्यक्त भएर हामी।।

यज्ञाग्निको ज्योति स्वरूप देखि। हर्षाश्रुधारा खुसिका तरेली।।
उत्साह उल्लास भयो सबैमा। श्रीरामका नाद छुटे तनैमा।।

रोमाञ्च छायो शिव राम राम। गरे सबैले प्रभुमा प्रणाम।।
घृतै चरूको शुभ वास यहाँ। चारैपना राममय जगत्मा।।

झ्याली बजेका डमरू बजेका। श्री वेदमन्त्रै कति हो पढेका।।
यो नादमा ब्रह्म गुरु विवेक। जाज्वल्यमानै रूपमा बसेका।।

त्रिपुण्ड धारी खुर गो शिखाका। प्रमाणमा छन् पढ्ने बटुका।।
सार स्वरैमा पढने बटूक। साथैमहाँ ब्रह्म विवेक रूप।।

यो ब्रह्म धूनि अति दिव्य रूप। घृतै चरूको हवन अखण्ड।।
सुधन्यमा छिन् अब चारपाने। स्वामीजीले आश्रम नै बसाले।।

स्वहा स्वधाका लहरी तरङ्ग। आए यहाँ देव स्वरूप अङ्ग।।
वेदै ध्वनी मन्त्र सुनेर आए। घृतै चरू भाग लिई रमाए।।

आए गणेशै शिव देव आए। आए नि सूर्यै अरू देव आए।।
देवी पनि बाहनमा बसेर। श्री विष्णु आए गरूडै चढेर।।

हिँडे सबै लस्करनै बनेर। श्री चारपाने कुटिमा भनेर।।
घृतै चरूको शुभ भाग पाई। खुशी भए देव दुर्गा रमाई।।

परीक्रमामा गुरुका पछाडी। निकै ठूलो लस्करको चिनारी।।
श्री राम रामै ध्वनिको पुकार। आह्लादको नाद थियो विशाल।।

धूनि बलेका कुटीका विचैमा। रूद्राभिषेकै अति भव्यतामा।।
ईशान कोणै सिरि शम्भु राज। विवेक स्वामी प्रभु नाम साथ।।

त्रिपुण्ड धारी बटु ब्रामणैको। स्वामी र शिष्यै अरू सज्जनैको।।
धुवाँ चरूको अगरू सरी नै। चारैपना धन्य सुतीर्थ रूपै।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकाशमा व्याप्त भई रहेको। घृतै सुगन्धी फइलि रहेको।।
सुने सबैले शिव देव शम्भो। आवाज कस्तो शिव देव शम्भो।।
आकाश वाणी सरिको अवाज। आयो यहाँ लौ सुनने विराज।।
थिए यहाँ ब्रामण वेद साथ। प्रभू विवेकै ध्वनिमा विराज।।

ल्याए सबैले सरजाम यहाँ। यो चारपाने प्रभु आश्रमै मा।।
भेला भए लौ कति हो कती नै। भण्डार लाए प्रभुले कती नै।।

सबै मिली कीर्तनमा रमेर। श्री शंकरैको पूजनै गरेर।।
झ्याली र घण्टै सबले बजाए। यो आरतीमा सब नै रमाए।।

शिवशक्तिको पूजा आरती समापनपछि प्रसाद लिनका निम्ति बसेको पङ्गतको स्वरूप

पुरूष सुक्तै सबले पढेका। मुनीश्वरै रूप भइ बसेका।।
श्री ऊर्ध्वमूलै सबले भनेका। स्वामी प्रभू याँ समिपै रहेका।।

प्रसाद पाए मन भोग खीरै। प्रभू प्रसादै भनि धन्य धन्यै।।
उदार भावै सबमा थियो नी। हर्षाश्रु धारा कति हो कति नी।।

डाँडै उज्याला धरती उज्याली। गौरी र शंकर् पनि छन् उज्याला।।
सिदिङ्ब आगेजुङले भनेका। यी चारपाने त कती उज्याली।।

मानौं यहाँ मौन श्रद्धा लुकेको। भाषा लुकेतानि सबै फुकेको।।
भयो सबैको मन झन् रसीलो। देखे सबैले प्रभु नै हँसीलो।।१२३।

२०२८ माघ महिनाको भीष्म द्वादशीका दिन स्वामीजीले वेदवेदाङ्ग विद्यालय स्थापना गर्नुभयो।

भीष्मै द्वादशिका शुभै तिथि महाँ वेदाङ्ग विद्यालय।
थाप्नू भो प्रभुले वरीपरी थिए वेदाङ्ग पाठी सब।।
चारैवेद र रूद्रि चण्डि पढने ब्रामण् बटुको शिर।
त्रिपुण्डै शिवभष्म धारण गरी उच्चारणैका स्वरः।।

घनै जटामा अनि सार स्वर्मा। उच्चै र निच्चै अनुदात्त स्वर्मा।।
पढे सबैले शुभ मन्त्र पाठ। पाठै दिए नी प्रभुले सु साथ।।

घन्काई सबले उदात्त स्वरमा उच्चै र निच्चै गरी।
सारै र स्वरका सुवेद लहरी चारैपना माधुरी।।
पाठैमा सबलाइ वेद स्वरका उच्चारणैको विधि।
एकै एक गरेर सार स्वरमा संलग्न गर्ने निधि।।

ज्ञाता नै प्रभु ब्रह्म वेद रूपमा सारै स्वरै तालमा।
कण्ठाग्रै पढने थिए प्रभु यहाँ वेदान्तका भावमा।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यो ब्रह्माण्ड सबै छ वेद रूपमा भन्दै सबै मन्त्रको।
व्याख्या गर्नु भयो सबै तरहले चित्तै बुझाई निको।।

त्यो बेला प्रभुको रूपै शिवसरी धप् धप् भएको थियो।
यी के हुन् गुरु हुन् कि केंहि अरू नै भन्नै नसक्नु थियो।।
आश्चर्यै चकितै बनेर सबले त्यो ज्योति रूपै महाँ।
ध्यानै तन्मय तन्मयैव वनदा विस्फारितै चक्षुमा।।

थीए धप् धप ज्योति ज्योति रूपमा ज्योति प्रपुञ्जै सरी।
गर्थे नाद सुनाद ब्रह्म रूपमा बस्थे समाधि लिई।।
प्राणयाम खिँची अटल् रूप लिई पद्मासनैमा बसी।
बन्थे जाज्वलमान कान्ति स्वरूपै ज्योति थियो धप्धपी।।

देखेले त भने कसो मन भयो अद्भूत यो कौतुक।
साँच्चै नै यिनी ब्रह्म स्वामी प्रभुको यस्तो रूपै हो कि त।।
भन्ने नै भ्रमले कति दिन बिते आश्चर्य मानीकन।
आफैमा भ्रम भो कि हो कि सपना भन्दै बिताए दिन।।

भण्डारा प्रभुले गराउनु भयो खीरै मनै भोगको।
पंक्तीबद्ध भएर उच्च स्वरमा सूक्तै पढी वेदको।।
आज्ञा नै प्रभुको भएर सबले श्रद्धा र भक्ती सँगै।
लिए है सबले प्रसाद मनभोग् योगी पनि छन् सँगै।।

खुल्ला ठाउँ थियो सबै वरिपरी छाप्रा बनाई कन।
पक्वान्नै कति हो भनी नसकनु भण्डारमा त्यो दिन।।
छूँदा नै प्रभुले अपार हुनगो भण्डार नै भर्भरी।
बाफैबाफ भएर खीर मनभोग् खाई नसक्ने गरी।

डेक्चीमा प्रभुले छुँदा दुधदुधै डेक्ची भरी नै भरी।
चीयाको कहिल्यै भएन नि कमी चीया त दूधै सरी।।
पत्तल्मा प्रभुको जुठो लिनभनी तान्थे सबै पत्तल।
हाँप्-झाँपै गरने सुभक्तहरूको बानी थियो सादर।।

झुक्याई प्रभुलाई पाउ छुनमा बस्थे नजीकै गई।
अन्तेवासि थिए कतीत प्रभुका बुझ्थे रहस्यै पनी।।
बस्त्रै धून र बोलि सुन्न प्रभुका आतूर बन्थे सब।
छुनै पाउँ भनी नजीक नजिकै आएर बस्थे सब।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीक्षालीन र ज्ञान पाउन अनी विगूत थाप्नै पनी।
अव्यक्तै रूपमा गएर बस्ने शीरै झुकाई अनी।।
धन्यै धन्य भए सबै जन यहाँ चारैपना धन्य छिन्।
पाए ज्ञान कती कती प्रभुसँगै आश्रम् पनी धन्य छन्।

स्वामीजीको समाधि

चारपाने विवेकाश्रमबाट बिदा लिएर उत्तरकाशीमा पुगी भागिरथी गङ्गाका तटमा अटल पद्मासनमा बसी ब्रह्मरन्ध्र भेदन गरेर स्वामीजीले २०३० भाद्र शुक्ल पूर्णिमाका दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्तमा समाधि लिनुभयो।

दुई हजारै तिस साल माहाँ। जानू भयो उत्तरकाशी धाम।।
यी चारपाने धरती सँगै नी। संवाद गर्दै बस है भनेनी।।

तिम्रा तनैको दुध नै पिएर। हुर्कन्छ यो ता हसिलो बनेर।।
काखैमहाँ आश्रम नै बसाई। रक्षा गरे है तिमी पुण्य माई।।

विदा लिनू भो यही आश्रमैमा। पुगनु भयो भागिरथी तटैमा।।
शिवै स्वरूपी शिव ब्रह्म रूप। प्रज्ञान ब्रह्मैव भएर नित्य।।

अगम् अगोचर् अयमात्म ब्रह्म। रूपै थिए नी गुरु माहिला त।।
विराट चैतन्य शिवैव अंश। थिए यिनी ता परमैव हंस।।

पद्मासनैमा अटलै बनेर। तत्त्वं असीका रूपमा पुगेर।।
भाद्रे्र महिना तिथि पूणर्मिमा। गंगा किनारै वसि त्राटकैमा।।

यो ब्रह्मरन्ध्रै्र गरि भेदनै नी। सु निर्विकल्पै भइ तन्मयै नी।।
मुहूर्त ब्रामै अमृतै सुबेला। समाधिमा लीन भए प्रभु ता।।

इदं हि पुण्यं परमं पवित्रम्। गुरोर्महात्म्य पठनीय नित्यम्।।
अष्टाङ्गयोगी स्वरूपैव मुक्त। स्वामी विवेक चरितं प्रसिद्ध।।

कुर्वन्ति पाठं ह्दिचिद्धनैश्च। जाज्वल्यमानैव ह्दी प्रकाश।।
सद्ज्ञान वृद्धि गुरुभक्ति नित्यम्। क्लेषैवत्यक्त्वा सहप्राप्नुवन्ति।।

ॐ पूर्ण मदःपूर्णमिदं। पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।। पूर्णस्य पूर्णमादाय। पूर्णमेवाऽवशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुकुलको सम्झना

✍ वीरेन्द्र नेपाल

उठ्थ्यौं नित्य चतुर्थ त्यो प्रहरमा बोकी सदा जाँगर
पढ्थ्यौं पाठ मिलेर उच्च स्वरमा सम्झी परम् ईश्वर।
बज्थ्यो आठ बनाउँथ्यौं दिनदिनै स्वादिष्ठको भोजन
एकै पङ्क्ति बसी प्रसाद सबले खान्थ्यौं मिठो स्वादमा।१।

बस्थ्यौं देश विदेशका मनहरू जोडेर यौटै भई
बाड्थ्यौं दुःख भए स्वमित्र सबमा देवत्व आत्मा लिई।
साझा धर्म विचार ज्ञान गुरुका सुन्थ्यौं बडो चाखले
घोकी पाठ बुझाउँथ्यौ हरघडी बोकेर सद्भावले।२।

गर्थ्यौं ध्यान बिहान शुद्ध मनले मन्त्रादि सम्झीकन
बोल्थ्यौं सत्य सदा विशुद्ध कपडा गर्थ्यौं दिनै धारण।
उत्साही मन पार्दथ्यौं सब मिली जुट्थ्यौं सधैं कर्ममा
सारा क्रोध र तुच्छ सोच सहजै फालेर हिंड्थ्यौं जहाँ।३।

बोकी सुन्दर लक्ष्यमा रत भई भेला भएका थियौं
गाँसी प्रीत मुहार दिव्य हँसिलो पारी बसेका थियौं।
छुट्टै याम थियो उमेर सबको मिल्दो थियो दौंतर
सादा जीवन उच्च सोच मनमा राखी बितायौं वय।४।

पुग्दा चालिस आज सम्झन पुगें बेग्लै थियो जीवन
साँच्चै हर्षित भावले मन खुसी पार्दै रचें सिर्जना।
सारा उज्ज्वल ज्ञानको शशिकला मोती बनी चम्कियोस्
सद्शिक्षा सूर्यझैं चहकिलो सद्ज्ञान बाँड्दै रहोस्।५।

❑

✍ साहित्यकार, बुधबारे, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकाश्रमलाई सम्झँदा...

हरिप्रसाद भण्डारी

झापाभित्र प्रसिद्ध रम्यस्थलको त्यो चारपानेनिर
स्वामी,सन्त विवेक नामक गुरू आए नि साँझैतिर
केही याम यहीं बसेर तिनले राखे सबैमा सम
स्वामीका करबाट स्थापित भयो हाम्रो विवेकाश्रम।

बन्यो शीघ्र समीपको जमिनमा शिक्षार्जनैको स्थल
जोगाऊँ निज धर्म,संस्कृति भनी स्वामी थिए व्याकुल
बिस्तारै त्यस ठाउँमा द्विजबटू आए सुशिक्षा लिन
झापामा छ पवित्र धाम अहिले हाम्रो विवेकाश्रम।

लिन्छन् संस्कृतको अतीव गहिरो शिक्षा तिनै ब्राह्मण
खोज्दै संस्कृत गूढ वाङ्मयसुधा गर्छन् सदा सेवन
हाम्रा पूर्वजका अमूल्य निधिको हुँदै छ संरक्षण
हेर्दा लाग्छ महर्षिको स्थलसरी हाम्रो विवेकाश्रम।

पढ्दा वेद प्रभातमा दिनदिनै गुन्जन्छ मीठो ध्वनि
स्वाहा शब्द सुनेर कर्णद्वय ती सन्तृप्त हुन्छन् अनि
पूजापद्धतिको सबै विधि पुरा गर्छन् सदा ब्राह्मण
हिन्दू संस्कृतिको धरोहर यही हाम्रो विवेकाश्रम।

हाम्रा देव र पितृकार्य सहजै सम्पन्न गर्छन् द्विज
संस्कारीजनले कदापि भ्रमले भुल्थे र के पूर्वज?
गीता पढ्न भनेर भद्र महिला जान्छन् यही आश्रम
धेरै दुर्लभ ठाउँ हो भुवनको हाम्रो विवेकाश्रम।

मन्डनदेउपुर ९, काभ्रेपलान्चोक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्दै छन् जसले सनातन महान् सद्धर्मको पालन
मांसाहार विवर्जितै छ यसमा हिंसा सदा वर्जन
बाँड्छन् ज्ञान अमूल्य ती गुरुहरू हुन्नन् कुनै वञ्चन
पुग्नैपर्छ अवश्य सज्जन सबै हाम्रो विवेकाश्रम।

दाता छन् यसका उदार मनका सेवा र सद्भावका
दिन्छन् भूधनदान द्रव्य दिलले लिन्नन् कुनै चाहना
मुष्टीदान परम्परा अटुट नै चल्दै छ दैनन्दिन
यो हो स्थान ति दानवीरजनको हाम्रो विवेकाश्रम।

मेरो पाठशाला

✍ **प्रजापति घिताल**

वेदवेदान्तको शिक्षा बाँड्न छन् सब तत्पर।
झुल्क्यो भाग्य जुट्यो ठाउँ दाता ती नन्दीकेश्वर।
म पनि तम्सिएँ पढ्न चण्डी, रुद्री, गीता अनि
सहपाठी जगन्नाथ टीका डिल्ली अरू पनि।।

सुन्ठीको बारले बारी छाना चट्ट परालको
आँगनै चट्टिया गुन्द्री दिक्षा भो ज्ञान दिव्य त्यो।
चौत्तीस साल झैं लाग्छ तीस पैंतीस शिष्यमा
विष्णुभक्तज्यूका अर्ती गुन्जन्थे कानकानमा।।

यौटा विद्यार्थी हुँ आफू प्रजापति कहलाउने
पाठशाला थियो राम्रो सत्य सद्भाव छाउने।
त्यै शिक्षालयको दीक्षा पाई गर्व म गर्दछु
नतमस्तक भै आज गुरुशरण पर्दछु।।

यो विवेकाश्रममा वेद रुद्रीका मन्त्र गुन्जिऊन्
आई शिष्यहरू नित्य यहाँ विद्यामृतै पिऊन्।
गर्न योग्य बनी हामी गुरुलाई प्रदक्षिणा
यी दुई प्रेमका शब्द अर्पन्छु गुरुदक्षिणा।।

अस्तु

✍ बिर्तामोड न.पा. २, रामचोक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम स्वर्ण महोत्सव

✍ यज्ञराज पकुवाल

छ गोलधाप दक्षिण र साधुटार उत्तर
लखनपुरै त पश्चिम र पूर्वमा हरिहर।१।

समन्वय सबैतिर बराबरी परिक्रम
अभिन्न केन्द्र आत्मझैं छ त्यो विवेक आश्रम।२।

विवेक शब्द मङ्गलै विवेक नाम सुन्दर
विवेक छ जहाँ तहाँ निवास गर्छ ईश्वर।३।

विवेकबाट सभ्यता शुभादि कर्म साधन
पवित्र शक्ति भक्तको बन्यो विवेक आश्रम।४।

अनन्तश्री विभूषित त्रिकाल दूरदर्शक
महर्षि सिद्ध साधक स्वामी परिव्राजक।५।

श्रीशङ्कर परम्परा सनातन सुसंस्कृत
गुरुकुलीय सभ्यता विकासले अलङ्कृत।६।

स्मृति पवित्र प्रेमको थलो विवेक स्वामीको
अमिट छाप देशको उदाहरणीय चित्र हो।७।

बने हुनन् कति अनेक धाम मन्दिर
तर विवेक आश्रमै अत्यन्त शुद्ध नैष्ठिक।८।

सुपूज्य ब्रह्म चिन्तक सुज्ञानका प्रवर्द्धक
समाज अग्रणी गुरु महान धर्मसेवक।९।

श्री टेकनाथ गौतम यहाँ ठूलो परिश्रम
निरन्तरै प्रयासले चल्यो विवेक आश्रम।१०।

विभिन्न क्षेत्र अञ्चलै र सङ्ग ग्राम फाँटका
हजार भक्त सज्जनै कृपानिधान देशका।११।

प्रखर, प्रगाढ, राष्ट्रका युवा किशोरको मन
नेपाल सन्त संघका विशिष्ट सन्त सज्जन।१२।

दिनानुदिन कीर्तन हवन जपादि पूजन
सुभव्य यज्ञवेदीमा गरिन्छ ब्रह्मचिन्तन।१३।

सुयज्ञको धरोहर प्रतिष्ठ साङ्गवेदको
निवास भोजनादिको प्रबन्ध छ पढाइको।१४।

वरिष्ठ प्राज्ञ पण्डित प्रतिष्ठित प्रबन्धक
यहीं पढेर पूर्वमा प्रसिद्ध यो छ अञ्चल।१५।

परम्परा छ सन्तको स्वभाव छैन अन्तको
विशुद्ध धर्मद्वारको महत्त्व छ अपारको।१६।

जगत गुरुहरू यहाँ अनन्त मण्डलेश्वर
अनेक स्वामी डाक्टरै शुभेच्छुकै धुरन्धर।१७।

विराट वारिधि पति सुविज्ञ प्राज्ञ सज्जन
प्रशस्त विश्वचर्चित भए यहाँ उपस्थित।१८।

गणेश, शिव, गौरीको र विष्णु, सूर्यदिवको
मन्दिरै मन्दिर छन् सुन्दर रमाइलो अहो।१९।

पुरातनै स्वस्थानमा बन्यो श्रीराम मन्दिर
विवेकानन्द स्वामीको प्रभा चल्यो सबैतिर।२०।

छ जे विचार त्यै कुरा हुनेछ भक्त निश्चित
प्रसन्न हामी छौं सबै नहोऊ आर्त चिन्तित।२१।

✍ *अध्यक्ष, ओमकारेश्वर वैदिक विद्यापीठ, गायत्रीस्वरूपाश्रम गोलधाप*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सधैं स्मरण सुचिन्तन विचार सत्यको गर
मभित्र बाहिरै सधैं छँदैछु भक्तका घर। २२।

यही विवेक आश्रम चरित्रको मुहान छ
चरित्रको पूजा हुँदा गुरुत्वको प्रकाश छ। २३।

ती पुण्य पुञ्जका धनी बसे प्रकाशक महामणि
श्री टेकनाथ गौतम भयो यहाँ झिलिमिली। २४।

वचन मिठा मिठा मिठा सुनिरहुँ सुनाउने
नीति नियम बनाउने सुमण्डपै सजाउने। २५।

र आसन ग्रहण गरी शोभायमान देखिने
समीपका र दूरका सरिक भै सघाउने। २६।

न यो कुनै असत्य हो न शब्दको बजार हो
र सत्य बोल प्रेमको समूह रत्नहार हो। २७।

महोत्सवीय श्रोत हुन् यी लेखकीय साधन
कलम मसी र शब्दको छ भक्तको सुसङ्गम। २८।

म एकवार भक्तिले हजारमा नमोनमः
सद्भाव पूर्ण तनमन विवेकमा समर्पण। २९।

यहाँ छ शास्त्र मन्थन यहीं छ सन्त सङ्गम
भयो पचास वर्षको युवा विवेक आश्रम। ३०।

अनन्त पूर्ण ब्रह्मका सुभक्ति ज्ञान कर्मका
वचन रमाइलो सुन्यौं श्रीरामानन्द स्वामीका। ३१।

कतै कुरा छ ज्ञानको कतै छ ध्यान रामको
कथा सुन्यौं मिठा नयाँ श्री सोम छन्दुरामको। ३२।

चरित्रको गुरुत्वको प्रबुद्धको थलो ठूलो
सनातनीय पूर्वको अखण्ड धर्म क्षेत्र हो। ३३।

ध्वनि छ वेदवाक्यको आवाज गुञ्जिइकन
छरिन्छ विश्वव्यापकै भई विवेक आश्रम। ३४।

रमाइलो अति थियो विमानको परिक्रम
समस्त देवी देवता खुसी भए मनैमन। ३५।

अबिर द्रब्य पुष्पको सुवृष्टि भो मनोरम
प्रसन्न विष्णुभक्त खुसी भए सबै जन। ३६।

जगन्नाथ पुरी सरि रमाइलो दिनैदिन
सुसभ्य भव्य भौतिक कला उही छ प्राचीन। ३७।

श्री तेजपुञ्ज योगको गुरुत्वको छ कर्षण
निलु र वासु केसीका सुभक्तिको समर्पण। ३८।

हे दूरका महाजन समीपका सुसज्जन
छुट्यो कि नाम देनको छ त्रास अपूर्ण लेखन। ३९।

तथापि पाउँला क्षमा म यज्ञराज अकिञ्चन
तमाम दिल प्रेमको झलक विवेक आश्रम। ४०।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्तन

✍ लहेन्द्र भट्टराई

चिन्तन गरौं अनुकूल श्रीविवेकाश्रम धामको।
मिल्छ सानिध्यमा श्रेयः रहे अनुकम्पा गुरुको।।

गुरु मार्गद्रष्टा हुन्छन् जन्मदाता त मातापिता।
पहिचान गरौं मार्गको कृपालु गुरु मुक्तिदाता।।

ढिलो नगरौं चिन्तनको बेलैमा गरौं आफ्नो जोहो।
जागौं उठौं कर्मपथमा डोरो बनाऔं स्वधामको।।

चिन्तन गरौं अनुकूल श्रीविवेकाश्रम धामको।
मिल्छ सानिध्यमा श्रेयः रहे अनुकम्पा गुरुको।।

कहाँ जन्म कहाँ वृद्धि बन्छौं स्मशान अनि कहाँ।
भवबाट उद्धार गर्ने ईश्वर हुन् गुरु महान्।।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु नै हुन् महेश्वर।
अद्वितीय शक्तिका पुञ्ज महान् श्री विवेकेश्वर।।

चिन्तन गरौं अनुकूल श्रीविवेकाश्रम धामको।
मिल्छ सान्निध्यमा श्रेयः रहे अनुकम्पा गुरुको।।

देखेथ्यौं आँखाले चिनेनौं सुनेथ्यौं कानले बुझेनौं।
सपनासरि नै भो कि वा सम्झँदा गुरुदेव बिम्ब।।

भन्थे अभिभारा संहाल बाबु बेला भयो जानको।
सदाचार बनिरहोस् कीर्ति बढोस् आश्रमको।।

✍ पूर्वमहासचिव, विवेकाश्रम, चारपाने झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्तन गरौं अनुकूल श्रीविवेकाश्रम धामको।
मिल्छ सान्निध्यमा श्रेयः रहे अनुकम्पा गुरुको।।

शिष्यधर्म पालना भो गुरुवाक्य ब्रह्म हुन गो।
खिचेथ्यो तस्विर आँखाले सुन्दर माली र पुष्पको।।

पानी दिनेछौं ती मूलमा कल्पनाका पुष्पकुलमा।
फुल्नेछ सदा वाटिकामा परिश्रम जलस्रोतमा।।

रचेको विधाता विधान नहुँदो रहेछ बदर।
शिष्यमा सुम्पी अभिभारा जानु सत्य भयो सदर।।

चिन्तन गरौं अनुकूल श्रीविवेकाश्रम धामको।
मिल्नेछ सानिध्यमा श्रेयः रहे अनुकम्पा गुरुको।।

जप, न्यास, ध्यान एकमा अनुशासन छ अर्कोमा।
माला त्यो एकताको जस्तै दिनचर्या हुँदै पालना।।

गुरुको छवि अमर छ हाम्रा सूक्ष्म मानस पटलमा।
भावुक प्रेमले पुकाछौं सङ्कटबाट उभारन।।

पल्लवित पुष्पमा दृष्टि बनोस् वर्षाई करुणा।
अनुकम्पमा बनिरहोस् स्वर्णिम परिकल्पनामा।।

इति

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभकामना

✍ हरिप्रसाद न्यौपाने

अति असल छ हाम्रो देशमा पूर्व झापा
यस बिच अझ राम्रो चारपाने छ खासा।
सुखसित सब बस्छन् ईशको लि सहारा
गुरुकुल छ उज्यालो फाल्छ गै अन्धकार।।
(१)

सकल जन रमाऊन् ज्ञानगङ्गा पिएर
मनबिच सुकिलो यो लक्ष्य साझा लिएर।
शुभ समय विवेकानन्द यो ठाउँ आए
गुरुकुल सुरु गर्ने सोच राम्रो उठाए।।
(२)

उठ गर अब केही कर्म हो धर्म तिम्रो
सकल शुभ चिताए हुन्न केही नराम्रो।
दिनदिन सबमा यो ईशाले दिन्छ अर्ती
लिनु नलिनु छ आफ्नै चित्तको हुन्छ मर्जी।।
(३)

असल मन गरेका चारपाने निवासी
सकल जन रमाए प्रेमले झट्ट हाँसी।
गुरुकुल सुरु भैगो लक्ष्य चोखो लिएर
वरपर सब आए ज्ञान खोजौं भनेर।।
(४)

दिनदिन उपयोगी वेद, रुद्री र चण्डी
गुरुकुलबिच पढ्ने छैन कोही घमण्डी।
सकल जन जुटेछन् बस्न डेरा मिलाए
कतिकति जन पढ्छन् खान बस्नै दिलाए।।
(५)

दिनदिन सुविधाको स्रोत थप्दै गरेका
सकल मन जुटेरै लक्ष्य चोखो लिएका।
गुरुकुलबिच पढ्ने भाइ-बैनीहरूमा
भवन पनि हुँदै गो स्नेह बढ्दा मनैमा।।
(६)

शुभ समय जुरेको वर्ष हो बीस आठ
सबसँग मन मिल्दा बढ्न लागेछ आँट।
गुरु पनि थपिँदै छन् ज्ञान बाँड्ने भनेर
वटुक पनि बढेका ज्ञान मिल्ला भनेर।।
(७)

गुरुकुल यसरी नै फैलियो जग्मगाई
अब सुरु गरिने भो कौमुदी पढ्नलाई।
अति कठिन छ पढ्दा सिक्न यो देवभाषा
पछिपछि रस बस्दा मिल्छ आनन्द खास।।
(८)

विवेकानन्दको इच्छा भयो सार्थक निश्चय।
सरकारी दरबन्दी भो शिक्षा संस्कृत भो तय।।
(९)

पाठ्यक्रम छ सरकारी शिक्षा संस्कृतको भयो।
श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा.वि. स्वीकृत भैगयो।
(१०)

✍ *भद्रपुर (१०), झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेद, रुद्री र चण्डीका पद्यले ढाक्छ गै नभ।
हुन्छ हवनको कार्य विद्यार्थी छन् खुसी सब।।
(११)

अखण्ड दीप बल्दैछ यस पावन भूमिमा।
रहोस् पवित्र यो कर्म गरी पूजन ईशमा।।
(१२)

बोलौं संस्कृतका वाणी गुन्जियोस् धरती नभ।
बनोस् पवित्र यो आत्मा नहोस् द्रोह कसैसँग।।
(१३)

यो शुद्ध भावना बोकी गुरुकुल चलाइयो।
बने विद्वान् यहींबाट यश, कीर्ति बढाइयो।।
(१४)

सधैं स्तुत्य छ यो कार्य पहिलो श्रेयका धनी।
विवेकानन्द स्वामी हुन् कर्मले पूज्य छन् यिनी।।
(१५)

यो शुभ कार्यमा साथ दिने यो स्थानका जन।
सधैं स्तुत्य सधैं मान्य विशाल नभकै मन।।
(१६)

हाम्रो वैदिक संस्कार गर्नु पर्दछ रक्षण।
भन्ने यो भावना आज भएको छ सुरक्षण।।
(१७)

बाह्र कक्षा पढाइ छ विद्यार्थी ज्ञान सिक्दछन्।
दुई सय र पच्चीस सङ्ख्यामा नित्य पढ्दछन्
(१८)

खट्नु हुन्छ यहाँ धेरै ज्ञान बाँड्न भनी गुरु।
सङ्ख्या चौध पुगेको छ, हुन्न अज्ञानको सुरु।।
(१९)

छात्रावास बसी पढ्ने सय पैंतिस पुग्दछन्।
खाने बस्ने व्यवस्था छ भान्से नै द्वय बस्तछन्।।
(२०)

स्थायी स्रोत कुनै छैन यस्तो विशाल कार्यको।
उदार चित्तका मान्छे सहयोग विचित्रको।।
(२१)

व्यवस्थापन जो गर्छ ऊ सधैं देवतुल्य छ।
होस नित्य महान् कार्य सबलाई सलाम छ।।
(२२)

पुगेकै छ सधैं इच्छा पुराण लाग्छ वर्षमा।
यज्ञ यज्ञादि चल्दै छन् हुन्छ सम्पन्न हर्षमा।।
(२३)

गोसेवन सधैं हुन्छ गौशाला छ समीपमै।
म दिन्छु तँ चिता भन्छन् यहाँ ईश्वरले सधैं।।
(२४)

पचास वर्ष चल्दै छ यो शुभ कार्यको कुलो।
चलोस युगयुगौसम्म रहोस् सद्भावना ठुलो।।
(२५)

यो पुण्यस्थलमा सधैं अमृतको वर्षा गरून् ईशले,
चोखो जाँगर यो सधैं चलिरहोस् सत्कार्य हुन् होसले।
स्वर्णोत्सव अब पूर्ण बनियोस् यो स्वर्गको भूमिमा
राखें यो शुभकामना हृदयले यो धर्मको कर्ममा।।
(२६)

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुस्वागत

कृष्णमाया रिजाल

स्वागत स्वागत गर्छौं स्वागत२
यो विवेकाश्रममा यो पुण्य भूमिमा
साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. चारपानेमा
(स्वागत स्वागत गर्छौं स्वागत)२

****

हाम्रो निम्तो स्वीकार गरी पाल्नुहुनेलाई
स्वर्ण महोत्सवका हाम्रा सबै अतिथिहरूलाई
हामीलाई नित्य भोजन गराउने अन्नदातालाई
यहाँ आउने सबै अतिथि चन्दादातालाई
गर्छौं स्वागत हामी सबैले
यो स्वर्ण महोत्सवमा स्वस्तिवाचनले
(स्वागत स्वागत गर्छौं स्वागत)२

****

शिवपाञ्चायन मन्दिर राममन्दिरमा
यज्ञशाला गौशाला अखण्ड दीपमा
वेद, रुद्री, चण्डी पाठ गायत्री जप गर्दै
स्वागत गर्छौं हजुरहरूलाई नित्य हवन गर्दै
गर्दछौं स्वागत विवेकाश्रमले
यो स्वर्णमहोत्सवमा वेदका ध्वनिले
(स्वागत स्वागत गर्छौं स्वागत)२

****

विवेकानन्द गुरु महाराज सदा सम्झना गर्दै
संस्कार अनि संस्कृति सधैं जगेर्ना गर्दै
रुद्र सत्सङ्ग भवनर्विष्णु पाञ्चायन मन्दिर
सारा दातालाई सदा मनमा सम्झी
गर्दछौं स्वागत संस्कृत मा.वि ले
यो स्वर्ण महोत्सवमा स्वस्तिवाचनले
(स्वागत स्वागत गर्छौं स्वागत)२

****

❑

शिक्षिका, साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, बिर्तामोड २, चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रम तथा विद्यालय खण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीविवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद मा.वि. चारपाने, झापा

(वि.सं. २०२८ देखि २०७८ सम्म)

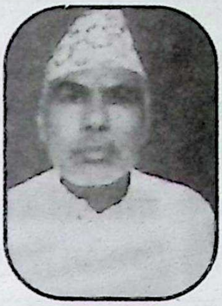

✍ दामोदर न्यौपाने

'भ्रमन् सम्पूज्यते योगी' अर्थात् भ्रमण गर्ने योगी नै पूजित हुन्छ भनेझैं श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी (माहिला गुरु) विभिन्न स्थानको भ्रमण गर्दै आफ्ना भक्त-शिष्य एवं ब्रह्मचारी शिष्यहरूका साथ पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको खेतबारी हेर्ने र भ्रमण गर्ने क्रममा पूर्वी नेपालको झापा लिल्लाको बिर्तामोडबाट करिब ३ किलोमिटर पश्चिममा अवस्थित तत्कालीन चारपाने गाउँ पञ्चायत, वडा नं. ३ (हाल बिर्तामोड न. पा. २) को यस स्थलमा आइपुग्नुभयो र केही दिन यसै स्थलमा बस्ने निर्णय गर्दै पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाबाट करिब १५ धुर जग्गा माग गरी त्यस जग्गामा आफ्नै साथमा रहेका भक्तजनहरू पुष्पलाल तिम्सिना, हेमनाथ तिम्सिना, देवीप्रसाद पौडेल आदि र विष्णुचैतन्य ब्रह्मचारी (विष्णु पौडेल), पूर्णानन्द तिम्सिनालगायत भक्तहरूलाई पाटा धोएर सुकाउन राखेको सुन्ठीको टुप्पो बाँधी फेद फिंजाएर तम्बुको आकारको कुटी बनाउन लगाई तीन रातसम्म यहीं बस्नुभयो। गुरु यसरी यहाँ बस्न थाल्नुभएको पहिलो दिन २०२८ साल मङ्सिर १६ गते (मार्ग शुक्ल धान्यपूजा पूर्णिमा) को दिन थियो र सोही दिनलाई नै श्रीविवेकाश्रमको स्थापना दिवसका रूपमा मनाइँदै आएको छ।

कुटी (मन्दिर) निर्माण

त्यसपछि सोही जग्गामा भक्तजनहरूलाई कुटी निर्माण गर्न लगाई गुरु शताक्षी देवीको दर्शनार्थ शताक्षीधाम जानुभयो। भक्तहरूले चार सुरमा बाँसका खाँबा गाडेर सुन्ठी-कन्चीको बारबेर गरी सानो फुस्को कुटी निर्माण गरे। गुरुले केही दिनपछि शताक्षीबाट फर्कने क्रममा शताक्षीमै प्राप्त भएको शिवलिङ्ग लिएर चारपाने आई कुटीमा त्यस शिवलिङ्गको विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा गराउनुभयो। सोही शिवलिङ्ग वर्तमान श्रीराममन्दिर (स्थापना कालको पर्णकुटी) मा आज पनि स्थापित गरिएको छ।

त्यसै गरी २०२८ साल माघ १३ गते भीष्म द्वादशीका दिन विवेकानन्द गुरुले वैदिक धर्म, संस्कार एवं संस्कृतिको संरक्षण तथा संवर्द्धन गर्न वर्णमाला, चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण आदि ग्रन्थहरूको अध्ययन अध्यापनका लागि पाठशालाको आवश्यकता पर्दछ र त्यसको शुभारम्भ गर्ने दिन आज भएकाले दीप, कलश, गणेश, सरस्वती र

✍ प्र.अ., श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, बिर्तामोड २, चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुको पूजन र स्मरण गरी आरम्भ गर्नुपर्दछ भनी ब्रह्मचारी विष्णुचैतन्य र पूर्णानन्द तिम्सिना, पुष्पलाल पौडेल र ग्रामीण जनताहरूलाई समेत विद्यार्थी बनाई चारै वेदका प्रथम मन्त्रहरू, पाणिनि व्याकरणका १४ सूत्र, गीता, चण्डी र रुद्रीको पाठ दिएर पठनपाठनको शुभारम्भ गर्नुभयो। यसर्थ सोही दिनलाई नै विद्यालयको स्थापना दिवसका रूपमा मनाउँदै आइएको छ।

तत्कालीन सानो फुस्को कुटीलाई केही समयपछि चार सुरमा सखुवाका चारवटा खाँबा गाडेर मन्दिर आकारमा खरको छाना छाई बाँसका भाटा बुनेर बारबेर गरी भुइँमा २ फुटजति माटो पुरी अलि व्यवस्थित बनाइएको थियो। त्यो कुटी जीर्ण हुँदै गएपछि त्यसलाई भत्काई त्यसै ठाउँमा पक्की मन्दिर बनाउन (जीर्णोद्धार गर्न) २०५५ आश्विन १२ गते प्रातः ७ बजे शिलान्यास गरियो। यसका लागि गठित जिर्णोद्धार समितिमा पं. विष्णुभक्त भण्डारी संयोजकका रूपमा हुनुहुन्थ्यो भने समितिका अन्य पदाधिकारीहरूमा सुरज भण्डारी (सचिव), डिल्लीराम भण्डारी (कोषाध्यक्ष), लहेन्द्रप्रसाद भट्टराई (सदस्य) तथा जगन्नाथ भण्डारी (सदस्य) हुनुहुन्थ्यो। भवन निर्माणका ठेकेदार कपिलेश्वर दास हुनुहुन्थ्यो। इँटाको जोडाइमा सिमेन्टको ढलान गरी बनाइएको लम्बाइ-चौडाइ करिब १६-१६ रहेको एकतले सो मन्दिरको चारैतर्फ छानो नभएको ३ फिट अग्लो ५ फिट चौडाइको पेटी (बरन्डा) थियो। पूर्व र दक्षिणतर्फ ढोका र पश्चिममा झ्याल रहेको सो मन्दिरको भित्र बीचमा १ फुट जति गहिरो हवनकुण्ड थियो। उत्तरतर्फको पूर्वी कुनामा विष्णु पाञ्चायन पूजा गर्ने अनुष्ठान, बीचमा शिवलिङ्ग र उत्तरपश्चिम कोणमा विवेकानन्द पुरी महाराजका पादुका राखिएका थिए।

आश्रम र विद्यालयलाई सुचारु रूपले यज्ञअनुष्ठान र पठनपाठनको व्यवस्था मिलाएर २०२९ साल भाद्र २ गतेका दिन स्वामीज्यू यसको सञ्चालन गर्ने जिम्मा श्री पुष्पलाल तिम्सिनालगायत आफ्ना भक्तशिष्यहरूलाई दिएर “सबैले मुष्टिदान गरी सहयोग गर्नू र पठनपाठन, यज्ञअनुष्ठान गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिनू” भन्दै उत्तरकाशी प्रस्थान गर्नुभयो। यसरी गुरुको आज्ञालाई शिरोधार्य गरी ग्रामीण भक्तहरूका सहयोगमा पुष्पलाल तिम्सिनाले २०३३ साल वैशाख ५ गतेसम्म बिहान बेलुकाको समयमा वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदिको पठनपाठन (अनुकूल समय मिलाएर) र नियमित रूपमा पूजा-अर्चना गराउँदै आउनुभयो।

यसै पृष्ठभूमिमा मिति २०३३।१।५ गते शनिबारका दिन उपस्थित भेलाले पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको सभापतित्वमा आश्रम संरक्षण समिति गठन गर्‍यो र सो समितिले विद्यालयको आवश्यक छ के गर्ने ? भन्ने विषयमा आश्रममा विद्यालयको आवश्यकता छ, गुरुदेवको आज्ञानुसार वेद, रुद्री, चण्डी, व्याकरण पढाउनुपर्ने हुँदा यही वैशाख ७ गते विद्यालय सञ्चालक समिति खडा गरी विद्यालय चलाउनुपर्छ भन्ने निर्णय गर्‍यो। त्यसपछि मिति २०३३।१।७ गते सोमबार पं. टेकनाथ उपाध्याय गौतमको अध्यक्षतामा विद्यालय सञ्चालक समिति गठन भयो। यस समितिले पं. भानुभक्त अधिकारीलाई मासिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रु. १०० बेतन, मासिक तीस के.जी. चामल, १ लिटर तेल, सागसब्जी र दाउरासमेत उपलब्ध गराउने व्यवस्था मिलाई विधिवत् रूपमा शिक्षक नियुक्त गरी नियमित रूपमा पठनपाठन गर्ने व्यवस्था गर्‍यो। *(सञ्चालक (व्यवस्थापन) समितिका निर्णयको विस्तृत विवरण व्यवस्थापन समिति (आश्रम तथा विद्यालय) ले गरेका महत्त्वपूर्ण निर्णयहरू शीर्षक लेखमा राखिएको छ)*। यसरी २०२८ साल माघ १३ गते आरम्भ भई आंशिक रूपमा सञ्चालन भइआएको विद्यालयको पठनपाठन नियमित रूपमा अघि बढ्यो र त्यस दिन जम्मा २० जना विद्यार्थी भर्ना भएका थिए। *(ती विद्यार्थीसमेतको विवरण परिशिष्ट १ मा राखिएको छ)*

विद्यालय भवन निर्माण

प्रारम्भमा बाँसका खाँबा, परालको छानो, सुन्ठीको बार आदिले निर्माण गरिएको पाठशालालाई बाँसका भाटा प्रयोग गरी केही अग्लो बनाई विद्यार्थीहरूलाई बसेर पढ्ने व्यवस्था गरिएको थियो। त्यस बेला गुन्द्री ओछ्याएर बसी दिनभरि पढ्ने व्यवस्था गरिएको थियो। त्यही भवनको एक छेउमा गुरुका लागि कोठा बनाइएको थियो। त्यस समयमा वेद, रुद्री, चण्डी, गीता आदि ग्रन्थहरूको पठनपाठन हुने गर्दथ्यो। २०३३ साल माघको अन्तबाट शिक्षक भानुभक्त अधिकारीले राजीनामा दिएपछि उहाँका स्थानमा पं. विष्णुभक्त भण्डारी गुरुले २०३३।११।१ देखि शिक्षकका रूपमा काम गर्न थाल्नुभयो र उहाँले पढाउन थालेपछि व्याकरण शिक्षाको पनि थालनी भएको पाइन्छ।

विद्यालयको पठन-पाठन व्यवस्थित हुँदै गएपछि विद्यार्थी सङ्ख्या बढ्दै गयो। विद्यालय भवन पनि सानो र जीर्ण हुँदै गएपछि २०३४-३५ सालतिर वर्तमान जग्गाको उत्तरतर्फको केही जग्गासमेत थप गरी त्यहाँ अर्को विद्यालय भवन निर्माण गरियो। त्यस बेला उत्तरबाट दक्षिणतर्फ फर्काई पूर्व-पश्चिम करिब ५० फिट लामो आकारमा बाँसका खाँबा गाडी खरको छानो लगाएर टाँडे विद्यालय बनाइएको थियो। विद्यार्थी सङ्ख्या बढ्दै गएको र पहिलेको विद्यालयले धान्न नसकी २०३७।१२।२२ गते श्री पं. टेकनाथ गौतमको अध्यक्षतामा गठित विद्यालय सञ्चालक समितिको निर्णयअनुरूप ५० फिट लामो र १२ फिट चौडाइको अङ्ग्रेजी वर्णमालाको एल (L) वर्णका आकार भएको भवन निर्माण गरियो। उक्त भवनमा काठका पटाइ, काठकै बार र टिनको छानो लगाइएको थियो। यसरी नयाँ भवन निर्माण भएपछि विद्यार्थीहरू त्यही भवनमा दिउँसो पठनपाठन गर्ने, राति सुत्ने गर्दथे। त्यही भवनको छोटो भागपट्टिको कोठाचाहिँ कार्यालय, अतिथि निवास र शिक्षकले लघुसिद्धान्त कौमुदी पढ्ने विद्यार्थीहरूलाई पाठ दिने र बुझ्ने कामका लागि प्रयोग गरिएको थियो। उक्त भवन निर्माण गर्दा विभिन्न महानुभावहरूले काठका फलेक तथा बटमहरू प्रदान गर्नुभएको थियो। टिनको छानो भने २०४०।६।६ को बैठकले निर्णय गरेअनुसार विभिन्न ३० जना महानुभावहरूबाट जनही १००१ (एक हजार एक रुपैयाँ) अनुदान सङ्कलन गरी लगाइएको थियो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०२८ सालदेखि नै कच्ची भवनमा सञ्चालन भएको विद्यालयमा पहिलोपटक २०४२।११।१५ मा जीवनाथ भण्डारीको अध्यक्षतामा भवन निर्माण गर्न समिति गठन भई पक्की भवन निर्माणको थालनी भएको पाइन्छ। उक्त समितिको उपाध्यक्षमा नरनाथ घिमिरे, सचिवमा लोकनाथ खनाल, सहसचिवमा छन्दुराम भण्डारी, कोषाध्यक्षमा डिल्लीराम भण्डारी र सदस्यहरूमा केदारनाथ खतिवडा, जनकलाल सुवेदी, लहेन्द्र भट्टराई, पुष्पलाल तिम्सिना, पर्शुराम ओझा, देवीप्रसाद पौडेल, घनश्याम तिम्सिना, छविलाल खरेल, गोविन्द काफ्ले, पुष्पलाल भण्डारी, जीवनाथ बराल, लक्ष्मी नारायण भट्टराई रहनुभएको थियो। समितिको सक्रियतामा रत्नबहादुर बस्नेत, तुङ्गबहादुर बस्नेत र बस्नेत परिवारबाट १ कोठा, स्थानीय इँटा उद्योगीहरू लोकनाथ खनाल, जीवनाथ बराल, नरनाथ घिमिरे, वृजमोहन गट्टानीद्वारा १ कोठा, तत्कालीन भन्सार चिफ कालिकाप्रसाद रिमालको सक्रिय सहयोगमा विभिन्न महानुभावहरूको सहयोग लिई २ कोठा गरी जम्मा ४ कोठे पक्की भवन निर्माण कार्य सम्पन्न भई तत्कालीन प्रधानमन्त्री कृष्णप्रसाद भट्टराईद्वारा समुद्घाटनसमेत भएको थियो र त्यसैमा वर्षौं पाठनपाठन भई हाल सो भवन जीर्ण भई भत्काइएको छ।

यो पक्की भवनको निर्माणपश्चात् २०५२ सालमा समाजसेवी मोहनलाल अग्रवालको संयोजकत्वमा पाँचकोठे भवन निर्माण भयो भने यसको भुइँ तलाका ५ कोठाहरू सुन्दरसिंह राजवंशी (भद्रपुर), गोपाल राय संघई (काठमाडौं), लक्ष्मीदेवी-नवीन अग्रवाल साबरथिया (काठमाडौं), रामप्रसाद जोडिवाल (भद्रपुर) र किसनलाल कन्दोई (भद्रपुर) ले गरिदिनुभएको हो। त्यसपछि २०६७-६८ मा त्यसमा सिँढी बनाई माथि तला थप गरी पठन पाठनको कार्य भयो। पछि विद्यार्थी सङ्ख्याको वृद्धिसँगै जिशिकासमेतको सहयोगमा हालको तीनतले विद्यालय भवनको निर्माण भई पठनपाठन भइरहेको छ।

जग्गा खरिद र त्यसको विवरण

२०२८ साल मङ्सिर १६ गते धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरिजी महाराजलाई कुटी आश्रम निर्माणका लागि दान गर्नुभएको १५ धुर र आश्रम तथा विद्यालयले विभिन्न दाताहरूबाट निःशुल्क दान र आर्थिक सहयोग जुटाई पटक पटक खरिद गरेको ७ कट्ठा गरी जम्मा ७ कट्ठा १५ धुर जग्गा २०४४ साल फाल्गुन ५ गते श्री साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. र विवेकाश्रमको नाममा रजिष्ट्रेसन पास भएको छ। त्यसपछि २०६३ जेठ १२ मा निःशुल्क दान दिनुभएको ५ कट्ठा, २०६४ असार ११ मा आश्रमीय कोषबाट खरिद गरिएको १ कट्ठा ११ धुर, २०६४ असार २७ मा आश्रमीय कोषबाट खरिद गरिएको १ कट्ठा ११ धुर, २०६४ साउन २९ मा खगनाथ भण्डारीबाट दानस्वरूप प्राप्त गरिएको १ कट्ठा, २०७२ जेठ २७ मा आश्रमीय कोषबाट खरिद गरिएको साढे ११ धुर र विभिन्न महानुभावको सहयोग जुटाई खरिद गरिएको २ कट्ठा साढे १८ धुर, २०७३ जेठ १३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मा आश्रमीय कोषबाट खरिद गरिएको साढे १९ धुर, २०७८ असोज ५ मा विभिन्न दाताहरूको सहयोग जुटाई खरिद गरिएको सवा ११ धुर र २०७८ पुस ७ मा विभिन्न दाताहरूको सहयोगमा खरिद गरिएको २ कट्ठा साढे १२ धुर जग्गा श्रीविवेकाश्रम र श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको एकल वा संयुक्त नाममा रजिष्ट्रेशन पास भई हालसम्म विद्यालयपरिसरमा १ बिघा २ कट्ठा साढे १८ धुर जग्गा रहेको छ।

साथै पश्चिमतर्फबाट आश्रम परिसरसम्म आइपुग्न १६ फिट चौडाइको बाटोका लागि नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले १ कट्ठा साढे १४ धुर, दक्षिणतर्फबाट आश्रमभित्र छिर्न बाटाका लागि पुष्पलाल भण्डारीले ८ धुर र चारपाने-शनिश्चरे रोडबाट गाउँतिर पस्ने बाटाका लागि बाटाको मुखैमा धैरजप्रसाद राजवंशीले १० धुर जग्गा निःशुल्क प्रदान गर्नुभएको छ। *(भूमिविवरण परिशिष्ट २ मा र भूमिदाताको फोटोसहितको विवरण परिशिष्ट १८ मा राखिएको छ)*

आश्रम परिसरमा अवस्थित मठमन्दिरहरू

१. रामजानकी मन्दिर

२०२८ सालदेखिको कुटी (मन्दिर) रहेकै ठाउँमा श्रीरामजानकी मन्दिर रहेको छ। पूर्वतर्फ फर्किएको यो मन्दिर इँटाको गारो लगाई पिल्लर सिस्टममा सिमेन्टको ढलान भएको यस मन्दिरको छाना तीन तहमा निर्माण गरिएको छ। यस मन्दिरको पूर्व र दक्षिणमा ढोका रहेको र भित्री भागको पश्चिमतर्फको पूरै भागमा पूर्व फर्काएर श्रीराम, लक्ष्मण, सीता र हनुमान्का मूर्तिहरू स्थापित गरिएका छन्। उत्तरतर्फको बाँकी भागमा श्री विवेकानन्दले स्थापना गरेका शिवलिङ्ग, श्री विवेकानन्द गुरुका पादुका रहेका छन्। यस मन्दिरमा हल्का गेरुवा रङ्ग र आवश्यकताअनुसार अन्य रङ्गसमेत लगाई आकर्षक बनाइएको छ।।(यस मन्दिरको जीर्णोद्धारमा सहयोग गर्ने महानुभावहरूको नामावली परिशिष्ट ३ मा दिइएको छ)

२. कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर

रामजानकी मन्दिरको उत्तरतर्फ कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर रहेको छ। बिर्तामोडनिवासी श्री च्यवनलाल अग्रवाल, उनका छोराबुहारी श्री हरिशङ्कर अग्रवाल र श्री विमला अग्रवालले निर्माण गरिदिनुभएको यस मन्दिरमा बीच भागमा शिवको मूर्ति राखी कुनाकुनामा शिव पाञ्चायनका अन्य देवीदेवताका मूर्ति राखिएका छन्। करिब ४५ फिट अग्लो, तले शैलीको यस मन्दिरमा दुईतहको छाना रहेको छ भने गर्भगृहमा इँटाको गारो लगाई सिमेन्टले ढलान गरिएको छ। पिल्लरमा कलात्मक सज्जा र देवीदेवताका आकृति रहेका छन्। यस मन्दिरमा हल्का गेरुवा रङ्ग र आवश्यकताअनुसार अन्य रङ्गसमेत लगाइएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. विष्णु पाञ्चायन मन्दिर

रुद्र सत्सङ्ग भवनको पूर्वतर्फ विष्णु पाञ्चायन मन्दिर रहेको छ। यो मन्दिर कलङ्कीनिवासी श्री वासुदेव र निलु केसी (श्रीमान् र श्रीमती) ले निजी लगानीमा निर्माण गरिदिनुभएको हो। ढलान गरी शिखर शैलीको गुम्बज आकारमा निर्माण गरिएको यस मन्दिरको भित्तामा, पिल्लरमा र माथि गुम्बजमा समेत विभिन्न देवीदेवताका मूर्तिआकृति बनाइएका छन्। यसमा पूर्वबाट पश्चिम फर्काई विष्णु पाञ्चायनका धातुमय मूर्तिहरू राखिएका छन्।

४. यज्ञशाला

विष्णु पाञ्चायन मन्दिरको ठीक उत्तरतर्फ यज्ञशाला रहेको छ। टुँडालसमेत राखी प्यागोडा शैलीमा निर्मित यस यज्ञशालाको तीनतले छानो पित्तलको पाताले छाइएको छ। ३-३ फिटको वर्गाकारको हवनकुण्ड करिब २ फिट जति गहिरो छ भने त्यसको तीन तहको परिधि ६-६ फिटको रहेको छ। यज्ञशालाको भित्री भागको आग्नेय कोणमा गणेश, नैऋत्य कोणमा सूर्य, वायव्य कोणमा देवी, ईशान कोणमा शिव तथा उत्तरतर्फ बीचमा विष्णुको ढलौटको मूर्ति रहेका छन्। श्री १००८ स्वामी सत्य प्रकाशानन्द महाराज हरिद्वारबाट प्राप्त यी दिव्य मूर्तिहरूको २०५४।५।२० देखि २०५४।५।२७ सम्म विधिवत् रूपमा अनुष्ठान गरी प्राणप्रतिष्ठा गरिएको हो। जीर्णोद्धार गरी निर्मित यस यज्ञशालामा २०५३ पुस ९ गते पूर्णिमाबाट आजसम्म अखण्डदीप प्रज्वलित भइरहेको छ। *(सहयोग गर्ने महानुभावहरूको नामावली परिशिष्ट ४ मा दिइएको छ)*

५. स्वर्णदीप मण्डप

यज्ञशालाकै ठिक उत्तरतर्फ स्वर्णदीप मण्डप रहेको छ। भुइँबाट अढाइ फिट उठाई वर्गाकार स्वरूपमा निर्माण गरिएको यस मण्डपको चार सुरमा खाँबा राखी जस्ता पाताले छाना छाइएको छ। पूर्व र पश्चिममा ढोका राखी फलामको १ फिटको रेलिङले बारिएको र बाँकी खुला यस मण्डपको बीच भागमा हावा नलाग्ने गरी बनाइएको पेटिकामा स्वर्णदीप प्रज्वलन गरिएको छ।

६. रुद्र सत्सङ्ग भवन

यस आश्रममा सत्सङ्गका लागि छुट्टै भवन नरहेकामा २०५० साल माघ १८ गते दानवीर श्रीसत्यनारायण अग्रवाल, भद्रपुरद्वारा ६०-४० वर्गफिटको सत्सङ्ग भवन निर्माण भई त्यसमा जिल्ला विकास समिति भद्रपुरद्वारा जस्तापाताको छानो राखी पहिलोपटक सत्सङ्ग भवनको निर्माण सम्पन्न भएको थियो। तर त्यो भवन जीर्ण हुन थालेपछि त्यसलाई भत्काई हाल त्यसै ठाउँमा काठमाडौंको कलङ्कीनिवासी श्री वासुदेव र निलु केसीले हजुरबुवा श्री रुद्रबहादुर केसीको पुण्यस्मृतिमा इँटाको गारो लगाई १०५ फिट लम्बाइ र ५१ फिट चौडाइको रुद्र सत्सङ्ग भवन २०७४ मा निजी लगानीमा बनाइदिनुभएको छ। हाल यसै भवनमा पुराण वाचन, समूहमा हुने पठनपाठन, सत्सङ्ग आदि कार्यहरू हुने गरेका छन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६. पुजारी आवास गृह

कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिरमा पूजा गर्ने प्रमुख पुजारीको आवासका लागि उक्त मन्दिरको उत्तरतर्फको जमिनमा एकतले आवास गृह बनाइएको छ। पूर्वतर्फ फर्काएर ईँटाको गारो लगाई सिमेन्टले छत ढलान गरी बनाइएको यस आवास गृहमा जम्मा ३ वटा कोठा रहेका छन्।

७. रुद्राभिषेक भवन

रुद्राभिषेकका समयमा रुद्राष्टाध्यायी पाठ गर्नका लागि कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिरको पश्चिममा चारैतिर ईँटाको गारो लगाई छत ढलान गरी पिल्लर सिस्टममा पक्की रुद्राभिषेक भवन बनाइएको छ। ५५ फिट लम्बाइ र ४५ फिट चौडाइको यो भवन बिर्तामोडनिवासी स्व. जगतबहादुर खड्काकी धर्मपत्नी तिलरूपा खड्काले आफ्ना स्व. सासु-ससुरा पूर्णबहादुर (रणबहादुर) र भागीरथाको पुण्यस्मृतिमा ६० लाखको निजी लगानीमा निर्माण गरिदिनुभएको हो।

२०. सरस्वती मन्दिर

विद्यालय हातामा लोकनाथ खनाल र दिलमाया खनाल सपरिवारले स्व. मातापिता रनमाया र गङ्गारामको पुण्यस्मृतिमा आरसीसी ढलान गरी पश्चिम फर्काई सरस्वती मन्दिर निर्माण गरिदिनुभएको छ। १२-१२ लम्बाइ-चौडाइ रहेको उक्त मन्दिरमा स्थापित सरस्वतीको मूर्ति भने हृदयदीप आश्रम, जम्मु-कश्मीरका संस्थापक स्वामी हृदयानन्द गिरिले प्रदान गर्नुभएको हो।

आश्रम र विद्यालयको फरक व्यवस्थापन

२०४७ साल फागुन ६ गते अघिसम्म आश्रम र विद्यालयको व्यवस्थापन एउटै समितिबाट हुने गरेकोमा आश्रमको छुट्टै विधान निर्माण गरी २०४७ साल फागुन ६ गते झापा जिल्ला प्रशासन कार्यालयमा (दर्ता नं. ५४) विधिवत् श्रीविवेकाश्रम दर्ता गरेपश्चात् आश्रम र विद्यालयको फरक फरक व्यवस्थापन समितिको व्यवस्था भयो।

२०४७ साल फागुन २९ गते आश्रमको विधानअनुसार निम्नानुसारको आश्रमको पहिलो कार्यकारिणी समिति गठन भई आश्रमसम्बन्धी निर्णय छुट्टै लिन थालियो। अध्यक्ष पं. टेकनाथ उ. गौतम, उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, सचिव आनन्दप्रसाद सिग्देल, सहसचिव टीकाराम ढुङ्गेल, कोषाध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना, सदस्य नन्दिकेश्वर तिम्सिना, केदारनाथ खतिवडा, डिल्लीराम भण्डारी, पुष्पलाल भण्डारी, लोकनाथ खनाल, पुष्पलाल तिम्सिना।

त्यसै गरी मिति २०४८ साल ज्येष्ठ १७ गते शुक्रबार विद्यालय व्यवस्थापनका लागि अध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना, उपाध्यक्ष लोकनाथ खनाल, सचिव विष्णुभक्त भण्डारी, सहसचिव पूर्णानन्द तिम्सिना, सदस्यहरूमा लहेन्द्र प्रसाद भट्टराई, नरनाथ घिमिरे, डिल्लीराम भण्डारी, लीला ब. कटुवाल, पुष्पलाल भण्डारीसमेतको समिति गठन भई विद्यालयसम्बन्धी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्णहरू छुट्टै लिन सुरु गरियो। *(आश्रम तथा विद्यालयको वर्तमान व्यवस्थापन समिति पदाधिकारीहरूको विवरण परिशिष्ट ५ मा छ।)*

अन्नक्षेत्र अक्षयकोष स्थापना र सञ्चालन

२०६७ साल चैत्र १६ गतेको निर्णयअनुसार २०६८ साल वैशाख २ गतेको अक्षय तृतीयाबाट अन्नक्षेत्र स्थापना गरी विद्यार्थीहरूलाई भोजन पकाएर दिने व्यवस्थाको थालनी भएको हो। त्यसपछि अन्नक्षेत्रको दिगो सञ्चालनका लागि अक्षयकोष स्थापनाको अवधारण विकास भई अन्नक्षेत्र अक्षयकोष स्थापना गर्न दामोदर न्यौपानेको संयोजकत्वमा अन्नक्षेत्र सञ्चालन व्यवस्थापन उपसमिति गठन गरियो। उपसमितिको सहसंयोजकमा भानुभक्त अधिकारी, सचिवमा बद्रीनाथ खतिवडा, कोषाध्यक्षमा जगन्नाथ खनाल र सदस्यहरूमा जगन्नाथ भण्डारी, पूर्णानन्द तिम्सिना, दिलकुमार सङ्ग्रौला, श्यामप्रसाद दहाल रहनुभएको थियो। यस उपसमितिले विभिन्न दानवीर दाताहरूको खोजी गरी आजीवन सदस्यका रूपमा ३५ हजारका दरले रकम जम्मा गरी अन्नक्षेत्र अक्षयकोष स्थापना गरियो। यसमा सुरुमा ३५ हजार जम्मा गरेर आजीवन सदस्य हुन पाइने व्यवस्था थियो भने हाल ५१ हजारभन्दा माथि रकम जम्मा गरेर मात्र यस कोषको आजीवन सदस्य हुन सक्ने व्यवस्था रहेको छ। हाल यस कोषमा १२९ सदस्यसङ्ख्या रहेको छ भने कोषमा रु. ६८,९९,८८९। रकम जम्मा रहेको छ। यस रकमको ब्याजबाट मात्र अन्नक्षेत्रको सञ्चालन व्यवस्थापन हुने गरेको छ। *(सदस्यहरूको रकमसहितको नामावली परिशिष्ट ६ मा छ)*

आश्रम अक्षयकोष स्थापना र सञ्चालन

आश्रमको दैनिक पूजापाठ, हवन यज्ञ सञ्चालन आदिको सञ्चालन व्यवस्थापनका लागि आश्रममा आश्रम अक्षयकोष रहेको छ। मिति २०५७।१०।२५ गतेका दिन रूपन्देहीको बर्मेली टोलनिवासी लीलाराम न्यौपानेबाट रु. ५१,००० प्रदान गरी यस कोषको थालनी गरिएको हो। यसमा रु. २१०० प्रदान गरी सदस्य बन्न सकिने र हो रकममा थप गर्दै लग्न सकिने समेत व्यवस्था रहेको छ। यसमा हालसम्म ७१५ सदस्य रहेको र यस कोषमा जम्मा रु ८१,८५,३२३। रहेको छ। यसको पनि ब्याजमात्र सञ्चालनमा खर्च गर्न सकिने व्यवस्था छ। *(सदस्यहरूको रकमसहितको नामावली परिशिष्ट ७ मा छ)*

धान्याचल व्यवस्थापन

प्रत्येक वर्ष गरिने वार्षिकोत्सवका अवसरमा दानवीर महानुभावहरूका घरघरमा गई सङ्कलन गरिएको र आश्रममै आई समर्पण गरिएको धान्याचलमा प्राप्त धानहरूको संरक्षण गरी राख्न पुरानो काठको विद्यालय भवनको काठबाट ढिकुटीको निर्माण २०५३ कार्तिक ११ गते सम्पन्न गरिएको थियो भने यसरी सङ्कलित धान त्यसमा ढिकुटीमा राखी व्यवस्थापन गर्ने गरिएको छ, जुन धानबाट यस विद्यालयमा अध्ययन गर्ने वटुकहरूलाई खाना खुवाउने कार्यका लागि प्रयोग हुने गरेको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोजनालयको व्यवस्था

सुरुमा विद्यार्थीहरूलाई आफैंले खाना बनाएर खान करिब १२ फिट चौडाइ र २० फिट लम्बाइको दक्षिणतर्फ फर्काई सानो भान्साघर बनाइएको थियो भने पछि विद्यार्थीसङ्ख्या बढ्दै गएपछि २०३८-३९ तिर त्यसलाई भत्काई त्यसकै पूर्वतर्फ करिब ३० फिट लामो र १५ फिट चौडाइको अलि ठुलो भान्साघर बनाइएको थियो। त्यस बेला विद्यार्थी स्वयंले भोजनको व्यवस्था गर्नु पर्दथ्यो। भोजन निर्माणका लागि टिनको छाना र बाँसका भाटाको बार भएको भान्साघर निर्माण गरिएको थियो। उक्त भवनभित्र ३-५ जनाको समूह बनाई विद्यार्थीहरू भोजन बनाउने गर्दथे। विद्यार्थीहरू घरबाट चामल, सब्जी दाल लिएर आउँथे भने बिदा (अष्टमी र प्रतिपदा) का दिन दहीझोडा जङ्गलमा गई दाउरा खोजेर ल्याउँथे र तिनै दाउरा प्रयोग गरी भात पकाएर खाने गर्दथे। कहिलेकाहीं चिसा चुलामा दाउरा नबल्दा विद्यार्थीहरूको बिजोक भएको देखिन्थ्यो। कहिलेकाहीं त्यति टाढाबाट बोकेर ल्याएका दाउरा नै काँचा पर्दथे र बल्दैनथे।

घरबाट लिएर आएको सागसब्जी पर्याप्त नहुने हुँदा र कतिपय विद्यार्थीहरू टाढाबाट आएका हुँदा घरबाटै सबै थोक ल्याउन सम्भव थिएन, तसर्थ ग्रामवासीहरूले विद्यार्थीका लागि सागसब्जी र मोही पारेका दिन मोही आदि पालैपालो गरी ल्याइदिने गर्दथे। कहिलेकाहीं विद्यार्थीहरू आफैं मोही माग्न जाने गर्दथे। २०५६ सम्म उक्त भान्साघरको प्रयोग गरियो भने त्यसपछि भोजनालय निर्माण गर्न २०५६।८।११ मा विष्णुभक्त भण्डारीको संयोजकत्वमा सदस्यहरू पूर्णानन्द तिम्सिना, जगन्नाथ भण्डारी, दामोदर न्यौपाने, डिल्लीराम भण्डारीसमेतको निर्माण समिति गठन भई चारकोठे पक्की भवनको पूर्वतर्फ पैनीको छेउमा अस्थायी प्रकृतिको जस्ता लगाई भोजनालय निर्माण गरियो। हाल त्यसैमा भोजन बनाई विद्यार्थीलाई भोजन गराउने व्यवस्था रहेको छ। सुरुमा विद्यार्थी स्वयंले खाना बनाएर खानुपर्थ्यो भने २०६८ अक्षय तृतीयादेखि खाना बनाउन भान्सेको समेत व्यवस्था भएको छ।

विद्यालय सञ्चालन अनुमति

२०२८ सालदेखि वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद, कौमुदी आदि पठन पाठन भई परीक्षाका लागि अन्यत्र (भारत) जानुपर्ने यस विद्यालयमा २०४६ साल ज्येष्ठ १६ गतेको क्षेत्रीय शिक्षा निर्देशनालयको निर्णयअनुसार व्यावसायिक विषय कर्मकाण्ड रहने गरी माध्यमिक तह (तत्काल कक्षा ८) सञ्चालन गर्न अनुमति प्राप्त गरी यहाँका विद्यार्थीले नेपालमै परीक्षा दिने व्यवस्थाको सुरुवात भएको पाइन्छ। तत्कालीन शिक्षा ऐन तथा नियमावलीअनुसार माध्यमिक तह सञ्चालन गर्न राख्नुपर्ने १,२५,०००। (एक लाख पच्चीस हजार) धरौटी रकम जम्मा गर्न मिति २०४५।११।२२ मा विष्णुबहादुर श्रेष्ठको संयोजकत्वमा गठित आर्थिक सङ्कलन उपसमितिको सचिवमा लहेन्द्रप्रसाद भट्टराई कोषाध्यक्षमा लोकनाथ खनाल र सदस्यहरूमा गोविन्दबहादुर बस्नेत (प्रधानपञ्च), जगन्नाथ काफ्ले (उपप्रधानपञ्च), नरनाथ घिमिरे, नारायणप्रसाद

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजवंशी, छविलाल खरेल, टीकाप्रसाद भट्टराई, डिल्लीराम भण्डारी, घनश्याम तिम्सिना, आनन्दप्रसाद सिग्देल र गोपालप्रसाद बस्नेत रहनुभएको थियो। त्यसपछि यस विद्यालयले क्रमशः वि.सं. २०४७ मा कक्षा ९, वि.सं. २०४८ मा कक्षा १० अनुमति पाई यहाँका विद्यार्थीहरूले वि.सं. २०४८ मा पहिलोपटक प्रवेशिका (एसएलसी) परीक्षा दिए भने वि.सं. २०७४ मा कक्षा ११ र वि.सं. २०७५ मा कक्षा १२ को सञ्चालन अनुमति लिई पहिलोपटक वि.सं. २०७५ मा कक्षा १२ को परीक्षा दिए। पछि विभिन्न कठिनाइ भई कक्षा ११–१२ को सञ्चालन स्थगन भएकामा वि.सं. २०७७ को शैक्षिक सत्रबाट पुनः सञ्चालनमा निरन्तरता दिइएको छ।

पाठ्यक्रम र पठाइ हुने विषय

तत्कालीन श्री ५ को सरकार पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक विकास केन्द्रद्वारा संस्कृत विषयको पाठ्यक्रम साधारण संस्कृत र वेद विद्याश्रम गरी दुई किसिमको विकास गरेको हुनाले कुन धारको पाठ्यक्रम यस विद्यालय आश्रम सुहाउँदो हुन सक्छ भनी पाठ्यक्रम सुझावका लागि गठित सुझाव समितिले दिएको सुझावअनुसार तत्काल कक्षा ८ देखि नै वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रम लागु गरिएको र हालसम्मै सोही पाठ्यक्रम लागु रहेको छ भने सोहीअनुसार कक्षा १२ सम्मै पठनपाठन भइरहेको छ। वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रममा अङ्ग्रेजी विषय नभएकाले वर्तमान युगमा अङ्ग्रेजी विषयको ज्ञान हुन आवश्यक देखिएकाले २०४७ पौष २ मा अतिरिक्त अङ्ग्रेजी शिक्षकका रूपमा सोमनाथ तिम्सिनालाई स्वयंसेवक नियुक्त गरी अङ्ग्रेजी विषयको समेत पठनपाठन कार्य सुरु गरिएको थियो भने पाठ्यक्रम परिवर्तन भई संस्कृत साहित्य वा अङ्ग्रेजी विषय छान्न पाइने भएकाले शैक्षिक सत्र २०७१ देखि संस्कृत साहित्यको ठाउँमा अङ्ग्रेजी राखी पठनपाठन भएको हो।

वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रम लागु भएपछि यस विद्यालयमा खास गरी कक्षा १० मा अनिवार्य विषयमा नेपाली, गणित, सामाजिक र संस्कृत व्याकरण रहेका छन् भने ऐच्छिक विषयमा कर्मकाण्ड, शुक्ल यजुर्वेद, व्याकरण र अङ्ग्रेजीको पढाइ हुने गरेको छ। कक्षा ११-१२ को हकमा अनिवार्य विषयका अतिरिक्त ऐच्छिक विषयमा कर्मकाण्ड, व्याकरण, साहित्य र थप ऐच्छिकमा अर्थशास्त्रको पढाइ हुने गरेको छ। हालको परिस्थितिमा आवश्यकताअनुसार भौतिक उपस्थिति नभएको अवस्थामा दूरदृश्य (जुम) प्रविधिबाट समेत कक्षा सञ्चालन गर्ने गरिएको छ।

प्रधानाध्यापकको जिम्मेवारी

यस विद्यालयको प्रधानाध्यापकका रूपमा भानुभक्त अधिकारीले २०३३।१।७ देखि २०३३।१०।२९ सम्म कार्य गर्नुभएको देखिन्छ। त्यसै गरी विष्णुभक्त भण्डारीले २०३३।११।१ देखि २०४९।०७।१९ गतेसम्म प्रधानाध्यापकका रूपमा कार्य गर्नुभएको छ। विष्णुभक्त भण्डारी गुरुले राजीनामा गर्नुभएपश्चात् २०४९।८।२०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०६५।९।८ सम्म पूर्णानन्द तिम्सिनाले उक्त जिम्मेवारी सम्हाल्नुभयो भने २०६५।९।९ देखि प्र.अ.मा नियुक्त म (दामोदर न्यौपाने) बाट हालसम्म सो जिम्मेवारी वहन भइआएको छ।

शिक्षक व्यवस्थापन

पठनपाठनका प्रारम्भिक समयमा विद्यार्थीलाई विवेकानन्द गुरु स्वयंले पढाउनुभयो भने गुरु यहाँबाट हिँडेपछि पुष्पलाल तिम्सिनासमेतले यो कार्य २०३३ को सुरुसम्म गर्नुभयो। २०३३ वैशाख ७ गतेको विद्यालय सञ्चालक समितिको निर्णयानुसार भानुभक्त अधिकारी शिक्षकका रूपमा नियुक्त भई वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदि पढाउनुभयो भने २०३३ फागुनदेखि भानुभक्तका ठाउँमा विष्णुभक्त भण्डारी नियुक्त भई व्याकरणसमेत पढाउन थाल्नुभयो। विद्यार्थीको सङ्ख्या क्रमशः वृद्धि हुँदै जाँदा र एक जना शिक्षकबाट पठनपाठन कार्य सम्भव नभएकाले मिति २०३८।९।१६ गतेबाट सहशिक्षकका रूपमा अम्बिकाप्रसाद रेग्मीलाई नियुक्ति गरी पठनपाठन व्यवस्थित गर्ने कार्य गरियो। त्यसै गरी मिति २०४०।९।८ मा गोविन्दप्रसाद पौडेल, २०४२।१०।१२ मा छन्दुराम भण्डारी, २०४३।१२।२९ मा डिल्लीराम गौतम र मित्रप्रसाद ढकाल, २०४५।२।१६ मा पूर्णानन्द तिम्सिना, २०४५।११।१ मा नन्दराम पाठक शिक्षकका रूपमा नियुक्त भई पठन पाठनको कार्य अगाडि बढाउँदै लगियो भने आवश्यकताअनुसार छोड्दै पनि जानुभएको देखिन्छ भने २०४६ सालमा माध्यमिक तह (कक्षा ८ को) को अनुमति प्राप्त हुनासाथ विषयगत शिक्षकहरूको आवश्यकता भएकाले तत्कालका लागि कक्षागत पढाइमा यसै विद्यालयका पूर्वविद्यार्थीहरू अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, गोविन्दप्रसाद पौडेल, छन्दुराम भण्डारी, मित्रप्रसाद ढकाल, डिल्लीराम गौतमलाई शिक्षकका रूपमा पुनः नियुक्ति गरी विद्यालय सञ्चालन गरियो।

माध्यमिक तहको अनुमतिपछि दरबन्दी तथा निजी स्रोतमा समेत गरी आनन्दप्रसाद सिग्देल, भूमिप्रसाद खतिवडा, नवराज बाँसकोटा, डिल्लीराम भण्डारी, पुष्पलाल पौडेल, नेत्रप्रसाद दाहाल, सोमनाथ तिम्सिना, पूर्णानन्द अधिकारी, जगन्नाथ भण्डारी, दामोदर न्यौपाने, उपेन्द्रप्रसाद ओली, पुरुषोत्तम भण्डारी, दिलकुमार सङ्ग्रौला, प्रतिमा भण्डारी, ध्रुव न्यौपाने, भानुभक्त अधिकारी, मनकुमारी तिम्सिना, छविलाल नेपाल, षडानन्द तिम्सिना, चन्द्र नेपाल, भीमप्रसाद पौडेल, डिल्लीराम खतिवडा,कमल मिश्र, कुबेर पौडेल, एकराज भट्टराई, यज्ञराज दाहाल, प्रवीण निरौला, इन्द्रप्रसाद भट्टराईले अध्यापन गर्नुभयो। *(विस्तृत विवरण परिशिष्ट ८ मा दिइएको छ)*

जिल्ला शिक्षा कार्यालयबाट पटक पटक गरी प्राप्त माध्यमिक, निम्नमाध्यमिक र प्राथमिकका तहका विभिन्न दरबन्दी तथा निजी स्रोतमा समेत नियुक्त भई विद्यालयमा पठन-पाठन भइरहेको छ भने लेखा तथा विद्यालयको अन्य कार्यका लागि पनि कर्मचारी नियुक्त भई कार्यरत हुनुहुन्छ। हाल १४ जना शिक्षक र २ जना कर्मचारी गरी १६ जना यस विद्यालयमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यरत हुनुहुन्छ। साथै विद्यालयको पठन पाठन कार्य र प्रगतिका लागि नियमानुसार शिक्षक अभिभावक सङ्घसमेत गठन भई कार्यरत रहेको छ। *(शिक्षक-कर्मचारी विवरण परिशिष्ट १० तथा शिक्षक अभिभावक सङ्घको विवरण परिशिष्ट ११ मा दिइएको छ)*

शौचालय तथा स्नानागार

सुरुमा भुइँमा खाल्डो खनी त्यसमाथि बाँसका भाटा राखी सुन्ठीको बार बनाई शौचालयको व्यवस्था गरिएको थियो भने स्नानागारको छुट्टै व्यवस्था थिएन। क्रमशः भुइँमा खाल्डो खनी त्यसमा सिमेन्टको रिङ राखी त्यसमाथि सिमेन्टकै प्यान राखी बाँसका भाटाको बारमा सिमेन्टको प्लास्टर गरी जस्तापाताले छाएर शौचालयको निर्माण गरिएको थियो भने अझ पनि स्नानागारको छुट्टै व्यवस्था गर्न सकिएको थिएन। यसै सन्दर्भमा मिति २०६९।३।७ मा लोकनाथ खनालको संयोजकत्वमा सोमनाथ तिम्सिना, यशोदा खतिवडा, लीलाबहादुर कटुवाल, दामोदर न्यौपाने सदस्य रहेको शौचालय निर्माण उपसमिति गठन भयो र विभिन्न निकायबाट स्रोत जुटाई ४२-१५ फिट लम्बाइ-चौडाइको इँटाको गारो लगाई पिल्लर सिस्टममा ढलान भएको १० कोठा शौचालय र २ कोठा स्नानघरसहितको भवन निर्माण गरिएको छ। यसमा खास गरी विद्यार्थी र आवश्यकताअनुसार अन्यले पनि यसको प्रयोग गर्ने गरिएको छ। यसमा जि.शि.का. झापा र नेपाल पर्यटन बोर्डको समेत अनुदान रहेको छ।

पुरस्कारको स्थापना

आश्रम तथा विद्यालयको स्वर्णमहोत्सवको अवसरमा स्वामी विवेकानन्द स्मृति पुरस्कारको स्थापनाको सुरुवात भएको छ जसमा विष्णुप्रसाद पौडेल (अमेरिका) बाट ५१०००।–, दामोदर न्यौपानेबाट ५१०००।– र डम्बरु पौडेल (अमेरिका) बाट २१०००।– गरी एक लाख तेइस हजार प्राप्त भएको छ। भविष्यमा अन्य महानुभावहरूको समेत सहयोग जुटाई कोष वृद्धिका साथ विधानसमेत निर्माण गरी विभिन्न विधामा पुरस्कार वितरण गरिने लक्ष्य रहेको छ।

२०५० आश्विन २४ गतेका दिन बिर्तामोड–१, निवासी लीलाबहादुर कटुवाल र लता कार्की कटुवालद्वारा बाबुआमाको नामबाट चन्द्रटीका स्मृतिकोष स्थापना गरिएको छ भने सो कोषको ब्याजबाट उपलब्ध हुने रकमबाट विद्यालयमा प्रथम, द्वितीय, तृतीय हुने उत्कृष्ट विद्यार्थीहरूलाई पुरस्कार वितरण गर्दै आएको छ। त्यस्तै २०७२ असार ५ गतेका दिन बिर्तामोड–२, रामचौक निवासी जनकलाल सुवेदी र कलमाया सुवेदीका ज्येष्ठ सुपुत्र टीकाराम सुवेदी र नर्मदा सुवेदीद्वारा यस विद्यालयको एस.एल.सी. परीक्षामा गणित विषयमा सर्वोत्कृष्ट अङ्क ल्याउने विद्यार्थीलाई प्रत्येक वर्ष रु. १०,००० (दश हजार) दिने गरी पुरस्कारको स्थापना र सुरुको वर्षमा महेश अधिकारीलाई सो पुरस्कार प्रदान गरिएको छ।

स्व. नारायणप्रसाद सङ्ग्रौलाको स्मृतिमा धर्मपत्नी ईश्वरादेवी सङ्ग्रौला र छोराबुहारी भरत र चिन्तादेवी सङ्ग्रौलाबाट "स्वामी प्रपन्नाचार्य गीता पुरस्कार" नामकरण गरी झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिल्लाभित्रका गुरुकुलीय वटुकहरूलाई प्रतिस्पर्धा गराई प्रत्येक वर्ष पुरस्कार वितरण गर्नका लागि रु. १,११,०००।- (एक लाख एघार हजार) को अक्षयकोष स्थापना भई सञ्चालनमा रहेको छ।

झापामा सर्वोत्कृष्ट सामुदायिक विद्यालय

२०७० सालको एस.एल.सी. परीक्षामा सामुदायिक विद्यालयहरूमध्ये सर्वोत्कृष्ट नतिजा ल्याई यो विद्यालय झापा जिल्लास्तरमै प्रथम भयो। त्यसबापत जिल्ला शिक्षा कार्यालयबाट जिल्लास्तरीय उत्कृष्टता प्रमाणपत्र (प्रशंसापत्र) प्राप्त भएको छ।

कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर सञ्चालन

२०४६।९।७ गते श्रीमहेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालयबाट कर्मकाण्ड प्रशिक्षणको कार्यक्रम प्राप्त भई पं. विष्णुभक्त भण्डारी र पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनालाई सहजकर्ता (प्रशिक्षक) का रूपमा नियुक्ति गरी २९ जना प्रशिक्षार्थीहरू लाभान्वित भएको र प्रशिक्षक एवं छात्रवृत्तिका लागि प्राप्त रकम चारकोठे पक्की भवन निर्माणमा समेत खर्च भएको थियो।

बालकक्षा सञ्चालन

वि.सं. २०५३ सालदेखि नै सञ्चालन भइरहेको बालकक्षालाई २०५४ साल माघ ३० गतेको समितिको निर्णयअनुसार अध्यक्ष घनश्याम तिम्सिनाबाट रु. ५००, प्र.अ. पूर्णानन्द तिम्सिना, शिक्षकद्वय दामोदर न्यौपाने र जगन्नाथ भण्डारी प्रत्येकबाट १ हजारका दरले ३ हजार र विद्यार्थीका अभिभावकबाट मासिक रु. ५० का दरले रकम लिई बालकक्षालाई व्यवस्थित गरी २०६२ सम्म सञ्चालन गरिएको थियो। *(विद्यार्थी विवरण परिशिष्ट १२ मा छ।)*

भित्तेपात्रो प्रकाशन

२०६९।२।८ मा पहिलोपटक शैक्षिक एवं धार्मिक कृत्यहरूसहितको भित्तेपात्रो प्रकाशन गरी उल्लिखित शैक्षिक एवं धार्मिक कृत्यहरू गर्ने कार्यको थालनी भएको छ। यसबाट पठन पाठन र व्रत पर्वहरू गर्न गराउन सजिलो भएको छ। प्रत्येक वर्ष प्रकाशन गरी निःशुल्क वितरण गर्ने गरिएको छ।

पुस्तकालय स्थापना

२०४७।१०।१९ मा पाठ्यपुस्तक एवं वैदिक वाङ्मय र विभिन्न पूर्वीय धर्मदर्शन इतिहासका पुस्तकहरूसमेतको व्यवस्था गरी श्रीसाङ्गवेद पुस्तकालय विवेकाश्रम नामकरण गरी पुस्तकालय सञ्चालनार्थ पं. विष्णुभक्त भण्डारीको संयोजकत्वमा सदस्यद्वय आनन्दप्रसाद सिग्देल र दामोदर न्यौपानेसहितको उपसमिति गठन भई पुस्तकालय स्थापना भएको थियो। सोही पुस्तकालयलाई व्यवस्थित गर्ने क्रममा नेपाल सरकारको सङ्घीय बजेटबाट विनियोजित रकम बिर्तामोड न.पा.बाट प्राप्त पुस्तकालय शीर्षकको अनुदान रकमबाट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्याक, कम्प्युटर टेबल निर्माण, ल्यापटप एवं कम्प्युटर, रङ्गीन प्रिन्टर, पुस्तक आदि खरिद गरी इ-लाइब्रेरी जडान गरी पुस्तकालय सञ्चालनमा रहेको छ र हाल सो पुस्तकालयलाई दराजसहित बिर्तामोड ७ गरामनीनिवासी चूडामणि भट्टराई परिवारले चार वेदसहित १८ महापुराण प्रदान गर्नुभएको छ।

श्री महर्षि वैदिक फाउन्डेसनसँग सहकार्य

२०७० साल माघ १ गते श्री महर्षि वैदिक फाउन्डेसन महालक्ष्मीस्थान ललितपुर र श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.सँग फाउन्डेसनका तर्फबाट अध्यक्ष दीपकप्रकाश बाँस्कोटा र विद्यालयका तर्फबाट अध्यक्ष लोकनाथ खनाल र प्र.अ. दामोदर न्यौपानेबिच करारनामा भई दैनिक रुद्राभिषेक भावातीत ध्यान कार्यक्रम सञ्चालन भइरहेको छ। सो कार्यक्रम सञ्चालनका लागि १ जना ध्यान शिक्षक फाउन्डेसनले उपलब्ध गराउने, विद्यालयका तर्फबाट यज्ञ सञ्चालन गर्न एक जना आचार्यको व्यवस्था गर्नुपर्ने र ११ जना विद्यार्थीहरूले ११ रुद्राभिषेक गरी यज्ञ सञ्चालन गरेबापत फाउन्डेसनले रु. ५५,०००।-(पचपन्न हजार) मासिक उपलब्ध गराउने, विद्यालय व्यवस्थापन समितिको निर्णयअनुसार उक्त रकम विद्यार्थी दक्षिणा र गुरुकुल प्रवर्धनको कार्यमा खर्च गर्न सकिने प्रावधान भएकाले सोहीअनुसार खर्च भएको छ।

विशिष्ट महानुभावको आगमन र शुभकामना

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय परिसरमा २०३८।३।३ गते बुधवारका दिन योगी नरहिरनाथको आगमन भएको देखिन्छ। त्यसै गरी २०३८।१०।९ गते शुक्रवारका दिन वरिष्ठ विद्वान् पं. खेमराज केशवशरण आउनुभएको कुरा आश्रमको अभिलेखबाट देखिन्छ। यसरी विशिष्ट महानुभावहरू आउँदा लिखित रूपमा शुभकामना मन्तव्य व्यक्त गर्ने परम्पराअनुसार उहाँहरूबाट शुभकामना प्रदान गरिएको देखिन्छ। त्यसपछि २०४१ साल मङ्सिर १ गतेका दिन आश्रममा आउनुहुने विशिष्ट महानुभावहरूमा तत्कालीन मेची अञ्चलाधीश डा. नरेन्द्रबहादुर थापा, प्र.जि.अ. बाबुराम पौडेल, जिल्ला पञ्चायत सदस्य बुद्धिमान प्रधान, जिल्ला पञ्चायत सदस्य मोहनलाल अग्रवाल, अर्जुनधारा गाउँ पञ्चायतका प्रधानपञ्च भीमबहादुर खड्का तथा चारपाने गाउँ पञ्चायतका प्रधानपञ्च गोबिन्दबहादुर बस्नेत आदि महानुभावहरूद्वारा अनुगमन निरीक्षणका साथै शुभकामना प्रदान गर्नुभएको देखिन्छ।

२०४५ भाद्र २४ गतेका दिन जगदाचार्य श्री पं. तेजनाथ शर्मा (नेपाली बाबा) को नेपाल अधिराज्यको पदयात्राको क्रममा निज नेपाली बाबा र उहाँ र पदयात्रीहरू सबैको रात्रीनिवास श्रीविवेकाश्रम, साङ्गवेद विद्यालयमा भयो। त्यस अवसरमा स्वागत एवं धार्मिक प्रवचनसमेतको आयोजना भएकामा त्यसबाट हौसला प्राप्त भई श्रीसत्यनारायण अग्रवाल, भद्रपुरबाट सत्सङ्ग भवनको निर्माणसमेत भएको थियो।

२०५१ साल चैत्र २ गतेका दिन विश्वहिन्दु परिषद्, भारतका महासचिव अशोक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंघलजीको आश्रम तथा विद्यालय परिसरमा आगमन हुँदा उपस्थित हुने विशिष्ठ महानुभावहरू: टेकनाथ उ. गौतम नवीन अग्रवाल (सावरथिया) बालेश्वर अग्रवाल, विश्वहिन्दु महासङ्घ (अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्र) अच्युतराज रेग्मी, विश्व हिन्दु महासङ्घ, पुष्पलाल निरौला, रामनारायण चौधरी, मोहनलाल अग्रवालसहित ७३ जना महानुभावहरूको उपस्थिति रहेको देखिन्छ।

२०५४ साल वैशाख १४ गतेका दिन काञ्ची कामकोटी पीठका शङ्कराचार्य अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु जयेन्द्र सरस्वती तथा उत्तराधिकारी विजयेन्द्र सरस्वतीको नेपाल भ्रमण क्रममा रात्रि विश्राम तथा परिसरमा विल्ववृक्ष रोपण भएको र सो विल्ववृक्षबाट १२ पत्तासम्मको विल्वपत्र प्राप्त भएको छ।

यसका अतिरिक्त यस आश्रम र विद्यालयमा प्रधानमन्त्री कृष्णप्रसाद भट्टराई, शिक्षा मन्त्री राधाकृष्ण मैनाली, नेतृत्व वर्गमा सुशील कोइराला, केपी शर्मा ओली, पूर्वराजा ज्ञानेन्द्रवीरविक्रम शाह, शेखर कोइराला, नेपाल विश्वविद्यालयका उपकुलपतिलगायत पदाधिकारीहरू, क्षेत्रीय प्रशासक, क्षेत्रीय निर्देशक, प्रमुख सेनानी, प्रमुख जिल्ला अधिकारी, नियन्त्रक, जिल्ला शिक्षा अधिकारी, शङ्कराचार्यहरू, विभिन्न राजनीतिक दलका नेता आदि विशिष्ट महानुभावहरूको समेत आगमन भएको पाइन्छ।

गौशाला सञ्चालन

हाल विद्यालयको सरस्वती मन्दिर भएको स्थानमा २०५३ मा बनेको गौशाला त्यहाँबाट स्थानान्तरण गरी आश्रमपरिसरको दक्षिणपूर्वतर्फ इँटाको गारो लगाई पिल्लर सिस्टममा ढलान गरी गौशाला भवन बनाइएको छ। माथिल्लो तलामा ट्रस राखी जस्ता पाताले छाइएको यस भवनको निर्माण स्व. पितामाता चन्द्रप्रकाश-दुर्गा राईको पुण्यस्मृतिमा काकरभिट्टा निवासी छोराबुहारी डा. शरदचन्द्रप्रकाश राई र पुनम प्रधान राईले निर्माण गरी वि.सं. २०७६ कृष्णजन्माष्टमीका दिन उद्घाटनसाथ आश्रमलाई हस्तान्तरण गरिदिनुभएको हो। यसमा तल्लो तलामा गाई बाँध्ने र माथिल्लो तलामा गाईका लागि आवश्यक चारा राख्ने गरिएको छ। यहाँका गाईको दुध र दुग्धजन्य पदार्थ (दही, मोही आदि) उपलब्ध भएसम्म विद्यार्थी, अतिथि-अभ्यागतसमेतलाई दिने गरिएको छ।

बाटो निर्माण

विद्यालय आश्रम परिसरमा आउने सिधा बाटो नभएकाले पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूसँग माग गर्दा चारपाने-अर्जुनधारा मार्गबाट आश्रम विद्यालय परिसरको उत्तर-पश्चिमतर्फ आइपुग्ने गरी १६ फिट चौडाइ र ३०० फिट लम्बाइको जग्गा बाटाका लागि निःशुल्क प्रदान गर्नुभयो र आश्रमले त्यसमा माटो पुरी हाल बाटो निर्माण गरिएको छ। साथै पुष्पलाल भण्डारीले दक्षिणतिरबाट आश्रममा पस्ने बाटाका लागि ८ धुर र धैरजप्रसाद राजवंशीले शनिश्चरे रोडको दोबाटोबाट गाउँतिर पस्ने बाटाका लागि १० धुर जग्गा निःशुल्क उपलब्ध गराउनुभएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घेराबार र गेट निर्माण

श्रीविवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा.वि. परिसरमा आश्रम तथा विद्यालयको सुरक्षाका निम्ति घेराबारा गरिएको छ। छेउमा भवन नभएको ठाउँमा बिचबिचमा पिल्लर राखी त्यसमा ५ फिट उचाइसम्म इँटाको जोडाई गरी बार बनाइएको छ। यस्तो बार दक्षिणमा ११७ फिट र पश्चिममा १४६ फिटको लम्बाइको रहेको छ। आश्रमपरिसरको पूर्वतर्फको पैनीको डिलमा नगरपालिकासमेतको सहयोगमा ढुङ्गाको जाली बुनी बाँध बनाई सुरक्षाको काम गरिएको छ। आश्रमपरिसरमा प्रवेश गर्न दक्षिणमा एउटा र पश्चिममा एउटा गरी जम्मा दुईवटा गेट निर्माण गरिएका छन्।

आश्रमपरिसरको उत्तरतर्फ विद्यालय भवन रहेको र भवनले नै छेकिई बाँकी रहेको विद्यालयको क्षेत्रमा पूर्व ७७ फिट र दक्षिण ११० फिट लम्बाइको क्षेत्रमा घेराबार गरिएको छ। त्यसमा करिब १०-१० फिटको अन्तरालमा सिमेन्ट ढलानको पिल्लर राखी ६ फिट जति उचाइको इँटाको गारो लगाई त्यसमाथि ग्रिलको बार राखिएको छ भने दक्षिणतर्फको करिब बीच भागमा साढे १५ फिटको मूल गेट बनाई विद्यालय परिसरलाई आश्रम क्षेत्रबाट छुट्याइएको छ।

विविध

२०५३ आश्विन १३ मा चारपाने गा.वि.स.बाट प्राप्त पच्चीस हजार रुपैयाँमा आवासीय छात्रहरूका निमित्त आवश्यक खाट र अन्य फर्निचर निर्माण गर्ने कार्य भएको छ।

२०७१ वैशाख २५ गतेदेखि स्वच्छ खानेपानीको व्यवस्था भएको छ। बिर्तामोड नगरपालिका एवं सहारा नेपालको सहकार्यमा २,७३,४६०।- (दुई लाख त्रिहत्तर हजार चार सय साठी) रुपैयाँको लागतमा ५०० लिटरको ट्याङ्कीसहितको फिल्टर मेसिन जडान गरिएको छ। यसका साथै आश्रम तथा विद्यालयलाई विभिन्न संस्था तथा महानुभावहरूले विभिन्न क्षेत्रमा सहयोग पुर्याउनुभएको छ। *(विवरण परिशिष्ट १३ मा दिइएको छ।)* साथै विभिन्न महानुभावहरूले आश्रम परिसरमा कलधाराहरू समेत निर्माण गरिदिनुभएको छ। *(विवरण परिशिष्ट ९ मा दिइएको छ)*

२०६९ भाद्र १ गतेबाट इन्टरनेट सहितको कक्षाकोठा निर्माण भई सञ्चालनमा रहेको छ भने २०७३।३।१५ गतेको निर्णयले विद्यालयबाट कालोपाटी हटाई ८ थान सेतोपाटीको प्रयोग गरिएको छ।

२०७१ पौष ५ गते वर्तमानसम्म प्राच्य परम्पराअनुसार तिथि अनुसार अष्टमी प्रतिपदामा अनध्याय मानी बिदा गर्ने गरिएकामा नेपाल सरकारको बिदासँग मिल्नुपर्ने भएकाले वेदाङ्गका विषयहरूमात्र अष्टमी र प्रतिपदामा पठनपाठन नगर्ने गरी शनिबारका दिन बिदा गर्ने निर्णय गरिएको छ। यस आश्रमका अध्यक्ष पं. टेकनाथ उपाध्याय गौतम र वरिष्ठ सदस्य केदारनाथ खतिवडालाई ५२ औं शुभजन्मोत्सवमा श्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहदेवबाट गोर्खा दक्षिण बाहु (चतुर्थ) मानपदवि प्रदान गरिएको थियो। ज्योतिष्पीठाधीश्वर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(बद्रीकाश्रम) का जगद्गुरु शङ्कराचार्य माधवाश्रम महाराजलाई आश्रम विद्यालयद्वारा २०५४।८।१७ गते अभिनन्दन गरिएको छ।

आश्रमको लेखा व्यवस्थापन र कर्मचारी

श्री विवेकाश्रमको लेखा व्यवस्थापनका लागि छुट्टै लेखा समिति रहेको छ भने आश्रम व्यवस्थापनका लागि पनि छुट्टै कर्मचारीको नियुक्ति गरिएको छ। *(नामावली परिशिष्ट १४ मा छ)*

दीप प्रज्वलनका साथ स्वर्णमहोत्सव शुभारम्भ

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.को ५० वर्ष पुगेको अवसरमा एक वर्षभरि नै संस्थाको स्वर्णमहोत्सव मनाउने निर्णय भएअनुरूप विभिन्न महानुभावहरूबाट रु. ५१,००० सम्म रकम उपलब्ध गराई दीप प्रज्वलनसाथ स्वर्णमहोत्सव वर्षको शुभारम्भ भएको थियो। *(महानुभावहरूको नामावली परिशिष्ट १५ मा दिइएको छ)*

विभिन्न कार्यक्षेत्रमा योगदान पुर्याउने महानुभावहरू

यस साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय विवेकाश्रमबाट अध्ययन समाप्त गरी विभिन्न महानुभावहरूले रोजगारका विभिन्न कार्यक्षेत्रमा गई योगदान पुर्याउनुभएको छ। *(नामावली परिशिष्ट १६ मा दिइएको छ।)*

प्रतिमा निर्माण तथा स्मारिका प्रकाशन

श्री १०८ विवेकानन्द गुरुको प्रतिमा निर्माण तथा स्मारिका प्रकाशन गर्न विभिन्न महानुभावहरूले आर्थिक सहयोग गर्नुभएको छ। *(उक्त महानुभावहरूको नामावली परिशिष्ट १७ मा दिइएको छ।)*

स्वर्णमहोत्सव स्मारिका सम्पादन समिति

२०७७ पौष २३ गतेका दिन श्री विवेकाश्रम तथा श्री साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. को स्वर्णमहोत्सव स्मारिका २०७८ प्रकाशन गर्न निम्न महानुभाव रहेको समिति गठन गरिएको हो।

संयोजकः प्रा. भवानीप्रसाद खतिवडा (नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय)
सदस्यः श्री अम्बिकाप्रसाद रेग्मी (पूर्व-सहसचिव, नेपाल सरकार)
सदस्यः प्रा.डा. काशीनाथ न्यौपाने (नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय)
सदस्यः डा. कर्णाखर खतिवडा (सहप्राध्यापक, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर)
सदस्यः आचार्य डिल्लीराम गौतम (प्राध्यापक, काठमाडौं स्कुल अफ ल, भक्तपुर)
सदस्यः आचार्य छन्दुराम भण्डारी (अध्यक्ष, साङ्गवेद.संस्कृत.मा.वि.)
सदस्यः आचार्य दामोदर न्यौपाने (प्रधान अध्यापक, साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम र यसको भौतिक संरचना

✍ अम्बिकाप्रसाद रेग्मी

परिचय

वि.सं. २०२८ सालमा एउटा सानो कुटीबाट सुरु भएको यस विवेकाश्रमले अहिलेसम्म आइपुग्दा भौतिक संरचनामा निकै ठूलो फड्को मारेको छ। सुन्ठीको सानो कुटीको संरचनाबाट सुरु भएको भौतिक संरचना अहिले सिमेन्टको भव्य संरचनामा पुगेको छ। पहिलेको सुन्ठीको संरचनासँग प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपमा अहिलेको भव्य भौतिक संरचनाको पनि अन्योन्याश्रित सम्बन्ध भएको र पहिलेका भौतिक संरचनाको समेत चर्चा गर्नु सान्दर्भिक हुने भएकाले पहिलेका संरचनाहरूको पनि क्रमिक चर्चा गर्ने प्रयास गरिएको छ।

फुस्को कुटी र विद्यालय

स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजले विक्रम संवत् २०२८ मङ्सिर १६ गते बिहान स्थानीय पण्डित नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको जग्गामा आई त्यस जग्गामा कुटी बनाउने आशय व्यक्त गर्दा नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले पनि त्यसका लागि आवश्यक जग्गा उपलब्ध गराउने वचन दिनुभयो र स्वामीजीले तत्कालै सो जग्गामा दाहिना परिक्रमा गर्दै रेखाङ्कन गरिदिई अहिलेलाई यति भए पुग्छ भन्नुभयो। त्यो जग्गा करिब १५ धुर थियो र नन्दिकेश्वरले त्यो उपलब्ध गराउनुभयो। सुरुमा त्यस जग्गामा पाटा काडी राखेको लामो सुन्ठीको टुप्पो बाँधी फेद फिंजारेर (केही दिन), त्यसपछि स्वामीजीलाई गाउँलेहरूले बाँसका खाँबा, खरको छानो र सुन्ठी-कन्चीको बारबेर भएको सानो कुटी (छाप्रे कुटी) र वर्णमाला, चण्डी, रुद्री, वेद आदि पढ्ने विद्यार्थीहरू बस्नका लागि त्यस्तै सानो छाप्रोसमेत निर्माण गरिदिए। विद्यार्थीहरू यसै छाप्रोमा बसेर दैनिक नित्यकर्म, पूजा, हवन र अध्ययनसमेत गर्ने गर्दथे भने स्थानीय बालबालिकासमेत वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदिको अध्ययनका लागि यहाँ आउने गर्दथे।

त्यस बेला छुट्टै विद्यालय भवन थिएन, कुटीमा वा बस्न बनाइएको छाप्रोमा वा खुला ठाउँ (आँगन आदि) मा बसेर पढ्नुपर्थ्यो। गुरुकुलीय परम्परामा गुरु कुटी वा आश्रममा

✍ *पूर्वसहसचिव, नेपाल सरकार*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बस्ने र शिष्यहरू पनि गुरुका कुटी वा आश्रममा गई गुरुकै सान्निध्यमा रहेर पढ्नुपर्ने, पूजा, हवन आदि गर्नुपर्ने भएकाले आश्रम र विद्यालयको स्पष्ट विभेद कमै हुन्छ। सोही आधारमा विवेकाश्रममा पनि आश्रम र विद्यालयको स्पष्ट विभेद पछिसम्मै थिएन।

स्वामीजी २०२९ भदौ २ गते यहाँबाट जानुभएपछि पुष्पलाल तिम्सिनाले स्वयंसेवकका रूपमा कुटीमा पूजाआजा, हवन र विद्यार्थीहरूलाई वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदिको अध्यापनमा निरन्तरता दिइरहनुभयो।

कुटीको व्यवस्थापन

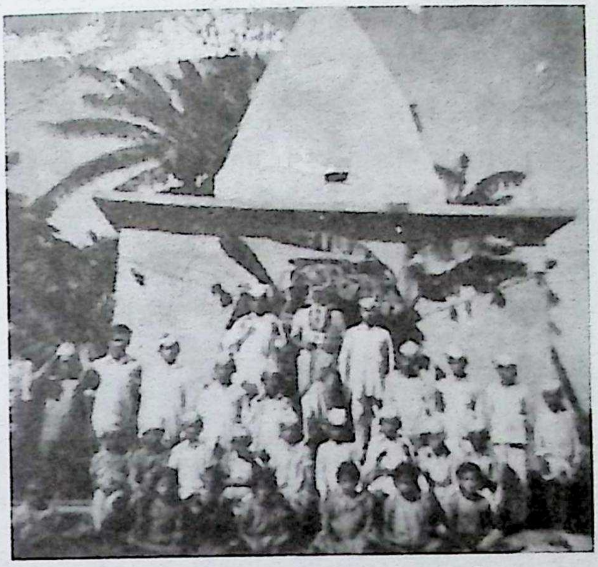

तत्कालीन मन्दिर र विद्यालय परिवार

अहिले रामजानकी मन्दिर बनेकै ठाउँमा रहेको तत्कालीन सानो फुस्को कुटीलाई केही समयपछि चार सुरमा सखुवाका चारवटा खाँबा गाडेर मन्दिर आकारमा खरको छाना छाई बाँसका भाटा बुनेर बारबेर गरी भुइँमा २ फुटजति माटो पुरी अलि व्यवस्थित बनाइएको थियो। तर केही समयपछि त्यो कुटी जीर्ण हुँदै गयो र त्यसलाई भत्काई त्यसै ठाउँमा इँटाको जोडाइमा सिमेन्टको ढलान गरी एकतले मन्दिर बनाइयो। लम्बाइ-चौडाइ करिब १६-१६ रहेको सो मन्दिरको चारैतर्फ छानो नभएको ३ फिट अग्लो ५ फिट चौडाइको पेटी (बरन्डा) थियो। पूर्व र दक्षिणतर्फ ढोका र पश्चिममा झ्याल रहेको सो मन्दिरको भित्रपट्टि भने बीचमा तलतिर अलि सानो हुँदै गएको १ फुट जति गहिरो र करिब २-२ फिट वर्गाकारको हवनकुण्ड थियो। उत्तरतर्फको पूर्वी कुनामा विष्णु पाञ्चायन पूजा गर्ने अनुष्ठान, बीचमा शिवलिङ्ग र उत्तरपश्चिम कोणमा विवेकानन्द पुरी महाराजका पादुका राखिएका थिए।

विद्यालयको औपचारिक थालनी

स्थानीय विद्यार्थीहरूबाट वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदिको अध्ययन तथा कुटीमा सामान्य पूजाआजामा निरन्तरता भइरहेकै अवस्थामा २०३३ वैशाख ७ मा विद्यालयको सञ्चालक समिति गठन गरी समितिले मासिक १०० रुपैयाँ दिने गरी भानुभक्त अधिकारीलाई शिक्षकका रूपमा नियुक्त गरी अध्यापन कार्यलाई व्यवस्थित गर्ने कामको औपचारिक थालनीसमेत गरियो।

स्थानीयहरूद्वारा बाँसका खाँबा, खरको छानो र सुन्ठी-कन्चीले बारबेर पारी दक्षिणतर्फबाट उत्तरतर्फ फर्काई दुई कोठाको फुस्को विद्यालयसमेत तयार गरियो। तलबाट भुइँको चिसो नआओस् भनी करिब १ फुटजति माटो पुरिएको त्यस विद्यालयको दुइटा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोठामध्येको पूर्वतर्फको एउटा कोठामा एल आकारमा विद्यार्थीका लागि बाँसका चिमको लामो चाङ बनाइएको थियो, विद्यार्थीहरू दिनभर पलेंटी कसेर त्यहीं वर्णमाला, चण्डी, रुद्री, वेद आदि पढ्थे भने बेलुकी पनि त्यहीं ओछ्यान लगाएर सुत्ने गर्दथे। त्यसै छाप्रोको पश्चिमतर्फको अर्को कोठा बीचमा बारेर शिक्षक भानुभक्त अधिकारीका लागि अर्को सानो कोठासमेत बनाइएको थियो। त्यसै भवनको उत्तरतर्फ ठ्याक्कै अगाडि बीचमा अलिकति ठाउँ छाडी दक्षिणतर्फ फर्काएर विद्यार्थीका लागि त्यस्तै कच्ची भान्साघर पनि बनाइएको थियो, जसमा लहरै चुला बनाइएका थिए र आवासीय विद्यार्थीहरू तिनै चुलामा खाना पकाएर खाने गर्दथे।

शिक्षक भानुभक्त अधिकारीले २०३३ फागुन १ पछि विद्यालय छाड्नुभयो भने शिक्षकका रूपमा विष्णुभक्त भण्डारी नियुक्त हुनुभयो। मन्दिरका दक्षिणतर्फ पं. नन्दिकेशरको जग्गामा जनसहयोगमा बाँसका खाँबा गाडेर खरले छाई र सुन्ठी-कन्चीले बारबेर गरेको दुईकोठे कच्ची आवास बनाई उहाँ त्यहाँ बस्नुभएको थियो।

कच्ची विद्यालय

विद्यालयको पठन-पाठन अलि व्यवस्थित हुँदै गएपछि विद्यार्थी सङ्ख्या बढ्दै गयो, विद्यालय भवन पनि सानो र जीर्ण हुँदै गएपछि २०३४-३५ सालतिर वर्तमान जग्गाको उत्तरतर्फको समेत केही जग्गासमेत थप गरी त्यहाँ अर्को विद्यालय भवन निर्माण गरियो। उत्तरबाट दक्षिणतर्फ फर्काई पूर्व-पश्चिम करिब ५० फिट लामो आकारमा बाँसका खाँबा गाडी खरको छाना राखी विद्यालय बनाइएको थियो। तलबाट भुइँको चिसो नआओस् भनी २ फिटजति अग्लो बनाइएको भवनको टाँडमा बाकल छापी त्यसमाथि माटो छापिएको थियो। पूर्व, उत्तर र पश्चिम सबै तथा दक्षिण-पश्चिमको १० फिटजतिमा बीचबीचमा ससाना झ्यालका प्वाल छाडी सुन्ठी-कन्चीले बारिएको बारमा भित्रपट्टिबाट परालका टुक्रा वा भुस मिसाइएको गोबर-माटोले लिपिएको थियो भने दक्षिणतर्फको बाँकी भागमा बाँसका भाटाले आधामात्र बार बारिएको थियो। टाँडमाथि चढ्नका लागि काठका मुड्का ठड्याएर लिस्नो बनाइएको थियो। माटो छापेर बनाइएकाले यसको भुइँमा विद्यार्थी आफैंले आलोपालो गोबरले लिपपोत पनि गर्नुपर्थ्यो। राति आआफ्नै गुन्द्री, राडीमा बिछ्यौना ओछ्याएर भित्तापट्टि सिरान पारी लहरै विद्यार्थीहरू सुत्नुपर्थ्यो। यो विद्यालय बनेपछि पुरानो विद्यालय तत्काल भत्काइयो भने भान्साघरचाहिँ यसै विद्यालयको पूर्वतर्फ अर्को भान्साघर नबनुन्जेलसम्म प्रयोग गरिएको थियो।

काठको विद्यालय

वि.सं. २०३७ सालमा ठूलो हुरीबतास आयो। त्यसले यस विद्यालय भवनको छानो, बार उडायो, भवन भत्कियो, पठन-पाठनमा असजिलो भयो र अब अलि स्थायी संरचनाको आवश्यकता महसुस भयो। त्यसका लागि आर्थिक अभाव थियो तापनि २०३७ साल चैत ७ गते समितिको बैठक बसी मुष्टिदानबाट आश्रम चलेझैं प्रत्येक घरले केही न केही

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहयोग गरी विद्यालय भवन बनाउने दृढ सङ्कल्पका साथ प्रक्रिया अघि बढ्यो। कसैले खाँबा, कसैले केही फल्याक, कसैले काठका बटम, कसैले जस्ता पाता आदि सङ्कलन गरेर हाल कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर र पुजारी आवाससमेत भएको ठाउँमा पूर्वतर्फ फर्केको करिब ४० फिट लामो र १२ फिट चौडाइको भवनमा उत्तरतिर जोडेर १० फिट पूर्वतिर निकालेर (एल आकारमा) अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृतिको काठको विद्यालय भवन निर्माण भयो।

करिब ४० फिट लामो यस भवनमा प्रत्येक १०-१० फिटमा सखुवाका खाँबा र कैंची-बटम गरेर जस्ता पाताले छाना छाइएको थियो भने भुईंमा टाँड बनाउन काठका मुड्का राखेर त्यसमाथि बटम राखी फल्याक नै छापिएको थियो। कोठाको बीचमा प्रत्येक १०-१० फिटको दूरीमा दक्षिणमा १, पश्चिममा ४, उत्तरमा २, पूर्वमा १ वटा ४-३ का झ्याल र पूर्वमा ३, दक्षिणमा १ वटा ७-३ का ढोका राखेर अन्य ठाउँमा फल्याक ठोकेर बारिएको थियो।

तत्कालीन भान्साघर

एल आकारपट्टिको भागमा जान ढोका राखी बाँकी भित्री भागमा समेत फल्याकले बारिएको थियो। टाँडमाथि चढ्न प्रत्येक ढोकामा फल्याकका सिंढी बनाइएका थिए। यस भवनमा पनि दिनभरि पढ्ने र राति आआफ्नै गुन्द्री, राडीमा बिछ्यौना ओछ्याएर भित्तापट्टि सिरान पारी लहरै विद्यार्थीहरू सुत्नुपर्थ्यो भने आफू सुत्ने गरेको ठाउँकै करिब सोझै हुने गरी झ्यालका दायाँ-बायाँ खाँबापट्टि पारेर डोरी टाँगी त्यसैमा बिछ्यौना र अन्य लाउने लुगासमेत राख्नुपर्थ्यो। पुस्तक, कपी आदि भने त्यसकै अलि माथि काठका छेकल झुन्ड्याई त्यसमै राख्ने गरिन्थ्यो। विद्यार्थीका लागि त्यसै भवनको पूर्वतर्फ र दक्षिणतर्फ फर्काएर करिब लम्बाइ ३० फिट र चौडाइ २० फिट (५ फिटको बरन्डासमेत) भएको, माटाको जोडाइको इँटाको गारो बनाई कैचीबटम गरी जस्ता पाताले छाएको कच्ची भान्साघर बनाइएको थियो। दक्षिणतर्फ दुईवटा ढोका भएको यस भान्साघरको भित्र पश्चिम, उत्तर र पूर्वमा लहरै चुला बनाइएका थिए, जसमा विद्यार्थीहरू खाना पकाएर खाने गर्दथे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्तमान संरचना

माथि उल्लेख भएको संरचनाको पृष्ठभूमिमा हालको भव्य भौतिक संरचना निर्माण भएको हो। पृष्ठभूमिका संरचनाहरू हाल नभए पनि सम्झनाका आधारमा तिनको उल्लेख गरिएको छ भने वर्तमानका संरचना भौतिक रूपमै हेर्न सकिने अवस्थामा रहेका छन्। वर्तमान भौतिक संरचनाहरूलाई निम्नानुसार उल्लेख गरी स्पष्ट पार्ने प्रयास गरिएको छ –

१.	रुद्र सत्सङ्ग भवन	१३.	विद्यालय भवन ३
२.	विष्णु पाञ्चायन मन्दिर	१४.	धान्याचल
३.	यज्ञशाला	१५.	महात्मा कुटी
४.	स्वर्णदीप मण्डप	१६.	भण्डार कक्ष
५.	रामजानकी मन्दिर	१७.	गौशाला
६.	कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर	१८.	गायत्री कुटी
७.	पुजारी आवास	१९.	रुद्राभिषेक भवन
८.	विद्यालय भवन १	२०.	सरस्वती मन्दिर
९.	विद्यालय भवन २	२१	तटबन्ध
१०.	छात्रावास	२२	इनार
११	चारकोठे भवन	२३	पानीको धारा
१२	पाकशाला र चुलो	२४	घेराबारा, गेट निर्माण र पालेघर

१.रुद्र सत्सङ्ग भवन

आश्रमपरिसरको दक्षिण-पश्चिम कोणमा पूर्व-पश्चिमको लम्बाइमा उत्तरतर्फ फर्काई बनाइएको यो भवन काठमाडौं, कलङ्कीनिवासी श्री वासुदेव र निलु केसी (श्रीमान् र श्रीमती) ले हजुरबुवा श्री रुद्रबहादुर केसीको पुण्यस्मृतिमा निर्माण गरिदिनुभएको हो। इँटाको गारो लगाई बनाइएको यस भवनको पूर्वतर्फको आधा भागको छत सिमेन्टबाट ढलान गरिएको छ भने बाँकी आधा भागमा ट्रस राखी जस्ता पाताले छाइएको छ। लम्बाइ १०५ र चौडाइ ५१ फिट तथा उत्तरतर्फ बरन्डा ५ फिट रहेको यस भवनमा ७ फिट लम्बाइ र ५ फिट उचाइका झ्याल पूर्वमा १ र उत्तरमा ५ वटा राखिएका छन् भने उत्तरमा २ वटा ढोकासमेत रहेका छन्।

पूर्वतर्फ करिब १० फिट लम्बाइको एउटा र उत्तरतर्फ ६ फिट लम्बाइका एउटा चेनगेट रहेको यस भवनको चारैतर्फ ((बिममुनि) डेढ फिट लम्बाइका १९ वटा गोला प्वाल राखिएका छन्। यसको भित्रपट्टि कुनै कोठा बारिएको छैन, पूरै क्षेत्र हलका रूपमा रहेको छ। यसको माथि छतमा जानका लागि बाहिरको पूर्व-दक्षिणतर्फको कुनाबाट ८ फिट चौडाइको भर्याङ राखिएको छ। यस ठाउँमा पहिले निर्माण भएको, ४५-२५ फिट जति लम्बाइ-चौडाइको जस्ता पाताले छाएको र इँटाको बारबेर भएको जीर्ण सभाहललाई भत्काई सोही ठाउँमा २०७३ सालमा सुरु गरी २०७४ को माघ ८ गते वसन्त पञ्चमीका दिन यो भवन निर्माण सम्पन्न भएको हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. विष्णु पाञ्चायन मन्दिर

रुद्र सत्सङ्ग भवनकै पूर्वतिरको जग्गामा दक्षिणतर्फ १० फिट जति छाडी विष्णु पाञ्चायन मन्दिर बनाइएको छ। यो मन्दिर पनि कलङ्कीनिवासी श्री वासुदेव र निलु केसी (श्रीमान्/श्रीमती) ले नै निर्माण गरिदिनुभएको हो। गर्भगृह (बीच मन्दिरको भाग) मा ईँटाको गारो लगाई पिल्लर सिस्टममा बनेको यस मन्दिरको गर्भगृहको लम्बाइ-चौडाइ १४-१४ फिट रहेको छ। यसमा पूर्व र पश्चिममा दुई वटा ढोका रहेको भए पनि पूर्वतर्फको एउटा ढोका खोल्न मिल्ने अवस्थामा छैन। यसमा पूर्वबाट पश्चिम फर्काई विष्णु पाञ्चायनका धातुमय मूर्तिहरू राखिएका छन्। यसको बरन्डासमेतको लम्बाइ-चौडाइ पूर्व-पश्चिम ३२ फिट र उत्तर दक्षिण २९ फिट रहेको छ भने पिल्लरबाट पिल्लरको लम्बाइ (पूर्व-पश्चिम) २२ फिट र चौडाइ (उत्तर-दक्षिण) २० फिट रहेको छ। ढलान गरी शिखर शैलीको गुम्बज आकारमा निर्माण गरिएको यस मन्दिरको भित्तामा, पिल्लरमा र माथि गुम्बजमा समेत विभिन्न देवीदेवताका मूर्तिआकृति बनाइएका छन्। गर्भगृहको भित्र-बाहिरको भित्तामा साढे ४ फिट उचाइसम्म टायल टाँसिएको छ भने बरन्डामा समेत टायल ओछ्याइएको छ।

३. यज्ञशाला

विष्णु पाञ्चायन मन्दिरको ठीक उत्तरतर्फ समानान्तर रूपमा यज्ञशाला रहेको छ। चारैतर्फ प्रदक्षिणा पथ (बरन्डा) रहेको यस यज्ञशालाको लम्बाइ-चौडाइ पिल्लरबाट पिल्लरमा साढे १८ फिट र बरन्डासमेत २७ फिट रहेको छ। टुँडालसमेत राखी प्यागोडा शैलीमा निर्मित यस यज्ञशालाको तीनतले छानो पित्तलको पाताले छाइएको छ। ४ फिट माथिबाट चारैतिर ५-५ का ग्रिल जाली र पूर्व-पश्चिम दुईवटा ढोका रहेको यस यज्ञशालाको बाहिरी भाग ४ फिट उचाइसम्म टायल टाँसिएको छ भने भित्री भाग २ फिट जति उठाई भुइँमा मार्बल छापिएको र त्यसको बीच भागमा हवनकुण्ड रहेको छ। ३-३ फिटको वर्गाकारको हवनकुण्ड करिब २ फिट जति गहिरो छ भने त्यसको तीन तहको परिधि ६-६ फिटको रहेको छ। यज्ञशालाको भित्री भागको आग्नेय कोणमा गणेश, नैर्ऋत्य कोणमा सूर्य, वायव्य कोणमा देवी, ईशान कोणमा शिव तथा उत्तरतर्फ बीचमा विष्णुको ढलौटको मूर्ति रहेका छन्। यसै भवनमा २०५३ पुस ९ गते पूर्णिमाबाट आजसम्म अखण्डदीप प्रज्वलित भइरहेको छ। पुरानो यज्ञशाला भत्काएर सोही ठाउँको केही दक्षिणमा सारी जनसहभागितामा बनाइएको यो यज्ञशाला वि.सं. २०७६ मा सुरु भई २०७७ मा सम्पन्न भएको हो।

४. स्वर्णदीप मण्डप

यज्ञशालाकै ठीक उत्तरतर्फ यज्ञशालाकै समानान्तर रूपमा स्वर्णदीप मण्डप रहेको छ। भुइँबाट अढाइ फिट उठाई लम्बाइ साढे ११ फिट र चौडाइ ११ फिटको करिब वर्गाकार स्वरूपमा निर्माण गरिएको यस मण्डपको चार सुरमा खाँबा राखी जस्ता पाताले छाइएको छ। पूर्व र पश्चिममा ढोका राखी फलामको १ फिटको रेलिङले बारिएको र बाँकी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खुला यस मण्डपको बीच भागमा हावा नलाग्ने गरी बनाइएको पेटिकामा स्वर्णदीप प्रज्वलन गरिएको छ।

५. रामजानकी मन्दिर

रुद्र सत्सङ्ग भवनको ३० फिट उत्तरतर्फ करिब बीच भागमा रामजानकी मन्दिर रहेको छ। पूर्वतर्फ फर्किएको यो मन्दिर २०२८ सालदेखिको कुटी (मन्दिर) रहेकै ठाउँमा पहिलेको मन्दिर भत्काई बनाइएको हो। इँटाको गारो लगाई पिल्लर सिस्टममा सिमेन्टको ढलान भएको, करिब ५० फिट अग्लो, तले शैलीको यस मन्दिरको छाना तीन तहमा निर्माण गरिएको छ। जनसहयोगमा निर्मित यस मन्दिरको पूर्व र दक्षिणमा ढोका रहेको र भित्री भागको पश्चिमतर्फको पूरै भागमा पूर्व फर्काएर श्रीराम, लक्ष्मण, सीता र हनुमान्का मूर्तिहरू स्थापित गरिएका छन्। उत्तरतर्फको बाँकी भागमा श्री विवेकानन्दले स्थापना गरेको शिवलिङ्ग एवं श्री विवेकानन्द गुरुका पादुका रहेका छन्। यस मन्दिरको गर्भगृहको लम्बाइ-चौडाइ पुगनपुग ११-११ फिटको रहेको छ भने बाहिरी भाग पिल्लरबाट पिल्लरको पूर्व-पश्चिम लम्बाइ २५ फिट १० इन्च र उत्तर-दक्षिण चौडाइ साढे २१ फिटको रहेको छ। यस मन्दिरको पूर्वतर्फ १२ फिट लामो र साढे १० फिट चौडाइको बरन्डा र त्यसको अन्तिममा सिंढी रहेको छ। भुइँबाट ३ फिट उचाइको आधार पेटी (प्रदक्षिणापथ) र बरन्डामा गिटीसिमेन्ट राखी घोटेर चिल्याइएको छ भने गर्भगृहको बाहिरी र भित्री भित्तामा ढोकामाथिसम्म टायल टाँसिएको छ। यस मन्दिरमा हल्का गेरुवा रङ र आवश्यकताअनुसार अन्य रङसमेत लगाई आकर्षक बनाइएको छ।

६. कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर

रामजानकी मन्दिरको उत्तरतर्फ समानान्तर रूपमा कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर रहेको छ। बिर्तामोडनिवासी श्री च्यवनलाल अग्रवाल, उनका छोराबुहारी श्री हरिशङ्कर अग्रवाल र श्री विमला अग्रवालले निर्माण गरिदिनुभएको यस मन्दिरको बाहिरी प्रदक्षिणा पथ (बरन्डा) समेतको लम्बाइ-चौडाइ (दुवै) २६ फिट ८ इन्चको रहेको छ भने गर्भगृहको लम्बाइ-चौडाइ १२-१२ फिटको रहेको छ। गर्भगृहको चारैपट्टि ढोका राखिएको यस मन्दिरमा बीच भागमा शिवको मूर्ति राखी कुनाकुनामा शिव पाञ्चायनका अन्य देवीदेवताका मूर्ति राखिएका छन्। करिब ४५ फिट अग्लो, तले शैलीको यस मन्दिरमा दुईतहको छाना रहेको छ भने गर्भगृहमा इँटाको गारो लगाई सिमेन्टले ढलान गरिएको छ। प्रदक्षिणा पथबाट पूर्वतर्फ १२ फिट बाहिर निस्किएको, १४ फिट ९ इन्च फैलिएको बरन्डा रहेको र त्यसको अन्तिममा सिंढी रहेको छ। १२-१२ फिटको पिल्लरमा कलात्मक सज्जा र देवीदेवताका आकृति रहेका छन्। तीन फिट उचाइको आधार पेटी (प्रदक्षिणापथ) र बरन्डामा समेत गिटीसिमेन्ट राखी घोटेर चिल्याइएको छ भने गर्भगृहको ढोकामाथिसम्मको बाहिरी र भित्री भित्तामा टायल राखिएको छ। यस मन्दिरमा हल्का गेरुवा रङ र आवश्यकताअनुसार अन्य रङसमेत लगाइएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७. पुजारी आवास गृह

कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिरमा पूजा गर्ने प्रमुख पुजारीको आवासका लागि उक्त मन्दिरको उत्तरतर्फको जमिनमा एकतले आवास गृह बनाइएको छ। पूर्वतर्फ फर्काएर इँटाको गारो लगाई सिमेन्टले छत ढलान गरी बनाइएको यस आवास गृहमा जम्मा ३ वटा कोठा रहेका छन्।

८. विद्यालय भवन १

आश्रम परिसरको उत्तरतर्फको जग्गामा विद्यालय रहेको छ। वि.सं. २०४६ सालमा जिल्ला शिक्षा कार्यालयबाट कक्षा ८ को स्वीकृति पाएको श्री साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय परिसरकै विभिन्न स्थानमा सञ्चालन हुँदै हाल यस स्थानमा केन्द्रित भएको छ। उत्तरतर्फबाट दक्षिणतर्फ फर्किएको विद्यालयको मुख्य भवन (भवन १) मुख्यतः तीन तलाको रहेको र छतमा ट्रस राखी जस्ता पाताले छाएर एक तला थप गरी चारतले बनाइएको छ। यसको लम्बाइ (पूर्व-पश्चिम) ८४ फिट र चौडाइ (बरन्डासमेत) ३२ फिट रहेको छ। इँटाको गारो लगाई सिमेन्टको ढलान भएको यस भवनको बीच भागबाट भर्याङ राखिएको छ। तत्कालीन जिल्ला शिक्षा कार्यालयसमेतको अनुदान लागतमा बनेको यस भवनमा जम्मा १९ वटा कोठा र माथि २ वटा हल रहेका छन्।

९. विद्यालय भवन २

विद्यालयको मुख्य भवनको परिसरभित्रै पश्चिम-दक्षिणतर्फको जग्गामा पूर्वतर्फ फर्किएको अर्को विद्यालय भवन रहेको छ। इँटाको गारो लगाई ट्रसमा जस्ता पाताले छाइएको यस भवनको लम्बाइ साढे ४८ फिट र चौडाइ २० फिट (५ फिटको लाछीबाहेक) रहेको छ। वि.सं. २०६२ तिर बनेको यस भवनमा कोठा बारिएको छैन, पूरै भवन हलका रूपमा रहेको छ। भवनको दायाँ-बायाँको खाली ठाउँलाई समेत समेटी त्यहाँ साना-साना कोठा भने बनाइएका छन्।

१०. छात्रावास

विद्यालय परिसरभित्रैको वायव्य कोणमा विद्यालय भवन २ कै करिब समानान्तर गरी ४२-१५ फिट लम्बाइ-चौडाइको भवन बनाइएको छ। इँटाको गारो लगाई पिल्लर सिस्टममा ढलान गरी बनाइएको तीनतले यस भवनको भुइँतला सबैमा शौचालय निर्माण गरिएको छ भने त्यसभन्दा माथिका दुई तलामा बीचमा नबारीकनै पूरै हलमा छात्रावास बनाइएको छ। यो भवन र विद्यालय भवन १ को बीचको खाली जग्गामा इँटाको गारो लगाई जस्ता पाताको छाना लगाई २२-१४ फिट लम्बाइ-चौडाइको स्नानागार बनाइएको छ।

११. चारकोठे भवन

आश्रम परिसरकै पूर्वतर्फ झन्डै बीच भागमा पश्चिमतर्फ फर्काएर वि.सं. २०४४ मा थालनी गरी विद्यालयको कक्षाकोठा प्रयोजनका लागि चार कोठाको एकतले भवन बनाइएको छ। इँटामा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिमेन्टको जोडाइ र स्ल्याब ढलान गरी बनाइएको यस भवनको लम्बाइ ६१ फिट र चौडाइ २० फिट (६ फिट बरन्डासमेत) रहेको छ। प्रत्येक कोठामा फरक-फरक महानुभावहरूको योगदान रहेको छ। उत्तरतर्फका दुइटा कोठाको निर्माणमा तत्कालीन काँकडभिट्टा, भन्सार कार्यालयका प्रमुख कालिकाप्रसाद रिमालको विशेष सहयोग र उहाँकै सक्रियतामा विभिन्न महानुभावको योगदान रहेको छ। त्यस्तै अर्को कोठा नरनाथ घिमिरे, जीवनाथ बराल, लोकनाथ खनाल र वृजमोहन गट्टानीले निर्माण गरिदिनुभएको हो भने दक्षिणतर्फको छेउको कोठा रत्नबहादुर, लक्ष्मणबहादुर र तुङ्गबहादुर बस्नेत तीन दाजुभाइले निर्माण गरिदिनुभएको हो। धेरै वर्षसम्म यसै भवनमा विद्यालयको कक्षा र छात्रावास सञ्चालनसमेत सञ्चालन भएको थियो भने हाल उक्त भवन जीर्ण भई भत्काइसकिएको छ।

१२. पाकशाला र चुलो

यसै भवनको पछाडिपट्टि (पूर्वतिर) यसै भवनसँग जोडेर जस्ता पाताले छाना छाई इँटाको घेराबारा गरी २२ फिट चौडाइ र ६० फिट लम्बाइको अस्थायी प्रकृतिको पाकशाला र यसको पनि पछाडिपट्टि (पूर्वतिर) यसैसँग जोडेर अझ अर्को ९ फिट चौडाइ र २३ फिट लम्बाइको खाना पकाउने कोठा बनाइएको छ। खाना पकाउने कोठामा चुलोमा खाना पकाई पाकशालामा खाना खाने व्यवस्था मिलाइएको छ। यस पाकशालामा खाना बनाउनका लागि छुट्टै जनशक्तिको व्यवस्था गरी छात्रावासमा बस्ने विद्यार्थीलाई सामूहिक रूपमा खाना खुवाउने गरिन्छ। यसको पश्चिमतर्फ करिब ४० फिट लामो र ६ फिट चौडाइको प्यासेज पनि रहेको छ।

१३. विद्यालय भवन ३

चारकोठे भवन र पाकशालाको दक्षिणमा पश्चिम फर्काएर ७० फिट लम्बाइ र २२ फिट चौडाइ (बरन्डा ५ फिटसमेत) मा बनाइएको दुईतले भवन पहिलेको विद्यालय भवन हो। प्रत्येक तलामा ५-५ कोठा रहेको यस भवनको भुइँ तलाका ५ कोठा सुन्दरसिंह राजवंशी (भद्रपुर), गोपाल राय संघई (काठमाडौं), लक्ष्मीदेवी-नवीन अग्रवाल साबरथिया (काठमाडौं), रामप्रसाद जोडिवाल (भद्रपुर) र किसनलाल कन्दोई (भद्रपुर) ले आआफ्ना पितृहरूको पुण्यस्मृतिमा २०५१-०५२ मा निर्माण गरिदिनुभएको हो भने दोस्रो तला २०६७-६८ मा सम्पन्न भएको हो। तत्कालीन जिल्ला शिक्षा कार्यालयसमेतको सहयोगमा निर्मित यस भवनको भर्याङ भने भवनको करिब बीच भागमा बरन्डाको बाहिरतिरबाट राखिएको छ। छतमा समेत ट्रस राखी जस्ता पाताले छाना छाई प्रयोगमा ल्याइएको छ। हाल विद्यालय भवन अन्यत्र बनेपछि यसमा छात्रावास बनाइएको छ।

१४. धान्याचल

प्रत्येक वर्ष हुने आश्रम र विद्यालयको वार्षिकोत्सवका उपलक्ष्यमा सङ्कलन हुने धान एकत्रित गर्न विद्यालय भवन ३ को भर्याङको दक्षिणतर्फ भर्याङमै जोडेर १२-१२ फिट लम्बाइ-चौडाइको धान्याचल (धान सङ्कलन केन्द्र) निर्माण गरिएको छ। सङ्कलित धान नछरियोस् भन्नका लागि यसको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चारैततर्फ ५ फिट उचाइको इँटाको गारो लगाइएको छ भने ल्याइएको धान खन्याउन माथिसम्म जानका लागि फलामको सिँढीसमेत बनाइएको छ।

१५. महात्मा कुटी

धान्याचलभन्दा करिब १० फिट दक्षिणतर्फको जग्गामा महात्मा कुटी बनाइएको छ। इँटाको गारो र सिमेन्टको छ्त ढलान गरी उत्तरतर्फ फर्काएर वि.सं. २०४९ मा बनाइएको यो कुटी ९-९ लम्बाइ-चौडाइको रहेको छ, साथै उत्तरतर्फ ३ फिटको बरन्डासमेत रहेको छ। आश्रमको सहमतिमा चन्द्रशेखर (गोपु हवलदार) नामका एक जना महात्माका लागि उहाँका छोराहरूले यो कुटी निर्माण गरिदिएका थिए।

१६. भण्डार कक्ष

विद्यालय भवन ३ को दक्षिणतर्फको जग्गामा उत्तरतर्फ फर्काएर पूर्व-पश्चिम लामो भण्डार कक्ष बनाइएको छ। १३ फिट चौडाइ र ४६ फिट लम्बाइको यो भवन सखुवाका खाँबा गाडेर छानामा कैंचीबटम गरी जस्ता पाताले छाइएको छ। पश्चिमतर्फको २० फिटमा १ फिट अग्लो फल्याकको टाँड बनाई फल्याकले नै बार बारी कोठा बनाइएको छ भने बाँकी २६ फिटमा इँटाको गारो लगाई कोठा बनाइएको छ। यसमा साढे ४ फिटको बरन्डासमेत रहेको छ।

१७. गौशाला भवन

भण्डार कक्षको दक्षिण-पूर्वतिरको पैनीको डिलमा पुण्यदा गौशाला भवन निर्माण गरिएको छ। लम्बाइ ४४ फिट र चौडाइ २२ फिट रहेको यो दुईतले गौशाला भवन चारैतिर इँटाको गारो लगाई ढलान गरी पिल्लर सिस्टममा बनाइएको छ। माथिल्लो तलामा ट्रस राखी जस्ता पाताले छाइएको यस भवनको निर्माण स्व. पितामाता चन्द्रप्रकाश-दुर्गा राईको पुण्यस्मृतिमा काकरभिट्टा निवासी छोराबुहारी डा. शरदचन्द्रप्रकाश राई र पुनम प्रधान राईले २०७६ कृष्णजन्माष्टमीमा उद्घाटन गरी हस्तान्तरण गरिदिनुभएको हो। यसमा तल्लो तलामा गाई बाँध्ने र माथिल्लो तलामा गाईका लागि आवश्यक चारा राख्ने गरिएको छ।

१८. गायत्री कुटी

रुद्र सत्सङ्ग भवन र रामजानकी मन्दिरको बीच भागमा दक्षिणतर्फ फर्काएर गायत्री कुटी बनाइएको थियो। २४ फिट लम्बाइ र १२ फिट चौडाइमा इँटाको गारो लगाई छत ढलान गरी बनाइएको यस भवनमा जम्मा दुई वटा कोठा रहेका थिए। यसको बाहिर पश्चिमतर्फ सानो शौचालयसमेत रहेको थियो। तत्कालमा यसमा गायत्री स्वरूप ब्रह्मचारी बस्नुभएकाले उहाँको सम्मानमा यसलाई गायत्री कुटी भनिएको थियो। हाल उक्त भवन जीर्ण भई भत्काइसकिएको छ।

१९. रुद्राभिषेक भवन

कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिरको ठीक पश्चिममा ५५ फिट लम्बाइ र ४५ फिट चौडाइको रुद्राभिषेक भवन बिर्तामोडनिवासी स्व. जगतबहादुर खड्काकी धर्मपत्नी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिलरूपा खड्काले आफ्ना स्व. सासुससुरा पूर्णबहादुर (रणबहादुर) र भागीरथा को पुण्यस्मृतिमा ६० लाखको निजी लगानीमा निर्माण गरिदिनुभएको छ। रुद्राभिषेकका समयमा रुद्राष्टाध्यायी पाठ गर्नका लागि चारैतिर ईँटाको गारो लगाई छत ढलान गरी पिल्लर सिस्टममा बनाइएको यस भवनमा पश्चिमतर्फ अन्तिममा उत्तर-दक्षिणमा दुई वटा ढोका रहेका छन् भने ९-५ लम्बाइ-उचाइका ३-३ वटा झ्याल, दक्षिण, उत्तर र पूर्वमा ४-५ लम्बाइ-उचाइका एकएकवटा झ्याल र मन्दिर (पूर्व) तर्फ फलामको २६ फिटको चेनगेट रहेको छ।

२०. सरस्वती मन्दिर

आश्रम परिसरको ईशान कोणमा रहेको विद्यालय हातामा सरस्वती मन्दिर निर्माण गरिएको छ। लोकनाथ खनाल र दिलमाया खनाल सपरिवारले स्व. मातापिता रनमाया र गङ्गारामको पुण्यस्मृतिमा आरसीसी ढलान गरी निर्माण गरिदिएको उक्त मन्दिर १२-१२ लम्बाइ-चौडाइको रहेको छ। मन्दिरमा स्थापित सरस्वतीको मूर्ति भने हृदयदीप आश्रम, जम्मु-कश्मीरका संस्थापक स्वामी हृदयानन्द गिरिले प्रदान गर्नुभएको हो।

२१. तटबन्ध

आश्रम परिसरको पूर्वतर्फ दक्षिणतर्फ बहने गरी पैनी रहेको छ। त्यसको डिलसम्मै आश्रमको जग्गा रहेको र जग्गाको सुरक्षाका लागि तटबन्ध आवश्यक भएकाले र पैनीको पश्चिम किनारामा करिब ३५० फिट लम्बाइको तटबन्ध गरिएको छ। बिर्तामोड नगरपालिकाको २१ लाख आर्थिक अनुदानमा तारजालीमा ढुङ्गा भरी तटबन्ध गरिएको हो।

२२. इनार

चारकोठे भवनदेखि २० फिट पश्चिममा इनार रहेको छ। वि.सं. २०२८ सालमा खेतको बीचमा सिम परेको ठाउँमा कुवा खनी त्यति बेलादेखि नै खानेपानीको रूपमा यहाँको पानी चलाइएको थियो भने पछि त्यस ठाउँमा धोद्रो परेको काठको डुँड गाडेर इनारका रूपमा प्रयोग गरिएको थियो। यसमा हिउँदमा ७-१० फिट गहिराइमा पानी हुने भए पनि बर्खा भने काठको डुँडबाट पानी बाहिर निस्केर बग्दथ्यो। काठको डुँड पनि मक्किँदै गएपछि बिर्तामोडनिवासी चिमनलाल अग्रवालले सिमेन्टको रिङ राखी अहिलेको अवस्थामा निर्माण गर्न लगाउनुभएको हो।

२३.पानीको धारा

आश्रम परिसरको विभिन्न स्थानमा ट्याङ्कीको पानी आउने गरी ५ वटा धारा राखिएका छन्। साथै गायत्री कुटीको पूर्वतर्फ एउटा चापाकलसमेत गाडिएको छ।

२४. घेराबारा, गेट निर्माण र पालेघर

श्रीविवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा.वि. परिसरमा आश्रम तथा विद्यालयको सुरक्षाका

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निम्ति घेराबार गरिएको छ। छेउमा भवन नभएको ठाउँमा बीचबीचमा पिल्लर राखी त्यसमा ५ फिट उचाइसम्म इँटाको जोडाइ गरी बार बनाइएको छ। यस्तो बार दक्षिणमा ११७ फिट र पश्चिममा १४६ फिटको लम्बाइको रहेको छ भने त्यसको माथितिर फलामको ग्रिल बनाई लगाइएको छ। आश्रम परिसरमा प्रवेश गर्न दक्षिणमा एउटा र पश्चिममा एउटा गरी जम्मा दुई वटा गेट सिमेन्टको पिल्लर ढलान गरी निर्माण गरिएका छन्।

साथै आश्रम परिसरको उत्तरतर्फ विद्यालय भवन रहेको र भवनले नै छेकिई बाँकी रहेको विद्यालयको क्षेत्रमा पूर्व ७७ फिट र दक्षिण ११० फिट लम्बाइको क्षेत्रमा घेराबार गरिएको छ। त्यसमा करिब १०-१० फिटको अन्तरालमा सिमेन्ट ढलानको पिल्लर राखी ६ फिट जति उचाइको इँटाको गारो लगाई त्यसमाथि ग्रिलको बार राखिएको छ भने दक्षिणतर्फको करिब बिच भागमा साढे १५ फिटको गेट बनाई विद्यालय परिसरलाई आश्रम क्षेत्रबाट छुट्याइएको छ। विद्यालयको गेटकै पश्चिमतिर ५ फिटको अर्को सानो गेट बनाई त्यसैसँग टाँसेर ११-१० लम्बाइ-चौडाइको इँटाको गारो र सिमेन्टको छत ढलान भएको पालेघरसमेत बनाइएको छ।

सन्दर्भ सामग्री

- तत्कालीन विद्यालय सञ्चालक समितिका बैठक पुस्तिकाहरू

कुराकानी

१. पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना २. पं. विष्णुभक्त भण्डारी ३. हेमनाथ तिम्सिना ४. दामोदर न्यौपाने ५. छन्दुराम भण्डारी

फोटो सौजन्यः

१. मन्दिर-पं. विष्णुभक्त भण्डारी २. भान्साघर- हेमनाथ तिम्सिना

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुकुल अध्ययन परम्परा र साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.

✍ भूमिप्रसाद दाहाल

१.१ विषयप्रवेश

वंश वा कुललाई 'नादवंश' र 'बिन्दुवंश' दुई प्रकारमा हेर्नुपर्दछ। नादवंश भनेको ध्वनि प्रसारण गरेर शब्दब्रह्मका माध्यमले अथवा मन्त्रदानबाट गुरुमुखी भई गुरुशिष्य परम्पराबाट चल्ने उत्तराधिकारी हुँदै आएको वंश वा कुल हो। त्यस्तै बिन्दुवंश भन्नाले चाहिँ मातापिताको सहवास र साहचर्यबाट उत्पत्ति हुने मैथुनी वंश भन्ने बुझिन्छ (राधाव्रजेशशरण गुरुजी)। गुरुकुल वा गुरुवंश यही नादवंशसँग सम्बन्धित छ। मान्छे जन्मिएर मानव बन्नका लागि उसका मातापिताको जति भूमिका रहन्छ त्यसभन्दा धेरै उसले प्राप्त गरेको शिक्षा र आर्जन गरेको ज्ञानको भूमिका रहने हुँदा मानव जीवनमा गुरु र गुरुकुलको भूमिका स्वतः स्पष्ट हुन्छ।

बालकले सर्वप्रथम त आमाबाटै सिक्छ। त्यसैले भनिन्छ -मानिसको पहिलो पाठशाला परिवार हो र प्रथम शिक्षिका आमा हुन्। सबैको परिवार र सबैका आमाले शिक्षित बन्ने सौभाग्य प्राप्त गरेका हुँदैनन्, त्यसैले शिक्षा आर्जनका लागि गुरुकुलमा विद्यार्थीलाई पठाउने परम्परा चल्यो। प्राचीन कालमा यसरी अध्ययन र अध्यापन गराउने परम्परालाई गुरुकुल भनियो। हाम्रो समाजमा यो परम्परा अद्यावधिक कायम छ। वैदिक परम्परामा विकसित आचार्यहरूको उत्पत्ति र विकासबाट अनुप्राणित हुँदै आएको आचार्यकुल पनि यही गुरुकुलकै समानार्थक शब्द हो। जसरी वंश परम्परामा योग्य सन्तानको प्रार्थना, आशा र अपेक्षा गरिन्छ त्यसरी नै आचार्यकुलमा पनि योग्य शिष्यको प्रार्थना, आशा र अपेक्षा गरिन्छ। त्यागी, वैरागी र ब्रह्मज्ञानीहरूलाई पनि योग्य उत्तराधिकारीको चिन्ता रहन्छ। राष्ट्रलाई सुयोग्य नागरिकको चिन्ता रहन्छ।

गुरु भन्नाले मानिसको मानस पटलमा रहेको अज्ञान, अशिक्षा र भ्रमलाई हटाई ज्ञान, शिक्षा र उचित गन्तव्यसहितको ज्योतिर्मय सही मार्गनिर्देशन गर्ने व्यक्तित्व, शिक्षक तथा अध्यापक भन्ने बुझिन्छ। गुरुकुल भन्नाले चाहिँ परम्पराबाट विकसित, विद्यार्थीहरूलाई

✍ उपप्राध्यापक, दमक क्याम्पस झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिधा र आवासको निःशुल्क व्यवस्था गरी पठनपाठन गराउने आश्रम, गुरुको सेवा-सुश्रुषा गरी विद्याको आर्जन तथा अध्ययन गर्नुपर्ने प्राचीन पद्धतिको विद्याकेन्द्र (पोखरेल र अन्य, २०४० : ३४८) भन्ने बुझ्नुपर्दछ। वर्तमान अवस्थामा राष्ट्र र जनताको आवश्यकताअनुसार शिक्षा दिने, विषयको विविधीकरण र विशिष्टीकरण गरेर सम्बन्धित विषयमा उच्च दक्षता हासिल गर्न विश्वविद्यालयहरूले जुन भूमिका निर्वाह गरिरहेका छन्, त्यही भूमिका प्रचीन कालमा गुरुकुलले गर्दथे।

१.२ गुरुकुलको प्राचीन स्वरूप

प्राचीन कालमा समयानुकूल उच्च र स्तरीय शिक्षाको सम्पूर्ण स्रोत नै गुरुकुल रहेकाले त्यतिखेरको शिक्षाका लागि यो अपरिहार्य नै थियो। गुरुकुलका प्रमुख कुलपति हुने गर्दथे। अहिले पनि विश्वविद्यालयहरूमा प्रशासनको प्रमुख कार्यकारी पदमा त कुलपति नै हुन्छन्। यही प्राचीन व्यवस्थाबाटै हालको यो व्यवस्था अनुप्राणित भएको देखिन्छ। प्राचीन व्यवस्थामा पनि १० हजार विद्यार्थीहरूलाई भोजन र शिक्षा-दीक्षा दिने ऋषिलाई कुलपति भनिएको देखिन्छ (पूर्ववत्, २५३)। त्यसैले त्यतिखेर पनि कुलपति बन्नका लागि सामाजिक र आर्थिक रूपमा पनि गुरुकुल सम्पन्न हुनुपर्दथ्यो। यस कुरालाई मनन गरेर हेर्दा गुरु र आचार्य त धैरै बन्न सक्थे तर कुलपति सबै बन्न सक्तैनथे। विद्यार्थीहरूलाई विभिन्न गुरुकुल, ऋषिकुल, देवकुल तथा पितृकुलजस्ता शिक्षण-संस्थामा राखेर विविध प्रकारका शिक्षा दिइन्थ्यो।

प्राचीन गुरुकुलमा वशिष्ठ ऋषिको गुरुकुल प्रख्यात छ। गुरु वशिष्ठ कुलपति नै हुनुहुन्थ्यो। उहाँबाट ऋषिकुमार तथा राजकुमारहरूले आआफ्नो अभिरुचिअनुसारको शिक्षा लिन्थे। सूर्यवंशी राजकुमारहरूले वशिष्ठबाटै शिक्षा ग्रहण गर्दथे। भगवान् कृष्ण र बलरामले अन्य कुमारहरूसहित सान्दीपनि मुनिसँग उहाँकै गुरुकुलमा शिक्षा आर्जन गरेको पाइन्छ। कृष्णले प्राप्त गरेको विद्याको स्वरूप र 'चौसठ्ठीकला विद्या' का विषयहरू हेर्दा सान्दीपनि गुरु पनि कुलपति नै हुनुहुन्थ्यो भन्न सकिन्छ। देवकुल भन्नाले मठमन्दिर स्थापना गरी त्यहाँ विद्यालय सञ्चालन गरेर निःशुल्क अध्ययन र अध्यापन गराउने संस्था भन्ने देखिन्छ। त्यस्तै पितृकुल भन्नाले धनी साहुमहाजनहरूले आफ्ना पितृपितामहका नाममा विद्यालय खोलेर निःशुल्क रूपमा पठनपाठन गराइने संस्था भनिएको पाइन्छ (भट्टराई, २०५२ : ३४)। यी शिक्षण-संस्थामा मुख्य रूपमा वेदवेदाङ्गकै पढाइ हुन्थ्यो भन्ने कुरा निम्न तथ्यबाट जानकारी मिल्छ।

प्रोवाच वेदानखिलान् साङ्गोपनिषदो गुरुः। सरहस्यं धनुर्वेदं धर्मान् न्यायपथांस्तथा।
तथाचान्वीक्षिकिं विद्यां राजनीतिं च षड्विधाम्। अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या संयत्तौ तावती कला।

(भागवत, १० अध्याय ४५ । ३३-३६)

सान्दीपनि गुरुले ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद र अथर्ववेद गरी चारै वेद, वेदाङ्ग- शिक्षा,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दशास्त्र र ज्योतिषशास्त्र (वेदका छ अङ्ग), वेदान्त (उपनिषद्), यिनका अतिरिक्त धनुकाँड हान्ने विद्या धनुर्वेद, मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्र, मीमांसा आदि वेदको तात्पर्य बताउने शास्त्र, तर्कशास्त्र आदिको शिक्षा दिनुभयो। साथै सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध तथा आश्रय यी छ भेदले युक्त राजनीतिको अध्ययन र चौसठ्ठी दिनमा अन्य चौसठ्ठी कला विद्याको अध्ययन कृष्ण र बलरामले उहाँबाट गरे।

अब चौसठ्ठी कलाभित्र कुनकुन विद्या पर्दछन् त ? यिनका बारेमा छोटो जानकारी राख्नु यहाँ वाञ्छनीय देखिन्छ।

१.३ चौसठ्ठी कला विद्या

(१) गायन विद्या, (२) वाद्यवादन, (३) नृत्य, (४) नाट्य, (५) चित्रकला, (६) बुट्टा काट्ने विद्या, (७) चामल, पुष्प आदिबाट पूजामण्डप सजाउने विद्या, (८) पुष्पबाट सज्जा-सजावट गर्ने विद्या (९) दाँत, वस्त्र तथा अङ्गलाई रँगाउने, आहार्य विद्या (मेहेन्दी आदिबाट सजावट), (१०) मणि-माणिक्य आदिबाट सजाउने विद्या, (११) शय्या आदिको रचना गर्ने विद्या, (१२) पानी थुनेर गरिने जलसौन्दर्य विद्या, (१३) विचित्र प्रकारका सिद्धिहरू देखाउने विद्या, (१४) पुष्पमाला आदिको रचना गर्ने विद्या, (१५) कानमा, कपालमा लगाउने पुष्पका गहना बनाउने विद्या, (१६) कपडा सजाउने (डिजाइन गर्ने) विद्या, (१७) पुष्पका गहनाबाट शृङ्गार गर्ने विद्या, (१८) कानमा लगाउने विशेष प्रकारका पत्ताहरूको रचना गर्ने विद्या, (१९) सुगन्धित वस्तु (सेन्ट आदिको) रचना गर्ने विद्या, (२०) इन्द्रजाल (जादुगरी) विद्या, (२१) इच्छाअनुसारको भेष बदल्ने विद्या, (२२) हातको फुर्तीबाट गरिने कामको विद्या, (२३) विभिन्न प्रकारका खाद्य परिकार बनाउने (पाकशिक्षा), (२४) विभिन्न प्रकारका सर्बत आदि पेयपदार्थ बनाउने विद्या, (२५) सियो-धागोबाट बनाइने वस्तु (विभिन्न प्रकारका सितारा जडान गर्ने) विद्या, (२६) कठपुतली (डल्स बनाउने) विद्या, (२७) पहेली (हत्तपत्त जान्न र बुझ्न नसक्ने, अड्को थाप्ने) विद्या, (२८) प्रतिमा, मूर्ति आदि बनाउने (काष्ठकला, मूर्तिकला) विद्या, (२९) कूटनीति विद्या, (३०) शीघ्र पढ्ने कलासम्बन्धी विद्या, (३१) नाटक, आख्यायिका आदि साहित्यरचना विद्या, (३२) समस्यापूर्ति कलासम्बन्धी विद्या, (३४) गलैंचा आदि निर्माण गर्ने विद्या, (३५) घर वा मन्दिर आदिमा लगाउने टुँडाल निर्माण आदि काष्ठकलासम्बन्धी विद्या, (३६) गृहनिर्माण (वास्तु कला) विद्या, (३७) सुनचाँदी आदि रत्नको शुद्धता परीक्षण गर्ने विद्या, (३८) गहना निर्माणको विद्या, (३९) मणि आदिको रङ्ग पहिचान गर्ने विद्या, (४०) खाद्य-अखाद्य वस्तुको पहिचान गर्ने विद्या, (४१) बोटबिरुवाको हेरविचार (वनस्पति चिकित्सा) विद्या, (४२) भेडा, कुखुरा आदिलाई जुधाउने विद्या, (४३) विभिन्न पक्षीको आवाज निकाल्ने (क्यारिकेचर गर्ने) विद्या, (४४) उच्चाटन विद्या, (४५) केशको सरसफाइ (हेयर स्टाइलिङ) विद्या, (४६) मुठ्ठीभित्रको चिज र मनको बात बताउने विद्या,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४७) म्लेच्छकाव्य (जान्नेले मात्र बुझ्ने साङ्केतिक भाषा बुझ्ने) विद्या, (४८) विभिन्न वैदेशिक भाषाको ज्ञान, (४९) शकुन विचार विद्या, (५०) विभिन्न प्रकारका मृत्तिकायन्त्र बनाउने विद्या, (५१) रत्नकला (कटिङ) विद्या, (५२) साङ्केतिक भाषाको ज्ञान, (५३) मनमनै युद्धको रचना गर्ने (युद्धक योजना बनाउने) विद्या, (५४) नयाँ नयाँ वचन र विषयको आविष्कार गर्ने विद्या, (५५) छलबाट काम फत्ते गर्ने विद्या, (५६) सम्पूर्ण कोशको ज्ञान, (५७) सम्पूर्ण छन्दहरूको ज्ञान, (५८) वस्त्र लुकाएर भेष बदल्ने विद्या, (५९) द्यूतकला विद्या, (६०) व्यक्तित्व विकास (आकर्षण कला), (६१) बाल्यक्रीडा विद्या, (६२) मन्त्र विद्या, (६३) विजय प्राप्त गर्ने विद्या, र (६४) बेताल आदिलाई वशमा राख्नेसम्बन्धी विद्या। श्रीमद्भागवत, १०।४५ ३३-३६ अखण्डानन्दटीका।)

उपर्युक्त ६४ कलाको नाम मात्रको विवरण हेर्दा पनि प्राचीन गुरुकुल शिक्षा कति सम्पन्न र शक्तिशाली रहेछ भन्ने कुराको जानकारी मिल्छ। यसबाट गुरुकुल शिक्षा कर्मकाण्डीमात्र हो भनेर यसमाथि तिरस्कारको भाव राख्नेहरूलाई पनि यसबाट उचित जवाफ मिल्छ।

उक्त विवरणबाट के स्पष्ट हुन्छ भने प्राचीन कालमा कलाकौशल वा विद्याका आत्मोन्नति र अर्थोन्नति २ लक्ष्य थिए। त्यतिखेर आत्मोन्नतिलाई प्रथमिकता दिइन्थ्यो, त्यसैले कलाकौशललाई भन्दा त्यतिखेर ज्ञानविज्ञानलाई प्राथमिकतामा राखेको पाइन्छ। माथि राखिएको विद्याको क्रमलाई हेर्दा पनि यो कुरा स्पष्ट हुन्छ। यी चौसठ्ठी कला विद्यालाई वर्तमान अवस्थामा कतिलाई स्तरगत बहुवर्षीय कार्यक्रमअन्तर्गत विश्वविद्यालयहरूमा अध्ययन-अध्यापन गराएको पाइन्छ भने कतिपय विषयलाई प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक तालिम परिषद् (सी.टी.ई.भी.टी) बाट अल्पकालीन तथा मध्यकालीन शिक्षा र व्यावसायिक तालिमको रूपमा दिंदै गरेको देखिन्छ। आज पनि राज्य र जनाताले आवश्यक ठानेका विषयहरू गुरुकुल शिक्षामा हजारौं वर्षअघि नै समावेश गरिएको पाइन्छ। यसले यो ज्ञान र सीप उतिखेरै थियो, अहिले यसको पुनर्जागरण र नवीकरणमात्र भएको हो भन्ने कुरा सिद्ध हुन्छ।

२. नेपालको सन्दर्भमा गुरुकुल शिक्षा

नेपालको प्राचीन शिक्षा गुरुकुल पद्धतिमै थियो। नेपालको गुरुकुल शिक्षामा वैदिक शिक्षा र बौद्ध शिक्षा २ वटा गुरुकुल प्रणाली देखिन्छन्। गुरुकुलको पहुँच नभएको अवस्थामा घरमै पितापुर्खाले प्राप्त गरेको ज्ञान आर्जन गर्ने चलन थियो। बुवा-हजुरबाले छोरा-नातिलाई र आमा-हजुरआमाले छोरी-बुहारीलाई आफूले जानेसम्मको ज्ञान र अर्तीउपदेश दिने चलन थियो। अग्रजहरूले समाजको मूल्यमान्यता, चालचलन, रीतिरिवाज, धर्मसंस्कृतिअनुसारको शिक्षा सन्ततिलाई दिन्थे। यसरी कतै लिखित र कतै मौखिक परम्पराअनुसार समाजमा शिक्षा र संस्कार हस्तान्तरित हुँदै आए। समाजक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केही जान्ने-बुझ्नेले जे-जति भए पनि गुरुकुल प्रणालीबाटै केही न केही शिक्षादीक्षा लिएका हुन्थे। राम, कृष्ण, कौरव-पाण्डवहरूले क्रमशः गुरु वशिष्ठ, सान्दीपनि र द्रोणाचार्यबाट शिक्षा ग्रहण गरेकै शैलीमा नेपालको प्राचीन शिक्षा गुरुकुल शिक्षा प्रणालीमै आधारित थियो भन्ने कुरा स्पष्ट हुन्छ।

गुरुकुल प्रणालीमा शिक्षाको आधार वेदलाई नै मानिन्थ्यो। वटुकको ब्रतबन्ध संस्कार गरेपछि उसलाई गुरुकुलमा पठाएर विशिष्ट प्रकारको शिक्षा दिइन्थ्यो। मातृदेवो भव (आमालाई देवतासमान मान), पितृदेवो भव (पितालाई देवतासमान मान), आचार्यदेवो भव (गुरुलाई देवतासमान मान), अतिथिदेवो भव अतिथिलाई (देवतासमान मान) सत्कार गर (गोयन्दका, २०३८ : ३००) जस्ता उपनिषद् वाक्यहरूले दिएको उपदेश नै गुरुकुलमा दिने प्रचलन थियो र यो परम्परा अद्यापि गुरुकुलमा रहेको छ। यसरी गुरुका समीपमा रहेर आफ्नो अध्ययनको समाप्तिपछि विद्वत्सभामा गुरुका उपस्थितिमा आफूले आर्जन गरेको विद्याको ज्ञान र सीपको सन्तोषजनक प्रस्तुतिपछि विद्यार्थीले उपाधि प्राप्त गर्दथे (शर्मा एन्ड शर्मा, २०६४ : ३३९)।

गुरुकुल पद्धतिमा वैदिक शिक्षा र बौद्ध शिक्षा आआफ्ना मठमन्दिर र शिक्षालयहरूमा दिइन्थ्यो। वैदिक शिक्षा वेद, वेदाङ्ग, चौसठ्ठी कलामा पर्ने कुनै न कुनै कलामा आधारित हुन्थ्यो भने बौद्ध शिक्षा बुद्धदर्शनसँग सम्बन्धित बुद्धका उपदेशमा आधारित हुन्थ्यो। यो शिक्षा बौद्धविहार, गुम्बा र भिक्षुसङ्घहरूमा दिइन्थ्यो र बौद्ध दर्शन तथा साहित्य, त्रिपिटक, जातक आदि विषयहरू शिक्षाका आधार थिए (पूर्ववत्)।

गुरुकुल शिक्षामा श्रवण, मनन, व्याख्यान, प्रवचन, प्रदर्शन, छलफल आदि विधिका माध्यमबाट शिक्षण हुन्थ्यो। विद्यार्थीको चारित्रिक गतिविधि, सामूहिक परीक्षातर्फ धर्म र दर्शनका बारेमा छलफल र बहस तथा शास्त्रार्थ विधिद्वारा विद्वान्हरूको विद्वत्सभालाई आफूले आर्जन गरेको ज्ञान, सीप, शील, स्वभाव र शास्त्रार्थले सन्तोष गराउन सकेमा उनीहरू विद्यामा स्नातक कहलाउँथे। त्यस समयको अष्टकलशले स्नान गराई स्नातकोपाधि प्रदान गर्ने परम्पराकै रूपमा आजभोलि पनि दीक्षान्त समारोह गरिन्छ (अधिकारी, २०६०:२)।

३. गुरुकुल शिक्षामा सङ्कुचन

जङ्गबहादुर राणाले वि.सं. १९०७ तिर बेलायतको यात्रा गरेपछि उनी त्यहाँको शिक्षा प्रणालीबाट प्रभावित भए। बेलायतमा भएको शिक्षाको विकासबाट उत्प्रेरित बनेका जङ्गबहादुरले नेपालमा पनि १९१० मा अङ्ग्रेजी माध्यमबाट पठनपाठन गराउने दरबार स्कुलको स्थापना गरेर नेपालको शिक्षा विकासमा नयाँ मोड ल्याएसँगै गुरुकुल शिक्षा प्रणालीमा सङ्कुचन प्रारम्भ भएको देखिन्छ। यसपछि भाषा पाठशाला, स्रेस्ता पाठशाला आदि खुल्दै गए। वि.सं. १९९० कार्तिक १६ गते एस.एल.सी. बोर्डको स्थापना र यसको पाठ्यक्रममा विविध विषयमा ८०० पूर्णाङ्क राखेर तहगत, कक्षागत, लिखित परीक्षामा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तीर्ण भएपछि उपाधि प्रदान गर्ने परिपाटी बसाएपछि गुरुकुल शिक्षा अझ सङ्कुचनमा पर्यो। यसका केही शक्ति र सीमा पनि भएका कारण राज्यबाट धकेलिन प्रारम्भ भए पनि समाजले भने यसलाई जोगाएर ल्यायो। २००४ सालसम्म आइपुग्दा काठमाडौंको तीनधारा संस्कृत पाठशालाका विद्यार्थीहरूले संस्कृत शिक्षामा समयानुकूल सुधार हुनुपर्ने माग राख्तै सोही सालको असार १ गते 'जयतु संस्कृतम्' नामक आन्दोलन सुरु गरे। यसलाई नेपालको विद्यार्थी आन्दोलन र शैक्षिक सुधारका दृष्टिले महत्त्वपूर्ण तथा चासोका रूपमा हेरिन्छ। यस आन्दोलनका नाराहरू यस्ता देखिन्छन् :

१. जयतु संस्कृतं धर्मभूतये (धर्मको समृद्धिका लागि संस्कृतको जय होस्)।

२.जयतु संस्कृतं राजभूतये (राज्यको समृद्धिका लागि संस्कृतको जय होस्)।

३. जयतु संस्कृतं राष्ट्रभूतये (सम्पूर्ण राष्ट्रको समृद्धिका लागि संस्कृतको जय होस्)।

यसरी संस्कृत पढेका विद्यार्थीहरूले नै समाज, राष्ट्र र अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रसम्मको समृद्धिका लागि चासो र चिन्ता प्रकट गरेर आन्दोलन गरेकाले यो घटना चर्चित बन्यो र संस्कृतका विद्यार्थीहरूको इज्जत, प्रतिष्ठा र शिर उच्चा बनायो। यसले समाजमा संस्कृतका विद्यार्थीहरूको वर्चस्व पुनः कायम राख्न मद्दत पुग्यो, तापनि राज्यपक्षबाट भने यो किनारातिर ठेलिई नै रह्यो। एस.एल.सी. बोर्डको पाठ्यक्रमअनुसार साधारण मा.वि. र संस्कृत मा.वि.मा विभाजन भएपश्चात् गुरुकुल शिक्षाले पनि यसको प्रणाली र स्वरूप परिवर्तन गर्नुपर्यो। यसले एकातिर यसको प्राचीन मौलिक स्वरूपलाई जोगाउँदै सोही स्वरूपमा समाजमा मान्यता पाइरह्यो भने अर्कातिर औपचारिक शिक्षाको दायरामा संस्कृत गुरुकुलका विद्यार्थीहरूले पनि प्रवेश गर्नुपर्ने बाध्यता हुँदा संस्कृत मा.वि.को पाठ्यक्रममा समावेश भई आधुनिक शिक्षाको हाराहारीमा आफूलाई विकसित गर्दै ल्यायो। समाजले, राष्ट्रले र अन्तर्राष्ट्रले पनि औपचारिक शिक्षा प्रणालीलाई बढी मान्यता दिने हुँदा गुरुकुलीय ढाँचामा पढ्ने विद्यार्थीहरूका लागि वनकाली वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रममा आधारित नयाँ पाठ्यक्रम र शिक्षण प्रणालीमा छिर्नुपर्ने आवश्यकता बन्यो।

यति हुँदाहुँदै पनि संस्कृत मा.वि. वेदविद्याश्रमका अतिरिक्त पनि गुरुकुल शिक्षाको मौलिक परम्परा नेपालमा चली नै रहेको छ। अहिले खास गरेर वनकाली वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रममा आधारित विद्यालय र प्राचीन गुरुकुल स्वरूपको हालको सन्दर्भमा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षाआर्जन गर्ने गराउने विद्यालयलाई गुरुकुलको परिभाषाभित्र समेट्न सकिने देखिन्छ। समयको घात-प्रतिघात र चाप-प्रतिचापका कारण गुरुकुल शिक्षा कक्षा शिक्षा प्रणालीमा जानुपर्ने आवश्यकता बन्यो।

४. गुरुकुल शिक्षा प्रणालीका मौलिक विशेषताहरू

गुरुकुल शिक्षाको लक्ष्य भनेको धर्म, अर्थ, काम र मोक्ष 'पुरुषार्थचतुष्टय' सिद्ध गर्नु हो। यस शिक्षाले धर्ममा बढी जोड दिन्छ। धर्मभित्रै नैतिकता, इमानदारिता, कर्तव्यपरायणता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र उत्तरदायित्वबोध, न्यायपरायणता, असल चरित्रको विकास आदि सद्गुणहरू पनि पर्दछन्। अर्थभित्र न्यायपूर्ण तरिकाबाट गरिएको अर्थोपार्जन, उद्यमशीलता, श्रमशीलता, आर्थिक सामर्थ्य बढाउने चेष्टा, अर्काको हानि नगरीकन उपार्जन गरेको कमाइ, शारीरिक परिश्रम, बौद्धिक क्रियाकलापबाट प्राप्त वित्त आदि पर्दछन्। कामभित्र धर्मको परिपालन र रक्षा गर्दै प्राप्त गरेको अर्थोपार्जनबाट आफ्ना इच्छाहरूको परिपूर्ति गर्ने क्रियाकलापहरू पर्दछन्। आफूले हाँके-ताकेको पुग्नु नै कामप्राप्ति हो। मनोकाङ्क्षा वा इच्छासिद्धिका लागि अपनाइने अवैधानिक र अनैतिक उपायलाई यसमा राख्न सकिँदैन।

मोक्षभित्र सामान्य अर्थमा कुनै पनि झन्झट, अप्ठ्यारो, ऋण, रोग, कष्ट आदिबाट छुटकारा पाउनु भन्ने कुरा पर्दछन् भने यसको दर्शनशास्त्रीय अर्थचाहिँ जन्ममरणको चक्रबाट मुक्ति पाई जीवभावबाट सदाका लागि मोक्ष पाउनु भन्ने बुझिन्छ। यही मोक्ष गुरुकुल शिक्षाको अन्तिम प्रयोजन हो। छोटकरीमा भन्दा धर्मको मर्मअनुसार अर्थोपार्जन गरी सुखमय जीवनका तमाम मनोकामना पूरा गरेर अन्तिममा आनन्दपूर्वक परमानन्दको प्राप्ति गर्नु नै गुरुकुल शिक्षाको प्रयोजन रहेको हुन्छ। यो उद्देश्य प्राप्तिका लागि प्राचीन कालदेखि नै विकसित हुँदै आएका यसका केही मौलिक विशेषताहरू देखिन्छन्। तिनीहरूलाई बुँदागत रूपमा यसरी राखेर हेर्न सकिन्छ :

१. एउटै गुरुद्वारा हजारौं विद्यार्थीको पठनपाठन हुने

गुरुकुल शिक्षामा एउटै गुरुले हजारौं विद्यार्थीलाई शिक्षा दिन सक्ने अवस्था रहन्छ। यहाँ अग्रज विद्यार्थीहरू नै अनुज विद्यार्थीहरूका शिक्षक बन्छन्। अग्रजले अनुजलाई प्रशिक्षण गर्नु गुरुकुलको विद्यार्थी आचारसंहिताभित्र पर्दछ। यस प्रणालीबाट प्रशिक्षक प्रशिक्षण एकैचोटि हुन्छ। कम खर्चमा ठूलो शिक्षण र प्रशिक्षण कार्य सम्पन्न हुन्छ। आफूले जानेर मात्र हुँदैन, तल्लो स्तरकालाई सिकाउनु पनि पर्ने हुँदा प्रशिक्षक बन्न सक्ने गरी पढ्न विद्यार्थीहरू एक प्रकारले बाध्य नै हुन्छन्। यसले ज्ञान र शिक्षाको आधार मजबुत बनाउन सहयोग पुग्छ।

२. कक्षा नभएर ग्रन्थ अध्ययन परम्परामा विकसित शिक्षा

गुरुकुल शिक्षा कक्षा अध्ययनमा नभएर ग्रन्थ अध्ययन परम्परमा विकसित थियो। यसमा निश्चित स्तरका लागि निश्चित ग्रन्थहरू निर्धारण गरिएका हुन्छन्। यसमा पाठ अध्ययन हुन्छ। पाठ कण्ठस्थ गरेर गुरुलाई सुनाउनुलाई 'पाठ बुझाउनु' भनिन्छ। पाठ बुझाएपछि मात्र अर्को पाठ वा अघि बढ्ने मौका हुन्छ। क्षमता र प्रतिभा भएका विद्यार्थीहरूले द्रुत गतिमा अघि बढ्ने मौका पनि पाउँछन्। प्राथमिक ग्रन्थका रूपमा वेद, व्याकरण, कोशकाव्यका लागि नेपालको सन्दर्भमा शुक्लयजुर्वेद, लघुसिद्धान्त कौमुदी, अमरकोश, रघुवंश महाकाव्यका निश्चित सर्गजस्ता अध्ययन सामग्री राखिएका हुन्छन्। विद्यार्थीको प्रतिभा र कण्ठस्थ गर्ने सामर्थ्यअनुसार उसले वार्षिक परीक्षा पर्खिराख्नुपर्दैन। उसको दैनिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परीक्षा र दैनिक मूल्याङ्कनका आधारमा शीघ्र गतिमा अघि बढ्ने अवसर सदा रहन्छ। यी पाठ्यग्रन्थहरूका निश्चित भागहरू हुन्छन्। यी भागका खुड्किला पार गर्न कसैलाई लामो समय लाग्न सक्छ भने कसैले छिटै पार गर्न सक्छन्। कक्षाअध्ययन परम्परामा माथिल्लो कक्षामा जान तल्लो कक्षाको वार्षिक परिक्षा पर्खिनुपर्दछ तर ग्रन्थअध्ययन परम्पराको गुरुकुल प्रणालीमा वास्तविक रूपमा दैनिक र निरन्तर मूल्याङ्कन भइरहने हुँदा क्षमता भएका विद्यार्थी बेरोकटोक, असीमित र समयबन्धनमुक्त अघि बढ्छन्। यस प्रणालीको यो नै निकै महत्त्वपूर्ण र सुन्दर पक्ष पनि हो।

३. कण्ठस्थ गरेर पढ्ने र पाठ गरिराख्ने शिक्षा

गुरुकुल प्रणालीमा कण्ठस्थ गर्ने र त्यसलाई दिगो रूपमा विद्यार्थीका मनमस्तिष्कमा गहिरो धारणामा राख्न र उपयुक्त मौकामा पुस्तक पल्टाइराख्नु नपरोस् भन्नका लागि पाठ गर्ने प्रचलन हुन्छ। पाठ गर्ने भनेको कण्ठस्थ गरेर बुझाएको पाठ पनि समयको अन्तरालमा बिर्सन सक्ने भएकाले निश्चित समयसम्म वा निश्चित समयसमयमा दोहोर्‍याउने हो। जसरी साइकल सिकेका मन्छेले बारम्बारको अभ्यासले मात्र त्यसमा दक्षता प्राप्त गर्दछ, कम्प्युटर सिकेको मानिसले पनि बारम्बारको अभ्यासले मात्र त्यसमा दक्षता हासिल गर्न सक्तछ, त्यसरी नै पढेका विद्याको बारम्बार अभ्यास गर्नुचाहिँ पाठ गर्नु हो। यसरी पाठ गर्ने अभ्यासले लामालामा ग्रन्थको पनि द्रुतपाठ गर्न सक्ने अभ्यास हुन्छ। नयाँ, गुरुकुलमा नपढेका विषयलाई पनि कण्ठस्थ गरेर काबुमा राख्न सकिन्छ।

४. सीमित गुरुले असीमित अध्यापन गराउने शिक्षा

माथि नै बताइयो, गुरुकुल शिक्षा प्रणालीमा एउटै ग्रन्थका विभिन्न पाठको अध्ययन हुन्छ। अग्रज विद्यार्थी अनुजका प्रशिक्षक हुन्छन्। यसले असीमित अध्ययन र अध्यापन हुन्छ। जस्तै समग्र लघुसिद्धान्त कौमुदीलाई १० भागमा १० पाठ बनाएर विद्यार्थीहरूलाई पनि १० वटै समूहमा विभाजन गरी अध्यापन गर्दा ती १० वटै पाठलाई दिनमा एकपल्ट मुख्य गुरुले बुझ्नुहुन्छ। ठीक भएमा प्रत्येक समूहले नयाँ पाठ पाउँछन्। सबैभन्दा तल्लो पाठबाट पाठ दिने र लिने काम प्रारम्भ हुन्छ। ती १० वटै समूहको पठनपाठनको निरीक्षण कम्तीमा दिनमा एकपल्ट मुख्य गुरुले नै गर्नुहुन्छ। क्रमशः प्रत्येक पाठलाई समय दिएर गुरुले बुझेपछि विद्यार्थीहरू नयाँ पाठका अधिकारी हुन्छन्। पाठ पाएपश्चात् तलतलका विद्यार्थीहरू उठ्तै जान्छन्। माथिको पाठका विद्यार्थीहरू त्यहीं बसी गुरुले विद्यार्थीहरूलाई पाठ दिंदाका बखतको विषयको मनन गरिरहन्छन्। गुरुले १० वटै पाठ दिइसकेपछि अन्तिमका विद्यार्थीको समूहलाई गुरुले विशेष रूपमा हेर्नुहुन्छ। पाठ कण्ठस्थ गर्न सहयोग गर्नुहुन्छ। यसलाई 'पाठ लगाउनु' भनिन्छ। यो दूधका लागि बाछो लगाउनु जस्तै हो। अब बाँकी रहेका ९ पाठका लागि क्रमशः पाठको उच्च क्रमअनुसार त्यहींका पढाइमा ज्येष्ठ र श्रेष्ठ विद्यार्थीले तल्लो तहका विद्यार्थीलाई क्रमशः पाठ आउँदो पार्नमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहयोग पुर्याउँछन्। यसलाई पनि पाठ लगाउने नै भनिन्छ। पाठ लगाएर गुरुलाई कण्ठस्थ सुनाउनुचाहिँ पाठ बुझाउनु हो। यसरी माथिल्लो स्तरका विद्यार्थीहरूले नै तल्लो स्तरका विद्यार्थीहरूलाई क्रमशः सिकाउने हुँदा एउटै गुरुले असीमित विद्यार्थीलाई यस प्रणलीमा शिक्षा दिन सक्छन्। यस प्रकारको अभ्यास अन्यत्र पनि कामयाबी हुने देखिन्छ।

५. गुरुकुल शिक्षा एक प्रकारको व्यावसायिक शिक्षाका रूपमा

हुन त गुरुकुल शिक्षालाई 'घोकन्ते विद्या' भनेर आलोचना पनि गरिन्छ। तर यसलाई सकारात्मक दृष्टिले हेर्दा यो व्यावसायिक शिक्षा पनि हो। जसले जे कुरा जानेको हुन्छ, त्यसका लागि उही प्राविधिक हुन्छ। गुरुकुल शिक्षामा जसले जति जानेको छ, त्यसले त्यतिबाटै पनि जीवन निर्वाह गर्न सक्छ। वैदिक क्रिया, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, आयुर्वेद, तन्त्रशास्त्र आदि यसका व्यावसायिक पक्ष हुन्।

६. व्यक्तित्व निर्माणमा गुरुकुल शिक्षा

कुनै पनि व्यक्ति सामाजिक व्यक्तित्व, राष्ट्रिय व्यक्तित्व र अन्तर्राष्ट्रिय व्यक्तित्व बन्नका लागि उच्च नैतिकता, सदाचार, इमानदारिता, सादा जीवन उच्च विचार, कठोर अध्ययनशीलता आदि गुणहरूको अपेक्षा गरिन्छ। गुरुकुल शिक्षामा आधारभूत रूपमा नै यी गुणहरूको अपेक्षा गरिन्छ। भाषण तथा प्रवचनकला र वाक्पटुतामा यहाँका विद्यार्थीहरू निपुण हुन्छन्। त्यसैले सामाजिक व्यक्तित्व, राष्ट्रिय व्यक्तित्व र अन्तर्राष्ट्रिय व्यक्तित्व बन्नका लागि पनि यी गुणहरू सहायक सिद्ध हुने हुँदा व्यक्तित्व निर्माणका लागि पनि गुरुकुल शिक्षा उपयुक्त मानिन्छ। साथै कविताकाव्य, आख्यान, निबन्ध, नाटक आदि साहित्य रचनाबाट ख्याति प्राप्त गर्नका लागि पनि यो शिक्षा सहायक सिद्ध हुन्छ।

७. प्राचीन ज्ञानराशिलाई नवीकरण गर्ने गुरुकुल शिक्षा

नेपाल पूर्वीय ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, शिक्षा र चेतनाबाट अनुप्राणित हुँदै आएको देश हो। यसको प्राचीन ज्ञानराशि वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत र ललित महाकाव्यहरूमा सुरक्षित छ। त्यसलाई पुनर्नवीकरण र पुनरुत्पादन गरी जनसाधारणमा यस ज्ञानराशिको आलोक छर्न गुरुकुल शिक्षा प्रणालीबाट विकसित विद्वान्हरूको अनुवाद कलाले मात्र सक्छ। यस ज्ञानराशिलाई अनुवाद गरी जनसाधारणमा यसको महत्त्व दर्शाउन पनि आज गुरुकुल शिक्षाबाट खारिएको दक्ष जनशक्तिको आवश्यकता परेको छ।

८. गुरुकुल शिक्षाप्रणाली सौन्दर्य चेतनाको नयाँ ध्रुव अन्वेषण गर्ने शिक्षा

गुरुकुल शिक्षा मात्र त्यस्तो शिक्षा हो जसले सौन्दर्य चेतनाको नयाँ ध्रुवको अन्वेषण गर्दछ। अन्य आधुनिक भनिएका शिक्षा अर्थबजारको ज्वालामा लपेटिएका भोगवादी शिक्षा देखिन्छन् भने गुरुकुल शिक्षा योगवादी देखिन्छ। गुरुकुल शिक्षाको जगमा नै गुणस्तरीय संस्कृत शिक्षाको कल्पना गर्न सकिने भएकाले यसको माध्यमबाट त्यस नयाँ ध्रुवको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्वेषण गर्न सकिने देखिन्छ। आजको अर्थबजारको भासमा सुन्दरता भासिएर सुन्दरताका नाममा त्यसका कुरूप चित्रहरू प्रदर्शित भइरहेका छन्। जसलाई सुन्दर भनिन्छ ती चित्रहरू घरपरिवारका सदस्यहरूले एकै ठाउँमा बसेर, एउटै श्रव्य-दृश्य पर्दामा हेर्नै नसकिने भएका छन्। सुन्दरताका नाममा अर्धनग्नता र भलादमीका नाममा गहना, जुत्ता, पोसाक र कपालको विज्ञापन भइरहेका छन्। सनातन संस्कृतिको भ्रष्टीकरण गरेर आयातीत संस्कृतिलाई संस्कृतीकरण गरी समाजमा विकृति फैलाउने प्रयासहरू भइरहेका छन्। यसो हुनुमा सुन्दरताको परिभाषा गर्ने उचित दृष्टिकोण नहुनु पनि एउटा कारण हो। हालको दुनियाँले जेलाई सुन्दर भन्दछ, त्यो त बाहिरी सुन्दरता मात्र हो। नरिवलको जटा, कोलाको बोक्रो र मकैको खोस्टो चाखेर ती ती पदार्थको स्वाद पाउन सकिँदैन। त्यस्तै सुन्दरताको आवरण हेरेर त्यसको अन्तश्चमत्कारमा पुग्न सकिँदैन। त्यसका लागि सही दृष्टिकोणको आवश्यकता पर्दछ। यसको परिपूर्ति गुरुकुल शिक्षा प्रणालीले गर्दछ। यसलाई यसरी बुझ्न र अनुभव गर्न सकिन्छ :

सुन्दरता बाहिरी र भित्री २ प्रकारका हुन्छन्। बाहिरी सुन्दरतामा पोसाकको प्रदर्शन, अङ्गप्रदर्शन, गहनाको प्रदर्शन, भड्किलो शृङ्गार आदि पर्दछन्। भित्री सुन्दरतालाई मानसिक सौन्दर्य, बौद्धिक सौन्दर्य र आध्यात्मिक सौन्दर्य गरी तीन तहमा हेर्न सकिन्छ।

जसरी शरीरिक सौन्दर्यका लागि धेरै ठूलो शिक्षा र ज्ञानको पनि आवश्यकता पर्दैन त्यसरी नै मानसिक सौन्दर्यका लागि पनि धेरै ठूलो शिक्षा र ज्ञानको आवश्यकता पर्दैन। उसमा मन र सोचाइ सफा भए पुग्छ। कसैको कुभलो नचिताए पुग्छ। दया, मैत्री, करुणा, मानता आदि भावना भए पुग्छ। बौद्धिक सौन्दर्यका लागि शिक्षा र विषयवस्तुको ज्ञान प्रचूर मात्रामा चाहिन्छ ,ऊ शिक्षित र वाक्पटु पनि हुन आवश्यक छ। त्यति हुँदाहुँदै पनि बौद्धिक सौन्दर्य सौन्दर्यको पराकाष्ठा होइन। सबै बौद्धिकहरूको कर्म सुन्दर नै हुन्छ भन्ने छैन। प्रहरीको जत्तिकै बौद्धिकता विध्वंशकारीले पनि खर्च गर्दछ। कसैले जुटाउनेमा बौद्धिकता खर्च गर्दछ भने कसैले फुटाउनेमा बौद्धिकता खर्च गर्दछ। कुनै वकिलले अपराधीलाई कानुनको दायरामा ल्याउन तर्क र बौद्धिकता खर्च गर्दछ भने कसैले त्यसलाई मुक्त गराउने पक्षमा बहस गर्दछ। सबै बुद्धि सद्बुद्धि हुँदैन, त्यसैले बौद्धिक सौन्दर्य पनि अन्तिम सौन्दर्य होइन।

अब आध्यात्मिक सौन्दर्यतर्फ लागौं। जीवनको अन्तिम पुरुषार्थ आध्यात्मिक सौन्दर्यको अनुभूति गर्दै मोक्षप्राप्ति गर्नु हो। यो आध्यात्मिक सौन्दर्यबोधको तहमा पुगेका साधक, साधिकालाई बाहिरी सौन्दर्यको प्रदर्शन गरेर 'स्टार' बनी धेरै कमाउने इच्छा पनि हुँदैन। बढो बौद्धिक र तार्किक बनेर अरूलाई थर्कमान पारी धेरै सम्पत्ति कमाउनु पनि छैन। ठूलो पद हासिल गर्नु पनि छैन। उसको आध्यात्मिक सौन्दर्य लोककल्याणका लागि हुन्छ। त्यही स्तरमा पुगेर सच्चा वेदान्तीय ज्ञान प्राप्त हुन्छ। यसलाई आचरणमा उतार्न सकेमा मानिस जीवनमुक्त बन्न सक्छ। यही अवस्थामा पुगेपछि मात्र मानव बल्ल यस्तो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावनात्मक सौन्दर्यमा पुग्दछ :

सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै (कठोपनिषद्, शान्तिपाठ)।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

भन्ने आध्यात्मिक सौन्दर्यको पराकाष्ठामा पुग्छ। यस प्रकारको योगवादी, त्यागपूर्ण आध्यात्मिक सौन्दर्यको चेतना छर्ने विद्या गुरुकुल शिक्षाबाट मात्र प्राप्त गर्न सकिन्छ। चक्रवर्ती सम्राट्हरूले यसैको खोजीमा राजपाट त्यागेका घटनाहरू साक्षी छन्। त्यसैले सौन्दर्य चेतनाको नयाँ ध्रुवको अन्वेषण यस शिक्षा प्रणालीले गर्दछ भन्ने कुरा प्रमाणित हुन्छ।

९. गुरुकुल शिक्षा प्रणालीमा अनध्याय

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आर्थिक रूपमा कमजोर विद्यार्थीहरूका लागि पनि विद्यार्थीमैत्री देखिन्छ। यसले उचित प्रबन्ध गरेको छ। यसको 'अनध्याय' बिदा वा छुट्टी बार र गतेमा नभएर तिथिमा हुन्छ। १५ दिनमा ४ दिन र महिनामा ८ दिन जति विद्यार्थीले आवश्यक कामका लागि अवकाश वा बिदा पाउँछन्। अष्टमी, त्रयोदशीको अपराह्नदेखि चतुर्दशी, औंसी वा पूर्णिमा र प्रतिपदा तिथिहरूमा गुरुकुलको पठनपाठन बिदा हुन्छ। यी बिदाका दिनमा केही आर्जन गरेर विद्यार्थीहरूले खर्च जुटाउन सक्छन्। यसरी हेर्दा 'वर्क एन्ड एजुकेसन' काम र शिक्षासँगै भन्ने विकसित देशहरूले अहिले अपनाउँदै गरेको पद्धतिलाई गुरुकुल शिक्षा प्रणालीले पहिले नै अपनाइसकेको देखिन्छ। यस विषयमा गुरुकुलका छात्रबीच एउटा मार्मिक उपाख्यान छ : गुरुकुलका विवाहित छात्रकी कुलवधू भन्छिन्:

माता मेरी त्रयोदशी प्रतिपदा बैनी मेरी अष्टमी।
यो पापी दुतिया पपन्ध्र दिनमा आउँछे मेरी सौतिनी।।

५. साङ्वेद संस्कृत विद्यालय

साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय झापा जिल्लाको बिर्तामोडबाट थोरै पश्चिम चारपाने भन्ने स्थानमा अवस्थित छ। यो गुरुकुल परम्पराअनुसार चलेको विद्यालय हो। यसको स्थापना २०२८ साल माघ १३ गते भीष्म द्वादशीका दिन भएको बताइन्छ। यो विद्यालय पनि गुरुकुल परम्पराअनुसार श्रीशङ्कराचार्यको मतका अनुयायी १०८ स्वामी विवेकानन्द (देवीचरण पौडेल-माहिला गुरु) बाट मिति २०२८ मङ्सिर शुक्लपूर्णिमा (धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन) सोही स्थानमा स्थापना गरिएको विवेकाश्रमद्वारा सञ्चालित विद्यालय हो। यसरी हेर्दा आश्रम स्थापनाको करिब २ महिनापछि विद्यालयको स्थापना भएको पाइन्छ।

प्रारम्भतिर यहाँ पढ्न आउने विद्यार्थीले भोजनादि र आर्थिक स्रोत आफैं जुटाउनुपर्थ्यो। आश्रम सम्पन्न नहुँदासम्म यहाँ आएर पढ्ने विद्यार्थीहरूका अभिभावक स्वयंले विद्यार्थीहरूको भोजनादिको व्यवस्था गर्नुपर्थ्यो। समयको क्रमसँगै स्वामी विवेकानन्दका शिष्यहरूको सहयोग, विद्यालयलाई व्यवस्थित गर्न गठित पहिलो समितिका संस्थापक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्यक्ष ब्रह्मलीन महर्षि गुरुज्यू पं. टेकनाथ गौतम, सर्वप्रथम आश्रम निर्माणार्थ जग्गा उपलब्ध गराउनुहुने पं. नन्दीकेश्वर तिम्सिना, लामो समयसम्म निःशुल्क अध्यापन गराई विद्यालयको नेतृत्व लिनुहुने गुरुज्यू श्री विष्णुभक्त भण्डारी आदि महानुभावहरूको सहयोग र सक्रियतामा आश्रमले, सामर्थ्य, सहयोग र सम्पन्नता जुटाउँदै ल्यायो। केही दानदातव्य र केही सुलभ मूल्यमा खरिद गरी आवश्यक जमिन थप्दै लगियो। विद्यालयको भौतिक निर्माणमा स्तरोन्नति गर्दै ल्याइयो। समिति र गुरुका शिष्यहरूको पहलमा आश्रम र विद्यालयको आर्थिक, भौतिक र शैक्षिक स्तरोन्नतिका लागि निरन्तर प्रयासहरू भई नै रहे। धर्मानुरागी, शिक्षाप्रेमी विभिन्न महानुभावहरूको निरन्तरको सहयोग र समय-समयमा गरिएका वार्षिक कार्यक्रम र अनुष्ठानहरूको माध्यमबाट प्राप्त आर्थिक स्रोत र सङ्कलित साधनलाई आश्रम र विद्यालयको समृद्धिका लागि खर्च गर्दै आउने क्रममा निःशुल्क भोजनसहित आवासीय विद्यालयका रूपमा यो विद्यालय सञ्चालन हुने अवस्थामा आइपुग्यो।

आश्रमको भौतिक उन्नति, विद्यालयको वैधानीकरण र विद्यालयका विषयहरूको विविधीकरण गर्दै अघि बढ्ने क्रममा विद्यालयको दिगो विकास र भरपर्दो साधन-स्रोतका लागि सरकारी सुविधा लिनु पर्ने अवस्था देखियो। ग्रन्थ अध्ययन परम्पराबाट विकसित यस विद्यालयलाई अब सरकारबाट निर्देशित पाठ्यक्रमअनुसार कक्षा अध्ययन प्रणलीमा लैजानु पर्ने अवस्था आयो। यसैको फलस्वरूप मिति २०४६ मा यस साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयले नेपाल सरकार, शिक्षा मन्त्रालयद्वारा स्वीकृत वनकाली वेदविद्याश्रममा लागू गरिएको पाठ्यक्रमलाई लागू गर्ने गरी प्रचलित माध्यमिक विद्यालयको स्वीकृति प्राप्त गर्यो। यसपछि केही शिक्षक दरबन्दी प्राप्त भए पनि गुरुकुलीय ढाँचाको मर्म, पूर्वसहयोगी र जनसाधारणको आस्थालाई प्रतिबिम्बन गर्ने गरी विद्यालय सञ्चालन गर्नुपर्दा निजी स्रोतबाट पनि शिक्षकको व्यवस्था हुँदै आयो। अहिले विवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. परिसर १ बिघाभन्दा बढी नै क्षेत्रफलमा विकसित र विद्यमान छ। सुन्दर र भव्य मन्दिरहरू, सुविधासम्पन्न विद्यालय भवन, यज्ञशाला, छात्रावास, पाकशाला आदिको सुन्दर र यथोचित व्यवस्था भएको छ। उल्लेख्य मात्रामा रहेका विद्यार्थीहरूलाई पठनपाठन र भोजनादिको व्यवस्था गरिएको छ। यो सुरम्य धार्मिक र शैक्षिक आकर्षणको केन्द्र बन्दै छ।

५.१ विद्यालयको भौतिक अवस्था

साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको भौतिक अवस्था सन्तोषजनक नै देखिन्छ। आश्रम र विद्यालय परिसरमा करिब १ बिघाभन्दा बढी नै क्षेत्रफलमा विकसित छ। विद्यार्थीहरूको अध्ययनकक्ष, आवास, भोजनालय, पाकशाला आदिको पर्याप्त मात्रामा व्यवस्था गरिएको छ। प्रवचनकक्ष (सभाहल), मठमन्दिर, यज्ञशाला, आदिको पनि राम्रो व्यवस्थापन गरिएको छ। अन्य भौतिक तथा विकास निर्माणमा विद्यालयको समिति र जनसमुदाय लागिपरि नै रहेका छन्। मापदण्डअनुसार आधुनिक निर्माण कार्यमा साधन-स्रोत जुटाउन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रमका अध्यक्ष व्यासाचार्य श्री किशोरकुमार गौतम र उहाँको नेतृत्वको समितिले पहल गरिरहेकै छ। आचार्य विष्णुभक्त भण्डारी गुरुज्यूले हाल अध्यापनको कार्यबाट निवृत्ति लिए पनि अभिभावकत्व ग्रहण गरिरहनुभएको छ। आश्रम र विद्यालयको भौतिक विकासमा पं. नन्दीकेश्वर तिम्सिना, उहाँको परिवार र वरिपरिको जनसमुदाय सक्रिय नै रहेको छ। विद्यालय माध्यमिक तहमा स्वीकृत भएपछि नियुक्त भएका प्रधानाध्यापक श्री पूर्णानन्द तिम्सिना, दामोदर न्यौपाने लगायतको शिक्षक समूह विद्यालयको विकासमा दत्तचित्त छ। विद्यालयका नवनिर्वाचित अध्यक्ष र आश्रमका महासचिव छन्दुराम भण्डारीको सक्रियता बढिरहेको छ।

टाढाटाढा रहेका माहिला गुरु विवेकानन्द, जेठा गुरु योगेश्वराश्रम, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, ब्रह्मलीन महर्षि पं. टेकनाथ गौतमका शिष्यहरूको सहयोग रहेको छ। शिक्षासेवी, समाजसेवी आदि विभिन्न महानुभावहरूको सद्भाव र सहयोगले आश्रम र विद्यालयको भौतिक अवस्था सुदृढ बनेको छ। विद्यालयमा अक्षय कोष खडा गरेर दिगो विकास र समृद्धिको लक्ष्यलाई पच्छ्याउने प्रयास गरिएको छ। महर्षि वैदिक फाउन्डेसनजस्ता कार्यक्रम र लक्ष्य मिल्ने दातृनिकायको सहयोग जुटाइएको छ। पहिलेको जमिनसँग साँध मिलेको थप केही जमिन खरिद गर्ने चाँजोपाँजो मिलाइएको छ। विद्यालयको भौतिक र शैक्षिक विकासका लागि वर्तमान अध्यक्ष, पूर्वअध्यक्ष, पूर्वप्रधानाध्यापक, वर्तमान प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा विद्यार्थी वर्गको अहं भूमिका र समझदारी, जिम्मेवारी र इमानदारिताले भौतिक विकासका लक्ष्यहरूको परिपूर्ति हुँदै जाने अवस्था देखिन्छ। विद्यालय र आश्रम यस अवस्थासम्म आइपुग्न यस गाउँकै भूमिकालाई बिर्सनु हुँदैन, यहाँको तिम्सिना परिवार, भण्डारी परिवार, पौडेल परिवार, खतिवडा परिवार आदिका आमा, दिदीबहिनी, दाजुभाइको आस्था र भरोसालाई कहिल्यै बिर्सनु हुँदैन। मोही माग्न गएका विद्यार्थीहरूको लोहोटा रित्तै फर्काउनुपर्दा पाप लाग्छ भन्ने सम्झेर त्यतिखेरको समयमा बाँडीचुँडी खाने संस्कार सिकाउने र गोरसले विद्यार्थीहरूको गला रसाइदिने श्रद्धावती र भक्तिमती नारी समुदायको प्रशंसा जति गरे कम हुन्छ।

५.२ विद्यालयको शैक्षिक अवस्था

साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको शैक्षिक अवस्थालाई प्रारम्भदेखि हेर्दा यो विद्यालय वि.सं. २०२८ साल माघ १३ गते माघ शुक्ल भीष्मद्वादशीका दिन विवेकानन्द (माहिला गुरु) बाट सामान्य बेराबारा गरेर कटेराको रूपमा प्रारम्भ भएको देखिन्छ। थालनीमा गुरुकुल ढाँचाको वेदवेदाङ्ग पाठशालाको रूपबाट यो विद्यालय सञ्चालनमा आएको हो। समयको क्रमसँगै विद्यार्थी सङ्ख्या बढ्दै आउँदा विषयको विविधीकरणका साथै व्याकरण, कोश, काव्यको पनि पठनपाठन सञ्चालन गर्नुपर्ने आवश्यकतालाई बोध गरी अध्यापकको रूपमा श्री विष्णुभक्त भण्डारी गुरुज्यूलाई जिम्मा दिएपछि विद्यालयले गति र स्थायित्व

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लियो। खास गरी पाणिनीय व्याकरण अध्ययनका लागि यस विद्यालयले प्रसिद्धि पायो।

वेदवेदाङ्ग, व्याकरण आदि अध्ययन गरेर पुराण प्रवचन गर्ने, कर्मकाण्ड गरेर जीवन निर्वाह गर्ने विद्यार्थीहरूको एउटा सानो समूह एकातिर रह्यो। अर्कातिर शिक्षामा विश्वव्यापीकरणको मान्यताअनुसार लोकजीवनका विविध क्षेत्र र पक्षमा प्रवेश गरेर कार्यसम्पन्न गर्न र व्यक्तित्व विकास गर्ने अवसर प्राप्त गर्न औपचारिक शैक्षिक प्रमाणपत्रको आवश्यकता पर्ने भयो। त्यसको अभावपूर्तिका लागि प्रायः गरेर यहाँका प्रारम्भिक अवस्थाका विद्यार्थीहरूले बनारस, वृन्दावन, हरिद्वार, दिल्ली आदि विभिन्न क्षेत्रका औपचारिक शिक्षा अध्ययन गराउने विद्यालयमा जानु पर्ने अवस्था आयो। त्यहाँ पनि निश्चित कक्षामा अध्ययन गर्न तल्लो तहको शैक्षिक प्रमाण चाहिने हुँदा यहाँबाट गएका विद्यार्थीहरूले परीक्षणका विभिन्न चरणहरू पार गरेर मात्र प्रवेश पाउने हुँदा विभिन्न परीक्षण र अन्तर्वार्ताका चरणहरू पार गर्नुपर्दाको तितो यथार्थ पनि यहाँ बिर्सनु हुँदैन।

यहाँबाट उत्पादित विद्यार्थीहरूको गुणस्तर राम्रो भएकाले ती ती स्थानमा गएका विद्यार्थीहरूले योग्यताका आधारमा प्रथमा (कक्षा ८) र पूर्वमध्यमा प्रथम खण्ड (कक्षा ९) सम्ममा प्रवेश पाएपछि यहाँबाट उत्पादित प्रारम्भकालीन विद्यार्थीहरूको औपचारिक शैक्षिक यात्रा प्रारम्भ हुन्थ्यो। पछि यस विद्यालयले एस.एल.सी. बोर्डअन्तर्गत वनकाली वेदविद्याश्रमकै जस्तो पाठ्यक्रममा माध्यमिक तहको स्वीकृति प्राप्त गरेपश्चात् बल्ल आफ्ना विद्यार्थीलाई पठनको स्तरअनुसारको प्रमाणपत्र जारी गर्न सक्ने अवस्था बन्यो। विद्यालयलाई स्वीकृत गराएर राम्ररी सञ्चालन गर्ने वातावरण बनाउन्जेल श्री विष्णुभक्त भण्डारी गुरुज्यूले विनापारिश्रमिक अध्यापन गराउनुभएको योगदानलाई स्वर्णाक्षरमा लेखिनुपर्दछ। आज यस स्वर्ण स्मारिका पुस्तिकामा पूर्वविद्यार्थीका नाताले यो कुरा लेख्न पाउँदा यस पङ्क्तिकारलाई निकै गौरवको अनुभूति भएको छ। उहाँले बेतन भोग गर्नुभएन, गुरुदक्षिणालाई अवमूल्यन गर्नुभएन। बरु विद्यालयको भौतिक सम्पन्नताका लागि आफ्ना तर्फबाट आर्थिक र भौतिक सहयोग गरि नै रहनुभयो।

विद्यार्थी सङ्ख्यामा ५० देखि २०० को हाराहारीमा उतारचढाव देखिँदै आए पनि संस्कृत शिक्षाको विश्वव्यापीकरण र जनस्तरमा आएको सतेचना र आकर्षणका कारण यहाँ विद्यार्थी सङ्ख्यामा वृद्धि हुने सम्भावना बढिरहेको देखिन्छ। हाल १२ कक्षासम्म सञ्चालनमा रहेको यस विद्यालयले भविष्यमा शास्त्री (स्नातक) सम्म अध्यापन गराउने तयारीका लागि नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयसँग सम्बन्धनको पहलकदमी र भौतिक सुविधाको विकास गर्न थाल्नुपर्ने देखिन थालिएको छ। यस विद्यालयको शैक्षिक अवस्थालाई बुँदागत रूपमा यसरी समेट्न सकिन्छ :

१. प्रारम्भमा गुरुकुल प्रणालीअन्तर्गतको ग्रन्थअध्ययन परम्पराको अनौपचारिक शिक्षा।
२. २०४६ मा विद्यालयको स्वीकृतिपछि औपचारिक शिक्षा प्रदान गर्दै आवासीय संस्कृत मा.वि.का स्वरूपमा विकसित गरिएको।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. विद्यार्थी अभिभावक र जनचाहनाअनुरूप २०७४ देखि ११ र १२ कक्षाको पनि अध्ययन अध्यापन प्रारम्भ।
४. गुरुकुल परिपाटीको शिक्षाको पनि निरन्तरता, भावनाको र स्वरूपको निरन्तरता।
५. भविष्यमा शास्त्री (स्नातक) सम्मको अध्ययन र अध्यापनको व्यवस्था मिलाउनुपर्ने आवश्यकता देखिएको।

५.३ विद्यालयको गुणस्तरीयता

प्राचीन गुरुकुलीय पद्धतिमा शिक्षाको गुणस्तरीयता मापनका आधारहरू भिन्नै थिए। माथि १.३ मा उल्लिखित चौसठ्ठी कला विद्याको गुणस्तर मापनका आधारहरू यसको उद्देश्यसँग सम्बन्धित छन्। चौसठ्ठी कला विद्याको गुरुकुलीय पाठ्यक्रम त अत्यन्त व्यापक देखिन्छ। यसमा धेरै विषयहरू समावेश देखिन्छन्। साधारण मानिसको एउटा जीवनले ती सबै विषयको अध्ययन गर्न सक्ने अवस्था पनि देखिँदैन। सबै कृष्ण, बलरामजस्ता विद्यार्थी हुँदैनन्। यहाँ मुख्यतया (क) ज्ञानको वृद्धि (ख) सदाचारमा प्रवृत्ति (ग) जीविकोपार्जन (घ) इच्छासिद्धि र (ङ) पारलौकिक कल्याण यी चार उद्देश्य राखेको देखिन्छ। यसलाई घुमीफिरी धर्म, अर्थ, काम र मोक्षजस्ता चतुर्वर्ग पुरुषार्थमै समावेश गरिन्छ। यिनै उद्देश्यलाई आधार मानेर प्राप्त गरेका विद्याको गुणस्तर मापन गरिन्थ्यो। यसै मापनलाई आधार मानी पछि विकसित गुरुकुल प्रणालीअन्तर्गतका शिक्षालयहरूमा खास गरेर ग्रन्थ अध्ययनको शिक्षण हुने हुँदा आधारभूत ग्रन्थहरू प्रस्थानत्रयी वा प्रस्थानपञ्च ग्रन्थमा प्राप्त गरेको दक्षताका आधारमा मूल्याङ्कन गर्ने परिपाटी विकसित भएको देखिन्छ। प्रस्थानत्रयीमा प्रारम्भका तीन लघुसिद्धान्त कौमुदी, अमरकोश र रघुवंश महाकाव्यका विभिन्न सर्गलाई लिन सकिन्छ। यिनमा थप २ तर्कसङ्ग्रह र तत्त्वबोधलाई जोड्दा प्रस्थानपञ्च हुन्छ। यी समस्त संस्कृत शिक्षाका आधारभूत ग्रन्थ हुन्। संस्कृत वाङ्मय वेदवेदान्त, व्याकरण, काव्यकोश अध्ययनको प्रस्थानबिन्दु यिनै ग्रन्थबाट प्रारम्भ हुने हुँदा गुरुकुल शिक्षाको प्रारम्भिक गुणस्तरीयता यिनैबाट मापन हुने गर्दथ्यो। प्रारम्भिक साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको गुणस्तर मापनका आधार पनि यिनै ग्रन्थ थिए भन्न सकिन्छ।

पछि शिक्षामा पाश्चात्य चिन्तनको प्रभाव पर्दै गएपश्चात् ग्रन्थ अध्ययन नभएर कक्षा अध्ययनको परम्परा विकसित भयो। मेकाले नामका बेलायती शिक्षाविद्ले लन्डनमा सन् १९३५ मा त्यहाँस्थित संसद्मै भाषण दिएर आफ्ना देशको पद्धति र आचरण अनुकूलको शिक्षा प्रणालीको विकास गरी अन्यत्र पनि लागू गराउन योजना बनाए। मेकाले ठूलो कूटनीतिज्ञ पनि भएकाले उनले यस योजनामा आफ्नो भाषालाई विश्वभाषा बनाउने र आफ्नो सभ्यता-संस्कृतिलाई विश्वको प्रणाली बनाउने गरी पाठ्यक्रमको योजना बनाए। उनले भारतमा यसलाई लागू गराए। मेकालेका निम्न ६ वटा योजनाले वैदिक शिक्षा र जीवन पद्धतिका निम्न ६ वटा पक्षमाथि प्रहार भयो भन्ने देखिन्छ। १. क्लासबाट शिक्षामा,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. कोर्टबाट सम्पत्तिमा, ३. क्लबबाट शील र मर्यादामा, ४. वेदप्रतिको अनास्थाबाट आस्थाको जग हल्लाइदिने, ५. सनातन व्यवस्थाप्रति अनास्था फैलाएर मौलिक प्रकल्पमाथि अनास्था जगाइदिने र ६. भारतीय धर्मदर्शनमा धेरै धर्माचार्यहरू खडा गरेर एकतामा प्रहार गर्ने। यसको असर हालसम्म पनि भोगिराख्नुपरेको छ (शङ्कराचार्य, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, प्रवचन स्रोतः गुगल-युटुब)।

१. कक्षा पद्धतिको विकासपछि ३३ प्रतिशत जाने पास हुने भयो। २. कोर्ट वा अदालती झन्झटका कारण मुद्दा गर्दागर्दै सम्पत्ति सकिने भयो। ३. क्लब वा डिस्कोमा गएर मदिरा सेवन गरेपछि शील नाश हुने भयो। ४. वैदिक वाङ्मयमा अनास्था फैलिएपछि यसको जग कमजोर हुने नै भयो। ५. आफ्नो जग कमजोर भएपछि सनातन संस्कृतिमाथि प्रहार हुने नै भयो। ६. एउटै संस्कृति मूलमा धेरै धर्माचार्यहरू भएपछि आन्तरिक अस्वाभाविक प्रतिस्पर्धाबाट फुट गराउन सजिलो हुने नै भयो। यसले बहुसङ्ख्यक जनताको पनि शक्ति तितरबितर हुने नै भयो (स्रोत, उही)।

जहाँसम्म साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको गुणस्तरको प्रश्न छ, कक्षाप्रणाली लागू नभएका बखतको होस् वा लागू भइसकेको अवस्थामा होस् यहाँको उत्पादन गुणस्तरीय नै देखिन्छ। यहाँको उत्पादनले निम्न क्षेत्रमा गुणस्तरीयताका साथ कार्य गरिरहेको पाइन्छ :

१. यहाँको उत्पादन बहुसङ्ख्यामा शिक्षण र प्राध्यापन पेसामा संलग्न छ।
२. प्रशासनिक क्षेत्रमा पनि एस.एल.सी. बोर्डको नियन्त्रक र क्याम्पस प्रमुखसम्म भएर यहाँको उत्पादनले कुशलतापूर्वक कार्यसम्पादन गरिसकेको छ।
३. विश्वविद्यालय अनुसन्धान केन्द्रको प्रमुख, विभिन्न क्याम्पसमा अनुसन्धान एकाइको प्रमुख, प्रकाशन एकाइको प्रमुख भएर काम गरेको छ।
४. विभिन्न सङ्घ-संस्थाको प्रमुख, सञ्चालक र जिम्मेवारीमा बसेर काम गरिरहेको छ।
५. व्यासाचार्य, धर्माचार्य र पुराणाचार्य भएर पनि समाज र राष्ट्रमा योगदान पुर्‍याएका छन्।
६. वैदिक सनातन कर्मकाण्ड-पद्धति र मठमन्दिरमा नेतृत्वदायी भूमिका निर्वाह गरेको छ।
७. ब्रह्मविद्या, वास्तुशास्त्र, व्याकरण र ज्योतिषशास्त्रमा गुणस्तरीय उत्पादन छ।
८. आधुनिक शिक्षाको पनि अध्ययन गरी प्राचीनता र आधुनिकताबीच वैज्ञानिक समन्वयको खोजी गर्न थालिएको छ।

५.४ उत्पादित विद्यार्थीका प्रयोजनक्षेत्र : कार्यक्षेत्र

साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयबाट उत्पादित विद्यार्थीहरूको प्रयोजन वा कार्यक्षेत्र उनीहरूले दिन सक्ने योगदान, व्यक्ति, समाज र राष्ट्रको कल्याणका लागि काम गर्न सक्ने कार्यक्षेत्र पहिचान गर्नुपर्ने आवश्यकता देखिन्छ। सामाजिक तथा राष्ट्रिय जीवनका विविध क्षेत्रमा योगदान गर्न सक्ने प्रयोजनका दृष्टिले हेर्दा निम्न क्षेत्रमा यहाँका विद्यार्थीले कार्य गरिरहेका र गर्न सक्ने देखिन्छ। उदीयमान नवयुवकहरूले यसमा अझ ध्यान देलान् भन्ने अपेक्षा गरिन्छ :

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(क) वेदवेदाङ्गलगायत पूर्वीय वाङ्मय तथा दर्शनका क्षेत्रमा अध्ययन र अनुसन्धान गरी त्यसबाट निष्कर्ष निकालेर नेपाली समाजलाई अनुप्राणित गराउने।

(ख) संस्कृत वाङ्मयका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ र कृतिहरूको नेपालीमा अनुवाद गरी त्यहाँ रहेको ज्ञानराशि सार्वजनिक हितका लागि सबैलाई बाँड्ने काममा सहयोग गर्ने।

(ग) विश्वविद्यालयका माथिल्ला कक्षाहरूमा दुरूह मानिएका पौरस्त्यशास्त्र र काव्यशास्त्रसम्बन्धी विषयमा अध्ययन अध्यापन गर्ने र यसको अभावपूर्तिका लागि आधिकारिक ग्रन्थ निर्माण गर्ने।

(घ) नेपाली भाषाको पनि मातृभाषा संस्कृत भएकाले यसमा अध्ययन गरी दिगो विकासमा सहयोग पुर्याउने।

(ङ) पुराण-प्रवचन, धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्य, अभिमुखीकरण एवं ज्येष्ठ नागरिकसम्मलाई समेत विश्वास र साथमा लिएर सामाजिक तथा लोककल्याणका कामको नेतृत्व लिने।

(च) आधुनिक अङ्ग्रेजी भाषाको पनि अध्ययन गरी जहाँसम्म नेपाली पुगेका छन्, त्यहाँसम्म पुगेर 'संस्कृतिदूत' बनी भाषा, संस्कार र संस्कृतिका क्षेत्रमा काम गर्ने।

(छ) धार्मिक अनुष्ठान, कर्मकाण्ड, वास्तुशास्त्र तथा ज्योतिष शास्त्रसम्बन्धी जनसरोकारका विषयमा कार्य गर्ने।

(ज) संस्कृतको प्रचार-प्रसार अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमा समेत फैलिई विश्वव्यापीकरण हुन गइरहेको परिप्रेक्ष्यमा यो अन्तर्राष्ट्रिय आवश्यकताको पनि परिपूर्ति गर्न आधार बन्ने।

५.५ भावी कार्ययोजना र दिशानिर्देशन

गुरुकुलमा अध्ययन गर्ने वा संस्कृत वाङ्मयको अध्ययनमा समर्पित विद्यार्थीहरूलाई राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय मञ्चका ख्यातिप्राप्त क्षेत्रमा समेत सहभागी बनी ज्ञानविज्ञान क्षेत्रमा अध्ययन गर्ने अन्य विद्यार्थीहरूका समान र आफ्नो अध्ययन र पहिचानको विशिष्टीकरणसहित एउटा शक्ति र सामर्थ्यमा पुर्याई राष्ट्रिय जीवनको सम्मानित अवस्थामा स्थापित गर्नु छ। त्यस भूमिका र हैसियतमा पुग्न र पुर्याउन केही भावी योजना र दिशानिर्देशको पनि आवश्यकता देखिन्छ। त्यस्ता केही विषयलाई यहाँ प्रस्तावित गर्ने प्रयास गरिएको छ :

(क) माथि ५.४ क, ख, ज, बुँदामा दिइएका कार्यक्षेत्रका विषयलाई राम्ररी निर्वाह गर्न गुरुकुल शिक्षा प्रणालीको जगमा चलेका साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय जस्ता विद्यालयले वेद, व्याकरण, ज्योतिष जस्ता प्राचीन विषयका साथसाथै अङ्ग्रेजी, गणित र विज्ञान जस्ता आधुनिक र सार्वभौम विषयको पनि ज्ञान दिन सक्ने गरी कार्ययोजना बनाउनुपर्ने।

(ख) प्राचीन गुरुकुलमा अध्ययन-अध्यापन गराइने चौसठ्ठी कलाका कतिपय विषयमा हाल पनि अत्याधुनिक र व्यावसायिक मानिएका विषयहरू पर्दछन्। यिनीहरूको हाराहारीमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुग्न आधुनिक चिकित्साशास्त्रका स्थानमा आयुर्वेद, इन्जिनियरिङका स्थानमा वास्तुशास्त्र, राजनीतिशास्त्र र अर्थशास्त्रका स्थानमा प्राचीन कौटिलीय अर्थशास्त्रको अध्ययन-अध्यापन गर्ने प्रणालीको विकास गर्ने, यस प्रकारको शिक्षातर्फ अभिमुखीकरण गर्ने।

(ग) वेदको विश्वभाषामा व्याख्या, उपनिषद्, पुराण, गीता, पूर्वीय वास्तुशास्त्र आदिको राम्रो व्याख्याताको आज पनि खाँचो छ। यस आवश्यकताको परिपूर्ति गर्ने गरी कार्ययोजना बनाएर अध्यापन गर्ने हो भने नाम, काम र दाम तीनैमा यस क्षेत्रका अभिभावक र विद्यार्थीहरूले गौरवको अनुभूति गर्न सक्छन्।

(घ) अहिले नेपालभित्रै केही मानिसहरूले संस्कृतको विरोध गरिरहेको देखिन्छ भने अमेरिकी वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्र (नासा) ले सन् २०३० सम्ममा अन्तरिक्षसम्म पनि उच्चरित ध्वनिमा विकृति नआउने संस्कृतलाई माध्यम भाषा बनाई नयाँ स्मार्ट टकिङ कम्प्युटर निर्माण गरिरहेको कुरा समाचारमा आइसकेको छ। अमेरिका, बेलायत, जर्मनी, भारतलगायतका देशले यसको महत्त्व बुझिसके। अहिले 'चीनमा पनि संस्कृत भाषाको पढाइ सुरु' (उपाध्याय) भनेर समाचार आइरहेको छ। तर विडम्बना भन्नुपर्छ, हामीले हाम्रै मानिसलाई बुझाउन सकिरहेका छैनौं। बत्तीमुनि अँध्यारो हुने अवस्था भइरहेको छ।

(ङ) मानव संसाधनको विकासमा *'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'* जन्म दिने आमा र जन्मभूमि स्वर्गभन्दा पनि महान् र गरिमामय हुन्छन्। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सम्पूर्ण पृथ्वी र यहाँका सबै मानिस कुलकुटुम्बसमान हुन् भन्ने राष्ट्रवादी तथा मानवतावादी सोच भएका मानिसहरू, विचारकहरू, तत्त्वचिन्तकहरू, समाजसेवीहरू, योजनाविद्हरू प्रथम श्रेणीमा परेको देखिन्छ। यिनीमध्ये कतिले त विनापारिश्रमिक लोककल्याण र राष्ट्रहितको काम गर्दछन्। हामीलाई यसै क्षेत्रका हाम्रा अग्रजहरूले बाटो देखाइदिएका छन्। यस्तै अवस्थाबाट तातेताते गर्दै उठेका कयौं बालकहरू आज विश्वविद्यालयका कुलपति बनेका छन्, राजनेता बनेका छन्, कुशल प्रवक्ता बनेका छन्, राम्रा अध्यापक बनेका छन्, कुशल प्रशासक बनेका छन्। यति मात्र होइन दानी, ज्ञानी, ध्यानी र योगी पनि बनेका छन्। यी सबै हाम्रो सभ्यताका दिशानिर्देशक हुन्। यीमध्ये कुनै व्यक्तित्वलाई अपनाई त्यसको चूडान्त परिणतिमा पुर्याएर यहाँबाट उत्पादित विद्यार्थीले मानव जीवन सार्थक पार्न सक्छन्।

पूर्वीय ज्ञान, शिक्षादीक्षाको आदर्श बोकेका स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गान्धी, भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, खप्तड बाबा, स्वर्गद्वारी महाप्रभु, बालागुरु षडानन्दजस्ता महापुरुषहरूको आदर्शलाई पुनर्जागरण गरी यस धर्तीलाई सदासदा शान्तिपूर्ण, समुन्नत र समृद्ध बनाउनुपर्ने आवश्यकता छ। देशका जनताले अपनाइराखेको आआफ्नो सनातन परम्परालाई सुदृढ पार्न नैतिक, वैचारिक र आर्थिक दृष्टिले पनि सक्षम नागरिकको आवश्यकता छ। यसका लागि एकपक्षीयमात्र होइन, बहुपक्षीय विद्याले युक्त नागरिक उत्पादन गर्नुपर्ने अवस्था आएको छ। अबको संस्कृत शिक्षाले यस आवश्यकतालाई पनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूरा गर्ने गरी नेतृत्व लिनुपर्दछ। हामीलाई वेदले पनि यही आदेश दिएको छ -*'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'* हामी राष्ट्रमा अगुवा भएर जागौं। त्यस्तै

सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्र विदर्हीति।।
(भागवत ४, अ. २२/४५)।

सेनापति, राज्यप्रमुख, दण्डाधिकारी, नेतृत्वकर्ता तथा सम्पूर्ण लोकलाई सञ्चालन गर्न पनि वेदशास्त्रको ज्ञाता योग्य हुन्छ। यसो भनेर भागवतले नै हीनताबोधी नभईकन आइपर्ने सम्पूर्ण कामको नेतृत्व गर्न सक्ने सुयोग्य नागरिक हुन प्रेरणा दिई मार्ग प्रशस्त गरिदिएको छ। मठाधीश, पीठाधीश र शङ्कराचार्यसम्म बन्ने बाटो देखाइदिएको छ। मस्तिष्कमा समझदारी, काँधमा जिम्मेवारी र हृदयमा इमानदारी भएका पात्रको सर्वत्र खाँचो छ। संस्कृत शिक्षाप्रणाली यसै खालको चरित्रनिर्माणको अपेक्षा राख्छ।

सन्दर्भ सामग्री

अधिकारी, विष्णुप्रसाद (२०६०), माध्यमिक तह अध्यापन अनुमतिपत्र दर्पण, काठमाडौं : आशिष पुस्तक भण्डार।

उपाध्याय, भीम, श्रेसु. कम अनलाइन समाचार (१८-०३-२०२१-१५३३-)।

गोयन्दका, हरिकृष्णदास (२०३८), ईशादि नौ उपनिषद् (नवौं सं.), गोरखपुर : गीताप्रेस।

पोखरेल, बालकृष्ण र अन्य (२०४०), नेपाली बृहत् शब्दकोश, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान।

देवाचार्य, राधाव्रजेशशरण भागवती गुरुजी महाराज, वृन्दावन : श्रीमद्भागवत स्वाध्ययन संस्थान (वृन्दावन अध्ययनका क्रममा)।

भट्टराई, ज्ञानेश्वर (२०५२) शिक्षासेवा दिग्दर्शन, काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार।

व्यास, (२०३३), श्रीमद्भागवत महापुराण (द्वि.ख. सातौं सं.) गोरखपुर : गीताप्रेस।

व्यास, (२०६७), श्रीमद्भागवत महापुराण (मूलमात्र, तेत्तीसौं सं.) गोरखपुर : गीताप्रेस।

शर्मा एन्ड शर्मा (२०६४), शिक्षाका आधारहरू, काठमाडौं : एम.के. पब्लिसर्स एन्ड डिस्ट्रिब्युटर्स।

शङ्कराचार्य, स्वामी निश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज, गुगल र युटुब : श्रव्यदृश्य प्रवचन।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरुमहाराज र उहाँबाट स्थापित संस्थाहरू

✍ गोविन्दप्रसाद पौडेल

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।

नेपालको पूर्वाञ्चल क्षेत्र र आसामको सदियासम्मका विभिन्न स्थानमा पुगी वैदिक सनातन धर्मको प्रचार-प्रसार, गुरुकुलीय वैदिक वाङ्मयको अध्ययन-अध्यापन, सदाचार, निष्ठा, ध्यान, योग, यज्ञ र परोपकारका क्षेत्रमा आजीवन समर्पित भई सुशिक्षित सभ्य समाज निर्माणमा लागिपर्नुहुने ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरु महाराजको जन्म, शिक्षा, गृहस्थी जीवन, साधना, तपस्या, अनुष्ठान, तीर्थयात्रा, सन्न्यास ग्रहण, शैक्षिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रबाट सामाजिक योगदान र समाधिसम्मका विषयलाई प्राप्त सन्दर्भ-सामग्रीहरू र श्रुतिप्रमाणका आधारमा जीवनीपरक ढङ्गले चर्चा गर्दै उहाँबाट स्थापित चारवटा संस्थाहरूको सङ्क्षिप्त परिचय प्रस्तुत गर्ने काम यस लेखमा गरिएको छ।

जन्म र शिक्षा

श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ आत्रेय गोत्री पौडेल वंशवृक्षको ५३ औं पुस्तामा पं. हेमलाल र धनमाया पौडेलको दोस्रो पुत्ररत्नका रूपमा वि.सं. १९६२ साल माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी (सरस्वती पूजा) का दिन पाँचथर जिल्ला उत्तरपूर्वी सुन्दर पहाडी गाउँ मच्छेबुङमा जन्मिएका बालकको नाम देवीप्रसाद पौडेल राखियो। उहाँ नै समय र कर्मसँगै ध्यानी, ब्रह्मचारी हुँदै सन्न्यास आश्रम ग्रहणपछि परमहंस श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीका नामले सम्बोधित हुनुभए तापनि उहाँलाई माहिला गुरु विवेकानन्द भनेर चिन्ने गरिन्छ।

साधु पौडेल भनिने जेठा हजुरबा मित्रलाल पौडेलको न्यानो स्नेह पाउँदै उहाँले बाल्यजीवन यापन गर्नुभयो। शारीरिक रूपमा अग्ला, हृष्टपुष्ट, दरिला, निडर एवम् गम्भीर स्वभावका, निर्णयात्मक विचार व्यक्त गर्ने अन्तर्मुखी प्रवृत्तिका तेजस्वी व्यक्तित्व बन्दै जानुभयो। उहाँको स्मरणशक्ति तीव्र थियो। हजुरबा र बुबासँगै घरगोठमा रहँदा उहाँहरूले पाठ गर्ने र भन्ने गरेका स्तोत्रहरू रामगीता, कोमलगीता शिव महिम्नःस्तोत्र, विष्णुसहस्रनाम,

✍ *पूर्वविद्यार्थी तथा पूर्वशिक्षक-सा.सं. मा.वि चारपाने, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्गाशप्तसती, हनुमान चालिसा, तत्त्वबोध आदि सुनेरै मुखाग्र पार्नुहुने उहाँले हजुरबा मित्रलाल पौडेलकै काखमा कखरा सिकी साक्षरता हासिल गर्नुभयो।

आठ वर्षकै उमेरमा व्रतबन्धादि संस्कार प्राप्त गरेपछि रुद्राष्टाध्यायी, अग्निस्थापनालगायत पूजापद्धतिहरू हजुरबाबाटै अध्ययन गरी उत्कृष्ट रुद्रीपाठक बालकका रूपमा त्यस क्षेत्रमा सुपरिचित हुनुभयो। शुक्लयजुर्वेद र उपनिषद् अध्ययन गरेका हजुरबाले आफ्ना दौंतरी गोठालाहरूसँग उपनिषद् वाक्य *ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः* आदिको वेदान्तचर्चा गर्दा उहाँ चाख मानेर सुन्ने गर्नुहुन्थ्यो। हजुरबुबा साधु पौडेलले मच्छेबुङको पुछारमा रहेको ओडार (साधुगुफा) मा ध्यान गरेर बस्ने गरेको ठाउँसमेत देखुभएको थियो। हजुरबाको यही तपस्वी प्रभावको अमिट छाप नै उहाँमा ध्यान, योग साधना र ज्ञानका प्रेरणाको प्रमुख स्रोत बन्न पुग्यो।

बुवा-आमा र हजुरबा-हजुरआमाको आग्रहले तत्कालीन समाजको चलनअनुसार ११-१२ वर्षकै उमेरमा वैवाहिक संस्कार ग्रहण गर्नुभए तापनि २४ वर्षको उमेरसम्म घरगोठलगायत विभिन्न स्थानमा पुगेर पठन, जप, ध्यान र योगसाधनामा सरिक हुनुभयो। वाराणसीमा पढेर आएका इलाम चमैताका वेदपाठी गुरु लोकनाथ भट्टराईसँग सार, स्वर, घन, जटासहित केही समय वेदको अध्ययन गर्नुभयो। गुरुको तीक्ष्ण स्मरणशक्ति देखेर भट्टराई गुरुसमेत प्रभावित भई मुक्तकण्ठले उहाँको प्रशंसा गर्नुहुन्थ्यो। जप र ध्यानको एकाग्रताले स्मरणशक्तिको विकास गर्ने हुँदा थोरै पढेर पनि धेरै जान्ने र सम्झिरहन सक्ने क्षमता उहाँमा थियो।

यसपछि पूर्वी नेपालका विशिष्ट विद्वान् पं. यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) सँग गायत्री उपासना विधि र पूर्वीय वेदान्त दर्शनको गहन अध्ययन गरेर ताप्लेजुङ हाङपाङका पं: अविचन्द्र भण्डारी गुरुसँग केही समय बसी साङ्ख्य, वेदान्त दर्शनको अध्ययन र गायत्री पुरश्चरण विधिबारे ज्ञान प्राप्त गर्नुभयो। जिज्ञासु स्वभाव भएका र वेदाध्ययनमा अत्यन्तै रुचि राख्ने उहाँले दिङ्ला पाठशाला र बालागुरु षडानन्द अधिकारीको विद्वत्ताको महिमा सुनेर हजुरबा गोठमै भएको मौका पारी दिङ्ला पाठशाला पुगेर षडानन्द गुरुको दर्शन गरी केही समय बसी वेदाध्ययन गर्नुभयो। स्वास्थ्य प्रतिकूलताले लामो समय अध्ययन गर्न नपाई फर्केर गोठमै आउनुभयो। वि.सं. १९८३ मा स्वर्गद्वारी आश्रम प्युठानबाट स्वामी कपिलानन्द (स्वर्गद्वारी महाप्रभुका शिष्य) जोरपोखरी क्षेत्रमा आएर चार महिनासम्म लक्षहवन महायज्ञ गराउनुभयो। स्वामी कपिलानन्दबाट स्वर्गद्वारी आश्रमको महिमा सुनेर महाप्रभुको दर्शन गर्न जाने इच्छा भई प्युठान स्वर्गद्वारी पुगेर गुरुको दर्शन गर्नुभयो। ध्यानमा तन्मय भएको देखी प्रभु महाराजले "ध्यानी ब्रह्मचारी रहेछौ" भनी शुभाशिष प्रदान गर्नुभयो।

पाँचथर गोपेटारमा ओझा वंशमा जन्म लिएका, स्वर्गद्वारीमा अध्ययन गरेका, स्वर्गद्वारी महाप्रभुका प्रिय शिष्य, तत्त्वदर्शी सिद्धपुरुषका रूपमा चिनिएका ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मज्ञानी गुरुका रूपमा प्राप्त गरी उहाँले ब्रह्मदीक्षा लिनुभयो भने जोरपोखरी सिद्धस्थलमा उहाँसँगै रहेर वि.सं. १९८७ पछिका दिनहरूमा ब्रह्मसूत्र, शाङ्करभाष्य, उपनिषद्हरू, साङ्ख्य, वेदान्त दर्शन आदिको अध्ययन गर्ने अवसर प्राप्त गर्नुभयो। आफ्नो अन्तर्हृदयले चाहेजस्तै गुरु प्राप्त हुनुभएकोमा पुलकित हुँदै यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधिजस्ता अष्टाङ्ग योगको साधना, षट्चक्र चिन्तनविधि, अष्टसिद्धि प्राप्तिका प्रक्रिया, गायत्रीरहस्यको चिन्तनका साथै पूर्वीय दर्शनको साङ्गोपाङ्ग अध्ययन उहाँसँगै गर्नुभयो।

गृहस्थी जीवन

गृहस्थी जीवन जिउने सन्दर्भमा केही वर्ष मच्छेबुङमा बसेपछि एकतिनको खग्रेटी भन्ने ठाउँमा बसाइँ सर्नुभयो। उहाँबाट दुई छोराहरू उदयराज र बोधराजको जन्म भयो। व्रतबन्धादि संस्कार गरिदिएर जेठा छोरा उदयराजलाई पूर्वकै प्रसिद्ध शैक्षिक संस्था दिङ्ला पाठशालामा पढ्न भनी पठाउनुभयो। दिङ्ला पाठशालामा अध्ययन गर्दागर्दै जेठा छोरा उदयराज (विवाहित) को १६ वर्षकै उमेरमा र यता कान्छा छोरा बोधराजको ९ वर्षकै उमेरमा आकस्मिक निधन भयो। चारवटी छोरीहरू विवाहपश्चात् आआफ्ना कर्मघरतिर गए भने कान्छी छोरीको विवाह नहुँदै निधन भयो। गृहस्थी जीवनमा आइपरेका यी शोकजन्य पीडालाई बिर्सिएर शान्ति प्राप्त गर्ने साधना केवल परमात्मा चिन्तन नै हो भन्ने बुझेका गृहस्थ-योगीका लागि पहाडी गुफा-कन्दराहरू नै रोजाइ र भोगाइका ठाउँ बन्न पुगे। उहाँ २०१२ सालमा घरबार त्यागी 'आत्मा खलु विश्वमूलम्, वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'को मर्मलाई चरितार्थ पार्दै आजीवन तपश्चर्या, वैदिक वाङ्मयको विस्तार र सभ्य समाज निर्माणका लागि निस्कनुभयो।

साधना र तपस्या

वि.सं. १९९७ मङ्सिर शुक्ल पञ्चमीका दिन स्वर्गद्वारी महाप्रभु हंसानन्द गिरि महाराजले स्वर्गद्वारीमै पाञ्चभौतिक शरीर त्यागी ब्रह्मलीन हुनुभएको कुरा जोरपोखरी सिद्धस्थलमा रहनुभएका उहाँका शिष्य ब्रह्मज्ञानी ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुले थाहा पाउनुभएपछि आफ्नोसमेत समय आइसकेको बुझी आफूसँगै रहेका शिष्यहरू हरिदत्त पौडेल (जेठा गुरु योगानन्द) देवीप्रसाद पौडेल (माहिला गुरु विवेकानन्द) लाई "तपाईंहरू दुवै जनाको आजको ३३ वर्षपछि भारत, उत्तराखण्डको भागीरथी तटमा समाधि हुनेछ। देह सन्न्यास हुनुअघि आत्मसन्न्यास हुनू, यस धर्तीबाट म बिदा हुने ठाउँ भारतको अयोध्यापुरी सरयू नदीको किनार तोकिएकाले म पनि यहाँबाट प्रस्थान गर्दै छु" भनी भविष्यवाणी गरी १९९७ सालको अन्त्यतिर ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुले जोरपोखरी सिद्धस्थल छोड्नुभएपछि तपश्चर्याका लागि एकान्त स्थलको खोजीमा गुफा, ओडारहरूमा तपस्या गर्दै रहन थाल्नुभयो।

योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये लाई आत्मसात् गर्नुहुने उहाँलाई घरभन्दा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनकन्टार ओडार, गुफा, नदीकिनार र घना जङ्गलका एकान्त स्थल नै प्यारा थिए। गुरुलाई दर्शन गर्न घरमा होइन, गुफाहरू खोज्दै जानुपर्थ्यो। उहाँ बाघ, भालु बस्ने ओडारहरूमा हिंस्रक जनावरहरूसँग पनि मैत्री व्यवहार गरेर बस्न सक्नुहुन्थ्यो। मच्छेबुङ हेवाँ नदीको किनारमा रहेको महादेवस्थानको ओडार र खुँगाभन्दा माथिको लेकमा नन्दीगुफा, गजानन गुफा आदि धेरै विकट गुफाहरू रहेका छन्। ती गुफा र ओडारहरूमा जलाहार, फलाहार, कन्दमूल र वनौषधिहरू खाएर महिनौं दिनसम्म ध्यानमा रहने गर्नुहुन्थ्यो। साधारण मानिस पुग्न नसक्ने महादेव स्थानको साधु ओडारमा बसेर गायत्री पुरश्चरण गर्नुभई यज्ञयागादि कार्यहरूसमेत गराउनुभयो। खुँगाभन्दा माथिको उच्च पहाडी लेकको जङ्गलमा लामो समयसम्म बसेर तपश्चर्या गर्नुहुने गुरुले अष्टसिद्धि साधना गर्नुभएको थियो।

उहाँले निकट भविष्यमा हुन सक्ने प्राकृतिक प्रकोपबारे (पहिरो जान सक्ने पूर्वसङ्केत) त्यहाँका गोठालाहरूलाई बताइदिएर गोवंश र मानवजातिको संरक्षण गर्नुभयो। गुरुका सान्निध्यमा गएर ब्राह्मण बटुकहरू वैदिक वाङ्मयको अध्ययन गर्थे। स्थानीय समाजसेवी पदमबहादुर जबेगूका पिता-मातालगायत सन्ततिहरू आफ्नो जातीय वर्णाश्रम धर्मानुसार दीक्षामन्त्र लिएर गुरुका शिष्य बनी गुरुको सेवा र भुवनेश्वरी शक्तिपीठ तेजपुञ्जको विकासमा हालसम्म पनि लागिपरिरहेका छन्। शिक्षा र ज्ञान पुरुषहरूका लागि मात्रै होइन भनी कुमारी र नारीहरूलाई समेत जप, ध्यान र अध्ययनमा सरिक गराउनुभयो। उहाँले पूर्वज पौडेल वंशहरूको बासोबासको बाहुल्य रहेको खाल्डे भन्ने ठाउँको उच्चस्थानमा कुटी निर्माण गर्न लगाएर जप-अनुष्ठानमा स्थानीय पुरुष तथा महिलाहरूलाई सरिक गराउनुभयो। बाल, वृद्ध, वनिता सबैलाई साक्षर बनाउन ठाउँ-ठाउँमा हिउँदे पाठशाला चलाउनुभयो। खाल्डेमा गुरुले गराउनुभएका यज्ञका अवशेष आकृतिहरू अझै पनि देख्न सकिन्छ।

त्रास र आशभन्दा धेरै पर रहेर परोपकार र आत्मिक ज्ञानका लागि दुःख-कष्टको परवाह नगरी तपस्यामग्न हुनुहुने गुरुले तमोर नदीको किनार पिनाकी घाट, थामदिन क्षेत्र, सातथुम्के भ्वान, विश्वेश्वरथुम्की, मिनतिनधाप, सिदिङ्बा गुफा, गोपेटार, अमरपुर आदि दर्जनौं ठाउँमा बृहत् अनुष्ठान र यज्ञहरू गराउनुभयो। तत्तत् क्षेत्रका जनसमुदायलाई वर्णाश्रम धर्म, परोपकार, सदाचार, सत्यवादिता र अनुशासित जीवनशैलीको शिक्षा दिँदै आत्मिक मुक्तिका लागि बाटो देखाउनुभयो। उहाँ पञ्चकर्म कहिल्यै छोड्नु हुँदैन भनी उपदेश दिनुहुन्थ्यो र आफूसमेत गर्नु-गराउनुहुन्थ्यो।

१. वर्णाश्रम धर्मानुसार गायत्री मन्त्र जप गर्नु, गराउनु। २. वेद पढ्नु र पढाउनु। ३. यज्ञ गर्नु र गराउनु। ४. हरिनाम सङ्कीर्तन गर्नु र गराउनु ५. भण्डारा गर्नु, अर्थात् साधु, सन्त, अतिथि, बाल, वृद्ध, ब्राह्मण र दीनदुःखीहरूलाई भोजन गराउनु। उहाँले पालना गर्नुभएका यी पञ्चकर्म थिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकानन्द गुरुमहाराजद्वारा स्थापित संस्थाहरू

१. भुवनेश्वरी धाम विवेकाश्रम, तेजपुञ्ज, आगेजुङ, पाँचथर

विवेकानन्द गुरुले स्थापना गर्नुभएका संस्थाहरूमध्ये पाँचथर जिल्लामा रहेको प्राचीन महत्त्व बोकेको ठूलो धार्मिक संस्थाका रूपमा भुवनेश्वरी धाम, विवेकाश्रम, तेजपुञ्ज, आगेजुङलाई चिनिन्छ। यो ठाउँ पाँचथरको सुभाङ, थर्पू, पञ्चमी र एकतीन क्षेत्रको शिरमा पर्ने मुकुटजस्तै रमणीय पहाडी लेक हो। हिमाली शृङ्खलाहरूलाई नजिकै देख्न सकिने यो उच्च भूभाग धार्मिक पर्यटकीय दृष्टिले अत्यन्तै महत्त्वपूर्ण स्थान मानिन्छ। तपश्चर्याका लागि यस ठाउँलाई गुरुले रोज्नुको पृष्ठभूमि यस्तो रहेको छ।

मिनतिनधाप भन्ने ठाउँमा अनुष्ठान गरेर बसेका बेला रात्रिकालीन समयमा यस उच्च भूभागमाथिको आकाशमा अग्निको ज्योति देख्नुभएको र दबे गोठबाट चैनपुर जाने क्रममा मिल्के भन्ने ठाउँको लेकमा गोठमा बास बस्दासमेत सोही ठाउँमा दिव्य ज्योति देख्नुभई त्यहाँका गोठालाहरूलाई सोध्दासमेत त्यहाँ सधैं ज्योति देखिने कुरा गरेकाले चैनपुरबाट फर्केपछि त्यस ठाउँको खोजीमा अनकन्टार जङ्गल र भिरपाखा छिचोल्दै गुरु त्यहाँ पुग्नुहुँदा अनौठा किसिमका दुईवटा भ्वाङ (सुरुङ) रहेका र त्यहाँबाट रात्रिकालीन समयमा दिव्यज्योति (तेज) पुञ्जका रूपमा प्रकट हुने गरेको देखी त्यहीं बसेर शिवशक्तिको उपासनामा तन्मय हुनुभयो।

समस्त प्राणीहरूलाई समभावले हेर्नुहुने गुरुलाई बाघ, सिंहहरूले पनि मित्रवत् ठानी केही गर्दैनथे। उहाँ मालिङ्गाका टुसा, कन्दमूल र सानो पोखरीमा जमेको शीतल जलमात्र ग्रहण गरी त्यहीं देवीथानका ओडारमा लामो समयसम्म रहनुभयो। लेकतिर गोठ लाने गोठालाहरूले निर्जन वनमा एक्लो मानिस ध्यानमा बसेको देखी गाउँतिर खबर गरे। ४-५ कि.मि. तल गाउँमा रहेका जनसमुदायहरू पक्कै पनि माहिला गुरु नै हुनुपर्छ भनी जयजयकार गर्दै, हरहर महादेव भन्दै आगेजुङका ओडारमा पुगी गुरुलाई दर्शन गरे। ब्रह्माभ्यासानन्द गुरुले सङ्केत गर्नुभएअनुरूप त्यस ठाउँमा प्राचीन कालमा सप्तर्षिहरूले तपस्या र यज्ञयागादि गरेका ठाउँको रूपमा बुझी गुरुले त्यहीं बस्ने इच्छा गर्नुभयो।

ग्रामीण भक्तहरूले गुरुका निमित्त खाद्यान्न सामग्री लगिदिन थाले। गुरुले त्यस सिद्धस्थलको नाम 'श्री भुवनेश्वरी धाम शक्तिपीठ तेजपुञ्ज' भनेर नामकरण गर्नुभयो। खुँगा, खाल्डे, एकतीन, मच्छेबुङ, मेमेङ, च्याङथापु, भारपा, सुभाङ, गोपेटार, मालबाँसे, अमरपुर, याङनाम आदि क्षेत्रमा बसोबास गर्ने तमाम भक्तजनहरू भेला भई काठ, ढुङ्गा आदि सामग्री जुटाई यज्ञशाला, कुटी, गायत्री अनुष्ठान आदि निर्माण गरे। खुँगाका समाजसेवी जगतबहादुर जबेगूले पानीको स्रोत रहेको सानो पोखरीलाई विस्तार गरी सुरक्षा प्रबन्ध मिलाए। टाढा-टाढादेखिका भक्तहरू गुरुको दर्शन गर्न यहाँ आउन थाले। आवत-जावतका लागि गोरेटो बाटो निर्माण गरे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०१२ सालदेखि २०२४ सालसम्म यो ब्रह्मस्थललाई मुख्य आश्रयस्थल बनाई गुरु बस्नुभयो। यस अवधिमा गुरुले धेरैपटक गायत्री मन्त्र जपको पुरश्चरण गर्नुभयो र अरूलाई पनि गराउनुभयो। यस ठाउँमा तीनपटकसम्म लक्षहवन महायज्ञ र धेरैपटक गायत्री अनुष्ठान गराउनुभयो। यी यज्ञहरूमा हजारौं भक्तहरूको उपस्थिति रहन्थ्यो। गुरुले अष्टसिद्धि साधनाको सिद्धि प्राप्त गर्नुभएको थियो। यज्ञहरूमा कसैलाई नभनीकन र नकिनीकन आवश्यक पदार्थहरू उपलब्ध हुन्थे। गुरुको दैविक र चामत्कारिक शक्ति देखेर शिष्य-प्रशिष्यहरू नतमस्तक हुन्थे। शिरदेखि पाउसम्म जटाले परिपूरित हुनुभएका गुरुको अलौकिक दिव्य मुहार देखेर भगवान् भोलेनाथकै प्रतिरूप मानेर श्रद्धा प्रकट गर्थे।

२०२४ सालमा गुरुले यस सिद्धस्थललाई छोड्नुभयो भने शिष्यहरू केदारनाथ खतिवडा, चिदानन्द खतिवडा, नीतिराज रेग्मी, रघुनाथ न्यौपाने, ताराप्रसाद खतिवडा, केदारनाथ पौडेल, जगन्नाथ पौडेल, महेश्वर पौडेल, अकिलप्रसाद जबेगू, पदमबहादुर जबेगू, कमल जबेगू, खगेन्द्र जबेगूलगायतका भक्तहरूले यस आश्रमको भौतिक पुनर्निर्माण, विकास र विस्तारमा आजसम्म पनि सेवा गरिरहनुभएको छ। पाँचथरको प्राकृतिक, धार्मिक पर्यटकीय दृष्टिले सुरम्य बनेको यो ठाउँ श्री भुवनेश्वरी धाम विवेकाश्रम तेजपुञ्ज आगेजुङका नामले प्रसिद्ध रहेको छ। गुरुले स्थापना गर्नुभएको यो आश्रम नै हालसम्म सञ्चालन भइरहेका आश्रमहरूमध्ये पहिलो आश्रम हो। यस आश्रमको भोगमा रहेको भूमि ७० रोपनी जति रहेको छ। अहिले पनि पर्व-पर्वहरूमा यहाँ विशेष धार्मिक कार्यक्रमहरू र अनुष्ठानहरू हुने गरेका छन्।

तीर्थयात्रा र अनुष्ठान

गुरु २०२१ सालमा शिष्य कृष्णानन्द तिम्सिनालाई साथमा लिएर उत्तराखण्ड बद्री-केदार चारधाम दर्शन गरी तेजपुञ्ज आउनुभयो। पाँचथरबाट माहिला गुरु र २०२० तिरै आसाम सदिया जानुभएका जेठा गुरु योगानन्द पनि प्रयागराज जाने क्रममा दुवै दाजुभाइ धरानमा भेट हुनुभयो। दन्तकाली र पिण्डेश्वर महादेवको दर्शन तथा रुद्राभिषेक गरी भक्त कञ्चनलाल, मोतीलाल श्रेष्ठकोमा बास बस्नुहुँदा गुरुका पाउसम्मका जटा, देदीप्य मुखाकृति र तेजोमय स्वरूप देखेर यी दुई भक्तको विशेष आग्रहले गुरुहरू दुवैको तस्विर लिनुभयो। यही दुर्लभ तस्विरलाई नै आज हामीले पूजा-अनुष्ठानमा राखेर पूजा गर्ने सौभाग्य पाएका छौं भने गुरुले लगाउने गर्नुभएका काठका एक जोर खराउ विवेकाश्रम, चारपानेमा सुरक्षित छन्।

धरानमा भेला भएका तमाम भक्तगणका साथ गुरुहरू विष्णुपादुका हुँदै वराहक्षेत्रको दर्शन गरी २०२२ माघमा प्रयागराज महाकुम्भमा पुग्नुभयो। गङ्गा-यमुना-सरस्वतीको सङ्गम त्रिवेणीमा केश मुण्डन गरी जटा विसर्जन गर्नुभयो। उहाँ एक महिनासम्म बसी जप, न्यास-ध्यान, भण्डारा आदि गराएर काशी विश्वनाथको दर्शन गरी चैनपुरका गोपु हवलदार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सन्न्यासपछि चन्द्रशेखरानन्द स्वामी) का साथ काठमाडौं पाशुपत क्षेत्र, देवघाट, त्रिवेणी र जनकपुर धामको दर्शन गरी तेजपुञ्ज आश्रममा आएर केही दिन बस्नुभयो। २०२३ वैशाखमा शिष्य जगन्नाथ पौडेल र परशुराम गुरागाईंलाई साथमा लिई पाथीभरा देवीको दर्शन गर्न जानुभयो। एक महिनासम्म पाथीभरामा शक्ति उपासना र गायत्री अनुष्ठान गरेर समापन गर्नुभयो।

पाथीभराबाट घुन्सा क्षेत्रको भ्रमण गर्दै हिमाली क्षेत्रमा रहेका दूधपोखरी, विष्णुपोखरी, रक्तपोखरी, भालेपोथी पोखरी, भूतपोखरी, लक्ष्मीपोखरी, तावापोखरी, उमापोखरी, सभापोखरी, सिद्धकाली गुफा, इवानागी आदि स्थानहरूको दर्शन गरी यस हिमाली यात्रामा गएका शिष्य जगन्नाथ पौडेल र गोपु हवलदारलाई ती ठाउँहरूको ऐतिहासिक तथा पौराणिक महत्त्व दर्शाउँदै प्राचीन कालमा शृङ्गी ऋषिले तपस्या गरेको ठाउँ भनेर मानिने भन्ज्याङ खर्कभन्दा माथि रहेको सिदिङ्बा गुफामा २०२३ को चतुर्मासामा कठोरतम तपस्या गरेर बस्नुभयो। सिदिङ्बा गुफामा गर्नुभएको यो दोस्रो अनुष्ठान थियो भने २००६ सालमा यसै गुफामा पहिलोपटक तपस्या गर्नुभएको थियो। सिदिङ्बाबाट फर्की तेजपुञ्ज आश्रममा केही दिन बसेर आफ्ना भान्जा टेकनाथ गौतमको घरबारी अखौंलेमा एक महिनासम्म गायत्री अनुष्ठान गराएर उपस्थित ब्राह्मण विद्यार्थीहरूलाई वेदाध्ययनसमेत गराउनुभयो। टेकनाथ गुरुसँग व्याकरण पढ्दै गरेका पं. काशीनाथ दाहाललगायत धेरै विद्यार्थीहरू यस अनुष्ठानमा सहभागी हुनुभयो। यसरी ग्रामीण भेगमा गायत्री अनुष्ठान, वेदाध्यापन र यज्ञहरू गराउँदै २०२४ मङ्सिरसम्म पहाड पाँचथरमा बस्नुभयो।

सन्न्यास आश्रम ग्रहण

२०२४ मङ्सिरमा गुरु आसाम, सदियातर्फ जानुभयो भने भक्तहरूका साथ मकर सङ्क्रान्तिमा परशुराम क्षेत्रको दर्शन गरेर कुटीबा र ऋषिबाहरू बस्नुभएको बालीजान भन्ने ठाउँमा कुटी र पाठशालासमेत निर्माण भइसकेकाले त्यहाँ आएर केही समय बस्नुभयो र उपस्थित विद्यार्थीहरूलाई वेदाध्यापन गराउनुभयो। २०२४ सालको महाशिवरात्रि पावन पर्वको अवसरमा संयोगवश त्यहाँ आइपुग्नुभएका नेपाली मूलका दक्षिण भारत काञ्चीपुरी क्षेत्र शृङ्गेरी मठका परमहंस श्री १००८ स्वामी नारायणानन्द पुरीजी महाराजसँग केही समय त्यहाँ रहनुभयो। उहाँहरूका बीचमा वेदान्तको चर्चा हुने गर्थ्यो। आत्मसन्न्यास भइसक्नुभएका गुरु देवीप्रसाद पौडेलले सन्न्यास आश्रमको दीक्षा लिनका लागि योग्य गुरुको रूपमा नारायण पुरीजीलाई प्राप्त गर्नुभयो। सन्त ब्रह्मचारी देवीप्रसाद पौडेल ब्रह्मानन्दमा तन्मय भइसकेका र योगसिद्ध आत्मसन्न्यास भइसकेका देखी बालीजानभन्दा केही दक्षिण विशाल ब्रह्मपुत्र नदीको तटमा भव्य अनुष्ठान र यज्ञ गराई गुरु नारायण पुरीजीले माहिला गुरु ब्रह्मचारी देवीप्रसाद पौडेललाई चतुर्थ आश्रममा प्रवेश गराउँदै विधिपूर्वक सन्न्यास दीक्षा प्रदान गर्नुभयो। यस यज्ञमा गुरुका शिष्य केदारनाथ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खतिवडाले शुक्लयजुर्वेद पाठ पारायण गर्नुभएको थियो भने ब्रह्मनिष्ठ पुरोहित वासुदेव (भीमप्रसाद) रेग्मीले यज्ञाचार्यको भूमिका निर्वाह गर्नुभएको थियो। भक्तजनहरूको भव्य उपस्थितिमा भएको यो यज्ञ प्रशंसनीय थियो। सन्न्यास ग्रहणपछि उहाँ 'परमहंस श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराज' भनेर सम्बोधित हुनुभयो। यसपछि पनि सदियामा रहेका बाघोली, तिताखोरी मिरिछपडी, कुन्डिलघाट, पदमफुला, स्याङसाप, माझोली आदि ठाउँमा समय-समयमा यज्ञ अनुष्ठान गराउँदै रहनुभयो।

२. शान्तिपुर कुटी

आसाम तिनसुकिया जिल्लामा पर्ने परशुराम क्षेत्रभन्दा करिब ४० कि.मि. पश्चिम शान्तिपुर क्षेत्रमा त्यहाँका आदिवासी आसामे, मिरी, मिस्मी आदि जातिको पातलो बसोवास रहेको र आवादी नगरिएको घना जङ्गली क्षेत्र भएकाले पूर्वी पहाडबाट खान लाउनकै समस्याले त्यहाँ बसाइँ सरी जाने नेपालीहरू कम थिएनन्। वि.सं. २०१० पछिका दिनहरूमा त्यस ठाउँमा बसाइँ जाने नेपालीहरूको लहर नै चलेको थियो। थोरै पैसामा धेरै जग्गा पाइने हुँदा जङ्गली क्षेत्रलाई फँडानी गरेर खेती गरी, गाईबस्तु पाली नेपालीहरू बस्ने गर्थे।

गुरुले आफ्ना शिष्यहरूका साथ शान्तिपुर ग्रामपञ्चायतको ६ नं. क्षेत्र पैदल यात्रा गरी अवलोकन गर्नुभयो। अरुणाञ्चलको पहाडदेखि आएको बाह्रै मास प्रशस्त स्वच्छ पानी बगिरहने नदीको पूर्वपट्टिको उच्च भूभागमा गुरुले केही समय बस्ने इच्छा गर्नुभयो। सो स्थानमा जप अनुष्ठान, यज्ञ, योग आदि र वेदवेदाङ्ग विद्यालयसमेत सञ्चालन गरेर वैदिक सनातन धर्म परम्परा र संस्कृतिको संरक्षण र संवर्धन गरी सभ्य समाज निर्माण गर्दै जाने भन्ने गुरुको सदिच्छालाई आत्मसात् गरी त्यहाँका बासिन्दाले दस बिघाभन्दा बढी जमिन आश्रम निर्माणका लागि गुरुलाई प्रदान गरे। शान्तिपुरी कुटी हाल विवेकानन्दाश्रम नाममा दर्ता भई सञ्चालनमा रहेको छ।

२०२४ सालको अन्त्यमा श्री रामनवमीको शुभमुहूर्त पारी त्यस घना जङ्गलको बीचमा गुरु रहन थाल्नुभयो। गुरु त्यहाँ रहनुभएको कुरा शिष्यहरूबाहेक वरपरका भक्तजनहरूले समेत थाहा पाएर भेला हुन थाले। एकमात्र पानीको स्रोत रहेको त्यस नदीको नाम कञ्चनगङ्गा भनेर नामकरण गरिदिनुभयो। भक्तहरूले भेला भएर जङ्गल फँडानी गरी केही ठाउँ आवादी गरे। गुरु बस्ने पर्णकुटी, पाठशाला, यज्ञशाला, शिवालय, गायत्री अनुष्ठान, पाकशाला, गणेश मन्दिर, यात्री विश्रामालय आदि निर्माण गरी घेराबारासमेत गरे। शान्तिपुर कुटीमा निरन्तर वेदध्वनि र स्वाहाकार शब्द गुञ्जायमान हुन थाले। यज्ञको सुगन्ध चारैतिर फैलिएर सुगन्धित वातावरण बन्न थाल्यो।

आसाम क्षेत्रका वरिष्ठ विद्वान्हरू र सरकारी प्रशासकहरूसमेत गुरुका शरणमा आई सत्सङ्ग गर्दै सहयोग गर्न थाले। वार्षिक विशेष पर्वहरूमा लघुरुद्री, महारुद्री, लक्षहवनजस्ता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यक्रमहरू र ठूला-ठूला भण्डाराहरू हुन थाले। दाताहरूले ल्याएको सामग्री सञ्चय गरेर नराखी गरिब, दीनदुःखी असहाय र अतिथि, सन्तहरूलाई वितरण गर्नुका साथै भण्डारा र यज्ञहरू गराउँदै रहनुभयो। श्रद्धा राखेर शान्तिपुर कुटीमा आउनेहरूलाई पटक-पटक गायत्री पुरश्चरण गराउनुभयो। शतचण्डी पाठ, महारुद्राभिषेक, लक्ष हवनात्मक महायज्ञ आदि बृहत् कार्यक्रमहरू गराउँदै भक्ति, ज्ञान, उपासना, यज्ञ र वेदादिको अध्ययन-अध्यापनको निरन्तरतामा पुनर्जागरण गराउँदै प्रवासी नेपालीको आस्थाको धरोहरका रूपमा शान्तिपुर कुटीलाई स्थापित गरी परिचित गराउनुभयो।

गुरुले इच्छा गर्नुभएका यज्ञ र भण्डाराहरूका लागि सामग्रीहरू किन्नुपर्दैनथ्यो। भक्तहरूले नै आँटा, मैदा, दाल र चिनीका बोरा, सख्खरका टिन र तेलका टिन लिएर आउँथे। दूध, दही, घिउ, सब्जी र फलफूलहरू प्रशस्तै भेला हुन्थे। केराका काइँया होइन, घरी भेला हुन्थे। आश्रमका परिसरमा पनि नसपाती, आरुबखडा, केरा (कदली) मेवा, आँप, कटहर, अनारस, आरु, अम्बक, कागती, निबु, दारिम र ज्यामिरका बोटहरू थिए र समयानुकूल फलिरहन्थे।

आश्रमभित्र प्रवेश गर्दा जोकोहीले पनि १०० मिटरपर मूलद्वारबाटै महादेव, महादेव, महादेव भन्दै प्रवेश गर्नुपर्थ्यो। ठूलो साजको वृक्ष र वर-पिप्पलको छायामा बसेर गुरुको वेदान्त विषयक प्रवचन र सदाचार शिक्षाको महिमा सुन्ने नरनारीको सङ्ख्या गणना गर्न सकिँदैनथ्यो। आरतीको समयमा सबै जना सहभागी भई आश्रमपरिसर परिक्रमा गर्दै सामूहिक रूपमा आरती गाउँदै शङ्ख, घण्ट, झ्याली, डमरु र तालीका साथ कञ्चनगङ्गा नदीसम्म पुगेर आरती विर्सजन गरी गुरुलाई बीचमा पारेर '*ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गम्, निर्मलभाषितशोभितलिङ्गम्, जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्*' भन्ने शिवलिङ्गाष्टक स्तुति गाउँदै फर्किंदाको परमानन्दमय क्षण र दृश्य अविस्मरणीय हुन्थ्यो।

गायत्री अनुष्ठानमा आइपुगेर गुरुलाई प्यारो लाग्ने कीर्तन '*जय जय सीताराम हरि जय जय सीताराम, भालचन्द्र गजानन जय जय सीताराम*' भन्ने गाउँदा त्यो मानव सागर नै भोक-तिर्खा सबै बिर्सिएर परमानन्दमा चुर्लुम्म डुबेको देखिन्थ्यो। तिलक, प्रसाद वितरणपछि कन्या, कुमारीहरूलाई पूजन गर्दै वस्त्र, दक्षिणा आदि प्रदान गर्नुहुन्थ्यो। पक्वान्न वितरण भइरहँदा गीताको पन्ध्रौं अध्याय ब्राह्मणहरूले पढ्थे। सो पढिसकेपछि प्रसाद ग्रहण गर्न थाल्नुपर्थ्यो। पक्वान्न ग्रहणका लागि ठूला-ठूला कवाई पत्ता पत्तलका रूपमा प्रयोग गर्नुपर्थ्यो। प्रसाद ग्रहण गरिसकेपछि सबैले एकैसाथ उठ्नुपर्ने स्थिति बसाल्नुभएको थियो। प्रसाद बनाउने वर्तनहरू जेठो, माहिंलो हुँदै मन्तरे, कान्छोसम्मका किटका कराहीहरू थिए। जेठो कराहीले दुई टिन चामल पाक्ने क्षमता राख्थ्यो भने क्रमशः अरू थिए। खाना बनाउन बलिया-बलिया ब्राह्मणहरू खटिन्थे भने आमा समूहले सागसब्जी केलाउँथे र अचारहरू तयार पार्दथे। आवासीय विद्यार्थीहरूलगायत सय-पचासको लागि दिनहुँ भोजन तयार हुन्थ्यो। विशेष पर्वहरूमा हजार बढी मानिसहरूले भोजन गर्दथे। शान्तिपुर कुटीमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुने भण्डाराहरू अवर्णनीय हुने गर्दथे। सानो छँदा यी कार्यहरूमा यस कलमीले समेत सहभागी हुने सौभाग्य प्राप्त गरेको हो।

पहाडबाट ओर्लिएका छाँगा-छहराहरू हतारिँदै समुद्रमा पुगेर शान्त भएझैं गुरुका निकटमा पुगेर भक्तहरू शान्त हुन्थे। प्रवासी गृहस्थी जीवनका पीडा बिर्सँदै आत्मज्ञान लिन्थे। प्रवासी नेपालीहरूको अवस्था बुझ्न कहिलेकाहीँ गुरु ग्राम अवलोकनमा निस्कने गर्नुहुन्थ्यो। गुरुका पाउ आँगनमा पर्दा ग्रामीण नरनारीहरू आफू र आफ्ना परिवारलाई भाग्यमानी ठान्थे र घरआँगन पवित्र भएको महसुस गर्थे। गृहस्थीहरूका घरभित्र गुरु पस्नुहुन्नथ्यो र दिएको दक्षिणा पैसा पनि लिनुहुन्नथ्यो। "आफ्नो गृहस्थी चलाऊ, नानीहरू पढाऊ" भन्ने गर्नुहुन्थ्यो। "प्रवासको सुखमा नभुल्नू, हामी फर्केर जाने नेपाल नै हो। प्रवासमा लामो समय नबस्नू, गर्जो टार्ने गरी मात्र खर्च गरेर बचेको पैसा नेपाल नै लैजानू" भनेर प्रवासीहरूलाई सचेत गराउनुहुन्थ्यो। गुरुका यी उपदेशहरूलाई स्वीकार गरी बेलैमा नेपाल फर्किनेहरूले आफ्नो आर्थिक अवस्था सुदृढ तुल्याए।

यही रितले २०२४ को श्रीरामनवमीदेखि २०२८ मङ्सिर १३ गतेसम्म गुरु शान्तिपुर कुटीमा रहनुभयो। गुरुले भोलि कुटी छोड्दै हुनहुन्छ रे भन्ने खबरले ग्रामीण नरनारीहरूलाई बेचैन बनायो। आंश्रयदाता अभिभावकको अभावमा लामो समय आसाममा नबस्ने धारणा सर्वसाधारणले बनाउन थाले। पुष्पलाल तिम्सिना, पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, विष्णुप्रसाद पौडेल, पूर्णानन्द तिम्सिनालगायत ११-१२ जना शिष्यहरूका साथ गुरु नेपाल फर्कनुभयो। गुरुको बिदाइमा गाउँपिच्छे नरनारी, बालवृद्ध, वनिता लावालस्कर भक्कानिँदै बाटामा उभिएका थिए। उनीहरूलाई शुभाशिष दिँदै गुरुले यात्रा अघि बढाउनुभयो। त्यतिखेर यो लेखक पनि ६-७ वर्षको उमेरमा आमाको हात समातेर गुरुको बिदाइको दृश्य हेरिरहको थियो। गुरुका शिष्य-प्रशिष्यहरूबाट आजसम्म पनि शान्तिपुर कुटी परिचालित छ। यस लेखकले पनि यसै आश्रममा रही २०३४ देखि २०३६ सम्म ४० अध्याय वेदाध्ययन गर्ने मौका पाएको हो।

३. विवेकाश्रम बिर्तामोड न.पा. २ चारपाने झापा

परमहंस श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी गुरुमहाराज (माहिला गुरु) द्वारा स्थापित यो संस्था हाल झापा जिल्ला बिर्तामोड नगरपालिका वडा नं. २ चारपानेमा लोकमार्गभन्दा ५०० मिटर उत्तरमा अवस्थित छ। विवेकानन्द गुरुमहाराज २०२८ साल मङ्सिर १५ गते आसामबाट नेपाल आइपुग्नुभयो। हाल यो संस्था भएको ठाउँको जग्गा उहाँका शिष्य पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना गुरुको थियो। उक्त जग्गा हेर्न भनी २०२८ मङ्सिर १६ गते विवेकानन्द गुरु यस ठाउँमा आइपुग्नुभयो। यस ठाउँमा अलौकिक दिव्य शक्तिको ज्योति देखभई यो ठाउँ पछि तीर्थस्थल र विद्याको केन्द्र बन्नेछ,'केही दिन मलाई यहाँ रहने इच्छा भयो'भन्नुहुँदा कुटी बनाउन आवश्यक १०-१२ धुर जति जमिन पं. नन्दिकेश्वर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिम्सिनाले गुरुलाई अर्पण गर्नुभयो। सोही ठाउँमा २०२८ मङ्सिर १६ गते धान्य पूर्णिमाको शुभमुहूर्तमा गुरु आफैं र देवीप्रसाद पौडेल (ठूला जेठा) ले संयुक्त रूपमा कुटी, आश्रम निर्माणको शुभारम्भ गर्नुभयो भने यसै दिन जलाशय (कुवा) खन्ने साइतसमेत बटुक पुष्पलाल पौडेलबाट गराउनुभयो।

तीन दिनसम्म यसै ठाउँमा (सुन्ठीद्वारा निर्मित छहारीमा) रही शताक्षीधाम दर्शन गर्न जानुभयो। केही दिन शताक्षीधाममा बसेर चारपाने आउनुहुँदा भक्तहरूले पर्णकुटी बनाइसकेका थिए। गुरुले शताक्षीधामबाट लिएर आउनुभएका शिवलिङ्ग त्यही कुटीभित्र स्थापना गरी पूजा-अर्चनाको थालनी गराउनुभयो, जुन शिवलिङ्ग विवेकेश्वर महादेवका रूपमा अहिले पनि श्रीराम मन्दिरभित्र पूजित अवस्थामा विराजमान हुनुहुन्छ। सोही कुटीभित्र सानो यज्ञकुण्ड बनाई नित्य हवनादि कार्यको थालनी गराउनुभयो, स्थानान्तरित गर्दै जुन यज्ञ आजसम्म पनि आश्रमकै परिसरमा अखण्ड रूपमा परिचालित छ। २०२९ साल भदौ २ गते गुरुले यो कुटी छोड्नुभएपछि यस कुटीलाई गुरुकै नाममा विवेकानन्दाश्रम भन्न थालियो भने पछिल्ला दिनमा यस संस्थाको नाम 'विवेकाश्रम' बनाइयो। विवेकाश्रमकै नाममा जि.प्र.का. झापामा यो आश्रम दर्ता भएको छ।

पर्णकुटीबाट सुरु भएको यस आश्रमलाई भौतिक निर्माणका क्षेत्रमा सबल र सक्षम बनाउनमा मुष्टिदातालगायत तमाम श्रद्धालु दानवीर मनहरू धन्यवादका पात्र हुनुहुन्छ। हाल आश्रमपरिसरभित्र श्रीराम मन्दिर, शिवालय, यज्ञशाला, पाकशाला, अतिथि आवास, भण्डारकक्ष, गौशाला, सत्सङ्ग भवन, विष्णुपाञ्चायन मन्दिर, जलाशय (इनार) पुष्पवाटिका आदि रहेका छन्। वैदिक सनातन धर्मावलम्बीहरूको आस्थाको धरोहरका रूपमा रहेको यो संस्था सभ्यसमाज निर्माणमा अग्रपङ्क्तिमा रहेको छ। यस आश्रमकै मातहतमा सञ्चालित संस्कृत विद्यालयमा अध्ययन गरेका र गरिरहेका तमाम विद्यार्थीहरूले केवल संस्कृत शिक्षामात्रै हासिल नगरेर सदाचार शिक्षा, नैतिक शिक्षा, आत्मनिर्भर बन्न सक्ने कर्मकाण्डीय व्यावसायिक शिक्षा र पाणिनि व्याकरणको आधारभूत ज्ञान प्राप्त गरी व्यक्ति, समाज र राष्ट्रको हितका निम्ति जीवन चरितार्थ पारिरहेका छन्।

४. साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, विवेकाश्रम चारपाने झापा

स्थापनाको पृष्ठभूमि

२०२८ पौषमा विवेकानन्द गुरुमहाराज शताक्षीधाममा रहनुहुँदा जोरपोखरी आश्रममा पढाउँदै गरेका जगन्नाथ (ब्रह्मचारी) पौडेललाई र चारपानेबाट पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनालाई बोलाउनुभयो। पौष शुक्ल पूर्णिमाको दिन उहाँहरू शताक्षीधाम गुरुकुटीमा पुग्नुभयो। बटुक विष्णुप्रसाद पौडेल गुरुकै साथमा हुनुहुन्थ्यो। गुरुले भन्नुभयो "पहाडबाट र आसामबाट मधेस बसाइँ आउनेहरूको सङ्ख्या आजभन्दा भोलि बढ्दै जानेछ। तिनका सन्ततिहरूलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिक्षा दिन चारपानेमा संस्कृत विद्यालय स्थापना गर्ने इच्छा भएकाले परामर्शका लागि तपाईंहरूलाई बोलाएको हुँ, सहयोग गर्नुपर्यो।"

उहाँहरूले सहयोग गर्ने वचन दिनुभएपछि चारपाने कुटीपरिसरमा विवेकानन्द गुरुमहाराजले संस्कृत विद्यालय स्थापनाका लागि शुभमुहूर्त जुराई २०२८ माघ शुक्लपक्ष द्वादशी तिथिका दिन कुटीभित्रै रहेको सानो यज्ञकुण्डमा अग्निपूजा गरी स्थानीय भक्तहरूको उपस्थितिमा उपस्थित विद्यार्थीहरू विष्णुप्रसाद पौडेल र पूर्णानन्द तिम्सिनालाई पाणिनि व्याकरण लघुसिद्धान्तकौमुदी पठनपाठनको थालनी गर्न जगन्नाथ पौडेललाई लगाउनुभयो। गुरु विवेकानन्दले संस्कृत विद्यालय स्थापना गर्नुभएको यही मिति २०२८ लाई विद्यालय स्थापना वर्ष भनेर उल्लेख गरिएको कुरा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको अभिलेखले जनाउँदछ।

सञ्चालन र व्यवस्थापन

विद्यालय स्थापना गरेर रेखदेख गर्दै २०२९ भाद्र २ गतेसम्म गुरु यस आश्रममा रहनुभयो। आफ्ना ब्रह्मगुरु ब्रह्माभ्यासानन्दले सङ्केत गर्नुभएअनुरूप यस धराधामबाट बिदा हुने आफ्नो समय नजिकै आउन लागेको थाहा पाई आश्रम र विद्यालयको रेखदेख र सञ्चालनका निम्ति पण्डित नन्दिकेश्वर तिम्सिना, पुष्पलाल तिम्सिना, खगनाथ, पुष्पलाल, डिल्लीराम भण्डारी, मधुसूदन, देवीप्रसाद, लोकनाथ पौडेल, लोकनाथ खनाल, परशुराम ओझालगायत स्थानीय भक्तहरूलाई जिम्मा दिई आफ्ना सहोदर दाजु योगानन्द (श्री १०८ स्वामी योगेश्वराश्रम) बस्दै गर्नुभएको ठाउँ भारतको उत्तराखण्डस्थित उत्तरकाशीतर्फ प्रस्थान गर्नुभयो भने यता पुष्पलाल तिम्सिनाले स्थानीय उपस्थित विद्यार्थीहरूलाई वेद,रुद्री, गीता, चण्डी आदि पठनपाठन गराउने र यज्ञ तथा शिवार्चन गर्ने कामलाई निरन्तरता दिँदै रहनुभयो।

यसै क्रममा पाँचथर अखौंलेबाट वि.सं. २०३२ मा पं. टेकनाथ गौतम गुरु झापा लखनपुरमा बसाइँ सरी आउनुभयो भने आफ्ना माहिला मामा विवेकानन्द गुरुले स्थापना गर्नुभएको यस आश्रम र विद्यालयलाई व्यवस्थित ढंगले परिचालन गर्नका लागि चारपानेमा वि.सं. २०३३ वैशाख ७ गते पं. टेकनाथ गौतम गुरुको अध्यक्षतामा विद्यालय सञ्चालक समिति गठन भई सो समितिले पं. भानुभक्त अधिकारीलाई तलबी शिक्षकको रूपमा नियुक्ति गर्यो।

वि.सं. २०३३ वैशाखदेखि माघ मसान्तसम्म शिक्षण सेवा गरेर भानुभक्त गुरुले छोड्नुभयो भने २०३३ फागुनदेखि पं. विष्णुभक्त भण्डारी नियुक्त हुनुभयो। यसपछि आवासीय विद्यार्थीको सङ्ख्यासमेत बढ्यो। पढ्ने र बस्ने पर्याप्त आवास नभएको हुँदा यस सन्दर्भमा आश्रम, कुटी र विद्यालय निर्माणमा सञ्चालक समितिको अध्यक्षको हैसियतले पं. टेकनाथ गौतम गुरुले व्यवस्थापकीय क्षेत्रमा निरन्तर योगदान दिइरहनुभयो। स्थानीय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहयोगी दाताहरूका अतिरिक्त पथरीदेखि धुलाबारीसम्म र साधुटारदेखि बालुबाढीसम्मका गुरुकुलीय संस्कृत शिक्षाप्रति आस्था राख्ने तमाम व्यक्तिहरूले कम्तीमा एक-एकवटा तख्तामात्रै भए पनि विद्यालय भवन निर्माणका लागि २०३७-२०३८ सालमा सहयोग गर्नुभयो। ती तमाम श्रद्धालु मनहरू धन्यवादका पात्र हुनुहुन्छ, जसले त्यतिखेरको समयमा आवासीय रूपमा रही अध्ययन गर्ने हामी ५० जनाभन्दा बढी विद्यार्थीहरूलाई चिसो भुइँबाट बचाइदिनुभयो भने बिर्तामोड निवासी च्यवनलाल अग्रवालले जलाशय मर्मत गरी पक्की इनार बनाइदिनुभयो। त्यसपछि २०२८ सालदेखि चल्दै आएको श्रीवेदवेदाङ्ग संस्कृत विद्यालयको नाम परिवर्तन गरी श्री साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय बनाइयो भने २०४६ मा वनकाली वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रम लागू गरेपश्चात् 'श्री साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय' को रूपमा परिचालन भइरहेको छ।

वर्तमान अवस्थामा यो विद्यालय दाताहरूको सद्भाव र सहयोगबाट भौतिक निर्माण, शैक्षिक व्यवस्थापन र सामाजिक जनसम्पर्कका क्षेत्रमा बलियो हुँदै स्थापनाको ५० वर्ष पूरा गर्न लागिरहँदा यस विद्यालयमा अध्ययन गरेका हजारौं सक्षम विद्यार्थीहरू 'सर्वजनसुखाय सर्वजनहिताय' राष्ट्रसेवामा समर्पित भइरहेका छन् भने २०० भन्दा बढी विद्यार्थीहरू आवासीय रूपमा र अन्य विद्यार्थीहरूसमेत कक्षा १२ सम्म हाल अध्ययन गरिरहेका छन्। हिजोका दिनमा अङ्ग्रेजी भाषा वर्जित गरिएको यस विद्यालयमा समयको मागअनुरूप अङ्ग्रेजी, विज्ञान, गणितजस्ता आधुनिक विषयहरू पढ्न पाउने व्यवस्था गरिएको छ। ऐच्छिक विषयका रूपमा आयुर्वेद, ज्योतिष, योग, सङ्गीतजस्ता स्वरोजगारमूलक व्यावसायिक विषयहरूको पठनपाठनले शैक्षिक बेरोजगारी समस्या घट्दै जाने हुँदा यस विद्यालयमा सो व्यवस्थाका लागि विद्यालय व्यवस्थापन समिति नेपाल सरकार र स्थानीय निकायको ध्यान जानु अत्यन्त जरुरी रहेको देखिन्छ।

उत्तराखण्डको यात्रा र समाधि

२०२९ भाद्र ३ गते शिष्य विष्णुप्रसाद पौडेललाई साथमै लिएर गुरु उत्तरकाशीतर्फ लाग्नुभयो भने उहाँसम्म पुग्न पुष्पलाल तिम्सिना र परशुराम ओझाले साथ दिनुभयो। उहाँ उत्तरकाशी पुगेर भागीरथी तटमा कहिले 'लाटा' र कहिले 'उजेली' भन्ने ठाउँमा कुटीमा रहँदै योग साधनामा तल्लीन हुनुभयो। यसरी एक वर्ष बिताइसकेपछि आफ्ना अग्रज सन्त श्री १०८ स्वामी योगेश्वराश्रमलाई २०३० भाद्र शुक्ल पूर्णिमाको ब्रह्ममुहूर्तमा आफू यस धराधाममा रहने समय सकिने कुराको जानकारी गराउँदै "हजुरले पनि आजको ६ महिनापछि षष्ठी तिथिका दिन यो धराधाम छोड्नुहुनेछ। आउँदाको हजुर दाजु, जाँदाको म हुने भयौं। आसामबाट चार धाम हिंडेका भक्तहरू हामीलाई भेट्न भोलि यहाँ आइपुग्नेछन्। मैले प्रयोग गर्ने गरेका सामग्रीहरू उनीहरूले लैजाऊन्" भनी बेलुकै बिदा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मागी २०३० भाद्र शुक्ल पूर्णिमाको ब्रह्ममुहूर्तमा पतितपावनी कल्मषहारिणी उत्तरवाहिनी भागीरथी गङ्गाको तटमा समाधिस्थ भई ब्रह्मलीन हुनुभयो।

बाल्यकालमा साक्षरता प्राप्त गरेदेखि पाञ्चभौतिक शरीरको अन्तिम घडीसम्म पूर्वी पहाडका कुना-कन्दरादेखि आसाम सदिया र झापा हुँदै उत्तराखण्डसम्मका विभिन्न ठाउँमा पुगी गुरुकुलीय शिक्षा, वैदिक सनातन धर्म, न्यास, ध्यान, योग, साधना, यज्ञ, अनुष्ठान र सदाचारका क्षेत्रमा व्यक्तिगत र संस्थागत माध्यमबाट जनकल्याणका खातिर गुरु विवेकानन्द समर्पित हुनुभयो। उहाँले देखाउनुभएका यिनै सत्मार्गहरूलाई अवलम्बन गर्दै आजको सभ्य समाज अगाडि बढिरहेको छ। गुरुकुलीय शिक्षा, शाकाहारी र अनुशासित जीवनशैली, सच्चरित्रता र परोपकारको मार्ग देखाउनु नै उहाँले आफ्नो कर्तव्य ठान्नुभयो।

आफ्नो जीवनकालमा गुरुले जातीय संस्कार र संस्कृति, वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म, सदाचार एवम् गुरुकुलीय शिक्षाको प्रचार-प्रसार एवं आध्यात्मिक चिन्तनको जागरण र प्रवर्धनमा जे-जति योगदान पुर्याउनुभयो, त्यो अविस्मरणीय र प्रेरणाप्रद रहेको छ। यसकै जगमा टेकेर पूर्वाञ्चल क्षेत्रका र त्यहाँबाट फैलिएका सन्ततिहरू आज पनि सभ्य, अनुशासित र सुशिक्षित भइरहेका छन्। *परोपकाराय सतां विभूतयः* भन्ने कुरालाई चरितार्थ पार्दै जुन समाजलाई सात्त्विक संस्कार, वैदिक सनातन धर्मप्रति अटल आस्था र धर्मसहिष्णुताको पाठ सिकाएर गुरु ब्रह्मलीन हुनुभयो, त्यो संस्कार, शिक्षा र आस्था पुस्ता-पुस्तामा हस्तान्तरित हुँदै जीवन्त रहोस्।

आज राष्ट्रमा अशान्ति, अनैतिकता, असच्चरित्रता, अर्थलोलुपता, अनुशासनहीनता, अमानवीयता र भ्रष्टाचार दिनानुदिन बढ्दो मात्रामा देखिइरहेको छ। भोलिका दिनमा यस्ता असच्चरित्रहरू निर्माण नहून् भन्नका लागि आजका बालबालिकाले आफ्ना पाठ्यपुस्तकमा विवेकानन्द गुरुजस्ता परम तपस्वी, त्यागी, शिक्षासेवी र समाजसुधारक सन्त पुरुषको जीवनी पढ्न पाउनुपर्छ, जसको प्रेरणाले उनीहरूलाई चरित्रवान् र अनुशासित भई सात्त्विक मार्ग अवलम्बन गर्न थप ऊर्जा मिल्न सकोस्। गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा, नैतिक आचरण र अनुशासित जीवनशैलीको पाठ पढाई सभ्य समाज निर्माण गर्न राष्ट्रका निम्ति आजीवन समर्पित हुनुहुने गुरु विवेकानन्दलाई राज्यले राष्ट्रिय विभूति घोषणा गर्नुपर्छ।

नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयले उहाँका बारेमा अनुसन्धान गर्ने ढोका खोलिदिनुपर्छ। उहाँबाट स्थापित संस्थाहरूले उहाँको जन्म र समाधि भएका दिन गरिने रुद्राभिषेक र भण्डाराका अतिरिक्त विशेष कार्यक्रमहरू गरी गुरुको योगदान र व्यक्तित्वका विविध पक्षबारे प्रकाश पार्ने गर्नुपर्छ। गुरुको सम्झनामा 'श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द गुरु स्मृति पुरस्कार' अक्षय कोष स्थापना गरी राष्ट्रिय स्तरमा गुरुकुलीय शिक्षाको क्षेत्रमा विशेष योगदान पुर्याउने व्यक्ति तथा गुरुबाट स्थापित विद्यालयमा अध्ययन-अध्यापन गर्ने र गरेका सर्वोत्कृष्ट विद्यार्थी र शिक्षकलाई प्रत्येक वर्ष पुरस्कृत गर्दै जानुपर्छ। भावी सन्ततिले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समेत चिन्ने गरी गुरुको भव्य प्रतिमा बनाई विवेकाश्रम परिसरमा राख्नुपर्छ। अबका दिनमा विवेकाश्रमलाई विवेकाश्रममा मात्रै सीमित नराखी 'विवेकाश्रम धाम' बनाउनेतर्फ पाइला अघि बढाउनुपर्छ। हरि ॐ तत्सत्

जानी नजानी लेखनी चलाएँ, यी शब्द जम्मै गुरुमा चढाएँ।
म सानो नाथे गुरुकै शरणमा, पर्छु म झुक्दै गुरुका चरणमा।।

सन्दर्भ सामग्रीहरू :

१. पौडेल वंशावली २०६० देवघाट चितवन र २०६९ झापा
२. योगी नरहरिनाथ स्मृतिग्रन्थ २०६७, झापा
३. धनुष्कोटि पत्रिका वर्ष १ अङ्क १, २०७२ धनुष्कोटि धाम, सुरुङ्गा, झापा
४. इन्दिराज पौड्याल 'प्रतिभा जीवनी विशेषाङ्क २०५९ दमक, झापा
६. विवेकाश्रमको विधान २०४७ विवेकाश्रम, चारपाने, झापा
७. महेश्वर पौडेल, सेवा धर्म सत्सङ्ग मञ्जरी, कैलाली

गुरुका शिष्यहरूसँगको भेटवार्ता :फोनवार्ता

१. देवीप्रसाद पौडेल, चारपाने, झापा
२. पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, चारपाने, झापा
३. घनश्याम तिम्सिना, चारपाने, झापा
४. पूर्णानन्द तिम्सिना, चारपाने, झापा
५. परशुराम ओझा, चारपाने, झापा
६. पं. विष्णुभक्त भण्डारी, चारपाने, झापा
७. टङ्कमाया तिम्सिना (खनाल), चारपाने, झापा
८ यमनाथ-सरस्वता पौडेल, लखनपुर, झापा
९. कृष्णप्रसाद पौडेल, चौमाला, कैलाली
१०. पं. दुर्गाप्रसाद खतिवडा, केरखा, झापा
११. जगन्नाथ पौडेल, दमक, झापा
१२. केदारनाथ पौडेल, दमक, झापा
१३. गुरुभक्त सङ्ग्रौला, लखनपुर, झापा
१४. इन्दिराज पौड्याल, दमक, झापा
१५. केदारनाथ खतिवडा, साधुटार, झापा
१६. विष्णुप्रसाद पौडेल, क्यालिफोर्निया, अमेरिका
१७. लक्ष्मीनारायण पौडेल, कैलाली
१८. महेश्वर पौडेल, कैलाली
१९. षडानन्द तिम्सिना, कैलाली
२०. चिदानन्द खतिवडा, एकतीन, पाँचथर
२१. रघुनाथ न्यौपाने, खाल्डे, पाँचथर
२२. ताराप्रसाद खतिवडा माङ्लेबुङ, पाँचथर
२३. प्रा. मोहन भण्डारी, दमक, झापा
२४. दिलीपकुमार सङ्ग्रौला, लखनपुर, झापा
२५. देवराज पौडेल, लखनपुर, झापा
२६. दामोदर न्यौपाने, प्र.अ., सा.सं. मा.वि., चारपाने
२७. पुष्पलाल तिम्सिना, धुलाबारी, झापा
२८. काशीनाथ दहाल, दमक, झापा
२९. बुद्धिप्रसाद गौतम, लखनपुर, झापा

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीस्वर्गद्वारी आश्रम र यसको प्रभाव

अशोक पौडेल (औत)

आमुख

नेपाल तपोमूर्ति सिद्धसन्तहरूको तपोभूमि हो। यस पवित्र स्थलमा विभिन्न कालखण्डमा अनेक नामरूपधारी सिद्धसन्तहरूको अवतरण भएको छ। यहाँका कुनाकन्दरा, गुफा र पर्वतहरू यिनै सिद्धसन्तहरूको तपोमय साधनाले पवित्र बनेका छन्। यसै सन्दर्भमा प्राकृतिक विचित्र छठाले भरिपूर्ण पावन स्वर्गद्वारी शिखरमा वि.सं. १९५२ सालमा अनन्त श्रीविभूषित स्वर्गद्वारी महाप्रभुद्वारा विश्वकल्याण गर्ने महान् उद्देश्यले अखण्ड महायज्ञको स्थापना भएको हो। उहाँका अनुसार स्वर्गद्वारी पौराणिक कालमा पनि यज्ञभूमि नै थियो। वेदव्यास जस्ता त्रिकालदर्शी महर्षिहरूले यही ठाउँमा ठुलाठुला यज्ञ गरेका थिए। महाभारतका प्रसिद्ध पाँच पाण्डवले यही ठाउँमा तपस्या गरेर स्वर्ग प्रस्थान गरेको जनश्रुति प्राचीन कालदेखि नै चल्दै आएको छ।

लोपोन्मुख यज्ञीय परम्परालाई पुनः स्थापना एवं वैदिक सनातन धर्मको मर्यादालाई कायम राख्दै यस यज्ञभूमिमा गुरुकुल प्रणालीमा आधारित वैदिक पाठशाला, गाईहरूको संरक्षणका लागि गौशाला, यात्रुहरूका लागि धर्मशाला, साधु, सन्त, तपस्वीहरूका लागि सन्तनिवास, पूजा एवं आराधनाका लागि शिवालय तथा यज्ञ सञ्चालनका लागि यज्ञशाला संस्थापित एवं सञ्चालित छन्। अखण्ड महायज्ञ तथा यस वैदिक परम्पराको निरन्तरताका लागि शिष्य परम्पराको थालनी पनि उही समयबाट चल्दै आएको हो। वैदिक सनातनधर्म-संस्कृतिको उन्नयन र शिक्षाको प्रचारका लागि तत्कालीन अवस्थादेखि आजसम्म श्रीस्वर्गद्वारी आश्रम निरन्तर रूपमा लागिरहेको छ। भनिन्छ महाप्रभुको सान्निध्य, यहाँको रमणीय प्राकृतिक तथा आध्यात्मिक वातावरण र सुन्दर दृश्यावलीबाट कवि शिरोमणि लेखनाथ पौड्यालको अन्तर्मन *तरुण तपसी* नामक एक महत्त्वपूर्ण काव्य लेख्न प्रेरित भएको थियो।

स्वर्गद्वारी आश्रम दाङ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री स्वर्गद्वारी आश्रम

वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण, संवर्धन र प्रचार गर्दै विश्वकल्याण गर्नु मुख्य उद्देश्य रहेकाले श्रीस्वर्गद्वारी आश्रमले आध्यात्मिक र भौतिक वातावरणलाई समायोजन गर्दै जनमानसमा शान्ति र सद्भावको शिक्षा दिइरहेको छ साथै यज्ञका माध्यमबाट योगसाधना एवं योगचिकित्साको शिविर, वेद र यज्ञानुष्ठानको अनुसन्धान, जडीबुटीको अनुसन्धान तथा उपयोगसम्बन्धी कार्यहरू भइरहेका छन्। धर्म, संस्कृति र संस्कृत वाङ्मयको संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार गर्ने उद्देश्यले गुरुकुलको सञ्चालन भइरहेको छ, जसमा नेपाल तथा भारतका सिक्किम, आसाम जस्ता विभिन्न स्थानहरूबाट पौरस्त्य वाङ्मयको अध्ययन गर्ने उत्कट अभिलाषा लिएर आएका सयभन्दा बढी विद्यार्थीहरूले आवासीय सुविधासहित वैदिक वाङ्मयको अध्ययन गरिरहेका छन्।

धार्मिक क्षेत्रमा ठुलो प्रभाव पारेको स्वर्गद्वारी आश्रमबाट प्रभावित भएर यस आश्रमकै नीति-नियमअनुसार देश तथा विदेशमा यस अनुकूलका आश्रम तथा पाठशालाहरू सञ्चालनमा छन्। स्वर्गद्वारी आश्रम पहाडको एक विकट स्थानमा रहेको भए पनि पवित्र धार्मिक गन्तव्य स्थलका रूपमा चर्चित हुँदै आएको कुरा सर्वविदितै छ। धार्मिक आकर्षणले गर्दा यो विकटता पनि तीर्थयात्रीहरूका लागि सहज बन्दै आएको छ। नेपालका विभिन्न ठाउँका साथै विशेषतः भारतको उत्तर प्रदेशका सीमावर्ती क्षेत्रहरूबाट तीर्थयात्रीहरूको ठुलो सङ्ख्या यस आश्रममा आउँछ। स्वर्गद्वारी आश्रमले आफ्ना विविध प्राकृतिक तथा धार्मिक क्रियाकलापहरूद्वारा यस शैलशिखरमा पुग्ने जोकोहीलाई पनि प्रभावित बनाएर फर्काउन सफल भएको छ।

श्रीस्वर्गद्वारी आश्रमको स्थापना कालमा १२०० भन्दा बढी गाईहरू भएको अभिलेख पाइए तापनि आश्रमले वर्तमान अवस्थामा ५०० भन्दा बढी स्थानीय गाईहरूको निरन्तर सेवा तथा संरक्षण गर्दै आइरहेको छ। आश्रमको दाङ तथा देउखुरीमा रहेका अन्य शाखाहरूमा पनि करिब ३०० भन्दा बढी स्थानीय गाईहरूको निरन्तर सेवा भइरहेको छ। सो गाईहरूबाट उत्पादित गव्य पदार्थहरू अखण्ड महायज्ञमा उपयोग गरिन्छन्। स्वर्गद्वारीमा पूर्व मेचीदेखि पश्चिम महाकालीसम्मका आध्यात्मिक जिज्ञासुहरूको मात्र जमघट होइन भारतका सिक्किम, आसाम, मणिपुरसम्मका जिज्ञासुहरू शिक्षादीक्षा र तपस्याका लागि जमघट हुने गर्दछन्। यहाँको धार्मिक क्रियाकलाप र साधनाको प्रशिक्षणले तत्तत् क्षेत्रका आध्यात्मिक जिज्ञासुहरूमा ठुलो प्रभाव परेको छ।

श्रीस्वर्गद्वारी आश्रम वैदिक सनातन धर्म र प्रयोगको जीवन्त भूमि हो। सन्न्यासधर्मनिष्ठ सन्त महापुरुषहरूबाट संरक्षण एवं कर्मनिष्ठ विप्रवृन्दबाट सञ्चालन हुँदै आएको यस आश्रमले सनातन धर्मको मूलस्वरूपलाई आचरणमा उतारेको छ। स्वर्गद्वारी आश्रम तपोभूमि, यज्ञभूमि र योगभूमिको त्रिवेणी हो। योगविभूति योगीगणको साधनास्थल,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तपस्वीहरूको तपस्थल र याज्ञिकहरूको यज्ञभूमिको संङ्गमस्थल भएकाले प्राचीन ऋषि-महर्षिहरूको ज्ञानकर्मको प्रयोगस्थल भन्दा अत्युक्ति नहोला। स्थापनाकालबाट नै यहाँ वैदिक सनातन धर्मको समग्र जीवन पद्धतिले मूर्तरूप लिने मौका पायो। सांसारिक प्रपञ्चभन्दा माथि उठेका वितराग सन्तहरू र जीवन-जगत्का जिज्ञासा लिएका सज्जनहरूको समागम र सत्सङ्गले यो एकान्त अरण्य सधैं ऊर्जाशील र लगनशील भइरह्यो। स्वर्गद्वारी महाप्रभुले वेदबाह्य आडम्बरलाई कहिल्यै आश्रय दिनुभएन। वेदानुमोदित सनातन नै उहाँको आचरणीय र उपदेश्य थियो। आश्रमको स्थापना पनि क्षीण बन्दै गएको याज्ञिक संस्कार र सनातन जीवनपद्धतिलाई पुनर्जीवन दिनु थियो। सो उद्देश्यमा आज पनि आश्रम दृढ छ र निरन्तर लागिरहेको छ। एउटा समग्र जीवन र पूर्ण आश्रमको नमुना समाजलाई प्रदान गर्नु महाप्रभुको ठुलो अनुकम्पा हो।

स्वर्गद्वारी महाप्रभु

स्वर्गद्वारी आश्रमका संस्थापक श्रीमहाप्रभुको अवतरण राप्ती अञ्चल, हालको रोल्पा जिल्लाको रुम्टी गाउँमा वि.सं. १९१६ श्रावण शुक्ल एकादशी ज्येष्ठा नक्षत्र गुरुवारका दिन भएको हो। उहाँका पिताको नाम अनिरुद्ध गौतम र माताको नाम श्वेताकुमारी थियो। उहाँको नक्षत्रअनुसार पुरोहितले राखेको नाम नारायण थियो। उहाँ जन्मिनुभएको राति पानीको साथमा त्यहाँ पुष्पवृष्टि पनि भएको र बिहानै भिक्षाको निहुँ पारी अनेक सिद्धले सद्योजात शिशु (पछि महाप्रभु) को दर्शन गरेका थिए भन्ने प्रसिद्धि छ। ४ वर्षको उमेरदेखि नै एकान्त ठाउँमा बसी उहाँ एक्लै माटाढुङ्गाका देवप्रतिमा बनाएर तिनकै पूजामा घन्टौं व्यस्त रहनुहुन्थ्यो। महाप्रभु आफ्ना ५ वर्षको उमेरदेखि नै तपस्वी हुनुभएकाले उहाँलाई बालतपस्वी भनिन्छ।

१३ देखि २५ वर्षको उमेरसम्म जनसम्पर्कबाट अलग भई उहाँले पूरा १२ वर्ष तपस्या गर्नुभयो। त्यसपछि उहाँलाई सन्न्यास लिने इच्छा भयो र सखीको लेकमा योग साधना गरी बस्ने स्वामी सच्चिदानन्द गिरिबाट सन्न्यास दीक्षा लिनुभयो। गुरुबाट उहाँको नाम हंसानन्द गिरि राखियो। उहाँले केही समयसम्म गुरुसेवा गर्दै ज्ञानयोग, कर्मयोग र अष्टाङ्ग योगको समेत ज्ञान बढाउनुभयो। जन्मस्थानमा विभिन्न यज्ञहरू गर्दै विश्वकल्याणार्थ अखण्ड महायज्ञ गर्ने पावन उद्देश्यले महाप्रभु वि. सं. १९५१ मा पवित्र भूमि स्वर्गद्वारीको शैलशिखरमा पदार्पण गर्नुभयो र यस दिव्यभूमिलाई यज्ञभूमिको रूपमा परिणत गर्नुभयो। वैदिक सनातन धर्मको आधार स्तम्भ स्वर्गद्वारी आश्रमका संस्थापक त्रिकालदर्शी श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभु वि. सं. १९९७ को मार्ग शुक्ल पक्षको चौथी तिथिमा पाञ्चभौतिक शरीर त्यागी ब्रह्मलीन हुनुभयो। महाप्रभुको जीवन चरित्र सानो आलेखमा समेट्न सम्भव छैन तथापि सनातन धर्मले सिकाएको जीवनपद्धतिलाई व्यवहारमा उतार्न उहाँबाट भएको प्रयोगात्मक पक्षका बारेमा चर्चा भने सबैका लागि अनुकरणीय नै हुन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रमका प्रमुख गतिविधि

आश्रम सनातन धर्मको मूल भावनामा स्थापित भएको हुनाले यहाँ सम्पादन गरिने नित्य, नैमित्तिक कर्महरू सोहीअनुरूपका छन्। विश्वकल्याणको पावन उद्देश्य रहेको महायज्ञ वैदिक विधिअनुसार सम्पन्न हुन्छ। अग्नि उपासनाको वेद आज्ञा मूर्त रूपमा जीवित छ। पाञ्चायतन देवताको पूजा समरूपमा गरिने यहाँको महायज्ञमा प्रमुख रूपमा अग्निको पूजा र सबै देवशक्तिहरूलाई आहुति दिइन्छ। भगवान् शिवको आराधना पनि नित्य सम्पन्न हुन्छ। विप्रगण ब्रह्ममुहूर्तमा नै सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्ममा लाग्दछन्। शुक्ल यजुर्वेद र विभिन्न पुराणहरूको पाठ नित्य गरिन्छ। शिवालय, देवालय, गौशाला र गुफाहरूमा स्थापित विभिन्न देवशक्तिहरूको पूजा-आराधनामा कुनै कमबेसी छैन। अतिथि पूजन, जीवजगत्को यथायोग्य सत्कार, अभय प्रदान, संरक्षण र हेरचाहमा महाप्रभुबाट नै बसालिएको नियममा कुनै कन्जुस्याइँ छैन। यज्ञमण्डपको चार विदिशा र बिचमा अग्निको सेवा हुन्छ भने चार दिशामा पाञ्चायतन देवताहरूको क्रमपूर्वक सेवा आराधना हुन्छ, तर बाहिरबाट हेर्दा मन्दिर एकै जस्तो देखिन्छ। २४ जना विप्रगण यज्ञशालामा वरणपूर्वक प्रवेश हुन्छन्। यसको पनि विशिष्ट परम्परा छ। प्रत्येक वैशाख पूर्णिमाको दिन र कार्तिक पूर्णिमाको दिनमा मात्र यज्ञमा बस्नेले छोड्न सक्तछ भने बस्न चाहनेले प्रवेश पाउँछ। यसमा पनि योग्यता निर्धारित छ। जहिलेसुकै छोड्न वा प्रवेश गर्न नपाउने नियम यथापूर्व नै चलिरहेको छ। पाठशालामा वेदाध्ययन निरन्तर चल्दछ। विप्रवटुहरूको वेदवाणीले स्वर्गद्वारी सधैं गुञ्जायमान रहन्छ। गोवंशको सेवा र गोपदरजले पवित्र आश्रमपरिसर आनन्दको निवास जस्तै विराजित छ। हंसेश्वर महादेव र सिद्धबाबाको कृपाले यहाँका आरोह-अवरोह सुगम बनेका छन्।

सन्त परम्परा

सनातन पद्धतिबाट चल्दै आएको आश्रम धर्ममा सन्न्यास आश्रम श्रेष्ठ हो। जीवनको परमलक्ष्य साधनमा यसको भूमिका अहं रहन्छ। जीवन र जगत्का अनेकौं उतारचढावलाई बुझेका र आत्मतत्त्वलाई मात्र परमसत्य अनुभूत गरेका महामनाहरू सन्न्यास आश्रमको अधिकारी हुने विषय शास्त्रले निर्देश गरेको छ। अधिकार-अनधिकारको विषय पनि अतिविस्तृत छ। यो परम्परा भगवत्पाद शङ्कराचार्यले विस्तार गर्दै मठ परम्परा स्थापित गर्नुभयो। यही क्रममा आततायीहरूको सिकार हुन थालेपछि मधुसूदन सरस्वती जस्ता मनस्वी महात्माहरूले सन्तसमाजको संवर्धन गर्न सन्तहरूको सङ्ख्यालाई वृद्धि गरी सनातन धर्म मर्यादाको संरक्षणमा ठुलो योगदान दिनुभयो। यही परम्परा दण्डधारी र दण्डत्यागीमा छुट्टिँदै अखडा संरचनासम्म आइपुग्यो। जुना-निरञ्जनी, आवाहन आदि अखडाहरू नै आज सन्तहरूको मूल थलोका रूपमा रहेका छन्। सन्न्यासी महात्माहरू वा आश्रमहरू उक्त अखडाहरूसँग जोडिएका हुन्छन्। यही क्रममा स्वर्गद्वारी आश्रम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुना अखडासँग सम्बन्ध राख्दछ। श्री स्वर्गद्वारी महाप्रभुका पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री सच्चिदानन्द गिरि यही परम्पराको ब्रह्मनिष्ठ सन्न्यासी हुनुहुन्थ्यो। जन्मले नेपाललाई धन्य बनाउनुभएका स्वामीजीको प्रायः बसोबास काशीमा हुन्थ्यो। समय समयमा देवभूमि नेपालका पवित्र स्थलहरूको भ्रमण गर्नुहुन्थ्यो। उहाँका तीन जना शिष्यहरू लोकवन्द्य हुनुहुन्थ्यो। स्वामी अनन्तानन्द गिरि (ऋषिकेश उत्तराखण्डमा नेपाली अन्नक्षेत्रका संस्थापक) श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभु हंसानन्द गिरि (स्वर्गद्वारी आश्रमका संस्थापक) र दौलतानन्द गिरि। अतः स्वर्गद्वारीको सन्तपरम्परा विशुद्ध सन्न्यास आश्रममा आधारित छ। कतिपयले स्वर्गद्वारी महाप्रभुलाई जोस्मनी परम्पराको भनेर भ्रम सिर्जना गरेको र महाप्रभुको नामसमेत अभयानन्द भनी गलत प्रचार गरेको पाइन्छ, जो यथार्थभन्दा धेरै टाढा छ।

यहाँको सन्त परम्परा सन्न्यास मार्गसँग सम्बद्ध छ। जीवनमा आचरणीय चार आश्रममध्ये तुरीयाश्रम (सन्न्यास आश्रम) शास्त्रीय मर्यादामा आधारित आश्रम परम्परा हो। यहाँका सन्तहरू कतिपय ब्रह्मचर्य आश्रमबाट सिधै सन्न्यास आश्रम ग्रहण गरेका छन् भने कतिपय गृहस्थाश्रमबाट सन्न्यास आश्रम प्रवेश गरेका पनि छन्। विशेष गरी साधनामय तपोमय जीवनलाई आत्मसात् गरेका सन्त-महात्माहरू कुनै समय नेपालका विभिन्न स्थानमा रहन्थे। उनै महात्माहरूका तपस्याका गाथाहरू आज पनि तत्तत् स्थानका जनमानसमा गुञ्जिएको पाउँछौं। वाद, पन्थ वा वेदबाह्य धर्मको प्रचार नभएर विशुद्ध सनातन धर्मको मूल मर्मलाई संरक्षण गर्दै प्रचार गर्ने कार्यको अतुलनीय भार श्रीस्वर्गद्वारी आश्रमले बोकेको छ।

श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभुले सनातन धर्मको मूल जरो शिक्षा, सेवा र देवपूजालाई एकैसाथ अगाडि बढाउनुपर्ने पद्धति सुरु गर्नुभयो। वैदिक शिक्षा प्रणालीको पुनर्जागरणद्वारा अशिक्षाको बादलमा रुमल्लिएको समाजलाई शिक्षाको उज्यालो किरणद्वारा प्रकाशित गर्ने कार्यको थालनी भयो। यही उज्यालो किरणलाई पछ्याउँदै देशका विभिन्न स्थानबाट सज्जन, जिज्ञासु र ज्ञानप्रेमीहरूको जमघट बढ्न थाल्यो। वेद तथा वैदिक वाङ्मयको अध्ययन-अध्यापनको राम्रो वातावरण रहेकाले अध्यापन गराउन चाहने विद्वान्‌हरूको उपस्थिति पनि ठुलै थियो। तपस्या र साधनामा रुचि हुने अमलात्मा साधकहरूको उपस्थिति पनि ज्यादै राम्रो थियो। साध्य प्राप्तिमा स्वर्गद्वारीका हरेक कणले साधकलाई सघाउँथ्यो भने मार्गदर्शन स्वयं महाप्रभुबाट हुन्थ्यो। यज्ञको दिव्यता र यसमा पूजा-आराधना हुने दैवी शक्तिको प्रभावले स्वर्गद्वारी आध्यात्मिक शक्तिपुञ्जका रूपमा परिणत थियो। अखण्ड यज्ञशालामा बिहान-बेलुका हुने पूजा-आराधनाको मोहक दृश्यबाट नास्तिक पनि आस्तिक बन्न पुग्दथ्यो। यस्ता अनुपम दिव्य कार्यको अनुभूति पाएका साधकहरू देशका विभिन्न स्थानमा छरिएर बस्न, तपस्या गर्न र कतिपय धार्मिक आध्यात्मिक गतिविधिमा समेत सक्रिय हुन थाले।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वाञ्चलमा स्वर्गद्वारीको प्रभाव

श्री स्वर्गद्वारी महाप्रभुको महिमा र मार्गदर्शनको प्रभाव पूर्वाञ्चलका विभिन्न जिल्लाहरूमा फैलिएको पाइन्छ। श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभुबाट नै दीक्षा लिएका कैयौं सन्तहरू पूर्वी क्षेत्रका पनि थिए। भोजपुरमा जन्मिएका र स्वर्गद्वारीमा गई महाप्रभुबाट नै सन्न्यास दीक्षा लिएका सिद्ध-सन्त अमरानन्द गिरि प्रभुको समाधिपछि आश्रमको प्रमुख बन्नुभएको थियो। श्रीस्वर्गद्वारीको महिमा जनजनमा फैलाउन स्वामी कपिलानन्द गिरिको पनि ठुलो भूमिका छ। नेपालमा मात्र नभएर भारतको पूर्वी क्षेत्र, दार्जिलिङ, सिक्किम, आसाम र मणिपुरसम्म श्रीस्वर्गद्वारी महाप्रभुको शिक्षा, ज्ञान र धार्मिक जागरणलाई प्रचार गर्ने काम कपिलानन्दले गर्नुभयो।

कपिलानन्दकै कारण पश्चिममा कश्मीर तथा पूर्वमा मणिपुर, बर्मासम्म स्वर्गद्वारीप्रतिको श्रद्धा फैलिएको हो। कपिलानन्द स्वर्गद्वारी महाप्रभुका प्रशिष्य मुक्तानन्द गिरिका प्रभावशाली शिष्य थिए। काठमाडौँदेखि पूर्व विभिन्न स्थानमा ठुलाठुला यज्ञ गर्दै जनताजनार्दनलाई स्वर्गद्वारीको महिमा बताउँदै पूर्व-पूर्व लाग्ने क्रममा कपिलानन्दले ताप्लेजुङको पाथीभरामा केही समय योगसाधना गरी काबेलीको माथि डाँडामा भव्य महायज्ञ सम्पन्न गरेका थिए। कर्फोक स्वामीको तपस्थली माईपोखरीको पूर्वोत्तर थुम्कामा कपिलानन्दले यज्ञ गरेपछि स्वर्गद्वारीको महिमा त्यस क्षेत्रमा अझै फैलिएको थियो। यस विषयमा स्वामी प्रपन्नाचार्यको कृति *मिल्केका झिल्का* पठनीय छ। यसरी स्वर्गद्वारीको महिमा फैलिएको पूर्वी नेपालमा स्वर्गद्वारीको दिनचर्यालाई आत्मसात् गर्ने सनातनधर्मीहरूको समूह पनि ठुलै थियो।

शिक्षादीक्षाको सहज वातावरण नभएको तत्कालीन अवस्थाको नेपालमा सहजै शिक्षा प्राप्त गर्ने स्थान स्वर्गद्वारी थियो। पाँचथर, ताप्लेजुङ, झापा र भारतको सिक्किमसम्मका कैयौं ब्राह्मण वटुकहरू स्वर्गद्वारी आई वैदिक वाङ्मयको अध्ययन गर्दथे। यज्ञमा रही सेवा गर्दथे र योग्य पण्डित बनी फर्कन्थे। यही क्रममा स्वर्गद्वारीको परम्परा, नियम, आचार-विचार र सनातन धर्मप्रतिको अक्षुण्ण प्रभाव जनमनमा गहिरिएको हुनु पर्छ।

हिमाचल, गढवाल र उत्तराखण्डको रेवाखण्डमा समेत यहाँका सन्तहरूको ठुलो समाजसेवा गरेको इतिहास छ। प्रसिद्ध तीर्थस्थल गङ्गोत्तरी धामका पुजारीहरूलाई वैदिक शिक्षा दिई मन्दिरको परम्परा र पूजापद्धतिलाई शास्त्रीय बनाउने कार्यमा स्वर्गद्वारीका शिष्य हरिहरानन्द गिरिको अहं भूमिका छ। आज पनि गङ्गोत्तरी धाममा अवस्थित गङ्गा मन्दिरका पुजारीहरूले बारम्बार स्वर्गद्वारी महाप्रभुका शिष्य हरिहरानन्दलाई स्मरण गर्दछन्, स्वर्गद्वारीको यात्रा गर्न लालायित हुन्छन्।

पूर्वाञ्चलमा स्वर्गद्वारीको महिमा ज्यादै विस्तृत रूपमा फैलिएको थियो भन्ने विषयमा विभिन्न प्रमाणहरू यथेष्ट पाइन्छन्। आज सबैले जानेको, सुनेको र कतिपयले गर्वका साथ नाम लिने योगमायामा धार्मिक चेतनाको प्रस्फुटन स्वर्गद्वारीको यात्रापछि नै भएको थियो। सांसारिक प्रताडना र अपहेलनाबाट दिक्क भएर शान्ति र स्वस्तिको खोजी गर्दै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर्गद्वारीको आँगनमा पुगेकी आहत अबलाले धार्मिक चेतनाको बिगुल फुक्न सक्ने आत्मबलको मुस्लो फेला पारिन्। शान्तिको मूलले उनमा शीतलताको छाया बढायो। पूर्वी नेपालबाट भारतीय बाटो हुँदै नेपालगन्ज निस्केर स्वर्गद्वारी तपोभूमि पुगेकी योगमायाको धार्मिक चेतना र यज्ञप्रतिको समर्पणभाव स्वर्गद्वारी महाप्रभुको प्रभाव र कृपाको उदाहरण हो। यस विषयमा स्वर्गद्वारी महाप्रभुको समाजमा धेरै चर्चा नभए पनि इतिहास खोज गर्दा स्वर्गद्वारीसँग जोडिन पुग्छ। पूर्वी नेपालमा स्वर्गद्वारी महाप्रभुको ख्यातिले सबैको हृदय छोएको थियो। प्रभाव र महिमा सुनेकी योगमाया आफ्नो मानसिक पीडा बिसाउन भौंतारिँदै स्वर्गद्वारी महाप्रभुको चरणमा पुगिन् र आफ्नो जीवनको मोड नै परिवर्तन गरी ध्यान, जप, यज्ञ, सेवा र भजनमा लगाइन्। निर्गुण स्वरूपको लगाव र सामाजिक विसङ्गतिप्रतिको आलोचना गर्ने संस्कार स्वर्गद्वारीले नै सिकाएको थियो।

पाँचथर जिल्लाको एकतीन सुभाङमा मूल थलो गरी बस्नुहुने यज्ञनिधि रेग्मी गुरुलाई धेरैले सुभाङ गुरुको नामले चिन्दथे। उहाँ गृहस्थ भईकन पनि तपस्वी सिद्ध महापुरुष हुनुहुन्थ्यो। विद्या, बुद्धि, विवेकमा अग्रगण्य गुरुको प्रेरणाबाट धेरै व्यक्तिहरूले जीवन नौकालाई सही मार्गमा लगाए। उहाँको तपोमय जीवनबाट प्रभावित भई धेरै व्यक्तिहरू धार्मिक र सदाचारी बनेका थिए। धार्मिक चेतना फैलाउन समाजमा नेतृत्वसमेत लिएका थिए। त्यही परम्पराले आज पनि समाजलाई मार्ग निर्देश गरिरहेको छ।

धार्मिक जनमा प्रभाव पर्ने सुभाङ गुरु (यज्ञनिधि रेग्मी) पनि समय-समयमा स्वर्गद्वारी महाप्रभुको दर्शनार्थ आफ्ना अनुयायीहरूलाई साथमा लिएर स्वर्गद्वारी पुग्नुहुन्थ्यो र महाप्रभुसँग अन्तरङ्ग सत्सङ्ग गर्नुहुन्थ्यो। यसको प्रभावले अनुयायीहरूले समेत स्वर्गद्वारीको दिनचर्यालाई अनुकरण गरी प्रचार गर्दथे। सुभाङ गुरुका सन्दर्भमा स्वर्गद्वारीको पत्रिका विभूतिः १/१, पृ.२२ मा एउटा प्रसङ्ग छापिएको छ। स्वामी कृष्णानन्द (हाल ब्रह्मलीन) ले बताउनुभएको सो प्रसङ्गअनुसार वि.सं. १९८४ सालमा पाँचथरबाट यज्ञनिधि गुरुसहित ४५ जना स्वर्गद्वारी महाप्रभुको दर्शन गर्न पुगेको अवस्थामा स्वर्गद्वारी महाप्रभु आफ्ना शिष्यहरूसँग पूर्वजन्मको विषयमा सत्सङ्ग गर्दै हुनुहुन्थ्यो।

सुभाङ गुरुले पनि आफ्नो पूर्वजन्मको विषयमा महाप्रभुलाई प्रश्न गर्नुभएछ। महाप्रभुले- 'तिम्रो र मेरो भेट भएको पाँच जन्म भएको कुरा त तिमीलाई पनि थाहा छ नि ?' भन्दा गुरुमहाराज ! तीन जन्मको पूरा थाहा छ भन्नुभएछ। अनि महाप्रभुले तिमी ७ जन्मदेखि पण्डित भएर बिताइरहेका छौ भनेर उनी एक सन्त स्वभावका गुणी, साधक र संस्कारसम्पन्न भएको कुरा सुनाउनुभयो। यो प्रसङ्ग योगानन्द स्वामीजीले कृष्णानन्दलाई सुनाउनुभएको थियो। यसरी साधक सन्तहरूमा फैलिएको प्रभावले धार्मिक समाजलाई स्वर्गद्वारीप्रति नतमस्तक बनायो। यज्ञनिधि रेग्मी (सुभाङ गुरु) लाई श्रद्धा गर्ने र उहाँबाट शिक्षित दीक्षित समाजमा फैलिएको नित्यकर्म, निष्ठा र आचरण यहींको बीजबाट फैलिएको हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वी नेपालको विभिन्न स्थानबाट स्वर्गद्वारी पुग्ने सज्जनहरू स्वर्गद्वारी आश्रमको नित्य-नियमबाट प्रभावित भई (विशेष गरी विप्रसमुदायका व्यक्तिहरू) आफ्ना सन्ततिलाई स्वर्गद्वारीमा पढाउन पठाउने र त्यहाँको दैनिक आचरणमा अभ्यस्त गराउन प्रबल इच्छा राख्दथे। यहाँबाट शिक्षित-दीक्षित छात्र पनि समाजमा अनुकरणीय व्यक्तित्वका रूपमा परिचित बन्दथे।

स्वर्गद्वारी महाप्रभु सन्न्यासी महात्मा भएर पनि ब्राह्मणोचित आचार-व्यवहारलाई उच्च सम्मान गरी तदनुसार दिनचर्यामा सबैलाई उत्प्रेरणा दिनुहुन्थ्यो। सन्न्यासीबाट संरक्षित र ब्राह्मणद्वारा सञ्चालित यहाँको यज्ञपरम्परा सबैका लागि अनुकरणीय छ। सम्प्रदायवादबाट माथि उठेको सनातन धर्मको विशुद्ध रूप नै स्वर्गद्वारीको मौलिक रूप हो। पञ्चशालाको प्रयोगात्मक आचरण यहाँ मूर्त छ। यज्ञशाला, पाठशाला, पाकशाला, गोशाला, धर्मशालाको समन्वयात्मक सञ्चालनले प्राचीन गुरुकुलको यथारूप प्रस्तुत गरेको छ। विप्रबटुलाई पञ्चप्रणव-तुरीयपदयुक्त गायत्रीको दैनिक अनुष्ठान गराउने धरोहर पनि यही हो।

महाप्रभुका शिष्य ब्रह्माभ्यासानन्द गिरिको प्रभावले पनि स्वर्गद्वारी महाप्रभुको महत्त्वलाई पूर्वमा बलियो बनायो। पाँचथर जिल्लामा उपाध्याय ओझा ब्राह्मण कुलमा जन्मनुभएका ब्रह्माभ्यासानन्द ब्रह्मनिष्ठ सन्न्यासी हुनुहुन्थ्यो। भगवान् श्रीरामको जन्मभूमि अयोध्यामा समेत उहाँले आश्रम बनाई स्वर्गद्वारीको महिमा प्रचार गर्नुभएको थियो। ब्रह्माभ्यासानन्दले पाँचथरको जोरपोखरीमा बसी तपस्या गर्नुभएको थियो। उहाँले तपस्या गरेको कुटी आज पनि देख्न सकिन्छ। एउटा पुरानो प्रसङ्गले ब्रह्माभ्यासानन्द र सुभाङ गुरुको प्रखर सिद्धिलाई सङ्केत गर्दछ। पाँचथरको पुरानो चतुरे बजारभन्दा माथिको जङ्गलमा काफल खाने इच्छाले ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामी, सुभाङ गुरु र अन्य भक्त गएका रहेछन्। ठुलो जङ्गलका बिचमा पुगेपछि स्वामीजी र सुभाङ गुरु एक्कासि हराउनुभएछ। खोज्दा कतै पाइएनन्। ती सँगीहरूले दुई वटा राम्रा चरा एउटा ठुलो काफलको रुखमा पाकेको काफल खाँदै गरेको देखे र आफूहरूले पनि खोजी खोजी खुबै काफल खाए। पछि त दुवै जना त्यहीं देखिनुभयो। हामीले त खुब काफल खायौं, हजुरहरू कहाँ जानुभएको थियो ? भन्दा हामीले रुखको टुप्पामा नै बसेर पेटभरि काफल खायौं भनेर चरापट्टी सङ्केत गरेपछि सबै छक्क परे भन्ने विषय योगानन्दको मुखबाट निस्केको प्रसङ्ग आज पनि सुन्न पाइन्छ। तत्कालीन अवस्थामा ब्रह्माभ्यासानन्दको प्रभाव पनि ठुलै थियो। त्याग र तपस्याका प्रतिमूर्ति उहाँको परिवारको दाजुभाइहरूसमेत वीतरागी, अवधूत र त्याग परम्पराका उदाहरणीय व्यक्तिहरू थिए। सिक्किममा आज पनि पुराना व्यक्तिहरू उहाँहरूप्रति श्रद्धाले नतमस्तक छन्। यिनै ब्रह्माभ्यासानन्द गिरिका दाजु कुनै समयमा सिक्किममा बसोबास गर्ने गर्दथे। घरगृहस्थमा त्यति रुचि नहुनाले घर छाडी सन्न्यास हुने इच्छा गरेर स्वर्गद्वारी पुगे। स्वर्गद्वारी प्रभुसँग आफू अविवाहित भएको र सन्न्यास लिने इच्छाले आएको बताए, प्रभुले सुन्नुभयो तर केही उत्तर दिनुभएन। तीन दिनपछि प्रभुको दर्शन गर्न जाँदा उनलाई भन्नुभएछ- 'बाबु तिमी बसेको घरभन्दा माथिको ढुङ्गाबाट त तिम्रो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ससुरालीको घरको छानो देखिँदो रहेछ नि'। आफूलाई विवाह नगरेको भनी ढाँटेका ब्राह्मण लाजले कालो निलो भई माफी माग्न थालेछन्। त्यसपछि प्रभुले- "तिम्रो साधना, तपस्या अझै पूर्ण छैन, गायत्रीको अनुष्ठान गर। अन्तःकरण शुद्ध हुनेछ अनि सन्न्यासको विचार गर्नू" भनी फर्काइदिनुभएछ। पछि उनी सिक्किम नै गए र गायत्रीको अनुष्ठानमा आफूलाई समर्पित गरे। पछि स्वर्गद्वारीमा आई कृष्णानन्द गिरि (थानी महाराज) को शिष्यत्वमा सन्न्यास ग्रहण गरी परमानन्द नामले चिनिए। यस्ता अनेकौं घटनाबाट जोडिएको पूर्वाञ्चलमा स्वर्गद्वारीको महिमा आज भने नौलो बन्न पुग्दैछ।

आश्रम सञ्चालनमा पनि पूर्वाञ्चलको समर्पण स्मरणीय छ। जुन नाता विवेकाश्रमसँग जोडिएको हो, त्यसको मूल पुरुष स्वामी ब्रह्माभ्यासानन्द हुनुहुन्छ। आश्रमका वयोवृद्ध र ज्ञानवृद्धहरूबाट सुनिँदै आएको भनाइअनुसार कुनै समयमा एक सज्जन भक्तले महाप्रभुलाई सोधेछन्- "गुरु महाराज ! हजुरको जीवनपछि यत्रो यज्ञ र आश्रमको सञ्चालन कसले गर्ला ?" प्रभुले आज्ञा भएछ- "यो यज्ञको भार वहन गर्न पूर्वबाट एक जना ब्राह्मण बटु हिँडिसके। उनी आएको ६ महिनापछि एक जना क्षत्रिय बच्चा आउनेछन्।" नभन्दै पूर्वबाट विरक्त शिरोमणि ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामीजी आउनुभयो। प्रभुबाट दीक्षित भई आश्रमका कैयौं कार्य सम्पन्न गर्नुभयो। ब्रह्माभ्यासानन्द ब्राह्मणकुलका नैष्ठिक सन्त हुनुहुन्थ्यो। भोजपुरमा जन्मिनुभएका अमरानन्द क्षत्रिय वंशका हुनुहुन्थ्यो। रायमाझी थरका अमरानन्द प्रभुको शेषपछि आश्रम प्रमुखसमेत हुनुभयो। उहाँले महाप्रभुबाट नै सन्न्यास दीक्षा लिनुभएको थियो।

श्रुतिपरम्परामा रहेका यस्ता अनौठा घटनाहरू धेरै छन्, जसले पूर्वाञ्चललाई स्वर्गद्वारीसँग आत्मीयताको डोरीले बाँधेका छन्।

योगानन्द-विवेकानन्द

झापाको चारपानेमा रहेको विवेकाश्रमका संस्थापकद्वय श्रद्धेय योगानन्द र विवेकानन्द स्वामीज्यूहरू पनि सन्न्यासपूर्व ब्रह्मचर्याश्रममा छँदा स्वर्गद्वारीमा आई अध्ययन, योगाभ्यास, तप, उपासनामा आफूलाई समाहित गराउनुभएको थियो। स्वर्गद्वारीमा प्रचलित शिक्षा-दीक्षाको प्रभावले हुनुपर्छ सन्न्यासपछि झापा जिल्लाको चारपानेमा सनातन परम्पराअनुकूलको वेदपाठशाला खोली वेदाध्ययन र सदाचारलाई प्राथमिकता दिई वेदाध्ययनमा ब्राह्मण वटुकहरूलाई संलग्न गराउनुभयो। ती ब्राह्मण वटुकहरूलाई निःशुल्क भोजन एवं आवासको प्रबन्धसमेत मिलाउनुभएको थियो। योगानन्द स्वामीजीको स्वर्गद्वारीप्रति समर्पण र श्रद्धा गहिरो थियो। स्वामी कृष्णानन्दका अनुसार आफ्नो उपदेश वा प्रवचनमा पनि कसैलाई उत्प्रेरणा दिनुपर्यो, सम्झाउनुपर्यो वा उदाहरण दिनुपर्यो भने स्वर्गद्वारीको गतिविधिलाई नै अघि सार्नुहुन्थ्यो। स्वर्गद्वारीको सेवा, ब्राह्मणको दैनिकी अथवा अध्ययन परम्परालाई पनि विशेष ठानी सोहीअनुरूप अन्यले समेत पालना गर्नुपर्छ भन्नुहुन्थ्यो। जनसामान्यमा स्वर्गद्वारी जानैपर्छ भन्ने भावनाको विकासमा योगानन्दको अहं भूमिका थियो। विरक्त स्वभावका सज्जनहरूलाई स्वर्गद्वारी गई सन्न्यास लिने प्रेरणा योगानन्दले दिनुहुन्थ्यो। योगानन्द र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवेकानन्द दुवै भाइ ब्रह्माभ्यासानन्द स्वामीबाट ज्यादै प्रभावित भई स्वर्गद्वारी आइपुग्नुभएको थियो। यहाँको आचार-विचार, दैनिक पूजा, अर्चना र नित्य नियमलाई आफ्नो आश्रममा पनि लागू गराई विप्रवटुहरूलाई सनातन धर्मको मूल बाटो देखाउनुभएको थियो। कालगतिले त्यो परम्परा क्षीण भए पनि कर्मनिष्ठहरूमा अझै देख्न सकिन्छ। अन्यत्र सन्तसमाज वा वेदपाठशालामा दुर्लभ देखिने शिरमा साफा (शिरमा बाँधिने एक प्रकारको रुमाल) लगाउने परम्परा स्वर्गद्वारीमा नै प्रचलित छ र पूर्वाञ्चलमा कतिपय सन्त सज्जनले पनि स्वर्गद्वारीमा जस्तै गरी शिरमा साफा बाँधेको देखिन्छ।

योगानन्दको र विवेकानन्दको आध्यात्मिक चेतनाले विकसित हुने मौका स्वर्गद्वारीमा नै पायो। दैवसंयोग सन्न्यास लिने मौका भने यहाँ मिलेन। तर जीवनचर्या भने यहींको संस्कारमा बित्यो। पूर्वमा सनातन धर्मको दियो जलाइरहेको चारपानेको विवेकाश्रमको योगदान कम महत्त्वपूर्ण छैन। वर्तमान समयमा त्यस क्षेत्रमा रहनुभएका कतिपय कर्मनिष्ठ, सनातन धर्मरक्षैकव्रतीहरू विवेकाश्रम र तत्सम्बद्ध संस्थाहरूबाट शिक्षित र दीक्षित हुनुहुन्छ।

श्रीस्वर्गद्वारी आश्रमको लामो समयसम्म मठाधीश बनी सेवामा रहनुभएका स्वामी अनन्तानन्द गिरि (साना महाराज) उनै ब्रह्मनिष्ठ स्वामी ब्रह्माभ्यासानन्दको शिष्य हुनुहुन्थ्यो। साना महाराजको ओजस्वी व्यवहार र तेजस्वी स्वरूपका अगाडि राजादेखि रङ्कसम्म उभिन हिच्किचाउँथे। निर्भीक, व्यवहारकुशल अनन्तानन्दको जन्म पनि पाँचथर जिल्लाको एकतीन खुँगा भन्ने स्थानमा उपाध्याय अधिकारी ब्राह्मण कुलमा भएको थियो। स्वर्गद्वारीको सेवामा पाँचथर जिल्लाको योगदान महत्त्वपूर्ण छ। कतिपय श्रुतिपरम्परामा आजसम्म जीवित छन् भने कतिपय विशिष्ट महानुभावहरूको गाथा ओझेल परिसक्यो। जहाँबाट आए पनि महाप्रभुबाट वा स्वर्गद्वारी परम्पराबाट शिक्षित, दीक्षित तपस्वीहरूको मनोभाव प्रचार-प्रसार र आत्मसम्मानबाट टाढै बसी अस्ताउने प्रकारको हुनाले गहिरो जानकारी पस्कन कठिन छ।

स्वर्गद्वारी सनातनीहरूको आस्थाको किरण हो। यहाँको दैनिकीले जीवनपद्धतिलाई सजगता र निर्भयतामा समाहित गराउँछ। महाप्रभु एक अवतार हुनुहुन्छ। उहाँले निजी स्वार्थभन्दा माथि उठेर विश्वको हितमा सनातन धर्मलाई जोड्नुभयो। स्वर्गद्वारी कुनै मत, पन्थ वा सम्प्रदाय होइन, यो त वैदिकताको धरोहर, सनातनको मूर्तरूप र सर्वदेव समभावको पाठशाला हो। तपस्वी र योगीहरूको साधनास्थली हो। याज्ञिकहरूको यज्ञभूमि हो। वेद, ब्राह्मण र गौमाताको समन्वय गर्ने देवभूमि हो। सेवा र समर्पणको प्रयोगशाला हो। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' लाई जनमनमा फैलाउने यज्ञीयधूम हो।

।।अस्तु।।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि. र झापाका गुरुकुलहरूबीचको अन्तरसम्बन्ध

✍ सोमनाथ गौतम

परिचय

नेपालको सुदूरपूर्व झापा जिल्लाको बिर्तामोड नगरपालिका वडा नं. २ चारपानेमा विवेकाश्रम नामक धार्मिक संस्था रहेको छ। यस संस्थाभित्र श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय नेपाल सरकारको औपचारिक विद्यालयका रूपमा अवस्थित छ। विवेकाश्रम र श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय यी दुई संस्थाहरूको एक आपसमा अन्योन्याश्रित सम्बन्ध (अन्यस्य अन्यस्मिन् आश्रयः) अथवा एउटाको अर्कोसित अभिन्न सम्बन्ध रहेको छ। २०२८ साल मङ्सिर १६ गते धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन विवेकानन्द पुरी महाराजको सदिच्छाले स्थानीय बुद्धिजीवी भक्तजनको सक्रियतामा पर्णशाला निर्माण गरी चण्डी, रुद्री, शुक्लयजुर्वेद, गीताजस्ता ग्रन्थहरूको स्वाध्ययन र नित्य हवनात्मक यज्ञ प्रारम्भ भएबाट यो संस्थाले धार्मिक, आध्यात्मिक एवम् शैक्षिक यात्रा तय गरेको पाइन्छ। वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण संवर्धन र स्वस्थ सुखी व्यक्ति, समाज एवम् समग्र राष्ट्रनिर्माण गर्ने तत्कालीन नेपाली माटोका स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजको सच्चिन्तनको मूर्तस्वरूप भनेकै विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय हो।

२०२८ सालबाट प्रारम्भ गरिएको यो संस्था २०४५ सालसम्म नितान्त गुरुकुलका रूपमा रहेको थियो। २०४६ सालदेखि सरकारबाट कक्षा ८ सञ्चालनको अनुमति प्राप्त गरी कक्षागत रूपमा पठनपाठन गर्दै २०४८ सालमा पहिलो पटक एसएलसी दिइएको हो। हाल माध्यमिक तहसम्म सञ्चालन भएको यस विद्यालयमा २०० जना जति विद्यार्थी शिक्षाग्रहण तथा वैदिक सनातन धर्मसम्बद्ध सीप विकास गरिरहेका छन्। त्यसरी नै प्राथमिक तहमा ६ जना, निम्नमाध्यमिक तहमा २ जना (१ जना काजमा), माध्यमिक तहमा ४ जना, कार्यालय सहयोगी १ जना, लेखा सहयोगी १ जना, महर्षि फाउन्डेसनको सहयोगमा ध्यान शिक्षक १ जना, निजी स्रोतमा २ जना गरी जम्मा १७ जना शिक्षक, कर्मचारीहरूको यो शैक्षिक संस्था कार्यथलोसमेत बन्न पुगेको छ।

शिक्षा ऐन, शिक्षा नियमावलीमा व्यवस्था भएअनुसार यो विद्यालय हाल संस्कृत

✍ अर्जुनधारा ६ झापा, शिक्षकः श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा. वि. वि.न.पा.२ चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धारको वेदविद्याश्रमअन्तर्गतको पाठ्यक्रममा आधारित भई कक्षा ४ देखि कक्षा १२ सम्म सञ्चालित छ। २०० जति विद्यार्थी अध्ययन गर्ने यस श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय र विवेकाश्रमको जन्यजनक भावको अभिन्न सम्बन्ध रहेको छ। विद्यालयले विद्यार्थीहरूलाई औपचारिक शिक्षा प्रदान गर्दछ भने आश्रमले आवास र भोजनको व्यवस्था गरी समग्र विद्यार्थीहरूको अभिभावकत्व निर्वहण गर्दछ। यस आश्रममा वैदिक सनातन धर्मसम्बद्ध तिथि, वार, महिनासँग जोडिएका धार्मिक क्रियाकलापद्वारा विद्यार्थीलाई र सिङ्गो समाजलाई आर्यसभ्यताको आदर्श प्रदान गरिन्छ। वार्षिक रूपमा गरिने विभिन्न पुराणहरूले समाजलाई सद्विचार र सच्चिन्तन प्रदान गरी आस्थाको दीपलाई चिर कालसम्म प्रज्वलित गरिरहन तेल थप्ने काम गरिरहेको छ। यसरी समीक्षा गर्दा विवेकाश्रम र श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय एकआपसमा अभिन्न सम्बन्ध भएका संस्था हुन्।

विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय वैदिक सनातन धर्मका मूल्य-मान्यतालाई संरक्षण संवर्धन गर्दै संस्कृत शिक्षाको माध्यमले सच्चरित्र भएका जनशक्तिको उत्पादन गरी समग्र राष्ट्रको उन्नति गर्न चाहन्छ। अतः यस संस्थाको समग्र शैक्षिक संस्थाहरूसँग सुमधुर पारस्परिक सम्बन्ध रहेको छ भन्दा अत्युक्ति हुँदैन। त्यसमा पनि वैदिक शिक्षा, गुरुकुलीय शैली, वैदिक सनातन धर्मसम्बद्ध क्रियाकलापका कारणले यस संस्थाको अन्य गुरुकुलहरूसँग अझै गहिरो सम्बन्ध रहेको पाइन्छ। झापामा २४ ओटा गुरुकुलहरू हाल अस्तित्वमा रहेका छन्। तिनीहरूमध्ये विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय (वेदविद्याश्रम) २०२८ सालमा स्थापना भई आजसम्म अविच्छिन्न रूपमा सञ्चालित भएकाले यो गुरुकुल झापा जिल्लाकै जेठो गुरुकुल हो। २०७६ सालमा स्थापना भएको श्रीमहेश्वर सुरेश्वर मातृछाया गुरुकुल, मेचीनगर नगरपालिका, बाहुनडाँगी स्थापनाका दृष्टिकोणले कान्छो गुरुकुल हो। विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय गुरुकुलबाट विकसित हुँदै कक्षा ४ देखि १२ सम्म सञ्चालित भएकाले र गुरुकुलीय शैली परम्परासम्बद्ध भोजनसहित आवासको व्यवस्था भएकाले पनि झापाका अन्य गुरुकुलसँग स्वाभाविक रूपमा अन्तरसम्बन्ध रहेको देखिन्छ।

यस विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयसँग झापाका गुरुकुलहरूको के-कस्तो अन्तरसम्बन्ध रहेको छ ? भन्ने विषयलाई निम्न आधारमा केलाइएको छ -

१) गुरुकुलको स्थापनाका आधारमा
२) गुरुकुलीय सैद्धान्तिक पक्षका आधारमा
३) गुरुकुल सञ्चालनको शैलीगत आधारमा
४) गुरुकुल सञ्चालनको स्रोतका आधारमा
५) अध्ययन अध्यापनको आधारमा
६) वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण संवर्धन गर्ने लक्ष्यका आधारमा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१) गुरुकुलको स्थापनाका आधारमा

यस गुरुकुलको स्थापनाका सन्दर्भमा सर्वप्रथम एक महापुरुषको सङ्क्षिप्त परिचयबाट प्रारम्भ गर्नु सान्दर्भिक हुन आउँछ। पाँचथर जिल्लाको मेमेङ २ हाल फालेलुङ गाउँपालिका वडा नं. ३ मा पर्ने मच्छेबुङ भन्ने गाउँमा १९६२ साल माघ शुक्ल पञ्चमी (सरस्वती पूजा) का दिन पिता श्री हेमलाल र माता धनमाया पौडेलका पुत्ररत्नका रूपमा देवीप्रसाद पौडेल जन्मिएका थिए। उनले मच्छेबुङ, दवेपोखरी नामक ठाउँमा तत्कालीन समयको प्रचलनअनुसार घरगोठ गर्दै बाल्यकाल बिताएको पाइन्छ। पछि आत्मज्ञानको खोजीमा प्युठान जिल्लामा स्वर्गद्वारी महाप्रभुसँग योगाभ्यास गरी दिङ्लाका शिक्षासेवी साधक बालागुरु षडानन्द, पाँचथर सुभाङ निवासी यज्ञनिधि रेग्मी सुभाङ (गुरु) तथा ब्रह्माभ्यासानन्द (ओझा गुरु) जस्ता विद्वान् साधकहरूसँग वेद, व्याकरण, गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्रजस्ता विषयहरूको उहाँले अध्ययन गर्नुभएको थियो। पहाडका विभिन्न गुफाकन्दरा, नदीका तट, पहाडका टाकुराहरूमा तपस्या गर्दै तीव्र वैराग्य प्राप्त भएपछि २०२४ सालमा आसामको ब्रह्मपुत्र नदीका किनारमा तपस्या गरी बस्नुहुने तपस्वी श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्रीनारायण पुरीजी महाराजबाट औपचारिक सन्न्यास दीक्षा ग्रहण गर्नुभएको पाइन्छ।

सन्न्यासग्रहणपछि स्वामी विवेकानन्द पुरी नामले परिचित हुनुभएका स्वामीजीले वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण र वैदिक शिक्षा प्रदान गर्ने उद्देश्यले समाजसेवी धार्मिक व्यक्तित्व श्रीनन्दिकेश्वर तिम्सिना गुरुबाट करिब एक कठ्ठा जग्गा भिक्षाका रूपमा लिनुभएको थियो। त्यही ठाउँमा भक्तजनहरूको सक्रियतामा २०२८ साल मङ्सिर १६ गते धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन पर्णशाला निर्माण गरी ब्रह्मचारी वटुहरूलाई वेद, सप्तशती, रुद्री, गीताजस्ता ग्रन्थहरूको अध्ययन-अध्यापन सुरु गरी गुरुकुलको औपचारिक प्रारम्भ गरिएको हो। दूरदर्शी निष्ठावान् तपस्वी एक सन्तका सदिच्छाले स्थापना भएकाले यस संस्थाको नाम विवेकाश्रम र वेदका छओटा अङ्गको अध्ययन-अनुसन्धान गरिने लक्ष्य भएकाले स्थापना कालमा वेदवेदाङ्ग संस्कृत पाठशाला नामकरण गरिएको थियो। प्रस्तुत गुरुकुलका नामलाई संशोधन गरी २०३८ सालदेखि श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालय राखियो। पछि गुरुकुलको स्तरोन्नति हुँदै जाँदा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय नाम रहन गएको पाइन्छ।

(विद्यालय सुधार योजना २०७७ को परिचय भागबाट प्राप्त इतिहास)

यसरी अध्ययन गर्दा २०२८ सालमा तत्कालीन नाम श्रीवेदवेदाङ्ग संस्कृत पाठशाला, गुरुकुल विवेकाश्रम र श्रीअनन्त आदर्श संस्कृत वेदविद्यालय शिवशताक्षी १० गैंडे स्थापना भएका हुन्। यसअघि झापामा अन्य पूर्णकालिक (हिउँदे तथा चातुर्मासिक गुरुकुललाई छोडेर) गुरुकुलहरूको स्थापना भएको पाइँदैन। यसपछि २०३३ सालमा समाजसेवी वैदिक शिक्षाका प्रेरक, धार्मिक अभियन्ता श्रीकेदारनाथ खतिवडाद्वारा स्थापना गरिएको श्रीवेदवेदाङ्ग संस्कृत पाठशाला, शङ्कराचार्यपीठ अर्जुनधारा नपा १ साधुटार औपचारिक गुरुकुलका रूपमा स्थापित भएको पाइन्छ। त्यस गुरुकुलमा यस लेखकले पनि ३ वर्ष पढ्ने सौभाग्य पाएको थियो। झापामा स्थापित भई सञ्चालनमा रहेका सम्पूर्ण गुरुकुलहरूको विवरण निम्नानुसार रहेको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	गुरुकुलको नाम र स्थापना वर्ष	ठेगाना	प्राचार्य वा अध्यक्ष	सम्पर्क नम्बर
१.	श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. स्था.२०२८	विर्तामोड न.पा. २	दामोदर न्यौपाने	९८५२६३४००२
२.	श्रीअनन्त आदर्श संस्कृत वेदविद्यालय स्था. २०२८	शिवशताक्षी गैंडे	बालकृष्ण घिमिरे	९८४४२१३३७१
३.	श्रीवेदवेदाङ्ग संस्कृत पाठशाला, शङ्कराचार्यपीठ स्था.२०३३	अर्जुनधारा न.पा १	सुरेन्द्र घिमिरे	९८०६०९०८५८
४.	श्रीमाधव संस्कृत वेदविद्याश्रम, स्था.२०३९	धाइजन, सहरेडाँगी	पुण्य रिजाल	९८२३५०८२४५
५.	श्रीअर्जुनधारा संस्कृत वेदविद्यापीठ, जलेश्वरधाम स्था.२०४१	अर्जुनधारा न.पा. ७	हेमन्त भण्डारी	९८०६०३४१२१
६.	श्रीकनकाई गायत्री वैदिक विद्यापीठ स्था.२०४२	कनकाई न.पा ४, कोटिहोम	होमनाथ पौडेल	९८६३९८३४२३
७.	श्रीअभिमुक्तेश्वर गुरुकुल, विद्यापीठ स्था.२०५२	कचनकवल गा.पा.३ दल्की	हरिप्रसाद ढकाल	९८०४३६३७७०
८.	श्रीओम्कारेश्वर वैदिक विद्यापीठ स्था.२०५३	हल्दीबारी गा.पा १	खिवराज न्यौपाने	९८४१५२२१९१
९.	श्रीमुक्तेश्वर वैदिक गुरुकुल स्था.२०५३,	तोपगाछी ७, केरखा	हाल सञ्चालनमा नरहेको	
१०	श्रीभगवद्भक्ति आश्रम देवर्षि वेदविद्यालय स्था. २०५५	अर्जुनधारा न.पा.९	अम्बिकाप्रसाद खतिवडा	९८१६९०३१०३
११.	श्रीहरिहर आश्रम गुरुकुलम् स्था.२०५७	विर्तामोड न.पा.१	अनिरुद्र पौडेल	९८४४६४२१३७
१२.	श्रीकृष्ण द्वैपायन गुरुकुल वेदविद्याश्रम, स्था.२०६०	भद्रपुर ६, महेशपुर	महेन्द्र भट्टराई	९८४२६२६४९१
१३.	श्रीकालिका संस्कृत विद्यापीठ कालीस्थान स्था.२०६३	अर्जुनधारा ९	रघुनाथ रिजाल	९८१४०५५५५३
१४.	श्रीगौरीशङ्कर गायत्रीस्वरूप आश्रम कुरुकुल स्था. २०६४	बाहादशी गा.पा.६ साधुकुटी	मनोज खतिवडा	९८१४०६१४१५
१५.	श्रीसप्तऋषि गुरुकुल संस्कृत वेदविद्याश्रम स्था.२०६६	अर्जुनधारा ९	लक्ष्मीप्रसाद खनाल	९८४२६७११३९
१६.	श्रीसिद्धेश्वर गुरुकुल शिक्षा मन्दिर स्था. २०६६	कमल गा.पा.७	बुद्धि न्यौपाने	
१७.	श्रीवशिष्ठ संस्कृत गुरुकुल, स्था.२०६६	दमक न.पा.१६	चेतन आचार्य	९८१५९१९७२८
१८.	श्रीआनन्देश्वर संस्कृत गुरुकुल पाठशाला स्था.२०६६	बुद्धशान्ति १ होक्से	नीतिराज सुवेदी	९८४२२८८८३६
१९.	श्रीशिवशक्ति विद्यापीठ स्था.२०६७	बैगुनधुरा ३,		
२०.	ओम्कारेश्वर संस्कृत गुरुकुल स्था.२०७०	मेची न.पा. १५	नीरज खनाल	९८१७०४२४७१
२१.	श्रीशताक्षी गुरुकुलम् स्था.२०७१	शिवशताक्षी न.पा.११	मदनमोहन अधिकारी	९८४४६६३६५२
२२.	श्रीकिरातेश्वर गुरुकुलम् २०७३	हल्दीबारी गा.पा. ४	अर्जुन भट्टराई	९८४२७५८७२५

(यो विवरण श्रीकञ्चनगढ गौरीशङ्कर स्मारिकाको उपप्राध्यापक सोमनाथ खतिवडाद्वारा लिखित 'झापा जिल्लाका गुरुकुलको वर्तमान अवस्था, चुनौती र सम्भावना' नामक लेख र सम्बन्धित गुरुकुलहरूसँगको कुराकानीबाट प्राप्त भएको हो।)

हाल झापामा २४ ओटा गुरुकुलहरू सक्रिय रूपमा सञ्चालनमा रहेका छन्। तत्कालीन समयको श्रीवेदवेदाङ्ग संस्कृत पाठशाला नामक गुरुकुलको विकसित स्वरूप नै आज श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयका रूपमा सुपरिचित हुन पुगेको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छ। यो विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय स्थापना कालदेखि आजसम्म अविच्छिन्न रूपमा सञ्चालन हुनु, अन्य गुरुकुलहरू क्रमिक रूपमा खोल्नमा यसै गुरुकुलमा सम्बद्ध विवेकानन्द स्वामीजीका शिष्य-प्रशिष्यहरूबाट प्रेरणा मिल्नु, प्रायशः यस संस्थामा अध्ययन गरेका गुरुहरूको प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमा गुरुकुलहरूमा सहभागिता रहनु, आज पनि कक्षा ४ देखि कक्षा १२ सम्म औपचारिक रूपमा पठनपाठन गराइनु जस्ता क्रियापलापहरूले र स्थापनाका दृष्टिकोणले पनि यस विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयलाई झापाका गुरुकुलहरूको प्रेरक एवम् जेठो गुरुकुलका रूपमा लिन सकिन्छ।

२) गुरुकुलीय सैद्धान्तिक पक्षका आधारमा

गुरुकुल वैदिक शिक्षा प्रदान गरिने प्राचीनतम शैक्षिक प्रणाली हो। उपनयन संस्कार गरेर हरेक द्विजातीय ब्राह्मण वटुहरू गुरुकुलमा गएर गुरुको निर्देशनमा शिक्षादीक्षा ग्रहण गर्ने ऐतिहासिक प्रचलन रहेको पाइन्छ।

अथानन्तरमावेक्ष्यन् यथा जिज्ञासितागम। गुरवे दक्षिणां दत्वा स्नायात् गुर्वनुमोदितः।।
गृहं वनं वोपविशेत् प्रव्रजेत् वा द्विजोत्तमः। आश्रमादाश्रमं गच्छेन्नान्यथा मत्परश्चरेत्।।
(भागवत ११-१७-३७-३८)

८ वर्षबाट गुरुकुलीय अध्ययन प्रारम्भ गरेर २५ वर्ष भएपछि समावर्तन (दीक्षान्त समारोह) गरी इच्छा भए घर गृहस्थमा प्रवेश गर्ने नभए प्रक्रियागत रूपमा सन्न्यास भई वैदिक सनातन धर्मको प्रचार-प्रसार एवम् योगसाधनाद्वारा कृण्वन्तो विश्वमार्यम्... सर्वे भवन्तु सुखिनः...मित्राणि चक्षुषा समीक्षामहे...तन्मे मनः शिवशङ्कल्पमस्तु...जस्ता वैदिक सिद्धान्तलाई चरितार्थ वनाउने गरेको पाइन्छ।

दण्डी च मेखली सूत्री कृष्णाजिनधरो मुनिः।
भिक्षाहारो गुरुहितो वीक्षमाणो गुरोर्मुखम्।। (कूर्मपुराण उपरिभाग १२ -५)

दण्ड, मेखला, यज्ञोपवीत, कृष्ण मृगचर्म धारण गरी भिक्षाटन गर्ने, आफ्नो हितकारक अथवा गुरुको हितचित्त मुनिसमान बनेका शिष्यले गुरुको मुखमण्डल हेर्दै अथवा सम्मुख भएर वेदाध्ययन गर्नुपर्दछ।

उपनयन संस्कारमा लिएको भिक्षा र अन्य भिक्षाटनबाट प्राप्त भिक्षा सायं प्रातश्चरेद्भैक्ष्यं गुरवे तन्निवेदयेत्। (भागवत ७-१२-५) भन्ने पद्धतिअनुसार संरक्षणार्थ गुरुलाई भिक्षा प्रदान गर्ने, गौसेवा, गुरुसेवा, अग्निसेवा र अतिथिसेवा गरी गुरुकुलमा स्वाध्याय अनुष्ठानद्वारा निष्ठापूर्वक शिक्षाग्रहण गर्ने वैदिक गुरुकुलीय पद्धति रहेको पाइन्छ। गुरुकुलहरूमा आजको सन्दर्भमा भने गौशाला, यज्ञशाला, धर्मशाला, पाठशाला, पाकशाला जस्ता भौतिक रूपमा पञ्चशालाको व्यवस्था हुनुपर्ने, विद्यार्थीहरूलाई अनुकूलित भोजन र आवासको समुचित व्यवस्था हुनुपर्ने, गुरुकुलका गुरुहरूले आवासीय रूपमा गुरुकुलमा नै बस्नुपर्ने, हरिहर भगवान्को मन्दिर हुनुपर्ने, गुरुकुलभित्रको वातावरण स्वच्छ, शान्त, सौम्य,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैदिक परम्पराअनुकूल हुनुपर्ने, पुष्पवाटिका हुनुपर्ने, पाठ्यक्रमविना नै गुरुहरूको निर्देशन, वटुहरू र अभिभावकहरूको इच्छाअनुसार चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण, अमरकोश, नीति जस्ता परम्परित ग्रन्थहरू पढाउनुपर्ने, नित्यहवन, शिवशक्त्युपासना, सन्ध्योपासना, स्तोत्रमन्त्रपाठ गर्नुपर्ने जस्ता मान्यताहरू अघोषित रूपमा नै गुरुकुलीय सिद्धान्तका रूपमा विकास हुँदै गएको पाइन्छ।

विवेकाश्रममा पञ्चशालाको यथोचित व्यवस्था, आवासीय गुरुको व्यवस्था, हरिहर भगवान्को मन्दिर र स्वच्छ, शान्त वातावरण रहेको छ। भौतिक र प्राकृतिक रूपमा गुरुकुलका सैद्धान्तिक पक्षहरू प्रायशः यस गुरुकुलमा रहेका छन्। झापामा रहेका अन्य गुरुकुलहरूमा पनि पञ्चशालाको व्यवस्था, विद्यार्थी आवास तथा भोजनको व्यवस्था, आवासीय गुरुको व्यवस्था, नित्य सन्ध्या, हवन, प्रत्येक वैदिक सनातन धर्मसम्बद्ध चाडपर्वहरूमा उत्सव हुने भएकाले विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको झापामा रहेका अन्य गुरुकुलहरूसँग अधिकांश सैद्धान्तिक पक्षहरूमा स्वाभाविक अन्तरसम्बन्ध रहेको देखिन्छ।

३) गुरुकुल सञ्चालनको शैलीका आधारमा

गुरुकुलीय आचरण र ज्ञान आर्जनका लागि गुरुशिष्य बीचमा अपनाइने तौरतरिकालाई शैली भनिन्छ। प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्तमा उठ्नु, स्नान गरी गुरुशिष्यले साथमा सन्ध्या गर्नु, रुद्रीपाठद्वारा रुद्राभिषेक गर्नु, स्वाध्ययन गर्नु, निर्धारित समयमा गुरुलाई पाठ बुझाउनु, सङ्गच्छध्वं संवदध्वं....को वैदिक मान्यतालाई आत्मसात् गरी सँगै भोजन गर्नु, बेलुका १० बजे सबैले शयन गर्नु जस्ता क्रियाकलापहरू गुरुकुलीय क्रियाकलापहरू हुन्। यस्ता गुरुकुलीय शैलीहरू सबै गुरुकुलमा हुने गर्दछन्। यस विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयमा बिहान-बेलुका आवासीय शैलीहरू अन्य गुरुकुलहरूसँग मिल्दा भए पनि पठनपाठन भने कक्षागत आधारमा विषयगत शिक्षकले पढाउने वा सिकाउने भएकाले गुरुकुलीय शैलीभन्दा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको पठनपाठन शैली भने नितान्त भिन्न रहेको छ। यसरी समीक्षा गर्दा झापाका गुरुकुलहरूमा श्रीकृष्ण द्वैपायन गुरुकुल भद्रपुरसँग पठनपाठन शैली मिल्दो भए पनि अरू कक्षागत शैली नभएका गुरुकुलहरूसँग यसको पठनपाठनको शैलीगत सम्बन्ध फरक रहेको पाइन्छ।

यस विद्यालयको पठनपाठन विषयगत अध्यापन हुने गरेकाले केही सहज भए पनि कक्षा व्यवस्थित सञ्चालनका लागि अझै विषय शिक्षकको पर्याप्तता नभएको महसुस गर्न सकिन्छ। कक्षागत पठनपाठन हुनु, बिहान १० बजेबाट ४ बजेसम्म कक्षा सञ्चालन हुनु, अष्टमी, चतुर्दशी, औंसी, पूर्णिमा, प्रतिपदा जस्ता तिथिहरूमा विद्यालय छुट्टी नभई नेपाल सरकारको नियमअनुसार शनिवार र सार्वजनिक बिदाका दिनमात्र बिदा (अनध्याय) हुनु, प्रायशः विषयगत शिक्षकहरूले अध्यापन गराउनुलगायत शैक्षणिक व्यवस्था, पठनपाठन अनुगमन, परीक्षा सञ्चालन र आधुनिक मूल्याङ्कनका विधिहरूद्वारा विद्यार्थी मूल्याङ्कन गरी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमाणपत्र प्रदान गर्नु जस्ता क्रियाकलापहरू शिक्षा ऐन र शिक्षा नियमावलीमा व्यवस्था भएअनुसार नेपाल सरकारबाट निर्देशित रहेको देखिन्छ।

नेपाली, गणित, अङ्ग्रेजी, सामाजिक जस्ता आधुनिक विषयहरू चण्डी, रुद्री, शुक्लयजुर्वेद, कर्मकाण्ड, पाणिनि व्याकरण, संस्कृत भाषा, अमरकोश जस्ता प्राच्य विषयहरूको समेत पठनपाठन यस विद्यालयमा हुने गरेको छ। झापाका अन्य गुरुकुलहरूमा एक जना गुरुले ५० भन्दा बढी विद्यार्थीहरूलाई दुर्गा शप्तशती, रुद्री, शुक्लयजुर्वेद, अमरकोश, लघुसिद्धान्तकौमुदी जस्ता ग्रन्थहरू पढाउने गरेको पाइन्छ। यसरी झापास्थित गुरुकुलहरूसँग पारस्परिक शैलीगत अन्तरसम्बन्ध केलाउँदा यस विद्यालयको पठनपाठन शैली अन्य गुरुकुलहरूभन्दा अलग रहेको महसुस गर्न सकिन्छ। शैलीगत रूपमा झापाका अन्य गुरुकुलहरूसँग यस विद्यालयलाई तुलना गर्दा धार्मिक एवम् आवासीय शैलीमा समता देखिए पनि शैक्षणिक पठनपाठनको शैली भने परम्परित गुरुकुलहरूभन्दा अलग रहेको पाइन्छ।

४) गुरुकुल सञ्चालनको स्रोतका आधारमा

गुरुकुल वा संस्था सञ्चालनका लागि आर्थिक स्रोत, विद्यार्थीको स्रोतजस्ता स्रोतहरू नै अत्यावश्यक स्रोतहरू हुन्। गुरुकुलमा प्रायशः विद्यार्थी बटुहरू आवासीय रूपमा बसी अध्ययन गर्ने भएकाले उचित आवास र आवासका लागि चाहिने पानी, बत्ती, शौचालय, खाट, समुचित भोजन जस्ता कुराहरू व्यवस्थापन समितिले मिलाउने गरेको पाइन्छ। गुरुकुलको स्रोत भनेको धर्म, संस्कृति, संस्कारको संरक्षण र संवर्धन चाहने भक्तजनहरूलाई मान्न सकिन्छ। प्रत्येक गुरुकुलहरूले वर्षमा एकपटक पुराण लगाउने धान्याचलमा भक्तजनहरूले अर्पण गरेको धान र दानदातव्यबाट प्राप्त सहयोग रकम नै गुरुकुलहरूको आवासीय व्यवस्थापनको विशेष स्रोत हो। *कुक्षौ तिष्ठति यस्यान्नम्,,,* भक्तजनहरूको घरमा प्रत्येक दिन खाना बनाउने बेलामा आफ्नो परिवारका लागि छुट्याइएको चामलबाट एक मुठ्ठी झिक्दै राख्ने र मठ, मन्दिर अथवा गुरुकुलहरूमा प्रदान गरिने यस प्रकृतिको अन्नलाई मुष्टिदान भनिन्छ।

कुनै समयमा प्रायशः मुष्टिदानबाट चलेका गुरुकुलहरू आजको सन्दर्भमा महर्षि फाउन्डेसन नामक संस्थाको भर परेको पाइन्छ। संवैधानिक रूपमा शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी जस्ता महत्त्वपूर्ण आवश्यकतालाई सरकारले पूरा गर्ने भनिए पनि गुरुकुलहरूलाई सरकारबाट खासै उल्लेख्य सहयोग गरेको पाइँदैन भने सहयोगका लागि पर्याप्त पहलसमेत भएको देखिंदैन। विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयलाई आवासीय व्यवस्थापन दानदातव्यबाट प्राप्त भएको रकम र प्रतिवर्ष वार्षिक यज्ञमा धान्याचलमा भक्तजनहरूबाट अर्पित धानबाट आवास तथा भोजनको व्यवस्थापन मिलाइएको छ।

शैक्षणिक व्यवस्थापनका लागि ११ शिक्षक दरबन्दी, काजमा १, कार्यालय सहयोगी १, लेखा सहयोगी १ र निजी स्रोतमा २ गरी १५ जना जनशक्ति भए पनि १३ जनालाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेपाल सरकारबाट तलबभत्ता व्यवस्थापन गरिदिएको छ भने महर्षि फाउन्डेसनको सहयोगमा १ ध्यान गुरु गरी जम्मा १७ जना शिक्षक कर्मचारी रहेका छन्। यसरी हेर्दा सम्पूर्ण आवासीय (आवास, भोजन,आदि) व्यवस्थापनका लागि विवेकाश्रममा हुने धार्मिक क्रियाकलापमा प्राप्त दानदातव्य नै प्रमुख स्रोत हो। अन्य झापाका गुरुकुलहरूमा पनि वार्षिक पौराणिक महायज्ञमा प्राप्त अन्नदान, धान्यदान आदिबाट भोजन आवासको व्यवस्थापन गर्नु, महर्षि फाउन्डेसनले रुद्राभिषेकवापत दिइएको सहयोगलाई अपनाउनु जस्ता स्रोतहरू नै आर्थिक स्रोत हुन्। वैदिक परम्परित ग्रन्थहरूको अध्ययन गर्न इच्छुक ब्राह्मण बटुकहरू नै गुरुकुलीय विद्यार्थीका स्रोत हुन्। यसरी स्रोतगत तुलनात्मक अध्ययन गर्दा विवेकाश्रम र अन्य झापाका गुरुकुलहरूसँग आवास र भोजन व्यवस्थापन गर्ने स्रोत जुटाउने शैलीगत सम्बन्ध मिल्दो देखिए पनि विद्यालयमा गुरु-शिक्षकलाई दिइने तलबभत्ताको स्रोतगत सम्बन्ध भने फरक रहेको पाइन्छ।

५) अध्ययन-अध्यापनको शैलीका आधारमा

विवेकाश्रमको परिसरभित्र श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय रहेको छ। यो विद्यालय नेपाल सरकारबाट स्वीकृत औपचारिक शैक्षिक संस्था हो। यस विद्यालयमा २०० जति विद्यार्थी र १७ जना शिक्षक कर्मचारी रहेको कुरा माथि नै प्रस्तुत भएको छ। यस विद्यालयमा शुक्लयजुर्वेद, कर्मकाण्ड, व्याकरण, संस्कृत भाषा, नेपाली, अङ्ग्रेजी, सामाजिक, गणित जस्ता विषयहरूको अध्यापन हुने गरेको छ। नितान्त गुरुकुलमा जस्तो केवल गुरुको निर्देशनमा मात्र नभई नेपाल सरकारको मातहतमा पाठ्यक्रम विकास केन्द्रले तोकेको वेदविद्याश्रमको पाठ्यक्रमलाई विशेष आधार बनाई कक्षा ४ देखि कक्षा १२ सम्म नेपाल सरकारले तोकेको समय बिहान १० बजेदेखि बेलुका ४ बजेसम्म विषय शिक्षकहरूद्वारा शैक्षणिक क्रियाकलाप हुने गरेको छ।

झापाको कृष्ण द्वैपायन गुरुकुल भद्रपुरसँग यस गुरुकुलको प्रकृति मिल्दो भए पनि अरू गुरुकुलहरूसँग अध्ययन-अध्यापनको शैली मिल्दैन। अन्य गुरुकुलहरूमा गुरुहरूले परम्परित शैलीमा आफ्नो शैली घोलेर शसशती, रुद्री, शुक्लयजुर्वेद, अमरकोश, व्याकरण पढाउने गरेको पाइन्छ। भरपर्दो आर्थिक स्रोत नहुनाले गुरुकुलमा विषयगत गुरुहरू राखिएको देखिँदैन। एक जना गुरुले ५० बढी विद्यार्थीलाई चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण पढाउनुपर्ने बाध्यात्मक अवस्थाका कारण गुरुको क्षमताअनुसार संस्कृत विषयको आधारभूत ज्ञानमात्र गराउने गरिएको पाइन्छ। पहिले पहिले केही वर्ष गुरुकुलमा अध्ययन गरी भारतको वृन्दावन, बनारस, हरिद्वार आदि स्थानमा गई औपचारिक अध्ययन गर्ने चलन थियो र आज पनि छँदै छ। शिक्षाको चरम प्रतिस्पर्धात्मक अबको समयमा विद्यार्थीलाई औपचारिक शिक्षाका लागि भारत पठाइनु पटक्कै सान्दर्भिक होइन। श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयमा औपचारिक कक्षा नभएका गुरुकुलहरूले अपवादबाहेक गुरुकुलकै सिफारिसमा विद्यार्थी पठाइएको पनि पाइँदैन। यस विषयमा गुरुकुल सञ्चालकहरूले निकै

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गम्भीर चिन्तन गर्न आवश्यक देखिन्छ। बिहान रुद्रीपाठ, चण्डीपाठ, बिहान-बेलुका सन्ध्या, आरतीजस्ता आवासीय सिकाइ र अभ्यासका सन्दर्भमा भने यस विद्यालयको अन्य गुरुकुलहरूसँग आवासीय शैली मिल्दो देखिन्छ तर अध्ययन-अध्यापनको सन्दर्भमा कार्यगत सम्बन्ध र पारस्परिक साझेदारी सम्बन्ध खासै देखिँदैन।

६) वैदिक सनातन धर्म संरक्षण, संवर्धन गर्ने लक्ष्यका आधारमा

संसारको सबभन्दा प्राचीनतम धर्म वैदिक सनातन हिन्दु धर्म हो। ओंकार मन्त्रहरूको बीज, वेद मूलग्रन्थ, पूर्वजन्म र परजन्ममा विश्वास, गौसेवा, अतिथिसेवा, मूर्तिपूजन, मातापिताको सेवा, प्राकृतिक स्रोत सम्पदाको समुच्च सम्मानका साथ संरक्षण र *वसुधैव कुटुम्बकम्* को उदार भावनाजस्ता कुराहरू वैदिक सनातन धर्मका विशेषताहरू हुन्। यस धर्मसम्बद्ध कालजयी वाङ्मयहरू अनगिन्ती रहेका छन्। आर्ष वैज्ञानिकहरूको हजारौं वर्षको अनुसन्धान र अनुभूति घोलिएका ग्रन्थहरू सर्वदा मानवीय कल्याणकारक रहेका छन्। वैदिक ग्रन्थहरूको अध्ययन-अध्यापनका माध्यमले नैतिकवान् दक्ष जनशक्ति उत्पादन गरी वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण, संवर्धन र समग्र राष्ट्र विश्वजगत्लाई नै *कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः, मित्राणि चक्षुषा समीक्षामहे* जस्ता वैदिक आदर्शलाई चरितार्थ पार्ने विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको उद्देश्य रहेको छ।

नैतिकताविनाको समाजसेवा, राजनीति, चरित्ररक्षाजस्ता कुनै पनि कार्य गर्न नसकिने भएकाले शिक्षामा नैतिक शिक्षा अत्यावश्यक पर्दछ। त्यसको आपूर्ति केवल संस्कृत शिक्षाले मात्र गर्न सक्छ भन्ने सोचले विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको स्थापना भएको हो। यस संस्थाले केवल विद्यार्थीलाई मात्र नभएर समग्र गाउँसमाजका सम्पूर्ण भक्तजनहरूलाई स्वाध्याय एवम् सत्सङ्गको माध्यमले भगवद्भाव जगाई सामाजिक सहिष्णुतालाई संवर्धन गरेको छ। यस संस्थाका वरिपरिका मातृशक्तिहरू अन्य भक्तजनहरूले पनि समय-समयमा गीता अध्ययन एवम् कृष्णाष्टमी, रामनवमी, शिवरात्रिजस्ता विभिन्न पर्वहरूमा उत्सव र महात्म्यहरू श्रवण गर्ने गरिएको पाइन्छ। झापाका अन्य गुरुकुलहरूमा पनि संस्कृतका आधारभूत विषयहरू अध्ययन गराइनु, वैदिक सांस्कृतिक पर्वहरूमा व्रत तथा उत्सव गरिनु, वार्षिक रूपमा पुराण तथा सत्सङ्ग गरिनु, नित्य हवन, नित्य शिवशक्तिको उपासना, व्रत, ध्यान, जप तपजस्ता क्रियाकलापहरूले वैदिक सनातन धर्मको संरक्षण संवर्धन भएको महसुस गर्न सकिन्छ। यस सन्दर्भमा भने पारस्परिक गहन अन्तरसम्बन्ध रहेको देखिन्छ।

प्रायशः योगेश्वराश्रम तथा विवेकानन्द महाराजसँग शिक्षादीक्षा लिएका शिष्य-प्रशिष्यहरूबाट नै झापाका गुरुकुलहरू सञ्चालन भएकाले सम्पूर्ण गुरुकुलहरूले वैदिक सनातन धर्म संरक्षण संवर्धन, संस्कृत वाङ्मयहरूको अध्ययन-अध्यापन नै विशेष लक्ष्य राखेको देखिन्छ। जसको वाटिकामा फुले पनि गुलाब गुलाब नै भएझैं गुरुकुलहरूको वैदिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सनातन धर्म संरक्षण संवर्धन र संस्कृत वाङ्मयका अध्ययनका सम्बन्धमा साङ्गठनिक रूपमा कार्यगत एकता नदेखिए पनि स्वाभाविक रूपमा प्रभावमूलक गहन सम्बन्ध रहेको देखिन्छ।

गुरुकुल भनेको आर्ष सभ्यताको ज्ञानार्जन गर्ने समुच्च ऐतिहासिक थलो हो। गुरुकुल गुरुशिष्य परम्परामा आधारित रहेको हुन्छ। वैदिक कालका आर्ष वैज्ञानिक ऋषि, महर्षिहरूको हजारौं वर्षको खोज-अनुसन्धानको निष्कर्ष संस्कृत वाङ्मयहरूमा सुरक्षित रहेका छन्। त्यस्ता प्राकृतिकशास्त्र, आयुर्वेदविज्ञान, वास्तुविज्ञान, ज्योतिषशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्यशास्त्र योगशास्त्र जस्ता अनगिन्ती विषयवस्तुहरू संस्कृत भाषामा रहेका छन्। त्यस्ता महत्त्वपूर्ण संस्कृत वाङ्मयहरूको अध्ययन परिशीलनको आधारभूत ज्ञान गुरुकुलहरूमा दिइन्छ। संस्कृत शिक्षा केवल गुरुकुलमा मात्र नभई अन्य सरकारी विद्यालयहरूमा पठनपाठन गर्ने वातावरण सिर्जना हुन आवश्यक छ। गुरुकुलहरूमा सबै जातले पढ्न पाएनन् भनी विरोध गर्ने व्यक्तिहरूले नेपाल सरकारसँग प्रत्येक विद्यालयहरूमा संस्कृत शिक्षा चाहिन्छ भन्न नसक्नुले उनीहरूमा भएको अल्पज्ञता र जातीय ईर्ष्यालुपन छर्लङ्ग हुन जान्छ। हिजो संस्कृत शिक्षा बुर्जुवा शिक्षा हो भन्दै विद्यालयहरूमा संस्कृत विषयका प्रश्नपत्र, पुस्तक जलाउने र संस्कृत पढाउने शिक्षकहरूलाई उत्पीडन गरी हठात् संस्कृत अध्ययनबाट वञ्चित गरिएको तितो यथार्थ सबैमा छर्लङ्ग छँदै छ। त्यो हाम्रो समाजका लागि ठूलो दुर्भाग्य थियो। यसै सन्दर्भमा विगत पाँच दशकदेखि विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय हाम्रो संस्कार, संस्कृति र वैदिक परम्परा एवम् सद्ज्ञानको संरक्षण, संवर्धनमा लागिपरेको छ।

कक्षा ४ देखि १२ सम्म अध्ययन हुने यस संस्थाले गुरुकुलबाट विकसित हुँदै माध्यमिक विद्यालय (वेदविद्याश्रम) सम्मको यात्रा तय गरिसकेको छ। यस्ता औपचारिक शिक्षाप्रदायक गुरुकुल श्रीकृष्ण द्वैपायन गुरुकुल वेदविद्याश्रम, महेशपुरको यस गुरुकुलसँग प्रकृति मिल्दो देखिन्छ। अन्य २३ वटा गुरुकुलहरूमा औपचारिक शिक्षा प्रदान गर्ने शैली र विषयगत पठनपाठन, मूल्याङ्कन आदिको तौरतरिका नमिले पनि गुरुकुलीय शैली पद्धतिको संरक्षण गर्ने, धार्मिक क्रियाकलाप सञ्चालन गर्ने, समाजमा आध्यात्मिक चेतना फैलाउने र गुरुकुलको आवासीय रहनसहन, तौरतरिकामा भने झापाका अन्य गुरुकुलहरूसँग विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय चारपानेको पारस्परिक स्वाभाविक अन्तरसम्बन्ध रहेको पाइन्छ।

निष्कर्षमा गुरुकुलहरूले पारस्परिक सम्बन्धका लागि साङ्गठनिक रूपमा गोलबद्ध हुनुपर्ने, गुरुकुलीय व्यवस्थापन समिति, गुरुहरू र विद्यार्थीहरूको आचारसंहिता बनाई लागू गर्नुपर्ने, अनौपचारिक अध्ययनबाट विद्यार्थीहरूलाई औपचारिक शैक्षणिक मूलधारमा समाहित गर्नुपर्ने, विषयगत यथोचित शैक्षणिक मूल्याङ्कनको वातावरण सिर्जना गर्नुपर्ने, गुरुकुल सञ्चालकहरूले पारस्परिक अन्तक्रिया गरी गुरुकुलहरूमा एकरूपता ल्याउनुपर्ने, गुरुकुल सञ्चालनको दिगो स्रोत पहिचान गर्नुपर्ने, अङ्ग्रेजी, गणित, सामाजिक जस्ता व्यवहारका लागि अपरिहार्य विषयहरू पनि गुरुकुलमा ऐच्छिक रूपमा भए पनि पढाइनुपर्ने,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनाइ, बोलाइ, पढाइ, लेखाइजस्ता शिक्षाका सीपहरूको विकासमा सबै गुरुकुलहरूले जोड दिनुपर्ने, औपचारिक शिक्षाका लागि भारतका विभिन्न ठाउँमा जानुपर्ने बाध्यात्मक परिस्थितिको अन्त्य गर्नुपर्ने, कमसेकम २ महिनामा एकपटक गुरुकुलका सञ्चालकहरू भेला भई विचार-विमर्श गर्नुपर्नेजस्ता कार्यहरू गर्न सके गुरुकुलहरूको पारस्परिक अन्तरसम्बन्धलाई सुदृढ बनाउनका साथै गुरुकुलहरूमा बेलाबेलामा आउने गरेका व्यावहारिक, कानुनी र राजनीतिक समस्याहरूलाई समाधानका लागि समेत सहज हुन सक्छ। झापामा भएका गुरुकुलहरूले एकआपसमा भावनात्मक, व्यावहारिक, सैद्धान्तिक र वैचारिक अन्तरसम्बन्ध कायम गर्न साङ्गठनिक हुन नितान्त आवश्यक देखिन्छ।

सन्दर्भ-सामग्री

धनुष्कोटी पत्रिका (स्मारिका) वर्ष १, अङ्क १, असोज २०७२

कञ्चनगढ गौरीशङ्कर स्मारिका साधुकुटी बाह्रदशी वर्ष १ अङ्क १, प्रकाशन २०७२

श्रीमद्भागवत महापुराणम् स्थूलाक्षरं मूलमात्रम्, गीताप्रेस गोरखपुर, बाइसौं पुनर्मुद्रण २०६१

कूर्मपुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, छैटौं पुनर्मुद्रण सं.२०६९

विद्यालय सुधार योजना २०७६ श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय वि.न.पा. २ चारपाने

फोनवार्ता

तुलसी नेपाल (महर्षि फाउन्डेसन वि.नि.)

केशव खतिवडा (हिमांशुदेव) (महर्षि फाउन्डेसन वि. नि.)

रेणुकृष्ण अधिकारी (महर्षि फाउन्डेसन वि. नि.)

(अन्य माथि उल्लिखित आचार्यहरूसँग कुराकानी)

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धार्मिक एवं तीर्थभूमि विवेकाश्रम

आचार्य गायत्री दाहाल

१. विषय प्रवेश

आश्रम शब्दले विभिन्न अर्थ बुझाउने भए तापनि 'आ समन्तात् श्रम्यन्ते जनाः इति आश्रमः' भन्ने अर्थ ग्रहण गर्नु यहाँ राम्रो हुन्छ। जगत्का सम्पूर्ण प्राणीमात्रले आश्रय ग्रहण गर्ने ठाउँलाई आश्रम भनिन्छ। हाम्रा पूर्वज ऋषिमुनिहरूले धेरै विचार विमर्श गरेर यस्ता स्थानहरूको स्थापना गर्नुभएको छ। तिनै केही स्थानहरूमध्ये विवेक आश्रम पनि एक हो। जहाँ सरल चित्त भएका सन्तको चरण पर्दछ त्यो धार्मिक वा पुण्यभूमि बन्दछ। सन्तको आगमनका साथ सत्सङ्ग हुन्छ। सत्सङ्गबाट पाप र अज्ञान हटेर जान्छ :

तीर्थादप्यधिकः स्थाने सतां साधुसमागमः। पचेलिमफलः सद्यो दुरन्तकलुषापहः।।
अपूर्वः कोऽपि सद्गोष्ठीसहस्रकिरणोदयः। य एकान्ततयात्यन्तमन्तर्गततमोपहः।।

(स्क.मा.कुमा.११।६-७)

यस पुण्यभूमिमा पनि वि.सं. २०२८ सालमा १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीको आगमनले यो आश्रम आजको यस अवस्थामा आइपुगेको कुरा छर्लङ्ग हुन्छ।

२. धर्म शब्दको व्युत्पत्ति र अर्थ

धृञ् धारणे धातुदेखि अर्तिस्तुसु. यो उणादि सूत्रद्वारा 'मन्' प्रत्यय हुँदा धर्म शब्द बन्दछ। 'धर्मं चरति आसेवते वा ठक्' धर्मको आचरण गर्छ वा धर्मको सेवा गर्छ भन्ने अर्थमा धार्मिक हुन्छ। वेदमा जो विधान गरिएको छ त्यो धर्म हो। त्यसको विपरीत अधर्म हो। वेद स्वयं नारायणको स्वरूप हो :-

वेदप्रणिहितो धर्म ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः। वेदो नारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रूम।।

(श्रीमद्भा. ६।१।४०)

सनातन धर्म जो छ यो सनातनदेखि चलिआएको छ। अनन्त कालसम्म चलिरहनेछ। जुन शक्तिद्वारा सम्पूर्ण सृष्टिप्रक्रिया रक्षित हुन्छ। जसको धारणा सबैमा हुन्छ त्यसको नाम हो धर्म :

धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मेणविधृताप्रजाःयस्यादधारणसंयुक्तःसधर्मइतिनिश्चयः। । *(महाभा.,शान्ति.१०९।११)*

धार्मिक क्षेत्रका युवावक्ता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्य धर्म, विशेष धर्म, आपद्धर्म गरी धर्मलाई तीन भेद गरिएको छ। मानव मात्रका लागि आवश्यक पर्ने धर्म भनेको वामन पुराणमा निम्नानुसार वर्णन गरिएको छ :

स्वाध्यायो ब्रह्मचर्यं च दानं यजनमेव च।अकार्पण्यमनायासो दयाहिंसाक्षमादयः।।

जितेन्द्रियत्वं शौचं च माङ्गल्यं भक्तिरच्यूते।शङ्करे भास्करे देव्यां धर्मोऽयं मानवः स्मृतः।।

(वामनपुराण अ. ११।२३-२४)

स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, दान, यजन, छलकपटरहित, दयावान् हुनु, हिंसारहित, इन्द्रिय निग्रह, शौचाचारयुक्त, भक्तियुक्त, पाञ्चायन देवताको उपासक हुनु नै मानवको परम धर्म हो। यी सबै विषयको शिक्षा प्रदान गर्ने र विभिन्न समयमा सत्सङ्ग गरी मानवीय धर्मको आधिकारिक व्याख्या गर्न सक्ने साधुसन्तहरूको आगमन भएको हुनाले पनि यस भूमिलाई धार्मिक वा तीर्थभूमि भन्न सकिन्छ :-

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं प्रभो।तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृत।।

(श्रीमद्भागवत १।१३।१०)

३. विवेकाश्रमको महत्त्व

तरति पापादिकं यस्मात् जसको सेवनद्वारा मनुष्य पापबाट मुक्त हुन्छ त्यसलाई तीर्थ भनिन्छ। यस आश्रममा विशेष गरेर चारओटा क्षेत्रहरू रहेका छन्। १.शैक्षिक क्षेत्र (विद्यालय) २.मन्दिर, ३. गौशाला, ४. सत्सङ्ग परिसर। यी चारैओटा क्षेत्रलाई तीर्थ शब्दभित्र समेट्न सकिन्छ।

३.१. शैक्षिक क्षेत्र

शैक्षिक क्षेत्र भनेको गुरुतीर्थ हो। जुन स्थानमा हामी एकै अक्षरमात्र पनि पठ्दछौं वा कुनै कुराको ज्ञान प्राप्त गर्छौं भने त्यस स्थानलाई गुरुतीर्थ मान्नु पर्ने कुरा पद्मपुराणमा उल्लेख गरिएको छः-

दिवा प्रकाशकः सूर्यः शशी रात्रौ प्रकाशकः।गृहप्रकाशको दीपस्तमोनाशकरः सदा।।

रात्रौ दिवा गृहस्यान्ते गुरुः शिष्यं सदैव हि।अज्ञानाख्यं तमस्तस्य गुरुः सर्वं प्रणाशयेत्।।

तस्माद गुरुःपरं तीर्थं शिष्याणामवनीपते / *(पद्मपुराण, भूमिखण्ड ८५।१२-१४)*

सूर्यले दिनमा प्रकाश दिन्छन्, चन्द्रमा रात्रिमा प्रकाशित हुन्छन् भने बत्तीले घरमा उज्यालो दिएर अन्धकार नाश गर्दछ। गुरु आफ्ना शिष्यको हृदयमा रात-दिन ज्ञानरूपी दियो बालेर अज्ञानरूपी अन्धकारलाई नाश गरिदिने हुनाले शिष्यका लागि गुरु तीर्थ स्वरूप मानिन्छन्।

अतः यस आश्रममा रहेको जुन शैक्षिक क्षेत्र हो यसले पनि आफ्नो आरम्भ कालदेखि नै यस विधालाई गुरुशिष्य परम्परामा निरन्तरता दिँदै आएको देखिन्छ। यहाँका शिष्यहरू आज धेरै ठाउँमा गुरु बनिसक्नुभएको छ। अझै भन्ने हो भने यस संस्थाको स्थापना नै शिक्षाको ज्योति प्रदान गर्न भएको देखिन्छ।

३.२. मन्दिर

यस क्षेत्रमा मन्दिरहरूको पनि स्थापना भएको छ। भगवान्को विग्रहको स्थापना

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुनुलाई पनि तीर्थ मानिन्छ। तीर्थ तीन किसिमका हुन्छन् :- प्रभावादद्भुताद् भूमेः सलिलस्य च तेजसा। परिग्रहान्मुनिनां च तीर्थानां पुण्यता मता।।(महाभा.अनु.१०८।१९)

क. जङ्गमतीर्थ

साधु-सन्त ब्राह्मणहरूलाई जङ्गम तीर्थ मानिन्छ। किनभने उहाँहरूको सद्वाक्यद्वारा मनुष्य पवित्र बन्दछन् : साधवो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मिष्ठा लोकपावनाः। हरन्त्यघं तेऽङ्गसङ्गात् तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरिः।।(श्रीमद्भा.९।९।६)

ख. मानसतीर्थ

मन, वचन, कर्मद्वारा निरन्तर सत्कार्य गर्नु विकारयुक्त भावलाई त्याग गर्नु नै मानस तीर्थ हो। मनुष्यमात्रले गर्ने सत्कार्यलाई मानस तीर्थ भनिन्छ : यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्। निर्विकाराः क्रियाः सर्वाः स तीर्थः मानसः स्मृतः।।(श्रीस्कन्दपुराण, माहे. कुमार.२।६)

ग. भौमतीर्थ

भारत वर्ष यसै पनि कर्मभूमि भएकाले तीर्थ मानिन्छ। त्यसमा पनि नदीका कारणले, पर्वतका कारणले अथवा साधुसन्तका तपस्याका कारणले तीर्थ मानिन्छ :

त्रयाणामपि लोकानां तीर्थं मध्यमुदाहृतम्। जाम्बवे भारतं वर्षं तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।।
कर्मभूमिर्यतः पुत्र तस्मात्तीर्थं तदुच्यते।(श्रीब्रह्मपुराण ७०।२०-२१)

माथि उल्लेख भएअनुरूप विवेक आश्रममा रहेका मन्दिरहरू पनि साधुसन्तहरूद्वारा स्थापना भएका र यस स्थानमा सन्तको निवास भएका कारणले यो भूमि भौमतीर्थअन्तर्गत पनि पर्दछ।

३.३. गौशाला

हाम्रा शास्त्रहरूले गाईलाई तीर्थ स्वरूप मानेका छन्। गाईलाई आमाको स्थान प्रदान गरिएको पाइन्छ (महा.अनु. ८०।१४-१५) :

नमो गोभ्यः श्रीमतिभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

यस सम्पूर्ण जगत्की आमा स्वरूप गाईहरू निरन्तर मेरा अघिपछि देख्न पाइरहूँ, गाईहरूका बिचमा मेरो निवास होस् : गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च। गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्।।(महा. अनु. ८०।३)

उक्त शास्त्रवचनअनुरूप जहाँ गौशालाको स्थापना भएको छ त्यहाँ तीर्थ स्वयं निवास गर्दछ। गाईहरू स्वयं तीर्थ हुन्। त्यसै कारणले गर्दा यो विवेकाश्रम पनि गौशालाले सुसज्जित भएको हुनाले यो तीर्थ स्थान हो। यहाँ गाईहरू निरन्तर निवास गरिरहन्छन्। गाईहरूको सेवा पनि अति राम्रो भएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३.४. सत्सङ्ग

शास्त्रमा सन्तसमागमलाई पनि परम तीर्थको संज्ञा प्रदान गरिएको छ :-

मुख्या पुरुषयात्रा हि तीर्थयात्राप्रसङ्गतः।सद्भिः समागमो भूमिभागस्तीर्थतयोच्यते।।

(श्रीस्कन्द.माहे.कुमा.११।११)

यस पुण्यभूमिमा निरन्तर, देवपूजन, हवन, स्वाध्ययन, दान, ब्राह्मण भोजन जस्ता कार्यहरू हुने भएका कारणले पनि यो तीर्थभूमि हो। भगवान् शिवको जहाँ स्थापना हुन्छ त्यस क्षेत्रलाई पनि तीर्थ क्षेत्र मानिन्छ भनिएको छ : नमस्तीर्थ्याय च (यजुर्वेद १६।४२) यसरी वेदमा तीर्थ स्वरूप शिवजीलाई नमन गरिएको हुनाले पनि यो भूमि सच्चा तीर्थको रूपमा चिनिन्छ। यहाँ विवेकेश्वर भगवान् शिवको सन्तहरूद्वारा स्थापना भएको छ।

४. निष्कर्ष

धर्म र तीर्थ शब्दको अर्थ धेरै व्यापक रहेको छ। नेपल भूमि भनेको यस्तो भूमि हो जहाँ आध्यात्मिक विकास र आत्मिक उन्नतिलाई नै आफ्नो जीवनको लक्ष्यका रूपमा स्वीकार गरिएको हुन्छ। हाम्रो संस्कार, संस्कृति नै अन्तर्मुखी प्रकृतिको छ। यसले बाह्य आवरणलाई एवं बाह्य संसारलाई खासै महत्त्व राख्दैन। त्यसै कारणले गर्दा पनि हाम्रा पूर्वजहरूको देनलाई उजागर गर्न सकिरहेको अवस्था छैन। हाम्रो धर्म, संस्कार तीर्थसम्बन्धी चर्चा केही अपुग हो या जुन तरिकाले हाम्रा सन्ततिहरूलाई बुझाउनुपर्ने हो त्यो भइरहेको छैन। चार पुरुषार्थमध्ये तीनओटा धर्म, अर्थ र काम यी पुरुषार्थ अन्य प्राणीहरूले पनि स्वतः स्वभावतः प्राप्त गर्दछन्। चौथो पुरुषार्थ मोक्ष केवल मानवले मात्र प्राप्त गर्न सक्दछ। मोक्ष प्राप्त गर्नका लागि तीर्थको सेवा गर्नु एवं धर्मलाई धारणा गर्नु अतिआवश्यक छ। तीर्थको सेवाबाट अन्तःकरण शुद्ध हुन्छ। अन्तःकरण शुद्ध भइसकेपछि अज्ञान हटेर जान्छ। अज्ञानको विनाश भएपछि ज्ञानको उदय हुन्छ। ज्ञानभन्दा पवित्र एवं मोक्षमार्ग अरू केही पनि छैन।

यो विवेकाश्रम पनि ज्ञानभूमि हो। यसको स्थापना कालदेखि नै यहाँ ज्ञानरूपी गुरुहरूद्वारा शिक्षारूपी दियो बालेर अज्ञानरूपी अन्धकारलाई नष्ट गरेर शिष्यरूपी प्रकोष्ठलाई उज्यालो छर्नुभएको छ। यिनै कारणले गर्दा यो भूमि धर्मभूमि, तीर्थभूमि एवं ज्ञानभूमि हो।

सन्दर्भ सामग्री

१. पराशरप्रणीत-*श्रीविष्णुपुराण*, गीताप्रेस गोरखपुर, ३५औं मुद्रण वि. सं. २०६५।

२. सिग्देल पुण्यप्रसाद, *धनुष्कोटि*, श्रीकिरातेश्वर महादेव धनुष्कोटिधाम, झापा नेपाल, वर्ष १अङ्क १ वि.सं २०७२।

३. *कल्याण धर्मशास्त्राङ्क*, गीताप्रेस गोरखपुर, चौथो मुद्रण वि.सं.२०७४।

४. उपाध्याय बलदेवाचार्य, *पुराणविमर्श*, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी ई. सं.२०१८।

५. *कल्याण तीर्थाङ्क*, गीताप्रेस गोरखपुर, आठौं पुनर्मुद्रण वि. सं.२०७५।

६. वेदव्यास प्रणीत *श्रीमद्भागवतमहापुराण*, गीताप्रेस गोरखपुर, वि. सं. २०७६। ❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साङ्गवेद सं.मा.वि. र पिण्डेश्वर विद्यापीठको सम्बन्ध

काशीनाथ पौडेल

पूर्वी नेपालको पाँचथर जिल्लामा जन्मिएर कुनै औपचारिक शिक्षाविना पनि शिक्षाको ज्योतिले सम्पन्न भएका सन्त विकेकानन्द गुरुबाट विभिन्न स्थानको भ्रमण गर्दै शिक्षाको प्रचार-प्रसार र धार्मिक कार्यमा समाजमा जागरण ल्याउने काम भएका छन्। पूर्वी नेपालका पाँचथर, ताप्लेजुङ, तेह्रथुम, इलाम, झापा र भारतको सिक्किम तथा आसामका सदिया, शान्तिपुर र चुनपुरालगायतका ठाउँहरूमा विभिन्न समयमा भ्रमण गरी यज्ञयागादि गरेर मठमन्दिर र गुरुकुल विद्यालयको स्थापना गरी विवेकानन्द गुरुले स्वदेश र विदेशमा धार्मिक र शैक्षिक जागरण ल्याउने काम गर्नुभएको थियो। गुरुकै अग्रसरतामा पाँचथरका आगेजुङमा तेजपुञ्ज आश्रम, खुँगा एकतीनमा शिवगङ्गा आश्रम, गुसेश्वर क्षेत्र, फालेलुङ आश्रम, सिंहेश्वर आश्रम, विष्णुपोखरी, भुवनेश्वरी धामलगायतका विभिन्न ठाउँहरूमा धार्मिक अनुष्ठान यज्ञयागादि सम्पन्न भई स्थापना भएका थिए। विवेकानन्द गुरुको यस्तो सत्प्रयासबाट नै यी ठाउँहरू धार्मिक, पर्यटकीय र शैक्षिक केन्द्रका रूपमा विकसित हुन सहयोग पुगेको पाइन्छ। यसबाट समुदायका हजारौं तत्कालीन युवाहरूले शिक्षा आर्जन गर्ने अवसरका साथै धार्मिक सामाजिक संस्कार ग्रहण गर्ने सुनौलो मौका पाएका थिए। यस क्षेत्रमा रहेका आश्रम र गुरुकुलहरूले तथा गुरुका शिष्य-प्रशिष्यहरूको बाक्लो उपस्थितिले पनि विवेकानन्दको विशिष्ट योगदानलाई पुष्टि गर्दछन्।

माहिला गुरुका नामले पनि चिनिने विवेकानन्द गुरुले विभिन्न ठाउँहरूमा यज्ञ-अनुष्ठान गर्ने, गुरुकुल तथा मठमन्दिर स्थापना गर्दै आउने क्रममा २०२८ साल मङ्सिर १६ गते हाल झापाको चारपानेमा पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले समर्पण गरेको जग्गामा कुटी निर्माण गरी धुनी जगाएर प्रथम शिष्यका रूपमा पूर्णानन्द तिम्सिना र विष्णु पौडेललाई वेद, रुद्री आदि अध्यापन गर्न/गराउन लगाउनुभएको हो। त्यसपछि २०२८ सालकै माघ शुक्ल द्वादशी (भीष्मद्वादशी) का दिनमा विधिवत् रूपमा धुनीपूजन गरी वेद, व्याकरण पढाउने व्यवस्था मिलाएर गुरुकुल (विद्यालय) को शुभारम्भ गर्नुभएको थियो।

उपप्राध्यापक एवं प्राचार्य, पिण्डेश्वर विद्यापीठ, धरान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०३३ साल वैशाखमा अक्षय तृतीयाका दिनमा ग्रामीण जनता भेला भएर विद्यालयलाई संस्थागत र दिगो रूप प्रदान गर्न पं. टेकनाथ गौतम गुरुको सक्रियतामा अखण्ड हरिकीर्तिन यज्ञ सम्पन्न भएको र यज्ञ समापनका दिन उहाँकै अध्यक्षतामा गाउँले जनता भेला भई बैठक बसी पं. भानुभक्त अधिकारीलाई मासिक १०० सय पारिश्रमिक र भोजनका लागि मुष्टिदान सङ्कलन गरी जुटाई विद्यालयलाई अझै व्यवस्थित र विकसित गरिएको थियो। २०३३ फागुन महिनादेखि विद्यार्थीहरूको चाप बढेअनुसार पं. विष्णुभक्त भण्डारीले समेत विद्यालयमा अध्यापन गराउन थाल्नुभएको थियो। यो विद्यालय २०४६ सालसम्म गुरुकुलीय शिक्षा प्रदान गर्ने शैक्षिक केन्द्रका रूपमा चलेको थियो।

यही आश्रम र विद्यालय नै २०४६ सालदेखि गुरुकुलीय शिक्षा तथा आधुनिक औपचारिक शिक्षालाई एकै ठाउँबाट प्रदान गर्ने विशिष्ट लक्ष्य राखेर श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयका रूपमा विकसित र प्रतिष्ठित भएको हो। यहाँ पढेका विद्यार्थीहरूले भारतको वाराणसी तथा नेपालको पूर्वाञ्चलकै संस्कृत उच्चशिक्षाको केन्द्रको रूपमा रहेको धरानको पिण्डेश्वर विद्यापीठमा गएर आफ्नो उच्च शैक्षिक उपाधि हासिल गर्ने गरेको देखिन्छ। यसरी विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद विद्यालयको पृष्ठभूमिबाट आएर उच्च शिक्षा आर्जन गरेका व्यक्तिहरू समाज र राज्यका विभिन्न उच्च ओहोदामा रहेर विशिष्ट योगदान गर्न सफल रहेका पाइन्छन्। यसै आश्रममा रही अध्ययन गरेका विद्यार्थीहरू कतिपय समाजमा प्रतिष्ठित विद्वान् पण्डितका रूपमा चिनिएका छन् भने कतिपय सामाजिक सुधार विकासका अभियन्ता तथा राजनेताका रूपमा कतिपय सरकारी सेवाका उच्च तहमा, विद्यालय तथा विश्वविद्यालय तहमा शिक्षा प्रदान गर्ने कुशल शिक्षाविद्का रूपमा समाजमा स्थापित भएका छन्। उनीहरूले आश्रम र विद्यालयको गौरवलाई निरन्तर बढाउनुका साथै आश्रम र विद्यालयको सर्वाङ्गीण विकासमा विशिष्ट योगदान गर्दै आएको पाइन्छ।

शिक्षाप्रेमी पण्डित छविलाल पोखरेल र तत्कालीन बडाहाकिम भूपालमान सिंह कार्कीलगायतका समाजसेवीहरूको अग्रसरतामा धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रका रूपमा प्रसिद्ध रहेको धरान नगरीमा २००८ सालमा तत्कालीन पिण्डेश्वर महाविद्यालयको रूपमा स्थापित भई त्रिभुवन विश्वविद्यालय संस्कृत अध्ययन संस्थानअन्तर्गत सञ्चालनमा रहँदै २०४३ सालमा नेपाल (तत्कालीन महेन्द्र) संस्कृत विश्वविद्यालयको स्थापना भएपछि त्यसैको आङ्गिक विद्यापीठका रूपमा संस्कृत तथा आधुनिक विषयमा उच्च शिक्षा प्रदान गर्दै आएको गौरवपूर्ण शैक्षिक संस्था पिण्डेश्वर विद्यापीठ हो। झापादेखि नजिकैको दूरीमा रहेको पिण्डेश्वर विद्यापीठमा नै सुलभ र उत्कृष्ट रूपमा संस्कृतसहित आधुनिक विषयमा उच्चशिक्षा प्राप्त गर्न सकिने भएपछि विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयका विद्यार्थीहरू उच्चशिक्षा हासिल गर्न २०४० सालपछि पिण्डेश्वर विद्यापीठप्रति

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकर्षित भएको पाइन्छ।

भारतको वाराणसीलगायतका शिक्षाकेन्द्रमा गएर समय र परिस्थितिवश उच्चशिक्षा अध्ययन गर्न केही कठिनाइ महसुस हुन थालेपछि श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत विद्यालयमा अध्ययन गर्दै आएका विद्यार्थीहरूले नजिकैको दूरीमा पूर्वाञ्चलकै संस्कृत उच्चशिक्षाको केन्द्रका रूपमा रहेको नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयको आङ्गिक विद्यापीठका रूपमा रहेको यस पिण्डेश्वर विद्यापीठलाई आफ्नो उच्च शैक्षिक गन्तव्यका रूपमा अपनाएको पाइन्छ। संस्कृतको प्रारम्भिक र उच्चशिक्षा प्रदान गर्ने दुवै शैक्षिक संस्थाहरूको समाजमा विशिष्ट किसिमको पहिचान र योगदान रहेको देखिन्छ।

वि.सं. २०४४ सालमा चारपानेमा अध्ययन गरेका भूमिप्रसाद दाहाल पिण्डेश्वरमा उच्चशिक्षा हासिल गर्न आएका र उनले संस्कृत वक्तृत्वकलालगायतका शैक्षिक क्रियाकलापमा उत्कृष्ट प्रतिभा प्रदर्शन गरेपछि पिण्डेश्वरका तत्कालीन प्राचार्य पुरुषोत्तम भट्टराईलगायतका गुरुहरूले उच्च प्रशंसा गर्दै त्यहाँ विद्यालयमा अध्ययन गर्दै गरेका विद्यार्थीलाई उच्चशिक्षा हासिल गर्न धरान आउन आमन्त्रण गर्दै उत्प्रेरित गरेका थिए। त्यसपछि विवकाश्रमबाट उच्चशिक्षा हासिल गर्न पिण्डेश्वर विद्यापीठमा आउने विद्यार्थीहरूको लहर चलेको देखिन्छ।

यसरी २०४५ सालपछिका वर्षहरूमा पिण्डेश्वर विद्यापीठमा उच्चशिक्षा हासिल गर्न आएका विद्यार्थीहरूमा गोविन्द पौडेल, छन्दुराम भण्डारी, शिवलाल ढकाल, हेमलाल ढकाल, डमरु पौडेल, शिव रेग्मी, विष्णु रेग्मी, डिल्लीराम गौतम, हरिप्रसाद खतिवडा, पुष्पलाल न्यौपाने, हरिप्रसाद भण्डारी, सेमन्त भण्डारी, वेणु भण्डारी, डिल्लीराम खतिवडा, महेन्द्र रेग्मी, बद्रीनाथ खतिवडा, बुद्धि न्यौपाने, तेजप्रकाश पौडेल, पुरुषोत्तम भट्टराई, फणीन्द्र तिम्सिना, गुणनाथ ओझा, काशीनाथ पौडेल, वीरेन्द्र नेपाल, बुद्धि भण्डारी, भानुभक्त खनाल, खेमराज ओझा, महेन्द्र खतिवडा, बालानन्द न्यौपाने, शान्तिराम तिम्सिना, मोहन ओझा, रामप्रसाद ओझा, त्रिलोचन सिग्देल, पूर्णप्रसाद नेपाल, गङ्गाराम नेपाल, शेखर दाहाल, कमल अधिकारी, महेश्वर कोइराला, टीकाराम नेपाल, पृथ्वीविलास पौडेल, कमल न्यौपाने, तोया निरौला, लोकनाथ दाहाल, तेजकुमार भट्टराईलगायत अन्य धेरै सङ्ख्यामा रहेका छन्। सबैको नाम उल्लेख गर्न सम्भव नभए पनि यसरी श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.लाई आधार बनाएर धरानको पिण्डेश्वर विद्यापीठमा आई उच्चशिक्षा हासिल गर्न आउने क्रम अहिलेसम्म निरन्तर जारी रहेको छ। यसरी उच्चशिक्षा हासिल गरेका विद्यार्थीहरूले समाजका विभिन्न क्षेत्र, विद्यालय र विश्वविद्यालय तथा नेपाल सरकारका विभिन्न तह र तप्कामा रहेर उच्च योगदानसहितको नेतृत्वदायी भूमिका निर्वाह गर्दै आएका छन्। यसले पनि आश्रम र विद्यालयले गुणस्तरीय शिक्षा प्रदान गरी समाज र देशको सेवामा उत्कृष्ट योगदान पुर्याएको स्पष्ट हुन्छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुकुल शिक्षा नेपालको सन्दर्भमा प्राचीन र परम्परागत शिक्षा हो। यो हिन्दुहरूको धार्मिक संस्कार तथा मठमन्दिरहरूमा विद्वान् गुरुहरूको सत्प्रयास र सान्निध्यमा फैलिएको र विकसित एवं व्यवस्थित भएको देखिन्छ। नेपालमा आधुनिक शिक्षाको विकास हुनुअघि गुरुकुलीय शिक्षा नै समाजमा प्रचलित रहेको थियो। आश्रम र गुरुकुलहरूमा धार्मिक शिक्षासँग जोडेर पूर्वीय संस्कृत वाङ्मयका सम्पदा वेद, व्याकरण, साहित्य, इतिहास, पुराण, दर्शन, योग, आयुर्वेदसहित संस्कार, संस्कृति पनि सिकाइन्छ। अहिले आधुनिक शिक्षाको सुलभ सुअवसरका माझमा पनि यस्ता गुरुकुलीय शिक्षाको महत्त्व कम नभएर बढ्दै गएको पाइन्छ। शिक्षाप्रेमी बालागुरु षडानन्द, स्वर्गद्वारी महाप्रभु, विवेकानन्द स्वामी (माहिला गुरु), छविलाल पोखरेल, योगी नरहरिनाथजस्ता दूरदर्शी त्यागी विद्वान् सन्त महापुरुषहरूको अथक सत्प्रयासले समाजलाई शिक्षा र संस्कृतिको उज्यालो ज्योति प्रदान गरेको कुरा सदैव स्मरणीय छ। यिनै विद्वान् सन्तहरूको सत्प्रयासमा खुलेका, संस्कृतप्रेमी अनेकौं समाजसेवीका सहयोग र मुष्टिदानबाट चलेका गुरुकुल र विद्यालयहरूले उहिलेदेखि अहिलेसम्म पनि निरन्तर रूपमा परम्परागत र आधुनिक शिक्षा पनि साथसाथै प्रदान गरिरहेका छन्।

अहिलेको परिवर्तित शैक्षिक सन्दर्भमा पनि श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय जस्ता गुरुकुल विद्यालय र पिण्डेश्वर विद्यापीठ जस्ता शैक्षिक धरोहरहरूको महत्त्वपूर्ण स्थान रहेको पाइन्छ। २०२८ सालमा विवेकानन्द गुरुले शिक्षा प्रदान गर्न सुरु गरेको ठाउँ अहिले पूर्वाञ्चलकै धार्मिक र संस्कृत शिक्षाको महत्त्वपूर्ण केन्द्रका रूपमा विकसित र प्रतिष्ठित बन्न सफल भएको देखिन्छ। विवेकाश्रमले देखाएको बाटोलाई अनुसरण गर्दै झापा जिल्लाभरि अन्य गुरुकुल र धार्मिक केन्द्रहरू खुल्दै र विकसित हुँदै गएकाले पनि यसको महत्त्व बढाएका छन्। श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय र पिण्डेश्वर विद्यापीठका बीचमा पहिलेदेखि अहिलेसम्म नै विद्यार्थी आदान-प्रदानका माध्यमबाट घनिष्ठ शैक्षिक सम्बन्ध विकसित भएको देखिन्छ। यहाँ अध्ययन गरेका विद्यार्थीहरूले समग्र देशको आध्यात्मिक तथा शैक्षिक उन्नयनमा विशिष्ट योगदान दिएका छन्। यसरी श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय र पिण्डेश्वर विद्यापीठले नेपालको आध्यात्मिक तथा शैक्षिक उन्नयनमा पहिलेदेखि अहिलेसम्म नै विशिष्ट योगदान दिँदै आएको देखिन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रममा सञ्चालित मुष्टिदान (अन्नक्षेत्र)

✍ पूर्णानन्द तिम्सिना

श्री गणेशाय नमः। प्रातःस्मरणीय, वन्दनीय, तपोमूर्ति ब्रह्मलीन श्री १००८ स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराजले पाँचथर जिल्लामा अवस्थित आगेजुङ, जोरपोखरी आदि विभिन्न धार्मिक तीर्थस्थलहरूमा तपस्या गरी आफ्ना भक्त एवं शिष्य जनहरूलाई गायत्री अनुष्ठानको आयोजना गरी गायत्रीका माध्यमद्वारा प्रायश्चित्त गराउँदै धेरै भक्तजनहरूलाई गायत्रीको पुरश्चरणसमेत गराउनुभयो।

गुरुदेवका शिष्यहरू नेपालमा मात्र नभएर भारतको आसाम, मणिपुर, सिक्किम आदि स्थानमा बसाइँ सराइका क्रममा गएकाले ती शिष्यहरू समेतलाई मार्गदर्शन र कर्तव्यनिष्ठ बनाउन आसामको सदिया, शान्तिपुर भन्ने अत्यन्त मनोरम, कलकल बग्ने कञ्चनगङ्गा नदीको तटमा आश्रम स्थापना गरी गायत्री अनुष्ठान, यज्ञशाला र पाठशालासमेतको स्थापना गरी गायत्री पुरश्चरण, लक्षहवन, ब्राह्मण बटुकहरूलाई चण्डी, रुद्री, वेद, गीता आदि धार्मिक ग्रन्थहरूको अध्यापन गराउनुभयो। मैले पनि त्यहाँ गुरुको सेवा गर्ने र अध्ययन गर्ने अवसर पाएको थिएँ। त्यस ठाउँमा हाम्रा धार्मिक चाडपर्व आदिमा भक्तजनहरूको असङ्ख्य मात्रामा उपस्थिति भई भण्डाराको अयोजना गरिन्थ्यो। गुरुदेव केही वर्षसम्म रही पुनः गुरुका शिष्यहरू नेपालमै बसाइँ सरी आउन थालेकाले गुरु पनि नेपालतिरै फर्कनुभयो।

गुरुदेवका अनन्य शिष्य पिताश्री पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाले २०२८ सालमा साबिक चारपाने गाउँ पञ्चायत वडा नं. ३ हाल बिर्तामोड नगरपालिका वडा नं. २ मा खरिद गरेको जग्गामध्येबाट गुरुदेवको इच्छाअनुसार अन्दाजी एक कठ्ठा जग्गा गुरुदेवलाई कुटी (आश्रम) बनाउन अर्पण गर्नुभयो। गुरुदेवले २०२८ मङ्सिर १६ गते, धान्यपूर्णिमाका दिन कुटी स्थापना गर्नुभएको हो। गुरुले यज्ञशाला, गायत्री अनुष्ठानसमेतको शुभारम्भ गर्नुभयो। त्यस समयमा गायत्री अनुष्ठानमा विष्णु पौडेल (ब्रह्मचारी विष्णुचैतन्य- हाल अमेरिका) लाई पूजाअर्चना गर्न नियुक्त गरियो। म पूर्णानन्द तिम्सिनालाई लघुसिद्धान्तकौमुदी (व्याकरण) को थालनी गराइदिनुभयो। कुनै पनि बस्तु

✍ *पूर्व प्र.अ., साङ्गवेद संस्कृत मा.वि, चारपाने*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(फूल, लता, वृक्ष) आदि सुरुमा सानो नै हुन्छ। त्यस्तै यो आश्रम, विद्यालय बढ्दै झाँगिँदै, विस्तार हुँदै आज यस अवस्थामा आइपुगेको छ। यस संस्थालाई विकसित र आजको उर्वर अवस्थामा ल्याउनका लागि भूमिदाता, अक्षयकोषदाता, विद्यादाता र अन्नदाताको महत्त्वपूर्ण योगदान गरेको छ। यस सन्दर्भमा अन्नदाताको महत्त्व र उपादेयतालाई यसरी प्रस्ट पारिएको छ।

मुष्टिदान (अन्नदान)

जसले दिएको अन्न खाएर वैदिक शिक्षा पढ्छ भने त्यस पुण्यले अन्नदाताका सात पिंडी पूर्वज पितृहरू आफूसहित आगामी सात पिंडी र मातृवंशका सात पिंडी पितृहरू सबै तरेर भगवद्गति प्राप्त गर्दछन् भनेर शास्त्रमा उल्लेख भएको छ। जस्तैः

कुक्षौ तिष्ठति यस्यान्नं विद्याभ्यासेन जीर्यति। तदन्नं तारयेत् पितृन् दशपूर्वान् दशावरान्।।

दानहरूमा सबैभन्दा उत्कृष्ट दान अन्नदान हो। त्यसमा पनि वेदाध्ययन गर्ने वटुकहरूलाई गरिने अन्नदान सबैभन्दा उत्तम दानका रूपमा शास्त्रमा व्याख्या गरिएको छ।

अन्नदानाद् परं दानं विद्यादानमतः परम्। अन्नेन क्षणिकतृप्ति यावज्जीवेच्च विद्यया।।

हाम्रो वैदिक सनातन धर्म परम्परामा दानको पुराण, उपनिषद्, वेद आदि सद्ग्रन्थहरूले ठूलो महत्त्व पनि दर्शाएका छन्। दान विभिन्न प्रकारले गरिन्छ। कुनै दान सकाम भावद्वारा गरिन्छ भने कुनै दान निष्काम भावले गरिन्छ। सनातन धर्म, संस्कृतिलाई संरक्षण र संवर्धन गर्ने हेतुले सञ्चालन हुँदै आएको श्रीविवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय २०२८ सालमा श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराजले स्थापना एवम् सञ्चालन गर्नुभएको हो। आज यहाँ गुरुकुलीय माध्यमद्वारा पठनपाठन हुँदै आएको छ। यस संस्थामा विद्यार्थी, सन्त, महन्त, अतिथि, अभ्यागत आदिलाई भोजनको व्यवस्थापन गर्न त्यो समयमा आकाशवृत्ति (स्वतःस्फूर्त अन्न आदि आउने काम) द्वारा हुने गर्दथ्यो। पछि आकाशवृत्तिद्वारा हुने भोजनको व्यवस्थामा केही कमी हुन थालेकाले आश्रम व्यवस्थापन समितिद्वारा भोजन व्यवस्थापनका लागि मुष्टिदानको अभियान थालनी गरियो।

मुष्टिदान (अन्नदान) भनेको के हो ?

आफ्ना घरमा पकाउन ठिक पारेको चामलमध्येबाट बिहान र बेलुका एक एक मुठी गरी प्रत्येक दिन दुई मुठीका दरले पर सारी महिना दिनमा आफूले चाहेको आश्रम, विद्यालय आदि स्थानमा पुर्याई दान दिने कार्य नै मुष्टिदान हो। सोहीअनुरूप यस आश्रममा २०२८ सालदेखि नै यस आश्रमका वरिपरि बसोबास गर्ने भक्तजनहरूले मुष्टिदान गर्दै आउनुभएको छ। मुष्टिदानको अभियानलाई अझ व्यवस्थित गर्न २०३३ सालदेखि मुष्टिदानको क्षेत्र निर्धारण गरी मेची अञ्चलका विभिन्न गाउँ जस्तै चारपाने, बुट्टाबारी, चारआली, धाइजन, धुलाबारी, काँकरभिट्टा, बाँहुनडागी, लक्ष्मीपुर, बाह्रदशी, गोलधाप,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजगढ, दुर्गापुर सुरुङ्गा हुँदै दमक, गौरादह र झापाका अधिकांश ठाउँ र मोरङका उर्लाबारी, पथरी, इटहरी, विराटनगरसम्मका गुरुजीका भक्तजनहरूलाई मुष्टिदानको महिमा अवगत गराई भक्तजनहरूले घिउ, तेल, सब्जीसहित मुष्टिदान ल्याएर विद्यालयमा १५० जनासम्म विद्यार्थीहरूलाई भोजन गराउने व्यवस्था हुँदै आएको थियो। यो प्रक्रिया धेरै वर्षसम्म कायम रह्यो। पछि गएर यस मुष्टिदानको स्वरूप परिवर्तन भई आश्रम र विद्यालयको वार्षिकोत्सवमा धान्याचलमा धान ल्याई अर्पण गर्ने परम्पराको थालनी भयो।

धान्याचल महाधान एकै दानु परे पनि। लक्ष्मीका वरदानैले हुन्छन् सन्तान नै धनी।।

सोही समयदेखि भक्तजनहरूले चामलसहित धान लिएर आउन थाल्नुभयो। भोजन व्यवस्थालाई नै अझ व्यवस्थित गर्न अन्नक्षेत्र अक्षयकोषको पनि स्थापना गरिसकिएको छ। उक्त कोष आजीवन सदस्य र साधारण सदस्य गरी दुई किसिमको छ। आजीवन सदस्यमा रु. ५१,०००।- र साधारण सदस्यमा रु. ५,१००।- राखिएको छ।

हाम्रो वैदिक परम्परा र संस्कृतिमा 'मातृदेवो भव पितृदेवो भव' भन्ने उद्गारहरू छन्। पितृ खुसी भए भने यस लोकमा धन, दौलत, यस, मान, मर्यादा र सन्ततिहरूको पनि वृद्धि भएर जान्छ भन्ने कुरा व्याख्या गरिएको छ। धान्याचल सञ्चालनार्थ झापा जिल्लाका विभिन्न गाउँका भक्तजनका घरमा गई धान सङ्कलन गर्न आश्रमले उपसमिति गठन गरी धान सङ्कलन गरिआएको छ। उक्त समितिले प्रत्येक वर्ष २०० मनदेखि ६०० मनसम्म धान सङ्कलन गरी भोजनको व्यवस्थामा सहयोग पुर्‍याएको छ। यस विद्यालयमा विद्यार्थी सङ्ख्या दिनानुदिन वृद्धि भइरहेका छन्। संस्कृत अध्ययन गर्ने हेतुले नेपालको पूर्वदेखि पश्चिम महाकालीसम्म अधिकांश जिल्ला र भारतको सिक्किम, आसाम, मणिपुरसम्मका विद्यार्थीहरू विद्यालयमा आई अध्ययन गरिरहेका छन्। मुष्टिदानलाई नै अझ दर्बिलो र विश्वासिलो पार्न २०५६ साल श्रावण महिनामा रुद्राभिषेकको आयोजना गरी १०० केजी चामल र रु. ११००/- लिई भक्तजनहरूको नाममा रुद्राभिषेक गर्ने गरियो। सोहीअनुसार कार्य भएको हुँदा यस वर्षदेखि आजसम्म गुरुकृपा र भोलेनाथको कृपा भइरहेको छ। त्यही रुद्राभिषेक अहिलेसम्म चल्दै आएको छ।

यस आश्रमको दैनिक हवन, पूजाअर्चना, अखण्ड द्वीप प्रज्वलका लागि भक्त महानुभावहरूले अटुट चरु, घ्यू, तेल आदि अर्पण गरिरहनुभएको छ। त्यस्ता भक्तजनहरूको सद्भावना रहिरहेको हुँदा वर्तमान समयसम्म त्यो क्रम चलिरहेको छ। झापा जिल्लामा स्थापना भएका अधिकांश गुरुकुल एवं संस्कृत पाठशाला विभिन्न प्रकारले गरिने आर्थिक सहयोग, मुष्टिदान, यज्ञयागादि र धार्मिक पर्वहरूमा संस्कृतप्रेमी भक्तजनहरूले ल्याएर दिएको वस्तुले नै चलेको छ। यो संस्था कुनै व्यक्तिले नभई सम्पूर्ण महानुभावहरूको दान, मान र सद्भावद्वारा सञ्चालन भइरहेको छ। शास्त्रमा भनिएको पनि छ— 'जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः' एकएक थोपा पानीले घडा भरिएझैं सबैको सत्प्रयासले यस आश्रम तथा विद्यालयले थप उचाइ प्राप्त गर्न सफल भएको छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्मरण आश्रम संस्कृतिको-उपलब्धि भ्रमण अवलोकनको

✍ कुलप्रसाद पराजुली

मान्छे ज्ञानको भोको प्राणी हो। ज्ञानका विभिन्न स्रोतमध्ये भ्रमण'अवलोकन पनि एउटा मुख्य स्रोत हो। ज्ञानप्राप्तिका लागि हाम्रो पूर्वीय वाङ्मयले भन्छ *चरैवेति चरैवेति*। चिन्तन मननसाथ हिँडडुल गरी अघि बढिरहने शास्त्रको यो आदेशले ज्ञानपिपासुका लागि भ्रमण अवलोकन गर्नुपर्ने प्रेरणा दिन्छ। प्रत्येक मान्छेका फरक रुचि भए पनि सबैको गन्तव्य ज्ञानको परमस्रोत ईश्वरीय तथा प्रकृति तत्त्वतर्फ नै हुन्छ। शिवमहिम्नःस्तोत्रको *रुचीनां वैचित्र्याद्ऋजुकुटिल नानापथजुषां, नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव*।यो उक्तिले पनि त्यसैको पुष्टि गर्छ। पौराणिक वाङ्मय भन्छ : जीवनको उद्देश्य ईश्वरप्राप्ति हो जो ज्ञानबाट मात्र सम्भव छ। बुझ्न सके ज्ञान जतातत्तै विखरित छ, दत्तात्रेयका २४ गुरुजस्तो। भ्रमण अवलोकन पनि ज्ञानको ठूलो स्रोत हो जसको प्राप्तिद्वारा मानव मस्तिष्कको प्रस्फुरण हुन्छ। कविहरू भन्छन्: प्रकृति ज्ञानको ठूलो पाठशाला हो। नैसर्गिक र मानवनिर्मित संरचना देख्न, मानवले गरेका विभिन्न रचनात्मक प्रयास बुझ्न र निर्माण व्यवस्थापनका विभिन्न खजानाको झाँकी अध्ययन अवलोकन गरी ज्ञान उपार्जन गर्ने अवसर समाज र प्रकृतिको भ्रमण-अवलोकनबाटै प्राप्त हुन्छ। पढेको र सुनेको भन्दा देखेर प्राप्त गरेको ज्ञान प्रेरणाप्रद एवं चिरस्थायी हुन्छ।

अध्ययन भ्रमणको यही रहस्यलाई बुझेर विभिन्न विशेष तीर्थ र ठाउँहरूको भ्रमण-अवलोकन गर्ने परम्परा पौराणिक ऐतिहासिक कालदेखि नै बस्यो। विश्वका महापुरुष र ज्ञानपिपासुहरूले त्यस्ता विशेष ठाउँहरूको भ्रमण-अवलोकन गरी आफ्ना अनुयायीहरूलाई पनि सो कार्यका लागि पथप्रदर्शन गरेका प्रसङ्गले हाम्रा पुराण/इतिहासका पाना भरिएका छन्। पूर्वीय सामाजिक जीवन-पद्धति त *कृण्वन्तो विश्वमार्यम्* को भावना र साधनाबाट अभिप्रेरित र अभ्यस्त नै बनेका तमाम प्रसङ्ग पौरस्त्य वाङ्मयमा यत्रतत्र पढ्न पाइन्छन्।

हाम्रा शास्त्र र पूर्वीय जीवन-पद्धतिका अनुभवबाट खारिएका हाम्रै पूर्वजहरूद्वारा पथप्रदर्शित भ्रमण, अध्ययन/अवलोकनको मार्गलाई अध्यात्म तथा धर्म/संस्कृतिवेत्ता र

✍ सल्लाहकार तथा सेवानिवृत्त सहप्राध्यापक, बानेश्वर बहुमुखी क्याम्पस, काठमाडौं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आधुनिक शिक्षाविद्हरूले समेत दैनन्दिन आफ्नो जीवनपद्धतिमा उतार्दै आएका तमाम अनुकरणीय उदाहरणहरू हाम्रा सामु छन्। मानवमात्रका लागि अध्ययन अवलोकनको महत्त्व सधैं रहन्छ भन्ने बुझेरै आधुनिक विश्वले पर्यटन विषयलाई विशेष महत्त्व दिंदै आएको छ। त्यसैको प्रभाव हो आज पनि विभिन्न वर्ग तथा समूह र व्यक्तिविशेषले स्वदेश तथा विदेशका तीर्थविशेष र महत्त्वपूर्ण ठाउँहरूको भ्रमण अवलोकन गर्दै आएका छन्। उनीहरूबाट आर्जित ज्ञानद्वारा विभिन्न चेतनामूलक कार्यक्रम आयोजनाका साथै लेखरचना, फोटोचित्र, पत्रपत्रिका प्रकाशन र पुस्तकका ठेलीहरू तयार गरेर वर्तमान र भावी पिँढीलाई दिने राम्रो परम्परा केही बसिसकेको र बस्तै आएको सुखद अवस्था छ।

तिनै हाम्रा पथप्रदर्शक पूर्वजका जीवनपद्धति र आजको विश्वले अङ्गीकार गरेको भ्रमण अवलोकन संस्कृतिबाट अभिप्रेरित भएर मैले पनि आफूलाई विभिन्न स्थानको भ्रमण अवलोकन र अध्ययन गर्ने अवसर विद्यालय-महाविद्यालयमा पढ्दाको अवस्थादेखि नै पाउँदै आएँ, अभ्यास बसाल्दै आएँ।

मेरो प्राइमरीसम्मको विद्यालय शिक्षा जन्मजिल्ला भोजपुरको वासिङथर्पु गाउँ पञ्चायतको तत्कालीन श्री भवानी राष्ट्रिय प्राइमरी स्कुलबाट भयो। सो विद्यालय हाल श्री पञ्चकन्या माध्यमिक विद्यालयमा र उक्त गाउँ पञ्चायत आमचोक गाउँपालिकाको वडा नं.१ मा परिणत भई राष्ट्रसेवामा जुटिरहेका छन्।

उक्त विद्यालय स्थापनाकाल २०१७ देखि २०२१ को अवधिसम्म त्यस विद्यालयमा पढ्दा विद्यार्थीहरूलाई विभिन्न विद्यालयमा लगेर विभिन्न खेलकुदलगायत गीत गाउने, हाजिरी जवाफ र वक्तृत्व प्रतियोगिताहरूमा सहभागी गराइन्थ्यो। प्राइमरी शिक्षा हासिलपछि सुनसरीको विजयपुरस्थित श्री पिण्डेश्वर संस्कृत महाविद्यालयमा अध्ययन गर्न पुगें। त्यस बेला त्यहाँ पनि खेलकुल र शैक्षिक गतिविधि प्रशस्त हुने गरेको हेक्का मलाई छ। त्यस बेलाका एकजना विद्यार्थी प्रतिभा थानेश्वर (थर बिर्से) र भोजपुर सागबालाका दाहाल (नाम बिर्से) को सम्झना आउँछ जो ती कार्यक्रममा खुब सरिक हुन्थे र प्रशंसित पनि थिए।

पिण्डेश्वरमा केही महिनाको अनौपचारिक अध्ययनपछि आफ्नै दाजु श्री गणेशप्रसाद पराजुलीमार्फत भारतको इलाहावाद (प्रयाग) अरैल गाउँस्थित श्री सच्चा अध्यात्म संस्कृत महाविद्यालयमा अध्ययन गर्न पुगें। त्यसपछि मथुरा जिल्लाको वृन्दावनस्थित श्री हरदेव मन्दिर-आश्रम र नयाँ खटला आश्रमको बसोबास गर्दै श्री रङ्गलक्ष्मी महाविद्यालय, श्री ब्रह्मविद्या मन्दिर र श्री निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालयमा अध्ययन गरें। भारतको ऋषिकेश परमार्थ निकेतनस्थित श्री दैवीसम्पत् अध्यात्म संस्कृत महाविद्यालय र वाराणसीको सकरकन्द गल्लीस्थित श्री साधुबेला संस्कृत महाविद्यालयमा अध्ययनपछि मेरो भारतको बसाइ टुङ्गिएको थियो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैले पढेका ती महाविद्यालयहरूमा पनि विद्यार्थीहरूलाई विभिन्न शैक्षिक,आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधिमा सरिक गराइन्थ्यो। अन्तर विद्यालयबीच गएर-लगेर त्यस प्रकृतिका कार्यक्रमहरूमा सरिक हुने-गराउने परम्परा थियो। शास्त्रार्थ, अन्ताक्षरी, वक्तृत्व आदि रचनात्मक कार्यक्रम हुन्थे। प्रयागमा त योग तथा व्यायाम, सङ्गीत प्रशिक्षण, फूलबारी गोडमेल र बागबगैंचा सिञ्चनकला, पाककला, विद्यालय र मन्दिरको सरसफाइ, भगवत्सेवा, सहर-बजारको भ्रमण-अवलोकन र त्यसको प्रस्तुति, नियमित रूपमा आश्रमका भजन-कीर्तन, साधु-सन्त-महापुरुषहरूको दर्शन र उहाँहरूका प्रवचन सुनेर लिखित-मौखिक अभिव्यक्ति दिनुपर्ने, गङ्गा-यमुनामा पौडी खेल्ने र नौकाविहारको अभ्याससमेतका प्रतियोगितामा समेत सरिक हुने अवसर मिल्थे। धेरैजसो अवसरमा विद्यालयस्तर र अन्तरविद्यालयका विद्यार्थीबीच विभिन्न प्रतियोगिता पनि हुन्थे-गराइन्थे। त्यस प्रकृतिका कार्यक्रमहरूबाट विद्यार्थीलाई पढाइका अतिरिक्त विभिन्न व्यावहारिक विषयका जानकारी पाइने राम्रो अवसर मिल्थ्यो। हरेक मान्छेको आफ्नो विगत हुन्छ। आफूलाई खार्न मान्छेले सानैदेखि जीवनका विभिन्न अवसरमा घुम्नैपर्ने, हेर्नैपर्ने र भोग्नैपर्ने रहेछ भन्ने सन्दर्भमा मैले आफ्नो जीवन भोगाइका केही पक्ष राखेको मात्र हुँ।

आजका शिक्षालय-गुरुकुल र आश्रमहरूमा त्यस्ता र तीभन्दा प्रभावकारी अरू थप कार्यक्रम तथा प्रतियोगिता नहुने गरेका भए सम्भव हुनेसम्मका रचनात्मक कार्यक्रम आवश्यक छन्। जीवन विज्ञहरूले त्यसै भनेका होइनन् -पढेको र सुनेको भन्दा देखेको र गरेको ज्ञान चिरस्थायी हुन्छ। हितोपदेश मित्रलाभको *यन्नवे भाजने लग्न संस्कारो नान्यथा भवेत्* सानैमा दिएको-बसेको संस्कारको छाप जीवनमा सधैं रहन्छ भन्ने सङ्केत पनि त्यही हो। जीवन लामो छ,जति हेर्‍यो, बुझ्यो उति प्राप्ति भइ नै रहन्छ र पनि प्राप्तिको अन्त्य हुँदैन। जीवनमार्गभन्दा ज्ञानमार्ग लामो भएर नै त्यसो भनिएको हो।

भ्रमण-अवलोकन र क्रियाशील व्यक्तित्वसितको भेट खेर जाँदैन र म पनि घुम्ने गर्छु। थरीथरीका व्यक्ति तथा समुदायसित घुलमिल र प्रकृतिको स्पर्श गरी भई विभिन्न जानकारी प्राप्तिले लाभान्वित भइरहन्छु। सानैदेखिको यस बानीले मिति २०७७ चैत १६ गते सोमबार लगभग साँझपख मेरा मित्र प्राध्यापक श्री भवानीप्रसाद खतिवडाको निवास पशुपति-गौरीघाट खरिबोट टोलमा पुगें। म त्यहाँ पुग्दा खतिवडाज्यू पुस्तक पल्टाएर अध्ययन गरिरहनुभएको स्थिति थियो। मनमस्तिष्कमा *काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्* (विद्वान्हरूको समय अध्ययन र मनन-चिन्तनमा बित्छ) भन्ने हितोपदेश मित्रलाभको यो पङ्क्ति स्मरण भएर आयो। अभिवादन आदानप्रदानसाथ निर्दिष्ट ठाउँमा बसें। सामान्य कुशलमङ्गल र दैनन्दिन क्रियाकलाप सोधपुछकै क्रममा एउटा छापिएको पत्र उहाँले दिनुभयो। श्री विवेकाश्रम स्मारिका सम्पादन समिति लेखिएको सो पत्रमा स्वयं उहाँसहित ७ (सात) जनाको समिति बनेको रहेछ जसमा अर्का मित्र श्री अम्बिकाप्रसाद

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेग्मीको पनि नाम पढ्न पाएँ, अरू नाम अपरिचित हुन्।

पत्र थमाउँदै तपाईंले पनि एउटा लेख लेख्नुभए हुन्थ्यो भन्नुभयो। मलाई सम्बोधन नगरिएको पत्र बुझौं-नबुझौं अलमल्लमा परें। मित्रको आग्रहमा औपचारिकता न खोज्नु नै राम्रो सोचेर हुन्छ भनी पत्र झोलामा हाल्दै सो आश्रमको सामान्य परिचय सोधें। म र अम्बिकाजीले पढेको सो विद्यालय आश्रमले स्थापना गरेको हो भन्ने छोटो जानकारी प्राप्तिपछि साँझपख बिदावारीसाथ गन्तव्यतिर लम्कें।

२०६५ सालदेखि मेरो अध्यक्षता रहेको पराजुली समाज नेपालको छैटौं केन्द्रीय अधिवेशन तथा २१ औं वार्षिक साधारण सभा २०७७ चैत २८ गतेको तयारी र भतिज लोकनाथ पराजुलीको विवाह २०७८ वैशाख ११ गतेको कार्यक्रममा समेत व्यस्त रहेकाले तत्काल कलम चलाउन सकिनँ। २०७८ वैशाख १२ गते झापाको कोटिहोमस्थित पराजुली समाजको भवन परिसरमा भगवती विन्ध्यवासिनीको मन्दिर शिलान्यासको कार्यक्रम निर्धारित थियो। वैशाख ११ गते भतिजाको विवाहस्थल झापा बाहुनडाँगीबाट फर्केर झापाकै चारपानेस्थित भतिज तारानिधि पराजुलीको घरमा बास बसें। १२ गते बिहान भतिज तारानिधिबाट उक्त विवेकाश्रम नजिकै रहेको जानकारी पाएर सोही बिहान सखारै भतिजाको साइकल चढेर उक्त आश्रमतर्फ लागें। ११ बजे कोटिहोम परिसरमा हुने उक्त मन्दिर शिलान्यास कार्यक्रममा पुग्नुपर्ने हुँदा मसित थोरै समय थियो। लगभग ५ मिनेट खर्चिएर श्रीविवेकाश्रम पुगी पहिलोपटक स्थलगत प्रत्यक्ष अवलोकन गर्ने सौभाग्य पाएँ।

फराकिलो आश्रम क्षेत्र, परिसरको पश्चिमपट्टि रमणीय विभिन्न मन्दिरहरू, पूर्वी भागमा विद्यार्थी आवास क्षेत्र र उत्तरी भागमा अग्लो विद्यालय भवन देख्ता मन प्रफुल्लित भयो। देवस्थल र विद्यास्थलको अगाडिपट्टिको प्राङ्गणका विभिन्न भागमा पानीका कलधारा दृष्टिगोचर भए। आश्रम क्षेत्रको प्रवेशद्वारतर्फको सरसफाइमा भने त्यति ध्यान नपुगेको देखिए पनि मन्दिरक्षेत्रचाहिं आकर्षक देखिन्थ्यो। वैशाख १२ गतेको प्रातःकालीन समयको त्यो क्षणमा मन्दिरको अग्रभागमा आसनबद्ध विद्यार्थीहरूद्वारा गरिरहेको वेदका ऋचाको सस्वरवाचनको वेदध्वनि निकै कर्णप्रिय थियो। धोतीकुर्ताकै पहिरनका २-३ जना व्यक्ति (सम्भवतः शिक्षक हुनुपर्छ) को निर्देशनमा धोतीकुर्तामै सजिएका वेदपाठी ती विद्यार्थीहरूका बीचबीचमा सर्टपेन्ट लगाएर बसेका नगण्य विद्यार्थीहरूको पोसाकको दृश्यले चाहिं *हंसमध्ये बको यथा* को यादमात्र दिइरहेका थिएनन्, आश्रम-संस्कृतिमा पनि विकृतिको क्रमिक प्रवेश हुन लागेको सङ्केत बुझ्न कठिनाइ पर्दैनथ्यो। केही विद्यार्थी धारामा हातगोडा धोइरहेका, केही छात्रावासकै परिसरमा रहेका, केही थोरैचाहिं विभिन्न मन्दिरहरूको सेवामा संलग्न रहेका र केही भने मन्दगतिमा वेदपाठ स्थलतिर जाँदै गरेका देखिन्थे भने एकै ठाउँमा आसनबद्ध भएर झुम्म बसेका २५-३० जना विद्यार्थीले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरिरहेको सस्वर वेदपाठको सुनिरहूँजस्तो मङ्गलमय ध्वनि आश्रम परिसरभरि फैलँदै मतिर आइरहेकाले कालीदासीय उक्ति *पवनस्यानुकूलत्वात् प्रार्थनासिद्धिशंसिनः* स्मरण भयो। पर उभिएर केही क्षण सुनेर आफूलाई पवित्र गर्दै आफ्नो बाटो लागें, त्यो ध्वनिले आकाशमार्ग पक्रियो।

आफूसित समय पनि ज्यादै थोरै थियो। आश्रम र विद्यालय परिवारका कसैसित पनि पूर्वपरिचय नभएको कारण पनि मैले भाग्नुपर्ने बाध्यताको सहयोगी बन्यो। महत्त्वपूर्ण अवसर *क्षणार्धं क्षणमात्रं वा* उपलब्धिपूर्ण र जीवनदायी हुन्छन् भन्ने शास्त्रीय वचन स्मरण गरी समय मिलाएर यस आश्रममा फेरि नआई छोड्दिन भन्ने मानसिक सङ्कल्प गर्दै चाहेर पनि कसैसित परिचय गरी आश्रम र विद्यालयबारे विशेष जानकारी नगरी त्यो लोभलाग्दो अवसर र रमाइलो परिदृश्यबाट सुटुक्क ओझेल परें।

थोरै समयमा पनि यति चाहिँ अवश्य बुझें, मैले भ्रमण-अवलोकन गरेका नेपालका देवघाटस्थित महेश सन्न्यास आश्रम लगायत त्यहाँका ३ वटा आश्रम तथा विद्यालय र झापाकै अर्जुनधारा विद्यालय जस्तै मन्दिर-संस्कृतिसहितको फराकिलो क्षेत्रको यो विवेकाश्रम एवं विद्यालय निकै आकर्षक रहेछ। जीवनमा झापाको यात्रा र चारआलीको बसाइ दर्जनपल्ट भन्दा बढी भयो होला तर यस्तो आश्रम त्यहाँ पनि छ भन्ने जानकारी कतैबाट पनि नहुनु लेखनाथीय उक्ति *कौडीमा पनि मिल्किन्छ भिल्लका देशमा मणि* को बोध मलाई भयो। जे होस्, आश्रमको पहिलो अवलोकन आकर्षक लाग्यो। शिवमहापुराणको उद्घोष- *कालाच्च पुण्यपाकेन ज्ञानसिद्धिः प्रजायते* बमोजिम त्यो छोटो भ्रमण अब क्रमिक परिपाकको दिशातर्फ यसै गरी लम्कँदै छ। महापुरुषहरूको कृपाविना कुनै उपलब्धि हुँदैन र भएको पनि छैन। आशीर्वाद भयो भने यो क्रम रहिरहनेछ।

म स्वयं मित्रराष्ट्र भारतका विभिन्न आश्रम र विद्यालयमा बसेर अध्ययन गरेको व्यक्ति भएकाले आश्रम संस्कृति मेरा लागि खासै नौलो विषय होइन, स्थानअनुसारका केही आधारभूत विषयवस्तु छोडेर। मेरो अनुभव भन्छ- आश्रम जहाँका,जुनसुकै र जसले स्थापना गरेका हुन् हाम्रो पूर्वीय संस्कार र संस्कृतिका धरोहर हुन्। साधुसङ्गति, योग, ध्यान, विद्या, सत्सङ्गति, मन्दिर संस्कृति र भगवद्भक्ति लगायतका पूर्वीय संस्कृति र साधनाका केन्द्र आश्रमहरू नै हुन्। पूर्वीय जीवनपद्धतिबाट खारिएका तपोपूत पूर्वजहरूको पुस्तौंपुस्ताको साधनाद्वारा आर्जित अनुभवका परिणति यी आश्रम कामयावी, जीवनदायी वैधानिक पवित्र संस्था हुनुका साथै हाम्रो धर्म-संस्कृतिका रक्षाकवच हुन्।

आश्रमात् आश्रमं गच्छेत् भन्ने पूर्वीय जीवनपद्धतिको संस्कार सिक्ने-सिकाउने यी संस्थाले मानवलाई सुवृत्तिको शिक्षा दिन्छन्। शिवमहापुराणको उद्घोष छ- *सुखं विद्यात् सुवृत्तितः* (सुवृत्तिले सुखप्राप्ति हुन्छ।)

आश्रम-संस्कृति राष्ट्रका लागि समय र सुमार्ग दिने नागरिक तयार गर्ने संस्था भएकाले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यी आश्रमले विभिन्न साधना र विद्यादानका कार्यसमेत गरिरहेका छन् यो मेरो पनि अनुभव हो। तसर्थ आश्रम हाम्रो धर्म-संस्कृति, साधना र जीवनपद्धतिका शास्त्रीय, सैद्धान्तिक र व्यावहारिक आधारस्तम्भ हुन् जहाँ मन्दिर, गौशाला, यज्ञयागादि, भजन, कीर्तन, सत्सङ्ग, साधुसेवा र अन्नदान-सेवाका साथै गुरुकुलमार्फत विद्यादान पनि हुने गर्छ। यस्तै जीवनदायी विशेषताका कारणले आश्रमप्रति समाजको आकर्षण रहँदै आयो। श्रीविवेकाश्रम पनि त्यसैको एउटा सदस्य भएकोमा म विश्वस्त छु। तर त्यस आश्रम र गुरुकुलका सबै संरचना, गतिविधि र उपलब्धिबारे मलाई ज्ञान भइनसकेकोले जानकारी लिएर अरू अवसरहरूमा बोल्नु नै उपयुक्त ठानी त्यसबारे यहाँ यत्ति नै बोल्न उचित ठाने।

नेपालमा आश्रम र आश्रमद्वारा सञ्चालित गुरुकुल परम्पराको इतिहास त्यति छोटो भने छैन। चाहे भोजपुरको दिङ्लामा स्थापित षडानन्द आश्रमको गुरुकुलीय परम्परा होस् वा प्युठान स्वर्गद्वारी आश्रम र पाठशाला वा नेपालका विभिन्न ठाउँमा स्थापित अन्य यस्तै आश्रम परम्परा। ती आश्रमहरूका उत्पादनबारे सारा नेपाल जानकार छ र केही संस्थाबारे त नेपालबाहिर पनि राम्रो ख्याति छ। आज पनि देवघाटको महेश सन्न्यास आश्रम, काठमाडौंको वेदविद्याश्रम, साँखुमा कमलनयनाचार्यले स्थापना गर्नुभएको आश्रम, सुनसरीको चतरामा जगद्गुरु बालसन्तद्वारा स्थापित राधाकृष्ण भक्ति साधना केन्द्रलगायतका नाम लिन सकिने अरू पनि केही आश्रमका उपलब्धिहरू राष्ट्रमा राम्रै परिचित छन्। यहाँ उल्लेख गरेका ती आश्रम तथा विद्यालयका अतिरिक्त नाम लिन बाँकी अन्य केही आश्रम र विद्यालयले हाम्रो आश्रम संस्कृतिको बिंडो थामिरहेका छन्।

पूर्वीय सभ्यता र संस्कृतिको उज्यालो परम्परा टुटिहालेको छैन। आज पनि आश्रम तथा गुरुकुल स्थापना गरी सञ्चालन गर्न आतुर केही व्यक्तिहरूको रहर थपिंदै गएको देखिन्छ। त्यस्ता संस्था स्थापना र सञ्चालन गर्न हुँदै हुन्न भन्ने धारणा होइन र हुनु पनि हुन्न। तर दुःखसाथ भन्नुपर्छ केही सामान्य औपचारिक उपाधि धारण र साधना गरी वा कुनै यज्ञयज्ञादिको आयोजनाबाट केही अर्थोपार्जनपश्चात् हत्पत कुनै संस्था स्थापना गरेर विना कुनै भौतिक पूर्वाधार आश्रम र कुरुकुल स्थापना गर्ने-गराउने अस्वस्थ परम्पराको जग आज नेपालमा हालिंदै गरेको देखिन्छ जो उपलब्धिहीन मात्र नभएर हानिकारक पनि छ। स्थायी स्रोत-साधन र तयारीविना भए-गरिएको कुनै पनि कार्यले सिद्धि पाएको छैन र हुँदैन पनि।

समाजमा अवसर नपाएका सोझा सिधा केही बालबालिकालाई शिक्षा दिन्छु भनी गाउँघरबाट सहरमा ल्याएर एउटा कोठामा राखी कर्मकाण्डीय केही धार्मिक कार्य गर्दै जेनतेन दुई छाक खान र बस्न दिएको भरमा आश्रम स्थापना र गुरुकुल स्थापनाको कथा बुन्नुले राष्ट्रहित त के कसैको पनि हित हुने देखिंदैन। त्यसरी जम्मा गरेका केटाकेटीको राम्रो हेरचाह भएन र खान लाउनमा पनि कमी भयो भनी अभिभावकले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आफ्ना बालबालिका फिर्ता लगे रे भन्ने यदाकदा सुनिन्छ। कतिपय ठाउँमा त न पढाउने समय छ, न कुनै शिक्षकको व्यवस्था भइहाले पनि नियमितता छैन। बालकहरू अधिकांश समय देवालय, पाटीपौवा आदि धार्मिक-सामाजिक स्थलहरूमा बसेर समय बिताइरहेका हुन्छन्। संस्थापकहरू विभिन्न धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रममा संलग्न रहेर धनार्जन गरी परिवार पाल्नमा नै व्यस्त देखिन्छन्। बालबालिकालाई भुलभुलैयामा राखी निजी काममा लाउने, गुरुकुल र आश्रम सञ्चालनका नाममा आफ्नो परिवार पाल्न जेथा जोड्ने कार्यमात्र भएको छ भन्ने जनगुनासो सुनिँदै आएको छ। घुमफिरका अवसरमा त्यस्ता ठाउँहरूका गतिविधि हेर्दा त्यसै पो हो कि जस्तो भान पनि नभएको होइन। लहडमा आश्रम स्थापना र गुरुकुल सञ्चालन गर्ने बाढीको यस्तो बेथिति राम्रो होइन जसले हाम्रो सुकिलो आश्रम र गुरुकुलीय परम्परालाई धुमिल बनाउँछ। तसर्थ सम्बन्धित व्यक्ति, निकाय परिवर्तन हुनैपर्छ अनि नियमनकारी निकायले पनि बेलैमा नियन्त्रण गर्न जरुरी छ।

अब कोट्याउँ स्थापित भइसकेका केही आश्रम तथा गुरुकुलीय पद्धतिबाट अघि बढिरहेका केही ठाउँहरूका कुरा। हाम्रो समाज धर्मभीरु समाज हो। यहाँका मान्छे धर्ममा अगाध विश्वास राख्छन् र धार्मिक कृत्य पनि गर्छन्। कसैले केही धार्मिक सामाजिक प्रस्ताव ल्यायो भने ननु न च नगरीकन चाँडै विश्वास गर्छन्, सम्बन्ध स्थापित गरेर सहभागी पनि भइहाल्छन्। सहभागी हुनुपूर्व त्यो संस्था वा अभियानमा निम्न कुराको अवस्था के छ ? त्यतातिर जानेर वा नजानेर, चाहेर वा नचाहेर पनि किन ध्यान दिँदैनौं, दिन आवश्यक सम्झँदैनौं। उदाहरणार्थ ती कुराका तेरिज यस्ता हुन सक्छन्-

- संस्था सञ्चालकको धार्मिक-सामाजिक व्यक्तित्वको पृष्ठभूमि, कार्यानुभव, कार्यप्रकृति कस्तो हो ?
- संस्थाको स्थायी आर्थिक पक्ष के कस्तो छ ?
- संस्था पहिले स्थापित हो भने लेखापरीक्षण भएको छ-छैन र आर्थिक पारदर्शिता के कस्तो छ ?
- आश्रम वा विद्यालय परिवार भेला गरी सुझाव लिने र कार्यान्वयनको परम्परा के छ ?
- चेला बनाएर गाथा गाउन लाउने, अर्थसङ्कलन गरी परिवार-परिजनको भरणपोषण मात्र गरिन्छ कि ?
- घोकन्ती विद्या र पूजापाठमात्र गर्ने-गराउने सीमित घेराबाट माथि उठे-उठाइएको छ/छैन ?
- संस्थामा स्थापित एवं विज्ञ व्यक्तिहरूको संलग्नताको स्थिति के छ ?
- संस्थाबारे निरन्तर अन्तरक्रिया हुन्छन्-हुँदैनन् ?
- सेवामूलक धर्म-संस्कृतिका कार्य, सत्सङ्ग, विद्वत् तथा प्रतिभा सम्मेलन, स्वास्थ्य सेवा, अन्नदान आदि कार्य हुने गरेका छन्-छैनन् ?
- संस्थाका प्रतिभा, सहयोगी नागरिक समाज र ज्येष्ठ नागरिकको कदर-सम्मानको स्थिति के छ ?
- अन्तर संस्थाबीच सम्पर्क, समन्वय, अन्तरक्रिया र अध्ययन भ्रमण हुने गरेका छन्-छैनन् ?
- संस्थाबारे सामाजिक र सरकारी मूल्याङ्कन के छ, अन्तरक्रिया गरी प्रतिक्रिया लिने गरेको छ-छैन ?

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

- संस्थाद्वारा उत्पादित विद्यार्थी र आश्रमवासीको अभिलेख र नियमित भेटघाटको स्थिति कस्तो छ ?
- आश्रमवासी र विद्यार्थीलाई अध्ययन-भ्रमण गराई प्राप्त अनुभव प्रस्तुति र अनुगमन परम्परा छ ?
- पुस्तकालयको व्यवस्था, आवश्यक शैक्षिक सामग्री, खेलमैदान र खेलकुदका साधनको स्थिति के छ ?
- भोलिको व्यावहारिक जीवनका लागि विद्यार्थीलाई कार्यालय कार्यविधिको सामान्य शिक्षा, सञ्चार साधन प्रयोगकला, अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रतिनिधित्व गराउने, विशेष कार्यको जिम्मेवारी दिने, कार्यक्रमको आयोजना र सञ्चालन, उद्घोषण, सरसफाइ, धार्मिक, नैतिक प्रशिक्षण, पुस्तकालय प्रयोग, पत्रपत्रिकाको अवस्था के छ ?
- व्यवस्थापन, पत्ररचना, कार्यपत्र लेखन र प्रस्तुति, गौसेवा, बागबगैंचा लगाउने, संरक्षण र सम्भारका कार्य, स्टोर व्यवस्थापन, भाषा र सङ्गीत प्रशिक्षण दिने व्यवस्थाको प्रबन्ध के कस्तो छ-छैन ?
- आवासीय विद्यालय हो भने छात्रावासको छुट्टै व्यवस्था र आवश्यक पूर्वाधारहरू छन्/छैनन्?
- आश्रम र देवालयको सेवा, दैनिक नित्यक्रिया र पाठशालामा नियमित अध्ययन-अध्यापन र बिदाको कार्यतालिका निश्चित छ-छैन ? छ भने पालन-अनुगमनको व्यवस्था के कस्तो छ ? आदि।

मैले भोगेका मेरो जीवनका केही कुरा र यी माथिका बुँदाहरू उल्लेख गर्नुको आशय ८-१० जना केटाकेटी पालेर गुरुकुल वा विद्यालयको नाम दिई आज च्याउझैं देखा परेका अस्वस्थ प्रवृत्तिले हाम्रो प्राचीन गुरुकुल परम्पराको अस्मितामा खलल आउँछ र समाजमा राम्रो स्थितिमा सञ्चालनमा रहेका केही गुरुकुलहरूप्रति समाजले शङ्काको दृष्टिले हेर्ने प्रबल सम्भावना रहने हुँदा समाजलाई सबैतिरबाट नोक्सान पुग्ने नै हुन्छ। तसर्थ समाजमा रहेको यो अस्वस्थ प्रवृत्ति र अवस्था किमार्थ रहिरहनुहुन्न। आखिर कुनै पनि विकृति गाडी चढेर आउँदैन, समाजकै व्यक्ति वा समूहमार्फत भित्रिने हो। एकातिर त्यस्ता व्यक्ति वा समूहले अब आफूलाई यथाशीघ्र सुधार्न आवश्यक छ। अर्कोतिर कानुनतः स्थापना भएर नेपाली समाजलाई सेवाप्रदान गरिरहेका आश्रम र शिक्षालयहरूमा पनि कहींकतै माथि भनिएजस्ता कार्यमध्ये सबै वा केही काम गर्न चाहेर पनि विभिन्न परिस्थितिवश बाँकी रहेका भए तिनको र ती बुँदाका अतिरिक्त थप आवश्यक कार्यको कार्यान्वयन गर्न ढिलो गर्नु आफ्ना खुट्टामा आफैंले बन्चरो प्रहार गर्नुसरह हुनेछ।

समाज नित्य परिवर्तनशील हुन्छ। यो लेखकभन्दा अघिल्लो र यो लेखकको पुस्ताले पढेको र भोगेको ढाँचाले आश्रम वा विद्यालय सञ्चालन गरेर मात्र अबका आश्रमवासी र शिक्षार्थीहरूको जीवन चल्न सम्भव छैन र चलाउन खोजेमा प्रत्युत्पादक हुनेछ। समाज परिवर्तनको वस्तुतथ्य बेलैमा बुझेर केही आश्रम र गुरुकुलहरूले आश्रमवास र गुरुकुलको शिक्षा प्रणालीमा समयानुसार आवश्यक आधुनिक शैक्षिक साधन र प्रविधि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भित्र्याइसकेको सुखद अवस्था पनि भ्रमण अवलोकनका नाममा मैले पनि देखे-बुझेको छु जो सकारात्मक पक्ष हो।

अबका आश्रम र गुरुकुल कर्मकाण्डीय हिसाबले मात्र सञ्चालन गरेर समाजको हित हुँदैन र शिक्षार्थीको जीवन निर्वाह पनि परम्परागत हिंडाइले किमार्थ चल्दैन। संस्कृत पढ्नेहरू केवल पौरोहित्य गरेर जीवन निर्वाह गर्ने हुन्, यिनले समाजका अरू क्षेत्रमा प्रतिस्पर्धा गरेर खान सक्तैनन् भन्ने समाजको दृष्टिकोणमा परिवर्तन गरेर देखाउन जरुरी छ। संस्कृत शिक्षाक्षेत्रका आधारभूत पक्षलाई यथावत् राखी परिवर्तित सामाजिक अवस्थाको बोधसमेत गरी व्यावहारिक जीवनका लागि चाहिंदो सुपाच्य आधुनिकता पनि यस क्षेत्रमा भित्र्याउन ढिलो गर्न हुँदैन। बदलिंदो समाज र संस्कृत शिक्षार्थीको चाहना सम्बन्धित पक्षले बुझ्न नसकेको वा नचाहेको अवस्था छ। फलतः आज संस्कृत शिक्षालय र आवासीय गुरुकुलहरूमा आश्रय लिएर आवासलगायत आर्थिक वृत्तिका सुविधा प्राप्त गरी जसरी पनि समय निकालेर आधुनिक शिक्षा लिन विद्यार्थीहरू आधुनिक शिक्षालयहरूमा जाने गरेका छन् वा जान बाध्य छन्। यस्तो प्रवृत्तिले संस्कृत शिक्षा कमजोर हुँदै गएको देखिन्छ।

दुईतिरको पढाइमा ध्यान दिन नसक्ता केहीलाई छोडेर संस्कृततर्फ उच्च शिक्षा हासिल गरेका विद्यार्थी पनि २-४ वाक्य संस्कृत सम्भाषण त के संस्कृत शब्द शुद्ध उच्चारण गर्न पनि नसक्ने गरेको व्यवहारमा देखिन थालेको छ। त्यतिमात्र होइन, ती विद्यार्थी कदाचित आधुनिक कार्यालयका सेवामा प्रवेश गरे पनि प्रयोगात्मक सामान्य भाषिक ज्ञान र कार्यालय कार्यविधिसमेतको जानकारीका अभावमा कमजोर देखा पर्ने गरेको सुनिन्छ, बुझिन्छ। यसो हुनुको मूल कारण न यताको शिक्षा राम्ररी पायो न उताको। यी सबै प्रवृत्तिबाट संस्कृत शिक्षा र आश्रम संस्कृतिको मात्र होइन, सिङ्गो हाम्रो समाजको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष खति भइरहेकाले बेलैमा निराकरण हुनु जरुरी छ।

अन्तमा, संस्कृत संस्कृति हाम्रो प्राण हो, त्यसको हानि हुँदा हाम्रो धर्मसंस्कृति रहँदैन, हाम्रो अस्तित्व पनि सङ्कटमा पर्छ। आश्रम संस्कृति र संस्कृत शिक्षा जोगाउन हाम्रा पूर्वजहरूको ठूलो लगानी बुझेर आज पनि आश्रम सञ्चालक, संस्कृत शिक्षालय र गुरुकुल सञ्चालकहरूले प्रशस्त त्याग, श्रम, समय र समाजबाट जुटाएरै भए पनि ठूलो आर्थिक लगानीसमेत गरेका छन्। चाहिंदो स्रोत-साधनको व्यवस्था गर्न अझै बाँकी नै रहे पनि सरकारबाट संस्कृत विश्वविद्यालय र केही संस्कृत शिक्षालयहरूसमेत सञ्चालित छन्। आखिर ती संस्कृत महाविद्यालयहरू र विश्वविद्यालयमा अध्ययनार्थ जाने विद्यार्थी त तिनै गुरुकुलबाट उत्पादित विद्यार्थी नै हुन्। तसर्थ गुरुकुल शिक्षा स्तरीय हुनु जरुरी छ जसका लागि चुस्त व्यवस्थापन, आहार-विहार र आवासको राम्रो व्यवस्था, सुविधासहित योग्य शिक्षकको व्यवस्था हुनुपर्छ। आवश्यक पुस्तक र पत्रपत्रिकासहित

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राम्रो पुस्तकालयको प्रबन्ध, भोलिको व्यावहारिक जीवनमा कामयाबी सीप र साधनायुक्त राम्रो शिक्षा दिने व्यवस्था, समयबद्ध आवधिक अध्ययन-भ्रमण, अनुगमन-मूल्याङ्कन र प्रोत्साहन आदिको व्यवस्था पनि व्यवस्थापक-सञ्चालकका तर्फबाट हुनु नितान्त आवश्यक छ।

वरमेको गुणी पुत्रो न च पुत्रशतैरपि भनेझैं समाजका आँखा छल्ने गरी वर्षामा च्याउ उम्रेझैं गुरुकुल वा त्यस्तै नामबाट शिक्षालय खोलेर विद्यार्थीलाई अल्मल्याउने परिपाटी सम्बन्धित नियमन निकायबाट बन्द हुनुपर्छ। झारो टार्न आश्रमसहितका आवासीय गुरुकुलचाहिं सञ्चालन गर्ने तर स्तरीय शिक्षाका लागि आवश्यक स्रोत-साधनको व्यवस्था गर्न नसकेका आश्रम तथा आवासीय विद्यालय छन् भने तिनले पनि आत्ममूल्याङ्कन गरी बेलैमा आफ्नो सुधार गर्न नितान्त आवश्यक छ। विद्यार्थी वर्गले पनि आश्रम र गुरुकुल पद्धति एवं संस्कृत शिक्षाको समाज र व्यक्तिगत जीवनका लागि अनिवार्य आवश्यकता र महत्त्व बुझी अनुशासनमा बसेर भोलिको व्यावहारिक जीवन धान्न सक्ने योग्यता हासिल गर्न प्राप्त स्रोत-साधनको सदुपयोग गरी परिश्रमसाथ बुझेर अध्ययन गर्नुपर्छ अनि मात्र लक्ष्यमा पुग्न सकिन्छ। त्यसैमा हाम्रो कल्याण सम्भव छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्मरक्षाका लागि विवेकाश्रम

✍ पं. मधुसूदन भट्टराई

ॐ कारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमो नमः।।
अखण्डानन्दबोधाय शिष्यसन्तापहारिणे। सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

नेपालमा विभिन्न धर्म, संस्कृति एवं भाषाभाषीमाझ अनेकौं किसिमका आआफ्नै प्रकारका रीति-स्थिति एवं परम्परा छन्। हरेक दिन, तिथि, महिना एक किसिमले चाडबाड र पर्वकै रूपमा विभिन्न सन्देश लिएर आइरहेका हुन्छन्। संस्कृति र सभ्यता दुई शब्दलाई प्रायः पर्यायका रूपमा लिने गरिन्छ। तर यी दुवैमा मौलिक भिन्नता छ र अर्थ पनि अलग-अलग छ। संस्कृतिको सम्बन्ध व्यक्ति र समाजमा निहित संस्कारसँग छ र यसको निवास हाम्रो मानसपटलमा हुन्छ। अनि सभ्यताको क्षेत्रचाहिँ व्यक्ति र समाजको बाह्य स्वरूप हो। संस्कृति जीवनको निकटतासँग जोडिएको हुन्छ। यो कुनै बाह्य वस्तु होइन र कुनै आभूषण पनि होइन, जो हामी मनुष्यले प्रयोग गर्न सकौं। यो केवल कुनै रङ्ग जस्तो देखिने वा छोइने पनि होइन। यो यस्तो गुण हो जसले हामीलाई मनुष्य बनाउँछ। संस्कृतिको सम्बन्ध परम्परा, विश्वास, जीवनशैली, आध्यात्मिक र भौतिकपक्षसँग निरन्तर जोडिएको हुन्छ।

यसले हामीलाई जीवनको अर्थ अनि जीवन जिउने तरिका सिकाउँछ। मानव नै संस्कृतिको निर्माता हो। यसले नै मानवलाई मानव बनाउँछ। संस्कृतिको मुख्य मौलिक तत्त्व धार्मिक विश्वास र उसबाट आउने प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति हो। हामीले धार्मिक पहिचानको सम्मान गर्नु पर्छ। हामी सबै बिस्तारै भौतिकतातिर लम्किरहेका छौं र चाहेर वा नचाहेर आधुनिक प्रविधिको प्रयोगमा पनि छौं। त्यसैले सत्यमार्ग के हो र जिउने तरिका के हो भनेर चित्रै कुरामा रणभुल्लमा पर्ने स्थिति आएको छ। मुख्य गरी अहिलेको विभिन्न संस्कृति, धर्म र परम्परामा नयाँ पिँढीमा सह-अस्तित्वको पनि आवश्यकता छ। सत्य, शिव र सुन्दर तीन वटा शाश्वत मूल्य हुन् जो हाम्रो संस्कृतिसँग धेरै नजिकबाट जोडिएका छन्। संस्कृति नै हो जसले हामीलाई दर्शन र धर्मका माध्यमबाट सत्यको निकट लिएर जान्छ। जसले हामीलाई नैतिक मानव बनाउँछ र अरू मानवसँग निकट सम्पर्कमा पुर्याउँछ र यसले हामीलाई प्रेम, सहिष्णुता र शान्तिको पाठ पढाउँछ। संस्कृति सामाजिक अन्तरक्रिया र सामाजिक व्यवहारको आदर्श सङ्ग्रह हो। यस सङ्ग्रहमा ज्ञान, विज्ञान, कला, आस्था, नैतिक

✍ *मेनपा १२, पिपलडाँगी, झापा। हालः बेलायत*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल्य र प्रथाहरू समाविष्ट हुन्छन्। यसैभित्र भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक अभ्युदय जोडिएको हुन्छ, जो हाम्रो मानवको आध्यात्मिक साधनाको उच्च र समष्टिगत अभिव्यक्ति हो। यसले हाम्रो सबैको व्यक्तिगत र सामाजिक जीवनको स्वरूपको निर्माण, निर्देशन, नियम र नियन्त्रण गर्दछ। अतः संस्कृति नै मनुष्यको जीवनपद्धति, वैचारिक दर्शन र सामाजिक क्रियाकलापसहितको अभिव्यक्ति हो। नयाँ प्रविधिका कारण र बढ्दो विश्वव्यापीकरणले समाजमा धेरै राम्रा कुराहरू नआएका होइनन् तर विकृति पनि झनै बढेका छन्। प्रविधिलाई पनि प्रयोगमा ल्याउन र वेद, पुराण, कर्मकाण्डसम्बन्धी ज्ञानको विकास गराउन सके मानिसले त्यसबाट धेरै फाइदा लिन सक्छौं। पाठ्यक्रममा अङ्ग्रेजी र गणित जस्ता विषय पनि राख्दा नयाँ पिँढीलाई बढी आकर्षित गर्न सकिन्छ।

हाल नेपालमा एक सयभन्दा बढी गुरुकुल सञ्चालनमा भएको अनुमान छ। विभिन्न कारणबाट पढ्न नपाएका विद्यार्थीलाई एउटा सांस्कृतिक र धार्मिक ज्ञान दिलाएर रोजगारीको लागि ठुलो क्षेत्रमा प्रवेश गराइएको छ। सायद यहाँ अध्ययन गरेका विद्यार्थीहरूले जीविकोपार्जनका लागि विदेशमा जानु पर्दैन होला। अरू गएको देखेर देखासिकी जानु अलग कुरा हो।

वैदिक सनातन धर्मको मूलस्रोत भनेको वेद हो। यसमा कसैको पनि द्वैतमत छैन। यसलाई आर्षवाणी भनिन्छ। वेद नै सबैभन्दा पुरानो ग्रन्थ हो। वेदका रचयिता स्वयं शेषशायी भगवान् विष्णु हुन् भन्ने मान्यता छ। यो ग्रन्थ मानवनिर्मित होइन त्यसैले यसलाई भगवान्को वाङ्मय मूर्ति भनिएको छ। यही कारणले नै *वेदोऽखिलो धर्ममूलम्* भनिएको हो। वेदभन्दा पुरानो ग्रन्थ अरू छैन। वेद एक मात्र हो। मानवलाई बुझ्न सजिलो होस् भनेर महर्षि वेदव्यासले यसलाई चार भाग बनाइदिनुभयो, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद र अथर्ववेद। यसरी वेदलाई चार भाग लगाएको हुनाले नै कृष्ण द्वैपायनको नाम वेदव्यास रहन गएको मानिन्छ। वैदिक सनातन धर्मको रक्षा गर्नु हामी वैदिक सनातन धर्ममा आस्था राख्नेहरूको परम कर्तव्य हो।

स्वामी विवेकानन्द पुरीको सत्प्रयासबाट वि.सं. २०२८ सालमा विवेकाश्रमको स्थापनापछि त्यसैको मातहतमा साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय स्थापित भयो। यो विवेकाश्रम र साङ्गवेद विद्यालयमा स्थानीय र बाह्य दानी, दाता, सज्जनहरूको सहयोगमा यसको परिसरमा शिवालय, विद्यालय भवन, होमकुण्ड, श्रवण हल, छात्रावास, गौशाला आदिको निर्माण सम्पन्न भएर एउटा दर्शनीय पर्यटकीय स्थल भएको छ। झापाको चारपानेमा अवस्थित यो संस्था सनातन वैदिक धर्मको संरक्षण र संवर्धन गर्ने उदाहरणीय स्थल बन्न पुगेको छ। मानवको बाह्य आवरण भनेको धर्म हो। विना धर्मको मान्छे नाङ्गो मानिन्छ। *धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः, तस्मात् धर्मो न हन्तव्यो यतो धर्मस्ततो जयः* अर्थात् धर्मको रक्षा हामीले गरे मात्र धर्मले हाम्रो रक्षा गर्छ। *असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय* ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। शुभमस्तु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौरवशाली हाम्रो विवेकाश्रम एवं विद्यालय

✍ मदन अधिकारी

झापा जिल्ला, बिर्तामोड नगरपालिका वडा नं. २ चारपाने चोकबाट उत्तरमा रहेको विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय हामी सबैको आस्थाको केन्द्र हो। वैदिक सनातन धर्मको धरोहरका रूपमा रहेको विवेकाश्रम प्राकृतिक सौन्दर्यले समेत सुन्दर रहेको छ। विद्यालय भवन, यज्ञशाला, शिव पाञ्चायन मन्दिर, राम पाञ्चायन मन्दिर, विष्णु पाञ्चायन मन्दिर, रुद्र सत्सङ्ग भवन, गौशाला, पाठशाला, यज्ञशाला, समीवृक्षजस्ता भौतिक एवम् प्राकृतिक सौन्दर्यले यस संस्थालाई अझै रमणीय बनाएका छन्। धार्मिक संस्था तथा शिक्षण संस्थाले सुपरिचित यसको आफ्नै छुट्टै इतिहास रहेको छ।

२०२८ साल माघ शुक्ल द्वादशीका दिन श्री १००८ स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराज (माइला गुरु) ले स्थापना गरेको आश्रम भएकाले यसको नाम विवेकाश्रम रहन गएको इतिहास छ। बिर्तामोड नगरपालिकाकै गहनाका रूपमा रहेको धार्मिक एवम् शैक्षिक संस्था हामी सबैको साझा सम्पत्ति हो। गुरुकुलीय माध्यमबाट पठनपाठन गराउने अनि संस्कार, संस्कृति, धर्म, कर्म, नियम, निष्ठा, जप, तप, हवन आदि गर्ने र गराउने उद्देश्यले स्थापना भएको यो विद्यालय हाल माध्यमिक विद्यालय (कक्षा ४ देखि कक्षा १२ सम्म) सञ्चालनमा रहेको छ। वास्तवमा यस संस्थाको परिकल्पना गर्नुहुने विवेकानन्द महाराज एवं यसलाई मूर्तरूप दिन हातेमालो गर्नुहुने आदरणीय गुरुजनहरू, दानवीर दाताहरू, ग्रामवासीहरू तथा अन्य धर्मप्रेमी महानुभावहरूकै आस्था र समर्पणले यो संस्था गौरवशाली बन्न पुगेको छ।

दूरदर्शी महात्मा र सद्गुरु भनेका हाम्रो समाजका सदैव आदरणीय व्यक्तित्वहरू हुन्। त्यसैले सद्गुरुलाई ब्रह्मा, विष्णु र महेश्वरका रूपमा हाम्रो सभ्यतामा अङ्गीकार गरिएको छ। जस्तैः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुगुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।

✍ *पूर्वविद्यार्थी, साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, बिर्तामोड २ चारपाने, झापा*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यस संस्थाको बीजारोपण र अङ्कुरण गराउने एवम् सत्प्रेरणाका मुहान स्वामी विवेकानन्द महाराज हुनुहुन्छ। जसका कारणले गर्दा आज विवेकाश्रम पूर्व नेपालको वैदिक गुरुकुलीय शिक्षाको पुनर्जागरण गराउने पहिलो गुरुकुलका रूपमा स्थापित भएको छ। यो हामी सबैका लागि गौरवको विषय हो। गुरुकुलीय नियम र आचरणमा रही चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण, गीता, अमरकोशलगायत धेरै संस्कृत तथा धार्मिक ग्रन्थहरूको अध्ययन गर्दै संस्कृत भाषाका माध्यमबाट माध्यमिक तहसम्मको अध्ययन अध्यापन हुनु, बेला बेला शास्त्रीय चिन्तन, मनन र प्रवचन हुनु, हिन्दु धर्मसम्बद्ध धार्मिक वार्षिक पर्वहरू मनाइनु अनि आन्तरिक तथा बाह्य धार्मिक पर्यटकीय स्थल बन्दै जानु यस संस्थाका महत्त्वपूर्ण विशेषता रहेका छन्।

कुरा अलि पहिलेको हो। २०५३ साल फागुन महिनामा चारपानेको आश्रम र विद्यालय यात्रा गर्ने अवसर मिलेको थियो। हाल हाम्रो घर चारपानेमा छ। त्यस समयमा हाम्रो बसोबास बुट्टाबारीमा नै थियो। यात्राका क्रममा जब पिताजीका पछि पछि म यस आश्रमभित्र प्रथमपटक प्रवेश गरेको थिएँ। त्यस समयमा त हरिः ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमिम् सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। जस्ता पुरुषसूक्त मन्त्रका ध्वनिहरू गुञ्जिरहेका थिए। पिताजीले मलाई यही हो हाम्रो विवेकाश्रम भनेर चिनाउनुभएको थियो। साठी-सत्तरी जना विद्यार्थीहरूको एकै स्वरको गुञ्जायमान ध्वनिले मेरो मन खिचिरहेको थियो र मलाई कताकता अतिपवित्र धार्मिक स्थलमा पुगेको अनुभव भइरहेको थियो। म धेरै आनन्दित थिएँ। वास्तवमा त्यो वैदिक गुञ्जायमान आवाज नै मेरा लागि यहाँ अध्ययन गर्ने प्रेरणाको स्रोत बनेको थियो।

एक-दुई महिनापछि अध्ययनका लागि म यस विद्यालयमा प्रवेश गरें। तत्कालीन समयका संस्थाका अध्यक्ष पूजनीय ब्रह्मलीन गुरु पं. टेकनाथ गौतम हाम्रो प्रेरणाका स्रोत हुनुहुन्थ्यो। आदरणीय श्री विष्णुभक्त भण्डारी गुरुज्यूले मलाई पढ्नका लागि हौसला प्रदान गर्नुभएको थियो। बिहान ४ बजे नित्य स्नान, सन्ध्या वन्दन, आरती, पुष्पाञ्जली, गीतापाठ गर्दै गुरुकुलीय आचरण र नियममा रहेर अध्ययन कार्यलाई निरन्तरता दिइने गरेको थियो। त्यो समयमा हामी असी-पचासी जना विद्यार्थी थियौं। पहिलेदेखि नै हजारौं विद्यार्थीहरूले अध्ययन गर्दै त्यहाँको पढाइ समाप्त गर्दै आउने जाने क्रम चलिरहन्थ्यो। त्यहाँ रहँदा वार्षिक उत्सवका रूपमा चल्ने वार्षिक पुराण र कार्यक्रमहरूमा हामी विद्यार्थीहरू रुद्रीपाठ, चण्डीपाठ, अतिथिसेवा, प्रवचन श्रवणजस्ता क्रियाकलापमा सहभागी भएर आनन्द लिने गरेका थियौं। झापा जिल्लालगायत देशका विभिन्न क्षेत्रबाट वार्षिकोत्सव कार्यक्रममा हजारौंको सङ्ख्यामा धर्मप्रेमी महानुभावहरूको आगमन भइरहन्थ्यो। गुरुकुलको अध्ययन गर्दै कक्षा १० सम्मको अध्ययनसँगै २०५८ सालमा हाम्रो माध्यमिक स्तरको पढाइ सम्पन्न भएको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थियो। आज पनि विवेकाश्रममा प्रवेश गर्दा त्यो विद्यार्थी जीवनको स्मृति मानस पटलमा आएर आनन्दको अनुभूति हुने गर्दछ।

वास्तवमा प्रातः स्मरणीय पूजनीय गुरु पं. टेकनाथ गौतम गुरुलगायत अरू धेरै गुरुज्यूहरूको आशीर्वचनहरू प्राप्त गर्दै पढ्न पाउनु हाम्रो अर्को गौरवको विषय हो। संस्कार र संस्कृतिविनाको शिक्षाको कुनै महत्त्व रहँदैन। विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत मा. वि. यस्तो संस्था हो, जसले हामीलाई नियम, आचरण, संस्कार, संस्कृति, परम्परालगायत वैदिक सनातन धर्मसँग सम्बन्धित बहुआयामिक ज्ञान र विद्यालाई प्रदान गर्दै आएको छ। यही कुराले नै हाम्रो शिर उच्च बनाएको छ। सम्पूर्ण भाषाहरूको जननी भाषा संस्कृत भाषाको प्रारम्भिक ज्ञान गराउने हाम्रो विवेकाश्रम तथा श्रीसाङ्गवेद संस्कृत मा.वि. देश तथा विदेशमा समेत ख्यातिप्राप्त छ। आज यसले स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाइरहेको छ।

स्वर्ण महोत्सव भव्यतम रूपले मनाउन प्रारम्भ गरे पनि वैश्विक महामारी कोभिड १९ का कारणले खुलेर मनाउने अवस्था सिर्जना हुन सकेन। तथापि देश तथा विदेशबाट समेत उल्लिखित मात्रामा भक्तजनहरूको चासो र धार्मिक चर्चाको विषय बनेको पवित्रस्थल विवेकाश्रम धाममा स्वर्ण जयन्ती वर्षको उद्घाटनको अवसरमा विमानद्वारा पुष्पवृष्टिसमेत गराई कार्यक्रमको प्रारम्भ भएको थियो। वर्षभरि विभिन्न धार्मिक क्रियाकलाप भव्यतम रूपमा गर्ने लक्ष्य पूरा गर्न प्रकोपका कारण असमर्थ भए पनि अकबरी सुनलाई कसी लाउनुपर्दैन भनेझैं हाम्रो विवेकाश्रम तथा विद्यालय वैदिक संस्कार, संस्कृति, सभ्यताको संरक्षण र नैतिक चरित्रवान्, देशभक्त जनशक्ति उत्पादन गर्ने सन्दर्भमा गौरवान्वित रहेको छ।

यस विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालयबाट हजारौं विद्यार्थी, विद्वान्, सन्त, महन्त, प्राध्यापक, पण्डित, पुरोहित, शिक्षक, कर्मचारी, धर्मगुरु तथा देश विदेशमा उच्च ओहदामा पुग्न सफल कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तिहरूले यस संस्थाको गरिमालाई थप उचाइमा पुर्याएका छन्। यसले हामी गौरवान्वित भएका छौं। वैदिक सनातन धर्म, संस्कार, संस्कृतिको संरक्षण र संवर्धन गर्दै कर्तव्यनिष्ठ नैतिकवान् व्यक्तिहरूको उत्पादन गरी देश विकासमा महत्त्वपूर्ण टेवा पुर्याउन अनवरत कटिबद्ध विवेकाश्रम तथा विद्यालय हाम्रो देश नेपालकै एक श्रेयस्कर संस्था हो भन्दा अत्युक्ति हुँदैन। स्वदेशमा मात्र नभई अस्ट्रेलिया, अमेरिका, क्यानडा, कम्बोडिया भारतलगायत विश्वका अनेकौं देशमा रहेर पनि यस संस्थाको हित र कल्याणमा लागिरहने सम्पूर्ण पुण्यात्मा महानुभावहरू वास्तवमै प्रशंसाका पात्र हुनुहुन्छ। यस धार्मिक तथा शैक्षिक संस्थामा जोडिएर मुष्टिदान, धान्यदान, भूमिदान, भवनदान, विद्यादानजस्ता पुण्यकर्म, सत्शिक्षा र सत्सङ्ग प्रदान गर्ने सम्पूर्ण महानुभाव यस संस्थाका प्रशंसनीय पात्रहरू हुन्।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परापूर्व कालदेखि नै विभिन्न सन्त, महन्त, विद्वान्, पण्डित, स्वामी, तेजस्वी, ओजस्वी, ब्रह्मज्ञानी व्यक्तिहरूको पदार्पण र आशीर्वादद्वारा पवित्र संस्थाबाट संस्कारित र उत्पादित व्यक्तित्त्वहरू जो-कोही पनि दुःखी र कमजोर नबन्नु नै यस संस्थाको विशेषता बन्न पुगेको छ। हाल आएर यहाँ कक्षा ४ देखि कक्षा १२ सम्म दुई सयका हाराहारीमा जेहेनदार विद्यार्थी, बटुकहरूलाई भक्तजनहरूका माध्यमबाट गाँस र बासको सुविधासहित अति व्यवहारोपयोगी शिक्षा प्रदान गर्रिँदै आएको छ। यसै संस्थाले धर्म, संस्कार, संस्कृति, गुरुकुलीय परम्परा, धार्मिक शिक्षा, नीति, नियम, आचरण, व्यवहार उपयोगी शिक्षा, सत्सङ्गजस्ता बहुआयामिक कार्यहरूको सम्पादनले विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय गौरवशाली बनेको हो। त्यसैले हामी सबैले अन्तर्हृदयबाट सदैव मुक्तकण्ठले भन्न पाइयोस् जय होस्, विवेकाश्रम, जय होस् हाम्रो विद्यालय। जयतु संस्कृतम् भवतु मङ्गलम्। ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरुकुल संस्कृत विद्यालयमा अङ्ग्रेजी शिक्षाको आवश्यकता

✍ कमल उपाध्याय मिश्र

समय परिवर्तनशील छ। समयको परिवर्तनसँगै हाम्रा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यहरू पनि क्रमिक रूपमा परिमार्जन तथा परिवर्तन हुदै जाँदा रहेछन्। समय सापेक्ष हाम्रा कार्यहरू सम्पादन हुँदा रहेछन्। पहिलेको युगसँग अहिलेको युग तुलना गर्न सकिँदैन। पहिलेको र अहिलेको युगमा धेरै ठूलो अन्तर छ। यसरी समय परिवर्तन हुने क्रममा हाम्रा पौराणिक, धार्मिक ग्रन्थहरूका अनुसार सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग हुँदै हाल कलि युगको समयचक्र चलिरहेको छ। आज यस कलियुगमा पनि वैज्ञानिक युग कम्प्युटर युगले गर्दा विज्ञान प्रविधिबाट विकासको लहर चरम उत्कर्षमा पुगेको अनुभूति गर्न सकिन्छ।

शिक्षाकै प्रभावले आज हामीले धार्मिक रूपमा मान्य रहेका चन्द्र, मङ्गल आदि ग्रहमा समेत रहेका माध्यमले यहाँ अवतरण गरी अवलोकन गरेको समाचार सुनेका छौं। घरमै बसी बसी संसारको कुनै पनि ठाउँमा भएका विभिन्न कार्यक्रमहरू दूरदर्शनका सहायताले प्रत्यक्ष रूपमा देख्न सकिन्छ। घरमै बसेर देशविदेशमा रहेका आफन्तहरूसँग साक्षात् भेट भएझैं अनुहार हेरेर मोबाइलको मेसेन्जर अथवा ह्वाट्सएपबाट गफ र भलाकुसारी गर्न सकिन्छ। विगतलाई सम्झेर हेर्ने हो भने एउटा व्यक्तिले टाढा बसेका आफन्तलाई कुनै खबर पठाउनुपर्यो भने हस्तलिखित चिठ्ठीपत्रद्वारा खबर आदानप्रदान गर्न महिनौं दिन लाग्थ्यो। तर अहिले आफ्नो गोजीको मोबाइल निकालेर नम्बर डायल गरी हेल्लो भन्नेबित्तिकै देशविदेशमा जहाँ बसेका भए पनि जवाफ तुरुन्तै आउँछ, गफ गर्न सजिलो हुन्छ। अहिलेको प्राविधिक शिक्षामा कम्प्युटर प्रोजेक्टर आदिबाट शिक्षादान गर्ने प्रणालीको विकास हुँदैछ। ती शैक्षिक सामग्रीहरूमा सबै अङ्ग्रेजी शब्दहरूबाट मार्गदर्शन गरिएको हुन्छ। त्यसैले आजको यो प्रविधियुक्त युगमा अङ्ग्रेजी विषयको अत्यन्त आवश्यकता पर्दो रहेछ। मोबाइलमा रहेको गुगल एपबाट कुनै पनि कुरा खोज्न सिक्न अति सरल हुन्छ। तर ती सबै अङ्ग्रेजी भाषामा नै हुन्छन्। त्यसैले आजको युगमा अङ्ग्रेजी शिक्षा जान्नु अति जरुरी हुन्छ। शिक्षाविना कुनै पनि व्यक्ति अगाडि बढ्न सक्दैन, त्यसैले भनिन्छ –

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।।

✍ पूर्वशिक्षक श्रीमोहनमाया मा.वि., पूर्वस्वयंसेवक शिक्षक श्रीसाङ्गवेद सं.मा.वि. बिर्तामोड २, झापा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्या अतिगोप्य धन हो, जोकसैले चोरेर हरेर लान सक्दैन। विद्वान् व्यक्ति सर्वत्र पूजित हुन्छ र ऊ विदेशमा पनि सजिलै घुलमिल हुन सक्छ। त्यसैले आजको यस वैज्ञानिक युगमा हामीले समयानुकूलको शिक्षा आर्जन गर्नुपर्दछ। विश्वमा प्रचलित अन्तर्राष्ट्रिय भाषा अङ्ग्रेजी हो। अहिले हाम्रा छोराछोरी यहाँ १२ पास गरिसकेपछि अमेरिका, अस्ट्रेलिया, क्यानडा, बेलायत जस्ता विकसित देशहरूमा उच्च शिक्षा हासिल गर्न र आयआर्जनका लागि पनि ती देशहरूमा जाने प्रचलन अत्यधिक बढेको छ। ती पश्चिमी देशहरूमा सामान्य बोलचालको भाषा अङ्ग्रेजी हुन्छ। यदि उसले अङ्ग्रेजी बोल्न र लेख्न जान्यो भने ऊ त्यहाँ सजिलै घुलमिल हुन सक्छ। त्यसैले आजको यस आधुनिक युगमा अङ्ग्रेजी भाषाको ठुलो महत्त्व भएकाले हाम्रा गुरुकुलीय संस्कृत विद्यालयहरूमा पनि अङ्ग्रेजी भाषा अनिवार्य हुनु अत्यन्त जरुरी छ।

संसारका विभिन्न नक्साहरूमा पनि विभिन्न ठाउँहरू, नदीनालाहरू, पहाडपर्वतका नामहरू पनि अङ्ग्रेजी अक्षरमा नै लेखिएका हुन्छन्। त्यसैले यदि माध्यमिक शिक्षामा उसले अङ्ग्रेजी विषय पनि अध्ययन गरेको छ भने उसलाई सजिलो हुन्छ। महाविद्यालयहरूका अधिकांश पाठ्यपुस्तकहरू अङ्ग्रेजी भाषामा छापिएका हुन्छन्। अङ्ग्रेजी भाषा सिकेको विद्यार्थीलाई ती पुस्तकहरू अध्ययन गर्न सजिलो हुन्छ। अर्को कुरा डाक्टरहरूले बिरामी जाँचेर औषधिको पुर्जासमेत अङ्ग्रेजीमा लेख्छन्। किनभने अधिकांश औषधिको नाम अङ्ग्रेजी अक्षरमा लेखिएको हुन्छ। खाने विधि, उत्पादन मिति, समय सकिने मिति, औषधिको मूल्य अङ्ग्रेजीमा नै लेखिएको हुन्छ। त्यसैले यदि उसले अङ्ग्रेजी पढेको छ भने उसले औषधिको बारेमा सबै कुराहरू बुझ्दछ। यदि अङ्ग्रेजी जानेको छैन भने उसका लागि त्यो कालो अक्षर भैंसी बराबर हुन्छ। त्यसैले हाम्रा गुरुकुलीय संस्कृत विद्यालयहरूमा अनिवार्य अङ्ग्रेजी विषय हुन अत्यन्त जरुरी छ।

अन्त्यमा, मेरो सानो एउटा अनुभव कुरा गर्न चाहन्छु। म श्रीमोहनमाया मा.वि. बिर्तामोड २ बाट सेवानिवृत्त भएपश्चात् २०७३-७४ को शैक्षिक सत्रमा श्रीसाङ्गवेद मा.वि. बिर्तामोड २ चारपानेमा एक शैक्षिक सत्र कक्षा ६,७ र ८ मा अङ्ग्रेजी विषय निःशुल्क शिक्षा दान गर्ने अवसर पाएको थिएँ। अङ्ग्रेजी शिक्षा अध्यापन गराउँदा विद्यार्थीहरू अति नै उत्सुक र जिज्ञासु भएको मैले पाएँ। संस्कृत सिक्ने विद्यार्थीहरूमा पनि अङ्ग्रेजी भाषा सिक्न खोज्ने बानी हुँदो रहेछ। उनीहरू कुनै एउटा शीर्षकमा आफैं (Own Contraction) लेखन शैलीमा लेख्न रुचाउथे, अङ्ग्रेजी बोल्ने प्रयास गर्दथे। तसर्थ हाम्रा यी साना बालबालिकाहरूलाई आफ्नो मातृभाषा सिकाउनुको साथ साथै अङ्ग्रेजी भाषा सिक्न पनि प्रोत्साहित गर्नुपर्छ। अहिलेको कम्प्युटरको प्रविधि युगमा अङ्ग्रेजी भाषा जान्नु अपरिहार्य हुन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा श्री साङ्गवेद सं.मा.वि.सँग जोडिएका प्रसङ्ग

✍ जगन्नाथ भण्डारी

जन्मजन्मान्तरको सञ्चित पुण्यपुञ्जबाट प्रस्फुटित मानव जीवनको सार्थकता भनेको स्वरूप आत्माको बोध गर्नु हो। ईश्वरीय अनुकम्पा भएका पुण्यात्मा जनको मस्तिस्कमा म को हुँ ? कहाँबाट आएँ ? अनि कहाँ जाने छु ? सत्य के हो ? असत्य के हो ? जस्ता अनेकौं प्रश्न तरङ्गहरू एकाएक उठ्न थाल्छन् अनि ती प्रश्नहरूको उत्तरको खोज अनुसन्धानका लागि जिज्ञासा रूपी समिधा लिएर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुका शरणमा गई प्रणिपात भएर गुरुशुश्रूषाबाट तत्त्वज्ञान प्राप्त गरी ऊ सदासदाका लागि कृतकृत्य हुन्छ। उसलाई स्वस्वरूप आत्मबोधको अनुभव हुन्छ आत्मबोध भएका ज्ञानीजनहरू *'निर्मानमोहा जितसङ्गदोषाः'* को भावमा प्राप्त भएका हुन्छन्। यस्ता आत्मज्ञानीहरूलाई साधु, सन्त, महात्मा वा योगी भनिन्छ। उनीहरूको स्वभाव परोपकारी हुन्छ *'परोपकाराय सतां विभूतयः'* विभिन्न तीर्थाटन र देवीदेवताहरूका मूर्ति पूजा गर्नाले मनुष्यहरूको चित्तशुद्धि कथं कदाचित् विलम्बले होला, तर सज्जनहरूको दर्शनले मात्र मानिसको अन्तस्करण निर्मल भइहाल्दछ।

'ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः' सज्जनहरूले आफ्ना हृदयरूपी कमलासनमा भगवान्लाई विराजमान गराएका हुन्छन् त्यस्ता भगवत्प्रेमी सन्तहरू जहाँ जहाँ जान्छन्, बस्छन् ती ती स्थानहरू तीर्थसमान बन्दछन्। *'तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता'* यस भूमण्डलको भारत वर्षमा जन्म लिएका उच्चकोटिका साधक सन्तहरूलाई भगवान्कै अवतार मानिन्छ। महर्षि देवव्यास, महामुनि शुकदेव, आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य प्रभृति ईश्वरकै अंशावतारका रूपमा मानिन्छन्। अद्वैत वेदान्त दर्शनका प्रणेता आद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य सन्न्यास हुनुहुन्थ्यो। उहाँले शास्त्रार्थमा दिग्विजय गर्नुभएको थियो। जगद्गुरुले सन्न्यासीहरूका लागि मठाम्नायहरूको व्यवस्था गर्नुभएको थियो। जसमध्ये शृङ्गेरी मठ पनि पर्दछ यसै मठाम्नाय पराम्पराअन्तर्गत सन्न्यास दीक्षा लिनुभएका अनन्तश्रीविभूषित श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरि महाराज पनि उच्चकोटिका आत्मद्रष्टा ज्ञानी महात्मा हुनुहुन्थ्यो। उहाँकै करकमलद्वारा यस आश्रम र विद्यालयको स्थापना भएको हो। विवेकानन्द गुरुबाट स्थापना भएको हुनाले आश्रमको नाम विवेकाश्रम र

✍ पूर्व शिक्षक तथा हाल आश्रम कोषाध्यक्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहाँ अङ्गसहित वेदाध्ययन हुने हुनाले विद्यालयको नाम साङ्गवेद भनिएको हो।

स्वामीज्यूको जन्म नेपालको सुदूरपूर्व पाँचथर जिल्लाअन्तर्गत मच्छेबुङ भन्ने ठाउँमा आत्रेय गोत्रीय ब्राह्मण पौडेल वंशमा वि.सं. १९६२ मा भएको हो। मैले मेरा मान्य गुरुजनहरूबाट सुनेअनुसार गुरुमहाराजमा तीव्र वैराग्य उत्पन्न भई विभिन्न पहाडका गुफा, कन्दरा र ओडारहरूलाई आफ्नो साधनास्थल स्वीकार गरेर क्षुत्पिपाषा र शीतोष्णादि जस्ता द्वन्द्वहरूमाथि विजय प्राप्त गर्दै भगवत्तत्त्व प्राप्तिको साधनामा लाग्नुभयो। ईश्वरीय अनुकम्पाले उहाँमा अनेकौं संसिद्धिहरू प्राप्त भएका थिए। गुरु महाराजले ती संसिद्धिहरूलाई चमत्कारको रूपमा कहिल्यै पनि प्रयोग गर्नुभएन अपि तु खरानीभित्रको आगोको झरिलो फिलुङ्गोझैं गोप्य रूपमा नै राख्नुभयो। गुरुमहाराजले साधना गरेका धेरै स्थलहरूमध्ये पाँचथरको जोरपोखरी र आगेजुङ (तेजपुञ्ज) मुख्य पर्दछन्। त्यहाँ गुरु महाराजले धेरै ठुला ठुला लक्ष हवन र गायत्री पुरश्चरण गर्नु गराउनुभयो।

गुरुदेव ज्ञानको पुञ्ज हुनुहुन्थ्यो। अनि विवेकी र दयालु स्वभावको हुनुहुन्थ्यो। धेरै नरनारीहरू गुरुबाट शिक्षित र दीक्षित भएका थिए। गुरुमहाराज जहाँ जहाँ जानुभयो, बस्नुभयो त्यहाँ त्यहाँ आफ्ना भक्त शिष्यहरूलाई विशेष रूपमा ब्रह्मगायत्रीको उपासना, मन्त्रजाप, यज्ञानुष्ठानका साथै संस्कृत देववाणी वेदादिको पठन–पाठन गराउनुभयो। यिनै कार्यहरूले नै मानव जीवन कृतार्थ एवं पूर्ण हुँदो रहेछ। सन्न्यासी महात्माहरूलाई परिव्राट् भनिन्छ। परितः सर्वं परित्यज्य व्रजतीति परिव्राट् सांसारिक विषयवासनामा नफसीकन काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य जस्ता दुर्गुणहरूलाई परित्याग गरेर पारमार्थिक साधनामा लाग्ने हुँदा परिव्राजक भनिएको हो।

स्वामीज्यू पनि एकै ठाउँमा बसिरहँदा यी दुर्गुणहरूले दुःख दिन्छन् र साधनामा बाधा पर्छ भनी तीर्थाटनका क्रममा भारतको सदिया आसाम शान्तिपुरमा २०२४ देखि २०२८ साल मार्ग १३ गतेसम्म (झिंगानदी) कञ्चनगङ्गाको तटमा तपस्या गरेर बस्नुभयो। मैले पनि त्यसै बखतमा गुरुदेवको दर्शन पाएको हुँ र एक डेड वर्ष जति गुरुको सान्निध्यमा बस्ने मौका पाएको थिएँ। म लठ्ठु बालकले गुरुको महिमा थाहा पाउने कुरै भएन केही थाहा पाएका र मैले अनुभव गरेका कुराहरूसमेत यहाँ उल्लेख गर्न सकिन। गुरुदेवको अनुकम्पा भएमा कुनै बेला व्यक्त गर्ने मौकाको पर्खाइमा बस्ने छु। सदिया आसामबाट २०२८ साल मङ्सिर १३ गतेका दिन पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, पुष्पलाल तिम्सिना, विष्णुचैतन्य पौडेल र पूर्णानन्द तिम्सिनाका साथ स्वदेशतर्फ प्रस्थान गर्नुभई मार्ग १५ गते पुनः गुरुमहाराज झापा जिल्ला साबिक चारपाने २ मा आइपुगी राजमार्ग दक्षिण बेलडाँगीमा पुष्पलाल भण्डारीको गृह प्राङ्गणमा एक रात बसी भोलिपल्ट बिहान मार्ग १६ गते धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन सँगै आउनुभएका आफ्ना परम हितैषी भक्त पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनासँग उहाँले खरिद गर्नुभएको राजमार्गउत्तर चारपानेको वडा नं. ३ को जग्गातर्फ लाग्नुभयो, जुन जग्गाको आकार प्रकारको बारेमा गुरुलाई ध्यानगोचर भई सकेको थियो। लौरो टेक्दै त्यस ठाउँमा आएर पण्डितजी ? तपाईले लिएको जग्गा यही होइन त ? भन्दै देखाउँदै देखाउँदै जग्गाको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्चिमबाट पूर्वतर्फ लाग्नुभयो र हाल जहाँ श्रीराम मन्दिर छ त्यसै ठाउँमा उभिई केही दिन यहीं बसेर साधना गर्ने इच्छा व्यक्त गर्दै अलिकति जमिन भिक्षाको रूपमा दिन सक्नुहुन्छ भनी सोध्नुभयो।

पं. नन्दिकेश्वर गुरुले पनि आफूप्रति गुरुदेवको महती अनुकम्पा भएको महसुस गरी खुसी मुद्रामा गुरुदेव ! यो सबै जमिन हजुरकै त हो नि आवश्यकताअनुसार लिइबक्सियोस् भन्नुभयो। त्यसपछि गुरुदेवले आफूले टेकेको लौराको टुप्पाले जग्गाको रेखाङ्कन गर्दा करिब एक कठ्ठा जमिन रेखाङ्कन गर्नुभयो र मलाई यति भए पुग्छ भनी आज्ञा हुँदा पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूले यतिले मात्र त थोरै होला अरू लिइबक्सियोस् भन्दा अहिलेलाई यति भए पर्याप्त हुन्छ पछि आफैं बढ्ने छ भनी त्यही रेखाङ्कन गरिएको जमिनको पश्चिमतर्फ भक्तजनहरूबाट एउटा सानो सुन्ठीको छाप्रो निर्माण गराइबक्सियो र एकान्तमा बस्ने इच्छा व्यक्त गर्दै तीन रातसम्म त्यही छाप्रोमा समाधिस्थ भई साधनामा लाग्नुभयो। तीन दिनपश्चात् गुरुदेव कनकाई तट र शताक्षीमा समेत बस्नुभयो। यसरी कहिले चारपाने कहिले शताक्षी हुँदै २०२८ साल माघ शुक्ल भीष्मद्वादशीका दिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्तमा चारपाने कुटीमा आफ्ना शिष्य ब्रह्मचारी विष्णुचैतन्य पौडेल र पूर्णानन्द तिम्सिना, पुष्पलाल पौडेल आदिलाई पठन-पाठन शुभारम्भ गर्दै विद्यालयको समेत प्रारम्भ गर्नुभयो।

आश्रम र विद्यालय एकआपसका परिपूरक रहेका छन् आश्रम भन्नु नै विद्यालय र विद्यालय भन्नु नै आश्रम हो भिन्न होइन यी दुवै जीव र आत्मा जस्ता हुन्। २०२९ साल भाद्र २ गतेका दिन यसको संरक्षणको जिम्मेवारी पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, देवीप्रसाद पौडेल, पुष्पलाल तिम्सिना, पुष्पलाल भण्डारी आदि जो यस क्षेत्रमा बसोबास गर्नुहुन्थ्यो उहाँहरूलाई सुम्पिई भविष्यमा यसको आकार विशाल हुने कुराको सङ्केत गर्दै यो तपाईंहरूको साझा सम्पत्ति हो संरक्षण गर्नु है भन्दै उत्तराखण्ड उत्तरकाशीतर्फ लाग्नुभयो। गुरु उत्तरकाशी प्रस्थान गर्नुभएपश्चात् स्थानीय स्वामीजीका भक्तहरूको साथ-सहयोगमा कुटीमा नित्यपूजा, वार्षिक रूपमा मनाइने ब्रह्मलीन गुरु परम्पराका स्वामीजीहरूका भण्डाराका साथै स्थानीय बालबालिकाहरूलाई अक्षरारम्भदेखि गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदिको पठन—पाठन पुष्पलाल तिम्सिनाज्यूले गर्दै जानुभयो। त्यसपछि २०३३ साल वैशाख ७ गतेका दिन पूज्यपाद गुरु पं. टेकनाथज्यूको अध्यक्षतामा पं. भानुभक्त अधिकारीलाई शिक्षक पदमा नियुक्त गरी पठन—पाठनका साथ सुचारु रूपले आश्रम र विद्यालय दुवै सञ्चालन हुँदै आएका छन्। कुटी र पाठशालाको रूपमा जन्म लिएका यी दुवै संस्थाहरू दुबो मौलाएझैं मौलाउँदै आज आश्रम र विद्यालयले एउटा प्रसिद्ध धार्मिक देवस्थल र संस्कृत शिक्षण संस्थाका रूपमा प्रसिद्धि पाएका छन्। यहाँबाट उत्पादन भएका सयौं जनशक्तिहरू आज देशविदेशमा धर्मप्रचारक र शिक्षा र सरकारी निकायका उच्च ओहोदामा रही सेवा गरिरहेको कुरा सर्वविदितै छ। अन्त्यमा यी संस्थाहरूको उत्तरोत्तर प्रगति र विकासको कामना गर्दछु।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवस्थापन समिति (आश्रम तथा विद्यालय) ले गरेका महत्त्वपूर्ण निर्णयहरू

✍ आचार्य छन्दुराम भण्डारी

।।श्रीहरिः।।सांसारिक बन्धनमा बाँधिएर भवबन्धनमा डुबेको समाजलाई र आफ्ना अनुयायी शिष्यहरूलाई उपदेश गर्दै नेपालका पहाडी भेकका अनेकौं गुफा-कन्दराहरूमा बसी साधना गर्दै भारत, आसामको शान्तिपुर भन्ने ठाउँबाट नेपालको झापा, चारपानेमा आई पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको जग्गामा गुरुले अन्दाजी १ कट्ठा भूमि मागेर सोही पवित्र भूमिमा २०२८ साल मार्ग १६ गते मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा धान्यपूजाका दिन यज्ञशाला (धुनी) र पाञ्चायन अनुष्ठानको प्रारम्भ गरी शताक्षी गङ्गामा प्राप्त शिवलिङ्ग ल्याएर शुभमुहूर्तमा आफ्नो कुटीभित्र स्थापना गर्नुभयो।

स्वामीजीले ग्रामवासीहरू नन्दिकेश्वर तिम्सिना, पुष्पलाल भण्डारी, पुष्पलाल तिम्सिना, देवीप्रसाद पौडेल, लोकनाथ पौडेल, खडानन्द पौडेल आदि शिष्यहरू भेला गरी तपाईंहरूका छोराछोरीहरू यहीं पढाउनू, अनि तपाईंहरूले नै यसको संरक्षण, सञ्चालन गर्दै जानू भनी माघ शुक्ल पक्ष भीष्म द्वादशीमा आवश्यकताअनुसार वर्णमाला, चण्डी, रुद्री, गीता, वेद, व्याकरण आदिको पाठ दिई गुरुकुल प्रारम्भ गर्नुभयो। उहाँ कहिले शताक्षी, कहिले चारपाने गर्दै रहेर २०२९ भाद्र २ गते भारतको उत्तरकाशीतर्फ प्रस्थान गर्नुभयो। त्यसपछि कुटीमा पूजाआजा गर्ने, रुद्राभिषेक गर्ने र पठन-पाठन गर्ने कामको जिम्मा पुष्पलाल तिम्सिनाले लिनुभयो भने यस कामलाई उहाँले २०३३ वैशाख ५ गतेसम्मै निरन्तरता दिइरहनुभएको देखिन्छ।

स्वामीज्यूको मौखिक आज्ञाअनुसार चलेको यस आश्रमपरिसरका ग्रामवासीहरू २०३३ सालको नववर्षारम्भ (वैशाख १) मा भेला हुँदा आश्रम संरक्षण गर्न समिति गठन गर्ने सल्लाह भएबमोजिम २०३३ वैशाख ५ गते भेला बसी आश्रम संरक्षण समिति गठन गर्नु किन आवश्यक छ भन्ने पृष्ठभूमिको उल्लेख गर्दै सभापति, उपसभापति, कोषाध्यक्ष, सचिव एक-एक जना र सदस्यहरू ५ जना रहेको आश्रम संरक्षण समिति गठन गरेको र समितिको बैठकले आश्रम संरक्षणका सम्बन्धमा लिखित रूपमै महत्त्वपूर्ण निर्णयहरू गरेको पाइन्छ।

२०३३ वैशाख ५ गतेको भेलाले पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको सभापतित्वमा पुष्पलाल तिम्सिना उपसभापति, पुष्पलाल भण्डारी कोषाध्यक्ष, लोकनाथ खनाल सचिव र परशुराम ओझा, केदारनाथ खतिवडा, देवीप्रसाद पौडेल, लोकनाथ पौडेल, खडानन्द पौडेल सदस्य

✍ *महासचिव, विवेकाश्रम तथा अध्यक्ष, साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.*

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहेको आश्रम संरक्षण समिति गठन गरेको र उक्त समितिले जम्मा ३ वटा विषयमा छलफल गरी निर्णय गरेको देखिन्छ। १. यो विवेकाश्रममा भएको यज्ञ कसरी सञ्चालन गर्ने ? भन्ने विषयमा स्वामी विवेकानन्दज्यूको आज्ञानुसार हामी आश्रम समीपवर्ती भक्त ग्रामीण जनताले प्रतिदिन मुष्टिदान पर सारी पूर्णिमा.अमावस्या, द्वादशी आदि पर्वमा आश्रमस्थित यज्ञशालामा ल्याई समर्पण गरी दैनिक हवन चलाउनुपर्छ। रुद्रीपाठ गराउनु नितान्त आवश्यक छ भन्ने, २. विद्यालयको आवश्यक छ के गर्ने ? भन्ने विषयमा आश्रममा विद्यालयको आवश्यकता छ, गुरुदेवको आज्ञानुसार वेद, रुद्री, चण्डी, व्याकरण पढाउनुपर्ने हुँदा यही वैशाख ७ गते विद्यालय सञ्चालक समिति खडा गरी विद्यालय चलाउनुपर्छ भन्ने र ३. यो आश्रम पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको जग्गामा छ सो के गर्ने ? भन्ने विषयमा पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूले आश्रम बनाउनका लागि गुरुदेव विवेकानन्द स्वामीलाई अन्दाजी १ कठ्ठा जमिन दिनुभएको हो। यो जमिन विनामूल्य गुरुलाई भिक्षा दिएको हो। समयमा पास गरिदिने भन्ने निर्णय भएको देखिन्छ। साथै उक्त निर्णय गरिसकेर समितिका सबै पदाधिकारीले उपर्युक्त निर्णयमा हामी मन्जुर छौं भनी अन्तमा पनि हस्ताक्षर गरेको पाइन्छ।

(२०३३ वैशाख ५ गतेको बैठकको निर्णय जस्ताको त्यस्तै)

विवेकाश्रम यज्ञशाला चारपाने ३

मिति २०३३ साल वैशाख ५ गते शनिवार

विषयः उपर्युक्त आश्रम संरक्षण समितिबारे।

यो आश्रम विक्रम सं. २०२८ साल मार्ग १६ गते धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन हाम्रा परम पूजनीय ब्रह्मलीन १०८ विवेकानन्द स्वामीज्यूका करकमलबाट यज्ञ कुण्ड र विवेकानन्देश्वर शिवलिङ्ग स्थापना गरी केही दिनसम्म हवन र रुद्रीपाठ गराइबक्सियो र २०२९ साल भाद्र २ गते उत्तरकाशी उत्तराखण्डमा जानुभयो।

उहाँ गएपछि गुरुदेवका आज्ञानुसार उहाँकै चेला श्रीपुष्पलाल तिम्सिनाज्यूले ग्रामीण जनताका मुष्टिदानका सहयोगले सो कार्यक्रम २०३३ साल वैशाख ५ गतेसम्म सुसम्पन्न गराउनुभयो।

अब उता १ जना व्यक्तिले आश्रम संरक्षण गर्न असमर्थ हुँदा आश्रम संरक्षण समिति निम्न प्रकारले सङ्गठन गरिएको छ।

विवेकानन्दाश्रम संरक्षण समितिः

सभापति पं. नन्दिकेशर तिम्सिना चारपाने ३

उपसभापति पुष्पलाल तिम्सिना चारपाने ३

कोषाध्यक्ष पुष्पलाल भण्डारी चारपाने ३

सचिव लोकनाथ खनाल चारपाने ३

सदस्य वर्ग

परशुराम वझा चारपाने ३

केदार खतिवडा बुधबारे गा.पं.

देवीप्रसाद पौडेल चारपाने ३

लोकनाथ पौडेल चारपाने ३

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खडानन्द पौडेल चारपाने ३

मिति २०३३ साल वैशाख १।५।७ मा, विवेकाश्रम चारपाने ३

आज उपर्युक्त आश्रममा एक सभाको आयोजना गरी आश्रम संरक्षण समितिले निम्न प्रकार प्रस्ताव पास गरिएको छ। यो सभा पं. नन्दिकेश्वरको सभापतित्वमा भएको छ।

प्र. नं. १ यो विवेकाश्रममा भएको यज्ञ कसरी सञ्चालन गर्ने?

प्र.नं २. विद्यालयको आवश्यक छ के गर्ने?

प्र.नं ३. यो आश्रम पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको जग्गामा छ सो के गर्ने?

उ.नं. १. गुरुदेव १०८ स्वामी विवेकानन्दज्यूको आज्ञानुसार हामी आश्रम समीपवर्ती भक्त ग्रामीण जनताले प्रतिदिन मुष्टिदान पर सारी पूर्णिमा.अमावस्या, द्वादशी आदि पर्वमा आश्रमस्थित यज्ञशालामा ल्याई समर्पण गरी दैनिक हवन चलाउनुपर्छ। रुद्रीपाठ गराउनु नितान्त आवश्यक छ भन्ने निर्णय गरियो।

उ.नं. २. आश्रममा विद्यालयको आवश्यकता छ गुरुदेवको आज्ञानुसार वेद, रुद्री, चण्डी, व्याकरण पढाउनुपर्ने हुँदा यही वैशाख ७ गते विद्यालय सञ्चालक समिति खडा गरी विद्यालय चलाउनुपर्छ भन्ने निर्णय गरियो।

उ.नं ३. पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूले आश्रम बनाउनका लागि गुरुदेव विवेकानन्द स्वामीलाई अन्दाजी १ कट्ठा जमिन दिनुभएको हो। यो जमिन विनामूल्य गुरुलाई भिक्षा दिएको हो। समयमा पास गरिदिने निर्णय गरियो।

उक्त प्रस्ताव पास भएको ठीक छ भनी संरक्षण समितिले निम्न प्रकारले सही गरेका छौं।

सभापति पं. नन्दिकेशर तिम्सिना चारपाने ३
उपसभापति पुष्पलाल तिम्सिना चारपाने ३
कोषाध्यक्ष पुष्पलाल भण्डारी चारपाने ३
सचिव लोकनाथ खनाल चारपाने ३
सदस्य वर्ग
परशुराम वझा चारपाने ३
केदार खतिवडा बुधबारे गा.पं.
देवीप्रसाद पौडेल चारपाने ३
लोकनाथ पौडेल चारपाने ३
खडानन्द पौडेल चारपाने ३

२०३३ वैशाख ५ गतेका दिन वेद, रुद्री, चण्डी, व्याकरण पढाउनुपर्ने हुँदा यही वैशाख ७ गते विद्यालय सञ्चालक समिति खडा गरी विद्यालय चलाउनुपर्छ भनी निर्णय गरेपश्चात् पहाडबाट बसाइँ सरी कमलझोडा आउनुभएका पं. टेकनाथ गौतम (गौतम गुरु) स्वामी विवेकानन्द गुरुका प्रियपात्र, वैदिक वाङ्मयका ज्ञाता अनि हामी सबैका आस्थाका केन्द्र पनि भएकाले अब हामी गुरुसँग जाऔं भनी समितिका प्रतिनिधिहरू वैशाख ६ गते गुरु टेकनाथ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौतमसँग भेट गरी ७ गतेको बैठकमा आइदिन अनुरोध गर्दा गौतम गुरुले हुन्छ म आउँछु भनी वचन दिएपछि समितिका प्रतिनिधि चारपाने आई ७ गतेलाई बैठक बोलाएको पाइन्छ।

२०३३।१।७।२ मा

आज उपरोक्त मितिमा चारपाने गा.पं. वा. नं. ३ मा बस्ने हामी ग्रामीण नरनारीहरू घरबेभारका कामकाजले अन्यत्र विद्यालयहरूमा गई पढ्न फुर्सद नमिल्दा र नपढ्दा पनि वर्तमान युग सुहाउँदो हुन नपाउँदा साह्रै अपशोच लागिरहेको छ। तसर्थ हामी प्रौढ नरनारीहरूकले घरायसी कामबाट फुर्सद भएपछि प्रतिदिन अक्षर चिन्न र चिनाउन नितान्त आवश्यक छ।

हामीहरू साक्षरता बन्न हाम्रै घरका समीपवर्ती विवेकाश्रम कुटी देवालयका समीप एक सानु विद्यालय बनाई घरायसबाट योग्यता शिक्षक राखी बिहान बेलुका आफ्नु इच्छादिन विषयहरू पढ्ने पढाउने कार्यभार सञ्चालन गर्न निम्न प्रकारले घरायसी सञ्चालक समिति खडा गराएका छौं र सञ्चालक समितिले गरेका निर्णयहरू समर्थन गर्न मन्जुर छौं भन्ने पृष्ठभूमि उल्लेख गर्दै २०३३ वैशाख ७ गते पं. टेकनाथ गौतम गुरुज्यूको अध्यक्षतामा सञ्चालक समिति गठन भएको पाइन्छ। उक्त सञ्चालक समितिको उपाध्यक्षमा डिल्लीराम भण्डारी, कोषाध्यक्षमा पुष्पलाल भण्डारी, सचिवमा लोकनाथ खनाल, सहसचिवमा पुष्पलाल तिम्सिना र सदस्यहरूमा घनश्याम तिम्सिना, देवीप्रसाद पौडेल, खगनाथ भण्डारी, पर्शुराम ओझा, तोयानाथ भण्डारी, हरिप्रसाद भण्डारी, लोकनाथ पौडेल, केदारनाथ खतिवडा रहनुभएको छ।

नवगठित समितिको बैठकमा भएका निर्णयहरू

१. स्कुल जान नभ्याउने खेतीवालहरूले कसरी साक्षर बन्ने, आवश्यक विषय कसरी पढ्ने भन्ने विषयमा हाम्रै घरका समीपमा घरायसी विद्यालय खोली योग्य शिक्षक राखी पढ्ने-पढाउने र साक्षर बन्नुपर्दछ।

२. स्कुल जाने बालबालिकालाई के गर्ने ? भन्ने विषयमा बिहान ७ बजेदेखि ९ बजेसम्म पढाउने र १० वजे स्कुलमा पठाउने।

३. शिक्षकको भरणा गर्ने र के के विषय पढाउने ? भन्ने विषयमा शिक्षक पं. भानुभक्त अधिकारीज्यूलाई भरणा गरी अक्षर चिन्ने र वेद, रुद्री, चण्डी, हिसाबहरू पढनुपर्दछ। साथै लघुकौमुदी, अनुवादसमेत हासिल गर्नुपर्दछ।

४. शिक्षकलाई बेतन दिन के गर्ने ? भन्ने विषयमा पढ्ने व्यक्तिले आफ्नो औगातअनुसार रु, उठाई मैनाबारी बेतन रु. १०० (एक सय) र बेतनबाहेक खाना दिने।

५. बिदा कुन कुन दिन र मैनामा कति दिन राख्ने ? भन्ने विषयमा अष्टमी, औंसी, प्रतिपदा गरी २ पक्षमा ६ दिन र अरू आवश्यकअनुसार राख्ने।

६ शिक्षकलाई नियुक्ति कहिले गर्ने ? भन्ने विषयमा शिक्षक नियुक्ति आजै गरी आजदेखि नै पढाउन सुरु गर्नुपर्दछ।

७. विद्यालयको नाम के राख्ने ? भन्ने विषयमा यो विद्यालय विवेकाश्रम साङ्गवेद विद्यालय हो भन्ने निर्णय गर्दै उक्त प्रस्ताव पास भएको ठीक छ भनी हामी सञ्चालक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समितिले निम्न प्रकारले सही गरेका छौं भनी प्रमाणितसमेत गरेको पाइन्छ।

त्यसपछि २०३३।२।२४ गते आइतवार उपसभापतिको अध्यक्षतामा बसेको समितिको बैठकमा १. पढाउने मानिसलाई सञ्चालक समितिले मैनाबारी ३० सेर चामल खाद्यान्न दिने खाजा नदिने (श्रद्धाबाहेक), २. दाउरा आफैं चिर्ने र पुर्याउने, ३. भुटुनका लागि मैनाबारी १ सेर मिठातेल दिने, ४. सागसब्जी घरघरायसीबाट पूरा गर्ने, ५. चाय आदिमा हुनेले दैनिक यथाशक्ति दुध ल्याउने, चायपत्ती समाजले नै ल्याउनेसमेत निर्णय भएको छ।

खाद्यान्न व्यवस्थामा स्वेच्छानुसार सहयोग तालिका निम्न रहेको छ —

क्र.सं.	नाम	चामल	क्र.सं.	नाम	चामल
१	खगनाथ उ. भण्डारी	४ सेर ३ पावा	७	लोकनाथ उ. पौडेल	३ सेर
२	पुष्पलाल उ. भण्डारी	४ सेर ३ पावा	८	लोकनाथ उ. खनाल	२ सेर २ पावा
३	घनश्याम उ. तिम्सिना	४ सेर ३ पावा	९	घनश्याम उ. भण्डारी	१ सेर
४	देवीप्रसाद उ. पौडेल	४ सेर	१०	खड्गानन्द उ. पौडेल	१ सेर
५	पुष्पलाल उ. तिम्सिना	१ सेर ३ पावा	११	परशुराम उ. पौडेल	२ पावा
६	परशुराम उ. ओझा	१ सेर २ पावा	१२	हरिप्रसाद उ. भण्डारी	२ पावा

यसपछि भएका समितिका निर्णयहरू निम्नानुसार भएका देखिन्छन् -

२०३७।१२।२२ गतेः २०२८ सालमा स्वामी विवेकानन्दज्यूका करकमलबाट प्रारम्भ गरिएको आश्रमपरिसरको सानो फुस्को कुटी भएको ठाउँमा दोस्रो पक्की मन्दिर निर्माण गरी तत्तत् स्थानमै रहेका देवपूजनस्थल, यज्ञकुण्ड, शिवलिङ्ग, गुरुपादुका यथास्थानमै रहेका र नित्य सेवा पूजा यथावत् रहेको कुरा अवगत गराउँदै एउटा अतिथि, अभ्यागतका निम्ति धर्मशाला, अतिथिनिवास र विद्यार्थीहरूका लागि छात्रावासको निर्माणसमेत गर्न भनी पृष्ठभूमि उल्लेख गर्दै सञ्चालक समिति गठन भएको देखिन्छ। सञ्चालक समितिमा सभापति पं. टेकनाथ गौतम, उपसभापति डिल्लीराम भण्डारी, सचिव विष्णुभक्त भण्डारी, सहसचिव पुष्पलाल भण्डारी, कोषाध्यक्ष नन्दिकेश्वर तिम्सिना र सदस्यवर्ग केदारनाथ खतिवडा, जीवनाथ भण्डारी, घनश्याम कँडरिया, घनश्याम तिम्सिना, पं. भोलानाथ सिग्देल, लोकनाथ खनाल, जनकलाल सुवेदी, पर्शुराम ओझा, देवीप्रसाद पौडेल, छविलाल खरेल गरी १५ जना। निर्णयः जीर्ण भवन भत्काएर ५०-१२ फिट लम्बाइचौडाइको एल आकारको चारकोठे भवन निर्माण गरी टिन वा टायलले छाउने र बाँसको घेराबारा गरी अर्को व्यवस्था नभएसम्म अध्यापन र आवास पनि एकै ठाउँमा गर्दै जाने। स्रोत चन्दा सङ्कलन गरी निर्माण कार्य सम्पन्न गर्ने।

२०३८।६।१ गतेः फल्याक, बटम आदि ३००० फुट बढी सङ्कलन भएको ५ कोठे विद्यालय एवं आवास भवन निर्माणको आय ८,५,६९ र व्यय ८,१०२।४० र बचत ४६६।६० अनुमोदन।

२०३८।९।२६ गतेः विद्यार्थीहरूबाट बार्षिक १५० का दरले रकम उठाई नपुग रकम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सञ्चालक समितिले व्यहोरी ४००० रकम पौष मसान्तभित्र प्र.अ.लाई बुझाउने र प्र.अ.(विष्णुभक्त भण्डारी) कैतर्फबाट एक जना सहशिक्षक भरना गर्ने।

२०३९।१०।५ गतेः गत वर्षझैं प्रअमा विष्णुभक्त भण्डारी र सहशिक्षकमा अम्बिकाप्रसाद रेग्मीलाई राख्ने र बेतन क्रमशः ४५०० तथा २५०० र खाद्यान्नसमेत वार्षिक दिने।

२०४०।९।७ गतेः छात्रछात्राबाट १५० का दरले र अपुग रकम समितिले दिने, गत वर्षको उठेको ६२५० मध्ये ४०००। प्र.अ.लाई र २२५० अम्बिकाप्रसाद रेग्मीलाई दिने।(७५० नपुग गुरुद्वयबाट छुट), प्रअमा विष्णुभक्त भण्डारी र सहशिक्षकमा प्रअकै अनुमतिमा राख्ने र खाद्यान्नमा प्रतिघर १ मन धान उठाई १६ मन जम्मा गर्ने।

२०४१।९।२२ गतेः छात्रछात्राबाट उठेको ५८२० मध्ये ३६२०। प्र.अ.लाई र २२०० सहशिक्षकलाई दिने। प्रअमा विष्णुभक्त भण्डारी र सहशिक्षकमा प्रअकै अनुमतिमा राख्ने।

२०४२।१०।९ गतेः छात्रछात्राबाट उठेको ६८९५ मध्ये ३६२०। सहशिक्षकलाई २३०० र प्र.अ.लाई र ४५९५ दिने र सहशिक्षकमा प्रअकै अनुमतिमा राख्ने।

२०४२।११।१५ गतेः छात्रावास (विद्यालय भवन) निर्माणार्थ निर्माण समिति चयन - जीवनाथ भण्डारी अध्यक्ष, नरनाथ घिमिरे उपाध्यक्ष, लोकनाथ खनाल, सचिव, छन्दुराम भण्डारी सहसचिव, डिल्लीराम भण्डारी कोषाध्यक्ष र सदस्यगणमा केदारनाथ खतिवडा, जनकलाल सुवेदी, लहेन्द्र भट्टराई, पुष्पलाल तिम्सिना, पर्शुराम ओझा, देवीप्रसाद पौडेल, घनश्याम तिम्सिना, छविलाल खरेल, गोविन्द काफ्ले, पुष्पलाल भण्डारी, जीवनाथ वराल, लक्ष्मीनारायण भट्टराई।

२०४३।९।२८ गतेः छात्रछात्राबाट उठेको ७०५० मध्ये सहशिक्षकलाई २५०० र प्र.अ.लाई र ४५५० दिने र प्रअकै अनुमतिमा फागुनमा निर्णय गरी सहशिक्षक राख्ने।

२०४३।१०।१२ गतेः माघ २० देखि २७ सम्म लक्ष हवन गर्ने।

२०४३।१२।२९ गतेः छन्दुराम भण्डारी र डिल्लीराम गौतमलाई सहशिक्षकमा नियुक्ति गर्ने र समीपवर्ती छात्रका अभिभावकबाट प्रतिमास २७ किलो खाद्यान्न दिने र वर्षे बिदा श्रावण १ देखि १५ गतेसम्म गर्ने, चारपाने गा.पं.सँग आर्थिक सहयोग माग गरी पक्की शौचालय बनाउने र आवश्यक अर्थ सङ्कलनका निम्ति रसिद बुक ५००० प्रति छपाउने।

२०४४।४।९ गते शनिबारः २०२८ सालदेखि स्थापना भई चारपानेलगायत विभिन्न क्षेत्रबाट प्राप्त मुष्टिदानले चलेको यस विद्यालयको परिसरमा आवश्यक भौतिक निर्माणहरू पनि भएको र यहाँका अध्ययनरत छात्रहरू परीक्षा दिन भारतको सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालयअन्तर्गतका आङ्गिक महाविद्यालयहरूमा अध्ययन गरेर स्वर्णपदकसम्म पाएको र हाम्रो पठनपाठनलाई ती महाविद्यालयहरूले मुक्तकण्ठले प्रशंसा गरिरहेको भए तापनि यसै विद्यालयलाई सम्बन्धित निकायबाट कक्षा सञ्चालनार्थ स्वीकृति लिएर अध्ययनरत छात्रहरूलाई नेपालबाटै परीक्षा गर्न गराउन चारपाने गा.पं.सँग विशेष सहयोग लिई संस्कृत महाविद्यालयका लागि प्रस्ताव गर्ने।

२०४४।८।१० गतेः छात्रावास निर्माणार्थ चारपाने गा.पं. प्रधानपञ्चको संयोजकत्वमा र उपप्रधानपञ्च जगन्नाथ काफ्लेको अध्यक्षतामा सचिव लोकनाथ खनाल, सहसचिव छन्दुराम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भण्डारी, कोषाध्यक्ष नरनाथ घिमिरे र ५ सदस्यसहितको भवन निर्माण समिति गठन जसमा निरीक्षकद्वय प्र.अ. विष्णुभक्त भण्डारी, वडाध्यक्ष नारायण राजवंशी रहनुभएको।

२०४४।८।११ गतेः छात्रावास निर्माण समितिका अध्यक्ष जगन्नाथ काफ्लेज्यू (उपप्रधानपञ्च) को अध्यक्षतामा बैठक बसी छात्रावास निर्माण सहयोगार्थ विद्यालयको प्राङ्गणमा श्रीमद्देवीभागवत महापुराणको आयोजना पौष २१ गतेदेखि माघ २ गते पूर्णाहूति हुने गरी गर्ने निर्णय गर्दै सो कार्य सम्पन्न गर्न विभिन्न उपसमिति गठन गरिएको।

२०४४।९।१८ गतेः पुराण वाचनार्थ पं. कृष्णप्रसाद मिश्र र पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूलाई अनुरोध गर्ने। प्रमुख यजमान (सपत्निक) - खगनाथ भण्डारी, अर्चक - डिल्लीराम गौतम, पूजासामग्री सम्पादन होमनाथ पौडेल, पाक सम्पादन पर्शुराम ओझा, देवीप्रसाद खनाल।

२०४४।१०।५ गतेः सञ्चालक समितिको पदावधि पुगेकोले केही सदस्य हेरफेर गरी समिति निम्नानुसार गठन गरिएको - अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम, उपाध्यक्ष डिल्लीराम भण्डारी, सचिव विष्णुभक्त भण्डारी, सहसचिव अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, कोषाध्यक्ष नन्दिकेश्वर तिम्सिना र सदस्यवर्ग केदारनाथ खतिवडा, भोलानाथ सिग्देल, घनश्याम तिम्सिना, जीवनाथ भण्डारी, लोकनाथ खनाल, पुष्पलाल भण्डारी, देवीप्रसाद पौडेल, जनकलाल सुवेदी, पुष्पलाल तिम्सिना, पर्शुराम ओझा, घनेन्द्र अधिकारी, नरनाथ घिमिरे, दाताराम तिम्सिना। छात्रछात्राबाट उठेको रकममध्ये सहशिक्षक डिल्लीराम गौतमलाई २५००, सहशिक्षक छन्दुराम भण्डारीलाई ३००० र प्र.अ.लाई र ४४५० दिने। ।प्रअमा विष्णुभक्त भण्डारी र सहशिक्षक २ जना प्रअकै तजबिजले राख्ने। प्रतिविद्यार्थी रु. २०० लिने। वर्णमाला चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण, गणित र सामाजिक विषयहरूसमेत समेटी वार्षिक रूपमा परीक्षासमेत गराउने र पोसाकको विषयमा निलो आकाशे रङ्गको कुर्ता-सुरुवाल, टोपी र सन्दर्भगत रूपमा जुत्ता पनि लगाउने।

२०४४।१०।११ गतेः ७ कठ्ठा १५ धुर जग्गा खरिद गरी विवेकाश्रम र साङ्गवेद संस्कृत मा.वि.को नाममा संयुक्त पास गरी सोमध्ये विद्यालयलाई १ कठ्ठा भोग गर्न अधिकार दिने।

२०४४।१०।१८ गतेः भवन निर्माण समितिको बैठक बसी सँधियार घनश्याम तिम्सिनाको नाममा रहेको ३ कठ्ठा जमिन २९,५०० मा खरिद गरी रजिस्ट्रेसन पास गर्ने।

२०४५।१।१३ गतेः (विद्यालय सञ्चालक समिति र भवन निर्माण समितिको संयुक्त बैठक) खरिद गरेको जग्गाको भुक्तानी दिन बाँकी रकम रु. ११,००० मध्ये निम्न व्यक्तिहरूबाट अनुदान र सापटीसमेत गरी ५५२१ रु. र नपुगका लागि भवन निर्माण समितिले विद्यालयमा रहेका टिन (कर्कट पाता) विक्री गरी समय सालमा जग्गाधनीलाई दिने।

२०४५।२।१६ गतेः विद्यालयका खातापाता राख्ने दराजका लागि सदस्य केदारनाथ खतिवडाबाट निःशुल्क प्राप्त काठबाट दराज निर्माण गर्ने, सहशिक्षकको आवश्यकतापूर्तिका लागि स्थानीय पूर्वविद्यार्थी पूर्णानन्द तिम्सिनालाई नियुक्ति।

२०४५।८।१२ गतेः सञ्चालक मूल समितिमा केही हेरफेरसहित पुनर्गठन - अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम, सचिव पूर्णानन्द तिम्सिना, कोषाध्यक्ष लोकनाथ खनाल, सदस्य केदारनाथ खतिवडा, जीवनाथ भण्डारी, नरनाथ घिमिरे, छविलाल खतिवडा। उठेको रकममध्ये प्र.अ.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष्णुभक्त भण्डारीलाई र ५१०० सहशिक्षक पूर्णानन्द तिम्सिनालाई २१०० दिने। शिक्षक २ जना राख्ने र प्र.अ.लाई मासिक ८०० र सहशिक्षकलाई ७०० दिने। वार्षिक अनुष्ठान सम्पन्न गर्न विभिन्न उपसमिति गठन।

२०४५।८।२८ गतेः सहशिक्षकका रूपमा पं. आनन्दप्रसाद सिग्देल र पूर्णानन्द सिग्देललाई राख्ने।

२०४५।११।२१ गतेः विद्यालय स्वीकृतिका लागि रु. ७५,०००। धरौटी राख्नुपर्ने भएकाले सोका लागि विष्णुबहादुर श्रेष्ठको संयोजकत्वमा आर्थिक उपसमिति गठन गरिएको।

२०४५।१२।२१ गतेः विद्यालय स्वीकृतिका लागि सङ्कलित रकम नेपाल बैंक लिमिटेड, विर्तामोडमा मुद्दती खाता खोली जम्मा हुन आएको ४५,०००। जम्मा गर्ने र थप गर्दै जाने।

२०४५।१२।२८ गतेः धरौटी रकम ७५,०००। पूर्ण गरी ने.बै.लि. बिर्तामोडमा जम्मा गरेको।

२०४६।२।११ गतेः सहशिक्षकमा अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, डिल्लीराम गौतम, गोविन्दप्रसाद पौडेल, छन्दुराम भण्डारी, भूमिप्रसाद दाहाललाई नियुक्ति गर्ने।

२०४६।२।१८ गतेः समितिमा निम्नानुसार केही हेरफेर गरिएको - अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम, सदस्यहरू- डिल्लीराम भण्डारी, केदारनाथ खतिवडा, घनश्याम तिम्सिना, लोकनाथ खनाल, जीवनाथ भण्डारी, पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, नरनाथ घिमिरे, पुष्पलाल भण्डारी, नारायण राजवंशी। निर्णयः प्र.अ.मा पं. विष्णुभक्त भण्डारीलाई नै निरन्तरता दिने र निम्नानुसार सहशिक्षकहरूको नियुक्ति गर्ने - पं. आनन्दप्रसाद सिग्देल, पूर्णानन्द तिम्सिना, पुष्पलाल पौडेल, डिल्लीराम भण्डारी, नवराज बाँस्कोटा। प्रतिमास प्र.अ.लाई रु. ८०० र सहशिक्षकलाई ७०० का दरले प्रदान गर्ने निर्णय भए तापनि पूर्वशिक्षक ३ जना प्र.अ.,स.शिक्षकद्वय आनन्दप्रसाद सिग्देल र पूर्णानन्द तिम्सिनालाई यथावत् दिई अरूलाई पुनः बैठक बसी निर्णय गर्ने र कक्षा सञ्चालनमा अन्य शिक्षकहरूलाई पनि स्वयंसेवकको रूपमा नियुक्ति गर्ने।

२०४६।३।१९ गते सोमबारः गणित शिक्षक नवराज बाँस्कोटालाई प्रतिमास पारिश्रमिक रु. ५५०। दिने र स्वयंसेवकका रूपमा नियुक्त भई कक्षा सञ्चालनमा महत्त्वपूर्ण योगदान पुर्याउनुहुने श्रीअम्बिकाप्रसाद रेग्मी (नव्यव्याकरणाचार्य, एम.ए. नेपाली), छन्दुराम भण्डारी (शास्त्री प्र.वर्ष.), गोविन्द पौडेल (शास्त्री प्र.व.), डिल्लीराम गौतम (उत्तरमध्यमा), नवराज बाँस्कोटा (आई.ए. प्र.व.), भूमिप्रसाद खतिवडा (आई.ए. प्र.व.) हरूलाई प्रसंशापत्रले सम्मान गर्दै धन्यवाद ज्ञापन गर्ने।

२०४६।५।५ गतेः गणित शिक्षकमा दमक १७ का नन्दराम पाठकज्यूलाई मासिक ६०० र भोजन वासको व्यवस्था आश्रमले गर्ने।

२०४६।५।९ गतेः जि.शि.का.बाट प्राप्त २ वटा दरबन्दीमा शिक्षकद्वय पं. आनन्दप्रसाद सिग्देल र पूर्णानन्द तिम्सिनालाई नियुक्ति गर्ने।

२०४६।८।२५ गतेः जि.शि.का.को पत्रानुसार वि.व्य. समिति निम्न प्रकार गठन भएको — अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम, सचिव पं. विष्णुभक्त भण्डारी (प्र.अ.), सदस्यहरू नारायण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजवंशी (वडाध्यक्ष) नरनाथ घिमिरे (चन्दादाता), लोकनाथ खनाल (गा.पं.बाट), घनश्याम तिम्सिना (गा.पं.बाट), डिल्लीराम भण्डारी (समितिबाट)।

२०४६।९।५ गते बुधवारः (साङ्गवेद संस्कृत मा.वि. र विवेकाश्रमको बैठक)

जि.शि.का.बाट प्राप्त २ दरबन्दीमा र निजी स्रोतबाट थप ४ जना नियुक्ति गर्ने, तलबका लागि चारपाने गा.पं.सँग १ जनाको तलब माग गर्ने र ३ जनाको समितिले चन्दा सङ्कलन गरी जुटाउने र कक्षा १ देखि ९ सम्म नै निःशुल्क पढाइ सञ्चालन गर्ने र प्रवेश शुल्क सम्बन्धमा भने कक्षा ५ देखि ९ सम्म १२५ र कक्षा १ देखि ४ सम्मको ९० रुपैयाँमात्र लिने।

२०४६।१०। ५ गतेः नेपाल बैं.लि. विर्तामोडमा मुद्दती खाता खोली रु. पच्चीस हजार जम्मा गरी कक्षा ९ सञ्चालन गर्न अनुमति माग गर्ने।

२०४६।११।२ गतेः कक्षा ८ सञ्चालनको पनि अनुमति प्राप्त भएकाले जि.शि.का.सँग वनकाली वेद विद्यापीठको पाठ्यक्रम लागु गरी कक्षा सञ्चालन गर्न अनुमति प्राप्त गर्ने।

२०४७।८।१६ गतेः अध्यक्षमा घनश्याम तिम्सिना, उपाध्यक्षमा जगन्नाथ खनाल, र सदस्यहरूमा छविलाल खतिवडा, लहेन्द्र भट्टराई, भोला घिताल, लीलाबहादुर कट्वाल, नारायण राजवंशी, सेमन्त भण्डारी, दामोदर न्यौपाने, सोमनाथ तिम्सिना रहने गरी वि.व्य.स. गठन।

२०४७।८।२६ गतेः वैदिक सनातन धर्म परम्परालाई अक्षुण्ण राख्नु यस संस्थाको मुख्य लक्ष्य रहेकाले वेदविद्याश्रम वनकालीको पाठ्यक्रम नै उचित हुने ठहर्याई उक्त पाठ्यक्रम नै पठनपाठन गराउने र यस पाठ्यक्रममा अङ्ग्रेजी विषय नभए तापनि छात्रहरूलाई अतिरिक्त अङ्ग्रेजी विषय पठनपाठन गर्ने निर्णय।

२०४७।९।२ गतेःअङ्ग्रेजी शिक्षकका लागि स्थानीय सोमनाथ तिम्सिनालाई २०४७।९।४ गतेबाट स्वयंसेवकका रूपमा राख्ने।

२०४७।१०।१४ गतेःकक्षा १० सञ्चालनार्थ रु. पच्चीस हजार धरौटी कसै महानुभावहरूसँग सापटी लिई नेपाल बैंकमा राख्ने। श्रीविवेकाश्रम स्वामी विवेकानन्द स्वामीज्यूले २०२८ सालमा स्थापना गरिएको आश्रम दर्ता गराउन आवश्यकता देखिएको हुँदा दर्ता प्रक्रिया अघि बढाउने।

मिति २०४७।११।६ मा श्रीविवेकाश्रम दर्ता भइसकेपछि आश्रमतर्फ प्रबन्ध समिति र विद्यालयतर्फ उपकार्यसमिति गठन भई फरक फरक समितिले कार्य गरेको पाइन्छ।

आश्रमतर्फ

२०४७।११।२९ गतेः आश्रमको विधान मिति २०४७।११।६ मा दर्ता नं. ०५४ मा दर्ता भइसकेकाले आश्रमतर्फ प्रबन्ध समिति गठन। अध्यक्ष टेकनाथ गौतम, उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, सचिव आनन्दप्रसाद सिग्देल सहसचिव टीकाराम ढुङ्गेल, कोषाध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना र सदस्यहरूमा पं. नन्दिकेशर तिम्सिना, केदार खतिवडा, डिल्लीराम भण्डारी, पुष्पलाल भण्डारी, लोकनाथ खनाल, पुष्पलाल तिम्सिना।

विद्यालयतर्फ

२०४८।११।२९ गतेः उपकार्यसमितिः अध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना, उपाध्यक्ष लोकनाथ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खनाल, सचिव विष्णुभक्त भण्डारी, सहसचिव पूर्णानन्द तिम्सिना, सदस्यहरू लहेन्द्र भट्टराई, नरनाथ घिमिरे, डिल्लीराम भण्डारी, लीलाबहादुर कटुवाल र पुष्पलाल भण्डारी। संस्थाका संरक्षक सदस्यहरूः पदम गिरी, मोहनलाल अग्रवाल, विष्णुबहादुर श्रेष्ठ, तुङ्गबहादुर बस्नेत ,नगेन्द्र पाठक, चयवनलाल अग्रवाल, घनश्याम अग्रवाल चन्द्रप्रसाद वजगाई, कृष्णप्रसाद ओली, लीलाबहादुर कटुवाल, बानालाल राजवंशी। सल्लाहकार समितिः माधवप्रसाद प्याकुरेल काठमांडौ, कालिकाप्रसाद रिमाल काठमाडौं, पं. किशोर गौतम काठमाडौं, भवानीप्रसाद खतिवडा काठमाडौं, अम्बिकाप्रसाद रेग्मी खुदुनाबारी १, पं. विष्णुप्रसाद ज्ञवाली काठमाडौं, पं. कृष्णप्रसाद मिश्र घैलाडुब्बा, पं. दुर्गाप्रसाद दवाडी काठमाडौं, देवीप्रसाद पौडेल चारपाने ३। आश्रमको विधान २०४७ लाई दर्ता मितिदेखि नै लागू।

२०४७।१०।१९ गतेः विद्यालयमा पढाइ हुने पाठ्यपुस्तकहरू र वैदिक वाङ्मय र विभिन्न पूर्वीय धर्मदर्शन इतिहासका पुस्तकहरूसमेतको पुस्तकालय सञ्चालनार्थ उपसमिति गठन।

२०४८।८।२९ गतेः आर्थिक अभावले स्वयंसेवकके रूपमा मात्र न्यून सेवाशुल्क लिई सेवा गर्न असहजता देखिएको हुँदा मा.वि.मात्र सञ्चालन गर्ने र अन्य कक्षाहरू सञ्चालन गर्न नसकिएकाले प्र.अ.बाहेक अन्यलाई मार्ग मसान्तभित्र खाइपाइ आएको तलव प्रदान गरी बिदा दिने र आवश्यक परेको खण्डमा अर्थ व्यवस्था गरी शिक्षक नियुक्ति गर्ने।

२०४८।११।७ गतेः (आश्रम र विद्यालय सञ्चालक समितिको संयुक्त बैठक) कार्यरत शिक्षकहरूबाट मात्र कक्षा सञ्चालनमा नपुग देखिएकाले दामोदर न्यौपाने (आचार्य) र जगन्नाथ भण्डारी (शास्त्री) द्वयलाई ६ महिने स्वयंसेवकका रूपमा नियुक्ति।

२०४९।५।२९ गतेः सचिव आनन्दप्रसाद सिग्देलको राजीनामा स्वीकृत गरी टीकाराम ढुङ्गेललाई राख्ने र सहसचिवमा साधारण सदस्य लहेन्द्र भट्टराईलाई राख्ने।

२०४९।५।२९ गतेः माघ ११ देखि २० गतेसम्म कूर्म पुराण र लक्ष हवन गर्दै २२ औं वार्षिकोत्सव मनाउने।

२०४९।१०।२६ गतेः आश्रमपरिसरमा स्थापित मन्दिरहरूको पूजन, यज्ञानुष्ठान, नित्यहवन, सन्ध्यावन्धन आदि कार्य गर्न गराउन शिक्षक जगन्नाथ भण्डारीलाई आचार्य पदमा प्रतिमास रु. ६०० पारिश्रमिक दिने गरी नियुक्ति गर्ने।

२०५०।१०।१८ गतेः माघ २८ देखि फागुन ५ गतेसम्म २३ औं वार्षिकोत्सव विविध अनुष्ठानसहित यसै विद्यालयका पूर्वविद्यार्थी पं. भवानीशङ्कर निरौलाज्यूबाट श्रीमद्भागवत महापुराण प्रवचन गराउने र सत्सङ्ग भवन निर्माणमा विशेष योगदान पुर्याउने भद्रपुरनिवासी सत्यनारायण अग्रवालज्यूबाट माघ २८ गते सत्सङ्ग भवनको उद्घाटन गर्ने।

२०५१।३।२२ गतेः आश्रम परिसरभित्र यज्ञशाला निर्माण गर्ने।

२०५१।९।२८ गतेः २४ औं वार्षिकोत्सव २०५१।१०।२१ गते श्रीपञ्चमीदेखि २७ गतेसम्म मनाउने र यसै वर्षदेखि प्रतिवर्ष अठार महापुराणको क्रमले लगाउँदै जाने, जसमध्ये यस वर्ष ब्रह्म महापुराण लगाउने।

२०५२।३।१६ गतेः (आश्रम र विद्यालयको संयुक्त बैठक) श्रीमद्भागवत महापुराणको पाठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रवचन र यज्ञअनुष्ठानसमेत गर्ने निर्णय भएअनुसार पाठ प्रवचनका निम्ति अध्यक्ष 'पं. टेकनाथ गौतम, पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, पं. आनन्दप्रसाद सिग्देल र यज्ञअनुष्ठानमा उपाध्यक्ष पं. विष्णुभक्त भण्डारी, शिक्षक जगन्नाथ भण्डारीसहित ५ जना विद्यार्थी वटुकहरूलाई समेत वरण गर्ने।

२०५२।९।५ गतेः विवेक सन्देश नामक पत्रिका प्रकाशन गर्न दामोदर न्यौपाने, पूर्णानन्द तिम्सिना, पं. आनन्दप्रसाद सिग्देल, सोमनाथ तिम्सिना, जगन्नाथ भण्डारी, छविलाल खतिवडा र छन्दुराम भण्डारीसमेतको सम्पादक मण्डल गठन। आश्रम एवं विद्यालयको २५ औं वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती वर्ष भव्यताका साथ सम्पन्न गर्ने र पद्ममहापुराण कथावाचनसहित विभिन्न पाठात्मक, हवनात्मक, जपात्मक यज्ञानुष्ठान गरी २०५२।१०।११ देखि २१ सम्म मनाउने।

२०५२।१०।३ गतेः संस्थाका संथापक १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरी महाराजको प्रतिमा (मूर्ति) मोरङको लेटाङ शनिश्चरेमा रहेको मूर्तिकला केन्द्रमा गई मूर्ति निर्माण गराई यथाशीघ्र स्थापना गर्ने।

२०५२।१०।१७ गतेः श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द स्वामीज्यूको प्रतिमा आइसकेकोले भोलि १८ गते माघ शुक्ल द्वादशी आश्रम स्थापना दिवसकै तिथिमा श्रेत्रिय ब्रह्मनिष्ठ स्वामी रामानन्द गिरीजी महाराजका करकमलद्वारा मूर्ति (प्रतिमा) अनावरण गर्ने।

२०५२।११।२५ गतेः समिति पुनर्गठन। अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम, उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, सचिव नारायण स्वरूप ब्रह्मचारी, सहसचिव लहेन्द्र भट्टराई, कोषाध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना र सदस्यहरू केदारनाथ खतिवडा, पं. नन्दिकेशर तिम्सिना, डिल्लीराम भण्डारी, लोकनाथ खनाल, पुष्पलाल तिम्सिना, दामोदर न्यौपाने, लोकनाथ पौडेल, देवीप्रसाद पौडेल, जगन्नाथ भण्डारी, पर्शुराम ओझा। ७ सदस्यीय संरक्षण मण्डल र १४ सदस्यीय सल्लाहकार समितिसमेत गठन।

२०५३।२।२१ गतेः दमक न.पा. ६ निवासी रामप्रसाद ढकालज्युले आफ्नी ममतामयी आमा ब्रह्मलीन हिमा गिरीले तपस्या गरेको तपस्थली कनकाई कोटिहोम सुरुङ्गा दक्षिणपट्टि रहेको आश्रम २०३८ सालदेखि भोगचलन गरिएको र अब माताको अवसानपछि संरक्षक कोही नभएको हुँदा ऐलानीपर्ती अन्दाजी १५ धुर जग्गा र कुटीसमेत श्रीविवेकाश्रम चारपाने ३ लाई हस्तान्तरण गर्नुभएकाले श्री रामप्रसाद ढकालज्युलाई धन्यवाद ज्ञापन गर्दै सो आश्रम स्वीकार्ने र सोको संरक्षणका लागि काफ्ले स्वामीज्यूलाई जिम्मा दिने र सिमेन्टका खम्बा बनाई घेराबारा गरी आश्रमको नाममा विवेकाश्रम शाखा भनी राख्ने। वर्तमानमा गायत्री मन्दिर सन्न्यास आश्रमका नामबाट सञ्चालित।

२०५३।२।२३ गतेः गौशाला निर्माण र शनिश्चरे रोडबाट आश्रम, विद्यालयमा आउने बाटोको प्रथम भूमिदाता पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूले आफ्नो कित्ताबाट १२ फिटे बाटो निःशुल्क प्रदान गर्नुभएकामा उहाँलाई धन्यवाद ज्ञापन गर्दै मार्ग निर्माणमा लाग्ने व्ययभार आश्रमले बेहोर्ने।

२०५३।७।११ गतेः कक्षागत रूपमा मात्र पठनपाठन गराउँदा वेद, व्याकरणको क्रम भङ्ग र नित्यकर्ममा समेत केही ह्रास आउने हुँदा पूर्वप्रधानअध्यापक पं. विष्णुभक्त भण्डारीज्यूलाई अन्य शिक्षकसरह सुविधा दिने गरी नियुक्ति गर्ने। सहशिक्षक पं. आनन्दप्रसाद सिग्देलज्यूले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजीनामा दिई रिक्त भएको दरबन्दीमा जगन्नाथ भण्डारीलाई २०५३।६।१७ गतेदेखि नै नियुक्ति समर्थनका लागि जि.शि.का.मा सिफारिस गर्ने।

२०५३।९।२५ गतेः २६ औं वार्षिक अनुष्ठान भव्य रूपमा सम्पन्न गर्ने, सन्त समाजका महासचिव किशोरकुमार गौतमबाट विष्णुमहापुराण कथा प्रवचन गर्ने, श्री ५ महाराजाधिराजबाट यस आश्रमका अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम र सदस्य केदरनाथ खतिवडाज्यूलाई प्रबल गोर्खा दक्षिणबाहु (चतुर्थ) मानपदविद्वारा विभूषित गरिबक्सेकोमा आभार व्यक्त गर्ने, छात्रावास भवनको अभाव भएकाले जि.वि.स.सँग माग गर्ने।

२०५४।१।२ गतेः नववर्षारम्भको उपलक्ष्यमा आयोजित अखण्ड हरिनाम सङ्कीर्तनको समापनको अवसर पारी प्रबल गोरखा दक्षिणबाहु मानपदविबाट सम्मानित संस्थाका वरिष्ठ सदस्य केदारनाथ खतिवडासमेतलाई लिखित अभिनन्दन पत्रद्वारा अभिनन्दन।

२०५४।१।६ गतेः १४ गते आउनुहुने काञ्ची कामकोटी पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य जयेन्द्र सरस्वती तथा उत्तराधिकारी विजयेन्द्र सरस्वतीको टोलीको स्वागतार्थ अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम (गुरु) ज्यूको संयोजकत्वमा स्वागत समिति गठन।

२०५४।३।८ गतेःश्री ५ वीरेन्द्र वीरविक्रम शाहको गद्दी आरोहणको रजतवर्षको उपलक्ष्यमा वितरित पदकहरू तत्तत् व्यक्तिहरूलाई आश्रम अध्यक्ष टेकनाथ गौतमज्यूबाट वितरण। प्राप्त गर्नुहुने व्यक्तिहरू - पं. टेकनाथ गौतम (स्वयं), पं. विष्णुभक्त भण्डारी, नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी, नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी, केदारनाथ खतिवडा, घनश्याम तिम्सिना, लोकनाथ खनाल।

२०५४।५।२३ गतेः श्री १००८ स्वामी सत्य प्रकाशानन्द सरस्वतीजी महाराजबाट प्राप्त संगमरमरका विष्णुपाञ्चायन मूर्तिहरू श्रीकेदारनाथ खतिवडा (सदस्य) ज्यूद्वारा हरिद्वारबाट ल्याई प्रतिष्ठापन, स्वामीजीप्रति कृतज्ञता र केदारनाथ खतिवडालाई धन्यवाद ज्ञापन।

२०५४।७।२१ गतेः गुरुकुलतर्फ विष्णुभक्त भण्डारीलाई १ वर्ष सेवाबापत ४२ हजार आश्रम कोषबाट दिने र मागअनुसार अवकाशसमेत दिने।

२०५४।८।१७ गतेःउत्तराखण्ड भारतबाट पाल्नुभएका श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ जगद्गुरु शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर माधवाश्रमजी महाराजको भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन सुसम्पन्न।

२०५४।९।७ गतेः २७ औं वार्षिकोत्सव कूर्म महापुराण २०५४ माघ १८ देखि २४ सम्म आयोजना गर्ने, प्रमुख आचार्यमा पं. टेकनाथ गौतम र वाचकमा पं. भीमप्रसाद खनाल रहने।

२०५५।४।१२ गतेः श्रावण १३ गतेबाट २५ गतेसम्म महालघु रुद्राभिषेक गर्ने।

२०५५।६।१२ गतेःश्री विवेकेश्वर मन्दिर जीर्णोद्धार गर्न उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारीज्यूको संयोजकत्वमा सचिव सुरज भण्डारी, कोषाध्यक्ष डिल्लीराम भण्डारी, सदस्यहरू लहेन्द्र भण्डारी, जगन्नाथ भण्डारी रहेको समिति गठन र स्थानीय ठेकेदार कपिलेश्वर दास चारपाने—२ लाई जीर्णोद्धारको ठेक्का दिने।

२०५५।९।२६ गतेः २८ औं शुभवार्षिकोत्सव पूर्वछात्र पं. लक्ष्मीप्रसाद खतिवडाद्वारा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवमहापुराण वाचन गराउने र अन्य उपासनामूलक अनुष्ठान सम्पन्न गर्ने।

२०५६।८।११ गतेः २९ औं वार्षिकोत्सव माघ २८ देखि फागुन ५ सम्म लिङ्ग महापुराण वाचन गरी गर्ने, छात्रावासपूर्वको जग्गामा १२-४५ फिटको भान्साघर निर्माण गर्ने।

२०५६।१०।२० गतेः २९ औं वार्षिक अनुष्ठानसँगै बिर्तामोडनिवासी चिमनलाल अग्रवालका सुपुत्र हरिशङ्कर अग्रवाल परिवारले निजी लगानीमा निर्माण गरेको कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिरको शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर माधवाश्रमबाट प्राणप्रतिष्ठा, मूर्ति अनावरण र महायज्ञसहित मन्दिर पूजन समुद्घाटन। निर्माणाधीन गौशालालाई पूर्णता दिँदै विधिवत् गौशाला सञ्चालनार्थ जगदीश मिन्डाका संयोजकत्वमा उपसमिति गठन।

२०५६।१२।९ गतेः कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिरको अर्चकका रूपमा पं. छविलाल नेपाललाई नियुक्त गर्ने।

२०५७।६।११ गतेः बडादशैं नवरात्रमा सर्वजनहिताय शतचण्डी महायज्ञ दानदातव्यबाट सम्पन्न गर्ने।

२०५७।९।१४ गतेः पुरानो मन्दिर जीर्णोद्धार सम्पन्न भएपछि यसको प्रतिष्ठा ३० औं वार्षिकोत्सवमा श्रीराम, जानकी, लक्ष्मण, हनुमानसहित देवताहरूको प्रतिष्ठा, आनन्दरामायण पाठ प्रवचन, गरुड महापुराण, रुद्राभिषेकादि कार्यसहित सम्पन्न गर्ने।

२०५८।२।२६ गतेः राजदरवारमा राजपरिवारको दुःखद निधनप्रति शोकप्रस्ताव पारित गरी भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पण र १३ औं पुण्यतिथिमा एक आवृत्ति भागवत पाठ, रुद्राभिषेक, गीता रामायणादिको पाठसमेत गर्ने र हरिनाम सङ्कीर्तनसमेत गर्ने।

२०५८।८।३० गतेः ३१ औं वार्षिकोत्सवमा २०५८।११।४ देखि ६ सम्म तुलसीकृत रामायण पाठपारायण लघुरुद्राभिषेक कार्यक्रम लघु रूपमा गर्ने।

२०५९।९।५ गतेः माघ २२ गतेबाट फागुन ४ गतेसम्म हुने ३२ औं अनुष्ठानको नारदीय महापुराणमा व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम र पं. घनश्याम ढकालद्वयलाई वरण गर्ने र विभिन्न उपसमितिहरू गठन गरी कार्यक्रम सम्पन्न गर्ने। विवेकाश्रम गैरनाफामूलक संस्था भएको हुँदा कर छुटका लागि आन्तरिक राजस्वका कार्यालयमा निवेदन गर्ने।

२०५९।१२।१३ गतेः गौसेवकका रूपमा न्यूनतम ३००० पाउने गरी स्थानीय अग्निप्रसाद खतिवडा र खेमनाथ ओझालाई नियुक्त गर्ने।

२०६०।५।१८ गतेः श्रीविवेकाश्रमका संस्थापक स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजको ३१ औं पुण्य ब्रह्मलीन (स्मृति) दिवस भाद्र शुक्ल पूर्णिमा भाद्र २४ गते विभिन्न कार्यक्रम अनुष्ठानका साथ भण्डारा गरी मनाउने।

२०६०।५।२४ गतेः साधारण सभाबाट कार्यसमिति चयन। अध्यक्ष पं. टेकनाथ उ. गौतम, उपाध्यक्ष पं. विष्णुभक्त भण्डारी, महासचिव नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी, सचिव लहेन्द्र भट्टराई, सहसचिव सोमनाथ तिम्सिना, कोषाध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना, सदस्यहरू पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, केदारनाथ खतिवडा, सुरेशकुमार वंशल, लोकनाथ खनाल, गुणनाथ ओझा, दामोदर न्यौपाने, साम्ब भण्डारी, यशोदा खतिवडा, जगन्नाथ भण्डारी र ३४ सदस्यीय सल्लाहकार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समितिसमेत गठन।

२०६०।९।६ गतेः ३३ औं वार्षिक अनुष्ठान भव्यतम रूपमा सम्पन्न गर्न विभिन्न उपसमिति चयन। वाचक पं. घनश्याम ढकाल र उपवाचक पूर्णानन्द तिम्सिना रहने गरी अग्निमहापुराणका साथै विभिन्न अनुष्ठान गर्ने।

२०६०।९।१८ गतेः चारपाने-शनिश्चरे मार्गको चौबाटोबाट पूर्व आश्रम एवं विद्यालय आउने मार्ग (लम्बाइ ११६ फिट, चौडाइ १६ फिट बराबरको १० धुर बाटो स्व. पिता श्रीबानालाल राजवंशीको पुण्यस्मृतिमा उहाँका कान्छा सुपुत्र दानवीर दाता धैरजप्रसाद राजवंशीले आफ्ना पिताका वचन स्मरण गर्दै आश्रमलाई आजकै मितिमा प्रदान गर्नुभएकामा उहाँलाई धन्यवाद ज्ञापन गर्ने।

२०६०।१०।६ गतेः ३३ औं वार्षिकोत्सवमा अग्निमहापुराण र धनधान्याचल महायज्ञको समुद्घाटन झापाका प्र.जि.अ. टीकाराम अर्यालज्यूको प्रमुख आतिथ्यमा गर्ने।

२०६१।१।२० गतेः शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर माधवाश्रमबाट गौशाला समुद्घाटन।

२०६१।८।११ गतेः ३४ औं वार्षिक अनुष्ठान माघ २६ गतेदेखि फागुन १३ गते पूर्णिमाका दिन सम्पन्न हुने गरी वाचक पं. दुर्गाप्रसाद खतिवडा र उपवाचक पूर्णानन्द तिम्सिना रहने गरी श्रीमद्स्कन्दमहापुराण पाठ प्रवचन र अन्य अनुष्ठानका साथ सम्पन्न गर्ने।

२०६२।४।१० गतेः स्वामी विवेकानन्द गुरुको पुण्यस्मृति दिवसका अवसरमा आगामी २०६५ भाद्र शुक्ल पञ्चमीदेखि प्रारम्भ गरी पूर्णिमामा सम्पन्न गर्ने गरी अठार महापुराणको आयोजना गर्ने।

२०६२।८।६ गतेः (आश्रम एवं विद्यालयको संयुक्त बैठक) ३५ औं अनुष्ठान आसन्न एस.एल.सी. परीक्षालाई मध्यनजर गरी उचित समयमा गर्ने र छात्रावास निर्माणार्थ विद्यालयले तयार गरेको लागत इष्टमेटसहितको नक्साको प्रतिलिपि आवश्यक कागजातसमेत छात्रावास निर्माण सहयोगार्थ १ प्रति जि.प्र.का. र १ प्रति श्री नं. २१ बाहिनी अड्डा चारआली सैनिक क्याम्पमा पेस गर्ने। क्षेत्रफल न्यून भई विद्यालय सञ्चालनमा कठिनाइ आएको हुँदा ५ देखि ७ कठ्ठासम्म भूमि विस्तार गर्न विभिन्न क्षेत्रका दाता दानवीर महानुभावहरूको पहिचान गर्न सदस्य घनश्याम तिम्सिनाज्यूको संयोजकत्वमा पूर्णानन्द तिम्सिना, भानुभक्त अधिकारीसमेतको उपसमितिको गठन।

२०६२।१०।९ गतेः ३५ औं अनुष्ठान माघ १६ गतेबाट २३ गतेसम्म मत्स्यमहापुराणको आयोजना गरी विभिन्न उपसमितिहरूको गठनसहित आश्रम अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतमको प्रमुख आचार्यत्व र पं. छन्दुराम भण्डारीको कथा वाचकत्वमा सम्पन्न गर्ने।

२०६२।१०।२५ गतेः संस्थाको खाता सञ्चालन गर्न एक्सेल बैंक बिर्तामोडमा उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, कोषाध्यक्ष घनश्याम तिम्सिना, सचिव लहेन्द्र भट्टराई, सदस्य सुरेश वंशलको नाममा खाता खोल्ने।

२०६२।१२।८ गतेः भूमिदाता महानुभावहरू श्री नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी १ कठ्ठा, श्री पुष्पलाल भण्डारी १ कठ्ठा, श्रीमती भद्रशिला भण्डारी १ कठ्ठा, श्री नवीन अग्रवाल १ कठ्ठा, श्री घनश्याम तिम्सिना ज्यूबाट १ कट्ठा गरी जम्मा ५ कट्ठा जग्गा आश्रममा जोडिएको कि.नं.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

०४५ को पूर्व-दक्षिणतर्फबाट प्रथम भूमिदाता पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूबाट खरिद गरी प्रदान गरिएकाले सो जग्गा रजिष्ट्रेसन पास गरी ल्याउन उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, सचिव लहेन्द्र भट्टराई, सदस्य लोकनाथ खनाललाई अख्तियारी प्रदान गर्ने।

२०६३।२।६ गतेःविगत २ वर्षदेखि साङ्गवेद विद्यालयमा मा.वि. तहको सामाजिक विषयको अध्यापन स्वयंसेविकाका रूपमा रही गर्दै आउनुभएकी सुश्री मनमाया (मनु) तिम्सिनालाई जेठ २५ गते सेवाको कदर स्वरूप सम्मानपत्र र पारितोषिक रु. १०,०००-— आश्रम र विद्यालयले आधाआधा व्यहोर्ने गरी पुरस्कृत गर्ने। जेठ २० देखि २५ सम्म गीतायज्ञ बोधकुमार मैनालीको सक्रियतामा आश्रममा सम्पन्न गर्ने।

२०६३।३।३१ गतेःबिर्तामोड निवासी कैलाशपति शिवपाञ्चायन मन्दिर निर्माता श्री हरिशंकर र विमलादेवी अग्रवाललाई मन्दिरको उत्तरतर्फ पुजारी निवास निर्माण गर्न अनुमति प्रदान।

२०६३।३।३१ गतेः शिक्षा मन्त्रालयबाट आश्रमद्वारा सञ्चालित सं.मा.वि.लाई प्रदान गरिने भनिएको रु. ३,००,०००।- (तीन लाखमात्र) जि.शि.का भद्रपुरबाट निकासा गरी ल्याउन जगन्नाथ भण्डारी र प्र.अ. पूर्णानन्द तिम्सिनाज्यूलाई अख्तियारी दिने।

२०६३।९।२७ गतेः वार्षिकोत्सव अनुष्ठान नियमित रूपमा विभिन्न उपसमितिहरू गठन गरी श्रीभविष्य महापुराण, धनधान्याचल ज्ञानयज्ञ गरी सम्पन्न गर्ने।

२०६३।१०।१८ गतेः बिर्तामोड निवासी कैलाशपति शिवपाञ्चायन मन्दिर निर्माता स्व. चिमनलाल स्व. महादेईको पुण्यस्मृतिमा निर्माण गरिएको एकतले पक्की भवन आवश्यक सामग्रीसहित आश्रम समितिलाई हस्तान्तरण गर्नुभएकामा श्री हरिशंकर र विमलादेवी अग्रवाल परिवारलाई धन्यवादसहित आशीर्वाद प्रदान।

२०६४।१।६ गतेः गुरुकुलीय आचरण प्रारम्भिक शिक्षाको स्तरवृद्धिका निम्ति बद्रीनाथ खतिवडालाई निरन्तरता दिंदै थप २ जना षडानन्द तिम्सिना र छविलाल नेपाललाई आवासीय शिक्षकका रूपमा नियुक्ति गरियो।

२०६४।३।९ गतेः आश्रमको उत्तरपूर्वतर्फको पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूको नामको चारपाने ३ कि.नं. २४४५ को, १,६५,०००-— (एक लाख पैसठ्ठी हजार) प्रतिधुरका दरले खरिद गरिएको ०-१—११ (एक कठ्ठा एघार धुर) जग्गा पास गरी ल्याउन सञ्चालकद्वय लोकनाथ खनाल र लहेन्द्र भट्टराईलाई अख्तियारी दिने।

२०६४।३।२४ गतेः आश्रमका आजीवन सदस्य खगनाथ भण्डारी र यमुनादेवी भण्डारी दम्पतीद्वारा आश्रमपूर्व आफ्नो कित्ताको पश्चिमबाट कि.नं. २६५९ को र २६११ ०—१—० कठ्ठा जग्गा २०६४।३।१३ गते द्वादशी तिथिमा सङ्कल्पपूर्वक भव्य समारोहबीच समर्पण गरेको भूमि रजिस्ट्रेसन पास गरी ल्याउन सचिव लहेन्द्र भट्टराईलाई अख्तियारी प्रदान गर्ने र भूमिदाता परिवारलाई धन्यवाद ज्ञापन गरियो।

२०६४।९।२९ गतेः ३७ औं वार्षिक अनुष्ठान विगत वर्षहरूमा झैं भव्यरूपमा श्रीवामनपुराण व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम र उपव्यास पं. खिवराज न्यौपानेद्वारा पाठ कथाप्रवचन र धनधान्याचल समेतको आयोजना गर्ने। यजमान सपत्निक भूमिदाता खगनाथ र यमुनादेवी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भण्डारी र गणपतिका रूपमा शेखर रिमाल रहने।

२०६४।१०।७ गतेः साधारण सभा सम्पन्न। सभाबाट सचिवको प्रतिवेदन प्रगति विवरण र कोषाध्यक्ष घनश्याम तिम्सिनाज्यूको आर्थिक प्रतिवेदन अनुमोदन, दुवै संस्था समेटिने गरी पं. टेकनाथ उपाध्याय गौतमको अध्यक्षतामा कार्यवाहक अध्यक्षमा किशोरकुमार गौतम, वरिष्ठ उपाध्यक्षमा पं. विष्णुभक्त भण्डारी, उपाध्यक्षमा हरिप्रसाद भण्डारी, सचिवमा लहेन्द्र भट्टराई, सहसचिवमा पूर्णानन्द तिम्सिना, कोषाध्यक्षमा जगन्नाथ भण्डारी र सदस्यहरूमा पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, लोकनाथ खनाल, घनश्याम तिम्सिना, सुरेशकुमार वंशल, लीलाबहादुर कटुवाल, श्रीमती यशोदा खतिवडा, श्रीमती धनमाया थापा मगर, पदमप्रसाद जबेगु, देवीप्रसाद पौडेल, पर्शुराम ओझा, कर्णाखर खतिवडा, दिनेश मित्तल, सोमनाथ तिम्सिना र महासचिवमा नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी रहने गरी समिति चयन।

२०६५।१२।२८ गतेः जगन्नाथ भण्डारीको संयोजकत्वमा नववर्षारम्भमा अखण्ड हरिनाम चैत्र मसान्तमा प्रारम्भ गरी वैशाख १ गते प्रातः ८ बजे समाप्त गर्ने र सूचना प्रविधिमार्फत सबैलाई आमन्त्रणसमेत गर्ने।

२०६६।२।११ गतेः चारपाने-शनिश्चरे रोडबाट आश्रम-विद्यालयसम्म आउने १६ फिट चौडाइको साढे ३४ धुर जग्गा बाटो प्रयोजनका लागि निःशुल्क प्रदान गर्नुभएकामा जग्गादाता पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनालाई धन्यवाद ज्ञापन गर्ने।

२०६६।५।५ गतेः वेद र कर्मकाण्ड विषयका दुई दरबन्दीको माग गर्ने, विवेकाश्रमको यज्ञशालामा २०४९ सालदेखि आचार्य पदमा रही स्वयंसेवक रूपमा नित्य हवनादि कार्य गराउँदै आउनुभएका शिक्षक जगन्नाथ भण्डारीज्यूको मागबमोजिम निजलाई अवकाश दिई धन्यवाद ज्ञापन गर्ने र सो नित्यकार्यका लागि छविलाल नेपाललाई नियुक्ति गर्ने।

२०६६।८।५ गतेः आगामी वार्षिक अनुष्ठानमा आनन्द रामायणका साथै तुलसीकृत रामायण वाचन गर्ने र कथावाचनका लागि व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम र छन्दुराम भण्डारीलाई वरण गर्ने।

२०६६।९।१५ गतेः कक्षा ६ र ७ सञ्चालनार्थ अनुमतिका लागि जि.शि.का.मा माग गर्ने।

२०६६।९।२१ गतेः श्री राष्ट्रिय गुरुकुल शिक्षापरिषद्को गोष्ठीमा प्र.अ. दामोदर न्यौपानेलाई प्रतिनिधि पठाउने, अस्थायी शिक्षकद्वय जगन्नाथ भण्डारी र दिलकुमार सङ्ग्रौलालाई २०६६।१०।१ गतेबाट २०६७ आषाढ मसान्तसम्मका लागि म्याद थप गर्ने।

२०६६।१०।४ गतेः चारपाने गा.वि.स.बाट आ.व. २०६६-६७ का लागि शनिश्चरे चारपाने मार्गबाट विद्यालयमा आउने नयाँ मार्ग पुर्न छुट्याइएको अनुदान रकम चालीस हजारमात्र निकासा गरी ल्याउन प्र.अ. दामोदर न्यौपानेलाई पढाउने र सो मार्ग २०६६-१०-६ बाट प्रारम्भ हुने वार्षिकोत्सवपूर्व नै निर्माण गर्ने। अपुग रकम आश्रमले व्यहोर्ने निर्णयानुसार गा.वि.स.बाट निकासा रकम ४०,०००।- केदार गिरी चारपाने ५ बाट प्राप्त सहयोग ११,१११।- विवेकाश्रम कोषबाट ३२,४८९।- सङ्कलित रकमबाट कार्य सम्पन्न।

२०६७।२।१६ गतेः आश्रमपरिसरमा रहेका मन्दिर, विद्यालय, यज्ञशाला आदिको नित्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेवा, पूजा, आरती, नित्य हवन प्रातः विद्यार्थीहरू उठेर स्नानादि नित्य सन्ध्यावन्धन आदिका लागि आचार संहिता तयार उपसमितिले पेस गरेको आचारसंहिता आजकै मितिबाट लागु गर्ने, आवासीय शिक्षकको पद व्यवस्थापन गरी पूर्ति गर्न प्र.अ. दामोदर न्यौपाने संयोजक र सदस्यद्वय लीलाबहादुर कटुवाल, हरिप्रसाद भण्डारीसमेतको समिति गठन गर्ने।

२०६७।३।२८ गतेः विवेकाश्रम गैरनाफामूलक संस्था रहेको र मुष्टिदानद्वारा सञ्चालित रहेकाले आन्तरिक राजस्व कार्यालय, भद्रपुरमा करछुटका लागि निवेदन गर्ने।

२०६७।४।५ गतेः ज्योतिर्विद् बोधकुमार मैनालीद्वारा सिलिगुडीमा भक्तजनहरूबाट सङ्कलित आवश्यक त्रिपाल, लता-कपडा र बर्तत (भाँडाबटुका) आदि सिलिगुडीबाट ल्याउनुभएकोमा प्र.अ. दामोदर न्यौपाने, पं. लेखनाथ तिम्सिना, राम ओझालाई धन्यवाद र ज्योतिर्विद् बोधकुमार मैनालीज्यूलाई आभार व्यक्त गर्ने, प्राप्त सामग्रीलाई संस्थाको सम्पत्तिका रूपमा सदुपयोग गर्ने।

२०६७।५।५ गतेः आ.व. २०६६।६७ को आयव्यय अनुमोदन, भक्तजनहरूले चढाएका सुनचाँदीका गरगहनाको व्यवस्थापनार्थ अर्चक छविलाल नेपाललाई (सुरक्षार्थ) जिम्मा दिने, शिक्षक छनौट उपसमितिबाट आवासीय शिक्षकको रूपमा सिफारिस पथरियानिवासी चन्द्रप्रसाद सुवेदीलाई कम्तीमा ६ महिनाका लागि नियुक्त गर्ने।

२०६७।६।५ गतेः लामो समयदेखि गुरुकुलमा सेवा पुर्याउँदै आउनुभएका बद्रीनाथ खतिवडालाई अर्थभावका कारणले प्रतिमास १५००। रुपैयाँमात्र थप गर्ने। चतुर्मासा साधनामा बस्नुहुने स्वामी कृष्णानन्दलाई बिदाइ गर्ने।

२०६७।८।५ गतेः कक्षा ७ सञ्चालन गर्न अनुमति माग गर्ने।

२०६७।९।५ गतेः ४० औं वार्षिकोत्सवमा विविध अनुष्ठानसहित श्रीलिङ्गमहापुराण पाठप्रवचन गर्न व्यासद्वय पं. दुर्गाप्रसाद खतिवडा र पं. सोमनाथ गौतमलाई चयन गर्ने, वार्षिकोत्सवबाट अवशेष रकम र अन्य दातृ निकाय, शिक्षाप्रेमी दाताहरूको पहिचान गरी रकम सङ्कलन गर्न समिति गठन गर्ने।

२०६७।१२।९ गतेः संस्थाका संस्थापक स्वामी १०८ विवेकानन्द महाराजको सालिक (प्रतिमा) निर्माण गरी आश्रम परिसरभित्र उपयुक्त स्थानमा स्थापना गर्ने।

२०६७।१२।१६ गतेः विद्यालयमा दूरदराजबाट अध्ययन गर्न आएका आउने विद्यार्थी, साधुसन्त, अतिथि, आगन्तुक, महानुभावहरूको उपस्थिति आँकलन गर्दा दैनिक रूपमा ३३६५।- आर्थिक भार पर्न आउने देखिएको हुँदा वर्ष दिनका लागि ३६५ जना भक्तसज्जनहरूको अन्नक्षेत्र जुटाउन प्र.अ. दामोदर न्यौपानेज्यूको संयोजकत्वमा अन्नक्षेत्र सञ्चालन व्यवस्थापन उपसमिति गठन गर्ने।

२०६८।२।५ गतेः गा.वि.स.ले छुट्याएको ३०,०००।- रकमले घेराबार (कम्पाउन्ड) गर्ने, नपुग रकम केही आश्रमबाट र केही पुनः गा.वि.स.लाई अनुरोध गर्ने।

२०६८।३।२१ गतेः सचिव लहेन्द्र भट्टराईको निवेदन स्वीकृत गरी आश्रम सदस्य सोमनाथ तिम्सिनाज्यूलाई सो सचिवको पदभार दिने।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०६८।५।१५ गतेः श्री विवेकाश्रम साङ्गवेद विद्यालयका आजीवन अध्यक्ष पं. टेकनाथ गौतम गुरुज्यू यही मिति २०६८ भाद्र १४ गते बुधवारका दिन प्रातः ३।४५ बजे आश्रम एवं विद्यालय परिसरभित्र श्रीराम मन्दिर प्राङ्गणमा स्वर्गारोहण हुनुभएको हुँदा आश्रम एवं विद्यालय परिवार स्वयं उहाँका शिष्य, प्रशिष्य, भक्तजन एवं शुभचिन्तकहरू अत्यन्त मर्माहत एवं स्तब्ध भएका छौं भन्ने भावका साथ आश्रम एवं विद्यालयले दश दिनसम्म शोक मनाउने र दैनिक पूजनबाहेकका अन्य गतिविधि बन्द गर्ने।

२०६८।५।३० गतेः विद्यालयका गणित शिक्षक दिलकुमार सङ्ग्रौलाको काठमाडौं जाने क्रममा गाडी दुर्घटना भई २०६८।५।२१ गते उपचारका क्रममा दुःखद निधन भएकामा शोकप्रस्ताव पारित गर्ने।

२०६८।७।२२ गतेःजि.शि.का.को पत्रअनुसार मा. तृतीय श्रेणीको गणित शिक्षक छनौटका लागि शिक्षक छनौट उपसमिति गठन गर्ने, जि.वि.स.लाई दिएको सहयोगको निवेदनअनुसार विनियोजित रकम रु. १,०३,८००।- निकासा गरी ल्याउन प्र.अ.लाई पठाउने र सो रकम आश्रम विद्यालय दुवैतर्फ आवश्यकतानुसार खर्च गर्ने।

२०६८।८।१० गतेः शिक्षक छनौट उपसमितिबाट गणित शिक्षकमा सिफारिस चूडामणि पौडेल, चारपाने ३ लाई २०६८ चैत्र मसान्तसम्मका लागि करारमा नियुक्ति गर्ने।

२०६८।९।२६ गतेः ४१ औं वार्षिकोत्सव माघ १४ बाट १९ सम्म श्रीमद्विष्णुमहापुराण पाठ कथाप्रवचनका लागि पं. टीकाराम खनाल (काठमाडौं) लाई वरण गर्ने र आश्रमपरिसरमा व्यवस्थित पुष्पवाटिका निर्माण गरी परिसरलाई दिव्यता दिन उपाध्यक्ष हरिप्रसाद भण्डारीलाई जिम्मा दिने।

२०६८।११।४ गतेःआवासीय शिक्षक चन्द्रलाल नेपालले अध्ययन बिदा २०६८।१०।२० गते पेस गरेको पत्र अनुमोदन गरी चैत्र १ गतेबाट लागु हुने गरी स्वीकृतसमेत गरिएको।

२०६९।२।८ गतेः गुरुकुल शिक्षक छनौट उपसमितिबाट छनौट भएका बाहदशी झापानिवासी भीमप्रसाद पौडेललाई ३ महिना परीक्षण कालमा रहने गरी नियुक्ति गर्ने, शौचालय निर्माणार्थ जि.शि.का. भद्रपुरबाट प्राप्त रु. दुई लाख र गा.वि.स चारपानेबाट प्राप्त तीस हजारबाट स्थान चयन गरी निर्माण गर्ने। संस्थाको पहिचान सहितको भित्तेपात्रो छपाइ भएर आएकोले निःशुल्क वितरण गर्ने र सोका लागि भएको खर्च २५,०००।- अनुमोदन गर्ने।

२०६९।२।२५ गतेः माननीय सभासद श्री अमृतलाल राजवंशीबाट विद्यालय भवन निर्माणका निमित्त विनियोजित रु. ५०,०००।- (पचास हजार) जि.वि.स.सँग र पुष्पवाटिका निर्माणार्थ प्राप्त ३०,०००।- गा.वि.स.बाट निकासा गरी ल्याउन प्र.अ.समेतलाई जिम्मा दिने, आश्रमद्वारा सञ्चालित गुरुकुलको प्र.अ.मा बद्रीनाथ खतिवडालाई नियुक्ति गर्ने।

२०६९।३।१८ गतेः विद्यालय भवन निर्माणार्थ गठित उपसमितिले निर्माण कार्य सम्पन्न गरेकामा धन्यवाद दिने। २०४७ सालदेखि श्रीविवेकाश्रमको महासचिवको पदमा रही संस्थाको चौतर्फी विकासमा विशिष्ट योगदान पुर्‍याउने दुहवीनिवासी ब्रह्मचारी नारायणस्वरूपज्यू

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०६९।३।१२ मा ७१ वर्षको उमेरमा परमधाम हुनुभएकोले उहाँप्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जल अर्पण गर्दै शोकसन्तप्त परिवार जनमा समवेदना व्यक्त गर्ने।

२०६९।४।५ गतेः आ.व. २०६८-६९ मा श्रीसाङ्गवेद सं.मा.वि.को माथिल्लो ५ कोठा निर्माण उपसमिति संयोजक दामोदर न्यौपानेले आश्रम समितिसँग पटक-पटक विभिन्न मितिमा सापटी तथा अनुदान स्वरूप रकम माग गर्नुभएको र आवश्यकतानुसार अनुदान दिंदै आएकोमा वर्तमानमा विद्यालयको आयस्रोत नभएको ठानी तपसिलबमोजिमको सापटी रकम अनुमोदन गर्ने २०६८।३।२१ मा १५,०००।, २०६८।४।२९ मा १,२१,०६४। २०६८।८।१० मा १,५०,०००। २०६९।२।१८ मा ३४,०००। गरी जम्मा ३,२०,०६४। पुष्पवाटिका तथा केही भाग बाटोसमेत निर्माण सम्पन्न गरी संयोजक हरिप्रसाद भण्डारीज्यूले पेस गरेको खर्च प्रतिवेदन रु. १,११,६७०।- अनुमोदन गर्दै उहाँलाई धन्यवाद ज्ञापनसमेत गर्ने।

२०६९।५।३० गतेः गुरुकुलका शिक्षक भीमप्रसाद पौडेलले अवकाश लिएपछि रिक्त रहेको शिक्षक पदमा साधुटार निवासी डिल्लीराम खतिवडालाई २०६९।५।१ गतेबाट लागु हुने गरी प्रतिमास रु. ८,०००।- पारिश्रमिक दिने गरी ६ महिनाका लागि नियुक्ति गर्ने। संस्थाका आजीवन अध्यक्ष गुरु पं. टेकनाथ गौतमज्यूको प्रथम वार्षिक पुण्यतिथिमा गुरुप्रति श्रद्धार्पण गर्ने र गुरु परिवारद्वारा भागवत अनुष्ठानका लागि मागअनुसार भवनादिको आवश्यक सहयोगसमेत गर्ने।

२०६९।९।४ गतेः ४२ औं वार्षिकोत्सव ब्रह्मलीन गुरु पं. टेकनाथ गौतम गुरुज्यूको प्रथम पुण्य वार्षिक कार्यसँगै श्रीमद्भागवत महापुराणको मूलपाठ एवं प्रवचन महेश संस्कृत गुरुकुलका प्रधानाध्यापक आचार्य गुरुप्रसाद सुवेदीज्यूबाट श्रवण गर्ने र पं. लेखनाथ दाहालज्यूबाट पाठपारायण गर्ने।

२०७०।६।१४ गतेः साधारण सभाद्वारा कार्यसमिति गठन। अध्यक्ष— किशोरकुमार गौतम, उपाध्यक्ष पं. विष्णुभक्त भण्डारी, महासचिव लहेन्द्र भट्टराई, सचिव छविलाल खतिवडा, कोषाध्यक्ष सोमनाथ तिम्सिना, सदस्यवर्ग— उर्मिला ढकाल, रमा घिमिरे, रुक्सुम अधिकारी, पदमप्रसाद जवेगु, लीलाबहादुर कटुवाल, डिल्लीराम सिटौला, तोयानाथ भण्डारी, दामोदर न्यौपाने, लोकनाथ खनाल, घनश्याम तिम्सिना।

२०७०।६।१५ गतेः संस्थाका सम्पूर्ण बैंकिङ कारोबार उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, महासचिव लहेन्द्र भट्टराई र सोमनाथ तिम्सिनाको नाम दस्तखतबाट सञ्चालन गर्ने, ४३ औं वार्षिकोत्सव माघ १९ गतेबाट श्री गणेशपुराणसहित विविध अनुष्ठान गरी कथावाचनमा पं. सोमनाथ गौतम पाठमा पं. लेखनाथ दहाललाई वरण गरी सम्पन्न गर्ने।

२०७१।५।२७ गतेः श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालयका कार्यालय सचिव डिल्लीराम नेपाललाई श्रीविवेकाश्रमको समेत हिसाव राख्न जिम्मेवारी दिने।

२०७१।९।५ गतेः आगामी ४५ औं वार्षिक अनुष्ठान सम्पन्न गर्न विभिन्न २३ वटा उपसमिति गठन गर्ने र २०७१ माघ ७ देखि १५ गतेसम्म वाल्मिकी रामायण एवं तुलसीकृत रामायण मिश्रित कथावाचनका लागि दार्जिलिङ भारतका बालव्यास श्री शिवभाइ वशिष्ठलाई

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमन्त्रण गरी अनुष्ठान सुसम्पन्न गर्ने।

२०७२।२।१५ गतेः नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको नाममा रहेको कित्ता नं. २९१८ को १ कट्ठा १० धुर र कित्ता नं. ३११० को १ कट्ठा साढे ८ धुर गरी जम्मा २ कट्ठा साढे १८ धुर जग्गा रु. २५ लाख २० हजारमा र नर्मदा खतिवडाको कित्ता नं. ३१०९ को साढे ११ धुरको रु. ५ लाख ५५ हजारमा खरिद गरी रजिस्ट्रेसन पास गर्ने।

२०७२।५।३१ गतेः श्री राममन्दिर, यज्ञशाला पाञ्चायन मन्दिरहरूमा रहेका मूर्तिहरूमा रङ्गरोगन गरी सुरक्षार्थ आल्मोनियमका फ्रेम बनाई लगाउने, सत्सङ्ग भवन र विद्यालय भवनका पाँच कोठासमेतका निर्माता मोहनलाल अग्रवालको २०७२ भाद्र १३ गते भएको निधनमा श्रद्धाञ्जलि अर्पण गर्ने।

२०७२।७।११ गतेः भव्य सत्सङ्ग भवन निर्माणार्थ दातृ-निकायसँग सम्पर्क गरी सहयोग जुटाउन संस्थाका अध्यक्षको संयोजकत्वमा सदस्यद्वय डिल्ली सिटौला र दामोदर न्यौपानेसमेत रहने गरी उपसमिति गठन, संस्थाको कार्यालय सचिवको रूपमा स्वयंसेवक रूपमा कार्य गर्दै आएका डिल्लीराम नेपाललाई प्रतिमास ३,०००। र आवासीय सुविधासमेत दिने।

२०७३।२।१२ गतेः आश्रम दक्षिणका छिमेकी पुष्पलाल भण्डारीको नाममा दर्ता भएको कित्ता नं. ४८०८ को क्षेत्रफल १६.७५ (पौने १७) धुरको एकमुष्ठ मूल्य ५,४०,०००-– (पाँच लाख चालिस हजार) र सेमन्तमणि भण्डारीका नाममा रहेको को कित्ता नं. ४९५३ को २ धुरको एकमुष्ठ रकम १,२०,०००-— (एक लाख बीस हजार) मा खरिद गरिएको उक्त जग्गा रजिष्ट्रेसन पासका लागि संस्थाका उपाध्यक्ष विष्णुभक्त भण्डारी, डिल्लीराम सिटौला, तोयानाथ भण्डारीलाई अख्तियारी दिने। समितिका विभिन्न पदमा रही सेवा पुर्याउने आश्रमका एक कठ्ठा भूमिदातासमेत रहनुभएका डिल्लीराम भण्डारी दिवङ्गत हुनुभएकामा श्रद्धाञ्जलि अर्पण गर्ने।

२०७३।८।२९ गतेः काठमाडौं १४ कलङ्कीनिवासी श्रीवासुदेव के.सी. परिवारले विवेकाश्रम परिसरमा ११० लम्बाइ र ५५ फिट चौडाइको रुद्र सत्सङ्ग भवन आफ्नै निजी खर्चमा निर्माण गर्ने इच्छा राखुभएकाले लोकनाथ खनालको संयोजकत्वमा सातसदस्यीय निर्माण समिति गठन गरी लोकनाथ खनाल, दुर्गा भण्डारी र दाताराम भण्डारीको नाममा बैंक खाता सञ्चालन गर्ने।

२०७३।१०।१० गतेः ४६ औं वार्षिकोत्सव माघ १९ देखि २४ गतेसम्म सञ्चालन गर्ने र प्रमुख अतिथिमा निर्मलस्वरूपजी महाराजलाई आमन्त्रण गर्ने।

२०७४।५।१५ गतेः महेश सन्न्यास आश्रम, देवघाटका संस्थापक स्वामी डा. रामानन्द गिरिजी ब्रह्मलीन हुनुभएकामा गहिरो दुःख व्यक्त।

२०७४।५।१५ गतेः विवेकाश्रमद्वारा सञ्चालित साङ्गवेद सं.मा.वि.को मिति २०७४।५।५ को च.नं. २९९ को पत्रानुसार आश्रमीय मर्यादामा रही कक्षा ११,१२ सञ्चालन गर्न अनुमोदन गर्ने, साथै संस्थाका संस्थापक स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजको पुण्यतिथि (५।२१) मा भण्डारा गर्ने।

२०७४।७।२९ गतेः वरिष्ठ समाजसेवी एवं रुद्र सत्सङ्ग भवन तथा विष्णुपाञ्चायन मन्दिरका निर्माता वासु के.सी.लाई संस्थाको संरक्षक पदमा मनोनयन गर्ने।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०७४।९।५ गतेः २०७४ माघ ७ देखि १३ गतेसम्म ४७ औं वार्षिकोत्सवको मूलकर्तामा वासु के.सी. र उहाँकी धर्मपत्नी निलु के.सी.लाई राख्ने।

२०७४।१०।५ गतेः वासुदेव के.सी., निलु के.सी.द्वारा निर्मित रुद्र सत्सङ्ग भवन र दक्षिणात्य शैलीमा निर्मित विष्णुपाञ्चायन मन्दिरको पूजन नित्य हुनुपर्ने र पूजा खर्च, चतुर्मासा खर्च प्रतिवर्ष १,३२,०००।- (एक लाख बत्तीस हजार) के.सी. परिवारले पठाउने समेत वचन दाता-परिवारबाट प्राप्त भएको कुराको निर्णय। साथै कक्षा ७ मा अध्ययनरत विद्यार्थी पीताम्बर पौडेललाई उक्त मन्दिरमा स्थापित देवपूजनार्थ नियुक्ति गर्ने।

२०७४।१२।३ गतेः चैत्र ११ गते श्रीरामनवमी पर्वकै अवसरमा बिर्तामोडनिवासी श्री गङ्गाप्रसाद ओलीज्यूद्वारा आश्रमलाई समर्पित ५ फिट उचाइको ढलौटको चतुर्भुज नारायणको मूर्ति यज्ञशालाभित्र स्थापना गर्ने। चारपाने-शनिश्चरे रोडबाट विद्यालयमा आउने मार्गलाई वैदिक सनातन मार्ग र दोस्रो पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाज्यूबाट प्राप्त मार्ग जुन आश्रम र विद्यालयमा जान अतिसहज छ, त्यसलाई नन्दिकेश्वर मार्ग नामकरण गर्ने।

२०७५।३।९ गतेः आवासीय शिक्षक छनौट उपसमितिले छनौट गरेका यसै विद्यालयका पूर्वविद्यार्थी एकराज भट्टराईलाई प्रतिमास १५,०००-— पारिश्रमिक र आवास, भोजनको समेत व्यवस्था गरी शिक्षकमा नियुक्ति गर्ने निर्णय।

२०७५।९।२८ गतेः विवेकाश्रम कार्यसमितिका अध्यक्ष व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतमकी ममतामयी माता भीमादेवी गौतमको पौष २३ गते निधन भएकामा भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पणका साथै पौष २९ गते आइतबारका दिन आश्रम तथा विद्यालय परिवारबाट सामूहिक रूपमा परिवारजनमा समवेदना व्यक्त गर्ने।

२०७५।१२।२० गतेः आश्रमको गौशालाको स्थान परिवर्तन गरी आश्रमको आग्नेय कोणमा निर्माण गर्ने। श्री रामनवमी पर्व (३० गते) मा अखण्ड हरिनाम सङ्कीर्तन गर्ने।

२०७६।३।२१ गतेः (आश्रम र विद्यालयको संयुक्त बैठक) २०७६ को चातुर्मास अनुष्ठान आषाढ शुक्ल हरिशयनी एकादशी २७ असारबाट श्रीआनन्दरामायणको पाठ पारायण पं. पीताम्बर पौडेलबाट गराउने। यज्ञशाला पुनर्निर्माण गर्न उपाध्यक्ष श्रीविष्णुभक्त भण्डारीज्यूको संयोजकत्वमा सम्पूर्ण कार्यसमितिका पदाधिकारी सदस्य रहने समिति गठन गर्ने।

२०७६।४।३२ गतेः लागत इष्टमेटसहितको यज्ञशालाको नक्सा इ. काठमाडौं निवासी विनोदकुमार खड्काबाट प्राप्त भएकाले बिर्तामोड नगरपालिकासँग निःशुल्क नक्सापासका लागि सदस्य हरिप्रसाद भण्डारी र जगन्नाथ भण्डारीलाई जिम्मो दिने, चतुर्मासा आनन्दरामायण पाठ भइरहेको र कथावाचनका निम्ति आ. छन्दुराम भण्डारीलाई भाद्र १ गतेबाट वरण गर्ने।

२०७६।६।१२ गतेः जम्मुकश्मीरनिवासी स्वामी हृदयानन्दज्यूबाट प्राप्त भव्य सरस्वती माताको मूर्ति मन्दिर निर्माण गरी स्थापना गर्ने। श्रद्धेय स्वामीज्यूप्रति आभार व्यक्त गर्ने र जम्मुकश्मीरबाट जलपाईगुडीसम्म ल्याउने कार्यमा खटिने सदस्य राम ओझा, भीम पौडेल, यामनाथ गुरागाईंसमेतको टिमलाई धन्यवाद दिने।

२०७६।६।२८ गतेः आश्रमका संरक्षक दानवीर वासुदेव केसीको यही असोज २७ गते

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भएको निधनमा श्रद्धाञ्जलि अर्पण गर्दै धर्मपत्नी निलु केसीलगायत परिवारमा समवेदना र सदस्यद्वय छविलाल खतिवडा र चेतन खतिवडाकी ममतामयी माता भागीरथा खतिवडाको सोही दिन भएको निधनमा श्रद्धाञ्जलि अर्पण र परिवारमा गहिरो समवेदना व्यक्त गर्ने।

२०७६।८।१ गतेः यज्ञशाला निर्माणमा ठेकेदार नसिब राजवंशीलाई ठेका दिने।

२०७६।९।१४ गतेः विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.को ४९ औं वार्षिकोत्सव अनुष्ठान भव्य रूपमा सम्पन्न गर्न सबै कटिबद्ध भई लाग्ने र कर्ताका रूपमा बुद्धिराज गौतम र धनमाया गौतमलाई वरण गर्ने।

२०७७।१।२८ गतेः सहारा नेपाल (साकोस) ले एकका लागि एक अभियानमा सरिक भई मानवीय हितका लागि दिएको रु. ११,०००।- (एघार हजार) कार्यक्रमको राहत कोषमा जम्मा गर्ने।

२०७७।८।३ गतेः वि.न.पा. वडा नं. २ बाट श्रीविवेकाश्रमको विकासका लागि आवश्यक कम्प्युटर खरिदका लागि छुट्याइएको रकम रु १,००,०००।- (एक लाख) ल्याउन कार्यसमितिका सचिव भरत भट्टराई र कोषाध्यक्ष जगन्नाथ भण्डारीलाई जिम्मेवारी दिने।

२०७७।९।१५ गतेः श्रीविवेकाश्रमको नाममा विभिन्न बैंकहरूमा रहेको अक्षयकोषको रकमलाई कुनै पनि शीर्षकमा खर्च गर्न नपाइने र कतै सापटीसमेत दिन नपाइने, केवल ब्याजबाट मात्र कार्य सञ्चालन गर्नुपर्ने। अक्षयकोष भन्नाले आश्रम एवं अन्नक्षेत्र दुवैतर्फको बुझ्नुपर्नेछ।

२०७७।९।१६ गतेः साधारण सभाबाट अध्यक्षमा किशोरकुमार गौतम, उपाध्यक्षमा विष्णुभक्त भण्डारी, महासचिवमा छन्दुराम भण्डारी, सचिवमा दामोदर न्यौपाने, कोषाध्यक्षमा जगन्नाथ भण्डारी र सदस्यहरूमा जगन्नाथ खनाल, पूर्णानन्द तिम्सिना, भानुभक्त अधिकारी, डिल्लीराम सिटौला, रमा घिमिरे, नारद पौडेल, रामप्रसाद ओझा, ज्यो. गङ्गाप्रसाद खरेल, दिननाथ सिग्देल निर्वाचित।

निर्णयः खाता सञ्चालन अध्यक्ष, महासचिव र कोषाध्यक्षको सहीबाट गर्ने र आन्तरिक लेखा परीक्षणका लागि संयोजक रघुनाथ (राजु) अधिकारी सदस्यद्वय टेकनाथ खनाल, भूमिप्रसाद खतिवडालाई नियुक्ति गर्ने, संस्था नवीकरण पौष मसान्तभित्र सम्पन्न गर्न महासचिव र कोषाध्यक्षलाई अख्तियारी दिने र आगामी वार्षिकोत्सव संस्था स्थापनाको ५० औं वर्ष भएकाले स्वर्णजयन्ती महोत्सव वर्षका रूपमा २०७७ माघ ३० गतेबाट फागुन ८ गतेसम्म श्रीगणेशपुराण धनधान्याचल महायज्ञ र अन्य विभिन्न कार्यक्रमका बीच सम्पन्न गर्न कथावाचन अध्यक्ष किशोरकुमार गौतम र महासचिव छन्दुराम भण्डारीज्यूहरूबाट स्वयंसेवक रूपमा गर्ने र कर्ताका रूपमा पं. भानुभक्त अधिकारी र कमला अधिकारीलाई नियुक्त गर्ने।

२०७७।९।२३ गतेः आश्रमपरिसरको पूर्व भागको आश्रमको कार्यालय भएको भवनको माथिल्लो तल्लामा ट्रष्ट गरी छानो लगाउने र अन्य मर्मतका कार्य गर्न समेत पूर्णानन्द तिम्सिनाज्यूको संयोजकत्वमा नारद पौडेल, छविलाल नेपाल, दुर्गा भण्डारीको निर्माण मर्मत उपसमिति गठन गर्ने। श्रीविवेकाश्रम स्मृति ग्रन्थ 'स्मारिका÷ सम्पादन एवं प्रकाशनका लागि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रा.आ. भवानीप्रसाद खतिवडा, आ. अम्बिकाप्रसाद रेग्मी, प्रा.डा. काशीनाथ न्यौपाने, आ. डिल्लीराम गौतम, आ. छन्दुराम भण्डारी, आ. दामोदर न्यौपाने, डा. कर्णाखर खतिवडासमेत रहेको सम्पादन मण्डल गठन गर्ने र सल्लाहकारमा व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम, पं. विष्णुभक्त भण्डारी, पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, केदारनाथ खतिवडा, पुष्पलाल तिम्सिना, परामर्शदातामा पं. भानुभक्त अधिकारी, पूर्णानन्द तिम्सिना, जगन्नाथ भण्डारीसमेतलाई चयन गर्ने।

२०७७ माघ ५ गतेः (आश्रम कार्यसमिति र अन्नक्षेत्र आजीवन सदस्यज्यूहरूसमेतको बैठक) अन्नक्षेत्रलाई प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न आश्रम अध्यक्षज्यूको संयोजकत्वमा सहसंयोजक पं. भानुभक्त अधिकारी, सचिवमा दुर्गाप्रसाद भण्डारी, कोषाध्यक्षमा छविलाल भण्डारी र सदस्यहरूमा नारदमणि अधिकारी, ज्यो. गङ्गाप्रसाद खरेल, लक्ष्मीदेवी भट्टराई, पं. लेखमाथ दाहाल, सृजना गौतम रहेको ९ सदस्यीय अन्नक्षेत्र व्यवस्थापन उपसमिति गठन।

२०७७।१०।९ गतेः रुद्र सत्सङ्ग भवनभित्र काठ प्रयोग गरी पश्चिमबाट पूर्व फर्किएको सुन्दर ’व्यासमण्डप÷ बनाउने र विद्यालय एवं रुद्राभिषेकलाई अझ व्यवस्थित गर्न नेपाल महर्षि वैदिक फाउन्डेसनसँग सहकार्य गरी सम्झौताका लागि महासचिव छन्दुराम भण्डारी र प्र.अ. दामोदर न्यौपानेलाई सर्वाधिकार प्रदान गर्ने।

२०७७।१०।२८ गतेः ५० औं वार्षिकोत्सव स्वर्णजयन्ती समारोहको समुद्घाटन कार्यको प्रमुख अतिथिमा महेश सन्न्यास आश्रम देवघाटका ईश्वरानन्दज्यूलाई आमन्त्रण गर्ने र ५१ भन्दा अधिक अतिथि भक्तजनका करकमलद्वारा दीप प्रज्वलन गरी समुद्घाटन गर्दै पं. लेखनाथ दहालज्यूबाट पाठ पारायण र गणपतिमा नन्दिकेश्वर ढकाललाई र यज्ञ सम्पादनमा पशुपति खतिवडाज्यूलाई वरण गर्ने।

२०७७।११।७ गतेः ५० औं स्वर्णजयन्ती समारोहलाई ऐतिहासिक बनाउन विमानद्वारा पुष्पवृष्टि गराई समुद्घाटन गर्ने र आश्रमको पहिचानसँगै स्वर्णजयन्ती वर्षसमेत हुने गरी दोपट्टासमेत छपाउने।

२०७७।१२।२० गतेः वार्षिकोत्सवको आयतर्फ ४१४७०६१।०० (एकचालीस लाख सड्चालीस हजार एकसठ्ठी रुपैयाँ) र व्ययतर्फ ८,२५,१४८-— (आठ लाख पच्चीस हजार एक सय अड्चालीस) मात्र र धान्य सङ्कलन उपसमिति रामप्रसाद ओझा लगायतको टिमबाट सङ्कलित धान ६५५ मन सङ्कलन भएको र आयव्यय अनुमोदन।

२०७८।२।१५ गतेः प्रतिदिन बटुकहरूद्वारा गरिने रुद्राभिषेक कार्य वर्तमानमा कैलाशपति पाञ्चायन मन्दिरको वरन्डामा बसी गर्ने गरिएकोमा बिर्तामोड भगवान्चौक निवासी तिलरूपा खड्काज्यूले छुट्टै भवन निर्माणका लागि इच्छा गर्नुभएकाले सो कार्यका लागि अनुमति दिने।

२०७८ भाद्र २४ गतेः आश्रम अक्षयकोषको ८६,००,०००-— (छयासी लाख) र अन्नक्षेत्र अक्षयकोषको ६४,००,०००-— (चौसठ्ठी लाख) गरी जम्मा १,५०,००,०००-— (एक करोड पचास लाख) स्थानीय सहारा ऋण तथा बचत सहकारी संस्था, चारपानेमा २०७८।५।२२ देखि २०८०-५-२० गतेसम्म आवधिक (मुद्दती) खातामा राखिएको

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुँदा अनुमोदन गर्ने। श्रीविवेकाश्रमसँग सिमाना जोडिएको श्रीराम मन्दिरका पश्चिम भागमा रहेको कि.नं. २९२३ को क्षेत्रफल ०–०–११.२५ (सवा एघार धुर) वर्तमान अध्यक्ष किशोरकुमार गौतमको नाममा दर्ता रहेको भूमिको प्रतिधुर २,००,०००-– (दुई लाख) का दरले हुन आउने रु. २२,५०,०००-– (बाइस लाख पचास हजार) मा खरिद गरिएको जग्गा सम्बन्धित अड्डामा गई रजिष्ट्रेसन पास गरी ल्याउनका लागि समिति सदस्यद्वय डिल्लीराम सिटौला र जगन्नाथ खनालज्यूलाई प्रतिनिधि पठाउने र भूमि खरिदका लागि आवश्यक रकम विवेकाश्रमलवे साङ्गवेद सं.मा.वि.को भवन निर्माणार्थ पटकपटक गरी दिएको सापटी रकम रु. १५,६०,०००-– (पन्ध्र लाख साठी हजार) र अपुग रकम साङ्गवेद सं.मा.वि.सँग ६,९०,०००-– (छ लाख नब्बे हजार) अनुदान माग गरी जग्गाधनीलाई बुझाई पास गर्ने।

२०७८।६।७ गतेः श्रीसाङ्गवेद सं.मा.वि.लाई दिएको सापटी रकम १५,६०,०००-– (पन्ध्र लाख साठी हजार) प्राप्त भएकाले जग्गाधनी किशोरकुमार गौतमज्यूलाई चेकमार्फत बुझाउने र बाँकी रकम कार्तिक मसान्तभित्र पूरा गर्ने। साथै वार्षिक रूपमा धान वा धानबापतको रकम प्रदान गर्ने महानुभावहरूलाई अन्नक्षेत्र परिचयपत्र बनाई वितरण गर्ने।

२०७८।६।२० गतेः यस संस्थाका संस्थापक ब्रह्मलीन १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजको जन्मजयन्ती २०७८ माघ शुक्ल पञ्चमीको अवसर पारी स्वर्णजयन्ती महोत्सवसँगै पूर्णकदको फाइवरको सालिक (प्रतिभा) निर्माण गरी व्यवस्था मिलाउन संयोजकमा घनश्याम तिम्सिना, सदस्यहरूमा छन्दुराम भण्डारी, दामोदर न्यौपाने, गोविन्द पौडेल, जगन्नाथ भण्डारी रहेको उपसमिति गठन गर्ने।

२०७८।८।१७ गतेः स्वर्णजयन्ती महोत्सवमा प्रमुख अतिथिका रूपमा श्री १००८ स्वामी सत्यप्रकाशानन्द महाराजलाई अनुरोध गर्ने।

२०७८।९।१७ गतेः पौष मसान्तभित्रमा आयकर छुट प्रमाणपत्र नवीकरण गर्ने र जम्मुकश्मीर निवासी स्वामी हृदयानन्द गिरीजी महाराजलाई आमन्त्रण गर्ने। श्रीरामवाटिकासमेत निर्माण गर्ने।

२०७८।९।३० गतेः बिर्तामोडनिवासी स्व. जगतबहादुर खड्काकी धर्मपत्नी तिलरूपा खड्काले आफ्ना स्व. सासुससुरा पूर्णबहादुर (रणबहादुर) र भागीरथासमेतको पुण्यस्मृतिमा करिब ६० लाखको निजी लगानीमा रुद्राभिषेक भवन निर्माण गरिदिनुभएकामा धन्यवाद ज्ञापन गर्ने।

२०४८।१२।६ गतेः प्र.अ. श्री विष्णुभक्त भण्डारीज्यूले आफ्नो कठिनाइ दर्शाई दिएको राजीनामा अस्वीकृत गर्ने र विद्यालयको हरहिसाब रेखदेखका लागि सहयोगीका रूपमा सहशिक्षक पूर्णानन्द तिम्सिनालाई सहायक प्रधानाध्यापकका रूपमा नियुक्ति गर्ने।

विद्यालयतर्फको समितिबाट भएका निर्णयहरू

२०४९।६।२२ गतेः विद्यालयका प्र.अ. पं. विष्णुभक्त भण्डारीज्यूले राजीनामा दिनुभएकामा उहाँका व्यस्ततालाई मध्यनजर गरी वर्तमानसम्मको निःस्वार्थ रूपमा गरेको सेवाको उच्च मूल्याङ्कन गर्दै राजीनामा स्वीकृति गर्ने र सो रिक्त प्र.अ. पदमा स.प्र.अ. पूर्णानन्द तिम्सिनालाई नियुक्ति गर्ने र विष्णुभक्त भण्डारीज्यूलाई वि.व्य. समिति सदस्यको रूपमा राखे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०४९।१०।२६ गतेः शिक्षकको अतिआवश्यकता महसुस गरी मा.वि. तहको गणित शिक्षक प्रक्रिया पूरा गरी नियुक्ति गर्ने र अन्य २ रिक्त पदमा जगन्नाथ भण्डारी र पं. आनन्दप्रसाद सिग्देललाई नियुक्ति गर्ने।

२०५०।६।२४ गतेः वि.व्य.स. सदस्य लीलाबहादुर कटुवालज्यूबाट विद्यालयका जेहेनदार छात्रद्वयलाई प्रोत्साहन स्वरूप छात्रवृत्ति दिन रु. ५०००। (पाँच हजार) को कोष खडा गरी सोको ब्याजबाट आउने रकम विभाजन गरी एस.एल.सी. परीक्षामा प्रथम र द्वितीय हुने २ जनालाई प्रदान गर्ने।

२०५०।९।२५ गतेः गणित शिक्षक उपेन्द्र ओलीको राजीनामा स्वीकृत गरी सोही पदमा नेत्रप्रसाद दाहाललाई नियुक्ति गर्ने।

२०५१।७।४ गतेः गणित शिक्षक नेत्रप्रसाद दाहाललाई मासिक १५०० दिने।

२०५१।१२।८ गतेः जि.शि.का.को च.न. १८३१ को पत्रानुसार प्राप्त राहत दरबन्दीमा लामो समयदेखि शिक्षण सेवासमेत गर्दै आउनुभएका सहशिक्षक जगन्नाथ भण्डारीलाई नियुक्ति दिने।

२०५३।१।१४ गतेः जि.शि.का.बाट अस्थायी नियुक्ति लिई आउनुभएका गणित शिक्षक पुरुषोत्तम भण्डारीलाई नियुक्ति गर्ने र निजी स्रोतमा पहिलाबाटै अध्यापन गर्दै आउनुभएका नेत्रप्रसाद दाहाललाई वर्षे बिदासम्म यथावत् सेवा गरिरहन लगाउने।

२०५३।६।१२ गतेः चारपाने गा.वि.स.बाट प्राप्त २५,०००। (पच्चीस हजार) रकमबाट आवासीय छात्रहरूलाई काठका खाट निर्माण गर्ने र बचेको रकमबाट टेबलकुर्सी निर्माण गर्ने।

२०५३।६।१६ गतेः विद्यालयमा अध्यापन गराउँदै आउनुभएका आनन्दप्रसाद सिग्देलज्यूलाई अवकाश गरी वर्तमानसम्मको पाउने तलबभत्ता प्रदान गरी बिदा गर्ने।

२०५३।७।१७ गतेः अस्थायी शिक्षक छनौट समितिद्वारा छनौट भएका जगन्नाथ भण्डारीलाई आनन्दप्रसाद सिग्देलको खाली व्याकरण पठनपाठनका लागि दरबन्दीमा नियुक्ति समर्थनका लागि जि.शि.का.मा सिफारिस गर्ने।

२०५४।५।११ गतेः छात्रहरूको रिजल्टमा अझ सुधार गर्न कक्षागत विद्यार्थीलाई कर्मकाण्डमा नपठाई गुरुकुलमा अध्ययन गर्नेलाई मात्र पठाउने।

२०५५।२।४ गतेः चारपाने गा.वि.स.बाट अनुदान प्राप्त १३,५००। (तेह्र हजार पाँच सय) छात्रावास विस्तारमा प्रयोग गर्ने।

२०५७।१२।८ गतेः विद्यालय भवनको तला थपको कार्य सम्पादन गर्न काठमाडौं निवासी नवीन अग्रवालज्यूले रु. ५१,०००। (एकाउन्न हजार) प्रदान गर्नुभएकाले पूर्व भवन (एकतला) का निर्माणका संयोजक भद्रपुर निवासी मोहनलाल अग्रवाललाई सो तला थपका लागि बोलाई कार्य सञ्चालन गर्ने।

२०५९।७।१२ गतेः (वि.व्य.स. र अभिभावकको संयुक्त बैठक) आजको भेलाले बिर्तामोड निवासी सुरेशकुमार वंशलको अध्यक्षतामा सदस्य विष्णुभक्त भण्डारी र छविलाल नेपाल (अभिभावकद्वय) पुष्पा भण्डारी (महिला अभिभावक) सदस्य-सचिव प्र.अ. पूर्णानन्द तिम्सिना

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहेको वि.व्य.स. चयन।

२०५९।७।२४ गतेः सञ्चालक समितिमा मनोनयन गर्नुपर्ने रिक्त सदस्य पदमा क्रमशः शिवकुमार अग्रवाल, हरिप्रसाद अधिकारी र शिक्षक प्रतिनिधि भानुभक्त अधिकारीलाई चयन।

२०५९।८।९ गतेः आवासीय विद्यार्थीहरूलाई भोजन व्यवस्थाका लागि विभिन्न धार्मिक सामाजिक सङ्घ-संस्था र शिक्षाप्रेमी महानुभावहरूसँग गई भोजन व्यवस्थाका लागि एक दिनको भोजनका लागि २१०१। (दुई हजार एक सय एक) सहयोग माग गरी ३६५ जनासम्म दाता पुर्याएर भोजन व्यवस्थालाई व्यवस्थित गर्ने।

२०६०।१।६ गतेः विद्यालयमा अध्ययनरत विद्यार्थीहरूले नमुनाबमोजिमको रङ्गको पोसाक (कुर्ता-सुरुवाल) लगाउने।

२०६०।५।८ गतेः मा.वि.को सामाजिक शिक्षा शिक्षकको आवश्यकता रहेकाले जि.शि.का.सँग माग गर्ने र गत वर्ष कक्षा एकको स्वीकृति प्राप्त गरेको र यस शैक्षिक सत्रमा कक्षा दुई सञ्चालन अनुमतिसमेत माग गर्ने।

२०६१।१०।११ गतेः अभिभावकको भेलाले नयाँ व्यवस्थापन समिति गठन - अध्यक्ष सुरेशकुमार वंशल, सदस्यहरू शिवकुमार अग्रवाल, छविलाल खतिवडा, प्रदीपकुमार अग्रवाल, श्रीमती देविका भण्डारी, छविलाल नेपाल शिक्षक भानुभक्त अधिकारी सदस्यसचिव पूर्णानन्द तिम्सिना।

२०६२।६।१४ गतेः सामाजिक लेखा परीक्षण समितिको प्राप्ति, भुक्तानी र आयव्ययसमेत अनुमोदन।

२०६२।९।१९ गतेः यस शैक्षिक सत्रमा तीन कक्षाका लागि अनुमति माग गर्ने।

२०६३।१।२३ गतेः जि.शि.का.बाट प्राप्त २ कोठे भवन यथाशीघ्र निर्माण गर्ने र सो रेखदेखका लागि कर्मचारी नियुक्ति गर्ने।

२०६३।१२।२५ गतेः चारपाने गा.वि.स.सँग अनुदान सहयोग मागी विद्यालय भवनको पूर्व भागमा रहेको पैनीको जल प्रवाहले बाँध फुटाउने भएकाले सो अनुदानबाट पूर्व भागमा ईंटा सिमेन्ट ढुङ्गाका प्रयोग गरी व्यवस्थित गर्ने।

२०६५।४।८ गतेः गणित शिक्षक छनौट उपसमितिको निर्णयानुसार श्यामप्रसाद दहाललाई नियुक्ति दिने र वैकल्पिकमा परीक्षार्थीमध्येका युवराज ढकाललाई राख्ने।

(यसपछि २०६९।४।८ सम्म आश्रम समितिले विद्यालयसम्बन्धी निर्णय गरेको।)

२०६५।४।१७ गतेः जि.शि.का. झापाबाट प्राप्त राहत दरबन्दीमा छनौट समितिबाट छनौट भएका श्री श्याम दहाललाई नियुक्तिका लागि अनुमोदन गर्ने।

२०६५।९।९ गतेः वर्तमान प्र.अ. पूर्णानन्द तिम्सिनाले दिनुभएको राजीनामा स्वीकृत गर्दै मा.वि. स्थायी शिक्षक दामोदर न्यौपानेलाई प्रधानाध्यापकमा नियुक्ति दिने।

२०६९।४।३१ गतेः समिति गठन - अध्यक्ष लोकनाथ खनाल, सदस्य लीलाबहादुर कटुवाल, सुरेशकुमार अग्रवाल, टीकादेवी भण्डारी, दामोदर न्यौपाने पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना, दीननाथ सिग्देल, पूर्णानन्द तिम्सिना।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०६९।५।४ गतेः शिक्षक छनौट समितिले सिफारिस गरिएका डिल्लीराम नेपाललाई गणित शिक्षक नियुक्ति गर्ने।

२०६९।१०।९ गतेः सहायक कर्मचारीमा डिल्लीराम नेपाललाई नियुक्ति गर्ने।

२०७०।२।३१ गतेः झरना प्रा.वि. शताक्षीधाम–६ मा स्थायी दरबन्दी भई हाल वीर अमरसिंह मा.वि. चारपानेमा काजमा कार्यरत कृष्णमाया रिजाललाई जि.शि.का.को पत्रानुसार हाजिर गराउने, साथै यस शैक्षिक सत्रमा प्रथम श्रेणीमा विद्यार्थी उत्तीर्ण गराउनुमा विशेष मेहनत गराउने शिक्षक चूडामणि पौडेललगायत सबैमा साधुवाद प्रकट गर्ने, पत्रपत्रिकामार्फत पनि सार्वजनिक गर्ने।

२०७०।५।३१ गतेः आवासीय छात्रहरूको भोजन व्यवस्थापनका लागि अन्नक्षेत्र सञ्चालनार्थ सहयोग जुटाउन भारतको आसाम गौहाटीतर्फ जाँदा २०७०।५।२३ गतेदेखि आश्विन १ गतेसम्मको शिक्षक भानुभक्त अधिकारीको काज स्वीकृति गरी उल्लेख्य योगदान पुर्‍याएकोमा धन्यवाद ज्ञापनसमेत गर्ने।

२०७०।१०।५ गतेः ४३ औं वार्षिकोत्सव आश्रम र विद्यालयको समिति अभिभावकहरूको विशेष सक्रियतामा श्रीगणेश पुराणको आयोजना गर्ने।

२०७१।१।१४ गतेः आश्रम एवं विद्यालयलाई स्वच्छ राख्न विभिन्न सङ्घ-संस्था, दानदाता महानुभावहरू र एकमुष्ठ जि.शि.का.बाट प्राप्त ३,००,०००। र नेपाल पर्यटन बोर्डबाट प्राप्त २,००,०००। समेत जुटाई स्नानागार एवं सुविधायुक्त शौचालय रु. १३,३७,६०२। मा सम्पन्न भएकाले प्र.अ.लाई रकम ल्याउन पठाउने र २ थान कम्प्युटर (शिक्षा विभागबाट प्राप्त) प्र.अ.ले सम्झौता गरी ल्याउने, आश्रम एवं विद्यालयीय आचारसंहिता आजकै मितिबाट लागु गर्ने।

२०७१।१।२५ गतेः स्वच्छ खानेपानी व्यवस्थापनका लागि प्राप्त रकम १,००,०००। र गा.वि.स.बाट प्राप्त रकम रु. ६०,०००। सम्झौता गरी ल्याउन प्र.अ.लाई अख्तियारी दिने।

२०७१।३।१५ गतेः पठनपाठनलाई अझ स्वच्छ वातावरणमा सञ्चालन गर्न गराउन कक्षाकोठाका कालोपाटी हटाई ८ थान सेतोपाटी राख्ने।

२०७१।५।१८ गतेः जि.शि.का.मा ४ कोठे भवनको माग गर्ने र २०७० को शैक्षिक सत्रमा सामुदायिक विद्यालयहरूमध्ये एस.एल.सी. (प्रवेशिका) परीक्षामा सर्वोत्कृष्ट नतिजा प्राप्तपछि शैक्षिक गुणस्तर वृद्धिसँगै यस शै.स.बाट अङ्ग्रेजी विषयसमेत समावेश गरी पठनपाठन गर्ने।

२०७१।९।५ गतेः वर्तमानसम्म प्राप्य परम्परानुसार अष्टमी, प्रतिपदा, अनध्याय मान्दै बिदा गर्ने गरिएकाले विविध प्राविधिक समस्याले शनिवार साप्ताहिक बिदा गर्ने र वेदादिबाहेक अन्य पाठ्यपुस्तकहरूमात्र अष्टमी, प्रतिपदामा मध्याह्नसम्म पढाई अतिरिक्त क्रियाकलाप गराउने।

२०७१।१०।३ गतेः शैक्षिक गुणस्तर सुधारमा विशेष योगदान पुर्‍याउनुहुने शिक्षकहरूलाई सम्मान गर्ने परम्परा बसाउने उद्देश्यका साथ विद्यालय तथा आश्रमको ४४ औं वार्षिक उत्सवमा श्रीचूडामणि पौडेललाई (गणित विषय) प्रशंशापत्र र दोसल्लाद्वारा सम्मान गर्ने।

२०७२।१।२५ गतेः वैशाख १२ को महाविनाशकारी भूकम्पबाट विद्यालयका कक्षाकोठा,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यालय, पुस्तकालय र छात्रावाससमेत क्षतिग्रस्त भएकाले जि.शि.का. र स्थानीय निकायमा समेत जानकारी गराई क्षतिपूर्तिका निम्ति पहल गरिदिन अनुरोध गर्ने र जि.शि.का.बाट प्रदान गरिँदै आएको चारकोठे भवनको अनुदान यस वर्ष हाम्रो विद्यालयलाई प्राथमिकतामा राखी प्रदान गरिदिन अनुरोध गर्ने र सांसद श्रीअमृतलाल राजवंशीज्यूबाट प्राप्त सहयोग रकमबाट फर्निचर निर्माण गर्ने, साथै बिर्तामोड न.पा.बाट शैक्षिक सुधारका लागि छुट्याइएको रकम रु. ३०,०००। (तीस हजार) बाट पुस्तकालयका लागि आवश्यक सामग्री निर्माण गर्ने।

२०७२।२।२९ र ३२ गतेः समिति चयनमा पूर्णता। अध्यक्ष उमाकान्त पौडेल, सदस्यहरू तुलसा न्यौपाने, पवित्रा पौडेल, राधाकृष्ण ढुङ्गेल, देवीप्रसाद गिरी, नारायण राजवंशी, दिननाथ सिग्देल, भरत भट्टराई (शिक्षक), सदस्यसचिव दामोदर न्यौपाने (प्र.अ.)।

२०७२।३।५ गतेः शिक्षक अभिभावक सङ्घ गठन। आफ्नो सम्पूर्ण वृद्धभत्ता आश्रम अक्षयकोषमा समर्पण गर्नुहुने स्व. जनकलाल सुवेदीका श्रेष्ठ सुपुत्र टीकाराम सुवेदीलगायत सपरिवारका तर्फबाट यस विद्यालयमा अध्ययनरत छात्रहरूमध्ये एस.एल.सी. परीक्षामा गणित विषयमा सर्वोत्कृष्ट अङ्क ल्याई उत्तीर्ण हुने छात्रलाई प्रतिवर्ष रु. १०,०००। पुरस्कार प्रदान गर्ने घोषणा र यस वर्षका सर्वोत्कृष्ट महेश अधिकारीलाई प्रदान गर्ने।

२०७२।५।१३ गतेः (संयुक्त बैठक) कक्षाकोठा थप, जि.शि.का. सँग ४ कोठे भवन माग, पाकशालाको व्यवस्था, घेराबारा, आवासीय पोसाक, पुष्पवाटिका व्यवस्थापन, छात्रहरूबाट झापाका नमुना विद्यालयहरूको भ्रमण।

२०७२।९।२४ गतेः जि.शि.का.बाट भवन निर्माणका लागि रु. ७,००,०००। (सात लाख) निकासा भइसकेकाले देवीप्रसाद गिरीको संयोजकत्वमा ११ सदस्यीय भवन निर्माण उपसमिति गठन, साथै बिर्तामोड न.पा.बाट भौतिक सामग्री निर्माणबाट प्राप्त ५०,०००। (पचार हजार) निर्माणाधीन भवनको झ्यालढोका निर्माणमा प्रयोग गर्ने।

२०७२।११।२१ गतेः नेपाल महर्षि वैदिक फाउन्डेसनको सहकार्यमा आश्रममा रुद्राभिषेक कार्यक्रम सञ्चलनार्थ आचार्य प्रशिक्षणको १२ दिने कार्यमा बद्री खतिवडालाई पठाउने र ध्यान शिक्षकको पारिश्रमिकसहित प्रत्येक गुरुकुलमा ध्यान शिक्षक दिने भनी फाउन्डेसनबाट पत्र प्राप्त भएकाले तुलसीप्रसाद न्यौपानेलाई सिफारिस गर्ने र प्रशिक्षणपछि आवासीय शिक्षकको रूपमा राख्ने।

२०७३।२।१२ श्रीरामचौक निवासी मोहनमाया मा.वि.का सेवानिवृत्त शिक्षक कमलप्रसाद मिश्रज्यूले स्वेच्छाले निःशुल्क रूपमा अध्यापन गर्ने मनशाय राखी निवेदन गर्नुभएकाले उहाँलाई अनुमति प्रदान गर्ने।

२०७३।७।२४ गतेः देवीप्रसाद गिरीज्यूको संयोजकत्वमा भवन निर्माण उपसमितिले शिक्षा कार्यालय र विभिन्न सङ्घसंस्था, दानवीर दाता महानुभावबाट प्राप्त रकम रु. १८,५७,८९६। (अठार लाख सत्ताउन्न हजार आठ सय छयानब्बे) खर्चमा आश्रम पूर्वपट्टिको भवन निर्माण सम्पन्न भएकोमा एकमुष्ठ धन्यवाद ज्ञापन गर्ने।

२०७३।८।१२ गतेः श्री जगन्नाथ खनालज्यूको अध्यक्षतामा सदस्यहरू उमाकान्त पौडेल,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढुण्डीराज कोइराला, एलिना ओझा, निर्मला पौडेल, सीता देउजा, भरत भट्टराई (शिक्षक), सदस्यसचिव प्र.अ. दामोदर न्यौपानेसहितको विद्यालय व्यवस्थापन समिति गठन।

२०७३।११।४ गतेः श्रीगढीगाउँ मा.वि. शान्तिनगर झापाबाट प्रा.शि. तृतीय डिल्लीराम पोखेललाई हाजिर गराई जि.शि.का.मा जानकारी गराउने।

२०७४।१।१० गतेः कक्षा ११ र १२ को अनुमति माग गर्ने।

२०७४।२।१८ गतेः जि.शि.का. भद्रपुरबाट प्राप्त ३२,००,०००। (बत्तीस लाख) अनुदान प्राप्त भई सिँढीसहितको ४ कोठे भवन महर्षि वैदिक फाउन्डेसनको रुद्राभिषेकबाट बचत रकमसमेतको थप रकम जुटाई गुणस्तरीय सामग्रीद्वारा सम्पन्न भएकाले सम्पन्नताको प्रमाणपत्रका लागि जि.शि.का.मा अनुरोध गर्ने।

२०७४।११।२१ गतेः बिर्तामोड न.पा.बाट गुरुकुल शैक्षिक सुधार कार्यक्रमअन्तर्गत विनियोजित रकम ७५,०००। बाट फलामका डेक्स-बेञ्च निर्माण गर्ने र २०७४ चैत्र १२ गते हुने राष्ट्रिय गुरुकुल परिषद्को अधिवेशनमा भाग लिन वि.व्य.स. अध्यक्ष जगन्नाथ खनाल र प्र.अ. दामोदर न्यौपानेलाई पठाउने।

२०७५।२।२३ गतेः आ.व. २०७४।७५ का लागि शिक्षा विकास एवं समन्वय एकाइ कार्यालयबाट मर्मतका लागि प्राप्त रु. ५०,०००। (पचास हजार) बाट अपुग डेक्स-बेञ्च निर्माण गर्ने।

२०७५।७।१९ गतेः ईश्वरादेवी सङ्ग्रौला र छोराबुहारी भरत-चिन्तादेवीबाट स्व. नारायणप्रसाद सङ्ग्रौलाको स्मृतिमा स्वामी प्रपन्नाचार्य गीता पुरस्कारका लागि रु. १,०१,०००। (एक लाख हजार) को अक्षयकोष स्थापना गर्नुभएकोमा उहाँहरूलाई साधुवाद व्यक्त गर्ने। साथै बिर्तामोड न.पा.को बजेटबाट विनियोजित रकम ३,००,०००। मात्र र अन्य जनसहयोग जुटाई झ्यालढोका र रङ्गरोगनसमेत गर्न उमाकान्त पौडेलको संयोजकत्वमा ५ सदस्यीय समिति गठन।

२०७५।८।५ गतेः विद्यालय भवनको माथिल्लो तला निर्माणार्थ जिन्सी सहयोग गर्नुहुने श्री नवीन अग्रवाल, काठमाडौं, भगवान् बस्नेत, पुष्प खनाल, योगेन्द्र थापा, मदन, मित्तल, लक्ष्मी इँटा उद्योग, श्रीराम इँटा उद्योग, श्रीजानकी इँटा उद्योग, प्रदीप इँटा उद्योग, पशुपति इँटा उद्योगलाई धन्यवाद ज्ञापन गर्ने।

२०७५।९।१३ गतेः निर्माणाधीन भवनको छानो छाउन सहयोग मागेबमोजिम बिर्तामोड न.पा.बाट ३,००,०००। र वडा नं. २ बाट ३,००,०००। गरी जम्मा रु. ६ लाख प्राप्त।

२०७५।१०।२४ गतेः माननीय सभासद एकराज कार्कीज्यूद्वारा प्रदेश स्तरीय योजनाबाट यस विद्यालयको ट्रष्टको छानो निर्माणार्थ विनियोजित रकम रु. ५,००,०००। को सम्झौता गरी ल्याउन डिल्ली नेपाललाई जिम्मेवारी दिने।

२०७६।२।२१ गतेः शिक्षक छनौट प्रक्रिया पुरा गरी सफल हुनुभएका यज्ञराज दहाललाई नियुक्ति दिने।

२०७६।३।१५ गतेः साझा शिक्षा इ-पाटी सानेपा ललितपुरबाट सम्पूर्ण जडान खर्चसहित

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रु. ८५,०००। मा जडान गर्ने सम्झौताअनुरूप सोही कम्पनीबाट 'इ÷लाइब्रेरी सम्पन्न।

२०७६।९।१ गतेः बिर्तामोड न.पा. कार्यालय, शिक्षा शाखाको पत्रानुसार यस विद्यालयमा रहेको रिक्त पद प्रा.तृ. श्रेणीको परीक्षा उत्तीर्ण गरी आउनुभएकी शिक्षिका चम्पादेवी खनाललाई २०७६।८।३० देखि नै हाजिर गराउने।

२०७६।३।३१ गतेः बिर्तामोड न.पा.बाट प्राप्त आईसीटीसम्बन्धी तथा पुस्तकालय (क्म्प्युटर, ल्यापटप आदि) सामग्री निर्माण र खरिद कार्य रु. ७,३८,७४४ मा सम्पन्न।

२०७७।६।१५ गतेः कोभिड १९ को महामारीको कारण विद्यार्थी सिकाइ सहजीकरण निर्देशिका २०७७ र बिर्तामोड न.पा.को निर्देशनअनुसार दशैंअघि जुम प्रविधिका माध्यमबाट र दशैंपछि (२०७७ कार्तिक १६ गतेदेखि) आवासीय रूपमा रहने भएकाले भौतिक रूपमै कक्षा सञ्चालन गर्ने।

२०७७।७।२६ गतेः बिर्तामोड न.पा.बाट २०७७।७८ मा विनियोजित रकम रु. २,००,०००। बाट विद्यालयको आन्तरिकद्वार (गेट) निर्माण उपसमिति उमाकान्त पौडेलको संयोजकत्वमा गठन र विनियोजित रकम सम्झौता गरी ल्याउन डिल्ली नेपाललाई जिम्मेवारी दिने।

२०७७।९।१ गतेः विद्यालय व्यवस्थापन समिति गठनः अध्यक्ष छन्दुराम भण्डारी, सदस्यहरूमा नगेन्द्रप्रसाद सङ्ग्रौला (वडाध्यक्ष), भावना आचार्य, पार्वती सापकोटा, सृजना भट्टराई, मेनुका आचार्य, सीता देउजा, सोमनाथ गौतम (शिक्षक) र सदस्यसचिव दामोदर न्यौपाने (प्र.अ.)। वीर अमरसिंह मा.वि.का नि.मा. शिक्षक श्रीझलक काफ्लेले सरुवा सहमति माग गरेकामा नियमानुसार सरुवा वा काजमा मिलाई आउन सहमति प्रदान गर्ने।

२०७७।१०।११ गतेः विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.को ५० औं स्वर्णजयन्ती महोत्सव वर्ष प्रारम्भमा आयोजना गरिने कार्यक्रमलाई भव्य र सभ्य रूपमा सुसम्पन्न गर्न गराउन विभिन्न उपसमिति चयन। गुरुकुलको गुरुयोजनाका लागि पूर्वीय वैदिक वाङ्मयको अध्ययन-अनुसन्धान गर्ने केन्द्रका रूपमा विकास गर्न नेपाल महर्षि वैदिक फाउन्डेसनसँग समन्वय गर्न वि.व्य.स. अध्यक्ष र प्र.अ.लाई काठमाडौं पठाउने।

२०७७।१०।२५ गतेः वेद विद्याश्रम गुरुकुल शिक्षाको परिवर्तित नयाँ पाठ्यक्रमअनुसार पठनपाठन गराउन बिर्तामोड न.पा. शिक्षा शाखासँग अनुमति माग गर्ने। आसन्न स्वर्णमहोत्सवलाई मध्यनजर गरी विद्यालयमा रङ्गरोगन, पुष्पवाटिका निर्माण गर्ने र घेराबाराको क्रममा बिर्तामोड न.पा.बाट भएको सम्झौतानुसार ३,५८,३१७। मा सम्पन्न भएकाले फरफारकका लागि डिल्लीराम नेपाललाई पठाउने। साथै कक्षा ११–१२ सञ्चालनमा शिक्षकहरूलाई प्रोत्साहन स्वरूप मासिक रु. १०००। का दरले २०७७।६ महिनादेखि नै लागु हुने गरी प्रदान गर्ने। आ.व. श्रावणदेखि भएको खर्च ३९,०२,५५१। अनुमोदन गर्ने।

२०७८।३।२ गतेः कक्षा ११–१२ सञ्चालनार्थ कक्षाकोठा व्यवस्थित गर्न र आवश्यक डेक्स-बेन्च ५० थान निर्माणार्थ नगरपालिकासँग आर्थिक सहयोग र संस्कृत, व्याकरण र ज्योतिष विषयका दरबन्दीसमेत माग गर्ने।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०७८।३।२१ गतेः (विवेकाश्रम एवं विद्यालयको संयुक्त बैठक)

विद्यालयको पश्चिम भागमा रहेको बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने निवासी यशोदा खतिवडाको नाममा दर्ता रहेको साबिक चारपाने ३ को कित्ता नं. २९१७ को २ कठ्ठा ८ धुर जग्गा प्रतिधुर रु २ लाखका दरले आगामी मिति २०७९ असार मसान्तसम्म पैसा चुक्ता गरी साङ्गवेद सं.मा.वि.को नाममा रजिष्ट्रेसन पास गर्ने सर्तमा दुई लाख बैना गर्ने। सो भूमिलाई लाग्ने रकम जुटाउन विद्यालय समिति, आश्रम समिति र छिमेकी बुद्धिजीवी, दानवीर, शिक्षाप्रेमी, दातामहानुभावहरूसँग सहयोग जुटाइदिन अनुरोध गर्ने र ५०० प्रति रसिद बुक छपाउने।

२०७८।३।२२ गतेः श्रीरामप्रसाद खतिवडालाई करारमा मासिक रु. ३५,०००। मात्र दिने गरी १ वर्षका लागि नियुक्ति गर्ने, आवासीय रूपमा समेत इलाम निवासी प्रवीण गौतमलाई आवासीय सुविधासहित मासिक रु. २०,०००। दिने गरी नियुक्ति गर्ने। साथै २ कठ्ठा ८ धुर भूमिविस्तारका लागि यथाशीघ्र रकम जुटाउन छन्दुराम भण्डारीको संयोजकत्वमा उपसमिति गठन।

२०७८।५।२८ गतेः (विद्यालय आश्रमको संयुक्त बैठक) कोभिड १९ का कारण बिर्तामोड न.पा. शिक्षा शाखाको निर्देशनअनुसार जुम प्रविधिमार्फत अनलाइन कक्षा गर्ने र बडादशैंपछि (कार्तिक ४ गतेबाट) स्वास्थ्य मापदण्ड पूरा गरी भौतिक रूपमै कक्षाम सञ्चालन गर्ने र श्री विवेकाश्रमले जग्गा खरिदका लागि विद्यालय भवन निर्माणक्रममा पटक-पटक दिएको सापटी रकम रु. १५,६०,०००। सापटी फिर्ता गरिदिन रु. ६,९०,०००। (छ लाख नब्बे हजार) अनुदान सहयोग गरिदिन हुन भनी २०७८।५।२८ गते आश्रमले पठाएको माग पत्रानुसार सो भूमि विद्यालयले समेत उपयोग गरिने हुँदा अनुदानका रूपमा जम्मा रु. २२,५०,०००। (बाइस लाख पचास हजार) प्रदान गर्ने निर्णय।

२०७८।७।२९ गतेः प्रदेश नं. १ को शिक्षा विकास निर्देशनालयको निर्णयानुसार धार्मिक प्रकृतिका विद्यालयहरूलाई अनुदान शीर्षकमा साङ्गवेद सं.मा.वि. विवेकाश्रमलाई ४,००,०००। (चार लाख) विनियोजन भएकाले सम्झौताका लागि डिल्लीराम नेपाललाई प्रतिनिधि पठाउने र उक्त बजेटबाट स्वर्ण महोत्सव द्वार निर्माण गर्ने। बिर्तामोड न.पा.बाट फर्निचर निर्माणार्थ विनियोजित रकम रु. २,००,०००। (दुई लाख) सम्झौताका लागि अध्यक्षलाई पठाउने। वि.व्य.स.का पूर्वअध्यक्ष लोकनाथ खनाल र दिलमाया खनालज्यूद्वारा निर्माण गरी माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी (सरस्वती पूजा) का दिन समुद्घाटन र हस्तान्तरण गर्न आजकै दिन मन्दिर शिलान्यास सम्पन्न।

२०७८।८।२७ गते सोमबारः यशोदा खतिवडाको नाममा रहेको कित्ता नं. २९१७ को ०—०—०२-०८ (दुई कठ्ठा आठ धुर) जग्गा र विद्यालय पूर्व भागमा रहेको पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिनाको नाममा रहेको कित्ता नं. २६३७ को साढे ४ घुर जग्गासमेत रजिष्ट्रेसन पास गरी ल्याउन अध्यक्ष छन्दुराम भण्डारी र प्र.अ. दामोदर न्यौपानेलाई प्रतिनिधि पठाउने। साथै स्वर्णमहोत्सव द्वार निर्माणका लागि विनियोजित रकम रु. ४,००,०००। (चार लाख) र अन्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्रोत जुटाई छन्दुराम भण्डारीको संयोजकत्वमा पूर्णानन्द तिम्सिना, छविलाल नेपाल, सीता देउजा र दामोदर न्यौपाने सदस्य रहेको मुख्य प्रवेशद्वार निर्माण उपसमिति गठन।

२०७८।९।७ गतेः यस शैक्षिक सत्रमा विद्यार्थीको सङ्ख्या बढेर २२५ पुगेको हुँदा कक्षा सञ्चालनार्थ कोठाहरूको अभाव भएको अवस्थामा शैक्षिक भवन निर्माणार्थ विभिन्न शिक्षाप्रेमीहरूको सहयोग प्राप्त गरी दुई कठ्ठा साढे १२ धुर भूमिसमेत विद्यालयको नाममा पास दर्ता भई आएको हुँदा ४ कोठे विद्यालय भवन स्थानीय तहको सिफारिससहित शिक्षा तथा मानव स्रोत विकास केन्द्र, सानोठिमी भक्तपुरमा माग गर्ने।

२०७८।९।१८ गतेः स्वयंसेवक शिक्षक छनौट उपसमितिले २०७८।९।१८ मा गरेको सिफारिसअनुसार स्वयंसेवक शिक्षक पदमा रामप्रसाद खतिवडालाई प्रदेश सरकारबाट प्राप्त हुने तलबभत्ता पाउने गरी २०७८।९।२० देखि २०७९।३ मसान्तसम्मका लागि नियुक्ति गर्ने।

यसरी सुरुमा अनौपचारिक (आदेश) रूपमा आश्रमको कामकारवाही सञ्चालन भएकामा २०३३ देखि समिति गठन भई लिखित निर्णयका आधारमा कामकारवाहीको थालनी भएको पाइन्छ भने विद्यालयको कक्षागत सञ्चालनको अनुमति प्राप्त भएपछि आश्रम र विद्यालयको फरक फरक समिति गठन भए पनि कतिपय अवस्थामा एउटै समितिले दुवै संस्थाका कार्यक्षेत्रको समेत निर्णय गरी कार्य गरेकोसमेत पाइन्छ।

❑

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A Short glimpse of Vivekashram & Sangaved SMV

✍ Shyam Prasad Dahal

Bibek Ashram as well as 'Sangaved Sanskrit Ma.Vi' was established in 2028 B.S. This is one of the reputed institutions in the field of Sanskrit language in Eastern part of Nepal. It is located at Province no .1, Jhapa district, Birtamode municipality, ward no.2 Charpane. Mr. Kishor Kumar Gautam is the present chairperson of Shree Vivekashram and Mr. Chhanduram Bhandari is the chairman of the present Sangved Sanskrit Ma.vi. school management committee. Mr. Damodar Neupane is the present Head teacher of this school.

This is an emerging institution of this area in the field of Sanskrit language and uplifting the traditional norms and values of Eastern Philosophy. Under the guidance and care of Bivek ashram, Sangaved Sanskrit Ma.vi. is currently running with fifteen teaching and non- teaching staffs and 225 students from Grade four to twelve. Two hundred and sixty students have already been passed out in SEE level examination from this school. Also, four students have completed their grade twelve exam. A few number of students are only dayscholar. Other about one hundred sixty of them are in Ashram hostel. They are given food two times a day by Ashram management committee. For that, a little amount is also paid by their guardians annually.

As Frank Raymond LaPena suggests in his essay, "The Sharing Tradition", there are four obstacles on the way of maintaining the oral tradition, this institution is working for eradicating such obstacles. All the students are engaged in each and every activity launched by school as well as Ashram regularly. This builds and supports them to be physically fit mentally alert. They learn many life skills living together in hostel and reciting Veda's mantras. Along with the preservation of our Eastern Philosophy, the institution has helped the students in developing themselves spiritually with the divine knowledge of the Sacred books and mantras.

Although, many things are done for the shake of these kids but many needs to be done for the overall development of the institution in the days to come. Besides, there is deep faith of the local people to uplift this organization. From the mindful support of the concerned authority, this institution is growing larger and larger day by day. Many organizations, donors and governmental bodies are also equally helping out this institution to grow better day by day. 'A guiding leader and supporting workers are the key partners of any organization.' This slogan is needed practical life in any organization. So, we hope this institution will be a model institution in the country in the days to come by fostering knowledge of quality education.

✍ English Teacher , Birtamode-2, Charpane

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट खण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १
श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालयको विद्यार्थी विवरण

- अम्बिकाप्रसाद रेग्मी

विक्रम संवत् २०२८ साल मङ्सिर १६ गते स्वामी विवेकानन्द गुरुद्वारा स्थापित विवेकाश्रममा विवेकानन्द गुरु बसुन्जेल गुरु स्वयंले र पछि पुष्पलाल तिम्सिनासमेतले वर्णमाला, गीता, चण्डी, रुद्री, वेद आदिको पढाइलाई निरन्तरता दिनुभयो। यस विद्यालयका प्रारम्भिक विद्यार्थीहरूको कुनै हाजिरी प्राप्त भएको छैन तापनि तत्कालीन व्यक्तिका सम्झनाका आधारमा विष्णुचैतन्य पौडेल, पूर्णानन्द तिम्सिना, पुष्पलाल पौडेल, बेनु भण्डारी आदि र स्थानीय बालबालिकाहरू विद्यार्थीका रूपमा रहेको बुझिन्छ।

वि.सं. २०३३ सालको वैशाख ५ गते गठित आश्रम संरक्षण समितिले ७ गते विद्यालय सञ्चालक समिति गठन गर्ने निर्णय गरेअनुरूप उक्त दिन विद्यालय सञ्चालक समिति गठन भई सो समितिले मासिक पारिश्रमिक रु. १०० पाउने गरी भानुभक्त अधिकारीलाई शिक्षकका रूपमा नियुक्त गरी २० जना विद्यार्थी भर्ना गरेर अध्यापनलाई व्यवस्थित गर्ने कार्यको औपचारिक थालनीसमेत भयो।

२०३३ साल वैशाख ७ गते सोमबार द्वितीया तिथिका दिन हाजिर हुने जम्मा २० जना विद्यार्थीहरूमा ८ जना (४० प्रतिशत) बालिका रहेका थिए। त्यसपछि २०३३ सालको अन्तसम्म १६ जना विद्यार्थी थप भई ३६ जना पुगेको पाइए तापनि सबै विद्यार्थीको निरन्तरता भने पाइँदैन। त्यस बेला कक्षागत पढाइ नहुने भएकाले प्रायः बढी उमेरका विद्यार्थीको नाम पहिले र त्यसपछि क्रमशः अन्यको नाम लेखेको पाइन्छ। उक्त हाजिरी पुस्तिकामा विद्यार्थीहरूको उपस्थिति जनाइएको र शिक्षकले पनि हाजिरी प्रमाणित गरेको पाइन्छ।

२०३४ देखि कौमुदी (व्याकरण) को समेत पढाइ सुरु भई ग्रन्थका आधारमा पहिले कौमुदी त्यसपछि क्रमशः वेद, रुद्री, चण्डी, गीता र वर्णमालाका क्रममा बढी (माथि) पढ्ने विद्यार्थीको पहिले हुने गरी हाजिरीमा नाम राखेको पाइन्छ। यस विद्यालयमा कक्षागत पढाइ सुरु नहुन्जेल (२०४६ सम्म) ग्रन्थगत पढाइ हुने भएकाले ग्रन्थ परिवर्तन हुँदा हाजिरीमा पनि सोहीअनुसार नामको क्रम परिवर्तन हुने गरेको पाइन्छ। साथै ग्रन्थ नसकिउन्जेल (खास गरी कौमुदी) यहाँ बसेर पढ्ने र सकिएपछि विद्यालय छाडेर जाने भएकाले कुनै विद्यार्थी कतिन्जेल यहाँ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढ्थ्यो भन्ने कुरा उसले कहिले त्यो ग्रन्थ सक्छ भन्ने कुरामा निर्भर गर्दथ्यो। त्यसैले कोही विद्यार्थी छिट्टै पढाइ सकेर जान्थ्यो भने कोही निकै लामो अवधिसम्म यहाँ बस्थ्यो। साथै बालिकाहरू भने यहाँको प्रारम्भिक अध्ययनपछि सरकारी विद्यालयमा पढ्न जाने भएकाले उनीहरूको पनि यहाँको पढाइ त्यति लामो अवधिको देखिँदैन।

सुरुदेखि नै उपस्थित कतिपय बालिकाहरूको हाजिरीमा निरन्तरता पाइँदैन। कतिपय विद्यार्थीको बिचबिचमा केही महिना अनुपस्थित हुँदा हाजिरमा नाम नभएको र पछि आउँदा पुनः नाम समावेश भएको अवस्था पनि पाइयो। यहाँ कक्षागत पढाइ नहुँदासम्म परीक्षा दिन अन्यत्र (खास गरी भारत) जानुपर्ने र यसरी अन्यत्र गइसकेपछि पुनः यहाँ आएर पढे पनि त्यस्ता विद्यार्थीको नाम पनि लेख्ने व्यवस्था नभएको भनी ती विद्यार्थीसमेतले उल्लेख गरेका छन्। त्यसैले त्यस्ता विद्यार्थीको त्यस अवधिको हाजिरीको जानकारी पनि उल्लेख गर्न सकिएन। हाजिरी पुस्तिकामा स्पष्टता नभएका कारण २०४६ मा माध्यमिक तहको अनुमतिपछि केही विद्यार्थीको पढाइको अवधि किटानी गर्न कठिनाइ भएको छ।

२०४६ सालमा यस विद्यालयले माध्यमिक तह (कक्षा ८) को स्वीकृति पाई कक्षागत पढाइ सुरु भएपछि भने विद्यार्थीको हाजिरी पनि कक्षागत नै हुने व्यवस्था भयो र विद्यार्थीको उमेर, योग्यता, क्षमता आदिका आधारमा उपयुक्त कक्षामा राखियो, त्यस वर्ष कक्षा ८ मा रहेका विद्यार्थी २०४८ सालको एसएलसीमा सहभागी भए। त्यसैले यस विद्यार्थी विवरणलाई पनि एसएलसी दिनुभन्दा अघिको र एसएलसीमा सहभागी भएपछिको गरी दुई भागमा हेर्ने प्रयास गरिएको छ। एसएलसी दिनुभन्दा अघिको विद्यार्थी विवरणमा हाजिरी पुस्तिकाको आधारमा विद्यालयमा पढ्ने सबैको यथासम्भव पढेको अवधिसहितको नामावली राखिएको छ भने एसएलसीमा सहभागी भएपछिको विद्यार्थी विवरणमा एसएलसीमा सहभागी भएका विद्यार्थीकोमात्र विवरण राखिएको छ। अझ एसएलसी दिएका विद्यार्थीको नाम एसएलसी दिनुभन्दा अघिको विद्यार्थी विवरणमा आइसकेको भए सोही ठाउँमा नै एसएलसी दिएको जनाइएको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसाङ्गवेद संस्कृत विद्यालय विद्यार्थी विवरण (२०३३-२०७७)

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
१	भोलानाथ (जगन्नाथ) भण्डारी	२०३३०१०७	२०३७०७१४
२	डिल्लीराम भण्डारी	२०३३०१०७	२०३७०२१४
३	वेनुप्रसाद भण्डारी	२०३३०१०७	२०४३०९२८
४	पुष्पलाल पौड्याल	२०३३०१०७	२०३९०५०८
५	वुद्धिप्रसाद पौड्याल	२०३३०१०७	२०४४०१०३
६	दिवाकर तिम्सिना	२०३३०१०७	२०४२१२३०
७	सेवन्तप्रसाद (सेमन्त) भण्डारी	२०३३०१०७	२०४००१२५
८	हरिप्रसाद भण्डारी	२०३३०१०७	२०४१०५१२
९	धर्मप्रसाद (धर्मानन्द) ओझा	२०३३०१०७	एसएलसी२०४८
१०	सोमनाथ तिम्सिना	२०३३०१०७	२०४१०१२५
११	खगमाया तिम्सिना	२०३३०१०७	२०३३०९१३
१२	इमादेवी भण्डारी	२०३३०१०७	२०३३१२३०
१३	सुशीलादेवी भण्डारी	२०३३०१०७	२०३३०४३२
१४	तुलसादेवी भण्डारी	२०३३०१०७	२०३६०१३१
१५	दुर्गाप्रसाद भण्डारी	२०३३०१०७	२०३३०४११
१६	जीवनप्रसाद न्यौपाने	२०३३०१०७	२०३३०३२४
१७	इन्दिरादेवी भण्डारी	२०३३०१०७	२०३३११३०
१८	सावित्रादेवी पौडेल	२०३३०१०७	२०३५०१०७
१९	लक्षिमादेवी पौडेल	२०३३०१०७	२०३५०२३०
२०	भागीरथा भण्डारी	२०३३०१०७	२०३३१२३०
२१	मोहनकुमारी भण्डारी	२०३३०१२७	२०३३११३०
२२	लक्ष्मीदेवी भण्डारी	२०३३०२१७	२०३६१२२९
२३	निरादेवी पौडेल	२०३३०२१७	२०३३०७३०
२४	होमप्रसाद (होमनाथ) पौडेल	२०३३०२२१	२०४३०१०३
२५	निर्मला तिम्सिना	२०३३०३०१	२०३४२१५
२६	सुवाखर (सुवास) खनाल	२०३३०३१०	२०३३०३१७
२७	टंक (टेकनाथ) खनाल	२०३३०३१०	२०३३०३१७
२८	सीतादेवी खनाल	२०३३०३१०	२०३३०३१७
२९	कृष्णकुमारी ओझा	२०३३०३१०	२०३३०४०४
३०	रेवतप्रसाद भट्टराई	२०३३०३१६	२०३३०३१७
३१	प्रभाकर तिम्सिना	२०३३०३२५	२०३३०४०३
३२	नारायणप्रसाद अधिकारी	२०३३०४०५	२०३३०४०८
३३	राधिकादेवी भण्डारी	२०३३०४१४	२०३३१२०६
३४	अम्बिकाप्रसाद रेग्मी	२०३३११२४	२०३५०५२१
३५	लक्ष्मीप्रसाद गजुरेल	२०३३११२४	२०३४१०२०
३६	डिल्लीराम रिजाल	२०३३१२०८	२०३६०३२३
३७	नन्दिकेशर भण्डारी	२०३४०१०१	२०३६०३२३
३८	दामोदर न्यौपाने	२०३४०१०१	२०३६०३२३
३९	लोकनाथ खतिवडा	२०३४०१०१	२०३५१००३
४०	टीकाराम ढुङ्गाना	२०३४०१०१	२०३६०३२०
४१	लेखनाथ तिम्सिना	२०३४०१०१	२०३६०३२१
४२	जीवनाथ तिम्सिना	२०३४०१०१	२०३६०३२१
४३	जगन्नाथ खनाल	२०३४०१०१	२०३६०३२१
४४	छविलाल खतिवडा	२०३४०१०१	२०३७०२१४
४५	मेनुका तिम्सिना	२०३४०१०१	२०३५०९१२
४६	चिदानन्द भण्डारी	२०३४०२१५	२०३४०२११
४७	एमनाथ गुरागाई	२०३४०७०१	२०४३०१३१
४८	पुण्या (पुण्यमाता) पौडेल	२०३४०८०१	२०३६११२९
४९	गजाधर खतिवडा	२०३४०९०१	२०३९०५०१
५०	वासुदेव खतिवडा	२०३४११०३	२०३८०३१५
५१	लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा	२०३४११०४	२०३७०७१४
५२	डिल्लीराम खतिवडा	२०३४१११५	२०३६११२९
५३	तुलसीराम खतिवडा	२०३४१२०१	२०३५०१०५
५४	सोमनाथ भट्टराई	२०३४१२०५	२०३६०६०३
५५	इन्दिराज पौडेल	२०३५०३०१	२०३५०३०१
५६	विष्णुप्रसाद रेग्मी	२०३५०८०३	२०४२१०३०
५७	भवानीशङ्कर निरौला	२०३५०८०३	२०३७०८०५
५८	खगेन्द्र सिग्देल	२०३५०८०४	२०३५०९२६
५९	यादवप्रसाद खनाल	२०३५०८०४	२०३५०८२९
६०	मायादेवी खतिवडा	२०३५१००२	२०३६११०९
६१	छन्नु(छन्दु)राम भण्डारी	२०३६०११५	२०४००९३०
६२	वेदनिधि गड्तौला	२०३६०११५	२०३७०३२७
६३	विष्णुप्रसाद भण्डारी	२०३६०११५	२०४१०९३०
६४	युवराज खतिवडा	२०३६०११८	२०३६०८१५
६५	ज्ञेयनाथ खतिवडा	२०३६०२२९	२०३६१२२४
६६	पर्शुराम खनाल	२०३६०३१२	२०४२१०१४
६७	भवानीप्रसाद खतिवडा	२०३६०३२७	२०३६१०२८
६८	मुक्तिनाथ अधिकारी	२०३६०५०१	२०३९०५०१
६९	वालकृष्ण अधिकारी	२०३६०५०१	२०३६०६०३
७०	डिल्लीराम सुवेदी	२०३६०५११	२०३९०५०१
७१	भीमप्रसाद सुवेदी	२०३६०५११	२०३६१२२४
७२	काशीनाथ न्यौपाने	२०३६०५२३	२०३९०५०८

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
७३	वद्रीनाथ खतिवडा	२०३६०७०७	२०३९०५०८
७४	तिलरूपा भण्डारी	२०३६१००५	२०३६१०३०
७५	नारायण ढुङ्गेल	२०३६११०१	२०३६११२२
७६	भूमिप्रसाद दाहाल	२०३७०१०५	२०३९०५०८
७७	गोविन्द पौडेल	२०३७०१०५	२०४१०९३०
७८	हेमलाल ढकाल	२०३७०१०५	२०४१०९३०
७९	शिवलाल ढकाल	२०३७०१०५	२०४१०९३०
८०	हरिप्रसाद खतिवडा	२०३७०१०८	२०३८१०२४
८१	गङ्गाराम खतिवडा	२०३७११०२	२०३९०५०८
८२	तीर्थप्रसाद ढकाल	२०३७११०९	२०४१०९३०
८३	शिवप्रसाद रेग्मी	२०३८०२०८	२०३८१००९
८४	डमरुवल्लभ खतिवडा	२०३८०२११	२०४१०९३०
८५	पीताम्वर भट्टराई	२०३८०२११	२०३९०५०१
८६	खेमराज वाँस्कोटा	२०३८०२२३	२०४१०९३०
८७	डेगनाथ (डमरु) पौडेल	२०३८०२२३	२०४३३०३
८८	होमप्रसाद नेपाल	२०३८०७२८	२०४२०९३०
८९	टीकाराम रेग्मी	२०३८०९०१	२०४२०९०२
९०	फणीन्द्र तिम्सिना	२०३८१००१	एसएलसी२०४९
९१	तेजप्रकाश पौडेल	२०३८१००१	एसएलसी२०४९
९२	काशीनाथ पौडेल	२०३८१००१	एसएलसी२०५०
९३	गुणनाथ ओझा	२०३८१००१	एसएलसी२०४८
९४	इन्दिराज ओझा	२०३८१००१	२०४६०७०३
९५	तुङ्गनाथ भण्डारी	२०३८१००१	२०४५१०२१
९६	भानुभक्त खनाल	२०३८१००१	एसएलसी२०४९
९७	खेमराज ओझा	२०३८१००१	एसएलसी२०५०
९८	चेतन खतिवडा	२०३८१००१	२०४६१०१३
९९	यमुनादेवी भण्डारी	२०३८१००१	२०४३११३०
१००	टीकामाया भण्डारी	२०३८१००१	२०४५०९३०
१०१	राधिकादेवी पौडेल	२०३८१००१	२०४३११३०
१०२	हरिमाया पौडेल	२०३८१००१	२०४१०९३०
१०३	हरिमाया खतिवडा	२०३८१००१	२०४१०९२९
१०४	तेजप्रसाद न्यौपाने	२०३८१००२	२०४२०३१३
१०५	विद्याभास्कर नेपाल	२०३८११०१	२०४००९३०
१०६	गणेशप्रसाद वराल	२०३८११०१	२०४१०७०१
१०७	भीमप्रसाद खतिवडा	२०३८११०१	२०३९०३२७
१०८	मित्रलाल ढकाल	२०३८११०१	२०४२१२३०
१०९	गीतामाया भण्डारी	२०३८११०१	२०४३११३०
११०	भोजकुमारी तिम्सिना	२०३८११०१	२०४१०९३०

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
१११	मोममाया भण्डारी	२०३८११०१	२०४२१०२५
११२	केदारनाथ अधिकारी	२०३८१२०३	२०३९०११८
११३	यमुनादेवी तिम्सिना	२०३८१२०६	२०४१०९३०
११४	कुवेरप्रसाद पौडेल	२०३८१२०७	२०४३११२९
११५	महेन्द्रप्रसाद खतिवडा	२०३८१२०७	२०४५१०२१
११६	नर्मदादेवी भण्डारी	२०३८१२१६	
११७	यामनाथ भट्टराई	२०३८१२२८	२०३९०२२९
११८	मायादेवी भण्डारी	२०३९०२११	२०४३०७२५
११९	मात्रिकाप्रसाद दाहाल	२०३९०३०२	
१२०	तीर्थराज अधिकारी	२०३९०४०८	२०३९०२३०
१२१	पुष्पलाल न्यौपाने	२०३९०५२१	२०४३०१३१
१२२	होमनाथ पोखरेल	२०३९१००२	२०४००६१७
१२३	चन्द्रप्रसाद खनाल	२०३९१०१७	२०४४०९१७
१२४	ईश्वरीप्रसाद पौडेल	२०४१०९०२	२०४४१११७
१२५	गोपालप्रसाद खतिवडा	२०३९१०१७	२०४०१०१६
१२६	दुर्गाप्रसाद गुरागाई	२०३९११०३	२०३९०२२०
१२७	उमाकान्त खतिवडा	२०४०१००१	२०४०१२२६
१२८	लक्ष्मीप्रसाद खनाल	२०४०१००२	२०४६०८१३
१२९	लयप्रसाद पौडेल	२०४०१००२	एसएलसी२०५२
१३०	नारदमुनि पौडेल	२०४०१००२	एसएलसी२०५२
१३१	खिलादेवी भण्डारी	२०४०१००६	२०४५०१२१
१३२	पार्वतादेवी तिम्सिना	२०४०१००६	२०४१०९११
१३३	यमुनादेवी खनाल	२०४०१००६	२०४१०९११
१३४	तुलसादेवी खनाल	२०४०१००६	२०४३११३०
१३५	टीकाराम मिश्र	२०४०१०२५	२०४११२२९
१३६	शान्तिराम तिम्सिना (सानो)	२०४०१०२५	एसएलसी२०५२
१३७	तेजप्रकाश भण्डारी	२०४०१०२५	२०४३११३०
१३८	देवेन्द्र निरौला	२०४०१०२५	२०४१०९२८
१३९	मणिलाल सुवेदी	२०४०१०२५	२०४१०८०५
१४०	डिल्लीराम गौतम	२०४०१०२५	२०४३०१०३
१४१	भीमप्रसाद पौडेल	२०४०१२०९	२०४११२२५
१४२	महेन्द्रप्रसाद रेग्मी	२०४१०२०४	२०४३०२२१
१४३	यमुनादेवी पौडेल	२०४१०२०४	२०४३११३०
१४४	शान्तिराम तिम्सिना	२०४१०३०२	
१४५	पुण्यप्रसाद भण्डारी	२०४१०४०४	२०४१०६३०
१४६	घनश्याम भट्टराई	२०४१०६०३	२०४३११३०
१४७	घनेन्द्रप्रसाद खतिवडा	२०४१०७०३	२०४१०९३०
१४८	हेमसागर अधिकारी	२०४१०९०२	२०४३०२३०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
१४९	ईश्वरीप्रसाद खतिवडा	२०४१०९०३	२०४४१११७
१५०	नरप्रसाद खतिवडा	२०४१११०३	२०४४०२११
१५१	विष्णुप्रसाद पौडेल	२०४१११०३	२०४५०५३०
१५२	वुद्धिप्रसाद न्यौपाने	२०४१११०३	२०४४०५३०
१५३	सोमनाथ सुवेदी	२०४१११०३	२०४४११३०
१५४	टीकाराम ढकाल	२०४१११०३	२०४४११३०
१५५	रुक्मप्रसाद ढकाल	२०४१११०३	२०४४११३०
१५६	जीवनप्रसाद भट्टराई	२०४१११०३	२०४५१०२१
१५७	अम्बिकाप्रसाद खतिवडा	२०४१११०३	२०४३११३०
१५८	सुवासचन्द्र खनाल	२०४१११०३	२०४२०९२५
१५९	सोमनाथ खनाल	२०४१११०३	२०४३०२३१
१६०	मात्रिकाप्रसाद भट्टराई	२०४१११०३	२०४११२२९
१६१	रुद्रप्रसाद काफ्ले	२०४११२०२	२०४२०९२५
१६२	गुरुभक्त न्यौपाने	२०४२०१०२	२०४२०३३१
१६३	देवका पौडेल	२०४२०४३०	२०४३११२९
१६४	पार्वतादेवी खतिवडा	२०४२०४३०	२०४३११२९
१६५	हिमादेवी भण्डारी	२०४२०४३०	२०४३०७१३
१६६	चित्रादेवी भण्डारी	२०४२०४३०	२०४५०९३०
१६७	मनमाया तिम्सिना	२०४२११०१	२०४३०१२३
१६८	वनितादेवी तिम्सिना	२०४२११०१	२०४५०९३०
१६९	वनितादेवी खनाल	२०४२११०१	२०४५०९३०
१७०	सीतादेवी खतिवडा	२०४२११०२	२०४५०९३०
१७१	मेघनाथ तिम्सिना	२०४२११०२	२०४५१०२१
१७२	रामप्रसाद ओझा	२०४२११०२	एसएलसी२०५३
१७३	मोहनप्रसाद ओझा	२०४२११०२	एसएलसी२०५३
१७४	डमनाथ पौडेल	२०४२११०२	एसएलसी२०५३
१७५	कृष्णप्रसाद गौतम	२०४२११०२	२०४३११२९
१७६	मुनाकुमारी गौतम	२०४२११०२	२०४३०९२८
१७७	अनन्तराम भण्डारी	२०४२१२०१	२०४३०२३१
१७८	ऋषिराम पौडेल	२०४३०१०३	२०४३०५३१
१७९	चन्द्रकला तिम्सिना	२०४३०३०१	२०४५०९३०
१८०	खगेन्द्र खतिवडा	२०४३०३०२	२०४३०४३१
१८१	तेजप्रसाद पौडेल	२०४३०४२३	एसएलसी२०४९
१८२	यादवप्रसाद भण्डारी	२०४३१२०३	२०४४१११७
१८३	रूपनारायण तिम्सिना	२०४३१२०३	२०४७०२३१
१८४	मात्रिका गौतम	२०४३१२०३	एसएलसी२०५१
१८५	चिदानन्द खतिवडा	२०४३१२०३	२०४४०१०७
१८६	खिवराज न्यौपाने	२०४४०१०३	२०४५१०२१

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
१८७	मुक्तिनाथ खतिवडा	२०४४०२१५	२०४६१२१६
१८८	दीर्घराज खतिवडा	२०४४०२१५	२०४५१०२१
१८९	घनश्याम ढकाल	२०४४०४११	२०४६१२३१
१९०	ठानेश्वर भण्डारी	२०४४०७०१	२०४५१०२१
१९१	हाकिम भण्डारी	२०४४०७०१	२०४५१२३०
१९२	दीपेन्द्र दाहाल	२०४४०८०१	२०४४१११७
१९३	जगन्नाथ खतिवडा	२०४४११०१	एसएलसी२०४८
१९४	जीवनाथ खतिवडा	२०४४११०१	एसएलसी२०४८
१९५	खेमनाथ मिश्र	२०४४११०१	२०४५०२२६
१९६	टङ्कनाथ भण्डारी	२०४४११०१	२०४७०२३१
१९७	हरिप्रसाद तिम्सिना	२०४४११०१	२०४५१०२१
१९८	रुक्मिणा खतिवडा	२०४५०१०४	२०४५०९३०
१९९	कृष्णप्रसाद मिश्र	२०४५०१०४	२०४५१२३०
२००	प्रेमसागर खतिवडा	२०४५०११६	२०४५१०२०
२०१	मित्रप्रसाद गौतम	२०४५०२०४	२०४५१०२१
२०२	कुबेरप्रसाद पौडेल	२०४५०२०४	२०४५१०२१
२०३	तोयानाथ गुरागाईं	२०४५०२०४	२०४५१०२१
२०४	होमनाथ दाहाल	२०४५०२०४	एसएलसी२०५८
२०५	दुर्गाप्रसाद पोखरेल	२०४५०४३१	२०४५१०२१
२०६	प्रेमप्रसाद अर्याल	२०४५०६०१	२०४५१०२१
२०७	विद्यानाथ गौतम	२०४५०६०१	२०४५१०२१
२०८	कुमारी पौड्याल	२०४५०७११	२०४५०९३०
२०९	चूडामणि पौड्याल	२०४५०७११	२०४५१२३०
२१०	टीकादेवी भण्डारी	२०४५०७११	२०४५०९३०
२११	यमुनादेवी ओझा	२०४५०७११	-
२१२	दिननाथ घिमिरे	२०४५०९०४	२०४५१०२१
२१३	पद्मकुमार भट्टराई	२०४५०९११	२०४५१०२१
२१४	मेघनाथ अधिकारी	२०४५०९१५	२०४५१२३०
२१५	पुरुषोत्तम अधिकारी	२०४५०९२९	
२१६	उपेन्द्र पोखरेल	२०४५११११	२०४६०१०४
२१७	जीवन घिमिरे	२०४५११११	२०४६०७२७
२१८	लेखनाथ खनाल	२०४५	
२१९	रूपनारायण पोखेल	२०४५	
२२०	त्रिलोचन ढकाल	२०४५	
२२१	मेघनाथ अधिकारी	२०४५	
२२२	पदमकुमार भट्टराई	२०४५	
२२३	कृष्णप्रसाद तिम्सिना	२०४५	
२२४	खगेन्द्र नेपाल	२०४५	

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
२२५	शान्तिराम निरौला	२०४५	
२२६	नगेन्द्र खनाल	२०४६	
२२७	चन्द्रशेखर दाहाल	२०४६	
२२८	हरिप्रसाद तिम्सिना	२०४६	
२२९	दुर्गाप्रसाद खतिवडा	२०४६	
२३०	धानेश्वर भण्डारी	२०४६	
२३१	जनकलाल भट्टराई	२०४६	
२३२	रमानन्द खनाल	२०४६	
२३३	गोकुलचन्द्र आचार्य	२०४७	
२३४	इन्द्रविलास गौतम	२०४७	
२३५	ओमप्रकाश पोखेल	२०४७	
२३६	महेन्द्र कोइराला	२०४७	
२३७	नारायण अधिकारी	२०४७	
२३८	ओमनाथ दाहाल	२०४७	
२३९	शङ्करप्रसाद भण्डारी	२०४७	
२४०	नारायण भण्डारी	२०४७	
२४१	खेमराज तिम्सिना	२०४७	
२४२	हरिमाया तिम्सिना	२०४७	
२४३	कल्पना सिग्देल	२०४७	
२४४	हेमलाल दाहाल	२०४७	
२४५	भवानीप्रसाद रिजाल	२०४७	
२४६	कृष्णप्रसाद निरौला	२०४७	
२४७	पुरुषोत्तम भट्टराई		एसएलसी२०४९
२४८	वीरेन्द्र नेपाल		एसएलसी२०५१
२४९	बुद्धिप्रसाद भण्डारी		एसएलसी२०५१
२५०	मुकुन्दप्रसाद भट्टराई		एसएलसी२०५२
२५१	शिवलाल अधिकारी		एसएलसी२०५२
२५२	बोलनाथ पोखेल		एसएलसी२०५२
२५३	बालानन्द न्यौपाने		एसएलसी२०५२
२५४	युवराज घिमिरे		एसएलसी२०५३
२५५	देवीचरण पौडेल		एसएलसी२०५३
२५६	भवानीप्रसाद खतिवडा		एसएलसी२०५३
२५७	उमानाथ कोइराला		एसएलसी२०५३
२५८	पर्शुराम पोखरेल		एसएलसी२०५४
२५९	छविलाल नेपाल		एसएलसी२०५४
२६०	त्रिलोचन सिग्देल		एसएलसी२०५४
२६१	पूर्णप्रसाद नेपाल		एसएलसी२०५४
२६२	उमानाथ पौडेल		एसएलसी२०५४

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
२६३	अच्युत भण्डारी		एसएलसी२०५५
२६४	गोकर्ण अधिकारी		एसएलसी२०५५
२६५	गङ्गाराम नेपाल		एसएलसी२०५५
२६६	शेखर दाहाल		एसएलसी२०५५
२६७	कमलप्रसाद अधिकारी		एसएलसी२०५६
२६८	चन्द्रप्रकाश अधिकारी		एसएलसी२०५६
२६९	डिल्लीराम दाहाल		एसएलसी२०५७
२७०	गणेश भट्टराई		एसएलसी२०५७
२७१	खेमराज रिमाल		एसएलसी२०५७
२७२	खेमराज नेपाल		एसएलसी२०५७
२७३	नवराज कोइराला		एसएलसी२०५७
२७४	सरोज भट्टराई		एसएलसी२०५७
२७५	यज्ञराज दाहाल		एसएलसी२०५७
२७६	केशवप्रसाद खतिवडा		एसएलसी२०५८
२७७	खेमराज प्याकुरेल		एसएलसी२०५८
२७८	गोपीकृष्ण लुईँटेल		एसएलसी२०५८
२७९	टङ्क वस्ती		एसएलसी२०५८
२८०	डिल्लीराम खतिवडा		एसएलसी२०५८
२८१	मदन अधिकारी		एसएलसी२०५८
२८२	मदन अधिकारी		एसएलसी२०५८
२८३	होमनाथ दाहाल		एसएलसी२०५८
२८४	छविरमण अधिकारी		एसएलसी२०५९
२८५	पदमकुमार खतिवडा		एसएलसी२०५९
२८६	भवानी अधिकारी		एसएलसी२०५९
२८७	शान्तिराम मिश्र		एसएलसी२०५९
२८८	सन्तोष न्यौपाने		एसएलसी२०५९
२८९	शान्तिराम सुवेदी		एसएलसी२०५९
२९०	सुरेन्द्र सापकोटा		एसएलसी२०५९
२९१	केशव नेपाल		एसएलसी२०६०
२९२	टीकाराम नेपाल		एसएलसी२०६०
२९३	डिल्लीराम अधिकारी		एसएलसी२०६०
२९४	दामोदर नेपाल		एसएलसी२०६०
२९५	पूर्णचन्द्र रेग्मी		एसएलसी२०६०
२९६	महेश्वर कोइराला		एसएलसी२०६०
२९७	शङ्कर नेपाल		एसएलसी२०६०
२९८	पृथ्वीविलाश पौडेल		एसएलसी२०६०
२९९	चक्रबन्धु अर्याल		एसएलसी२०६१
३००	चिरञ्जीवी नेपाल		एसएलसी२०६१

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
३०१	होमनाथ न्यौपाने		एसएलसी२०६१
३०२	केशव भट्टराई		एसएलसी२०६१
३०३	कमल भट्टराई		एसएलसी२०६१
३०४	लक्ष्मण भण्डारी		एसएलसी२०६१
३०५	मनेन्द्र भट्टराई		एसएलसी२०६१
३०६	नरेन्द्र निरौला		एसएलसी२०६१
३०७	राजन निरौला		एसएलसी२०६१
३०८	शेखर दाहाल		एसएलसी२०६१
३०९	टेकनाथ ओझा		एसएलसी२०६१
३१०	विजय घिमिरे		एसएलसी२०६१
३११	खगेन्द्र मिश्र		एसएलसी२०६१
३१२	खेम अधिकारी		एसएलसी२०६२
३१३	चेतन दाहाल		एसएलसी२०६२
३१४	तुलसीराम भण्डारी		एसएलसी२०६२
३१५	दुर्गा निरौला		एसएलसी२०६२
३१६	नीतिराज सुवेदी		एसएलसी२०६२
३१७	लक्ष्मी तिम्सिना		एसएलसी२०६२
३१८	लीलाधर गौतम		एसएलसी२०६२
३१९	लोकनाथ खनाल		एसएलसी२०६२
३२०	कमल न्यौपाने		एसएलसी२०६३
३२१	तोया निरौला		एसएलसी२०६३
३२२	देवराज तिम्सिना		एसएलसी२०६३
३२३	प्रभुनाथ भट्टराई		एसएलसी२०६३
३२४	सुदर्शन खतिवडा		एसएलसी२०६३
३२५	गोपाल न्यौपाने		एसएलसी२०६३
३२६	कृष्ण भण्डारी		एसएलसी२०६४
३२७	लक्ष्मण भण्डारी		एसएलसी२०६४
३२८	मेघनाथ दाहाल		एसएलसी२०६४
३२९	राम भण्डारी		एसएलसी२०६४
३३०	सोमनाथ भट्टराई		एसएलसी२०६४
३३१	शम्भु गौतम		एसएलसी२०६४
३३२	युवराज कोइराला		एसएलसी२०६४
३३३	विकाश पैडेल		एसएलसी२०६५
३३४	गङ्गाप्रसाद गौतम		एसएलसी२०६५
३३५	हेमप्रसाद रिजाल		एसएलसी२०६५
३३६	ख्यामराज पौडेल		एसएलसी२०६५
३३७	खेमनाथ पौडेल		एसएलसी२०६५
३३८	लय अधिकारी		एसएलसी२०६५
३३९	माधव खतिवडा		एसएलसी२०६५
३४०	निर्मल सापकोटा		एसएलसी२०६५
३४१	पीताम्वर खतिवडा		एसएलसी२०६५
३४२	सूर्यप्रसाद पराजुली		एसएलसी२०६५
३४३	तेजकुमार भट्टराई		एसएलसी२०६५
३४४	अच्युत गड्तौला		एसएलसी२०६६
३४५	एकराज भट्टराई		एसएलसी२०६६
३४६	फणीन्द्र न्यौपाने		एसएलसी२०६६
३४७	हरिप्रसाद न्यौपाने		एसएलसी२०६६
३४८	कमल खतिवडा		एसएलसी२०६६
३४९	खगेन्द्र भण्डारी		एसएलसी२०६६
३५०	मात्रिका नेपाल		एसएलसी२०६६
३५१	निरोज आचार्य		एसएलसी२०६६
३५२	अर्पण पोखे्रल		एसएलसी२०६७
३५३	कान्तिराम अधिकारी		एसएलसी२०६७
३५४	खगेन्द्र काफ्ले		एसएलसी२०६७
३५५	पदमप्रसाद निरौला		एसएलसी२०६७
३५६	युवराज पौडेल		एसएलसी२०६७
३५७	रविन भट्टराई		एसएलसी२०६८
३५८	सुबोध चापागाई		एसएलसी२०६८
३५९	सुमन दाहाल		एसएलसी२०६८
३६०	रोशन दाहाल		एसएलसी२०६८
३६१	किरण आचार्य		एसएलसी२०६८
३६२	उमेश ढुङ्गेल		एसएलसी२०६८
३६३	रोशन भण्डारी		एसएलसी२०६८
३६४	दीपक पोखे्रल		एसएलसी२०६८
३६५	नवीन खतिवडा		एसएलसी२०६८
३६६	विनोद मिश्र		एसएलसी२०६८
३६७	दीपक दाहाल		एसएलसी२०६९
३६८	सोमनाथ कोइराला		एसएलसी२०६९
३६९	राजेश कटेल		एसएलसी२०६९
३७०	तुलसीराम भण्डारी		एसएलसी२०६९
३७१	कुमार पोखे्रल		एसएलसी२०६९
३७२	रमेश खतिवडा		एसएलसी२०६९
३७३	ऋषिराम पोखे्रल		एसएलसी२०६९
३७४	शान्तिराम खतिवडा		एसएलसी२०७०
३७५	वालकृष्ण मिश्र		एसएलसी२०७०
३७६	दधिराम न्यौपाने		एसएलसी२०७०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
३७७	नारायण ओझा		एसएलसी२०७०
३७८	चन्द्र निरौला		एसएलसी२०७०
३७९	उपेन्द्र खनाल		एसएलसी२०७०
३८०	निर्मल भट्टराई		एसएलसी२०७०
३८१	रोशन खतिवडा		एसएलसी२०७०
३८२	ओमनाथ न्यौपाने		एसएलसी२०७१
३८३	महेश अधिकारी		एसएलसी२०७१
३८४	कैलाश मिश्र		एसएलसी२०७१
३८५	अर्जुन तिम्सिना		एसएलसी२०७१
३८६	गङ्गाप्रसाद अधिकारी		एसएलसी२०७१
३८७	सुजन भट्टराई		एसएलसी२०७१
३८८	मनीष ढुङ्गेल		एसएलसी२०७१
३८९	शिक्षित घिमिरे		एसएलसी२०७१
३९०	सोमनाथ ढुङ्गेल		एसएलसी२०७१
३९१	प्रज्वल भट्टराई		एसएलसी२०७१
३९२	सरोज घिमिरे		एसएलसी२०७१
३९३	अविषेक आचार्य		एसएलसी२०७१
३९४	सुनील पौडेल		एसएलसी२०७१
३९५	योगेन्द्र ढकाल		एसएलसी२०७१
३९६	डम्वरप्रसाद भट्टराई		एसएलसी२०७२
३९७	युवराज घिमिरे		एसएलसी२०७२
३९८	मेघनाथ भण्डारी		एसएलसी२०७२
३९९	रोशन पोखेल		एसएलसी२०७२
४००	सुरज खतिवडा		एसएलसी२०७२
४०१	योगेश गौतम		एसएलसी२०७२
४०२	आशिष पोखेल		एसएलसी२०७२
४०३	प्रदीप सुवेदी		एसएलसी२०७२
४०४	अर्जुनप्रसाद ढुङ्गेल		एसएलसी२०७२
४०५	महेन्द्र नेपाल		एसएलसी२०७२
४०६	सविन गड्तौला		एसएलसी२०७२
४०७	दीपक कोइराला		एसएलसी२०७२
४०८	लक्ष्मी नारायण अधिकारी		एसएलसी२०७३
४०९	सङ्कल्प पौडेल		कक्षा-१२ २०७५
४१०	तारा खनाल		एसएलसी२०७३
४११	मोहन पोखेल		कक्षा-१२ २०७५
४१२	सञ्जय शर्मा		एसएलसी२०७३
४१३	जीवन निरौला		एसएलसी२०७३

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
४१४	अर्जुन नेपाल		कक्षा-१२ २०७५
४१५	दिवस बराल		कक्षा-१२ २०७५
४१६	अर्जुन ढकाल		एसएलसी२०७३
४१७	गिरिराज कोइराला		एसएलसी२०७३
४१८	करण गौतम		एसएलसी२०७३
४१९	गोविन्द घिमिरे		एसएलसी२०७३
४२०	सौगात गुरागाई		एसएलसी२०७४
४२१	मिलन अधिकारी		एसएलसी२०७४
४२२	केशव काफ्ले		एसएलसी२०७४
४२३	घनश्याम पोखेल		एसएलसी२०७४
४२४	रमेश कोइराला		एसएलसी२०७४
४२५	हिमाल खनाल		एसएलसी२०७४
४२६	लोकेशचन्द्र पोखेल		एसएलसी२०७४
४२७	समिर गौतम		एसएलसी२०७४
४२८	रुद्रप्रसाद तिम्सिना		एसएलसी२०७४
४२९	किरण दाहाल		एसएलसी२०७४
४३०	अचित तिमिल्सेना		एसएलसी२०७५
४३१	बालकृष्ण मिश्र		एसएलसी२०७५
४३२	भुवनप्रसाद आचार्य		एसएलसी२०७५
४३३	भुवन अधिकारी		एसएलसी२०७५
४३४	विकाश सिग्देल		एसएलसी२०७५
४३५	दिनेश न्यौपाने		एसएलसी२०७५
४३६	कमल खनाल		एसएलसी२०७५
४३७	नवीन आचार्य		एसएलसी२०७५
४३८	नारायण निरौला		एसएलसी२०७५
४३९	नारायणप्रसाद पौडेल		एसएलसी२०७५
४४०	प्रदीप नेपाल		एसएलसी२०७५
४४१	रिजन दाहाल		एसएलसी२०७५
४४२	सन्देश पोखेल		एसएलसी२०७५
४४३	सन्दीप खनाल		एसएलसी२०७५
४४४	सञ्जीव नेपाल		एसएलसी२०७५
४४५	श्रीप्रसाद गौतम		एसएलसी२०७५
४४६	शिवहरि कोइराला		एसएलसी२०७५
४४७	सुमित पराजुली		एसएलसी२०७५
४४८	विकास तिम्सिना		एसएलसी२०७६
४४९	अनिश पौडेल		एसएलसी२०७६
४५०	अर्जुन निरौला		एसएलसी२०७६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
४५१	भवानी पौडेल		एसएलसी२०७६
४५२	भुपाल अधिकारी		एसएलसी२०७६
४५३	विपिन गौतम		एसएलसी२०७६
४५४	दीपक वस्ती		एसएलसी२०७६
४५५	दीपेश निरौला		एसएलसी२०७६
४५६	दिवस अधिकारी		एसएलसी२०७६
४५७	गौरीराज घिमिरे		एसएलसी२०७६
४५८	गोकुल भट्टराई		एसएलसी२०७६
४५९	गोविन्द लम्साल		एसएलसी२०७६
४६०	माधव गौतम		एसएलसी२०७६
४६१	नेशनल पोखेल		एसएलसी२०७६
४६२	निश्चल भट्टराई		एसएलसी२०७६
४६३	प्रविन सुवेदी		एसएलसी२०७६
४६४	पुरुषोत्तम दाहाल		एसएलसी२०७६
४६५	पुष्कर भण्डारी		एसएलसी२०७६
४६६	सागर ढकाल		एसएलसी२०७६
४६७	सरोज भट्टराई		एसएलसी२०७६
४६८	श्रवण देवकोटा		एसएलसी२०७६
४६९	उज्ज्वल तिम्सिना		एसएलसी२०७६
४७०	उत्तम पराजुली		एसएलसी२०७६
४७१	अनिल खतिवडा		एसएलसी२०७७

क्र.सं.	नाम	देखि	सम्म
४७२	अर्जुन पौडेल		एसएलसी२०७७
४७३	विश्वाश ढकाल		एसएलसी२०७७
४७४	छविलाल ढकाल		एसएलसी२०७७
४७५	देवकुमार गड्तौला		एसएलसी२०७७
४७६	दिनेश अधिकारी		एसएलसी२०७७
४७७	दीपेश न्यौपाने		एसएलसी२०७७
४७८	गणेश न्यौपाने		एसएलसी२०७७
४७९	गौतम पोखेल		एसएलसी२०७७
४८०	गोपाल पौडेल		एसएलसी२०७७
४८१	गोविन्द भट्टराई		एसएलसी२०७७
४८२	लीला भट्टराई		एसएलसी२०७७
४८३	माधव घिमिरे		एसएलसी२०७७
४८४	मिलन वराल		एसएलसी२०७७
४८५	प्रदीप कट्टेल		एसएलसी२०७७
४८६	प्रकाश ढकाल		एसएलसी२०७७
४८७	प्रसन्न कोइराला		एसएलसी२०७७
४८८	पूजन पौडेल		एसएलसी२०७७
४८९	सीताराम दाहाल		एसएलसी२०७७
४९०	सुजल दुङ्गेल		एसएलसी२०७७
४९१	सुजन नेपाल		एसएलसी२०७७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट २
भूमिसम्बन्धी विवरण (जम्मा क्षेत्रफल १-२-१८.५)

क्र. सं.	मिति	क्षेत्रफल	मूल्य	दाताको नाम	ठेगाना
१	२०२८।८।१६	०-०-१५	निःशुल्क	नन्दिकेश्वर तिम्सिना	चारपाने ३
२	२०३६।१०।१९	०-१-०	निःशुल्क	डिल्लीराम भण्डारी	अर्जुनधारा ५
३	२०३६।१०।१९	०-१-०	१,०००	सहयोगी महानुभावहरूः खगनाथ भण्डारी, चारपाने रु. १४०, केदारनाथ खतिवडा, साधुटार रु. ११०, पुष्पलाल भण्डारी, चारपाने रु. १०१, अग्निप्रसाद मिश्र, ढ्याङ्ग्रे रु. १००, वासुदेव (भीमप्रसाद) रेग्मी, साधुटार रु. १००, विष्णुभक्त भण्डारी, चारपाने रु. १००, लोकनाथ खनाल, चारपाने रु. ६१, बलभद्र खनाल, केरखा रु. ५०, रविलाल खतिवडा, चारपाने रु. ५०, यामनाथ पौड्याल, लखनपुर रु. ५०, झुनप्रसाद तिम्सिना, चारपाने रु. ४०, अग्निप्रसाद खतिवडा, चारपाने रु. ३०, पुष्पलाल खतिवडा रु. २५, होमप्रसाद (हेमनाथ) तिम्सिना, चारपाने रु. २०, खडानन्द पौड्याल, चारपाने रु. २०, लोकनाथ पौड्याल, चारपाने रु. २०, पर्शुराम ओझा, चारपाने रु. २०, खेमनाथ ओझा, चारपाने रु. २०, देवीप्रसाद पौड्याल, चारपाने रु. २०, देवप्रसाद खनाल, चारपाने रु. १०, हरिप्रसाद भण्डारी, चारपाने रु. १०, यदुनाथ भण्डारी, चारपाने रु. १०, गङ्गाराम अधिकारी, चारपाने रु. १०, नन्दराम पौड्याल, चारपाने रु. १०, तोयानाथ अधिकारी, चारपाने रु. ५।	
४	२०४०।२।-	०-२-०	४,०००	आश्रमीय कोष	
५	२०४४।११।६	०-३-०	२९,५००	सहयोगी महानुभावहरूः स्वामी चन्द्रशेखरानन्द, विवेकाश्रम, १६००, चन्द्रकला पौडेल, सतासीधाम, १०००, देवका गुरागाईं, सतासी, दुधे, ५००, पं. टेकनाथ गौतम, लखनपुर रु. ५००, विष्णुभक्त भण्डारी, चारपाने रु. ५००, लोकनाथ खनाल, चारपाने रु. ५००, मोहनकुमार सङ्ग्रौला, गोलधाप रु. २१०, रनबहादुर बेघा, गोलधाप रु. १०५, पुष्पलाल भण्डारी, चारपाने रु. १०५, खगनाथ भण्डारी, चारपाने रु. १०१। होमनाथ भण्डारी, चारपाने, रु. १००, घनश्याम भण्डारी, सेती अञ्चल, रु. ७२, ब्र. देवीदत्त पौड्याल, वराहक्षेत्र, रु. ५०, हरिप्रसाद तिम्सिना, सिक्किम, रु. २०।	
६	२०६३।२।१२	०-१-०	निःशुल्क	भद्रशिला भण्डारी	अर्जुनधारा ५
		०-१-०	निःशुल्क	नवीन अग्रवाल साबरथिया	काठमाडौं
		०-१-०	निःशुल्क	पुष्पलाल भण्डारी	चारपाने ३
		०-१-०	निःशुल्क	नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी	दुहबी, सुनसरी
		०-१-०	निःशुल्क	घनश्याम तिम्सिना	चारपाने ३
७	२०६४।३।११	०-१-११	२,५५,७५०	आश्रमीय कोष	
८	२०६४।४।२९	०-१-०	निःशुल्क	खगनाथ भण्डारी	चारपाने ३
९	२०७२।२।२७	०-०-११.५	६,९०,०००	आश्रमीय कोष	

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०	२०७२।२।२७	०-२-१८.५	२५,२०,०००	सहयोगी महानुभावहरू: धनपति र धनमाया भट्टराई, बिर्तामोड, रु. १,२०,०००, पं. विष्णुभक्त र मेनका भण्डारी, चारपाने रु. ६०,०००, भक्तिप्रसाद र देवीमाया पोखेल, बिर्तामोड, रु. ६०,०००, लेखनाथ र स्व. मेनकादेवी पोखेल, बिर्तामोड, रु. ६०,०००, पुण्यराज र षड्कुमारी (पुनम) राई, काँकरभिट्टा, रु. ६०,०००, डम्बरबहादुर र देवीमाया कार्की, अर्जुनधारा ५, रु. ३०,०००, दामोदर र इन्दिरा न्यौपाने, चारपाने रु. ९,०००।	
११	२०७३।२।१३	०-०-१६.७५	५,४०,०००	आश्रमीय कोष	
१२	२०७३।२।१३	०-०-२	१,२०,०००	आश्रमीय कोष	
१३	२०७८।६।५	०-०-११.२५	२२,५०,०००	आधा धुर वा भन्दा बढी जग्गा आउने रकम उपलब्ध गराउने महानुभावको नामावली फोटोसहितको जग्गादाता नामावलीमा दिइएको छ। बाँकी सहयोगी महानुभावहरू: निर्जला प्रसाईं बिर्तामोड न.पा.–१, पञ्चकन्या, रु. ३०,०००, केदारनाथ र खिमादेवी गौतम, बिर्तामोड–२, सूर्यचोक, रु. २५,०००, हेमकुमारी र श्यामकुमार पाठक, बिर्तामोड–४, बिर्तबजार, रु. ११,१२५, इन्दिरा र मात्रिकाप्रसाद पाठक, बिर्तामोड–७, गरामनी, रु. ११,१०५, रामबहादुर र कमला भण्डारी, बिर्तामोड–३, भगवानचौक, रु. ४,१०५।	
१४	२०७८।९।७	०-२-८	१६,००,०००		
१५	२०७८।९।७	०-०-४.५	४,५०,०००		
१६	बाटोका लागि	०-१-१४.५	निःशुल्क	पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना	पश्चिमतिरबाट आश्रमपरिसरमा आउने बाटो
१७	बाटोका लागि	०-०-८	निःशुल्क	पुष्पलाल भण्डारी	दक्षिणतिरबाट आश्रमभित्र छिर्ने बाटो
१८	बाटोका लागि	०-०-१०	निःशुल्क	धैरजप्रसाद राजवंशी	जीवनाथ तिम्सिनाको घरअगाडिको चौबाटोबाट गाउँतिर पस्ने बाटो

उपर्युक्त जग्गा खरिदका लागि रकम सहयोग गर्ने महानुभावहरूमध्ये उहाँहरूले उपलब्ध गराएको रकमले तत्कालीन मूल्यमा आधा धुर वा सोभन्दा बढी जग्गा आउने अवस्था रहेमा त्यस्ता महानुभावहरूको नाम फोटोसहितको भूमिदाता महानुभावहरूको नामावलीमा समेत समावेश गरिएको छ। जग्गा खरिदमा घटीबढी रकम आश्रमले व्यहोरेको छ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट ३

श्रीरामजानकी मन्दिर जिर्णोद्धारमा सहयोगी दाताहरूको नामावली २०५७-५८

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	रकम
१	भद्रशिला भण्डारी	अर्जुनधारा—६	१५०,००१।००
२	पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना	चारपाने—३	२१,०००।००
३	पं. टेकनाथ र भीमादेवी गौतम	लखनपुर—४, झापा	१२,५११।००
४	विष्णुभक्त भण्डारी	चारपाने—३, झापा	११,००५।००
५	डिल्लीराम र भागीरथा भण्डारी	अर्जुनधारा—६	११,००६।००
६	लोकनाथ खनाल	चारपाने—३, झापा	५,२०१।००
७	लहेन्द्रप्रसाद र धनमाया भट्टराई	चारपाने—३, झापा	१,१११।००
८	दाताराम तिम्सिना	अनारमनी—६, झापा	१,१११।००
९	नन्दराम र नन्दमाया पौडेल	चारपाने—३, झापा	५,००५।००
१०	घनश्याम कडरिया	धुलाबारी, मे.न.पा	१,१११।००
११	लीलाबहादुर कटुवाल	चारपाने—१, झापा	१,१११।००
१२	जगन्नाथ र निर्मला भण्डारी	चारपाने—३, झापा	५,१०१।००
१३	पर्शुराम र कमला ओझा	चारपाने—३, झापा	५,५०१।००
१४	दामोदर र इन्दिरा न्यौपाने	चारपाने—३, झापा	५,५०१।००
१५	देवीप्रसाद खनाल	चारपाने—३, झापा	२,१११।००
१६	देवीप्रसाद र उमादेवी पौडेल	चारपाने—३, झापा	२,१११।००
१७	खडानन्द पौडेल	चारपाने—३, झापा	१,१०१।००
१८	खिमनाथ ओझा	चारपाने—३, झापा	१,१०१।००
१९	अग्निप्रसाद खतिवडा	चारपाने—३, झापा	१,१०१।००
२०	छविलाल र अनिता नेपाल	चारपाने—३, झापा	१,१११।००
२१	जीवनाथ भण्डारी	मे.न.पा.—५, धुलाबारी	५,१००।००
२२	लोकनाथ पौडेल	चारपाने—३, झापा	१,१०१।००
२३	सेमन्तमणि भण्डारी	चारपाने—३, झापा	१,००१।००
२४	गङ्गाप्रसाद कडरिया	धाइजन—८, झापा	१,००५।००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५	पवित्रा मैनाली	दमक—१०, झापा	१,०००।००
२६	भीमप्रसाद दाहाल	धाइजन—७,	१,०१५।००
२७	शेखर कडरिया	मे.न.पा.—४, धुलाबारी	१,१५१।००
२८	चन्द्रप्रसाद खरेल	चकचकी—७	१,१०१।००
२९	चूडामणि भण्डारी	मे.न.पा.—५, धुलाबारी	१,१०१।००
३०	रामप्रसाद पौडेल	सतासी—८, आँपटारी,	१,५०२।००
३१	कुलप्रसाद ओली	दमक—१०, झापा	१,०११।००
३२	रममाया पौडेल	पथरी—९, मोरङ	१,०५५।००
३३	शिवप्रसाद सङ्ग्रौला	चारपाने—८, चैतुवारी	१,००५।००
३४	देवराज पौडेल	लखनपुर—४	१,०११।००
३५	यज्ञस्वरूप ब्रह्मचारी	गोल्धाप	२,००१।००
३६	तुलसीप्रसाद खरेल	डाँगीबारी—८	१,१११।००
३७	जयेन्द्र प्रसाईं	अनारमनी—१, बुट्टाबारी	१,११५।००
३८	भगीरथ सुवेदी	मे.न.पा.—६, धुलाबारी	१,१०१।००
३९	भूपेन्द्र अर्याल	कन्याम, इलाम	१,५०१।००
४०	चिरञ्जीवी गुरागाईं	महाभारा—५	१,१२५।००
४१	अग्निप्रसाद मिश्र	लखनपुर—२	१,१०५।००
४२	केदारनाथ खतिवडा	खुदुनाबारी—१, साधुटार	२,२०१।००
४३	गोविन्द पौडेल	लखनपुर—५	१,००१।००
४४	परमा अधिकारी	अनारमनी—१	१,१०५।००
४५	पुष्पस्वरूपानन्द ब्रह्मचारी	काठमाडौं	१,१११।००
४६	पं. छन्दुराम र गङ्गादेवी भण्डारी	खुदुनाबारी—१, साधुटार	१,५०१।००
४७	नन्दी ढकाल	शान्तिनगर—१, बर्ने	१,१०२।००
४८	पं. माधवशरण नेपाल	चारपाने—२	१,१११।००
४९	मेनुका चापागाईं	बुधबारे—५	१,००५।००
५०	इन्दिराज पौडेल	चकचकी—७	२,१३१।००
५१	अमृतबहादुर कटुवाल	दमक—१३	१,१११।००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५२	पर्शुराम गुरागाईं	हिरुवादिन, ताप्लेजुङ	१,००५।००
५३	जगन्नाथ पौडेल	दमक न.पा.—११	१,१०१।००
५४	हेमलाल सुवेदी	दमक न.पा.—१	१,१००।००
५५	खेमराज भण्डारी	सुभाङ—७, पाँचथर	१,००१।००
५६	डमरुप्रसाद गौतम	लखनपुर—४	१,११२।००
५७	देवीप्रसाद भण्डारी	गरामनी—१	१,१०५।००
५८	दिलकुमार सङ्ग्रौला	अनारमनी—४	१,१११।००
५९	डिल्लीराम र कृष्णमाया भण्डारी	चारपाने—३	१,००१।००
६०	देवनारायण अधिकारी	अनारमनी—१	१,५०१।००
६१	पं. भवानीशङ्कर निरौला	बिराटनगर—६	१,०२२।००
६२	चन्द्रप्रसाद तिम्सिना	चारपाने—३	१,१०१।००
६३	नन्दिकेशर ढकाल	साँखेजुङ—६, इलाम	५०१।००
६४	रनमाया खनाल	चारपाने—३	१,००१।००
६५	हरिप्रसाद खरेल	मे.न.पा—४, धुलाबारी	१,००५।००
६६	कपिलेश्वर दास	चारपाने—२	२५,०००।००
६७	मुनिलाल दास	बिर्तामोड	५,०००।००
६८	मित्रनाथ कोइराला	अनारमनी—६	१,००१।००
६९	विष्णुस्वरूप ब्रह्मचारी	विवेकाश्रम चारपोन—३	१,५०१।००
७०	सोमनाथ भण्डारी	मसुरिया—७, शङ्करपुर, कैलाली	३,५०१।००
७१	दिलीपकुमार ढुङ्गेल	दुहबी—३, सुनसरी	६,००२।००
७२	जीवन ढुङ्गेल	दुहबी—३, सुनसरी	५,००१।००
७३	हरिचरण ढुङ्गेल	दुहबी—३, सुनसरी	१,००१।००
७४	विष्णु पाण्डे	काठमाडौं	२,०००।००
७५	हेमप्रसाद भट्टराई	सोनापुर—२, सुनसरी	१,१००।००
७६	गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी	मुमुक्षुभवन, वाराणसी	२,००५।००
७७	कृष्णप्रसाद प्रसाईं	मे.न.पा, धुलाबारी	१,१५१।००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७८	गङ्गाप्रसाद पनेरु	मे.न.पा, धुलाबारी	१,१५११००
७९	खडानन्द शिवाकोटी	मे.न.पा—४, धुलाबारी	१,१५११००
८०	होमादेवी खरेल	मे.न.पा.—४, धुलाबारी	१,००५१००
८१	हरिप्रसाद ओली	मे.न.पा.—४, धुलाबारी	१,००५१००
८२	पं. होमनाथ खनाल	शनिश्चरे—९, बाह्रघरे	१,५०११००
८३	बोधकुमार मैनाली	सुरुङ्गा	५,००५१००
८४	ताराप्रसाद खतिवडा	माङ्लेबुङ, पाँचथर	१,३००१००
८५	मोहनलाल अग्रवाल	भद्रपुर नगरपालिका	२,०००१००
८६	परमानन्द घिमिरे	साङ्गवेद पाठशाला साधुटार	१,१०११००
८७	पं. लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा	खुदुनाबारी—१	३,१०११००
८८	बालकृष्ण खतिवडा	खुदुनाबारी—१	१,१०११००
८९	तुलसीराम खतिवडा	खुदुनाबारी—१	१,००११००
९०	कर्णाखर खतिवडा	खुदुनाबारी—१	१,००२१००
९१	बद्रीनाथ खतिवडा	चारपाने—३	१,०१२१००
९२	विष्णुप्रसाद पौडेल	पथरी, मोरङ	२,१०११००
९३	श्रीप्रसाद पौडेल	दमक न.पा.	१,१०११००
९४	तेजबहादुर थापा	घैलाडुब्बा—५	१,१०११००
९५	तुलसीप्रपन्न दास	निजगड—२, बारा	१,००११००
९६	पुष्पलाल अधिकारी	गरामनी—४	१,००५१००
९७	केशवप्रसाद खतिवडा	सतासी—८, टेक्रा	१,१११०००
९८	गदाधर निरौला	सुम्बेक—३, इलाम	१,०१६१००
९९	केदारनाथ गौतम	अनारमनी—६	१,००११००
१००	लक्ष्मीनारायण भट्टराई	चारपाने—३	१,००११००
१०१	नरनाथ घिमिरे	चारपाने—३	१,१०११००
१०२	रामचन्द्र शाह	चारपाने—३	१,१०११००
१०३	जगन्नाथ सापकोटा	चारपाने—३	१,०१११००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०४	छविलाल र कमलादेवी भण्डारी	चारपाने—३	२,१०१।००
१०५	देवीप्रसाद सापकोटा	चारपाने—३	१,००१।००
१०६	रमानाथ र रुक्मिणा खतिवडा	चारपाने—३	१,००१।००
१०७	कीर्तिमाया अधिकारी	पथरी—२, मोरङ	१,०११।००
१०८	जीवनाथ बराल	चारपाने—३	१,००१।००
१०९	गोपीचन्द्र भट्टराई	अनारमनी—६	१,१००।००
११०	जनकलाल सुवेदी	चारपाने—३	१,००१।००
१११	कृष्णप्रसाद खनाल	चारपाने—३	१,०११।००
११२	रेणुका घिमिरे	लखनपुर—४, गुहावारी	२,१०५।००
११३	नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी	दुहबी—३, सुनसरी	५,००१।००
११४	पं. भानुभक्त अधिकारी	अनारमनी—१, बुट्टाबारी	१,१११।००
११५	विष्णुभक्त भण्डारी (स्व. खिलादेवी दाहालको पुण्यस्मृतिमा)	चारपाने—३	१,१११।००
११६	नरप्रसाद खरेल	चकचकी—७	१,१११।००
११७	रविलाल खरेल	चकचकी—७	१,१११।००
११८	तुलसीप्रसाद कँडेल	डाँगीबारी	१,००१।००
११९	ओमप्रकाश डाँगी	डाँगीबारी—६	१,१०१।००
१२०	रामचन्द्र भट्टराई	चारपाने—३	१,१११।००
१२१	घनश्याम दाहाल	चारपाने—२	१,०१२।००
१२२	पद्मलाल खतिवडा	साधुटार	१,००१।००
१२३	डिल्लीराम रिजाल	साधुटार	१,१००।००
१२४	भीमप्रसाद रेग्मी	साधुटार	१,०२१।००
१२५	लीलादेवी पौडेल (स्व. पति उदयराजको पुण्यस्मृतिमा)	अनारमनी—१	५,१०१।००
१२६	देवीप्रसाद दाहाल	इटहरा—४, मोरङ	१,१११।००
१२७	नेत्रप्रसाद दाहाल	इटहरा—४, मोरङ	१,१११।००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२८	घनश्याम भट्टराई	माइमजुवा—१, इलाम	१,००५।००
१२९	चन्दकला अधिकारी	लखनपुर—४	१,०११।००
१३०	सरस्वता खतिवडा	साधुटार	१,१११।००
१३१	भक्तिमाया तिम्सिना	चारपाने—३	१,५५१।००
१३२	टीकादेवी खरेल	चारपाने—४	२,०११।००
१३३	उमानाथ नेपाल (विद्यार्थी)	साङ्गवेद सं.मा.वि,, चारपाने	१,१५१।००
१३४	शान्तिराम सुवेदी (विद्यार्थी)	साङ्गवेद सं.मा.वि,, चारपाने	१,००१।००
१३५	पूर्णचन्द्र रेग्मी (विद्यार्थी)	साङ्गवेद सं.मा.वि,, चारपाने	१,१५५।००
१३६	विद्यार्थी समूह	साङ्गवेद सं.मा.वि,, चारपाने	१,६४७।००
१३७	देवका गुरागाईं	सुरुङ्गा, कोटिहोम	१,१०१।००
१३८	शिवप्रसाद बराल	सुरुङ्गा—२, जामुनबारी	१,०११।००
१३९	पं. काशीनाथ दहाल	लखनपुर—३	१,१११।००
१४०	त्रिलोचन कडरिया	सतासी—३	१,१११।००
१४१	नारदमुनि काफ्ले	पथरी—२, मोरङ	१,०५१।००
१४२	खड्गप्रसाद नेपाल	राजघाट, दुर्गापुरी, मोरङ	१,००५।००
१४३	मधुसूदन प्रपन्न	अनारमनी—५	१,१११।००
१४४	चन्द्र पौडेल	सतासी—९, दुधे	१,१०५।००
१४५	छविलाल खरेल	मे.न.पा.—५, धुलाबारी	१,०११।००
१४६	चिन्तामणि दहाल	इटहरा—४, मोरङ	१,००५।००
१४७	नेत्रप्रसाद कोइराला	चारपाने—१, बैंसाबाडी	४,१५१।६०
१४८	देवीभक्त श्रेष्ठ	हिकोला परिवार, बिर्तामोड	५,१००।००
१४९	दधिराम पौडेल	चारपाने—३,	१,१११।००
१५०	तोयानाथ भण्डारी	चारपाने—३	१,१११।००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५१	तुलसीराम भण्डारी	चारपाने—३	१,१५१।००
१५२	आनन्द आचार्य	अनारमनी—३, बिर्तामोड	१,००१।००
१५३	पवित्रा पौडेल	चारपाने—३	१,००१।००
१५४	अम्बिका कोइराला	लखनपुर—५	१,००५।००
१५५	कमलनाथ ढकाल	राजगढ—३, बुट्टाबारी	१,००५।००
१५६	रोहिणीप्रसाद गौतम	खेलपुर, तेह्रथुम	१,०११।००
१५७	बोधराज गौतम	गोल्धाप	१,०११।००
१५८	रामप्रसाद ढकाल	ढुकुरपानी	१,१०१।००
१५९	विष्णुभक्त खतिवडा	साधुटार	१,००१।००
१६०	रघुनाथ तिम्सिना	खुदुनाबारी—१, साधुटार	१,००५।००
१६१	रामप्रसाद भण्डारी	शनिश्चरे—९, मोरङ	१,००१।००
१६२	पूर्णबहादुर खड्का	चारपाने—३	१,१०१।००
१६३	रविनकुमार खड्का	अर्जुनधारा—५	१,१०१।००
१६४	पर्शुराम पौडेल	महाभारा	१,००१।००
१६५	भोला धिताल	चारपाने—३	१,५०१।००
१६६	डा. धर्मकान्त बाँस्कोटा	काठमाडौं	२,५०१।००
१६७	यमुना बाँस्कोटा	काठमाडौं	२,५०१।००
१६८	छत्रकुमार लुइँटेल	चारपाने—४, बेलडाँगी	१,०११।००
१६९	पं. गुरुप्रसाद पोखेल	अनारमनी	६२०।००
१७०	गङ्गाराम अधिकारी	चारपाने—३	५०१।००
१७१	देवका उप्रेती	मे.न.पा—४, माउरवाडी	५११।००
१७२	पवित्रा मैनाली	सुरुङ्गा—६, चप्रामारी	५००।००
१७३	सरस्वता गौतम	चारपाने—३	५००।००
१७४	कमलकुमार पौडेल	इलाम—२, माइमजुवा	५०१।००
१७५	रेणुका तिम्सिना	लखनपुर	५०१।००
१७६	तिलरूपा तिम्सिना	मे.न.पा., धुलाबारी	२०१।००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७७	रामकुमारी अधिकारी	सतासी—९ दुधे	२००।००
१७८	उमानाथ अधिकारी	सतासी—९ दुधे	३०१।००
१७९	धनमाया भण्डारी	दमक, बाह्रघरे	१०२।००
१८०	हरिमाया कोइराला	चारपाने—३	२०२।००
१८१	ढुण्डीराज भण्डारी	पाँचथर, सुभाङ—३	३२१।००
१८२	मेघराज दाहाल	चारपाने—३	२५१।००
१८३	डिल्लीराम सापकोटा	अर्जुनधारा—७, बैंसाबाडी	१०२।००
१८४	श्री १०८ नारायणानन्द सरस्वती	उत्तरकाशी, सौराहा	१०१।००
१८५	लक्ष्मीदेवी मिश्र	सुभाङ—२, एकचेपा	२५।००
१८६	मायानाथ भण्डारी	चारपाने—६	२६।००
१८७	कुलप्रसाद खतिवडा	शनिश्चरे, सेतीपानी	१०१।००
१८८	नीलकण्ठ सापकोटा	मङ्गलबारे, थापाडाँगी	२५०।००
१८९	विद्या गिरी माता	कोटिहोम, माई	२००।००
१९०	रूपनारायण पौडेल	चकचकी—७, बाह्रदशी	१५०।००
१९१	परमानन्द गिरी (मौनी बाबा)	माईधार	२१।००
१९२	परमानन्द अधिकारी	अनारमनी—१	१०१।००
१९३	खगनाथ र यमुनादेवी भण्डारी	चारपाने—३	२,१००।००
		जम्मा	४,९१,११०।६०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट ४

यज्ञशाला जीर्णोद्धारमा सहयोगी दाताहरूको नामावली २०७६-७७

क्र.सं.	नाम थर	ठेगाना	रकम
१	विष्णुभक्त भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	५१,०२५।
२	लोकनाथ खनाल	बिर्तामोड न.पा.-२	५१,०००।
३	प्रज्ञा घिमिरे	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।
४	पुष्पलाल शर्मा (भट्टराई)	सिक्किम	१०,१६०।
५	टीकादेवी घिमिरे	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	२,१००।
६	ललित दाहाल		१,५००।
७	लोकनाथ भण्डारी	कैलाली	१,१००।
८	नन्दराम र नन्दमाया पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२	३१,०००।
९	झुनप्रसाद र भोमादेवी तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	५,०००।
१०	चन्द्रप्रकाश आचार्य	बिर्तामोड न.पा.-२	७५०।
११	गुरुप्रसाद तिम्सिना	कनकाई न.पा.-१	१,१००।
१२	योगेश अग्रवाल	सिलिगुडी (बङ्गाल)	८०,०००।
१३	खेमनाथ र खिममाया ओझा	बिर्तामोड न.पा.-२	३,१००।
१४	मोहन र निता ओझा	बिर्तामोड न.पा.-२	३,१००।
१५	खडानन्द र पवित्रा पौड्याल	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
१६	रनमाया पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२	१०,०००।
१७	गणेशकुमार ओली	बिर्तामोड	५१,०००।
१८	टीकादेवी र हरिप्रसाद खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२	२५,००५।
१९	बुद्धिप्रसाद पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
२०	नरहरि र हरिमाया उप्रेती	सुभाङ-६	५,०००।
२१	मदनकुमार अधिकारी	अर्जुनधारा न.पा.-५	१,१००।
२२	यमनाथ सुवेदी	अर्जुनधारा न.पा.-५	५००।
२३	सुभाखर र उमा कँडरिया	बिर्तामोड न.पा.-९	५,१००।
२४	छविलाल र भागीरथा सापकोटा	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२५	अम्बरबहादुर र मधुमाया गिरी	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
२६	होमनाथ र लक्ष्मीदेवी भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
२७	चीनमाया अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२	५,५११।
२८	रुद्र र विमला काफ्ले	कचनकवल गा.पा.-७	५,१००।
२९	देवीप्रसाद र टङ्कमाया खनाल	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	११,१००।
३०	सुसन र अनुराधा कोइराला	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१	चन्द्रप्रसाद बजगाईं	बिर्तामोड न.पा.-१	२१,५००।
३२	हरिशंकर अग्रवाल	बिर्तामोड न.पा.-२	२७,१२५।
३३	मोहन र शिला ढकाल	बिर्तामोड न.पा.-१	२५,०००।
३४	इन्दिराज र पुष्पा पौडेल	दमक न.पा.-५	२१,०००।
३५	लेखनाथ खनाल	बिर्तामोड न.पा.-२	१ नं. इँटा १५०० थान
३६	जयनारायण र अन्जना ढुङ्गाना	बिर्तामोड न.पा.	५५,०००।
३७	प्रदीप पोख्रेल	बिराटनगर-३	१,१००।
३८	रमेशप्रसाद दाहाल	बिराटनगर-१२	५०५।
३९	मेदनी र नन्दमाया शिवाकोटी	बिर्तामोड-३	११,१११।
४०	भानुप्रसाद र लीला शिवाकोटी	बिर्तामोड-१	११,१११।
४१	श्याम र सरोज वंशल	बिर्तामोड न.पा.-४	४४,६२५।
४२	पूर्णानन्द र कमला तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	५,५००।
४३	पन्त प्रतिष्ठान (स्व. कमलापति र गङ्गादेवीको पुण्यस्मृतिमा)	सिद्धार्थनगर	५५,५५५।
४४	देवीप्रसाद पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१२५।
४५	यशोदा खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
४६	रिता निरौला	शिवसत्ताक्षी दुधे	१,१००।
४७	वेनु र सीता भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	११,०००।
४८	गोमादेवी खतिवडा	गायत्री मन्दिर, सुरुङ्गा	२,१००।
४९	जयन्ता आचार्य	धनगढी, कैलाली	२,१००।
५०	लीलादेवी गौतम	पश्चिम बङ्गाल, भारत	१,०००।
५१	लहेन्द्रप्रसाद र धनमाया भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
५२	टङ्कनाथ र पिङ्गला गौतम	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	६,१००।
५३	भीमादेवी चापागाईं	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१००।
५४	अम्बिका नेपाल	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,००५।
५५	तोयानाथ भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	२,१००।
५६	उमाकान्त भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१००।
५७	केदारनाथ अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,००५।
५८	स्व. पूर्णबहादुर र टीकामाया बस्नेत	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
५९	दीनानाथ र विष्णुमाया सिग्देल	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	११,१११।
६०	गणेशप्रसाद प्याकुरेल	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१००।
६१	नारद र तारा अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
६२	प्रजापति र खगमाया घिताल	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	७,१००।
६३	दिनेश र शिला चापागाईं घिमिरे	नागरिकटोल, रामचौक	५,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६४	सीताराम हरिकीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
६५	कृष्णप्रसाद सङ्ग्रौला	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१००।
६६	प्रतिमन र ईश्वरा खड्का	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१०५।
६७	बद्रीप्रसाद भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
६८	केदारनाथ गौतम	बिर्तामोड न.पा.-३, सूर्यनगर	२,१००।
६९	वासुदेव र लक्ष्मीकुमारी भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२	१०,१००।
७०	रुक्म र लच्छिमादेवी चापागाई	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
७१	कमल र यमुना मिश्र	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
७२	श्याम र सुनिता पोख्रेल	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१११।
७३	यदुनाथ अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१,१११।
७४	सुरज र नारायणी भण्डारी	अर्जुनधारा न.पा.-५	५,१००।
७५	सरिता अग्रवाल	कुमार पाडा (भारत)	१,७६०।
७६	गङ्गाराम र राधिका अधिकारी	बिर्तामोड न.पा-२, रामचौक	१,५००।
७७	तुलसा र देवीप्रसाद सापकोटा	बिर्तामोड न.पा-२, रामचौक	१,५००।
७८	दुर्गाप्रसाद र मनमाया पनेरु	बुद्धशान्ति गा.पा.-२, जयपुर	१,१११।
७९	विष्णुप्रसाद ओली	बिर्तामोड न.पा.-२, चैतुबारी	५,०००।
८०	उमाकान्त ढुङ्गेल	अर्जुनधारा न.पा.-५	२,५००।
८१	टीकादेवी पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-१	१,१००।
८२	विष्णुलक्ष्मी कीर्तन मण्डली सिद्धेश्वर	बाह्रदशी गा.पा.-६, गौरीगञ्ज	१,५०५।
८३	तुलसीप्रसाद कँडेल	बाह्रदशी गा.पा.-६	१,११०।
८४	गोविन्दप्रसाद उप्रेती	बाह्रदशी गा.पा.-६	१,११०।
८५	उमाप्रसाद पोख्रेल	रतुवामाई-६, मोरङ	१,११५।
८६	लक्ष्मीनारायण भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१००।
८७	निता शर्मा	बिर्तामोड न.पा.-४	५,०००।
८८	माधवी श्रेष्ठ, शेषराज र कुन्नु श्रेष्ठ	बिर्तामोड न.पा.-४	५,१००।
८९	यदुनाथ र दुर्गा खतिवडा	कनकाई न.पा.-४	१,५००।
९०	रामप्रसाद र देवी सिटौला	बिर्तामोड न.पा.-२, बालकल्याण	२,१००।
९१	सनातन कीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-२	६,०१५।
९२	तुलसी र रमा भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।
९३	दुर्गादेवी निरौला	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
९४	किशोर र मीना गौतम	बिर्तामोड न.पा.-२, विवेकाश्रम	११,०००।
९५	प्रगति फूलबारी कीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-५	१,११०।
९६	कमल र शान्ता अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।
९७	हरिभक्त शिवाकोटी	बिर्तामोड न.पा.-२	५,०००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९८	डम्बर र सीता देउजा	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।
९९	अनन्तराम र दुर्गा खतिवडा	उर्लाबारी-४	१,१००।
१००	बुद्धिराज र धनमाया गौतम	कमल गा.पा.-६	५,०००।
१०१	प्रतिमा गौतम घिमिरे	कालिम्पोङ	१,०००।
१०२	छन्दुराम भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	५,१००।
१०३	शङ्कर शिवाकोटी	बाह्रदशी-६, साधुकुटी	१,२००।
१०४	धनपति र धनमाया भट्टराई	बिर्तामोड-१	१०,०००।
१०५	भुमिप्रसाद खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
१०६	पर्शुराम र पार्वता पौडेल (तिम्सिना)	बिर्तामोड न.पा.-२	५,०००।
१०७	रुद्रप्रसाद खनाल	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
१०८	गणेशबहादुर कार्की	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
१०९	यशोदा कार्की निरौला	बिर्तामोड न.पा.-५	१,१००।
११०	कनकाई प्लाई उद्योग	बिर्तामोड न.पा.-२	३० थान प्लाई (12mm4*8)
१११	खुमा पोखरेल	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१०५।
११२	घनश्याम र राधिका तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	१,०१,०००।
११३	रामप्रसाद र गोमा ओझा	बिर्तामोड न.पा.-२	५,५००।
११४	डिल्लीराम र मायादेवी सिटौला	बिर्तामोड न.पा.-२	५१,०००।
११५	दामोदर र इन्दिरा न्यौपाने	बिर्तामोड न.पा.-२	३,६००।
११६	परशुराम र कमला ओझा	बिर्तामोड न.पा.-२	११,१००।
११७	विष्णुप्रसाद र गङ्गा अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२	५१६।
११८	गणेशप्रसाद र करुणा अग्रवाल	सिलिगुडी (बङ्गाल)	१,१००।
११९	केशव र देवीमाया खतिवडा	कनकाई.न.पा.-४, सुरुङ्गा	१,१११।
१२०	पदमप्रसाद जबेगु	शिवसताक्षी-११, दुधे	२,५००।
१२१	देवका घिमिरे	बिर्तामोड न.पा.-२	१,११०।
१२२	ध्रुवप्रसाद कोइराला	बुद्धशान्ति गा.पा.	२,१००।
१२३	यमुनादेवी भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	२५,०००।
१२४	जगन्नाथ र निर्मला भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
१२५	बद्रीनाथ र तुलसा खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२	३,१००।
१२६	यदुनाथ भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१२०।
१२७	हीरादेवी पोखरेल	बिर्तामोड न.पा.-२	५,००५।
१२८	कृष्णमाया पनेरु (रिजाल)	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१२५।
१२९	इन्दिरा खनाल (निरौला)	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१११।
१३०	चम्पा खनाल (निरौला)	बिर्तामोड न.पा.-५	१,१११।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३१	तुलसी र योगमाया गौतम	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	५,१००।
१३२	पदमकुमारी रिजाल	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१११।
१३३	सोमनाथ गौतम	अर्जुनधारा न.पा.-६ (माता मन्दिर)	१,१००।
१३४	हुमा गौतम (भण्डारी)	इनरुवा। सुनसरी	१,१००।
१३५	प्रमिला गौतम (खनाल)	मेचीनगर न.पा.-२	१,१००।
१३६	भरत भट्टराई (शिक्षक)	अर्जुनधारा न.पा.-५, चारपाने	२,१००।
१३७	सुभाष र रेणुका खनाल	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१११।
१३८	उर्मिला पोख्रेल	बिर्तामोड न.पा.-२, स्मार्ट टोल	१,१११।
१३९	डिल्लीराम नेपाल	बिर्तामोड न.पा.-८, ज्योतिनगर गरामनी	१,११५।
१४०	भागीरथा काफ्ले	बिर्तामोड न.पा.-२, नागरिक टोल	१,१००।
१४१	सरस्वता नेपाल	बिर्तामोड न.पा.-२, नागरिक टोल	१,१००।
१४२	ज्यो. गङ्गाप्रसाद खरेल	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	५,१००।
१४३	शम्भु र रमा घिमिरे	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	५,१५२।
१४४	अनिल र प्रज्ञा शिवाकोटी (घिमिरे)	कनकाई न.पा.-७, कालिमुडा	५,१२५।
१४५	तुलसादेवी खरेल	अर्जुनधारा न.पा.-५	१,१००।
१४६	सुरेश वंशल	बिर्तामोड न.पा.-४	५१,०००।
१४७	तेजप्रसाद भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	२,५००।
१४८	हरिप्रसाद भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-१, चारपाने	५,१००।
१४९	शरद र निर्मला दाहाल	गौरादह न.पा. , बैगुनधुरा	१,१११।
१५०	ओमप्रकाश र लक्ष्मीप्रसाद पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।
१५१	लीलाराज र पवित्रा चम्लागाईं	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१०५।
१५२	जगदीश मिण्डा	बिर्तामोड	५८,१२५।
१५३	महेन्द्र र दुर्गा खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२	३,१००।
१५४	शिवराज र सीता तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	१०,१०५।
१५५	छविलाल र अनिता नेपाल	बिर्तामोड न.पा.-२	११,१११।
१५६	कौशिला र रुविना हार्डवेर	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक	१८,०६०।
१५७	नन्दिकेश्वर, जीवन र निर्मला तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	७,५००।
१५८	सोमनाथ र चन्द्रा तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
१५९	रेणुका घिमिरे (गुरागाईं)	कनकाई न.पा. सुरुङ्गा	५,१००।
१६०	राधिका खड्का	बिर्तामोड-३	१०,०००।
१६१	शान्ता र सुधीर शिवाकोटी	बिर्तामोड न.पा.-३	१७,०००।
१६२	प्रेमकुमारी र धनकुमार प्रधान	काँकरभिट्टा	११,०००।
१६३	सरिता श्रेष्ठ	बिर्तामोड न.पा.-५	११,०००।
१६४	डिल्ली र शान्ता राउत	बिर्तामोड न.पा.-४	११,०००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६५	गोमादेवी ओली	बिर्तामोड न.पा.-४	५,१००।
१६६	गोमा ओली (स्व. नर्वदा थपलियाको स्मृतिमा)	सूर्योदय न.पा. कन्याम, इलाम	२१,१००।
१६७	भूपेन्द्र र उर्मिला अर्याल	बिर्तामोड न.पा.-२	१७,०००।
१६८	अनिल र चन्द्रा भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	१७,०००।
१६९	दीपक र वनिता गुरागाईं	विराटचौक, मोरङ	१७,०००।
१७०	निलु केसी	कलङ्की, काठमाडौं	४५,०००।
१७१	हरिप्रसाद तिम्सिना	कनकाई न.पा.-१, सुरुङ्गा	५,०२०।
१७२	केदारनाथ र पुण्यमाता खतिवडा	अर्जुनधारा न.पा.-१, साधुटार	५,५००।
१७३	सुनम (हरिमाया पौडेल)	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१००।
१७४	इन्द्रलाल सुवेदी	गौरीगञ्ज-३	१,१००।
१७५	तुलसीप्रसाद खरेल	बाह्रदशी गा.पा.-६	२,१००।
१७६	रङ्गलाल भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-१, चारपाने	५०५।
१७७	होमनाथ र रेणु शाह	बिर्तामोड न.पा.-२	११,१८१।
१७८	देवीप्रसाद (थुर्पीनाथ) तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१५५।
१७९	हेमनाथ तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२	१,०१०।
१८०	याङ्गुराज र मुना रेग्मी	मेचीनगर न.पा-१२	५०५।
१८१	भागीरथा भण्डारी	अर्जुनधारा न.पा.-५	१,१००।
१८२	कृष्णप्रसाद प्रसाईं	बिर्तामोड न.पा.-१	१,०१०।
१८३	दुर्गादेवी भट्टराई पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२	५००।
१८४	कृष्णप्रसाद र पार्वता सिग्देल	अर्जुनधारा न.पा.-५	१,००४।
१८५	टङ्क र गोमा वस्ती	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	१,१११।
१८६	रामचन्द्र तिम्सिना	कनकाई न.पा.-३	१,१००।
१८७	बुद्धिमान र अनुपा खड्का	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	१,१५५।
१८८	राधाकृष्ण कीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-२, नयाँ नगर	५,०००।
१८९	लक्ष्मी खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-६	१,१००।
१९०	खड्गप्रसाद खरेल	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
१९१	जगन्नाथ उपाध्याय पौडेल	दमक न.पा.	१,१००।
१९२	मीना खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१०५।
१९३	विवेक कीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	३,१००।
१९४	निलकुमार पोख्रेल	कमल गा.पा.	१,१००।
१९५	होमनाथ मिश्र	बिर्तामोड न.पा.-१	१,१००।
१९६	खिमादेवी बाँस्कोटा	स्कुलचौन (गौरादह न.पा.)	११,१११।
१९७	तुलसीराम र ओमकुमारी खतिवडा	अर्जुनधारा न.पा.-१, साधुटार	१,१००।
१९८	रुक्मिणी र सिर्जना गौतम	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने	२,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९९	अजय पोद्दार र कञ्चन पोद्दार	गौहाटी, नारङ्गी, भारत	१६०,०००।
२००	अच्युत र अभिषेक भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२०१	डिल्लीप्रसाद प्रसाईं	बिर्तामोड (माता मन्दिरछेउ)	४०,०००।
२०२	डिल्लीराम र कृष्णमाया भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	४,२००।
२०३	सीता निरौला	काठमाडौं	११,००५।
२०४	बालकृष्ण र रामकुमार खतिवडा	अर्जुनधारा न.पा.-१, साधुटार	५,१००।
२०५	मदनगोपाल सुब्बा	बिर्तामोड न.पा.-५	५,१००।
२०६	दाताराम र बबिता भण्डारी	अर्जुनधारा न.पा.-६	८,६००।
२०७	चन्द्र खनाल	बिर्तामोड न.पा. २	५,०००।
२०८	अग्निप्रसाद खतिवडा	बिर्तामोड न.पा. २	३,०००।
२०९	लक्ष्मण र अम्बिका खतिवडा	बिर्तामोड न.पा. १	११,००५।
२१०	दाताराम तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-६	१,१११।
२११	ठाकुर पोखेल	बिर्तामोड न.पा.-४	१,१००।
२१२	गोविन्द दाहाल	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२१३	कमल पोखेल	सिजुवा, मोरङ्ग	१,१००।
२१४	केदारनाथ र पद्मा खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-१	१,५००।
२१५	गङ्गाप्रसाद कँडरिया	मेचीनगर न.पा. धुलाबारी	१,१००।
२१६	पर्शुराम ढकाल	बिर्तामोड न.पा.-५	२,५५१।
२१७	मुना गौतम	बिर्तामोड न.पा.-१	१,१००।
२१८	कमलादेवी बाँस्कोटा	बिर्तामोड न.पा.-१	१,१०१।
२१९	छविलाल र कमला भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.-२	५,१००।
२२०	गोपीकृष्ण प्रसाईं	बिर्तामोड न.पा.-६	१,१०५।
२२१	रघुनाथ तिम्सिना	अर्जुनधारा न.पा.-१, साधुटार	१,१००।
२२२	नरहरि र लक्ष्मी निरौला (शान्तिराम)	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२२३	गुरुभक्त न्यौपाने	बिर्तामोड न.पा.-४	१,१००।
२२४	रूपनारायण र पारिजात पाण्डे	बिर्तामोड न.पा.-१	२,०००।
२२५	रेवत र पार्वता ओझा	बिर्तामोड न.पा.	१,१००।
२२६	खिनबहादुर र पार्वता बुढाथोकी	अर्जुनधारा न.पा.-५	१,१००।
२२७	रमेश अधिकारी (खड्ग)	बिर्तामोड-१	१,५००।
२२८	रेणुका तिम्सिना	कमल गा.पा.-७	१,१०५।
२२९	पं. भानुभक्त अधिकारी	बिर्तामोड-२	५,१००।
२३०	पं. भवानीप्रसाद खतिवडा	काठमाडौं-७, कुमारी	५,१००।
२३१	कृष्णप्रसाद खरेल	बिर्तामोड-२	१,१००।
२३२	मदनप्रसाद र नम्रता अधिकारी	बिर्तामोड-२	३,५००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३३	गणेशबहादुर र देवीमाया कार्की	अर्जुनधारा न.पा.-५	५,०००।
२३४	सावित्रा कँडेल	बाहृदशी-६	१,१००।
२३५	शङ्कर र पुनम सुवेदी	अर्जुनधारा न.पा.-७	१,१००।
२३६	मनकुमार र मुना गौतम	बिर्तामोड न.पा.-१	२,५००।
२३७	युवराज र शान्ता कडरिया	बिर्तामोड न.पा.-२	२,१५१।
२३८	जगत् जननी कीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२३९	वेदप्रसाद र लक्ष्मी दाहाल	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२४०	खगेन्द्र र राधिका खरेल	बाहृदशी-६	१,११०।
२४१	खड्गप्रसाद र गीता खरेल	बाहृदशी-६	१,१०५।
२४२	कुशल अधिकारी (विद्यार्थी)	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१००।
२४३	देवीप्रसाद ढुङ्गाना (विद्यार्थी)	बिर्तामोड न.पा.-२	१,१२५।
२४४	देवका, छविरमण, रुक्सुम अधिकारी	अर्जुनधारा-५	१,१००।
२४५	पर्शुराम आचार्य	इटहरी, सुनसरी	५१,०००।
२४६	नरेन्द्र र देविका बस्नेत	बिर्तामोड-१	५,०००।
२४७	पित्तल विक्रीबाट		५०,२५०।
			२०,००,७४४।

परिशिष्ट ५

श्री विवेकाश्रम कार्यसमिति, चारपाने, झापा

क्र.सं.	नाम थर	पद	ठेगाना	सम्पर्क नम्बर
१	व्या. किशोरकुमार गौतम	अध्यक्ष	काठमाडौं	९८४१३६५७६८
२	विष्णुभक्त भण्डारी	उपाध्यक्ष	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	०२३५४२८६०
३	छन्दुराम भण्डारी	महासचिव	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४०९९
४	दामोदर न्यौपाने	सचिव	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४००२
५	जगन्नाथ भण्डारी	कोषाध्यक्ष	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६५४४९०
६	पूर्णानन्द तिम्सिना	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६३३६८०
७	भानुभक्त अधिकारी	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४४६४०१६८
८	जगन्नाथ खनाल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६७२९९८
९	रामप्रसाद ओझा	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६२३९४५
१०	दिननाथ सिग्देल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, रामचौक	९८४२६४०७११
११	नारद पौडेल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६३९४२४
१२	डिल्लीराम सिटौला	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २,	९८४२६३३९६८
१३	गङ्गाप्रसाद खरेल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६२४५४४
१४	रमा घिमिरे	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, रामचौक	९८४२६३४८३३
१५	उर्मिला पोखेल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२७५९२४२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्यालय व्यवस्थापन समिति (श्री साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, चारपाने)

क्र.सं.	नाम थर	पद	ठेगाना	सम्पर्क नम्बर
१	आचार्य छन्दुराम भण्डारी	अध्यक्ष	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४०९९
२	नगेन्द्र सङ्ग्रौला	सदस्य (पदेन)	वडाध्यक्ष बिर्तामोड न.पा. २,	९८५२६७४९८४
३	भावना भट्टराई	सदस्य	अर्जुनधारा - ४	९८४२७१२०६७
४	पार्वता सापकोटा	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८१७०२२४९४
५	सृजना भट्टराई (पौडेल)	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४००३
६	मेनुका आचार्य पोखेल	सदस्य	अर्जुनधारा - ६	९८१४०८१४१७
७	सीता देउजा	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२७११२०१
८	सोमनाथ गौतम	सदस्य (शि.प्र.)	अर्जुनधारा - ६	९८४२२०८३७९
९	दामोदर न्यौपाने	सदस्य-सचिव	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४००२

परिशिष्ट - ००००००

शिक्षक-अभिभावक सङ्घ (श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय)

क्र.सं.	नाम थर	पद	ठेगाना	सम्पर्क नम्बर
१	भीमादेवी ढुङ्गेल (पौडेल)	अध्यक्ष	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६२४२६०
२	अम्बिका खनाल	सदस्य	कनकाई न.पा. - ८	९८१६९६००७७
३	निर्मला अधिकारी भट्टराई	सदस्य	मेचीनगर न.पा. - ६	९८२४९८२७८९
४	तीर्थराज पौडेल	सदस्य	कमल गा.पा. - ६	९८५२६७५११०
५	इन्दिरा आचार्य	सदस्य	मेचीनगर न.पा. - ६	९८१४९३२६७९
६	जयराम कोइराला	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. ४	९८४२६२४८८६
७	शेखरनाथ पौडेल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २,	९८०६०५५०५६
८	श्यामप्रसाद दाहाल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६५६६२४
९	कृष्णमाया रिजाल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६९९६५२
१०	छन्दुराम भण्डारी	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४०९९
११	दामोदर न्यौपाने	सदस्य-सचिव	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४००२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट ६

अन्नक्षेत्र सञ्चालनका लागि अक्षय कोषमा रु. ३५,००० भन्दा माथि रकम प्रदान गर्नुहुने संस्थाका आजीवन सदस्यहरूको नामावली

क्र.स.	नाम	ठेगाना	रकम	कार्यक्रम
१	पं. लेखनाथ दाहाल	कनकाई—१, झापा	३५,१३५।	प्रतिवर्ष वैशाख १ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२	पं. विष्णुभक्त र मेनका भण्डारी	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,१०५।	प्रतिवर्ष अक्षय तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३	मातृकाप्रसाद कोइराला	चारपाने—१, बैंसाबाडी, झापा	३५,०००।	स्व. भाइ पुरुषोत्तमको स्मृतिमा पौष कृष्ण प्रतिपदामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४	ज्यो. भोलानाथ र पवित्रा गौतम	दमक, झापा	५१,००१।	स्व. पिता पं. टेकनाथ गौतमको स्मृतिदिवस भाद्र शुक्ल द्वितीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५	व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम	काठमाडौं	५६,१५८।	स्व. माता भीमादेवी गौतमको स्मृतिदिवस पौष शुक्ल प्रतिपदामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६	लोकनाथ र दिलमाया खनाल जगन्नाथ र हेमलता खनाल	चारपाने—३, रामचौक, झापा	३५,०००।	नाति दिवस खनालको जन्मदिनमा प्रतिवर्ष भाद्र १९ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७	हिङ्गोला, दामोदर र इन्दिरा न्यौपाने	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,१००।	स्व. पिता लोकनाथ न्यौपानेको स्मृतिमा कार्तिक शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८	रामगोपाल गाडोदिया (अग्रवाल)	आसाम, गुवाहाटी, भारत	२,२४,०००।	स्व. पिता वैद्यनाथको पौष शुक्ल प्रतिपदा स्व. माता भीस्मीदेवीको फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी, स्व. पत्नी सुरजकुमारीको आषाढ शुक्ल द्वितीया, स्व. अग्रज पुरुषोत्तमको ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, स्व. भ्राता गौरीशङ्करको चैत्र शुक्ल तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९	श्यामसुन्दर, मञ्जु तथा आशिष अग्रवाल	काठमाडौं	१,५१,०००।	स्व. पितामाता केदारनाथ र चन्द्रादेवीको पुण्यस्मृतिमा वैशाख शुक्ल दशमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्र.स.	नाम	ठेगाना	रकम	कार्यक्रम
१०	ओमभक्त र दीपा प्रसाइं, छोरी उपासना प्रसाईं	बिर्तामोड–१, चारपाने, झापा	३५,१०१।	विवाह वार्षिकोत्सवमा प्रतिवर्ष ज्येष्ठ २९ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११	जगदीश राय अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	५०,४७५।	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (हनुमान जयन्ती) का दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२	नारदमणि र तारा अधिकारी	बिर्तामोड–२, रामचौक, झापा	५१,०००।	आफ्नो जन्मतिथि आषाढ शुक्ल एकादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१३	मोहन कुमार र शीला ढकाल	चारपाने–१, बिर्तामोड, झापा	५२,०००।	नातिनी नयना (मानुषी) ढकालको जन्मदिवस भाद्र शुक्ल षष्ठीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१४	छविलाल र कमला भण्डारी	बिर्तामोड–२, रामचौक, झापा	३५,०००।	स्व. माता गोमादेवी भण्डारीको स्मृतिदिवस आश्विन कृष्ण प्रतिपदामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१५	परमानन्द खरेल र गङ्गादेवी, गीतादेवी छोराहरू: नरहरि, मोहन, मदन, मुरारि छोरीहरू: इन्दु, शारदा, शकुन्तला, शान्ता	चन्द्रगढी–६, झापा	५०,००२।	आषाढ शुक्ल द्वादशीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१६	तुलसी र योगमाया गौतम		३५,१५५।	स्व. पुत्र सूर्य गौतमको स्मृतिमा चैत्र कृष्ण द्वितीयाका दिन श्राद्धको निमित्त रुद्राभिषेक एवं बटुक भोजन
१७	पूर्णबहादुर कुँवर	लम्जुङ्ग, अर्चलबोट–५, हाल काठमाडौं–१६	३९,००१।	छोरी अनुजा कुँवरको जन्मदिन माघ ५ गते प्रतिवर्ष रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१८	राधादेवी र नेत्रप्रसाद कोइराला	बिर्तामोड.न.पा–१, वैसावाडी, झापा	३५,१३५।	स्व. सासुआमा दक्षिणादेवीको पुण्यस्मृतिदिवस मार्गशीर्ष शुक्ल ससमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१९	नेत्रप्रसाद र राधादेवी कोइराला	बिर्तामोड न.पा–१, वैसावाडी, झापा	३५,९३५।	स्व. बुबा पुण्यप्रसाद कोइरालाको स्मृतिदिवस आषाढ शुक्ल चतुर्दशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०	चन्द्र र लीला पौडेल	शिवसताक्षी दुधे, झापा	५१,०१०।	स्व. पिता विष्णुलालको स्मृतिदिवस वैकुण्ठ चतुर्दशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२१	छविल्दास र दर्शना वंशल	बिर्तामोड, झापा	३५,००१।	स्व. पितामाता रामेश्वरदास र वादोदेवी वंशलको पुण्यस्मृतिदिवस चैत्र शुक्ल सप्तमी र माघ शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२२	केदार, रोमाकान्त, तुलसी, टङ्क गौतम	बिर्तामोड न.पा. —३, झापा	८६,११५।	स्व. बुबा रङ्गलाल गौतमको स्मृतिदिवस श्रावण कृष्ण (कामिका) एकादशी र स्व. माता जमुना र जानुकाको स्मृतिदिवस माघ कृष्ण नवमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२३	नन्दराम र नन्दमाया पौडेल	बिर्तामोड—२, रामचौक, झापा	५१,०००।	स्व. पत्नी नन्दमायाको स्मृतिदिवस पौष शुक्ल अष्टमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२४	रामप्रसाद पोखेल, डा. राधेश्याम, उर्मिला पोखेल	बिर्तामोड—२, रामचौक, झापा	५१,००५।	स्व. पत्नी कृष्णकुमारी पोखेलको पुण्य स्मृतिदिवस माघ कृष्ण सप्तमीमा रुद्राभिषेक एवं विद्यार्थी भोजन
२५	सूर्यभक्त र टीकादेवी पौडेल	बिर्तामोड—१, वैसावाडी, झापा	५१,०००।	स्व. पिता रामचन्द्र पौडेलको स्मृतिदिवस चैत्र शुक्ल पूर्णिमा र स्व. माता रुक्मिणा पौडेलको स्मृतिदिवस कार्तिक कृष्ण सप्तमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२६	रेखा र प्रमोद अग्रवाल	जलपाईगुडी, भारत	३५,०००।	श्रावण शुक्ल नागपञ्चमीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२७	घनश्याम तिम्सिना एवं बलराम डाँगी	प्रो. श्रीराम ईँटा उद्योग बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने	३५,५००।	प्रतिवर्ष कार्तिक २१ गते कम्पनी दर्ता दिवसमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२८	गिन्नीदेवी र वृजमोहन अग्रवाल	नयाँबजार सिलीगुडी, भारत	४०,०००।	कार्तिक शुक्ल शिव वैकुण्ठ चतुर्दशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
२९	राजु राठी सपरिवार	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	३५,०००।	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (गङ्गा दशहरा) मा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३०	भूपेन्द्र अर्याल, अनिल भट्टराई, फणीन्द्र तिम्सिना,	शान्ति निर्माण सेवा, बिर्तामोड न.पा—२, चारपाने	३५,५००।	प्रतिवर्ष पौष १२ गते कम्पनी दर्ता दिवसमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३१	खगेन्द्र र इन्दु ढुङ्गाना	बिर्तामोड न.पा., झापा	३५,०००।	स्व. हजुरबुबा पदमलाल र स्व. हजुरआमाको पुण्य स्मृतिदिवस आषाढ कृष्ण चर्तुदशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३२	हरि र चम्पा पाण्डे	गरामनी—१, झापा	३५,१०५।	नाति (पुण्यप्रसाद) राघवको जन्मदिन फागुन १६ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३३	दिलीप र सीता ढुङ्गेल	जावलाखेल, काठमाडौं	५१,१११।	स्व. पिता टीकाराम ढुङ्गेलको पुण्यतिथि आषाढ शुक्ल सप्तमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३४	देवेन्द्र, जया र कविता गौतम	बिर्तामोड—९, बिराटपोखर, झापा	३९,०००।	स्व. छोरा पोषण गौतमको पुण्य तिथिदिवस आषाढ कृष्ण द्वितीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३५	चेतन सिंह राठौर	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	३५,०००।	वैशाख शुक्ल पञ्चमी शङ्कराचार्य जयन्तीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३६	बालव्यास शङ्करभाइ वशिष्ठ	झेपी विजनबारी दार्जिलिङ, भारत	३५,०००।	वैशाख शुक्ल नवमी सीता जयन्तीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३७	दुर्गाप्रसाद भण्डारी र राधेश्याम गोयल	कनकाई प्लाइउड इन्डिष्ट्रिज, बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	कनकाई प्लाइ उद्योगको उन्नति र प्रगतिको निम्ति प्रतिवर्ष अक्षय तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३८	राजकुमार र मीना पोखेल	बिर्तामोड न.पा.—४, झापा	५१,१११।	स्व. पितामाता शेखरबहादुर र कृष्णकुमारी पोखेलको पुण्यस्मृतिमा श्रावण १ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
३९	सरिता निरौला , छोरा सतीश र प्रतिमा	बिर्तामोड—६, देवीवस्ति, झापा	३५,०००।	स्व. महेश्वर निरौला, स्व. रामचन्द्र निरौला, स्व. बुद्धिप्रकाश निरौलाको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको त्रयोदशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४०	भक्तिप्रसाद र देवमाया पोखेल	समालवुङ—९, उनिउ·टार, इलाम	३५,१११।	स्व. माता देवलक्ष्मी पोखेलको पुण्यतिथि मार्ग शीर्ष कृष्ण अष्टमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४१	पर्शुराम ढकाल, छोरा सुरेश ढकाल	बिर्तामोड न.पा.—६, झापा	१,५१,११३।	स्व. हजुरबुबाहजुरआमा छविलाल र देउमायाको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको पञ्चमी तिथिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४२	पं. ऋषिराम र कमलादेवी लामिछाने	सिरीफाँट, शुकुम्भिट १९ रोड वि.ए.के थाइल्यान्ड	४२,४००।	स्व. पितामाता हरिप्रसाद र चन्द्रादेवी लामिछानेको पुण्य स्मृतिदिवस मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४३	वृजमोहन र गित्री अग्रवाल	नयाँबजार सिलीगुडी, भारत	३५,२००।	वैशाख शुक्ल चण्डीपूजा पूर्णिमाका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४४	शङ्कराचार्य भवन तथा बलबहादुर कुँवर परिवार	हेम्जा, तिथ्रेकोट, कास्की	३५,००५।	सम्पूर्ण कुँवर परिवारको कल्याणका लागि प्रतिवर्ष शिवरात्रिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४५	शिवप्रसाद र रत्नकुमारी भण्डारी	गरामनी—१, झापा	३५,०००।	स्व. पितामाता नन्दराज र रुक्मिणा भण्डारीको पुण्य स्मृतिदिवस फाल्गुण कृष्ण ससमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४६	रुद्रप्रसाद धिताल र मेनुका तिम्सिना धिताल	सुन्दरहरैंचा न.पा.—६, सुनसरी	३५,०१८।	स्व. माता खड्गकुमारीको पुण्यतिथि ज्येष्ठ कृष्ण पञ्चमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४७	धनपति र पवित्रा मैनाली	बिर्तामोड.न.पा.—६, झापा	३५,००१।	गुरुपूजा (व्यासपूजा) पूर्णिमाका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४८	विष्णुलाल र निर्मला घिमिरे	बिर्तामोड न.पा.—२, झापा	३७,१५५।	स्व. बुबा नन्दलालको स्मृतिदिवस नरक चतुर्दशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
४९	ज्ञानेन्द्र प्रकाश र गोमादेवी ओली	बिर्तामोड—६, झापा	५१,१०५।	प्रतिवर्ष पौष १ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५०	टीकादेवी भण्डारी खतिवडा र हरिप्रसाद खतिवडा	बिर्तामोड—२, झापा	५१,५५१।	छोरा अजित (तोयानाथ) को जन्मदिन भाद्र शुक्ल ससमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५१	रेणुका घिमिरे	गायत्री मन्दिर, सुरुङ्गा, झापा	५१,१००।	कार्तिक शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५२	केशर सिंह कुवर र माता सायर कुँवर	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	३५,०००।	श्रीकृष्ण रथयात्रा दिवस भाद्र कृष्ण नवमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५३	युवराज दाहाल र दमयन्ता पोखेल, नवराज दाहाल र दुर्गादेवी ढुङ्गेल	बिर्तामोड—९, बिर्ताबजार, झापा	३५,०००।	माघ १ (मकर सङ्क्रान्ति) का दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५४	लेखनाथ पोखेल	बिर्तामोड—१, हनुमान नगर, झापा	८६,०००।	स्व. पिता चक्रपाणि पोखेलको पुण्य स्मृतिदिवस ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा र आश्विन कृष्ण द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५५	राजु र पुनम पराजुली	बिर्तामोड—२, झापा	४०,२१०।	छोरा अरुण र छोरी अनिषाको जन्मदिन फाल्गुण ३ गतेका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५६	हरिशङ्कर, विमलादेवी र शिवकुमार अग्रवाल	कैलाशपति स्टोर्स, बिर्तामोड, झापा	३५,०००।	प्रतिवर्ष मागशुक्ल पञ्चमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५७	शान्तिदेवी पोखेल न्यौपाने	बिर्तामोड—२, हनुमान नगर, झापा	३५,०००।	स्व. माता मेनुकादेवी पोखेलको पुण्य स्मृतिदिवस भाद्र शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५८	ईश्वरीप्रसाद र तारादेवी पोखेल	बिर्तामोड न.पा., झापा	३५,१०५।	स्व. पिता तेजप्रसाद पोखेलको पुण्य स्मृतिदिवस आश्विन शुक्ल त्रयोदशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
५९	ईश्वरी र प्रतिमन खड्का	बिर्तामोड न.पा.—२, रामचौक, झापा	३५,०००।	स्व. मामामाइजुको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको प्रतिपदामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६०	केशवशरण पाण्डे, बुबा देवीप्रसाद (दीपक), आमा भगवती पाण्डे	गरामनी—५, झापा, हाल अमेरिका	३५,०००।	प्रतिवर्ष जन्मदिन ३१ अक्टोबरका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६१	केदार गिरी	बिर्तामोड—२, झापा	३५,०००।	मार्गशीर्ष धान्यपूजा पूर्णिमाका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६२	मोहन र निता ओझा, छोरी आर्या (छाया) छोरा आदित्य (बुद्ध)	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	३५,०००।	छोरी आर्याको जन्मदिन भाद्र १९ गतेका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६३	फौदराज न्यौपाने	बिर्तामोड—८, झापा	३५,०००।	फाल्गुण कृष्ण औंसीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६४	लक्ष्मीदेवी र होमनाथ भट्टराई	बिर्तामोड—२, रामचौक, झापा	५१,०००।	स्व. पिता अनन्तराम लुइँटेलको पुण्य स्मृतिदिवस चैत्र कृष्ण दशमी र स्व. माता मनमायाको पुण्य स्मृतिदिवस श्रावण कृष्ण अष्टमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६५	होमनाथ र लक्ष्मीदेवी भट्टराई	बिर्तामोड—२, रामचौक, झापा	५१,०००।	स्व. पिता टीकाराम भट्टराईको पुण्य स्मृतिदिवस वैशाख कृष्ण द्वितीया र स्व. माता रन्धता भट्टराईको पुण्य स्मृतिदिवस ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६६	दिलकुमार र रुक्मिणी प्रधान	मेचीनगर—६, का॑करभिट्टा, झापा	५०,२०२।	स्व. पितामाता बलबहादुर र मनमाया प्रधानको पुण्य स्मृतिदिवस कार्तिक कृष्ण त्रयोदशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६७	देवीप्रसाद बारकोटी र गङ्गादेवी बारकोटी	कनकाई न.पा.—९, घैलाडुब्बा, झापा	१०१,१११।	स्व. दिदी चेलीमाया बाराकोटी सिटौलाको स्मृतिदिवस माघ शुक्ल दशमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६८	राजकुमार र तारादेवी प्रसाईं, नाति साहिल प्रसाईं	गौरादह न.पा.—९, ग्वालडुब्बा, झापा, हाल अमेरिका	५०,१११।	स्व. आमा लच्छिमादेवी प्रसाईको पुण्यस्मृतिमा सोह श्राद्धको द्वितीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
६९	श्रवणकुमार गोयल	बत्तीसपुतली, काठमाडौं	२०२,०००।	स्व. पिता ओमप्रकाश गोयलको पुण्यस्मृतिमा रुदाभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७०	डिल्लीराम, कृष्णमाया र सन्तोष भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	छोरा सन्तोषको जन्मदिवस मार्गशीर्ष १५ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७१	गङ्गादेवी कँडरिया, पवित्रा पाठक	बिर्तामोड न.पा.—६, गरामनी, झापा	१,०१,१००।	माघ शुक्ल स्वस्थानी पूर्णिमाका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७२	अग्निप्रसाद र मनकुमारी तिम्सिना	बिर्तामोड—५, हिरालाल टोल, झापा	३५,०००।	फाल्गुण शुक्ल गोविन्द द्वादशीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७३	आनन्दकुमार र गीता सिंह	विराटनगर उपमहानगरपालिका	३५,०००।	भाद्र कृष्ण कुशे औंशीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७४	मनबहादुर र मनमाया खत्री	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	१,११,१११।	स्व. छोरा पूर्णबहादुरको स्मृतिमा प्रतिवर्ष ज्येष्ठ १६ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७५	कृष्णकुमारी गौतम	बिर्तामोड न.पा.—२, झापा	५१,०००।	स्व. पति तीर्थराज गौतमको पुण्य स्मृतिदिवस पौष कृष्ण नवमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७६	विक्रम र कृष्णकुमारी क्षेत्री	गान्तोक सिक्किम, भारत	३५,०००।	स्व. पिता मोहनप्रसाद भण्डारीको पुण्यस्मृतिमा सोह श्राद्धको तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७७	केशव र टीकामाया आचार्य, पर्शुराम र गोमा आचार्य	इटहरी उपम.न.पा.—१, सुनसरी	५०,१५१।	आश्विन कृष्ण औंशीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
७८	ज्यो. गङ्गाप्रसाद र देवीमाया खरेल	बिर्तामोड.न.पा.—२, चारपाने, झापा	९०,१००।	स्व. पितामाता तिलचन एवं धनमाया खरेलको पुण्य स्मृतिदिवस फाल्गुण कृष्ण नवमी र वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७९	सन्तोषदेवी अग्रवाल र योगेश अग्रवाल	सिलिगुडी, भारत	३५,२००।	स्व. पति नन्दिकेश्वर अग्रवालको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको चतुर्थी तिथिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८०	देवीप्रसाद तिम्सिना (थुर्पीनाथ)	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,५५५।	पितृहरूको सम्झनामा प्रतिवर्ष पौषे औंसीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८१	पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,६००।	स्व. पत्नी तिलरूपा तिम्सिनाको पुण्य स्मृतिदिवस श्रावण शुक्ल षष्ठीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८२	पर्शुराम र पार्वता पौडेल	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५४,०००।	छोरी प्रज्ञा (प्रज्ना) को जन्मदिन श्रावण कृष्ण सप्तमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८३	नगेन्द्रप्रसाद (काका) र शान्तादेवी सङ्ग्रौला	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	स्व. पितामाता डम्बरप्रसाद र सरस्वतीदेवीको पुण्यस्मृति मार्गशीर्ष शुक्ल नवमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८४	रञ्जितबहादुर र चम्पादेवी बस्नेत	सिक्किम, गान्तोक, भारत	४८,०००।	आश्विन शुक्ल अष्टमीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८५	पद्मा उप्रेती, छोरीहरू भागीरथा, होमा र शान्ता	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०५०।	फाल्गुण १ गते जन्मदिनको उपलक्ष्यमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८६	चिरञ्जीवी कँडरिया लीला कँडरिया	बिर्तामोड न.पा.—१, झापा	५४,५००।	स्व. हजुरबुबाहजुरआमा नन्दलाल र मनिकर्णिका एवं स्व. बुबाआमा पदमलाल र दिव्यरूपाको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको पञ्चमी तिथिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८७	भानुभक्त एवं कमला अधिकारी छोराबुहारी मदन एवं नम्रता अधिकारी	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,१५५।	स्व. पिता पूर्णानन्द अधिकारीको पुण्य स्मृतिदिवस सोह्र श्राद्धको अष्टमी तिथिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८८	झुनप्रसाद एवं भोमामाया तिम्सिना छोराबुहारीः सोमनाथ र चन्द्रा, शिवराज र सीता, खेमनाथ र भगवती तिम्सिना	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	माता तीर्थ औंसीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
८९	देवीप्रसाद पौडेल	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,१०१।	स्व. पत्नी उमादेवी पौडेलको पुण्यस्मृतिदिवस ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९०	देवीप्रसाद एवं टङ्कमाया खनाल	विर्तामोड—२, झापा	५१,०००।	स्व. मातापिता गङ्गाराम र रनमायाको पुण्य स्मृतिदिवस वैशाख कृष्ण वरुथिनी एकादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९१	पर्शुराम र कमलादेवी ओझा छोराबुहारीः धर्मानन्द, रामप्रसाद र गोमा ओझा	विर्तामोड—२, झापा	५१,०००।	फाल्गुण शुल्क द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९२	चिनमाया अधिकारी (ठूलीदिदी)	गायत्री मन्दिर, कोटिहोम, झापा	५१,०००।	स्व. पितामाता पं. टेकनाथ उपाध्याय र भीमादेवी गौतमको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको द्वितीया तिथिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९३	वीरबहादुर र इन्द्रमाया चौहान	विर्तामोड.न.पा.—१, झापा	५१,५००।	कार्तिक शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९४	सीता सिटौला, होम, मेनुका, गङ्गा र गायत्रा	विर्तामोड—२, झापा	५१,०००।	स्व. पति नमनाथको पुण्य स्मृतिदिवस फाल्गुण कृष्ण तृतीयाका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९५	अग्निप्रसाद खतिवडा	विर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	स्व. पत्नी भागीरथा खतिवडाको स्मृतिदिवस कार्तिक कृष्ण प्रतिपदामा रुद्राभिषेक एवं विद्यार्थी भोजन
९६	भागीरथा भण्डारी छोराबुहारी दुर्गा र पुष्पा, दाताराम र वविता, तेजप्रसाद र कविता भण्डारी	अर्जुनधारा—५, झापा	५१,०००।	स्व. पति डिल्लीराम भण्डारीको स्मृतिदिवस भाद्र शुक्ल अष्टमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९७	विमलादेवी गोयल	विर्तामोड—४, झापा	१,११,०००।	स्व. पति ऋषिकेश गोयलको पुण्यस्मृतिमा सोह्र श्राद्धको षष्ठी तिथिमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९८	दीपक र वनिता गुरागाईं	बिराटचोक, मोरङ्ग	५१,०००।	स्व. हजुरआमा ललितादेवी गुरागाईंको पुण्य स्मृतिदिवस चैत्र शुक्ल षष्ठीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
९९	मोहनकुमार र टीका पोखेल	विर्तामोड—४, कालिकाचौक, झापा	५१,०००।	स्व. पितामाता ओदराज र रनमाया पोखेलको स्मृतिदिवस वैशाख शुक्ल पूर्णिमामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१००	भीमप्रसाद पौडेल एवं जानुका भण्डारी छोरा उज्ज्वल, वेदनिधि पौडेल	वाह्रदशी—५, कट्टरडाँगी, झापा	५१,०००।	स्व. पिता रूपनारायण पौडेलको पुण्यतिथि सोह्र श्राद्धको चतुर्थीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०१	अर्जुन चुडाल, झुमा भट्टराई चुडाल	बिर्तामोड—४, झापा	५१,०००।	स्व. माता देवीमायाको पुण्य स्मृतिदिवस सोह श्राद्धको चतुर्थीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०२	भीमराज अधिकारी	सिद्धार्थनगर—८, लालिग्रामपथ रुपन्देही	४६,२४०।	प्रतिवर्ष रामनवमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०३	पद्मा (नन्दकला) अधिकारी	सिद्धार्थनगर न.पा.–८, कपिलवस्तु	३५,१२५।	प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण जन्म अष्टमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०४	छविलाल र निर्मला पौडेल	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, हाल अमेरिका	३५,०७५।	प्रतिवर्ष वैशाख १ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०५	सरिता श्रेष्ठ खड्का	बिर्तामोड, झापा	५१,०००।	स्व.माता पिता भाभीकुमारी र बीरबहादुर खड्काको पुण्य स्मृतिदिवस फाल्गुण कृष्ण त्रयोदशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०६	नीता शर्मा श्रेष्ठ र छोरा शोभित शर्मा	बिर्तामोड, झापा	५१,०००।	स्व. पति वृजमोहन शर्माको पुण्यस्मृति माघ शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०७	अरुणकुमार र पुष्पलता भट्टराई	सोरेङ्ग पश्चिम सिक्किम	५१,५२०।	भाद्र शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०८	इन्द्रमाया ढुङ्गाना, छोराहरू टीकाराम, सोमनाथ, राम ढुङ्गाना	बिर्तामोड—२, रामचौक, झापा	५५,०००।	स्व. पति दिननाथ ढुङ्गानाको पुण्य स्मृतिदिवस वैशाख शुक्ल द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१०९	देउमाया (रममाया) पौडेल (कान्छिदिदी)	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	आश्विन शुक्ल नवमी (महानवमी) का दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११०	जगन्नाथ र निर्मला भण्डारी छोराहरू: अच्युत, अभिषेक भण्डारी	बिर्तामोड—२, चारपाने, झापा	५१,०००।	स्व. मातामही बुद्धिमाता पौडेलको स्मृतिदिवस भाद्रशुक्ल हरिपरिवर्तिनी एकादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१११	लक्ष्मण र दुगदिवी ढकाल	बिर्तामोड—१, झापा	५१,०००।	प्रत्येक वर्ष मातातीर्थ औंसीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११२	दुगदिवी र लक्ष्मण ढकाल	बिर्तामोड—१, झापा	५१,०००।	प्रतिवर्ष अक्षय तृतीयमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११३	चूडामणि भट्टराई	बिर्तामोड—८, गरामनी, झापा	५१,०००।	स्व. माता हरिमाया भट्टराईको पुण्यतिथि ज्येष्ठ कृष्ण दशमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११४	घनश्याम पौडेल	बिर्तामोड–२, चैतुबारी, झापा	३५,०००।	श्रीमती चन्द्रकला खनाल पौडेलको जन्मदिवस वैशाख २१ गते रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११५	ध्रुवकुमार शिवाकोटी	बिर्तामोड–५, झापा	१६२,०००।	वैशाख १ गते नववर्षको उपलक्ष्यमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११६	गोपीकृष्ण र टीकादेवी प्रसाईं	बिर्तामोड– १, बुट्टाबारी, झापा	५१,०००।	स्व. पिता जयेन्द्रप्रसाद प्रसाईंको पुण्यतिथि मार्गकृष्ण द्वादशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११७	मनुरुपा र अग्निप्रसाद तिम्सिना	बिर्तामोड–५, हिमालय टोल, झापा	५१,०००।	कार्तिक शुक्ल नवमीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११८	विमला श्रेष्ठ	पोखरा–९, नागबजार	५१,०००।	सीता विवाह पञ्चमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
११९	भीमप्रसाद र डिकुरादेवी दहाल	मेचीनगर–१०, धाइजन, झापा	५०,१००।	छोरी शान्तिदेवीको पुण्यतिथि प्रतिवर्ष श्रावण ११ गतेका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२०	प्रा. भवानीप्रसाद र रमा खतिवडा	कुमारीगाल, काठमाडौं	५१,१११।	स्व. माता रुक्मिणीदेवीको पुण्यतिथि वैशाख शुक्ल प्रतिपदामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२१	देवराज एवं मीना नेपाल	कमल गाउँपालिका, लखनपुर, झापा	५१,०००।	स्व. पिता तुलसीराम नेपालको पुण्य स्मृतिदिवस चैत्र कृष्ण चर्तुदशीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२२	मीना एवं देवराज नेपाल	कमल गाउँपालिका, लखनपुर, झापा	५१,०००।	स्व. माता कुन्तादेवी नेपालको पुण्य स्मृतिदिवस कार्तिकको कागतिहारमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२३	कल्पना र हेमलाल सुवेदी	दमक न.पा.–१, फाल्गुन्द चौक, झापा	५१,०००।	स्व. सासु विष्णुमाया सुवेदीको स्मृतिदिवस मार्गशीर्ष नवमीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२४	मायादेवी र विष्णुमाया सङ्ग्रौला	बिराटनगर उपनगरपालिका–९, मोरङ्ग	६७,०२०।	स्व. दिलकुमार सङ्ग्रौलाको पुण्य स्मृतिदिवस भाद्र शुक्ल दशमीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२५	सोमनाथ र चन्द्रकला तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.–२, चारपाने, झापा	५१,००५।	छोरी दीक्षा र प्रेक्षाको सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुका लागि श्रावण शुक्ल नागपञ्चमीका दिन रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२६	हरिप्रसाद र चन्द्रकला भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.–१, चारपाने, झापा	५१,१११।	स्व. पितामाता यज्ञनिधि र रेणुका भण्डारीको पुण्यस्मृतिमा वैशाख शुक्ल चण्डीपूर्णिमामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
			६४,७२,१५३।	

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२६	हरिप्रसाद र चन्द्रकला भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.—१, चारपाने, झापा	५१,१११।	स्व. पितामाता यज्ञनिधि र रेणुका भण्डारीको पुण्यस्मृतिमा वैशाख शुक्ल चण्डीपूर्णिमामा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२७	धनबहादुर र कान्ता सुनुवार	बिर्तामोड-५,	१,०२,०००	पितामाता दिलबहादुर र बुद्धमाया सुनुवारको पुण्यस्मृतिमा
१२८	भेषराज र कल्पना भण्डारी	बिर्तामोड-४	५५०००।	स्व.पिता शिवप्रसाद भण्डारीको पुण्यतिथि फाल्गुण शुक्ल द्वितीया रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
१२९	विष्णुप्रसाद र मीना पौडेल	क्यालिफोर्निया, अमेरिका	५१०००	स्व.माता राधिका पौडेलको पुण्यतिथि चैत्र शुक्ल नवमीमा रुद्राभिषेक र विद्यार्थी भोजन
		कुल जम्मा	६८,९९,८८९।	

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट ७

आश्रम अक्षय कोषका लागि रु. २,१०० भन्दा माथि रकम प्रदान गर्नुहुने दाताहरूको नामावली

क्र.सं.	नाम थर	ठेगाना	रकम
१	घनश्याम र राधिका तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	१०६,६४५।
२	पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	५२,६००।
३	डिल्लीराम र भागीरथा भण्डारी	अर्जुनधारा-६, झापा	२५,०२९।
४	पं. टेकनाथ र भीमादेवी गौतम	लखनपुर-४, झापा	३१,३६५।
५	पं. विष्णुभक्त र मेनका भण्डारी	चारपाने-३, झापा	१०९,७३७।
६	लोकनाथ र दिलमाया खनाल	चारपाने-३, झापा	२००,५९७।
७	लहेन्द्रप्रसाद र धनमाया भट्टराई	चारपाने-३, झापा	१२,७३३।
८	दाताराम तिम्सिना	अनारमनी-६, झापा	१०,०००।
९	नन्दराम र नन्दमाया पौडेल	चारपाने-३, झापा	६२,१११।
१०	घनश्याम कँडरिया	मेचीनगर न.पा., धुलाबारी	२,२०१।
११	लीलाबहादुर कटुवाल	चारपाने-१, झापा	५,२३१।
१२	जगन्नाथ र निर्मला भण्डारी	चारपाने-३, झापा	१०५,१११।
१३	पर्शुराम र कमला ओझा	चारपाने-३, झापा	१९,०१७।
१४	दामोदर र इन्दिरा न्यौपाने	चारपाने-३, झापा	१२,२११।
१५	विजय पौडेल, विनुता	सुन्दरदुलारी न.पा.-७, मोरङ	१०,८०५।
१६	देवीप्रसाद खनाल	चारपाने-३, झापा	९,४००।
१७	देवीप्रसाद र उमादेवी पौडेल	चारपाने-३, झापा	१४,६६६।
१८	खडानन्द पौडेल	चारपाने-३, झापा	५१,००१।
१९	खिमनाथ ओझा	चारपाने-३, झापा	१०,३९५।
२०	अग्निप्रसाद खतिवडा	चारपाने-३, झापा	११,०४३।
२१	छविलाल र अनिता नेपाल	चारपाने-३, झापा	११,१११।
२२	सीता तिम्सिना धौराली	मानसरोवर कलोनी सिलिगुडी	२१,०००।
२३	लोकनाथ पौडेल	चारपाने-३, झापा	१०४,३८१।
२४	प्रदिप र निर्मला पाण्डे	बिर्तामोड नगरपालिका-१	२,१०५।
२५	कृष्णप्रसाद प्रसाईं	मेचीनगर न.पा., धुलाबारी	६,१६५।
२६	मेघराज र राधिका पन्त शर्मा	म्याग्दे, तनहुँ	५१,०००।
२७	खडानन्द र खगमाया शिवाकोटी	मेचीनगर-४, धुलाबारी हाल चारपाने-१	३६,०६७।
२८	कीर्तिमाया अधिकारी		२,५००।
२९	देवेन्द्र र निर्मला पौडेल		५,१५५।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३०	हरिप्रसाद र शर्मिला तिम्सिना	कनकाई न.पा.-१, झापा	२,१००।
३१	शान्तप्रसाद र गीता सिग्देल	उर्लाबारी न.पा.-७, मोरङ्ग	२,१००।
३२	केदारनाथ खतिवडा	खुदुनाबारी-१, साधुटार, झापा	२,१००।
३३	होमनाथ खनाल	शनिश्चरे-९, बाह्रघरे, झापा	३,२११।
३४	प्रज्ञा घिमिरे	बिर्तामोड-२, झापा	३,०००।
३५	बोधकुमार मैनाली	कनकाई न.पा.-४, सुरुङ्गा, झापा	२,१००।
३६	नेत्र र विमला नेपाल	कमल गाउँपालिका-३, झापा	४,३११।
३७	शेखर कँडरिया	मेचीनगर न.पा. न.पा. -४, धुलाबारी	२,१००।
३८	पं. काशीनाथ दाहाल	लखनपुर-३, झापा	५,४८०।
३९	कुलप्रसाद र नरमाया ओली	दमक न.पा. -१०, झापा	५,६२३।
४०	खेमनाथ र दिव्यलोका रिजाल	मेचीनगर न.पा.-१३, झापा	५,००५।
४१	हरिहर आश्रम	बिर्तामोड-६, बेलगाछी गुरुकुल, झापा	२,१००।
४२	ओशन अफसेट प्रिन्टर्स	बिर्तामोड-२, झापा	२,१००।
४३	पं. लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा	खुदुनाबारी-१, झापा	२,७०३।
४४	पं. छन्दुराम र गङ्गादेवी भण्डारी	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	२१,०००।
४५	खगनाथ र छायादेवी न्यौपाने	कचनकवल-३, झापा	२,१००।
४६	परशुराम अञ्जना अर्याल	बिर्तामोड-२, झापा	३,१००।
४७	श्रीमती दुर्गादेवी खतिवडा	चारपाने-३, झापा	३,९८०।
४८	इन्द्र र निर्मला भट्टराई	धरमपुर-६, झापा	२,१००।
४९	मोहन र खेमकुमारी भेटवाल	बिर्तामोड-२, झापा	४,६०५।
५०	पं. बद्रीनाथ र तुलसा खतिवडा	चारपाने-३, झापा	५,२५०।
५१	भूमिका खनाल	अर्जुनधारा-१, साधुटार, झापा	६,२००।
५२	देवीमाया सिग्देल	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	५,६०५।
५३	लालुनाथ र नेत्रकला भण्डारी	कनकाई न.पा.-१, प्रजापती, झापा	२,६००।
५४	गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी	मुमुक्षुभवन, काशी, वाराणसी, भारत	२,१२५।
५५	अम्बिकाप्रसाद दाहाल	गौरादह न.पा.-३, झापा	२,१०५।
५६	गोविन्दराज र निर्मला कँडेल	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	२,१००।
५७	देवीप्रसाद र सुशीला सङ्ग्रौला	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक, झापा	२५,०५५।
५८	दिनेश चापागाईं	पूजा प्लाइउड इन्डष्ट्रिज प्रा.लि. बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	५,१००।
५९	विनय र पिङ्की आगी	न्युदिल्ली, भारत	२१,०००।
६०	केशवप्रसाद र देवीमाया खतिवडा	सतासी-८, टेक्रा, झापा	५,२७६।
६१	शारदा भट्टराई	अर्जुनधारा-७, झापा	४,२००।
६२	केदारनाथ र खिमादेवी गौतम	अनारमनी-६, झापा	१४,२१७।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६३	नरनाथ र वेदकुमारी घिमिरे (छोराबुहारीः मोहन, सीता घिमिरे)	चारपाने-३, झापा	६३,२११।
६४	चन्द्रमाया न्यौपाने	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	२,२५०।
६५	गुरुभक्त न्यौपाने	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	२,२५०।
६६	छविलाल र कमला भण्डारी	चारपाने-३, झापा	७,१३१।
६७	प्रसाद थापा	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१००।
६८	रामप्रसाद र गौरादेवी पौडेल	सतासी-८, आँपटारी, हाल चारपाने-३, झापा	१४,३१५।
६९	विष्णुभक्त दाहाल स्व. पत्नी देवका दाहालको पुण्यस्मृतिमा	अर्जुनधारा-४, झापा	५,६००।
७०	रघुनाथ रिजाल	बुद्धशान्ति-१, झापा	२,११२।
७१	जनकलाल र कलामाया सुवेदी	चारपाने-३, झापा	७५,५९१।
७२	कृष्णप्रसाद खनाल	चारपाने-३, झापा	२५,०००।
७३	श्रीमती रेणुका घिमिरे	लखनपुर-४, हाल गायत्री मन्दिर कनकाइ माई, झापा	१०,५११।
७४	नारायणस्वरूप ब्रह्मचारी (टीकाराम), श्रीमती चन्द्रकला ढुङ्गेल	दुहवी-३, सुनसरी	२,६०३।
७५	पं. भानुभक्त एवं कमला अधिकारी	अनारमनी-१, बुट्टाबारी, झापा	१५,००३।
७६	तोयानाथ एवं नेत्रकुमारी फुँयाल	बाह्रदशी गा.पा.-५, झापा	२,१००।
७७	इन्द्रप्रसाद र हर्कमाया धमला	बाह्रदशी गा.पा.-५, झापा	२,१००।
७८	तिलप्रसाद र टंककुमारी फु"याल	बाह्रदशी गा.पा.-५, झापा	२,१११।
७९	मदन एवं नम्रता अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	५,२००।
८०	देवीमाया एवं दुर्गाप्रसाद पनेरु	बुद्धशान्ति-२, जयपुर, झापा	५,१०५।
८१	तुलसीराम, सचिना न्यौपाने	अर्जुनधारा-१, साधुटार, झापा	४,११०।
८२	तुलसा देवी काफ्ले	सतासी न.पा.-९, झापा	२,१००।
८३	डिल्लीराम र अम्बिका देवी रिजाल	अर्जुनधारा-१, झापा	३,२०५।
८४	हरिभक्त र कल्पना शिवाकोटी	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	१०,१५१।
८५	वासुदेव एवं शोभा पौडेल	अर्जुनधारा-५, झापा	२,७१०।
८६	श्रीमती लीलादेवी पौडेल (पति उदयराजको पुण्यस्मृतिमा)	अनारमनी-१, झापा	७,००१।
८७	श्रीमती पद्मा (परमा) अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-६, बुट्टाबारी, झापा	१३,०२६।
८८	सुभाष र यशोदा सुवेदी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	३,२०५।
८९	चित्रा भण्डारी मिश्र	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,७०५।
९०	नरेन्द्र एवं गङ्गामाया सिलवाल	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	६,३००।
९१	मैना प्रधान	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	३,५१०।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९२	श्रीमती भक्तिमाया तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	१५,०००।
९३	टीकादेवी खरेल	चारपाने-३, झापा	११,०००।
९४	मीनप्रसाद एवं स्व. तुलसादेवी रिजाल	बिर्तामोड न.पा.-२, बेल्डाँगी, झापा	२,१००।
९५	निरोजकुमार र मनिला श्रेष्ठ खड्का (स्व. मातापिता जीवनकुमार र विद्यादेवी श्रेष्ठको पुण्यस्मृतिमा)	बिर्तामोड-३, झापा	२००,०००।
९६	यदुनाथ एवं दुर्गादेवी खतिवडा	कनकाई न.पा.-४, झापा	४,०००।
९७	यमनाथ एवं वेदमाया सुवेदी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	३,११०।
९८	पदमराज र इन्दिरा भट्टराई	इटहरी-४, सुनसरी	२,५२०।
९९	डिल्लीराम र कृष्णमाया भण्डारी	चारपाने-३, झापा	१२,४०५।
१००	रमानाथ र रुक्मिणा खतिवडा	चारपाने-३, झापा	४,६४०।
१०१	बुद्धिराज र धनमाया गौतम	कमल गा.पा.-६ झापा	१०,००५।
१०२	चन्द्र र लीला पौडेल	सतासी-९, दुधे, झापा	७,१००।
१०३	निलम एवं मीना प्रसाईं	बिर्तामोड-२, झापा	२,१००।
१०४	दुर्गाप्रसाद एवं मनमाया पनेरु	बुद्धशान्ति-२, झापा	६,०००।
१०५	प्रेमप्रसाद एवं नेत्रकुमारी निरौला	बिर्तामोड न.पा.-५, झापा	३,१००।
१०६	नेत्रप्रसाद र राधिका कोइराला (स्व. पुत्र पुरुषोत्तम कोइरालाको पुण्यस्मृतिमा)	चारपाने-१, वैसाबाडी, झापा	२०,३९०।
१०७	उर्मिला/देवीभक्त श्रेष्ठ	हिकोला परिवार बिर्तामोड, झापा	१४,३११।
१०८	दधिराम र अयोध्यादेवी पौडेल	चारपाने-३, झापा	२,४११।
१०९	तोयानाथ र गङ्गादेवी भण्डारी	चारपाने-३, झापा	७,१००।
११०	तुलसीराम भण्डारी	चारपाने-३, झापा	६,१०१।
१११	रममाया पौडेल	पथरी-९, मोरङ, हाल बि.न.पा-२, झापा	८,६२०।
११२	फणीन्द्रकुमारी सिलवाल	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१००।
११३	भूपेन्द्र अर्याल, उर्मिला, अनुशरण, अनुषा अर्याल	कन्याम, इलाम	२९,२००।
११४	देवी पञ्चकन्या कीर्तन मण्डली	बिर्तामोड न.पा.-१, चारपाने, झापा	२,५००।
११५	पूर्णबहादुर र मनमाया खड्का	चारपाने-३, झापा	२८,२८२।
११६	सोमनाथ गौतम (स्व. हजुरबाहजुरआमा बृहस्पति एवं खगेश्वरा गौतमको पुण्यस्मृतिमा)	अर्जुनधारा-६, झापा	४,७१०।
११७	लक्ष्मीनारायण भट्टराई	चारपाने-३, झापा	१३२,७११।
११८	इन्दिराज र पुष्पा पौडेल	चकचकी-७, हाल दमक-१०, झापा	११,४००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११९	विष्णुस्वरूप ब्रह्मचारी (काफ्ले हजुरबुबा)	बिर्तामोड न.पा.-२, विवेकाश्रम, झाप	२,१००।
१२०	अम्बिकादेवी र चन्द्रप्रसाद कोइराला	लखनपुर-५, हाल बिर्तामोड न.पा.-३, झापा	४,१००।
१२१	रोहिणीप्रसाद र सृजना गौतम	तेह्रथुम, हाल चारपाने-४, झापा	८,६३२।
१२२	पर्शुराम पौडेल	महाभारा, झापा	६,१०५।
१२३	देवीप्रसाद (दिव्यानन्द) र डिकुरादेवी भण्डारी	गरामनी-१, झापा	६,११२।
१२४	छत्रकुमारी लुइँटेल	चारपाने-४, बेलडाँगी, झापा	९,०२०।
१२५	खगनाथ र यमुनादेवी भण्डारी	चारपाने-३, झापा	३५,००१।
१२६	लीलाराम न्यौपाने	सिद्धार्थनगर न.पा. भैरहवा रुपन्देही	७६,०००।
१२७	भीम र यमकला अधिकारी	सिद्धार्थनगर भैरहवा, रुपन्देही	५,१००।
१२८	डी.आर. शर्मा	सिद्धार्थनगर, बर्मेलीटोल रुपन्देही	३,१००।
१२९	रङ्गलाल र विष्णुमाया भण्डारी	चारपाने-१, झापा	४,२५०।
१३०	विवेकाश्रम	चारपाने-३, झापा	५,३५०।
१३१	बुद्धिप्रसाद पौडेल	चारपाने-३, झापा	५,१२२।
१३२	खडानन्द अधिकारी	गरामनी, झापा	५,६३४।
१३३	ध्रुव श्रेष्ठ पञ्चकन्या	पञ्चकन्या ग्रुप भैरहवा	२,१००।
१३४	कमलानन्द (केशवानन्द) ब्रह्मचारी	उत्तरकाशी, भारत	१०,०००।
१३५	नृसिंह दास वजरंगलाल, वृजमोहन अग्रवाल	नयाँबजार, सिलीगुडी, भारत	४,२००।
१३६	श्यामलाल अग्रवाल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१३७	रामनिवास मित्तल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१३८	पं. जयप्रकाश खतिवडा	चामुर्ची बजार, भारत, हाल वि.न.पा.-२, चारपाने	२,३८०।
१३९	देवराज गोयल जी	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४०	धर्मचन्द्र मित्तल जी	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४१	तारकेश जी अग्रवाल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४२	पवन कुमार जी अग्रवाल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४३	चिरञ्जीविलाल वंशल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४४	धर्मचन्द्र अग्रवाल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४५	बलवान शर्मा	चामुर्ची बजार, भारत	२,९०१।
१४६	नवीन वंशल	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४७	श्यामसुन्दर गुप्ता	चामुर्ची बजार, भारत	२,१०१।
१४८	टीकाकुमारी जबेगु इजम	शिवसताक्षी-७, झापा	३६,०००।
१४९	राजकुमार खाकोलिया	फेन्सी बजार, गुवाहाटी, भारत	२,१०१।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५०	किशनलाल विदासरिया	गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५१	बाबुलाल अग्रवाल	गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५२	जुगलकिशोर अग्रवाल	गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५३	राजेन्द्रकुमार पोद्दार	गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५४	चन्द्रमणि भुसाल	मालीगाउँ, गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५५	सुरेश अग्रवाल	बडाबजार, कलकत्ता, भारत	२,१०१।
१५६	अरुण उपाध्याय	लासित नगर, गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५७	प्रभुदयाल जालान	फेन्सी बजार, गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५८	पुरुषोत्तम जी सराफ	फेन्सी बजार, गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१५९	गणपत राय धानुका	धानुका चेरेटी ट्रष्ट, गुवाहाटी, भारत	८,१६०।
१६०	देवीदत्त जालाल जी	फेन्सी बजार, गुवाहाटी, भारत	२,१०१।
१६१	रामगोपालजी गाडोदिया	फेन्सी बजार, गुवाहाटी, भारत	४०,०००।
१६२	लक्ष्मी भारद्वाज	ब्राह्मण पाडा, तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६३	निरज क्षेत्री (गौतम)	वेलरपाडा, तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६४	रञ्जित महत क्षेत्री	हावाखाना, तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६५	डा. तेजबहादुर नेवार	हावाखाना, तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६६	रोहीन्द्र प्रधान	हावाखाना, तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६७	सुश्री शान्ता रिजाल	हावाखाना, तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६८	देवराज उपाध्याय भट्टराई	तुरा, मेघालय, भारत	२,१०१।
१६९	प्रमोद भट्टराई	ब्राह्मण पाडा, तुरा मेघालय, भारत	२,१०१।
१७०	तीर्थ र सीता पौडेल	कमल गाउँपालिका-६, झापा	४,८१०।
१७१	प्रदीप क्षेत्री (मिश्र)	ब्राह्मण पाडा, तुरा मेघालय, भारत	२,१०१।
१७२	चन्द्रबहादुर लम्सान	वेलर पाडा, तुरा मेघालय, भारत	२,१०१।
१७३	राजेश प्रधान	ब्राह्मण पाडा, तुरा मेघालय, भारत	२,१०१।
१७४	एमराज नेवार	ब्राह्मण पाडा, तुरा मेघालय, भारत	२,१०१।
१७५	श्रीमती भीमा नेवार	ब्राह्मण पाडा, तुरा मेघालय, भारत	२,१०१।
१७६	पं. शान्तिराम दुलाल	न्यू दार्जिलिङ मोड, सिलिगुडी, भारत	२,१०१।
१७७	सोमभगत जी साहेवाला (शिव आइरन)	बिर्तामोड, झापा	२,१००।
१७८	शिवकुमार खड्का	चावहिल, काठमाडौं	२,१००।
१७९	हरिशंकर अग्रवाल	कैलाशपति स्टोर्स, बिर्तामोड, झापा	९,५०१।
१८०	गोपाल चौधरी	बिर्तामोड न.पा., झापा	२,१००।
१८१	नरेन्द्र पोद्दार	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१८२	गोपाल साहेवाला अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,५००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८३	सुरेश कुमार अग्रवाल (भद्रपुरे)	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१८४	दिनेश मित्तल	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१८५	झुनप्रसाद र भोममाया तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	१५,७४२।
१८६	महावीरप्रसाद मौर	धुवुरी, असाम, भारत	३,३६०।
१८७	पूर्णानन्द र कमला तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	२१,०६७।
१८८	विष्णुभक्त र जानुका भट्टराई	चारपाने-३, झापा	४,४३२।
१८९	श्रीमती मनीदेवी अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१९०	लक्ष्मणकुमार अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१९१	प्रदीपकुमार अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१९२	जगदीश राय अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
१९३	जगन्नाथ र हेमलता खनाल	चारपाने-३, झापा	२१,१००।
१९४	भेषराज र देवीमाया दहाल	बिर्तामोड, झापा	२११,२०१।
१९५	बलराम र गङ्गा डाँगी	डाँगीबारी (हाल चारपाने-२), झापा	५६,६१७।
१९६	श्रीमती रेणुका तिम्सिना	लखनपुर-६, झापा	४,७१६।
१९७	ध्रुवप्रसाद र रमा न्यौपाने	चन्द्रगढी-६, झापा	३,७३७।
१९८	देवीप्रसाद र कौशिलादेवी गौतम	चारपाने-३, झापा	१०,०००।
१९९	दानबहादुर राउत	चारपाने-१, झापा	५४,२०१।
२००	श्रीमती चामुण्डा भण्डारी	चारपाने-३, झापा	१०,९०५।
२०१	श्रीमती भीमादेवी चापागाईं	चारपाने-३, झापा	३१,६०५।
२०२	जितेन्द्र बस्नेत	चारपाने-१, झापा	१४,६११।
२०३	रत्ननाथ र सावित्रादेवी खनाल	अर्जुनधारा-६, झापा	१६,६४२।
२०४	पं. आनन्दप्रसाद र लीलादेवी सिग्देल	अर्जुनधारा-६, झापा	७,६१६।
२०५	नरनाथ र श्रीमती कमला गिरी	चारपाने-२, झापा	५,६२६।
२०६	पुष्पलाल र पुष्पा पौडेल	चारपाने-३, झापा	६,४६१।
२०७	रामप्रसाद र गोमा ओझा	चारपाने-३, झापा	६,५१२।
२०८	कृष्णराज र मञ्जु भण्डारी	अर्जुनधारा-६, झापा	९,२७९।
२०९	रनमाया क्षेत्री, दुर्गा क्षेत्री (कार्की)	चारपाने-३, रामचौक, झापा	५,००५।
२१०	प्रेमप्रसाद वन	अर्जुनधारा-६, झापा	५१,५११।
२११	कृष्णशरण लामिछाने	टाँघनडुब्बा-१, झापा	३५,०००।
२१२	हरिप्रिया लामिछाने	टाघनडुब्बा-१, झापा	४२,०००।
२१३	हरिप्रसाद भण्डारी	चारपाने-१, झापा	५१,१११।
२१४	ज्यो. पं. गङ्गाप्रसाद र देवीमाया खरेल	चारपाने-४, झापा	३२,४६६।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२१५	मनमाया तिम्सिना र कमल अधिकारी	चारपाने-३, झापा	४,१११।
२१६	डिल्लीराम र मायादेवी सिटौला	चारपाने-२, झापा	४२,१५६।
२१७	अनन्तलाल गौतम	अर्जुनधारा-८, झापा	२,२०७।
२१८	वृजमोहन गट्टानी	शनिश्चरे, झापा	२१,०००।
२१९	झरेन्द्रकुमार खत्री, डिल्लीराम प्रसाईं	आदर्श नगर, झापा	२,१००।
२२०	खुममाया खनाल	मेचीनगर न.पा-५, धुलाबारी, झापा	५,२२०।
२२१	मेघराज भट्टराई	चारपाने-३, हाल सदिया आसाम, भारत	३,१००।
२२२	श्रीमती मेनुका भट्टराई	चारपाने-३, रामचोक, झापा	३,५६५।
२२३	मञ्जु नेपाल	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	२,१६७।
२२४	नित्यानन्द एवं कमला अधिकारी	बाह्रदशी गा.पा., राजगढ, झापा	५,५०५।
२२५	रीता खतिवडा	दुधे, झापा	२,१११।
२२६	पर्शुराम र पार्वता पौड्याल	चारपाने-३, झापा	५१,०४७।
२२७	टंक र पिङ्गला गौतम	चारपाने-३, झापा	३४,५५५।
२२८	शिवलाल ओली	मेचीनगर न.पा., मागुरमाडी, झापा	२,१०५।
२२९	वासुदेव र नर्मदा निरौला	चारपाने-१, झापा	५५,६८३।
२३०	तिलरूपा तिम्सिना	मेचीनगर न.पा., धुलाबारी, झापा	२,१६२।
२३१	चन्द्रादेवी कँडरिया	सतासीधाम-६, झापा	२,७११।
२३२	टंक र मुना बस्नेत	चारपाने-१, झापा	१९,८००।
२३३	तुलसीप्रसाद र योगमाया गौतम	अनारमनी-६, हाल चारपाने-३, झापा	३१,५७४।
२३४	गणेशप्रसाद र शकुन्तला भट्टराई	भद्रपुर, झापा	६,११६।
२३५	कृष्णद्वैपायन गुरुकुल	महेशपुर-८, झापा	४,२११।
२३६	हिमादेवी गौतम	चारपाने-३, झापा	५,३१५।
२३७	जानुकादेवी भट्टराई	चारपाने-४, झापा	२,१००।
२३८	योगमाया सुवेदी	अनारमनी-२, झापा	३,०००।
२३९	अरविन्दराज मोदी	भारत	१५,६००।
२४०	शम्भु घिमिरे	गरामनी-९, झापा	५,१०५।
२४१	तेजप्रसाद भण्डारी	अर्जुनधारा-६, झापा	१५,२११।
२४२	विद्यासागर र पार्वतीदेवी अधिकारी	चारपाने-३, झापा	२७,०००।
२४३	रुद्र एवं मेनुका घिताल	बिर्तामोड-२, झापा	१२,६१६।
२४४	नवराज दहाल	अनारमनी-२, झापा	३,३००।
२४५	सयपत्री महिला समूह	चारपाने-२, झापा	२,१११।
२४६	महेन्द्र एवं यमुना रेग्मी	सुन्दरपुर, मोरङ	४,२५१।
२४७	निरकुमार र राधा बुढाथोकी	चारपाने-३, झापा	१५,२११।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२४८	निरकुमार, नेत्रबहादुर, खिनबहादुर, राधा, निर्मला बुढाथोकी (स्व. बुवाआमा रत्नबहादुर र दीर्घमायाको पुण्यस्मृतिमा)	चारपाने-३ र अर्जुनधारा-६, झापा	१००,१११।
२४९	श्रीकृष्ण र तुलसादेवी खरेल	अर्जुनधारा-६, झापा	७,६३६।
२५०	पं. माधवशरण र इन्द्रकुमारी नेपाल	चारपाने-२, झापा	१८,२०१।
२५१	चन्द्रप्रसाद र शान्ता बजगाईं	चारपाने-५, झापा	२२,७०६।
२५२	बोधनाथ र द्रौपदा गौतम	गोल्धाप-७, झापा	५,४५७।
२५३	टीकादेवी भण्डारी	चारपाने-३, झापा	५,२००।
२५४	पुण्य पौडेल	फुङ्लिङ, ताप्लेजुङ	२,१००।
२५५	रुद्रप्रसाद र टीकामाया खनाल	चारपाने-३, झापा	१४,९००।
२५६	पर्शुराम गिरी	चारपाने-३, झापा	५०,१००।
२५७	दिनानाथ र विष्णुमाया सिग्देल	चारपाने-३, झापा	१५,४२६।
२५८	सुरेशकुमार र कान्ता वंशल	बिर्तामोड, झापा	२६,२००।
२५९	मुकुन्द र रमा ढुङ्गाना	चारपाने-२, झापा	४,१०६।
२६०	टेकबहादुर र विष्णुकुमारी गिरी	अर्जुनधारा-५, झापा	५,६४०।
२६१	भीम र जानुका सञ्जेल	चारपाने-२, झापा	७,६४०।
२६२	माधव र जानुका सिटौला	चारपाने-४, झापा	२५,२२१।
२६३	केदार र पद्मा खतिवडा	चारपाने-१, झापा	५,१०१।
२६४	मदनकुमार र ठरकुमारी अधिकारी	अर्जुनधारा-६, झापा	२,२०१।
२६५	डम्बर र सीता देउजा	चारपाने-२, झापा	१५,०५१।
२६६	देवीप्रसाद गिरी	चारपाने-४, झापा	५,७१०।
२६७	अम्बिका नेपाल, छोरा फडीन्द्र नेपाल	चारपाने-३, झापा	१०,६६६।
२६८	तेजप्रसाद र भुवनेश्वरी खतिवडा	चारपाने-१, झापा	६,१२०।
२६९	तेजप्रसाद र पवित्रा खनाल	अर्जुनधारा-६, झापा	१०,२४७।
२७०	लाला प्रेमानन्द (रोशन) पोख्रेल	चारपाने, झापा	१२,१००।
२७१	भवानीप्रसाद एवं कुमारी राजवंशी	चारपाने-३, झापा	१३,१०५।
२७२	विवेकशील महिला कृषि स. संस्था लि.	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	१४,२००।
२७३	देवीप्रसाद तिम्सिना (थुर्पीनाथ)	चारपाने-३, झापा	६१,२६०।
२७४	बाबुलाल अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,१०१।
२७५	पवनकुमार अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	२,१००।
२७६	उदयलाल श्रेष्ठ	नारायणघाट (नारायणी)	४,२००।
२७७	मदनगोपाल सुब्बा	चारपाने-५, झापा	२५,८०१।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२७८	नारदमणि सिटौला	अर्जुनधारा-६, झापा	२,१११।
२७९	जानकीप्रसाद र इन्द्रकुमारी दहाल	चारपाने-२, झापा	३,१५६।
२८०	लीलाबहादुर बस्नेत	चारपाने-१, बिर्तामोड, झापा	१०,००१।
२८१	होमनाथ उपाध्याय र मेनुकादेवी नेपाल	चारपाने-३, रामचौक, झापा	५०,१०१।
२८२	भवानीप्रसाद र नर्मदा दहाल	बिर्तामोड न.पा.-३, चारपाने, झापा	४,३५५।
२८३	पदमप्रसाद जबेगु	शिवसताक्षी-६, दुधे, झापा	३५,०००।
२८४	गणेशबहादुर र देवीमाया कार्की	अर्जुनधारा-६, झापा	११,२०६।
२८५	तिलरूपा धिताल	चारपाने-३, झापा	५,०२१।
२८६	डिल्ली प्रसाईं	अनारमनी, झापा	२,१००।
२८७	फणीन्द्र र कमला तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	३५,२०२।
२८८	गीता बस्नेत	चारपाने-१, झापा	२,१०१।
२८९	एकता महिला बचत समूह	चारपाने-४, झापा	२,६५६।
२९०	कृष्णकुमार र बुद्धकुमारी गिरी	चारपाने-३, झापा	१०,२३३।
२९१	ताराप्रसाद र सुभद्रा खनाल	चारपाने-१, झापा	३,४०५।
२९२	चित्रादेवी भट्टराई स्मृति प्रतिष्ठान	जमुना इलाम	५,१११।
२९३	बद्री भट्टराई	चारपाने-३, झापा	७,५११।
२९४	भरत र उषा गिरी	अर्जुनधारा-६, झापा	५,९३८।
२९५	तिलकबहादुर र देवीमाया गिरी	चारपाने-३, झापा	५१,०००।
२९६	प्रेमप्रकाश र धनकुमारी सिटौला	चारपाने-४, झापा	७,००५।
२९७	शिवालय तथा राधाकृष्ण मन्दिर परिवार	राजगढ-८, झापा	३,२०५।
२९८	राममाया ओडारी	चारपाने-१, झापा	२,१००।
२९९	कृष्णप्रसाद ओली	चारपाने-६, झापा	१२,०३७।
३००	यदुनाथ र उमादेवी भण्डारी	चारपाने-३, झापा	१६,८३६।
३०१	छविरमण भट्टराई	चारपाने-३, झापा	४,३०३।
३०२	नारायण र फुलन राजवंशी	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	१६,८७६।
३०३	शम्भु र उमा पोख्रेल	अनारमनी-९, झापा	११,०००।
३०४	भद्रमाया सापकोटा	चारपाने-३, झापा	३,७१२।
३०५	सहयोगी महिला कृषि सहकारी संस्था लि.	चारपाने-३, झापा	२,६४६।
३०६	सनराइज रोजिल एन्ड टर्पिनटाइन	चारपाने-२, झापा	२,१११।
३०७	गोविन्द र तिला गौतम	चारपाने-३, झापा	४,११०।
३०८	सरस्वती गौतम	चारपाने-३, झापा	८,८०५।
३०९	दुर्गाप्रसाद खरेल	चारपाने-३, झापा	३,५०२।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१०	नारायण र वेदमाया सिटौला	चारपाने-२, झापा	५,१११।
३११	मणिचन्द्र र हिमादेवी सापकोटा	चारपाने-३, झापा	६,११६।
३१२	युवराज र शान्तादेवी कँडरिया	चारपाने-३, झापा	९,७४५।
३१३	कौशिला सिटौला	चारपाने-१, झापा	५,०५१।
३१४	सुभाष र रेनुका खनाल	चारपाने-३, झापा	१०,६३१।
३१५	टेकनाथ र दीपा खनाल	चारपाने-३, झापा	१७,८३६।
३१६	टीकामाया बस्नेत	चारपाने-३, झापा	७,२३०।
३१७	ग्रामीण सरोकार समूह	चारपाने-७, झापा	५,२५०।
३१८	शम्भु र रमा घिमिरे	चारपाने-३, झापा	१४,५५०।
३१९	मोहन र शिला ढकाल	चारपाने-१, झापा	२,१०१।
३२०	शान्तिदीप महिला कृषि सहकारी संस्था लि.	चारपाने, झापा	६,४९१।
३२१	केशव खतिवडा	स्कुलचौन महारानीझोडा-४, झापा	२,१३६।
३२२	इन्द्रबहादुर र हरिमाया अधिकारी	चारपाने-४, झापा	५,७६५।
३२३	ओम नमःशिवाय कीर्तन मण्डली	चारपाने-५, चैतुवारी, झापा	२,१००।
३२४	रुक्मिणी दुलाल कार्की	अनारमनी-६ हाल चारपाने-३, झापा	७,८५०।
३२५	दुर्गा भण्डारी एवं राधेश्याम गोयल	पशुपति भेनियर उद्योग एवं कनकाई प्लाइउड इन्डष्ट्रिज बिर्तामोड-२, झापा	३५,१०५।
३२६	धर्मानन्द र लीला गौतम	चारपाने-३, झापा	२,१२१।
३२७	बद्रीप्रसाद अधिकारी	चारपाने-३, झापा	२,१०१।
३२८	प्रकाश र गीता रिजाल	चारपाने-२, झापा	९,६५५।
३२९	राधाकृष्ण कीर्तन मण्डली	चारपाने-३, नयाँ नगर, झापा	७,३२७।
३३०	नरहरि र कल्पना न्यौपाने	चारपाने-४, झापा	२१,५७६।
३३२	जनक र चन्द्रकला पौडेल	चारपाने-२, झापा	५१,०००।
३३३	सुरज र नारायणी भण्डारी	अर्जुनधारा-६, झापा	१५,०५८।
३३४	तिलकबहादुर र देविका पौडेल	चारपाने-४, झापा	४,१०५।
३३५	एक्सेल डेभलपमेन्ट बैंक लि.	बिर्तामोड, झापा	५,१००।
३३६	मालवती र दुलप राजवंशी	चारपाने-३, झापा	७,४९८।
३३७	शिवराज र सीता तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	१४,१६४।
३३८	नेत्र र निर्मला बुढाथोकी	अर्जुनधारा-५, झापा	५,२४२।
३३९	प्रजापति र खगमाया धिताल	चारपाने-३, झापा	९,१५१।
३४०	ज्ञानेन्द्र र दिव्यकला कार्की	चारपाने-३, झापा	२,२६६।
३४१	रणबहादुर र चन्द्रकला पौडेल	चारपाने-४, झापा	७,४२५।
३४२	नगेन्द्रप्रसाद र शान्ता सङ्ग्रौला	चारपाने-४, झापा	१६,६३६।
३४३	तुलसीराम र लक्ष्मीदेवी गड्तौला	चारपाने-३, झापा	३,६७७।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३४४	सावित्रा न्यौपाने	चन्द्रगढी, झापा	६,८२६।
३४५	खगेन्द्र र यमुना सापकोटा	राजघाट, उर्लाबारी, मोरङ्ग	२,६२६।
३४६	दाताराम र वविता भण्डारी	अर्जुनधारा-६, झापा	११,७२७।
३४७	देवेन्द्र र बिन्दु श्रेष्ठ	चारपाने-३, झापा	१३,२३२।
३४८	रुद्रकुमार र गोमादेवी सुब्बा	चारपाने-४, झापा	५,११६।
३४९	निर्जला हितैषी बचत समूह	चारपाने-२, झापा	६,७४३।
३५०	प्रह्लाद र रत्नकुमारी बिमली	चारपाने-४, झापा	८,०२०।
३५१	विष्णुबहादुर र रुद्रलक्ष्मी श्रेष्ठ	चारपाने-१, पञ्चकन्या, झापा	४७,०११।
३५२	खेम केसी र सीमादेवी खत्री	चारपाने-२, झापा	३,२२१।
३५३	शिलादेवी खतिवडा	चारपाने-१, झापा	२,१०५।
३५४	राधिकादेवी कोइराला	चारपाने-१, झापा	१९,६१२।
३५५	शुभनारायण देव	चारपाने-१, झापा	७,२६२।
३५६	गोमादेवी अधिकारी	चारपाने-३, झापा	४,९९९।
३५७	नारदमणि एवं तोरणकुमारी अधिकारी	चारपाने-३, झापा	७,४९९।
३५८	गणेश र बुध खनाल	गोमेन्द्र कलेज, अनारमनी, झापा	५,१००।
३५९	धर्म र पवित्रा खड्का	अनारमनी-६, झापा	११,१११।
३६०	हरि र उरादेवी मिश्र	चारपाने-४, झापा	५,७००।
३६१	जमुनादेवी न्यौपाने	चन्द्रगढी, भद्रपुर-६, झापा	२,१२०।
३६२	इन्दिरा सुब्बा	चारपाने-५, झापा	२१,००५।
३६३	प्रभाखर कँडरिया	सुरुङ्गा-५, झापा	२१,१११।
३६४	बालकृष्ण रिजाल	दुवागढी-६, झापा	५,५५५।
३६५	विष्णु प्रसाईं	धाइजन-८, झापा	११,१११।
३६६	गोपीचन्द्र र भीमादेवी गिरी	अनारमनी-६, झापा	११,१११।
३६७	वासु र निलु केसी	कलङ्की, काठमाडौं	११,१११।
३६८	डा. सी.पी. (चन्द्रप्रकाश) यादव	बिर्तामोड, झापा	६२,१११।
३६९	सँगालो महिला कृषि सहकारी संस्था	चारपाने-२, झापा	४,१०२।
३७०	लयप्रसाद पौड्याल	चारपाने-२, झापा	२,२३१।
३७१	कमलप्रसाद र विमला गौतम	चारपाने-३, झापा	४,४७०।
३७२	द्रोण र कमला मिश्र	चारपाने-३, झापा	२,१२२।
३७३	अशोककुमार मिण्डा	अनारमनी-४, झापा	२,२००।
३७४	ज्ञानबहादुर र शान्ता पौड्याल	चारपाने-४, झापा	६,७३५।
३७५	जानुकादेवी नेपाल	चारपाने-१, झापा	१०,००१।
३७६	गोपीकृष्ण प्रसाईं	अनारमनी-१, बुट्टाबारी, झापा	१४,९२५।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७७	कृष्ण र कृष्णमाया रिजाल	चारपाने-३, झापा	८,०१६।
३७८	तारा कार्की	ताप्लेजुङ, फुङ्लिङ	२१,१११।
३७९	कनकाई कत्था उद्योग	चारपाने-४, झापा	११,१११।
३८०	केदार गिरी	चारपाने-५, झापा	१६,४११।
३८१	गोविन्द शर्मा उप्रेती	अनारमनी-४, झापा	५,००५।
३८२	पर्शुराम ढकाल	अनारमनी-३, झापा	६२,२१६।
३८३	स्वामी कृष्णानन्द गिरी महाराज	हरिद्वार, सप्तसरोवर, भारत	२,१०५।
३८४	तेजबहादुर एवं गङ्गामाया थापा	चारपाने-१, झापा	२,१००।
३८५	हनुमान दास अग्रवाल	चारपाने-३, झापा	२,१००।
३८६	विष्णुप्रसाद गुरागाईं	लखनपुर-५, लालधुन्द्रा, झापा	४,३५२।
३८७	खिमादेवी बाँस्कोटा	महारानीझोडा-३, स्कुलचौन, झापा	११,८५०।
३८८	हरिभक्त एवं धनमाया गौतम	महभारा-४, कुञ्जीबारी, झापा	६,२२५।
३८९	लक्ष्मणकुमार एवं दुर्गादेवी ढकाल	चारपाने-१, बिर्तामोड, झापा	१६,३०३।
३९०	यशोदा खतिवडा	चारपाने-३, झापा	७,६२२।
३९१	माधवप्रसाद एवं सरस्वती भट्टराई	अर्जुनधारा-७, झापा	५,५०५।
३९२	खगेन्द्र एवं इन्दिरा सिग्देल	चारपाने-३, झापा	८,५००।
३९३	तुङ्गबहादुर बस्नेत	चारपाने-१, बिर्तामोड, झापा	२,६००।
३९४	महेन्द्र र दुर्गा खतिवडा	चारपाने-३, झापा	२,१११।
३९५	खगेन्द्र ढकाल	अर्जुनधारा-१, झापा	५,१००।
३९६	सरिता श्रेष्ठ	अनारमनी-४, झापा	२,२००।
३९७	बीरबहादुर प्रधान, श्याम एवं मीरा प्रधान	अर्जुनधारा-५, झापा	८,०६८।
३९८	दिलकुमार र विष्णुमाया सङ्ग्रौला	अनारमनी-४, झापा	३,७२५।
३९९	हेमसागर र डम्मरकुमारी कट्टेल	चारपाने-३, झापा	५,१४१।
४००	सुनिता र विष्णु शिवाकोटी	चारपाने-३, झापा	५,०००।
४०१	डिल्लीराम र हिमादेवी तिम्सिना	गरामनी-३, झापा	३,१११।
४०२	कमलप्रसाद र दुर्गादेवी ढुङ्गेल	चारपाने-२, झापा	६,५७१।
४०३	पद्माकुमारी रिजाल	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	१२,०३६।
४०४	हिमादेवी मिश्र	चारपाने-४, झापा	३,२०५।
४०५	ओमभक्त र दीपा प्रसाईं	अनारमनी-१, झापा	५,५००।
४०६	डा. राधेश्याम र उर्मिला पोखरेल	चारपाने-३, झापा	९,८३९।
४०७	लक्ष्मी र तारा भट्टराई	चारपाने-३, झापा	२,१००।
४०८	श्यामप्रसाद, कल्पना र बुबा जानकी दहाल	चारपाने-२, झापा	३,६३१।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४०९	जगन्नाथ (देवीप्रसाद) र द्रौपदा कँडरिया	सुरुङ्गा-४, झापा	४७,५००।
४१०	नैनकला गौतम	चारपाने-३, झापा	२,१२६।
४११	देवीप्रसाद र गङ्गादेवी गौतम	अनारमनी-७, बिराटपोखर, झापा	३०,५२६।
४१२	मानबहादुर र भगवती गिरी	अनारमनी-३, बिर्तामोड, झापा	१२५,०२५।
४१३	पूर्णाखर मरासेनी	चारआली, झापा	२,१००।
४१४	तुलसा र सोमनाथ गौतम	अनारमनी-८, झापा	२,६१६।
४१५	ओम अधिकारी	चारपाने-३, झापा	५,६३७।
४१६	लता कट्वाल	चारपाने-१, झापा	२,५०५।
४१७	कौशिला, दधिराम र शिवमाया पौडेल	भक्तपुर कटुन्जे-६, झापा	४,२००।
४१८	रामप्रसाद र नीता घिमिरे	हेटौंडा न.पा. मकवानपुर, झापा	२,१०५।
४१९	त्रिलोचन सापकोटा	चारपाने-४, झापा	७,०१५।
४२०	पं. लेखनाथ दहाल	अर्जुनधारा-६, झापा	५,१००।
४२१	सरस्वता नेपाल (सरस्वती)	चारपाने-३, झापा	७,५१०।
४२२	पद्मा अधिकारी	अर्जुनधारा-६, झापा	२,१००।
४२३	दुर्गाप्रसाद दहाल	चारपाने-३, झापा	३,०२५।
४२४	रामप्रसाद सिटौला र देवी सिटौला	चारपाने-२, वालकल्याण स्कुल, झापा	७,४०६।
४२५	सोमनाथ र चन्द्रा तिम्सिना	चारपाने-३, झापा	२१,०००।
४२६	रघुनाथ (राजु) र गीतादेवी अधिकारी	अर्जुनधारा-५, झापा	११,५०१।
४२७	कञ्चनजङ्घा उच्च मा.वि.	अनारमनी-२, झापा	२,१०५।
४२८	सोमनाथ र भगवती निरौला	चारपाने-१, झापा	७,३९०।
४२९	रमेश र सरला भट्टराई	शनिश्चरे-२, झापा	१५,८००।
४३०	विष्णुप्यारी सिटौला	अनारमनी-३, झापा	५०,१०१।
४३१	मुन्ना, मुण्टु, श्रवण शाह	पाँचगाछी-८, झापा	२,१०५।
४३२	निरु भट्टराई	चारपाने-३, झापा	३,६००।
४३३	गणेशप्रसाद सुवेदी (स्व. पितामाता केदारप्रसाद र अनुमायाको पुण्यस्मृतिमा)	पा"चगाछी-२, जनता, झापा	३,९२०।
४३४	होमनाथ र कमला मिश्र	चारपाने-४, झापा	४,१६०।
४३५	भरत र पुष्पादेवी भट्टराई	अर्जुनधारा-६, झापा	६,७८१।
४३६	कुलप्रसाद र वेदमाया गौतम	चारपाने-३, झापा	३,२०५।
४३७	हेमनाथ र धनमाया तिम्सिना	बिर्तामोड-२, झापा	७,६६०।
४३८	सुनम पौड्याल (हरिमाया)	बिर्तामोड-२, झापा	८,२३१।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४३९	लेखनाथ र साबु खनाल	चारपाने-३, झापा	७,०२५।
४४०	श्रीलाल एवं लालमाया भट्टराई	ज्यामिरगढी-५, हाल चारपाने, झापा	१०,८११।
४४१	रामप्रसाद र चन्द्रकला न्यौपाने	अनारमनी-३, बिर्तामोडे, झापा	२,५०५।
४४२	निश्चल पोखे्रल	चारपाने-३, झापा	३,६७२।
४४३	निमिता पोखे्रल	चारपाने-३, झापा	३,६७२।
४४४	लोकनाथ र जमुनादेवी भण्डारी	फूलबारी-४, कैलाली	८,५१५।
४४५	यमनाथ र वसुन्धरा सुवेदी	अर्जुनधारा-६, झापा	५,५५५।
४४६	भवानीप्रसाद र सीतादेवी खरेल	चारपाने-१, झापा	२,११५।
४४७	टीकानाथ नेत्रकुमारी खनाल	चारपाने-१, झापा	१६,००२।
४४८	रुद्रप्रसाद र धनमाया चिमरिया	सुरुङ्गा-५, झापा	११,२०६।
४४९	पूर्णप्रसाद र इन्दिरा नेपाल	चारपाने-३, झापा	४,२३०।
४५०	शरदकुमार र सरिता श्रेष्ठ	अनारमनी-४, झापा	५,०००।
४५१	उद्धवप्रसाद र धनकुमारी अधिकारी	अनारमनी-४, बिर्तामोड, झापा	२,५०५।
४५२	चन्द्रप्रसाद र दुर्गादेवी निरौला	चारपाने-३, झापा	९,४३७।
४५३	विनोद र कमला पाण्डे	नेसनल भिजन स्टुडियो चारपाने-३, झापा	३,३००।
४५४	पङ्कज घिमिरे	धरान-१४, सुनसरी	३,८१४।
४५५	धनमाया भण्डारी	गरामुनी-१, झापा	५,०००।
४५६	ज्यो. टीकाराम खरेल	इँटाभट्टा, झापा	५,१२०।
४५७	सावित्री बस्नेत	चारपाने-१, बिर्तामोड, झापा	१००,०००।
४५८	पर्शुराम आचार्य	इटहरी, सुनसरी	५३,२११।
४५९	विष्णुप्रसाद ओली	चारपाने-८, चैतुबाडी, झापा	११०,१११।
४६०	जयनारायण ढुङ्गाना	बिर्तामोड, झापा	१११,१११।
४६१	लीलाबहादुर बानियाँ	म्याग्दी धवलागिरी, झापा	५,५५५।
४६२	रुद्रबहादुर केसी	म्याग्दी गलेश्वर, झापा	५,५५५।
४६३	लेखनाथ र जानुका तिम्सिना	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	८,७४६।
४६४	सन्तोषकुमार र सीता धौराली	चारपाने-३, झापा	३,२०५।
४६५	कृष्णकुमारी पौड्याल	सिजुवा-९, मोरङ	५,७४५।
४६६	मुक्तिनाथ र सावित्रा गौतम	सङ्खुवासभा, चैनपुर	२,१८०।
४६७	शान्तप्रसाद र नर्मदा रिजाल	चारपाने-५, हाल बि.न.पा-२, झापा	२,१००।
४६८	हरिमाया र जगन्नाथ अधिकारी	चारपाने-१, झापा	४,५३०।
४६९	हेमप्रसाद पोखे्रल	चारपाने-३, झापा	२,१००।
४७०	टीकाराम र टङ्कमाया अधिकारी	पाँचथर, सुभाङ-९, सिम्ले	६,३५०।
४७१	चिरन्जीवी र सरस्वती रिजाल	चारपाने-५, झापा	४,१३०।
४७२	दीपेन्द्र र सीता श्रेष्ठ	अनारमनी-४, झापा	२,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७३	गुरुप्रसाद र लीलादेवी तिम्सिना	सुरुङ्गा-२, झापा	५,००५।
४७४	रमेश अधिकारी	चारपाने-१, बिर्तामोड, झापा	६,१००।
४७५	सुशीलकुमार र सङ्गीता बस्नेत	बिर्तामोड न.पा-२, चारपाने, झापा	१०,१००।
४७६	कृष्णप्रसाद र पार्वता सिग्देल	अर्जुनधारा-६, झापा	६,६२१।
४७७	लहेन्द्र र प्रीति न्यौपाने	चारपाने-४, झापा	८,३११।
४७८	उमाप्रसाद र सीतादेवी सिटौला	सुरुङ्गा-५, झापा	५,००५।
४७९	प्रेमप्रसाद र सुलोचना ओली	सुरुङ्गा-२, झापा	५,०२५।
४८०	रामकुमारी खतिवडा	चारपाने-१, झापा	४,१६०।
४८१	मनबहादुर र मनमाया खत्री	चारपाने-२, झापा	३,१८०।
४८२	होमनाथ र लक्ष्मी भट्टराई	चारपाने-३, झापा	११,६७०।
४८३	पर्शुराम र भीमकला कठैत	चारपाने-३, झापा	७,३००।
४८४	शिवकुमार र देवी सापकोटा	चारपाने-१, झापा	२,५००।
४८५	यमनाथ र गङ्गादेवी कँडेल	चारपाने-२, झापा	४,११०।
४८६	रमेश र झुमादेवी उप्रेती	चारपाने-३, झापा	८,८२५।
४८७	कमलप्रसाद उप्रेती र निर्मला तिम्सिना	चारपाने-२, झापा	५,२५६।
४८८	रमेश र शान्ता बस्नेत (स्व. पिता गङ्गा बस्नेतको पुण्यस्मृतिमा)	चारपाने-२, झापा	३,५००।
४८९	उमादेवी र टीकाराम कँडरिया	अनारमनी-२, झापा	२,१००।
४९०	धनपति र धनमाया भट्टराई	अनारमनी-१, बिर्तामोड, झापा	२,६००।
४९१	भूमि र रूपा खतिवडा	चारपाने-३, झापा	६,५१५।
४९२	हरि र सङ्गीता गुरागाईं	इटहरी-५, सुनसरी	९,२००।
४९३	कमलबहादुर र रेणुका दहाल	चारपाने-३, झापा	३,५६०।
४९४	पवनकुमार र देवका पौड्याल	चारपाने-३, झापा	३,०६०।
४९५	राधादेवी एवं जगन्नाथ भण्डारी	चारपाने-१, झापा	३,११५।
४९६	डोलबहादुर र मुना बोहोरा	चारपाने-१, झापा	२,६०५।
४९७	कमलप्रसाद र कमला बाँसकोटा	चारपाने-१, झापा	४,७२२।
४९८	हिमा पनेरु र डा. तीर्थ खरेल	जलथल-६, झापा	२,१००।
४९९	राजु भारती	चारपाने-३, झापा	२,१००।
५००	पुष्पराज र प्रज्ञा प्रसाईं	उपहार बुक्स, बिर्तामोड, झापा	२,१००।
५०१	अनिल एवं चन्द्रा भट्टराई	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	२५,६००।
५०२	छविलाल र भागीरथा सापकोटा	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	९,०००।
५०३	चिन्तामणि एवं मञ्जु तिम्सिना	दमक न.पा.-११, झापा	१५,३००।
५०४	प्रितम (तोयानाथ) अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	४,९९९।
५०५	जीवनाथ एवं निर्मला तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	३,२११।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५०६	एकराज र यशोदा उप्रेती	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक, झापा	२५,५००।
५०७	दशनामी समाज	शनिअर्जुन, बिर्तामोड न.पा., कनकाई, झापा	५,५०५।
५०८	गङ्गादेवी र ऋद्धिबहादुर अधिकारी	शनिअर्जुन-४, झापा	५,१००।
५०९	रामप्रसाद एवं तारादेवी सिटौला	पथरिया-९, हाल काठमाडौं	२,१६०।
५१०	हरिप्रसाद एवं निर्मला न्यौपाने	भद्रपुर न.पा.-१४, चन्द्रगढी, झापा	२,१००।
५११	चन्द्रमाया गिरी	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	३,१५०।
५१२	रुक्मप्रसाद र लक्ष्मिमा चापागाईं	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक, झापा	११,६०५।
५१३	युवराज एवं तारा घिमिरे	सिक्किम, जोरथान, भारत	३,१०८।
५१४	दुर्गाप्रसाद र पुष्पा भण्डारी	शनिअर्जुन-४, चारपाने, झापा	७,३१२।
५१५	शालिग्राम काफ्ले	इटहरी उप. न.पा.-५, सुनसरी	२,१०१।
५१६	राधिका, शोभा, राजेन्द्र न्यौपाने	इलाम न.पा.-८	२,५२१।
५१७	पदमबहादुर एवं पार्वती रिकिम मगर	बिर्तामोड-२, रामचौक, झापा	३,७१०।
५१८	इन्द्रप्रसाद र कृष्णमाया भट्टराई	जाँते-९, मोरङ	२,१००।
५१९	मेघराज र पवित्रा भण्डारी	राजघाट-४, मोरङ	१३,०००।
५२०	लोकेशचन्द्र पोखरेल	शिवसताक्षी न.पा.-८, झापा	७,१००।
५२१	देवीशरण, गोपाल दासी प्रसाईं	बिर्तामोड-१, चारपाने, झापा	६,३५०।
५२२	वैद्यनाथ दास	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	५,१००।
५२३	भीमादेवी सापकोटा	पाँचगाछी-५, सालमारा, झापा	९,४४०।
५२४	गौरीशंकर शिवालय, गायत्री आश्रम गुरुकुल	डाँगीबारी-८, झापा	२,१००।
५२५	लक्ष्मीप्रसाद भट्टराई	फूलबारी चोकपुर, ताप्लेजुङ	२,१००।
५२६	खेमलता न्यौपाने	बिर्तामोड-८, सैनिकचौक, झापा	५,५१०।
५२७	दिननाथ र इन्द्रमाया ढुङ्गाना	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	९,०२०।
५२८	महेन्द्रकुमार र ज्योति गिरी	शनिअर्जुन-४, झापा	२,१००।
५२९	ओमनाथ र शारदा सुवेदी	शनिअर्जुन-४, झापा	४,७००।
५३०	तारानिधि र वेदकुमारी पराजुली	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	९,२००।
५३१	पीताम्बर एवं शारदा गौतम	इटहरी उप न.पा., सुनसरी	२,१२५।
५३२	प्रकाशचन्द्र गौतम	शिवसताक्षी न.पा.-३, झापा	२,१००।
५३३	तेजप्रसाद र गङ्गा पौडेल	मलवाङ-७, कपिलवस्तु (प्र.जि.अ.,झापा)	३,१००।
५३४	दिनेशबहादुर र चिना निरौला		३,१०५।
५३५	मेघराज (रमेश) र उषा पराजुली	भरौला-९, सुनसरी	२,१००।
५३६	दिव्यराज ढकाल	कनकाई न.पा. सुरुङ्गा, झापा	९,३००।
५३७	वेदनिधि र भीमादेवी सापकोटा	चन्द्रगढी, झापा	२,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५३८	गणेशबहादुर र मैनादेवी कार्की	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	६,९६५।
५३९	अम्बरबहादुर र मधुमाया गिरी	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	२०१,२१६।
५४०	अम्बिकाप्रसाद र सीता तिम्सिना	बिर्तामोड-२, झापा	२,१०५।
५४१	विष्णुप्रसाद सिग्देल	तोपगाछी-९, झापा	८,८०८।
५४२	वेदनिधि र गोमा खरेल	बिर्तामोड-१, पञ्चकन्या, झापा	८,१०५।
५४३	वेदप्रसाद र देवीमाया पाठक	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	९,०००।
५४४	वेदनिधि र सावित्रा भट्टराई	मेचीनगर न.पा-१, धुलाबारी, झापा	३,१००।
५४५	छविरमण र ज्योत्स्ना भट्टराई	बिर्तामोड-२, झापा	४,१००।
५४६	चेतनशील महिला समूह	बिर्तामोड-५, झापा	२,१००।
५४७	चूडामणि र दुर्गा पौडेल	बिर्तामोड-२, झापा	६,१३५।
५४८	देवमाया खनाल	बिर्तामोड-२, झापा	८,१००।
५४९	देवीप्रसाद र दुर्गादेवी बाँस्कोटा	बिर्तामोड-१, झापा	४,१२१।
५५०	देवराज र टीकादेवी निरौला	बिर्तामोड-१, झापा	२,१००।
५५१	दाताराम कँडरिया	बिर्तामोड-२, आदर्शनगर, झापा	१३,२२०।
५५२	गोपाल आचार्य	शनिअर्जुन-५, झापा	४,२५५।
५५३	गोपाल र हिरा कार्की	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	१५,२२१।
५५४	गीता नेपाल	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	२,१००।
५५५	ज्ञानप्रसाद र नमि राजवंशी	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	२,१००।
५५६	घनश्याम र राधिका दहाल र आमा टोमादेवी दहाल (स्व. बुबा मोतीराम दाहालको पुण्यस्मृतिमा)	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	४,६७५।
५५७	हेमलाल र कल्पना सुवेदी	दमक-१, झापा	२,१२५।
५५८	हेमराज खरेल	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	२,१००।
५५९	खड्गप्रसाद र मायादेवी पनेरु	बुद्धशान्ति-२, जयपुर, झापा	१९,५००।
५६०	कुलप्रसाद र रूपादेवी खरेल	बिर्तामोड-१, झापा	२,१००।
५६१	कमल र यमुना मिश्र	बिर्तामोड-२, रामचौक, झापा	१५,०२१।
५६२	कुलप्रसाद र पवित्रा ओली	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	१०,२५५।
५६३	पं. खिबराज र पार्वती न्यौपाने	शनिअर्जन-४, झापा	६,३१५।
५६४	कृष्णकला खरेल (स्व. पितामाता मोहनलाल र मनमाया उप्रेतीको पुण्यस्मृतिमा)	घट्टेकुलो, काठमाडौं	१०,११०।
५६५	कमलप्रसाद लुइँटेल र सीता नेपाल	बिर्तामोड-२, झापा	३,३१५।
५६६	लक्ष्मीप्रसाद र मुनादेवी पौडेल	ताप्लेजुङ, हाल चारपाने, झापा	२,११५।
५६७	मेदनीप्रसाद र नन्दमाया शिवाकोटी	बिर्तामोड न.पा.-३, झापा	५१,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५६८	मुकुन्द (राजेन्द्र) तथा नारायण पोखे्रल	इटहरी, सुनसरी	२१,१११।
५६९	माधवप्रसाद र पिण्डेश्वरी तिम्सिना	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	४,५२०।
५७०	नारद र दुर्गा पौडेल	बिर्तामोड-२, झापा	३,०१६।
५७१	निर्मल खतिवडा र दिष्मा अधिकारी खतिवडा (स्व. माता पार्वताको पुण्यस्मृतिमा)	बिर्तामोड-२, झापा	३५,६६५।
५७२	निरज खनाल	बाहुनडाँगी-४, झापा	२,१००।
५७३	पदम र अरुणा प्रधान	शनिअर्जुन-४, झापा	७,१००।
५७४	पदमकुमार र कमला ओली	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	५,०००।
५७५	पार्वती आमा समूह कीर्तन मण्डली	गरामनी ३÷४, हर्चना, झापा	२,५०५।
५७६	पूर्णानन्द र राधा पोखे्रल	दमक-१२, झापा	३,१०५।
५७७	पदमप्रसाद र अम्बिका आचार्य	इटहरी-१, सुनसरी	५,१००।
५७८	रूपा र मुक्ति सिटौला	अनारमनी-६, माता मन्दिर, झापा	२,१००।
५७९	रोमप्रसाद भण्डारी	बिर्तामोड-२, झापा	३,०००।
५८०	रुक्सुम र छविरमण अधिकारी	शनिअर्जुन-४, झापा	८,८१०।
५८१	सरस्वती सिटौला	खुदुनाबारी-२, झापा	२,१००।
५८२	शङ्कर र धनकुमारी राजवंशी	बिर्तामोड-१	२,६००।
५८३	सन्तोष रानी अग्रवाल	मानसरोव, कलोनी, सिलीगुडी	२१,०००।
५८४	सञ्जय र शैलजा अग्रवाल	सिन्ताम बजार, सिलीगुडी	२६,१२०।
५८५	सुभाष र अस्मिता खड्का	शनिअर्जुन-४, झापा	२,१००।
५८६	शङ्कर्षण एवं तोलादेवी चापागाई	शनिअर्जुन-४, झापा	३५,१००।
५८७	श्यामप्रसाद र शान्ता तिम्सिना	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	५,४००।
५८८	शिवप्रसाद र दुर्गादेवी भट्टराई	बिर्तामोड-१, झापा	३,१००।
५८९	टङ्कनाथ नेपाल र रिमा नेपाल	इटहरी-२४, तरहरा, सुनसरी	१०,२०५।
५९०	तेजप्रसाद र सरस्वती आचार्य	इलाम-२, फूलगाछी	२,१००।
५९१	उमाकान्त र दमयन्ता ढुङ्गेल	शनिअर्जुन-६, झापा	२,५००।
५९२	यादवप्रसाद पोखे्रल	बिर्तामोड-२, झापा	३,०००।
५९३	यामनाथ काफ्ले	फिदिम-१, पाँचथर	२,११०।
५९४	दुर्गा पौडेल भट्टराई	बिर्तामोड-२, झापा	६,००२।
५९५	सीतादेवी घिमिरे	इटहरा-४, मोरङ	२,१०५।
५९६	चन्द्रमाया भट्टराई	शनिअर्जुन-४, झापा	५१,०००।
५९७	मेनुका र टेकनाथ खनाल	मेचीनगर न.पा.-५ धुलाबारी, झापा	२,१००।
५९८	गोविन्द र लक्षिमा	बिर्तामोड न.पा.-१, देवी पञ्चकन्या	२,१००।
५९९	उमाकान्त र भीमादेवी पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२, रामचौक चारपाने	१०,२३५।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६००	सावर्णिप्रसाद, जयकुमारी पाठक	बिर्तामोड न.पा.-२	५,३०५।
६०१	हरिप्रसाद र शर्मिला तिम्सिना	कनकाई न.पा.-१, सुरुङ्गा	२,१००।
६०२	शारदाप्रसाद र विन्दा मिश्र	इटहरी-५, सुनसरी	२,१००।
६०३	नारायणप्रसाद पोखरेल	इटहरी-५, सुनसरी	२,५००।
६०४	राजेन्द्र पोखरेल	इटहरी-५, सुनसरी	२,५००।
६०५	कमल र शान्ता अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	१५,०००।
६०६	लक्ष्मी ओली	छातेढुङ्गा, तेह्रथुम	२,६०५।
६०७	डिल्लीराम नेपाल	बिर्तामोड न.पा.-८ ज्योतिनगर, झापा	४,१५५।
६०८	हस्तकुमार र ढाकनसरी राजवंशी	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	४,३००।
६०९	गीता भण्डारी र विष्णु (विवेक) गुरागाई	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१०५।
६१०	चन्द्र र प्रमिला दहाल	कनकाई न.पा.-३, झापा	४,११५।
६११	भवानी र पवित्रा उप्रेती भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	४,११०।
६१२	डा. नवराज आचार्य	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	६,५२५।
६१३	इन्दिरा र राजेन्द्र घिमिरे	इलाम	१०,००५।
६१४	गजेन्द्र दहाल र रुक्मिणी दहाल		५,१००।
६१५	अर्जुन पौडेल		५,००५।
६१६	इन्दिरा खनाल	शिक्षक, श्री साङ्गवेद सं.मा.वि.,	४,०७०।
६१७	राजकुमार उमादेवी लिम्बु	बाह्रदशी गाउँपालिका-५, झापा	४,६००।
६१८	नन्दकिशोर गिरी	शनिश्चरे-८, झापा	५१,०००।
६१९	गीताकुमारी थापा	काठमाडौं, बालुवाटार	५,००५।
६२०	शारदा महत	काठमाडौं, बालुवाटार	३,१००।
६२१	रामप्रसाद न्यौपाने	कलङ्की-१४, काठमाडौं	११,०००।
६२२	डिल्लीराम र चन्द्रकला पोखरेल	अर्जुनधारा-६, झापा	३,६१५।
६२३	शोभा लुइँटेल	बिर्तामोड-२, लिचिडाँगी, झापा	३,७५०।
६२४	राधाकृष्ण कीर्तन मण्डली	गौरीगञ्ज-१, झापा	६,३५०।
६२५	जालपा ढुङ्गाना	गौरीगञ्ज-१, झापा	२,१००।
६२६	करुणा नेपाल	अर्जुनधारा-५, झापा	२,१००।
६२७	हरिप्रसाद सिग्देल	सैनामैना-१, रुपन्देही	५,०००।
६२८	पलिमाया खरेल	बिर्तामोड-२, सूर्यनगर, झापा	२,५००।
६२९	भक्तिराज र तारादेवी पौडेल	बिर्तामोड-५, झापा	२,१००।
६३०	राजकुमार प्रसाईं	बाह्रदशी-६, डाँगीबारी, झापा	३,५०५।
६३१	ऋषिराम र अनिता गुरागाईं	बिर्तामोड-२, झापा	२,१००।
६३२	लगनशील महिला समूह तथा कैलाशेश्वर शिवपाञ्चायन मन्दिर	भद्रपुर-९, झापा	५,५५५।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६३३	चेतनाथ र विष्णुमाया भण्डारी	मेचीनगर न.पा-१४, झापा	२,१००।
६३४	दिननाथ भण्डारी (स्व. अम्बिकादेवी भण्डारीको पुण्यस्मृतिमा)	मेचीनगर न.पा.-१४, झापा	५,१००।
६३५	हेमन्त गौतम (स्व. सासुससुरा देवजना र रङ्गलाल अधिकारीको पुण्यस्मृतिमा)	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१००।
६३६	विष्णुकुमार र अन्जु निरौला	बिर्तामोड न.पा.-५, झापा	२,१०५।
६३७	दमनप्रसाद र टेकमाया रिमाल	बिर्तामोड-९, गरामनी, झापा	२,१००।
६३८	पवित्रा मैनाली अधिकारी	बिर्तामोड-५, झापा	२,१००।
६३९	नन्दप्रसाद एवं विमलादेवी मैनाली	बिर्तामोड न.पा.-२, फूलबारीटोल, झापा	५१,०००।
६४०	कृष्णप्रसाद एवं राधिका घिमिरे	बिर्तामोड-२, रामचौक, झापा	२,१००।
६४१	नन्दिकेश्वर एवं गङ्गा अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.-३, सैनिकमोड, झापा	२,२००।
६४२	सुन्दर आमा समूह	बिर्तामोड-४, झापा	२,१००।
६४३	पुरुषोत्तम बस्याल	सिद्धबाबा, पाल्पा	२,१००।
६४४	हरिमाया खनाल	बिर्तामोड-२, रामचौक, झापा	२,१००।
६४५	भोलानाथ एवं देवीमाया नेपाल	बिर्तामोड न.पा.-८, प्याकुरेल चौक, झापा	२,१००।
६४६	भरत एवं उर्मिला आचार्य	शिवसताक्षी-५, झापा	५,०००।
६४७	राजन एवं यमुना पौडेल	बाह्रदशी-६, झापा	२,१००।
६४८	देवीप्रसाद एवं कृष्णमाया अधिकारी	कनकाई-१, सुरुङ्गा, झापा	२,१००।
६४९	जयप्रसाद एवं टेकमाया ओली	बाह्रदशी-५, झापा	५०,०५५।
६५०	अम्बिकाप्रसाद एवं गायत्री रेग्मी	काठमाडौं	३,२००।
६५१	रमेशप्रसाद एवं पार्वता अधिकारी	बाह्रदशी-३, झापा	२,१००।
६५२	गजुर्मुखी आदित्य कीर्तन मण्डली	बाह्रदशी-५, झापा	४,५५०।
६५३	मन्जु खनाल	अर्जुनधारा-५, झापा	२,१००।
६५४	गङ्गाप्रसाद र शारदा ओली	भद्रपुर-६, झापा	२,१००।
६५५	बालकुमारी तिम्सिना	पथरी शनिश्चरे, मोरङ्ग	२,६००।
६५६	किशोर र मीना भण्डारी	इटहरी-५, सुनसरी	२,५००।
६५७	लक्ष्मी र सीता धिताल	इटहरी-६, आइतबारे, सुनसरी	२,५५५।
६५८	खड्ग र सीता पाठक	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	२,१००।
६५९	विष्णुप्रसाद र गङ्गादेवी तिम्सिना	बुद्धशान्ति-६, झापा	२,५००।
६६०	मोहनकुमार एवं दुर्गादेवी घिमिरे	बिर्तामोड-७, गरामनी, झापा	२,१००।
६६१	शेखर र रन्जना सिटौला	बिर्तामोड-२, झापा	२,६११।
६६२	छविलाल र मीना खतिवडा	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	२,१०५।
६६३	भगीरथ र प्रजिना लुइँटेल	बिर्तामोड न.पा.-२, सूर्यनगर, झापा	२,१००।
६६४	अभिचन्द्र आचार्य	बिर्तामोड-१०, झापा	२,१००।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६६५	गोविन्दबहादुर र गोमादेवी कटुवाल	कमल गा.पा.-७, झापा	२,१००।
६६६	कमला र हेमलता सुवेदी	दमक न.पा.-१, झापा	५,१००।
६६७	दयाराम र खिलमाया सुवेदी	बुद्धशान्ति गा.पा.-२, झापा	२२,१००।
६६८	लक्ष्मी र धनकुमारी सुवेदी	बुद्धशान्ति गा.पा.-२, झापा	२,१०५।
६६९	खडानन्द र गोमा सुवेदी	बुद्धशान्ति गा.पा.-२, झापा	२,१००।
६७०	ताराप्रसाद र पुण्यवती बराल	अर्जुनधारा गा.पा.-५, झापा	२,१०५।
६७१	माधव संस्कृत विद्याश्रम	मेचीनगर न.पा.-१२, सहरेडाँगी, झापा	२,१००।
६७२	डिल्लीराम र दुर्गामाया भण्डारी	मेचीनगर न.पा.-१२, सहरेडाँगी, झापा	२,१००।
६७३	गङ्गाराम र इन्द्रमाया मिश्र	मेचीनगर न.पा.-१२, सहरेडाँगी, झापा	२,१०५।
६७४	आनन्देश्वर शिवमन्दिर गुरुकुल	बुद्धशान्ति-१, होक्से, झापा	२,१००।
६७५	मीनप्रसाद रिजाल	बिर्तामोड-२, चारपाने, बेल्डाँगी, झापा	२,१००।
६७६	नन्दिकेश्वर एवं डम्बरकुमारी निरौला	बिर्तामोड न.पा.-५, झापा	५१,०००।
६७७	इन्दिरा बस्नेत	दमक न.पा.-६, झापा	२,१५५।
६७८	सुष्मा खरेल	दमक न.पा.-६, झापा	२,१५५।
६७९	लक्ष्मीप्रसाद र लक्ष्मीदेवी प्रसाईं		५,००५।
६८०	कमल र पुष्पा खतिवडा	दमक न.पा.-१, झापा	२,१००।
६८१	श्रीप्रसाद मैनाली	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१५०।
६८२	मनरथ र तेजमाया भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१००।
६८३	चिन्तामणि पौडेल	उर्लाबारी-६, मोरङ	५,००४।
६८४	अविनाश, विना, अर्पण न्यौपाने	सिड्नी, अष्ट्रेलिया	५,०००।
६८५	घनश्याम र मातादेवी तथा गेयनाथ र टीका न्यौपाने	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	४,५००।
६८६	लक्ष्मीप्रसाद र कमला ढुङ्गाना	कनकाई न.पा.-८, झापा	२,१००।
६८७	तीर्थ र भागीरथां खतिवडा	मेचीनगर न.पा.-१२, झापा	२,१००।
६८८	ज्योति अग्रवाल	बिर्तामोड न.पा.-३, झापा	२,१००।
६८९	पार्वता गिरी	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१००।
६९०	वर्षा भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.-४, झापा	२,१००।
६९१	कोमलप्रसाद पोखेल	कनकाई न.पा.-३, सुरुङ्गा, झापा	५,०१५।
६९२	गायत्री मातृशक्ति स्वावलम्बन समूह	भद्रपुर न.पा.-६, झापा	५,१००।
६९३	ध्रुवकुमार श्रेष्ठ (शिवसाधक)	भरतपुर-१०, चितवन	२,१०५।
६९४	गङ्गामाता	रुपन्देही-५	२,१०५।
६९५	कमला कुँवर	देवदह न.पा.-५, रुपन्देही	२,१०५।
६९६	पदम र भीमा गिरी	बाह्रदशी-२, राजगड, झापा	२,१००।
६९७	कृष्णप्रसाद र खिना तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.-१, झापा	५,५५५।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

		बिर्तामोड न.पा.-१, झापा	११,१००।
६९८	भानु र लीला शिवाकोटी	बिर्तामोड न.पा.-१, झापा	२,१००।
६९९	मोहन र इन्दिरा शिवाकोटी	बिर्तामोड न.पा.-१, झापा	११,१११।
७००	ग्रामकाली मन्दिर	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	७,२२२।
७०१	होमनाथ र रेणु शाह	बिर्तामोड न.पा.-२, चैतुवारी, झापा	२,१००।
७०२	नगेन्द्रप्र.सङ्ग्रौला (वडाध्यक्ष)	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने, झापा	५,१००।
७०३	कुमार र अनिता पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-२, झापा	२,१००।
७०४	गोपीकृष्ण र वविता पराजुली	बिर्तामोड न.पा.-२, चारपाने झापा	२,६०१।
७०५	उपेन्द्र र चन्द्रकला पराजुली	बिर्तामोड न.पा.-५, झापा	५,५५५।
७०६	रमेश र प्रमिला पौडेल	बिर्तामोड न.पा.-१, झापा	२,५००।
७०७	होमादेवी खरेल	सिलिगुडी, भारत	२,१००।
७०८	होमनाथ नेपाल	अर्जुनधारा, झापा	२,२००।
७०९	युवराज महत र लेखा पनेरु महत		
७१०	विनोदकुमार कठेत र हिमा प्रसाईं कठेत	बिर्तामोड न.पा., झापा	११,०००।
७११	यादवराज उप्रेती	काठमाडौं	७,०००।
७१२	दीक्षा तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा-२, चारपाने, झापा	२,१००।
७१३	कुबेरनाथ लुइँटेल	गौरादह-९, ग्वालमुनी, झापा	३,२००।
७१४	लोकनाथ र स्व. जानुका घिमिरे	म्याग्दी लाइन गण्डकी प्रदेश	५१,०००।
७१५	अग्निप्रसाद र चन्द्रमाया मिश्र	कमल गा.पा.	२,१००।
		कुल जम्मा	८१,८५,३२३।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट ८

अध्यापन कार्यमा योगदान गर्ने (हाल कार्यरत नरहेका) शिक्षकहरूको विवरण (२०२९-२०७८)

- जगन्नाथ भण्डारी

क्र.सं.	शिक्षकको नाम	शैक्षिक योग्यता	तह	पाठ्य विषय	पारिश्रमिक	देखि	सम्म
१	पुष्पलाल तिम्सिना	स्वअध्ययन	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद	स्वयंसेवक	२०२९/०५/०२	२०३३/०१/०६
२	भानुभक्त अधिकारी	मध्यमा (वेद)	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद	निजी स्रोत	२०३३/०१/०७	२०३३/१०/३०
३	विष्णुभक्त भण्डारी	मध्यमा (न.व्या.)	गुरुकुलीय	वेद, व्याकरण, काव्य, कोश	निजी स्रोत	२०३३/११/०१	२०४९/०७/१९
४	अम्बिकाप्रसाद रेग्मी	शास्त्री (न.व्या.)	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण	निजी स्रोत	२०३८/०९/१६	२०४०/०९/२०
५	गोविन्दप्रसाद पौडेल	शास्त्री (न.व्या.)	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण	निजी स्रोत	२०४०/०९/०८	२०४१/०३/२२
६	छन्दुराम भण्डारी	शास्त्री (न.व्या.)	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण	निजी स्रोत	२०४२/१०/१२	२०४४/१०/१८
७	डिल्लीराम गौतम	शास्त्री (न.व्या.)	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण	निजी स्रोत	२०४३/१२/२९	२०४५/०१/१०
८	मित्रप्रसाद ढकाल	शास्त्री (न.व्या.)	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद, व्याकरण	निजी स्रोत	२०४३/१२/२९	२०४६/१०/३०
९	पूर्णानन्द तिम्सिना	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	संस्कृत, नेपाली	दरबन्दी	२०४५/०२/१६	२०७४/११/३०
१०	नन्दराम पाठक	बी.ए.	माध्यमिक	गणित	निजी स्रोत	२०४५/११/०१	२०४७/०१/०८
११	आनन्दप्रसाद सिग्देल	आचार्य (न.व्या.)	माध्यमिक	व्याकरण, कर्मकाण्ड	दरबन्दी	२०४६/०१/०१	२०५३/०६/१६
१२	भूमिप्रसाद खतिवडा	बी.ए.	माध्यमिक	गणित	स्वयंसेवक	२०४६/०१/०१	२०४६/१०/३०
१३	छन्दुराम भण्डारी	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	संस्कृत विषय	स्वयंसेवक	२०४६/०१/०१	२०४६/१०/३०
१४	डिल्लीराम गौतम	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	चण्डी, रुद्री, वेद, नेपाली	स्वयंसेवक	२०४६/०१/०१	२०४६/१०/३०
१५	अम्बिकाप्रसाद रेग्मी	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	नेपाली, संस्कृत	स्वयंसेवक	२०४६/०१/११	२०४६/०२/१९
१६	गोविन्दप्रसाद पौडेल	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	संस्कृत, नेपाली	स्वयंसेवक	२०४६/०१/११	२०४६/०३/१८
१७	नवराज बाँसकोटा	बी.ए.	माध्यमिक	गणित	निजी स्रोत	२०४६/०२/१८	२०४६/०३/१८
१८	डिल्लीराम भण्डारी	शास्त्री (साहित्य)	माध्यमिक	संस्कृत, नेपाली	निजी स्रोत	२०४६/०९/०१	२०४९/०९/१८
१९	पुष्पलाल पौडेल	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	वेद, व्याकरण, कर्मकाण्ड	निजी स्रोत	२०४६/०९/०१	२०४९/०९/१८
२०	नेत्रप्रसाद दाहाल	बी.ए.	माध्यमिक	गणित	निजी स्रोत	२०४७/०१/०१	२०५२/१२/३०
२१	सोमनाथ तिम्सिना	आई.ए.	माध्यमिक	अङ्ग्रेजी	स्वयंसेवक	२०४७/०९/०४	२०४७/१०/२२
२२	पूर्णानन्द अधिकारी	स्वअध्ययन	गुरुकुलीय	शिशुकक्षा	स्वयंसेवक	२०४७/१२/०१	२०४९/०९/२८
२३	जगन्नाथ भण्डारी	शास्त्री (न.व्या.)	माध्यमिक	व्याकरण, कर्मकाण्ड, संस्कृत	स्वयंसेवक, निजी स्रोत, दरबन्दी	२०४८/११/०८	२०७५/१२/१४
२४	दामोदर न्यौपाने	आचार्य (न.व्या.)	माध्यमिक	वेद, कर्मकाण्ड, संस्कृत	स्वयंसेवक	२०४८/११/०८	२०४९/०९/१९
२५	उपेन्द्रप्रसाद ओली	बी.ए.	माध्यमिक	गणित	दरबन्दी	२०४९/११/०१	२०५०/०८/२८
२६	पुरुषोत्तम भण्डारी	बी.ए.	माध्यमिक	गणित	दरबन्दी	२०५२/१२/२३	२०५३/०७/३०
२७	दिलकुमार सङ्ग्रौला	बी.एससी.	माध्यमिक	गणित	दरबन्दी	२०५३/०८/१२	२०६८/०५/१०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

			गुरुकुलीय	शिशुकक्षा	निजी स्रोत	२०५३/१२/१४	२०५४/०१/१०
२८	प्रतिमा भण्डारी	कक्षा १०	प्राथमिक	संस्कृत, नेपाली	काज	२०५४/०६/०५	२०५४/०८/०६
२९	ध्रुव न्यौपाने		प्राथमिक	नेपाली, संस्कृत, कर्मकाण्ड	दरबन्दी	२०५७/११/०८	२०७३/१०/२१
३०	भानुभक्त अधिकारी	मध्यमा (वेद)	माध्यमिक	सामाजिक, नेपाली	निजी स्रोत	२०६१/०६/०१	२०६४/०६/२४
३१	मनकुमारी तिम्सिना	बी.ए. बी.एड.	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, गीता	निजी स्रोत	२०६४/०१/०७	२०६६/०३/१४
३२	छविलाल नेपाल	पूर्वमध्यमा	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, गीता	निजी स्रोत	२०६४/०१/०७	२०६४/०२/२३
३३	षडानन्द तिम्सिना	स्वअध्ययन	गुरुकुलीय	संस्कृत, नेपाली	निजी स्रोत	२०६७/०५/०६	२०६८/११/३०
३४	चन्द्र नेपाल	स्नातकोत्तर	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद	निजी स्रोत	२०६९/०२/०८	२०६९/०३/१८
३५	भीमप्रसाद पौडेल	शास्त्री	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, वेद	निजी स्रोत	२०६९/०५/०१	२०७४/०८/२७
३६	डिल्लीराम खतिवडा	शास्त्री	प्राथमिक	अङ्ग्रेजी, गणित	स्वयंसेवक	२०७३/०२/१७	२०७३/१२/२४
३७	कमल मिश्र	बी.ए.	प्राथमिक	नेपाली, संस्कृत	दरबन्दी	२०७४/०३/३०	२०७५/१२/२९
३८	कुवेर पौडेल	स्नातकोत्तर	गुरुकुलीय	रुद्री, चण्डी	निजी स्रोत	२०७५/०४/१५	२०७५/१२/१२
३९	एकराज भट्टराई	शास्त्री	प्राथमिक	चण्डी, रुद्री, संस्कृत	दरबन्दी	२०७६/०२/२१	२०७६/०८/३०
४०	यज्ञराज दाहाल	शास्त्री	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, संस्कृत	निजी स्रोत	२०७८/०४/०१	२०७८/०६/१७
४१	प्रविन निरौला	शास्त्री	गुरुकुलीय	चण्डी, रुद्री, संस्कृत	निजी स्रोत	२०७८/०७/१०	२०७८/०८/२९
४२	इन्द्रप्रसाद भट्टराई	शास्त्री					

परिशिष्ट ९

कलधारा निर्माण गर्ने महानुभावहरू

क्र.सं.	नाम	ठेगाना
१	तुलसादेवी ढकाल	बिर्तामोड–१, झापा
२	रुद्र, सुभद्रा र विवेक पोखेल	काठमाडौं, हाल अमेरिका
३	ज्ञानेन्द्रराज कार्की	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा
४	मागिलाल र कमलादेवी जिन्दल	बिर्तामोड–६, झापा
५	लोकनाथ र दिलमाया खनाल	बिर्तामोड–२, चारपाने
६	ज्योतिर्विद् आश्विन पोखेलमार्फत विभिन्न महानुभावहरू	बिर्तामोड–२, चारपाने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट -१०

शिक्षक-कर्मचारी विवरण (श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, चारपाने, झापा)

क्र.स.	सङ्केत नं.	नाम थर	पद	तह	सुरु नियुक्ति	किसिम	सम्पर्क नम्बर
१	११००९९	दामोदर न्यौपाने	प्र.अ.	माध्यमिक तृतीय	२०५२-१२-१३	अस्थायी	९८५२६३४००२
				माध्यमिक द्वितीय	२०६१-०१-१०	स्थायी	
२	१६२६०९	चूडामणि पौडेल	शिक्षक	माध्यमिक तृतीय	२०७५-१२-२८	स्थायी	९८४९१८०९१५
३	१५९६२५	सोमनाथ गौतम	शिक्षक	माध्यमिक तृतीय	२०७३-११-०५	स्थायी	९८४२२०८३७९
४	१२८६८४	याङ्गुराज रेग्मी	शिक्षक	माध्यमिक तृतीय	२०६३-०८-२९	स्थायी	९७४४०२४९१९
५		श्यामप्रसाद दाहाल	शिक्षक	नि.मा. तृतीय	२०६५-०५-०२	राहत	९८४२६५६६२४
६	१४५३२३	झलकप्रसाद काफ्ले	शिक्षक	नि.मा. तृतीय	२०६३-०६-०७	स्थायी (काज)	९८१७९१९२४६
७	३१०७१	भरत भट्टराई	शिक्षक	प्राथमिक द्वितीय	२०४५-०५-०३	स्थायी	९८४२६६०२५०
८	१२२१६	कृष्णमाया रिजाल	शिक्षक	प्राथमिक द्वितीय	२०४८-०८-०१	स्थायी	९८४२६९९६५२
९	१४६७००	डिल्लीराम पोखेल	शिक्षक	प्राथमिक तृतीय	२०७१-०६-१०	स्थायी	९८६३६०५२२२
१०	१४९५६६	इन्दिरा खनाल	शिक्षक	प्राथमिक तृतीय	२०७१-०६-३१	स्थायी	९८६७०५५९१०
११	१६५६९५	पवित्रा उप्रेती	शिक्षक	प्राथमिक तृतीय	२०७५-१२-२८	स्थायी	९८४२६६८६७१
१२	१८६२०६	चम्पादेवी खनाल	शिक्षक	प्राथमिक तृतीय	२०७६-०८-२३	स्थायी	९८४२६७१३३४
१३		रामप्रसाद खतिवडा	शिक्षक	नि.मा. तृतीय	२०७८-०४-०१	अस्थायी (स्वयंसेवक)	९८४२४९९२७३
१४		तुलसीराम न्यौपाने	शिक्षक	ध्यान शिक्षक	२०७५-०५-०५	अस्थायी(महर्षि) वैदिक फाउण्डेसन)	९८०७९६१३१२
१५		डिल्लीराम नेपाल	लेखा	कर्मचारी	२०६९-१०-०९	अस्थायी (स्वयंसेवक)	९८४४६९८१७९
१६		बद्रीनाथ खतिवडा	सहयोगी		२०५४-०८-०२	अस्थायी	९८४२६७०६२७

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट ११

शिक्षक-अभिभावक सङ्घ (श्रीसाङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय)

क्र.सं.	नाम थर	पद	ठेगाना	सम्पर्क नम्बर
१	भीमादेवी ढुङ्गेल (पौडेल)	अध्यक्ष	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६२४२६०
२	अम्बिका खनाल	सदस्य	कनकाई न.पा. - ८	९८१६९६००७७
३	निर्मला अधिकारी भट्टराई	सदस्य	मेचीनगर न.पा. - ६	९८२४९८२७८९
४	तीर्थराज पौडेल	सदस्य	कमल गा.पा. - ६	९८५२६७५११०
५	इन्दिरा आचार्य	सदस्य	मेचीनगर न.पा. - ६	९८१४९३२६७९
६	जयराम कोइराला	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. ४	९८४२६२४८८६
७	शेखरनाथ पौडेल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २,	९८०६०५५०५६
८	श्यामप्रसाद दाहाल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६५६६२४
९	कृष्णमाया रिजाल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६९९६५२
१०	छन्दुराम भण्डारी	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४०९९
११	दामोदर न्यौपाने	सदस्य-सचिव	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६३४००२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १२

बालकक्षा विद्यार्थी विवरण २०५३-२०६२

क्र.स	विद्यार्थीको नाम थर	देखि	सम्म
१	नवीन तिम्सिना	२०५३।११।१३	२०५५।११।३०
२.	प्रवीण खनाल	२०५३।११।१३	२०५५।११।३०
३	अच्युत भण्डारी	२०५३।११।१३	२०५५।११।३०
४	आशुतोष न्यौपाने	२०५३।११।१३	२०५५।११।३०
५	अर्जुन खतिवडा	२०५४।११।२६	२०५५।११।३०
६	सागर तिम्सिना	२०५४।११।०१	२०५५।११।३०
७	अनुराधा पौडेल	२०५४।११।०१	२०५५।११।३०
८	उद्धव मिश्र	२०५३।११।१३	२०५५।११।३०
९	पूजन ढकाल	२०५३।११।१३	२०५५।११।३०
१०	तीर्थराज अधिकारी	२०५३।११।१८	२०५५।११।३०
११	रामप्रसाद भण्डारी	२०५५।०१।०३	२०५५।११।३०
१२	ईश्वरीप्रसाद भण्डारी	२०५५।०१।०३	२०५५।११।३०
१३	निर्मला भण्डारी	२०५३।११।१५	२०५५।११।३०
१४	निकिता बुढाथोकी	२०५५।०१।१७	२०५५।११।३०
१५	विनोद पौडेल	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
१६	प्रकाश पौडेल	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
१७	अशोक पौडेल	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
१८	शिवहरि न्यौपाने	२०६२।०१।०१	२०६३।०८।०२
१९	नवराज भण्डारी	२०५३।११।१३	२०५५।०१।१५
२०	अभिषेक भण्डारी	२०६२।०१।०१	२०६३।०७।३०
२१	सुबोध सिग्देल	२०५३।११।२०	२०५३।१२।१६
२२	सुबोध चापागाईं	२०६२।१०।०४	२०६२।११।११
२३	कमल नेपाल	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
२४	प्रदीप पौडेल	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०३
२५	गोपाल खतिवडा	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
२६	कुमार पौडेल	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
२७	राघव तिम्सिना	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
२८	रितेश सापकोटा	२०६२।०२।०१	२०६३।०८।०२
२९	सन्तोष भण्डारी	२०६२।०३।०५	२०६२।१०।३०
३०	भवीन्द्र निरौला	२०५३।११।१६	२०५३।१२।२७
३१	विजय लुईंटेल	२०५४।११।०१	२०५४।१२।२१
३२	शङ्कर न्यौपाने	२०६२।०१।०१	२०६३।०८।०२

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १३

विभिन्न शीर्षकमा प्राप्त सहयोग विवरण

रकमको स्रोत	आ.व.	रकम
शौचालय निर्माण		
जि.शि.का. झापा	२०६९/७० र २०७०/७१	२२४९००
पर्यटन विकास बोर्ड	२०७०/७१ र २०७१/७२	२०००००
जि.वि.स.	२०७०/७१	१०००००
चारपाने गा.वि.स.	२०६९/७० र २०७०/७१	९००००
विवेकाश्रम	२०७०/७१	१११६५०
श्यामसुन्दर अग्रवाल	२०७०/७१	१५०७४९
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत	२०६९/७० र २०७०/७१	३८८१९८
जम्मा		१२६५४९७
छात्रावास निर्माण		
जि.वि.स. (सांसद विकास कोष-अमृतलाल राजवंशी)	२०७१/७२	४५०००
बिर्तामोड नगरपालिका	२०७१/७२ र २०७२/७३	१३०३२५
जगदीश मिन्ड्रा टिन अनुदान	२०७२/७३	४१०००
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत तथा महर्षि फाउन्डेसन	२०७१/७२ र २०७२/७३	१६४१५७१
जम्मा		१८५७८९६
चारकोठे भवन निर्माण		
जिल्ला शिक्षा कार्यालय	२०७२/७३ र २०७३/७४	३२०००००
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत तथा महर्षि फाउन्डेसन	२०७२/७३ र २०७३/७४	१०४०६६२
जम्मा		४२४०६६२
घेराबारा निर्माण		
बिर्तामोड नगरपालिका	२०७६/७७ र २०७७/७८	४९२५००
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत तथा महर्षि फाउन्डेसन	२०७६/७७ र २०७७/७८	६५४९३४
जम्मा		११४७४३४
स्नानघर निर्माण		
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत तथा महर्षि फाउन्डेसन	२०७५/७६	२८१६००
जम्मा		२८१६००
पुस्तकालय निर्माण (इ-पुस्तकालय)		
बिर्तामोड नगरपालिका	२०७५/७६	६५००००
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत	२०७५/७६	७९१९०
जम्मा		७२९१९०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अईसीटी व्यवस्थापन		
बिर्तामोड नगरपालिका	२०७६/७७	६५००००
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत	२०७६/७७	४८२००
जम्मा		६९८२००
चारकोठे विद्यालय भवन (माथि)		
जि.वि.स. तथा बिर्तामोड नगरपालिका	२०७३/७४ र २०७४/७५	५७७७५०
सनातन धर्म सेवा समिति मोरङ	२०७४/७५	२१०००
जिन्सी सहयोग (उल्लिखित रकम बराबर)		
नवीन अग्रवाल काठमाडौं (रड र सिमेन्ट)	२०७३/७४ र २०७४/७५	२१३१६५०
केदार गिरी (कञ्चनजङ्घा क्रसर उद्योग), (स्व. बुवा डबलबहादुर गिरी एवं स्व. दाजु कृष्ण गिरीको पुण्यस्मृतिमा) (गिटी र बालुवा सहयोग)	२०७३/७४	९९०००
अनिल भट्टराई, फणीन्द्र तिम्सिना, भूपेन्द्र अर्याल (कनकाई माई क्रसर उद्योग) (गिटी र बालुवा सहयोग)	२०७३/७४	७५०००
शेरबहादुर थापा (जय काली भगवती रोडा उद्योग) (गिटी र बालुवा सहयोग)	२०७३/७४	१८०००
बलराम डाँगी (जय घटाल क्रसर उद्योग) (गिटी सहयोग)	२०७३/७४	१५०००
मिलन बस्नेत (मङ्गलश्री क्रसर उद्योग) (गिटी सहयोग)	२०७३/७४	१५०००
भगवान् बस्नेत (केरखा ब्रिक इन्डस्ट्रिज गौरादह)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
पुष्प खड्का	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
योगेन्द्र थापा, पञ्चेश्वर इँटा उद्योग पाडाजुंगी	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
मदन मित्तल (पुनम इटा उद्योग)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
लेखनाथ खनाल (लक्ष्मी इटा उद्योग)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
घनश्याम तिम्सिना तथा बलराम डाँगी (श्रीराम इँटा उद्योग)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
जगन्नाथ शर्मा खनाल (जानकी इँटा उद्योग)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
नवीन गट्टानी (प्रदीप इँटा उद्योग)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
मनोहर अग्रवाल (पशुपति इँटा उद्योग)	२०७४/७५	१५०० थान इँटा
बिर्तामोड नगरपालिका	२०७५/७६	५९२५९७
प्रदेश स्तरीय योजना (१ नं. प्रदेश) ट्रष्ट एकराज कार्की	२०७५/७६	४९३५११
विद्यालयको आन्तरिक स्रोत तथा महर्षि वैदिक फाउन्डेसन	निर्माण अवधिभर	४५१६५२१
जम्मा		८५५५०२९
खानेपानी व्यवस्थापन		
फिल्टर मेसिन (सहारा नेपाल र बिर्तामोड न.पा.को साझेदारी)	२०७६/७७	२७३४६०
जडान खर्च (विद्यालयको आन्तरिक स्रोत)	२०७६/७७	१५८५०
जम्मा		२८९३१०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १४

लेखा समिति र कर्मचारी विवरण (श्रीविवेकाश्रम)

लेखा समिति

क्र.सं.	नाम थर	पद	ठेगाना	सम्पर्क नम्बर
१	रघुनाथ (राजु) अधिकारी	संयोजक	अर्जुनधारा - ६	९८०४९००६८०
२	टेकनाथ खनाल	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८५२६७३१०५
३	भूमिप्रसाद खतिवडा	सदस्य	बिर्तामोड न.पा. २, चारपाने	९८४२६७०५७४

कर्मचारी विवरण

क्र.सं.	कर्मचारीको नाम थर	पद	नियुक्ति मिति	नियुक्तिको किसिम	सम्पर्क नम्बर
१	छविलाल नेपाल	अर्चक	२०४९-१२-१६	अस्थायी (निजी स्रोत)	९८४२६५५४८५
२	कुलप्रसाद गौतम	भान्से	२०६८-०१-२२	अस्थायी (निजी स्रोत)	९८१३३७७७६२
३	दधिराम दाहाल	गौसेवक	२०७७-०४-२२	अस्थायी (निजी स्रोत)	९८१७९३४०२०

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १५

स्वर्णमहोत्सव २०७८ को दीप प्रज्वलनसहित शुभारम्भ गर्ने महानुभावहरूको नामावली

क्र. सं.	दाताको नामथर	ठेगाना	रकम
१	पं. विष्णुभक्त र मेनका भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,१०५।-
२	पं. लेखनाथ दाहाल	कनकाई न.पा., दुर्गापुर	५१,००१।-
३	हरिप्रसाद र विष्णुमाया तिम्सिना	भद्रपुर न.पा.—७, गायत्रीटोल	५१,०००।-
४	छविलाल र कमला भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.—२, रामचौक, झापा	५१,०००।-
५	महेन्द्रकुमार र ज्योति गिरी	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,०००।-
६	देवमाया, डिलीराम र मायादेवी सिटौला	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,०००।-
७	धर्मगुरु व्यासाचार्य किशोरकुमार गौतम	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,०००।-
८	होमनाथ र लक्ष्मीदेवी भट्टराई	बिर्तामोड न.पा.—२, रामचौक, झापा	५१,०००।-
९	यमुनादेवी भण्डारी (स्व. पति खगनाथको पुण्यस्मृतिमा) आफ्नै खर्चमा एक वर्षसम्म राम मन्दिरमा अखण्ड दीप प्रज्वलनसमेत भइरहेको	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,०००।-
१०	लोकनाथ र दिलमाया खनाल छोराबुहारी जगन्नाथ र हेमलता खनाल	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	५१,०००।-
११	हरिप्रसाद र गीतादेवी ओझा	अर्जुनधारा—५, झापा	५१,०००।-
१२	हरिशंकर र विमला अग्रवाल	बिर्तामोड, झापा	५१,०००।-
१३	राधेश्याम र गायत्रीदेवी गोयल	कनकाई प्लाई, बिर्तामोड- ५, झापा	५१,०००।-
१४	रामप्रसाद र देवी सिटौला (पिता स्व. हरिचरण र लक्ष्मीदेवी सिटौलाको पुण्यस्मृतिमा)	विर्तामोड न.पा.—२, झापा	५१,०००।-
१५	मनरथ र कुमारी भेटवाल नाति युनिस (पिता स्व.लक्ष्मीप्रसाद भेट्वालको पुण्यस्मृतिमा)	विर्तामोड न.पा.—२, झापा	५१,०००।-
१६	सुरेशकुमार र कान्ता वंशल	बिर्तामोड न.पा.—४, झापा	५१,०००।-
१७	शम्भु र रमा घिमिरे	विर्तामोड—२, रामचौक, झाप	५१,०००।-
१८	डा. शरद र पुनम राई	मेचीनगर न.पा.—६, झापा	५१,०००।-
१९	२ नं. वडा कार्यालय, बिर्तामोड	बिर्तामोड	४४,३२५।-
२०	घनश्याम र राधिका तिम्सिना	बिर्तामोड न.पा.—२, चारपाने, झापा	११,०००।-
		जम्मा	९,७३,४३१।-

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १६

श्री साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, विवेकाश्रममा अध्ययन गरी रोजगारीका विभिन्न कार्यक्षेत्रमा सेवा पुर्‌याउने महानुभावहरूको विवरण (सम्पर्कमा आएसम्म) निम्नानुसार रहेको छः

पुराण-इतिहासतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कार्यक्षेत्र
१	पं. लक्ष्मीप्रसाद खतिवडा	अर्जुनधारा–१, साधुटार, झापा	कथाव्यास एवं अध्यक्ष, शङ्कराचार्य पीठ, साधुटार, झापा
२	पं. छन्दुराम भण्डारी	बिर्तामोड न.पा.–२, झापा	कथाव्यास एवं अध्यक्ष, साङ्गवेद सं.मा. वि., चारपाने, झापा
३	पं. होमनाथ खनाल	अर्जुनधारा–५, झापा	कथाव्यास एवं अध्यक्ष, ससऋषि गुरुकुल सत्यधाम, झापा
४	पं. घनश्याम ढकाल	दमक, झापा	कथाव्यास एवं अध्यक्ष, पूर्वाञ्चल कथाव्यास समिति
५	पं. खिवराज न्यौपाने	अर्जुनधारा–५, झापा	कथाव्यास एवं प्रधानाध्यापक, ओमकारेश्व वैदिक विद्यापीठ, झापा
६	पं. सोमनाथ सुवेदी	हल्दीबारी, जलथल, झापा	कथाव्यास एवं का.बा.. अध्यक्ष, सनातन धर्म सेवा समिति, झापा
७	पं. भवानीप्रसाद निरौला	विराटनगर, बरगाछी, मोरङ	कथाव्यास
८	पं. रूपनारायण तिम्सिना	सिक्किम, भारत	कथाव्यास एवं साहित्यकार
९	पं. कमल गौतम	बिर्तामोड न.पा.–२, झापा	कथाव्यास
१०	पं. हेमन्त गौतम	बिर्तामोड न.पा.–२, झापा	कथाव्यास
११	पं. तीर्थप्रसाद अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.–२, झापा	कथाव्यास
१२	पं. मुकुन्द काफ्ले	बरगाछी, मोरङ	कथाव्यास
१३	पं. ओमप्रकाश तिम्सिना	हिलिहाङ, पाँचथर	कथाव्यास
१४	पं. घनेन्द्र खतिवडा	सिलिगुडी, भारत	कथाव्यास
१५	पं. लक्ष्मण भण्डारी	बिर्तामोड, बुट्टाबारी, झापा	कथाव्यास

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिष एवं कर्मकाण्डतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कामको प्रकार
१	पं. विष्णुप्रसाद भण्डारी	नयाँदिल्ली, भारत	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
२	पं. दिवाकर तिम्सिना	नयाँदिल्ली, भारत	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
३	पं. शान्तिराम सुवेदी	काठमाडौं	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
४	अर्पण पोखेल	काठमाडौं	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
५	विष्णुप्रसाद पौडेल	अमेरिका	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
६	कृष्ण भण्डारी	बिर्तामोड–२, झापा	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
७	टीकाराम रेग्मी	अर्जुनधारा–१, साधुटार	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
८	गणेश भट्टराई	विराटनगर, मोरङ	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
९	मुकुन्द भट्टराई	बिराटनगर, मोरङ	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
१०	नवीन खतिवडा	अमरपुर, पाँचथर	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
११	शान्तिराम न्यौपाने	घैलाडुब्बा, हाल सिक्किम	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
१२	ज्ञानमणि अधिकारी	मणिपुर	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
१३	भास्कर नेपाल	दमक, झापा	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
१४	पं. डमरुवल्लभ खतिवडा	दुर्गापुर, कलकत्ता, भारत	कर्मकाण्ड
१५	पं. तुलसीराम भण्डारी	अष्ट्रेलिया	कर्मकाण्ड
१६	सुभाष खतिवडा	काठमाडौं	कर्मकाण्ड
१७	डिल्लीराम दाहाल	काठमाडौं	कर्मकाण्ड
१८	लीलाधर गौतम	काठमाडौं	कर्मकाण्ड
१९	दधिराम न्यौपाने	कनकाई न.पा., लक्ष्मीपुर, झापा	कर्मकाण्ड
२०	अर्जुन तिम्सिना	काठमाडौं	कर्मकाण्ड
२१	महेन्द्र कोइराला	काठमाडौं	सामवेदाचार्य, कर्मकाण्ड
२२	हरि न्यौपाने	काठमाडौं	सामवेदाचार्य, कर्मकाण्ड
२३	सन्तोष न्यौपाने	काठमाडौं	वेदाचार्य, कर्मकाण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२४	डिल्लीराम रिजाल	साधुटार, झापा	कर्मकाण्ड
२५	छविलाल नेपाल	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
२६	रामप्रसाद ओझा	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
२७	यामनाथ गुरागाईं	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
२८	बुद्धिप्रसाद पौडेल	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
२९	नारद पौडेल	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
३०	आचार्य हाकिम भण्डारी	चारपाने, हाल वाराणसी, भारत	कर्मकाण्ड
३१	पं. भीमप्रसाद पौडेल	बिर्तामोड २, झापा, हाल फगवाडा, पञ्जाब, भारत	कर्मकाण्ड
३२	घनश्याम पौडेल	बिर्तामोड, झापा	कर्मकाण्ड
३३	शान्तिराम तिम्सिना	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
३४	तुलसी भण्डारी (तुङ्गनाथ)	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
३५	गोपीकृष्ण लुइँटेल	लेटाङ न.पा., जाँते, मोरङ	कर्मकाण्ड
३६	मदन अधिकारी	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
३७	मदन अधिकारी	अर्जुनधारा न.पा., शनिश्चरे	कर्मकाण्ड
३८	डिल्ली अधिकारी	अर्जुनधारा न.पा., शनिश्चरे	कर्मकाण्ड
३९	गोपाल पौडेल	अर्जुनधारा न.पा.	कर्मकाण्ड
३०	रूपनारायण मिश्र	मेचीनगर न.पा., धुलाबारी, झापा	कर्मकाण्ड
३१	ख्यामप्रसाद रिमाल	दमक न.पा., झापा	कर्मकाण्ड
३२	प्रभाकर तिम्सिना	मेचीनगर न.पा., धुलाबारी, झापा	कर्मकाण्ड
३३	महेन्द्र खतिवडा	बिर्तामोड-२, झापा	कर्मकाण्ड
३४	गोपाल न्यौपाने	कचनकवल, दल्की, झापा	कर्मकाण्ड
३५	गोकर्ण अधिकारी	दार्जिलिङ, भारत	कर्मकाण्ड
३६	ङमनाथ (नवीन) पौडेल	दार्जिलिङ, भारत	कर्मकाण्ड
३७	लयप्रसाद पौडेल	दार्जिलिङ, भारत	कर्मकाण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८	लेखनाथ तिम्सिना	बिर्तामोड-२, झापा	कर्मकाण्ड
३९	शङ्कर नेपाल	शिवशताक्षी, ओडारीचोक, झापा	कर्मकाण्ड
४०	कुमार पोखेल	पाँचथर	कर्मकाण्ड
४१	सिद्धि रिजाल	शिवशताक्षी, पाँचगाछी, झापा	कर्मकाण्ड
४२	डिल्ली खतिवडा	दमक न.पा., झापा	कर्मकाण्ड
४३	छविरमण अधिकारी	बिर्तामोड, बुट्टाबारी, झापा	कर्मकाण्ड
४४	राम भण्डारी	बिर्तामोड, बुट्टाबारी, झापा	कर्मकाण्ड
४५	तीर्थराज ढकाल	पानीपत, हरियाणा, भारत	कर्मकाण्ड
४६	दीर्घराज खतिवडा	मुम्बई, भारत	कर्मकाण्ड
४७	गणेश बराल	कनकाई न.पा., दुर्गापुर, झापा	कर्मकाण्ड
४८	गोविन्द भट्टराई	सोनापुर, सुनसरी	कर्मकाण्ड
४९	जीवन काफ्ले	शिवशताक्षी न.पा., दहगाउँ	कर्मकाण्ड
५०	पूर्णचन्द्र रेग्मी	जितपुर, इलाम	कर्मकाण्ड
५१	प्रभुनाथ भट्टराई	लक्ष्मीपुर, झापा	कर्मकाण्ड
५२	युवराज कोइराला	लक्ष्मीपुर, झापा	कर्मकाण्ड
५३	सोमनाथ भट्टराई	लक्ष्मीपुर, झापा	कर्मकाण्ड
५४	गणेश अधिकारी	लक्ष्मीपुर, झापा	भजनकीर्तन एवं गायन
५५	शम्भु गौतम	चैतुबारी, झापा	कर्मकाण्ड
५६	विमल गौतम	बिर्तामोड-२, हाल विराटनगर	कर्मकाण्ड
५७	घनश्याम पौडेल	बिर्तामोड-२, चैतुबारी	कर्मकाण्ड तथा पूजा सामग्री व्यवसाय
५८	विकास पौडेल	चन्द्रगढी	कर्मकाण्ड
५९	नरेन्द्र निरौला	चारआली	पाउपाथीभराको पुजारी
६०	रोशन भण्डारी	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	कर्मकाण्ड
६१	तोयानाथ गुरागाईं	गौरादह न.पा.-९, जुरोपानी	कर्मकाण्ड

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६२	तोया निरौला	लेटाङ, जाँते	कर्मकाण्ड
६३	गुणनाथ ओझा	भद्रपुर, झापा	कर्मकाण्ड
६४	हरि तिम्सिना	ठाकुरबाडी, गान्तोक, भारत	सरकारी पुजारी
६५	मुक्तिनाथ अधिकारी	याङ्वरक-२, नाम्रेक	कर्मकाण्ड
६६	रत्नमणि बराल	गुवाहाटी	कर्मकाण्ड
६७	सदानन्द पोखेल	कमल गा.पा., लखनपुर, झापा	वाद्यवादन एवं कर्मकाण्ड
६८	पर्शुराम पोखेल	सङ्खुवासभा	कर्मकाण्ड
६९	शिव अधिकारी	अर्जुनधारा-१, साधुटार, झापा	कर्मकाण्ड
७०	डिल्लीराम भण्डारी	बिर्तामोड-२, झापा	कर्मकाण्ड
७१	पुष्पलाल पौडेल	बिर्तामोड-२, झापा	कर्मकाण्ड
७२	लोकनाथ खनाल	विराटनगर, मोरङ	कर्मकाण्ड

साधुसन्त

क्र.सं.	नाम	ठेगाना
१	श्री १०८ महन्त स्वामी आत्मप्रकाशानन्द गिरी (मित्र ढकाल)	पञ्चायती निरञ्जनी अखाडा हरिद्वार, भारत
२	धरमदास जी महाराज (धर्मानन्द ओझा)	सप्तसरोवर हरिद्वार, भारत

शिक्षणतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	विद्यालयको नाम र पद
१	दामोदर न्यौपाने	बिर्तामोड २, झापा	साङ्गवेद सं.मा.वि., चारपाने (मा.शि., प्रअ.)
२	शिव रेग्मी	इँटाभट्टा, दमक	सरस्वती माध्यमिक विद्यालय (मा.शि.)
३	शिव ढकाल	इँटाभट्टा, दमक	सरस्वती माध्यमिक विद्यालय (मा.शि.)
४	जगन्नाथ भण्डारी	बिर्तामोड-२, चारपाने, झापा	साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने (शिक्षक, निवृत्त)
५	महेश्वर कोइराला	धरान-१४, सुनसरी	चन्द्र संस्कृत मा.वि., धरान (मा.शि.)
६	हरिप्रसाद भण्डारी	बिर्तामोड-२, झापा	डेडीथुम्का मा.वि. देउपुर, काभ्रे (मा.शि.)
७	कमल अधिकारी	बिर्तामोड न.पा., झापा	राजकीय संस्कृत मा.वि. मटिहानी महोत्तरी (मा.शि.)
८	भानुभक्त खनाल	बिर्तामोड-२, झापा	दरबार हाइस्कुल, रानीपोखरी, काठमाडौं (मा.शि.)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९	विष्णुप्रसाद रेग्मी	साधुटार, झापा	जनकल्याण मा.वि. चिती, लमजुङ (मा.शि.)
१०	पूर्णानन्द तिम्सिना	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा	साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने (मा.शि., प्रअ. निवृत्त)
११	डिल्लीराम भण्डारी	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा	साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने (मा.शि., निवृत्त)
१२	गोविन्द पौडेल	कमल गा.पा., झापा	वाणी माध्यमिक विद्यालय (नि.मा.शि.)
१३	वेदनिधि गड्तौला	मोरङ	पञ्चायत मा.वि. पथरी, मोरङ (नि.मा.शि.)
१४	गङ्गाराम खतिवडा	कनकाई न.पा., झापा	कनकाई मा.वि., झापा (प्रा.शि.)
१५	यादव भण्डारी	काठमाडौं	विद्यालय (शिक्षक)
१६	पुष्पलाल पौडेल	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा	साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने (शिक्षक, निवृत्त)
१७	हेमलाल ढकाल	शिवसताक्षी न.पा., शिवगञ्ज, झापा	गौरीशङ्कर शिवालय गायत्री स्वरूपाश्रम गुरुकुल, झापा (प्र.अ.)
१८	विष्णुप्रसाद काफ्ले	बरगाछी, विराटनगर	राधारमण गुरुकुल, विराटनगर (प्र.अ.)
१९	बुद्धिप्रसाद न्यौपाने	कमल–७, पिपलगाछी, झापा	सिद्धेश्वर वैदिक गुरुकुल (प्र.अ.)
२०	एकराज भट्टराई	बुद्धशान्ति गा.पा.–७, झापा	वैदनाथ अधिकारी प्रारम्भिक संस्कृत विद्यापीठ, लेटाङ (प्र.अ.)
२१	खेमराज ओझा	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा	वाल्मीकि प्रोभिडेन्स, बिर्तामोड (शिक्षक)
२२	युवराज घिमिरे	तोरीबारी, इलाम	सस माई गुरुकुल (शिक्षक)
२३	केशव नेपाल	बिर्तामोड न.पा.–८, झापा	विराटज्योति आवासीय विद्यालय, झापा (शिक्षक)
२४	केशव खतिवडा	कनकाई न.पा.–४, झापा	महर्षि वैदिक फाउन्डेसन, झापा (ध्यानसिद्धि शिक्षक)
२५	विक्रम अर्याल	दल्की, झापा	अभिमुक्तेश्वर गुरुकुल (ध्यान शिक्षक)
२६	नीतिराज सुवेदी	होक्से बुद्धशान्ति–१	नर्वदेश्वर गुरुकुल (ध्यान शिक्षक)
२७	सन्तोष कोइराला	धरान–१४, सुनसरी	एम्स कलेज, धरान (शिक्षक)
२८	जगन्नाथ भण्डारी	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा	साङ्गवेद संस्कृत मा.वि., चारपाने (शिक्षक, निवृत्त)
२९	चन्द्रप्रसाद खनाल	बिर्तामोड.न.पा.–२, झापा	पशुपति बोर्डिङ स्कुल, शिवसताक्षी, झिलझिले (संस्थापक)
३०	हेम रिजाल	बिर्तामोड.न.पा.–२, झापा	जलजलेश्वर मा.वि., ओखलढुङ्गा

निजामती सेवातर्फ

१	अम्बिकाप्रसाद रेग्मी	काठमाडौं	सहसचिव	नेपाल सरकार (निवृत्त)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, भारत

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कार्यक्षेत्र
१	नन्दिकेश्वर भण्डारी	बलिया, उत्तरप्रदेश, भारत	श्री सिद्धेश्वरनाथ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बलिया यू.पी., भारत (प्राचार्य)

त्रिभुवन विश्वविद्यालयतर्फ

क्र. सं.	नाम	ठेगाना		कार्यक्षेत्र
१	डा. कर्णाखर खतिवडा	कीर्तिपुर, काठमाडौं	सहप्राध्यापक	त्रिभुवन विश्वविद्यालय
२	इन्दिराज पौडेल	दमक, झापा	सहप्राध्यापक	दमक बहुमुखी क्याम्पस
३	भूमिप्रसाद दाहाल	दमक–१८, सानो बाह्रघरे	उपप्राध्यापक	दमक बहुमुखी क्याम्पस
४	खेमराज खतिवडा	फिदिम न.पा., पाँचथर	प्राचार्य	फिदिम बहुमुखी क्याम्पस
५	बालानन्द न्यौपाने	बिर्तामोड–४, झापा	उपप्राध्यापक	सुनसरी बहुमुखी क्याम्पस
६	सेमन्त भण्डारी	बिर्तामोड–२, चारपाने,झापा	उपप्राध्यापक	चैतन्य बहुमुखी क्याम्पस, काभ्रे
७	लोकनाथ खनाल	बिराटनगर, मोरङ	उपप्राध्यापक	
८	बालानन्द न्यौपाने	बिर्तामोड न.पा, झापा	उपप्राध्यापक	इनरुवा क्याम्पस, सुनसरी

नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयतर्फ

१	डा. काशीनाथ न्यौपाने	काठमाडौं	विभागाध्यक्ष	बौद्ध दर्शन, वाल्मीकि विद्यापीठ
२	भवानीप्रसाद खतिवडा	काठमाडौं	विभागाध्यक्ष (निवृत्त)	वेदान्त विभाग, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं
३	काशीनाथ पौडेल	बिर्तामोड–२, चारपाने	प्राचार्य	पिण्डेश्वर विद्यापीठ, धरान
४	मोहनप्रसाद ओझा	बिर्तामोड–२, चारपाने	उपप्राध्यापक	वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं
५	तेजप्रकाश पौडेल	बिर्तामोड–२, चारपाने	उपप्राध्यापक	वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं
६	शेखर दाहाल	चारआली	उपप्राध्यापक	वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं
७	हरिप्रसाद खतिवडा	अर्जुनधारा–१, झापा	उपप्राध्यापक	शारदा विद्यापीठ महेन्द्रनगर महाकाली
८	डा. पुष्पलाल न्यौपाने	बिर्तामोड–४, झापा	उपप्राध्यापक	पिण्डेश्वर विद्यापीठ, धरान
९	गङ्गाराम नेपाल	धरान– १५, सुनसरी	उपप्राध्यापक	पिण्डेश्वर विद्यापीठ, धरान
१०	प्रेमसागर खतिवडा	धरान– १४, सुनसरी	उपप्राध्यापक	पिण्डेश्वर विद्यापीठ, धरान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेपाली सेनातर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कार्यक्षेत्र
१	खगेन्द्र मिश्र	बिर्तामोड–२, चारपाने	मूलपण्डित जमदार
२	प्रकाश भण्डारी	दमक न.पा., झापा	मूलपण्डित सुबेदार
३	उमानाथ कोइराला	दमक न.पा., झापा	मूलपण्डित सुबेदार
४	सुरेन्द्र सापकोटा	बिर्तामोड–२, चारपाने	मूलपण्डित जमदार
५	भवानीप्रसाद अधिकारी	बिर्तामोड न.पा.–५, झापा	मूलपण्डित जमदार
६	रमेश खतिवडा	बिर्तामोड–२, चारपाने, झापा	मूलपण्डित हुद्दा
७	टेकनाथ अधिकारी	बिर्तामोड, गरामनी, झापा	सहायक पण्डित हुद्दा

इन्जिनियरिङतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कार्यक्षेत्र
१	अभिषेक भण्डारी	बिर्तामोड–२, चारपाने	डेभलपमेन्ट सपोर्ट कन्सल्ट, पुलचोक, ललितपुर

संस्थानतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कार्यक्षेत्र
१.	आशुतोष न्यौपाने	बिर्तामोड–२, झापा	नेपाल निजामति प्रशिक्षण प्रतिष्ठान, काठमाडौं
२.	गोपाल खतिवडा	बिर्तामोड–२, झापा	राष्ट्रिय बिमा संस्थान, विराटनगर

बैंकतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	कार्यक्षेत्र
१	शङ्कर न्यौपाने	बिर्तामोड–२, चारपाने	एन.आई.सी. एसिया बैंक, केन्द्रीय कार्यालय, काठमाडौं
२	अच्युत भण्डारी	बिर्तामोड–२, चारपाने	नबिल बैंक, काठमाडौं
३	अर्जुन खतिवडा	बिर्तामोड–२, चारपाने	नबिल बैंक, इलाम
४	प्रदीप पौडेल	बिर्तामोड–२, चारपाने	नेपाल बैंक, मङ्गलबारे, इलाम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्योग-व्यवसायतर्फ

क्र.सं.	नाम	ठेगाना	व्यवसाय
१	जगन्नाथ शर्मा खनाल	बिर्तामोड.न.पा.—२, झापा	इँटा प्लाई उद्योग, जानकी इँटा उद्योग
२	फणीन्द्र तिम्सिना	बिर्तामोड.न.पा.—२, झापा	श्रीराम इँटा उद्योग
३	टीकाराम ढुङ्गाना	धनगढी बजार, सेती अञ्चल	जुत्ता उद्योग व्यवसाय
४	जीवनाथ तिम्सिना	बिर्तामोड.न.पा.—२, झापा	हार्डवेयर पसल
५	लेखनाथ खनाल	बिर्तामोड.न.पा.—२, झापा	लक्ष्मी इँटा उद्योग
६	देवीचरण पौडेल	बिर्तामोड, मातामन्दिर, झापा	किराना व्यापार
७	त्रिलोचन सिग्देल	चितवन	उद्योग व्यवसाय
८	युवराज न्यौपाने	मेचीनगर १३, चारआली	धाइजन बिजुली पसल व्यापार
९	शेखर दाहाल	हल्दीबारी गा.पा.—५, झापा	एम्बुलेन्स सेवा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १७

श्री १०८ विवेकानन्द गुरुको प्रतिमा निर्माण तथा स्मारिका प्रकाशनमा सहयोग गर्नुहुने दाता महानुभावहरूको नामावली

क्र. सं.	रसिद नं.	दाताको नाम थर	ठेगाना	रकम
१	६५१	विष्णुभक्त एवं मेनुका भण्डारी	विर्तामोड-२, चारपाने	१०५१००
२	६५२	रममाया पौडेल	विर्तामोड-२, चारपाने	३१०००
३	६५३	घनश्याम एवं राधिका तिम्सिना	विर्तामोड-२, चारपाने	११०००
४	६५४	देवीप्रसाद एवं टंकमाया खनाल	विर्तामोड-२, चारपाने	१११०५
५	६५५	बुद्धिप्रसाद एवं पुण्यप्रभा पौडेल	विर्तामोड-२, चारपाने	५१००
६	६५६	डमरुवल्लभ एवं दुगदिवी खतिवडा	विर्तामोड-२, चारपाने	५०००
७	६५७	केदारप्रसाद एवं राममाया गिरी	गौरादह-५	५१००
८	६५८	लोकनाथ एवं दिलमाया खनाल	विर्तामोड-२, चारपाने	५००५
९	६५९	छविलाल नेपाल	विर्तामोड-२, चारपाने	०
१०	६६०	सुरज एवं नारायणी भण्डारी	अर्जुनधारा-५	५१००
११	६६१	भूमिप्रसाद एवं रूपा खतिवडा	विर्तामोड-२, चारपाने	५००५
१२	६६२	खेमनाथ ओझा	विर्तामोड-२, चारपाने	३०००
१३	६६३	कुवेरनाथ लुइँटेल	गौरादह-९	२०००
१४	६६४	लयप्रसाद पौडेल	विर्तामोड-२, चारपाने	२१००
१५	६६५	कल्पना एवं हेमकला सुवेदी	दमक	४१००
१६	६६६	रुक्मिणा खतिवडा	विर्तामोड-२, चारपाने	२६००
१७	६६७	पुष्पलाल एवं पुण्यवती पौडैल	विर्तामोड-२, चारपाने	३१००
१८	६६८	परशुराम एवं कमला ओझा	विर्तामोड-२, चारपाने	११०००
१९	६६९	बद्रीनाथ एवं तुलसा खतिवडा	विर्तामोड-२, चारपाने	५१००
२०	६७०	पूर्णानन्द एवं कमला तिम्सिना	विर्तामोड-२, चारपाने	५१००
२१	६७१	पशुपति तीर्थस्वरूप ब्रह्मचारी	काशी	११११
२२	६७२ र ६८३	पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना	विर्तामोड-२, चारपाने	१५०००
२३	६७३	यशोदा खतिवडा	विर्तामोड-२, चारपाने	२१००
२४	६७४	सेमन्तमणि खतिवडा	दमक	११००
२५	६७५	तेजमाया खतिवडा	दमक-५	२००५
२६	६७६	डिलाराम वेलवासे		१५०५
२७	६७७	अमिता शर्मा न्यौपाने	मेचीनगर-१३	११०५

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२८	६७८	चन्द्रप्रसाद अधिकारी	दमक-५	११०५
२९	६७९	तोयानाथ एवं गङ्गादेवी भण्डारी	बिर्तामोड-२, चारपाने	५०००
३०	६८०	रमेश अधिकारी	बिर्तामोड-५	२१०५
३१	६८१	झुनप्रसाद एवं भोमादेवी तिम्सिना	बिर्तामोड-२, चारपाने	५१००
३२	६८२	लोकनाथ भण्डारी	कैलाली	२१००
३३	६८४	देवीप्रसाद एवं नारद पौडेल	बिर्तामोड-२, चारपाने	५१००
३४	६८५	महेन्द्र एवं दुर्गा खतिवडा	बिर्तामोड-२, चारपाने	३१००
३५	६८६	हरिप्रसाद एवं चन्द्रकला भण्डारी	बिर्तामोड-१, चारपाने	५१००
३६	६८७	चन्द्रप्रकाश एवं सुशीला आचार्य	बिर्तामोड-२, चारपाने	११००
३७	६८८	खडानन्द एवं पवित्रा पौडेल	बिर्तामोड-२, चारपाने	४१००
३८	६८९	हेमनाथ तिम्सिना	बिर्तामोड-२, चारपाने	५१००
३९	६९०	धनपति एवं धनमाया भट्टराई	बिर्तामोड, बुट्टाबारी	६१००
४०	६९१	बुद्धिराम एवं यशोदा प्रसाईं	बिर्तामोड	५१००
४१	६९२	देवीप्रसाद तिम्सिना	कनकाई-३, सुरुङ्गा	३५००
४२	६९३	पं. भानुभक्त एवं कमला अधिकारी	बिर्तामोड-२, चारपाने	११०००
४३	६९४	होमनाथ घिमिरे	बिर्तामोड-५	५१००
४४	६९५	दुर्गाप्रसाद एवं इन्दिरा गड्तौला	अमेरिका	१०१०५
४५	६९६	वेनु एवं सीता भण्डारी	बिर्तामोड-२, चारपाने	५१००
४६	७०१	जगन्नाथ पौडेल	दमक	५१००
४७	७०२	नारायण पौडेल	इलाम, बरबोटे	११००
४८	७०३	विष्णुप्रसाद पौडेल	क्यालिफोर्निया अमेरिका	२३०००
४९	७०४	गोविन्द एवं गायत्रा पौडेल	कमल-६ लखनपुर	५१००
५०	७०५	इन्दिराज पौडेल	दमक	५१००
५१	७०६	रघुनाथ न्यौपाने	पाँचथर	५१००
५२	७०७	देवीप्रसाद पौडेल	कमल-६ लखनपुर	२८००
५३	७०८	केदारनाथ पौडेल	कमल-६ लखनपुर	२१००
५४	७०९	खिलानाथ सुवेदी	कमल-६ लखनपुर	२१००
५५	७१०	यमनाथ पौडेल	कमल-६ लखनपुर	२१००
५६	७११	यदुनाथ पौडेल	भद्रपुर	२१००
५७	७१२	शिवप्रसाद ढकाल	दमक	५१००
५८	७१३	टौमनाथ खतिवडा	दमक	२१००
५९	७१४	विकास घिमिरे	कमल-६ लखनपुर	२१००

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६०	७१५	विनोद घिमिरे	कमल-६ लखनपुर	२५००
६१	७१६	होमनाथ पौडेल	काठमाडौं	११००
६२	७१७	चिदानन्द खतिवडा	पाँचथर	११००
६३	७१८	देवराज पौडैल	कमल-६ लखनपुर	२५००
६४	७१९	रूपनारायण तिम्सिना	सिक्किम, भारत	५१००
६५	७२०	विष्णुप्रसाद भण्डारी	दिल्ली, भारत	५१००
६६	७२१	जीवनाथ दाहाल	दमक-९	५१००
६७	७२२	पं. काशीनाथ दाहाल	दमक-५	५१००
६८	७२३	डा. पुण्यप्रसाद सिग्देल	कनकाई-४	२१००
६९	७२४	अग्निप्रसाद एवं चन्द्रमाया मिश्र	कमल-६ लखनपुर	३१००
७०	७२५	श्रीप्रसाद पौडेल	दमक-६	२१००
७१	७२६	दिलीपकुमार सङ्ग्रौला	कमल-६ लखनपुर	२१००
७२	७२७	खेमानन्द पौडेल	राजीपुर, कैलाली	५१००
७३	७२८	यमुनादेवी भण्डारी	बिर्तामोड २, झापा	५१००
७४	७२९	जगन्नाथ भण्डारी	बिर्तामोड २, झापा	५१००
७५	७३०	इन्द्रलाल सुवेदी	गौरीगञ्ज ३, झापा	१५५०
		जम्मा		४५९५०६

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिशिष्ट १८

भूमिदान

वैदिक वाङ्मयको संरक्षण संवर्द्धन हेतु सत्य संकल्प श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीजी महाराजका वरदहस्तबाट स्थापित श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय स्थापना एवं सञ्चालनार्थ आधार स्तम्भको रुपमा दीर्घकालीन सोचका साथ २०२८ सालदेखि २०७८ सालसम्म भूमिदान गर्नु हुने पुण्यात्माहरूको नामावली फोटोसहित निम्नप्रकार राखिएको छ :

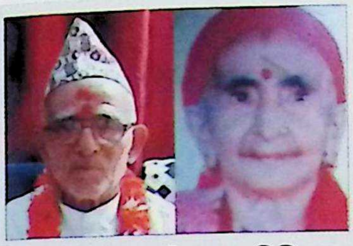

पं. नन्दिकेश्वर/तिलरुपा तिम्सिना

ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : कृष्णप्रसाद तिम्सिना
आमाको नाम : कृष्णमाया तिम्सिना
मिति २०२८।८।१६ मा १५ धुर जग्गा निःशुल्क प्रदान

डिल्लीराम/भागीरथा भण्डारी

ठेगाना : अर्जुनधारा ५, झापा
बाबुको नाम : खेटनाथ भण्डारी
आमाको नाम : पवित्रा भण्डारी
मिति २०३६।१०।१९ मा एक कठ्ठा जग्गा निःशुल्क प्रदान

खगनाथ/यमुनादेवी भण्डारी

ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि भण्डारी
आमाको नाम : रेणुका भण्डारी
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा १४० रूपैयाँ प्रदान

केदारनाथ/पुण्यमाता खतिवडा

ठेगाना : खुदुनाबारी १, साधुटार, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि खतिवडा
आमाको नाम : सरस्वता खतिवडा
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ११० रूपैयाँ प्रदान

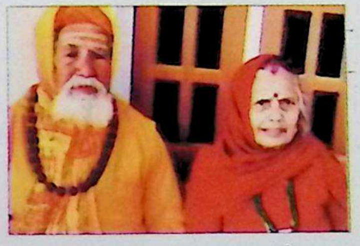

पुष्पलाल/चामुण्डा भण्डारी

ठेगाना : बिर्तामोड २, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि भण्डारी
आमाको नाम : रेणुका भण्डारी
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा १०१ रूपैयाँ प्रदान

अग्निप्रसाद/चन्द्रकला मिश्र

ठेगाना : ढ्याङ्ग्रे, झापा
बाबुको नाम : जनकलाल मिश्र
आमाको नाम : तिलरुपा मिश्र
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा १०० रूपैयाँ प्रदान

वासुदेव (भीमप्र.)/सावित्रादेवी रेग्मी

ठेगाना : खुदुनाबारी-१, झापा
बाबुको नाम : गङ्गाराम रेग्मी
आमाको नाम : रन्धता रेग्मी
मिति २०३६।१०।१९ मा एक कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा १०० रूपैयाँ प्रदान

पं. विष्णुभक्त/मेनुका भण्डारी

ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : नेतृराम भण्डारी
आमाको नाम : यशोदा भण्डारी
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा १०० रूपैयाँ प्रदान

लोकनाथ/दिलमाया खनाल

ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : गङ्गाराम खनाल
आमाको नाम : रनमाया खनाल
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ६१ रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.

बलभद्र/सरस्वता खनाल
ठेगाना : केरखा, झापा
बाबुको नाम : मनरथ खनाल
आमाको नाम :
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ५० रूपैयाँ प्रदान

रविलाल/रुक्मिणा खतिवडा
ठेगाना : चारपाने, झापा
बाबुको नाम : महानन्द खतिवडा
आमाको नाम : लच्छिमा खतिवडा
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ५० रूपैयाँ प्रदान

यामनाथ/सरस्वता पौड्याल
ठेगाना : लखनपुर, झापा
बाबुको नाम : देवकृष्ण पौड्याल
आमाको नाम : पवित्रादेवी पौड्याल
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ५० रूपैयाँ प्रदान

झुनप्रसाद/भोममाया तिम्सिना
ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : पं. नन्दिकेश्वर तिम्सिना
आमाको नाम : तिलरूपा तिम्सिना
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ४० रूपैयाँ प्रदान

अग्निप्रसाद/भागीरथा खतिवडा
ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि खतिवडा
आमाको नाम : सरस्वता खतिवडा
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा ३० रूपैयाँ प्रदान

पुष्पलाल/खिनमाया खतिवडा
ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : कपिलानन्द खतिवडा
आमाको नाम : पुण्यमाता खतिवडा
मिति २०३६।१०।१९ मा १ कठ्ठा जग्गा १००० मा खरिद गर्दा २५ रूपैयाँ प्रदान

स्वामी चन्द्रशेखरानन्द
ठेगाना : विवेकाश्रम
बाबुको नाम :
आमाको नाम :
मिति २०४४।११।६ मा ३ कठ्ठा जग्गा २९,५०० मा खरिद गर्दा १६०० रूपैयाँ प्रदान

चन्द्रकला/विष्णुलाल पौडेल
ठेगाना : सतासीधाम
बाबुको नाम : जीवनाथ अधिकारी
आमाको नाम : शिवमाया अधिकारी
मिति २०४४।११।६ मा ३ कठ्ठा जग्गा २९,५०० मा खरिद गर्दा १००० रूपैयाँ प्रदान

पं. टेकनाथ/भीमादेवी गौतम
ठेगाना : लखनपुर, झापा
बाबुको नाम : हरिकृष्ण गौतम
आमाको नाम : कौशिला गौतम
मिति २०४४।११।६ मा ३ कठ्ठा जग्गा २९,५०० मा खरिद गर्दा ५०० रूपैयाँ प्रदान

पं. विष्णुभक्त/मेनका भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : नेतृराम भण्डारी
आमाको नाम : यशोदा भण्डारी
मिति २०४४।११।६ मा ३ कठ्ठा जग्गा २९,५०० मा खरिद गर्दा ५०० रूपैयाँ प्रदान

लोकनाथ/दिलमाया खनाल
ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : गङ्गाराम खनाल
आमाको नाम : रनमाया खनाल
मिति २०४४।११।६ मा ३ कठ्ठा जग्गा २९,५०० मा खरिद गर्दा ५०० रूपैयाँ प्रदान

देवका गुरागाई
ठेगाना : सतासी, दूधे
बाबुको नाम : जीवनाथ अधिकारी
आमाको नाम : शिवमाया अधिकारी
मिति २०४४।११।६ मा ३ कठ्ठा जग्गा २९,५०० मा खरिद गर्दा ५०० रूपैयाँ प्रदान

भद्रशिला/रघुनाथ भण्डारी
ठेगाना : अर्जुनधारा ५, झापा
ससुराको नाम : वासुदेव भण्डारी
सासूको नाम : जानुका भण्डारी
मिति २०६३।०२।१२ मा १ कठ्ठा जग्गा निःशुल्क प्रदान ।

नवीन अग्रवाल (साबरथिया)
ठेगाना : काठमाडौं
बाबुको नाम : सुरजमल साबरथिया
आमाको नाम : लक्ष्मदेवी साबरथिया
मिति २०६३।०२।१२ मा १ कठ्ठा जग्गा निःशुल्क प्रदान

पुष्पलाल/चामुण्डा भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि भण्डारी
आमाको नाम : रेणुका भण्डारी
मिति २०६३।०२।१२ मा १ कठ्ठा जग्गा निःशुल्क प्रदान

टीकाराम/इन्द्रकला दुङ्गेल
ठेगाना : दुहवी, सुनसरी
बाबुको नाम : हरिचरण दुङ्गेल
आमाको नाम : मेनुका दुङ्गेल
मिति २०६३।०२।१२ मा १ कठ्ठा जग्गा निःशुल्क प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घनश्याम/राधिका तिम्सिना
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने
बाबुको नाम : पं नन्दिकेश्वर तिम्सिना
आमाको नाम : तिलरूपा तिम्सिना
मिति २०६३।०२।१२ मा १ कठ्ठा जग्गा निःशुल्क प्रदान

खगनाथ/यमुनादेवी भण्डारी
ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि भण्डारी
आमाको नाम : रेणुका भण्डारी
मिति २०६४।४।२९ मा ०-१-० (एक कठ्ठा) जग्गा निःशुल्क प्रदान

घनपति/धनमाया भट्टराई
ठेगाना : बिर्तामोड, झापा
बाबुको नाम : पदमलाल भट्टराई
आमाको नाम : माधवा भट्टराई
मिति २०७२।२।२७ मा ०-२-१८.५ जग्गा २५,२०,००० मा खरिद गर्दा १,२०,००० प्रदान

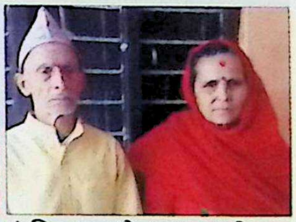

पं. विष्णुभक्त/मेनका भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : नेतृराम भण्डारी
आमाको नाम : यशोदा भण्डारी
मिति २०७२।२।२७ मा ०-२-१८.५ जग्गा २५,२०,००० मा खरिद गर्दा ६०,००० प्रदान

भक्तिप्रसाद/देवीमाया पोखरेल
ठेगाना : बिर्तामोड, झापा
बाबुको नाम : चक्रपाणि पाध्या
आमाको नाम : देवलक्ष्मी पोखरेल
मिति २०७२।२।२७ मा ०-२-१८.५ जग्गा २५,२०,००० मा खरिद गर्दा ६०,००० प्रदान

लेखनाथ/स्व.मेनकादेवी पोखरेल
ठेगाना : बिर्तामोड, झापा
बाबुको नाम : चक्रपाणि पाध्या
आमाको नाम : देवलक्ष्मी पोखरेल
मिति २०७२।२।२७ मा ०-२-१८.५ जग्गा २५,२०,००० मा खरिद गर्दा ६०,००० प्रदान

पुष्पराज/षड्कुमारी (पुनम) राई
ठेगाना : मेचीनगर, काँकरभिट्टा
बाबुको नाम : चन्द्रप्रकाश राई
आमाको नाम : दुर्गा राई
मिति २०७२।२।२७ मा ०-२-१८.५ जग्गा २५,२०,००० मा खरिद गर्दा ६०,००० प्रदान

डम्बरबहादुर/देवीमाया कार्की
ठेगाना : अर्जुनधारा ५, झापा
बाबुको नाम : नरबहादुर कार्की
आमाको नाम : धनवती कार्की
मिति २०७२।२।२७ मा ०-२-१८.५ जग्गा २५,२०,००० मा खरिद गर्दा ३०,००० प्रदान

उद्दिम/कृष्णकुमारी (खरेल) देवकोटा
ठेगाना : ललितपुर १५, हात्तीवन
बाबुको नाम : तिलकबहादुर देवकोटा
आमाको नाम : लक्ष्मीमाया देवकोटा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा ३,००,०००।- रुपैयाँ प्रदान

पं. विष्णुभक्त/मेनका भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : नेतृराम भण्डारी
आमाको नाम : यशोदा भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,२१,६०५।- रुपैयाँ प्रदान

दामोदर/इन्दिरा न्यौपाने
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : लोकनाथ न्यौपाने
आमाको नाम : हिङ्गोला न्यौपाने
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,१६,०००।- रुपैयाँ प्रदान

जीवनकुमार/मन्दिरा भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड ७, गरामनी,झापा
बाबुको नाम : शिवप्रसाद भण्डारी
आमाको नाम : रत्नकुमारी भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,११,०००।- रुपैयाँ प्रदान

घनश्याम/राधिका तिम्सिना
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने
बाबुको नाम : नन्दीकेश्वर तिम्सिना
आमाको नाम : तिलरूपा तिम्सिना
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,११,०००।- रुपैयाँ प्रदान

लीलादेवी शिवाकोटी प्रसाई
ठेगाना : काठमाडौं ३, स्वयम्भू
बाबुको नाम : नन्दलाल शिवाकोटी
आमाको नाम : भीमादेवी शिवाकोटी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,०२,२०५।- रुपैयाँ प्रदान

रेणुका घिमिरे
ठेगाना : गायत्रीमन्दिर, झापा
बाबुको नाम : नन्दलाल गुरागाई
आमाको नाम : वेदमाया गुरागाई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,०१,१११।- रुपैयाँ प्रदान

योग्यनिधि/भौमा चोलागाई
ठेगाना : दमक ९, शान्तिमार्ग, झापा
बाबुको नाम : हेमलाल चौलागाई
आमाको नाम : तिलरूपा चौलागाई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा ०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा खरिद गर्दा २,०१,०००।- रुपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णप्रसाद/मनमाया सुवेदी
ठेगाना : बिर्तामोड ५, झापा
बाबुको नाम : विष्णुलाल सुवेदी
आमाको नाम : तिलरूपा सुवेदी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

योगप्रसाद/दमयन्ता भट्टराई
ठेगाना : अर्जुनधारा १, झापा
बाबुको नाम : चुडामणि भट्टराई
आमाको नाम : तुलसादेवी भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

बद्रीप्रसाद/राधिका भट्टराई
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : रामचन्द्र भट्टराई
आमाको नाम : मेनुका भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

चेतप्रसाद/विमला भट्टराई
ठेगाना : जमुना २, हाल काठमाडौं
बाबुको नाम : देवीप्रसाद भट्टराई
आमाको नाम : चित्रकुमारी भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

छविरमण/ज्योत्स्ना भट्टराई
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : देवीप्रसाद भट्टराई
आमाको नाम : चित्रकुमारी भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

विजय/विनुता पौडेल
ठेगाना : सुन्दरदुलारी, इटहरी
बाबुको नाम : पं हिरालाल पौडेल
आमाको नाम : जानुका पौडेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

टङ्कनाथ/रिमादेवी नेपाल
ठेगाना : सिनामङ्गल, काठमाडौं
बाबुको नाम : लक्ष्मीप्रसाद नेपाल
आमाको नाम : ईश्वरादेवी नेपाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

गङ्गाप्रसाद/कविता कडरिया
ठेगाना : मेचीनगर ११, झापा
बाबुको नाम : लक्ष्मीप्रसाद कडरिया
आमाको नाम : हरिमाया कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

दिननाथ/विष्णुमाया सिग्देल
ठेगाना : बिर्तामोड २, रामचोक, झापा
बाबुको नाम : पं भोलानाथ सिग्देल
आमाको नाम : हर्कमाया सिग्देल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

एकराज/यशोदा उप्रेती
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : चिरञ्जीवी उप्रेती
आमाको नाम : ईश्वरा उप्रेती
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

हरिप्रसाद/कृष्णमाया शिवाकोटी
ठेगाना : मेचीनगर, ११ झापा
बाबुको नाम : लयप्रसाद शिवाकोटी
आमाको नाम : धनमाया शिवाकोटी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

उमानाथ/सीतादेवी कडरिया
ठेगाना : मेचीनगर ११, झापा
बाबुको नाम : लक्ष्मीप्रसाद कडरिया
आमाको नाम : हरिमाया कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

नन्दराम/नन्दमाया पौडेल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : रङ्गलाल पौडेल
आमाको नाम : गङ्गादेवी पौडेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

लक्ष्मण/अम्बिका खतिवडा
ठेगाना : बिर्तामोड १, बैसाबाडी झापा
बाबुको नाम : जगन्नाथ खतिवडा
आमाको नाम : खिलकुमारी खतिवडा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा २,००,०००/- रूपैयाँ प्रदान

जगन्नाथ/निर्मला भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : खगनाथ भण्डारी
आमाको नाम : यमुनादेवी भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,२५,०००/- रूपैयाँ प्रदान

युवराज/गौरादेवी विमली
ठेगाना : बिर्तामोड ६, बेलगाछी झापा
बाबुको नाम : विष्णुप्रसाद विमली
आमाको नाम : वसुन्धरा विमली
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,१५,११५/- रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलराम/गङ्गादेवी डाँगी

ठेगाना : बिर्तामोड २,चारपाने झापा
बाबुको नाम : केशवबहादुर डाँगी
आमाको नाम : इन्द्रमाया डाँगी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,१५५।- रूपैयाँ प्रदान

छन्दुराम/गङ्गादेवी भण्डारी

ठेगाना : बिर्तामोड २,चारपाने झापा
बाबुको नाम : जगन्नाथ भण्डारी
आमाको नाम : नैनकला भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,११५।- रूपैयाँ प्रदान

ओमनाथ/लीलादेवी अधिकारी

ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : खडानन्द अधिकारी
आमाको नाम : लक्ष्मीदेवी अधिकारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,१११।- रूपैयाँ प्रदान

गोपीकृष्ण/टीकादेवी प्रसाईं

ठेगाना : बिर्तामोड ६, बुट्टाबारी झापा
बाबुको नाम : जयेन्द्र प्रसाईं
आमाको नाम : धनमाया प्रसाईं
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,१११।- रूपैयाँ प्रदान

दाताराम/लक्ष्मिमा तिम्सिना

ठेगाना : बिर्तामोड ६, बुट्टाबारी झापा
बाबुको नाम : अनन्तराम तिम्सिना
आमाको नाम : जमुना तिम्सिना
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,१११।- रूपैयाँ प्रदान

दीपक/भगवती पाण्डे

ठेगाना : बिर्तामोड ८, हाल अमेरिका
बाबुको नाम : लक्ष्मीप्रसाद पाण्डे
आमाको नाम : उमादेवी पाण्डे
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,१११।- रूपैयाँ प्रदान

तिलकप्रसाद/यशोदा/ उमा गिरी

ठेगाना : मेचीनगर १२, झापा
बाबुको नाम : धनराज गिरी
आमाको नाम : तुलसा गिरी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,११,१११।- रूपैयाँ प्रदान

हरिप्रसाद/चन्द्रकला भण्डारी

ठेगाना : बिर्तामोड १, चारपाने झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि भण्डारी
आमाको नाम : रेणुका भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०७,७७७।- रूपैयाँ प्रदान

प्रजापति/खगमाया घिताल

ठेगाना : बिर्तामोड २, रामचोक, झापा
बाबुको नाम : जयनारायण घिताल
आमाको नाम : तिलरूपा घिताल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०४,०००।- रूपैयाँ प्रदान

गोपालकृष्ण/सरस्वती सङ्ग्रौला

ठेगाना : हिलिहाङ ५, सुभाङ
बाबुको नाम : पुष्पलाल सङ्ग्रौला
आमाको नाम : पदमकुमारी/विष्णुमाया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०३,००५।- रूपैयाँ प्रदान

प्रेमानन्दशरण/अम्बिका पोखरेल

ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : दुर्गाप्रसाद पोखरेल
आमाको नाम : कल्पना पोखरेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०२,५००।- रूपैयाँ प्रदान

गुरुभक्त/डिल्लीकुमारी न्यौपाने

ठेगाना : बिर्तामोड ४, झापा
बाबुको नाम : नन्दलाल न्यौपाने
आमाको नाम : चन्द्रमाया न्यौपाने
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,२५७।- रूपैयाँ प्रदान

अविचन्द्र/नारायणी पोखरेल

ठेगाना : बिर्तामोड ६, बुट्टाबारी झापा
बाबुको नाम : तारानिधि पोखरेल
आमाको नाम : छायादेवी पोखरेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१२५।- रूपैयाँ प्रदान

लक्ष्मिमा/जयनारायण/रमा विमली

ठेगाना : बिर्तामोड ७, गरामनी, झापा
बाबुको नाम : नरपति विमली
आमाको नाम : भागीरथा विमली
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,११५।- रूपैयाँ प्रदान

मनरथ/खेमकुमारी भेटवाल

ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : लक्ष्मीप्रसाद भेटवाल
आमाको नाम : तुलसादेवी भेटवाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

डिल्लीराम/मायादेवी सिटौला

ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : भोलानाथ सिटौला
आमाको नाम : देवमाया सिटौला
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होमनाथ/लक्ष्मीदेवी भट्टराई
ठेगानाः बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : टीकाराम भट्टराई
आमाको नाम : रन्धता भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

कृष्णप्रसाद/कृष्णमाया रिजाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : भोजप्रसाद रिजाल
आमाको नाम : पद्माकुमारी रिजाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

छविलाल/कमला भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : पं टङ्कनाथ भण्डारी
आमाको नाम : गोमादेवी भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

जयश्री राधामाधवशरणम्
ठेगाना :
बाबुको नाम :
आमाको नाम :
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

हिङ्गोला/लोकनाथ न्यौपाने
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : तुलसीराम ओझा
आमाको नाम : पद्मादेवी ओझा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

डम्बरबहादुर/सीता देउजा
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : पूर्णबहादुर देउजा
आमाको नाम : पवित्रा देउजा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

देवीप्रसाद/टङ्कमाया खनाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : गङ्गाराम खनाल
आमाको नाम : रनमाया खनाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

मित्रमाया/धर्मानन्द आचार्य
ठेगाना : दमक २, आम्दा झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि भण्डारी
आमाको नाम : रेणुका भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

टेकनाथ/दीपा खनाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, रामचोक, झापा
बाबुको नाम : लोकनाथ खनाल
आमाको नाम : दिलमाया खनाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

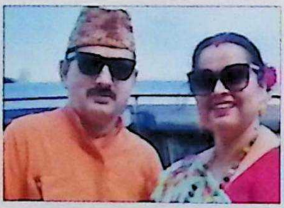

सुवास/रेणुका खनाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : लोकनाथ खनाल
आमाको नाम : दिलमाया खनाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

लेखनाथ/सावित्रा खनाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : लोकनाथ खनाल
आमाको नाम : दिलमाया खनाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

यामनाथ/सुनिता गुरागाईं
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : चिरञ्जीवी गुरागाईं
आमाको नाम : हुममाया गुरागाईं
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. ५,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

उमाकान्त/भीमा पौडेल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : नन्दराम पौडेल
आमाको नाम : नन्दमाया पौडेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

जीवमाया गुरागाईं (रश्मी)
ठेगाना : चितवन, हाल जर्मनी
बाबुको नाम : चिरञ्जीवी गुरागाईं
आमाको नाम : हुममाया गुरागाईं
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

कौशल निरौला
ठेगाना : काठमाडौं, हाल क्यानडा
बाबुको नाम : केदारप्रसाद निरौला
आमाको नाम : सीतादेवी निरौला
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

भानुप्रसाद/लीलादेवी शिवाकोटी
ठेगाना : बिर्तामोड १, झापा
बाबुको नाम : खडानन्द शिवाकोटी
आमाको नाम : खगमाया शिवाकोटी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरिचरण/मेनुका बानियाँ
ठेगानाः मेचीनगर ११, झापा
बाबुको नाम : लालबहादुर बानियाँ
आमाको नाम : भागीरथा बानियाँ
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

फणीन्द्र/कमला तिम्सिना
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : घनश्याम तिम्सिना
आमाको नाम : राधिका तिम्सिना
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

होममाया/श्रीप्रसाद खरेल
ठेगाना : बिर्तामोड १, पञ्चकन्या झापा
बाबुको नाम : हरिप्रसाद ओली
आमाको नाम : दिव्यश्वरी ओली
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१११।- रूपैयाँ प्रदान

पं.माधवशरण/इन्द्रकुमारी नेपाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : मधुसूदन नेपाल
आमाको नाम : विष्णुमाया नेपाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१०५।- रूपैयाँ प्रदान

मीनाकुमारी/गङ्गाबहादुर बस्नेत
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
ससुराको नाम : जगतबहादुर बस्नेत
सासूको नाम : लीलादेवी बस्नेत
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,१०५।- रूपैयाँ प्रदान

हरि/चम्पा पाण्डे
ठेगाना : बिर्तामोड ७, गरामनी झापा
बाबुको नाम : भानुप्रसाद पाण्डे
आमाको नाम : हरिप्रिया पाण्डे
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,००५।- रूपैयाँ प्रदान

ज्यो.गङ्गाप्रसाद/देवीमाया खरेल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : तिलचन खरेल
आमाको नाम : धनमाया खरेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,०००।- रूपैयाँ प्रदान

घनश्याम/मनमाया कडरिया
ठेगाना : मेचीनगर, धुलाबारी झापा
बाबुको नाम : प्रतिमन कडरिया
आमाको नाम : महेश्वरा कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,०००।- रूपैयाँ प्रदान

नारद/तोरणकुमारी अधिकारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, रामचोक, झापा
बाबुको नाम : देवनारायण अधिकारी
आमाको नाम : गोमा अधिकारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,०००।- रूपैयाँ प्रदान

हीरादेवी/मानबहादुर श्रेष्ठ
ठेगाना : बिर्तामोड ५, झापा
बाबुको नाम : कुलबहादुर मानन्धर
आमाको नाम : डम्बरकुमारी मानन्धर
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,०१,०००।- रूपैयाँ प्रदान

हरिहर/शारदा भट्टराई
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : रामचन्द्र भट्टराई
आमाको नाम : मेनुका भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,५१०।- रूपैयाँ प्रदान

अम्बरबहादुर/मधुमाया गिरी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : गङ्गुलध्वज गिरी
आमाको नाम : वसुन्धरा गिरी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००५०५।- रूपैयाँ प्रदान

डिल्लीराम/अम्बिका रिजाल
ठेगाना : अर्जुनधारा १, साघुटार झापा
बाबुको नाम : कर्णाखर रिजाल
आमाको नाम : हरिमाया रिजाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,१५५।- रूपैयाँ प्रदान

विमला/भूविक्रम बस्नेत
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : दिलिपकुमार कार्की
आमाको नाम : सुभद्रा कार्की
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,१५५।- रूपैयाँ प्रदान

टेकनाथ/खुमादेवी पोखरेल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : हरिप्रसाद पोखरेल
आमाको नाम : खोमादेवी पोखरेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,११५।- रूपैयाँ प्रदान

तुलसीप्रसाद/योगमाया गौतम
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : रङ्गलाल गौतम
आमाको नाम : जमुना गौतम
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,१११।- रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.

रामप्रसाद/गायत्रादेवी बराल
ठेगानाः अर्जुनधारा १, साघुटार झापा
बाबुको नाम : केवलराम बराल
आमाको नाम : हरिमाया बराल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,१०५।- रूपैयाँ प्रदान

मदन/सुशीला तिम्सिना
ठेगाना : मध्यपुर ठिमी १, भक्तपुर
बाबुको नाम : पुण्यप्रसाद तिम्सिना
आमाको नाम : पुण्यमाया तिम्सिना
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०७१।- रूपैयाँ प्रदान

हरिप्रसाद/टीकादेवी खतिवडा
ठेगाना : इटहरी उनपा २, सुनसरी
बाबुको नाम : चन्द्रप्रसाद खतिवडा
आमाको नाम : नन्दमाया खतिवडा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०१५।- रूपैयाँ प्रदान

मोहन/शीला ढकाल
ठेगाना : बिर्तामोड १, झापा
बाबुको नाम : परशुराम ढकाल
आमाको नाम : तुलसा ढकाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,००५।- रूपैयाँ प्रदान

अञ्जनीप्रसाद/मेलिसा सङ्ग्रौला
ठेगाना : बिर्तामोड ३, झापा
बाबुको नाम : यमनाथ सङ्ग्रौला
आमाको नाम : तुलसा सङ्ग्रौला
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,००५।- रूपैयाँ प्रदान

लक्ष्मीप्रसाद/अञ्जना खनाल
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : लोकनाथ खनाल
आमाको नाम : दिलमाया खनाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

रोमकुमारी/गिरिधर दुङ्गाना
ठेगाना : भक्तपुर
बाबुको नाम : अग्निप्रसाद अधिकारी
आमाको नाम : कीर्तिमाया अधिकारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

तुलसीराम/मञ्जु भण्डारी
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : पं विष्णुभक्त भण्डारी
आमाको नाम : मेनका भण्डारी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

मोहन/सीता (गीता) घिमिरे
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : नरनाथ घिमिरे
आमाको नाम : वेदकुमारी घिमिरे
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

कृष्णप्रसाद/राधा घिमिरे
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : नरनाथ घिमिरे
आमाको नाम : वेदकुमारी घिमिरे
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

मेदनीप्रसाद/नन्दमाया शिवाकोटी
ठेगाना : बिर्तामोड ३, झापा
बाबुको नाम : खडानन्द शिवाकोटी
आमाको नाम : पवित्रा-मनमाया शिवाकोटी
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

भीमादेवी/नन्दलाल शिवाकोटी
ठेगाना : काठमाडौं ३, स्वयम्भू
बाबुको नाम :
आमाको नाम :
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

हरिप्रसाद/नरमाया कडरिया
ठेगाना : मेचीनगर १३, धाइजन,झापा
बाबुको नाम : प्रतिमन कडरिया
आमाको नाम : महेश्वरा कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

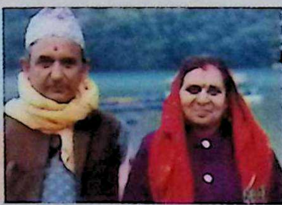

पं.होमनाथ/भीमादेवी घिमिरे
ठेगाना : बिर्तामोड ५, मित्रनगर झापा
बाबुको नाम : रामचन्द्र घिमिरे
आमाको नाम : विष्णुमाया घिमिरे
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

मुनादेवी सापकोटा गौतम
ठेगाना : बिर्तामोड १, झापा
बाबुको नाम : ध्रुवप्रसाद सापकोटा
आमाको नाम : गोमादेवी सापकोटा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

डोरप्रसाद/लक्ष्मीदेवी मिश्र
ठेगाना : बिर्तामोड ६, झापा
बाबुको नाम : डिल्लीराम मिश्र
आमाको नाम : जानुका मिश्र
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं.होमनाथ/अम्बिका नेपाल
ठेगानाः सालबाडी, सिलिगुडी, भारत
बाबुको नाम : टेकनाथ नेपाल
आमाको नाम : डोकमाया नेपाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

खगेन्द्र/इन्दु दुङ्गाना
ठेगाना : बिर्तामोड ४, झापा
बाबुको नाम : नन्दीकेश्वर दुङ्गाना
आमाको नाम : मुनादेवी दुङ्गाना
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

चन्द्रप्रसाद/शान्तादेवी बजगाई
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : चूडामणि बजगाई
आमाको नाम : मधुमाया बजगाई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

शम्भुप्रसाद/रमा घिमिरे
ठेगानाः बिर्तामोड २, रामचोक झापा
बाबुको नाम : वासुदेव घिमिरे
आमाको नाम : टीकादेवी घिमिरे
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

रमादेवी /गोपाल बस्नेत
ठेगाना : बिर्तामोड १, झापा
बाबुको नाम : रघुवीर बिष्ट
आमाको नाम : मन्दिरा बिष्ट
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

शुभाकर/उमा (कौशिला) कडरिया
ठेगाना : बिर्तामोड १, चारपाने झापा
बाबुको नाम : प्रतिमन कडरिया
आमाको नाम : महेश्वरा कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

लीलाराज/मीरा कडरिया
ठेगाना : बिर्तामोड १, झापा
बाबुको नाम : शुभाखर कडरिया
आमाको नाम : कौशिला कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

बिनु/नन्दकिशोर गिरी
ठेगाना : बिर्तामोड ५, झापा
बाबुको नाम : गङ्गाबहादुर वन
आमाको नाम : अनुपादेवी वन
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

नगेन्द्र/शान्ता सङ्ग्रौला
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने, झापा
बाबुको नाम : डम्बरप्रसाद सङ्ग्रौला
आमाको नाम : सरस्वता सङ्ग्रौला
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

कृष्ण/नीरा निरौला
ठेगाना : खानीमञ्ज्याङ, ओखलढुङ्गा
बाबुको नाम : द्रोणाचार्य निरौला
आमाको नाम : सीता निरौला
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

लक्ष्मीनारायण/अम्बिकादेवी भट्टराई
ठेगाना :
बाबुको नाम : टीकाराम भट्टराई
आमाको नाम : रम्घता भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

चिन्तामणि/लीला पौडेल
ठेगाना : उर्लाबारी ६, झापा
बाबुको नाम : कुलमणि पौडेल
आमाको नाम : पवित्रादेवी पौडेल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

नेत्र/बबिता नेपाल
ठेगाना : बिर्तामोड, झापा
बाबुको नाम : भुवानीप्रसाद नेपाल
आमाको नाम : मनमाया नेपाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

माधवप्रसाद/जमुना सिटौला
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : भोलानाथ सिटौला
आमाको नाम : देवमाया सिटौला
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

कृष्णप्रसाद/टीकादेवी ओली
ठेगाना : बिर्तामोड २, चारपाने झापा
बाबुको नाम : नरप्रसाद ओली
आमाको नाम : सत्यरुपा ओली
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

डा.काशीनाथ/शारदा न्यौपाने
ठेगानाः गौरीघाट, काठमाडौं
बाबुको नाम : घनश्याम न्यौपाने
आमाको नाम : मायादेवी न्यौपाने
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि.

केदारनाथ/पुण्यमाता खतिवडा
ठेगाना : खुदुनाबारी १, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि खतिवडा
आमाको नाम : सरस्वता खतिवडा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

शेखर/तिलमाया कडरिया
ठेगाना : मेचीनगर ११, झापा
बाबुको नाम : प्रतिमन कडरिया
आमाको नाम : महेश्वरा कडरिया
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

डिल्लीराम/कमला भट्टराई
ठेगानाः बिर्तामोड ७, देवनिया झापा
बाबुको नाम : चिन्तामणि भट्टराई
आमाको नाम : हिमादेवी/तिलरूपा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

अग्निप्रसाद/भागीरथा खतिवडा
ठेगाना : चारपाने ३, झापा
बाबुको नाम : यज्ञनिधि खतिवडा
आमाको नाम : सरस्वता खतिवडा
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

टीकाराम/देवा ढुङ्गाना
ठेगाना : धनगढी २, कैलाली
बाबुको नाम : दीननाथ ढुङ्गाना
आमाको नाम : इन्द्रमाया ढुङ्गाना
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

रामप्रसाद/शिवमाया रिजाल
ठेगानाः मेचीनगर १४, धाइजन झापा
बाबुको नाम : जयनारायण रिजाल
आमाको नाम : देवजना रिजाल
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

धनपति/धनमाया भट्टराई
ठेगाना : बिर्तामोड, झापा
बाबुको नाम : पदमलाल भट्टराई
आमाको नाम : माधवा भट्टराई
मिति २०७८।६।५ र २०७८।९।७ मा
०-३-३.७५ जग्गा रू. १,२३,००,००० मा
खरिद गर्दा १,००,०००।- रूपैयाँ प्रदान

उपर्युक्त जग्गा खरिदका लागि रकम सहयोग गर्ने महानुभावले उपलब्ध गराएको रकमले तत्कालीन मूल्यमा आधा धुर वा सोभन्दा बढी जग्गा आउने अवस्था भएमा त्यस्ता महानुभावको नाम यस विवरणमा समावेश भएको छ भने अन्य महानुभावको नामावली भूमिसम्बन्धी विवरणमा नै रहेको छ । घटीबढी रकम आश्रमले व्यहोरेको छ । साथै जग्गादाताका श्रीमान् वा श्रीमतीको नाम र फोटोसमेत जग्गादाताकै हैसियतमा साथै समावेश गरिएको छ ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ ॐ ॐ

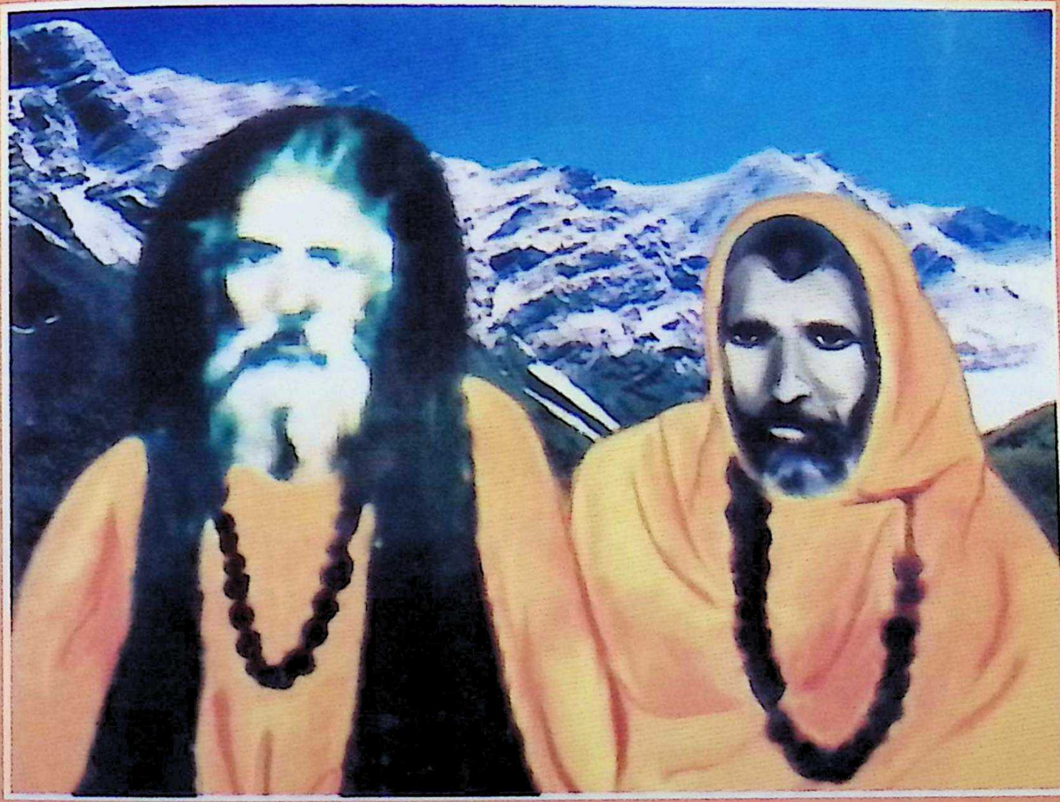

श्री १०८ स्वामी
विवेकानन्द पुरी

श्री १०८ स्वामी
योगेश्वराश्रम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्द पुरीले साधना गर्नुभएका पाँचथर क्षेत्रका केही महत्त्वपूर्ण स्थलहरू :

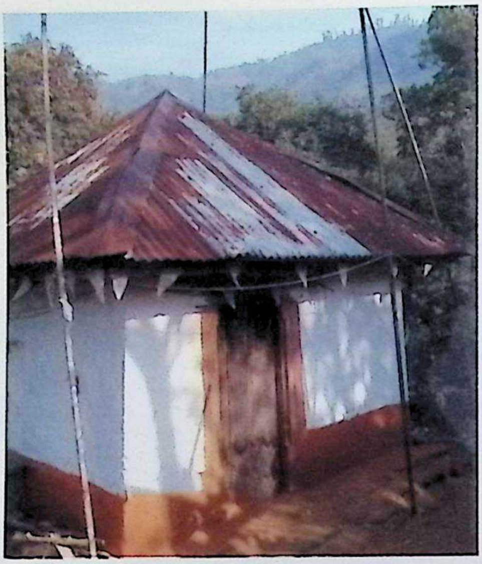

पानावा साधना कुटी

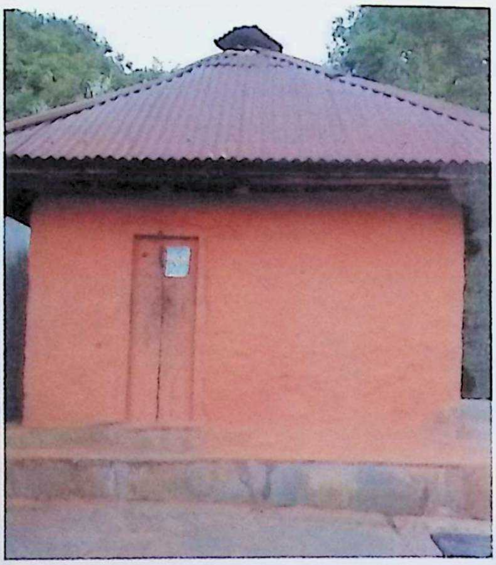

जोरपोखरी साधना कुटी

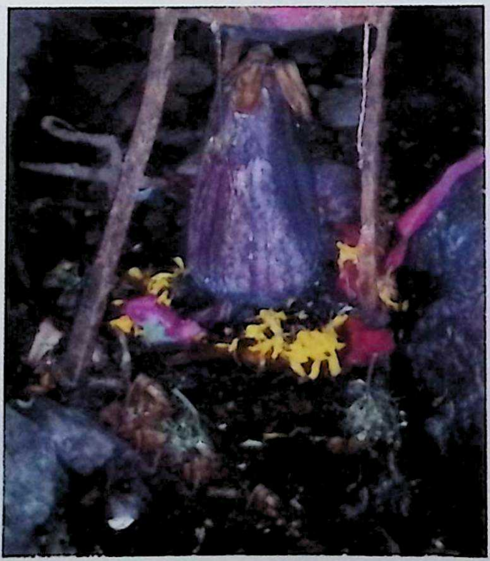

स्वामी विवेकानन्दले स्थापना
गर्नुभएको शिवगङ्गा महादेव

जोरपोखरी देवीस्थान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीब्रह्मयोगाश्रम, जोरपोखरी

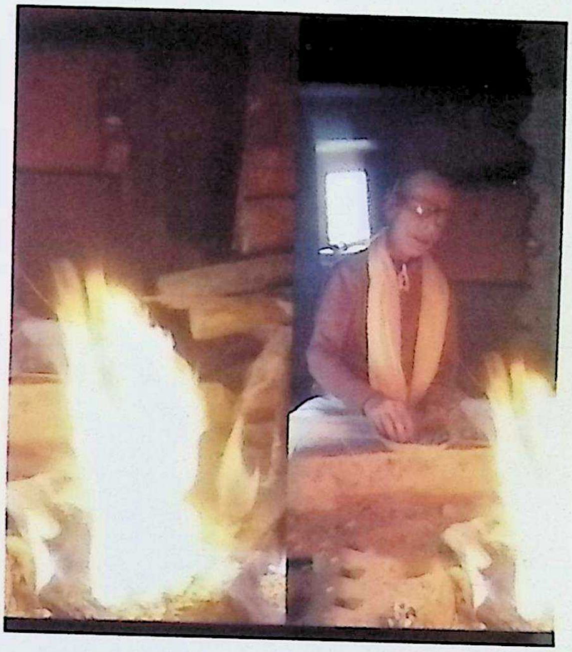

आगेजुङ तेजपुञ्ज धुनि र
आगेजुङ तेजपुञ्ज धुनिमा हवन गर्दै विष्णु भक्त गुरु

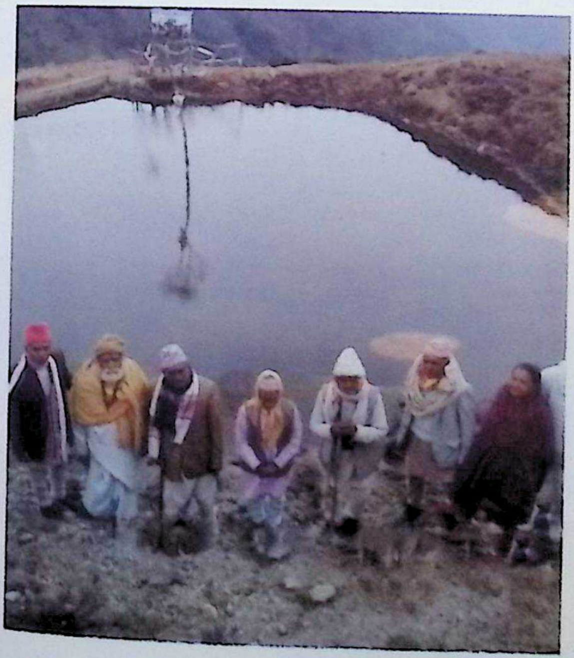

हिमनदीको उत्पति स्थल
फालेलुङ्ग

शिवगङ्गा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामी विवेकानन्द पुरीका खराउ

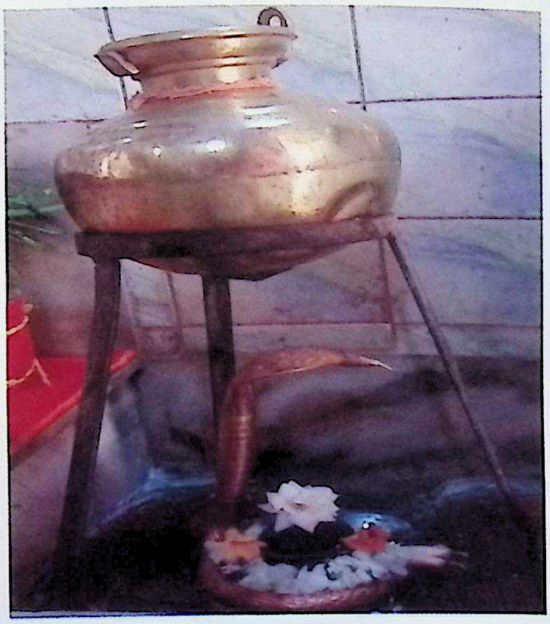

श्री १०८ स्वामी विवेकानन्दले विवेकाश्रममा स्थापना गर्नुभएको शिवलिङ्ग

भीमेश्वर शिवलिङ्ग मच्छेबुङ् पानीकुवा

श्रीराम गुफा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गजानन (गणेश) गुफा

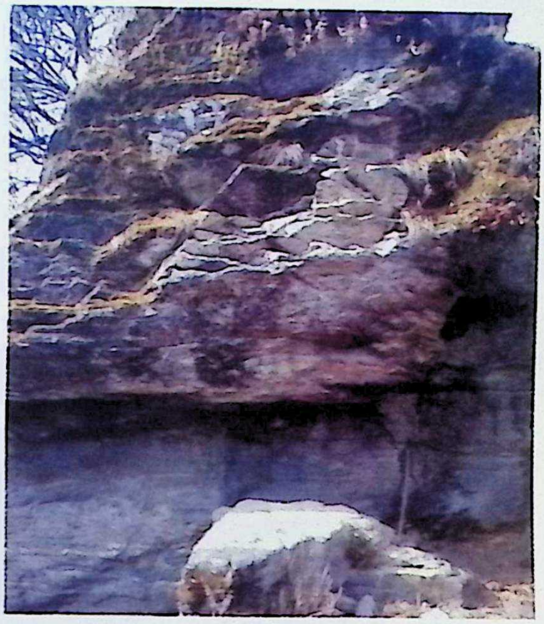

गुफा ढुङ्गा (दबे पोखरी) गुफा

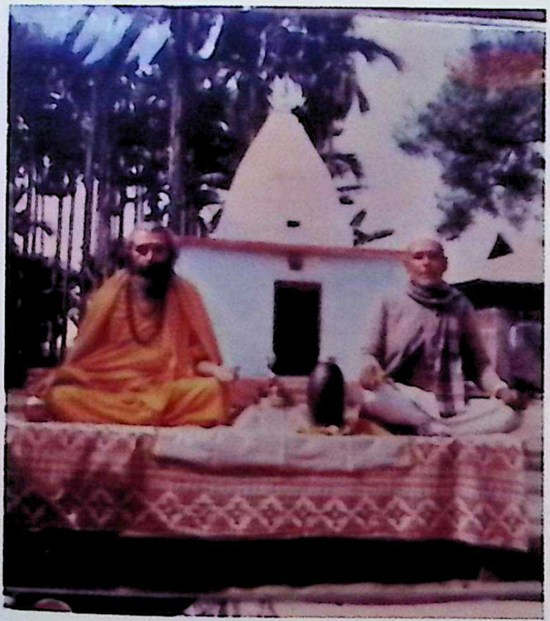

विवेकेश्वर पुरानो मन्दिर विद्यालय
अगाडि गायत्रीस्वरूप ब्रह्मचारी एवं गौतम गुरु

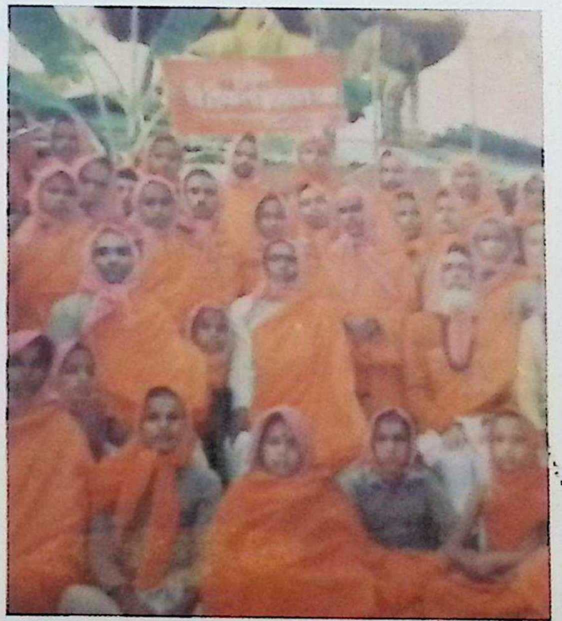

विवेकाश्रमको वैदिक लक्षहवनमा सम्मिलित
गुरुजन एवं विद्यार्थीहरू

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीविवेकाश्रम तथा साङ्गवेद संस्कृत माध्यमिक विद्यालय परिसरमा विभिन्न समयमा आफ्नो निजी लगानीमा निर्माण गरी सहयोग गर्ने महानुभावहरू

हरिशङ्कर/विमलादेवी अग्रवाल
(कैलाशपति शिव पाञ्चायन मन्दिर निर्माता)

तिलरूपा खड्का
(रूद्राभिषेक भवन निर्माता)

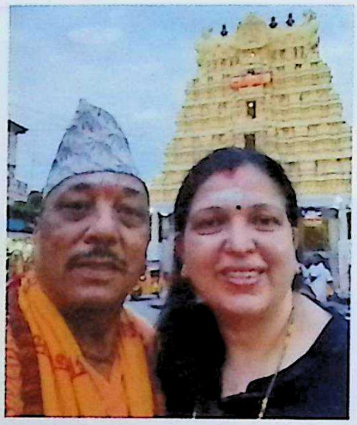

वासुदेव/निलु केसी
श्रीविष्णु पाञ्चायन मन्दिर एवं रूद्र सत्सङ्ग भवन निर्माता)

लोकनाथ/दिलमाया खनाल
(सरस्वती मन्दिर, धारा निर्माता)

पुष्पराज/षड्कुमारी (पुनम) राई
(श्रीपुण्यदा गौशाला निर्माता)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

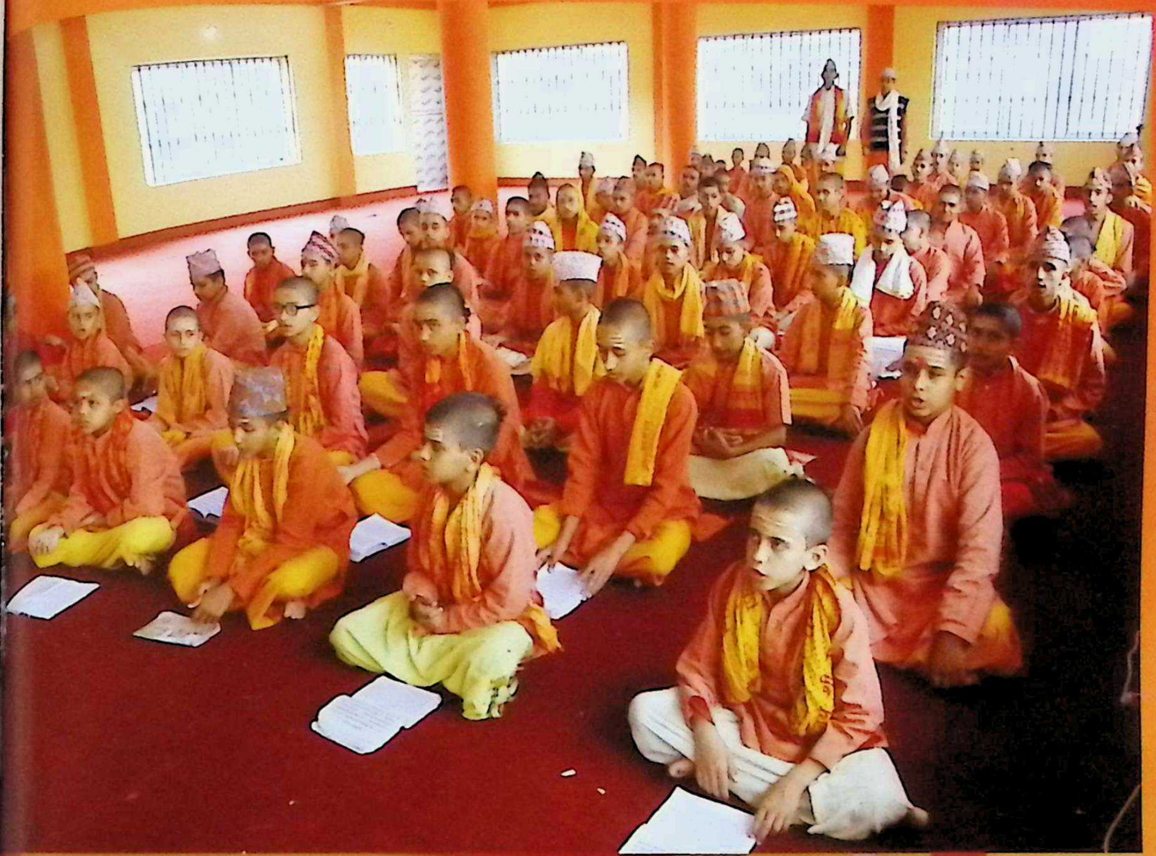

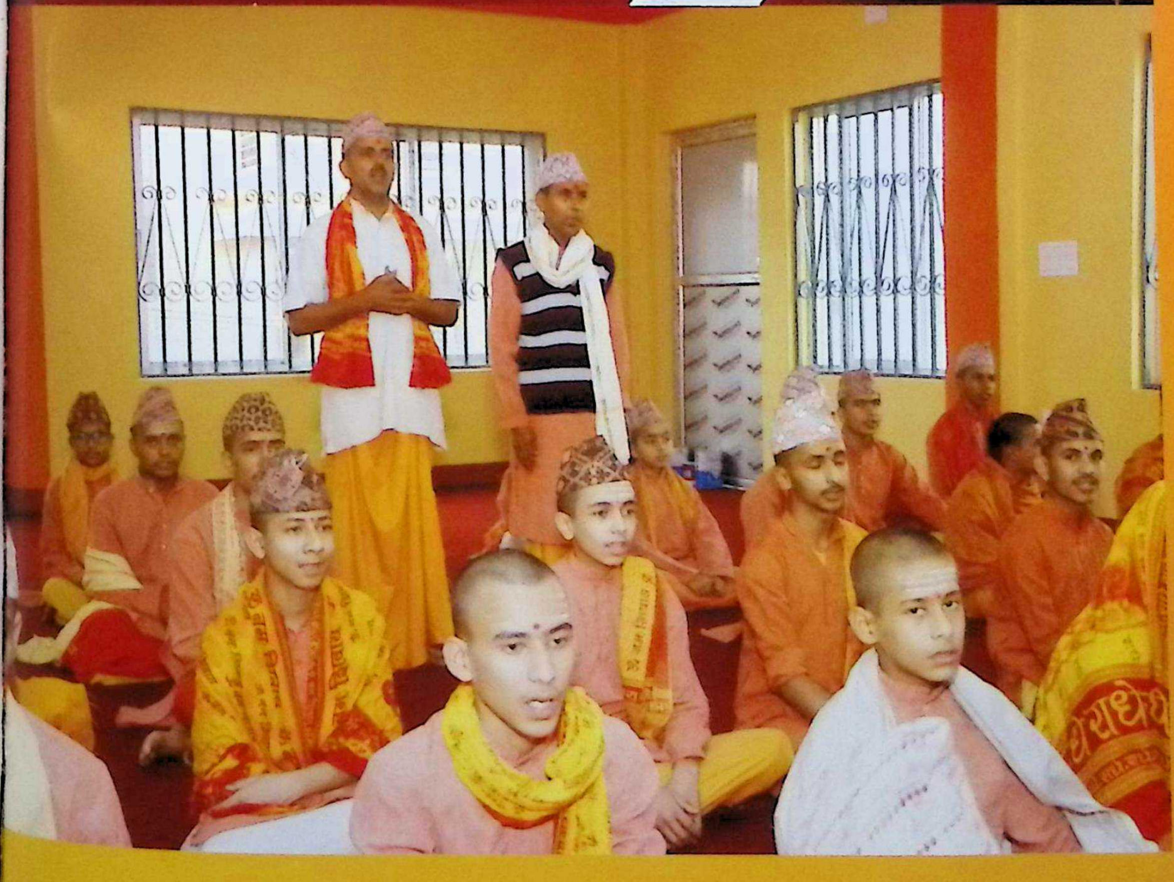

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री विवेकाश्रम तथा साङ्गवेद सं.मा.वि. बिर्तामोड - २, चारपाने, झापा

Email : sangbedsans2028@gmail.com

978-9937-1-1966-5

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal